CamScanner

मन-ही-मन सबको दण्डवत प्रणाम करो कि उनको पता ही न लगे। गुप्त दान, गुप्त साधन बड़ा तेज होता है। सबको किया गया प्रणाम भगवानको प्राप्त होता है। यह बहुत ही उत्तम साधन है जो हरेक कर सकता है।

CamScanner

CamScanner

अपने पाप के फल से तो गंगा
पुत्र भीष्म भी नहीं बच पाए थे और
तुम सोचते हो कि केवल गंगा नहाने
से तुम्हारे पाप धुल जाएंगे !!

CamScanner

CS CamScanner

क्या लेके आया बंदे क्या लेके जायेगा
दो दिन की जिंदगी है दो दिन का मेला

CamScanner

तुम किस्से लड़ रहे हो, कौन है
यहां दुश्मन है, तुम किस्से भौंक रहे हो,
किस के लिए भौंक रहे हो

CamScanner

मूर्ति पूजा करने वाले भगवान को कभी समझ नही सकेंगे

CamScanner

ਚਰ ।

jag vich roshan naam hai jisda
ashiq to kyu nasda ae
wasda-rasda vich bukkal de
apna bhed na dasde ae, meri ...
maye kisnu ...

akhna c hun aakh sunaya
machla sunda naahi
hath malaa te minta kardi
rovaan dhaaheen dhaahen
meri bukal ...
haye kisnu ...

Chori chori nikal gaya ni
pay gaya jag vich shor, Meri ...

shau bullha saathi wakh naahi
bin shaude duja kakh naahi
par wekhan wali akh naahi
taanhi jaan paee dukh sehandi ae
muh aye baat na rehandi ae, meri ...

jis paya bhet kalandar da
raah khojeya apne andar da
oh waasi hai sukhmandar da
jithe kove na charhdi lehandi ae

CamScanner

11:59 am 16 KB/s VoLTE 4G 78%

muslanmaan saarhan to darde
hindu darde gorr
dovein ese de vich marde
eho dohaan di khor, meri ...

is duniya vich hanera ae
eh tilkan baazi wehra ae
warh andar wekho kehra ae
jyu khalkat bahar juttendi ae
muh aye baat na rehandi ae, meri ...

ramdas kite fateh mohammad
eho kadeemi shor
mitt geya dohaan da jhagda
nikal peya koi hor, meri ...

jhooth akhan te kuch na bachda e
Sach akhan te bhambar machda e
Jee dohan gallan toh jhakda e
Jach jach ke jheebh e kehndi e
Muh aayi baat na rehndi e, meri ...

Arsh munawwar miliyan banga
Suniyan takht lahore
Shah inayat kundiyan payiyan
Luk chup khichda dor, meri ...

CamScanner

“आदमी मुर्दे को पूजता है, अस्थियां पूजी जाती हैं। राख पूजी जाती है। लाशें पूजी जाती है।

Tarksheel Adda Tarksheel Adda Tarksheel Adda Tarksheel Adda

और जीवंत का तिरस्कार होता है। आदमी अद्भुत है।

ओशो • तर्कशील अड्डा

CamScanner

CamScanner

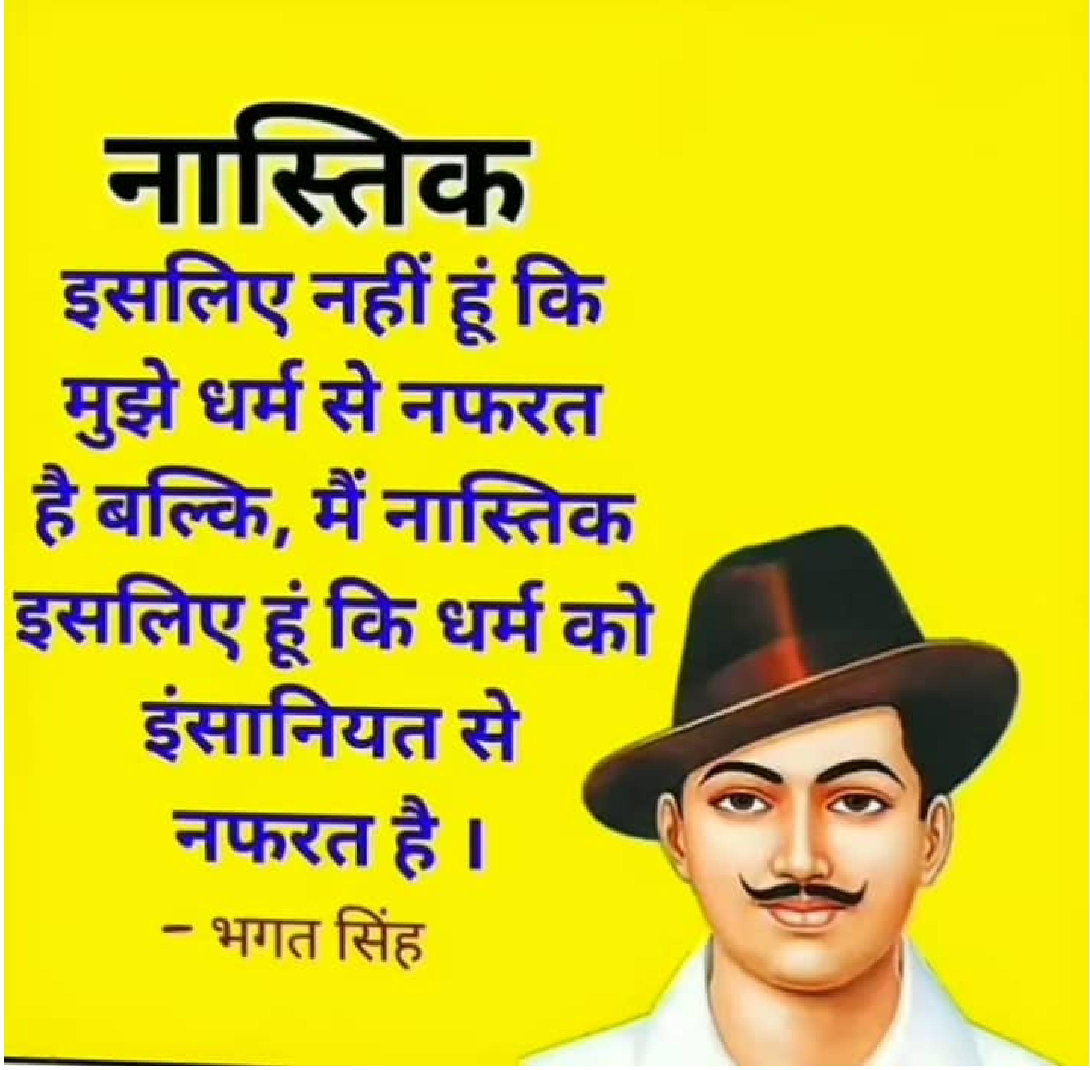
नास्तिक
इसलिए नहीं हूं कि
मुझे धर्म से नफरत
है बल्कि, मैं नास्तिक
इसलिए हूं कि धर्म को
इंसानियत से
नफरत है।
- भगत सिंह

CamScanner

CamScanner

में किसी से बेहतर करुं क्या फर्क पङता है,
में किसी का बेहतर करुं बहुत फर्क पङता है

आचार्य रजनीश

CamScanner

स्त्री ज्यादातर उस व्यक्ति से प्रेम करती है.. जिसमें कोई आंतरिक गुण हो, आकर्षण हो, कोई करिश्मा हो
वह कभी सुंदर मांसपेशियों के शरीर को नहीं देखती...

आचार्य रजनीश

CS CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

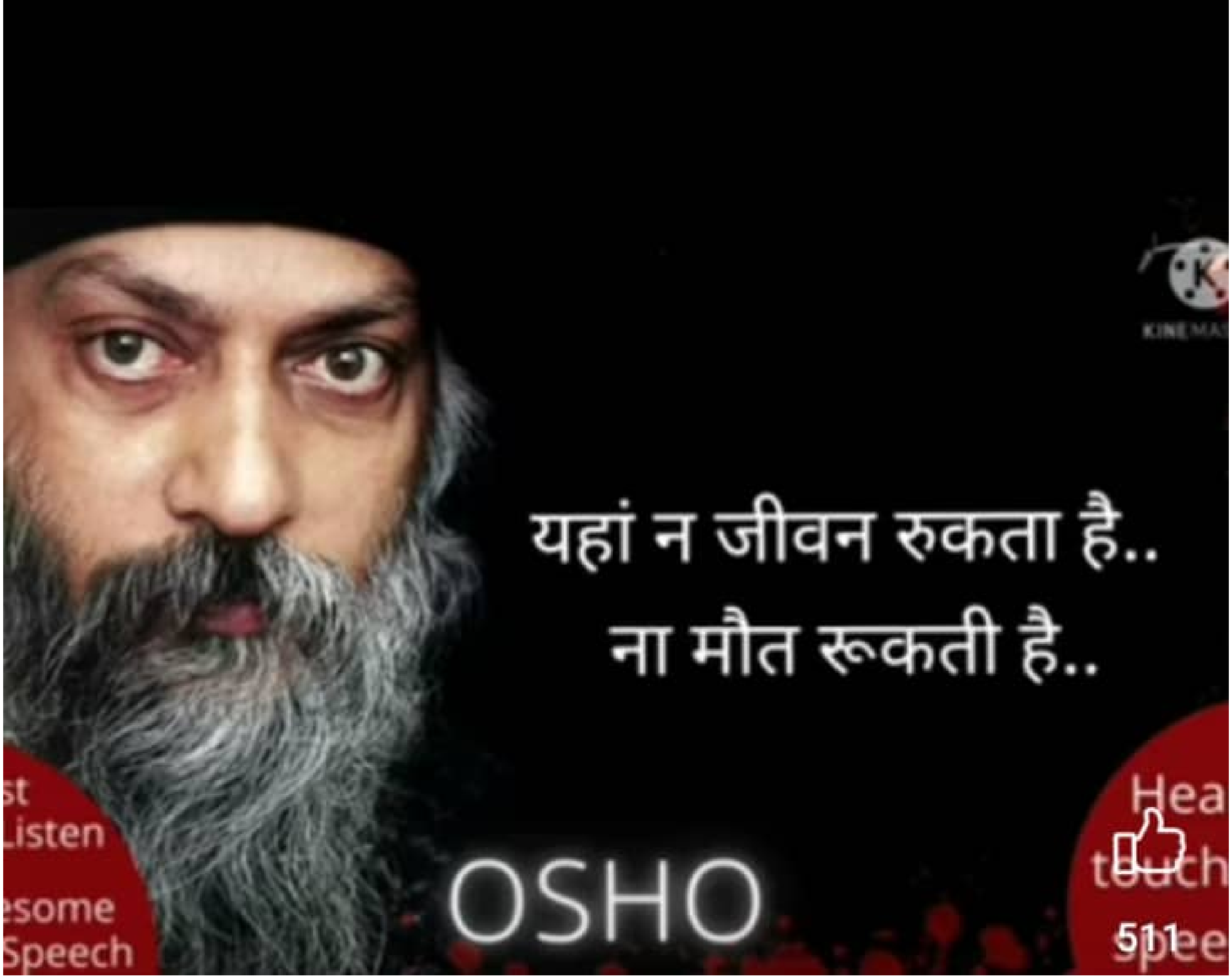

CamScanner

अगर गुस्सा आ रहा है तो खुद
तुम ही गलत हो

CamScanner

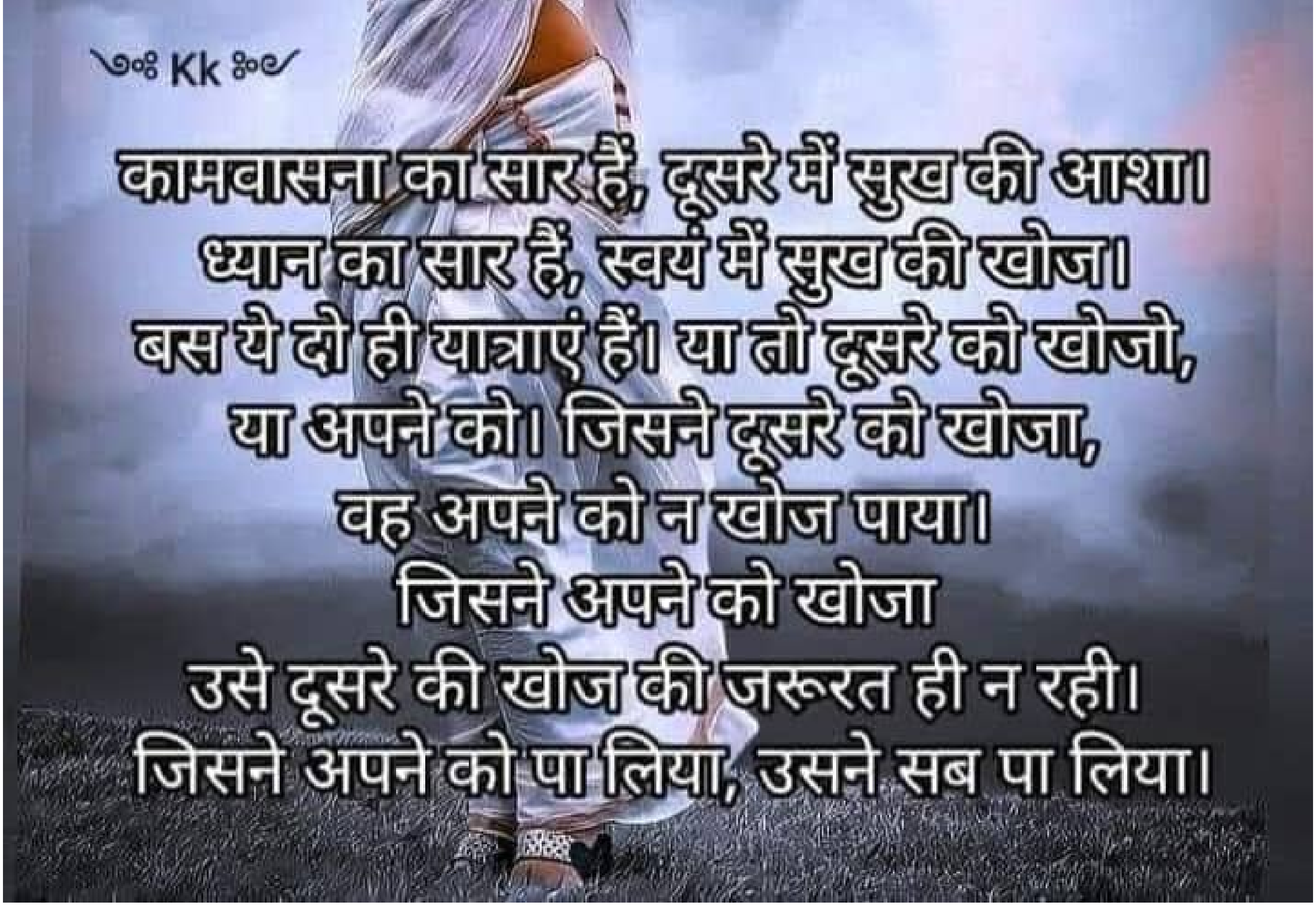
Kk
कामवासना का सार हैं, दूसरे में सुख की आशा।
ध्यान का सार हैं, स्वयं में सुख की खोज।
बस ये दो ही यात्राएं हैं। या तो दूसरे को खोजो,
या अपने को। जिसने दूसरे को खोजा,
वह अपने को न खोज पाया।
जिसने अपने को खोजा
उसे दूसरे की खोज की जरूरत ही न रही।
जिसने अपने को पा लिया, उसने सब पा लिया।

CamScanner

शांत होकर बैठ जाने की
कला का नाम है ध्यान
सिर्फ दौड़ रूक जाने से
परमात्मा मिल जाता है

CS CamScanner

CS CamScanner

जैसे हो वैसे ही प्रभु को समर्पित हो जाओ।
बस यही एक सूत्र है।

CamScanner

यह धरती ही माया है।

CamScanner

खुद का सम्मान करो, खुद से प्यार करो,

क्योंकि तुम्हारे जैसा कोई व्यक्ति कभी भी नहीं हुआ

और फिर कभी नहीं होगा।

ओशो

CamScanner

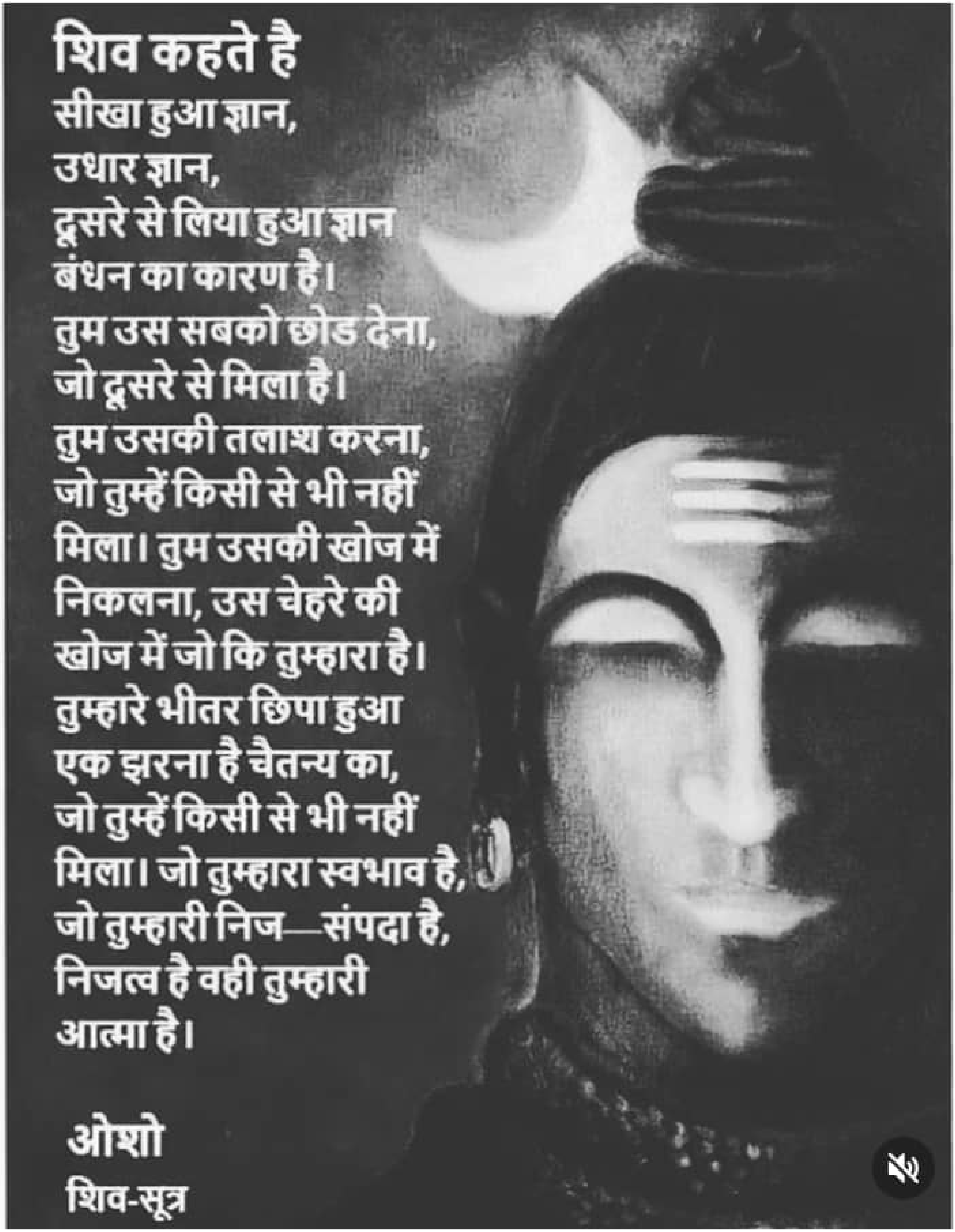
शिव कहते है
सीखा हुआ ज्ञान,
उधार ज्ञान,
दूसरे से लिया हुआ ज्ञान
बंधन का कारण है।
तुम उस सबको छोड देना,
जो दूसरे से मिला है।
तुम उसकी तलाश करना,
जो तुम्हें किसी से भी नहीं
मिला। तुम उसकी खोज में
निकलना, उस चेहरे की
खोज में जो कि तुम्हारा है।
तुम्हारे भीतर छिपा हुआ
एक झरना है चैतन्य का,
जो तुम्हें किसी से भी नहीं
मिला। जो तुम्हारा स्वभाव है,
जो तुम्हारी निज—संपदा है,
निजत्व है वही तुम्हारी
आत्मा है।
ओशो
शिव-सूत्र

CamScanner

CamScanner

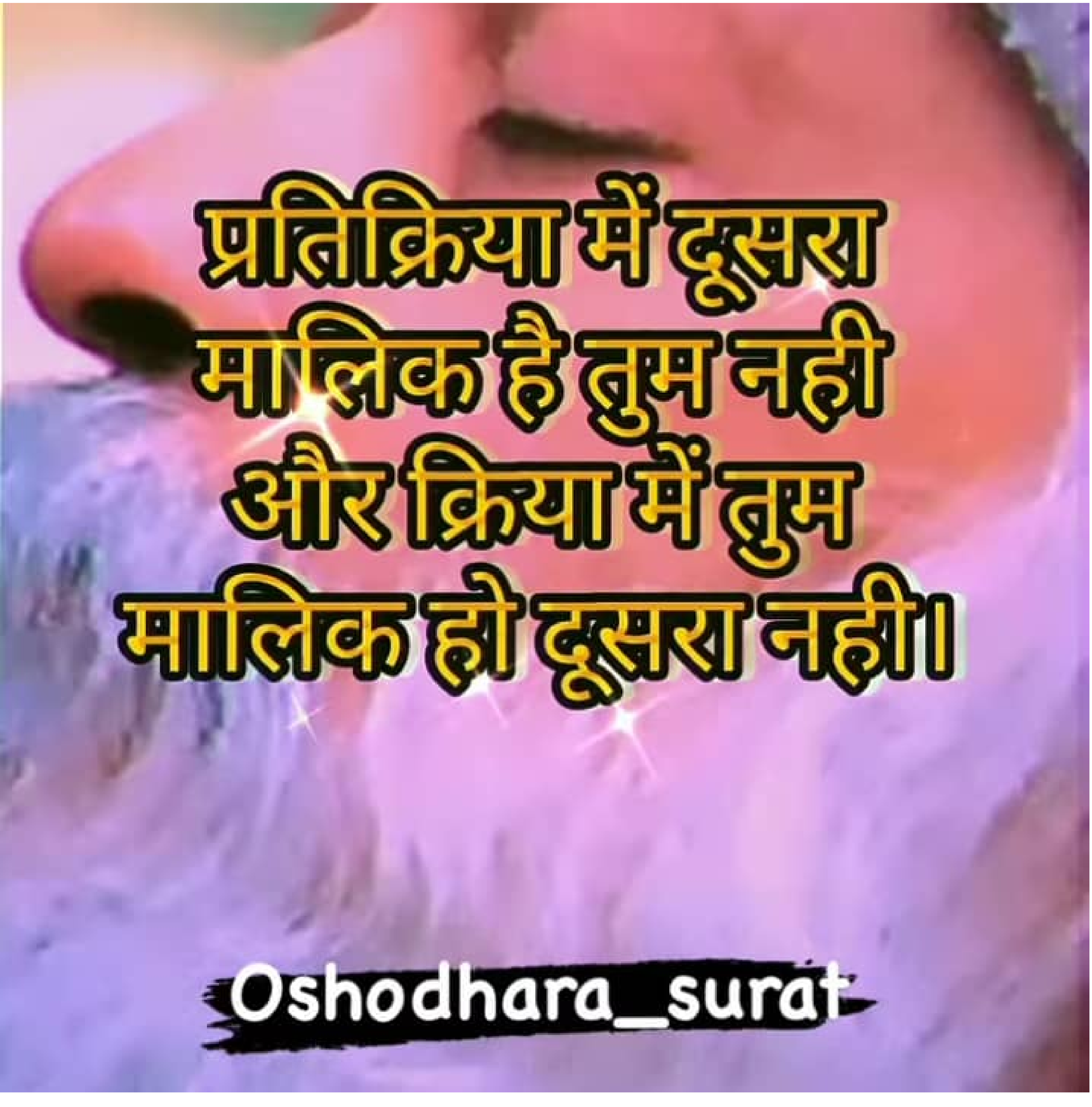

CamScanner

पूरी दुनियां में ईश्वर की
खोज लगभग खत्म होने को है
नास्तिको को के कारण नही!
धार्मिक शिक्षको के कारण!
- OSHO

CamScanner

जो हो रहा होने दो
प्रकृति विराट है
तुम नहीं रोक पाओगे
उसकी शक्ति में सब बह जाने दो
।

CamScanner

आसमान में विराट की नजरे है।
उसकी नजर से देखो।

CamScanner

12:11 pm 0 KB/s VoLTE 4G 86%
shoganga.blogspot.com 1

सामान्यतया हमारा पूरा जीवन एक यंत्र की भांति है, जिसमें हमारी कोई मालकियत, जिसमें हमारा कोई स्वामित्व नहीं है। आपके भीतर लोभ है, आप अपने लोभ के मालिक हैं? आपने लोभ को पैदा किया है? आपके भीतर सेक्स है, आप सेक्स के मालिक हैं? उसे आपने पैदा किया है? नहीं, आपने उसे पाया है। बच्चा युवा होता है और अचानक पाता है कि उसके भीतर काम ने, सेक्स ने एक तीव्र उभार लिया है, उसके भीतर कोई नई वासना जागने लगती है। जिसे वह जागते हुए पाता है, लेकिन जिसका वह मालिक नहीं है। वह वासना बिल्कुल अचेतन है, उसका उसे कोई होश नहीं, कोई बोध नहीं। लेकिन शायद वह कहता यही होगा, यह वासना मेरी है।

अगर हम अपने चित्त का ठीक-ठीक विश्लेषण करें और अपने कर्मों का भी, तो हम पाएंगे: वे हमसे होते हैं, हम उनके करने वाले नहीं हैं। और यह कर्ता का भ्रम है कि मैं कर रहा हूं। न आप अपने जन्म के मालिक हैं, आप पैदा हुए हैं। न आप अपने जीवन के मालिक हैं, जीवन आपको मिला है। न आप अपनी मृत्यु के मालिक हैं, मृत्यु घटित होगी। आप अपनी श्वास के भी मालिक नहीं हैं, जो भीतर और बाहर आ-जा रही है। लेकिन कहते हम यही हैं कि मैं श्वास ले रहा हूं। इससे ज्यादा झूठी बात आदमी ने कभी नहीं कही होगी। आप श्वास ले रहे हैं? तब तो फिर आपकी मृत्यु होनी असंभव है। मृत्यु खड़ी हो जाएगी, आप श्वास लिए ही चले जाना। लेकिन हम भलीभांति जानते हैं कि जो श्वास बाहर चली गई और नहीं लौटने को है, तो हम उसे नहीं लौटा सकेंगे।

तो यह कहना गलत है कि मैं श्वास ले रहा हूं। यही कहना ठीक है कि श्वास आ रही है, जा रही है, मैं कहां आता हूं इसमें!

यह कहना गलत है कि मेरा जन्म-दिन। मुझसे पूछा था किसी ने? मेरा कोई वश है मेरे जन्म पर? मेरा कोई अधिकार है? मेरी कोई स्वीकृति है? नहीं, मैं कहीं भी नहीं आता हूं। जीवन जन्मता है। लेकिन मैं कहता हूं: मेरा जन्म! श्वास चलती है, लेकिन मैं कहता हूं: मेरी श्वास! मैं ले रहा हूं। क्रोध उठता है, काम उठता है, लोभ उठता है और मैं कहता हूं: मेरा क्रोध! मेरा प्रेम! मेरी घृणा! मेरे मित्र! मेरे शत्रु! बहुत अनजाने और बहुत नासमझी से, जो सारी क्रियाएं बिल्कुल यांत्रिक, मैकेनिकल हैं, उनके हम स्वामित्व की घोषणा करने लगते हैं और कहते हैं कि मैं इनका मालिक हूं। इस बात की कसौटी इससे हो सकेगी कि अगर आपके भीतर क्रोध हो और आप न चाहें तो न हो, तो हम समझ सकेंगे कि आप क्रोध करते हैं। एक आदमी आपको गाली दे, आप चाहें तो क्रोध हो और चाहें तो क्रोध न हो, तो हम समझेंगे कि क्रोध के आप कर्ता हैं, क्रोध के आप मालिक हैं। लेकिन अगर आपके बिना चाहे सब होता है, तब तो बड़ी कठिनाई है। बुद्ध एक गांव के पास से निकले। कुछ लोगों ने आकर बुद्ध को गालियां

CS CamScanner

इंद्र मनुष्य की इंद्रियों के स्वामी हैं । जब कोई ऋषि मुनि तपस्या करते थे तो उनका उद्देश्य धन ऐश्वर्य अर्जित करना नहीं होता था बल्कि अपनी इंद्रियों को वश में करने का होता था । इसलिए इंद्र का सिंहासन डोलने लगता था । इंद्र का काम है कि पाँचों इंद्रियाँ मनुष्य में सहज बनी रहें । इस काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए इंद्र वो हर कोशिश करता है ।

CS CamScanner

CamScanner

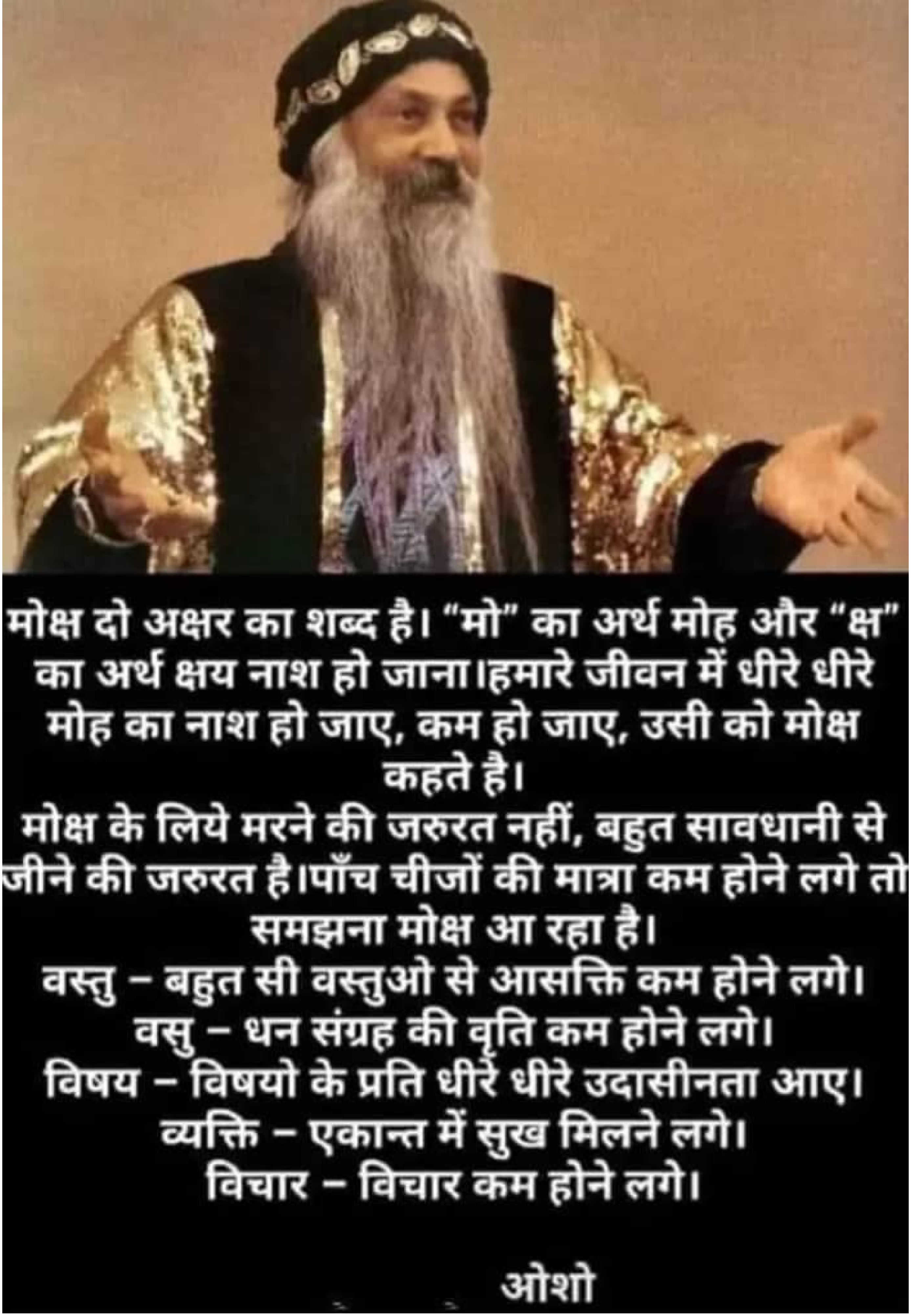
मोक्ष दो अक्षर का शब्द है। "मो" का अर्थ मोह और "क्ष"
का अर्थ क्षय नाश हो जाना।हमारे जीवन में धीरे धीरे
मोह का नाश हो जाए, कम हो जाए, उसी को मोक्ष
कहते है।
मोक्ष के लिये मरने की जरुरत नहीं, बहुत सावधानी से
जीने की जरुरत है।पाँच चीजों की मात्रा कम होने लगे तो
समझना मोक्ष आ रहा है।
वस्तु – बहुत सी वस्तुओ से आसक्ति कम होने लगे।
वसु – धन संग्रह की वृति कम होने लगे।
विषय – विषयो के प्रति धीरे धीरे उदासीनता आए।
व्यक्ति – एकान्त में सुख मिलने लगे।
विचार – विचार कम होने लगे।
ओशो

CamScanner

3:30 pm 0 KB/s 52%

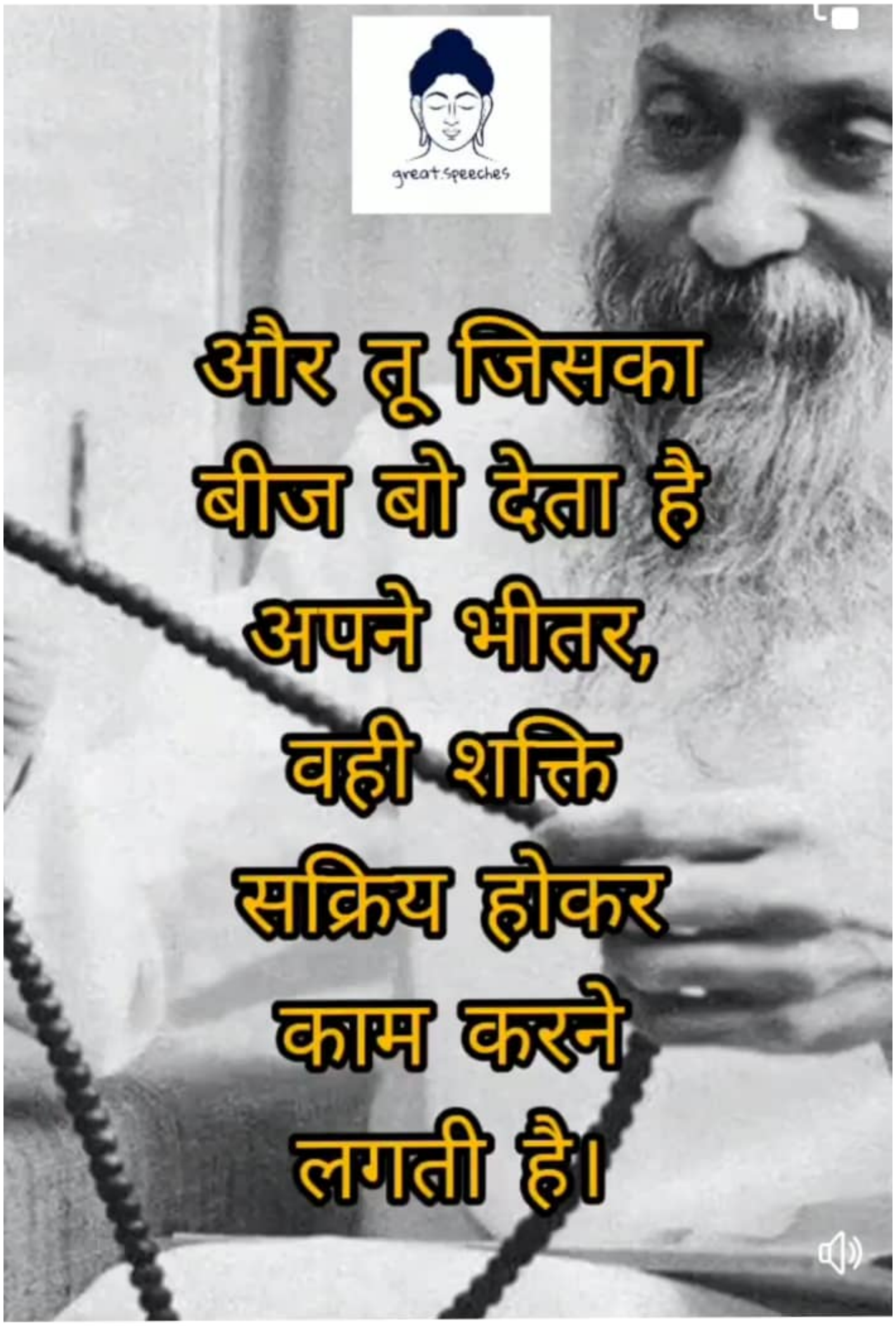

2.8K 45 comments • 707 shares • 148 views

Like Comment Share

Divya Darshan • Follow
5 Oct 2021 ·

मानव मुक्ति का द्वार || शिवलिंग / ध्यानलिंग : मानव मुक्ति का रहस्य ||
... See more

CamScanner

9:02 pm 0 KB/s 34%

Instagram

Follow Follow

osho_divine_eyesight
Buddha's Flute • Osho Dream

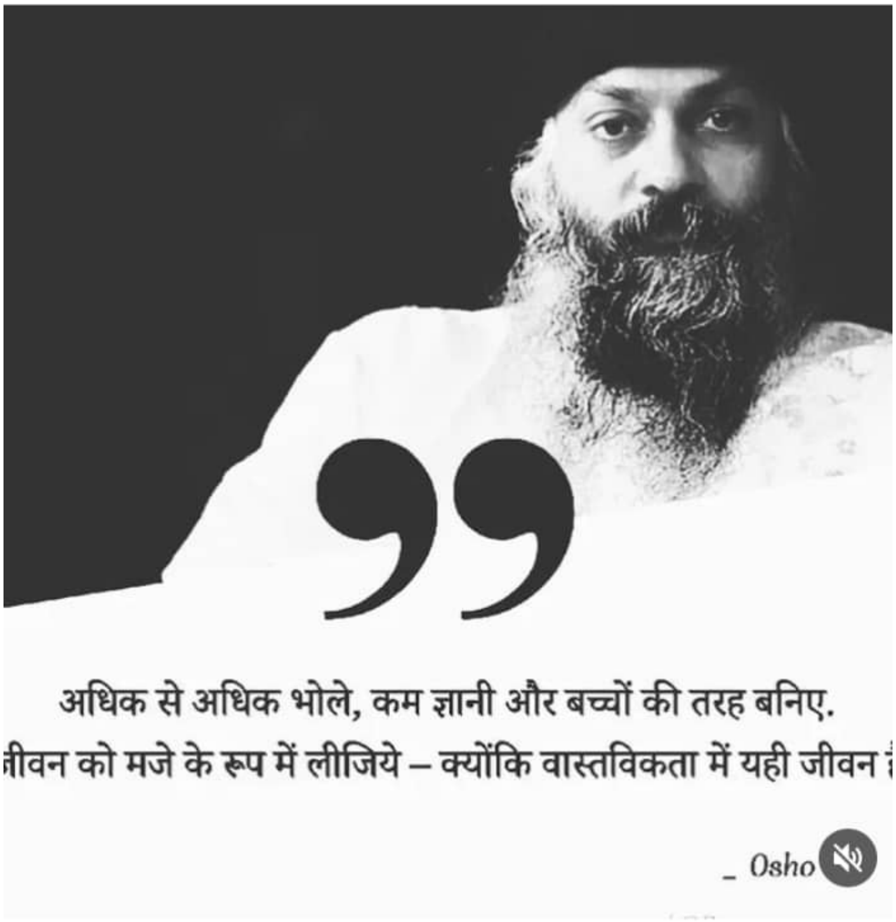

260 likes

osho_divine_eyesight ओशो❤️... more

Add a comment...

14 hours ago

ipl2k23official
Sponsored

9:16 pm 438 KB/s 30%

2 hours ago • See translation

oshodhara_surat

oshodhara_surat • Original audio

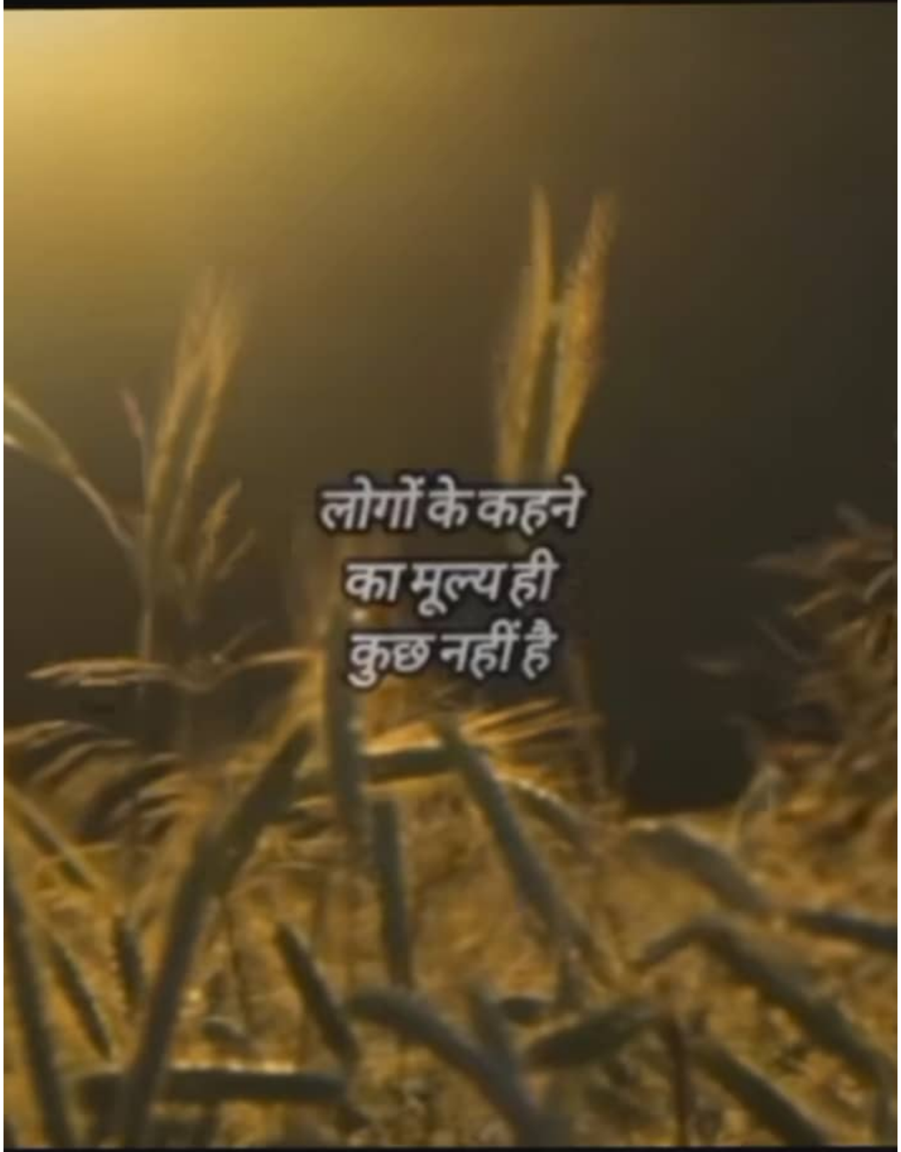

11 likes

CamScanner

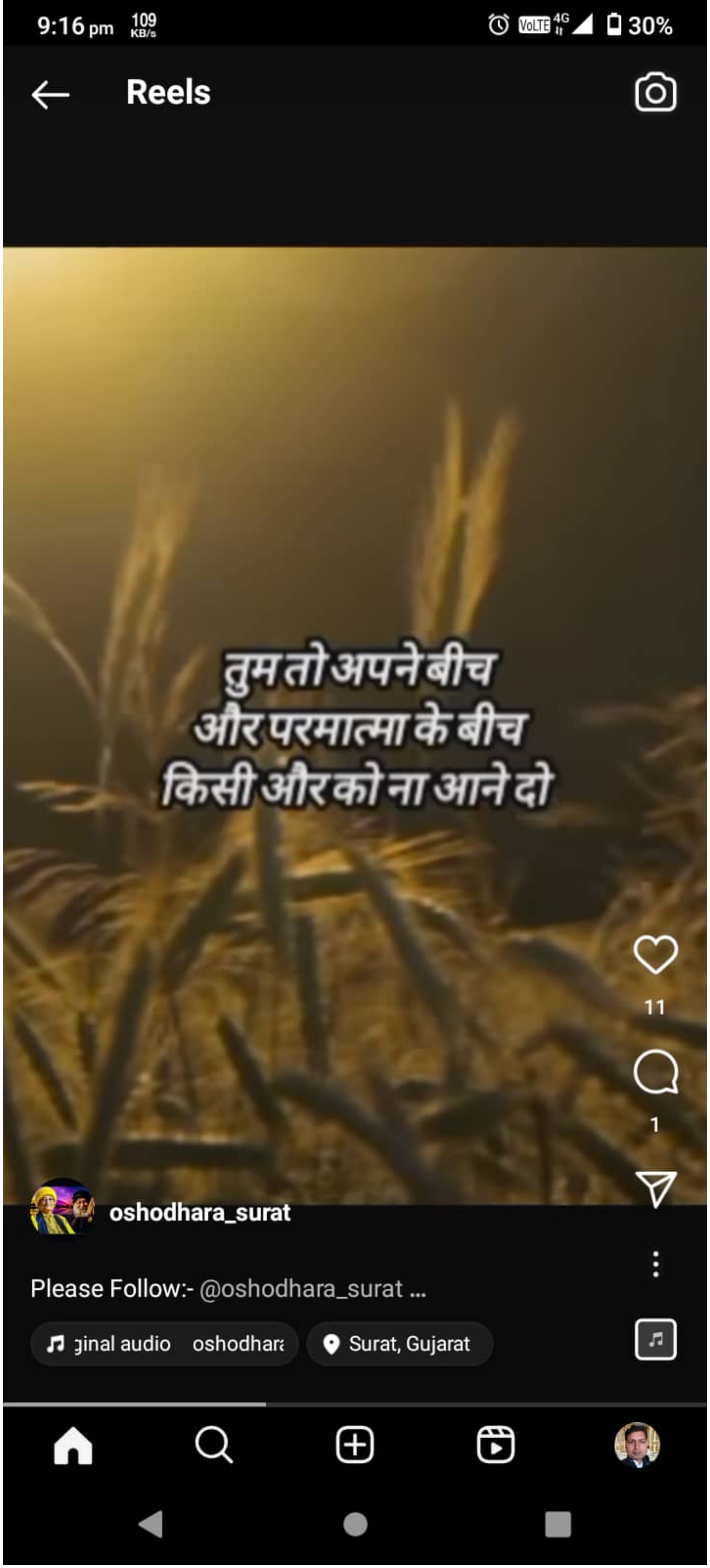
9:16 pm
Reels
तुम तो अपने बीच
और परमात्मा के बीच
किसी और को ना आने दो
11
1
oshodhara_surat
Please Follow:- @oshodhara_surat ...
ginal audio oshodhara
Surat, Gujarat

CamScanner

10:08 pm 0 KB/s VoLTE 4G 22%

3

मुहम्मद के जीवन में उल्लेख है, उनको जो कुछ मिलता दिन भर में, वे खाने–पीने के बाद जो बचता सांझ को बांट देते, रात भिखारी हो कर सो जाते।... See more

250 18 comments • 23 shares

Like Comment Share

CamScanner

मैं तुम्हें ज्ञान देता नहीं,
तुमसे ज्ञान छीनता हूँ।

मैं तुम्हें शून्य
देना चाहता हूँ।
शून्य का ही
दूसरा नाम
ध्यान है।
ओशो
"सहज-योग"

CamScanner

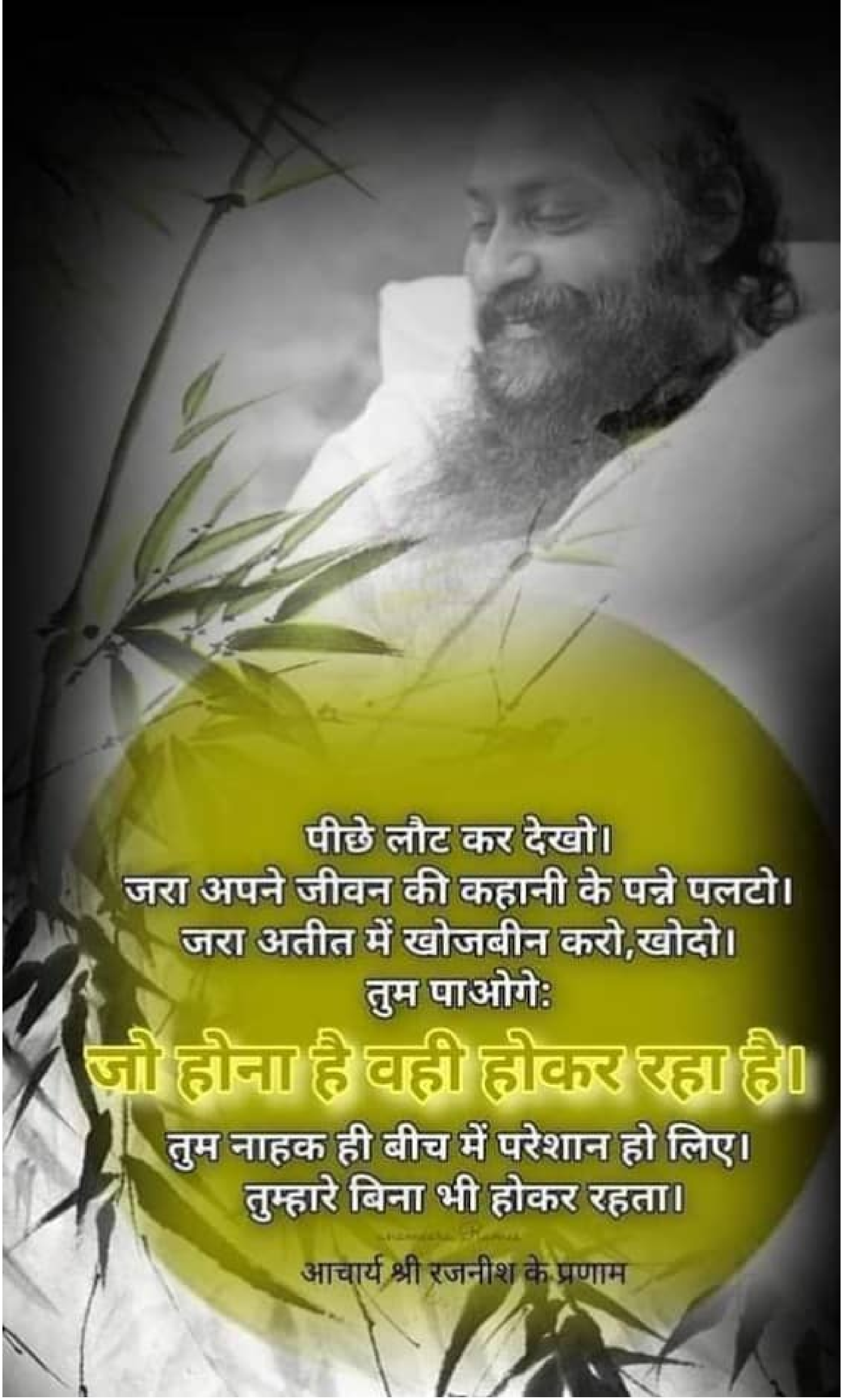

CS CamScanner

अंतिम रुप में मैं तुमसे यही कहना चाहता हूँ की अगर तुम्हारे जीवन में जरा भी बुद्धि हैं तो इस चुनौती को स्वीकार कर लेना कि बिना अपने को जाने अर्थी को उठने नही दोगे। हाँ अपने को जानकर कल की उठने वाली अर्थी आज उठ जाए तो भी कोई हर्ज नही क्योंकि जिसने अपने को जान लिया उसकी फिर कोई मृत्यु नही है !!

ओशो

CamScanner

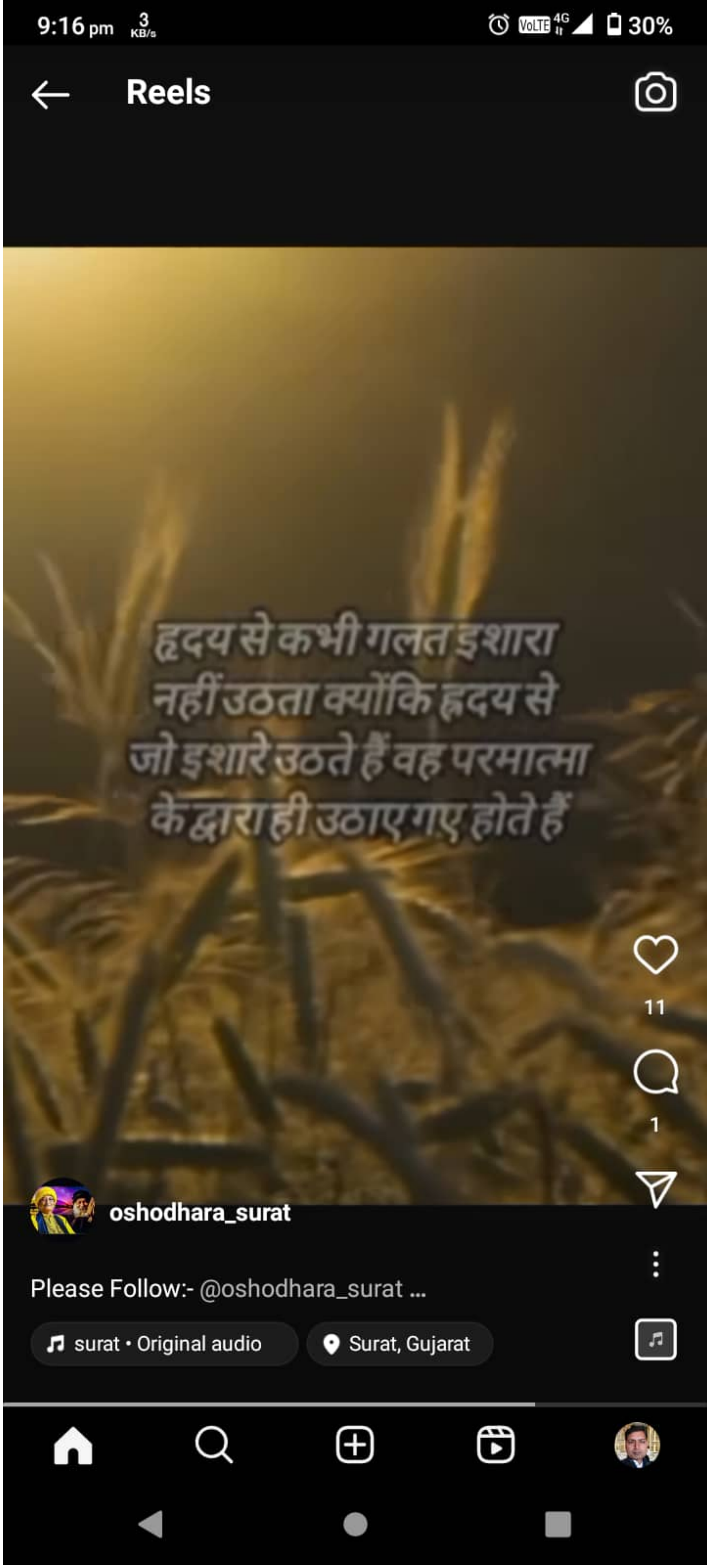
9:16 pm
Reels
हृदय से कभी गलत इशारा
नहीं उठता क्योंकि हृदय से
जो इशारे उठते हैं वह परमात्मा
के द्वारा ही उठाए गए होते हैं
11
1
oshodhara_surat
Please Follow:- @oshodhara_surat ...
surat • Original audio
Surat, Gujarat

CamScanner

ओशो

भक्त के जीवन का सबसे बड़ा चमत्कार यह नहिं है कि वह पानी पर चल ले। पानी चलने को बना भी नहिं है।भक्त के जीवन का बड़ा चमत्कार यह नहिं है कि वह आकाश मे उड़ ले।परमात्मा को आदमी को आकाश मे उड़ाना होता तो पंख दिये होते। भक्त के जीवन का बड़ा चमत्कार यही है,एकमात्र चमत्कार यही है कि समय की धारा मे समयातीत को खींच लाता है;क्षुद्र के मध्य विराट को बुला लेता है।

CamScanner

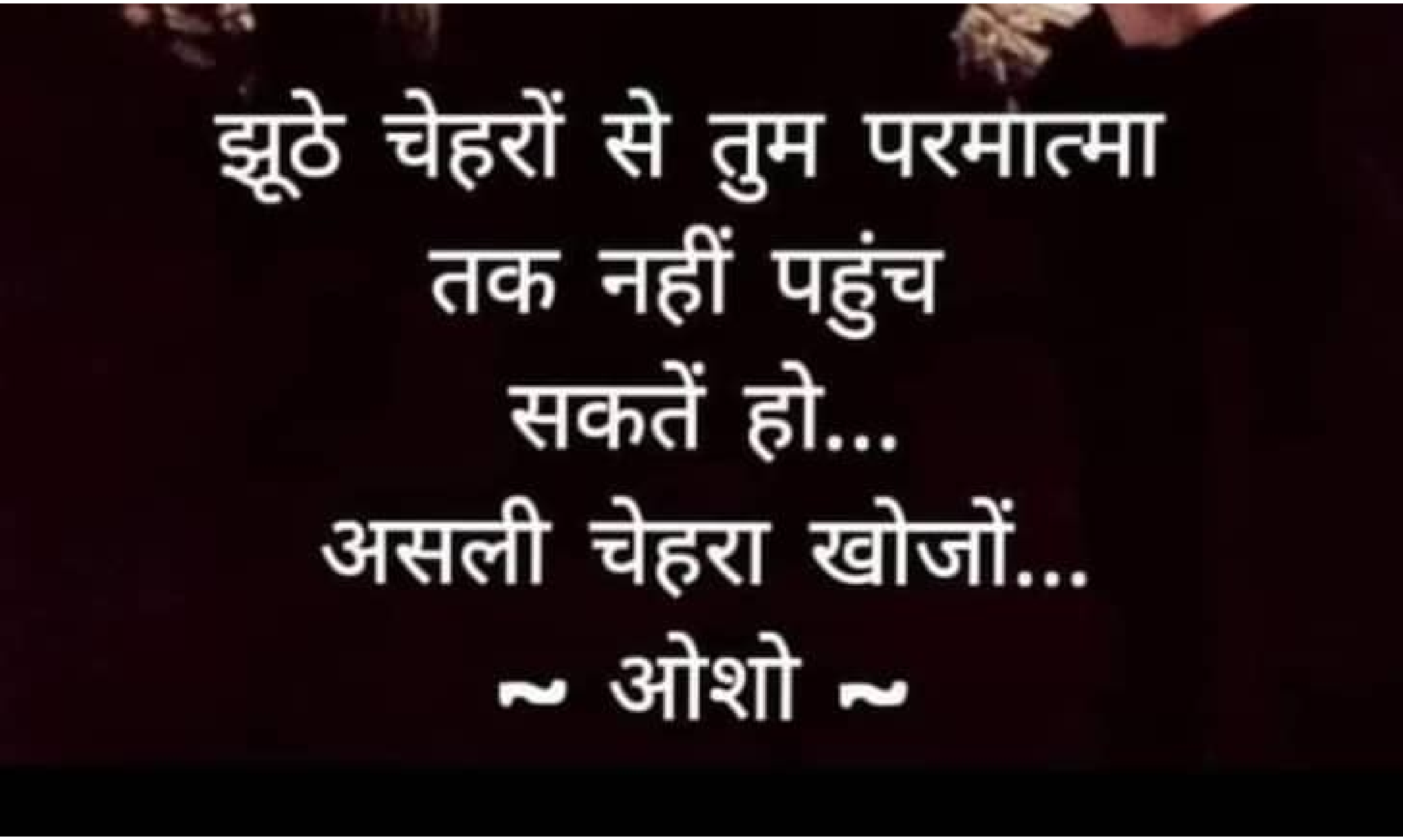

CamScanner

ब्रूस ली ने एक बार कहा था दर्द आपको सिखाने आता है जब आप सीख जाते हैं तो आपको छोड़ देता है।

CS CamScanner

समय के साथ चलना सिखो
शास्त्रों के मुताविक नहीं

CamScanner

CamScanner

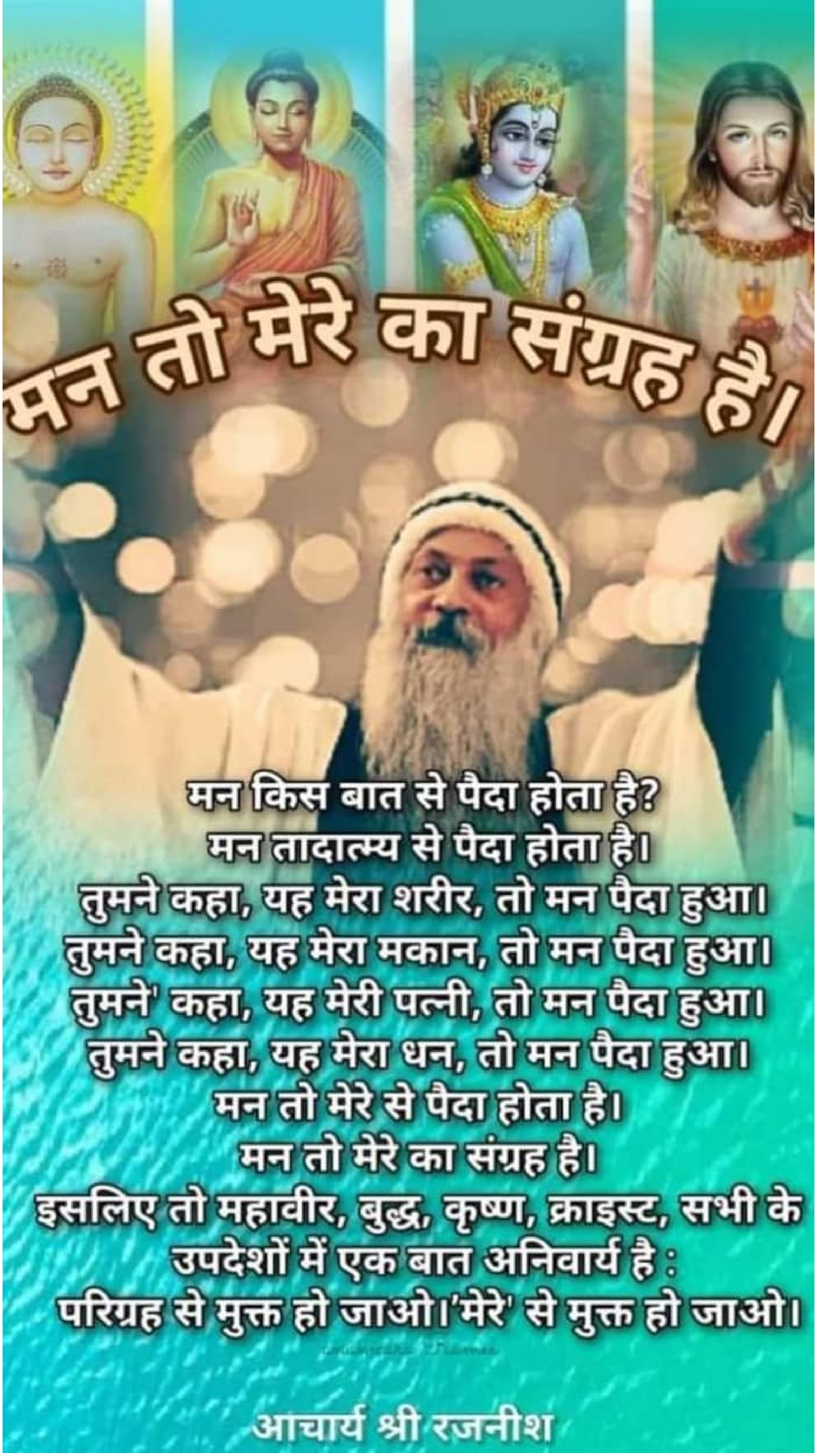
मन तो मेरे का संग्रह है।
मन किस बात से पैदा होता है?
मन तादात्म्य से पैदा होता है।
तुमने कहा, यह मेरा शरीर, तो मन पैदा हुआ।
तुमने कहा, यह मेरा मकान, तो मन पैदा हुआ।
तुमने' कहा, यह मेरी पत्नी, तो मन पैदा हुआ।
तुमने कहा, यह मेरा धन, तो मन पैदा हुआ।
मन तो मेरे से पैदा होता है।
मन तो मेरे का संग्रह है।
इसलिए तो महावीर, बुद्ध, कृष्ण, क्राइस्ट, सभी के
उपदेशों में एक बात अनिवार्य है :
परिग्रह से मुक्त हो जाओ।'मेरे' से मुक्त हो जाओ।
आचार्य श्री रजनीश

CamScanner

चरित्र को पवित्र करने का
कोई इत्र नहीं मिलता, अपने
किरदार से इंसान खुद
महकता है।
Author Raushan Kumar

CamScanner

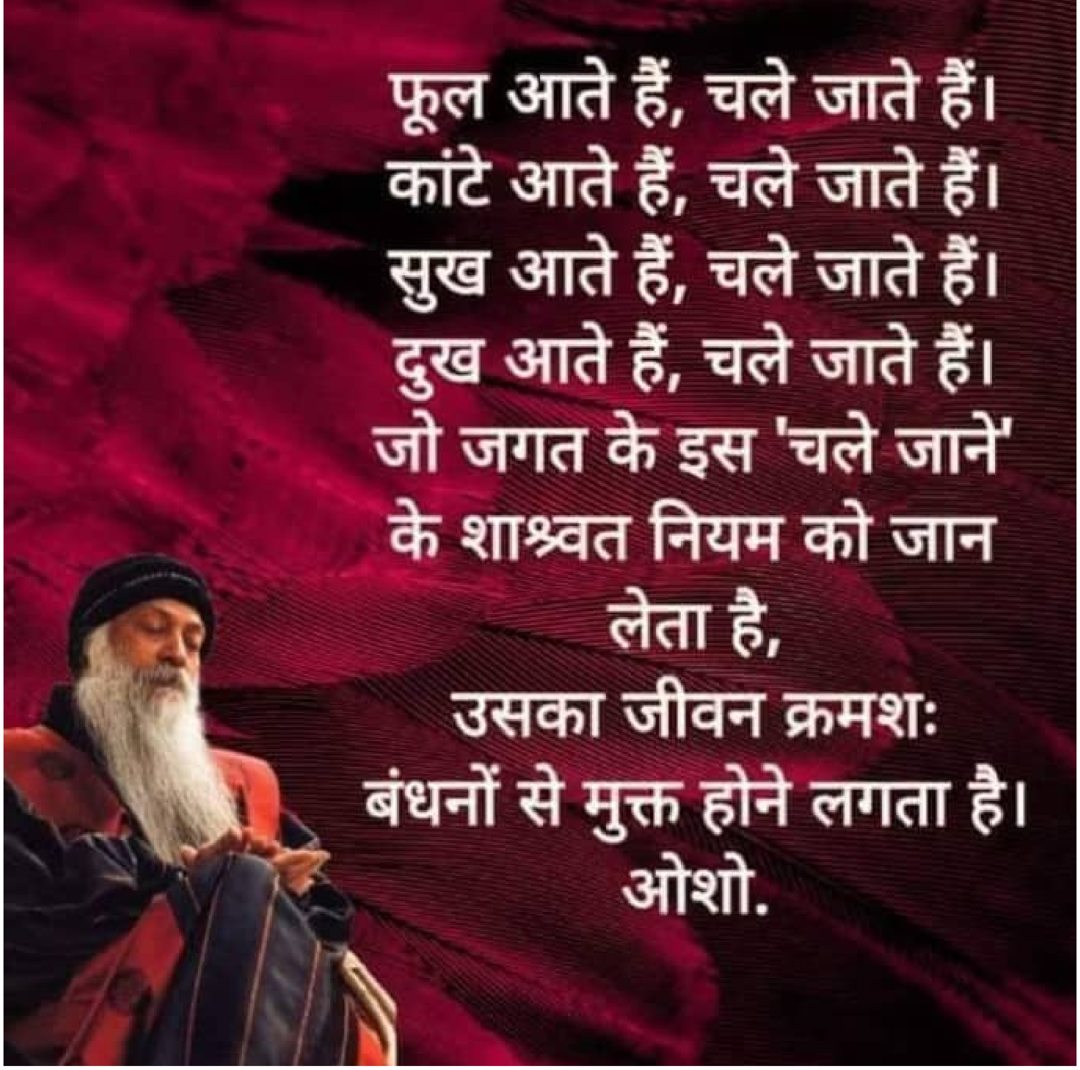
फूल आते हैं, चले जाते हैं।
कांटे आते हैं, चले जाते हैं।
सुख आते हैं, चले जाते हैं।
दुख आते हैं, चले जाते हैं।
जो जगत के इस 'चले जाने'
के शाश्वत नियम को जान
लेता है,
उसका जीवन क्रमशः
बंधनों से मुक्त होने लगता है।
ओशो.

CamScanner

CamScanner

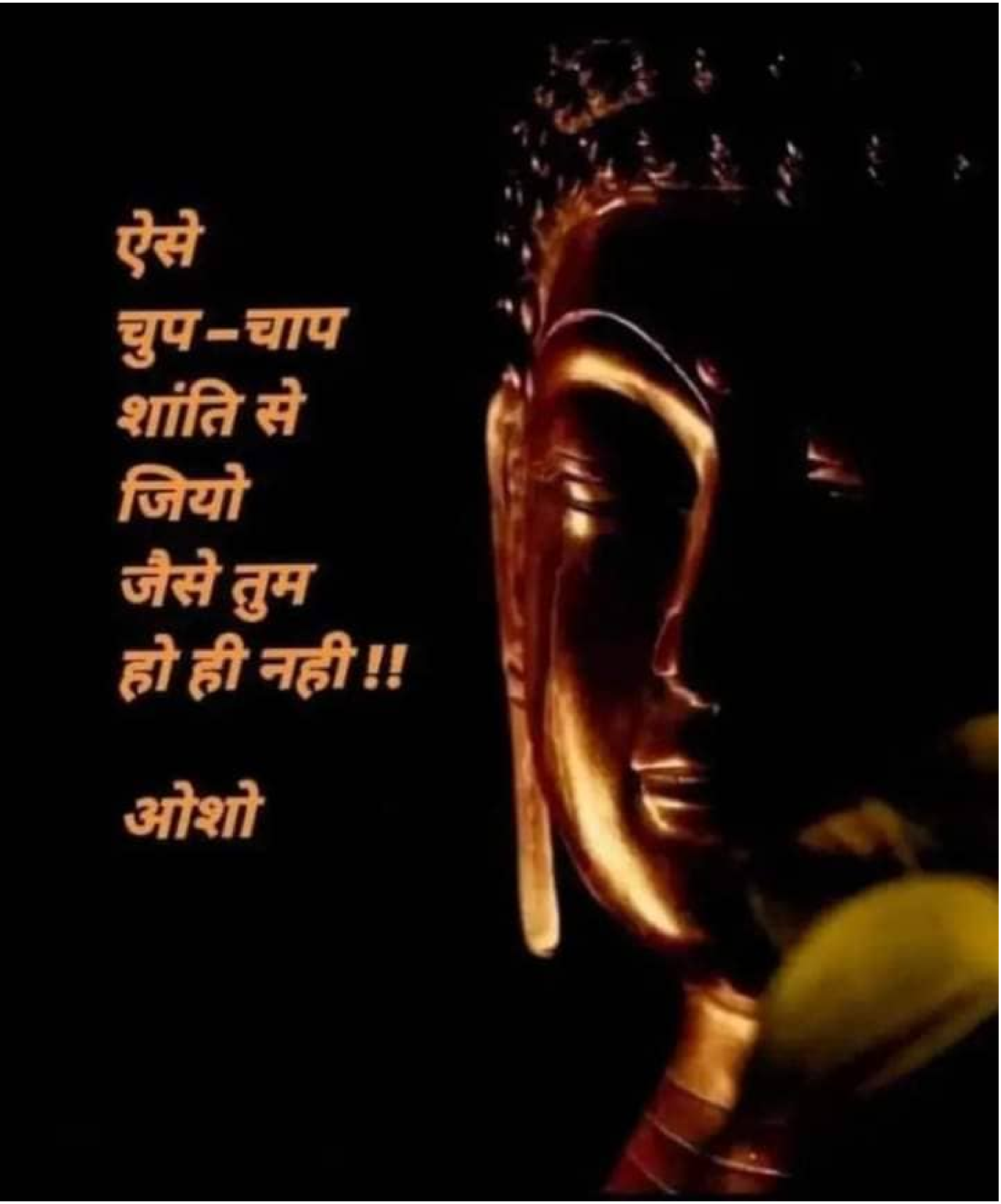

CamScanner

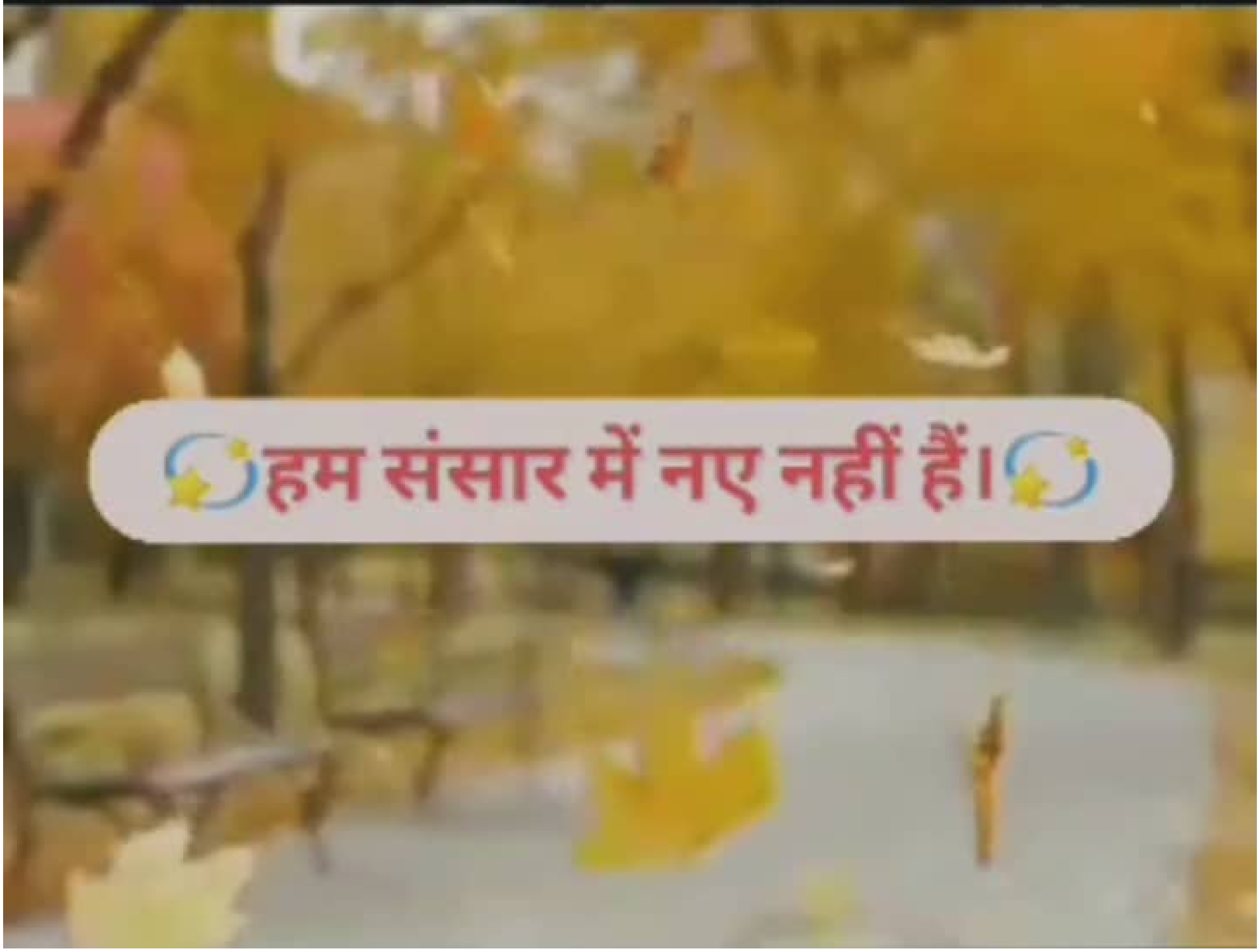

CamScanner

CamScanner

यह कहानी तुमने सुनी होगी कि चीन की दीवाल के एक खास स्थल पर एक चमत्कारपूर्ण घटना घटती है। कहानी ही है, लेकिन अर्थपूर्ण है। दीवाल के उस खास स्थल पर जो भी चढ़ कर दूसरी तरफ झांकता है, जोर से हंसता है और कूद पड़ता है, फिर लौटता नहीं।

बहुत लोग उस दीवाल पर यह कस्त करके झांकने गए कि न तो हम हंसेंगे, न हम कूदेंगे। मगर कोई भी अपवाद सिद्ध नहीं हुआ। जो भी गया, हंसा भी, कूदा भी, खो भी गया। कोई भी लौट कर बता नहीं पाता--क्या देखा, क्यों हंसे, क्यों कूदे, कहां खो गए!

यह तो कहानी ही है, लेकिन यह कहानी बड़ी प्रतीकात्मक है। परमात्मा की खोज में जो जाते हैं, उनकी भी दशा ऐसी ही है। झांक कर जिन्होंने देखा वे हंसे, खिलखिला कर हंसे। बेबूझ उनकी हंसी है। रहस्यपूर्ण उनकी हंसी है। उलटबांसी जैसी उनकी हंसी है। अनिर्वचनीय उनकी हंसी है। न हो सकती है उसकी व्याख्या, न कभी हुई है, न कभी होगी। मगर उनके जीवन में एक अदभुत आनंद, एक अदभुत हास्य, एक मुस्कुराहट जरूर लोगों ने देखी है। जब कि जीवन इतने दुख से भरा है, तब भी बुद्ध की आंखों में एक आनंद है! जब कि जीवन इतनी पीड़ा से भरा है, तब भी महावीर के चारों तरफ एक मस्ती है! जब कि जीवन में सिवाय कांटों ही कांटों के और कुछ दिखाई नहीं पड़ता, तब भी कृष्ण के जीवन में बांसुरी बज रही है!

इसी हंसी की ओर इंगित है--इसी मस्ती की ओर, इसी मदहोशी की ओर। जैसे जो दुनिया में हो रहा है, सब स्वप्नवत है। जैसे यह कुछ ध्यान देने योग्य नहीं। ये सारे दुख, ये सारी पीड़ाएं जैसे बस कल्पित हैं, लोगों के मन के ही जाल हैं।

जिसने परमात्मा को देखा है, वह दुनिया पर हंसने लगा है।
इसलिए हंसने लगा है कि यह दुनिया सिवाय एक नाटक के मंच के और कुछ भी नहीं है। न यहां परेशान होने जैसा कुछ है, न पीड़ित होने जैसा कुछ है। पीड़ित हो तो तुम अपनी मूर्च्छा के कारण और परेशान हो तो तुम अपनी नासमझी के कारण। जागो तो सब अभिनय है, सब खेल है। जागोगे तो हंसोगे। जागोगे तो हंसोगे अपने पर कि मैं भी कैसा पागल था, कितना व्यथित था! जागोगे अपने सारे अतीत पर, वह लंबा-लंबा

CamScanner

10:36 am 0 KB/s VoLTE 4G 93%

यह कहानी तुमने सुनी होगी कि चीन की दीवाल के एक खास स्थल पर एक चमत्कारपूर्ण घटना घटती है। कहानी ही है, लेकिन अर्थपूर्ण है। दीवाल के उस खास स्थल पर जो भी चढ़ कर दूसरी तरफ झांकता है, जोर से हंसता है और कूद पड़ता है, फिर लौटता नहीं।

बहुत लोग उस दीवाल पर यह कस्त करके झांकने गए कि न तो हम हंसेंगे, न हम कूदेंगे। मगर कोई भी अपवाद सिद्ध नहीं हुआ। जो भी गया, हंसा भी, कूदा भी, खो भी गया। कोई भी लौट कर बता नहीं पाता--क्या देखा, क्यों हंसे, क्यों कूदे, कहां खो गए!

यह तो कहानी ही है, लेकिन यह कहानी बड़ी प्रतीकात्मक है। परमात्मा की खोज में जो जाते हैं, उनकी भी दशा ऐसी ही है। झांक कर जिन्होंने देखा वे हंसे, खिलखिला कर हंसे। बेबूझ उनकी हंसी है। रहस्यपूर्ण उनकी हंसी है। उलटबांसी जैसी उनकी हंसी है। अनिर्वचनीय उनकी हंसी है। न हो सकती है उसकी व्याख्या, न कभी हुई है, न कभी होगी। मगर उनके जीवन में एक अदभुत आनंद, एक अदभुत हास्य, एक मुस्कुराहट जरूर लोगों ने देखी है। जब कि जीवन इतने दुख से भरा है, तब भी बुद्ध की आंखों में एक आनंद है! जब कि जीवन इतनी पीड़ा से भरा है, तब भी महावीर के चारों तरफ एक मस्ती है! जब कि जीवन में सिवाय कांटों ही कांटों के और कुछ दिखाई नहीं पड़ता, तब भी कृष्ण के जीवन में बांसुरी बज रही है!

इसी हंसी की ओर इंगित है--इसी मस्ती की ओर, इसी मदहोशी की ओर। जैसे जो दुनिया में हो रहा है, सब स्वप्नवत है। जैसे यह कुछ ध्यान देने योग्य नहीं। ये सारे दुख, ये सारी पीड़ाएं जैसे बस कल्पित हैं, लोगों के मन के ही जाल हैं।

जिसने परमात्मा को देखा है, वह दुनिया पर हंसने लगा है।
इसलिए हंसने लगा है कि यह दुनिया सिवाय एक नाटक के मंच के और कुछ भी नहीं है। न यहां परेशान होने जैसा कुछ है, न पीड़ित होने जैसा कुछ है। पीड़ित हो तो तुम अपनी मूर्च्छा के कारण और परेशान हो तो तुम अपनी नासमझी के कारण। जागो तो सब अभिनय है, सब खेल है। जागोगे तो हंसोगे। जागोगे तो हंसोगे अपने पर कि मैं भी कैसा पागल था, कितना व्यथित था! जागोगे अपने सारे अतीत पर, वह लंबा-लंबा

CS CamScanner

https://www.lastreporter.in › 2021/08

न तुम हिंदू हो, न मुसलमान हो, यह हिंदू होना मुसलमान होना, सिखायी हुई बात है - ओशो

12-Aug-2021 — मै अपने पीछे कोई धर्म नहीं छोड़ जाना चाहता हूँ। -ओशो. Trending Posts. osho%252520samadhi. प्रेम ...

CS CamScanner

यह हमने बीमारी को तो स्वीकार कर लिया, हमने मान लिया, और फिर उसको जोड़ने की कोशिश में लगते हैं। नहीं, जरूरत तो इस बात की है कि सारी दीवालों को अस्वीकार कर दिया जाए जो मनुष्य को मनुष्य से विभाजित करती हैं। उन्हें जोड़ने की कोई जरूरत नहीं है, उनके जोड़ से कोई हित होने वाला नहीं है।

और जो मनुष्य ठीक-ठीक अर्थों में धार्मिक है, वह तो निश्चित ही न हिंदू हो सकता है, न मुसलमान हो सकता है, न जैन हो सकता है। जो आदमी धार्मिक है उसे हिंदू, जैन, मुसलमान होने की कहां सुविधा है? उसे किसी खंड के साथ एक होने की कहां सुविधा है? उसे किसी के विरोध में खड़े होने की कहां सुविधा है? उसका चित्त तो अविरोध को उपलब्ध होगा, उसके चित्त में तो प्रेम की धारा बहेगी, उसके लिए तो कोई पराया नहीं रह जाएगा, कोई अपना नहीं रह जाएगा, कोई दूसरा नहीं रह जाएगा। उसके लिए तो दो व्यक्तियों के बीच किसी तरह के शब्दों की, शास्त्रों की दीवाल नहीं रह जाएगी। उसके लिए तो कोई मंदिर और मस्जिद नहीं रह जाएगा। क्योंकि उसके लिए तो सारी पृथ्वी ही परमात्मा का मंदिर हो जाएगी। क्योंकि उसके लिए तो सभी के हृदय में उसी की ज्योति जलती दिखाई पड़ने लगेगी।

ये जो धर्मों में बंटे हुए लोग हैं, इन्होंने ही धर्म के जन्म में बाधा दी है। नास्तिकों ने नहीं धर्म को जगत में विकसित होने से रोका है। नास्तिकों ने कुछ भी नहीं किया आज तक। नास्तिकों का कोई संगठन भी नहीं है, यह भी आपको पता होना चाहिए। नास्तिकों का कोई आर्गनाइजेशन भी नहीं है, उनका कोई चर्च और मंदिर भी नहीं है, उनका कोई शास्त्र भी नहीं है, उनका कोई झंडा भी नहीं है। वे इकट्ठे होकर कुछ भी नहीं किए हैं आज तक। नास्तिकों के ऊपर आज तक कोई अपराध भी नहीं है कि उन्होंने आग लगाई हो, मकान जलाए हों, लोगों की हत्या की हो, लोगों को जलाया हो, यह कुछ भी नहीं है। नास्तिकों ने धर्म को नहीं कोई नुकसान पहुंचाया। नुकसान पहुंचाया है उन धार्मिकों ने जो हिंदू हैं, जो मुसलमान हैं, जो जैन हैं, जो ईसाई हैं। क्यों? उन्होंने ये विभाजन करके उस धर्म को आने से रोक दिया, जिसका कभी कोई विभाजन नहीं हो सकता है।

क्या आप सोचते हैं सत्य भी बहुत प्रकार के हो सकते हैं? क्या आप सोचते हैं आत्मा के संबंध में भी बहुत सत्य हो सकते हैं? परमात्मा के संबंध में भी बहुत सत्य हो सकते है? क्या आप सोचते हैं कि हिंदुओं का गणित अलग, मुसलमानों का गणित अलग होगा? होता था पहले, यहीं हिंदुस्तान में जैनियों का गणित अलग होता था, हिंदुओं का अलग होता था। कैसे पागलपन के दिन रहे होंगे! गणित भी अलग-अलग हो सकता है? केमिस्ट्री या फिजिक्स अलग-अलग हो सकती है? ईसाइयों की अलग, मुसलमानों की अलग।

नहीं; जब पदार्थ के संबंध में सत्य अलग-अलग नहीं हो सकते, तो परमात्मा के संबंध में कैसे हो सकते हैं? जब पदार्थ तक के संबंध में

10:57 am 0 KB/s VoLTE 4G 90%

यह लजारस के लिए बड़ी सांत्वना देने वाली बात है, जब जीसस उससे कहते हैं...ऐसा हुआ कि लजारस अत्यंत दरिद्र था। और गांव का सर्वाधिक संपन्न व्यक्ति अपने जन्म-दिन पर शानदार दावत दे रहा था। भूखा-प्यासा लजारस उस गांव से गुजरता था। उसने थोड़ा सा पानी मांगा तो नौकरों-चाकरों ने उसे धक्के मार कर बाहर निकाल दिया और बोले, ""क्या तुझे दिखाई नहीं देता कि हमारा मालिक एक भोज दे रहा है और बड़े-बड़े अतिथि इकट्ठे हुए हैं? और तू ठहरा एक मामूली भिखारी...तेरी भीतर घुसने की और पानी मांगने की हिम्मत कैसे पड़ी? चल, हट, भाग यहां से। जितनी जल्दी हो सके यहां से रफा-दफा हो जा।''

जीसस लजारस से कहते हैं, ""परेशान मत होओ। स्वर्ग में तुम सभी सुखों का उपभोग करोगे, और इस आदमी को नरक की आग में जलते हुए देखोगे-वह प्यास से तड़फ रहा होगा और तुमसे विनती करेगा कि लजारस मुझे थोड़ा सा पानी दे दो।'' कितनी भारी सांत्वना! लेकिन यह चालाकी है, गरीबों के क्रोध और ईर्ष्या से धनवानों को बचाने की साजिश है। धनी तो थोड़े हैं, निर्धन बहुत हैं। एक बार उन्हें यह खयाल आ जाए कि हमारी दरिद्रता वरदान नहीं, बल्कि अभिशाप है, शोषण का परिणाम है; तो वे इन सारे धनवानों को मार ही डालेंगे। यह तरकीब दोनों प्रकार से बढ़िया है-दीन-हीन के लिए सांत्वना कि निर्धनता वरदान है; और समृद्ध के लिए सुरक्षा, क्योंकि अब गरीब विद्रोह नहीं कर सकते।

दुनिया में धर्मों के कारण गरीबी बनी हुई है, अन्यथा इसकी कोई और वजह नहीं; खासतौर से अब, जब कि विज्ञान और तकनीक इस पूरी पृथ्वी को स्वर्ग में बदल सकते हैं।

ये धार्मिक लोग इस पृथ्वी का स्वर्ग में रूपांतरण पंसद नहीं करेंगे, क्योंकि तब उनके स्वर्ग का क्या होगा? वे इस पृथ्वी को दरिद्र, भूखी, बीमार-जैसी दुर्दशा में वह है, वैसी ही रखना चाहते हैं, क्योंकि इसी पर उनका सारा व्यवसाय निर्भर है। अमीर चर्चों को दान देते हैं, क्योंकि चर्च उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है। बेचारे गरीब तक दान देते हैं, जिनके पास खाने को भी पर्याप्त नहीं है। वे इसलिए दान देते हैं क्योंकि चर्च उन्हें सांत्वना देता है, और उनका मार्ग दर्शन करता है। यह जीवन बहुत छोटा है, कुछ ज्यादा तो है नहीं; और इसका भी अधिक हिस्सा तो गुजर चुका, अब थोड़ा सा शेष है-वह भी गुजर जाएगा। और फिर उसके बाद स्वर्ग में अनंत सुखों वाला शाश्वत जीवन है। चर्च उसका रास्ता बताता है। जीसस तुम्हें राह दिखाते हैं।

CamScanner

11:00 am 0 KB/s VoLTE 4G 90%

लेकिन तुम्हारे मन में कुछ और बातें हैं--हिंदू धर्म की रक्षा!

हिंदू धर्म धर्म नहीं है, और न मुसलमान धर्म धर्म है, ये तो सब राजनीतियों के जाल हैं। धर्म तो एक ही है, न वह हिंदू है, न मुसलमान है, न ईसाई है, न जैन है, न बौद्ध है। धर्म तो वह है, जब तुम अपने भीतर परिपूर्ण शांति में उतरते हो तो अनुभव करते हो, उस अनुभूति का नाम धर्म है। जब तुम अपने अंतरतम में डूब जाते हो तो जिसका तुम्हें स्वाद मिलता है, उसका नाम धर्म है।

लेकिन हिंदू धर्म को रक्षा की जरूरत मालूम होती है; इस्लाम को रक्षा की जरूरत मालूम होती है; ईसाई को रक्षा की जरूरत मालूम होती है। ये धर्म नहीं हैं।

तो मैं तुमसे कहता हूं: धर्म तो सदा है। जो सदा है उसी का नाम धर्म है। उसकी न कोई स्थापना करनी होती है, न कभी कोई उसे मिटा सकता है। उसका मिटना संभव ही नहीं है। अगर धर्म मिट जाए तो हम सब बिखर जाएं। अगर धर्म मिट जाए तो चांद-तारे न चलें, सूरज न निकले, पानी न बहे, हवा न उठे, फूल न खिलें, पक्षी न गाएं, लोग न हों। धर्म टूटा कि सब टूट जाए। धर्म तो सबको जोड़े हुए है। धर्म तो वह धागा है जिसने सब, सारे फूलों को अपने में गूंथा हुआ है और माला बनी है। यह सारा अस्तित्व गुंथा है। जिससे गुंथा है, उस सूत्र का नाम धर्म है। कृष्ण इत्यादि की कोई जरूरत नहीं है कि इसको स्थापित करें। कृष्ण धर्म को स्थापित करने नहीं आते हैं; जो धर्म है उसको जानने से कोई कृष्ण होता है; जो धर्म है उसको पहचान लेने से कोई कृष्ण होता है; जो धर्म है उसके साथ पूरा-पूरा संगीतबद्ध हो जाने से कोई कृष्ण होता है। कृष्ण को धर्म की स्थापना करने की जरूरत नहीं है। यह पंडित-पुरोहितों ने लिखा होगा। कृष्ण ऐसा नहीं कह सकते।

तीसरी बात तुम कहते हो: 'पापियों को दंड देना।'

पाप में स्वयं ही दंड निहित है। जब तुम पाप करते हो, उसी करने में तुम्हें दुख मिल जाता है। दुख के लिए

CamScanner

भक्त की चमक

एक ऋषि लोटा रोज मांजते थे एक शिष्य ने उनसे कहा कि गुरुवर लोटे को रोज माँजने की क्या जरूरत है सप्ताह में एक बार माँज लिया करें

ऋषि ने कहा बात तो सही है और फिर उसके बाद उन्होंने उसे नहीं माँजा उस लोटे की चमक फीकी पड़ने लगी सप्ताह बाद ऋषि ने शिष्य से कहा कि लोटे को साफ कर दो शिष्य लोटे को काफी देर माँजने के बाद भी पहले वाली चमक नही ला सका तब और काफी देर माँजा तब वह कुछ चमका

ऋषि ने कहा- लोटे से सीखो "जब तक इसे रोज माँजा जाता रहा यह रोज चमकता रहा इसी तरह भक्त होता है यदि वह रोज सुमिरन न करे तो सांसारिक विकारों से अपनी चमक खो देता है"

इसलिए भक्त को रोज सुमिरन करना होता है अगर एक दिन भी सिमरन छूटा तो भक्ति की चमक फीकी पड़ जाएगी

CamScanner

भुख , भय , मृत्यु और प्रेम सब एक साथ..

CamScanner

समय पर सब होता है। समय पर जन्म, समय पर मृत्यु; समय पर सफलता, समय पर असफलता—समय पर सब होता है। कुछ भी समय के पहले नहीं होता है। ऐसा जो जानता है कि विपत्ति और संपत्ति दैवयोग से समय आने पर घटती हैं, वह सदा संतुष्ट है। फिर जल्दी नहीं, फिर अधैर्य नहीं। जब समय होगा, फसल पकेगी, काट लेंगे। जब सुबह होगा, सूरज निकलेगा, तो सूरज के दर्शन करेंगे, धूप सेंक लेंगे। जब रात होगी, विश्राम करेंगे, आराम करेंगे; सब छोड़—छाड़, डूब जाएंगे निद्रा में। सब अपने से हो रहा है और सब अपने समय पर हो रहा है। अशांति तब पैदा होती है जब हम समय के पहले कुछ मांगने लगते हैं; हम कहते हैं, जल्दी हो जाए।

अष्टावक्र महागीता -3/31

CamScanner

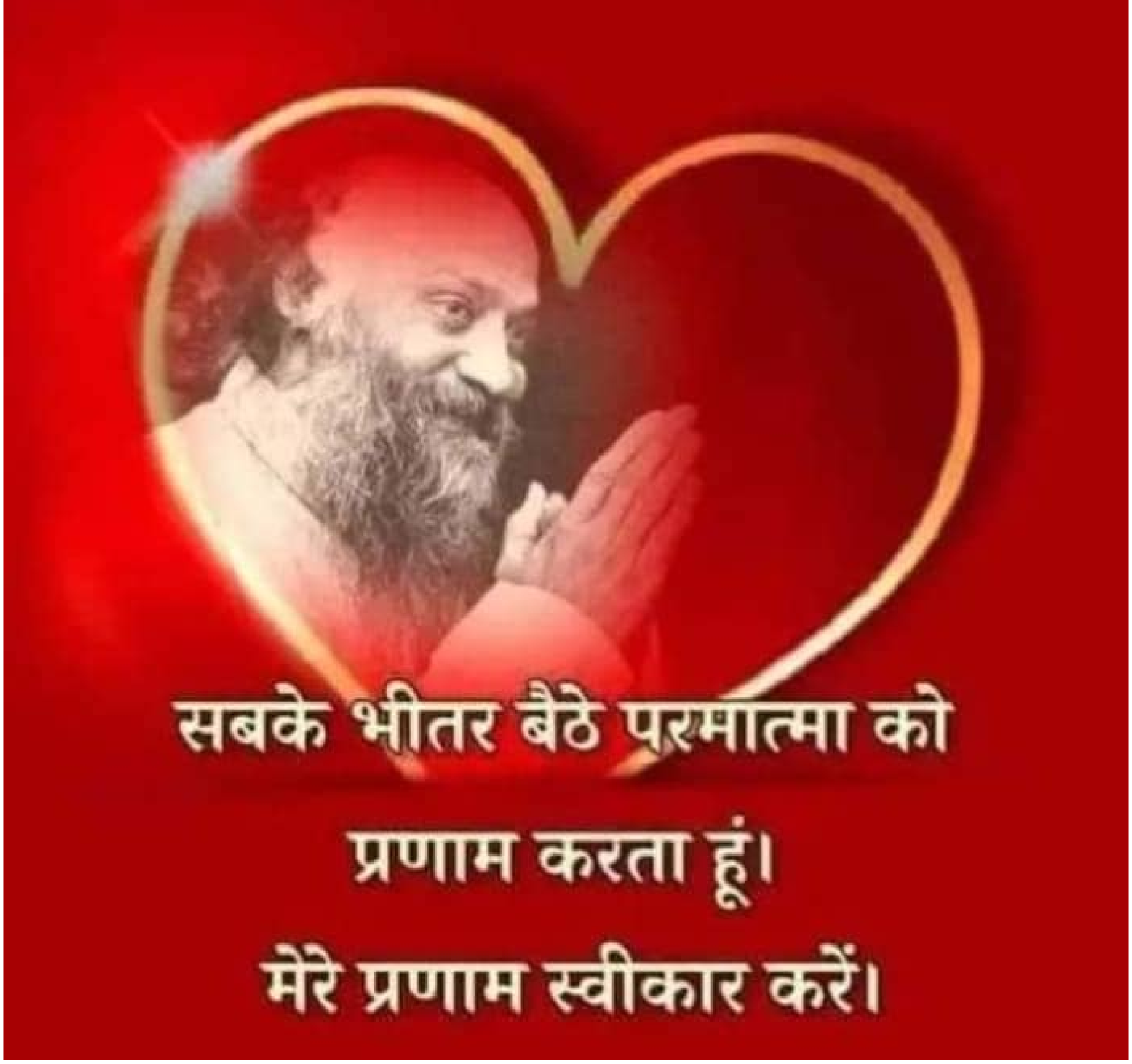

CamScanner

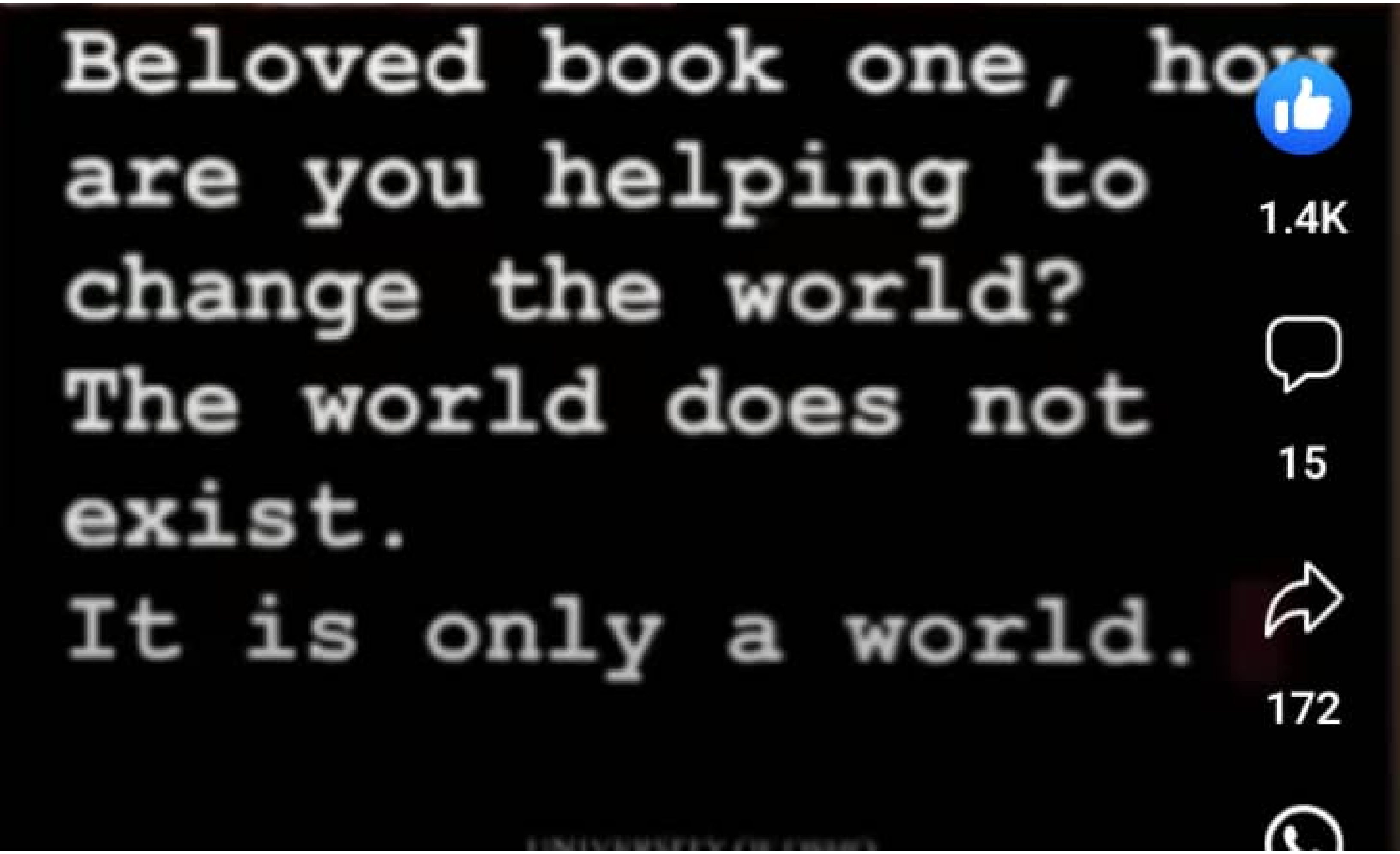
Beloved book one, how
are you helping to
change the world?
The world does not
exist.
It is only a world.
1.4K
15
172

CamScanner

CamScanner

संस्कार रहित भिक्षु

CamScanner

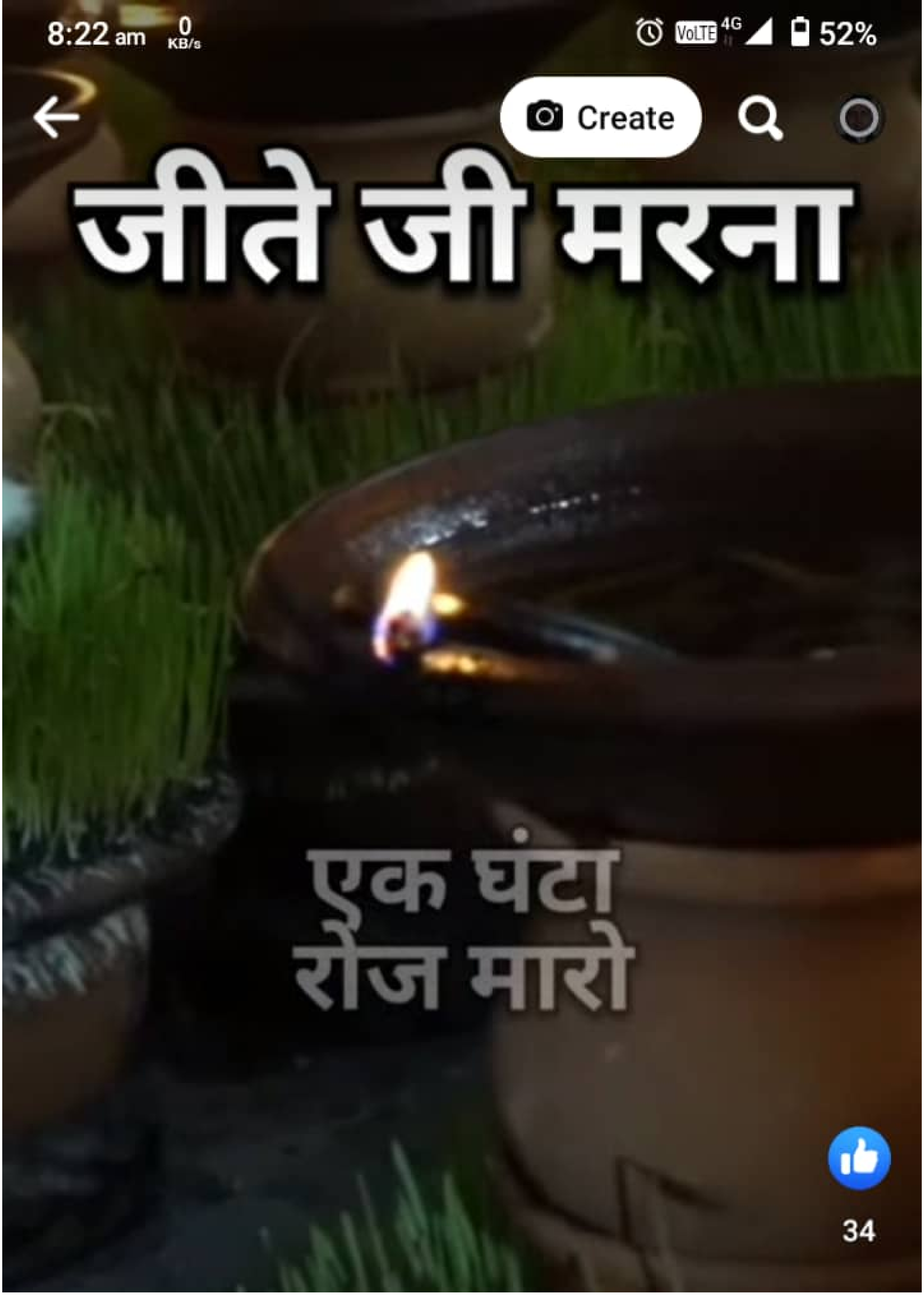

CamScanner

किसी और की अपेक्षाएं पूरी करने
के लिए तुम पैदा नहीं हुए हो

CamScanner

तुम अपनी आत्मा को संपूर्ण
करने को पैदा हुए हो

CamScanner

सम्मान और अपमान को
बराबर समझ लेना

CamScanner

मृत्यु में जो साथ जाएगा वही सार्थक है।
बाकी निरर्थक
।

CamScanner

कोई आपको सुनना नही चाहता
आप सुनिए सबको।

CamScanner

अपना अहंकार छोड़ दो।
यही मुक्ति है।

CamScanner

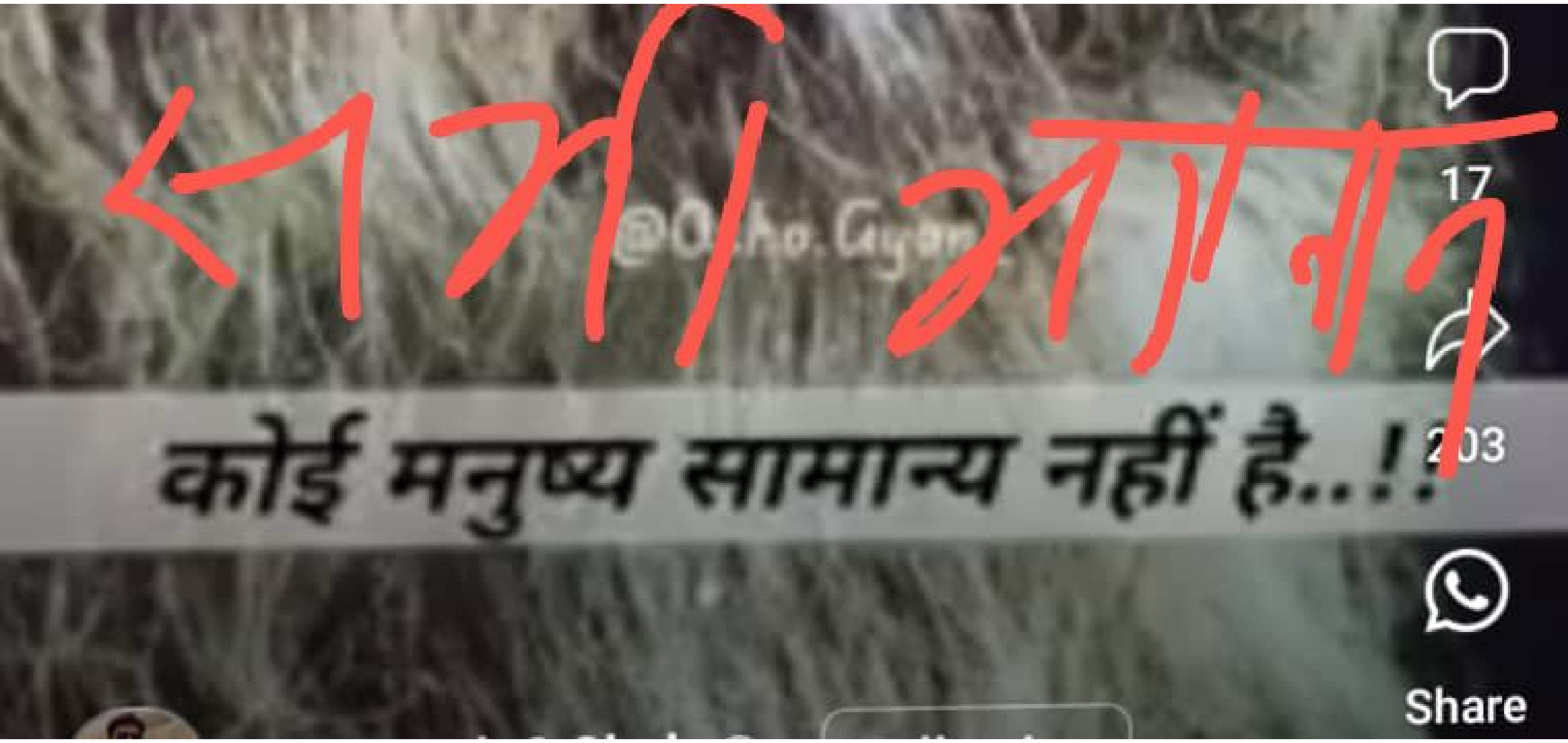

CamScanner

सब भगवान ही तो है।

CamScanner

तुम क्यों हंसे? उसने कहा मैं इसलिए हंसा कि ये चमार बैठ कर यहां क्या कर रहे हैं!

अष्टावक्र ने चमार की ठीक परिभाषा की, क्योंकि इनको चमड़ी ही दिखाई पड़ती है। मेरा शरीर आठ जगह से टेढ़ा है, इनको शरीर ही दिखाई पड़ता है। ये सब चमार इकट्ठे कर लिए हैं और इनसे धर्म—सभा हो रही है और ब्रह्मज्ञान की चर्चा हो रही है? इनको अभी आत्मा दिखाई नहीं पड़ती। है कोई यहां जिसको मेरी आत्मा दिखाई पड़ती हो? क्योंकि आत्मा तो एक भी जगह से टेढ़ी नहीं है।

वहां एक भी नहीं था। कहते हैं, जनक ने उठ कर अष्टावक्र के पैर छुए। और कहा कि आप मुझे उपदेश दें। इस तरह अष्टावक्र—गीता का जन्म हुआ। और अष्टावक्र—गीता भारत के ग्रंथों में अद्वितीय है। श्रीमद्भगवद्गीता से भी एक दर्जा ऊपर! इसलिए श्रीमद्भगवद्गीता को मैंने गीता कहा है और अष्टावक्र—गीता को महागीता कहा है। उसका एक—एक वचन हीरों से भी तौला जाए, हजारों हीरों से भी तौला जाए, तो भी पलड़ा उस वचन का ही भारी रहेगा, हीरों का भारी नहीं हो सकता। सारे सूत्र ध्यान के हैं और समाधि के हैं।

तो तुम समझ लेना, जब तक तुम्हें शरीर ही दिखाई पड़ता है— अपना और दूसरों का—तब तक तुम चमार ही हो। मेरे हिसाब से सभी शूद्र पैदा होते हैं, कभी—कभी कोई ब्राह्मण हो पाता है— कोई बुद्ध, कोई कृष्ण, कोई महावीर, कोई रैदास, कोई फरीद, कोई नानक। कभी—कभी कोई ब्राह्मण हो पाता है; नहीं तो लोग शूद्र ही पैदा होते हैं, शूद्र ही मर जाते हैं। तो यह सूत्र तुम्हारे संबंध में भी है—तुम्हारे ही संबंध में है!

मन ही पूजा मन ही धूप(संत रैदास-वाणी), प्रवचन-९, ओशो
संकलन-रामजी🙏🌹🌹

👍🤗 16

CS CamScanner

मैं कहता हूं कि शास्त्रों में सत्य नहीं है। इसलिए हिंदू पंडित नाराज , मुसलमान मौलवी नाराज , ईसाई पादरी नाराज। शब्दो मे कहीं सत्य हो सकता है ?
शब्द है -- ' अग्नि '। ' अग्नि ' में कहीं आग है ? कागज पर ' अग्नि ' लिखोगे : इस पर चाय बना सकोगे ?
शब्द है -- ' पानी ' कागज पर लिख लोगे , या अगर वैज्ञानिक हुए तो लिखोगे एच टू ओ , इससे प्यास बुझा सकोगे ? लेकिन लोग गीता पढ़ रहे हैं और सोच रहे हैं , कुरान पढ़ रहे हैं और सोच रहे हैं कि परमात्मा से मिलन हो जाएगा। कागजों में परमात्मा से मिलन नहीं हो सकता। परमात्मा से मिलन करना हो तो अपनी स्वयं की चेतना की सीढ़ियों से उतरना पड़ेगा ; अपनी स्वयं की गहराइयों से गहराइयों में जाना पड़ेगा। परमात्मा तुम्हारे भीतर मौजूद है , लेकिन तुम्हारी आत्यंतिक गहराई को छूना पड़ेगा। नहीं शास्त्रों में , वरन स्वयं में। नहीं ज्ञान में , वरन ध्यान में। नहीं मिलेगा शब्द में , मिलेगा मौन में। ओशो (Dr Sohan Lal Narang)

CS CamScanner

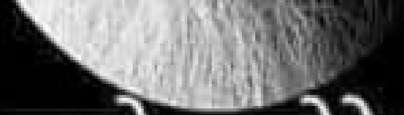

मन कोरा हो जाये...कोरे मन का अर्थ है: न हिंदू न मुसलमान न ईसाई न जैन न बौद्ध। कोरे मन का अर्थ है: न अब वेद है मन में, न कुरान है, न बाइबिल है। कोरे मन का अर्थ है: अब कोई पक्षपात नहीं,कोई बदली नहीं। खाली आकाश! निर्विचार, निर्विकल्प! बस क्रांति की घड़ी आ गई। मंदिर के द्वार खुलने का क्षण आ गया। अब घिरेंगे मेघ--तुम्हारे विचार के नहीं। परमात्मा सघन होगा तुम्हारे ऊपर।

सहज योग -9

ओशो

Osho wisdom

CamScanner

उतना ही कहो

जितना तुमने

स्वयं के अनुभवों से जाना हो।

उनसे ही कहो

जिसने पूछा हो

और

उतना ही कहो

जितना पूछा हो।

CS CamScanner

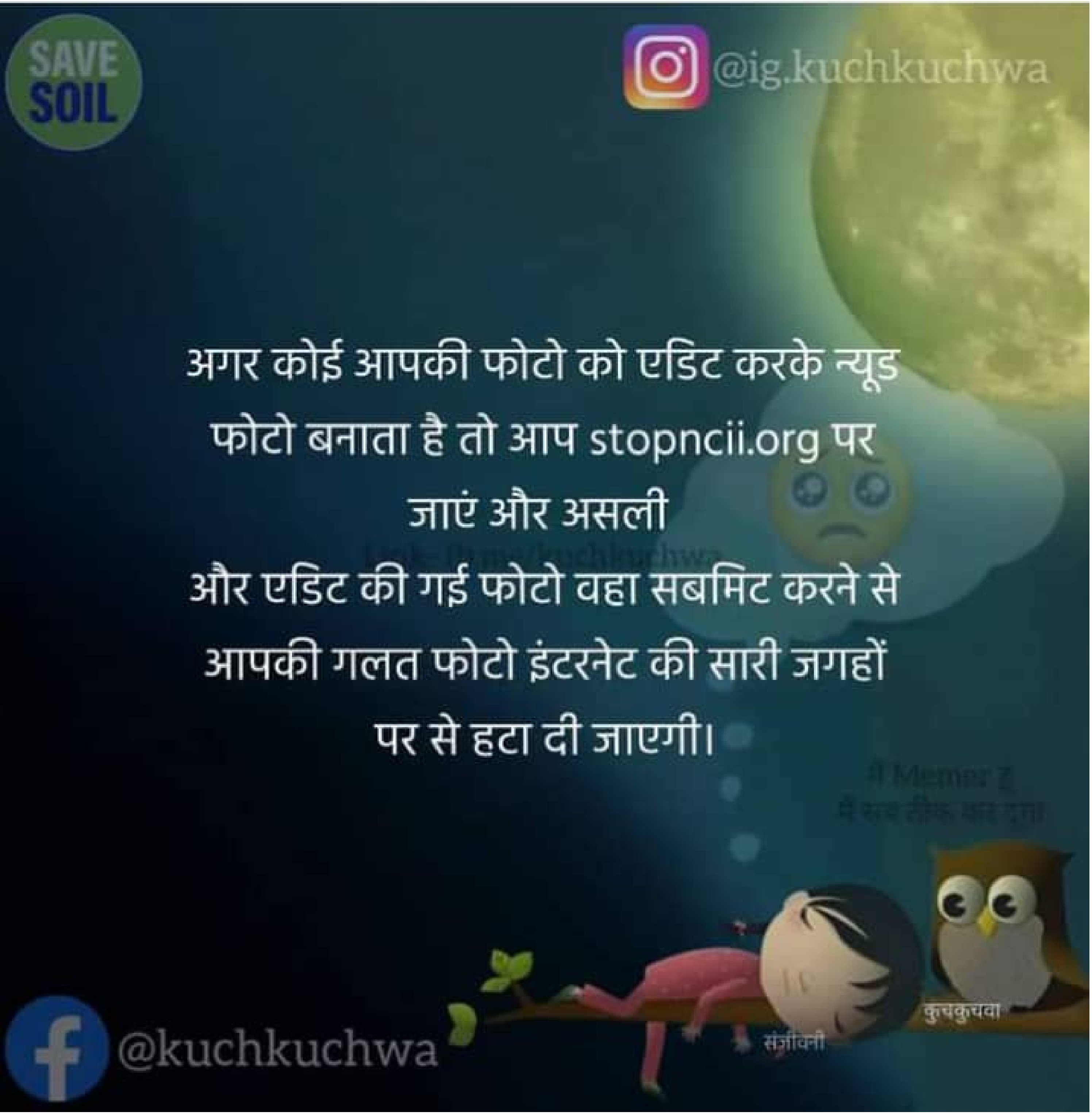

CS CamScanner

Seema Agrawal · 8h ·

ऑस्ट्रेलिया के एक बौद्ध भिक्षु का इंटरव्यू सुना, पत्रकार भिक्षु से पूछता है कि कोई अगर आपकी पवित्र धार्मिक पुस्तक त्रिपिटक को फाड़कर शौचालय के कमोड में फेंक दे तब आप क्या करेंगे ?

बौद्ध भिक्षु ने उत्तर दिया कि मैं सबसे पहले प्लम्बर को फोन करूंगा ताकि नाली चोक न हो जाए। इस पर पत्रकार को हंसी आती है।

दूसरा प्रश्न पूछता है कि बामियान में तालिबान द्वारा बुद्ध प्रतिमाएं नष्ट कर दी गईं, इस पर आप क्या कहेंगे ?

बौद्ध भिक्षु ने कहा कि धम्म(धर्म) न तो मूर्तियों में है और न ही प्रेस पर छपी किताबों में है। धम्म हमारे दिलों में और उससे भी आगे हमारे व्यवहार में जब तक जिंदा है तब तक किताबों को फाड़ने से कुछ नहीं होता है,किताब हम दोबारा छपवा लेंगे, मूर्तियां नई बना ली जाएंगी लेकिन अगर हम अपने आचरण और अपने दिलों में धम्म को खो देते हैं और किताबों, मूर्तियों को बचा लेते हैं तो कोई फायदा नहीं है। तब केवल मूर्तियां और किताबें रह जाएंगी, धम्म खो चुका होगा, उसके प्राण खो चुके होंगे।

पूरा इंटरव्यू सुनने लायक है और बाकी के सभी धर्मों हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, पारसी, यहूदी आदि को इसे समझने की जरूरत है। किसी को भी, किसी का भी अपमान नहीं करना चाहिए लेकिन अपमान यदि कोई करे तब उसे उस देश की कानून व्यवस्था के तहत सजा दिलाओ अन्यथा हमारी धार्मिक किताबों का अपमान हो गया? तो हम सब देश जला देंगे? शास्त्र तो हमें प्रेम और शांति का संदेश देता था? तब हम अपनी किताब की रक्षा के लिए प्रेम और शांति को नष्ट कर देते हैं? क्या आप शांति और प्रेम खोकर उस किताब को बचा लेते हैं, जिसमें प्रेम और शांति का संदेश लिखा था? 🙏🍁

CamScanner

CamScanner

इसे सुनें

क्योंकि परम ज्ञानियों की मृत्यु कपाल को फ़ोड़कर हुई है और वह परम अवस्था को उपलब्ध हुए हैं तो हर बेटा चाहता है उसका पिता भी परम अवस्था को उपलब्ध हो, इसलिए हम कपाल फोड़ते रहे। लेकिन मरे हुए आदमी का कपाल फोड़ने से कोई अर्थ नहीं। और आपके फोड़ने से कोई भी फर्क नहीं पड़ता है।

28-Aug-2022

CamScanner

अंधेरे में अपनी छाया भी साथ नहीं देती,
बुढ़ापे में अपनी काया भी साथ नहीं देती,
सारा जीवन दांव पर लगा दिया जिसके लिए
अंत समय में वो माया भी साथ नहीं देती।

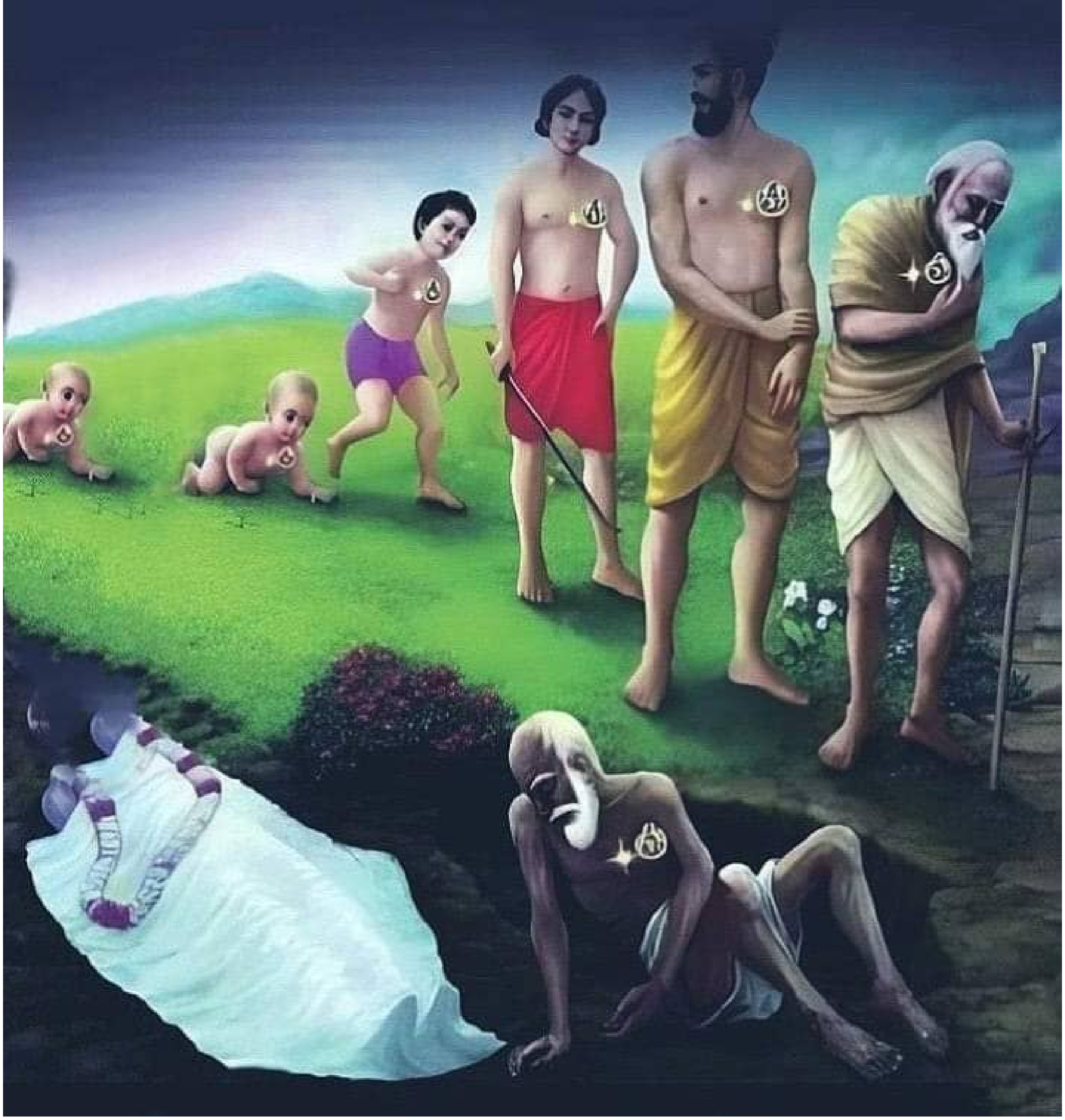

CamScanner

CamScanner

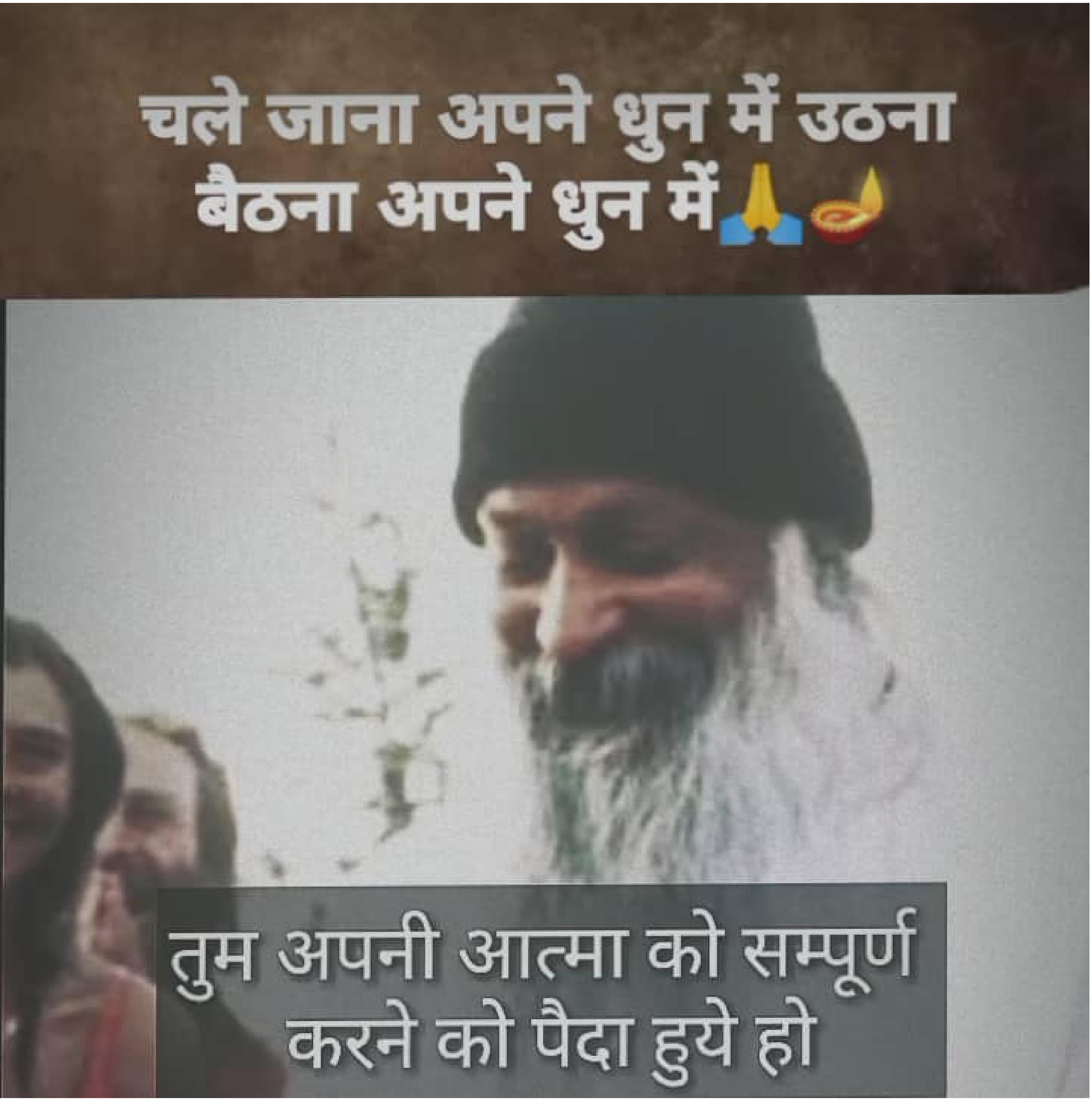

CamScanner

आपका धर्म अगर आपसे दंगे
करवा सकता है,
नफ़रत करवाता है,
इंसान से भेद करवाता है,
पाखंड करवाता है,
तो धर्म नहीं आप एक गिरोह
के चुंगल में फंसे हुए है।

CamScanner

CamScanner

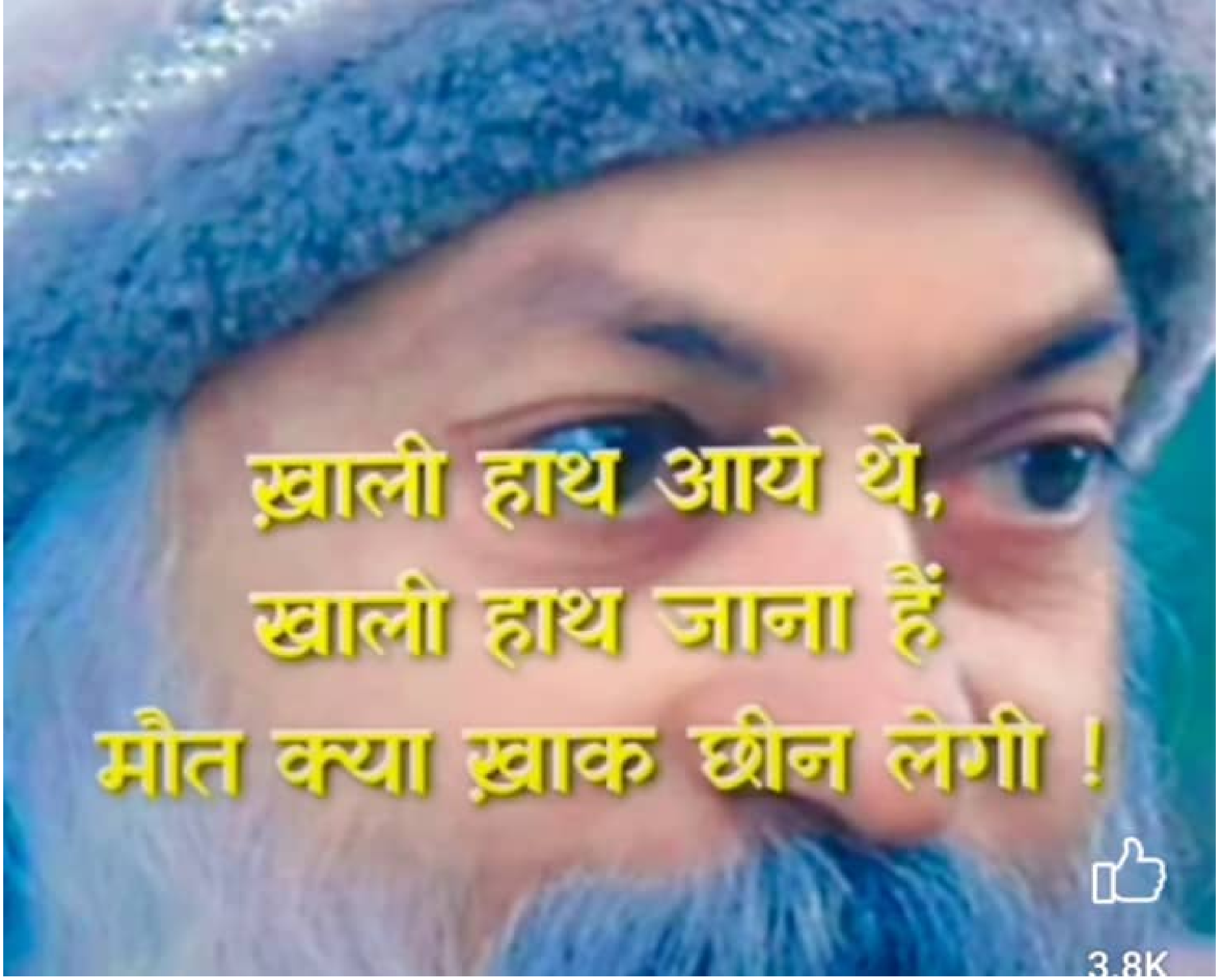

CamScanner

खोजना है तो जिंदगी खोजो, मृत्यु तो वैसे ही एक दिन खोज लेगी।

_ Osho

CS CamScanner

अंतिम रूप में मैं तुमसे यही कहना चाहता हूं कि अगर तुम्हारे जीवन में जरा सी भी बुद्धि है, तो इस चुनौती को स्वीकार कर लेना कि बिना अपने को जाने अरथी को उठने नहीं दोगे। हां, अपने को जान कर कल की उठने वाली अरथी आज उठ जाए तो भी कोई हर्ज नहीं। क्योंकि जिसने अपने को जान लिया, उसकी फिर कोई मृत्यु नहीं है।

(कोपलें फिर फूट आईं • प्रवचन #02)

CamScanner

CamScanner

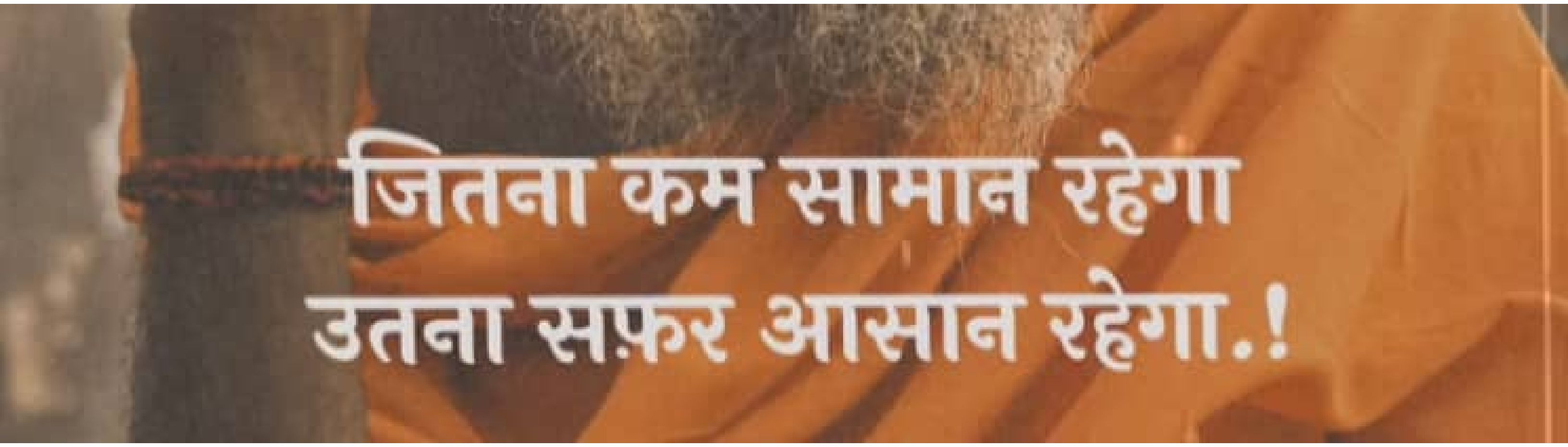

CamScanner

ओशो
धन्यभागी हैं वे जिन्होंने
आशा छोड़ दी: फिर उन्हें
कोई निराश नहीं कर सकेगा।
जिन्होंने आशा ही छोड़ दी,
उनके निराश होने की
बात ही समाप्त हो गई।
सं: स्वामी

CamScanner

एक ही पाप है इस दुनिया में, किसी दूसरे की स्वतंत्रता को छीनना क्योंकि दूसरे को बदलना राजनीति है और स्वयं को बदलना धर्म है।

CS CamScanner

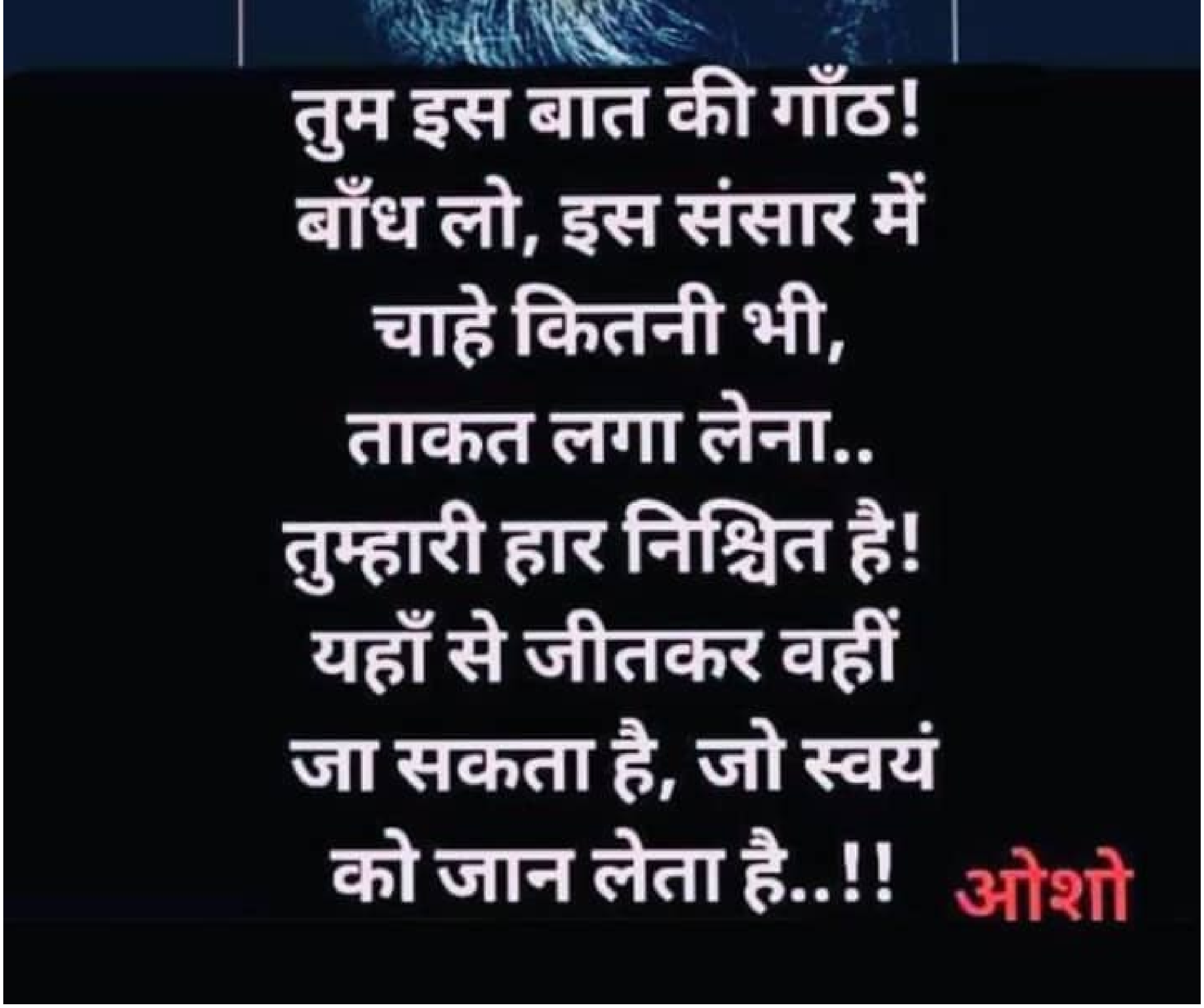
तुम इस बात की गाँठ!
बाँध लो, इस संसार में
चाहे कितनी भी,
ताकत लगा लेना..
तुम्हारी हार निश्चित है!
यहाँ से जीतकर वहीं
जा सकता है, जो स्वयं
को जान लेता है..!!
ओशो

CamScanner

विवाह वास्तव में एक जुआ की तरह है..

यदि दांव सही पड़ गया तो जीवन स्वर्ग
अन्यथा नरक के सभी रास्ते यही
खुल जाते है..

CamScanner

आत्मा एक यात्री है ,अपने घाट
अपने लक्ष्य को निरंतर खोजती रहती है

CamScanner

प्रश्नों के उत्तरों के बारे में विस्तार से बताया जिनके लिए सावधानीपूर्वक विश्लेषण की आवश्यकता है; 3) उन्होंने उत्तर देने के लिए जिज्ञासु का मार्गदर्शन करने के लिए प्रति-प्रश्नों का उत्तर दिया; और 4) उन्होंने कुछ प्रश्न अलग रख दिये. विशेषकर बुद्ध दस प्रश्नों पर मौन रहे। ये अघोषित प्रश्न जो किनारे रख दिए गए:

(1) क्या ब्रह्माण्ड शाश्वत है?

(2) क्या ब्रह्माण्ड शाश्वत नहीं है?

(3) क्या ब्रह्माण्ड सीमित है?

(4) क्या ब्रह्माण्ड अनंत है?

(5) क्या आत्मा और शरीर एक ही हैं?

(6) क्या आत्मा और शरीर एक ही नहीं हैं?

(7) क्या प्रबुद्ध व्यक्ति का मृत्यु के बाद पुनर्जन्म होगा?

(8) क्या प्रबुद्ध व्यक्ति का मृत्यु के बाद पुनर्जन्म नहीं होगा?

(9) क्या प्रबुद्ध व्यक्ति का पुनर्जन्म होगा और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म नहीं होगा?

(10) क्या प्रबुद्ध व्यक्ति का न तो पुनर्जन्म होता है और न ही मृत्यु के बाद उसका पुनर्जन्म होता है?

यह वर्णित है कि जब आदरणीय मलुंक्यपुत्त एकांत में ध्यान का अभ्यास कर रहे थे, तो उनके मन में ये दस प्रश्न उठे। इस प्रकार वह इन प्रश्नों के साथ बुद्ध के पास गया, और इस हद तक आग्रह किया कि यदि उत्तर नहीं दिए गए तो वह अपने कपड़े उतार देगा और बुद्ध के साथ अपना प्रशिक्षण त्याग देगा। बुद्ध ने मना कर दिया और इसके बजाय शांति से आदरणीय मालुनक्यपुत्त से

CamScanner

CamScanner

अगर दान, दक्षिणा और पूजा पाठ करने से ईश्वर किसी के पापों को क्षमा कर देता है।
तो उससे बडा भ्रष्टाचारी और रिश्वतखोर कोई नहीं है...

ओशो

CamScanner

फिर विश्राम करूंगा। तो डायोजनीज ने कहा, यह तो हद्द हो गई! अपने कुत्ते से कहा कि सुन भाई, देखता है हद्द हो गई! हम अभी विश्राम कर रहे हैं दोनों, सिकंदर कहता है सारी दुनिया जीत लूंगा फिर विश्राम करूंगा! सारी दुनिया का जीतना और विश्राम, इसमें कोई तार्किक संबंध है, इसमें कोई गणित है? जब हम बिना दुनिया को जीते मजे से विश्राम कर रहे हैं, तो तुम्हें क्या अड़चन है विश्राम करने में? इतनी झंझट लेकर फिर विश्राम करोगे?छोड़ो झंझट, नदी का किनारा बड़ा है। और यह हमारा जोपोंगरा है, यह भी कोई छोटा नहीं। पहले मैं अकेला रहता था,फिर यह कुत्ता भी रहने गला——तुम भी रहने लगो। वर्षा—धूप में काम दे देता है, वैसे तो नदी के तट पर गुजर जाता है। और तट बड़ा है, तुम भी विश्राम करो। दुनिया जीतने चले हो!

सिकंदर झेंपा। सिर झुक गया। कहा कि क्षमा करना,बात तो ठीक लगती है; मगर बीच से लौट नहीं सकता। यात्रा तो यह मुझे पूरी करनी होगी। एक कसम ले ली कि दुनिया जीत कर रहूंगा। डायोजनीज ने कहा: कसमें! हमारी कसमें!! हमारे वचन!! इनका मूल्य क्या है? ये सब अहंकार कीघोषणाएं हैं। और मैं तुमसे कहता हूं कि यात्रा पूरी करके वापस न लौट सकोगे——कोई कभी यात्रा पूरी करके वापस नहीं लौटता। इस दुनिया की सभी यात्राएं बीच में टूट जाती हैं।

दस साल का बच्चा मर जाए तो हम कहते हैं। असमय मृत्यु। और सत्तर साल का आदमी मरता है तब हम नहीं कहते असमय मृत्यु, लेकिन मैं तुमसे कहता हूं: सभीमृत्युएं असमय होती हैं। क्योंकि सत्तर साल वाला बूढ़ा भी अभी मरने की तैयारी नहीं कर रहा था। अभी वह भी कल के लिए राजी था कि कल होगा। सभी मृत्युएं असमय हैं, क्योंकि तैयार ही कोई नहीं है। असमय का क्या अर्थ होता है? बिना तैयारी के।

सिर्फ उसकी मृत्यु असमय नहीं है, जिसने भजन किया।

भजि लीजौ भगवान, एहि में भल है अपना

*बस, एक ही भला है इस जगत में, एक ही श्रेयस, एक ही मंगल—भजि लीजौ भगवान।

CamScanner

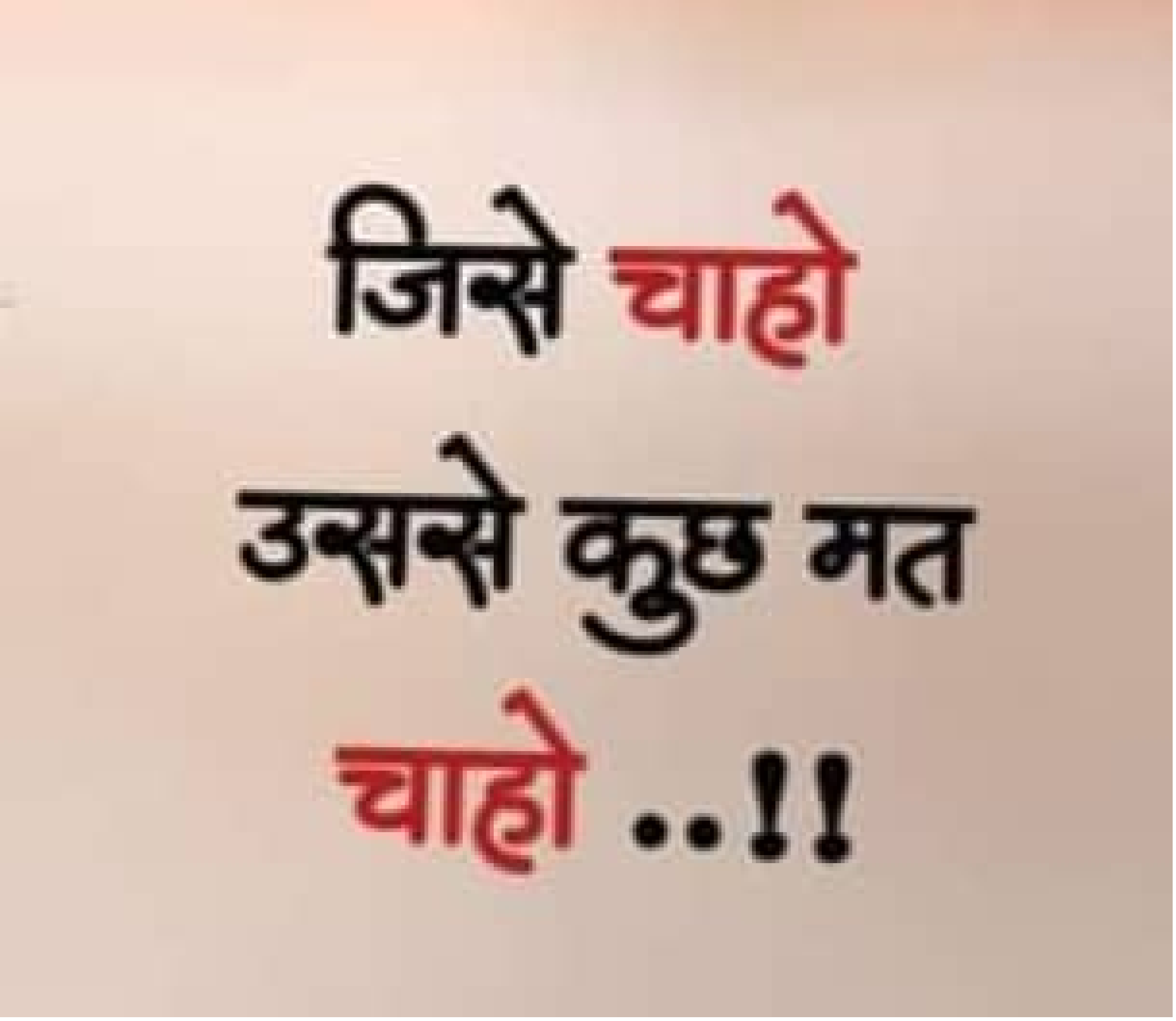

CamScanner

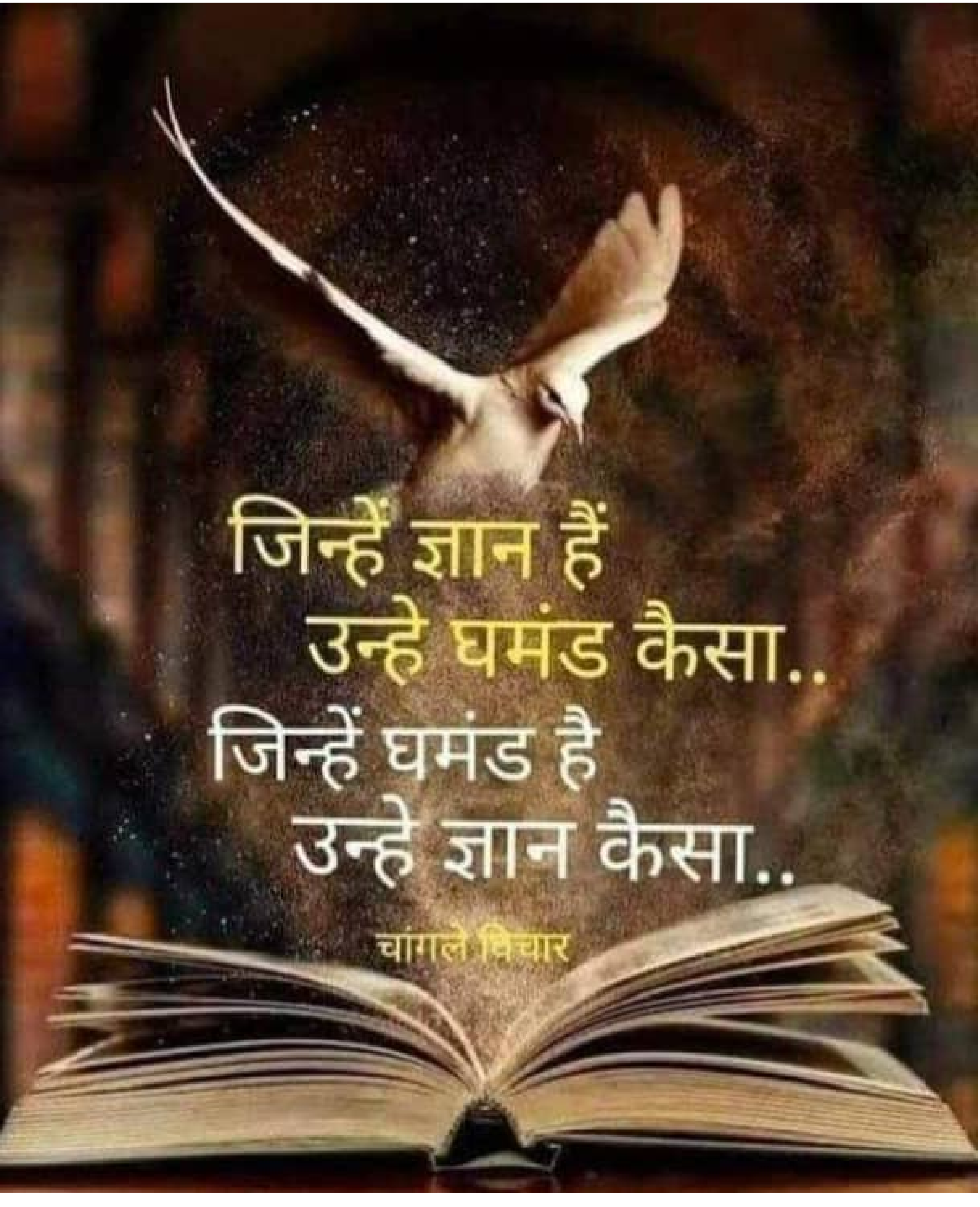

CamScanner

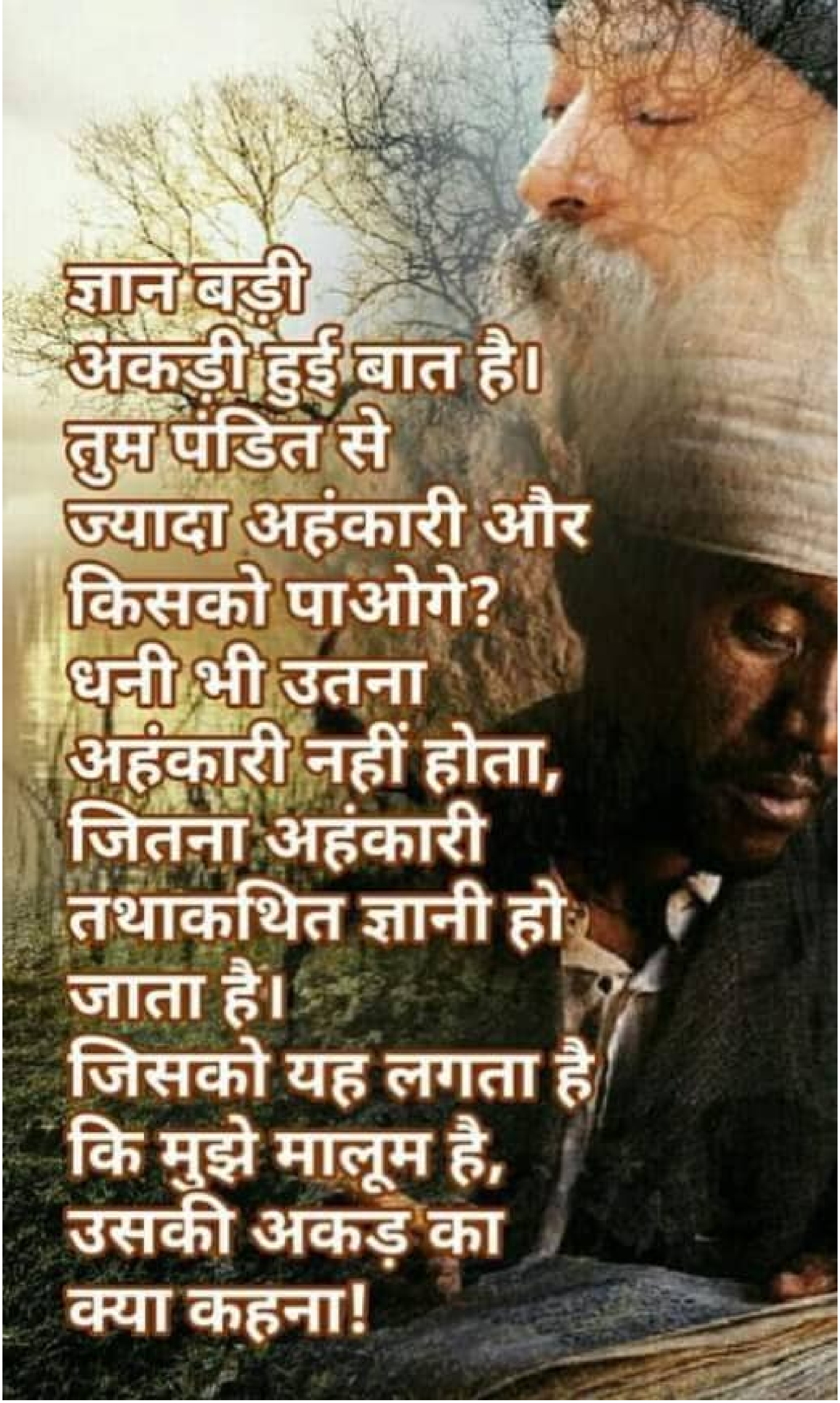

CS CamScanner

Prema Agrawal · 2d

मन वेश्या की तरह है। किसी का नहीं है मन। आज यहां, कल वहां; आज इसका, कल उसका। मन की कोई मालकियत नहीं है। और मन की कोई ईमानदारी नहीं है। मन बहुत बेईमान है। वह वेश्या की तरह है। वह किसी एक का होकर नहीं रह सकता। और जब तक तुम एक के न हो सको, तब तक तुम एक को कैसे खोज पाओगे? न तो प्रेम में मन एक का हो सकता है; न श्रद्धा में मन एक का हो सकता है—और एक के हुए बिना तुम एक को न पा सकोगे। तो कहीं तो प्रशिक्षण लेना पड़ेगा—एक के होने का।

इसी कारण पूरब के मुल्कों ने एक पत्नीव्रत को या एक पतिव्रत को बड़ा बहुमूल्य स्थान दिया। उसका कारण है। उसका कारण सांसारिक व्यवस्था नहीं है। उसका कारण एक गहन समझ है। वह समझ यह है कि अगर कोई व्यक्ति एक ही स्त्री को प्रेम करे, और एक ही स्त्री का हो जाए, तो शिक्षण हो रहा है एक के होने का। एक स्त्री अगर एक ही पुरुष को प्रेम करे और समग्र—भाव से उसकी हो रहे कि दूसरे का विचार भी न उठे, तो प्रशिक्षण हो रहा है; तो घर मंदिर के लिए शिक्षा दे रहा है; तो गृहस्थी में संन्यास की दीक्षा चल रही है। अगर कोई व्यक्ति एक स्त्री का न हो सके, एक पुरुष का न हो सके, फिर एक गुरु का भी न हो सकेगा; क्योंकि उसका कोई प्रशिक्षण न हुआ। जो व्यक्ति एक का होने की कला सीख गया है संसार में, वह गुरु के साथ भी एक का हो सकेगा। और एक गुरु के साथ तुम न जुड़ पाओ तो तुम जुड़ ही न पाओगे। वेश्या किसी से भी तो नहीं जुड़ पाती। और बड़ी, आश्चर्य की बात तो यह है कि वेश्या इतने पुरुषों को प्रेम करती है, फिर भी प्रेम को कभी नहीं जान पाती।

अभी एक युवती ने संन्यास लिया। वह आस्ट्रेलिया में वेश्या का काम करती रही। उसने कभी प्रेम नहीं जाना। यहां आकर वह एक युवक के प्रेम में पड़ गई, और पहली दफा उसने प्रेम जाना। और उसने मुझे आकर कहा कि इस प्रेम ने ही मुझे तृप्त कर दिया; अब मुझे किसी की भी कोई जरूरत नहीं है। और उसने कहा कि आश्चर्यों का आश्चर्य तो यह है कि मैं तो बहुत पुरुषों के संबंध में रही; लेकिन मुझे प्रेम का कभी अनुभव ही नहीं हुआ। प्रेम का अनुभव हो ही नहीं सकता बहुतों के

CamScanner

CamScanner

तुम खयाल रखना, तुम तो मर भी जाओगे तो भी लोग कितने दिन तुम्हारी बात करेंगे तुम मर भी जाओगे तो कौन सा काम कितनी देर अटकेगा रो धो कर लोग निपट लेते हैं, फिर सब शुरू हो जाता है। लोगों को जीना है आखिर। अब तुम मर गये, तुम्हारा तो छुटकारा हुआ, उनको तो जीना है आखिर। दुकान भी खुलेगी दों चार दिन बंद रहेगी, फिर खुलेगी, कोई और चलाएगा। पत्नी भी मुस्कुराकी। कितने दिन रोएगी आखिर उसे जीना है। रो रोकर कोई कितने दिन जी सकता है बच्चे भी फिर नाचेंगे, फिर खेलेंगे, फिर कूदेंगे। दुनिया चलती रहती है। तुम मर भी जाओ तो भी चलती रहती है।:ओशो

CamScanner

पुरुष का चित्त ऐसा ही चंचल है। इस चंचलता को जाने दो। थोड़े थिर होओ। थोड़े शांत होओ। थोड़े जीवन में समझदार होओ। बहुत दौड़ चुके जन्मों जन्मों तक कहां पहुंचे हो? और कब तक दौड़ते रहोगे? अब ठहरो।

ठहरे पांव तो मिले गांव। ठहर जाओ तो गांव मिल जाये। तो जिसकी तलाश है वह मिल जाये। उस ठहरने का नाम ही ध्यान है। चलते रहने का नाम संसार है। ठहर जाने का नाम परमात्मा है!

CS CamScanner

जब प्यार और नफ़रत दोनों ही ना हो तो
हर चीज़ साफ और स्पष्ट हो जाती।

CamScanner

जो तुम्हारे बाप दादे तुम्हारे ऊपर
थोप गए थे, वही तुम अपने बच्चों
पर थोपते हो?
यूँ पीढ़ी दर पीढ़ी बीमारियां झूठा
ज्ञान सरकता रहता है। और जब
मेने कहा झूठा ज्ञान तो मेरा मतलब
है जो तुम्हारा अपना अनुभव नहीं
है वह सब झूठा है

Osho

CamScanner

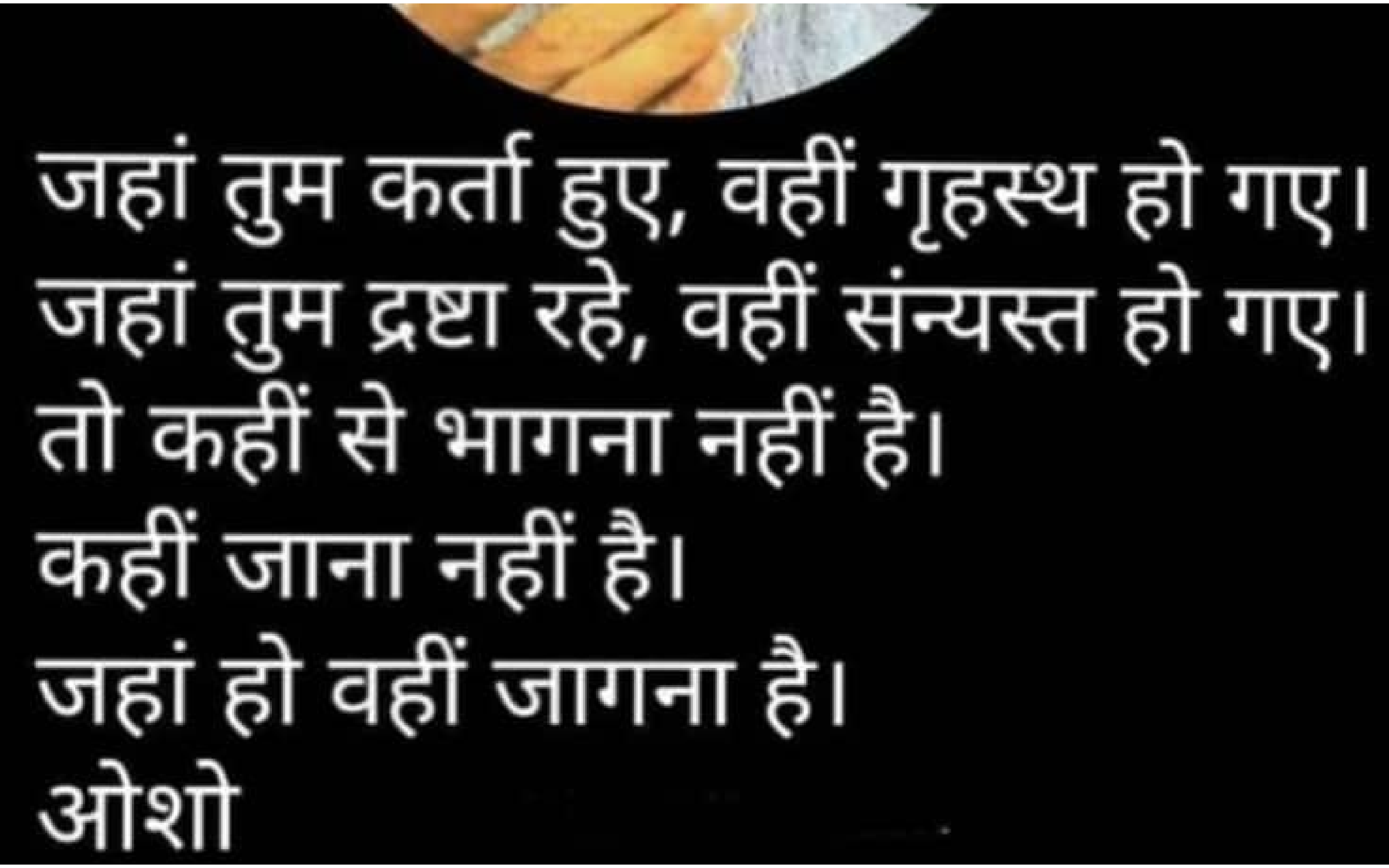
जहां तुम कर्ता हुए, वहीं गृहस्थ हो गए।
जहां तुम द्रष्टा रहे, वहीं संन्यस्त हो गए।
तो कहीं से भागना नहीं है।
कहीं जाना नहीं है।
जहां हो वहीं जागना है।
ओशो

CamScanner

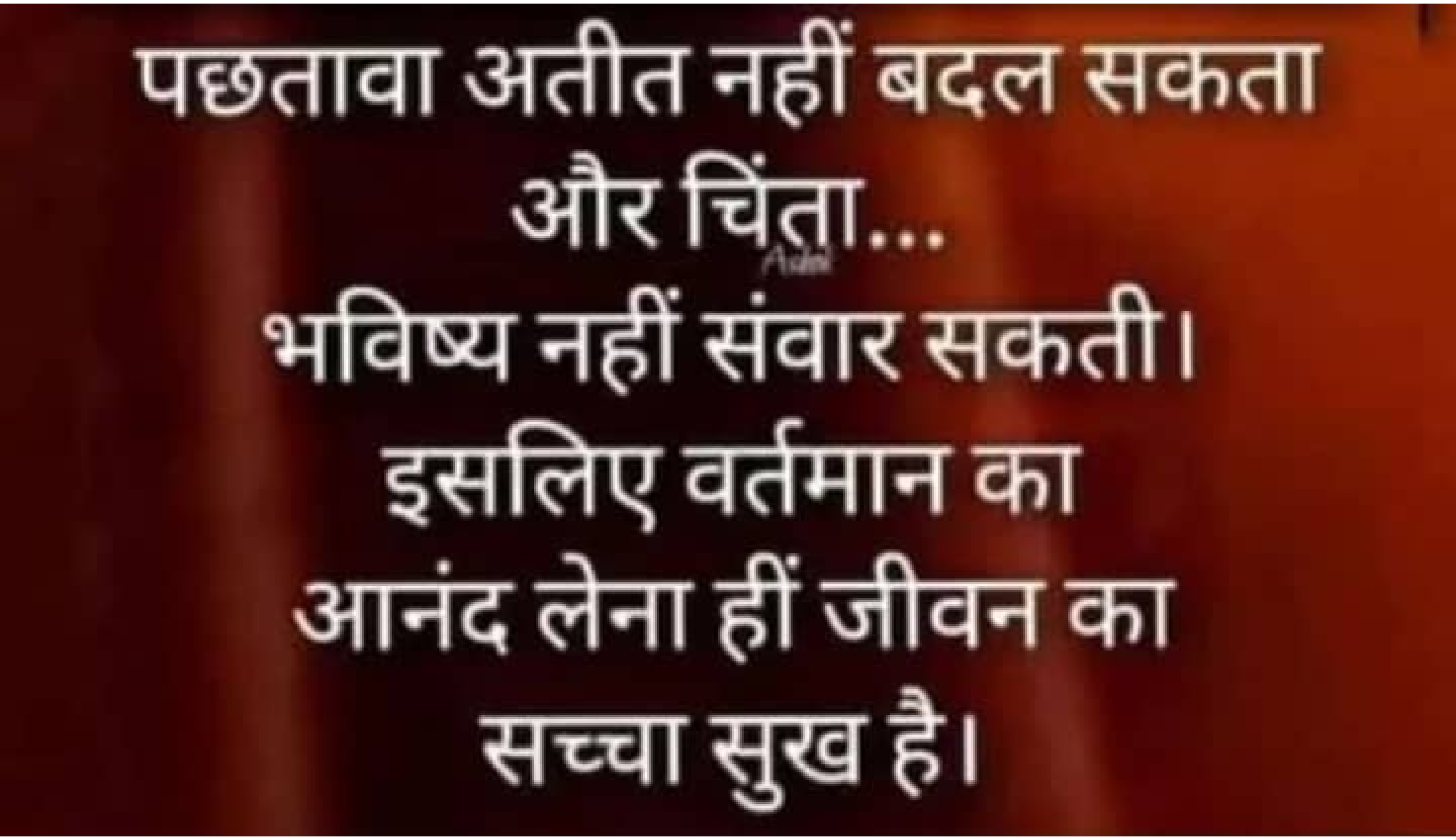
पछतावा अतीत नहीं बदल सकता
और चिंता...
भविष्य नहीं संवार सकती।
इसलिए वर्तमान का
आनंद लेना हीं जीवन का
सच्चा सुख है।

CamScanner

परमात्मा ने शरीर कोई भी दिया हो, लेकिन आत्मा का आत्मा से सम्बन्ध है.

CS CamScanner

खुद को वैसे स्वीकार करें जैसे आप हैं,
और ये दुनिया का सबसे कठिन काम है, क्योंकि,
ये आपकी ट्रेनिंग, एजुकेशन, और कल्चर के खिलाफ है

CamScanner

दुनिया में कोई भी
आदमी दूसरे का
ठीक होना
स्वीकार नहीं करता।

अध्यात्म उपनिषद.. ओशो(प्रवचन--12)

CamScanner

CamScanner

CamScanner

प्रेमी झुकता है तो प्रार्थना पैदा होती है
ज्ञानी झुकता है तो ध्यान पैदा होता है...

आचार्य रजनीश

CamScanner

मैं हिंदू नहीं हूं, मुसलमान नहीं हूं, जैन नहीं हूं, बौद्ध नहीं हूं। मेरा धर्म विशेषण-शून्य है। मैं सिर्फ धार्मिक हूं। मैं इस अस्तित्व को प्रेम करता हूं। इस अस्तित्व में मेरी श्रद्धा है, न किसी मंदिर में, न किसी मस्जिद में, न किसी गिरजे में, न किसी गुरुद्वारे में।

ओशो

CamScanner

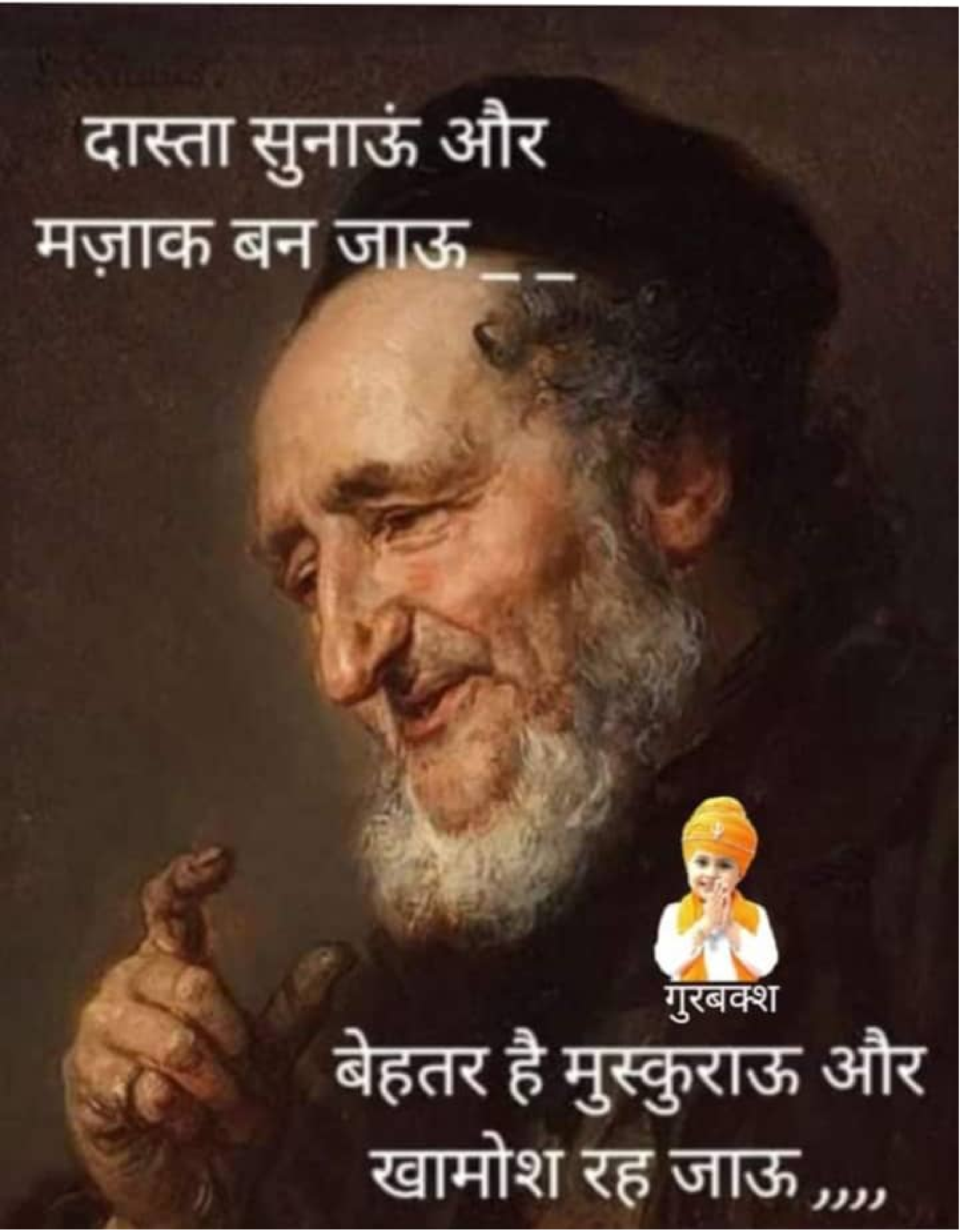

CamScanner

मैं "भीतर" गया
मैं "भी तर" गया

जीवन में किसी का **भला** करोगे,
तो **लाभ** होगा क्योंकि **भला** का
उल्टा **लाभ** होता है।
और जीवन में किसी पर **दया**
करोगे,
तो वो **याद** करेगा क्योंकि **दया**
का उल्टा **याद** होता है.

CS CamScanner

जाया ना कर अपने अल्फ़ाज़
हर किसी के लिए ,
SH
बस मौन होकर देख तुझे
Subhash Hooda
समझता कौन है ..

CamScanner

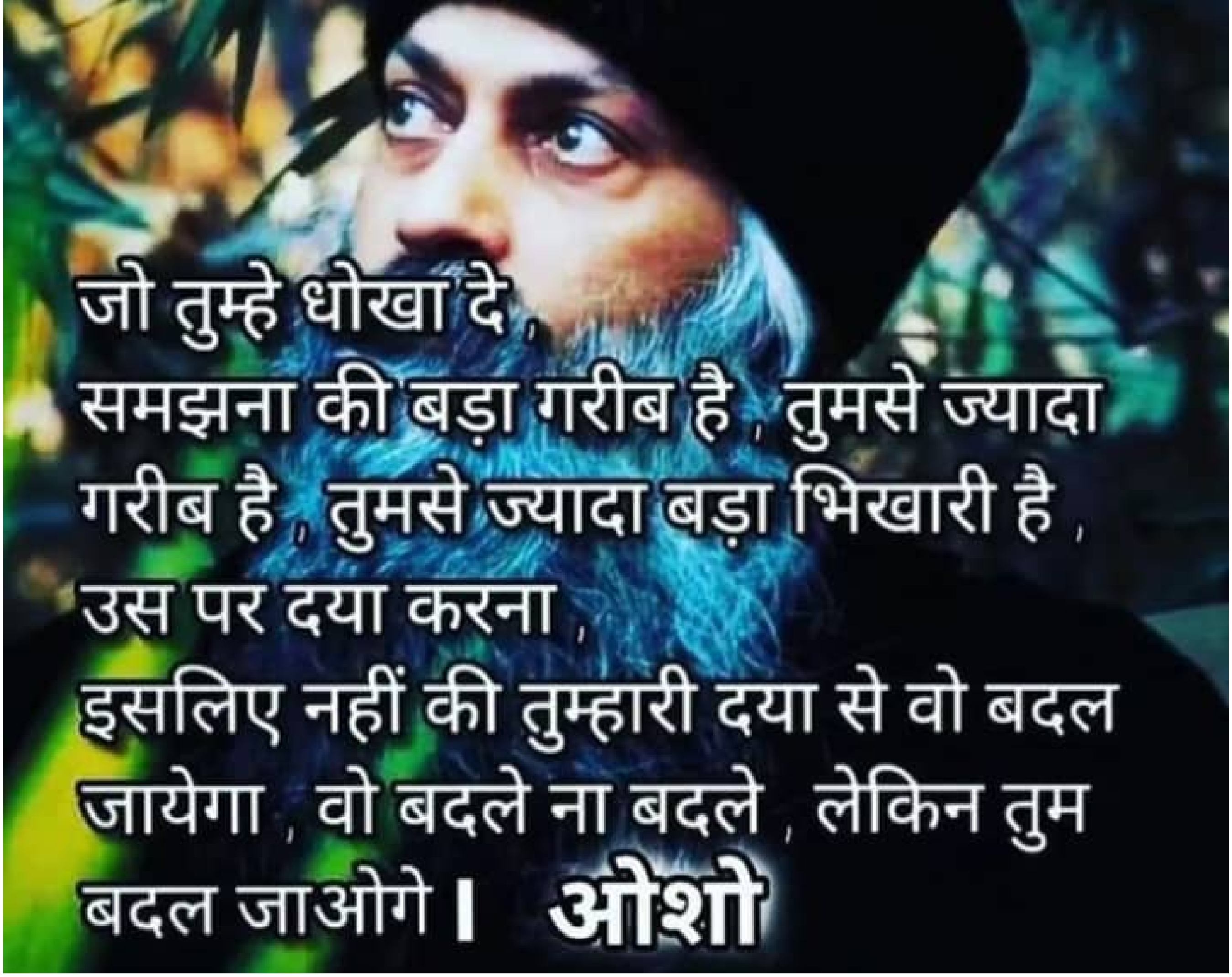
जो तुम्हे धोखा दे ,
समझना की बड़ा गरीब है , तुमसे ज्यादा
गरीब है , तुमसे ज्यादा बड़ा भिखारी है ,
उस पर दया करना ,
इसलिए नहीं की तुम्हारी दया से वो बदल
जायेगा , वो बदले ना बदले , लेकिन तुम
बदल जाओगे ।
ओशो

CamScanner

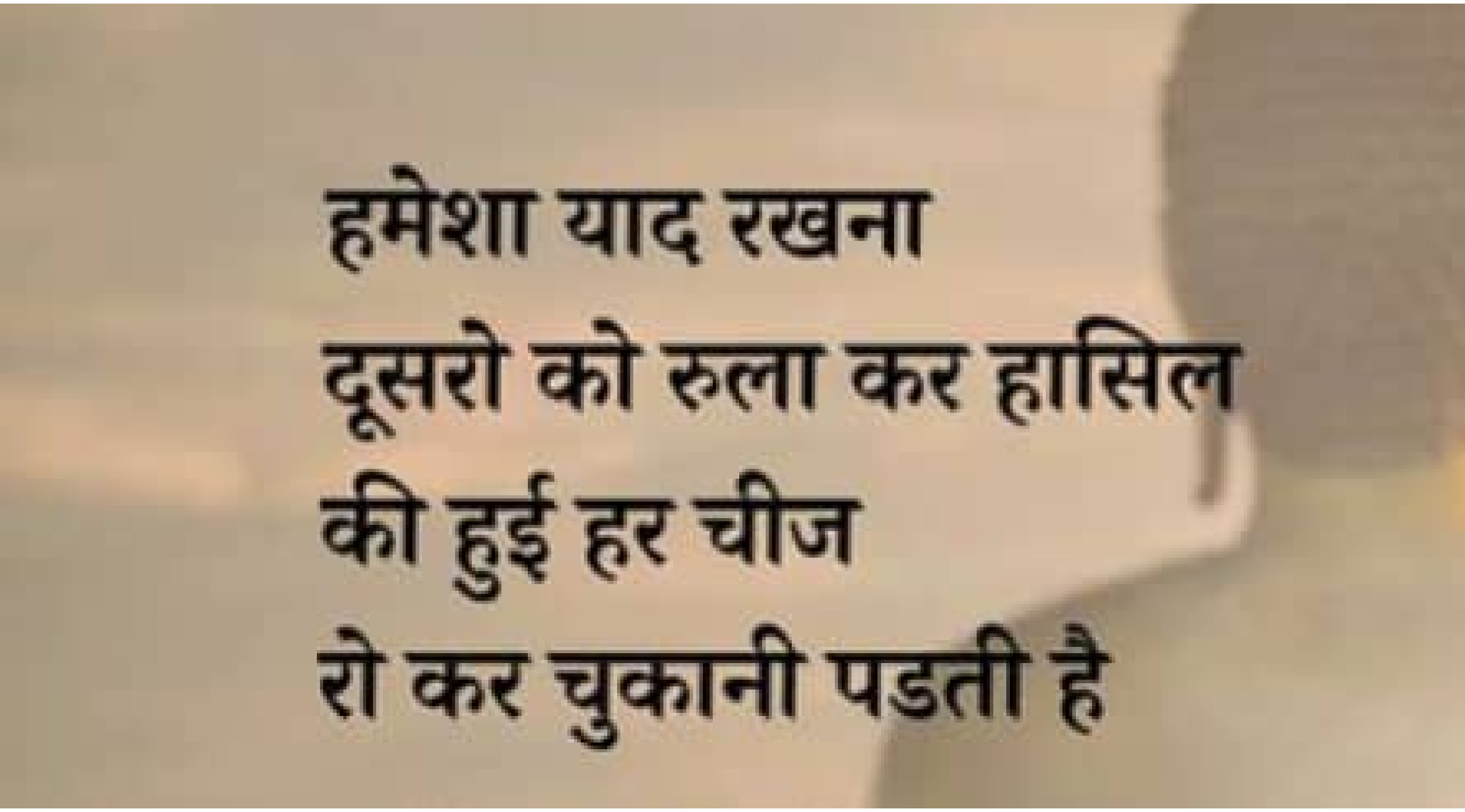

CamScanner

हर चीज का वक़्त तय हैं, हर जगह तय हैं

आप कहीं पर पहुँचते नहीं , पहुँचाए जाते हो

खेल तुम नहीं रहे

खेल तो वो रहा हैं.

CamScanner

समय और स्थान निश्चित है
।

CamScanner

सब चलती फिरती लाशे है।

CamScanner

प्रत्येक व्यक्ति अलग इंद्रिय से मरता है। किसी की मौत आंख से होती है, तो आंख खुली रह जाती है—हंस आंख से उड़ा। किसी की मृत्यु कान से होती है। किसी की मृत्यु मुंह से होती है, तो मुंह खुला रह जाता है। अधिक लोगों की मृत्यु जननेंद्रिय से होती है, क्योंकि अधिक लोग जीवन में जननेंद्रिय के आसपास ही भटकते रहते हैं, उसके ऊपर नहीं जा पाते।

आपकी जिंदगी जिस इंद्रिय के पास जीयी गई है, उसी इंद्रिय से मौत होगी। औपचारिक रूप से हम मृतक को जब मरघट ले जाते हैं तो उसकी कपाल—क्रिया करते हैं, उसका सिर तोड़ते हैं। वह सिर्फ प्रतीक है। पर समाधिस्थ व्यक्ति की मृत्यु उस तरह होती है। समाधिस्थ व्यक्ति की मृत्यु सहस्रार से होती है। जननेंद्रिय सबसे नीचा द्वार है।

जैसे कोई अपने घर की नाली में से प्रवेश करके बाहर निकले। सहस्रार, जो तुम्हारे मस्तिष्क में है द्वार, वह श्रेष्ठतम द्वार है।

जननेंद्रिय पृथ्वी से जोड़ती है, सहस्रार आकाश से। जननेंद्रिय देह से जोड़ती है, सहस्रार आत्मा से। जो लोग समाधिस्थ हो गए हैं, जिन्होंने ध्यान को अनुभव किया है, जो ध्यान को उपलब्ध हुए हैं, उनकी मृत्यु सहस्रार से होती है। उस प्रतीक में हम अभी भी कपाल—क्रिया करते हैं। मरघट ले जाते हैं, बाप मर जाता है, तो बेटा लकड़ी मारकर सिर तोड़ देता है।

मरे—मराए का सिर तोड़ रहे हो! प्राण तो निकल ही चुके, अब काहे के लिए दरवाजा खोल रहे हो? अब निकलने को वहां कोई है ही नहीं। मगर प्रतीक, औपचारिक, आशा कर रहा है बेटा कि बाप सहस्रार से मरे; मगर बाप तो मर ही चुका है।

यह दरवाजा मरने के बाद नहीं खोला जाता, यह दरवाजा जिंदगी में खोलना पड़ता है। इसी दरवाजे की तलाश में सारे योग, तंत्र की विद्याओं का जन्म हुआ। इसी दरवाजे को खोलने की कुंजियां हैं योग में, तंत्र में। इसी दरवाजे को जिसने खोल लिया, वह परमात्मा को जानकर मरता है। उसकी मृत्यु समाधि हो जाती है।

इसलिए हम साधारण आदमी का शव दाह किया जाता है, सन्यासी की समाधि बनाई जाती है।जो समाधिस्थ होकर जो मरा है।

प्रत्येक व्यक्ति उस इंद्रिय से मरता है, जिस इंद्रिय के पास जीया। जो लोग

CS CamScanner

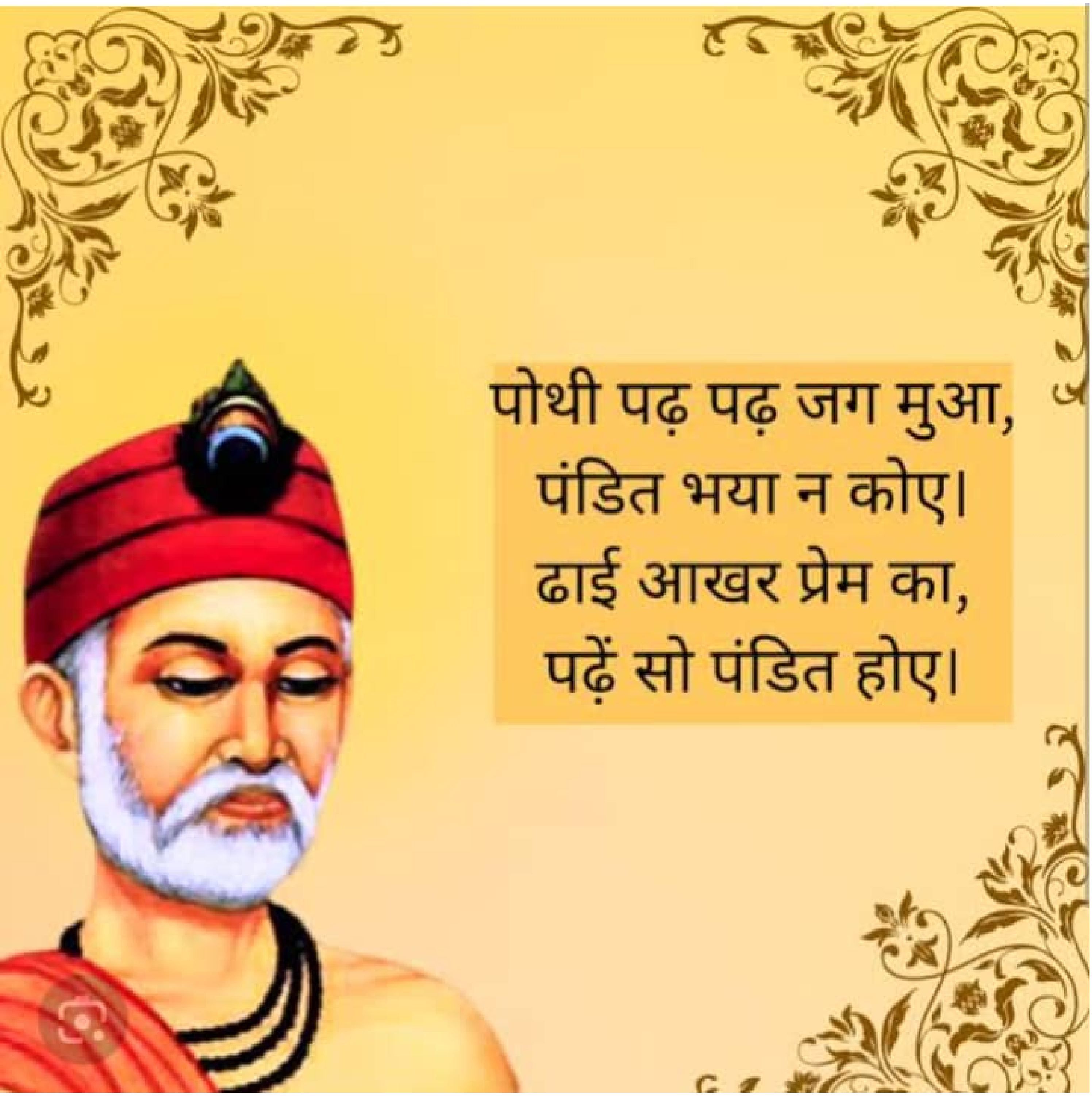

CamScanner

ऐसे शून्य में ले जाना

जहां लाख कोई खोजे

परमात्मा के सिवाय कोई निकले ही नहीं।

।

CamScanner

SOLUTION

संत कबीर दास जी का बड़ा प्रसिद्ध दोहा है -

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोइ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होइ।।

इस छोटे-से दोहे में जीवन का ज्ञान है। कबीर जी का कहना है कि पुस्तकें पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। परंतु केवल पुस्तकें पढ़कर प्रभु का साक्षात्कार नहीं किया जा सकता। जब तक ईश्वर का साक्षात्कार न हो जाए, किसी को पंडित या ज्ञानी नहीं माना जा सकता। अनगिनत लोग जीवन भर ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हुए संसार से विदा हो गए परंतु कोई पंडित या ज्ञानी नहीं हो पाया। क्योंकि वे कोरे ज्ञान प्राप्ति के लोभ में ही पड़े रहे। बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़कर भी जो प्रेम करना नहीं सीखा, वह अज्ञानी है।

प्रेम शब्द केवल ढाई अक्षर का है, जिसने उसे पढ़ लिया, अर्थात जिसने प्रभु से, जीवमात्र से प्रेम कर लिया, उसने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया। वास्तव में वही पंडित है। जिस व्यक्ति ने प्रेम को चखा, उसे कुछ और जानना शेष नहीं रहता, क्योंकि उसने परम ज्ञान को पा लिया। प्रेम ही ज्ञान है, प्रेमी ही असली ज्ञानी है। जिसने प्यार को पढ़ लिया, उसके लिए संसार में क़ुछ भी शेष नहीं रहता। जिसने प्रेम रस पी लिया,

Use
app

CamScanner

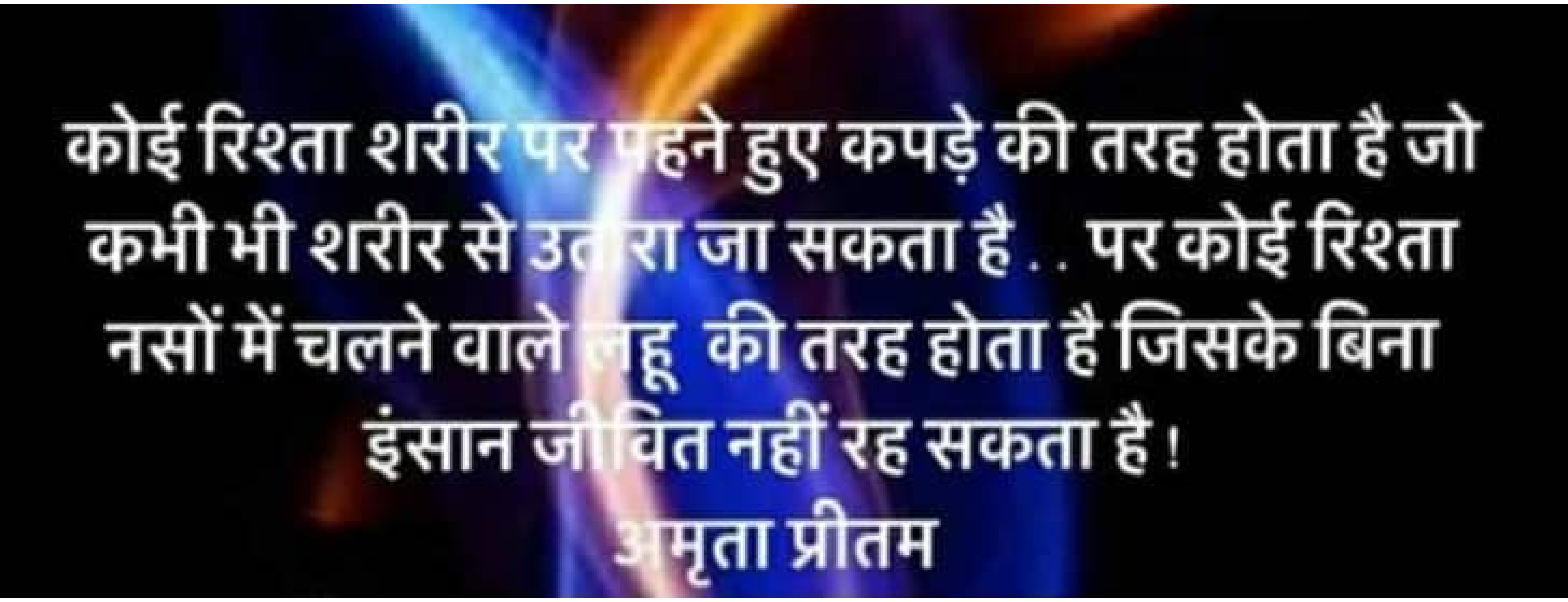
कोई रिश्ता शरीर पर पहने हुए कपड़े की तरह होता है जो
कभी भी शरीर से उतारा जा सकता है . . पर कोई रिश्ता
नसों में चलने वाले लहू की तरह होता है जिसके बिना
इंसान जीवित नहीं रह सकता है !
अमृता प्रीतम

CamScanner

तुम पूछते हो: 'आपका धर्म क्या है?'

मैं हिंदू नहीं हूं, मुसलमान नहीं हूं, जैन नहीं हूं, बौद्ध नहीं हूं। मेरा धर्म विशेषण-शून्य है। मैं सिर्फ धार्मिक हूं। मैं इस अस्तित्व को प्रेम करता हूं। इस अस्तित्व में मेरी श्रद्धा है।

शब्दों में मेरा रस नहीं है। बोल रहा हूं तुम्हारे कारण, अन्यथा मौन में मेरा आनंद है। बोल रहा हूं कि तुम्हें भी मौन की तरफ फुसला ले चलूं।

और जिन्होंने मुझे सुना है वे मौन की तरफ सरकने शुरू हो गए हैं। जो मुझे समझ रहे हैं वे मौन होते जा रहे हैं। वे जब मुझे सुन रहे हैं तब भी मौन हैं।

ओशो💐🌳🌷🌸🌼🌺🌼🌸🌳
"पिया को खोजन मैं चली -7"

CS CamScanner

जब भगवान ने हमें देखने के लिए आंखें दी हैं, तो हम लोगों को कानों से क्यों देखते हैं?

CS CamScanner

CamScanner

सारी पृथ्वी मंदिर और चर्च से भरी है
पर धर्म कहा है
हालत उल्टी है
धर्म नही बढ़ा
ओशो।

CamScanner

"सभी गलत कार्य मन से ही उपजाते हैं। अगर मन परिवर्तित हो जाय तो क्या गलत कार्य रह सकता है।"

CamScanner

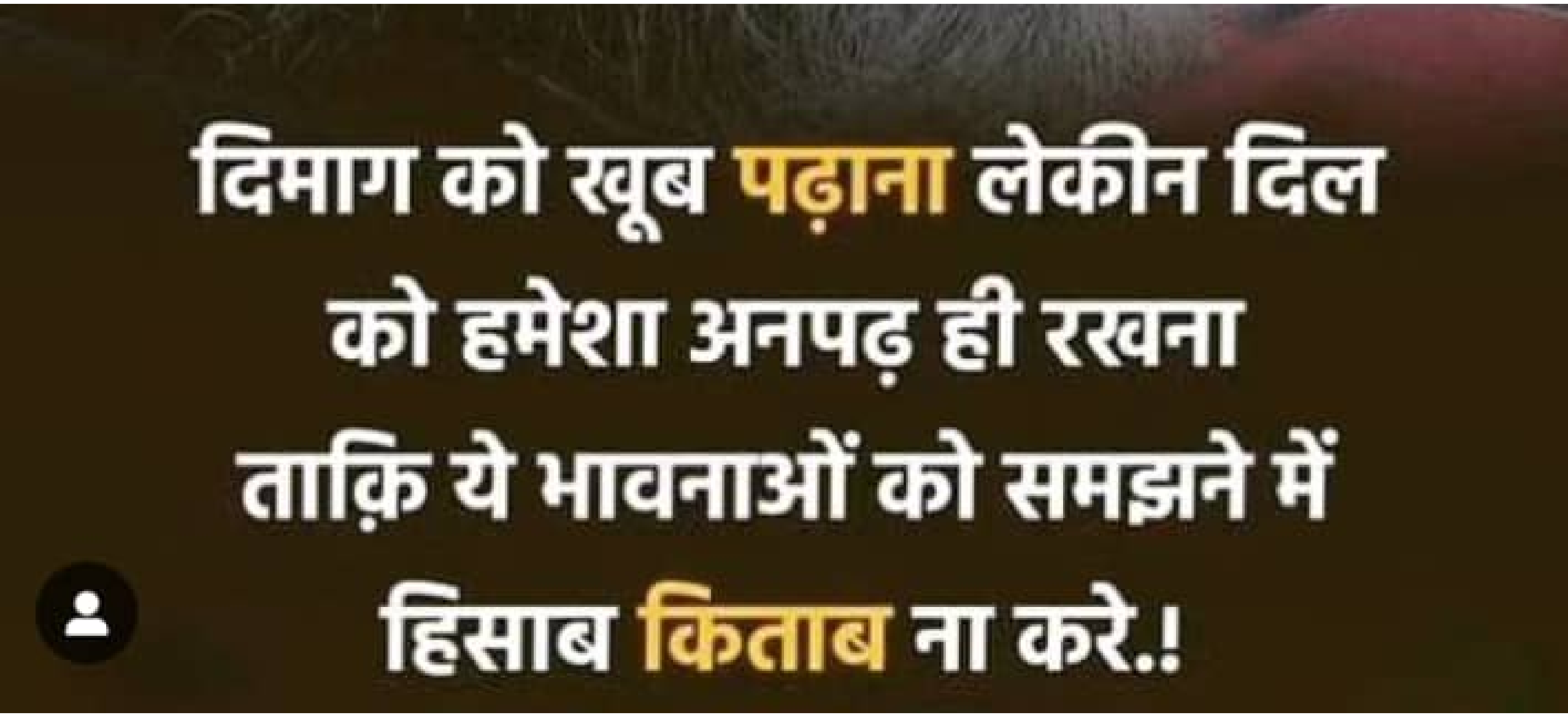

CamScanner

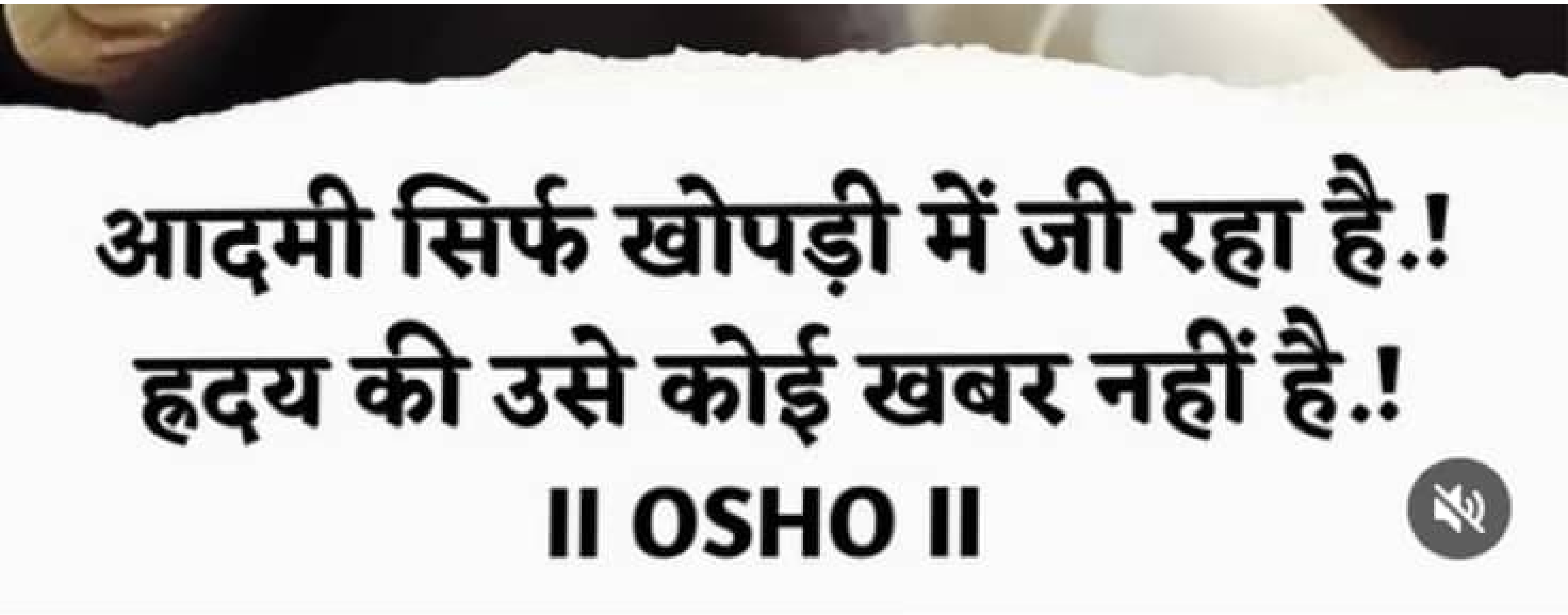

CamScanner

यह एक ऐसा युग चल रहा है जिसमे धर्म के नाम पर लड़ने को सभी तैयार है, लेकिन धर्म के रास्ते पर चलने को कोई तैयार नही।

ओशो

CamScanner

सिर्फ एक कदम अपनी मर्जी का
चलो, तो तुम्हारे जो अपने हैं,
तुम्हें पता चल जाएगा, कि वह
तुम्हारे कितने अपने हैं
@akd.369

CamScanner

जो मृत्यु छीन ले वह संपत्ति नहीं है जो मृत्यु के भी पार जाए वही संपत्ति है..!

|| OSHO ||

CamScanner

जितनी गहरे अंधकार की यात्रा होगी, उतने अंधकार से मुक्त होने के आकांक्षा का भी जन्म हो सकता है।।

CamScanner

"यदि आपकी ख़ुशी दूसरो पर निर्भर करती है
तो आप एक गुलाम हो।
अभी आप पूरी तरह से मुक्त नही हुए हो
अभी आप बंधन (गुलामी) में बंधे हो।"

CamScanner

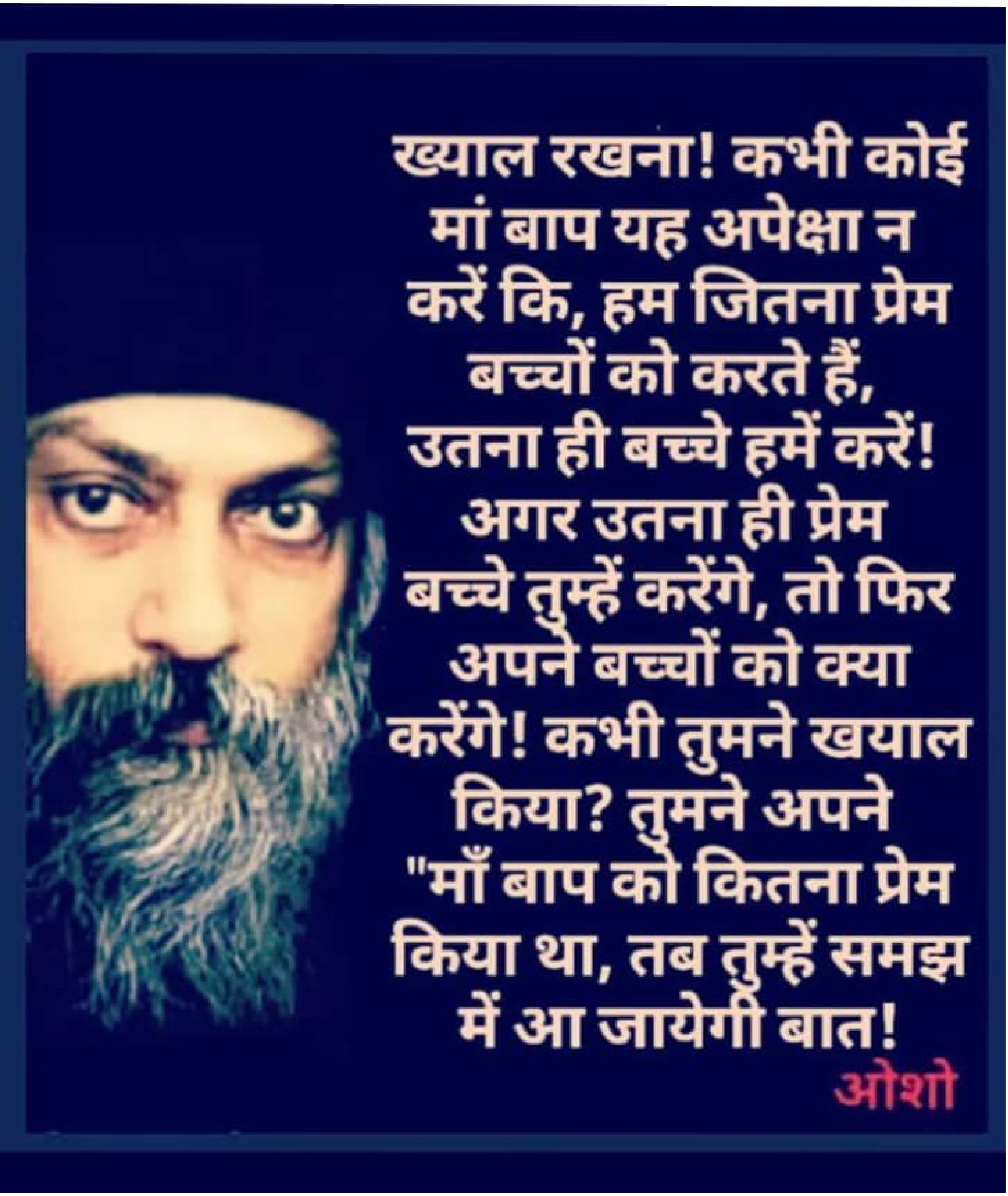

CS CamScanner

कोई मेरे बारे में गलत कहे तो

उससे पूछना की,

ठीक से जानते हो..?

या यूं ही मन हल्का कर रहे हो..?

CamScanner

संभव है।'

तुम समझते तो हो, लेकिन अभी समझ ऊपर-ऊपर है। अगर यह समझ गहरी हो जाए तो तुम्हें इस महत कार्य में सम्मिलित होना चाहिए। यह गैरिक वस्त्रों का मजाक तुम्हीं को ग्रहण करना होगा। यह माला तुम्हें भी गले में लटकानी होगी। और घबड़ाओ नहीं, नाम कुछ ऐसा देंगे--स्वामी भारतानंद भारती। ऐसा कुछ नाम देंगे कि तुम्हें याद रहे। कुछ नाम की चिंता न करो। मुझसे प्रेम है तो मुझसे जुड़ो। लेकिन अभी बहुत सी शंकाएं होंगी मन में। कल फिर लिख ले आना।

जुड़े बिना कोई राह नहीं। पीए बिना कोई मार्ग नहीं। समाधि के बिना कोई समाधान नहीं।

योग प्रीतम का यह गीत—

मेरी हुसयारियां लो, मुझे इक जाम दे दो
मिटे हस्ती हमारी, वही अंजाम दे दो,
बड़ा है बोझ सर का, करूंगा क्या इसे ले
मेरे सब नाम ले लो, मुझे विश्राम दे दो
हवाएं चल रही हैं, घटाएं घिर रही हैं
सभी कुछ हो रहा है, मुझे निष्काम दे दो
हजारों फूल खिलते, सितारे जगमगाते
खिलूं चुपचाप मैं भी, वही पैगाम दे दो
बड़ा ही शोरगुल है, मची है हाय-तोबा
मुझे इससे बचा लो, हमारा धाम दे दो
खुदी के पांव से चल, बहुत ही थक चुका हूं
चले अब राम ही खुद, मुझे आराम दे दो
यही इच्छा लिए मैं, दर पर खड़ा हूं
सहर हो तो उसी की, उसी की शाम दे दो
मेरी हुसयारियां लो, मुझे इक जाम दे दो
मिटे हस्ती हमारी, वही अंजाम दे दो

आज इतना ही।

CamScanner

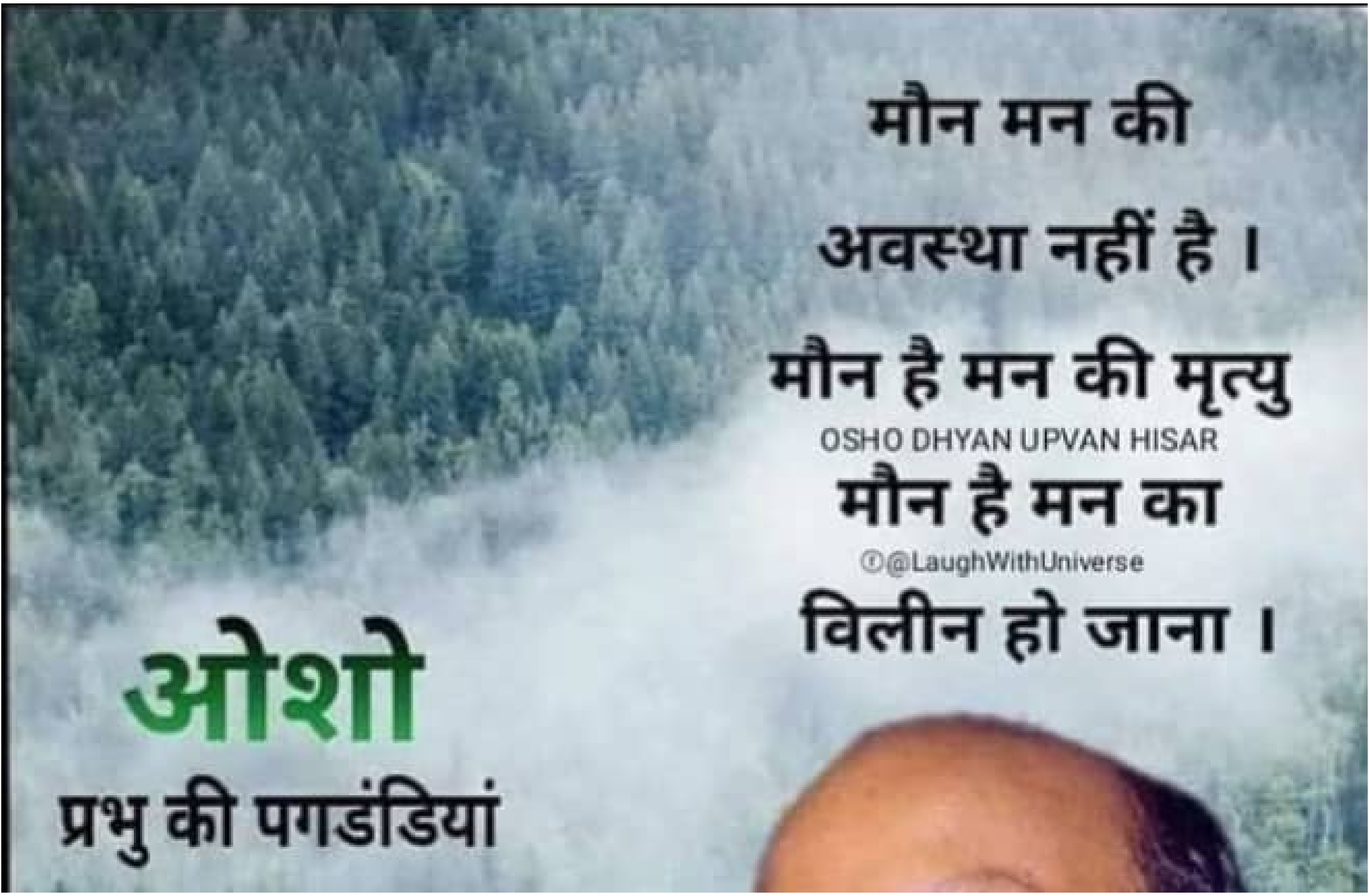
मौन मन की
अवस्था नहीं है ।
मौन है मन की मृत्यु
OSHO DHYAN UPVAN HISAR
मौन है मन का
@LaughWithUniverse
विलीन हो जाना ।
ओशो
प्रभु की पगडंडियां

CamScanner

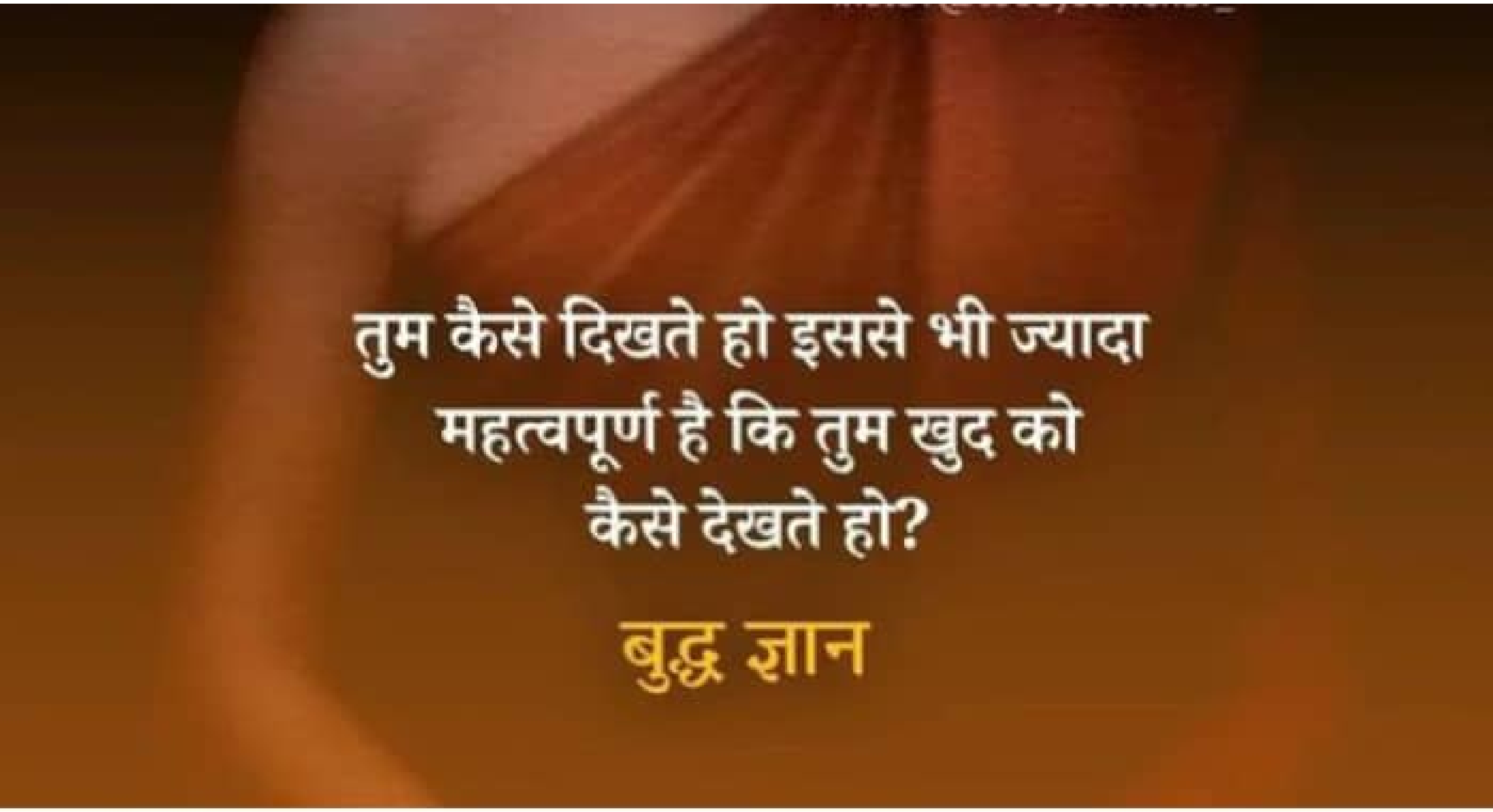

CamScanner

मूर्ख व्यक्ति की पहचान
उसकी वाणी से होती है, और एक बुद्धिमान
व्यक्ति की पहचान उसके मौन से.!

पाइथागोरस • हिन्दी सारथी

CamScanner

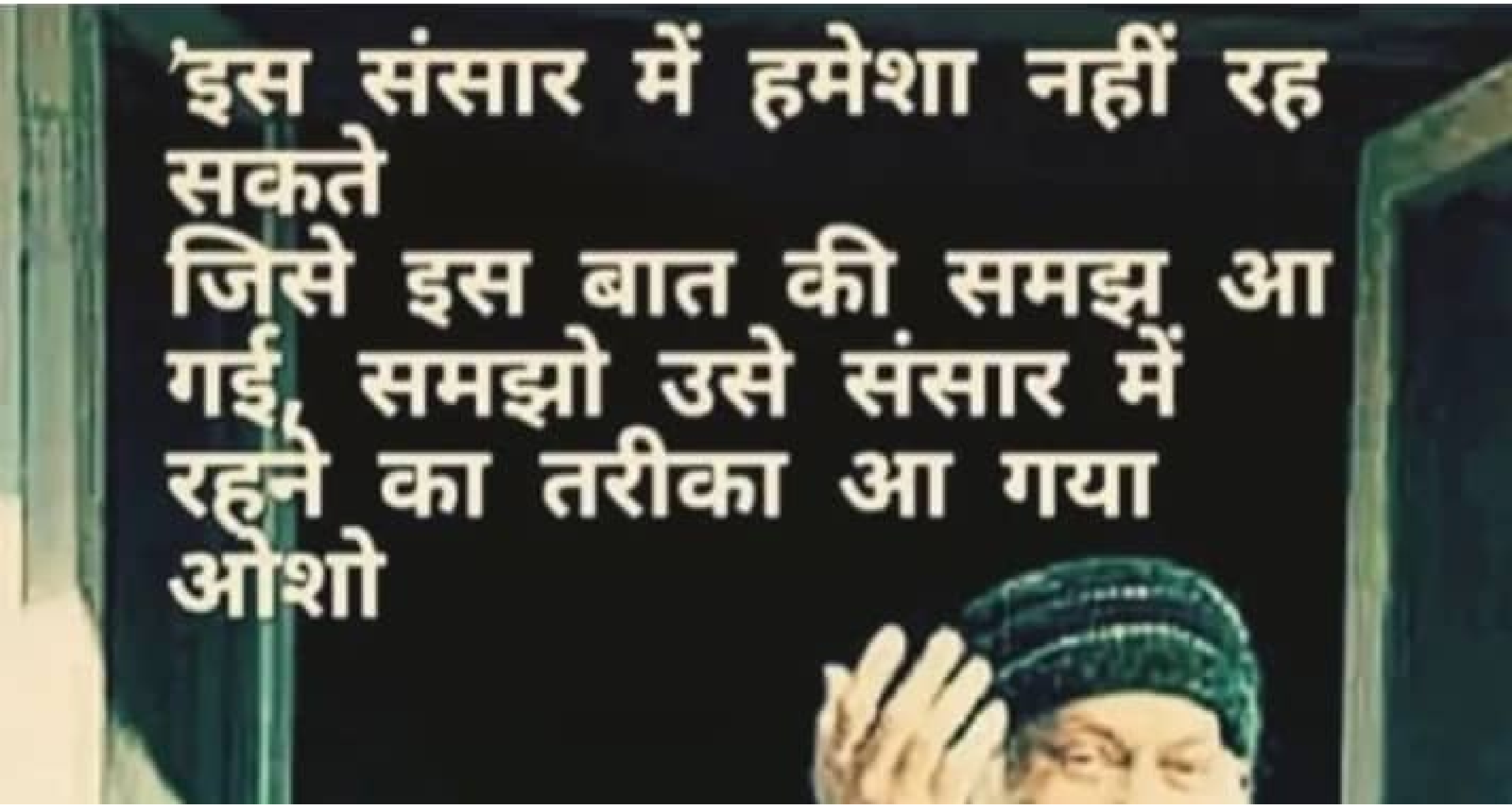
'इस संसार में हमेशा नहीं रह
सकते
जिसे इस बात की समझ आ
गई, समझो उसे संसार में
रहने का तरीका आ गया
ओशो

CamScanner

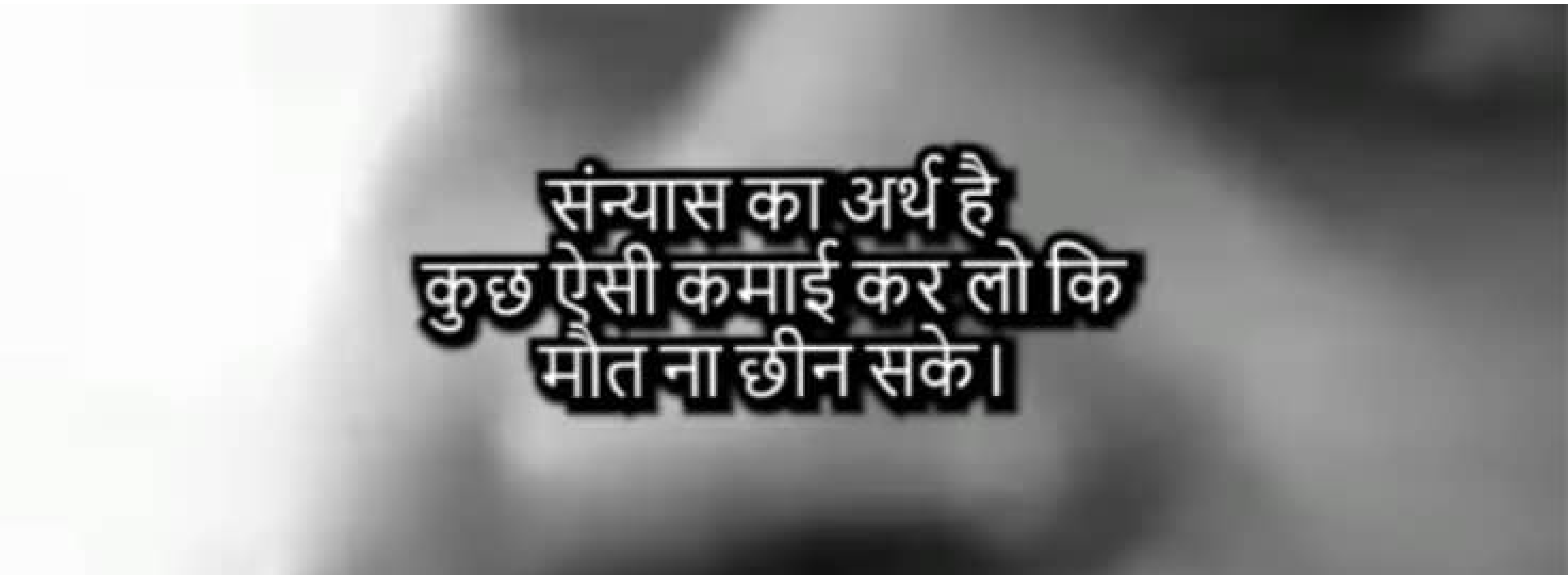

CamScanner

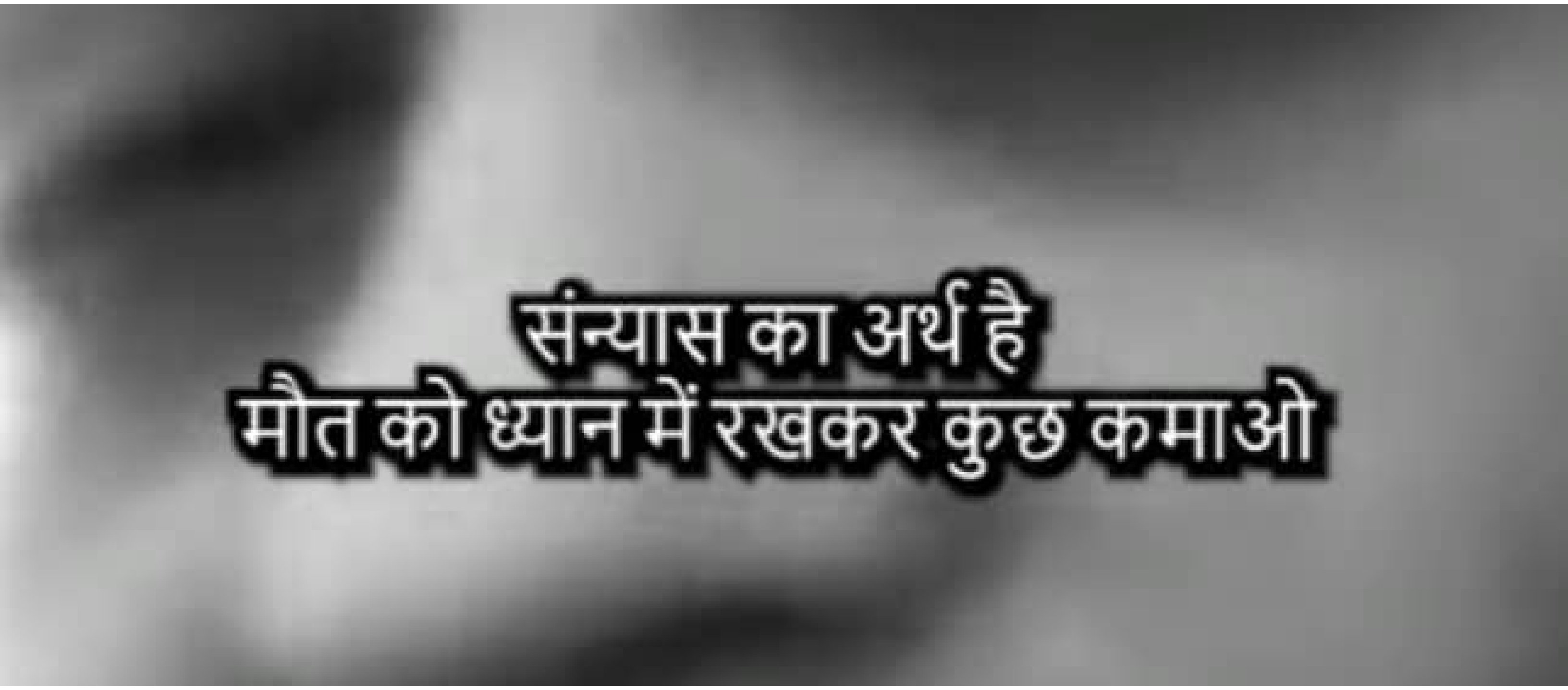

CamScanner

।। ध्यान का छोटा सा सूत्र ।।

ध्यान का छोटा सा सूत्र है :
अपने भीतर इतनी शांति,
कि विचार की कोई तरंग भी न उठे।
कोई लहर न हो ऐसा सन्नाटा;
ऐसा शून्य,
जहां बस तुम हो और कुछ भी नहीं है।
जहां यह भाव भी नहीं कि मैं हूं।
उसी क्षण यह सारा विश्व
तुम्हारे ऊपर ईश्वर बन कर
बरस पड़ता है।

☆ फिर अमरित की बूंद पड़ी, ओशो ☆

CS CamScanner

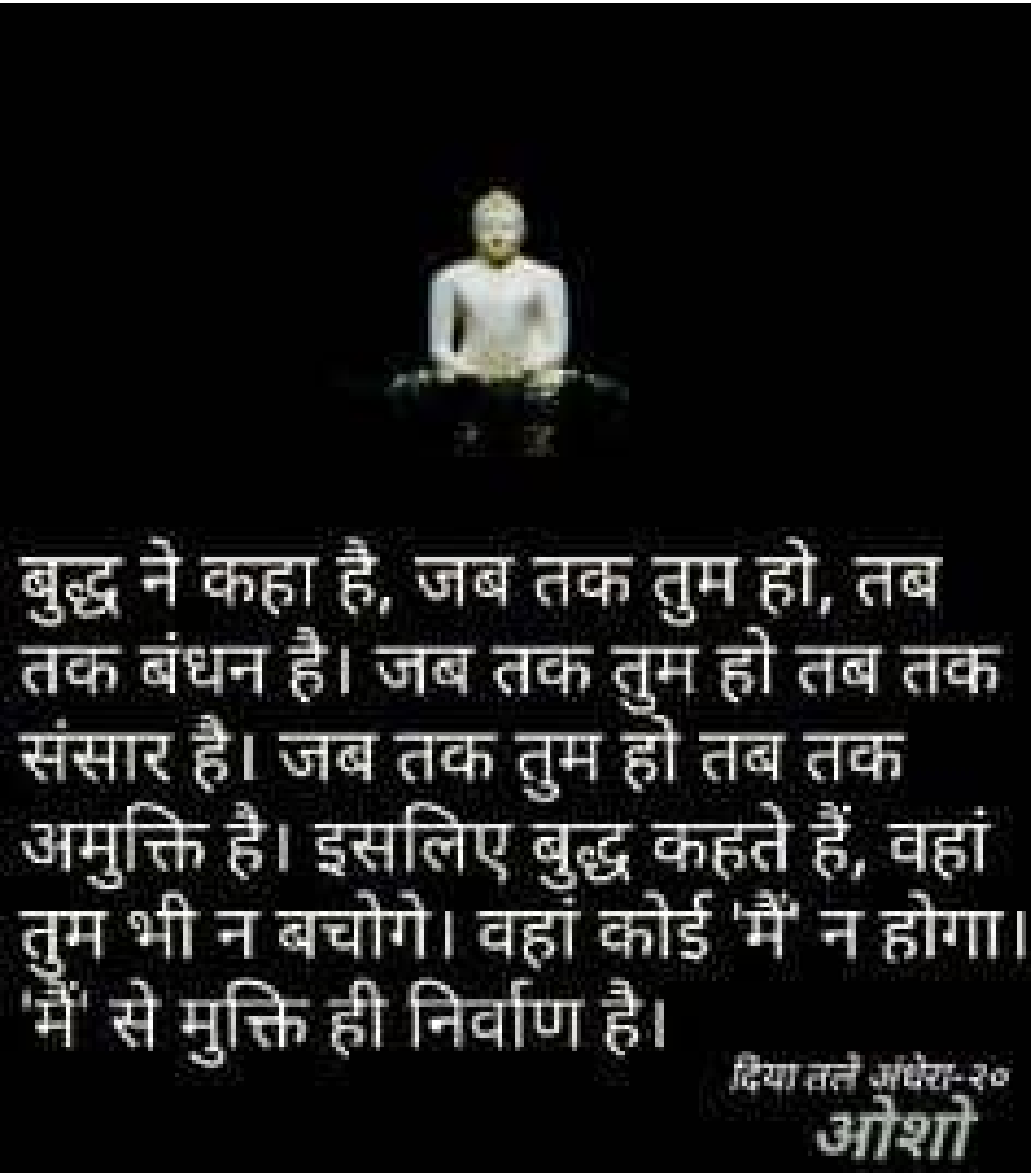
बुद्ध ने कहा है, जब तक तुम हो, तब
तक बंधन है। जब तक तुम हो तब तक
संसार है। जब तक तुम हो तब तक
अमुक्ति है। इसलिए बुद्ध कहते हैं, वहां
तुम भी न बचोगे। वहां कोई 'मैं' न होगा।
'मैं' से मुक्ति ही निर्वाण है।
दिया तले अंधेरा-२०
ओशो

CamScanner

उन्माद ओशो समूह
स्त्रीत्व को
छूना भी
एक कला है
स्त्री काया नही
हृदय है..
जो छू सको तो
स्त्रीत्व को
छूना,
स्त्री को नहीं...
ओशो

CamScanner

CamScanner

10:43 pm 0 KB/s 4G 26%

facebook

2.6K 3 comments • 651 shares

Like Comment Share

(ओशो) के प्रेमी

Amit Puri Osho · 1h ·

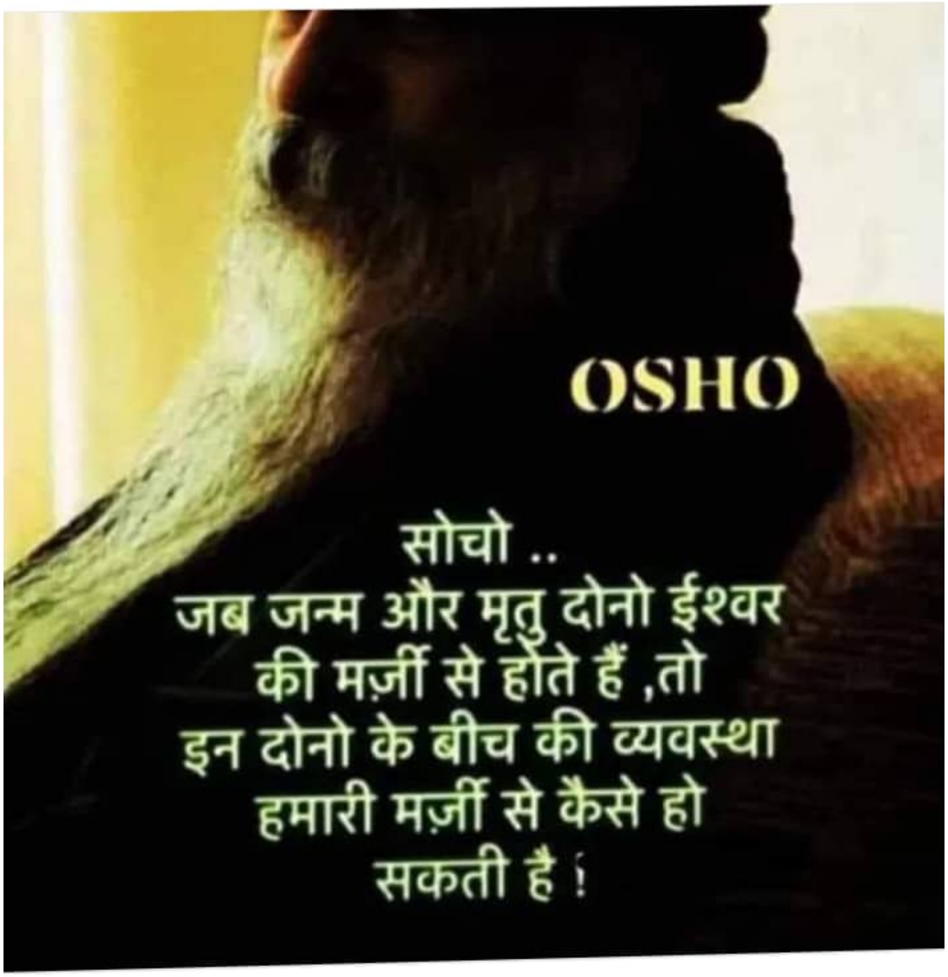

9

Like Comment Send

Indian Council For Cultural Relations

Suggested for you · 31 Jul ·

CS CamScanner

10:42 pm 0 KB/s 26%

5

Like Comment Share

🤸मस्तीखोरों का अड्डा😜😂

RN Kansara · 34m

जिसका भी चंद्र निर्बल हो, वो कृपया अपनी कुंडली और आधारकार्ड लेकर ISRO की ऑफिस का संपर्क करे। ☺️☺️

You and 12 others 2 comments

Like Comment Send

Polio Free Afghanistan

Sponsored ·

د ماشوم ښه پالنه د ټولو والدینو مسوولیت دی... See more

CamScanner

10:38 pm 0 KB/s 27%

Mahesh Gaur is at **R K Puram**.

Suggested for you · 1d ·

55K 251 comments • 2.8K shares

Like Comment Share

U.G.Krishnamurti

14h ·

The demand to be prepared for all future actions and all situations is the cause of our problems. Every

CamScanner

10:38 pm 0 KB/s 27%

Pushpa Vasnani · 2h ·

Osho Naman ❤️🌹👏

दिन में तुम पति थे, पत्नी थे, मां थे, पिता थे,
बेटे थे; रात सो गए, सब खो गया।
न पिता रहे, न पत्नी, न बेटे।
दिन तुम अमीर थे, गरीब थे; रात सो गए,
न अमीर रहे न गरीब। दिन तुम क्या—क्या थे!
रात सो गए, सब खो गया। दिन में जवान थे,
के थे, रात सो गए, न जवान रहे, न बूढ़े।
सुंदर थे, असुंदर थे, सब खो गया।
सफल—असफल सब खो गया।
रात ने दिन को पोंछ दिया।
रात जब सो जाते हो तब सब
भूल जाता है, सब झूठ हो जाता है ।

OSHO

24

3 comments • 2 shares

Like Comment Share

CamScanner

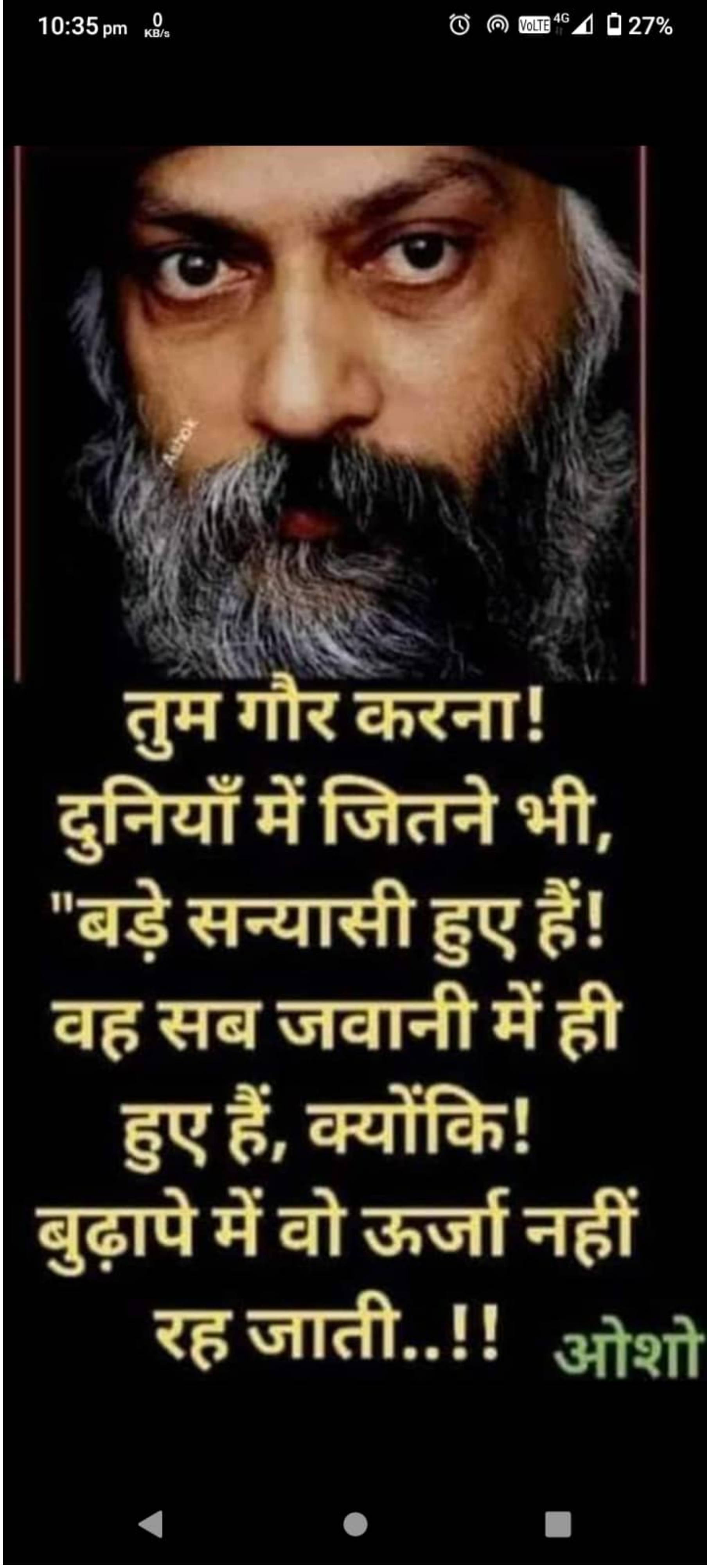
10:35 pm
27%
तुम गौर करना!
दुनियाँ में जितने भी,
"बड़े सन्यासी हुए हैं!
वह सब जवानी में ही
हुए हैं, क्योंकि!
बुढ़ापे में वो ऊर्जा नहीं
रह जाती..!!
ओशो

CamScanner

10:26 pm 0 KB/s 29%

4

Ayushman Jagat/आयुष्मान जगत

Reels · 53m ·

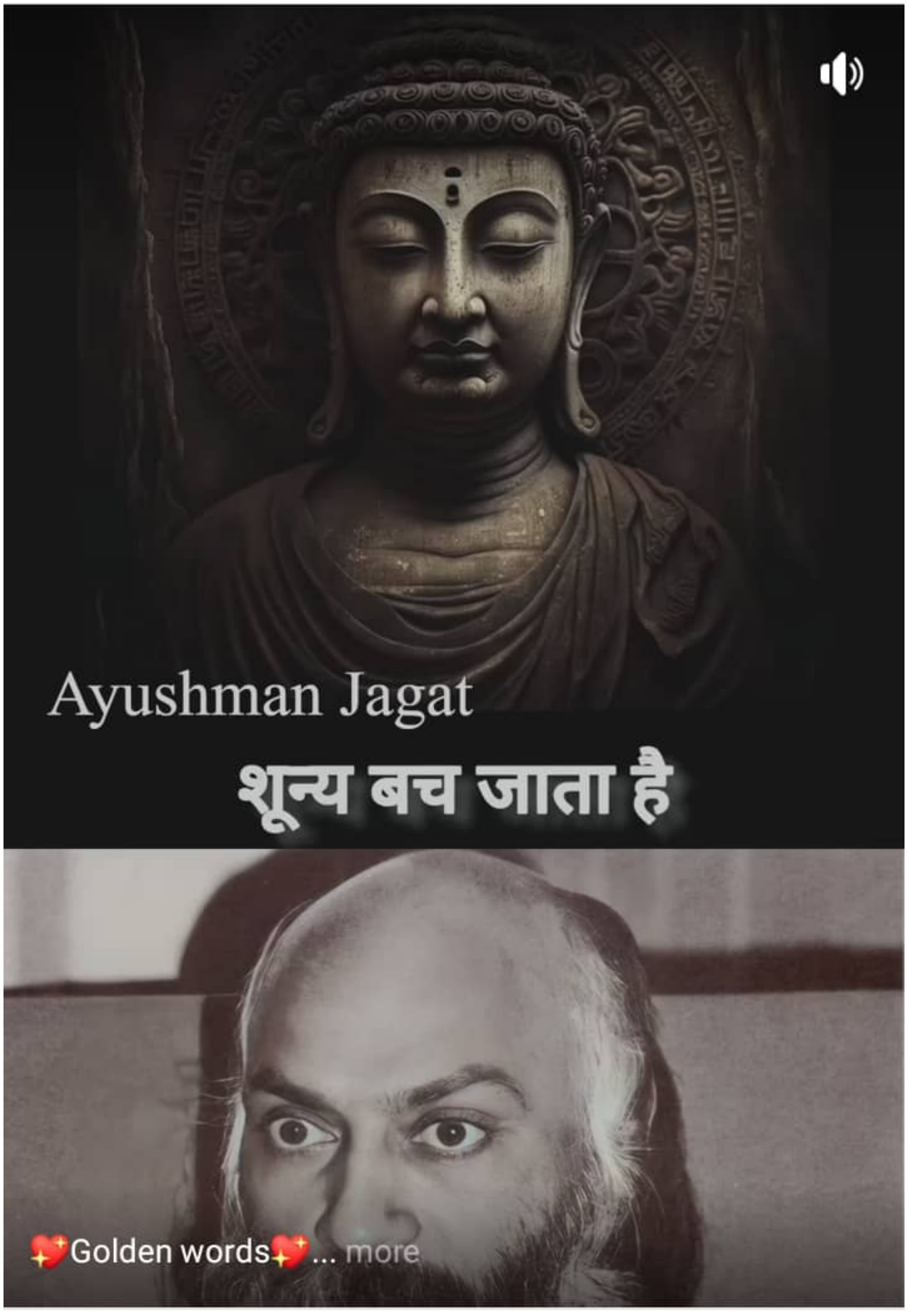

47

11 shares • 1.1K views

Like Comment Share

Charanpreet Singh

CamScanner

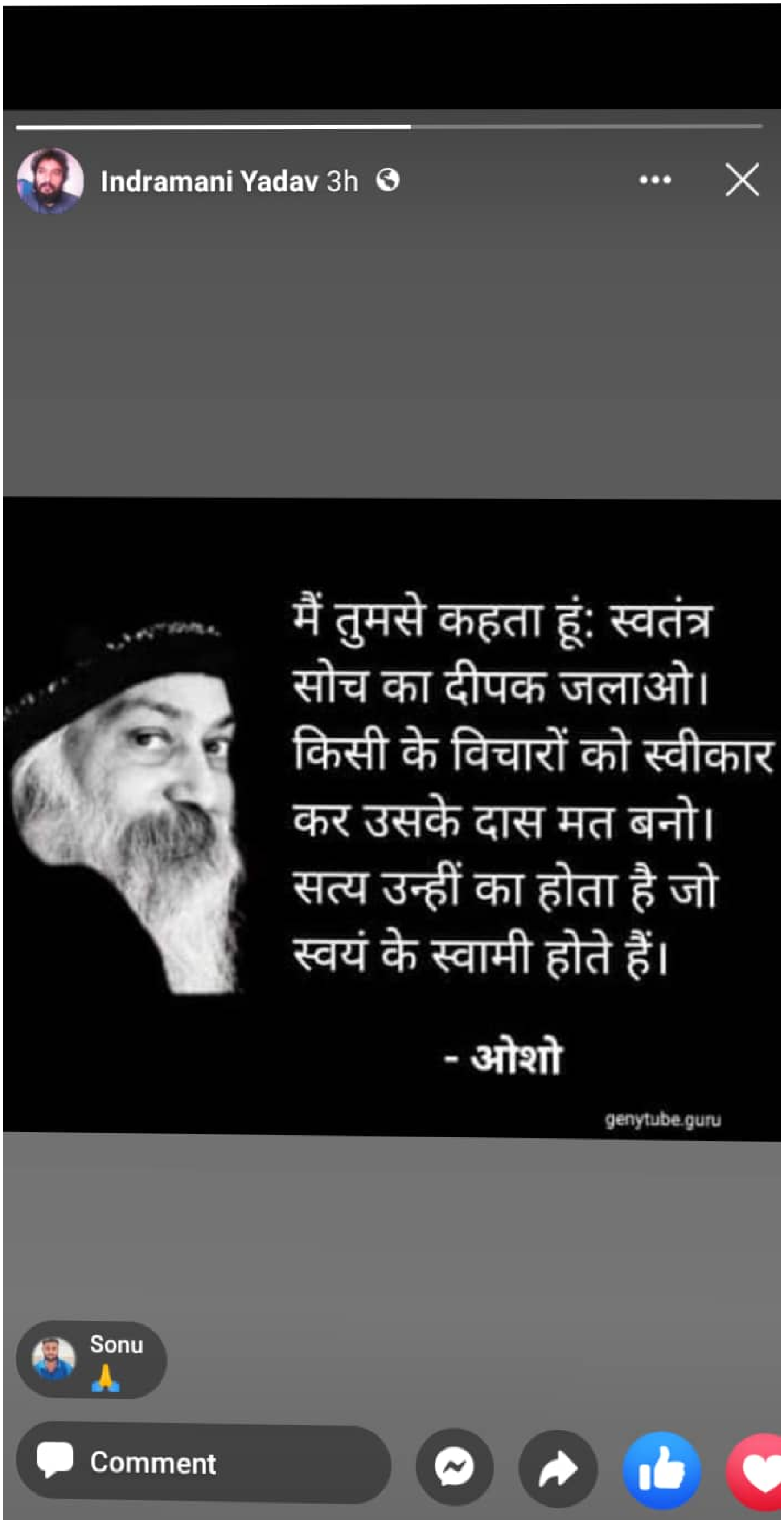
Indramani Yadav 3h
मैं तुमसे कहता हूं: स्वतंत्र सोच का दीपक जलाओ। किसी के विचारों को स्वीकार कर उसके दास मत बनो। सत्य उन्हीं का होता है जो स्वयं के स्वामी होते हैं।
- ओशो
genytube.guru
Sonu
🙏
Comment

CamScanner

10:10 pm 7 KB/s 33%

dharmiik__ Har har Mahadev 🙏... more

View all 252 comments

See translation

aacharya_rajneesh__osho

Add a comment...

2 hours ago

aacharya_rajneesh__osho

CamScanner

10:09 pm 64 KB/s 33%

Add a comment...

2 hours ago

aacharya_rajneesh__osho

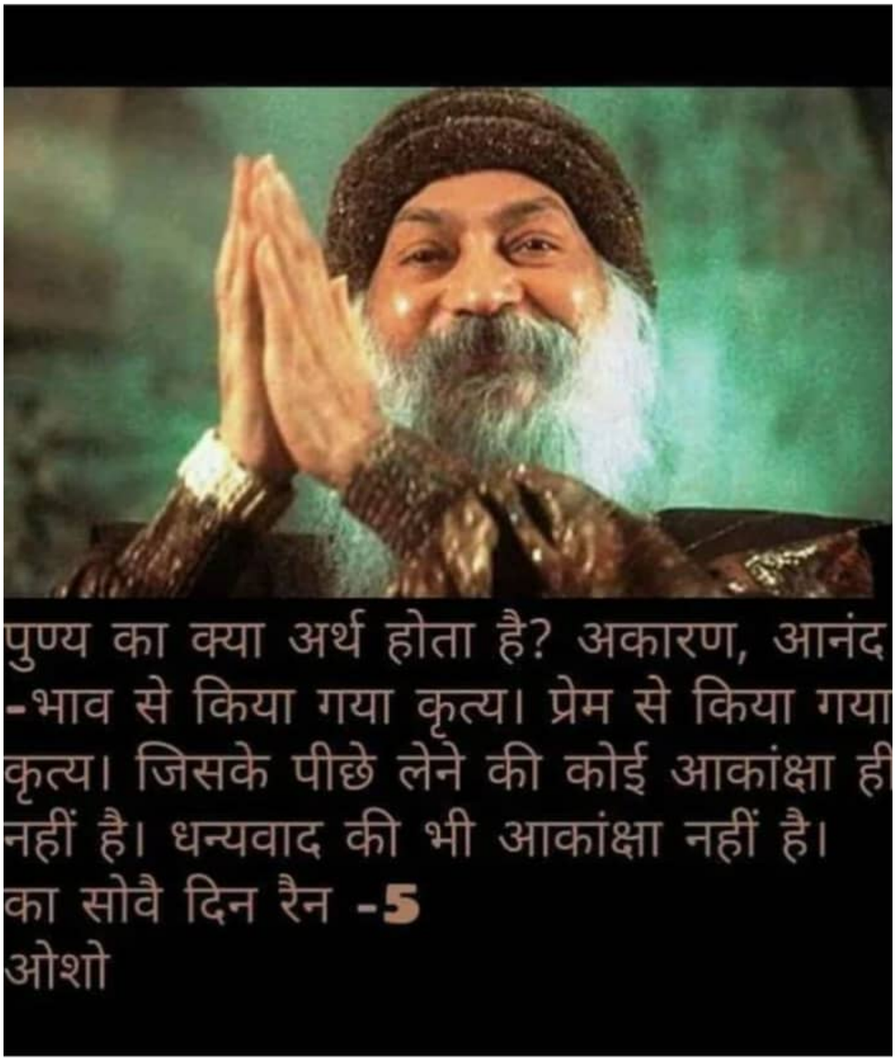

Add a comment...

2 hours ago

Recruitment Hub
Sponsored

CamScanner

10:07 pm

Comment if you agree.... more

View all 10 comments

2 days ago

shar.ma2026

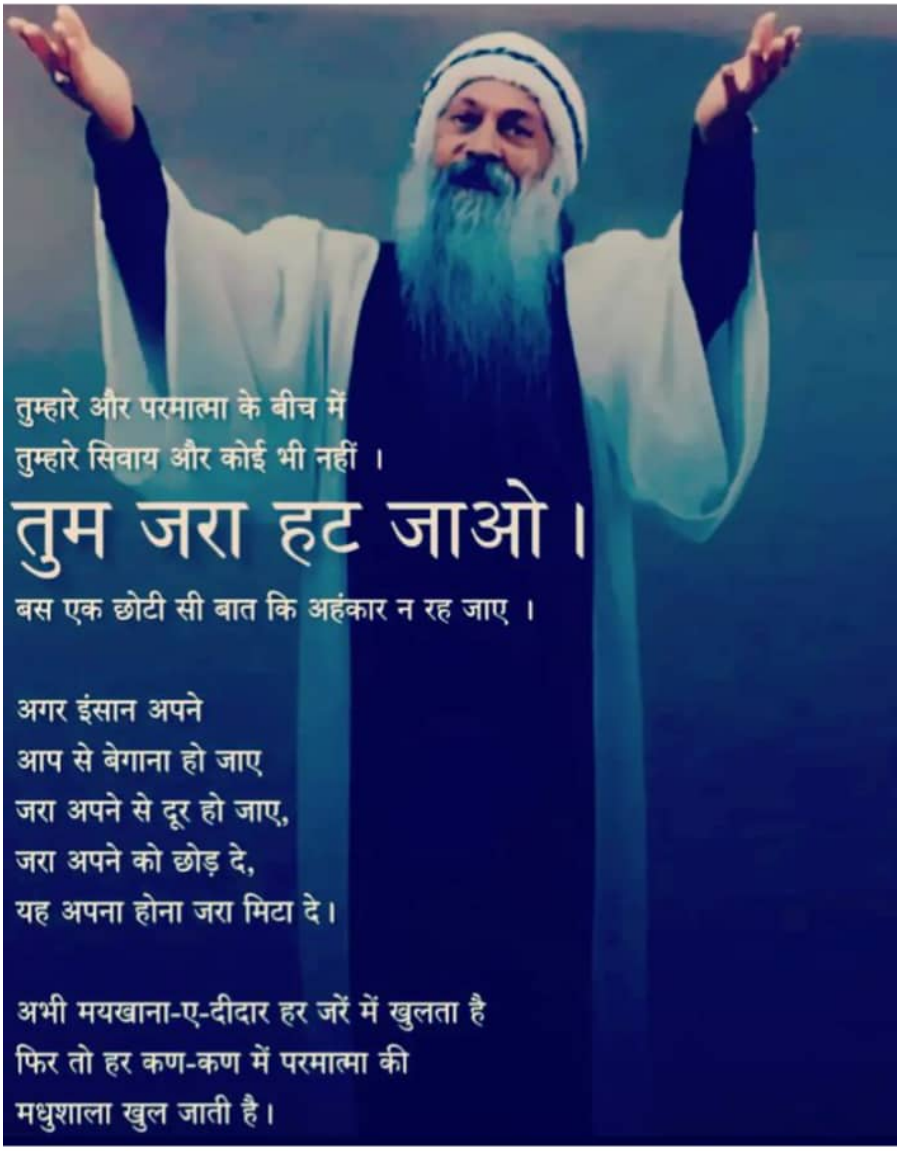

15 likes

shar.ma2026 OSHO..

Add a comment...

14 hours ago

CamScanner

10:05 pm 165 KB/s 34%

Instagram

Add a comment...

2 hours ago

aacharya_rajneesh__osho

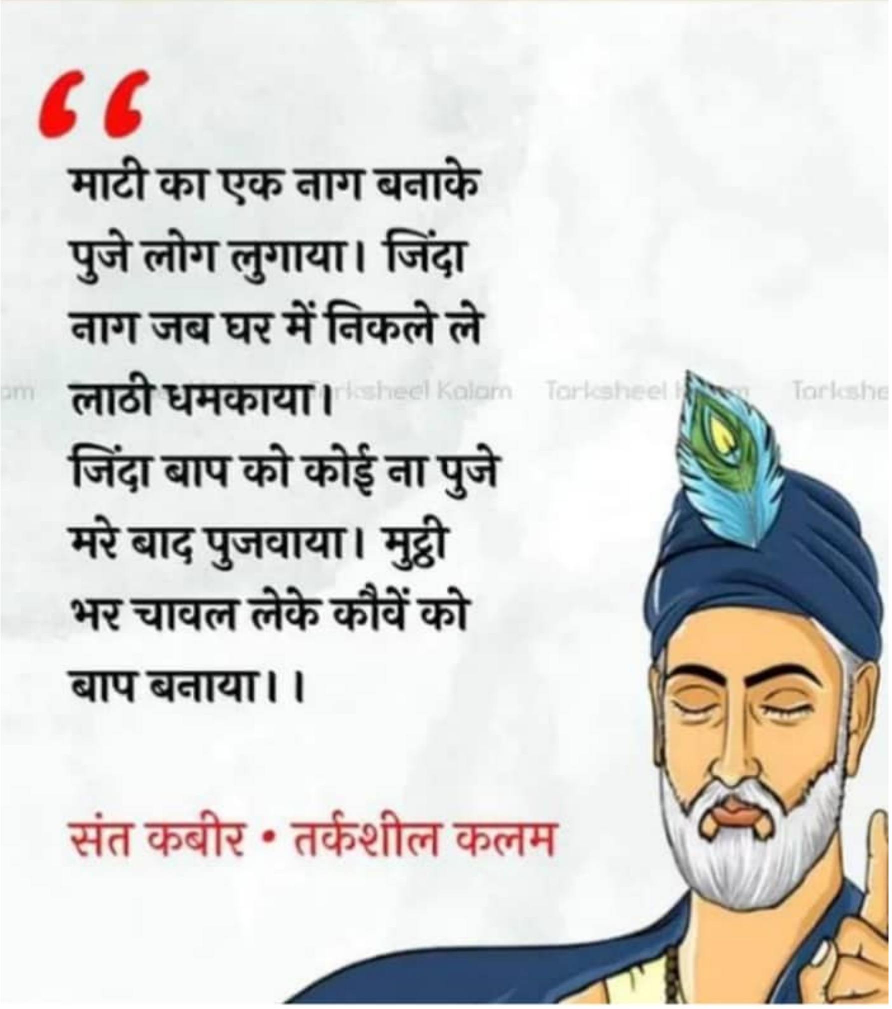

1 like

Add a comment...

2 hours ago

poorvasharmamusic
Sponsored

CamScanner

10:05 pm 44 KB/s 34%

View all 6,333 comments

30 July

aacharya_rajneesh__osho

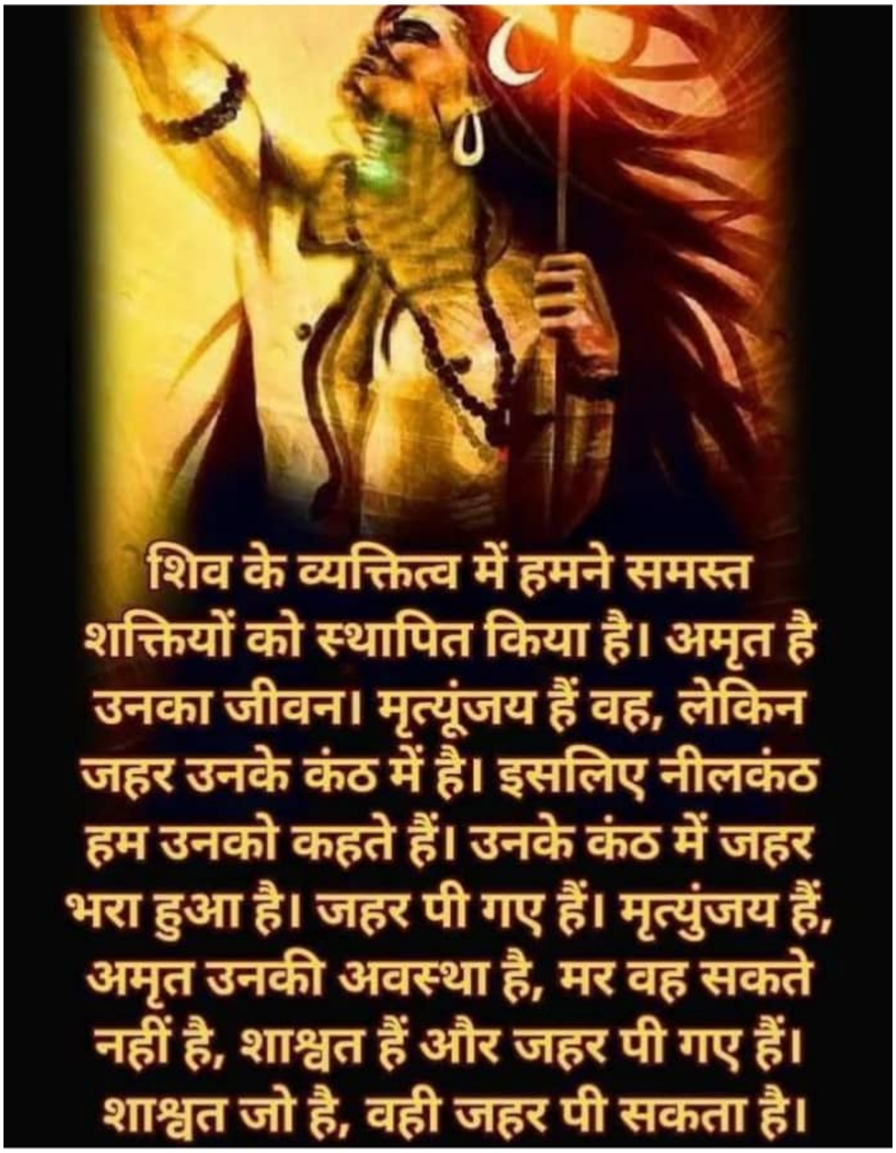

1 like

Add a comment...

2 hours ago

aacharya_rajneesh__osho

CamScanner

10:04 pm 3 KB/s 34%

Instagram

62 likes

oshospirituality अकड़ ~ OSHO

View all 2 comments

2 hours ago • See translation

shabdo_ki_jadugari

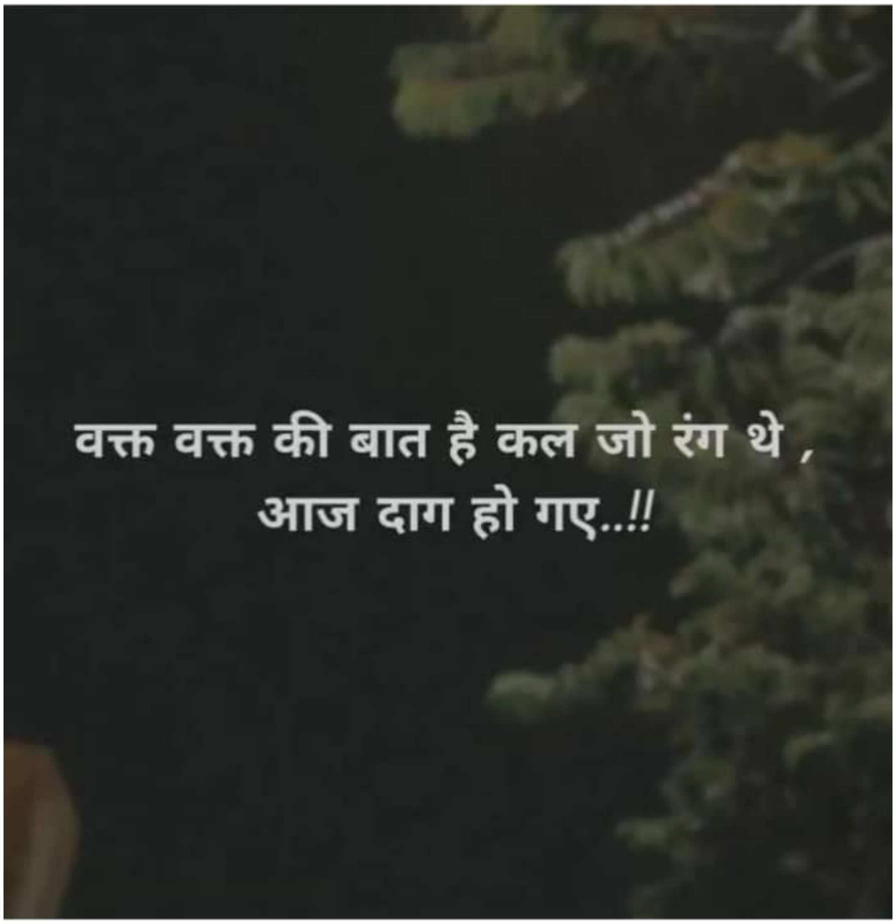

542 likes

shabdo_ki_jadugari #shayari #shayar #quotestagram #instagram #inspiration

View all 14 comments

1 day ago • See translation

CamScanner

10:00 pm 6 KB/s 35%

1,84,958 likes

prayagraj_tourism Shree Bade Hanumanji 🥰🙏🏼
Prayagraj, Heart of UP ❤️...... more

View all 1,101 comments

12 July • **See translation**

shar.ma2026

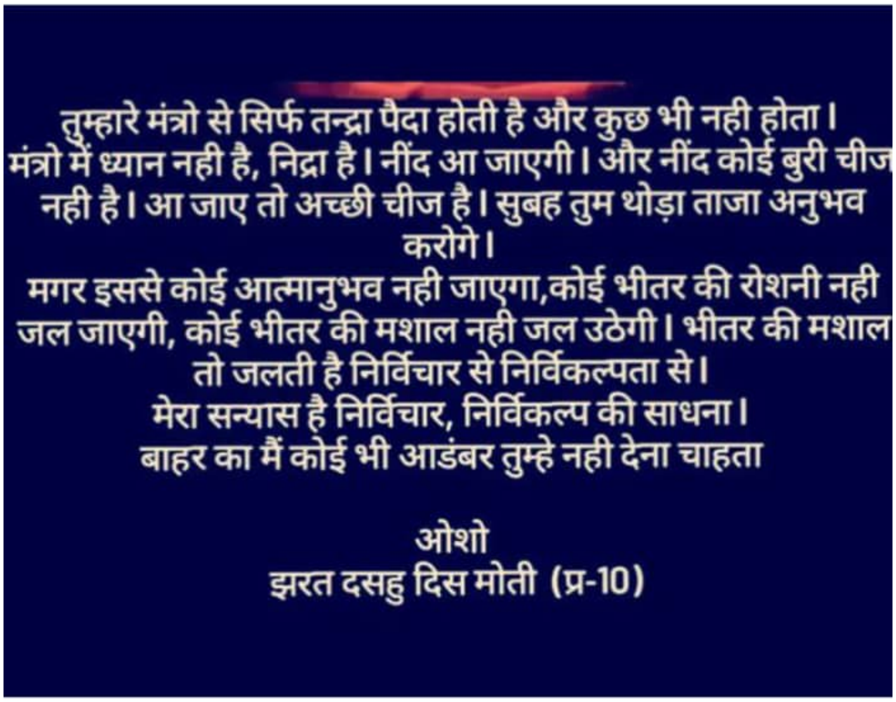

16 likes

shar.ma2026 OSHO..

Add a comment...

14 hours ago

universityofosho
India

CamScanner

9:58 pm 0 KB/s 35%

6,72,418 likes

mr.sonu_keshri Jai ho baba

View all 8,946 comments

29 July · See translation

aacharya_rajneesh__osho

Add a comment...

5 days ago

aacharya_rajneesh__osho

CamScanner

9:58 pm 3 KB/s 35%

View 1 comment

3 days ago

aacharya_rajneesh__osho

जोगी ध्यावै परम पद!
इसलिए योगी मंदिर—मस्जिद का ध्यान नहीं करता,परम पद का ध्यान करता है। क्या है परम पद? कहां है परम पद? मंदिर भी बाहर, मस्जिद भी बाहर; परम पद तुम्हारे भीतर है। परमात्मा तुम्हारे भीतर विराजमान है। और तुम कहां खोज रहे हो बाहर? और जब तक तुम बाहर खोजते रहोगे, उसे तुम कभी पा न सकोगे।
ओशो Osho wisdom

Add a comment...

2 hours ago

mohiitgoswamiofficial
Sponsored

CamScanner

9:57 pm 0 KB/s 36%

Instagram

11,948 likes

motivation_line_ F/w US 👉@motivation_line_
F/w US 👉@motivation_line_... more

View all 58 comments

Add a comment...

5 hours ago

CamScanner

9:56 pm 88 KB/s 36%

12 August • MADE WITH EFFECT

smiling_buddha_
चित्रकूट धाम

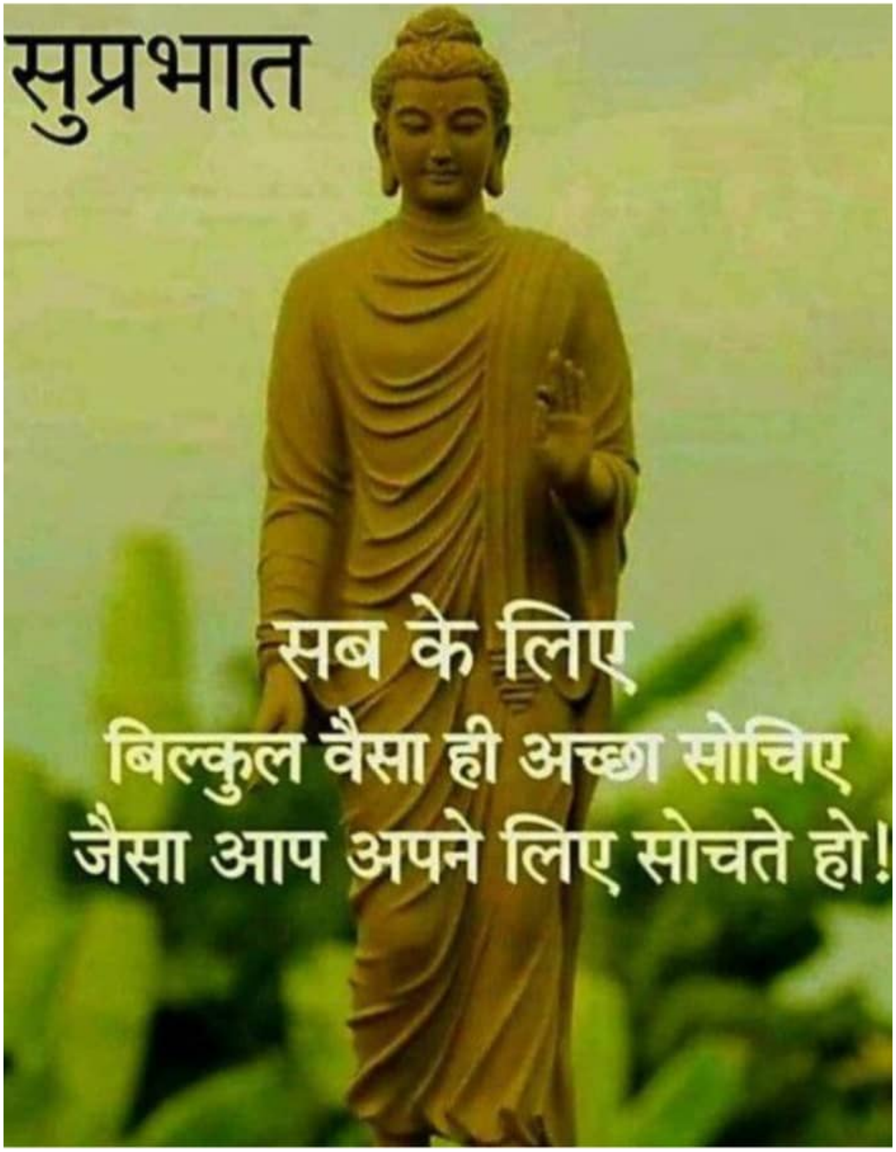

1,109 likes

smiling_buddha_ नमो बुद्धाय🙏... more

View all 3 comments

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

9:56 pm 9 KB/s VoLTE 4G 36%

Liked by **aacharya_rajneesh__osho** and **others**

oshopresent Osho 🤍🔆 #osho #oshoworld #osholove #oshohindiquotes

Add a comment...

10 hours ago

aacharya_rajneesh__osho

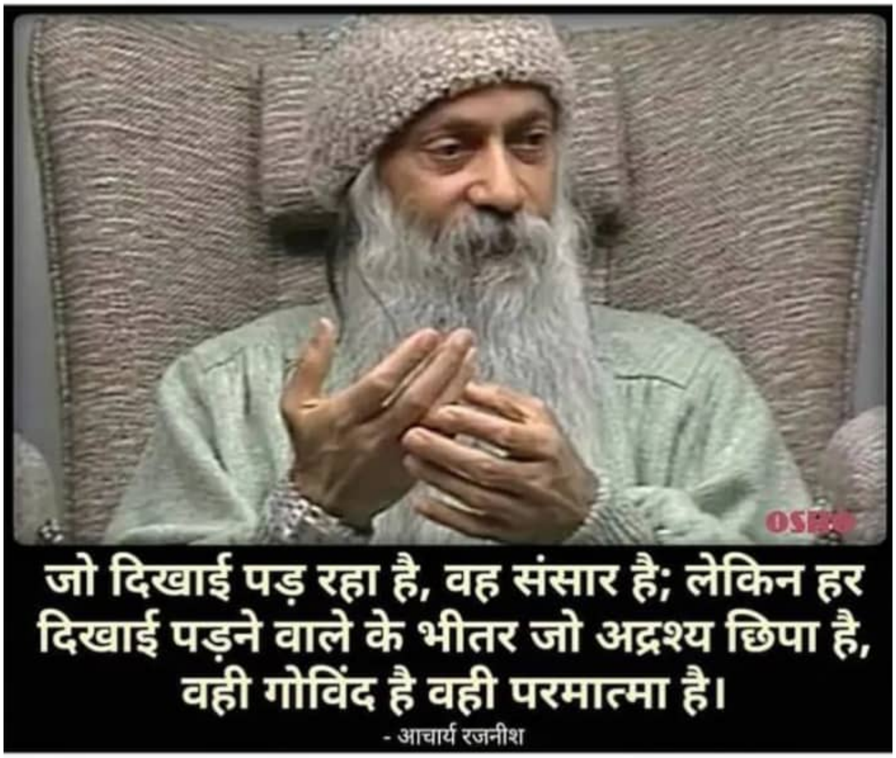

Add a comment...

2 hours ago

Find My Phone By Clap
Sponsored

CamScanner

9:54 pm 114 KB/s VoLTE 4G 36%

8 hours ago • MADE WITH EFFECT

shar.ma2026

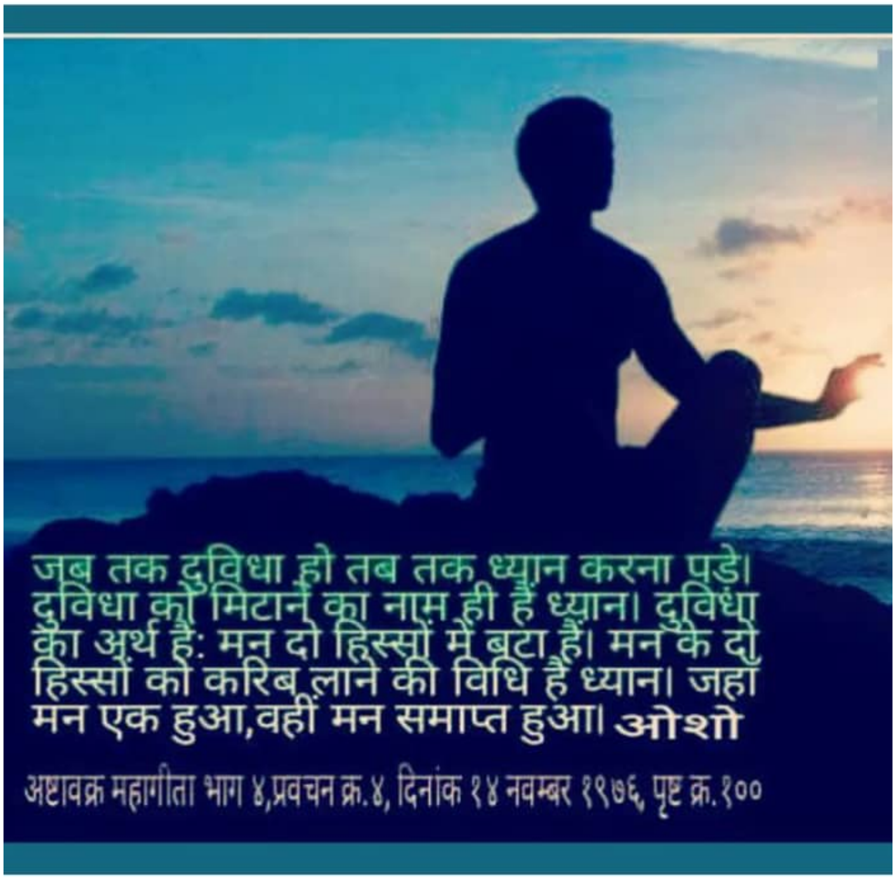

35 likes

shar.ma2026 OSHO..

Add a comment...

14 hours ago

Suggested for you

CamScanner

9:51 pm 7 KB/s 37%

Add a comment...

1 hour ago

aacharya_rajneesh__osho

Add a comment...

1 hour ago

Suggested for you

khushitiwari7229

CamScanner

Add a comment...

1 hour ago

aacharya_rajneesh__osho

CamScanner

9:50 pm 0 KB/s 37%

View all 1,550 comments

25 July • See translation

aacharya_rajneesh__osho

Add a comment...

2 hours ago

osho_hindi_official

osho_hindi_official • Original audio

CamScanner

9:48 pm 0 KB/s 38%

Instagram

oshotrack • Original audio

420 likes

CamScanner

9:48 pm 200 KB/s 38%

Instagram

Liked by **poojachandel6360** and **others**

sanatanibalak1214 शिव ताण्डव 🔱

.... more

View all 1,098 comments

13 July • **See translation**

aacharya_rajneesh__osho

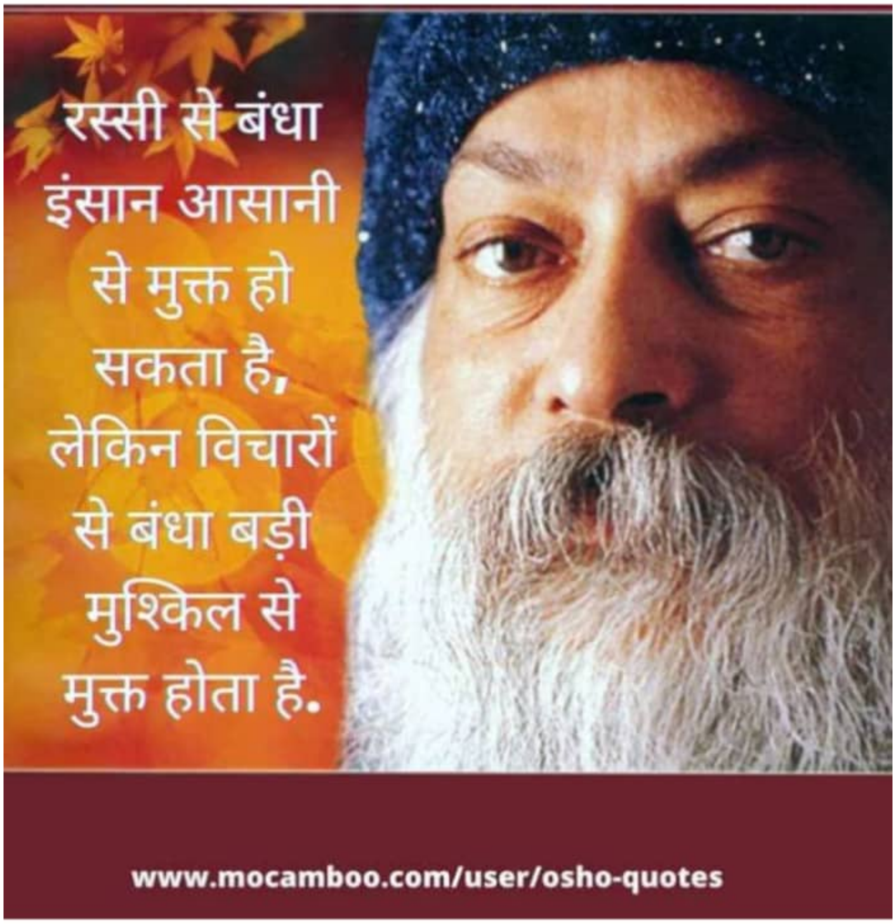

Add a comment...

2 hours ago

osho_hasta_hua_dhram_00

CamScanner

9:47 pm 5 KB/s 38%

Instagram

smiling_buddha_
चित्रकूट धाम

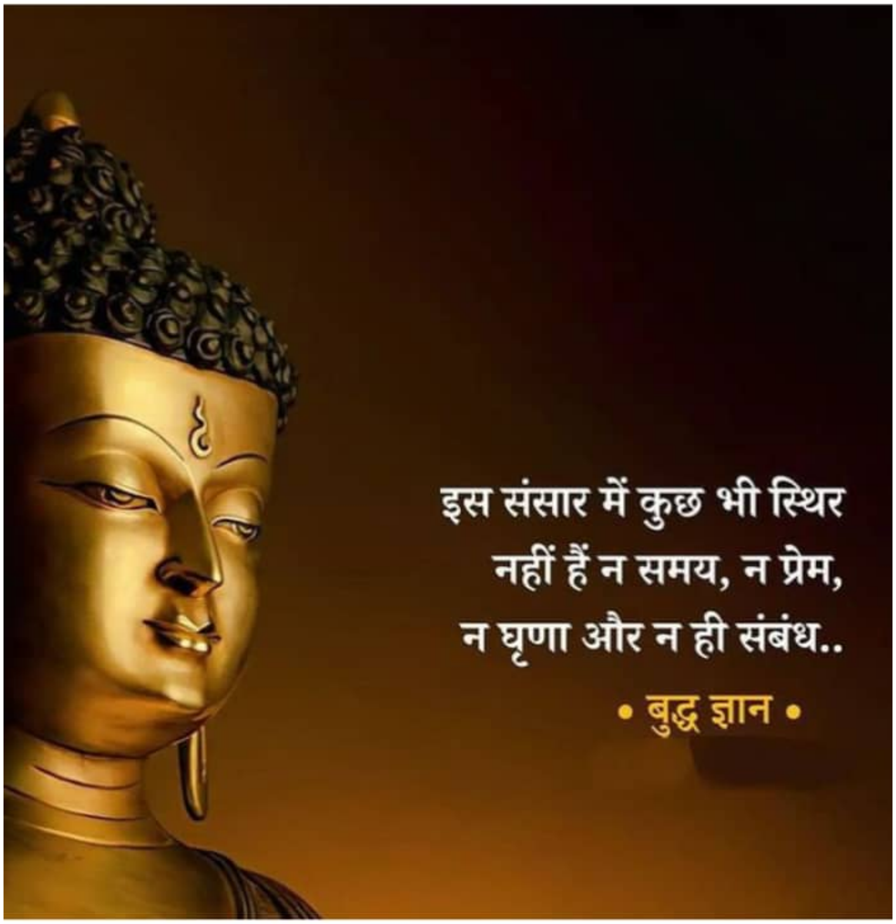

141 likes

smiling_buddha_ नमोबुद्धय❤️‍🔥💥
.... more

View 1 comment

Add a comment...

5 hours ago

aacharya_rajneesh__osho

CamScanner

9:47 pm 1 KB/s VoLTE 4G 38%

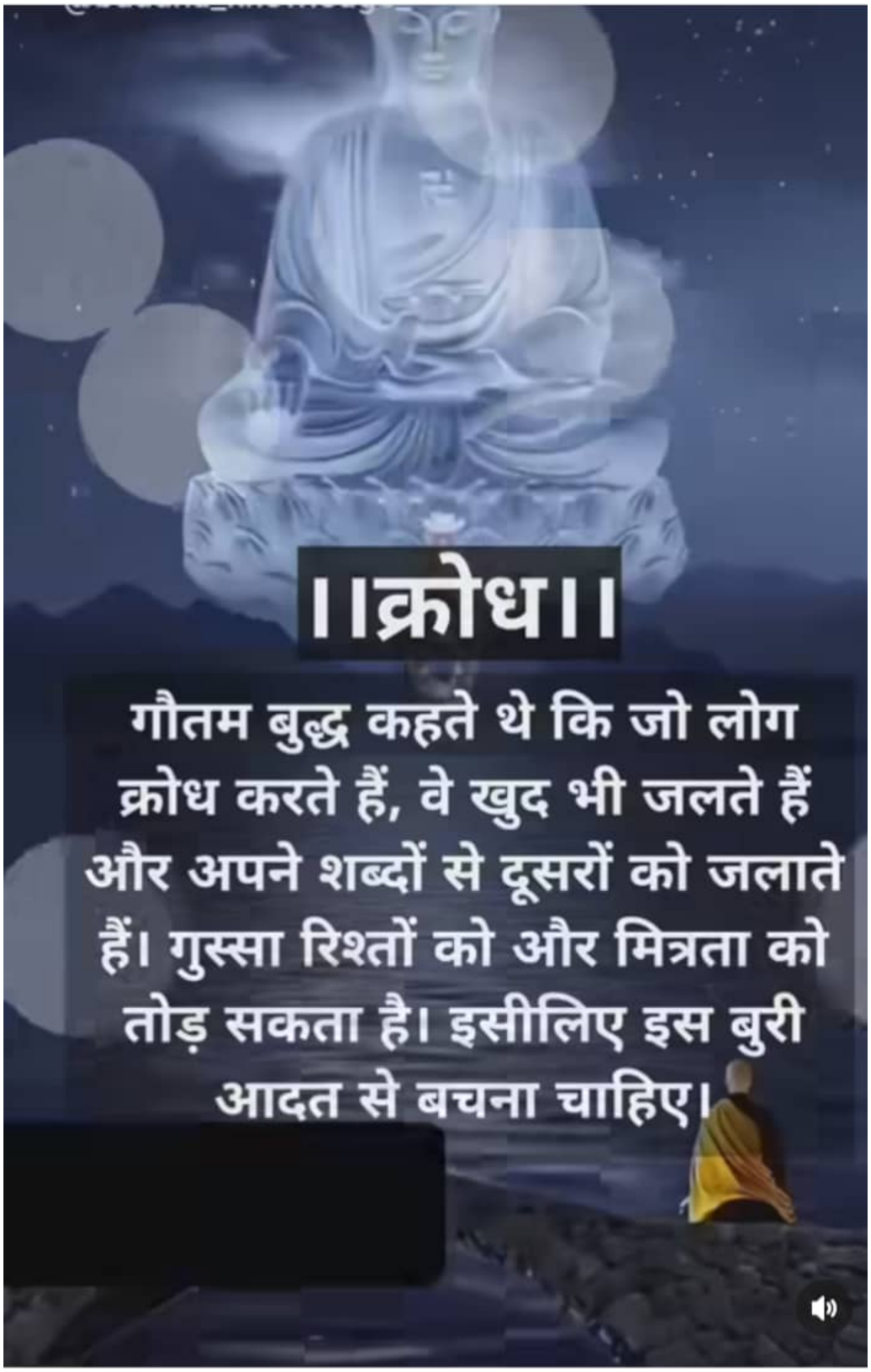

811 likes

buddha_knowledge_ @buddha_knowledge_... more

View all 7 comments

12 hours ago

wayaindia

9:45 pm 19 KB/s 38%

buddha_knowledge_
India
Metok Lhadon • Sound of Peace

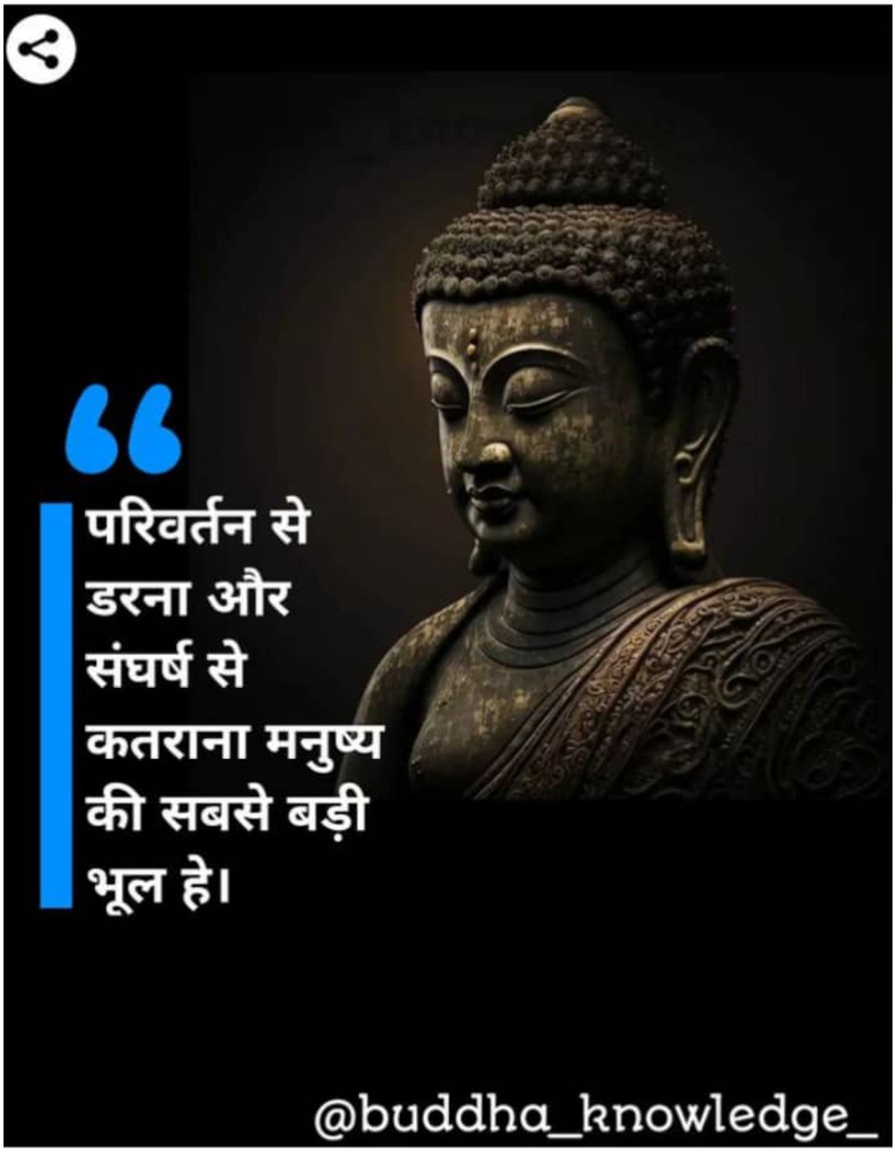

1,586 likes

buddha_knowledge_ @buddha_knowledge_... more

View all 9 comments

Add a comment...

1 day ago

swami_dhyan_rohan
swami_dhyan_rohan • Original audio

CamScanner

9:45 pm 3 KB/s VoLTE 4G 38%

4 likes

Add a comment...

5 days ago

aacharya_rajneesh__osho

Add a comment...

1 hour ago

buddha_knowledge_

CamScanner

यह एक ऐसा युग चल रहा है जिसमें धर्म के नाम पर लड़ने को सभी तैयार है
लेकिन धर्म के रास्ते पर चलने को कोई तैयार नहीं

OSHO

172 likes

osho_divine_eyesight ओशो❤️... more

Add a comment...

2 days ago

sherrihill
Sponsored

CamScanner

9:44 pm 0 KB/s 39%

311 likes

osho__________ Osho ✨

.... more

1 day ago

osho_hindi2021

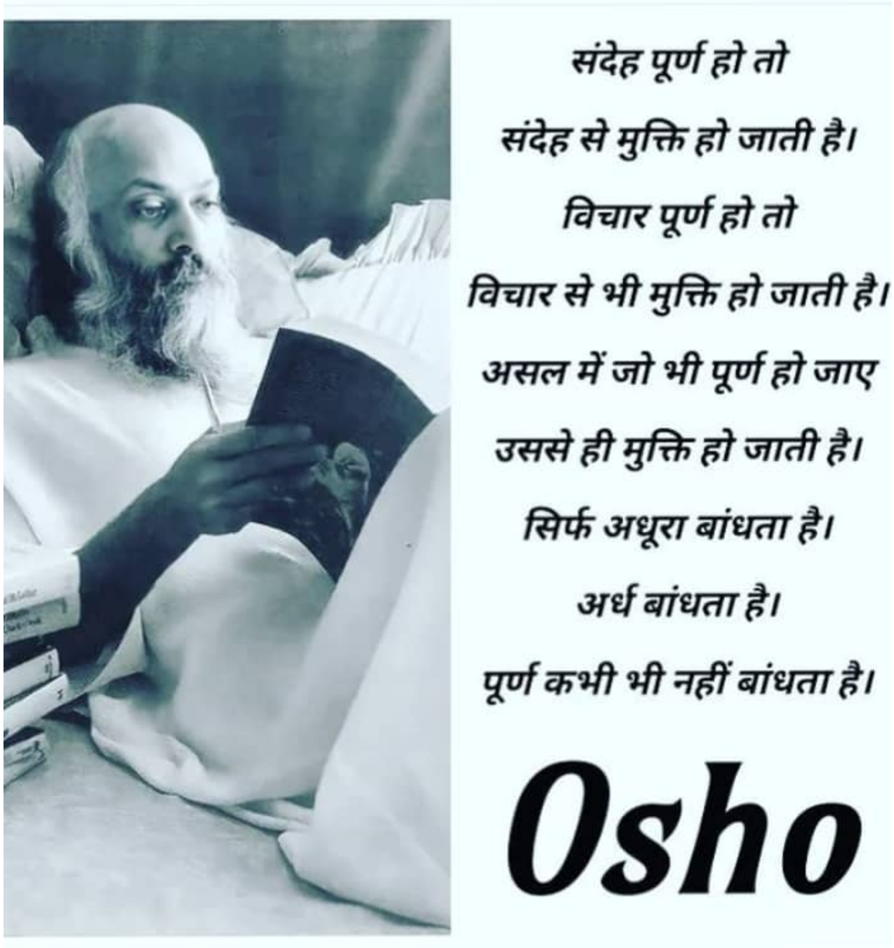

150 likes

View 1 comment

Add a comment...

CamScanner

9:43 pm 94 KB/s VoLTE 4G 39%

budhhaquotes_hindi

132 likes

budhhaquotes_hindi Type 'NAMMO BUDDHAAY' if you agree ❣️😊... more

Add a comment...

2 days ago

Suggested for you

CamScanner

9:42 pm 37 KB/s 39%

276 likes

osho_divine_eyesight MOTIVATION ❤️... more

View 1 comment

Add a comment...

1 day ago

aacharya_rajneesh__osho

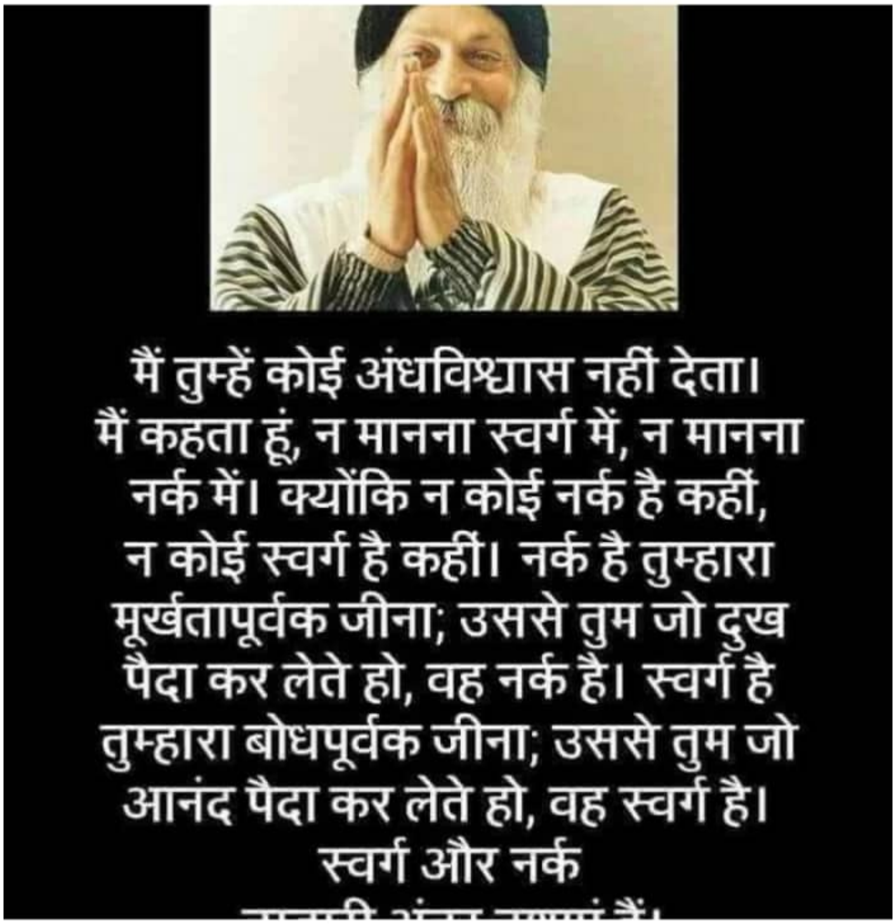

2 likes

Add a comment...

5 days ago

diklaspirit
Sponsored

CamScanner

9:42 pm 0 KB/s 39%

Instagram

13 August • See translation

osho_divine_eyesight
Papon • Prem's Theme

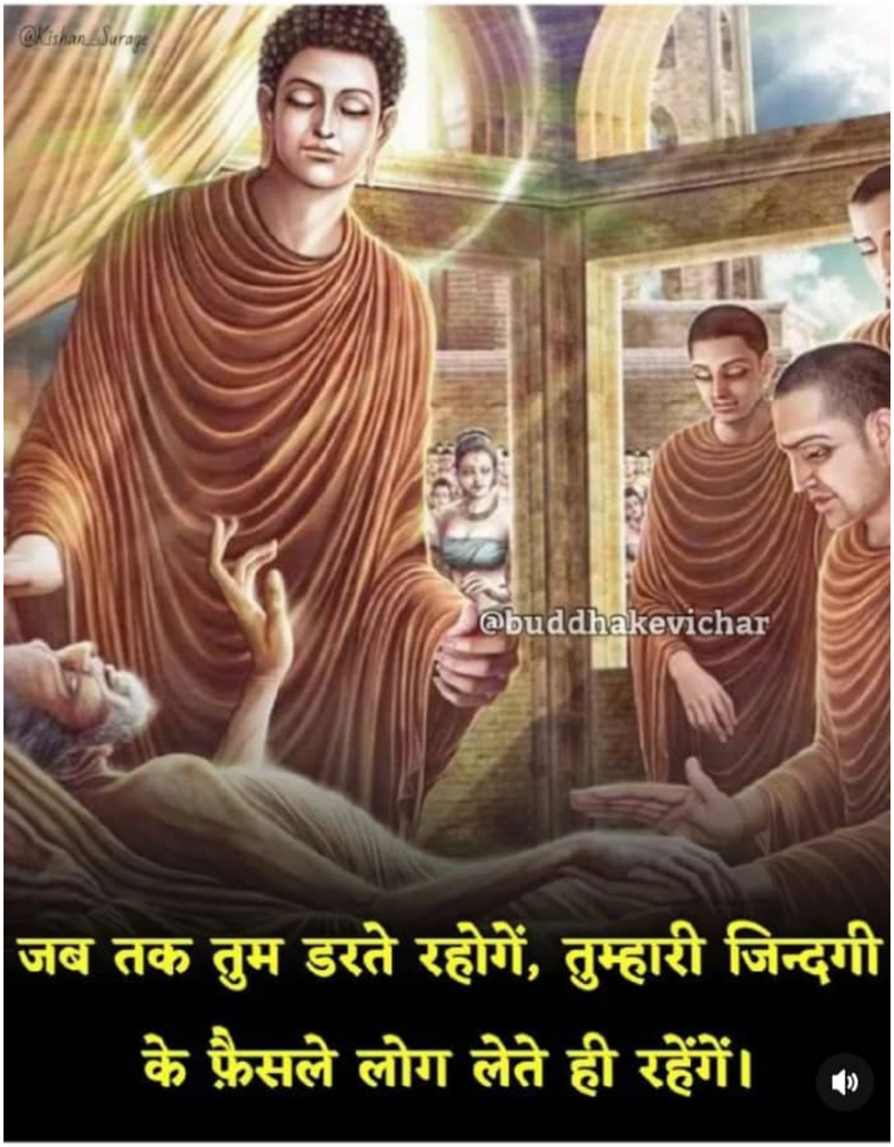

276 likes

osho_divine_eyesight MOTIVATION ❤️... more

View 1 comment

Add a comment...

CamScanner

9:40 pm 67 KB/s 40%

Add a comment...

2 days ago

aacharya_rajneesh__osho

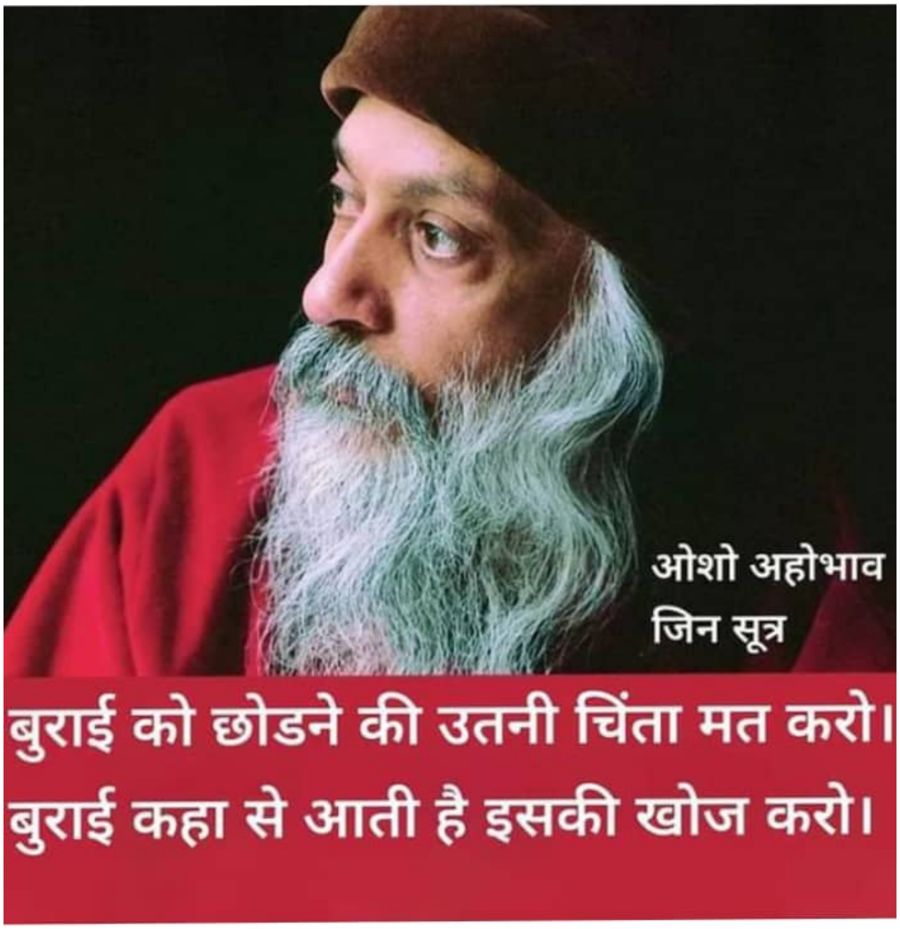

5 likes

Add a comment...

5 days ago

Suggested reels ▶ Watch all

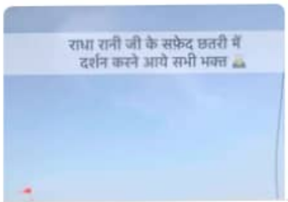

CamScanner

9:40 pm 106 KB/s 40%

kigiye link bio Mai hai... more

View all 14,102 comments

8 July • See translation

osho_the_great_master

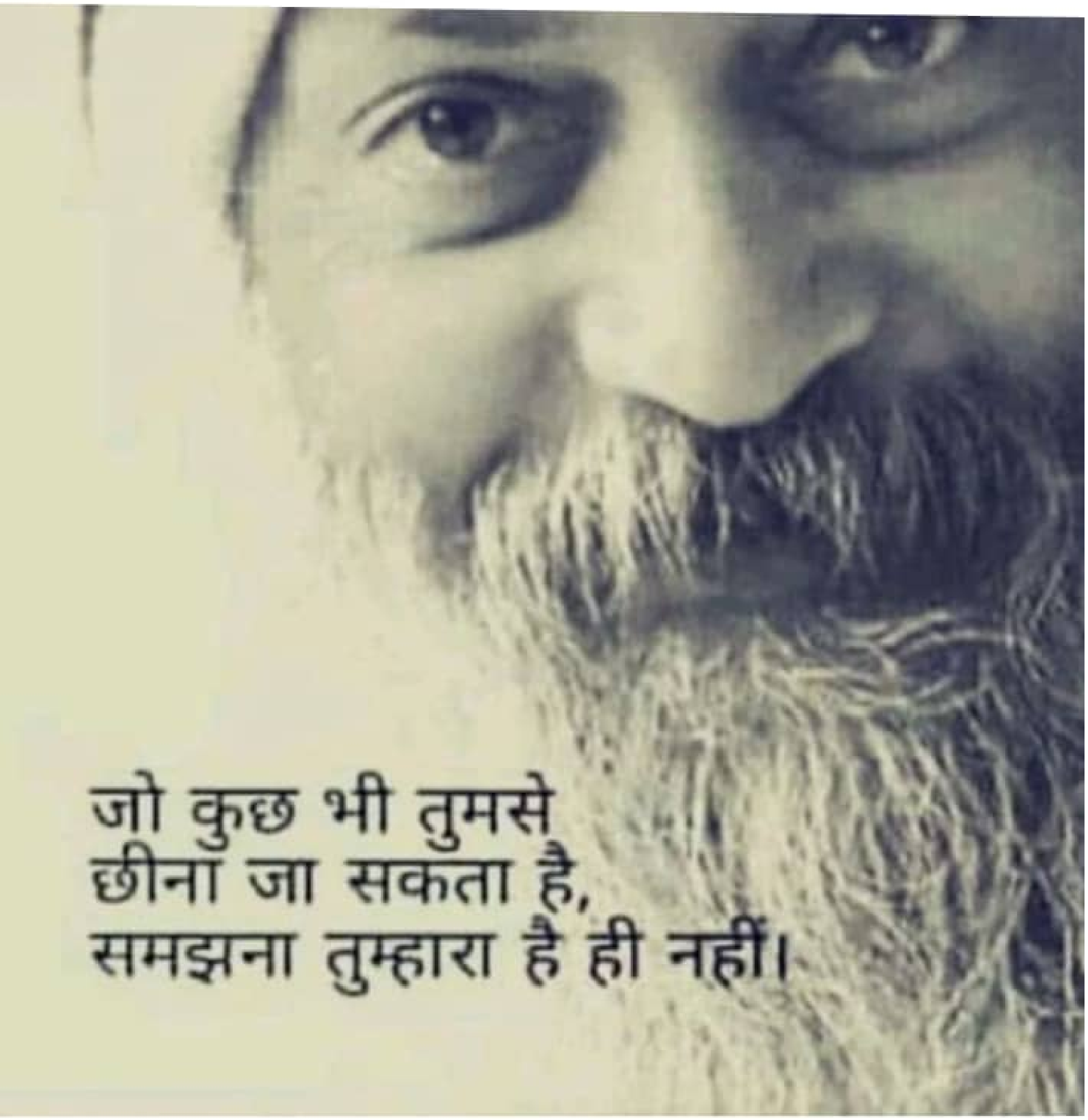

367 likes

Add a comment...

2 days ago

aacharya_rajneesh__osho

CamScanner

9:39 pm 19 KB/s 40%

84 likes

Add a comment...

7 hours ago

Suggested for you

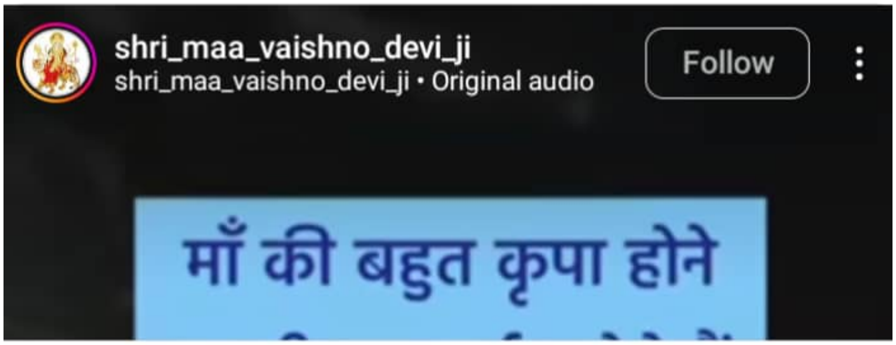

CamScanner

9:39 pm 19 KB/s 40%

4,666 likes

spranav10_ Hamesha Der Kar deta hoon🫤
Here are some of the Pictures in some different manner... more

osho_the_great_master

73 likes

Add a comment...

7 hours ago

osho_the_great_master

CamScanner

9:38 pm 10 KB/s 40%

3,63,348 views

View all 162 comments

aacharya_rajneesh__osho

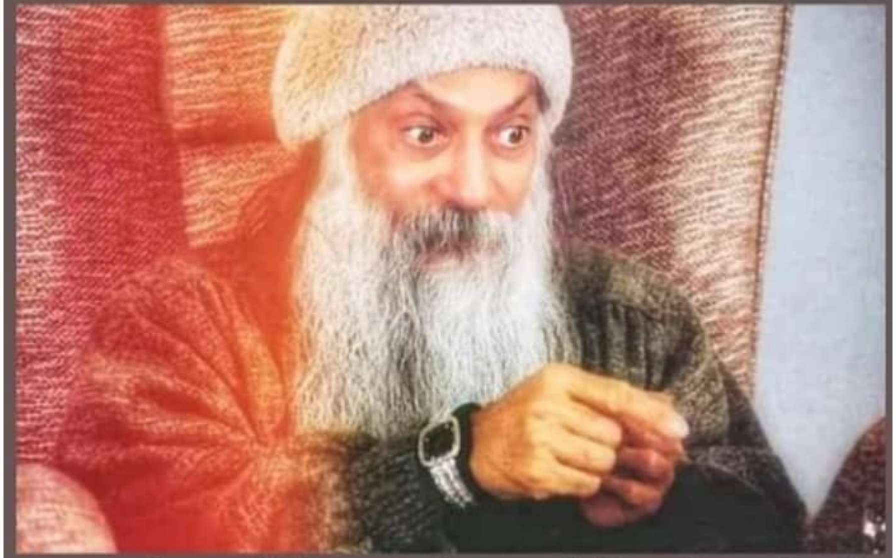

यह जानते हुए भी की जन्म और मृत्यु दोनो हमारे बस में नहीं,

हम अहंकार के प्रति जागते नही।

ओशो अहोभाव

Add a comment...

2 hours ago

#lawnmower

imrohitraj341 • Patna: Heart of Bihar

CamScanner

9:38 pm 55 KB/s 40%

475 likes

smiling_buddha_ Smiling_Buddha ❤️❤️❤️
.@smiling_buddha_... more

View all 2 comments

Add a comment...

1 day ago • **See translation**

osho_hindi_official and **osho_infinity**
Gaurav Pareek, Narayan Pareek, Gaurav Pandiya, K...

Liked by **osho_infinity** and **189 others**

osho_hindi_official Follow For more Osho's videos and quotes ❤️❤️❤️❤️... more

View all 2 comments

Add a comment...

3 hours ago

9:38 pm 42 KB/s 40%

6,78,409 views

shalinicastings FREE AUDITIONS FOR TV SERIALS, NO FEES IF YOU INTERESTED DM ME NOW👇... more

smiling_buddha_
चित्रकूट धाम

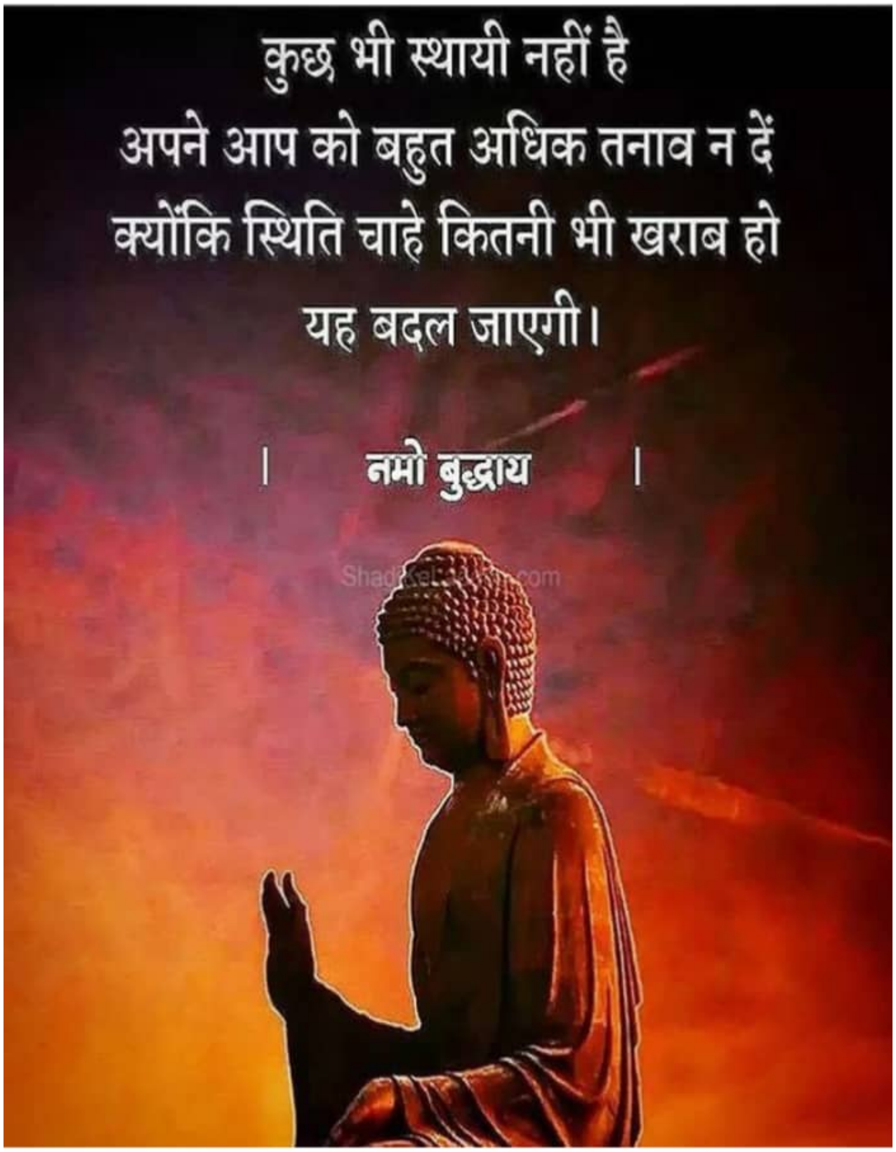

474 likes

smiling_buddha_ Smiling_Buddha ❤️❤️❤️
.@smiling_buddha_... more

View all 2 comments

CamScanner

9:37 pm 11 KB/s 40%

osho_meditation

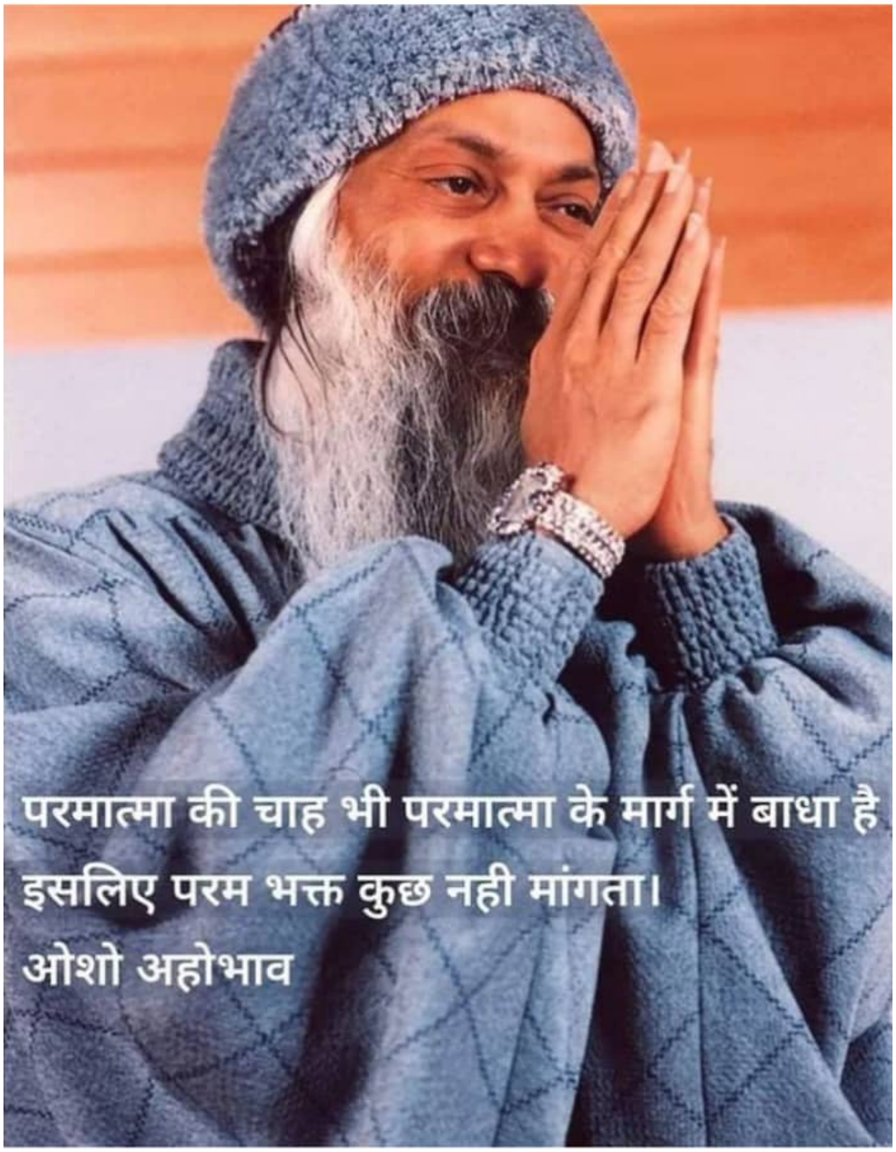

487 likes

osho_meditation #onethoughtaway #osho #awakening... more

View all 3 comments

Add a comment...

10 hours ago

CamScanner

9:30 pm 85 KB/s 41%

swami_dhyan_rohan 🌼एकाग्रता के कारण लोग जंगल भाग भाग कर गए 🌼ओशो🌹

View all 4 comments

9 hours ago • See translation

aacharya_rajneesh__osho

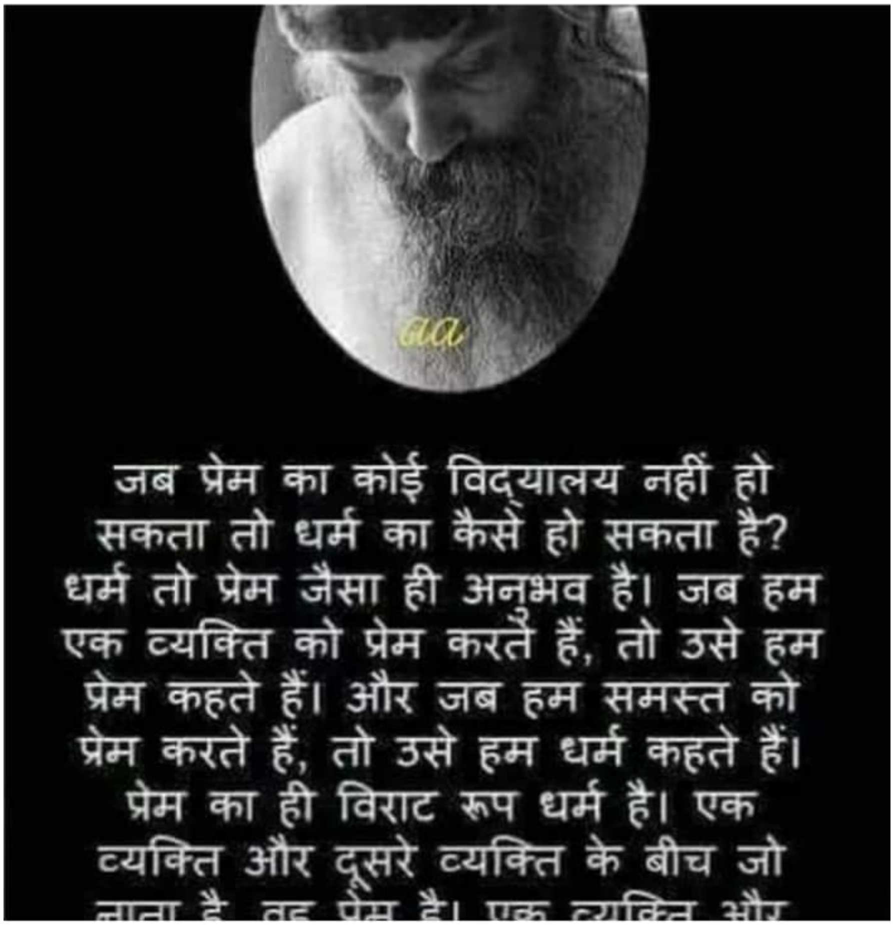

3 likes

Add a comment...

5 days ago

oshopresent
Hang Øver • Relief

CamScanner

9:30 pm 38 KB/s 41%

urban_culturess DM OR WHATSAPP US ON
MO : 9328951612... more

View all 20 comments

osho_the_great_master

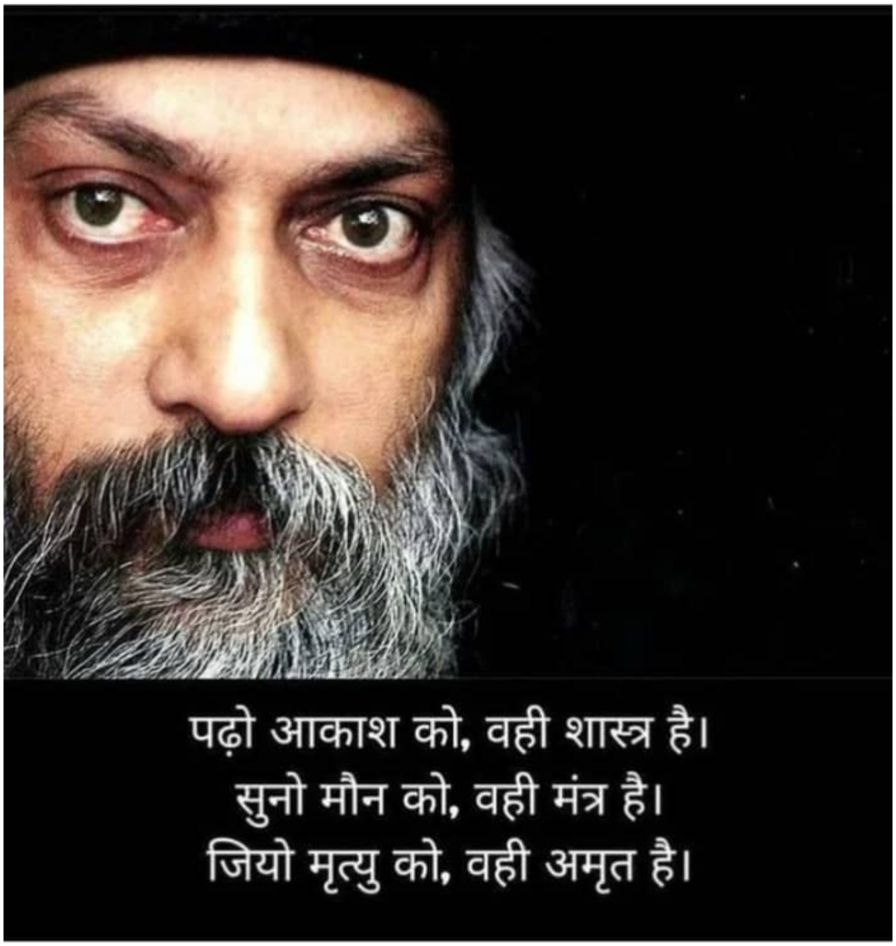

252 likes

View 1 comment

Add a comment...

2 days ago

swami_dhyan_rohan
swami_dhyan_rohan • Original audio

CamScanner

9:29 pm 60 KB/s 41%

Instagram

Add a comment...

7 hours ago

oshorajneesh__

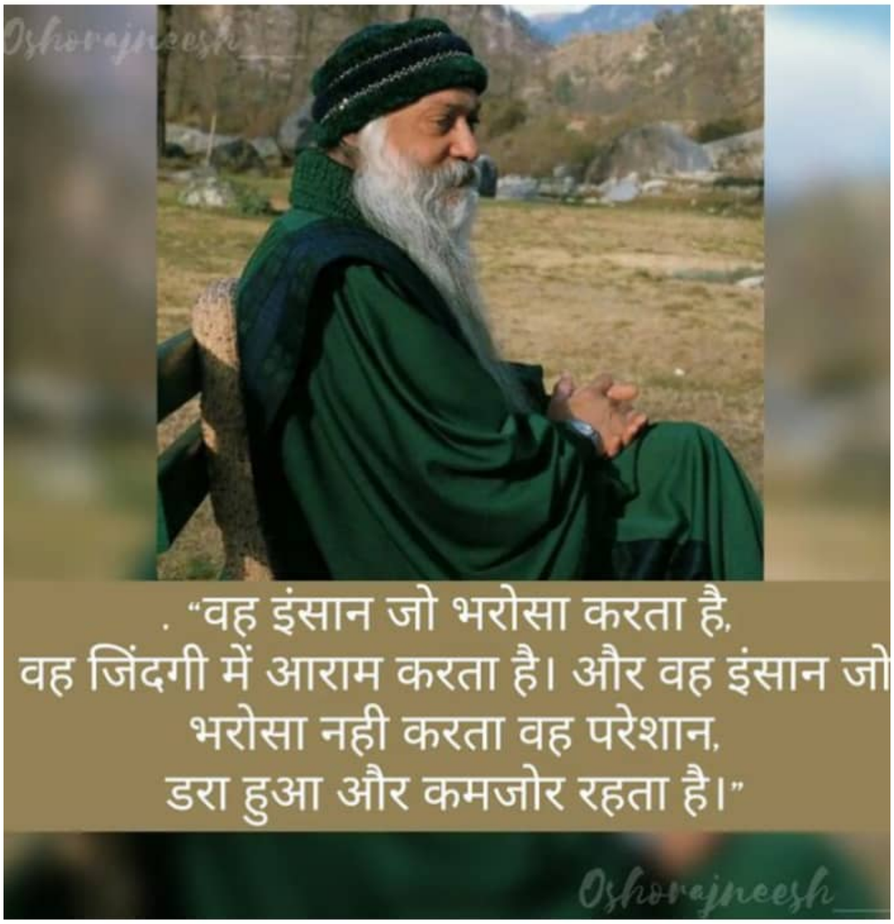

422 likes

oshorajneesh__ Osho 🙏💯🤍🙌

Follow- @oshorajneesh__... more

View all 3 comments

Add a comment...

3 hours ago

CamScanner

9:29 pm 0 KB/s 41%

Instagram

50,605 likes

gk.page_ हर हर महादेव

Follow - @gk.page_

View all 660 comments

4 days ago · See translation

osho_the_great_master

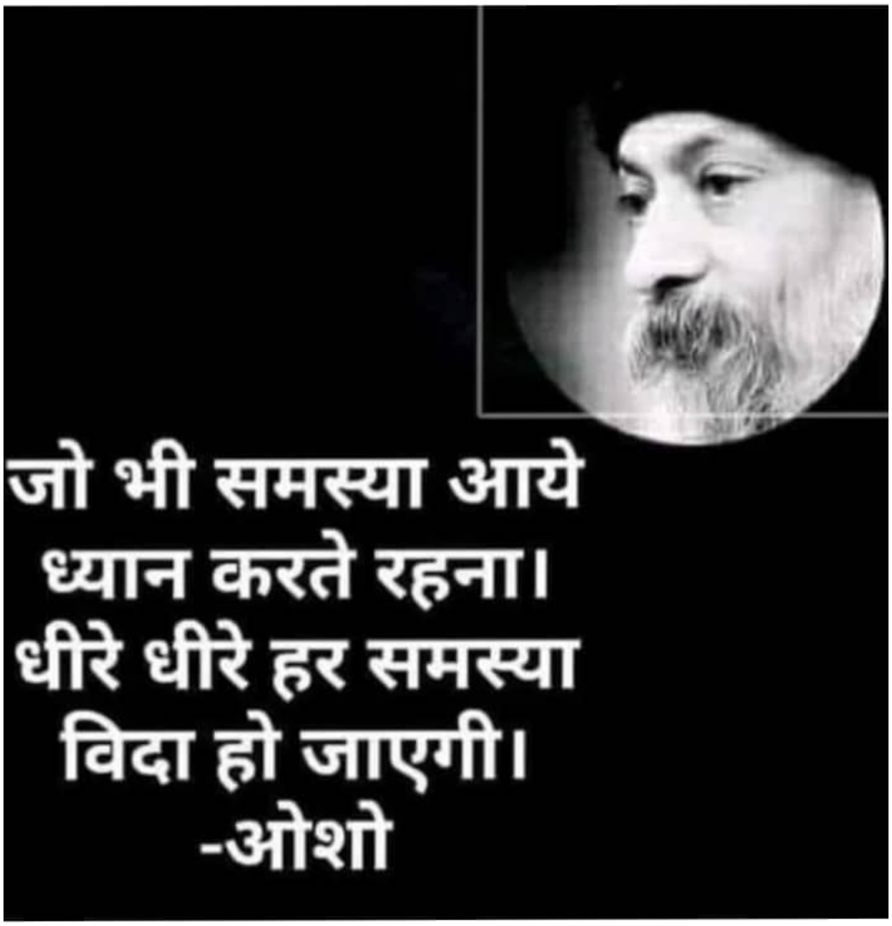

152 likes

Add a comment...

7 hours ago

CamScanner

9:29 pm 0 KB/s 41%

865 likes

aatamshanti नफरत का खुद का कोई अस्तित्व नहीं होता वह केवल प्रेम की गैरहाजिरी का परिणाम है... more

View 1 comment

Add a comment...

2 hours ago • **See translation**

oshomarg

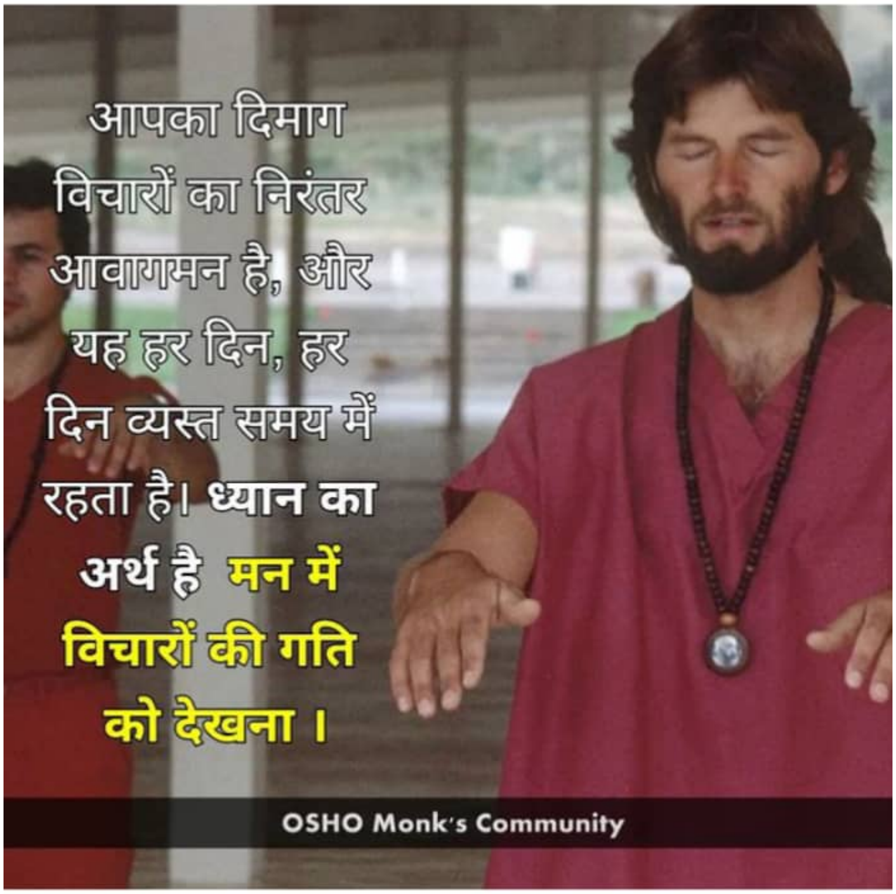

80 likes

oshomarg आपका दिमाग विचारों का निरंतर आवागमन है, और यह हर दिन, हर दिन व्यस्त समय में रहता है। ध्यान का अर्थ है मन में विचारों की ग... more

View all 3 comments

Add a comment...

3 days ago • **See translation**

CamScanner

नफरत का खुद का कोई अस्तित्व नहीं होता
वह केवल प्रेम की गैरहाजिरी का परिणाम है...

ओशो

865 likes

aatamshanti नफरत का खुद का कोई अस्तित्व नहीं होता वह केवल प्रेम की गैरहाजिरी का परिणाम है... more

View 1 comment

Add a comment...

2 hours ago · **See translation**

LIVE oshomarg

CamScanner

9:28 pm 4 KB/s 41%

Liked by **osho_ki_duniya** and **5,86,806 others**

neemkarolibaba71 नीम करोरी बाबा की असली आवाज🙏🚩
#viral #neemkarolibaba #kainchidham #realvoice... more

View all 3,948 comments

9 July • **See translation**

aacharya_rajneesh__osho

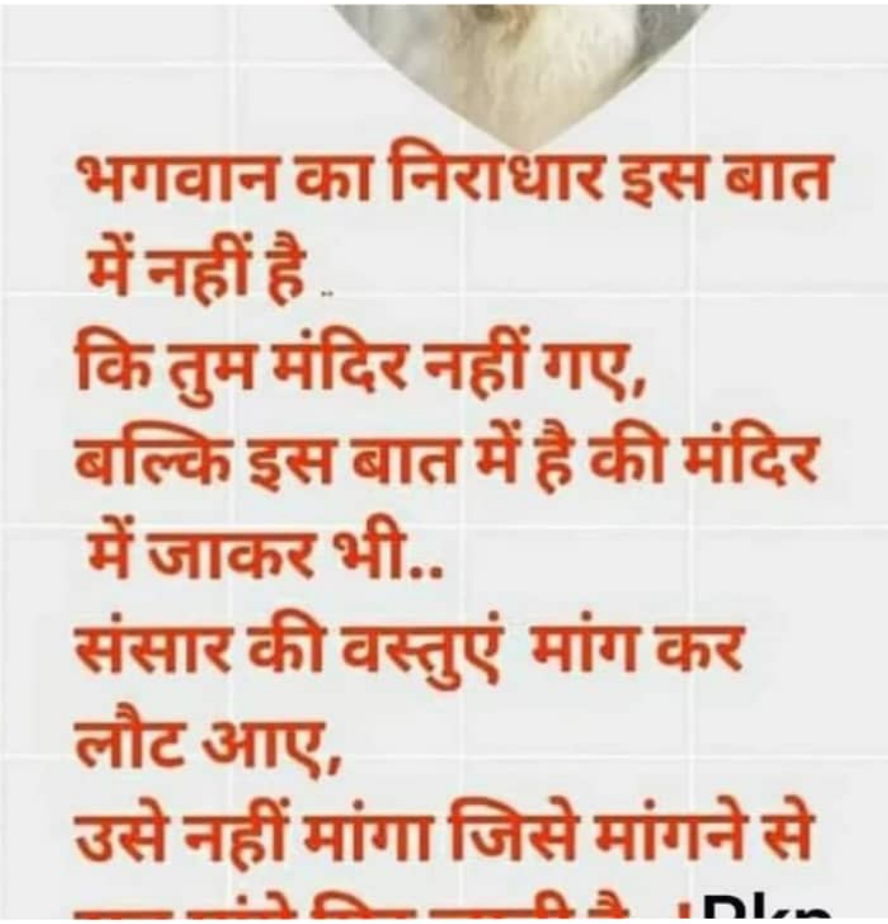

2 likes

Add a comment...

5 days ago

osho_dewane

9:28 pm 0 KB/s 41%

162 likes

osho_hasta_hua_dhram_00 मन का लक्षण।।

View 1 comment

1 day ago • See translation

aacharya_rajneesh__osho

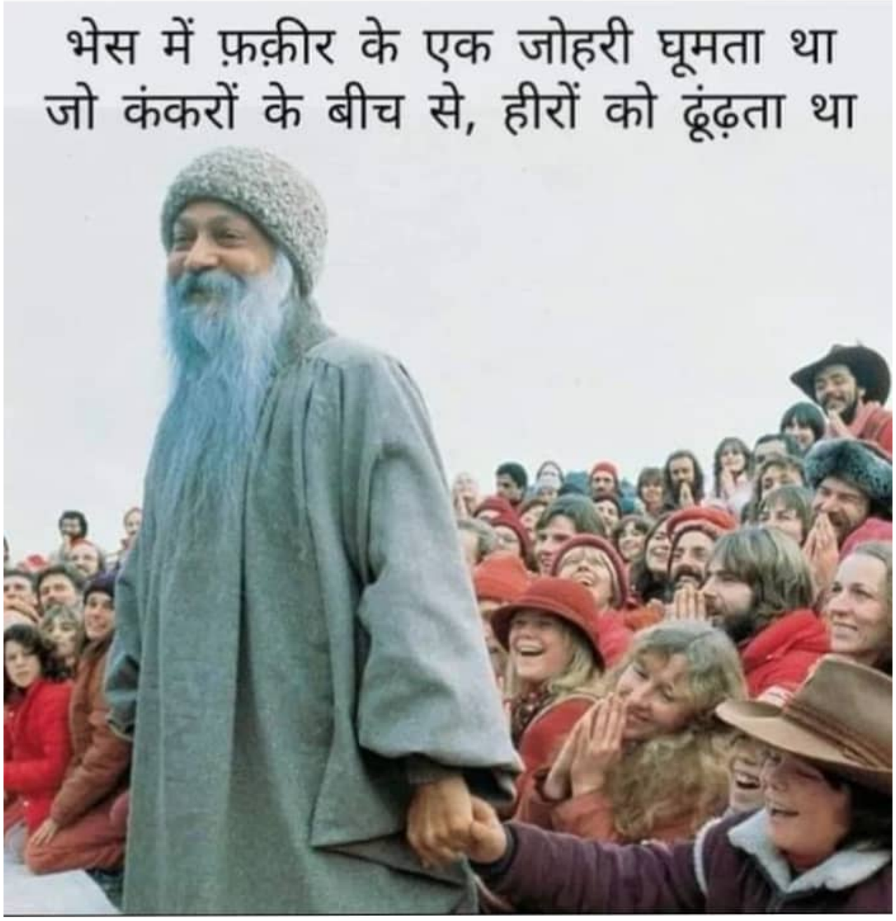

4 likes

Add a comment...

5 days ago

titanwatchesindia

CamScanner

9:27 pm 26 KB/s 41%

oshopresent swami_dhyan_rohan osho.vichar

osho_dewane
Rabbi Shergill • Bulla Ki Jana

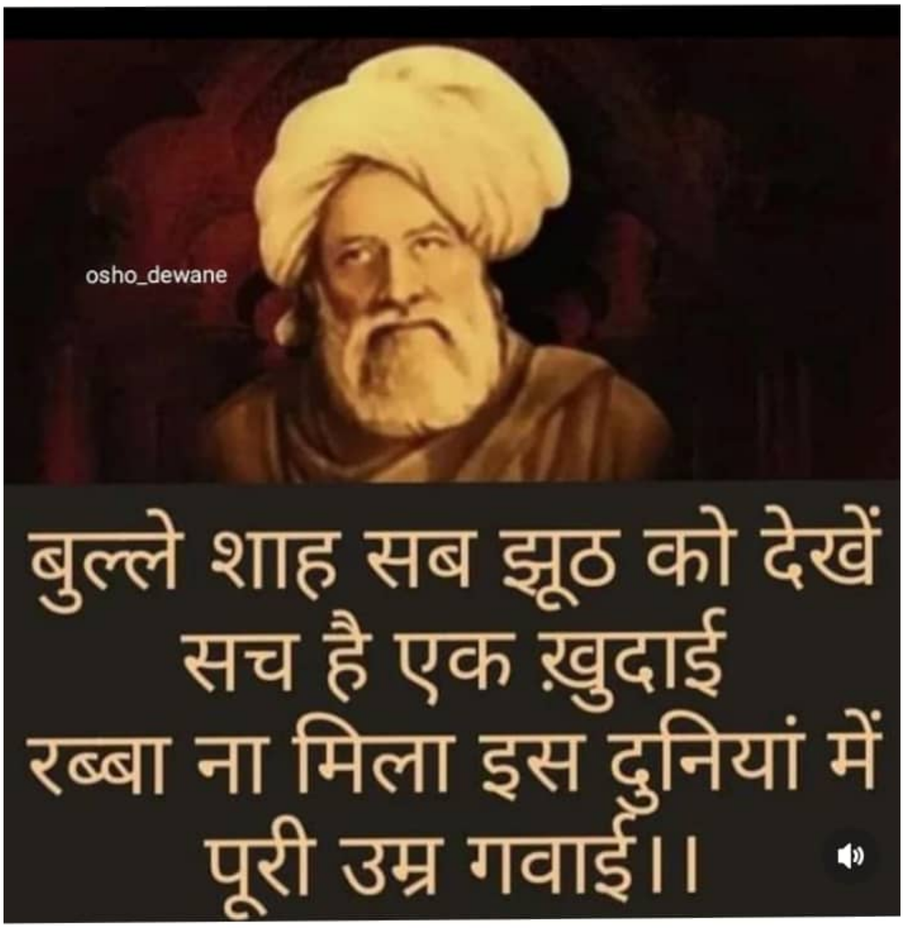

78 likes

Add a comment...

3 hours ago

Rajesh Kumar Rai, discover businesses you might like • See all

CamScanner

9:26 pm 0 KB/s 41%

Instagram

saptashrungimata Jay ho maa ❤️🙏Saptashrungi mata parbhani 🙏AAI❤️SAPTASHRUNGI MATA PARBHAN... more

View all 96,257 comments

14 August • **See translation**

aacharya_rajneesh__osho

4 likes

Add a comment...

5 days ago

Recent stories ▶ **Watch all**

CamScanner

9:25 pm 0 KB/s 41%

Add a comment...

7 hours ago

osho.in.hindi
India

86 likes

osho.in.hindi Osho❤️

Add a comment...

3 hours ago

Suggested reels ▶ **Watch all**

CamScanner

9:25 pm 57 KB/s 4G 41%

View all 151 comments

osho_the_great_master

152 likes

Add a comment...

7 hours ago

osho.in.hindi
India

8:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 28%

ऐ मिरे हम-नशीं चल कहीं और चल इस चमन में अब अपना गुज़ारा नहीं

क़मर जलालवी

ऐ मिरे हम-नशीं चल कहीं और चल इस चमन में अब अपना गुज़ारा नहीं
बात होती गुलों तक तो सह लेते हम अब तो काँटों पे भी हक़ हमारा नहीं

आज आए हो तुम कल चले जाओगे ये मोहब्बत को अपनी गवारा नहीं
उम्र भर का सहारा बनो तो बनो दो घड़ी का सहारा सहारा नहीं

दी सदा दार पर और कभी तूर पर किस जगह मैं ने तुम को पुकारा नहीं
ठोकरें यूँ खिलाने से क्या फ़ाएदा साफ़ कह दो कि मिलना गवारा नहीं

गुल्सिताँ को लहू की ज़रूरत पड़ी सब से पहले ही गर्दन हमारी कटी
फिर भी कहते हैं मुझ से ये अहल-ए-चमन ये चमन है हमारा तुम्हारा नहीं

ज़ालिमो अपनी क़िस्मत पे नाज़ाँ न हो दौर बदलेगा ये वक़्त की बात है
वो यक़ीनन सुनेगा सदाएँ मिरी क्या तुम्हारा ख़ुदा है हमारा नहीं

अपनी ज़ुल्फ़ों को रुख़ से हटा लीजिए मेरा ज़ौक़-ए-नज़र आज़मा लीजिए
आज घर से चला हूँ यही सोच कर या तो नज़रें नहीं या नज़ारा नहीं

जाने किस की लगन किस के धुन में मगन हम को जाते हुए मुड़ के देखा नहीं
हम ने आवाज़ पर तुम को आवाज़ दी फिर भी कहते हैं हम ने पुकारा नहीं

You have 4 remaining out of 5 free poetry pages per month. Log In or Register to become Rekhta Family member to access the full website.

Get App

CamScanner

8:01 pm 304 KB/s VoLTE 4G 29%

Instagram

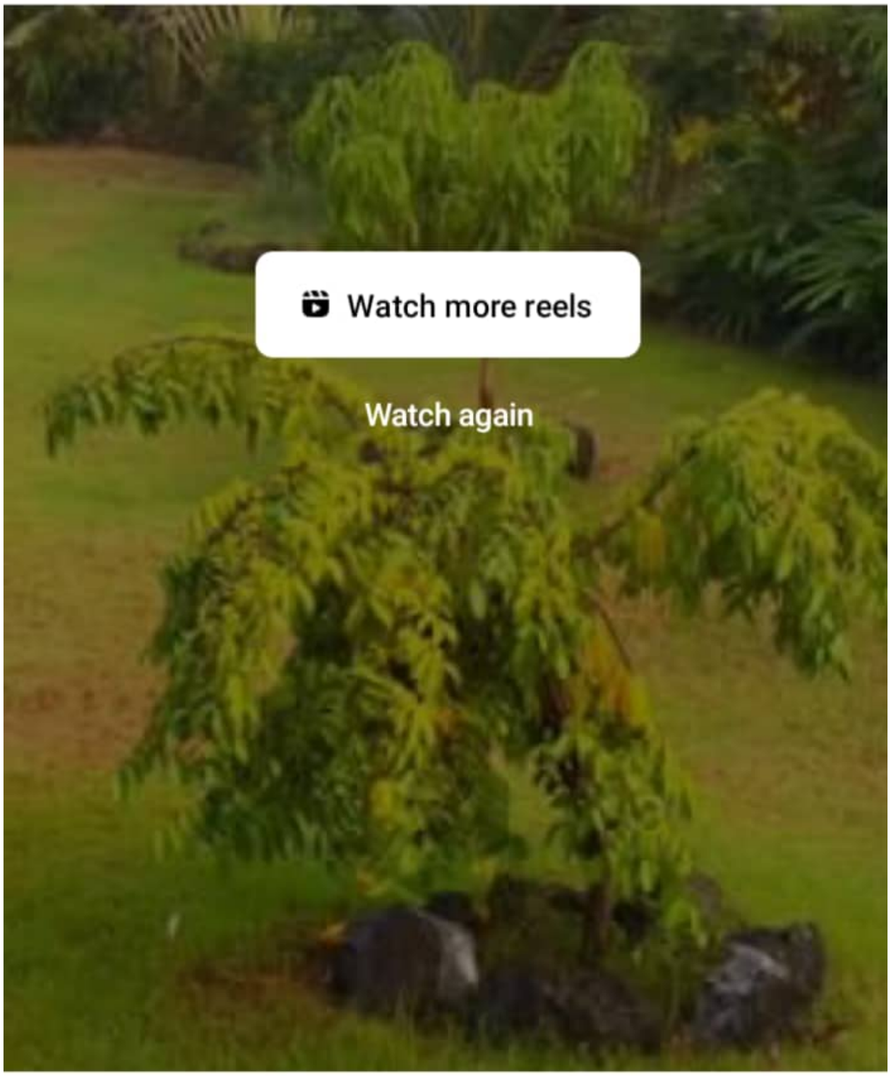

Liked by **aacharya_rajneesh__osho** and **300 others**

swami_dhyan_rohan 🌼उम्र भर का सहारा बनो तो बनो ये दो घड़ी का सहारा , सहारा नही🌼
Follow @swami_dhyan_rohan
#osho #oshoquotes #meditation #buddha #love #yoga #spirituality #oshomeditation #spiritualawakening #quotes #sadhguru #osholovers #oshointernational #rumi #mindfulness #spiritual #awakening #zen #oshospeech #oshohindi #oshohindiquotes #namaste #keanureeves #oshohindiquotes #reiki #kundalini #amor #highfrequency #oshothought #wisdom

CamScanner

8:00 pm 1 KB/s VoLTE 4G 29%

99,892 views

aone_handicrafts #metaldecor #independencesale
Hurry !! MONSOON SALE... more

View 1 comment

smiling_buddha_
चित्रकूट धाम

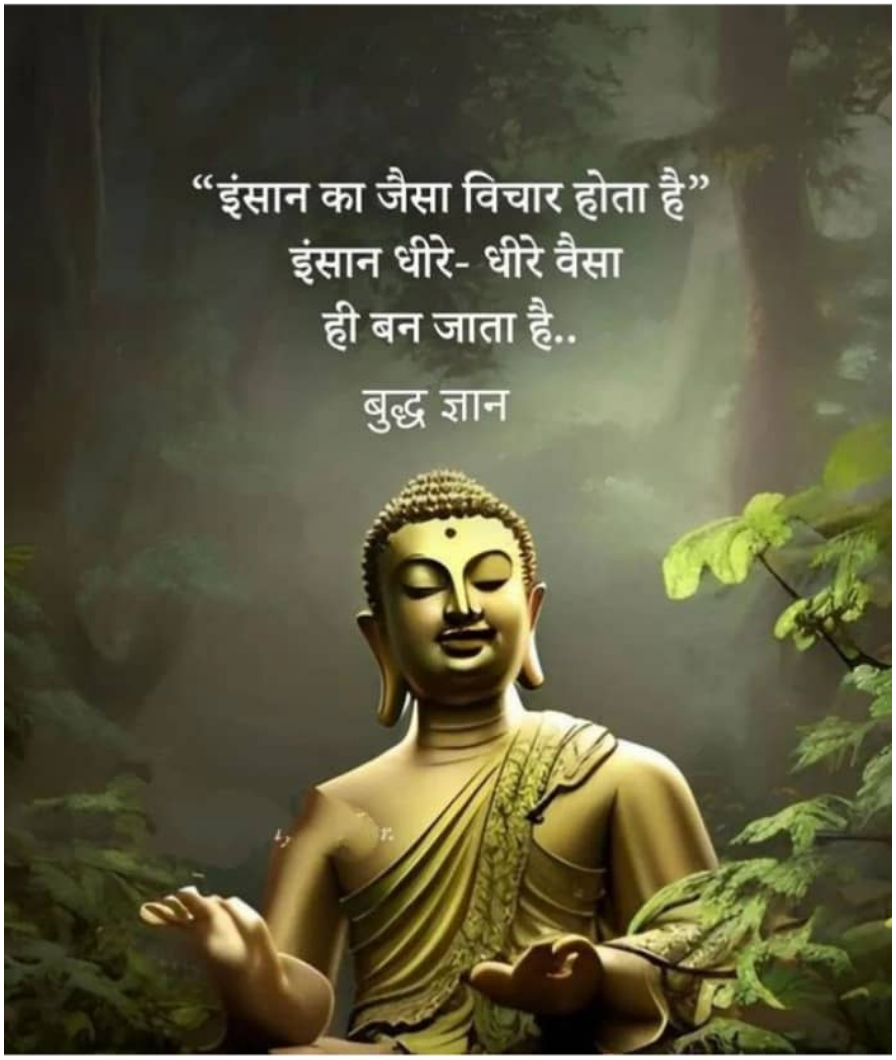

231 likes

smiling_buddha_ 🌸 Smiling buddha
Daily post 🥰... more

View all 2 comments

11 hours ago

CamScanner

7:59 pm 3 KB/s 29%

4,06,416 likes

mahenk99 Thanks 1M view

.... more

View all 16,328 comments

22 June

satya_gyan_vichar

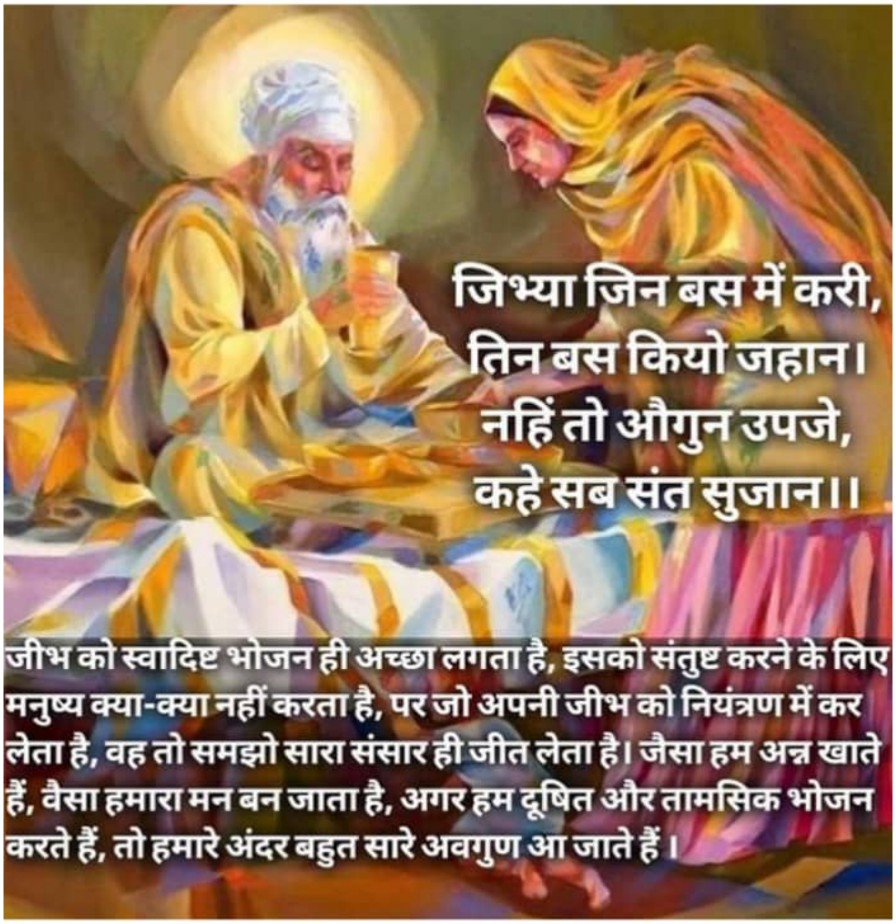

85 likes

satya_gyan_vichar #anmolvachan #aajkagyan #satguru #sadguru #satsang #suvichar #satnam #vichar... more

View 1 comment

Add a comment...

46 minutes ago • See translation

aone_handicrafts

CamScanner

7:59 pm 0 KB/s 29%

Instagram

1,974 likes

success_mentions Presenting Psychology Part-013 which is the science of mind and behavior. The more you know i... more

oshospirituality

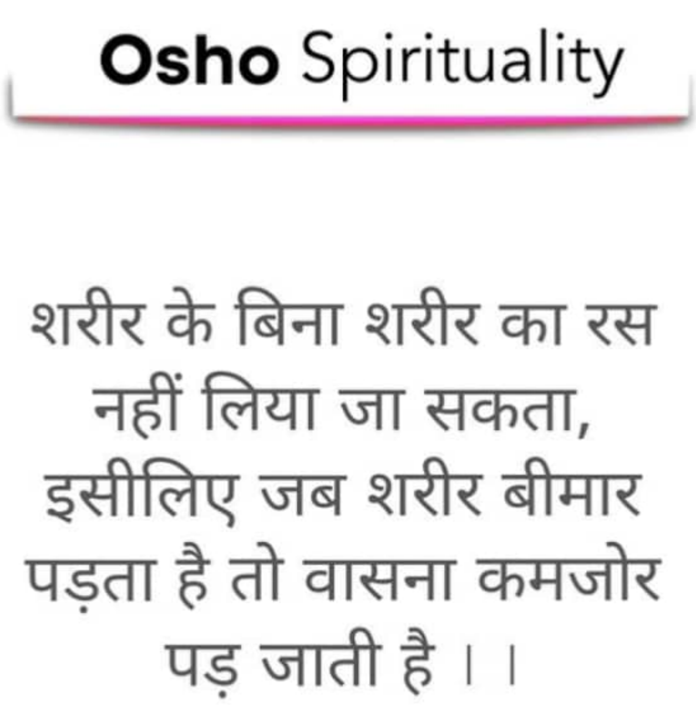

Liked by **osho_the_great_master** and **125 others**

oshospirituality .

Osho Spirituality

शरीर के बिना शरीर का रस नहीं लिया जा सकता, इसीलिए जब शरीर बीमार पड़ता है तो वासना कमजोर पड़ जाती है।।।

CamScanner

प्रार्थना

प्रार्थना क्या है?
--प्रेम और समर्पण।
और, जहां प्रेम नहीं है,
वहां प्रार्थना नहीं है।
प्रार्थना का कोई
ढांचा नहीं होता है।
वह तो हृदय का
सहज अंकुरण है।
जैसे पर्वत से झरने बहते हैं,
ऐसे ही प्रेम-पूर्ण हृदय से
प्रार्थना का आविर्भाव होता है।

www.oshofragrance.org

CamScanner

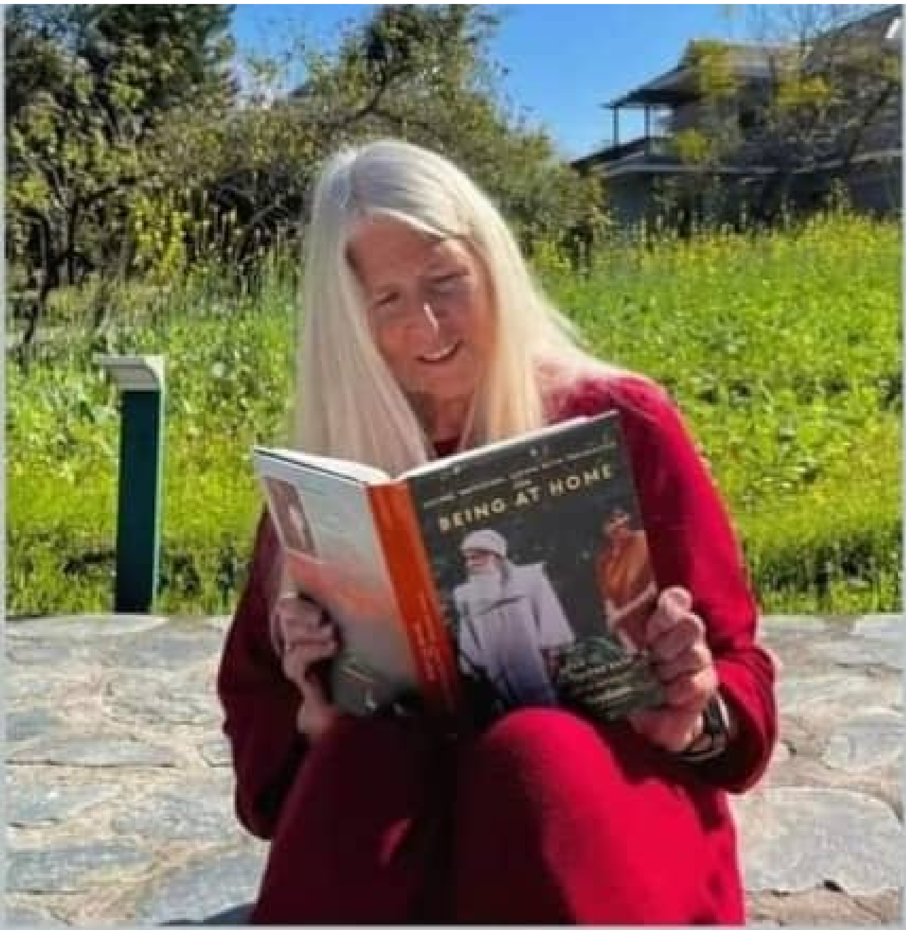

शास्त्र जो भी कहते है, वे सब प्राथमिक सूचनाए है,
अंतिम का कोई दर्शन नही है। शास्त्र जो भी कहते है,
वह सब क, ख, ग, है। वह पहली प्राथमिक पाठशाला है।
शास्त्रो में जीवन का विश्वविद्यालय नही है प्राथमिक शिक्षा है।
शास्त्रो पर मत रुक जाना। ओशो अहोभाव

CamScanner

तुम कृष्ण को भज सकते हो, राम को भज सकते हो, बुद्ध को, महावीर को, लेकिन जब महावीर जिंदा थे तो तुमने पत्थर मारे और जब बुद्ध जिंदा थे तो तुमने उनकी हत्या की कोशिश की! अब तुम मीरा के गुणगान गाते हो और जब मीरा जिंदा थी तो जहर के प्याले भेजे! तुम बड़े अजीब लोग हो। तुम्हारा हिसाब कैसा है? अब जितने मंदिर जीसस के लिए समर्पित हैं, उतने किसी के लिए भी नहीं। और जब जीसस जिंदा थे तो तुमने क्या व्यवहार किया? जरा सोचो! जीसस को सूली खुद अपने कंधों पर ढोनी पड़ी। जैसे जीसस कोई चोर हों, हत्यारे हों। तुम लोग कैसे हो जिन्दा गुरु को मारते हो, और मरते ही उनकी पूजा शुरू कर देते हो।

OSHO

CamScanner

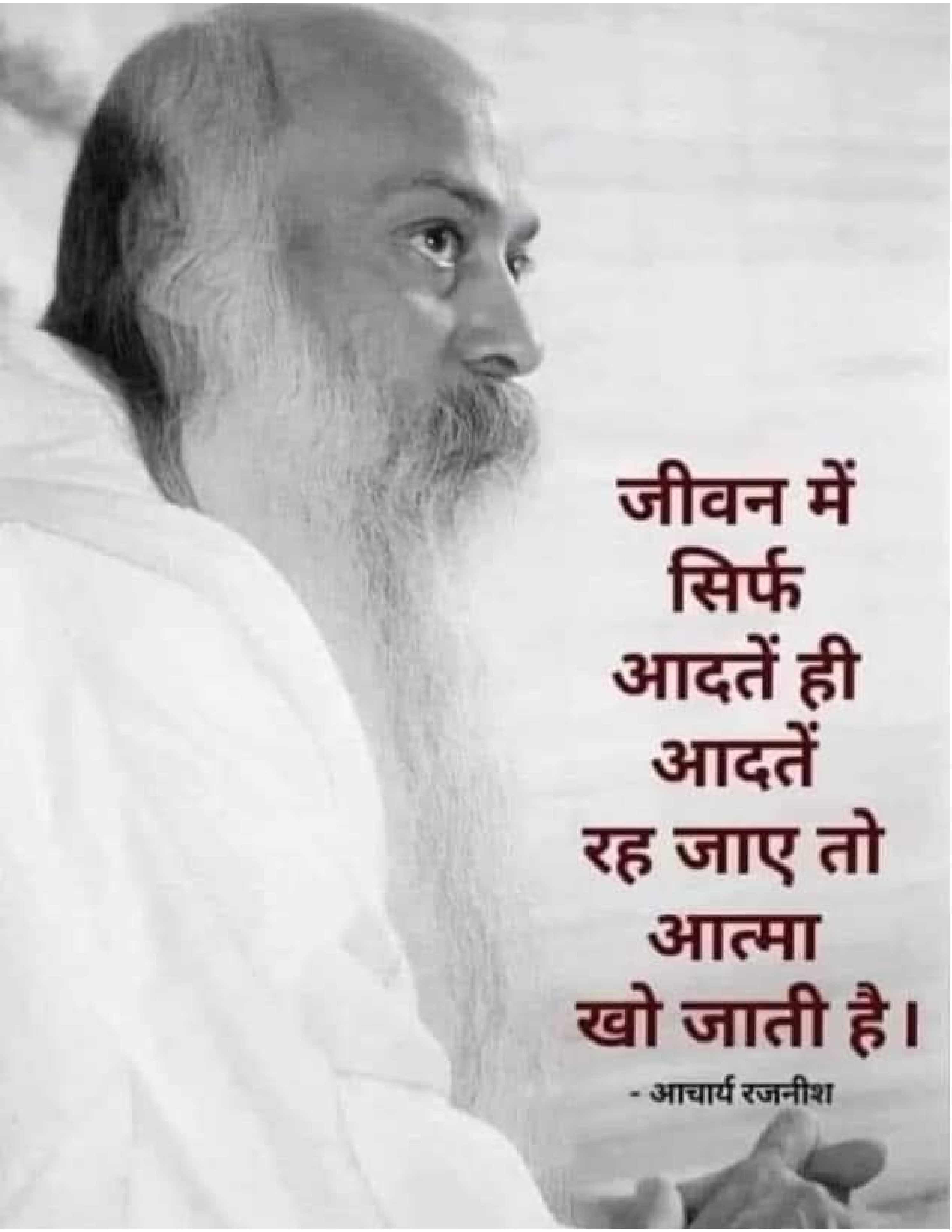

CamScanner

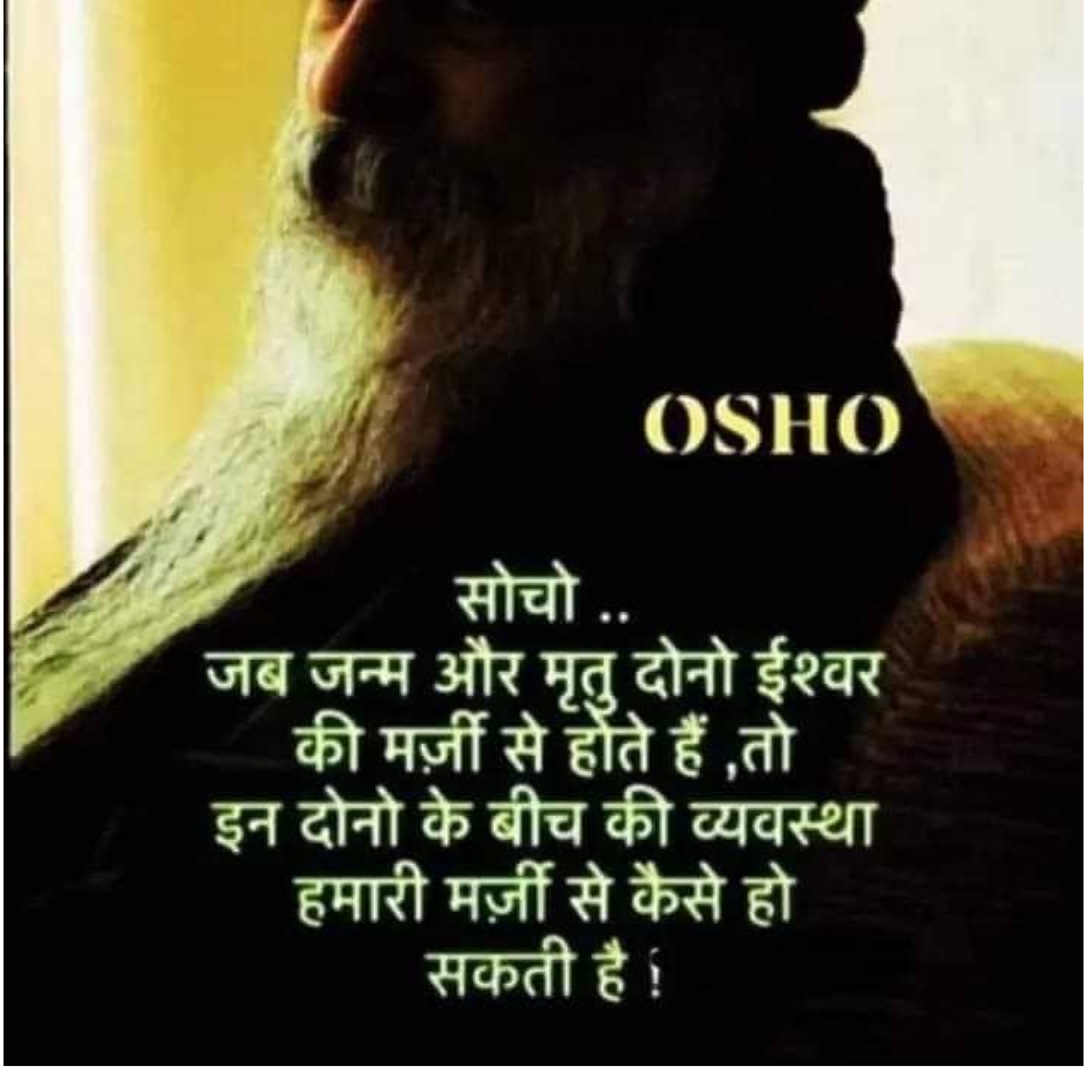
OSHO
सोचो ..
जब जन्म और मृतु दोनो ईश्वर
की मर्ज़ी से होते हैं ,तो
इन दोनो के बीच की व्यवस्था
हमारी मर्ज़ी से कैसे हो
सकती है !

CamScanner

स्त्रियां पति को
परमेश्वर मानती है..
पर मीरा बड़ी विचित्र थी
जिसने परमेश्वर को ही
पति मान लिया..

CS CamScanner

10:40 am 278 KB/s 82%

osho ji

Reels · 1d ·

2 35 views

Like Comment Share

CamScanner

10:38 am 439 KB/s 83%

Osho विचार धारा

Subhash Hooda · 50m ·

18 · 4 comments • 3 shares

Like · Comment · Share

CamScanner

कबीर ने कहा है?
खोजने निकला था, बहुत खोज
की और तुझे नहीं पाया।
खोजते –खोजते खुद खो गया,
तब तू मिला।
वह जो खोजने निकला था,
वह जब तक था, तब तक तुझसे
कोई मिलना न हुआ; और जब
खोजते –खोजते तू तो न मिला,
लेकिन खोजने वाला खो गया,
तब तुझसे मिलना हुआ।
अध्यात्म--उपनिषाद...ओशो
(प्रवचन--9)

CamScanner

तुम्हरा अंधकार ही तुम्हारे काम आएगा। दुसरों का उधार प्रकाश काम न आएगा। उधार प्रकाश अपने अंधकार से भी बदतर है। क्योंकि उससे तुम्हारे जीवन का कोई तालमेल ही न बैठेगा। तुम्हारी टोपी ही तुम्हारे सिर पर बैठेगी। दूसरों के जूते काटेंगे, कभी ढीले पड़ जाएंगे, कभी छोटे पड़ जाएंगे। तुम्हारे पैर का जूता तुम्हीं को खोजना, बनाना है। *तुम भीतर कुछ इतने अनूठे हो कि तुम जैसा न कभी कोई है, न कभी कोई होगा।* इसलिए उधार कपड़े मत मांगना। जीने की हिम्मत, साहस रखना; तो तुम दुर्धटना से बचोगे। अन्यथा दुघर्टना सौ में निन्यानबे मौकों पर करीब - करीब निश्चित है। सौ में कोई एकाध सौभाग्यशाली बचा पता है। जो बच जाता है, वह बुध्दत्व को उपलब्ध होता है। ओशो

CamScanner

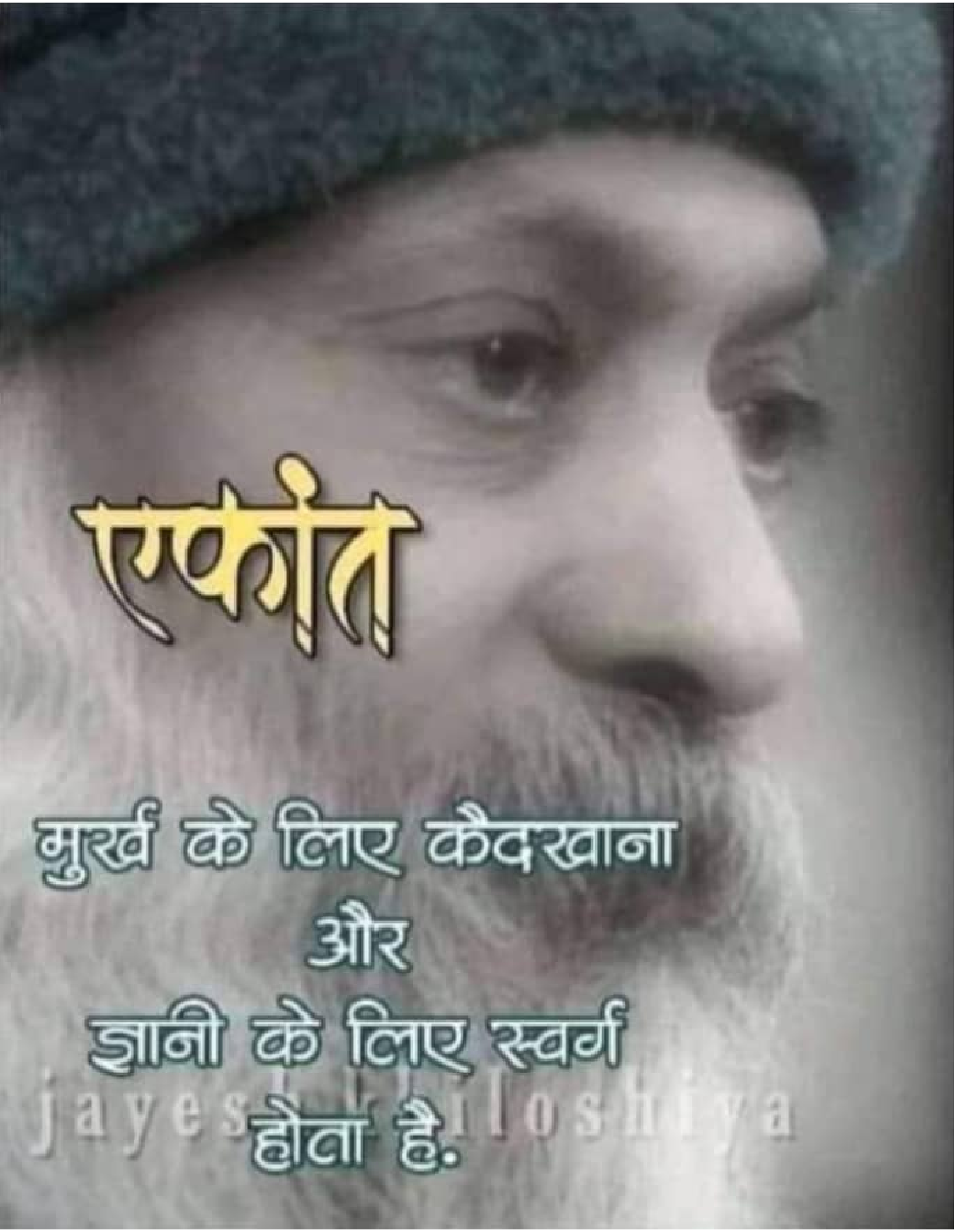

CS CamScanner

10:33 am 115 KB/s 84%

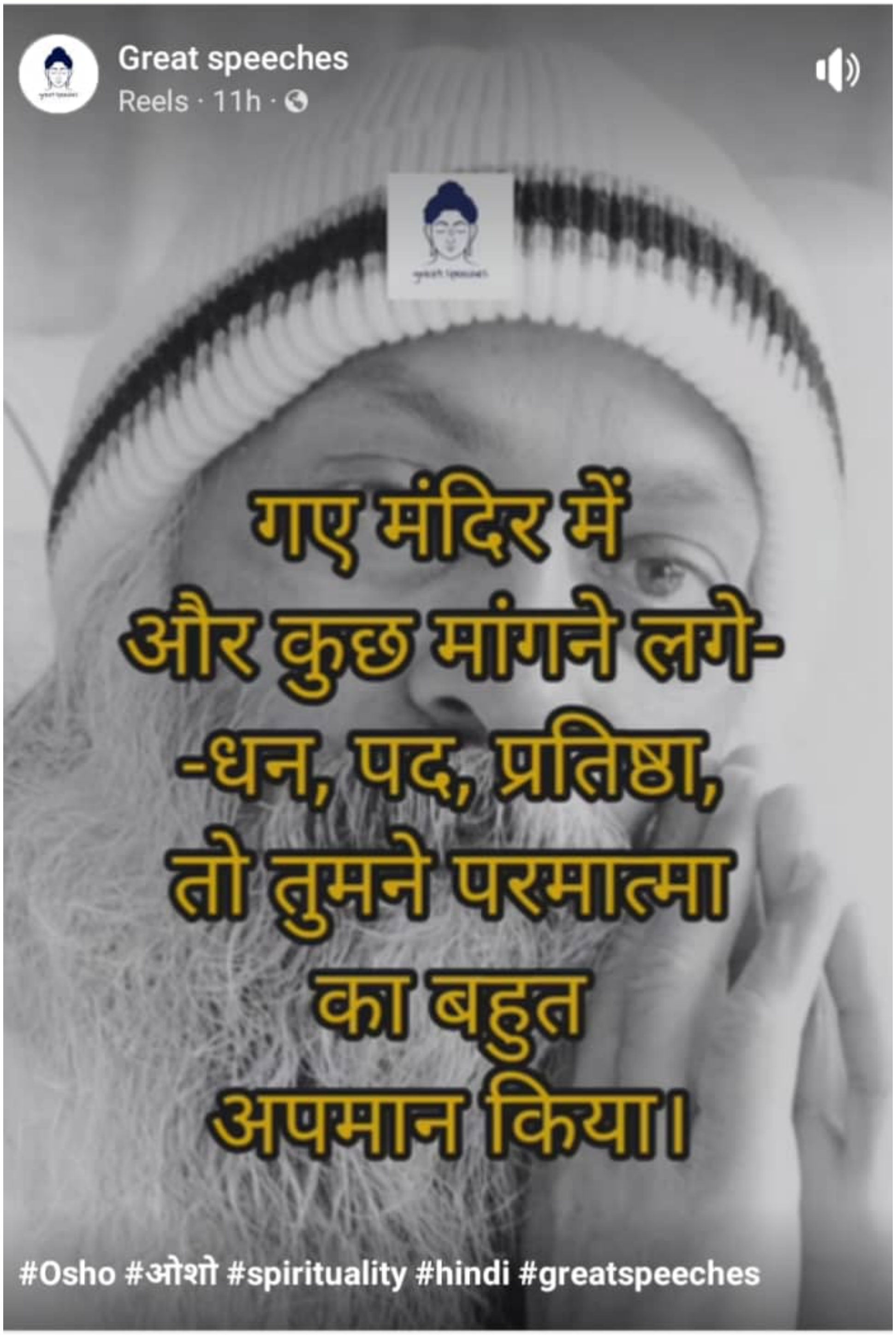

81 6 comments • 38 shares

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Om Khati · 3d ·

CamScanner

10:29 am 0 KB/s VoLTE 4G 85%

ओ शो वाणी

Subhash Chandra · 1h ·

एक वृद्ध ऋषि से किसी ने पूछा :"संसार की वस्तुओं में सबसे बड़ी वस्तु क्या है?"
ऋषि ने कहा :"आकाश। क्योंकि जो भी है, आकाश में है और स्वयं आकाश किसी में नहीं है।"
उसने पूछा :"और श्रेष्ठतम?"
ऋषि ने कहा :शील। क्योंकि शील पर सब कुछ न्यौछावर है, लेकिन शील किसी के लिए भी नहीं खोया जा सकता है। "
उसने पूछा :"और सबसे गतिवान?"
ऋषि ने कहा :"विचार। "
उसने पूछा :"और सबसे सरल?"
ऋषि ने कहा :"उपदेश।"
उसने पूछा :"और सबसे कठिन?"
ऋषि ने कहा :" आत्मज्ञान।"

निश्चय ही स्वयं को जानना सर्वाधिक कठिन प्रतीत होता है, क्योंकि उसे जानने के लिए शेष सब जानना छोड़ना पड़ता है। ज्ञान से शून्य हुए बिना स्वयं का ज्ञान नहीं हो सकता है।
अज्ञान आत्मज्ञान में बाधा है। ज्ञान भी आत्मज्ञान में बाधा है।
लेकिन एक ऐसी अवस्था भी है, जब न ज्ञान है, न अज्ञान है। उस अंतराल में ही स्वयं का ज्ञान आविर्भूत होता है।
मैं उस अवस्था को ही समाधि कहता हूं।
ओशो 🌹🙏

23

Like Comment Share

Sunil Kumawat

Reels · 15 Aug ·

CamScanner

10:27 am 0 KB/s 86%
facebook

नहीं, उपवास का यह अर्थ नहीं है कि आदमी खाना न खाये। उपवास का अर्थ अनाहार नहीं है। अनाहार करने वाला दिन भर आहार करता है। उपवास का अर्थ दूसरा है। दमन नहीं है उपवास का अर्थ; लेकिन दमन ही उसका अर्थ बन गया है। उपवास का अर्थ भोजन 'न-करना' नहीं है।

उपवास का अर्थ है: आत्मा के निकट आवास। और, आत्मा के निकट कोई इतना पहुंच जाये कि उसे भोजन का खयाल ही न आये, तो वह बात ही दूसरी है; कोई इतने भीतर उतर जाये कि बाहर का पता भी न चले कि शरीर भूखा है, वह बात दूसरी है; कोई इतने गहरे में चला जाये कि शरीर को प्यास लगी है कि भूख लगी है, भीतर इसकी खबर ही न पहुंचती हो, तो यह बात दूसरी है। लेकिन कोई- भोजन नहीं छुऊंगा-ऐसा संकल्प करके बैठ जाये, तो दिन भर उसको भोजन करना पड़पता है; वह उपवास में नहीं होता।

ओशो

CamScanner

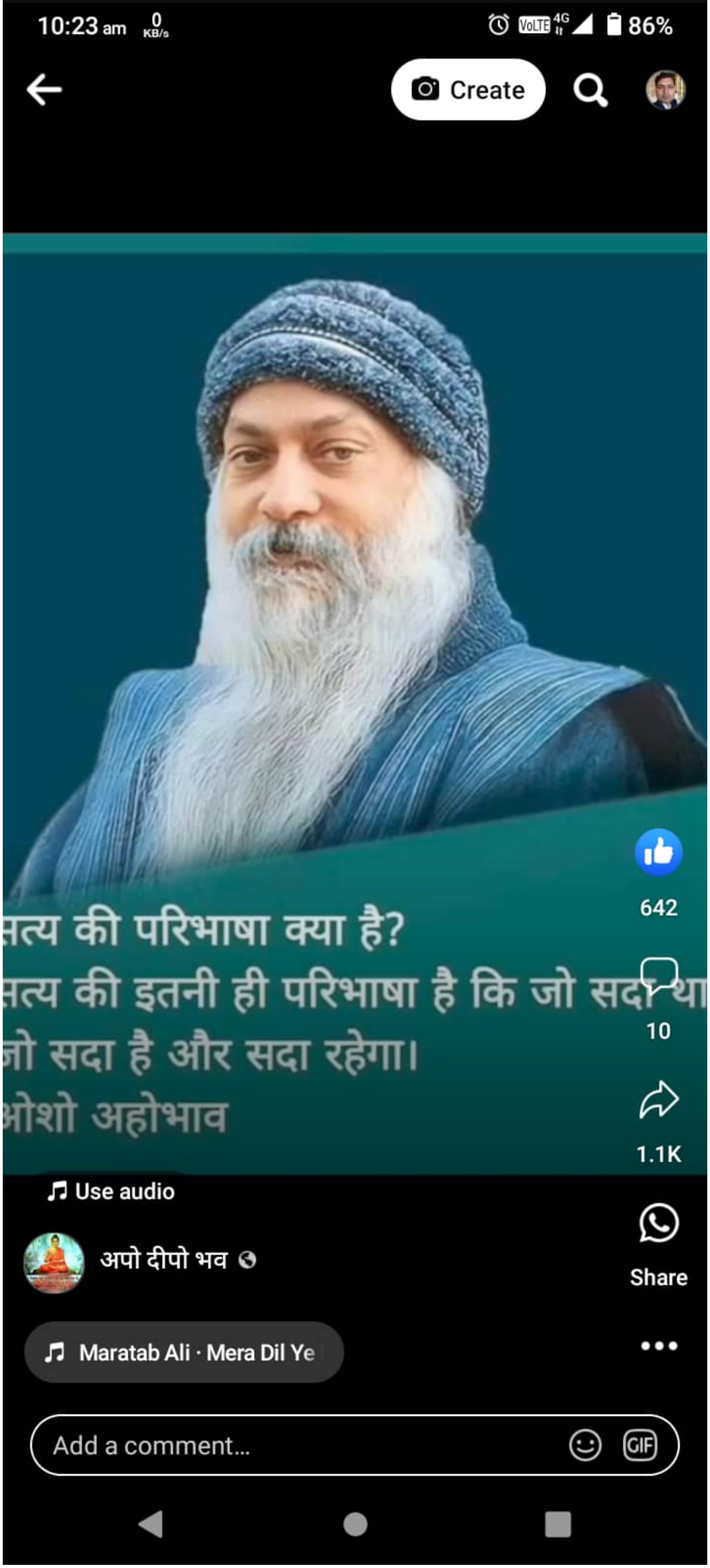
10:23 am
Create
त्य की परिभाषा क्या है?
त्य की इतनी ही परिभाषा है कि जो सदा था
ो सदा है और सदा रहेगा।
ोशो अहोभाव
642
10
1.1K
Use audio
Share
अपो दीपो भव
Maratab Ali · Mera Dil Ye
Add a comment...
GIF

CamScanner

10:23 am
Create
सौभाग्यशाली हैं वे जो मिटने को तैयार हैं
क्योंकि मिटकर ही जीवन का परम सत्य
पाया जाता है।
ओशो अहोभाव
642
10
1.1K
Share
Use audio
अपो दीपो भव
Ali · Mera Dil Ye Pukare
Add a comment...
GIF

CamScanner

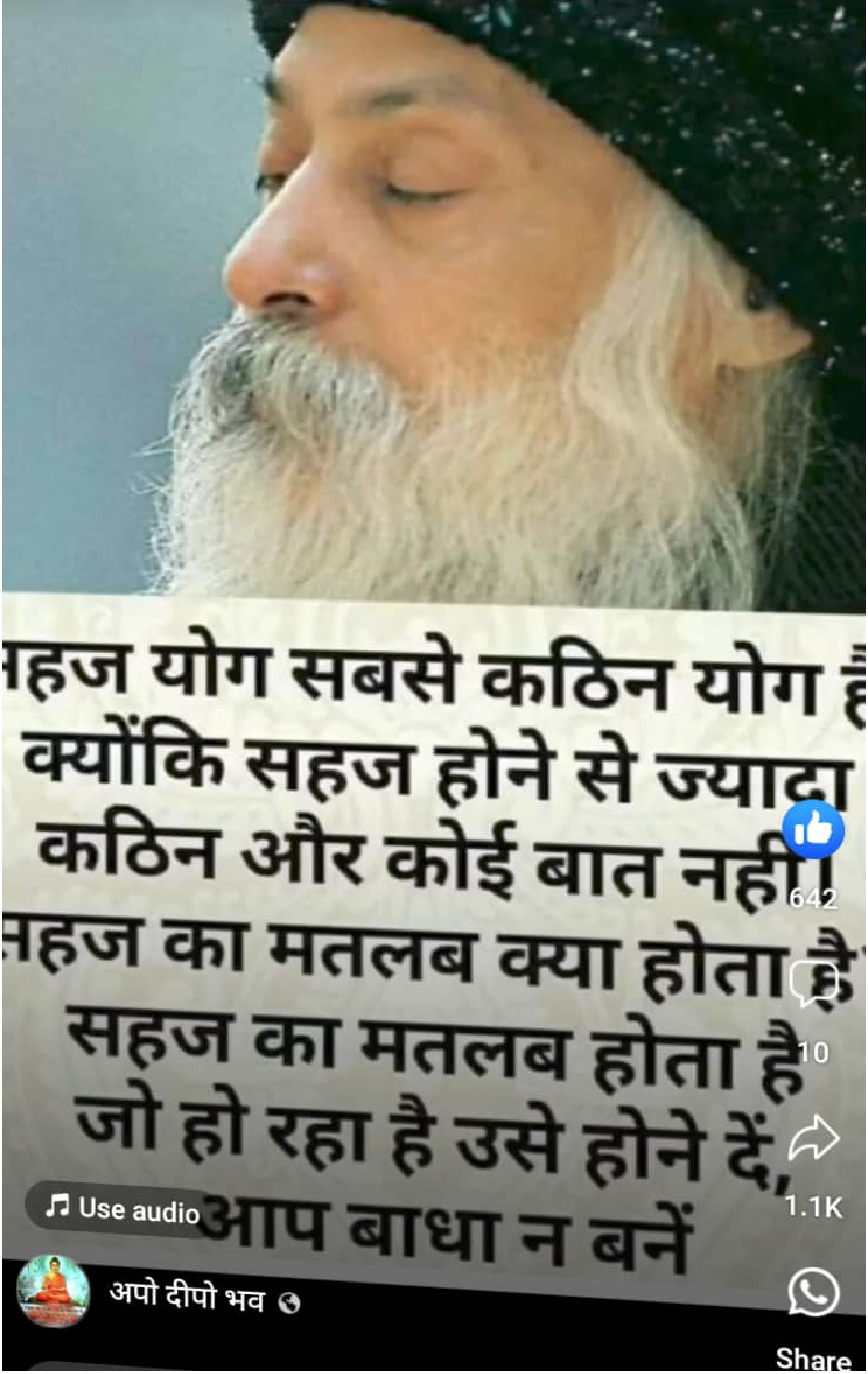
सहज योग सबसे कठिन योग है
क्योंकि सहज होने से ज्यादा
कठिन और कोई बात नहीं।
सहज का मतलब क्या होता है?
सहज का मतलब होता है
जो हो रहा है उसे होने दें,
आप बाधा न बनें
642
10
1.1K
Use audio
अपो दीपो भव
Share

CamScanner

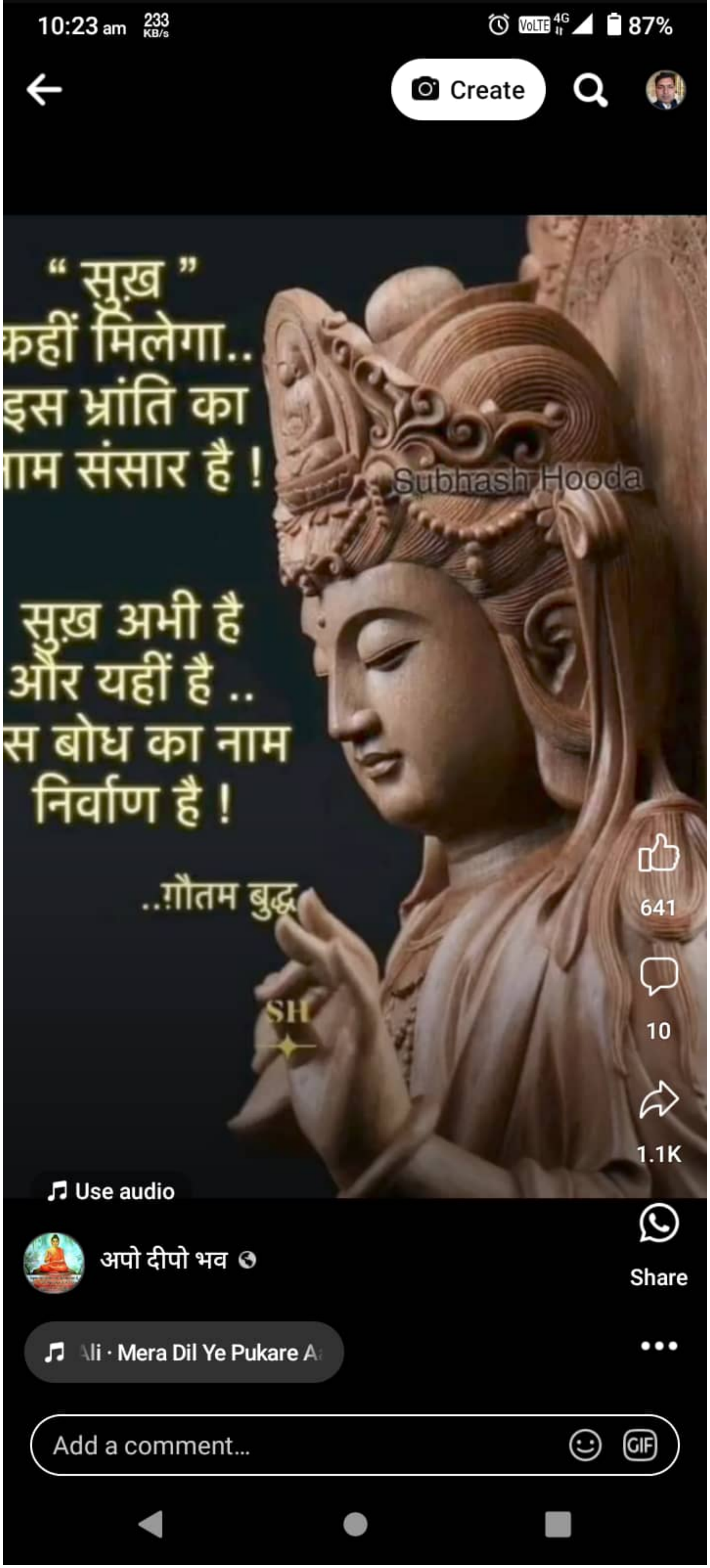
10:23 am
87%
Create
" सुख़ "
कहीं मिलेगा..
इस भ्रांति का
ाम संसार है !
सुख़ अभी है
और यहीं है ..
स बोध का नाम
निर्वाण है !
..गौतम बुद्ध
Subhash Hooda
SH
641
10
1.1K
Use audio
Share
अपो दीपो भव
Ali · Mera Dil Ye Pukare A
Add a comment...
GIF

CamScanner

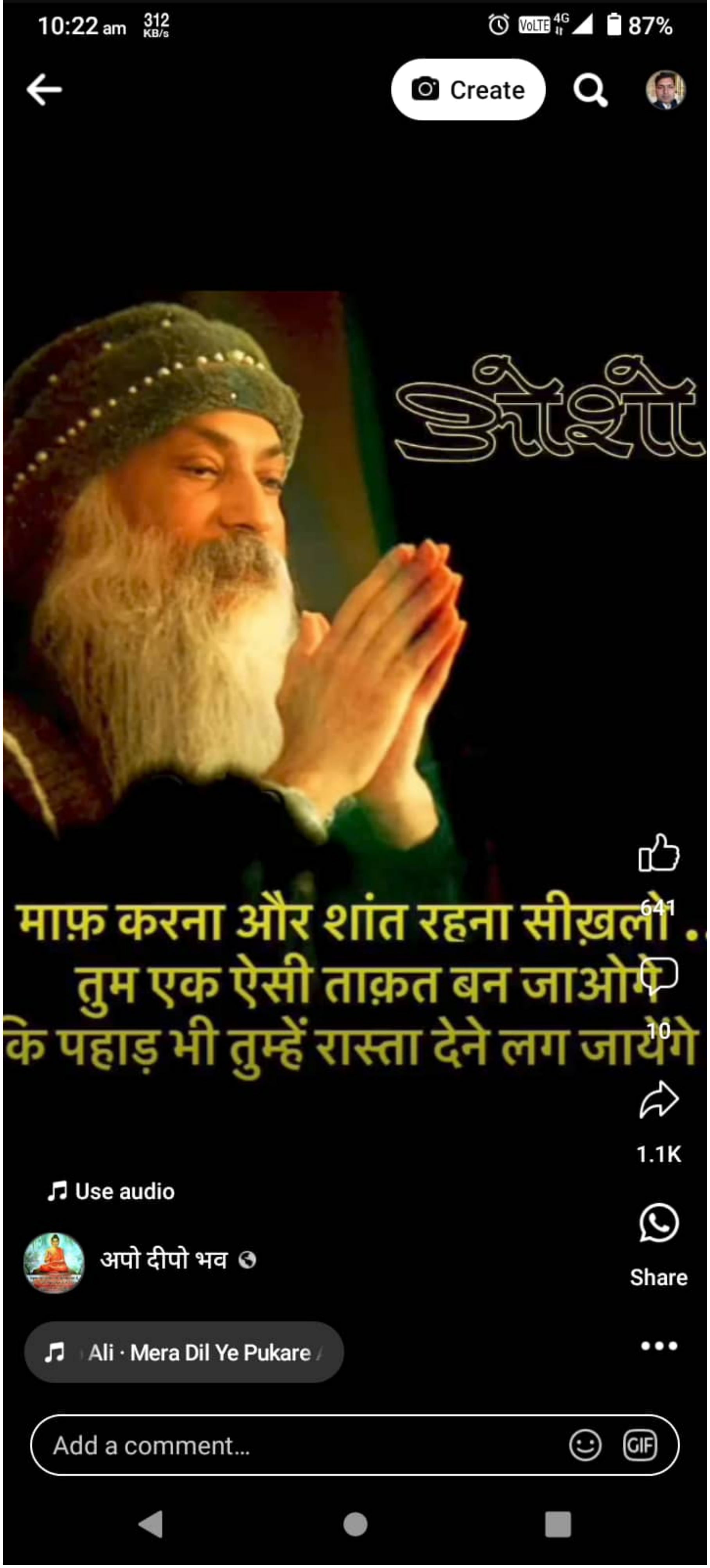
10:22 am
312 KB/s
87%
Create
ओशो
माफ़ करना और शांत रहना सीख़लो ..
तुम एक ऐसी ताक़त बन जाओगे
कि पहाड़ भी तुम्हें रास्ता देने लग जायेंगे
641
10
1.1K
Use audio
अपो दीपो भव
Share
Ali · Mera Dil Ye Pukare
Add a comment...
GIF

CamScanner

CamScanner

शिव जी ने श्रीकृष्ण से पूछा, 'बताइए, आप क्या वरदान चाहते हैं?

श्रीकृष्ण के मन में ये विचार चल रहा था कि मेरे यहां एक पुत्र का जन्म हो और वह ऐसा पुत्र हो, जिस पर मुझे गर्व हो। वे संतान प्राप्ति की कामना लेकर श्रीकृष्ण हिमालय पर्वत पर पहुंचे, वहां ऋषि उपमन्यु रहते थे।

उपमन्यु मुनि श्रीकृष्ण के लिए गुरु समान ही थे। जब श्रीकृष्ण ने उपमन्यु जी को अपनी इच्छा बताई तो उपमन्यु ने कहा कि आप शिव जी की भक्ति करें।उपमन्यु जी की बात मानकर श्रीकृष्ण ने शिव जी की भक्ति करना शुरू कर दिया। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर शिव जी और माता पार्वती प्रकट हुए।

शिव जी ने श्रीकृष्ण से पूछा, बताइए, आप क्या वरदान चाहते हैं?श्रीकृष्ण बोले, मुझे श्रेष्ठ संतान चाहिए। शिव जी ने कहा, आपके यहां सांब नाम का पुत्र होगा। श्रीकृष्ण ने सोचा कि यहां माता पार्वती भी खड़ी हैं तो मुझे इन्हें भी प्रणाम करना चाहिए। उन्होंने देवी को प्रणाम किया तो देवी बहुत प्रसन्न हुईं। देवी ने सोचा कि इन्होंने केवल शिव जी को ही नहीं, मुझे भी मान दिया है। देवी ने कहा, कृष्ण बताओ आप क्या चाहते हो?

श्रीकृष्ण ने देवी से आठ बातें मांगीं। ब्राह्मणों के लिए मेरे मन में सम्मान हो। सदैव माता-पिता को संतुष्ट रखूं। सभी प्राणियों के लिए मेरे हृदय में प्रेम हो। मेरे बच्चे हमेशा श्रेष्ठ रहें। यज्ञ आदि करके मैं पूरे वातावरण को दिव्य रखूं। साधु-संतों का सम्मान करूं। मेरे भाई-बंधुओं से मेरा प्रेम बना रहे और मैं अपने परिवार में सदा संतुष्ट रहूं।

ये आठ बातें पार्वती जी ने प्रसन्न होकर कृष्ण जी को दीं। अर्थात् इसका सार यह कहता है कि व्यक्ति को अपने परिवार के लिए हमेशा अच्छे-अच्छे काम करते रहना चाहिए। अपने परिवार की प्रगति के लिए जहां से भी कुछ मिले, अगर वह शुभ है, पवित्र और सही है तो उसे परिवार तक पहुंचाना चाहिए। पारिवारिक जीवन में भी अनुशासित जीवन शैली होनी चाहिए।

CamScanner

10:19 am 0 KB/s VoLTE 4G 87%

11 3 comments

Like Comment Send

ओशो का हिन्दी साहित्य
Kunal Pandey · 17h ·

शरीर के अपने विधुत स्त्रोत हैं ।
अगर तुम ज्यादा सांस लेकर,
ज्यादा आक्सीजन के द्वारा चोट
करोगे तो वह प्रवाहित हो जाते हैं ।
और यदि तुम सचमुच जीवंत हो जाते हो
तो तुम स्वंय को ऊर्जा की तरह अनुभव करते हो ,
पदार्थ की तरह नहीं ।
अभी तुम अधमरे हो
इसलिए शरीर को बोझ की तरह अनुभव करते हो ।
तुम्हारा आधा मृत हिस्सा बोझ बनता है
और गुरुत्वाकर्षण की कशिश में नीचे की
ओर खिंच जाता है ।
तुम्हें ऊपर की दिशा में यात्रा करनी हो
तो स्वंय को ऊर्जा की तरह
महसूस करना बहुत करना जरूरी है ।

ओशो

CamScanner

स्मरण रहे, परमात्मा, मंदिरों और मस्जिदों में छिपा हुआ नहीं बैठा है। परमात्मा प्रगट है, निर्वस्त्र है, चारों तरफ मौजूद है। झांको तो तुम्हारे भीतर मौजूद है और ऐसे दौड़ते रहो काबा और काशी और कैलाश..तुम्हारी मर्जी! लोग सस्ता पाना चाहते हैं कि चले तीर्थयात्रा को चले हज—यात्रा को। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो सब हाजियों को मिल जाए—हाजी मस्तान को भी मिल जाए। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो हर तीर्थयात्री को मिल जाए। और कुछ लोग तो तीर्थों में अड्डा जमाकर ही बैठे हैं, उन्हें तो पक्का मिल जाए। लेकिन बाहर नहीं है जब भी मिलेगा भीतर मिलेगा।

Osho

CamScanner

10:16 am 0 KB/s 4G 88%

👁️*ध्यान*👁️

शांति पाने की कोशिश मत करे,अशांति को स्वीकार कर ले-आप शांत हो जायेंगे। फिर दुनिया में कोई आपको अशांत नही कर सकता। अगर मैं अशांति के लिए राज़ी हू ,कौन मुझे अशांत कर सकता है?अगर मैं गाली के लिए तैयार हू तो कौन मेरा अपमान कर सकता है?मैं गाली के लिए राज़ी नही हू इसलिए कोई मेरा अपमान कर सकता है। मैं अशांति के लिए राज़ी नही हू इसलिए कोई भी अशांत कर सकता है।

अगर हम ठीक से मन की प्रक्रिया को समझ ले,तो मन की प्रक्रिया को समझकर जीवन बदल जाता है। प्रक्रिया ये है की मन हमेसा चीजों को दो में तोड़ देता है-मान-अपमान,सुख-दु:ख,शांति-अशांति,संसार-मोक्ष। और कहता है एक नही चाहिए,अरुचिकर है,और एक चाहिए रुचिकर है-बस ये मन का खेल है।

इस मन से बचने के दो उपाय है-या तो दोनों के लिए राज़ी हो जाये-मन मर जायेगा। या दोनों को छोड़ दे,मन मर जायेगा। जो आपके लिए अनुकूल पड़े वैसा कर ले-अन्यथा आपके शांत होने का कोई उपाय नही है।

जब तक आप शांत होना चाहते है,तब तक शांत न हो सकेंगे। जब तक सुखी होना चाहते है दु:ख आपका भाग्य होगा, और जब तक मोक्ष के लिए पागल है,संसार आपकी परिक्रमा होगी। दोनों के लिए राज़ी हो जाये-मांग ही छोड़ दे,-कह दे जो होता है मैं राज़ी हू'।

इसका थोडा प्रयोग करके देखे-24 घंटे,ज्यादा नही। लड़ने का प्रयोग तो आप जन्मो से कर रहे है,एक 24 घंटे तय कर ले, की आज सुबह 6 बजे से कल सुबह 6 बजे तक जो भी होगा,उसको मैं स्वीकार कर लूँगा,जहाँ भी हो विरोध,द्वन्द नही खड़ा करूंगा।

करके देखे,24 घंटे में आपकी जिंदगी में एक नई हवा का प्रवेश होगा। जैसे कोई झरोखा अचानक खुल गया,और ताज़ी हवा आपकी जिन्दगी में आनी शुरू हो गई। फिर ये 24 घंटे कभी खत्म न होंगे। एक दफा इसका अनुभव हो जाये,फिर आप इसमें गहरे उतर जाएँगे।

कोई विधि नही है शांत होने की, शांत होना जीवन- दृष्टी है।कोई मैथड नही होता की भगवान का नाम जप लिया और शांत हो गये। अशांति को स्वीकार कर ले,दु:ख को स्वीकार कर ले,मृत्यु को स्वीकार कर ले,फिर आपकी कोई मृत्यु नही है।

" जिसे हम स्वीकार कर लेते है, उसके हम पार हो जाते हैं ".......👏

🌷 *ओशो* 🌷

CamScanner

10:13 am 0 KB/s VoLTE 4G 88%

एक बहुमूल्य हीरा, धूल में पड़ा हुआ भी चमक रहा है। हीरे की चमक अदभुत थी! हजारों हीरे देखे थे भर्तृहरि ने, पर यह अनोखा ही था। वासना एक क्षण में उस हीरे पर गई। और जैसे ही भर्तृहरि ने अपनी वासना को देखा, वह तत्क्षण लौट आई। एक क्षण में मन भूल गया सारे अनुभव विषाद के। वह सारा अनुभव भोग का। वह तिक्तता, वह वासना उठ गई।

एक क्षण को ऐसा लगा कि अब उठे-उठे, और उसी क्षण ख्याल आ गया अरे पागल! क्या कर रहा है!! ये सब छोड़ कर तू आया है!!! देखा है जीवन में इसके महत्व को, भोगी है पीड़ा उस में रह कर। फिर उसी में जाना चाहता है।

पर ये बातें उसके मन को मथती, कि सामने से आते दो घुड़सवार आ कर उस हीरे के दोनों ओर खड़े हो गये। दोनों ने एक दूसरे को देखा और तलवारें निकाल ली। दोनों ने कहा मेरी नजर पहले पड़ी थी इस लिए यह हीरा मेरा है। दूसरा भी यही कह रहा था। अब बातों से निर्णय होना असम्भव था। तलवारें खिंच गयीं। क्षण भर में दो लाशें पड़ी थी, तड़पती, लहू-लुहान। और हीरा अपनी जगह पड़ा था।

उधर भर्तृहरि अपनी जगह केवल देखते रह गये। एक निर्जीव और एक जीवित। सूरज की किरणें अब भी चमक रही थी, पर कुछ कोमल हो गई थी। हीरा बेचारा यह जान भी नहीं पाया कि क्षण भर में उसके आस-पास क्या घट गया!

सब कुछ हो गया वहाँ। एक आदमी का संसार उठा और वैराग्य हो गया। दो आदमी का संसार उठा और मौत हो गई। दो आदमी अभी-अभी जीवित थे, उनकी धमनियों में खून प्रवाहित हो रहा था। श्वांस चल रही थी, दिल धड़क रहा था, मन सपने बुन रहा था। पर क्षण में प्राण गँवा दिये एक पत्थर के पीछे। और बेचारा निर्दोष पत्थर जानता भी नहीं कि ये सब उसके कारण हो रहा है।

एक आदमी वहाँ बैठा-बैठा जीवन के सारे अनुभव से गुजर गया। भोग के और वैराग्य के; और पार हो गया! साक्षी भाव जाग गया उस का!!

भर्तृहरि ने आँखें बन्द कर ली। और वे फिर ध्यान में डूब गए। जीवन का सबसे गहरा सत्य क्या है? तुम्हारा चैतन्य। सारा खेल वहाँ है। सारे खेल की जड़ें वहाँ है। सारे! संसार के सूत्र वहाँ है।

CamScanner

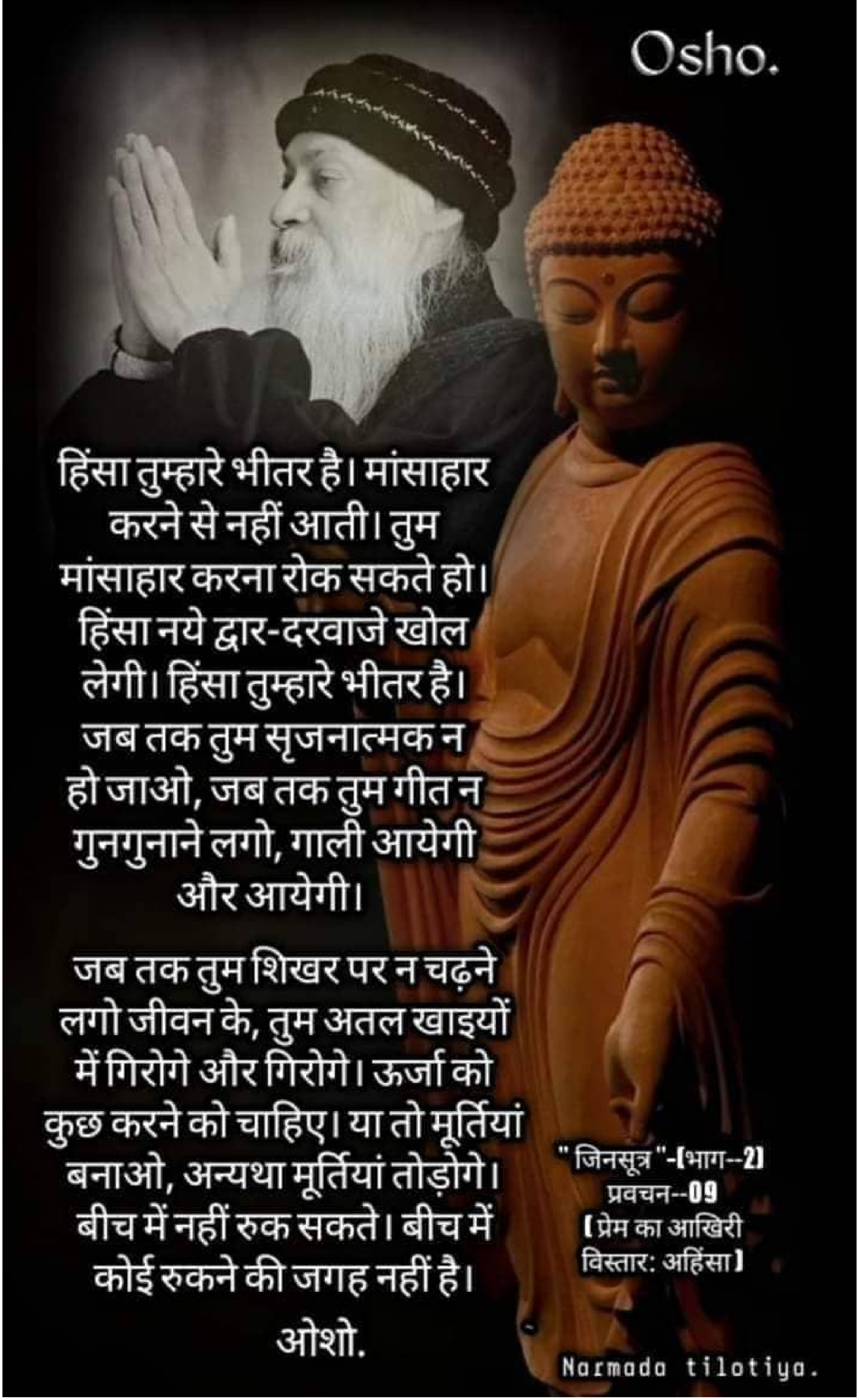
Osho.
हिंसा तुम्हारे भीतर है। मांसाहार करने से नहीं आती। तुम मांसाहार करना रोक सकते हो। हिंसा नये द्वार-दरवाजे खोल लेगी। हिंसा तुम्हारे भीतर है। जब तक तुम सृजनात्मक न हो जाओ, जब तक तुम गीत न गुनगुनाने लगो, गाली आयेगी और आयेगी।
जब तक तुम शिखर पर न चढ़ने लगो जीवन के, तुम अतल खाइयों में गिरोगे और गिरोगे। ऊर्जा को कुछ करने को चाहिए। या तो मूर्तियां बनाओ, अन्यथा मूर्तियां तोड़ोगे। बीच में नहीं रुक सकते। बीच में कोई रुकने की जगह नहीं है।
ओशो.
" जिनसूत्र "-[भाग--2]
प्रवचन--09
[प्रेम का आखिरी विस्तार: अहिंसा]
Narmada tilotiya.

CamScanner

22 >

Top comments

Akhil Kumar
Agar baha kr मंत्र सीखने हो तो केसे सीखे प्लेस btay मुझे

2d Like Reply

Kully Jdon Akhil Kumar मंत्र सीखने के लिए आप यह कद...

Dhamu Dhamu
Ye bda yog hai...

1d Like Reply

Kully Jdon · Follow
मयोंग एक प्रकार का अभियांत्रिकीय उपकरण होता है जिसका उपयोग दुर्लभ या छिपी हुई वस्तुओं को ढूंढने में किया जाता है। अघोरी और अन्य लोग इसका उपयोग आध्यात्मिक अभ्यासों, ध्यान और तपस्या में भी करते हैं, जहां वे भगवान के प्रति अपनी भक्ति को अद्वितीय तरीके से प्रकट करने का प्रयास करते हैं। इसे उनके आध्यात्मिक मार्ग का हिस्सा माना जा सकता है।

2d Like Reply 4

Ashish Kumar
ये कामख्या माई से थोड़ा आगे है.....वहा तंत्र मंत्र से संबंधित काम होता है पर डर जैसी कोई बात नही है।

2d Like Reply 1

Hitesh Chauhan
मयंग कैसा होता हैं

1d Like Reply

Rules

Write a public comment...

CamScanner

इंसान को मारकर धर्म की रक्षा
करने से बेहतर है...!
धर्म को मारकर
इंसान की रक्षा करें...!!
क्योंकि "इंसानियत"
ही धर्म है...!!!
......तथागत बुद्ध
नमोबुद्धाय 🙏
31/03/2023 17:11

CamScanner

CamScanner

अंगारा नदी में फेंक कर देखो, जब तक नदी को नही छुआ तभी तक अंगारा है नदी को छुते ही बुझ जाता है। तुम्हारे ध्यान की नदी में, सब गालिया, अपमान, छूते ही मीट जाते है। तुम दूर अछूते खड़े रह जाते हो।

ओशो अहोभाव

जिन सूत्र - भाग 2 (प्र-15)

CS CamScanner

10:02 am 12 KB/s 90%

oshoji_

Reels · 11 Aug ·

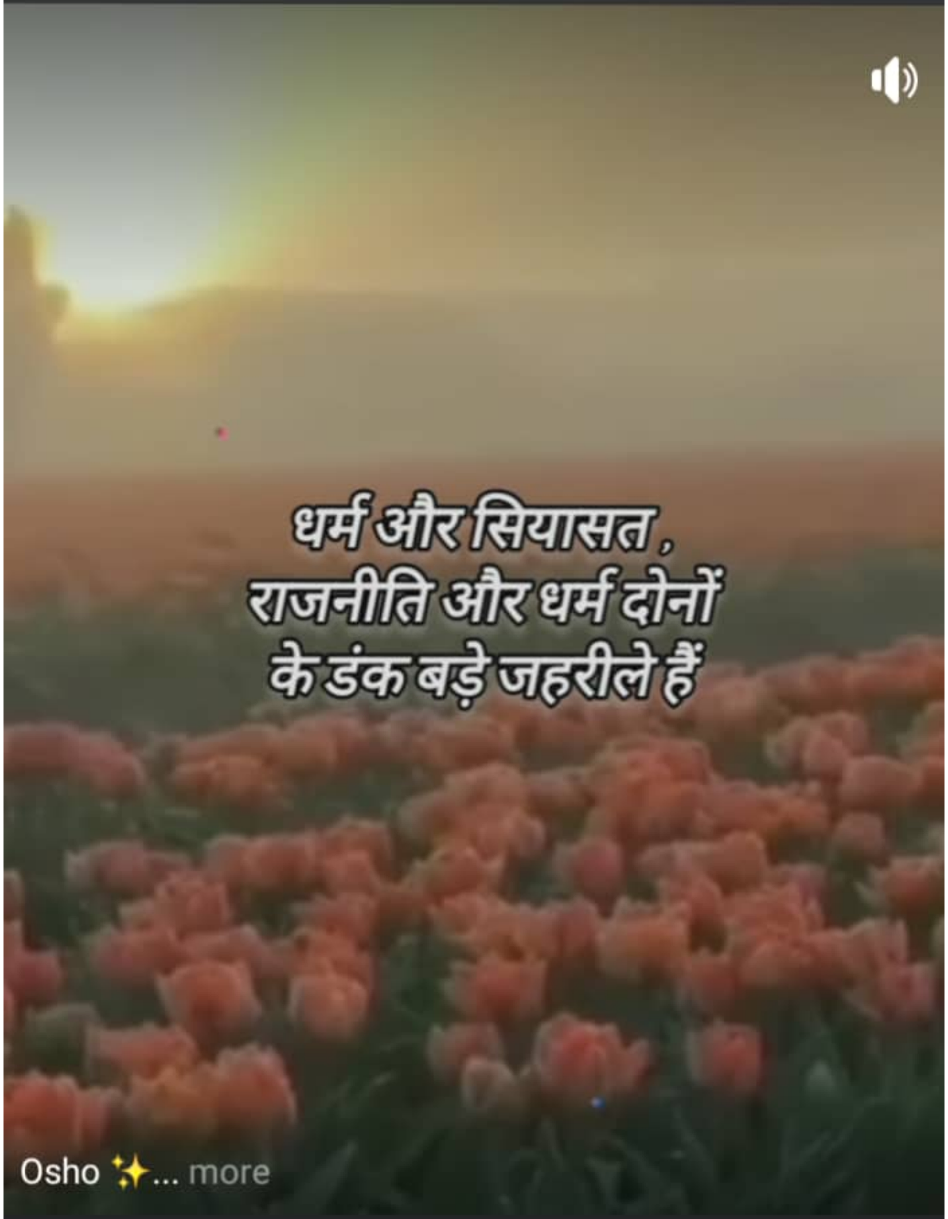

♫ oshoji_ · Original audio

oshoji_ and 484 others 22 comments • 171 shares • 11K views

Like Comment Share

Stylecart

CamScanner

आत्म ज्ञान (अपना ज्ञान)

शास्त्रों से आत्म ज्ञान नहीं निकलता बल्कि आत्म ज्ञान से ही शास्त्र निकलते हैं, जो यह बात जान गया वही आत्म ज्ञानी है, लेकिन जो लोग शास्त्रों में ज्ञान रटकर स्वयं को आत्मज्ञानी समझते हैं, वो ज्ञानियों कि नहीं तोते कि श्रणी में आते हैं, जो रट तो लेता है, परंतु उनका वह ज्ञान दुसरो के अनुभवों पर आधारित होता है!!!!!!!! जैसे संसार में सबकी अक्ल और शक्ल भिन्न हैं।। वैसे ही संसार में सब साधु संतो के अनुभवों में भी भिन्नता होती है, अतः - आत्म ज्ञानी वही है जो स्वयं साधना करता है और स्वयं के अनुभवों से परम संत बनता है, तथा अपने व अपने भगतों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है!!!!

CamScanner

परमात्मा से मतलब नहीं है कि
कहीं कोई ऊपर बैठे हुए हैं सज्जन,
और उनके आपको दर्शन होंगे, और वे आप
पर कृपा करेंगे। और आप उनके चरणों में
बैठेंगे और जाकर वहां स्वर्ग में मजे करेंगे।
ऐसा कोई परमात्मा कहीं नहीं है। और अगर
ऐसे परमात्मा की तलाश में हों, तो भ्रम में हैं।
ऐसा परमात्मा कभी नहीं मिलेगा।
आज तक किसी को नहीं मिला है।
OSHO

CamScanner

ओशो
ओशो
परोपकार कैसे करोगे ? धन से ?
धन आएगा कहाँ से ?
तुम्हारे सारे इतिहास देखो ।
बड़े बड़े दानी बड़े से बड़े शोषक
थे और हैं ।
मैं बाहर की चीजों को देने को दान
नहीं मानता ,न ही पुण्य मानता हूँ।
पुण्य तो आनंद बांटने का नाम है ।
प्रेम बांटने का नाम है।

CamScanner

9:58 am 0 KB/s VoLTE 4G 91%
facebook

. कहते हैं कि जो गुरु की धारणा को समझ ले, जो गुरु शब्द में छिपे हुए राज को समझ ले, उसने जीवन के अगाध सत्य को समझ लिया। क्योंकि इस छोटे-से शब्द से गुरु में हमने वह सब समाकर भर दिया। यह तो एक छोटा सूत्र है जिस सूत्र में हमने सब भर दिया है। इस एक छोटे शब्द में आध्यात्मिक जीवन के सारे रहस्यों को हमने निचोड़ कर रख दिया है। जैसे हजार-हजार फूलों से निचोड़ कर इत्र बनता है, ऐसे हमने सारे आध्यात्मिक अनुभवों को निचोड़ कर जो इत्र बनाया है, वह गुरु है। गुरु का कृत्य क्या है?

जहां संगरेज़ों पे गिरते हैं गाहक
वहां जिंसे-लालो-गुहर बेचता हूं
जहां क़द्रदां हैं जमअ तल्ख़ियों के
वहां कन्दो-शहदो-शकर बेचता हूं
परस्तारियां हैं जहां ज़ुल्मतों की
वहां नूरे-शम्सो-क़मर बेचता हूं
जहां दर्दे-दिल का मख़लिफ़ है आलम
वहां दर्दे-दिल का असर बेचता हूं
छुपाकर रदीफो-क़वाफ़ी के अंदर
मैं दिल बेचता हूं, जिगर बेचता हूं

गुरु का कृत्य यह है: जहां संगरेज़ों पे गिरते हैं गाहक। जहां पत्थर के टुकड़ों को लोग खरीद रहे हैं, जहां पत्थर के टुकड़ों पर गिर-गिर पड़ रहे हैं, जहां कंकड़ बीन रहे हैं और सोचते हैं कि हीरे-जवाहरात इकट्ठे कर रहे हैं!

जहां संगरेज़ों पे गिरते हैं गाहक
वहां जिंसे-लालो-गुहर बेचता हूं

वहां लाल, मोती जैसे जवाहरात, वहां कोहिनूर बेचता हूं। गुरु का यह कृत्य है कि जहां लोग कंकड़ खरीदने में लीन हैं वहां वह जवाहरात लाता है—जवाहरात जो इस जगत् के नहीं हैं; कोहिनूर जो किसी और लोक के हैं; कोहिनूर जो उसकी समाधि में उसे मिले हैं।

CamScanner

ओशो - जीवन-मृत्यु

Reels · **DrKantibhai Patel** · 1d ·

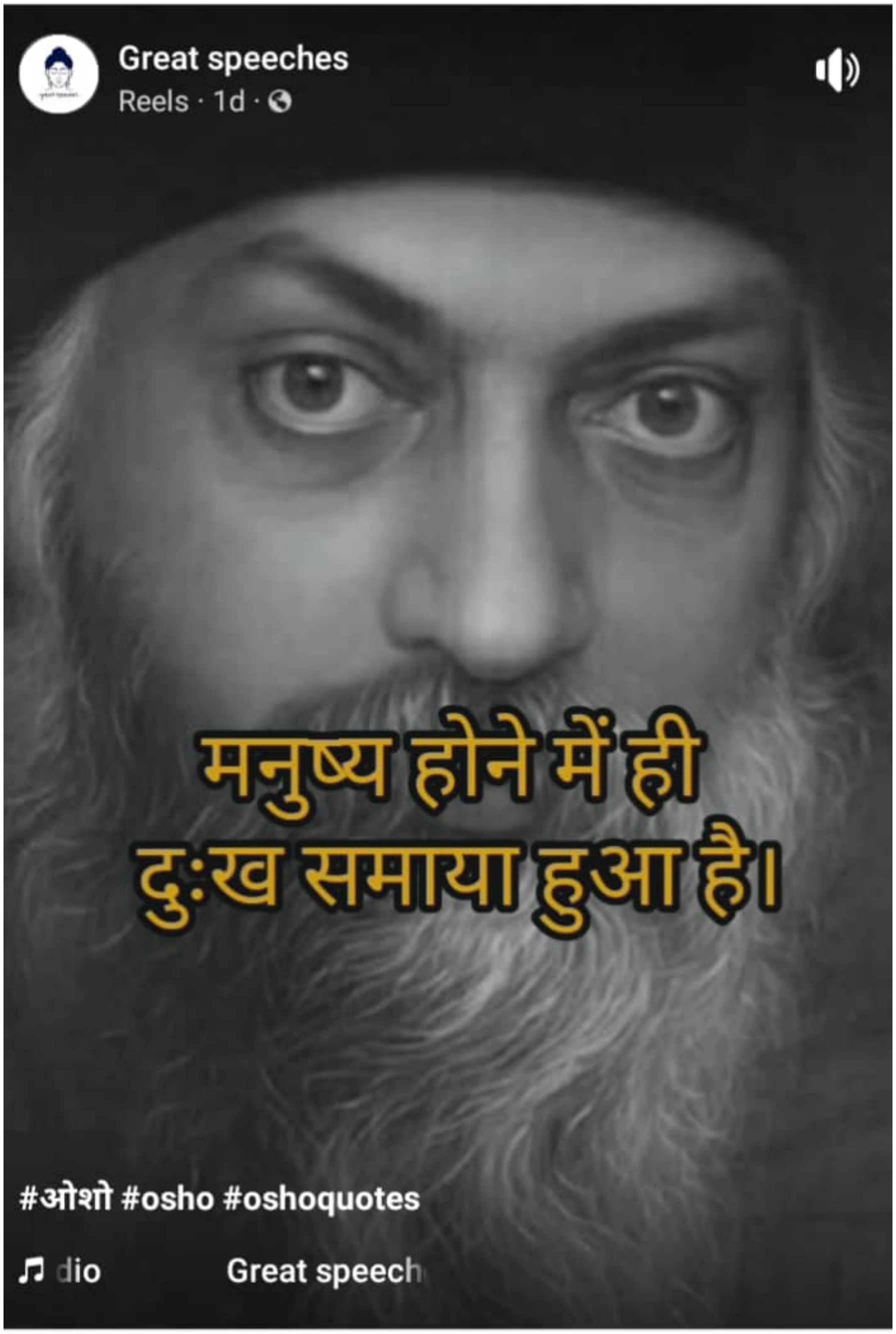

427 26 comments • 122 shares

Like Comment Share

CamScanner

जिस दिन अंतिम निर्णय होगा तुम्हारे जीवन का, आखिरी परीक्षा होगी, उस दिन तुम्हारे भाव का हिसाब होगा; तुम्हारे कृत्यों का नहीं।

संसार में तौले जाते हैं कर्म, परमात्मा में तौला जाता है भाव। संसार हिसाब रखता है, क्या तुमने किया; परमात्मा हिसाब रखता है, क्या तुम हो।

तो यह भी हो सकता है, तुम मोक्ष में उन लोगों को पाओ, जिनको तुमने मस्जिद-मंदिर में कभी नहीं देखा। और तुम नर्क में उन लोगों को पाओ जो सदा मस्जिद-मंदिर में ही जिंदगी गुजारे।

संसार तो कृत्य देख सकता है। क्योंकि उतनी गहरी आंख नहीं है, जो भाव को देख ले।

ओशो - दीया तले अंधेरा

CamScanner

9:55 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%

facebook

दे रही थी।

उसके दिमाग में दिन की सारी घटना चलचित्र की तरह चलने लगी। कैसे बेटा आंगन में गिरा। और फिर एकाएक उसकी आत्मा सिहर उठी, कल ही तो पुराने हैंडपंप का पाइप का टुकड़ा आंगन से हटवाया है, ठीक उसी जगह था जहां बेटा गिरा था। अगर कल मिस्त्री न आया होता तो..?

उसका हाथ अब अपने पेट की तरफ गया जहां टांके अभी हरे ही थे, ऑपरेशन के। आश्चर्य हुआ कि उसने 20-22 किलो के बेटे को उठाया कैसे, कैसे वो आधा किलोमीटर तक दौड़ती चली गयी? फूल सा हल्का लग रहा था बेटा। वैसे तो वो कपड़ों की बाल्टी तक छत पर नही ले जा पाती है।
फिर उसे ख्याल आया कि डॉक्टर साहब तो 2 बजे तक ही रहते हैं और जब वो पहुंची तो साढ़े 3 बज रहे थे, उसके जाते ही तुरंत इलाज हुआ, मानो किसी ने उन्हें रोक रखा था।

उसका सर गुरु चरणो में श्रद्धा से झुक गया। अब वो सारा खेल समझ चुकी थी। मन ही मन सद्गुरु से अपने शब्दों के लिए रोते रोते क्षमा मांगने लगी।

तभी टीवी पर प्रवचन आ रहा था,

"मैं तुम्हारे आने वाले संकट रोक नहीं सकता क्योंकि वह तुम्हारा ही कर्म है। लेकिन तुम्हें इतनी शक्ति दे सकता हूँ कि तुम आसानी से उन्हें पार कर सको, तुम्हारी राह आसान कर सकता हूँ। बस धर्म के मार्ग पर चलते रहो।"

उस औरत ने घर के मंदिर में झांक कर देखा तो सद्गुरु की छवी मुस्कुरा रही थी.!! सद्गुरु की कृपा कोई खैरात है कि मुफ्त में मिल जाए।
....

CamScanner

9:40 am 0 KB/s VoLTE 4G 95%

तो बुद्ध ने कहा कि मैं यह गलती करने वाला नहीं हूं और मैं यह समझाने वाला नहीं हूं कि प्रकाश है। मैं तो इतना कह सकता हूं कि इस आदमी को तुम गलत जगह ले आए हो। मेरे पास लाने की जरूरत न थी। किसी वैद्य के पास ले जाओ जो इसकी आंख का इलाज कर सके। इसे उपदेश की नहीं, उपचार की जरूरत है। तुम्हारे समझाने का सवाल नहीं, तुम्हारी समझाई गई बात पर विश्वास करने का सवाल नहीं। इसकी आंख ठीक होनी चाहिए। और आंख ठीक हो जाए तो तुम्हें समझाने की जरूरत न पडेगी, यह खुद ही देख सकेगा, खुद ही जान सकेगा।

उनको बात ठीक जंची। बुद्ध ने कहा है कि मैं तो धर्म को उपदेश नहीं मानता हूं उपचार मानता हूं। तो इसे ले जाओ। वे उस अंधे को ले गए और भाग्य की बात थी कि वह अंधा कुछ महीनों के इलाज से ठीक हो गया। बुद्ध तो दूसरे गांव चले गए थे। वह अंधा आदमी ठीक हो गया था। वह बुद्ध के चरण छूने गया और उसने उन्हें प्रणाम किया और उसने कहा कि मैं गलती में था। प्रकाश तो था, लेकिन मेरे पास आंख नहीं थी। लेकिन बुद्ध ने कहा तू गलती में जरूर था, लेकिन तूने जिद्द की कि जब तक आंख न होगी तब तक मैं मानने को राजी न होऊंगा, तो तेरे आंख का इलाज भी हो सका। अगर तू मान लेता उन मित्रों की बात कि तुम कहते हो तो ठीक है, तो बात वहीं खत्म हो जाती। आंख के इलाज का सवाल भी नहीं उठता।

जो लोग विश्वास कर लेते हैं, वे विवेक तक नहीं पहुंच पाते। जो लोग चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं, वे स्वयं के अनुभव तक नहीं पहुंच पाते। जो अंधे हैं और पकड़ लेते हैं कि दूसरे कहते हैं प्रकाश है तो जरूर होगा, फिर उनकी यात्रा वहीं बंद हो जाती है। यात्रा तो तब होती है जब बेचैनी बनी रहे, बनी रहे, बनी रहे, बेचैनी छूटे नहीं। और बेचैनी तभी होती है जब मुझे लगता है कि कोई चीज है, लोग कहते हैं लेकिन मुझे दिखाई नहीं पड़ती तो मैं कैसे मान लूं? मैं ही देखूं तो मानूं! यह बेचैनी मन में हो कि मेरे पास आंख हो तो मैं स्वीकार करूं।

🌹 ओशो 🌹

साधना पथ--6

CamScanner

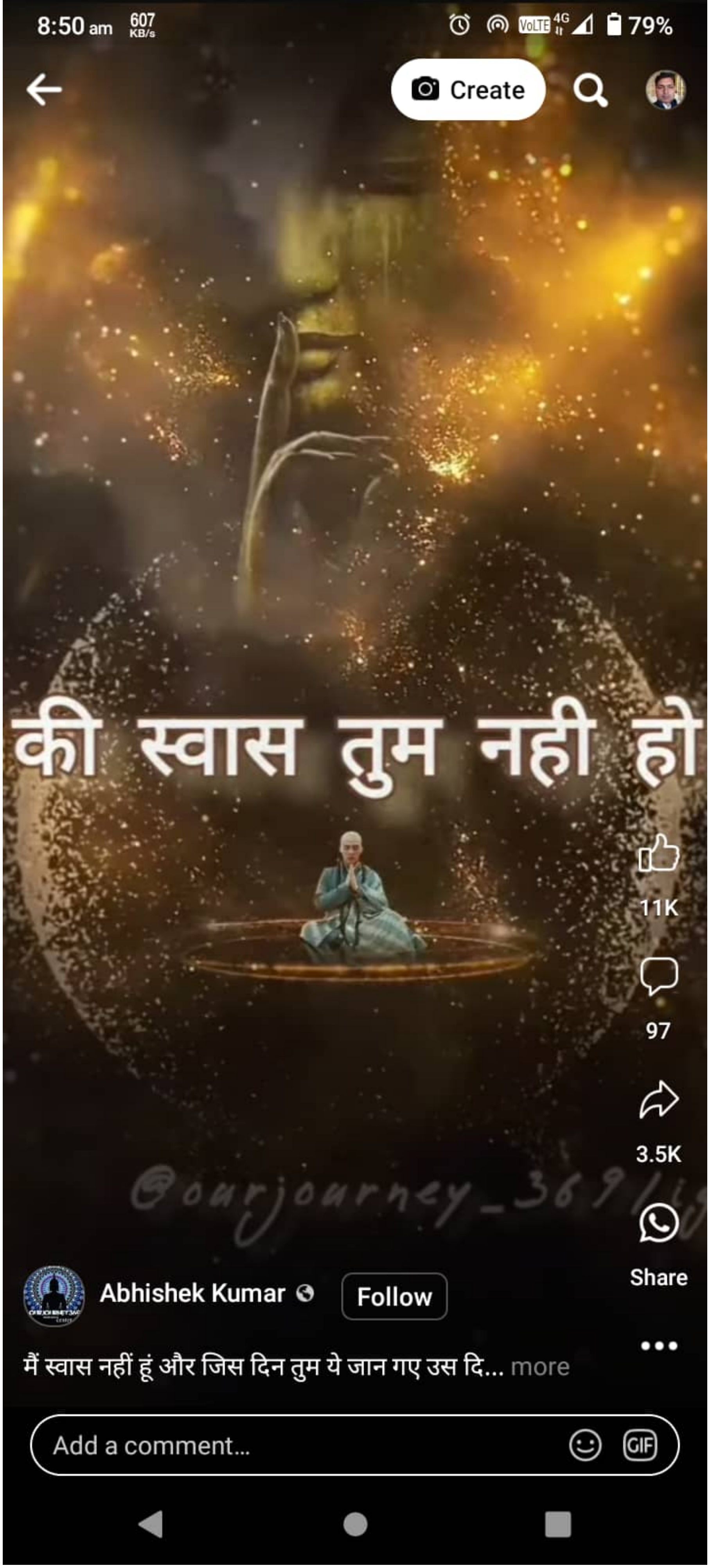
8:50 am
607 KB/s
79%
Create
की स्वास तुम नही हो
11K
97
3.5K
Share
Abhishek Kumar
Follow
मैं स्वास नहीं हूं और जिस दिन तुम ये जान गए उस दि... more
Add a comment...
GIF

CamScanner

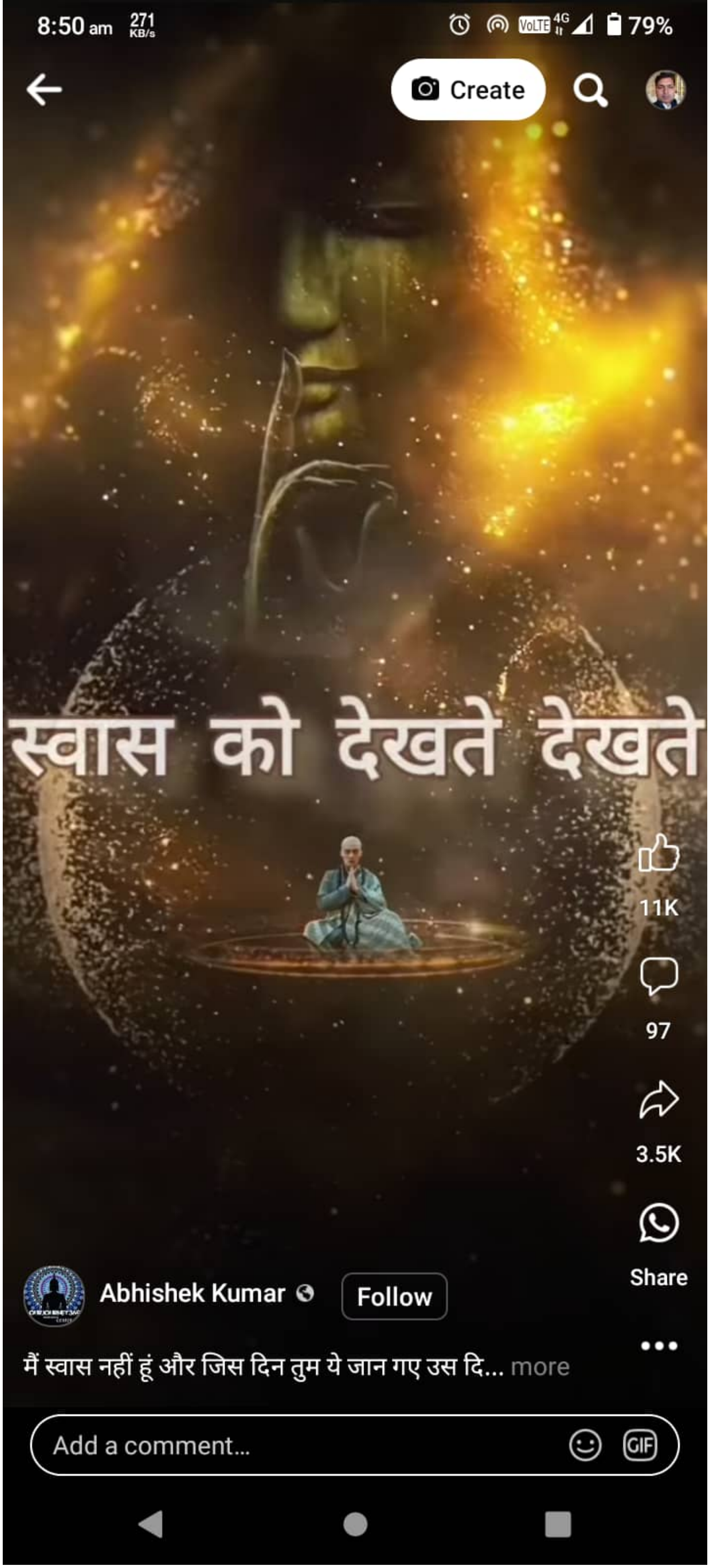
8:50 am
271 KB/s
79%
Create
स्वास को देखते देखते
11K
97
3.5K
Share
Abhishek Kumar
Follow
मैं स्वास नहीं हूं और जिस दिन तुम ये जान गए उस दि... more
Add a comment...
GIF

CamScanner

बुद्ध ने प्रार्थना की बात ही नहीं की।
बुद्ध ने पूजा की बात ही नहीं की।
बुद्ध ने तो सिर्फ एक सीधा सा
सूत्र दिया ध्यान।
ध्यान का अर्थ है—नींद को तोड़ो,
सपने को तोड़ो और जागो।
एस धम्मो सनन्तानो -प्र-१८ ओशो

CS CamScanner

अगर तुममें प्यास है,
तो परमात्मा! तुम्हें
खोजता हुआ
तुम्हारे पास आयेगा!
इसके लिए तुम्हें
गिड़गिड़ाना
नहीं पड़ेगा, इसके लिए
अलग से प्रयास नहीं
करना पड़ेगा!
वो तो फ़िर अनायास
ही उतर जाता है.!!
ओशो

CamScanner

तुम गौर करना!
दुनियाँ में जितने भी,
"बड़े सन्यासी हुए हैं!
वह सब जवानी में ही
हुए हैं, क्योंकि!
बुढ़ापे में वो ऊर्जा नहीं
रह जाती..!!
ओशो

CamScanner

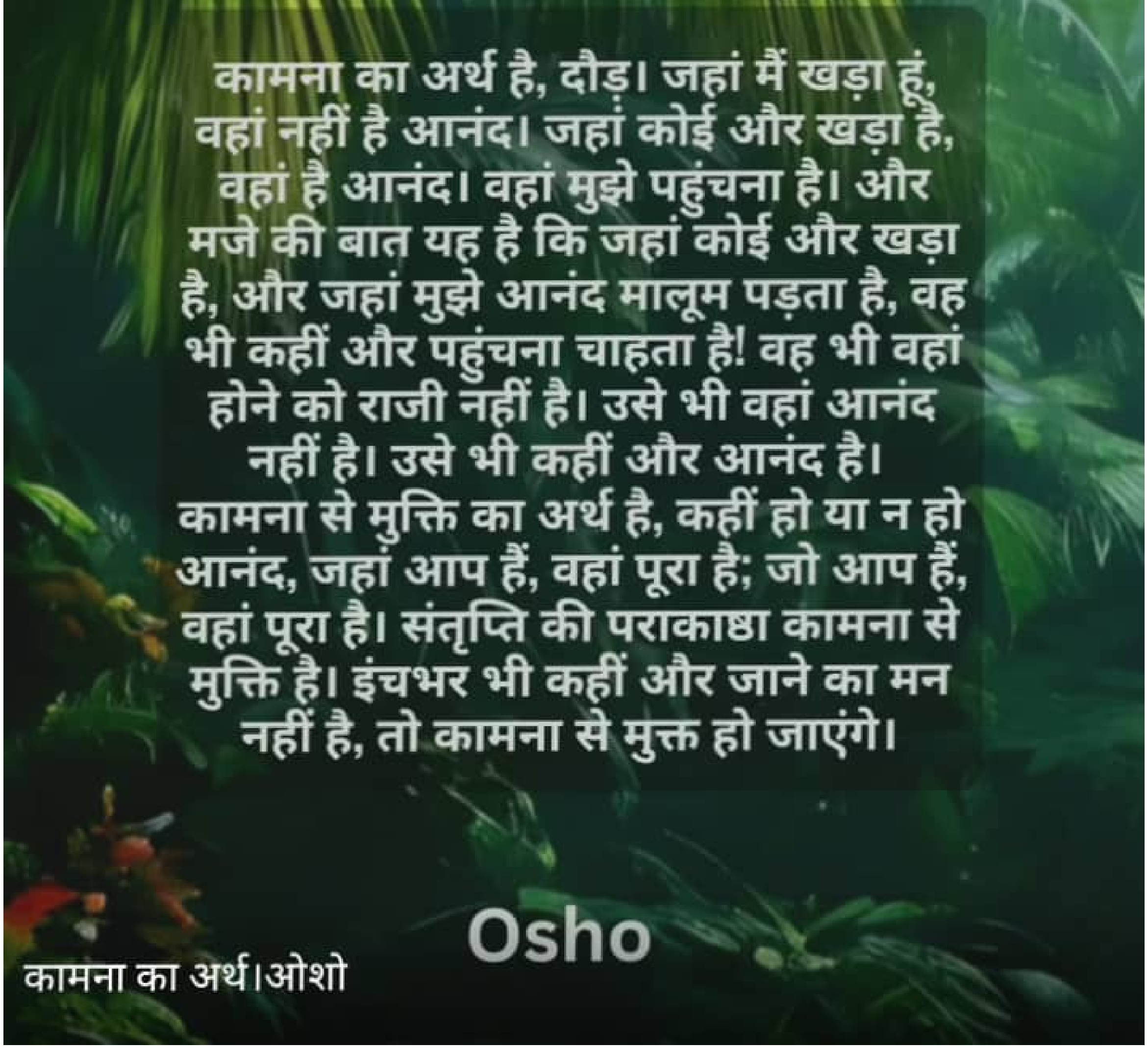
कामना का अर्थ है, दौड़। जहां मैं खड़ा हूं,
वहां नहीं है आनंद। जहां कोई और खड़ा है,
वहां है आनंद। वहां मुझे पहुंचना है। और
मजे की बात यह है कि जहां कोई और खड़ा
है, और जहां मुझे आनंद मालूम पड़ता है, वह
भी कहीं और पहुंचना चाहता है! वह भी वहां
होने को राजी नहीं है। उसे भी वहां आनंद
नहीं है। उसे भी कहीं और आनंद है।
कामना से मुक्ति का अर्थ है, कहीं हो या न हो
आनंद, जहां आप हैं, वहां पूरा है; जो आप हैं,
वहां पूरा है। संतृप्ति की पराकाष्ठा कामना से
मुक्ति है। इंचभर भी कहीं और जाने का मन
नहीं है, तो कामना से मुक्त हो जाएंगे।
Osho
कामना का अर्थ।ओशो

CamScanner

अगर तुमने अपने ध्यान को देह पर
लगा दिया , तो तुम शूद्र हो गए ।
तुमने अपने ध्यान को वासना-तृष्णा में
लगा दिया , लोभ में लगा दिया , तो तुम
वैश्य हो जाओगे । तुमने अगर अपने
ध्यान को संकल्प पर लगा दिया , तो
क्षत्रिय हो जाओगे । तुमने अपने ध्यान को अगर
समर्पण में डुबा दिया , तो तुम ब्राह्मण
हो जाओगे । ध्यान कुंजी है ।
कुछ भी बनो , ध्यान कुंजी है ।

CamScanner

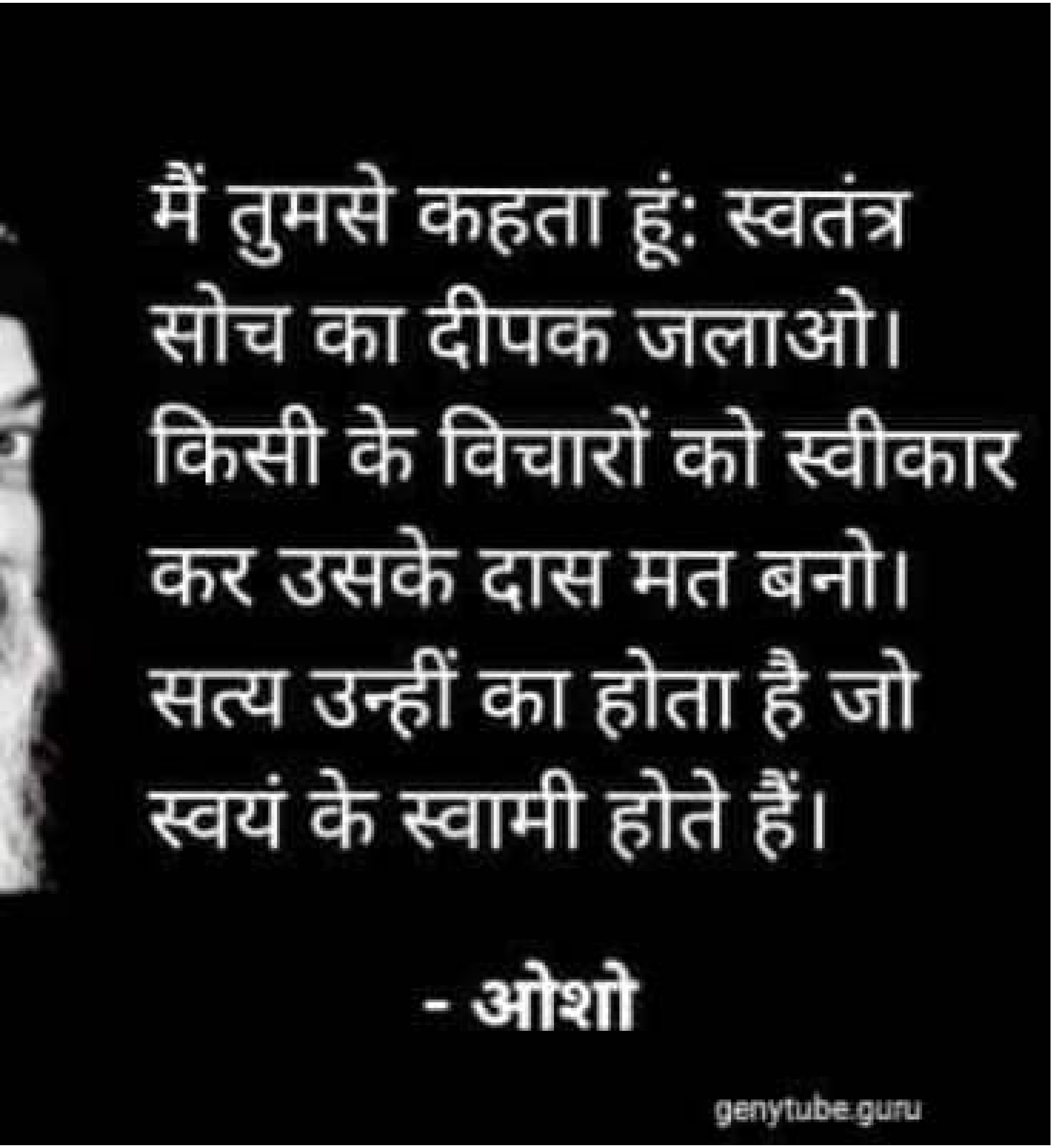
मैं तुमसे कहता हूं: स्वतंत्र सोच का दीपक जलाओ। किसी के विचारों को स्वीकार कर उसके दास मत बनो। सत्य उन्हीं का होता है जो स्वयं के स्वामी होते हैं।
- ओशो
genytube.guru

CamScanner

गुरू पर रूकना नहीं है; गुरू से गुजर जाना है। गुरू तो द्वार है; उससे तो पार हो जाना है।

CamScanner

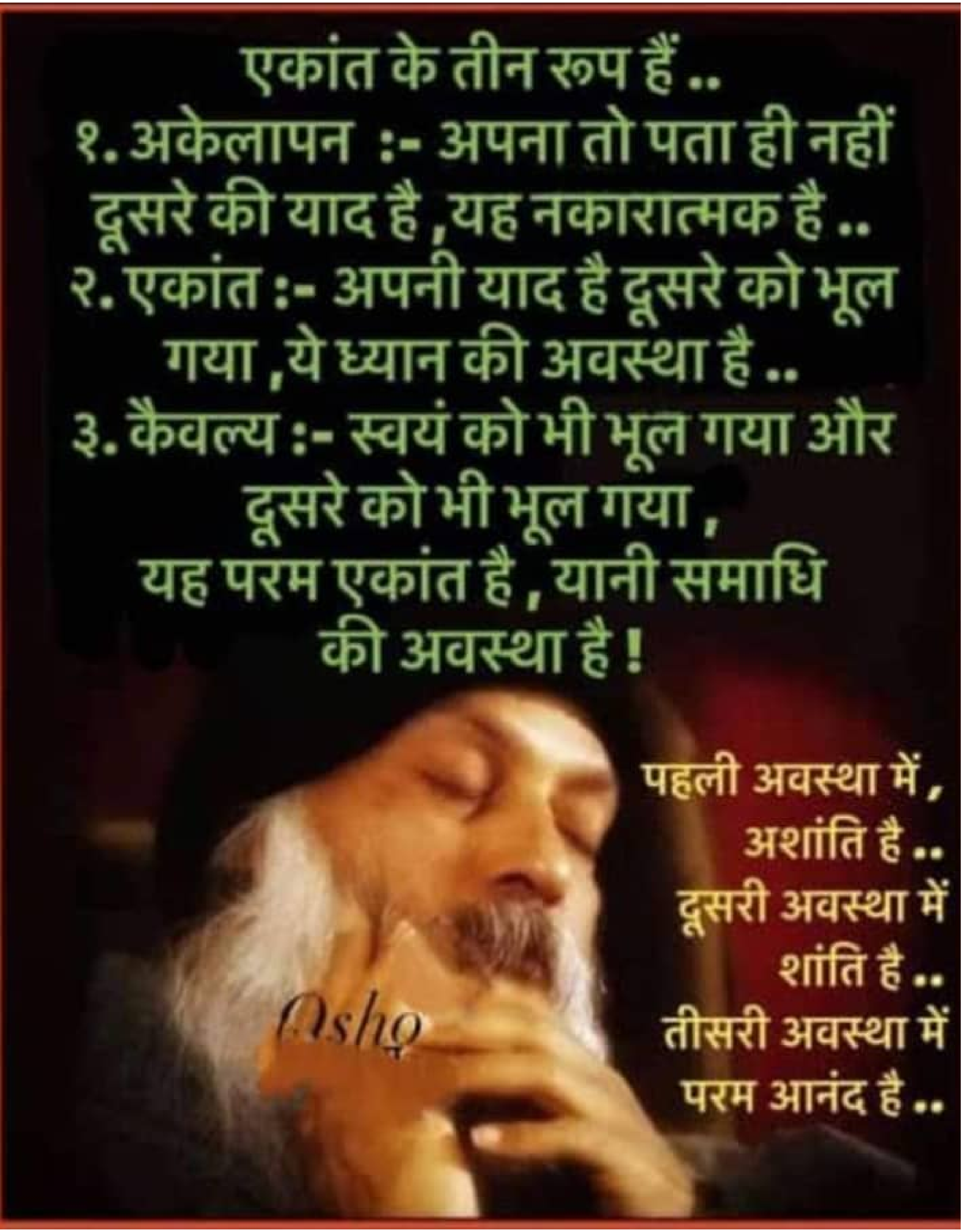
एकांत के तीन रूप हैं ..
१. अकेलापन :- अपना तो पता ही नहीं
दूसरे की याद है ,यह नकारात्मक है ..
२. एकांत :- अपनी याद है दूसरे को भूल
गया ,ये ध्यान की अवस्था है ..
३. कैवल्य :- स्वयं को भी भूल गया और
दूसरे को भी भूल गया ,
यह परम एकांत है , यानी समाधि
की अवस्था है !
पहली अवस्था में ,
अशांति है ..
दूसरी अवस्था में
शांति है ..
तीसरी अवस्था में
परम आनंद है ..
Osho

CamScanner

तुम जहर पी कर मरे, कि तुम पहाड़ से कूद कर मरे, कि तुम सागर में डूब कर मरे, इससे क्या फर्क पड़ता है| जब शरीर से आत्मा अलग होगी, तो वह घटना एक ही होनेवाली है| जब तुम मिट जाओगे तो न मसजिद रहेंगे, न मंदिर रहेंगे, न राम रहेंगे, न कृष्ण, न बुद्ध| शून्य ही रह जायेगा| और उस शून्य का कोई भी नाम नहीं है|~ओशो

CamScanner

गुरु, परमात्मा थोड़े ही दे सकता है तुम्हें।
परमात्मा तो तुम्हें मिला ही हुआ है।
गुरु केवल तुम्हें जगा सकता है,
ताकि तुम वही देख लो,
जो कि तुम्हारे भीतर छिपा है।
और बड़े मजे की बात है कि
गुरु तो एक बहाना है।
गुरु के बहाने तुम झुकना
सीख जाते हो।
पिव पिव लागी प्यास ओशो

CamScanner

CamScanner

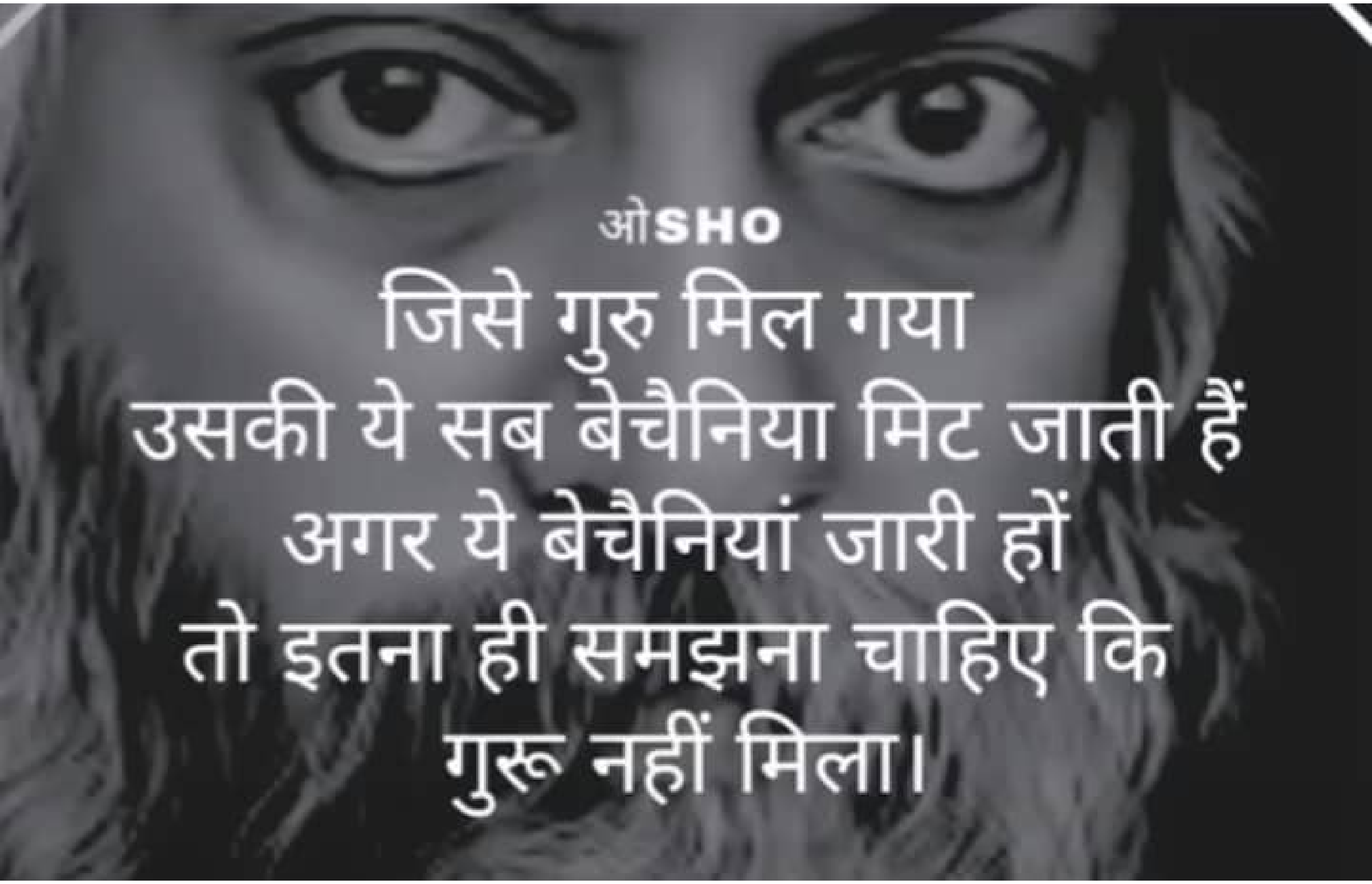
ओSHO
जिसे गुरु मिल गया
उसकी ये सब बेचैनिया मिट जाती हैं
अगर ये बेचैनियां जारी हों
तो इतना ही समझना चाहिए कि
गुरू नहीं मिला।

CamScanner

CamScanner

इसलिए तो यह मुल्क इतना पापी हुआ है।
क्योंकि इस मुल्क को पुण्य की तरकीब
हाथ में लग गयी। आज भारत जैसा पापी
मुल्क खोजना कठिन है। और उसका
कारण यह है कि गंगा यहां बहती है।
गए, स्नान कर के आ गए। पाप किया,
मंदिर में जा कर प्रसाद चढ़ा आए।
पाप किया, हनुमान जी के आगे
एक नारियल फोड़ दिया।

CamScanner

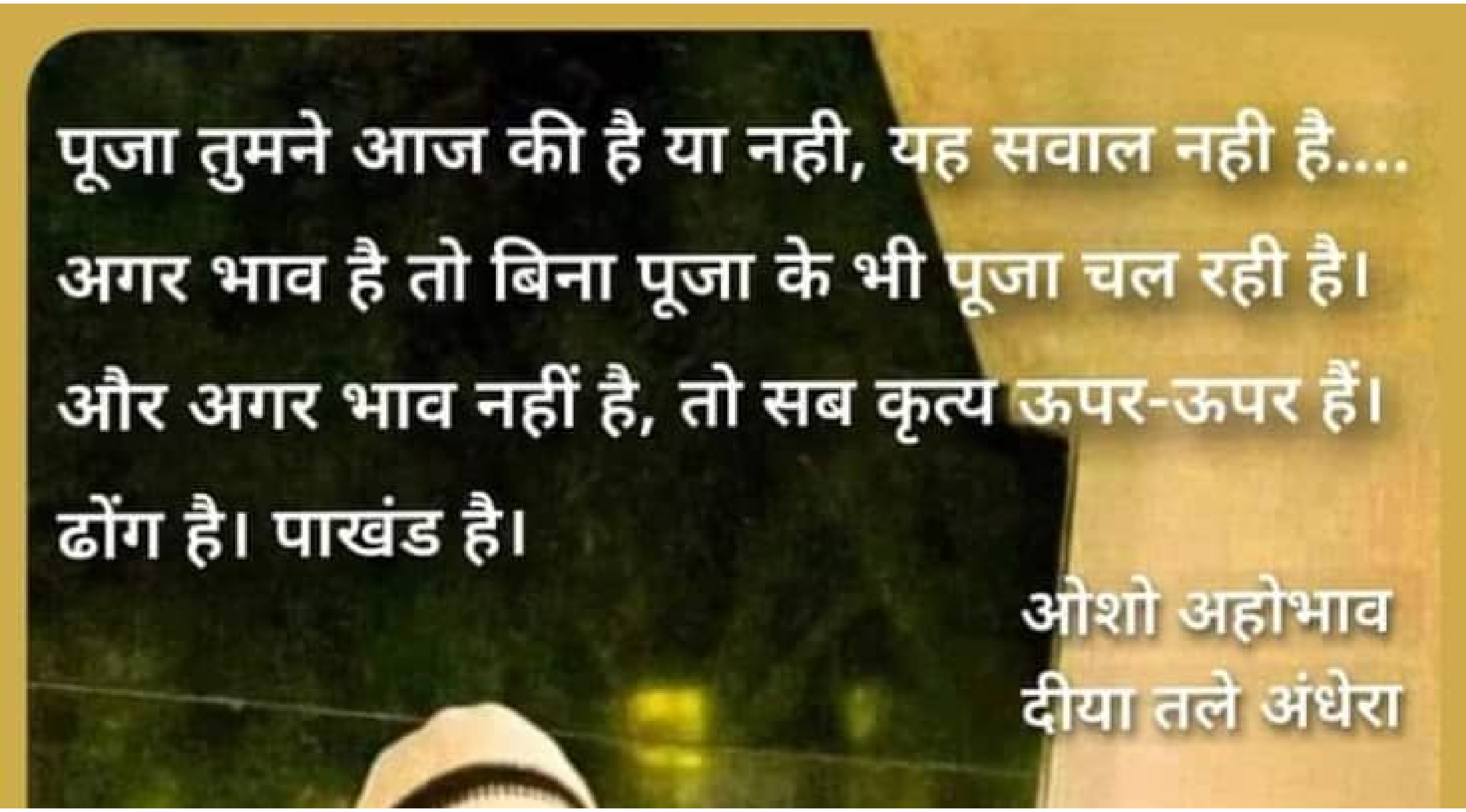
पूजा तुमने आज की है या नही, यह सवाल नही है....
अगर भाव है तो बिना पूजा के भी पूजा चल रही है।
और अगर भाव नहीं है, तो सब कृत्य ऊपर-ऊपर हैं।
ढोंग है। पाखंड है।
ओशो अहोभाव
दीया तले अंधेरा

CamScanner

20h ·

🕺इस नियम को समझ लेना💃
****

हमें खयाल में नहीं है, हमारे चारों तरफ विचार का एक विराट जगत है, उसमें आत्माएं भी हैं, उसमें विचारों के पुंज भी हैं। उनको हम किन्हीं क्षणों में पकड़ लेते हैं और आविष्ट हो जाते हैं। और उस आवेश में फिर हम जो करते हैं, वह हमारा किया हुआ नहीं है। शुभ विचार भी हम पकड़ते हैं, शुभ आत्माएं भी हमें सहारा देती हैं। अशुभ विचार भी पकड़ते हैं, अशुभ आत्माएं भी बाधा डालती हैं।

लेकिन जो अति प्रसन्न है, इस नियम को समझ लेना, वह सुरक्षित है। जो उदास है, वह असुरक्षित है। उदासी के क्षण में उपद्रवी आत्माएं, उपद्रवी विचार पकड़ लेते हैं। प्रसन्नता
और आनंद के अहोभाव में, जो श्रेष्ठ है, उससे संबंध जुड़ता है। जो सदा आनंदित रहने की कोशिश करे, उसे इस जगत की जितनी दिव्य शक्तियां है, उन सभी का सहयोग मिल जाता है। जो सदा उदास बना रहे, इस जगत में जो भी मूढ़तापूर्ण है, जो भी भारी वजनी और पथरीला है, सबका उसके साथ सत्संग हो जाता है।

जब आप उदास बैठते हैं, तब आपके चारों तरफ उदास चेतनाओं की एक जमात बैठी है, जो आपको दिखाई नहीं पड़ती है। जब आप आनंदित होते हैं, तब आपके चारों तरफ कुछ आनंदित चेतनाएं नाच रही हैं, जो आपको दिखाई नहीं पड़तीं। आप अपने आसपास एक वर्तुल निर्मित कर रहे हैं।

ध्यान रहे, साधक सदा प्रसन्न रहे, न हो परिस्थिति प्रसन्न होने की, तो भी कोई कारण खोज ले, और प्रसन्न रहे। प्रसन्नता को सूत्र बना ले।

❤️ OSHO ❤️

CamScanner

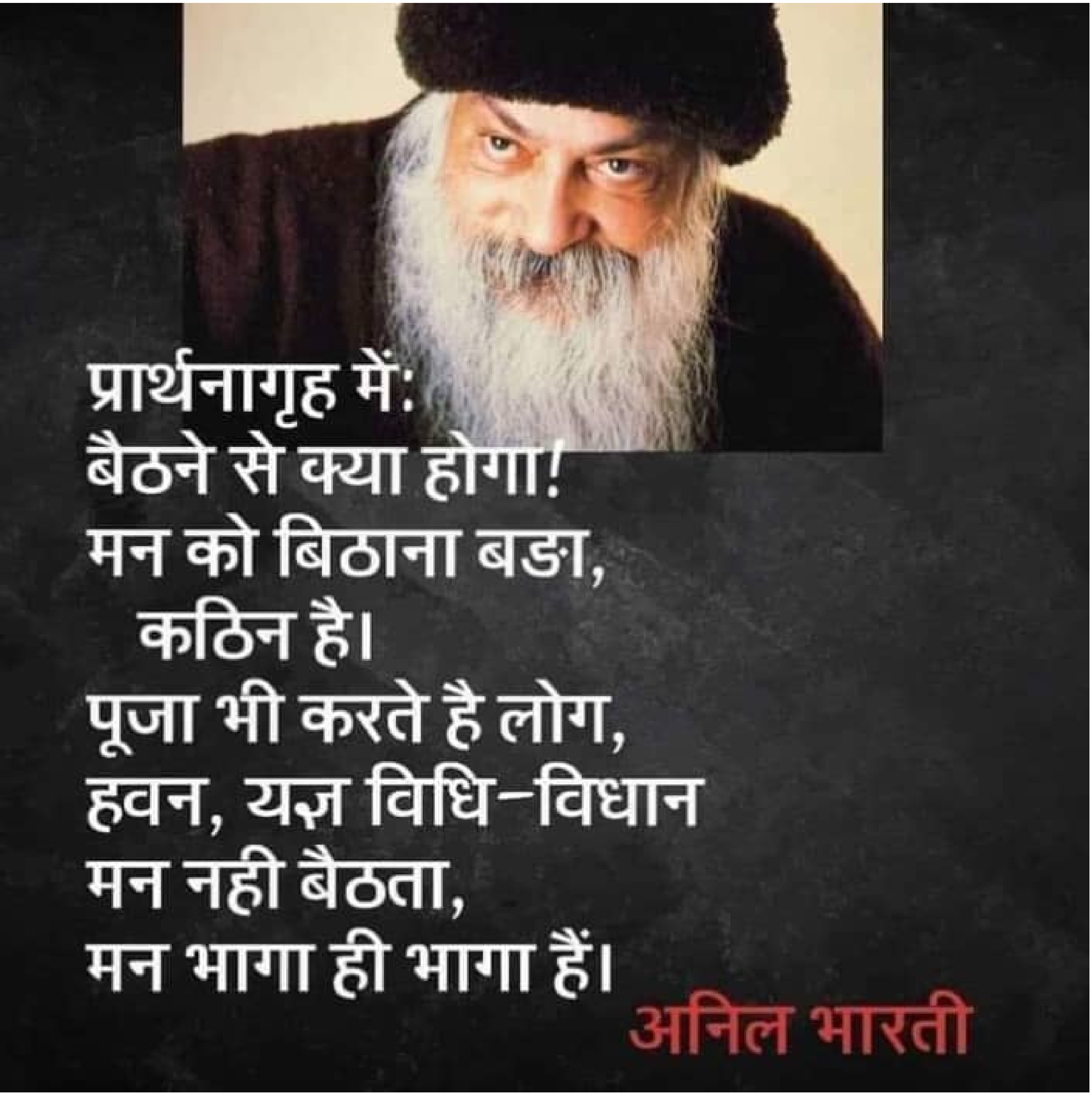

CS CamScanner

मेरा संन्यास जीवन - विरोधी नहीं है। मेरा संन्यास जीवन के साथ अनंत प्रेम है। जीवन का त्याग नहीं, मूढ़ता का त्याग। जीवन का त्याग नहीं, अज्ञान का त्याग। जीवन का त्याग नहीं, मूर्च्छा का त्याग। जीवन का त्याग नहीं, घृणा का, ईर्ष्या का, वैमनस्य का त्याग। घर - द्वार छोड़ कर नहीं भाग जाना है . . . घर - द्वार ने क्या बिगाड़ा है ? छोड़ना हो कुछ तो भीतर का अंधेरा छोड़ो, भीतर की बेहोशी छोड़ो, भीतर होश का दीया जलाओ, भीतर कमल खिलाओ . . . आनंद के, प्रेम के, उत्सव के। **ओशो** संकलन : Dr Sohan Lal Narang

CamScanner

CamScanner

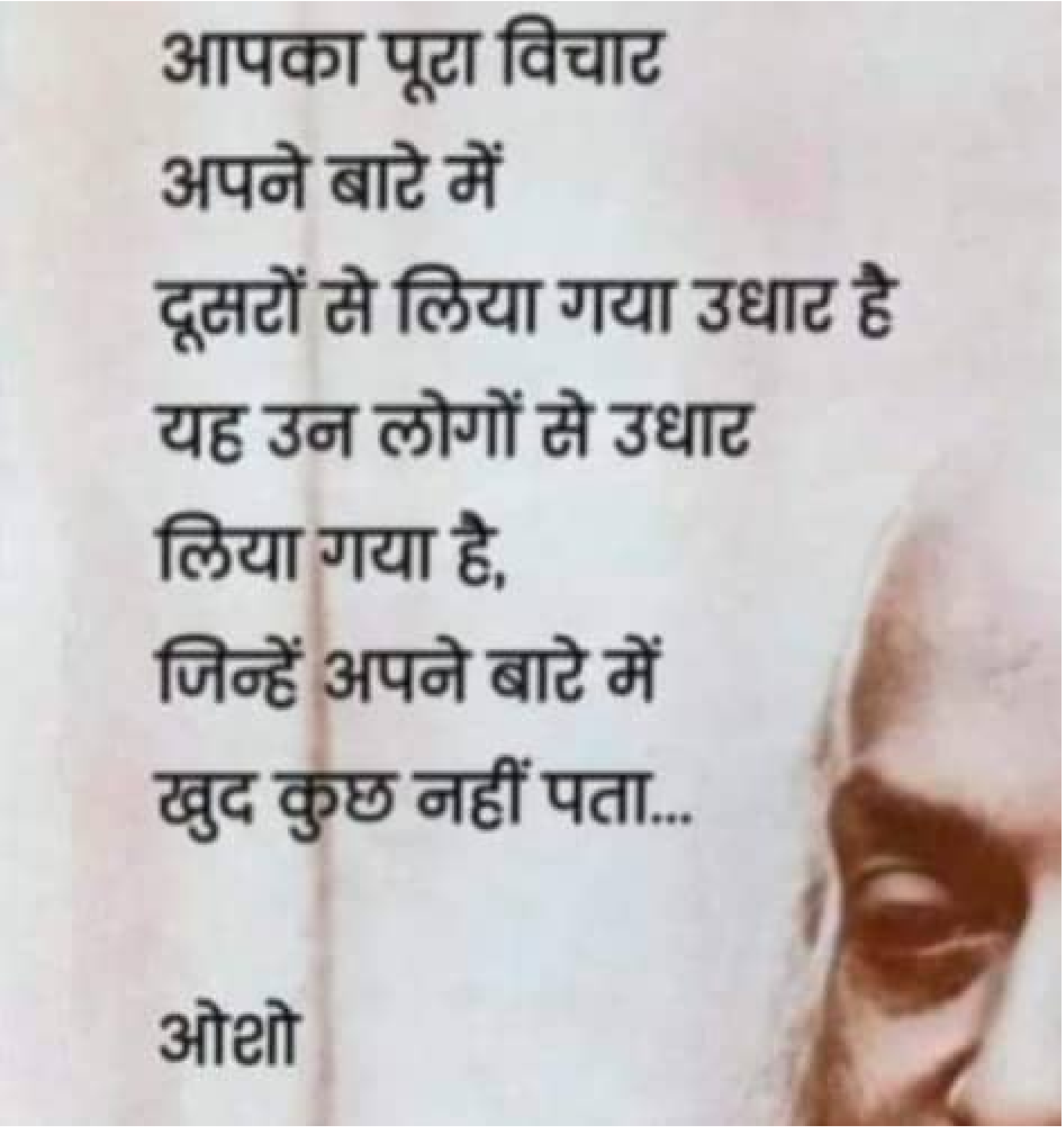

CS CamScanner

राजनीति गंदे से गंदा खेल है |
कभी - कभी जो मैं राजनीति की मजाक
उड़ाता हूं, वह सिर्फ इसलिए कि तुम सावधान
रहो | सब के मन में राजनीति छिपी है |
उसे दग्ध कर देना है, उसे जला देना है |
महत्वाकांक्षा का, राजनीति का जरा सा
बीज तुम्हारे भीतर रह जाए तो वही तुम्हें
भटकाएगा | राजनीति से जो मुक्त है,
वही निर्मल है | और जो निर्मल है,
वही परमात्मा का पात्र है |

CamScanner

मेरा
मानना ऐसा नहीं है कि दुनिया में बुरे आदमियों के कारण दुख है। मेरा मानना ऐसा है कि दुनिया में बेहोश आदमियों के कारण दुख है। बेहोश आदमी ही दुख दे सकता है। क्यों? क्योंकि जिसे होश आ जाए, उसे तो यह भी होश आ जाता है कि दो दुख' और मिलेगा दुख।
कौन अपने को दुख देना चाहता है? सिर्फ बेहोश आदमी दुख दे सकता है, क्योंकि उसे यह पता नहीं कि दुख का उत्तर फिर और बड़ा दुख होकर आता है।
Osho.
Narmada.
ओशो.
"एस धम्मो सनंतनो"
प्रवचन-093
(जीने में जीवन)
ओशो.

CamScanner

सुना है मैंने कि एक आदमी एक गाय को बांधकर अपने घर लौट रहा है। फकीर हसन उसे रास्ते में मिल गया और हसन ने पूछा कि मेरे मित्र, मैं एक बात जानना चाहता हूं। तुम गाय से बंधे हो कि गाय तुमसे बंधी है उस आदमी ने कहा, तू पागल मालूम होता है!

यह भी कोई पूछने की बात है? जाहिर है कि गाय मुझसे बंधी है; मैं गाय को बांधकर ले जा रहा हूं।

तो फकीर हसन ने कहा, एक काम कर। अगर गाय तुझसे बंधी है, तो तू छोड़कर बता। तू छोड़ दे। फिर अगर गाय तेरे पीछे चले, तो हम समझें।

उस आदमी ने कहा, अगर मैं छोड़ दूंगा, गाय भाग खड़ी होगी, मुझे उसके पीछे भागना पड़ेगा।

तो फकीर हसन ने कहा, फिर तू ठीक से समझ ले।

यह हाथ में जो रस्सी लिए है, इस धोखे में मत पड़ना। अगर गाय भागे, तो तू उसके पीछे भागेगा, गाय तेरे पीछे नहीं भागेगी।

अगर तू गाय को छोड़ दे, तो गाय तेरा पता लगाती हुई नहीं आने वाली है, तू ही उसका पता लगाता हुआ जाएगा। तो तू इस भ्रम में है कि तू गाय को बांधे हुए है। जिसे हम बांधते हैं, उससे हम बंध भी जाते हैं, जीवन का यह एक अनिवार्य नियम है। इसलिए जो मुक्त होना चाहता है, वह किसी को बांधेगा नहीं। बांधा कि आप फिर मुक्त नहीं हो सकते।

अगर आपकी वासना को आपने दबा लिया और अच्छा विचार आप ऊपर ले आए, तो भी वासना नीचे कुलबुलाती रहेगी, भभकती रहेगी; लपटें उसकी उठती रहेंगी। आपको रोज–रोज दबाना पड़ेगा। जिसे एक दिन दबाया है, उसे रोज–रोज दबाना पड़ेगा। और दबाने से कोई वासना मिटती नहीं है, भभक भी सकती है और तेजी से, क्योंकि दमन से रस भी पैदा होता है।

और जिसे हम दबाते हैं, उसमें आकर्षण भी बढ़ जाता है। और जिसे हम दबाते हैं, उसकी शक्ति भी इकट्ठी होती चली जाती है।

फिर यह संघर्ष सतत है।

गीता-दर्शन, भाग-4

CamScanner

इहाँ संभु अस मन अनुमाना। दच्छसुता कहुँ नहिं कल्याना॥
मोरेहु कहें न संसय जाहीं। बिधि बिपरीत भलाई नाहीं॥3॥

इधर शिवजी ने मन में अनुमान लगा लिया कि दक्षकन्या सती अविवेक के कारण अपने कल्याण का त्याग करने वाली हैं. जब मेरे समझाने से भी मन का संदेह दूर नहीं होता. ऐसा मालूम होता है कि अब सती का कुशल नहीं है.

होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढ़ावै साखा॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा। गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा॥4॥

जो कुछ राम ने रच रखा है, वही होगा. तर्क करके कौन व्यर्थ की बात बढ़ावे? मन में ऐसा सोचकर शिवजी भगवान् श्री हरि का नाम जपने लगे और सतीजी वहाँ गईं जहाँ सुख के धाम प्रभु श्री रामचंद्रजी थे.

दोहा-
पुनि पुनि हृदयँ बिचारु करि धरि सीता कर रूप।
आगें होइ चलि पंथ तेहिं जेहिं आवत नरभूप॥52॥

भावार्थ- सती ने बार-बार मन में विचारा फिर सीताजी का ही रूप धारण कर लिया और उस मार्ग की ओर आगे-आगे बढ़ने लगीं जिससे उनके मत अनुसार मनुष्यों के राजा रामचंद्रजी चले आ रहे थे.

सती मतिभ्रम में हैं. देवाधिदेव जिन्हें सच्चिदानंद कह रहे हैं उन्हें सती मनुष्यों के राजा से अधिक समझने को तैयार नहीं है. यह वृतांत एक उदाहरण है कि अविवेक बुद्धि पर इतना हावी हो जाता है कि स्वयं

CamScanner

मस्त होने का अर्थ है...
मन को खोना।
मस्त होने का अर्थ है
..नियंत्रण खोना।
मस्त होने का अर्थ है..
अपने अहंकार से थोड़े नीचे उतर आना,
सिंहासन छोड़ना
मस्त होने का अर्थ है...
फिर से हो गए
बालक जैसे निर्दोष...
फिर से भर गए
जीवन के आश्चर्य से..
भोलेपन से ,निर्दोष हो गए बालक से...
तृप्ति या अतृप्ति
अन्तरदशाएं हैं,
बाहर की वस्तुओं से उनका कोई भी सम्बन्ध नहीं है।
मैंने तो सर को झुकाया था सजदे में
सामने तुम थे या खुदा ,कौन जाने .. 😍💕😘💃

CamScanner

कहानी को कहा है और आने वाले जमाने में भी हजारों-हजारों ऋषि उस कहानी को कहेंगे। उसमें बड़ी पवित्रता समाविष्ट हो गई है। बड़ी छोटी सी कहानी, बड़ी सरल सी ग्रामीण कहानी है।

रामकृष्ण ने कहा, एक गांव में एक अंधा था और उस अंधे को दूध से बहुत प्रेम था। उसके मित्र जब भी आते, उसे भेंट में दूध ले आते थे। उसने एक दफा अपने मित्रों को पूछा, इस दूध को मैं इतना प्रेम करता हूं, इतना प्रेम करता हूं कि मैं जानना चाहता हूं कि यह दूध कैसा है? क्या है? मित्रों ने कहा, बड़ा मुश्किल है, कैसे बताएं! फिर भी उस अंधे ने कहा, कुछ तो समझाएं, किसी तरह समझाएं कि यह दूध क्या है? कैसा है?

उसके एक मित्र ने कहा कि दूध, बगुला होता है, बगुले के पंख जैसा सफेद है। अंधा बोला, मुझसे मजाक न करें। बगुले को मैं जानता नहीं। उसके पंख की सफेदी को भी नहीं जानता। मैं कैसे समझूंगा कि दूध कैसा है? कुछ और सरल रास्ता अख्तियार करें तो शायद मैं समझ जाऊं। तो उसके मित्र ने कहा, कैसे समझाएं! तो एक मित्र ने कहा, बगुला जो होता है, वह घास काटने के हंसिए की तरह टेढ़ी उसकी गर्दन होती है। अंधा बोला, आप पहेलियां उलझा रहे हैं। मैंने कभी देखा नहीं हंसिया, मुझे पता नहीं वह कैसा टेढ़ा होता है। तीसरे मित्र ने कहा, इतनी दूर क्यों जाते हो? उसने अपने हाथ को मोड़ कर और उस अंधे को कहा, इस हाथ पर हाथ फेरो, इससे पता चल जाएगा कि हंसिया कैसा होता है। उसने उसके तिरछे हाथ पर हाथ फेरा। घूमा हुआ, मुड़ा हुआ हाथ अनुभव हुआ। वह अंधा नाचने लगा, वह बोला, मैं समझ गया, दूध मुड़े हुए हाथ की तरह होता है।

और रामकृष्ण ने कहा कि सत्य के संबंध में, जो नहीं जानते हैं, उनको बताई हुई सारी बातें ऐसी ही हो जाती हैं।

ओशो; अमृत की दिशा

CamScanner

हाय तौबा मत करो
यहाँ से जाना हैं

CS CamScanner

श्रीहरिः

एक महिला थीं जिनकी बाबा बहुत प्रशंसा किया करते थे। वे माँस खाती थीं। इस पर बाबा कहते थे – यह गड़बड़ है! यदि वे माँस छोड़ दें, तो उनका स्वभाव ऐसा है कि वे मुझे खरीद सकती हैं।

इस पर किसी ने प्रश्न किया - माँस - मछली तो बुरी चीज है, पर लहसुन - प्याज में क्या बुराई है ? बाबा - देखो ! माँस- मछली और अण्डे की अपेक्षा लहसुन - प्याज ठीक है।पर यह गरम चीज है, इससे उत्तेजना आती है।

पुनर्जन्म न लेने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य में काम - भाव की समाप्ति हो जाय ! क्योंकि जब तक मनुष्य में काम वासना रहेगी तब तक उसे पुनर्जन्म लेना ही पड़ेगा और लहसुन - प्याज खाने से मनुष्य की यह भावना समाप्त नहीं हो पाती।

बस, यही कारण है कि लहसुन - प्याज को बुरा बताया गया है और कोई कारण नहीं। खासकर अण्डा खाने वाला व्यक्ति तो कभी भी ब्रह्मचर्य का पालन कर ही नहीं सकता ; चाहे लाख कोशिश करे, देर - सबेर उसे गिरना ही है !

CamScanner

1:27 pm 0 KB/s VoLTE 4G 74%

तो बुद्ध उन्हें ढूढने के लिए बोधगया से वाराणसी गए। वे लोग उन्हें सारनाथ में मिले। कथा कहती है कि बुद्ध दूसरी बार लौटकर वाराणसी कभी नहीं गए, सारनाथ कभी नहीं गए। वे सिर्फ इन शिष्यों के लिए आए थे।

जब बुद्ध सारनाथ पहुंचे तो संध्या का समय था। बुद्ध के पांचों शिष्य एक पहाड़ी पर बैठे थे। जब उन्होंने बुद्ध को अपनी ओर आते देखा तो उन्होंने कहा कि यह वही गौतम सिद्धार्थ है जो मार्ग छोड़कर पतित हो गया है; 'हम उसे कोई आदर नहीं देंगे, हम उसके साथ मामूली शिष्टाचार भी नहीं निभाएंगे। और ऐसा कहकर पांचों ने आंखें बंद कर लीं।

लेकिन जैसे-जैसे बुद्ध उनके निकट पहुंचे, अनदेखे ही उन पांचों के मन बदलने लगे। वे बेचैन हो उठे। और जब बुद्ध बिलकुल उनके पास आ गए तो अचानक उन पांचों की आंखें खुल गईं और वे सीधे बुद्ध के चरणों पर गिर पड़े। बुद्ध ने पूछा कि तुम लोग ऐसा क्यों करते हो? तुमने तो यह तय किया था कि तुम मुझे सम्मान नहीं दोगे। फिर यह क्या?

उन्होंने कहा कि हम कुछ कर नहीं रहे हैं, सब अपने आप हो रहा है। आपको कुछ मिला है, आप एक चुंबकीय शक्ति बन गए हैं और हम आपकी तरफ खिंचे जा रहे हैं। क्या आप हम पर सम्मोहन कर रहे हैं? बुद्ध ने कहा, नहीं, मैं कुछ नहीं कर रहा हूं। लेकिन मुझे कुछ हुआ, कुछ मिला। मेरी समस्त ऊर्जा अपने स्रोत से जा मिली है। इसलिए मैं जहां जाता हूं वहा एक चुंबकीय शक्ति अनुभव होती है।

इसी कारण से सदियों से बुद्ध या महावीर के विरोधी कहते आए हैं कि वे लोग अच्छे नहीं थे, वे लोगों को सम्मोहित कर लेते थे। असल में कोई सम्मोहित नहीं करता है, यह दूसरी बात है कि लोग सम्मोहित हो जाते है। जब ऊर्जा मूल स्त्रोत से मिलती है तो वह एक चुंबकीय केंद्र पैदा करती है। यह विधि तुम्हारे भीतर वही चुंबकीय केंद्र पैदा करने की विधि है।

ओशो, तंत्र-सूत्र : 1

CamScanner

CS CamScanner

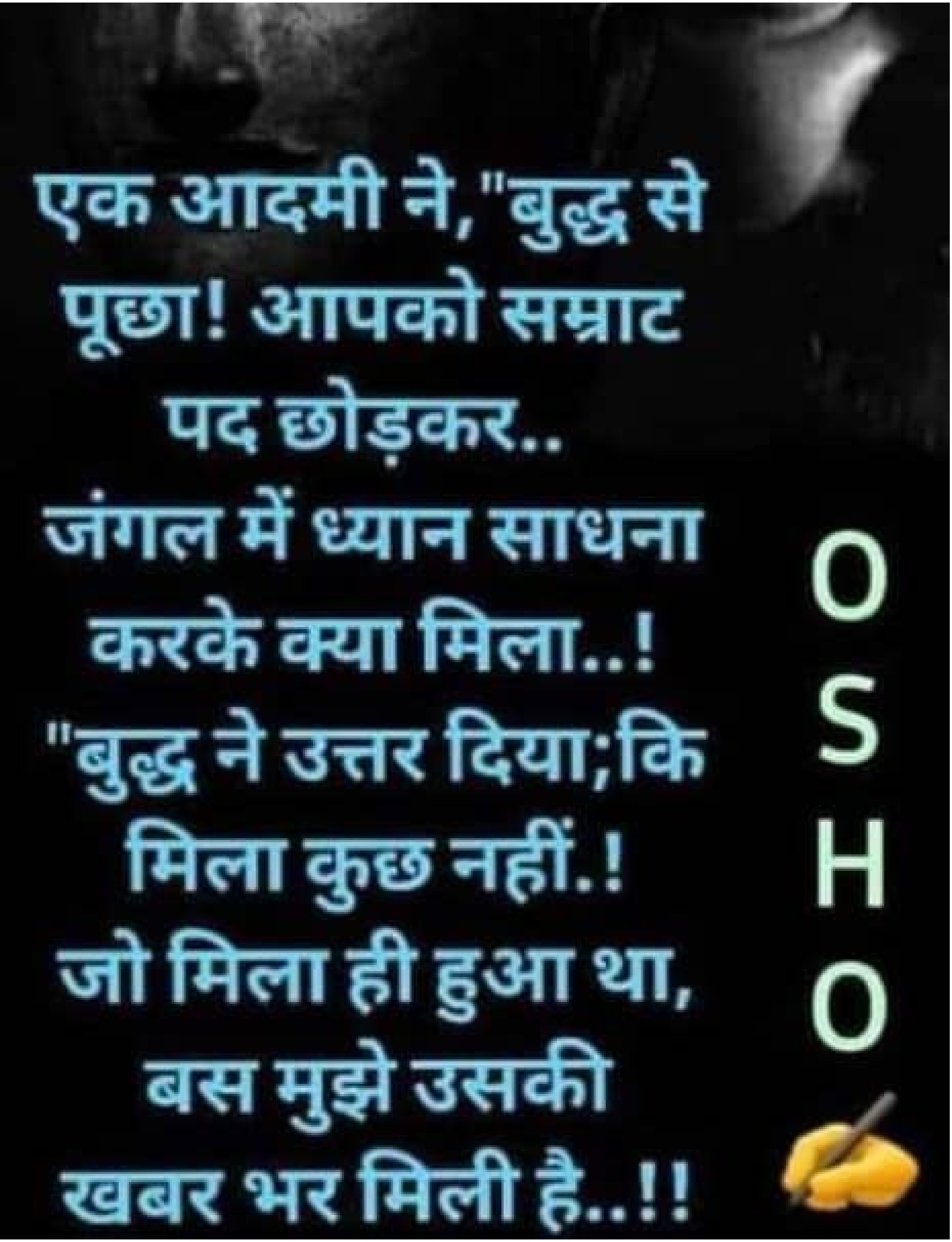
एक आदमी ने,"बुद्ध से
पूछा! आपको सम्राट
पद छोड़कर..
जंगल में ध्यान साधना
करके क्या मिला..!
"बुद्ध ने उत्तर दिया;कि
मिला कुछ नहीं.!
जो मिला ही हुआ था,
बस मुझे उसकी
खबर भर मिली है..!!
OSHO

CamScanner

नहीं थे, और बहेलिया उनको पकड़ लेता था।
उसने मुझसे कहा कि देखें, ये तोते अपने हाथ से चिल्ला रहे हैं, अपने हाथ से बंधे हुए हैं और छूटने की साहस और छूटने की सामथ्र्य उनमें खो गई।
उस बहेलिए ने जो बात मुझसे कही कि तोते खुद अपने हाथ से फंस जाते हैं। असल में तो जो फंसने को राजी नहीं है उसे कोई फांस नहीं सकता और जो परतंत्र नहीं होना चाहता इस जमीन पर कोई उसे परतंत्र करने में समर्थ नहीं हैं। कहीं न कहीं हम खुद परतंत्र होना चाहते हैं, इसलिए परतंत्रता हमें पकड़ लेती है। और फिर परतंत्रता दुख लाती है, पीड़ा लाती है। क्योंकि आत्मा स्वभावतः स्वतंत्र है। और उसकी स्वतंत्रता में ही उसका आनंद है। और उसकी स्वतंत्रता में ही उसका आलोक है। और उसकी स्वतंत्रता में ही उसका संगीत है। लेकिन कुछ कारण हैं जिनकी वजह से हम खुद परतंत्र होने को राजी हो जाते है और फिर शायद परतंत्रता के इतने आदि हो जाते हैं कि स्वतंत्र होने का साहस, सामथ्र्य और विचार भी खो देते हैं।
ऐसी हालत करीब-करीब अधिकतम मनुष्यों की है। और जब तक हम इस बात को ठीक से न समझ लें कि हम किसी बहुत मानसिक जाल में परतंत्र हैं और उस जाल को तोड़ने में समर्थ न हो जाएं तब तक हमारी आंखें उस सत्य के प्रति नहीं उठ सकेंगी, उस स्वतंत्रता के प्रति नहीं उठ सकेंगी, उस आलोक के प्रति नहीं उठ सकेंगी जो हमारे जीवन से अंधकार को मिटा दे, जो हमारे जीवन से अज्ञान को मिटा दे, जो हमारे जीवन से दुख का विनाश बन जाए, दुख की समाप्ति बन जाए।
मैं उन तोतों पर उस दोपहर में हंसा था कि वे कितने नासमझ हैं, लेकिन आज मैं अपनी भूल को स्वीकार करता हूं। हंसा था इसलिए कि उस समय तक मैं मनुष्य के मन को ठीक से नहीं जानता था। और जब मैंने मनुष्य के मन को ठीक से जाना, तो मैंने समझा कि तोते जो नासमझी करते हैं वह तो आदमी भी करते हैं, इसलिए तोतों पर हंसने का कोई कारण नहीं रह गया।

CamScanner

हम जिसके लिए लड़ते है,
अंततः वही हम हो जाते हैं।
लड़ो सुंदर के लिए
और तुम सुंदर हो जाओगे।
लड़ो सत्य के लिए
और तुम सत्य हो जाओगे।
लड़ो श्रेष्ठ के लिए
तुम श्रेष्ठ हो जाओगे।

ओशो

CS CamScanner

अमृत वही था
जो तुम्हारे पास था
तुम श्रेष्ठ थे
और अनुपलब्ध।

CamScanner

-----;;;,,,,,मित्रों,,,,,;;;;----

मेरा परमात्मा एक काब्य हैं, एक संगीत हैं
एक प्रेम हैं, एक खुशबू हैं, एक इत्र हैं,

तुम्हें अगर मेरे परमात्मा से परिचित होना हैं तो,
प्रकृति के करीब आना होगा, ।
प्रकृति से दूर नहीं,
क्योंकि वह प्रकृति मे ही छिपे रहते हैं,,

प्रकृति ही उनका घूंघट हैं, ।
बस प्रकृति को समझ लो ,घूंघट दिख जायेगा,,।।
और फिर उस घूंघट का चान्द खुद ही आपके,
 सामने आ जायेगा ~~~~~~~!

CS CamScanner

धैर्य का अर्थ यह है कि तुम अपेक्षा मत करना। धैर्य का अर्थ यह है, कब होगा यह मत पूछना। जब होगा, उसकी मर्जी। जब हो जाएगा तब स्वीकार है। अनंत काल व्यतीत हो जाएगा तो भी तुम यह मत कहना कि मैं इतनी देर से प्रतीक्षा कर रहा हूं, अभी तक नहीं हुआ!

CamScanner

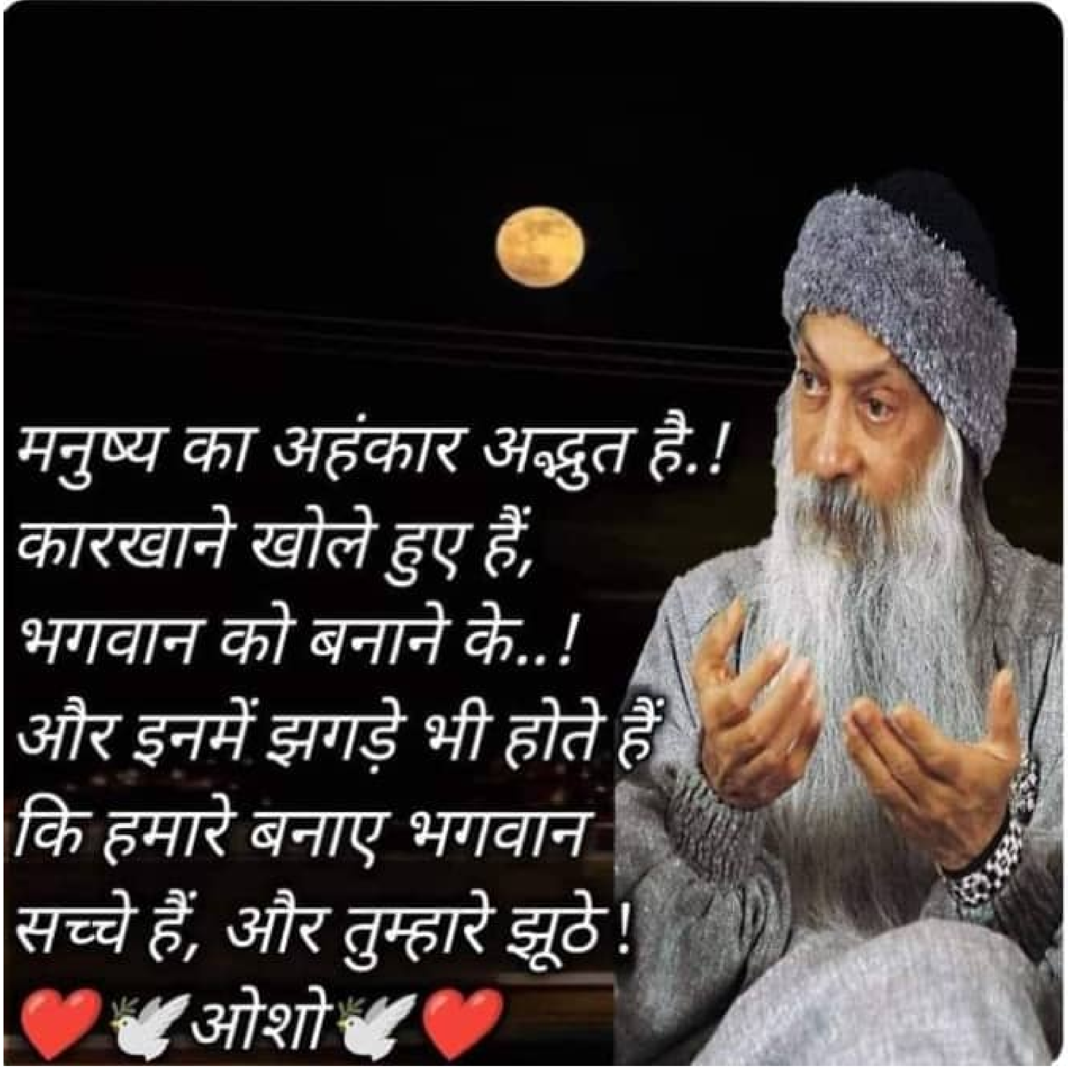
मनुष्य का अहंकार अद्भुत है.!
कारखाने खोले हुए हैं,
भगवान को बनाने के..!
और इनमें झगड़े भी होते हैं
कि हमारे बनाए भगवान
सच्चे हैं, और तुम्हारे झूठे !
❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

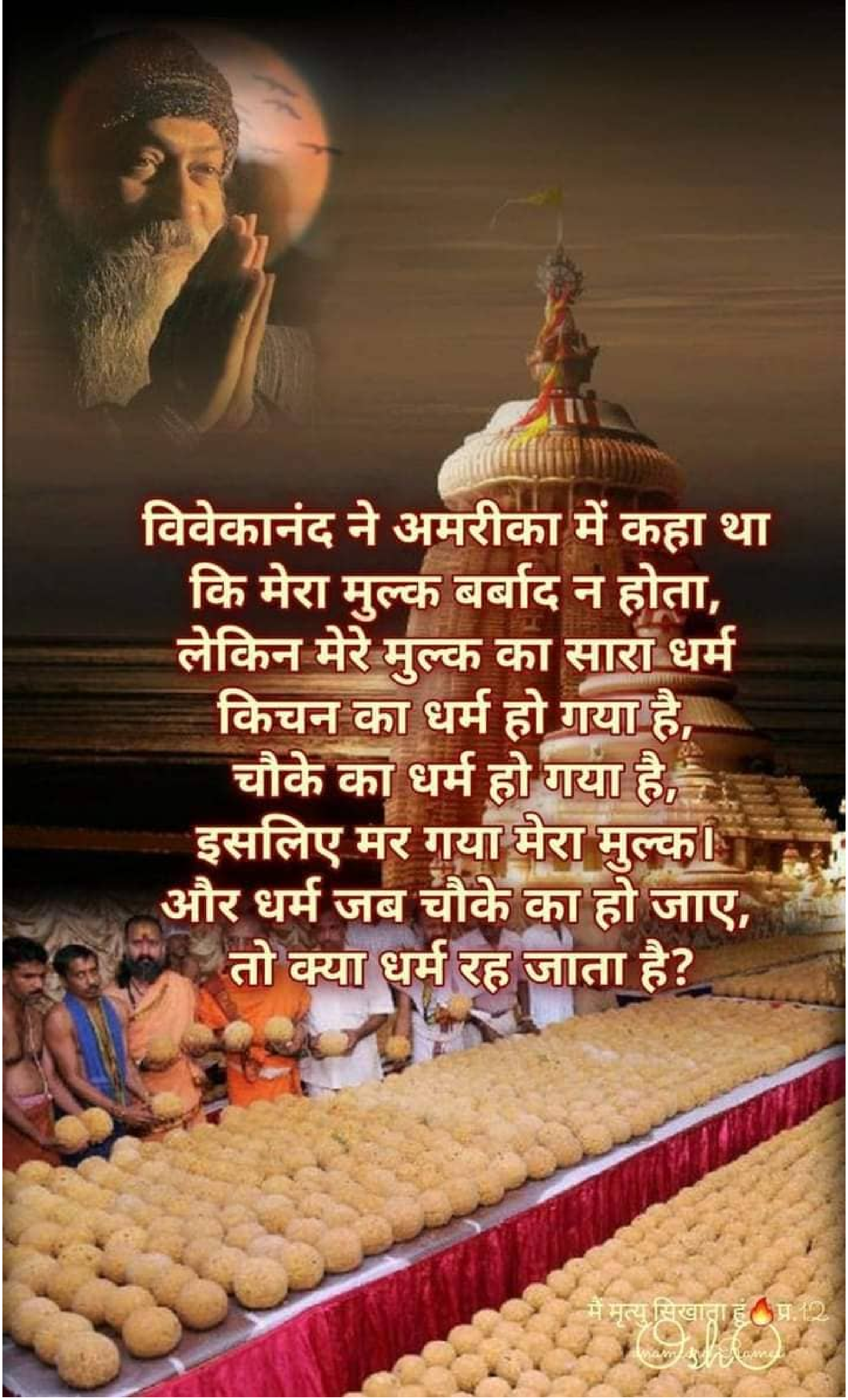
विवेकानंद ने अमरीका में कहा था
कि मेरा मुल्क बर्बाद न होता,
लेकिन मेरे मुल्क का सारा धर्म
किचन का धर्म हो गया है,
चौके का धर्म हो गया है,
इसलिए मर गया मेरा मुल्क।
और धर्म जब चौके का हो जाए,
तो क्या धर्म रह जाता है?
मैं मृत्यु सिखाता हूं प्र.12
Osho

CamScanner

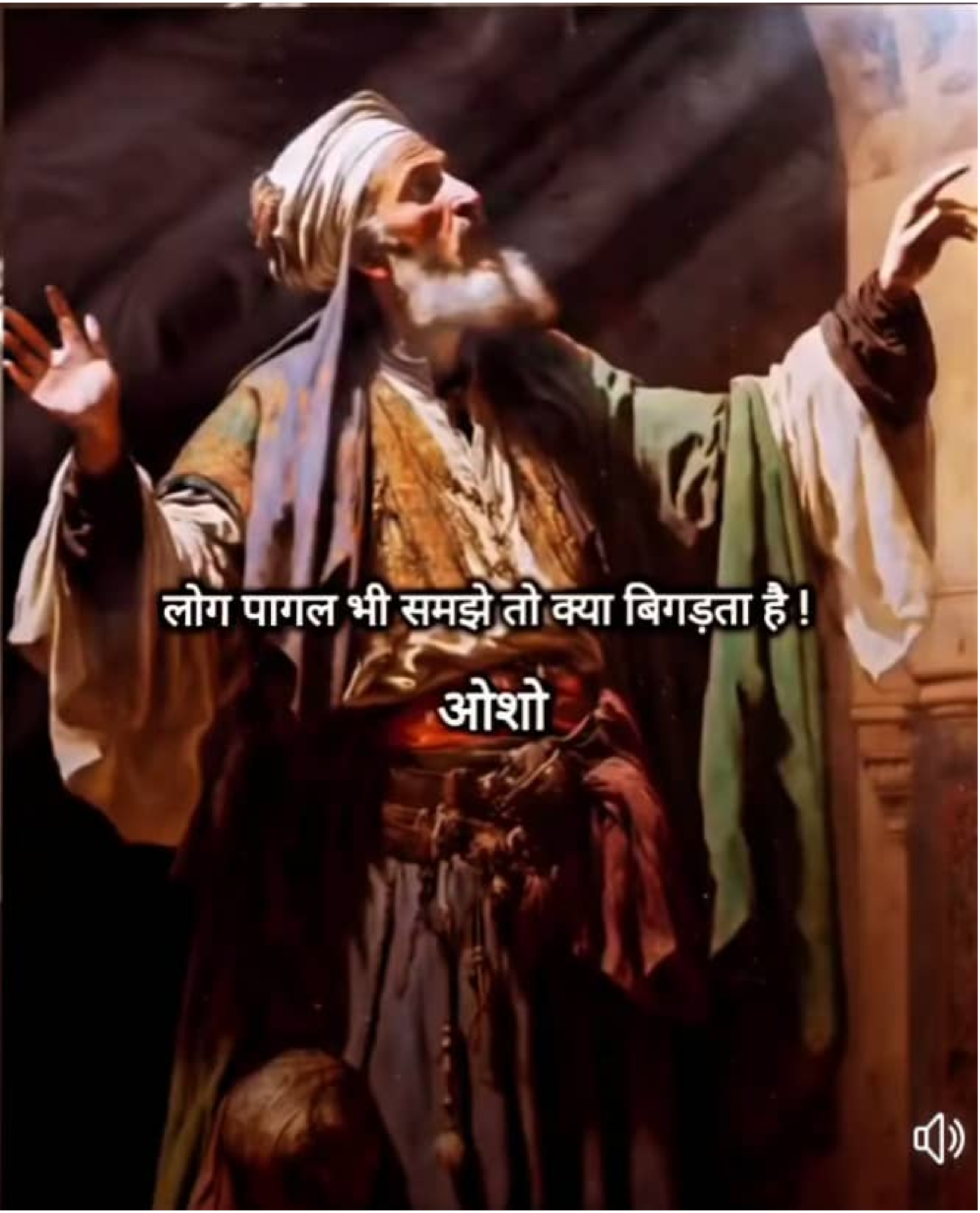

CamScanner

और कहा कि आप मुझे उपदेश दें। इस तरह अष्टावक्र—गीता का जन्म हुआ। और अष्टावक्र—गीता भारत के ग्रंथों में अद्वितीय है। श्रीमद्भगवद्गीता से भी एक दर्जा ऊपर! इसलिए श्रीमद्भगवद्गीता को मैंने गीता कहा है और अष्टावक्र—गीता को महागीता कहा है। उसका एक—एक वचन हीरों से भी तौला जाए, हजारों हीरों से भी तौला जाए, तो भी पलड़ा उस वचन का ही भारी रहेगा, हीरों का भारी नहीं हो सकता। सारे सूत्र ध्यान के हैं और समाधि के हैं।

तो तुम समझ लेना, जब तक तुम्हें शरीर ही दिखाई पड़ता है— अपना और दूसरों का—तब तक तुम चमार ही हो। मेरे हिसाब से सभी शूद्र पैदा होते हैं, कभी—कभी कोई ब्राह्मण हो पाता है— कोई बुद्ध, कोई कृष्ण, कोई महावीर, कोई रैदास, कोई फरीद, कोई नानक। कभी—कभी कोई ब्राह्मण हो पाता है; नहीं तो लोग शूद्र ही पैदा होते हैं, शूद्र ही मर जाते हैं। तो यह सूत्र तुम्हारे संबंध में भी है—तुम्हारे ही संबंध में है!
ओशो

CamScanner

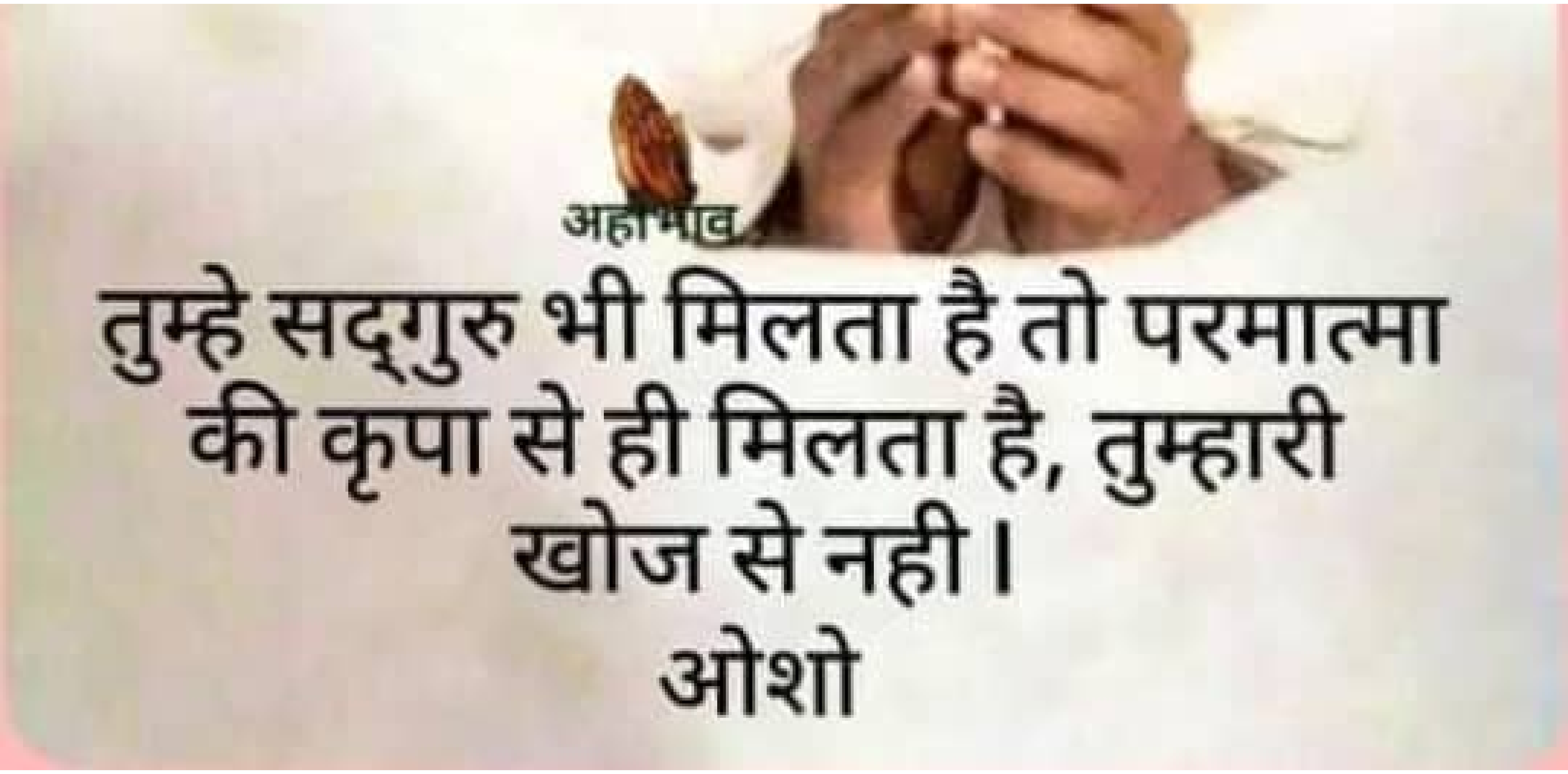

CamScanner

आंखे उधार नही मिलती और न दर्शन उधार मिलता है, मेरी आंख से मैं देख सकता हूं। मेरी आंख से तुम न देख सकोगे। मेरे लिए मैं जी सकता हूं, मेरे लिए तुम न जी सकोगे। और मेरे लिए मैं ही मर सकता हूं, तुम न मर सकोगे

एक कि जगह दूसरे के खड़े होने का कोई भी उपाय नही है। मगर वही हम धोखा देते है।

अहोभाव

ओशो

जिन सूत्र

CS CamScanner

CamScanner

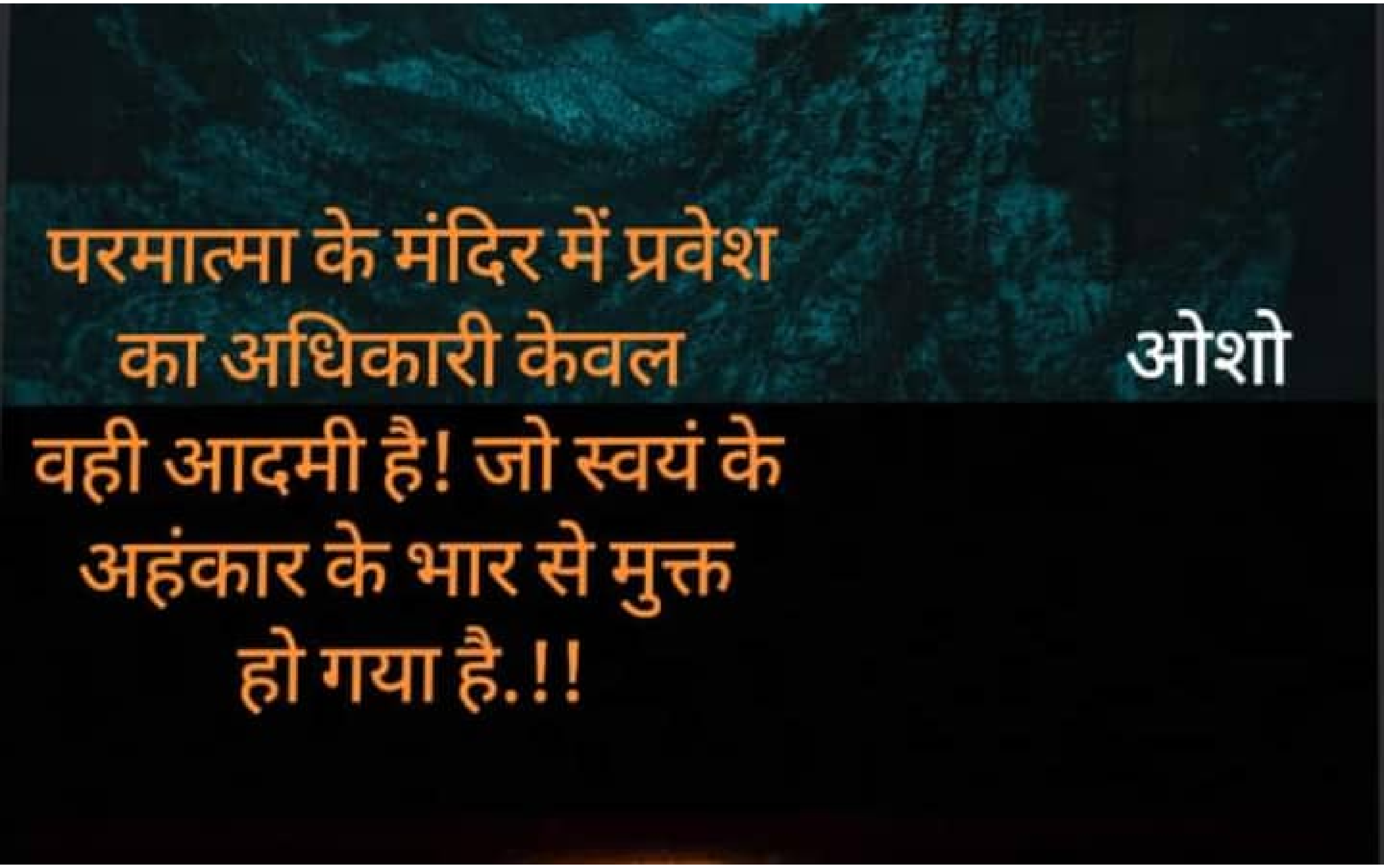
परमात्मा के मंदिर में प्रवेश
का अधिकारी केवल
वही आदमी है! जो स्वयं के
अहंकार के भार से मुक्त
हो गया है.!!
ओशो

CamScanner

कुछ नया सोचने क़े..
लिए तुम्हे सभी..!
धारणाओं से मुक्त होना
जरूरी है...!
इसी क्षण सभी धारणाओं को
छोड़ दो...!
खोखले हो जाओ.. खाली हो
जाओ...!

CamScanner

अक्सर यह होता है कि तुमने विवाह किया कि पत्नी तो नहीं मिलती है एक गुरु मिल गया, जो तुम्हें सुधारने में लग जाता है कि अब सिगरेट न पीओ, अब पान न खाओ, अब दस बजे के बाद जगो मत, अब ब्रह्ममुहूर्त में उठो, और अब ऐसा करो और अब वैसा करो। पत्नियां अक्सर अपना जीवन इसी मे नष्ट करती हैं कि पति को कैसे सुधार लें। लेकिन सुधारने के पीछे जो आकांक्षा है, वह मालकियत की है। सुधारना तो बहाना है। सुधारने का तो केवल मतलब इतना है कि शुभ के मार्ग से मैं मालकियत सिद्ध करती हूं।

OshO

CS CamScanner

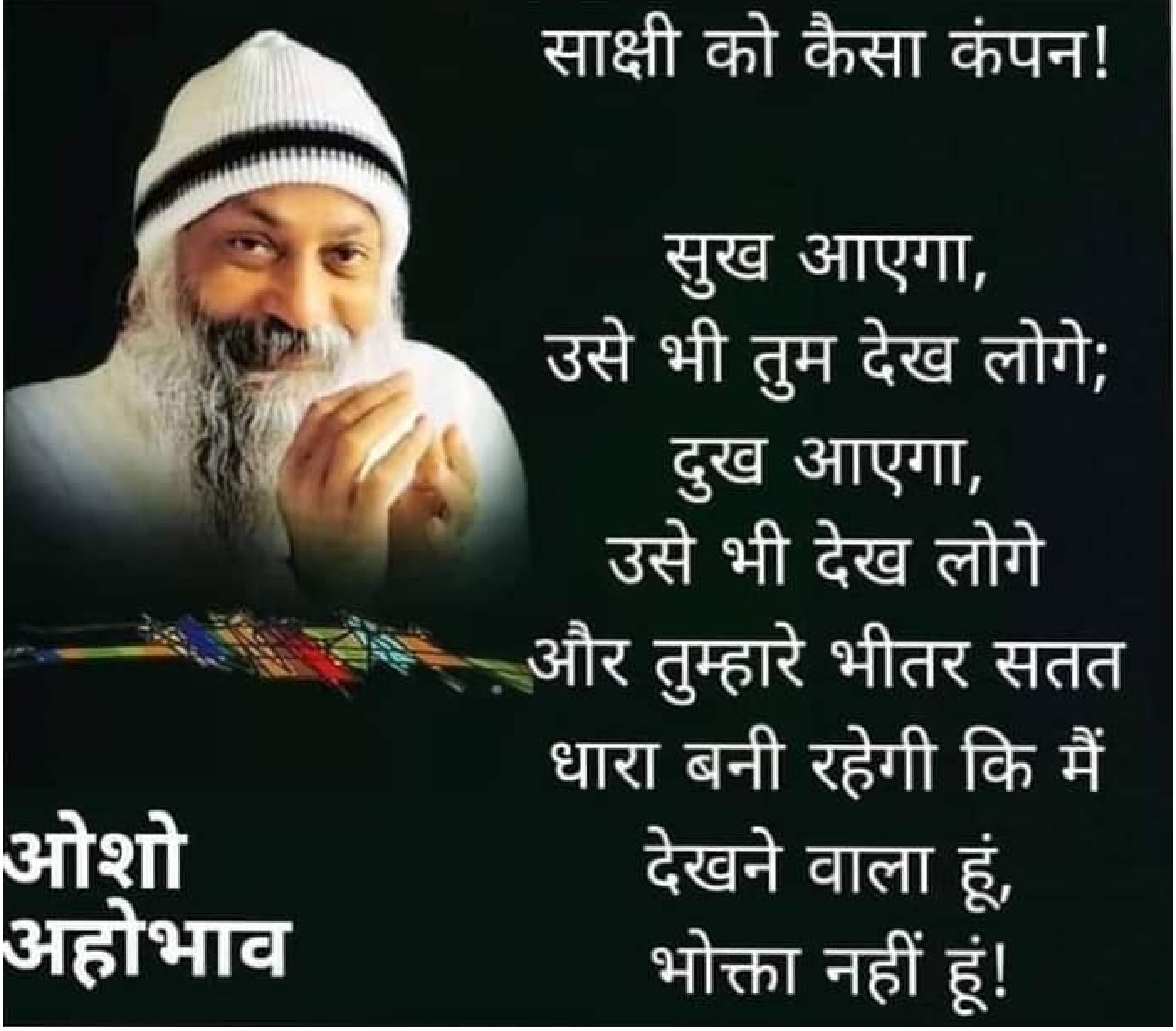
साक्षी को कैसा कंपन!
सुख आएगा,
उसे भी तुम देख लोगे;
दुख आएगा,
उसे भी देख लोगे
और तुम्हारे भीतर सतत
धारा बनी रहेगी कि मैं
देखने वाला हूं,
भोक्ता नहीं हूं!
ओशो
अहोभाव

CamScanner

है।

प्रेम सदा से चुप है। अहंकार खूब ढोल बजाता है, डुंडी पीटता है, बड़ा शोरगुल करता है। भीड़ जो इकट्ठी करनी है। तुम देखते हो, कोई मदारी खड़ा हो जाए बाजार में आकर। इधर डमरू बजाया उसने, इधर बंदर नचाया उसने, कि बस लोग आने लगे। दिशाओं-दिशाओं से लोग इकट्ठे होने लगते हैं। कोई हो मदारी, कोई हो बंदर, कोई डमरू बजाए, लोग इकट्ठे होने लगते हैं। शोरगुल भर करो, उछल-कूद भर मचाओ...।

राजनीति इसी तरह का शोरगुल है; अहंकार की बड़ी राजनीति है। असल में, अहंकार का फैलाव ही राजनीति है। और अहंकार का विसर्जन ही धर्म है।
❤️ओशो❤️

Osho Prem Naman 🙏🏼💞
Osho international — at OSHO International Meditation Resort.

CamScanner

मन है क्या ?

विचार, वासना, कल्पना ,स्मृति

CS CamScanner

“ **धर्म** के नाम पर बने पागल सबसे खतरनाक होते हैं, और जो लोग समाज में गड़बड़ पैदा करना चाहते हैं वे अच्छी तरह जानते हैं कि किसी विशेष अवसर पर इन पागलों का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए।

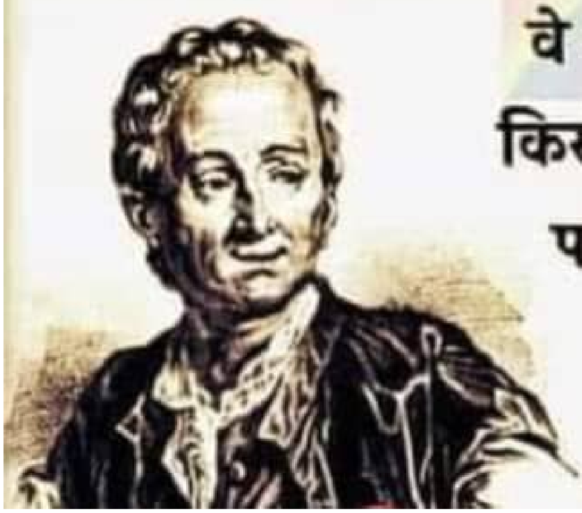

देनिस दिदरो : तर्कशील अड्डा

CS CamScanner

OSHO LOVERS GROUP
Lata Ragini · 2d ·

प्रेमिका के लिए प्रेमी की उम्र
कोई मायने नहीं रखती...!!
वो तो सिर्फ़ और सिर्फ़
प्यार की भूखी होती है...!!

इसलिए मैं कहती हूँ कि
आओ रूह के प्रेम से प्रेम करें
इस खूबसूरत जिस्म का
आख़िर क्या है
तुम्हारा भी मिट्टी है
और मेरा भी मिट्टी है...!!

निश्चल प्रेम किया है
आपसे इसलिये बेफ़िक्र रहिये
नाराज़गी हो सकती हैं
लेकिन नफ़रत कभी नहीं...!!

प्रेम का सबसे सुन्दर रूप
इंतज़ार है और
जितना लंबा इंतज़ार >
उतना गहरा प्रेम...!!
❤️❤️❤️❤️❤️❤️❤️

CS CamScanner

आप किसीके मार्गदर्शक
अवश्य बन सकते हो,
पर उसे समझने की बुद्धि
नही दे सकते।
ELENA SHUMIL

CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य

Chetna Kanchan Bhagat · 56m ·

एक आदमी तुम्हें धोखा देता है और तुम सारी मनुष्य जाति पर भरोसा खो देते हो. क्या तुम इसका बेतुकापन देखते हो? मैं तुमसे कहता हूँ कि सारी मनुष्य जाति तुमको धोखा दे दे तो भी श्रद्धा करो , क्योंकि श्रद्धा बहुत अधिक मूल्यवान है. वह एक आंतरिक मूल्य की बात है. यह इस पर निर्भर नहीं करती कि लोग भरोसे योग्य हैं अथवा नहीं. और यदि तुमने उनके भरोसे योग्य न होने के बावजूद भरोसा किया, तुम उनके ह्रदय में भी एक क्रांति पैदा कर सकते हो. क्योंकि वे भी मनुष्य ही हैं जैसे कि तुम हो.

--ओशो

CamScanner

अगर आशीर्वादों से सुख आता होता,
तो एक आदमी सभी को सुखी कर देता।
क्योंकि आशीर्वाद देने में क्या कंजूसी?
इतना आसान नहीं है। तुमने दुख बोया है,
मेरे आशीर्वाद से कैसे कटेगा? तुम मुझसे समझ
लो। आशीर्वाद मत मांगो। क्योंकि आशीर्वाद
तो बेईमानी का ढंग है। दुख तुमने दिया है न
मालूम कितने लोगों को। तुमने दुख बोया है
सब तरफ। अब तुम उसकी फसल काटने के
वक्त आशीर्वाद मांगने आ गए! और तुम्हारे ढंग
से ऐसा लगता है कि जैसे अगर तुम्हें दुख मिल
रहा है, तो मैं आशीर्वाद नहीं दे रहा हूं इसलिए
दुख मिल रहा है। किसी के आशीर्वाद से
तुम्हारा दुख न कटेगा। किसी के आशीर्वाद से
तुम्हारी समझ बढ़ जाए तो काफी। किसी के
आशीर्वाद से तुम में प्रेम का बीज आ जाए तो
काफी। पाप तो प्रेम से कटेगा। और दुख तो तुम
जब दूसरों के लिए सुख बोने लगोगे तब कटेगा।

ओशो

CamScanner

जिस दिन व्यक्ति अपने भीतर की गहन शांति में थिर हो जाता है उस दिन जगत एक अभिनय है। इसलिए हमने इसे लीला कहा है। उस दिन वह सब करता है- वह बाजार जाता, वह दुकान चलाता वह पत्नी को सम्हालता, बच्चों को सम्हालता- वह सब करता है, और फिर भी अकर्ता बना रहता है। यही सिद्ध की दशा है। लेकिन उससे पहले तुम्हें साधक होने से गुजरना पड़ेगा•••••• *ओशो *

•ताओ उपनिषद, से। {संकलन: स्वामी देवगीत}

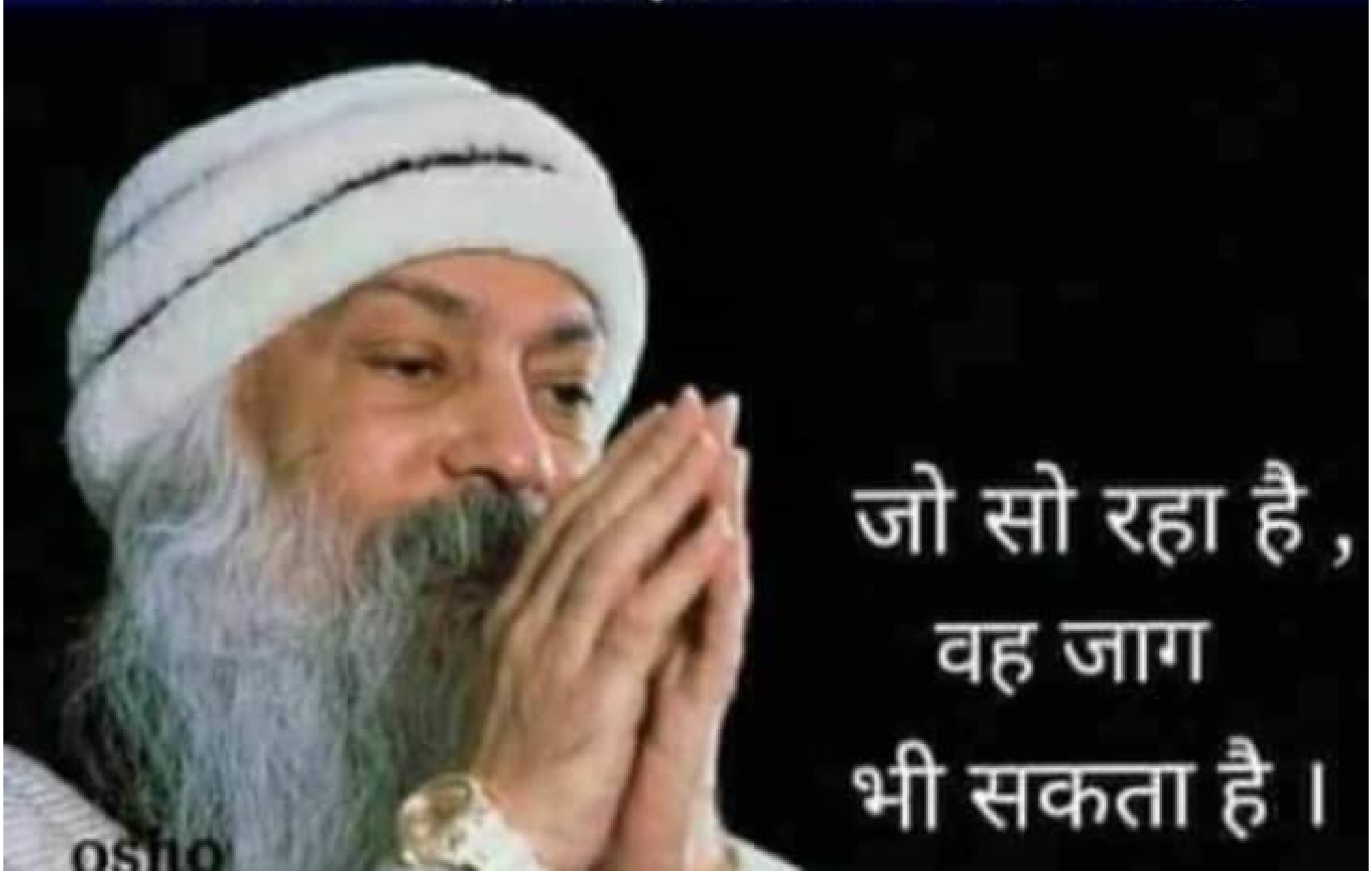

CamScanner

हूं। तुम फिर से कहो, नदी मेरी हंसी समझ गई होगी। तुम फिर से कहो।

और उन स्त्रियों ने बड़े डर, बड़े संकोच और बड़े संदेह से उस नदी से कहा कि अगर यह संन्यासी जीवन भर का भूखा रहा हो......। उनका मन ही कह रहा था कि बिलकुल गलत है यह बात। लेकिन नदी ने रास्ता दे दिया। वे तो बड़ी मुश्किल में पड़ गईं। लौटते वक्त जितना बड़ा चमत्कार हुआ था, वह जाते वक्त भी नहीं हुआ था।

उन्होंने कृष्ण से जाकर कहा कि हद हो गई। हम तो सोचते थे, चमत्कार तुमने किया है, लेकिन चमत्कार उस संन्यासी ने किया है। जाते वक्त तो बात ठीक थी, ठीक है, हो गई। लौटते वक्त भी वही बात हमने कही और नदी ने रास्ता दे दिया! तो कृष्ण ने कहा कि नदी रास्ता देगी ही, क्योंकि संन्यासी वही है, जो भोजन नहीं करता है। उन्होंने कहा, लेकिन हमने अपनी आंखों से उसको भोजन करते देखा है। तो कृष्ण ने कहा, जैसे तुमने उसे भोजन करते देखा है, ऐसे ही वह संन्यासी भी अपने को भोजन करते देख रहा था। इसलिए वह कर्ता नहीं है।

यह कहानी है। किसी नदी के साथ ऐसा करने की कोशिश मत करना। नहीं तो नाहक किसी संन्यासी को फंसा देंगे आप। कोई नदी रास्ता देगी नहीं।

लेकिन बात यह ठीक ही है। अगर हम अपने को भी अपनी क्रियाओं में कर्ता की तरह नहीं द्रष्टा की तरह देख पाएं सारी क्रियाओं में-तों मरना भी एक किया है और वह आखिरी किया है। और अगर तुम जीवन की क्रियाओं में अपने को दूर रख पाए, तो मरते वक्त भी तुम अपने को दूर रख पा सकते हो। तब तुम देखोगे कि मर रहा है वही, जो कल भोजन करता था; मर रहा है वही, कल जो दुकान करता था; मर रहा है वही, जो कल रास्ते पर चलता था; मर रहा है वही, जो कल लड़ता था, झगड़ता था, प्रेम करता था। तब तुम इस एक क्रिया को और देख पाओगे। क्योंकि यह मरने की क्रिया है, वह प्रेम की थी, वह दुश्मनी की थी, वह दूकान की थी, वह बाजार की थी। यह भी एक क्रिया है। अब तुम देख पाओगे कि मर रहा है वही।

CS CamScanner

CamScanner

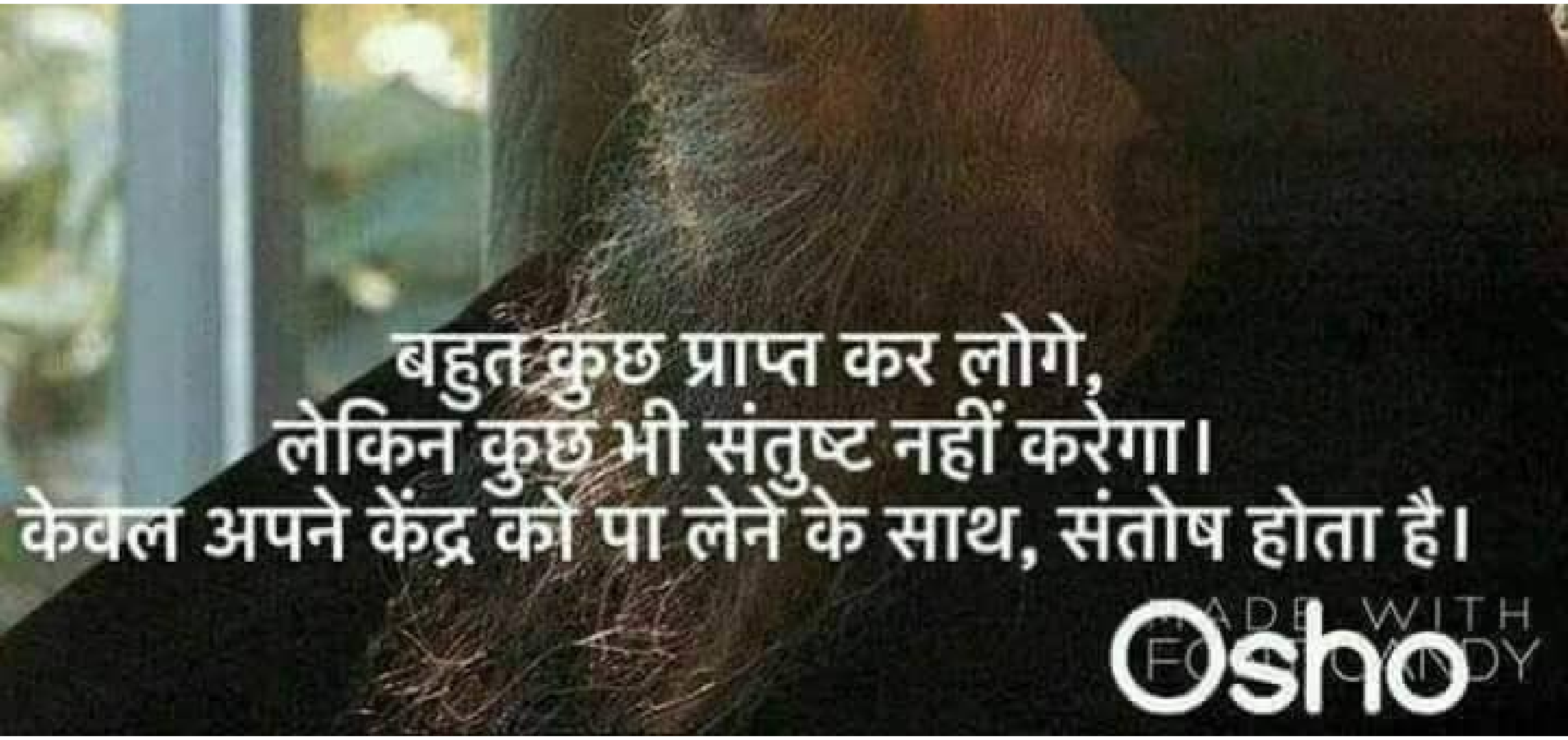
बहुत कुछ प्राप्त कर लोगे,
लेकिन कुछ भी संतुष्ट नहीं करेगा।
केवल अपने केंद्र को पा लेनें के साथ, संतोष होता है।
Osho

CamScanner

इस ब्रह्माण्ड में एक बहुत बड़ा नियम काम करता हैं..

अगर तुम किसी को गाली भी दोगे !

तो जरूरी नहीं की वही आदमी पलटकर आपको
गाली दे, हो सकता हैं कि उसमे
इतना सार्मथ्य ना हो, पर अस्तित्व
इसको छोड़ता नहीं किसी दूसरे
द्वारा आपको गाली मिलेगी लेकिन
मिलेगी जरूर

CamScanner

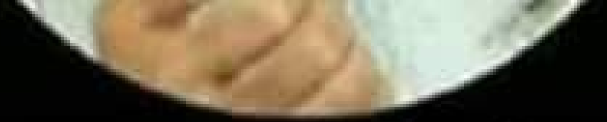

मस्त आदमी का क्या अर्थ होता है? मस्त आदमी का अर्थ होता है: अब कोई चलाने वाला नियंत्रण भीतर न रहा। अब तो छोड़ दिया सब परमात्मा पर। जहां उसकी मरजी हो, ले जाए। डुबाना हो--डुबा दे; हम गीत गुनगुनाते डूब जायेंगे। मिटना हो--मिटा दे; हम मुस्कुराते मिट जायेंगे। जो उसकी मरजी; जैसी उसकी मरजी।

कन थोरे काकर घने -2

ओशो

OSHO MADHUSHALA

CamScanner

राजा

एक राजा को जब पता चला कि मेरे राज्य मे एक ऐसा व्यक्ति है जिसका सुबह-सुबह मुख देखने से दिन भर भोजन नही मिलता है। सच्चाई जानने के इच्छा से उस व्यक्ति को राजा ने अपने साथ सुलाया। दुसरे दिन राजा की ब्यस्तता ऐसी बढ़ी कि राजा शाम तक भोजन नही कर सका,इस बात से क्रुद्ध होकर राजा ने उसे तत्काल फॉसी की सज़ा का ऐलान कर दिया। आखिरी इच्छा के अंतर्गत उस व्यक्ति ने कहा " राजन मेरा मुँह देखने से आप को शाम तक भोजन नही मिला, किंतु आप का मुँह देखने से मुझे मौत मिलने वाली है"। इतना सुनते ही लज्जित राजा को संत वाणी याद आ गई....।

"बुरो जो देखण मै चल्यो, बुरो न मिल्यो कोय,
जो दिल ढूढ्यो आपणो, मुझ से बुरो न कोय" ।।

tnsharma25.tn@gmail.com

CamScanner

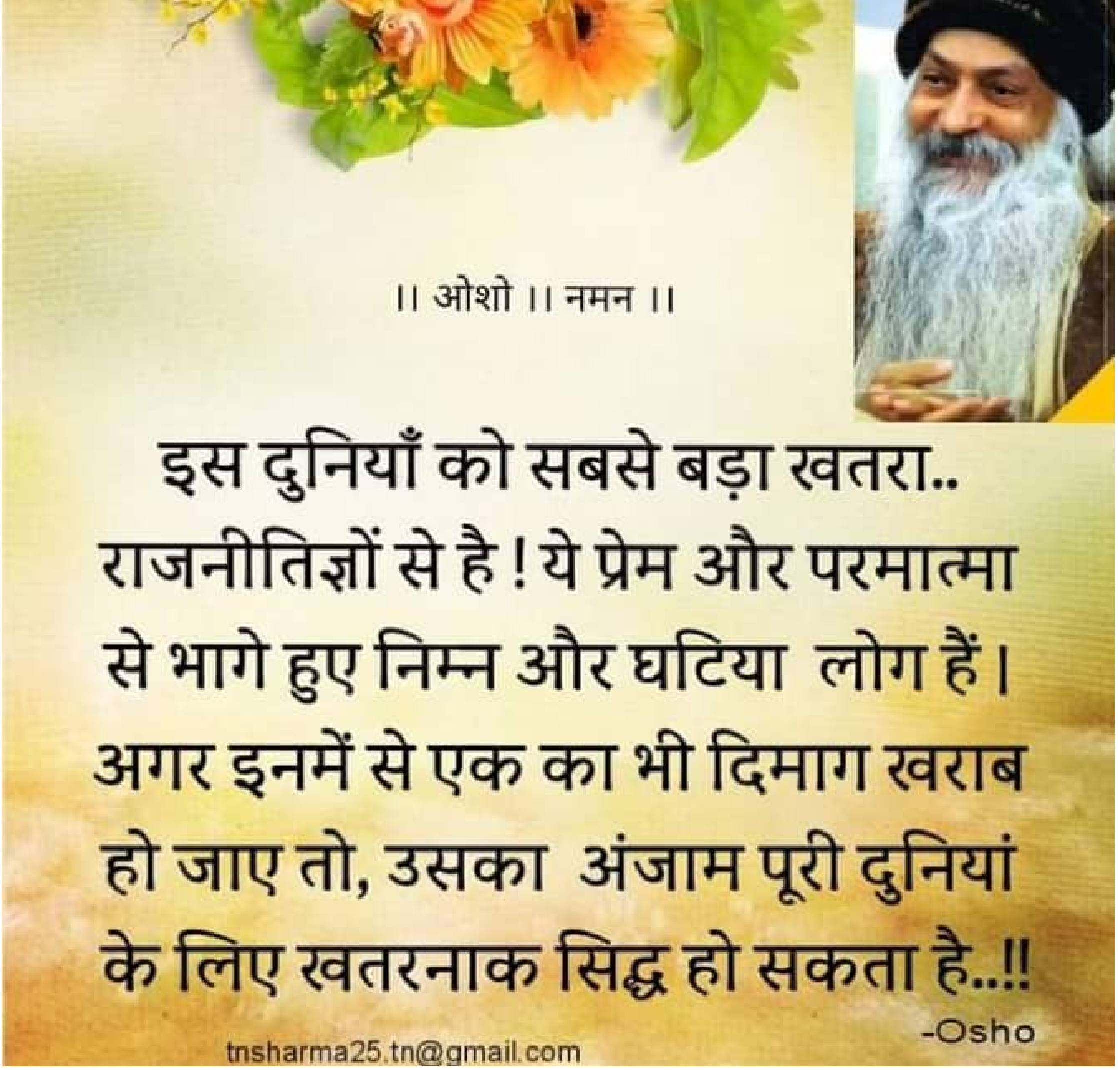

।। ओशो ।। नमन ।।
इस दुनियाँ को सबसे बड़ा खतरा..
राजनीतिज्ञों से है ! ये प्रेम और परमात्मा
से भागे हुए निम्न और घटिया लोग हैं।
अगर इनमें से एक का भी दिमाग खराब
हो जाए तो, उसका अंजाम पूरी दुनियां
के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है..!!
-Osho
tnsharma25.tn@gmail.com

CamScanner

और वह आदमी खिलखिलाकर हंसने लगा, और उसने कहा कि तुम क्या सोचते हो, तुम कुछ अन्य कर रहे हो, तुम कुछ भिन्न कर रहे हो?

तुम इस छोटी सी खोपड़ी में परमात्मा को समाना चाहते हो? अरस्तू बड़ा विचारक था। तुम इस छोटी सी खोपड़ी में अगर परमात्मा को समा लोगे, तो मेरा यह गड्ढा तुम्हारी खोपड़ी से बड़ा है और सागर परमात्मा से छोटा है; पागल कौन है?

अरस्तू ने इस घटना का उल्लेख किया है और उसने लिखा है कि उस दिन मुझे पता चला कि पागल मैं ही हूं। उस पागल ने मुझ पर बड़ी कृपा की। वह कौन आदमी रहा होगा? वह आदमी जरूर एक पहुंचा हुआ फकीर रहा होगा, समाधिस्थ रहा होगा, वह सिर्फ अरस्तू को जगाने के लिए, अरस्तू को चेताने के लिए उस उपक्रम को किया था।

नहीं, तुम्हारी चाह तो छोटी है—चाय की चम्मच—इस चाह से तुम समाधि को नहीं पा सकोगे। चाह को जाने दो। और फिर जल्दीबाजी मचा रहे हो! जल्दबाजी मे तो चम्मच में थोड़ा—बहुत पानी आया, वह भी गिर जाएगा—अगर ज्यादा भागदौड़ की तो, और ज्यादा जल्दबाजी की। तुमने देखा न, कभी कभी जल्दबाजी में यह हो जाता है, ऊपर की बटन नीचे लग जाती है, नीचे की बटन ऊपर लग जाती है;सूटकेस में सामान रखना था वह बाहर ही रहा जाता है, सूटकेस बंद कर दिया, फिर उसको खोला तो चाबी नहीं चलती, कि चाबी अटक जाती है। तुमने जल्दबाजी में देखा, स्टेशन पहुंच गए और टिकट घर ही रह गई। और बड़ी जल्दी की!

जितनी जल्दबाजी करते हो, उतने ही अशांत हो जाते हो। जितने अशांत हो जाते हो, उतनी संभावना कम है समाधि की। शांत हो रहो। और शांत होने की कला है अचाह से भर जाना। चाहो ही मत, मांगो ही मत; कहो कि जो जब होना है, होगा, हम प्रतीक्षा करेंगे। जल्दी भी क्या है? समय अनंत है।

ओशो प्रवचन... 🙏🙏

CamScanner

समाज व्यक्ति का शत्रु है।
समाज तुम्हें भेड़ों की भांति चाहता है, व्यक्तियों की
भांति नहीं। क्योंकि व्यक्ति के साथ ही बगावत का
स्वर शुरू हो जाता है।

CS CamScanner

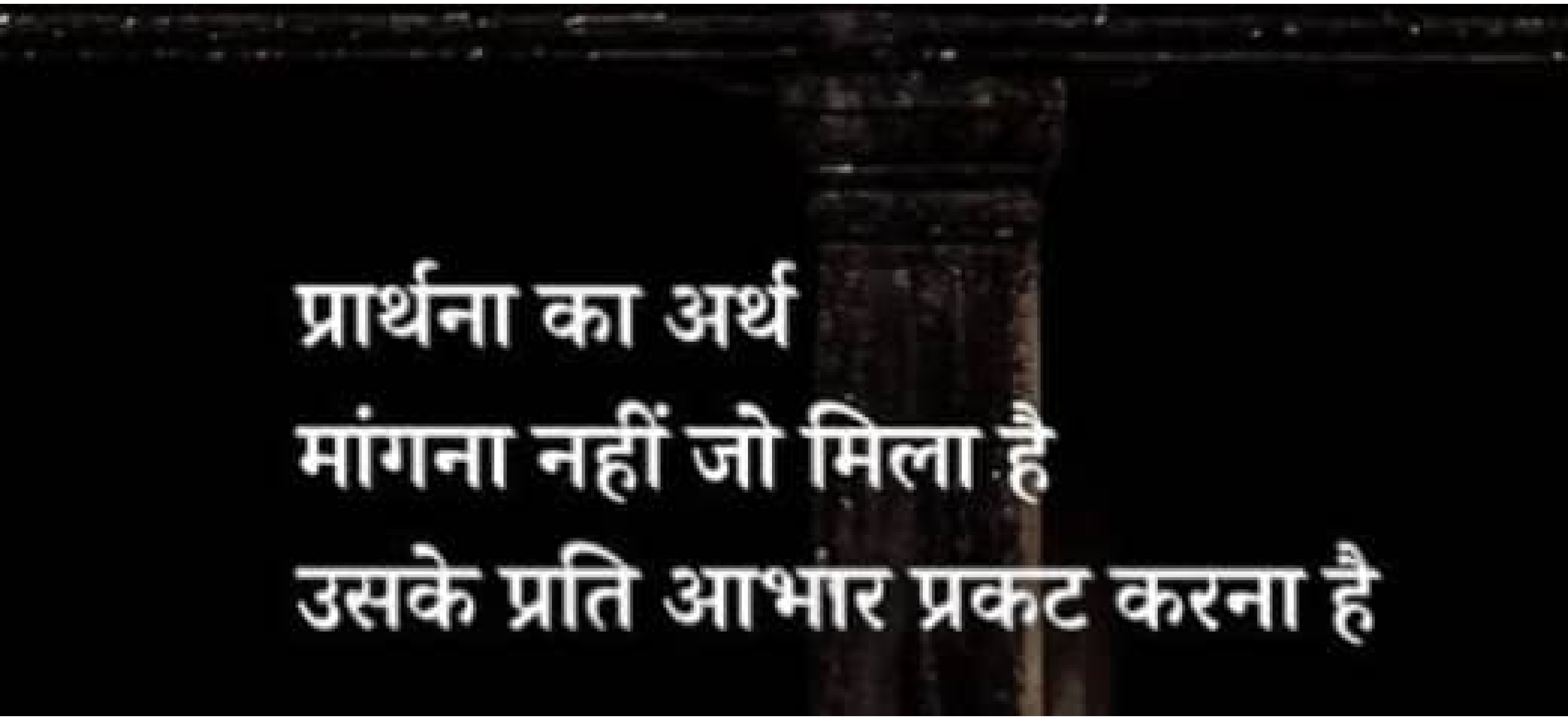

CamScanner

शरीर के बिना शरीर का रस नहीं लिया जा सकता।
इसलिए जब शरीर बीमार होता है,
वासना कमजोर पड़ जाती है....

ओशो

CamScanner

स्मरण रहे, परमात्मा, मंदिरों और मस्जिदों में छिपा हुआ नहीं बैठा है। परमात्मा प्रगट है, निर्वस्त्र है, चारों तरफ मौजूद है। झांको तो तुम्हारे भीतर मौजूद है और ऐसे दौड़ते रहो काबा और काशी और कैलाश..तुम्हारी मर्जी! लोग सस्ता पाना चाहते हैं कि चले तीर्थयात्रा को चले हज—यात्रा को। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो सब हाजियों को मिल जाए—हाजी मस्तान को भी मिल जाए। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो हर तीर्थयात्री को मिल जाए। और कुछ लोग तो तीर्थो में अड्डा जमाकर ही बैठे हैं, उन्हें तो पक्का मिल जाए। लेकिन बाहर नहीं है जब भी मिलेगा भीतर मिलेगा।

CamScanner

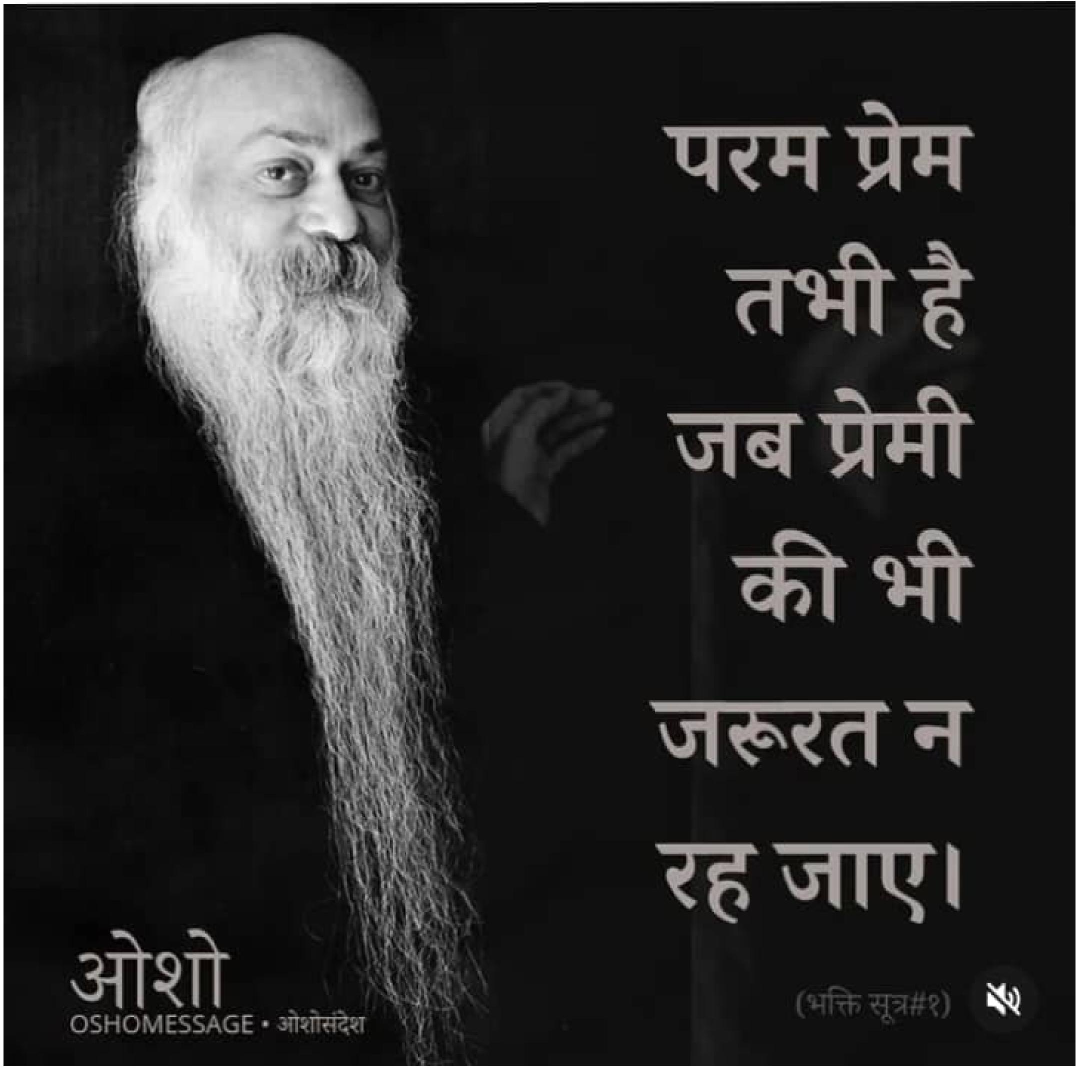
परम प्रेम
तभी है
जब प्रेमी
की भी
जरूरत न
रह जाए।
ओशो
OSHOMESSAGE • ओशोसंदेश
(भक्ति सूत्र#१)

CamScanner

लोग एक दूसरे के प्रेम में पड़
जाते हैं तो कहते हैं हम
जन्म-जन्म तक साथ रहेंगे,
कल का जिनको भरोसा नहीं है
वह जन्मों-जन्मों की बातें कर
रहे हैं ।।

CamScanner

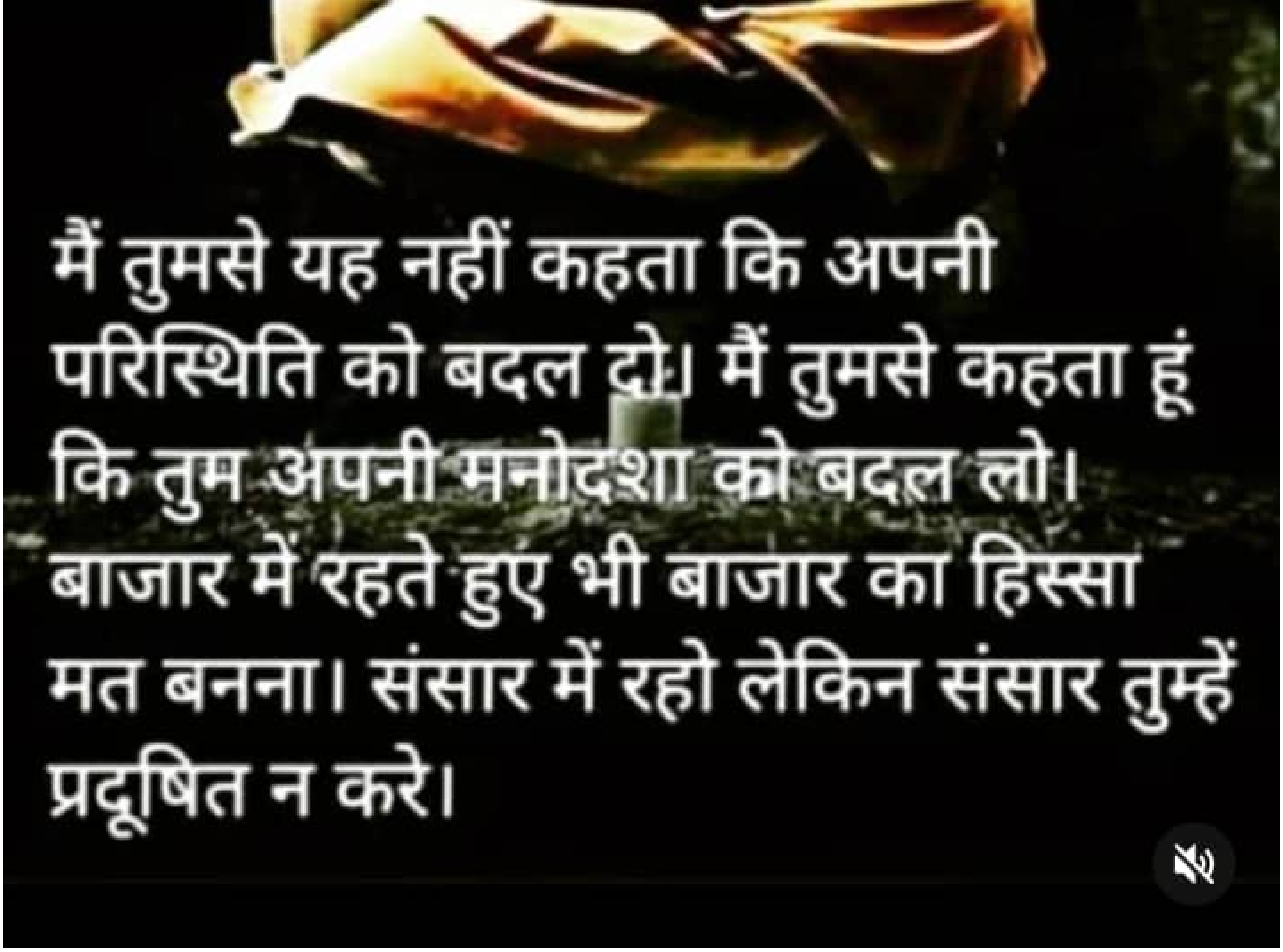
मैं तुमसे यह नहीं कहता कि अपनी परिस्थिति को बदल दो। मैं तुमसे कहता हूं कि तुम अपनी मनोदशा को बदल लो। बाजार में रहते हुए भी बाजार का हिस्सा मत बनना। संसार में रहो लेकिन संसार तुम्हें प्रदूषित न करे।

CamScanner

"जिस समय आपको आपके प्यार और
आपके सच में से किसी एक को चुनना पड़ता है
तब आपका सच ही आपके लिए निर्णायक साबित
हो सकता है।"

CamScanner

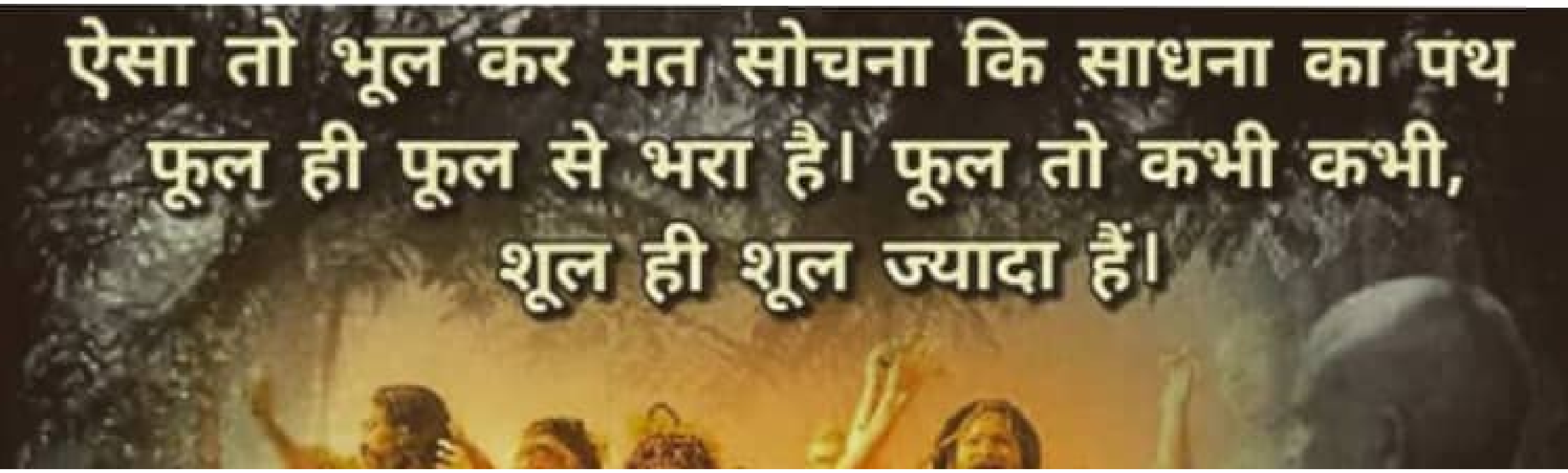

CamScanner

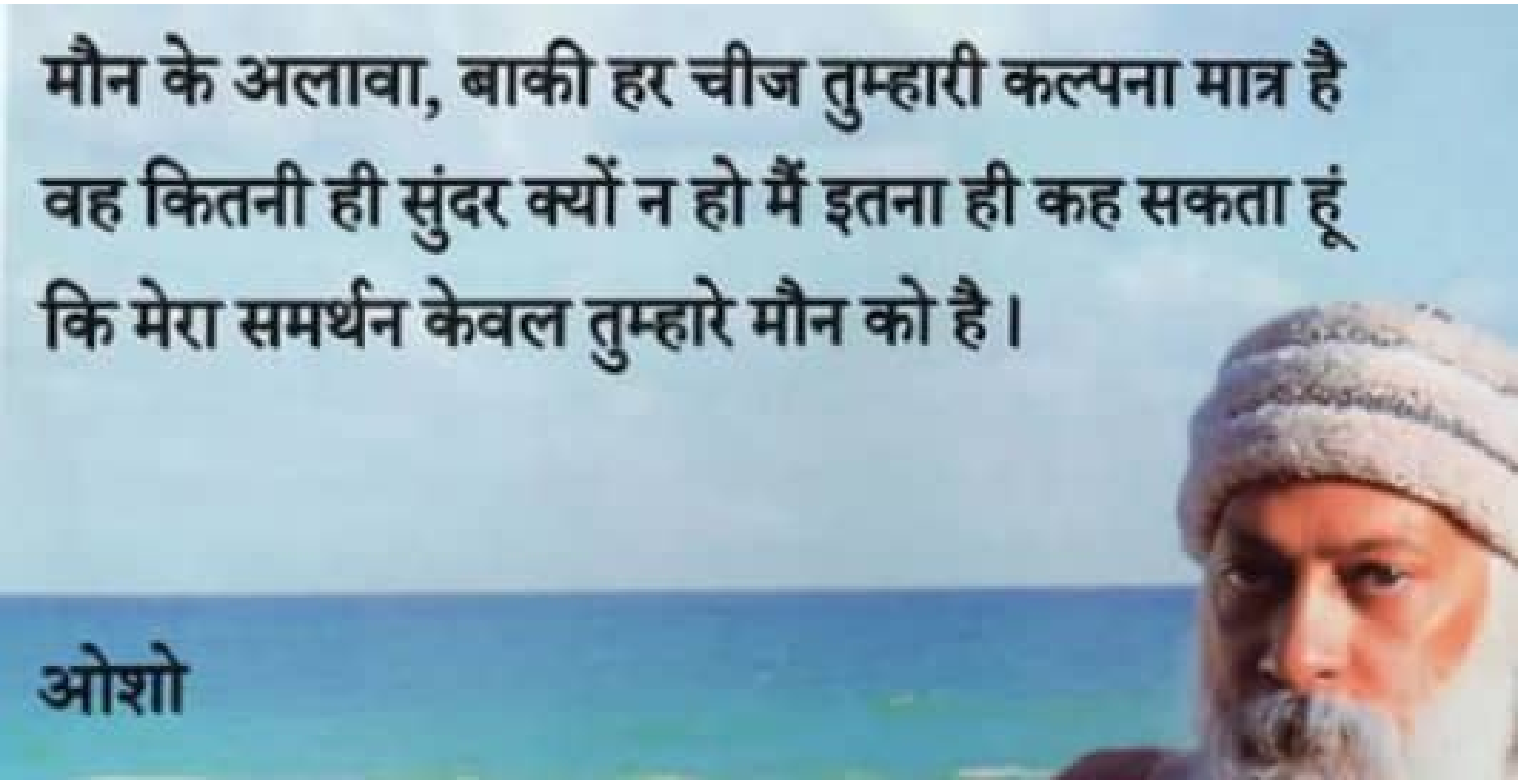
मौन के अलावा, बाकी हर चीज तुम्हारी कल्पना मात्र है
वह कितनी ही सुंदर क्यों न हो मैं इतना ही कह सकता हूं
कि मेरा समर्थन केवल तुम्हारे मौन को है।
ओशो

CamScanner

ध्यान रखना,
अकेले आना है,
अकेले जाना हैं,
तो बीच के ये
थोड़े दिन भीड़
से बहुत ज्यादा
अपने को
मत भरो।

ओशो
एस धम्मो सनंतनो

CS CamScanner

तुम दिन मे कम से कम दो - तीन बार

"जो भी हो रहा है "

उसे ठहरकर नाटक की भांति देखो

ओर तुम हंसोगे देखकर,

कि जीवन में सिर्फ नाटक ही चल रहा है

OSHO

CamScanner

प्रेम सहायक तभी हो सकता है
जब तुम अपने से ज्यादा आध्यात्मिक
OSHO DHYAN UPVAN HISAR
ऊंचाई वाले व्यक्ति के प्रेम में पड़ते हो;
@LaughWithUniverse
अन्यथा यह सहायता नहीं कर सकता।
और ऐसे प्रेम को हम श्रद्धा कहते हैं
~ओशो

CamScanner

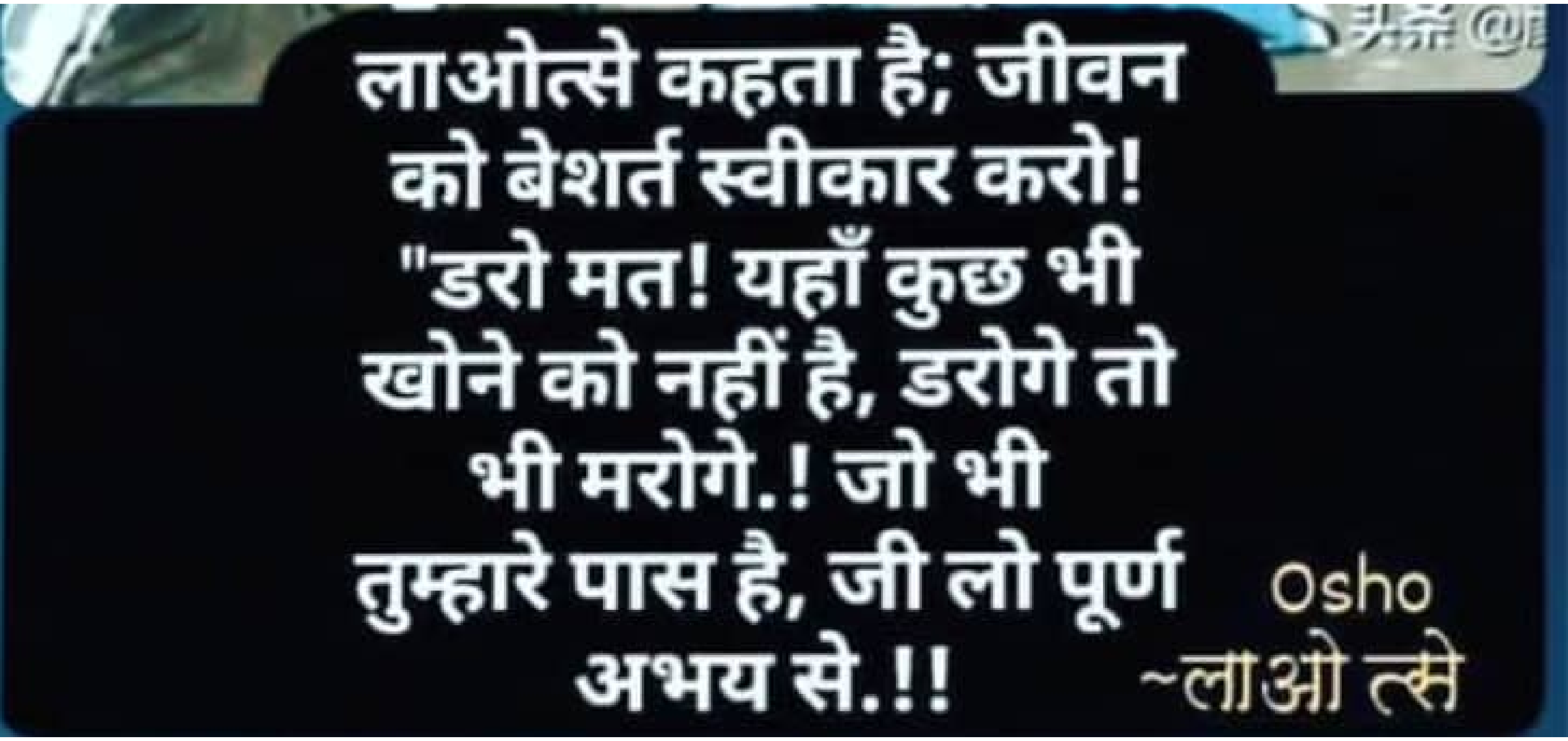
लाओत्से कहता है; जीवन
को बेशर्त स्वीकार करो!
"डरो मत! यहाँ कुछ भी
खोने को नहीं है, डरोगे तो
भी मरोगे.! जो भी
तुम्हारे पास है, जी लो पूर्ण
अभय से.!!
Osho
~लाओ त्से

CamScanner

CamScanner

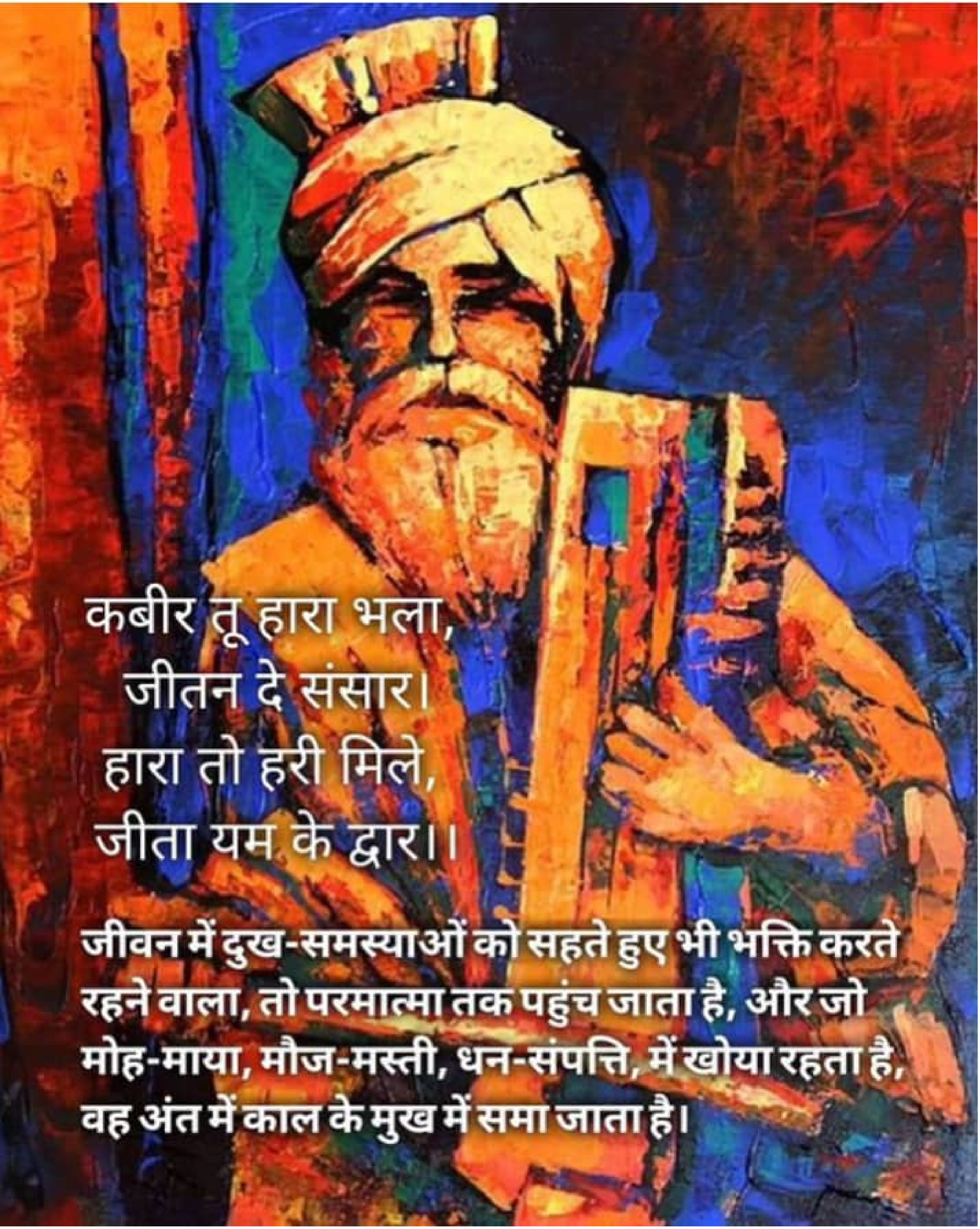
कबीर तू हारा भला,
जीतन दे संसार।
हारा तो हरी मिले,
जीता यम के द्वार।।
जीवन में दुख-समस्याओं को सहते हुए भी भक्ति करते रहने वाला, तो परमात्मा तक पहुंच जाता है, और जो मोह-माया, मौज-मस्ती, धन-संपत्ति, में खोया रहता है, वह अंत में काल के मुख में समा जाता है।

CamScanner

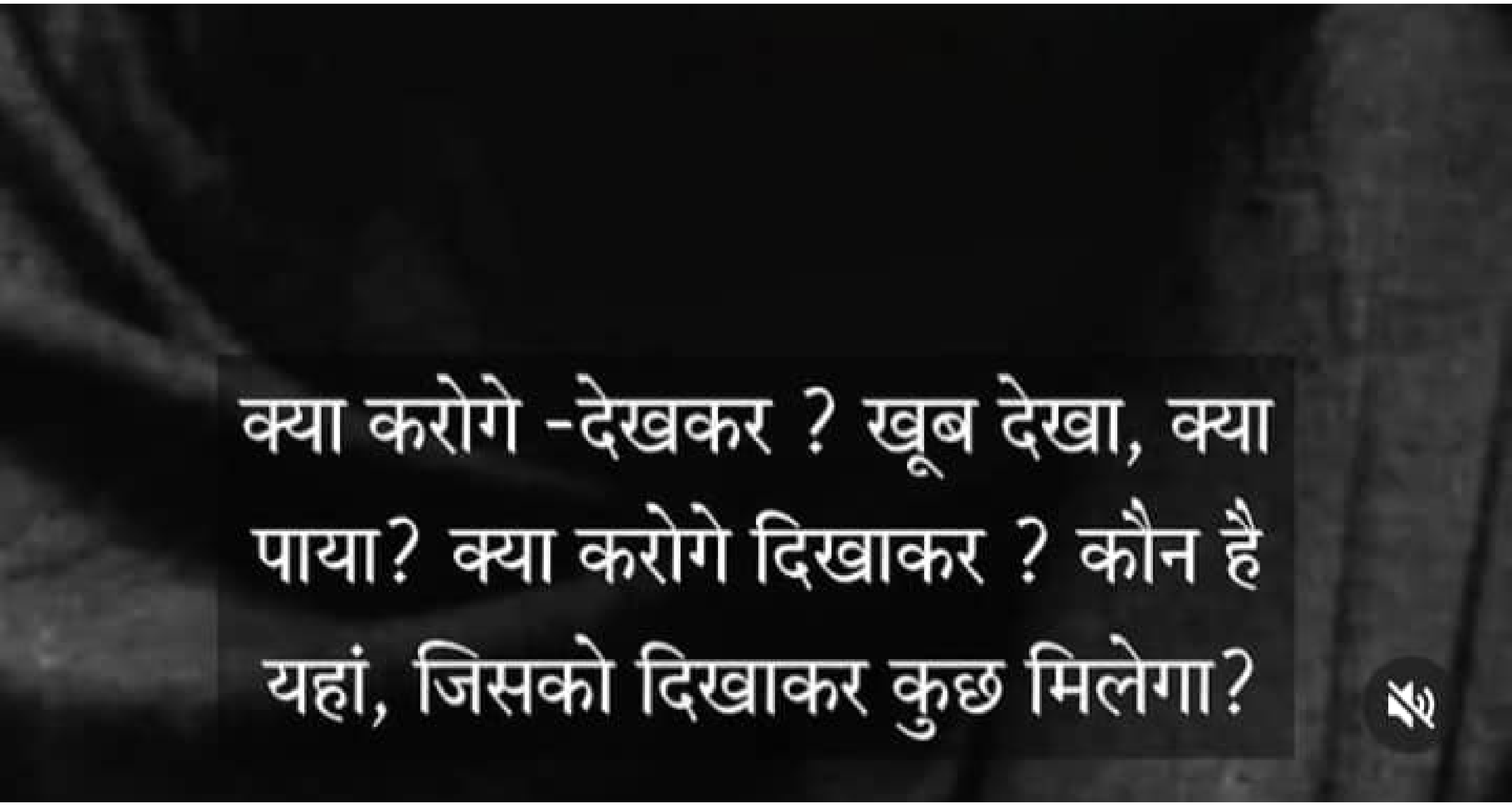

CamScanner

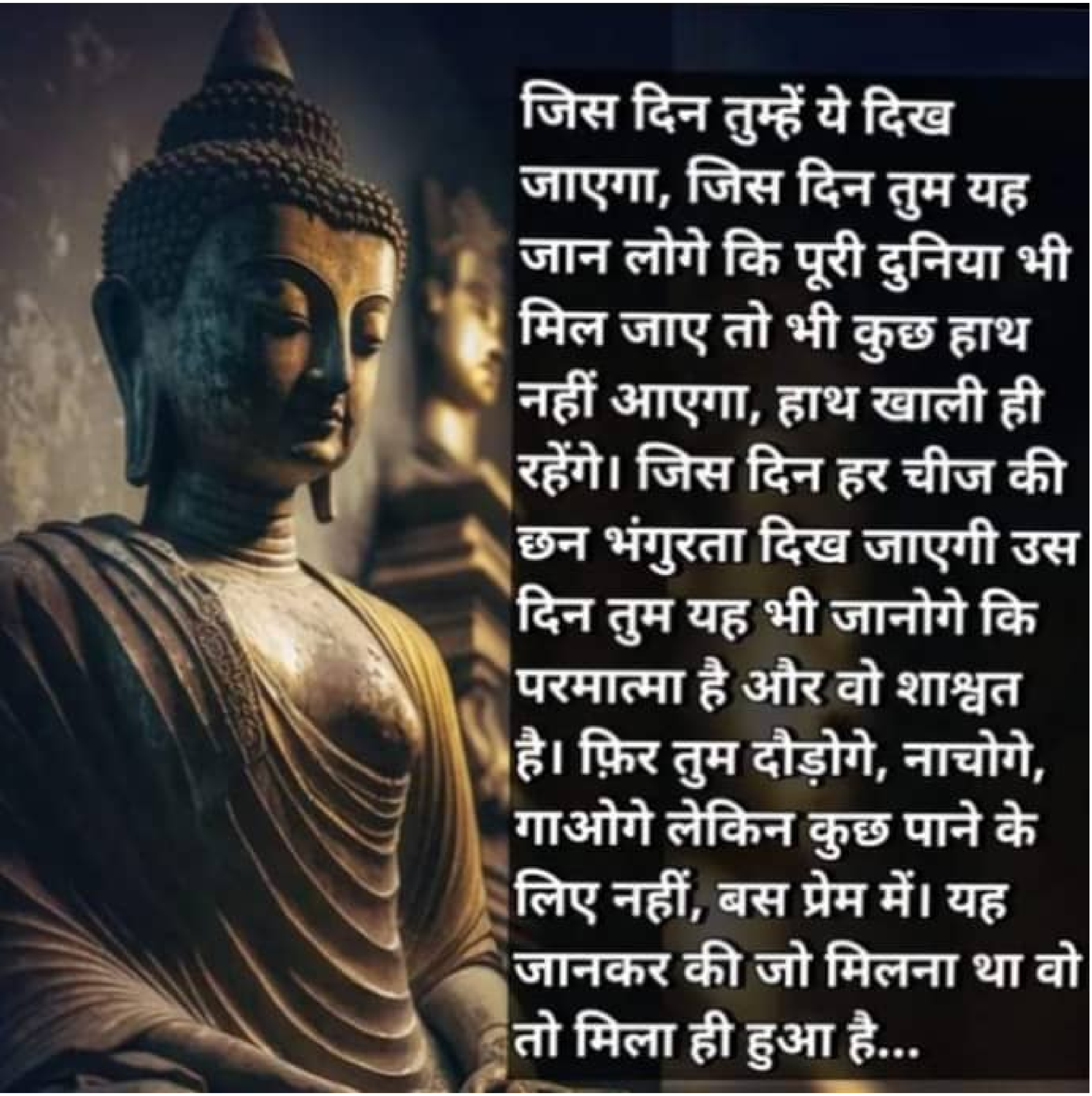
जिस दिन तुम्हें ये दिख
जाएगा, जिस दिन तुम यह
जान लोगे कि पूरी दुनिया भी
मिल जाए तो भी कुछ हाथ
नहीं आएगा, हाथ खाली ही
रहेंगे। जिस दिन हर चीज की
छन भंगुरता दिख जाएगी उस
दिन तुम यह भी जानोगे कि
परमात्मा है और वो शाश्वत
है। फ़िर तुम दौड़ोगे, नाचोगे,
गाओगे लेकिन कुछ पाने के
लिए नहीं, बस प्रेम में। यह
जानकर की जो मिलना था वो
तो मिला ही हुआ है...

CamScanner

जो यात्रा व्रत और उपवास से शुरू होगी वह अहंकार से ही शुरू हो रही है..

ओर अहंकार से शुरू हुई यात्रा कभी भी परमात्मा तक नही पहुंचती..

पहुंच ही नही सकती..

CamScanner

मनुष्य का बोलना ही उसे इस परिस्थिति में ले आया है जो आज है। यह जो लगातार भीतर बकवास करता हुआ मन है यह तुहें किसी प्रसन्नता, किसी आनंद को अनुभव नहीं करने देता, क्योंकि केवल एक मौन चित्त ही भीतर देख सकता है, केवल एक मौन चित्त ही उस आनंद को स्पर्श कर सकता है जो भीतर उमड़ रहा है। आनंद का वह स्त्रोत इतना सूक्ष्म है कि मन के शोर - गुल के बीच तुम उसे नहीं सुन सकते। जितना तुम मौन होते हो, उतना ही पाते हो कि आनंद का स्त्रोत तुम्हारे भीतर है। फिर तुम बाहर कहीं प्रसन्नता को खोजने नहीं जाते। तुम अकारण प्रसन्न होते हो।

ओशो

प्रेम को प्रार्थना बनाओ

CS CamScanner

तुम अपनी पत्नी में नहीं देखते, तुम अपने पति में नहीं देखते, न अपने बेटे में देखते हो। तुम देखते हो राम में, कृष्ण में, बुद्ध में, महावीर में— बड़े दूर। वेद में, कुरान में, गीता में, बाइबिल में। तुम अपने हस्ताक्षरों में नहीं देखते। तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें जो प्रेम—पत्र लिखा है उसमें नहीं देखते, वेद में। तुम्हारे बेटे ने तुतलाकर तुमसे जो कहा है, उसमें नहीं, कृष्ण के वचनों में। तुम दूर देखते हो, इसलिए चूकते हो। और परमात्मा पास है। परमात्मा तुम्हारे बेटे में तुतला रहा है। तुम्हारे बेटे में चलने की कोशिश कर रहा है। वृक्षों में हरा है, पक्षियों में गुनगुना रहा है। हवा के झोंकों में अदृश्य है। जो तुम्हारे चारों तरफ घिरा हुआ है, वह परमात्मा के अतिरिक्त और कोई भी नहीं है। तुम कहीं भी झुको, उसी के चरणों पर तुम्हारे हाथ पड़ते हैं। तुम कहीं भी आंख उठाओ, उसी का दर्शन। अष्टावक्र: महागीता—(भाग—6) प्रवचन—13

CamScanner

वह फकीर वापस लौट गया, लोग फिर बड़ी मुश्किल में पड़ गए। सुनना जरूर था। अब और तीव्र आकांक्षा हो गई कि पता नहीं वह आदमी क्या कहता! उन्होंने फिर तय किया, तीसरा उत्तर तैयार किया कि अब की बार फिर चलें। तीसरे शुक्रवार फिर उसके पास पहुंच गए कि चलो। उन्होंने तीसरा उत्तर तैयार कर लिया। उन्होंने कहा, अब की बार जब वह पूछे, तो आधे लोग कहेंगे कि हमको पता है कि ईश्वर है और आधे लोग कहेंगे कि हमको पता नहीं है कि ईश्वर है। अब तो कुछ बोलोगे।

फकीर आकर खड़ा हो गया और उसने कहा कि दोस्तों, फिर वही सवाल, पता है ईश्वर है या कि पता नहीं है? जानते हो कि नहीं जानते?

आधी मस्जिद के लोगों ने कहा, आधे लोगों को पता है कि ईश्वर है, और आधे लोगों ने कहा, हमें पता नहीं कि ईश्वर है।

फकीर ने कहा, जिनको पता है वे उनको समझा दें जिनको पता नहीं। मैं जाता हूं मेरी कोई जरूरत नहीं।

उस फकीर से मैंने भी पूछा कि चौथी बार वे लोग आए कि नहीं?

वह फकीर कहने लगा, चौथा उत्तर उन लोगों को नहीं मिल सका, तीन में उत्तर समाप्त हो गए। फिर वे लोग नहीं आए। मैं तो रास्ता देखता रहा कि आएं तो फिर जाऊं।

मैंने उस फकीर को कहा कि अगर उनके पास चौथा उत्तर होता तो आप जाते?

वह कहने लगा, अगर चौथा उत्तर होता तो मैं जरूर जाता और बोलता।

मैंने पूछा, वह चौथा उत्तर क्या हो सकता था?

वह फकीर कहने लगा, अगर वे चुप रह जाते और कोई भी उत्तर न देते तो मैं कुछ बोलता। क्योंकि तब वे सच्चे लोग होते। तब वे एक झूठी बात को गवाही नहीं देते। तब वे मौन रह जाते। उन्हें कुछ भी पता नहीं है– न होने का, न ना होने का। तब वे अपने अज्ञान में मौन रह जाते। अज्ञान उनका सत्य था, सच्चाई थी। शान– आस्तिक का ज्ञान, नास्तिक का शान– सब झूठ है, सीखी हुई बकवास है। अगर वे चुप रह जाते तो मैं बोलता, वह फकीर कहने लगा। और आज तक सत्य के संबंध में तभी समझाया जा सका है या जाना जा सका है, बोला जा सका है, इशारे किए जा सके है–जब दूसरी तरफ सच्चाई से भरा हुआ मौन हो। झूठ से भरे हुए उत्तर नहीं, सच्चाई से भरा हुआ प्रश्न काफी है। झूठ से भरा हुआ ज्ञान नहीं, सच्चाई से भरा हुआ अज्ञान भी परमात्मा की तरफ ले जाने वाला चरण बन जाता है।

CamScanner

क्योंकि फकीर ने कहा. इन्हें मत सताओ,
ये प्यारे लोग हैं, अच्छे लोग हैं, भले लोग हैं।

फकीर के पैरों पर गिर पड़े चोर
और उन्होंने कहा हमें दीक्षित करो।
वे संन्यस्त हुए। और फकीर बाद में खूब हंसा।
और उसने कहा कि तुम संन्यास में प्रवेश
कर सको इसलिए तो कंबल भेंट दिया था।
इसे तुम पचा थोड़े ही सकते थे।
इस कंबल में मेरी सारी प्रार्थनाएं बुनी थीं।
इस कंबल में मेरे सारे सिब्दों की कथा थी।
यह कंबल नहीं था।

जैसे कबीर कहते हैं
न—झीनी—झीनी बीनी रे चदरिया!
ऐसे उस फकीर ने कहा प्रार्थनाओं से बुना था इसे!

इसी को ओढ़ कर ध्यान किया था।
इसमें मेरी समाधि का रंग था, गंध थी।
तुम इससे बच नहीं सकते थे।
यह मुझे पक्का भरोसा था,
कंबल ले आएगा तुमको भी।
और तुम आखिर आ गए।

उस दिन रात आए थे,
आज दिन आए।
उस दिन चोर की तरह आए थे,
आज शिष्य की तरह आए। मुझे भरोसा था।

ओशो

मन ही पूजा मन ही धूप

CamScanner

Shilpa Jain

Suggested for you · 2d ·

अदभुत, केवल #हिंदी में ही है ऐसी विशेषता....!

एक बार एक कवि हलवाई की दुकान पहुँचे, जलेबी ली और वहीं खाने बैठ गये।
इतने में एक कौआ कहीं से आया और दही की परात में चोंच मारकर उड़ चला....

हलवाई को बड़ा गुस्सा आया उसने पत्थर उठाया और कौए को दे मारा।
कौए की किस्मत ख़राब, पत्थर सीधे उसे लगा और वो मर गया....

ये घटना देख कर कवि हृदय जगा। वो जलेबी खाने के बाद पानी पीने पहुँचे तो उन्होंने एक कोयले के टुकड़े से वहाँ एक पंक्ति लिख दी।
"काग दही पर जान गँवायो"

तभी वहाँ एक लेखपाल महोदय, जो कागजों में हेराफेरी की वजह से निलम्बित हो गये थे, पानी पीने आए।
कवि की लिखी पंक्तियों पर जब उनकी नजर पड़ी तो अनायास ही उनके मुँह से निकल पड़ा...

कितनी सही बात लिखी हैं ! क्योंकि उन्होंने उसे कुछ इस तरह पढ़ा :-
"कागद ही पर जान गँवायो"

तभी एक मजनू टाइप लड़का, पिटा-पिटाया सा वहाँ पानी पीने आया।
उसे भी लगा कितनी सच्ची बात लिखी हैं। काश उसे ये पहले पता होती, क्योंकि उसने उसे कुछ यूँ पढ़ा था :-
"का गदही पर जान गँवायो"

इसीलिए संत तुलसीदास जी ने बहुत पहले ही लिख दिया था :-

"जाकी रही भावना जैसी... प्रभु मूरत देखी तिन तैसी"

CamScanner

🌻एकांत🌻

ऐसे रहो, जैसे तुम अकेले हो कहीं भी रहो—ऐसे रहो, जैसे तुम अकेले हो। न कोई संगी है, न कोई साथी। भीड़ में भी रहो, तो अकेले रहो। परिवार में भी रहो, तो अकेले रहो। इस बात को जानते ही रहो भीतर, एक क्षण को यह सूत्र हाथ से मत जाने देना। एक क्षण को भी यह भ्रांति पैदा मत होने देना कि तुम अकेले नहीं हो, कि कोई तुम्हारे साथ है।

यहां न कोई साथ है; न कोई साथ हो सकता है। यहां सब अकेले हैं। अकेलापन आत्यंतिक है। इसे बदला नहीं जा सकता। थोडी—बहुत देर को भुलाया जा सकता है, बदला नहीं जा सकता। और सब भुलावे एक तरह के मादक द्रव्य हैं। एक प्रकार के नशे हैं। कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता। कोई शराब पीकर भुलाता है। कोई धन की दौड़ में पड़कर भुलाता है। कोई पद के लिए दीवाना होकर भुलाता है। कैसे तुम भुलाते हो, इससे फर्क नहीं पड़ता। लेकिन थोड़ी देर को भुला सकते हो। बस। और जब भी नशा उतरेगा, अचानक पाओगे अकेले हो।

संन्यासी वही है, जो जानता है कि मैं अकेला हूं और भुलाता नहीं अपने अकेलेपन को। भुलाना तो दूर, अपने अकेलेपन में रस लेता है। और प्रतीक्षा करता है कि कब मौका मिल जाए कि थोड़ी देर अपने अकेलेपन का स्वाद लूं। थोड़ी देर आंख बंद करके अपने में डूब जाऊं, अकेला रह जाऊं। वही मेरी नियति है। वही मेरा स्वभाव है। उसी स्वभाव से मुझे पहचान बनानी है।

दूसरों से पहचान बनाने से कुछ भी न होगा; अपने से पहचान बनानी है। दूसरों को जानने से क्या होगा? अपने को ही न जाना और सबको जान लिया, इस जानने का कोई मूल्य नहीं है। मूल में तो अज्ञान रह गया...!!

🌸आचार्य श्री रजनीशओशो🌸

🙏💞🙏

CS CamScanner

{ जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि }

वीरान जंगल में एक सुंदर मकान था। एक साधु ने उसे देखकर सोचा-कितना सुंदर स्थान है यह, यहां बैठकर ईश्वर का ध्यान करूंगा।

एक चोर ने उसे देखा तो सोचा-वाह यह तो सुनसान स्थान है। चोरी का माल लाकर यहां रखा करूंगा।

एक दुराचारी ने देखा तो सोचा- यह तो अत्यंत एकांत स्थान है। दुराचार करने के लिए इससे उत्तम स्थान और कहां मिलेगा।

एक जुआरी ने देखकर सोचा-अपने साथियों को यहां लाऊंगा और यहां बैठकर हम जुआ खेलेंगे।

अलग-अलग दृष्टिकोण होने के कारण एक ही मकान को प्रत्येक व्यक्ति ने अलग-अलग रूप में देखा।

जैसा दृष्टिकोण रहेगा, वैसी सृष्टि दिखाई पड़ेगी।

|| ईश्वर सत्य है

CamScanner

CS CamScanner

❤️प्रेम के लक्षण❤️

तुम महसूस कर सकते हो कि तुम प्रेम में हो लेकिन लक्षण बताते हैं कि तुम प्रेम में नहीं हो ।प्रेम में होने के लक्षण क्या? 💕तीन लक्षण हैं-

पहला लक्षण है
परिपूर्ण संतोष। जिसमें कुछ और की जरूरत नहीं रहती परमात्मा तक की जरूरत नहीं रहती।
दूसरा लक्षण है कि
उसमें भविष्य नहीं ।प्रेम का यह एक क्षण शास्वत के समान है उसमें दूसरा क्षण नहीं, भविष्य नहीं ,कोई कल नहीं है। प्रेम वर्तमान में घटित हो रहा है।
और तीसरा लक्षण है-कि
प्रेम में तुम समाप्त हो जाते हो ,तुम अब नहीं हो और अगर तुम अब भी हो तो तुमने प्रेम के मंदिर में प्रवेश नहीं किया है।
🪷आचार्य श्री रजनीश ओशो🪷
➡️ तंत्र सूत्र ⬅️

CamScanner

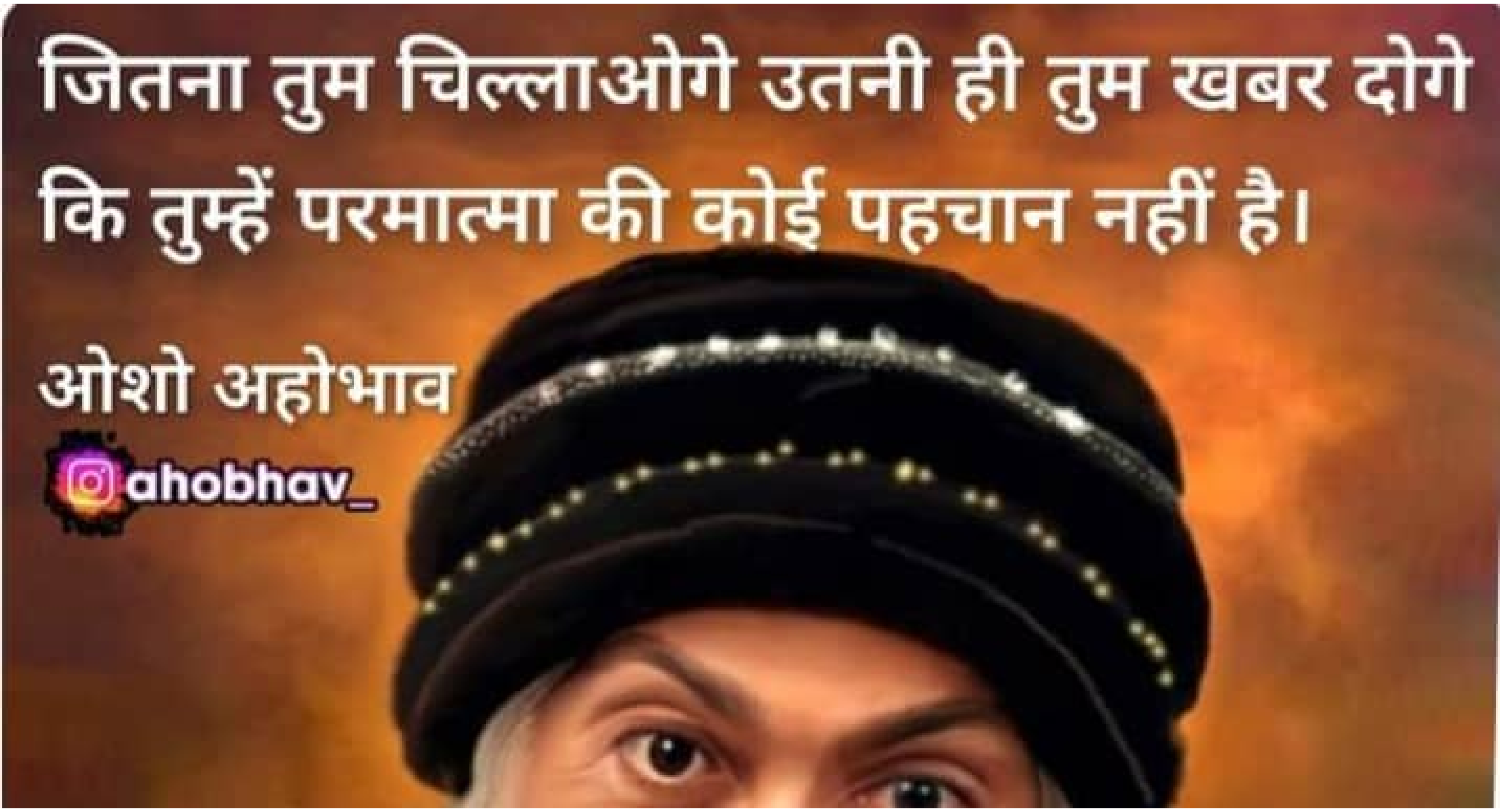
जितना तुम चिल्लाओगे उतनी ही तुम खबर दोगे
कि तुम्हें परमात्मा की कोई पहचान नहीं है।
ओशो अहोभाव
@ahobhav_

CamScanner

चिराग़ बुझने से पहले भड़कता है

CamScanner

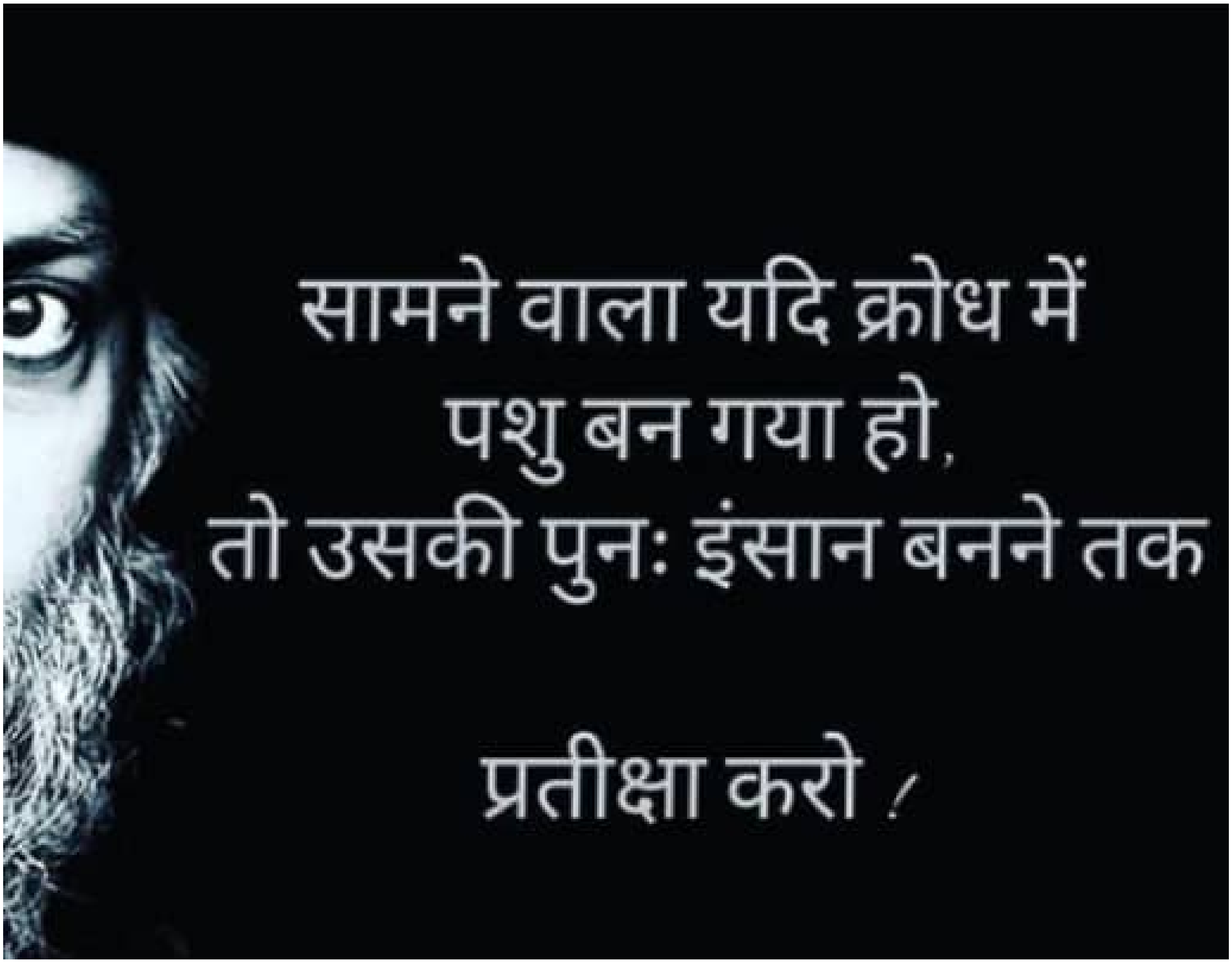

CamScanner

प्रत्येक दुःख के

दस्तावेज पर

अपने स्वयं के ही

हस्ताक्षर होते हैं।

CamScanner

कृष्ण का व्यक्तित्व बहुत अनूठा है।
अनूठेपन की पहली बात तो यह है कि
कृष्ण हुए तो अतीत में, लेकिन हैं भविष्य के।
मनुष्य अभी भी इस योग्य नहीं हो पाया कि
कृष्ण का समसामयिक बन सके।
अभी भी कृष्ण मनुष्य की समझ से बाहर हैं।
भविष्य में ही यह संभव हो पाएगा कि
कृष्ण को हम समझ पाएं।

CamScanner

CS CamScanner

CamScanner

CamScanner

जिसने सब परमात्मा पर छोड़ा, उसके लिए दुख भी सुख हो जाते हैं।

और जिसने सब अपने हाथ में रखा, उसके लिए सुख भी दुख हो जाते हैं।

CamScanner

तुम सूइसाइड क्यों करना चाहते हो? शायद तुम जैसा चाहते थे, लाइफ वैसी नहीं चल रही है लेकिन तुम ज़िन्दगी पर अपना तरीका, अपनी इच्छा थोपने वाले होते कौन हो? हो सकता है कि तुम्हारी इच्छाएं पूरी न हुई हों? तो खुद को क्यों खत्म करते हो, अपनी इच्छाओं को खत्म करो।:ओशो

CamScanner

अष्टावक्र कहते हैं, मिला ही हुआ है। लेकिन 'यह मिला हुआ ही है' तब समझ में आयेगा, जब पाने की सारी आकांक्षा विसर्जित हो जायेगी। तब तुम्हारी समग्रता से तुम जानोगे कि मिला हुआ है।

अष्टावक्र को समझ लो।

उस समझ को ज्ञान मत समझ लेना। अष्टावक्र को समझकर, अपने भीतर सम्हाल कर, एक कोने में रख दो। एक कसौटी मिली। ज्ञान नहीं मिला, एक कसौटी मिली।

अब जब तुम्हें ज्ञान मिलेगा, तब अष्टावक्र की कसौटी पर उसे कसने में तुम्हें सुविधा हो जायेगी।

CS CamScanner

सवाल करता है हर बात पर वो...

जवाब भी मनमुताबिक चाहता है...

CamScanner

CamScanner

राजी रहा करो खुदा की रजा में,, तुमसे भी बहुत मजबूर इंसान है इस जहां में !!

- ओशो

CamScanner

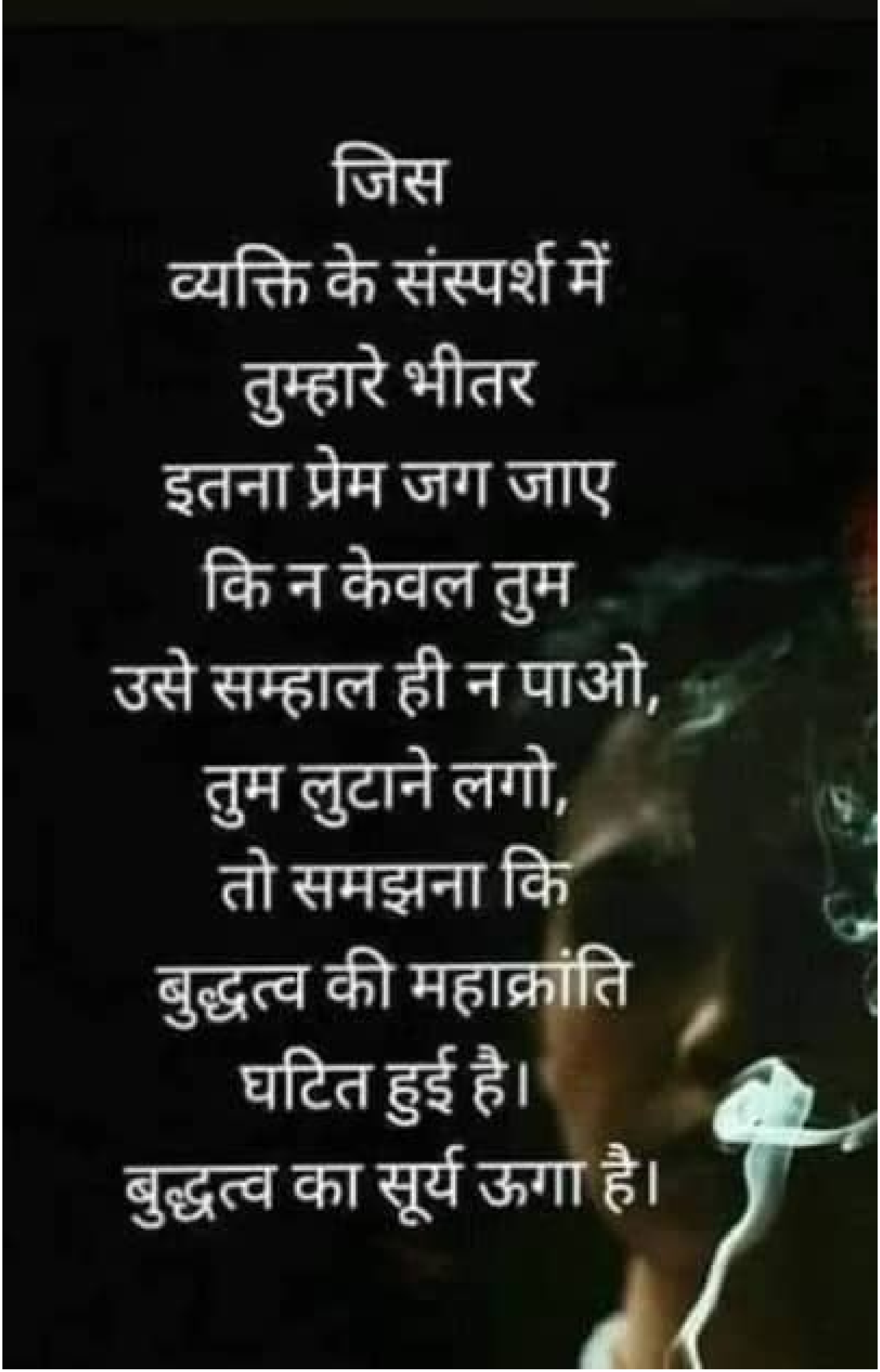
जिस
व्यक्ति के संस्पर्श में
तुम्हारे भीतर
इतना प्रेम जग जाए
कि न केवल तुम
उसे सम्हाल ही न पाओ,
तुम लुटाने लगो,
तो समझना कि
बुद्धत्व की महाक्रांति
घटित हुई है।
बुद्धत्व का सूर्य ऊगा है।

CamScanner

जो अंधेरों से गुजर जायें
वही समझते हैं
नज़र न आए तो क्या-क्या दिखाई देता है

CamScanner

केवल पैसो से कोई धनवान नहीं होता,
असली धनवान वहीं है जिसके पास
अच्छी सोच, मधुर व्यवहार और
सुन्दर विचार है 🙏💯

CamScanner

लोग मुझसे आ कर पूछते हैं : आप अपने संन्यासियों को त्याग क्यों नहीं सिखाते?. बडा मुश्किल है! मैं अपने संन्यासियों को सहजता सिखाता हूं न भोग न त्याग। उतना खाओ जितना सहज शरीर की स्फुरणा मांगती है। उतना सोओ जितनी सहज शरीर की स्फुरणा कहती है। उतना श्रम करो, उतना बोलो, उतना चुप रहो— जितना सहज होता है। असहज मत होने दो। जहां असहज हुए, वहीं संतुलन खोया, संन्यास गंवाया।

ओशो Osho wisdom

CamScanner

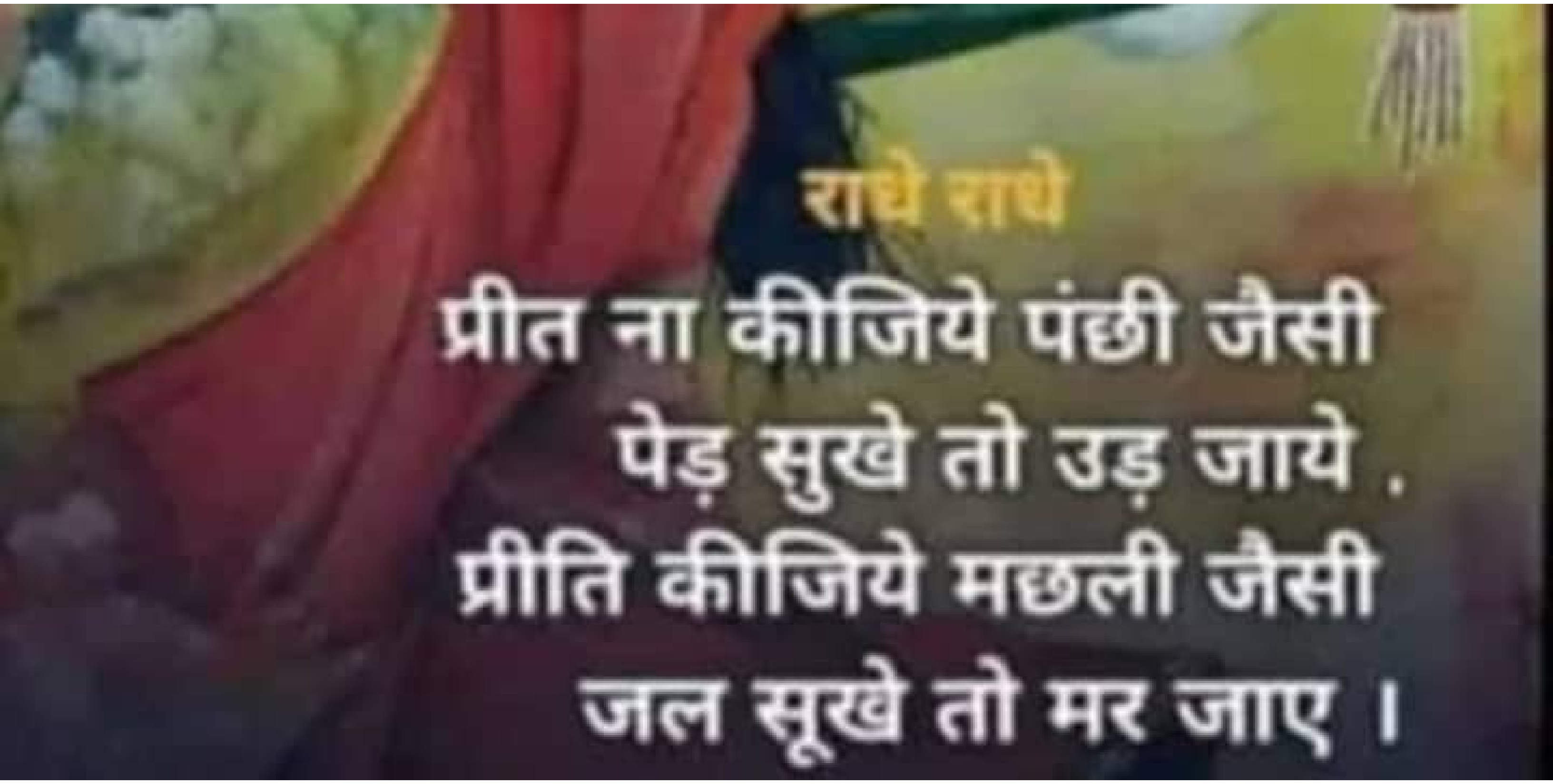

CamScanner

ये दुनियां नाटक के
"मंच जैसी है..!
ना यहां कुछ पाने को
है, ना खोने को..!
लेकिन जो नाटक को
"नाटक जान गया.!
उसके लिए आनंद के
"द्वार खुल गए..!!
~ओशो

CS CamScanner

नकली आदमी हमेशा अकड़े हुए रहते हैं। क्योंकि अगर अकड़ चली जाए तो कहीं नकल न खुल जाए। तो जहां भी अकड़ा हुआ आदमी देखें, समझना कि नकली आदमी है।

CamScanner

बुद्ध ने कहा है: मेरे पास आना, लेकिन मुझसे बँध मत जाना। तुम मुझे सम्मान देना, सिर्फ इसलिए कि मैं तुम्हारा भविष्य हूँ, तुम भी मेरे जैसे हो सकते हो, इसकी सूचना हूँ। तुम मुझे सम्मान दो, तो यह तुम्हारा बुद्धत्व को ही दिया गया सम्मान है, लेकिन तुम मेरा अंधानुकरण मत करना। क्योंकि तुम अंधे होकर मेरे पीछे चले तो बुद्ध कैसे हो पाओगे? बुद्धत्व तो खुली आँखों से उपलब्ध होता है, बंद आँखों से नहीं। और बुद्धत्व तो तभी उपलब्ध होता है, जब तुम किसी के पीछे नहीं जाते,खुद के भीतर जाते हो।

एस धम्म सनातनो(ओशो)

CS CamScanner

इस जिंदगी में समझदार लोग तो ऐसे गुजरते है जैसे कोई सराय से गुजरता है;
इस जिंदगी में ऐसे ठहरते है जैसे कोई धर्मशाला में ठहराता है।
सांझ आयी, रुके रहे, सुबह हुई, चल पड़े।
मुसाफिरखाना है। -ओशो

CamScanner

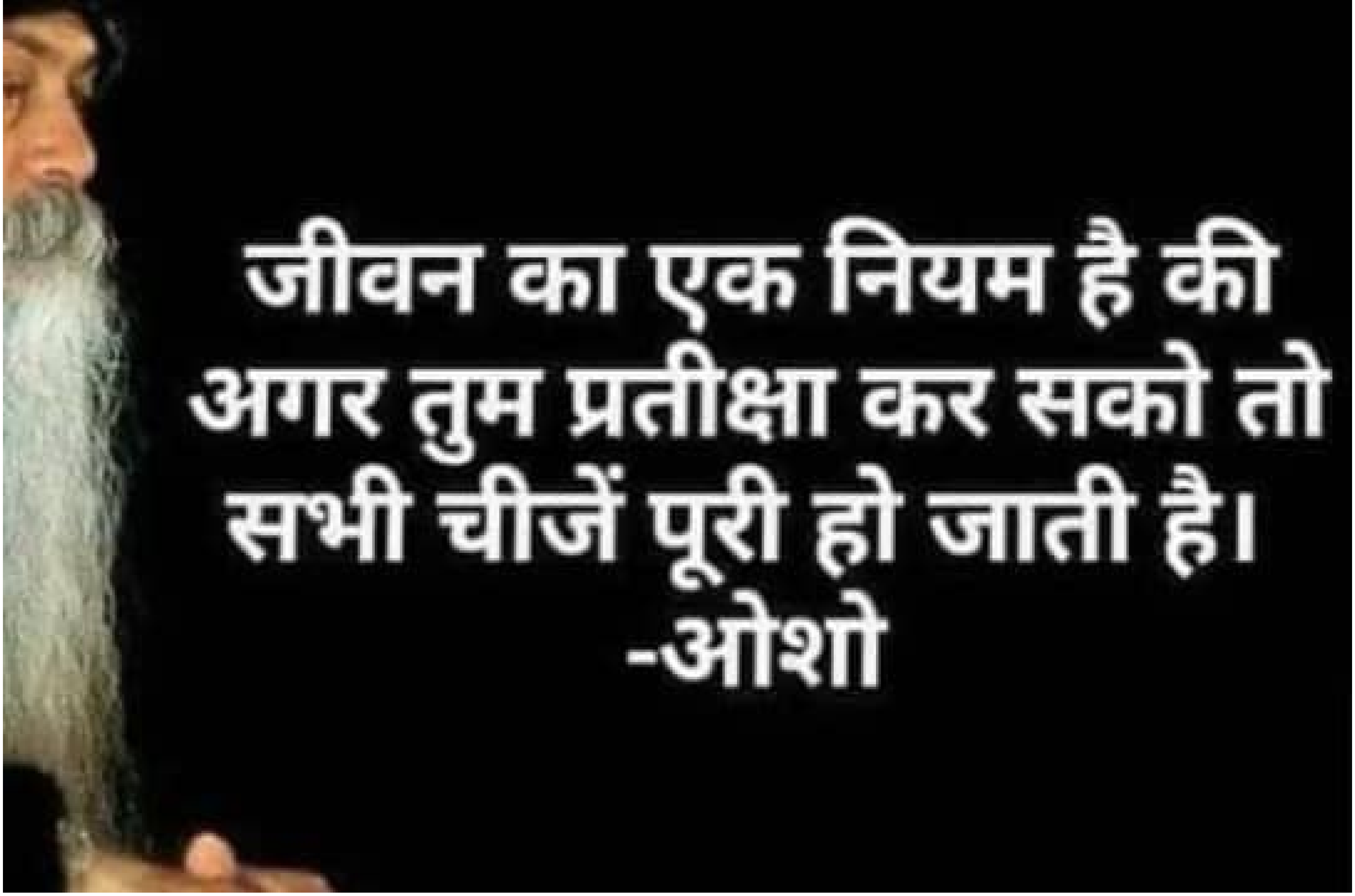

CamScanner

ane

जो आदमी.!
खाली रहने को राजी
है,"वह सम्राटों का भी,
सम्राट है..!! ~लाओ त्से

CamScanner

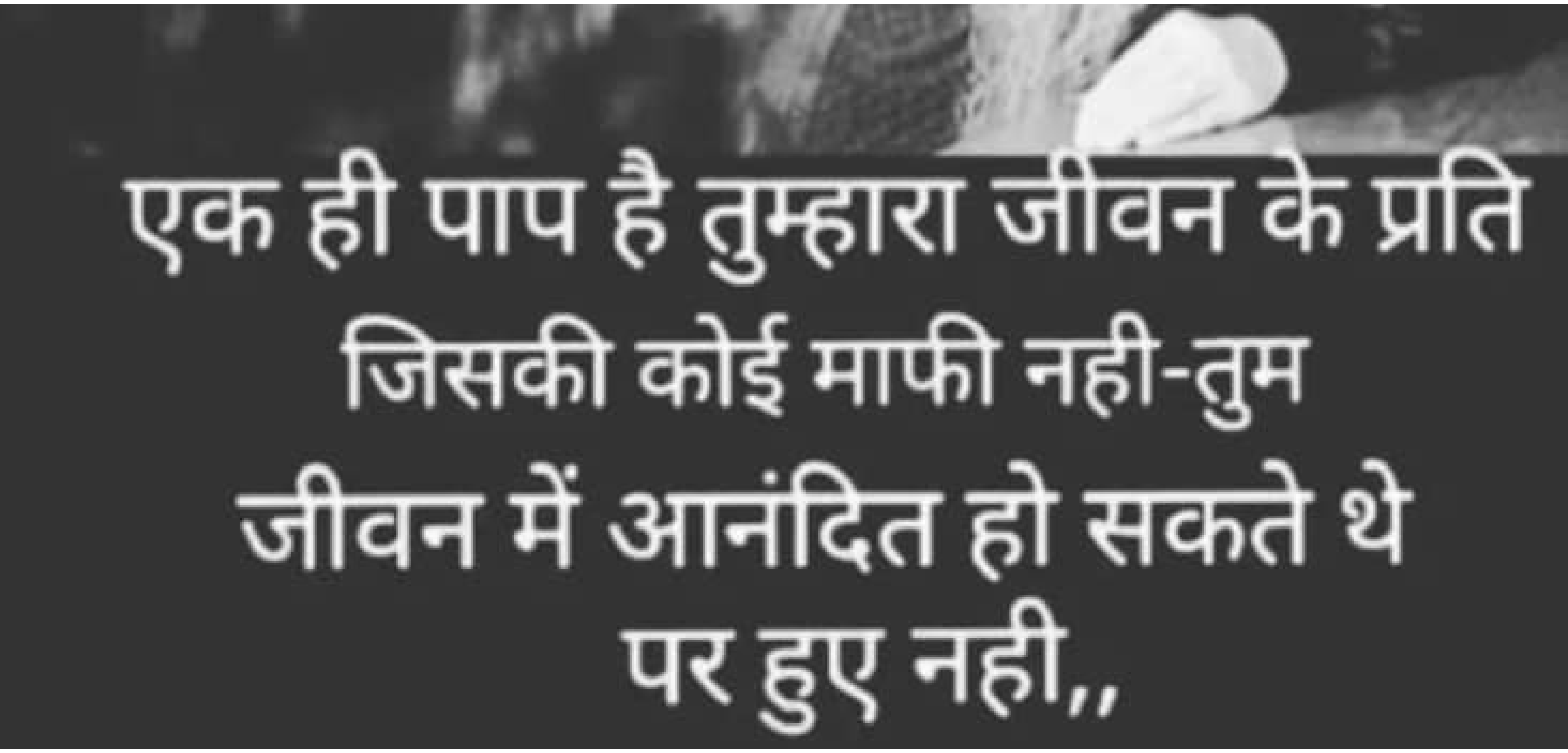

CamScanner

कभी खुद से भी मिलो
कभी खुद ही खुद से बात करो

जिस को ढूंढ रहे हो मंदिर मस्जिदों में
कभी अपने ही भीतर उसे
तलाश करो,,

CamScanner

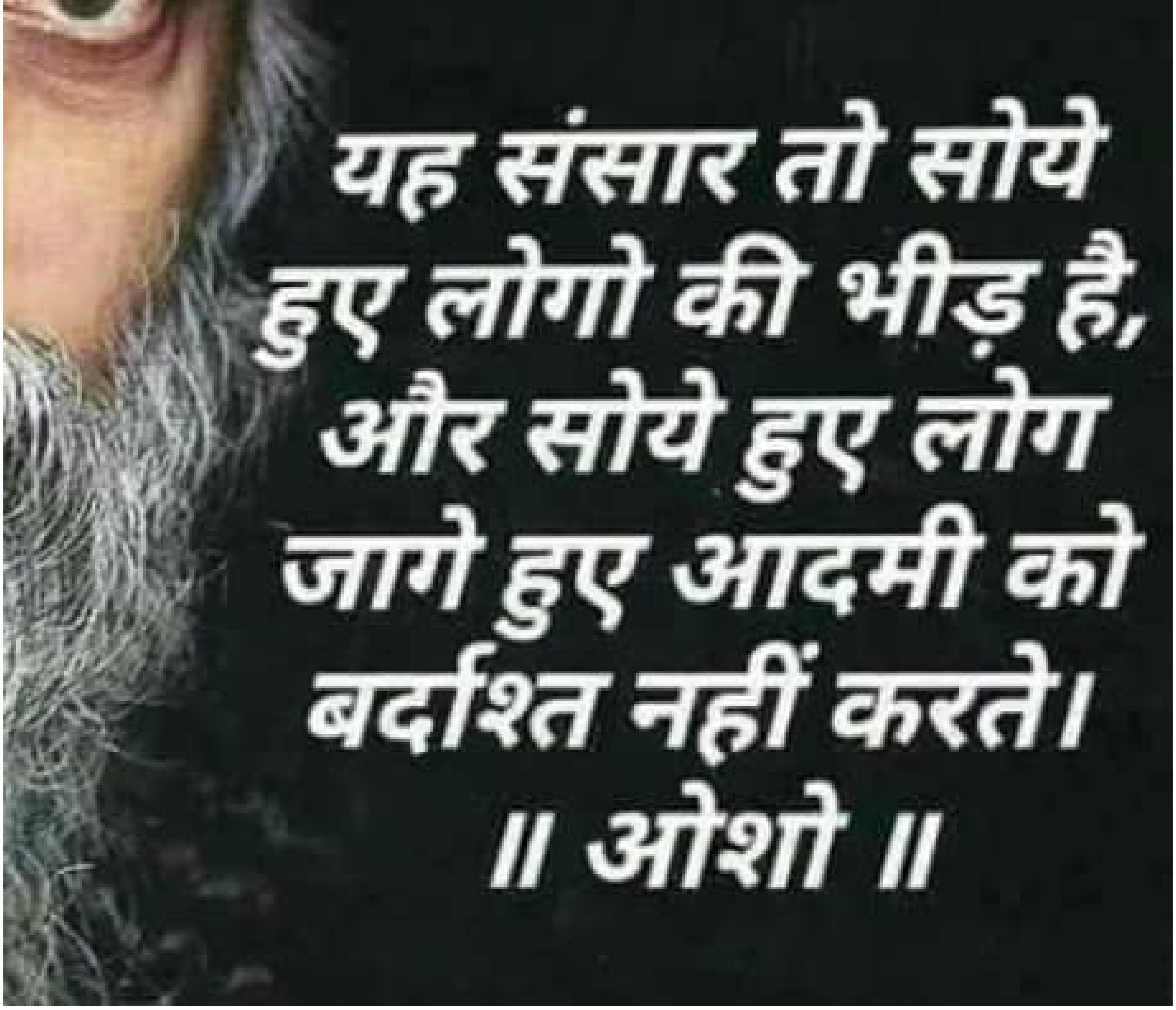

CamScanner

पुरुष सत्य को जानने में उतना ही समर्थ हो जाता है जितनी वह स्त्रैणता ग्रहण करता है।

ओशो अहोभाव

osho_dewane

CamScanner

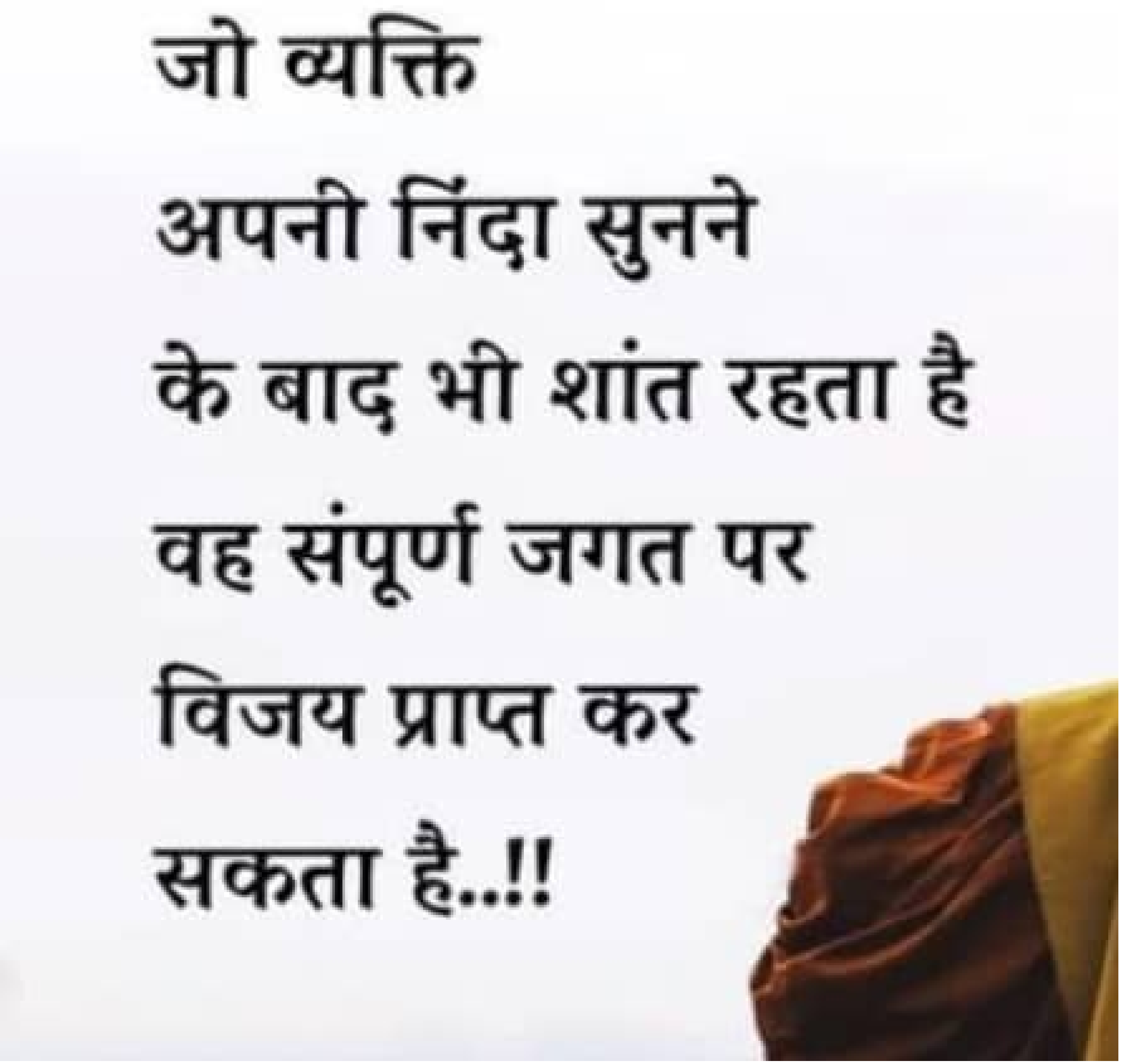

CamScanner

CamScanner

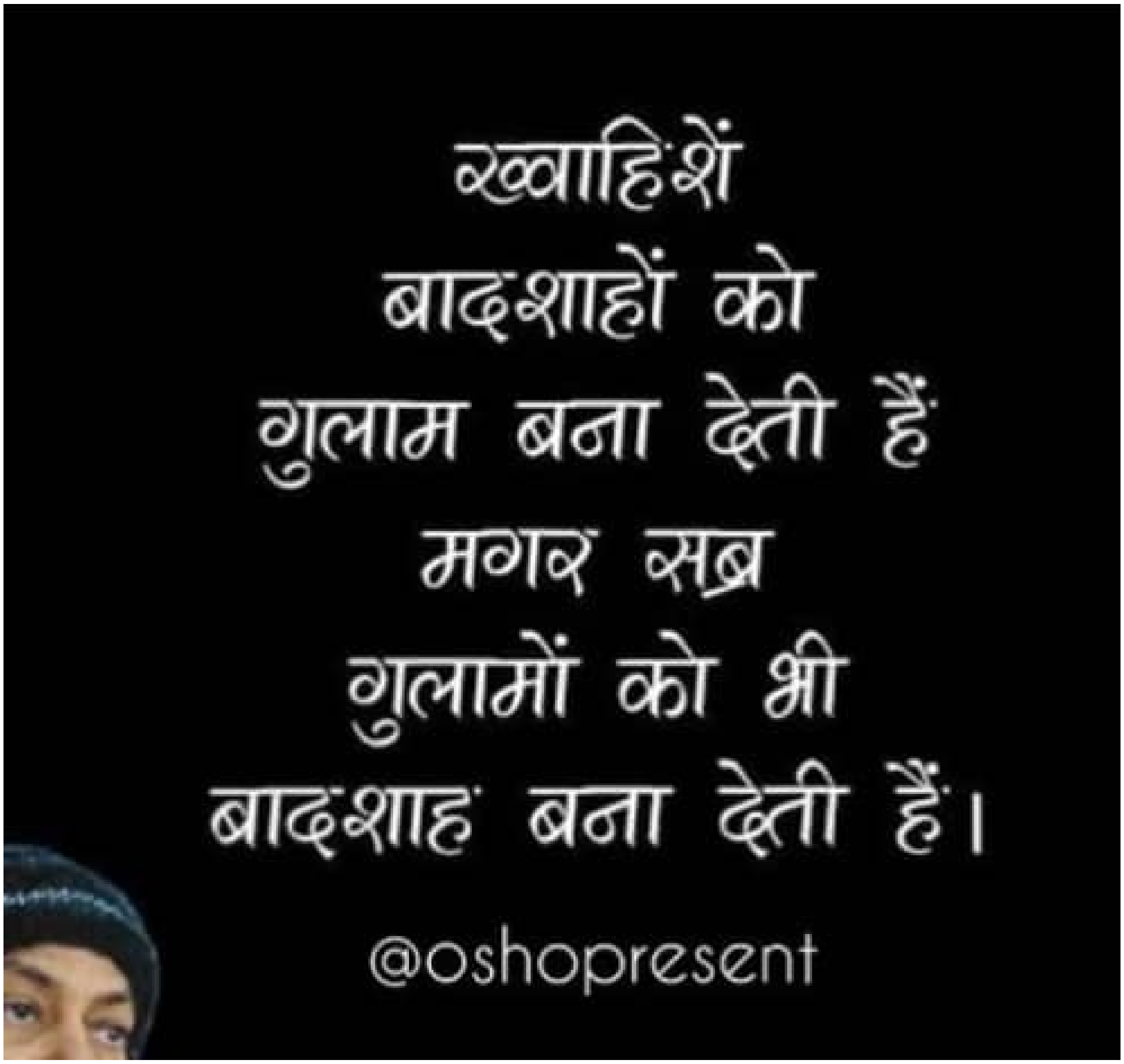

CamScanner

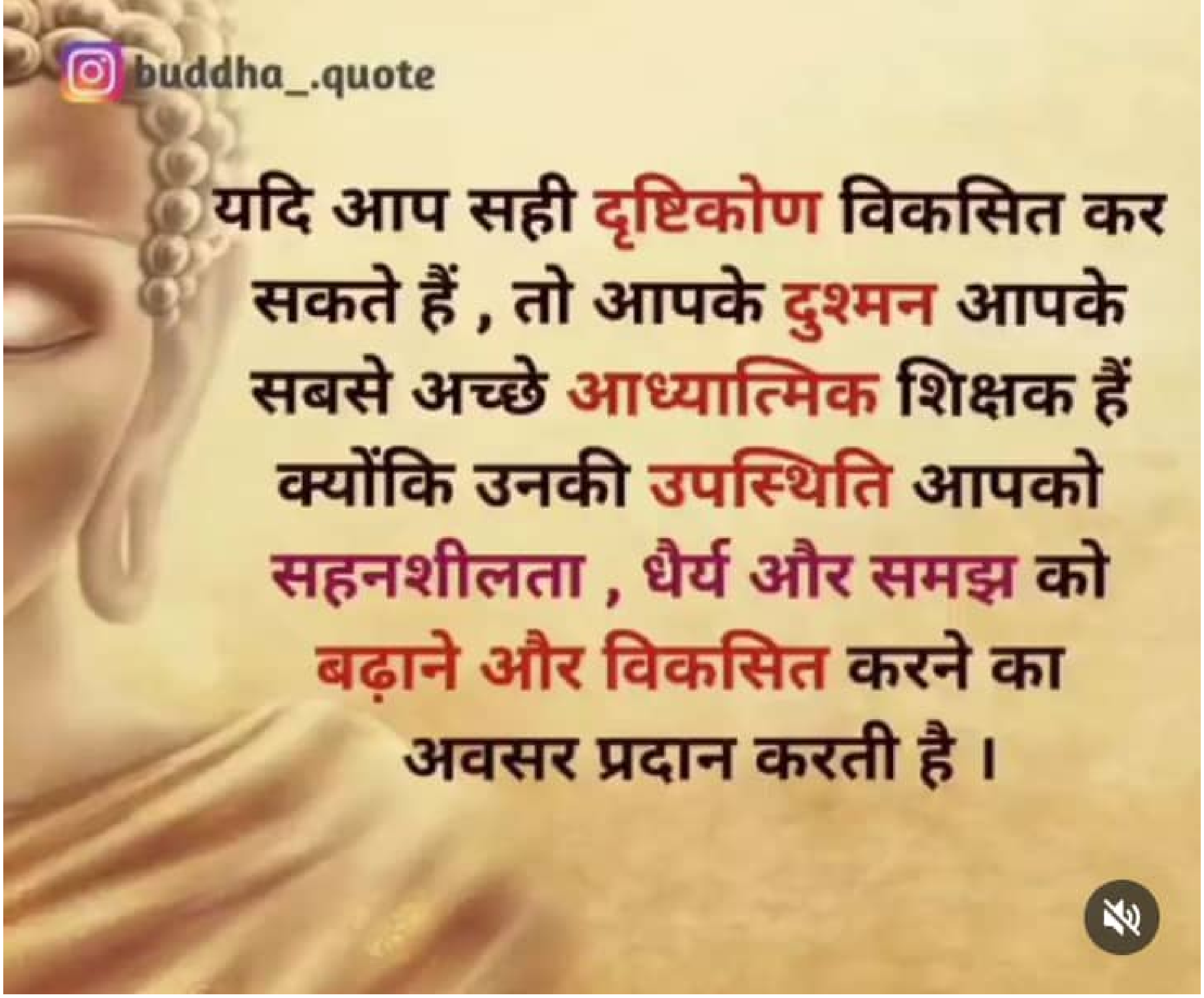
buddha_.quote
यदि आप सही दृष्टिकोण विकसित कर
सकते हैं , तो आपके दुश्मन आपके
सबसे अच्छे आध्यात्मिक शिक्षक हैं
क्योंकि उनकी उपस्थिति आपको
सहनशीलता , धैर्य और समझ को
बढ़ाने और विकसित करने का
अवसर प्रदान करती है ।

CamScanner

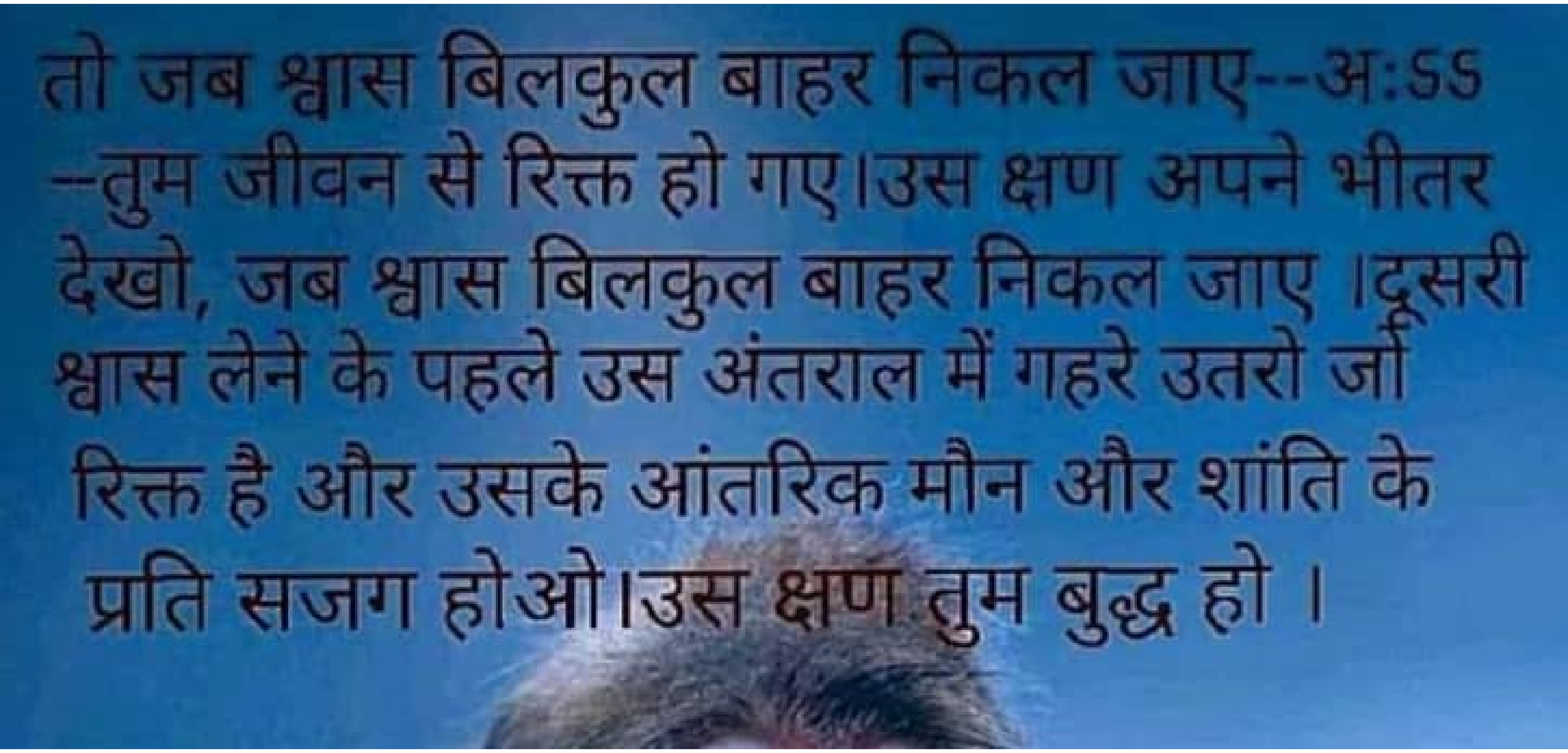
तो जब श्वास बिलकुल बाहर निकल जाए--अ:ऽऽ
--तुम जीवन से रिक्त हो गए।उस क्षण अपने भीतर
देखो, जब श्वास बिलकुल बाहर निकल जाए ।दूसरी
श्वास लेने के पहले उस अंतराल में गहरे उतरो जो
रिक्त है और उसके आंतरिक मौन और शांति के
प्रति सजग होओ।उस क्षण तुम बुद्ध हो ।

CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य

Kunal Pandey · 30m ·

#लाओत्से के पास कोई आता था साधना के लिए, तो लाओत्से कहता था कि एक सप्ताह मेरे पास रूक जाओ, जरा मैं देख तो लूं कि तुम कैसी श्वास लेते हो, कैसी श्वांस छोड़ते हो।

खोजी आया हो, अगर ज्ञानी हो, तो हैरान होगा कि ब्रह्मज्ञान लेने आए, सत्य का पता लगाने आए और यह आदमी कह रहा है कैसी श्वास लेते हो, कैसी छोड़ते हो। सात दिन लाओत्से देखेगा उस आदमी को अनेक हालतों में--सोते में, जागते में, काम करते, चलते वक्त, क्रोध में, प्रेम में--और देखेगा, उसकी श्वास की व्यवस्था क्या है। और जब तक वह श्वास की व्यवस्था न समझ ले, तब तक साधना का कोई सूत्र न देगा। श्वास के साथ ही साधना पूरी की पूरी व्यवस्थित की जा सकती है। तो लाओत्से के इस सूत्र को साधना का सूत्र समझें। अपनी श्वास का ध्यान रखें और श्वास के रूपांतरण की कोशिश करें। श्वास की बदलाहट आपकी बदलाहट हो जाएगी। श्वास में क्रांति आपके स्वयं के व्यक्तित्व की क्रान्ति हो जाएगी। और जैसे-जैसे श्वास गहरी होने लगेगी, आपकी गहराई बढ़ने लगेगी, आपका उथलापन समाप्त हो जाएगा। और जिस दिन श्वास केंद्र पर होगी, उस दिन आप सारे जगत के साथ एक अद्वैत के बिंदु पर मिल जाएंगे। अपने केंद्र पर जो आ गया, वह जगत के केंद्र पर आ जाता है। स्वंय के केंद्र पर जो डूब गया, वह विराट के केंद्र से एक हो जाता है। और जैसे-जैसे आपकी श्वास गहरी और भीतर-भीतर उतरने लगती है, वैसे-वैसे रहस्य के नए पर्दे और सत्य के नए द्वार खुलने शुरू हो जाते हैं। जो मनुष्य के भीतर छिपा है, वही विराठ में विस्तीर्ण होकर फैल हुआ है। जो अपने भीतर गहरे उतर आता है, वह परम के भीतर ऊंचा उठ जाता है।

ओशो, ताओ उपनिषद,

CamScanner

CamScanner

O My Beloved Master

23h ·

मैं उन सभी पलायनवादियों के खिलाफ हूँ जो दुनिया से भाग जाते हैं और चौबीसों घंटे ध्यानी बन जाते हैं।

🟤मैं उनके खिलाफ हूं, मैं उनके बिल्कुल खिलाफ हूं। *एक घंटे का ध्यान काफी हैं।* ध्यान इतनी शक्तिशाली चीज है कि 24 घंटे में से एक घंटा काफी हैं। यह आपके पूरे जीवन को रोशन करेगा।

और *आपका ध्यान सफल हो रहा है या नहीं, इसकी परीक्षा जीवन में हैं*। जब आप ध्यान करते हैं और दुकान पर जाते हैं तो आपको पता चल जाएगा कि आप अपने ध्यान में सफल हो रहे हैं या नहीं। क्या आप अब भी दुकान में उतने ही लालची हैं जितने पहले हुआ करते थे? क्या आप तब भी क्रोधित होते हैं जब कोई आपके खिलाफ कुछ कहता है ? क्या लोग अब भी आपके बटनों को पहले की तरह आसानी से पुश करने का प्रबंधन कर सकते हैं? बाजार-स्थल में आपके ध्यान की परीक्षा होती है।

अगर आप सिर्फ ध्यान करते हैं और कुछ नहीं तो ये व्यक्ति को तैयार और उसकी तैयारी करने जैसा है जो कभी परीक्षा में नहीं जाता है। यह सही नहीं है। *परीक्षा प्रतिदिन होनी चाहिए—एक घंटा ध्यान, तेईस घंटे की परीक्षा* और आप मजबूत होंगे।

ओशो 🧘‍♀️
ज़ेन द पाथ ऑफ़ पैराडॉक्स
v.1 Ch.10

CS CamScanner

मेरे अतिरिक्त मेरा कोई भी नहीं है। यह बड़ा क्रांतिकारी सूत्र है, बड़ा समाज–विरोधी है। क्योंकि समाज जीता इसी आधार पर है कि दूसरे अपने है;जाति के लोग अपने है; देश के लोग अपने है – मेरा देश,मेरी जाति, मेरा धर्म, मेरा परिवार; मेरे का सारा खेल है। समाज जीता है 'मेरी' की धारणा पर। इसलिए धर्म समाज–विरोधी तत्व है। धर्म समाज से छुटकारा है, दूसरे से छुटकारा है। और धर्म कहता है कि तुम्हारे अतिरिक्त तुम्हारा और कोई भी नहीं है।

CamScanner

anamcara Rames
जब कोई व्यक्ति
नितांत अकेला खड़ा हो
जाता है तो
जगत की सारी
शुभ शक्तियां उसको
साथ देने को
आतुर हो जाती है.

CamScanner

तुम इस दुनियाँ की
असारता को पहचानों,
सुन्दर से सुन्दर स्त्री.!
भी एक दिन..
कुरूप हो जाती है.!
जवान से जवान पुरुष
भी एक दिन कुरूप
होकर, चिता पर चढ़ा
दिया जाता है.!
इसलिए तुम भीतर के
सौंदर्य को पहचानों.!
ओशो

CamScanner

एक दिन हृदय की अथाह चुप्पियों को साथ ले एक अनंत यात्रा पर निकल जाएंगे....
और संसार सोचेगा 'मृत्यु हो गयी '..!!

CamScanner

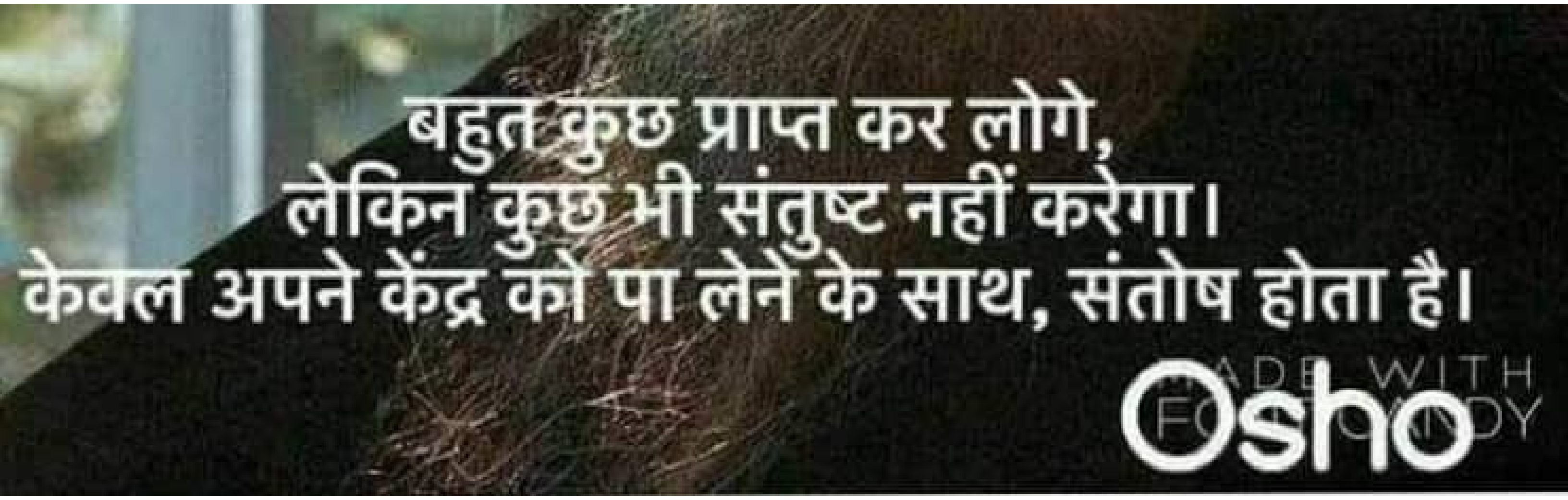
बहुत कुछ प्राप्त कर लोगे,
लेकिन कुछ भी संतुष्ट नहीं करेगा।
केवल अपने केंद्र को पा लेने के साथ, संतोष होता है।
Osho

CamScanner

नहीं पड़ता था कि वह कुछ सोच रहा है। वे दोनों तो तल्लीन हो गए। ठंडी सुबह थी, खिड़कियों से ठंडी हवाएं आती थीं, लेकिन उनके तो माथें से पसीना छूट रहा था, वे तो अपने गणित में लगे हुए थे। वह आदमी धीरे से अचानक उठा। बाहर गया। दरवाजे पर गया। हैंडिल पर उसने हाथ घुमाया, हैरान हो गया, दरवाजा खुला हुआ था। दरवाजा लगा हुआ नहीं था। उसने हैंडिल को घुमाया और दरवाजा हटाया, दरवाजात खुला हुआ था। वह चुपचाप बाहर निकल गया। वे जो दोनों बैठे थे उन्हें पता भी नहीं चला कि अब कमरे में तीन नहीं हैं, दो ही बचे हैं। एक आदमी बाहर निकल गया, उनको पता तब चला जब राजा को लेकर वह आदमी वापस लौटा। और राजा ने कहा, अपना हिसाब बंद करो, अपनी किताबें बंद करो। जिसको निकलना था, वह बाहर निकल चुका है। तुमने पहली बात ही नहीं सोची कि समस्या है भी या नहीं? तुमने पहली बात ही नहीं विचारी कि ताला लगा हुआ है या नहीं लगा हुआ है और तुम ताले के संबंध में खोजबीन करने में संलग्न हो गए।

जिंदगी की पहली समस्या यह है कि हम समस्या को देखें कि वह है या नहीं? लेकिन इसके पहले कि हम समस्या को देखें, समाधान हमारे मन में परंपरा बिठाल देती है। हम उनके ऊहापोह में पड़ जाते हैं। हम ताले खोलने का विचार करने लगते हैं, कैसे खोलें? और शास्त्र अध्ययन करने लगते हैं कि कैसे ताला खोला जाए? और पच्चीस शास्त्र हैं और पच्चीस संप्रदाय हैं और पच्चीस विरोधी लोग हैं और उनके ऊहापोह में हमारा सारा मस्तिष्क जराजीर्ण हो जाता है। जीवन में समस्या क्या है, और है भी या नहीं, इसे देखने का साहस करने वाले बहुत थोड़े से लोग होते हैं। और जो लोग उठकर जीवन की समस्या को सीधा देखते हैं, बीच में शास्त्रों को, परंपराओं को, सिद्धांतों को नहीं लेते, उन्होंने अक्सर पाया है कि जीवन की समस्याएं वे नहीं हैं, जो शास्त्र की समस्याएं हैं। जीवन की पहेलियां वे नहीं हैं, जो गणित की पहेलियां हैं। जीवन बहुत सरल है, अगर चित्त शास्त्रों में भारग्रस्त हो; अगर चित्त परंपरा और ट्रेडीशंस से भरा हुआ न हो। जिंदगी बहुत सरल है। शायद उस पर कोई ताला नहीं लगा हुआ है। शायद द्वार अटका है और धक्का देने से खुल जाएगा।

आँखों देखी सांच

CamScanner

CamScanner

10:18 am 2 KB/s 82%
facebook

और यह व्यस्तता, यह जो ऑक्युपाइड माइंड है--यह दिन-रात व्यस्त होना इसके कारण चित्त निरंतर क्षीण होता चला जाता है। विश्राम का कोई भी क्षण न होने से चित्त दुर्बल हो जाता है। और दुर्बल चित्त सत्य को नहीं जान सकता है। सत्य को जानने के लिए शक्ति से परिपूर्ण, बहता हुआ, भरा हुआ चित्त चाहिए। और ऐसा चित्त तभी हो सकता है, जब आप अव्यस्त होने की थोड़ी सामर्थ्य पैदा कर लें।

एक आदमी को मैं देखता था रोज सांझ वे घूमने जाते थे। लेकिन घूमने भी वे ऐसे जाते थे, इतनी तेजी से कि जैसे किसी युद्ध पर जा रहे हों। तो मैंने उन्हें टोका और मैंने कहा कि आप किसी लड़ाई पर जाते हैं रोज? उन्होंने कहा, लड़ाई पर? मैं तो घूमने जाता हूं। तो मैंने कहा, लेकिन जाते आप ऐसे हैं, इतने तने हुए, इतने खिंचे हुए, इतने परेशान, इतने भागे हुए, जैसे कहीं पहुंचना हो। कहां पहुंचने के लिए जाते हैं? उन्होंने कहा, पहुंचने! मैं सिर्फ घूमने जाता हूं। लेकिन मैंने कहा, आपका मन घूमने की दशा में नहीं होता। घूमने जाने का मतलब है ऐसे जाना, जैसे कहीं पहुंचना नहीं है। कोई हम यात्रा थोड़े ही कर रहे हैं। यात्रा जब कोई करता है तो तना हुआ, खिंचा हुआ--उसे कहीं पहुंचना है।

सारी प्रकृति इसी भांति विश्राम में जी रही है, सिर्फ मनुष्य को छोड़कर। मनुष्य अति तनाव में है। और उसे खयाल भी नहीं है कि इतना तना हुआ होना, इतना व्यस्त, इतना उलझा हुआ होना ही उसे वंचित कर रहा है किसी सत्य को, किसी आनंद को जानने से।

आपको कहीं पहुंचना नहीं है। और अगर आप सम-वेअर, कहीं पहुंचने की कोशिश करेंगे तो एक बात तय समझ लेना, वहां नहीं पहुंच सकेंगे जहां आप हैं। और जिस दिन आप इस तरह जीएंगे, नो-वेअर, कहीं भी नहीं पहुंचना है, उस दिन आप वहां पहुंच जाएंगे, जहां आप हैं। जहां मैं बैठा हूं, वहां पहुंचने के लिए मुझे सब पहुंचने की जो दौड़ है चित्त से, वह छोड़ देनी होगी।

-ओशो – पुस्तक :- असंभव क्रान्ति 💐

CamScanner

1:34 pm 69 KB/s 61%

Instagram

Suggested for you ×

banarasiboy0001 and narayanmishra_official_004
श्री काशीविश्वनाथ ज्योर्तिलिंग मंदिर - Shri Kashi Vishwanat...
Sachet Tandon, Parampara Tandon, Sachet-Param...

Liked by **banarasi_bhaukal** and **41,624 others**

banarasiboy0001 Kashivishwanath 🚩🚩 #kashivishwnath

CamScanner

1:33 pm 113 KB/s 61%

Instagram

2 days ago

todaysuvichar_
Sayani • Dil Ko Karaar Aaya instrumental (Slowed & Re...

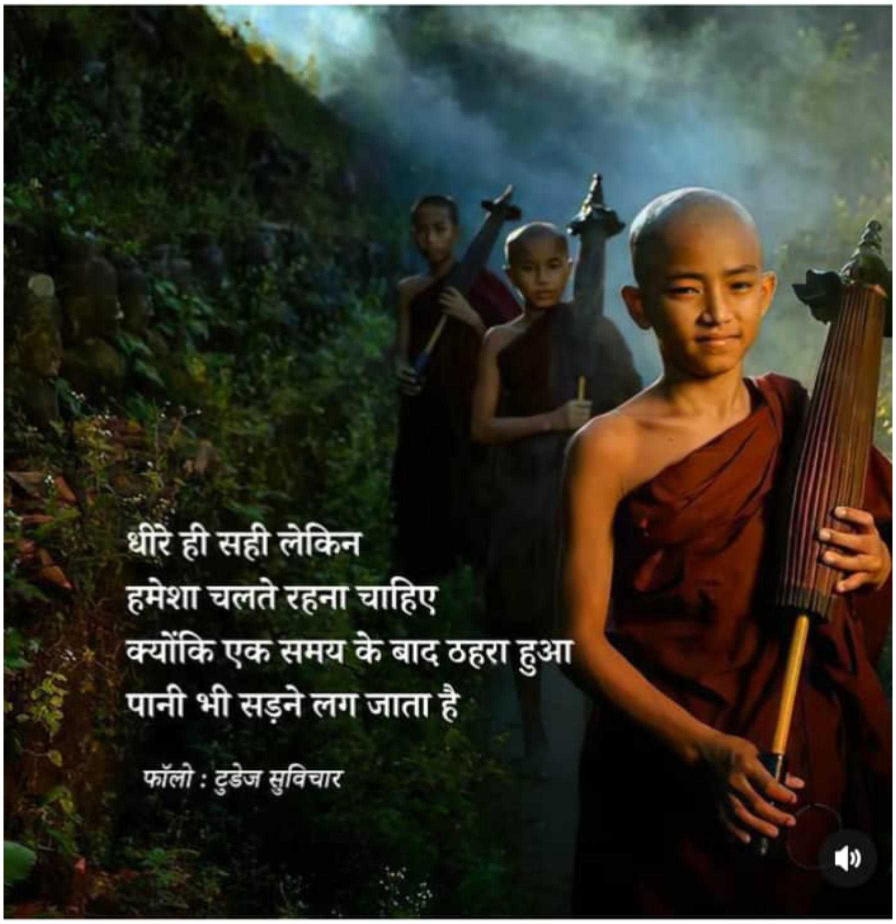

Liked by **komal_raj_noniya** and **others**

todaysuvichar_ बीते हुए कल को कभी याद मत करो और उससे मिले हुए सबक को कभी भूलना नहीं💯💯

View all 5 comments

Add a comment...

5 hours ago • **See translation**

Adswala
Sponsored

CamScanner

1:29 pm 6 KB/s 62%

Instagram

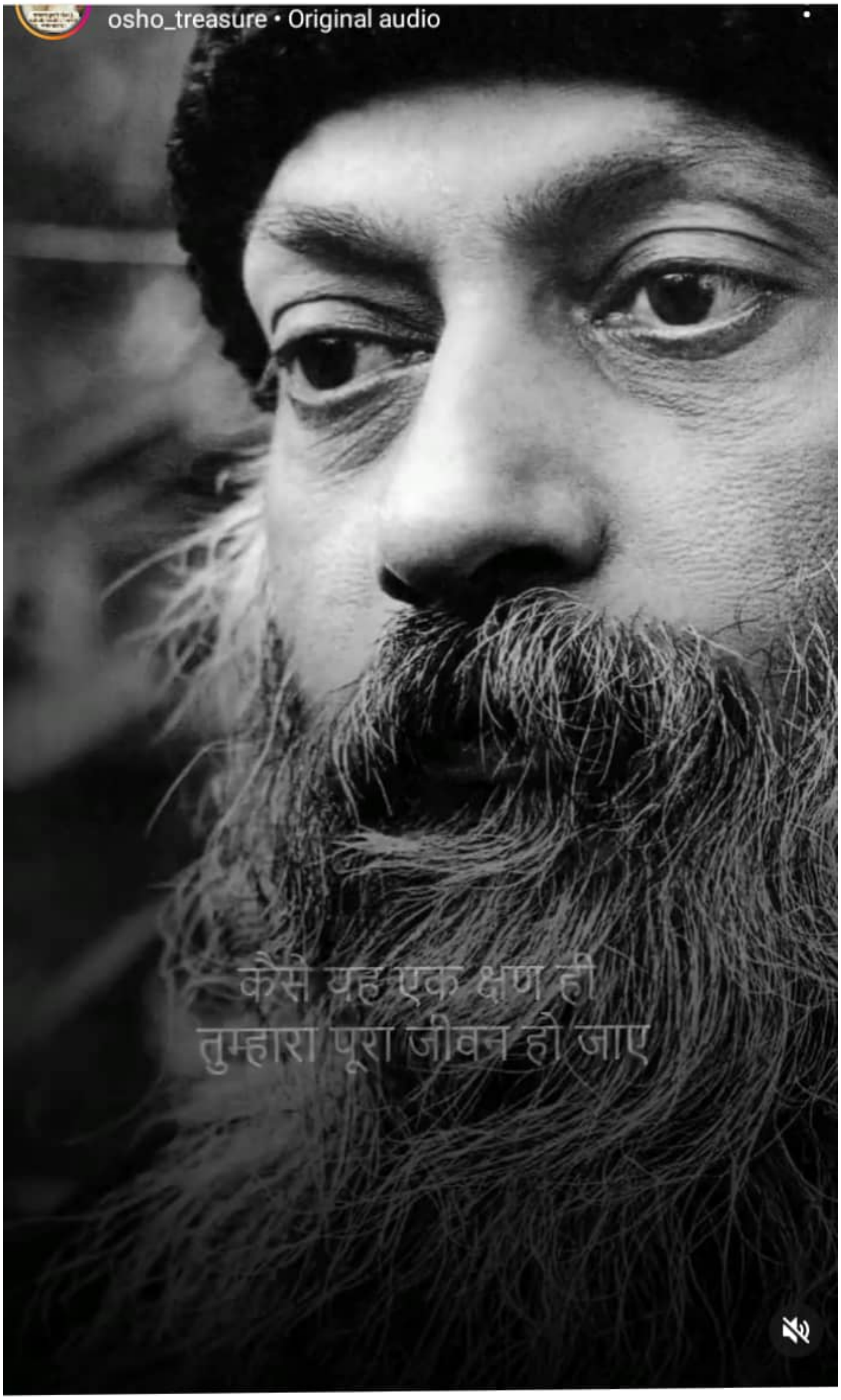

Liked by osho__________rajneesh and 3 others

CamScanner

मौन और मुस्कान
दो शक्तिशाली हथियार होते हैं,
मुस्कान से कई समस्याओं को
हल किया जा सकता है, और मौन
रहकर कई समस्याओं को
दूर रखा जा सकता है।

CS CamScanner

1:25 pm 0 KB/s 63%

osho__________rajneesh

प्रार्थना के नाम पर तुम कुछ मांगना मत।
तुम किसी अधूरी वासना को पूरा करने की
आकांक्षा मत करना। वही लोग करते हैं।
प्रार्थना नहीं करते हैं। भिखमंगापन उनकी
प्रार्थना में प्रकट होता है। यह मिल जाए, वह
मिल जाए, ऐसा हो जाए, वैसा हो जाए।
अगर तुमने कुछ भी मांगा, तो तुमने प्रार्थना
ांदी की, अपवित्र की। तुमने अपनी प्रार्थना में
वासना जोडी कि तुमने प्रार्थना के पंख काट
दिये और प्रार्थना के गले में पत्थर बांध दिये।
वह पक्षी फिर उडेगा नहीं, यहीं तड़ूफाएगा,
यहीं गिरेगा, यहीं मरेगा। इतना ही खयाल
रखना, प्रार्थना में माग न हो। कुछ भी मत
मांगना, परमात्मा को भी मत मांगना
क्योकि मांग तो बस मांग है; मांगा कि चूके।

1 like

Add a comment...

3 days ago

CamScanner

1:21 pm 0 KB/s VoLTE 4G 63%
Khatushyam_ji_sadabad Follow
.... more
View all 3,572 comments
4 June • See translation • MADE WITH EFFECT
osho__________rajneesh

स्वतन्त्र व्यक्ति न हिन्दू होता है, न मुसलमान
होता है, न ईसाइ होता है।
स्वतन्त्र व्यक्ति तो सिर्फ मनुष्य होता है।
स्वतन्त्र व्यक्ति न भारतीय होता है, न पाकिस्तानी
होता है, न चीनी होता है।
न अमेरकी होता है। स्वतन्त्र व्यक्ति तो केवल
मनुष्य होता है।
स्वतन्त्र व्यक्ति तो कहेगा ; सारी पृथ्वी हमारी है,
सारा अस्तित्व हमारा है।
क्यो हम खण्डो मे बॉटे ?
क्योकि सब खण्डो मे बॉटना आज नही कल
युद्ध का कारण बनता है।
लकीरे खीचो, कि उस तरफ संगीने खडी हो गई,
और इस तरफ संगीने खडी हो गई।
फिर लकीरो को जरा यहा-वहा किसी ने पार
किया कि बन्दूके चली।
जब तक जमीन के नक्शे पर लकीरे रहेगी,
तब तक जमीन कभी शांति से नही जी सकती।
प्रेम के बिना शांति की कोई सम्भावना नही है।
ओशो

2 likes
Add a comment...
3 days ago
CamScanner

मूर्च्छा। एक गहरी मूर्च्छा है। हम चल लेते हैं, उठ लेते हैं, काम भी कर लेते हैं, किसी तरह जिंदगी बीत जाती है। मगर किसी तरह ! हमें कुछ पता नहीं चलता कि हम कहां थे, क्यों थे, किसलिए थे ? क्यों जन्में, क्यों जीए, क्यों मरे ; कौन था जो आया और कौन था जो गया, कुछ पता नहीं चलता ! इसको तुम होश कहोगे ! हां, नाम हम बता सकते हैं। वह नाम हमारा नहीं है, दिया हुआ है। और अपना पता भी बता सकते हैं। वह भी हमारा नहीं है, वह भी दिया हुआ है। तुम्हें अपना पता भी नहीं है।

जागो ! झकझोरो अपने को ! अपने प्रत्येक कृत्य को जागरण से जोड़ दो ! जागो ! और जाग तुम सकते हो, वह तुम्हारी संभावना है। वह तुम्हरा जन्मसिद्ध अधिकार है ! ओशो

CamScanner

osho________rajneesh

को तारों से भरा देखकर नहीं झुकते। इनका मंदिर में झुकना झूठा होगा, निश्चित झूठा होगा। यह सच नहीं हो सकता। इसमें हार्दिकता नहीं हो सकती। आदमी की बनाई हुई मूर्ति में इन्हें क्या दिखाई पड़ सकता है? अगर परमात्मा की बनाई हुई मूर्तियों में इन्हें कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा है। इतने अंधे! ये संगमरमर की एक बनी प्रतिमा के सामने झुकते हैं, उसमें हृदय होगा? आदतवश झुक जाते होंगे। बचपन से झुकाए गए होंगे इसलिए झुक जाते होंगे मां—बाप ने कहा होगा, झुको, इसलिए झुक जाते होंगे, भय के कारण झुक जाते होंगे; डर के कारण—कि कहीं नरक न हो, कहीं दंड न मिले। या लोभ के कारण झुक जाते होंगे कि झुकने से स्वर्ग मिलेगा, पुरस्कार मिलेंगे। कि क्या बिगड़ता है, थोड़ी खुशामद कर ली। परमात्मा को भी राजी रखना उचित है। फिर जो करना है करते रहो लेकिन उसे भी राजी रखते रहो।

CamScanner

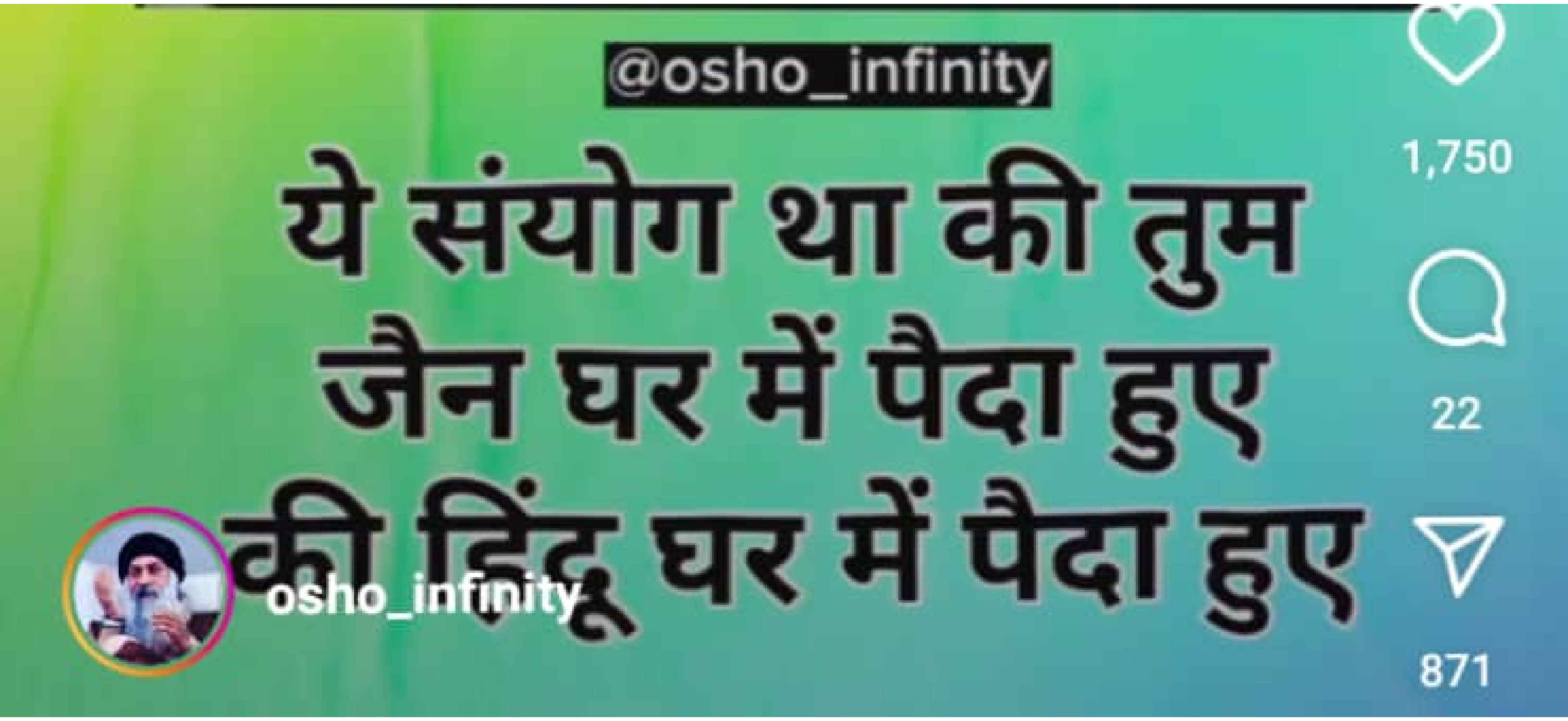
@osho_infinity
ये संयोग था की तुम
जैन घर में पैदा हुए
की हिंदू घर में पैदा हुए
osho_infinity
1,750
22
871

CamScanner

जब तक सुख की खोज है
तब तक तुम दुख पाते ही रहोगे।

ओशो

CamScanner

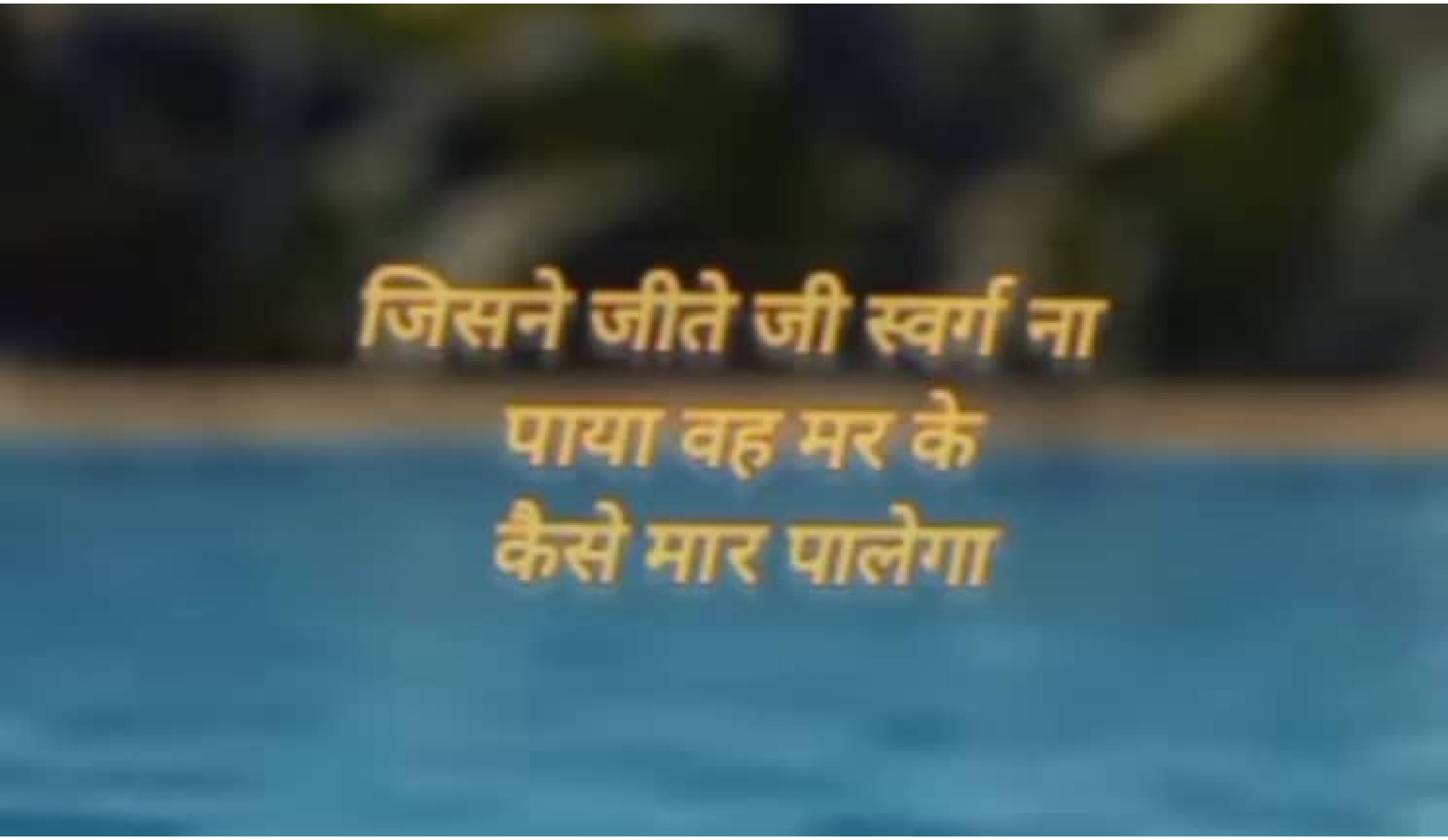

CamScanner

Saideep
जो पल में न जिया,,
OSHO DHYAN UPVAN
HISAR
वो कल में..
@LaughWithUnivers
e
कैसे जिएगा....?
.....ओशो......

CamScanner

CamScanner

उन व्यक्तियों के जीवन में
आनंद और शांति कई गुना बढ़ जाती है.!
जिन्होंने प्रशंसा और निंदा
दोनोंमें एक जैसा रहना शिख लिया.!!

CamScanner

CamScanner

अगर आप तुलना करना छोड़ दें तो निश्चित ही
जिंदगी बहुत खुबसूरत है।

_ Osho

INSTA/@PHILOSOPHY

CamScanner

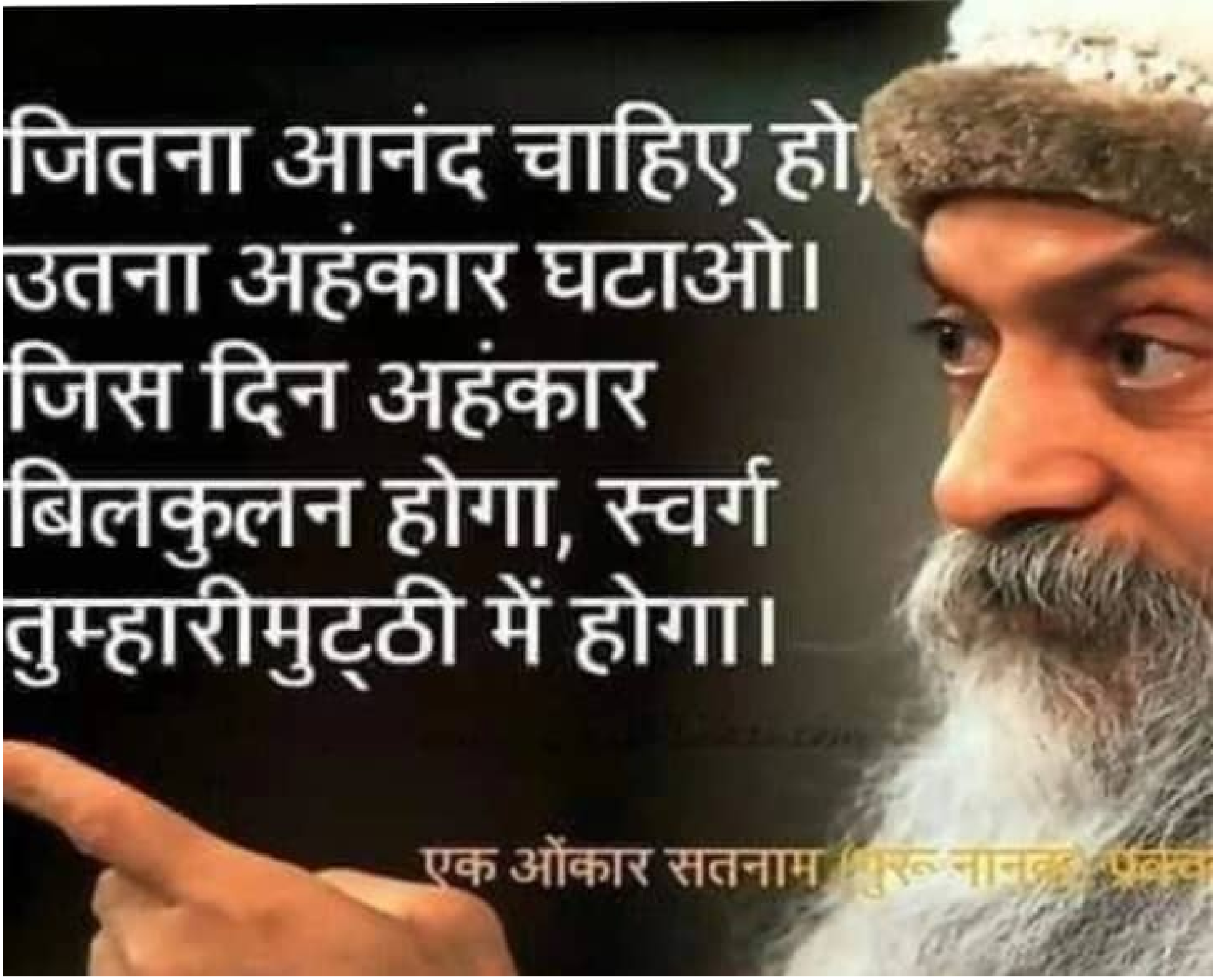
जितना आनंद चाहिए हो,
उतना अहंकार घटाओ।
जिस दिन अहंकार
बिलकुलन होगा, स्वर्ग
तुम्हारीमुट्ठी में होगा।
एक ओंकार सतनाम

CamScanner

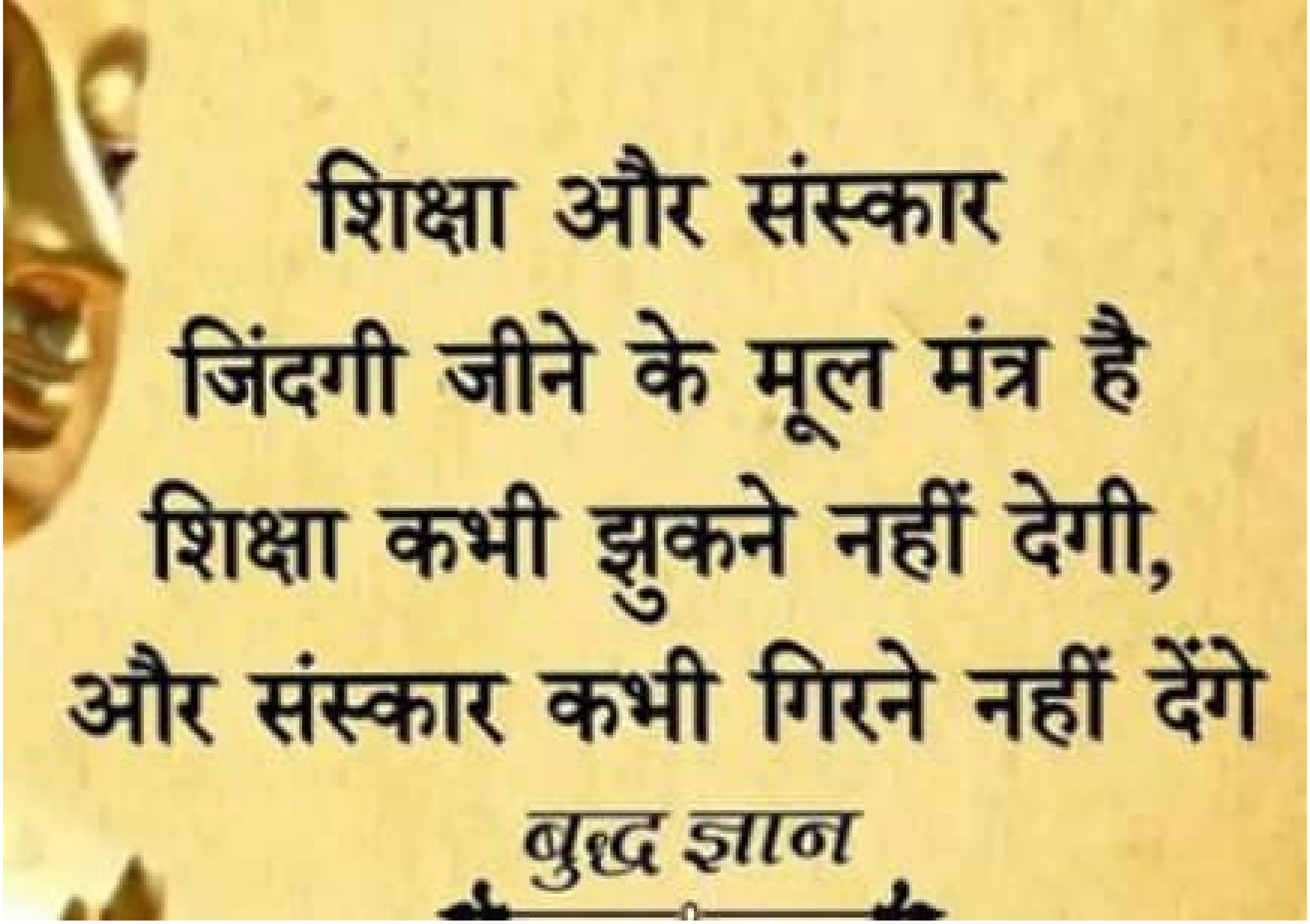
शिक्षा और संस्कार
जिंदगी जीने के मूल मंत्र है
शिक्षा कभी झुकने नहीं देगी,
और संस्कार कभी गिरने नहीं देंगे
बुद्ध ज्ञान

CamScanner

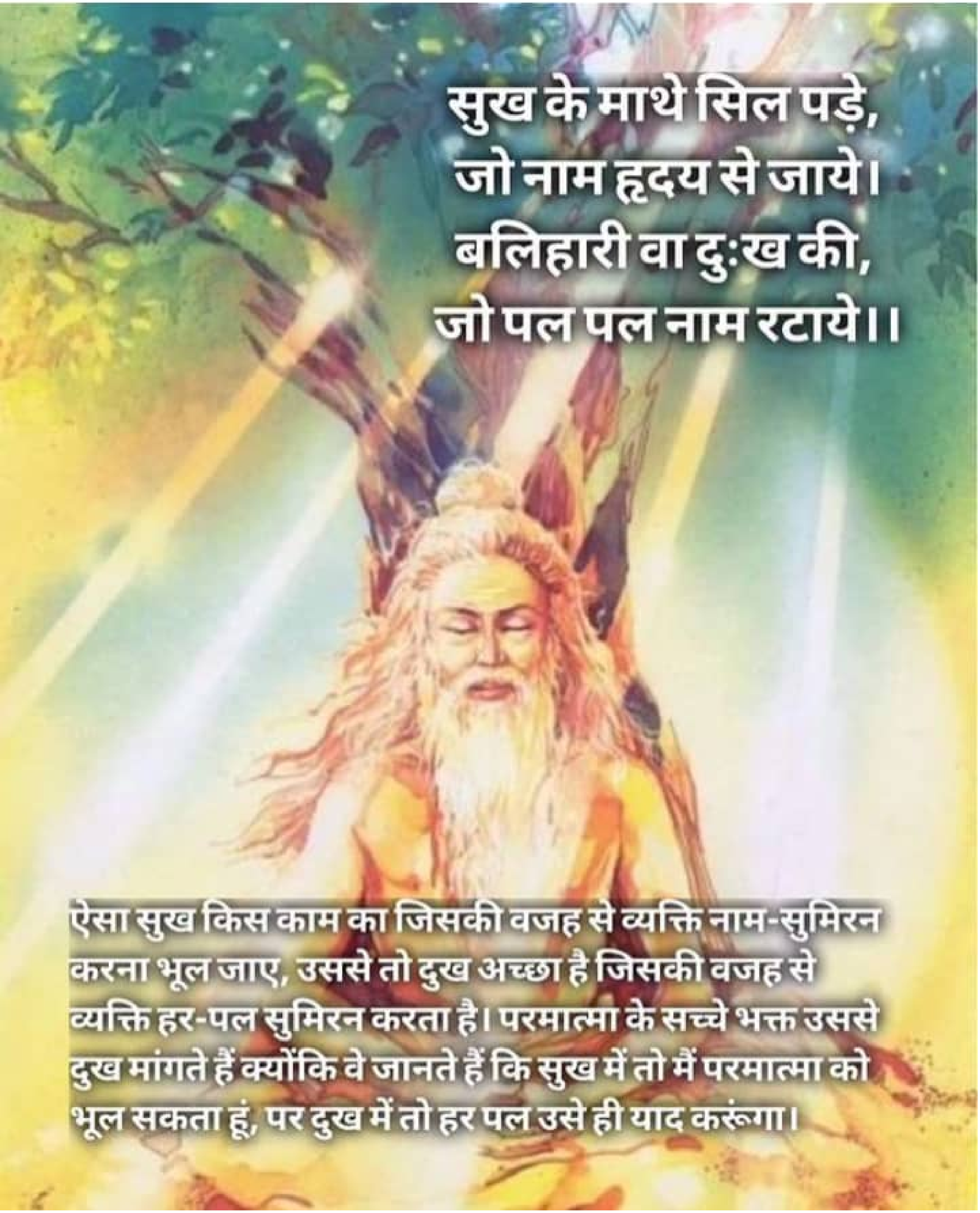
सुख के माथे सिल पड़े,
जो नाम हृदय से जाये।
बलिहारी वा दुःख की,
जो पल पल नाम रटाये।।
ऐसा सुख किस काम का जिसकी वजह से व्यक्ति नाम-सुमिरन करना भूल जाए, उससे तो दुख अच्छा है जिसकी वजह से व्यक्ति हर-पल सुमिरन करता है। परमात्मा के सच्चे भक्त उससे दुख मांगते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सुख में तो मैं परमात्मा को भूल सकता हूं, पर दुख में तो हर पल उसे ही याद करूंगा।

CamScanner

बाजार और रिश्तों के, दौलत और जायदाद के, देवतावों और शैतानों के शोरगुल से परे, मौन का एक मंदिर है। यहीं पर प्राणी बनाए और मिटाए जाते हैं।

Sadhguru

CamScanner

CamScanner

"अज्ञान की शक्ति क्रोध है,
और ज्ञान की शक्ति मौन है"

CamScanner

अधिकतर पुरुष मौके के अभाव में
चरित्रवान ही रह जाते है..

जबकि वो चरित्रवान है नही
बस मौका नही मिला..

osho

CS CamScanner

यह भी थोड़ा सोच लेने जैसा है। जैसे मैंने कहा, शुभ और अशुभ, वैसे ही शिव अकेले ही व्यक्ति हैं जिसमें स्त्री और पुरुष सम हो गए हैं। इसलिए हमने #अर्धनारीश्वर की मूर्ति बनाई। वह बेजोड़ है सारे जगत में। कहीं भी ऐसी कोई मूर्ति नहीं है किसी परमात्मा की कल्पना की, जहां स्त्री और पुरुष को हमने आधा-आधा अंग रखा हो। दुनिया के अधिकतम ईश्वर पुरुष हैं। कुछ आदिम जातियों के ईश्वर स्त्रैण हैं— काली माता है, या और। लेकिन आमतौर से अधिक ईश्वर पुरुष हैं। यह दोनों ही बातें अधूरी हैं। क्योंकि अगर ईश्वर पुरुष है, तो स्त्री का व्यक्तित्व कभी भी पुरुष के समान नहीं हो सकता। वह हमेशा नंबर दो का व्यक्तित्व होगा।

इसलिए #ईसाइयत ईश्वर को पुरुष मानती है तो स्त्री को सिर्फ आदमी की हड्डी से, पसली से बना हुआ मानती है। एक"सेकेंडरी" घटना है। एक द्वितीय कोटि की घटना है। जरूरत पड़ी अदम को, अकेले में उसका मन नहीं लगता था, तो एक खिलौने की तरह स्त्री उसकी हड्डी से निकाल कर बना दी गई। पर इससे ज्यादा इसका कोई मूल्य नहीं है। ईसाइयत के पास ईश्वर की स्त्रैण... स्त्रैण तत्त्व को भी ईश्वर में प्रवेश करने का कोई उपाय नहीं है। कोई उपाय नहीं है। ईश्वर के तीन रूप ईसाइयत ने माने हैं — गॉड दि फायर, गॉड दि सन एण्ड दि होली घोस्ट। ईश्वरः पिता, ईश्वरः पुत्र, और ईश्वरः पवित्र आत्मा। लेकिन तीनों में से कोई भी स्त्रैण नहीं हैं। सभी पुरुष हैं।

फिर ईश्वर को माननेवाले आदिम समाज भी हैं। लेकिन उनके पास #पुरुष की कोई धारणा नहीं है। जिन समाजों में स्त्री की सत्ता थी उन्होंने ईश्वर को स्त्रैण बना लिया। और जिन समाजों मे पुरुष की सत्ता थी, उन्होंने #ईश्वर को पुरुष बना लिया। ये सामाजिक दुर्घटनाएं हैं, इनसे ईश्वर का कोई संबंध नहीं है।

लेकिन #शिव अकेला ही एक प्रतीक है, जिसमें हमने स्त्री और पुरुष को बराबर मात्रा दी है। आधा अंग पुरुष का आधा अंग स्त्री का। और मजे की बात है कि आधा अंग पुरष का, आधा अंग #स्त्री का हो, तो फिर दोनों का संतुलन काट देता है और व्यक्तित्व दोनों के पार हो जाता है।

CamScanner

फिर ईश्वर को माननेवाले आदिम समाज भी हैं। लेकिन उनके पास #पुरुष की कोई धारणा नहीं है। जिन समाजों में स्त्री की सत्ता थी उन्होंने ईश्वर को स्त्रैण बना लिया। और जिन समाजों मे पुरुष की सत्ता थी, उन्होंने #ईश्वर को पुरुष बना लिया। ये सामाजिक दुर्घटनाएं हैं, इनसे ईश्वर का कोई संबंध नहीं है।

लेकिन #शिव अकेला ही एक प्रतीक है, जिसमें हमने स्त्री और पुरुष को बराबर मात्रा दी है। आधा अंग पुरुष का आधा अंग स्त्री का। और मजे की बात है कि आधा अंग पुरष का, आधा अंग #स्त्री का हो, तो फिर दोनों का संतुलन काट देता है और व्यक्तित्व दोनों के पार हो जाता है। यह वैज्ञानिक गणित है कि जहां भी दो विरोधी चीजें सम हो जाती हैं, तो व्यक्तित्व तत्काल तीसरा हो जाता है। वह पार हो जाता है, दोनों के। वह फिर वही नहीं रह जाता है।

तो पहली बात कही है कि उमासहायक। यह बहुत मजेदार बात है— उमा के सहायक। या उमा के #प्रेमी, या उमा के मित्र, या #उमा के पति। लेकिन दोनों को बराबर, दोनों को बराबर रखने की दृष्टि है। और दोनों बराबर हों, तो ही हम लैंगिक-भेद से ईश्वर को पार ले जाते हैं।

🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷

कैवल्य उपनिषद
प्रवचन - ०७
मिलन तक मिलन अनिश्चय में

CS CamScanner

एक पंद्रह दिन के लिए एंबीशन छोड़ कर देखें, सिर्फ पंद्रह दिन के लिएएक पंद्रह दिन के लिए ऐसे जीएं कि जो है ठीक है। कुछ भी नहीं होना है, कुछ भी नहीं पाना है। कहीं नहीं पहुंचना है, जो है ठीक है। मैं एंबीशन छोड़ता हूं। पंद्रह दिन एक नॉन-एंबीशस आदमी की तरह जीऊंगा, जिसकी कोई महत्वाकांक्षा नहीं है।

और आप पंद्रह दिन के बाद दुबारा दुनिया में महत्वाकांक्षा रखने में समर्थ नहीं रह जाएंगे।

CamScanner

भीतरी तत्व को तुम तभी जान पाओगे जब तुम बाहर से सब लेन देन बन्द कर दोगे।

ओशो अहोभाव

CamScanner

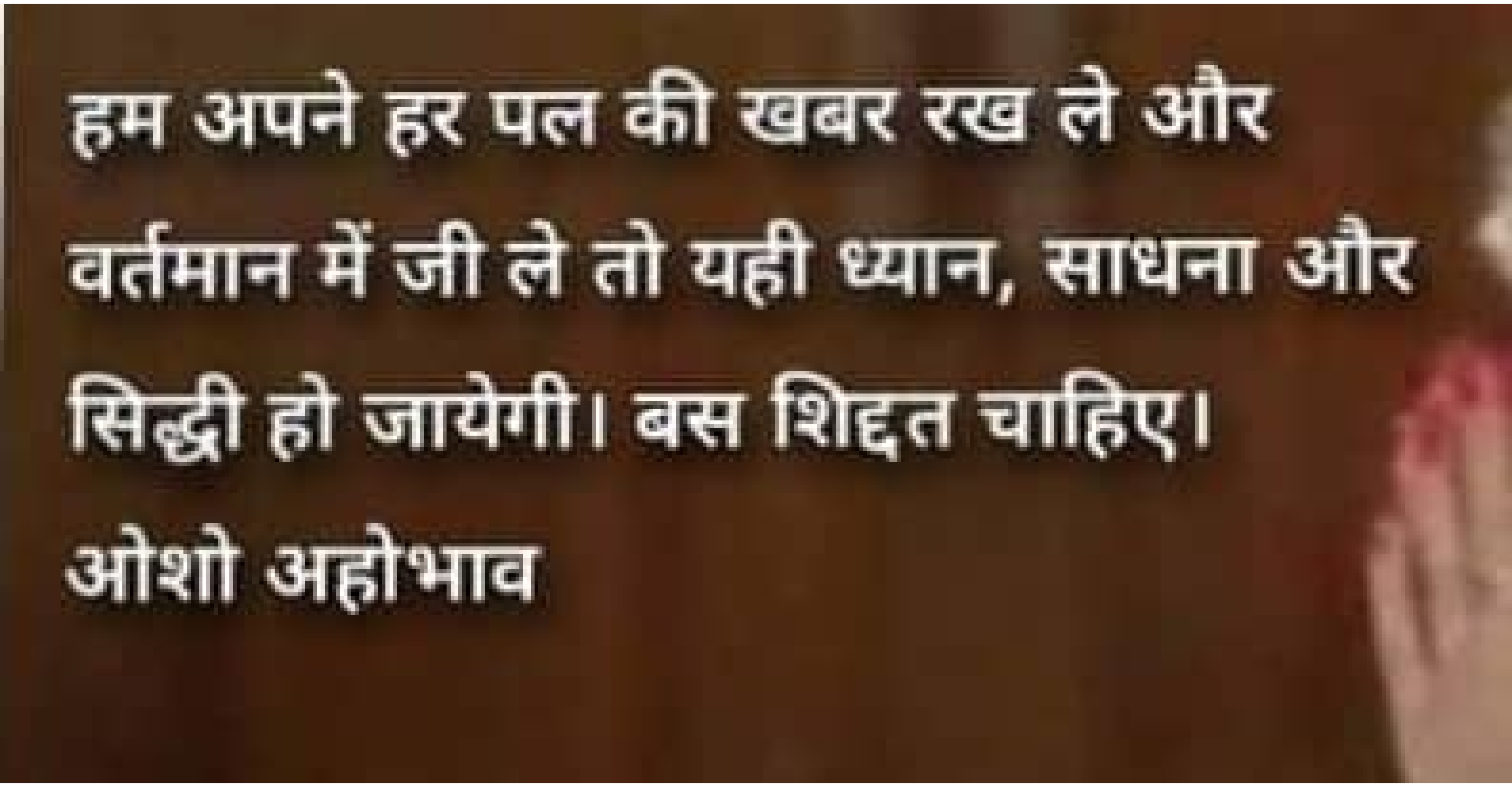
हम अपने हर पल की खबर रख ले और
वर्तमान में जी ले तो यही ध्यान, साधना और
सिद्धी हो जायेगी। बस शिद्दत चाहिए।
ओशो अहोभाव

CamScanner

सत्य का अनुभव तो अकेले में होता है। इतने अकेले में कि न केवल भीड़ बाहर न हो, बल्कि चित्त के भीतर भी सब मित्र विदा ले लें, सारी भीड़ चली जाए, भीतर कोई न रह जाए, सन्नाटा रह जाए, अकेले रह जाएं। उस टोटल लोनलीनेस में, उस एकदम भीतर के अकेलेपन में जानता है व्यक्ति अपनी आत्मा को, जानता है सत्य को, और उसी एकांत में, उसी तन्हाई में, उसी अकेलेपन में जुड़ जाता है सारे विश्व की सत्ता से। ओशो संकलन : Dr Sohan Lal Narang

CamScanner

दुआ कभी साथ नहीं छोड़ती
और
बद्दुआ कभी पीछा नहीं छोड़ती।
जो दोगे वही लौटकर आएगा।
फिर चाहे वह
इज़्ज़त हो या
धोका।

CamScanner

मीरा ठीक कहती है
न मैं जानूं आरती - वंदन,
न पूजा की रीति....!!
बात भाव की है,
भाषा की नहीं है !
अंतर्तम की है !!
* ओशो *
Munabai Makvana

CamScanner

CamScanner

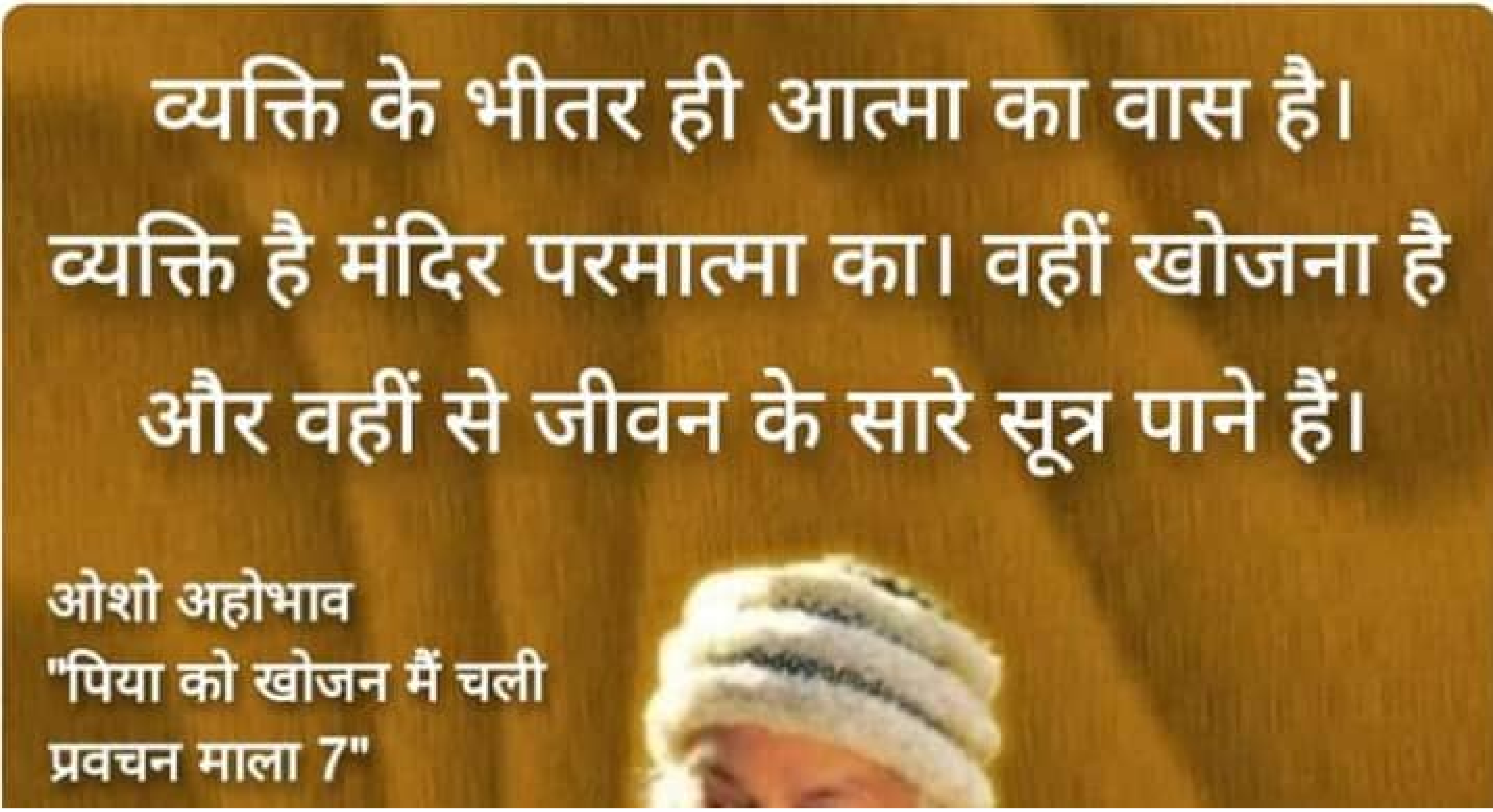
व्यक्ति के भीतर ही आत्मा का वास है।
व्यक्ति है मंदिर परमात्मा का। वहीं खोजना है
और वहीं से जीवन के सारे सूत्र पाने हैं।
ओशो अहोभाव
"पिया को खोजन मैं चली
प्रवचन माला 7"

CamScanner

आज का विचार - शून्य हो जाना..
कभी कभी सब विचार छोड़ देने चाहिए...
न अच्छा सोचो न बुरा न सुख का न दुख का...
न बीते कल का न आज का न आने वाले कल का...
शून्य हो जाओ, शांत हो जाओ..विचारों के शोर को दूर भगाओ...
और बस चुपचाप अपनी सांसों का आना जाना देखो
और ये अहसास करो कि इन सांसों का चलना ही परमात्मा की सबसे बड़ी कृपा है...
जिस दिन ये सांसें बंद... सब खेल ख़त्म हो जाएगा...
इसलिए दिन में पांच मिनट ही सही...
सब कुछ भूल कर अपनी सांसों से जुड़ो...
विचार तनाव देते हैं... सांसे जीवन भी देती हैं और सुकून भी...
कर के देखिए... अच्छा लगेगा..
आखें बंद, चित्त शांत,विचार शून्य और बस सांस से रिश्ता....
हरी ॐ तत् सत् ॐ नमः शिवाय 🛐🌹🙏

CS CamScanner

@Anonymous
/sacchii.baatein
चल जिंदगी नई शुरुआत करते
है.. जो उम्मीद औरों से
की थी... चल वो अपने आप से
करते है..

CamScanner

परमात्मा से मतलब नहीं है कि
कहीं कोई ऊपर बैठे हुए हैं सज्जन,
और उनके आपको दर्शन होंगे, और वे आप
पर कृपा करेंगे। और आप उनके चरणों में
बैठेंगे और जाकर वहां स्वर्ग में मजे करेंगे।
ऐसा कोई परमात्मा कहीं नहीं है। और अगर
से परमात्मा की तलाश में हों, तो भ्रम में हैं
ऐसा परमात्मा कभी नहीं मिलेगा।
आज तक किसी को नहीं मिला है।

CamScanner

CS CamScanner

Osho Thoughts

अहोभाव · 10h ·

अहोभाव

आदमी इस पृथ्वी पर अकेला पाखंडी है।
बाकी सब सहज सरल हैं। जैसा है वैसा ही है।
ज्यूँका त्यूँ ठहराया। सब वैसे ही का वैसा ठहरा है।
पीपल पीपल है, नीम नीम है, आम आम है।
सब वैसा - का - वैसा ठहरा है, सिर्फ आदमी डाँवाँडोल है। आदमी कुछ-का-कुछ हो जाता है। कुछ भीतर, बाहर कुछ। कुछ कहता, कुछ करता । कुछ हिसाब ही नहीं है। न-मालूम कितनी पर्तें -दर-पर्तें हैं । न - मालूम कितना पाखंड है। धीरे-धीरे याद ही नहीं रह जाती कि मैं कौन हूँ - इतने नकाब लगा देता है, इतने मुखौटे ओढ़ लेता है, पहचान ही भूल जाती है कि मेरा असली चेहरा क्या है?

और यह होगा ही, जब तक तुम जीवन के इस परम नियम को न समझ लोगे।

ओशो

CamScanner

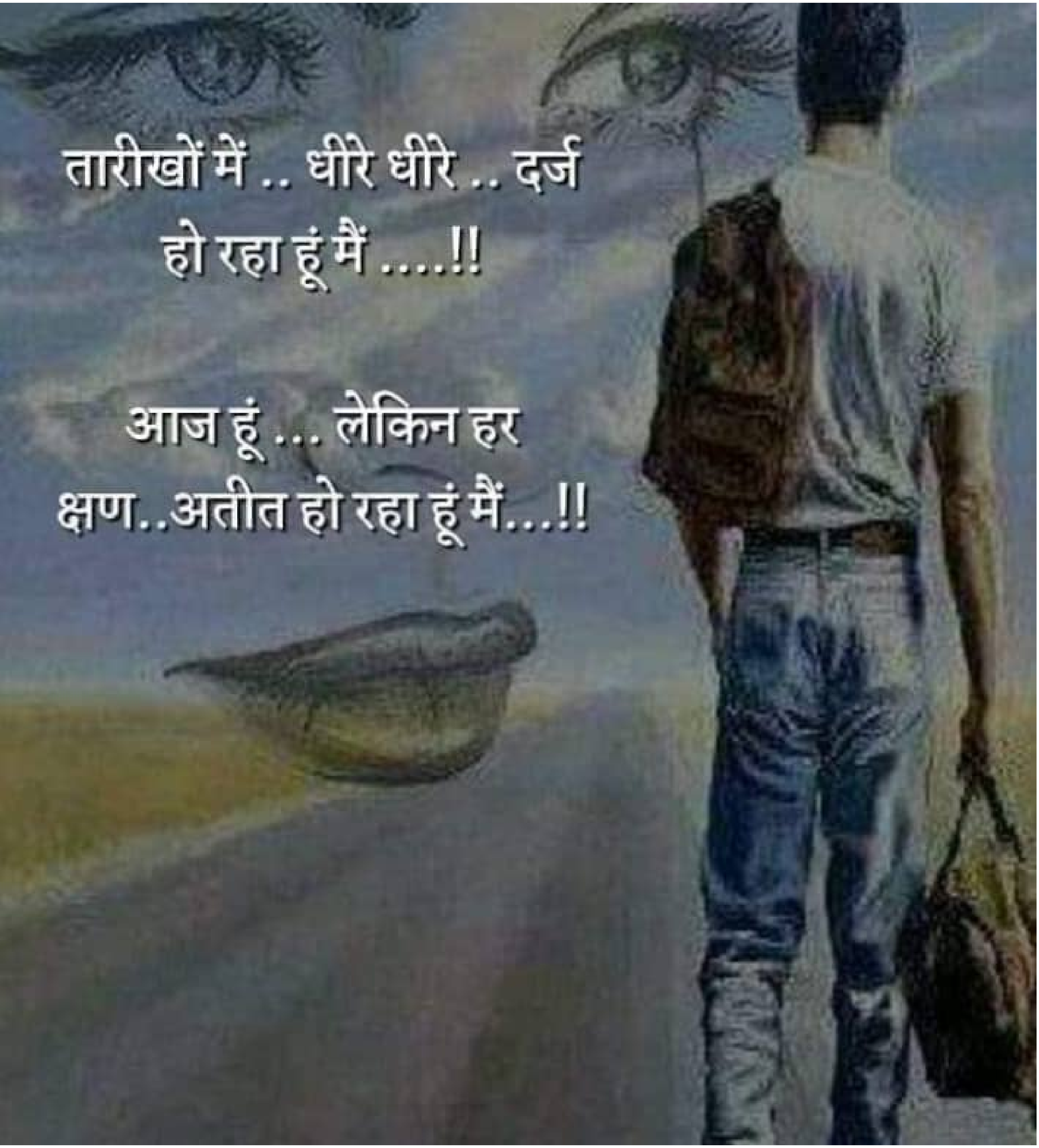

CamScanner

9:33 am 0 KB/s VoLTE 4G 97%

2 Years Ago

See your memories >

Maa Diwani Prbhuvaani

28 Aug 2021 ·

ओशो आज का अ-विचार ®

यात्री भी तुम्हीं हो; यात्रा भी तुम्हीं हो; यात्रा का लक्ष्य और गंतव्य भी तुम्हीं हो। इसलिए बिना कहीं जाए भी पहुंचना हो सकता है। जहां बैठे हो वहीं बैठे-बैठे भी पहुंचना हो सकता है। जरा भी बिना हिले-डुले भी पहुंचना हो सकता है। और जो बाहर खोजने गए वे भटक गए। यात्रा पहले कदम से ही गलत हो गयी।

CamScanner

9:31 am 0 KB/s 97%

भी उसके द्वार पर आते थे।

उसने बुढ़िया का बहुत—बहुत धन्यवाद किया और कहा कि देख, तुझे पता नहीं कि तुझे सौभाग्य से किसको बचाने का अवसर मिला है! मैं यूनान का सबसे बड़ा ज्योतिषी हूं। तारों, नक्षत्रों, उनकी गतिविधियों, मनुष्य के भाग्य से उनके संबंध में मुझसे बड़ा कोई जानकार पृथ्वी पर नहीं है। बड़े से बड़े सम्राट: मेरे पास आते हैं। मेरी फीस भी बहुत ज्यादा है। लेकिन तूने मुझे बचाया है तो तेरा भाग्य मैं बिना फीस के देख दूंगा, तू कल आ जाना।

वह बुढ़िया हंसने लगी। उस ज्योतिषी ने कहा : तू हंसती क्यों है? उसने कहा. मैं इसलिए हंसती हूं कि जिसे अपने सामने का कुआं नहीं दिखाई पड़ता, उसे चांद—तारों की गतिविधि, नक्षत्र और भविष्य...। तुझे अपने पैर सम्हलते नहीं हैं, तू मेरा भविष्य बतायेगा? होश में आ!

और कहते हैं यह घटना उस ज्योतिषी के जीवन में क्रांति का कारण बन गयी। उसने ज्योतिष छोड़ दी। यह चोट भारी थी! यह बात भी इतनी सच थी! सामने पैर के कुआं है, नहीं दिखाई पड़ा! मगर उसे क्यों कुआं नहीं दिखाई पड़ा था? नहीं कि उसके पास आंख नहीं थी; आंख थी, मगर आंख दूर के तारों पर अटकी थी!

यही आदर्शवादी की भ्रांति है, उसकी आंख दूर के तारों पर अटकी है। आदर्शवादी कहता है मोक्ष पायेंगे! अभी यह सड़ा—गला क्रोध, इससे छुटकारा नहीं हो रहा है। यह सड़ा—गला काम, इससे छुटकारा नहीं हो रहा है। मोक्ष पायेंगे! बैकुंठ जायेंगे! निर्वाण होगा! आंखें बड़े दूर के आकाश पर लगी हैं। और उसकी वजह से रोज—रोज गड्ढों में गिर रहे हो। गड्ढे—क्रोध के, काम के, वैमनस्य के, ईर्ष्या के, घृणा के! मैं तुमसे कहता हूं : आंखें लौटा लाओ जमीन पर। जहां चलना है वहीं आंखें होनी चाहिए। इस क्षण में ही आंखें होनी चाहिए, क्योंकि गड्ढे यहां हैं। और सारे गड्ढों से तुम बच जाओ, तो उसी बचाव का नाम मोक्ष है। मोक्ष कहीं दूर आकाश में नहीं है। जिसके जीवन में गिरने की संभावना न रही, वही मुक्त है।

ओशो

CamScanner

CamScanner

9:10 am 0 KB/s VoLTE 4G 97%

Like Comment Send

Awākēn
20 Aug ·

#गौरी

काम क्रोध तज ध्यय घनघोरा, कवन सो मंत्र जपै शिव मोरा।
पुछहि गौरी तब निकट में जाहि, बोले अघोर मंद मुशकाई।।

#शंकर

सुन योगिनी मोर नियम कठोरा, स्वास में #सोहम जपई अघोरा।
ओह विधि अर्धिनी हिय तेहू मोरी, यहुं विधि गुरु भया मैं तोरी।।

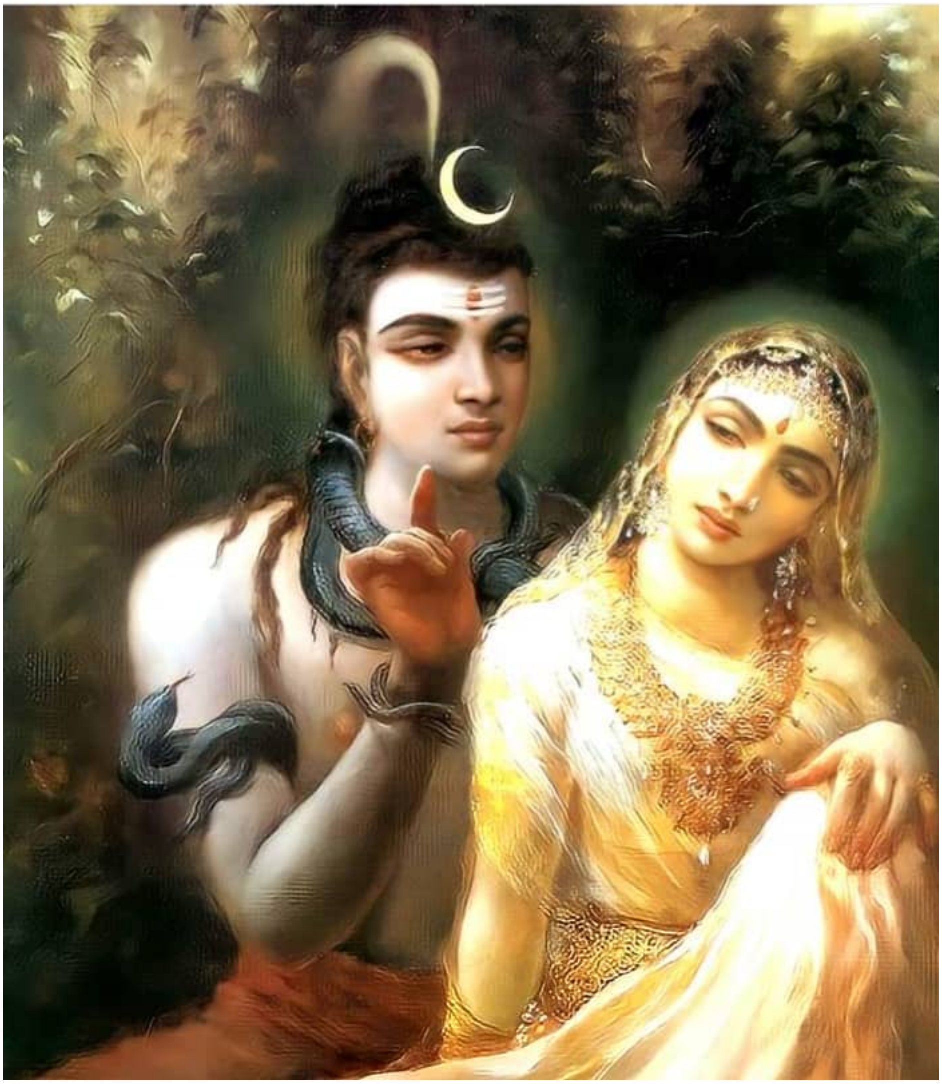

CamScanner

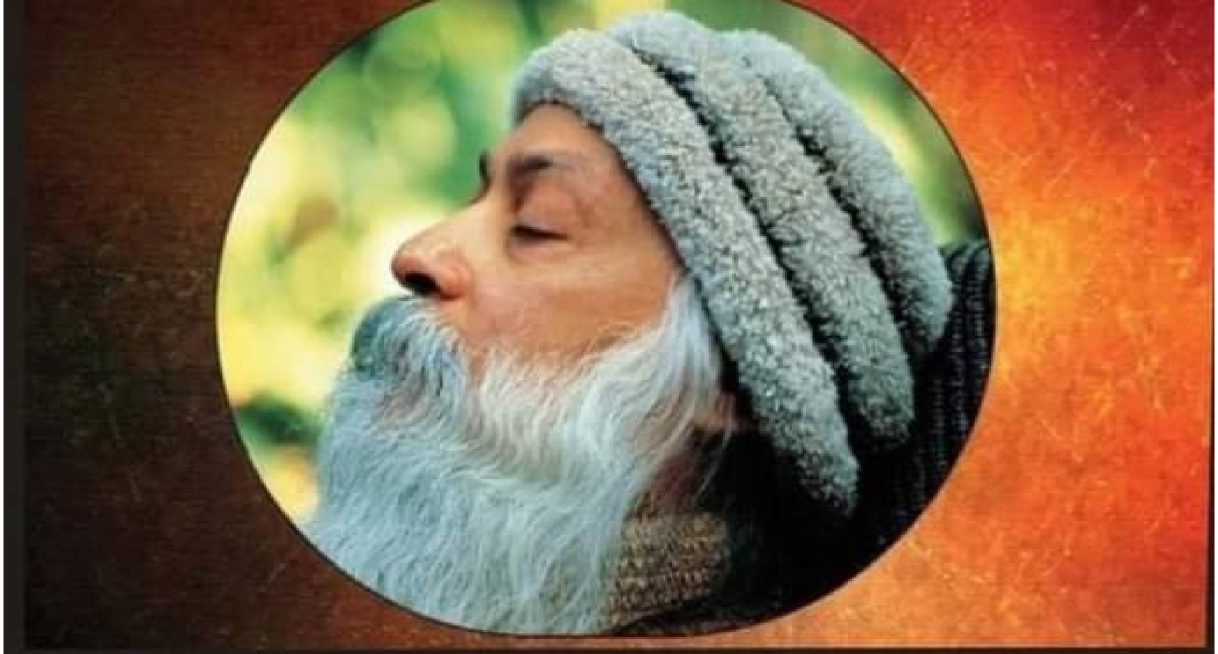

जो व्यक्ति परमात्मा पर सारे फल छोड़ देता है उसके जीवन में चिंता नहीं हो सकती। यह सूफी फकीर कभी पागल नहीं हो सकता। असंभव, इसे कैसे पागल करोगे? यह चिंतित नहीं हो सकता, इसे कैसे चिंतित करोगे? इसके भीतर सदा ही गहन शांति बनी रहेगी, अखंड ज्योति जलती रहेगी। लेकिन उपक्रम जारी है। दूसरे दिन सुबह फिर दूसरे द्वार पर गांव के दस्तक दी....उपक्रम जारी है: फिर शरण मांगी जाएगी, फिर भोजन मांगा जाएगा, फिर पानी मांगा जाएगा। उपक्रम जारी है। क्रम जारी रहे, श्रम जारी रहे और फलाकांक्षा परमात्मा के हाथ में हो; तो तुम्हारे जीवन में अद्भुत समन्वय पैदा हो जाता है।

अहो भाव

गुरु प्रताप साध की संगती

ओशो

CamScanner

8:57 am 0 KB/s 99%

osho ji
9h ·

#oshoji #oshomotivation #Osho #oshonagpur #osho_speech #osholovefitoor #osho_speaking #oshointernational #oshovideo #oshogbo ... See more

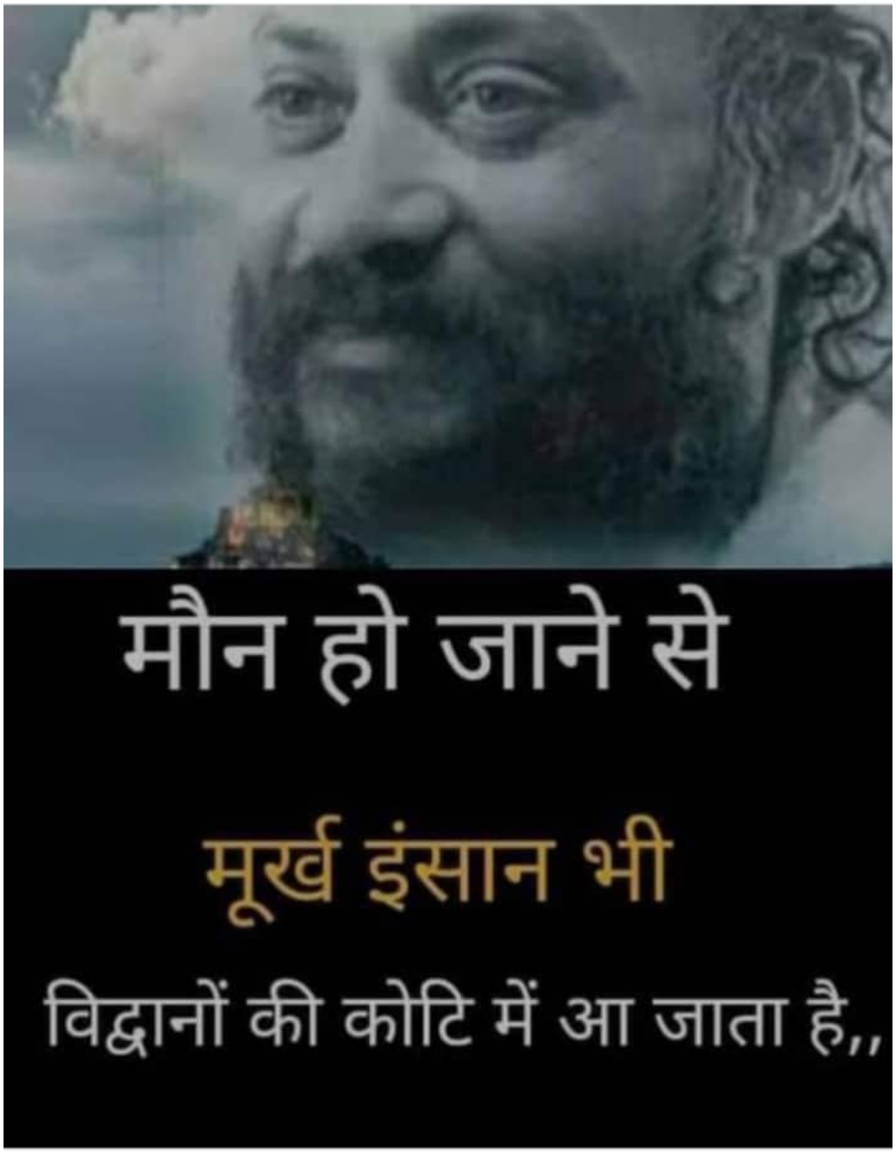

7

Like Comment Share

Fire-Boltt
Sponsored ·

CamScanner

आप हर समय
इतने शांत
और खुश कैसे रहते हँ
में मुर्ख लोगो से बहस
नही करता उनको कह
देता हु "आप सही हो"
चटपटे चुटकुले Crazy Jokes शायरी
पर ये सरासर बेतुका
और गलत हँ?
हाँ आप सही हो

CamScanner

8:55 am 0 KB/s 99%

बुद्ध ने अपने भिक्षुओं को कहा, भिक्षुओं ये दीन-हीन मनुष्य नहीं है, ये बहुत सुसंस्कृत और सुशिक्षित व्यक्ति है। सुसंस्कृत और सुशिक्षित कहा उस सुदास को, जो न पढ़ा था, न लिखा था, दीन-हीन था। जूते सीकर ही जीवन जिसने यापन किया था। किसी विद्यालय मंे कोई प्रवेश नहीं पाया था, किसी गुरु के पास बैठ कर कोई शिक्षा न पाई थी। लेकिन बुद्ध ने कहा, सुशिक्षित है, सुसंस्कृत है, ये दीन-हीन चमार। और भिक्षुओं इससे शिक्षा लो, उनके एक भिक्षु ने पूछा, किन अर्थों में इसे सुशिक्षित कहते हैं?बुद्ध ने कहा इसमें ऊंचे मूल्यों को देखने की क्षमता है। हाइयर वैल्यूज जिन्हें हम कहें, जीवन के ऊंचे मूल्यों को देखने की इसमें क्षमता है।

शिक्षा का और कोई अर्थ ही नहीं है। जीवन में उच्चतर मूल्यों का दर्शन हो सके, तो ही मनुष्य शिक्षित है। पैसे का दर्शन तो सुदास को भी हो सकता था, लेकिन नहीं पैसे की जगह प्रेम को उसने वरन किया। धन तो उसे भी दिखाई पड़ सकता था, एक फूल के लिए उसे जो धन मिलने को था, वह बहुत था। लेकिन नहीं उसने धन को ठुकराया। और धर्म को वरन कि या। उसने साहस किया क्षुद्र को छोड़ देने का, और विराट के प्रति समर्पण का। शिक्षित मनुष्य का और कोई अर्थ नहीं होता।

शिक्षित चित्त का अर्थ है, जो क्षुद्र को विराट के लिए छोड़ सके। और अशिक्षित का अर्थ है, जो क्षुद्र को पकड़े रहे और विराट को छोड़ दे। लेकिन इन अर्थों में क्या हम आज की शिक्षा को शिक्षा कह सकेंगे? शायद नहीं, कोई कारण नहीं है इस अर्थ में शिक्षा को शिक्षा कहने का। क्योंकि सारे जगत में जो मूल्य शिक्षा से हमें उपलब्ध हो रहे हैं, जो मूल्य हमें प्रेम को छोड़ने को कहते हैं, पकड़ने को नहीं; वे हमें धर्म को छोड़ने को कहते हैं, धन को पकड़ लेने को; वे जीवन में जो कुछ स्थूल और पार्थिव है, जो अत्यंत शुभ है, उसके ही इर्द, उसकी हत्या के लिए हमें तैयार करते हैं।

जो जीवन का विराट है, जीवन में चिन्मय है, जीवन में जो भी श्रेष्ठ है, वो क्षुद्र सी वेदी के सामने...किया जाता हो, तो नहीं किया जा सकता; जिसे हम शिक्षा समझ बैठे हैं, वह शिक्षा है। होगी आजीविका को उत्पन्न कर लेने की विधि, लिविंग उससे आ जाती होगी, लाइव, आजीविका मिल जाती होगी, लेकिन जीवन, जीवन उससे छिन जाता है।

CamScanner

इस जगत ने आज तक आनंदित व्यक्ति को सम्मान नहीं दिया है। यह सिर्फ दुखी व्यक्तियों को सम्मान देता है।

OSHO DHYAN UPVAN
HISAR
@LaughWithUniverse

एस धम्मो सनंतनो–ओशो

CamScanner

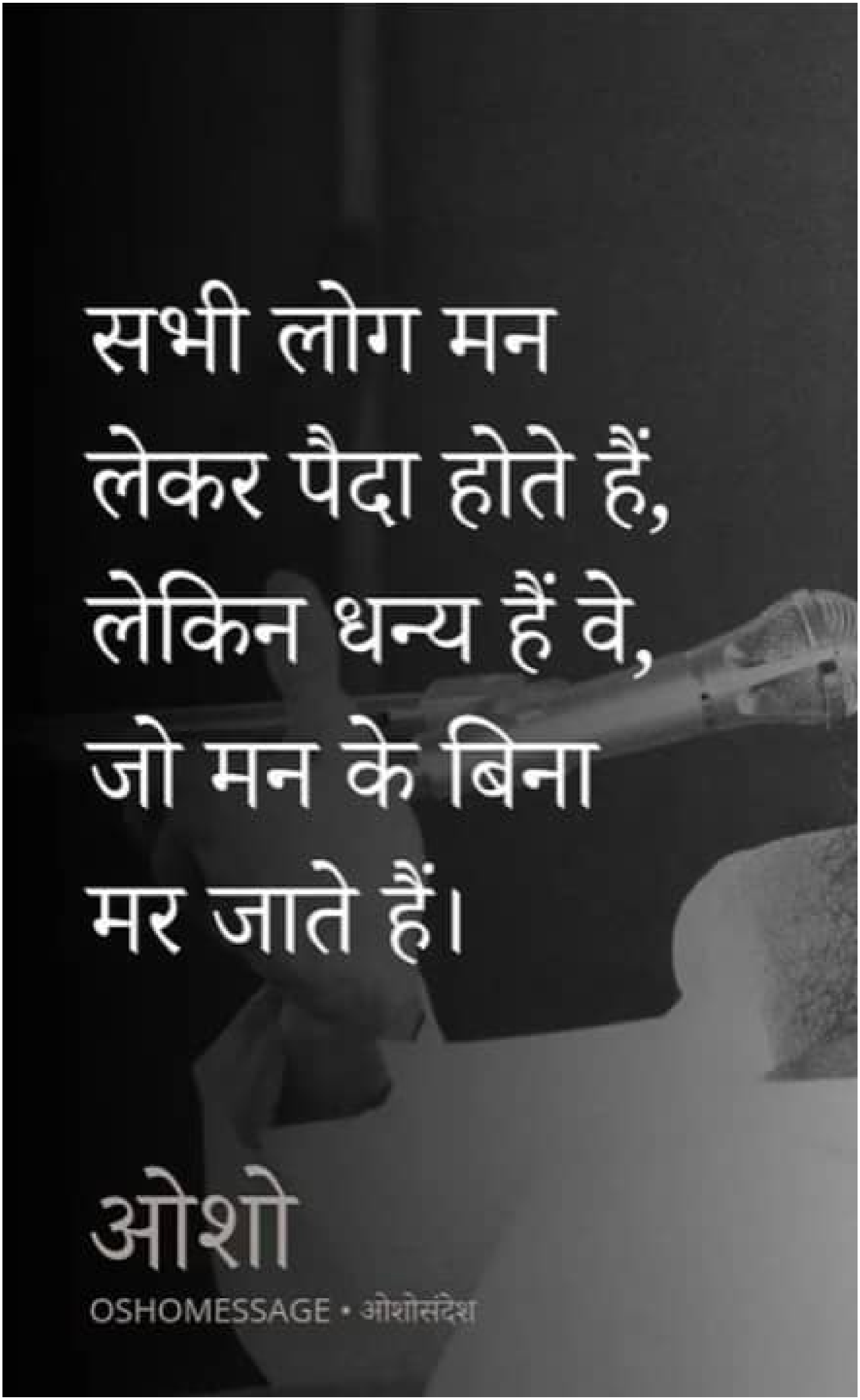
सभी लोग मन
लेकर पैदा होते हैं,
लेकिन धन्य हैं वे,
जो मन के बिना
मर जाते हैं।
ओशो
OSHOMESSAGE • ओशोसंदेश

CamScanner

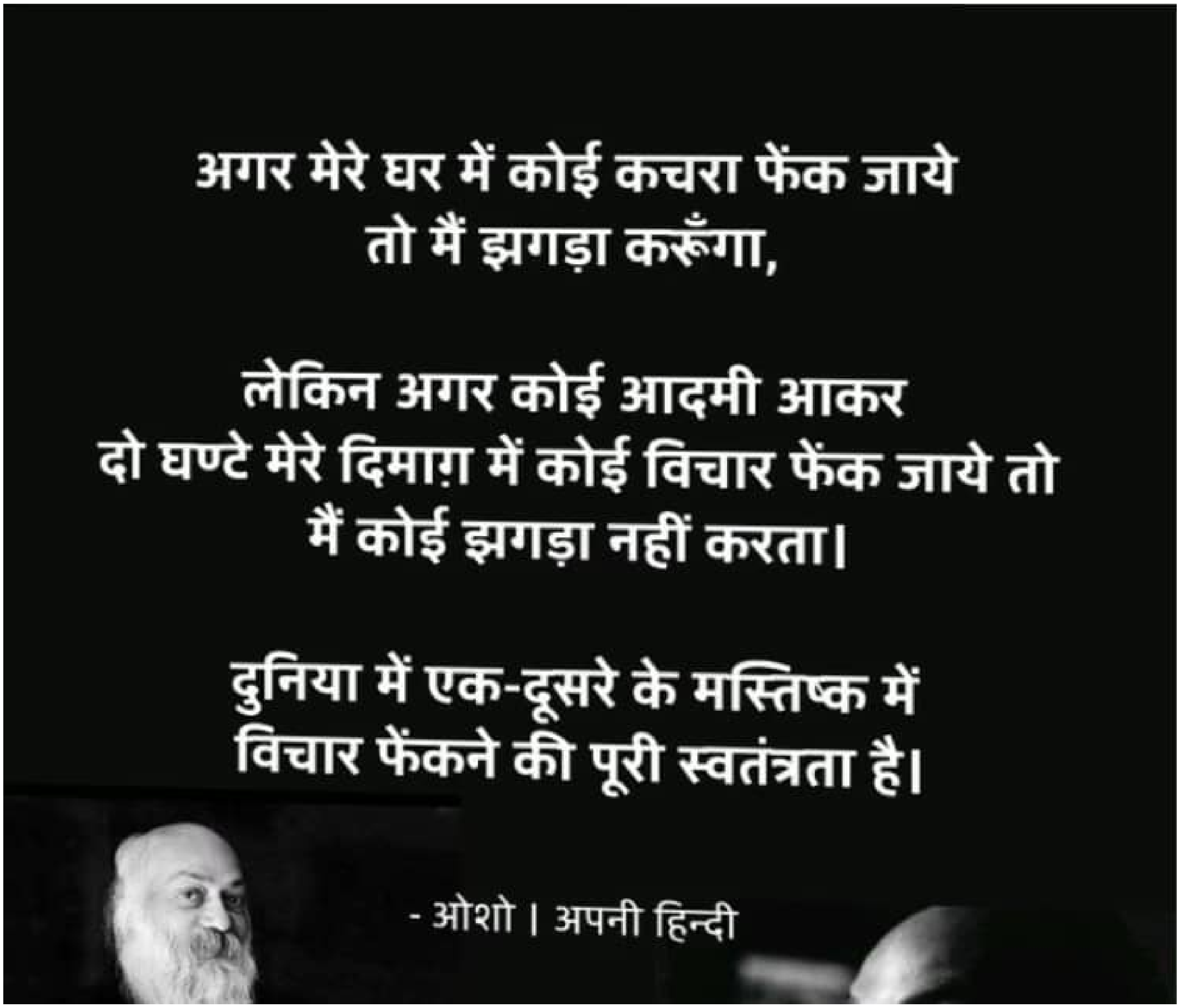
अगर मेरे घर में कोई कचरा फेंक जाये
तो मैं झगड़ा करूँगा,
लेकिन अगर कोई आदमी आकर
दो घण्टे मेरे दिमाग़ में कोई विचार फेंक जाये तो
मैं कोई झगड़ा नहीं करता।
दुनिया में एक-दूसरे के मस्तिष्क में
विचार फेंकने की पूरी स्वतंत्रता है।
- ओशो । अपनी हिन्दी

CamScanner

अगर आप दुखी है, तो इसका कारण यह है
कि आप चीजों को बहुत गंभीरता से लेते हैं...

ओशो

CamScanner

जो पक्षी बहुत दिन तक पिंजरे में बंद रह गया हो उसे तुम पिंजरे से बाहर कर दो तो वह उड़ नहीं सकता।।

CamScanner

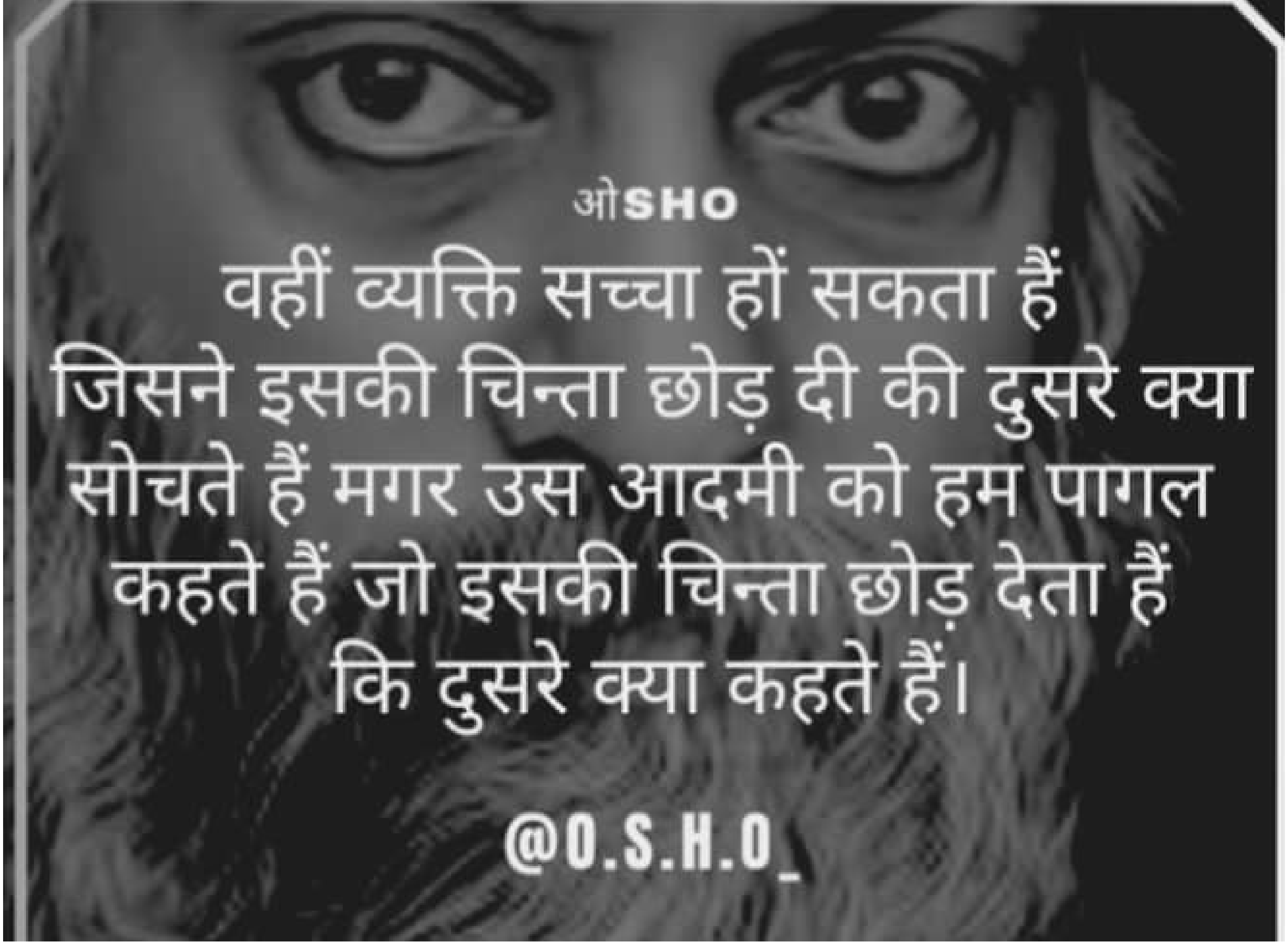
ओSHO
वहीं व्यक्ति सच्चा हों सकता हैं
जिसने इसकी चिन्ता छोड़ दी की दुसरे क्या
सोचते हैं मगर उस आदमी को हम पागल
कहते हैं जो इसकी चिन्ता छोड़ देता हैं
कि दुसरे क्या कहते हैं।
@O.S.H.O_

CamScanner

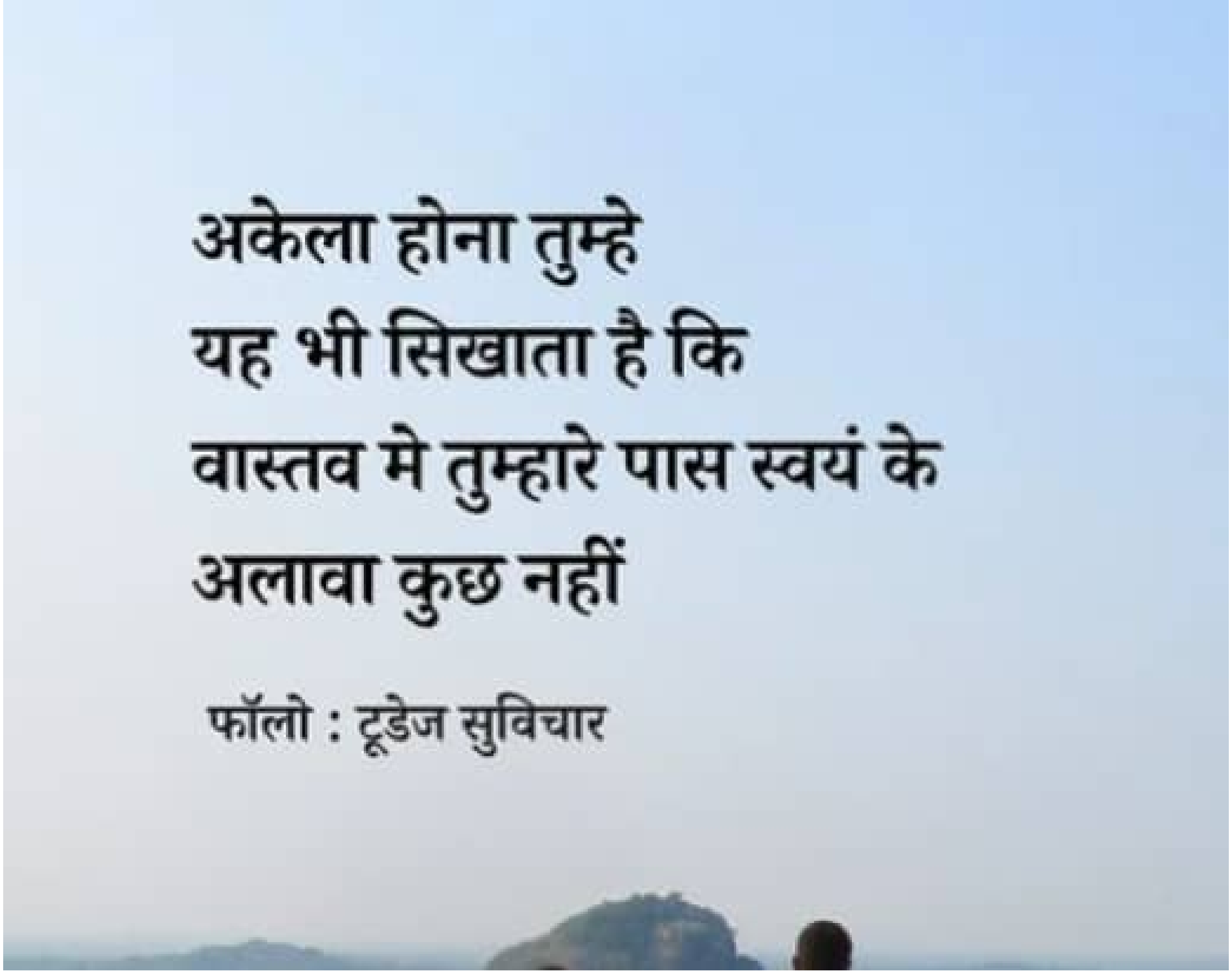

CamScanner

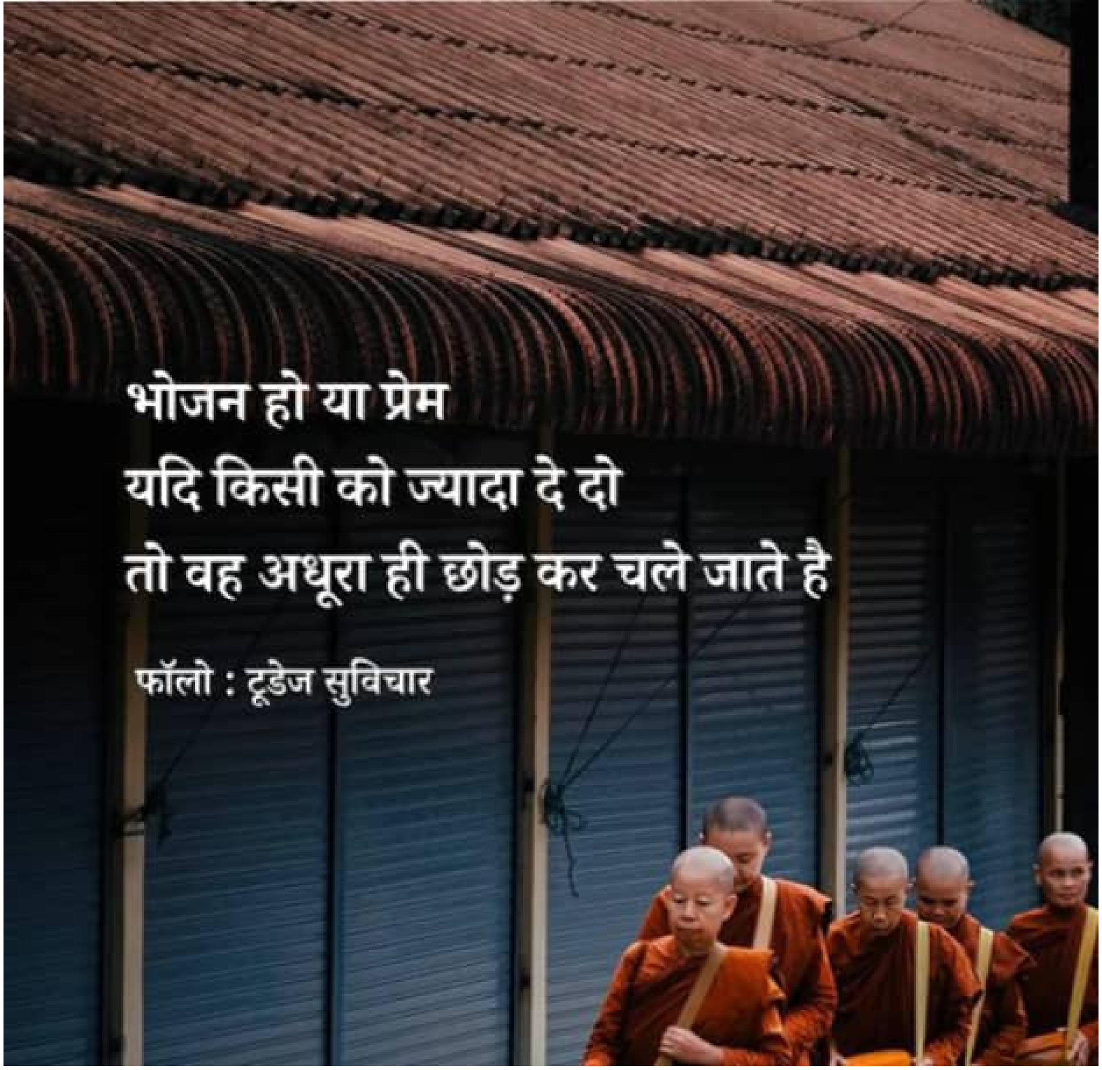

CamScanner

सुख भीतर की घटना है, बाहर से नहीं आता; इसका कोई बहिर्गमन नहीं होता। तुम सुख को अर्जित नहीं कर सकते हो। सुख को कोई भी संबंध तुम्हारे पास क्या है, इससे नहीं है; तुम क्या हो, इससे है। और तब तुम्हें नर्क में भी भेज दिया जाए, तो भी तुम सुखी रहोगे। और ऐसे तुम स्वर्ग में भी जाओ तो भी तुम दुखी रहोगे। तुम जरा सोचो, अगर तुम जैसे हो अभी, ऐसे उठाकर किसी चमत्कार से स्वर्ग में बिठा दिया जाए, तो तुम क्या करोगे? तुम सोचते हो कुछ फर्क पड़ जाएगा? नहीं, जरा भी फर्क नहीं पड़ेगा।

CamScanner

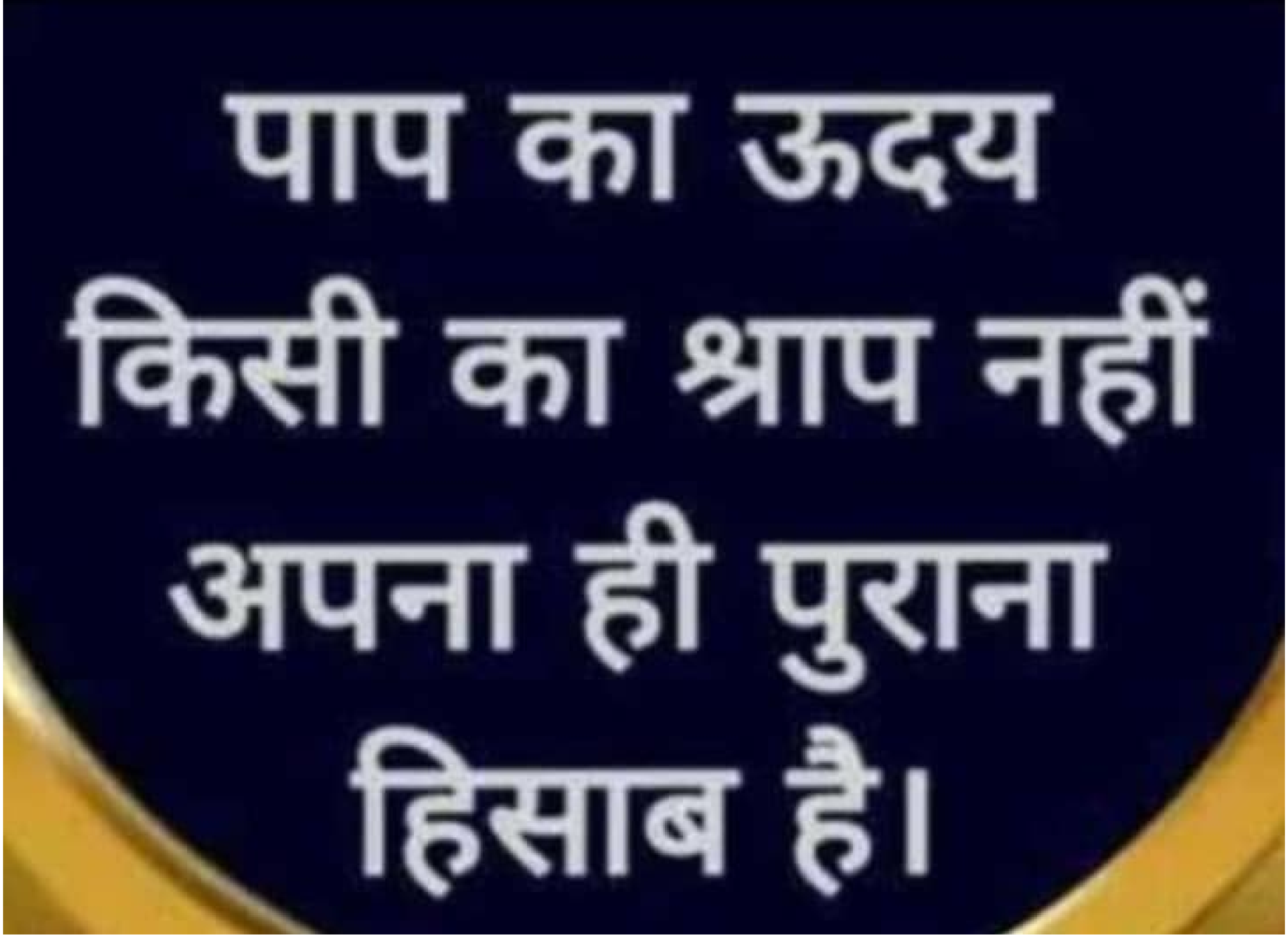

CamScanner

CamScanner

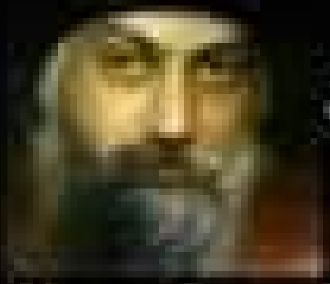

ओशो-Life with Osho

आनंद में कही गई प्रार्थना ही सुनी जाती है, क्योंकि आनंद परमात्मा का स्वर है, वह परमात्मा की भाषा है। दुख तुम्हारी भाषा है। परमात्मा उस भाषा को समझता ही नहीं। दुख तुमने अपना पैदा किया है। परमात्मा ने तो तुम्हें भी फूल की तरह नाचने और गाने को ही पैदा किया है। दुख तुम्हारी कृति है, वह तुम्हारा कर्म है। वह तुम्हारी संभावना नहीं है, संभावना तो तुम्हारे आनंद की है। दुख की भाषा परमात्मा को समझ ही नहीं आती। इसलिए जीसस ने कहा है, जो छोटे बच्चों की भांति होंगे, वे मेरे प्रभु के राज्य में प्रवेश पा सकेंगे। छोटे बच्चों की भांति नाचते, कूदते, प्रफुल्लित!

सुन भाई साधो -19

CamScanner

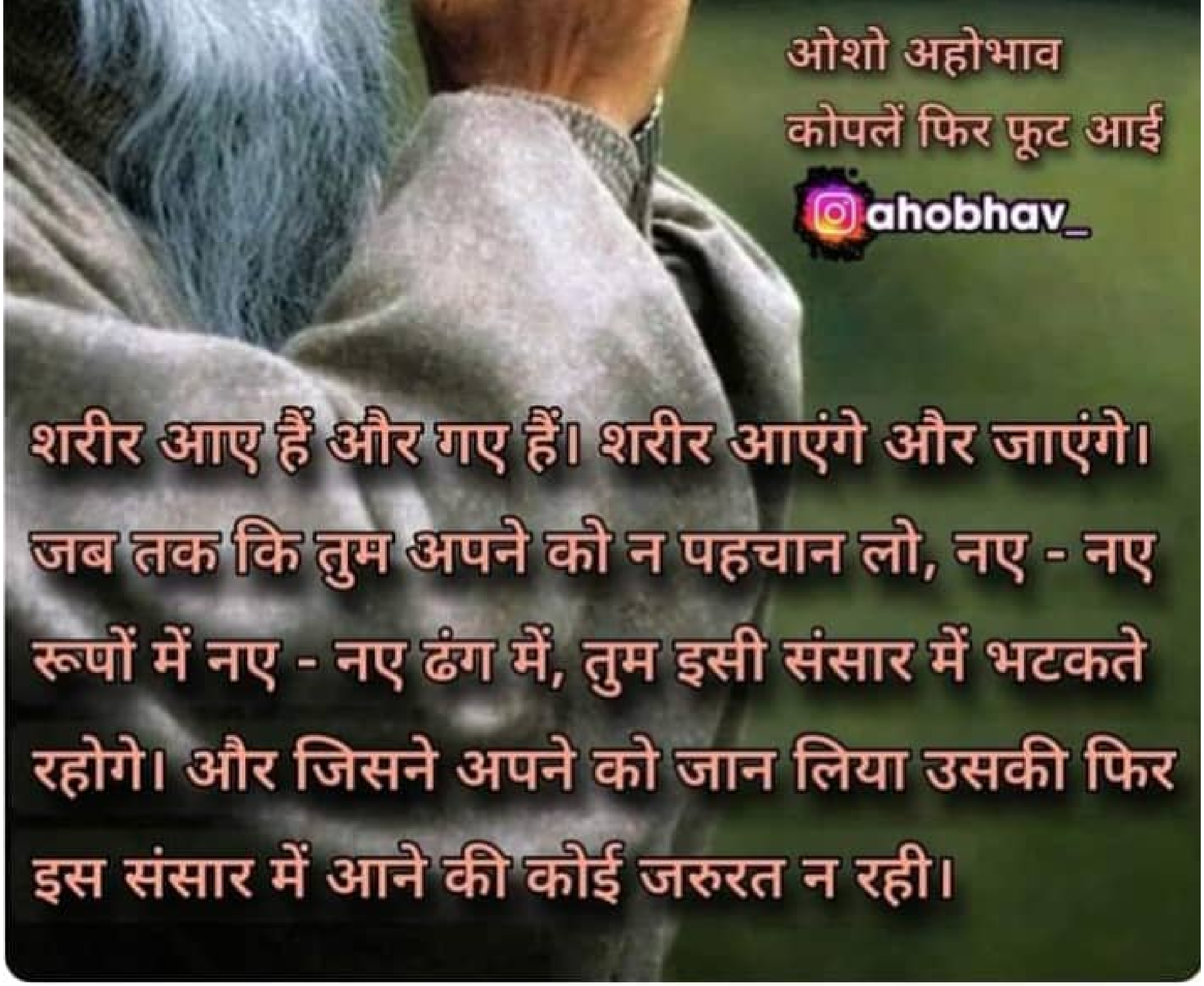
ओशो अहोभाव
कोपलें फिर फूट आई
ahobhav_
शरीर आए हैं और गए हैं। शरीर आएंगे और जाएंगे। जब तक कि तुम अपने को न पहचान लो, नए - नए रूपों में नए - नए ढंग में, तुम इसी संसार में भटकते रहोगे। और जिसने अपने को जान लिया उसकी फिर इस संसार में आने की कोई जरुरत न रही।

CamScanner

जिस देश के विद्यालयों
की छत बारिश से
टपकती हों और वहाँ के
मंदिरों की छत सोने से
जड़ी हों तो वह देश
कभी विकसित नहीं हो
सकता
ओशो : उम्दा_पंक्तियां

CamScanner

CamScanner

9:41 pm 0 KB/s 54%

बिलकुल नहीं हूं। पात्र तो मैं बिलकुल नहीं हूं। दावेदार मैं हो नहीं सकता। क्लेम मैं कर नहीं सकता कि मुझे मिल जाए। सिर्फ प्रार्थना कर सकता हूं।

ध्यान रहे, इसलिए तीसरा सूत्र आपसे कहता हूं : प्रार्थना दावा नहीं है, क्लेम नहीं है, पात्रता की घोषणा नहीं है, अपात्रता की स्वीकृति है। मैं कुछ हकदार हूं ऐसा भाव भी आ गया, तो प्रार्थना विषाक्त हो गई। मैं हकदार तो बिलकुल नहीं हूं।

इसीलिए प्रार्थना करने वाले को जब मिलता है कुछ, तो वह कहता है कि तेरी कृपा से मिला, मेरी योग्यता से नहीं। इसलिए प्रार्थना करने वालों ने प्रभु—प्रसाद शब्द खोजा है।

वे कहते हैं, जो मिलता है वह प्रभु—प्रसाद है, डिवाइन ग्रेस। हम कहां पात्र थे। हमसे ज्यादा अपात्र तो खोजना मुश्किल था।

फिर भी मैं कहता हूं कि मिलता है आपकी पात्रता से। आपकी अपात्रता से नहीं मिलता। लेकिन अपनी अपात्रता का बोध ही प्रार्थना की पात्रता है। अपनी अपात्रता का बोध ही प्रार्थना की पात्रता है। अपने ना—कुछ होने का बोध ही प्रार्थना का दावा है। दावा न करना ही प्रार्थना का रहस्य है। प्रार्थना भेजती है। न आए, तो हम कहेंगे, हम इस योग्य कहां थे कि आए। आ जाए, तो हम कहेंगे, उसकी कृपा है।

यद्यपि उसकी कृपा से नहीं मिलता, क्योंकि उसकी कृपा सब पर बराबर है। अगर उसकी कृपा से मिलता हो, तो उसका मतलब यह हुआ कि वहां भी भाई— भतीजावाद कुछ चलता होगा। क्योंकि एक आदमी ने घंटे बजाकर मंदिर में प्रार्थना कर ली और कहा कि हे भगवान, तू पतित—पावन है कि तू महान है...। जैसे कोई राजा के दरबार में कुछ कह देता हो — दरबारी लोग होते हैं न — और राजा प्रसन्न हो जाता हो। ऐसे ही लोग प्रार्थना किए चले जाते हैं कि शायद परमात्मा प्रसन्न हो जाए। इसलिए हमने सब प्रार्थनाएं राजाओं के दरबारों में बोले गए वचनों के आधार पर निर्मित की हैं — दरबारी! ही दरबारी भी कहीं कोई प्रार्थना हो सकती है? खुशामदें हैं। खुशामद को संस्कृत में कहते हैं स्तुति। खुशामद है।

ओशो - ईशावास्य उपनिषाद--प्रवचन--12
असतो मा सदग्मय --बारहवां प्रवचन

CamScanner

9:38 pm 0 KB/s 55%

प्रकट हो गई।
नारद आगे बढ़ गए। युवा संन्यासी के पास ठिठके। थोड़ा सोचा कि इससे कुछ कहना चाहिए कि नहीं, क्योंकि जिसको तीन जन्म की बात की, उसने माला फेंक दी। और इसकी बात तो बड़ी लंबी है। क्योंकि प्रभु से पूछा तो उन्होंने कहा: वह संन्यासी जिस वृक्ष के नीचे नाचता है, उसमें जितने पत्ते हैं, उतने ही जन्म लगेंगे। कहीं एकदम से एकतारा खोपड़ी पर न मार दे! तो जब तीन जन्म लगने वाले आदमी ने माला फेंक दी और कहा कि भाड़ में जाए मोक्ष, तो यह न मालूम क्या करे! थोड़े झिझके भी होंगे। लेकिन यह इस मस्ती में नाच रहा है कि लगा कि कह ही देना चाहिए। और फिर मन में जिज्ञासा भी थी कि देखें, यह क्या प्रतिक्रिया करता है! रोका उसे कि भाई सुन! तूने यद्यपि पूछा नहीं था, फिर भी मैंने कहा लगे हाथ पूछ ही लूं। बूढ़े का पूछ रहा हूं, तेरा भी पूछ लूं। तो मैंने पूछ लिया अपनी तरफ से, नाराज इत्यादि मत हो जाना। मुझे माफ करना। मैंने पूछा प्रभु को कि तेरे मोक्ष में कितनी देर है? तो उन्होंने कहा कि जितने वृक्ष में पत्ते हैं, उतने जन्म लगेंगे।
वह युवक तो एकदम छलांग लगा कर नाचने लगा। उसने कहा: आहा! तो फिर पा ही लिया! पृथ्वी पर कितने पत्ते हैं! इतने ही पत्ते, इतने ही जन्म? तो ज्यादा देर नहीं है। हो ही गया समझो। और वह नाचने लगा। फिर हरि—भजन में लीन हो गया। और कथा कहती है, उसी क्षण मोक्ष को उपलब्ध हो गया। उतने जन्म नहीं लगे, जितने वृक्ष में पत्ते थे। उसी क्षण मुक्त हो गया। इतना जहां धैर्य हो वहां मोक्ष ज्यादा देर रुक भी कैसे सकता है! धैर्य और मोक्ष एक ही बात के दो नाम हैं। और जिसको तीन जन्म की बात कही है और जिसने माला फेंक दी है, वह अभी भी सज्जन कहीं भटकते होंगे। हो सकता है, यहां मौजूद हों। उनका मुक्त होना बड़ा कठिन है। तीन जन्म की बात तो तब थी जब उन्होंने माला नहीं फेंकी थी। तीन जन्म की बात तो तब थी जब उन्होंने ये अदभुत वचन न कहे थे कि भाड़ में जाए मोक्ष! उसके बाद उनकी क्या गति या दुर्गति हुई होगी...। नरक न चले गए हों तो बहुत। पृथ्वी पर हों तो प्रभु की अनुकंपा।
तुम्हारा धैर्य तुम्हारी संपदा है।

ओशो - पग घुंघुरु बांध~

CS CamScanner

9:34 pm 0 KB/s 55%

वह बूढ़ा संन्यासी नारद से कहता है: जरा पूछ लेना कि कितनी देर और है?

इसमें बड़ी शिकायत है। जहां आकांक्षा है वहां शिकायत होगी ही। जहां मांग है वहां संदेह होगा ही। नारद कहते हैं: जरूर पूछ लूंगा।

दूसरे वृक्ष के नीचे एक युवा संन्यासी नाच रहा है। उसने एकतारा हाथ में लिया है। इतना युवा है कि जैसे कल ही संन्यासी हुआ हो। नारद उससे मजाक में ही कहते हैं कि आपको भी तो नहीं पुछवाना कुछ? प्रभु के पास जा रहा हूं, बूढ़े संन्यासी की पूछूंगा, तुम्हारी भी पूछ लूंगा। लेकिन वह तो कुछ उत्तर नहीं देता। वह तो अपने नाच में मगन है। वह तो नारद हैं या नहीं वहां, इसकी भी उसे पता नहीं चलती। जो परमात्मा में मगन है, उसे कहां फिकर—कौन क्या है, कहां क्या है, कौन स्वर्ग जा रहा है, कौन नरक जा रहा है! उसे क्या पूछना है! उसे कुछ पूछना नहीं है, उसका कोई प्रश्न नहीं है, उसकी कोई आकांक्षा नहीं है। वह अहोभाव में नाच रहा है। वह हरि—भजन में है।

यह जो माला जपता हुआ संन्यासी है बूढ़ा, जपत्तप करता हुआ, इसका हरि से कुछ तालमेल नहीं है; इसे हरि पर अभी श्रद्धा भी नहीं है। तीन जन्म यूं ही गए जैसे। श्रद्धा भी नहीं जन्मी है, मोक्ष की आकांक्षा कर रहा है। अभी धीरज भी पैदा नहीं हुआ और मोक्ष की आकांक्षा कर रहा है। मोक्ष तो उन्हें मिलता है जिनका धैर्य अनंत है। इसका तो मोक्ष संसार का ही एक रूप है—इच्छा, वासना, मिल जाए। पहले धन खोजता होगा, अब मोक्ष खोज रहा है। मगर वही अहंकार। वही खोजने वाले का जोर। वही "पाकर रहूंगा"! वही अकड़।

वह युवा संन्यासी तो नाचता रहा। नारद थोड़ी देर खड़े रहे, फिर हंस कर आगे बढ़ गए। उसने कुछ ध्यान न दिया। लौटे कुछ दिनों बाद। उस बूढ़े संन्यासी को कहा: पूछा था प्रभु को। उन्होंने कहा: तीन जन्म और लग जाएंगे। बूढ़ा तो बहुत नाराज हो गया। उसने तो माला फेंक दी। उसने कहा: भाड़ में जाए मोक्ष! एक सीमा होती है। धीरज की एक सीमा होती है। मुझे नहीं चाहिए यह मोक्ष अब। अन्याय हो रहा है। यह मेरी बरदाश्त के बाहर है। मैं बगावत करता हूं।

क्रोधी! तुमने अक्सर सुना होगा, दुर्वासा और इस तरह के लोग, जिसने जपत्तप किया, वह क्रोधी हो जाता है। क्योंकि उसकी अकड़ होती है: मैंने इतना किया है और अभी तक नहीं मिला! माला फेंक दी। क्रोध के उस क्षण में भूल ही गया, क्या कर रहा है। आगबबूला हो गया, भभक

CamScanner

Osho Wisdom

संसार छोड़ने की बात ज्ञानियों ने कही है, उसका अर्थ है--सपने छोड़ो, तृष्णाएं छोड़ो, वासनाएं छोड़ो। मगर लोग संसार छोड़कर भाग गए। बैठ गए हिमालय पर जाकर। सोचने लगे कि हिमालय संसार के बाहर है। पागल हो गए हो! हिमालय उतना ही संसार का हिस्सा है। जितनी यह जमीन, उतनी कोई और जमीन। जितना यह घर, उतना कोई और घर। जितनी तुम्हारी पत्नी संसार है, तुम्हारे पुत्र संसार हैं, तुम्हारे मित्र संसार हैं--उतना ही कोई आश्रम भी संसार का हिस्सा है। गुफा में भी बैठ जाओगे, तो गुफा भी संसार का हिस्सा है। तुम भागकर जाओगे कहां?

बिरहिनि मंदिर दियना बार-8

ओशो

CamScanner

जो खोज रहा है
वह जागेगा,
क्योंकि खोज बिना जागे
नहीं हो सकती।
विश्वास सोए-सोए भी
किए जा सकते हैं,
लेकिन खोज के लिए तो
जागना ही पड़ता है।
तो खोज हो गहरी भीतर पैदा,
तो जागरण उसकी
छाया की भांति आना
शुरू होता है।
आचार्य श्री रजनीश
सत्य का दर्शन-(प्र-04 (जीवन यानी परमात्मा) 15

CamScanner

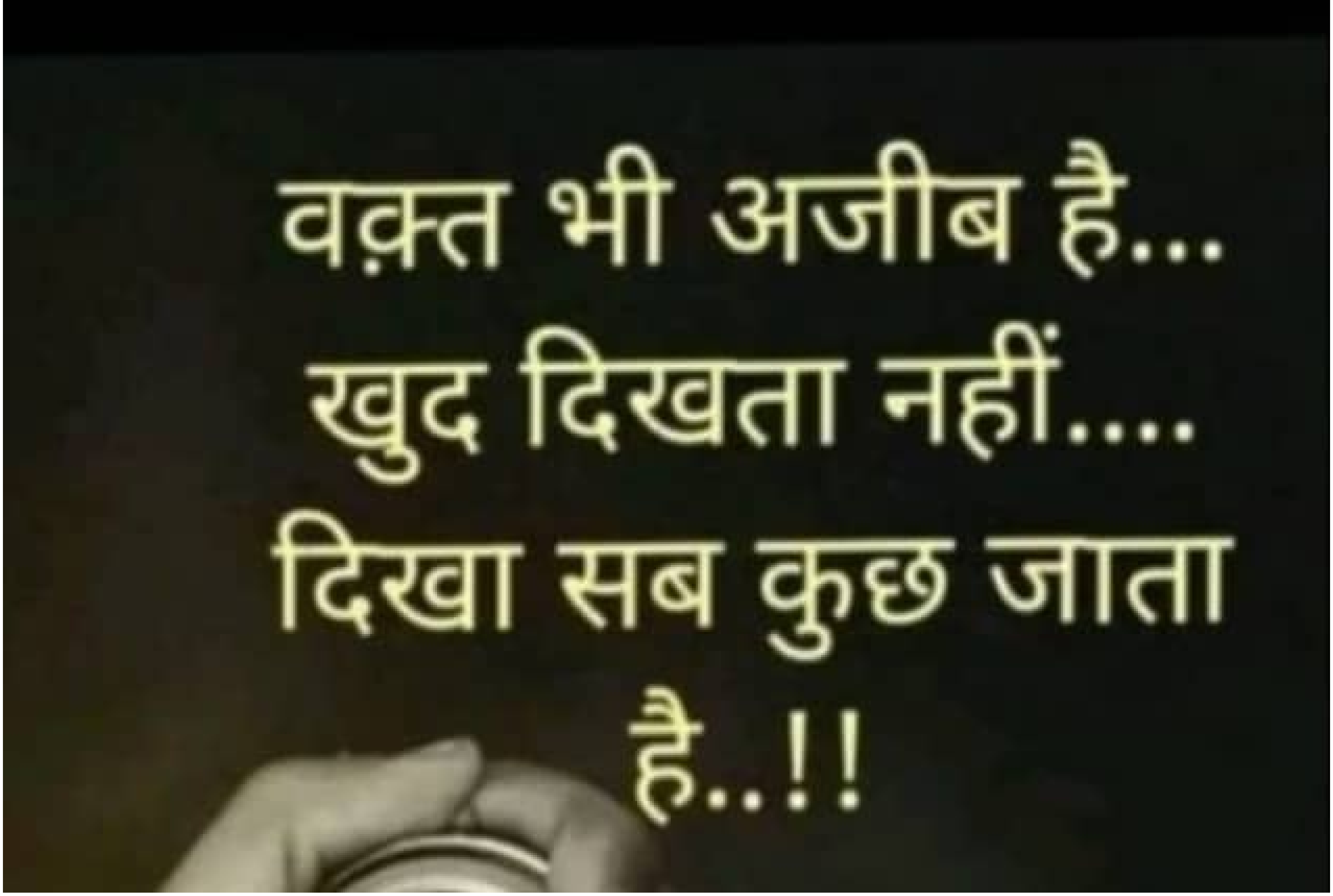

CamScanner

सामान्यतया यह कहा जाता है की ब्रह्मचर्य तब है जब किसी से शारीरिक संबंध ना बने और उर्जा का पतन ना हो. ब्रह्मचर्य की परिभाषा में कहा जाता है की वीर्य का संरक्षण अथवा रज का संरक्षण कर उसे उर्जा में और तेज में परिवर्तित होने देना ही वास्तविक ब्रह्मचर्य है.

तंत्र ग्रंथों के अनुसार भले ही शारीरिक संबंध बने किंतु वीर्य का पतन ना हो अथवा रज का पतन ना होतो भी उसे ब्रह्मचर्य ही माना जाता है .यहां पर अखंड ब्रह्मचर्य की बात की जाती है जिसके अंतर्गत संबंध बनाने पर भी पतन रोककर ब्रह्मचर्य रहा जाता है और उर्जा उधर्व मुखी की जाती है .

[मुक्ति मार्ग] अक्सर यह पूछा जाता है या लोग सोचते हैं कि यदि मानसिक संभोग हो तो भी क्या ब्रह्मचर्य का पालन हो सकता है. इस संबंध में कुछ ज्ञानी कहते हैं यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री का विचार मन में आए और उससे मानसिक रूप से सोचते हुए कोई संबंध बनाएं और विवाह किसी और से हो बाद में तो उसे पत्नीव्रता या पतिव्रता नहीं माना जा सकता. इसी तरह यदि किसी से मानसिक संभोग हो और पतन हो जाए तो भी ब्रह्मचर्य खंडित हो जाता है. यदि मानसिक संभोग के बाद भी पतन नहीं होता है तो तंत्र के अनुसार व्यक्ति ब्रह्मचारी ही माना जाएगा. सामान्य सिद्धांतों के अनुसार ब्रह्मचर्य केवल उर्जा के पतन को रोकना ही है जबकि कुछ सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति का ब्रह्म में विचरण और आचरण ब्रह्मचर्य कहलाता है. यहां पर मानसिक संभोग ब्रह्मचर्य खंडित करता है . किसी ने एक जगह कहा है मात्र बिंदु रक्षा ही ब्रम्हचर्य है. उस अनुसार मानसिक संभोग से ब्रह्मचर्य खंडित नहीं होता अगर हम निष्कर्ष रूप से देखें तो बिंदु रक्षा और उर्जा पतन को रोकना ही ब्रह्मचर्य है.

[मुक्ति मार्ग]

...........हर हर महादेव

CamScanner

एक बार श्री कृष्ण ने एक गाय से पूछा - मैंने तुझे सींग दिए ताकि तू अपनी रक्षा कर सके पर तू तो कभी किसी को मारती ही नहीं। गाय बोली - हे कान्हा एक बार जब पूतना नाम की राक्षशी ने तुम्हे अपना विषैला दूध पिलाया था तब भी तुमने उसे अपनी माँ की ही उपमा दी थी। ये मनुष्य तो प्रतिदिन मेरा ही दूध पीते हैं। ये भले ही मुझे माँ न माने पर मैं तो इन सभी को अपना पुत्र मानती हूं, भला मैं कैसे इन्हें मार सकती हूँ। भगवान की आंखों में अश्रु आ गए और उन्होंने उन्ही अश्रु की बूंदों को अंजलि में लेकर ये संकल्प लिया - हे गौ मैया तू महान है, मैं चाहे जिस लोक में रहूँ पर तेरी रक्षा के लिए मैं सदैव आता रहूंगा। क्योंकि इस पृथ्वी पर एक तू ही है जो मारने वाले को भी अपना पुत्र ही समझती है।

CamScanner

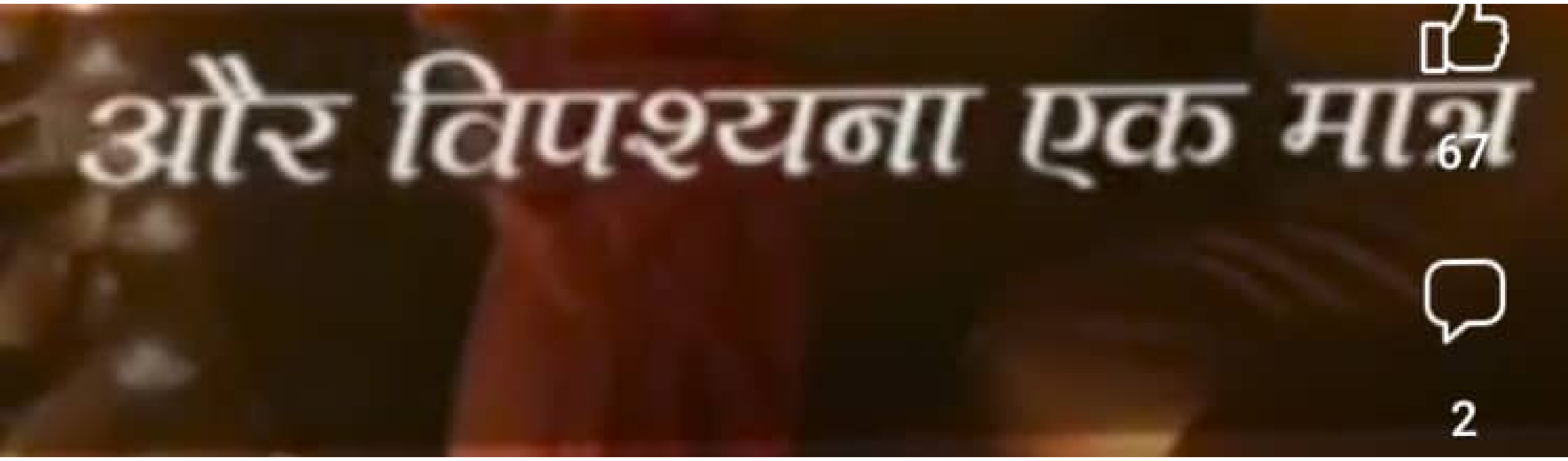

CamScanner

बुद्ध ने तो श्वास को ही
समस्त योग का आधार माना

CamScanner

CamScanner

Shailesh Prajapati · 2d

शून्य की यात्रा पर जो जा रहा है वही तीथँ यात्रा पर जा रहा है
#ओशो🍁

CamScanner

ध्यान का अर्थ है क्रियाहीन होना।
ध्यान क्रिया नहीं,अवस्था है।
वह अपने स्वरूप में होने की स्थिति है।
क्रिया में हम अपने से बाहर के जगत से संबंधित होते हैं।
अक्रिया में स्वयं से संबंधित होते हैं।
जब हम कुछ भी नहीं कर रहे हैं,
तब हमें उसका बोध होता है जो कि हम हैं।
अन्यथा, क्रियाओं में व्यस्त हम स्वयं से ही
अपरिचित रह जाते हैं।

साधना पथ

CS CamScanner

CamScanner

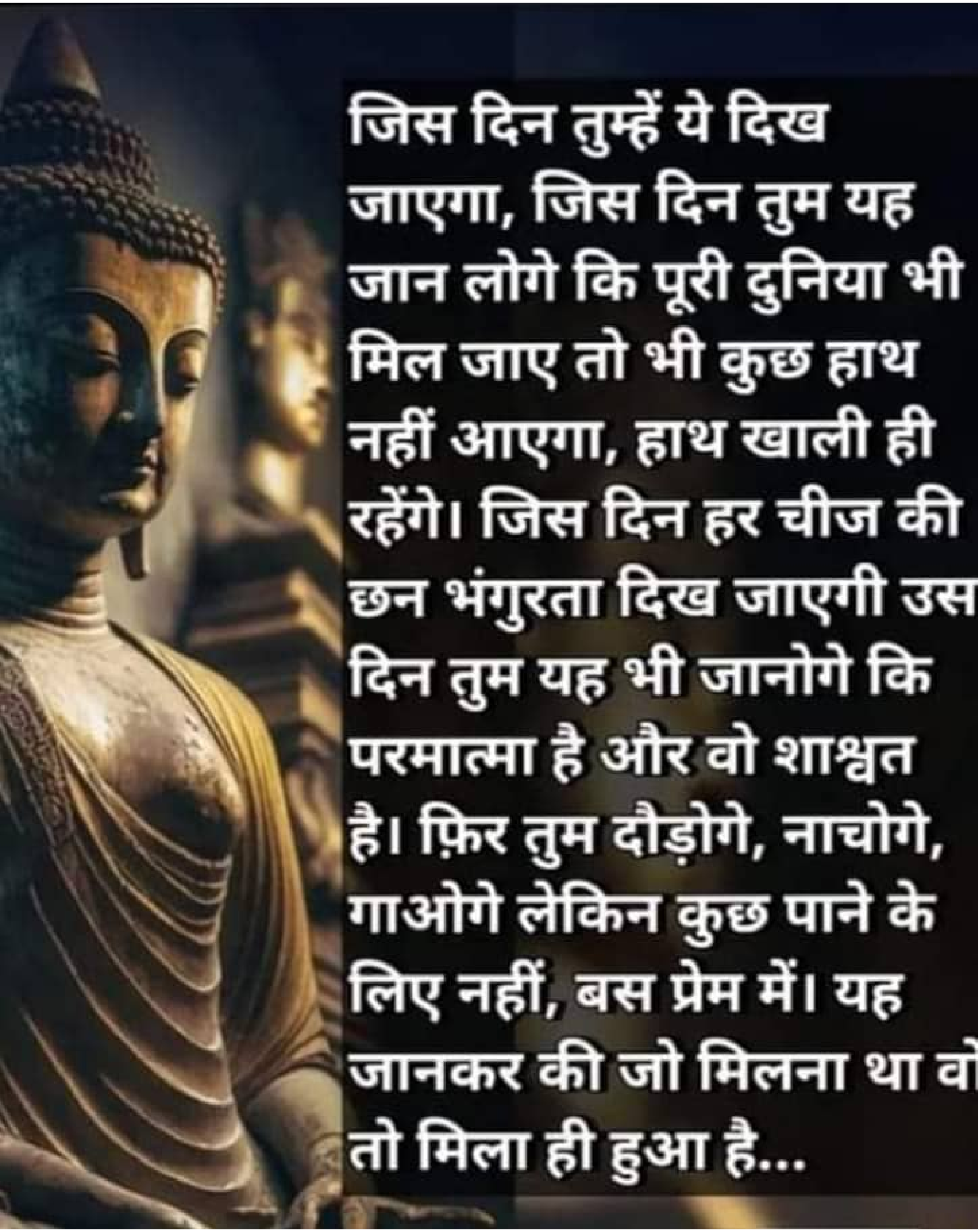
जिस दिन तुम्हें ये दिख जाएगा, जिस दिन तुम यह जान लोगे कि पूरी दुनिया भी मिल जाए तो भी कुछ हाथ नहीं आएगा, हाथ खाली ही रहेंगे। जिस दिन हर चीज की छन भंगुरता दिख जाएगी उस दिन तुम यह भी जानोगे कि परमात्मा है और वो शाश्वत है। फ़िर तुम दौड़ोगे, नाचोगे, गाओगे लेकिन कुछ पाने के लिए नहीं, बस प्रेम में। यह जानकर की जो मिलना था वो तो मिला ही हुआ है...

CamScanner

CamScanner

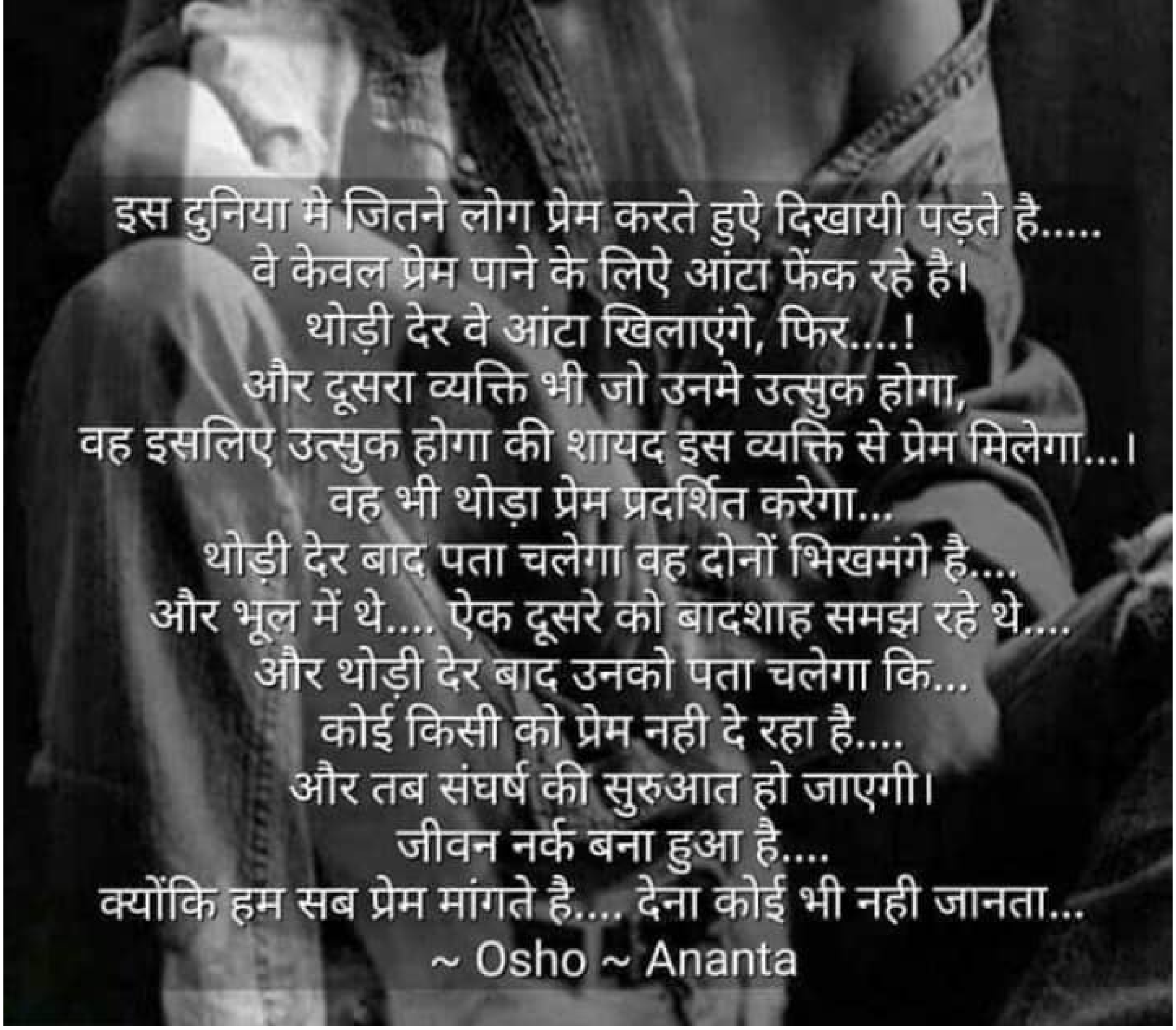
इस दुनिया मे जितने लोग प्रेम करते हुऐ दिखायी पड़ते है.....
वे केवल प्रेम पाने के लिऐ आंटा फेंक रहे है।
थोड़ी देर वे आंटा खिलाएंगे, फिर....!
और दूसरा व्यक्ति भी जो उनमे उत्सुक होगा,
वह इसलिए उत्सुक होगा की शायद इस व्यक्ति से प्रेम मिलेगा...।
वह भी थोड़ा प्रेम प्रदर्शित करेगा...
थोड़ी देर बाद पता चलेगा वह दोनों भिखमंगे है....
और भूल में थे.... ऐक दूसरे को बादशाह समझ रहे थे....
और थोड़ी देर बाद उनको पता चलेगा कि...
कोई किसी को प्रेम नही दे रहा है....
और तब संघर्ष की सुरुआत हो जाएगी।
जीवन नर्क बना हुआ है....
क्योंकि हम सब प्रेम मांगते है.... देना कोई भी नही जानता...
~ Osho ~ Ananta

CamScanner

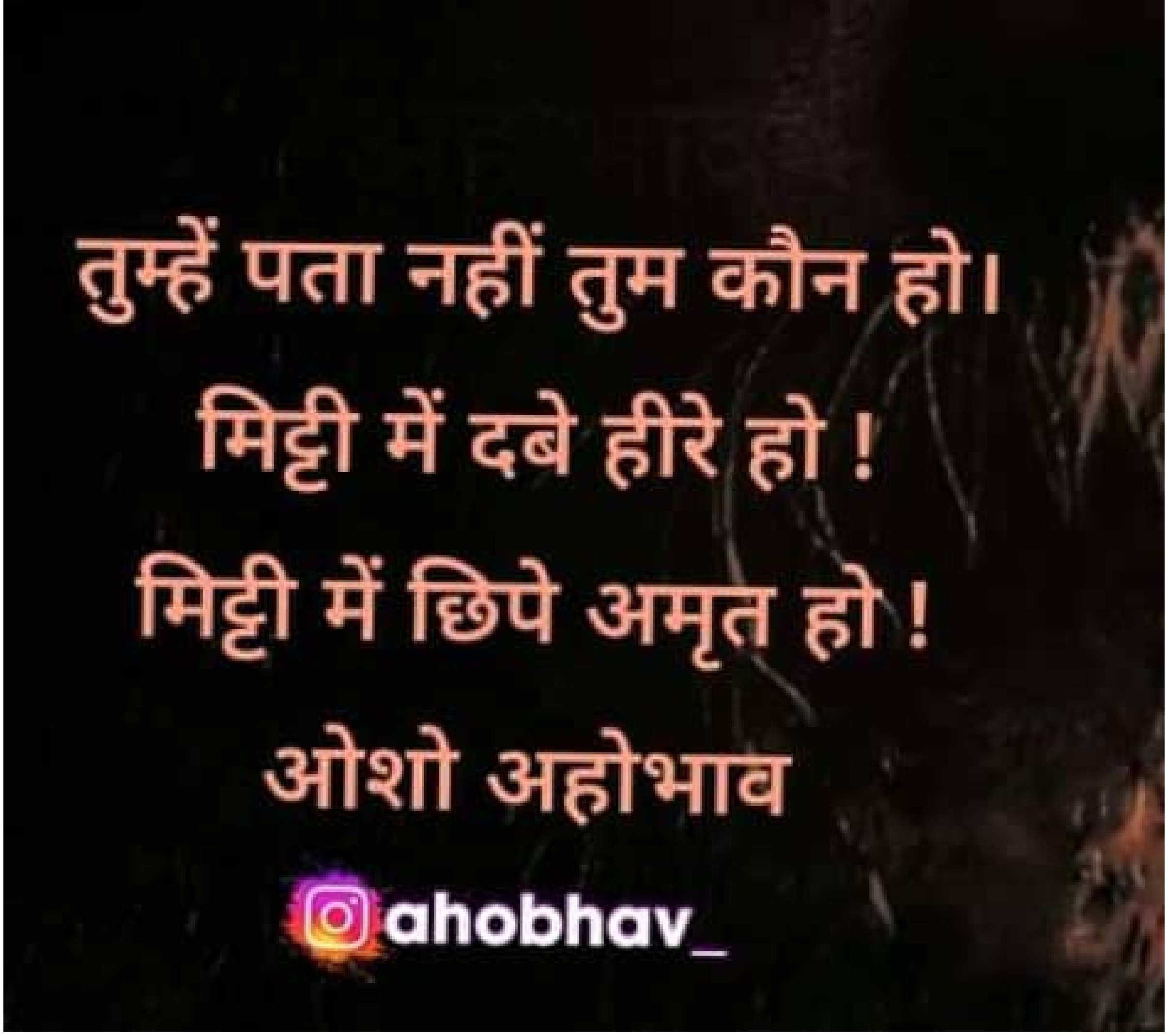

CamScanner

वह प्रत्येक प्राणी बेहोश है
जिसने अपनी आत्मा की
ओर कदम नहीं रखा
जिसमें मानव जाति भी

CamScanner

परम का सत्य ये नहीं, जिसे आप रोजाना सच के रूप में जानते हैं, ये सच ज्यादा नहीं रुक पाता है ! इसकी कोई उम्र नहीं, थोड़ी ही देर में झूंठ हो जाता है, कल का झूंठ आज सच हो सकता है, आज का सच कल झूठ हो सकता है। ये सच स्थाई नहीं होता। जिस सत्य में सदैव बदल जाने का संसय बना है, वह सत्य नहीं हो सकता !...इन सत्यों को आप बनाते हैं, इनसे आपका समय पास होता है...एक अस्तित्व का सत्य और है, उसे आप नहीं जानते ! वह स्थाई है, वह कभी नहीं बदलता ! उसे आपको खोजना होता है, उसे दूसरों के सामने प्रमाणित नहीं करना होता, वह सत्य आपकी निजता से आता है, उसके प्रमाण भी आप स्वयं होते हैं, कोई दूसरा इसका फैसला नहीं कर सकता !-अचिंत्य

CamScanner

THE SEVEN
CHAKRAS
JESSE DENKINS
Crown Chakra
SAHASRARA
"I UNDERSTAND"
963hz
Third Eye Chakra
AJNA
"I SEE"
852hz
Throat Chakra
VISHUDDHA
"I TALK"
741hz
Heart Chakra
ANAHATA
"I LOVE"
639hz
Solar Plexus Chakra
MANIPURA
"I DO"
528hz
Sacral Chakra
SVADHISHTHANA
"I FEEL"
417hz
Root Chakra
MULADHARA
"I AM"
396hz

CamScanner

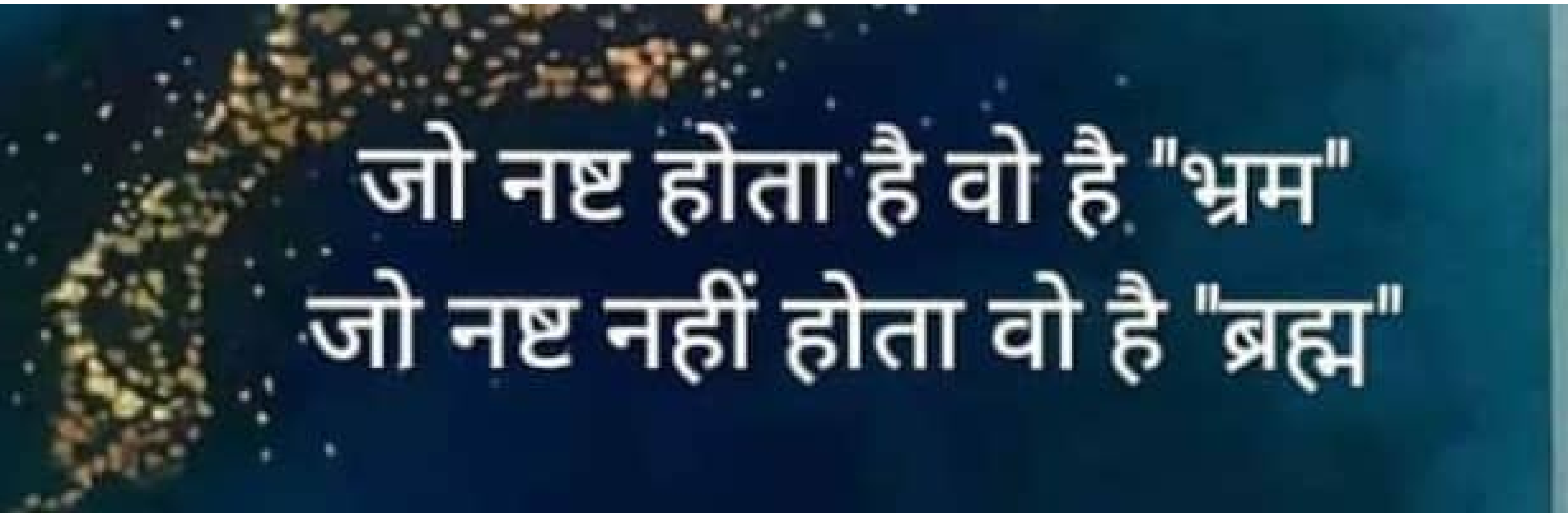

CamScanner

मनुष्य का बोलना ही उसे इस परिस्थिति में ले आया है जो आज है। यह जो लगातार भीतर बकवास करता हुआ मन है यह तुहें किसी प्रसन्नता, किसी आनंद को अनुभव नहीं करने देता, क्योंकि केवल एक मौन चित्त ही भीतर देख सकता है, केवल एक मौन चित्त ही उस आनंद को स्पर्श कर सकता है जो भीतर उमड़ रहा है। आनंद का वह स्त्रोत इतना सूक्ष्म है कि मन के शोर - गुल के बीच तुम उसे नहीं सुन सकते। जितना तुम मौन होते हो, उतना ही पाते हो कि आनंद का स्त्रोत तुम्हारे भीतर है। फिर तुम बाहर कहीं प्रसन्नता को खोजने नहीं जाते। तुम अकारण प्रसन्न होते हो।

ओशो

प्रेम को प्रार्थना बनाओ

CS CamScanner

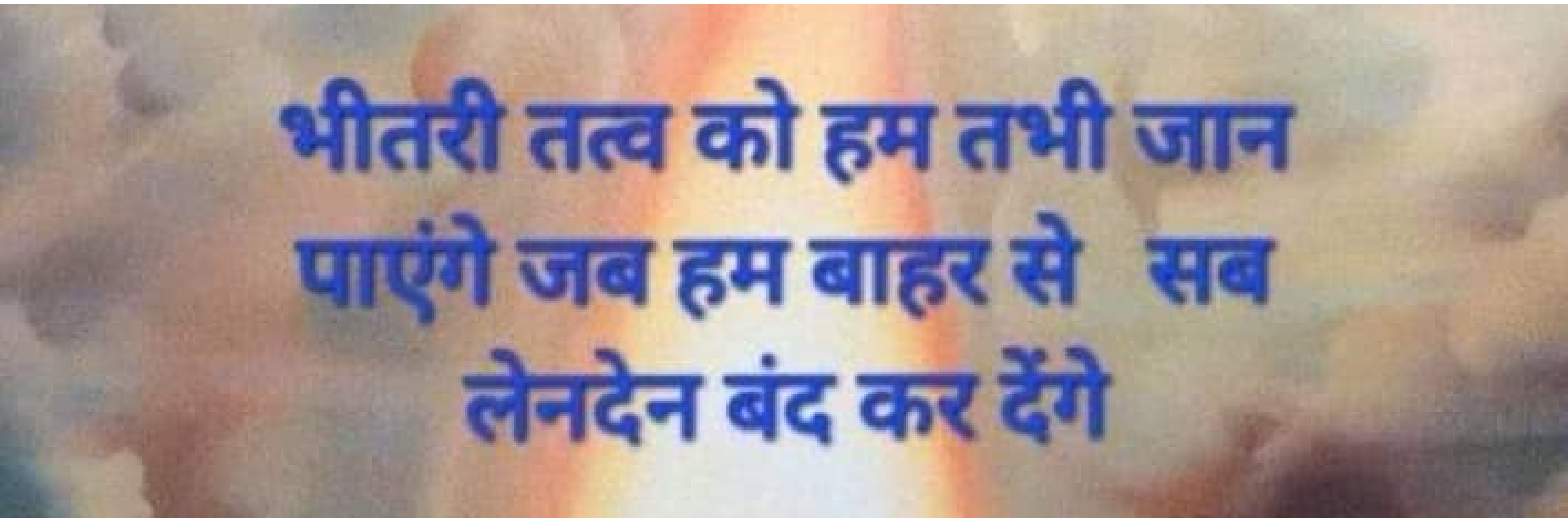

CamScanner

CamScanner

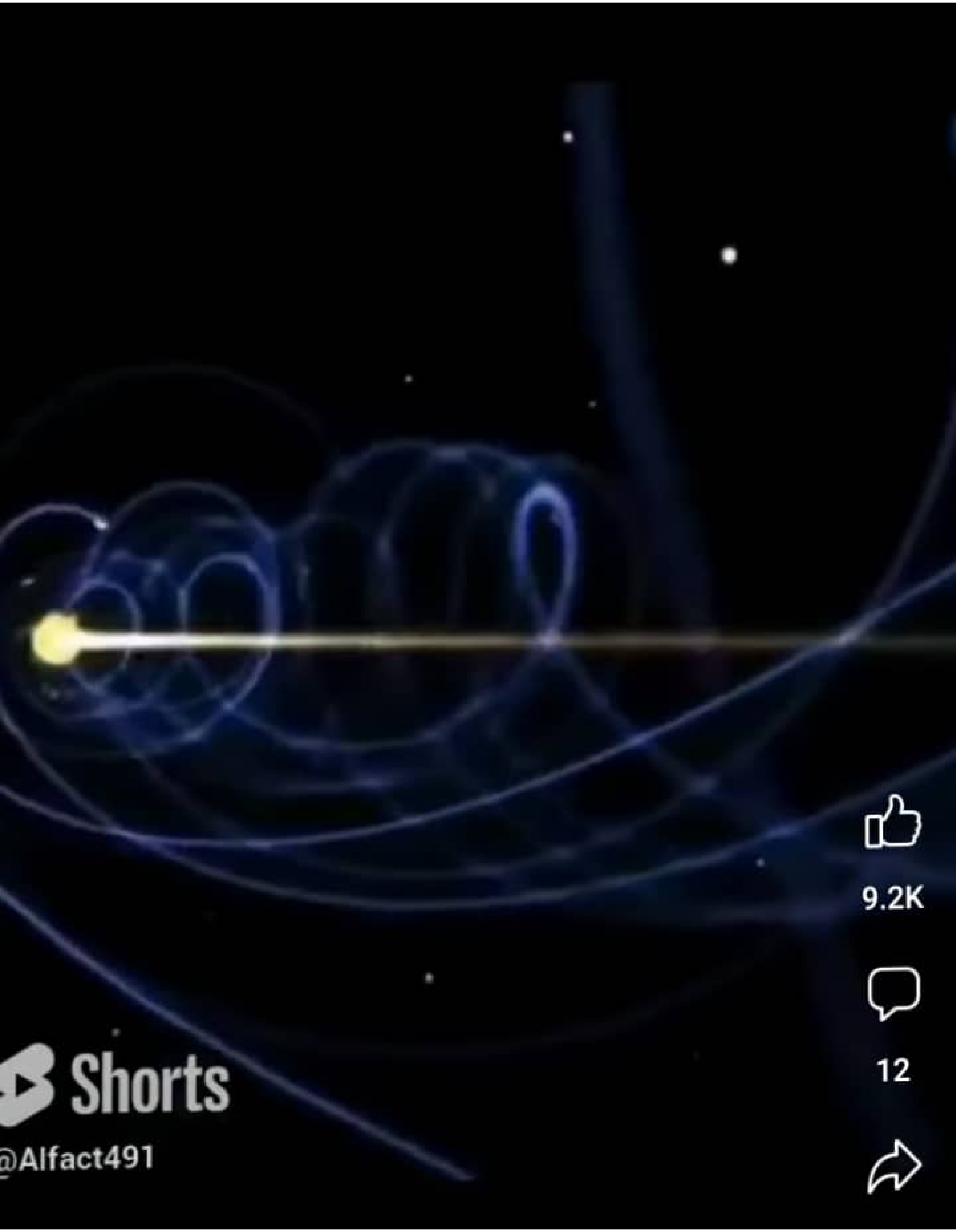

CamScanner

CamScanner

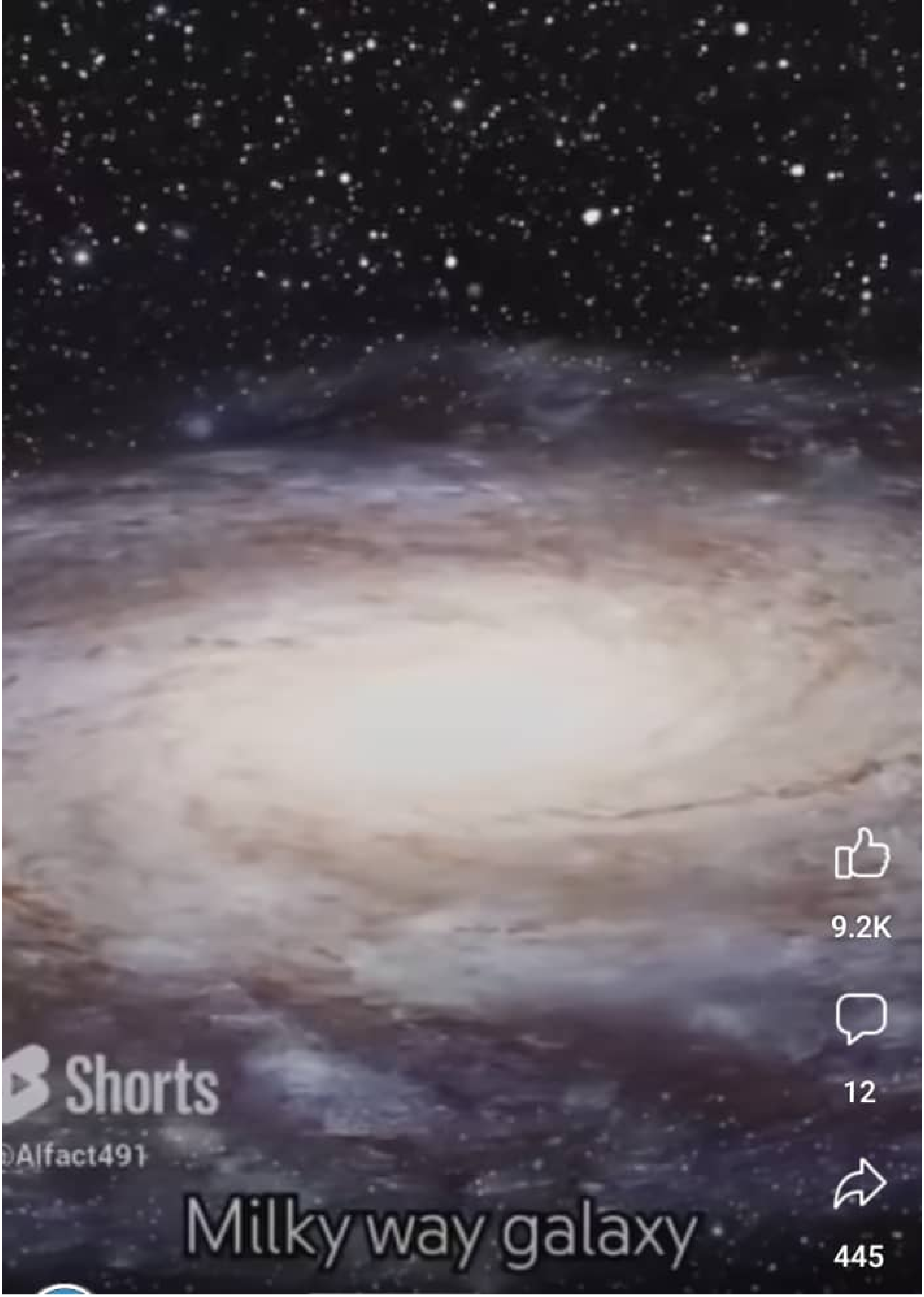

CamScanner

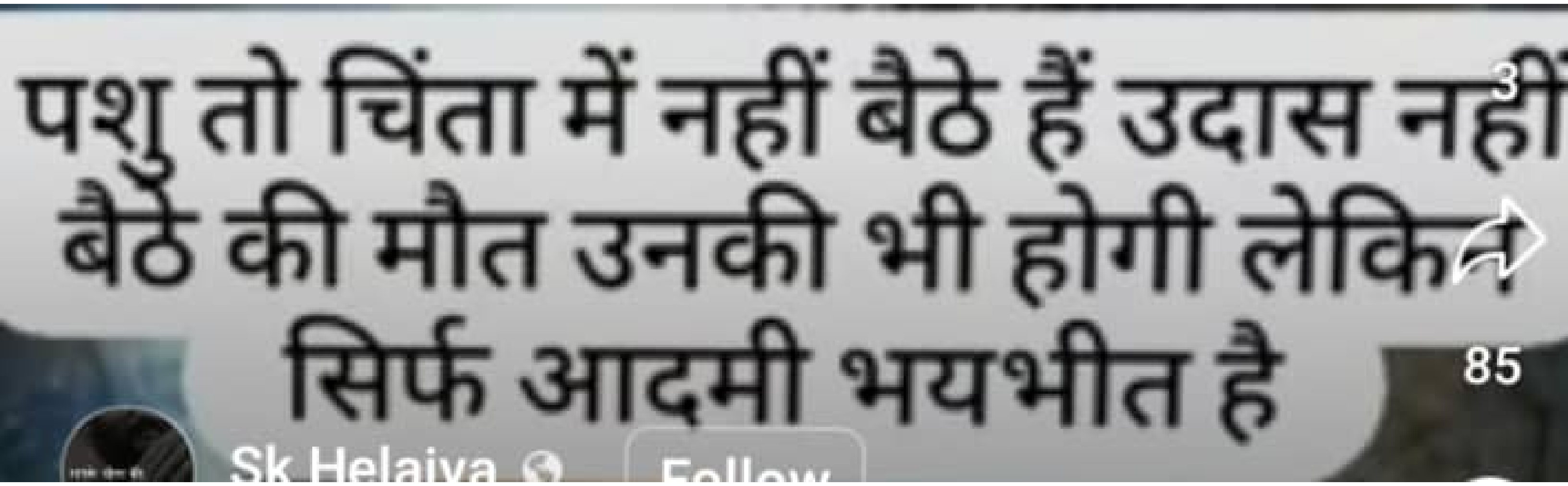
पशु तो चिंता में नहीं बैठे हैं उदास नहीं
बैठे की मौत उनकी भी होगी लेकिन
सिर्फ आदमी भयभीत है
3
85
Sk Helaiya
Follow

CamScanner

CamScanner

ध्यान का अर्थ है क्रियाहीन होना।
ध्यान क्रिया नहीं,अवस्था है।
वह अपने स्वरूप में होने की स्थिति है।
क्रिया में हम अपने से बाहर के जगत से संबंधित होते हैं।
अक्रिया में स्वयं से संबंधित होते हैं।
जब हम कुछ भी नहीं कर रहे हैं,
तब हमें उसका बोध होता है जो कि हम हैं।
अन्यथा, क्रियाओं में व्यस्त हम स्वयं से ही
अपरिचित रह जाते हैं।

साधना पथ

CamScanner

Awākēn

1d ·

हे अमरणेय जीव....सारे कर्म मनुष्य मस्तिष्क द्वारा बनाए गए हैं जिससे तेरे मुक्ति में कोई बाधा नहीं है, इस कर्म के भ्रांति को मकड़ी के जाले की तरह हटा अपने मस्तिष्क को स्वक्ष कर मुक्त हो जा।

तू मुझसे और मैं तुझसे हूं , यह अद्वैत ज्ञान जान कर तू मुझे भज।

CamScanner

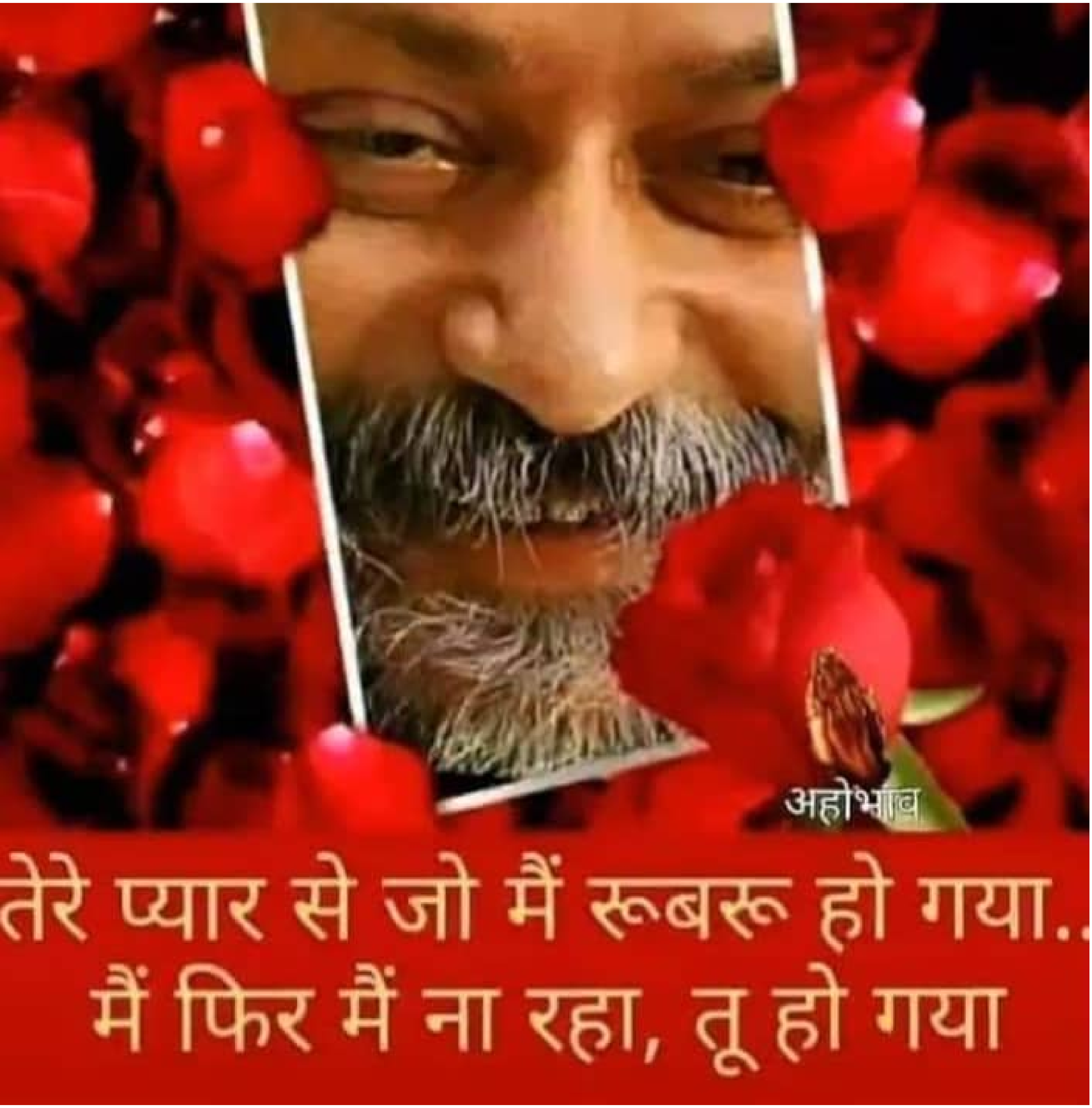

CamScanner

CamScanner

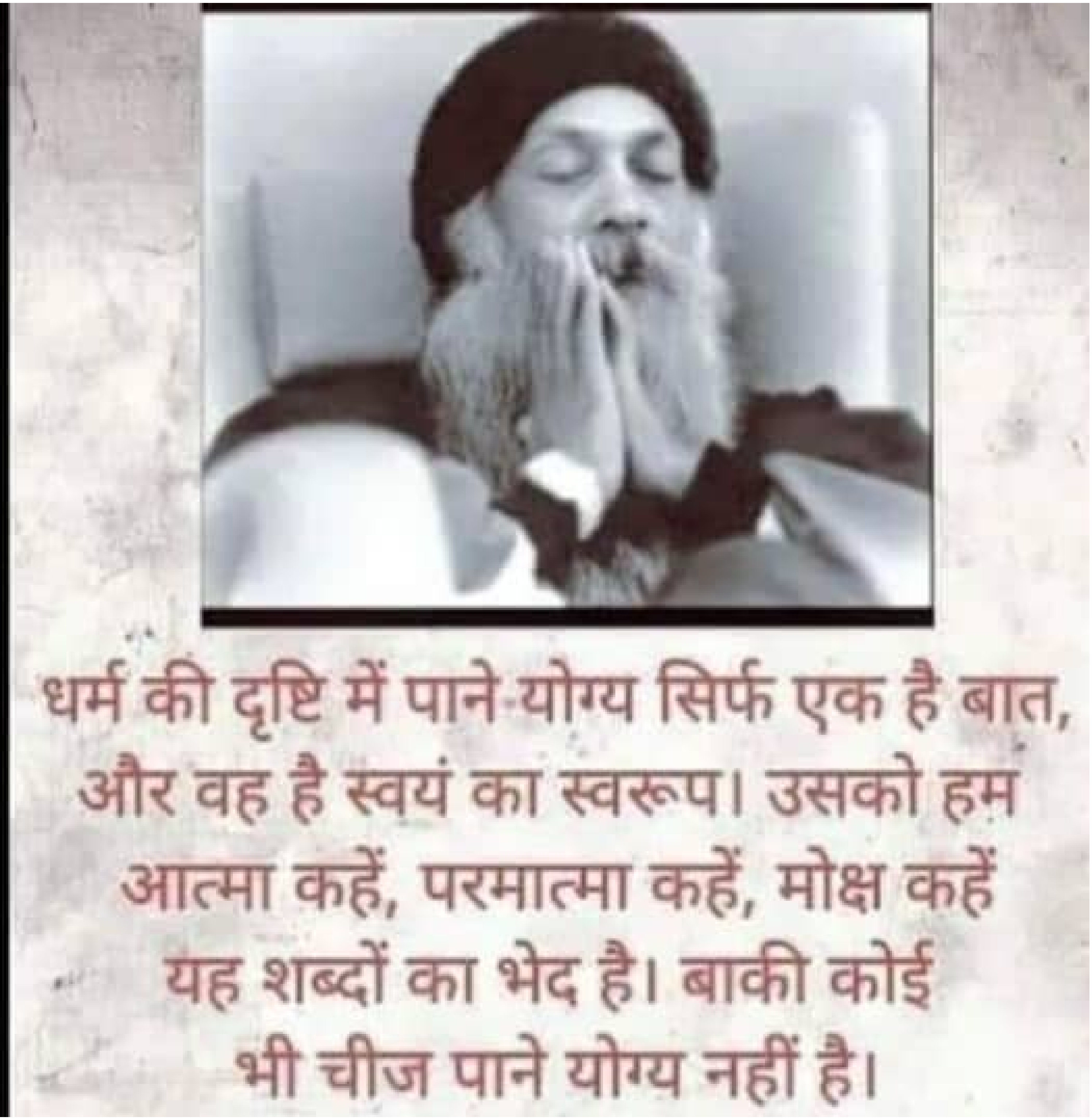

CS CamScanner

आप मेरा आनंन्द देख कर
दुःखी मत होना-आप अपना आनंन्द
खुद में ढूंढो,,

CamScanner

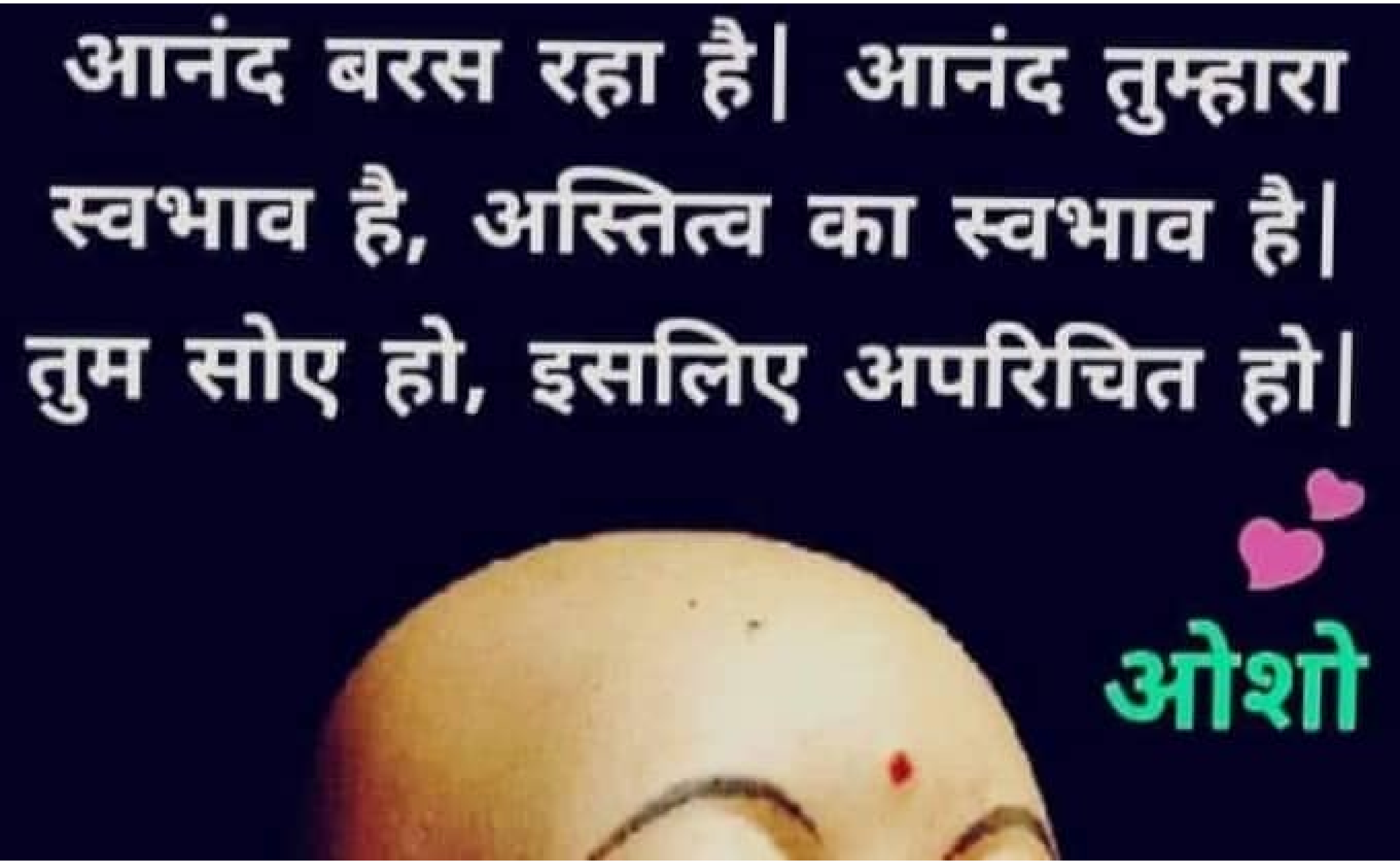

CamScanner

CamScanner

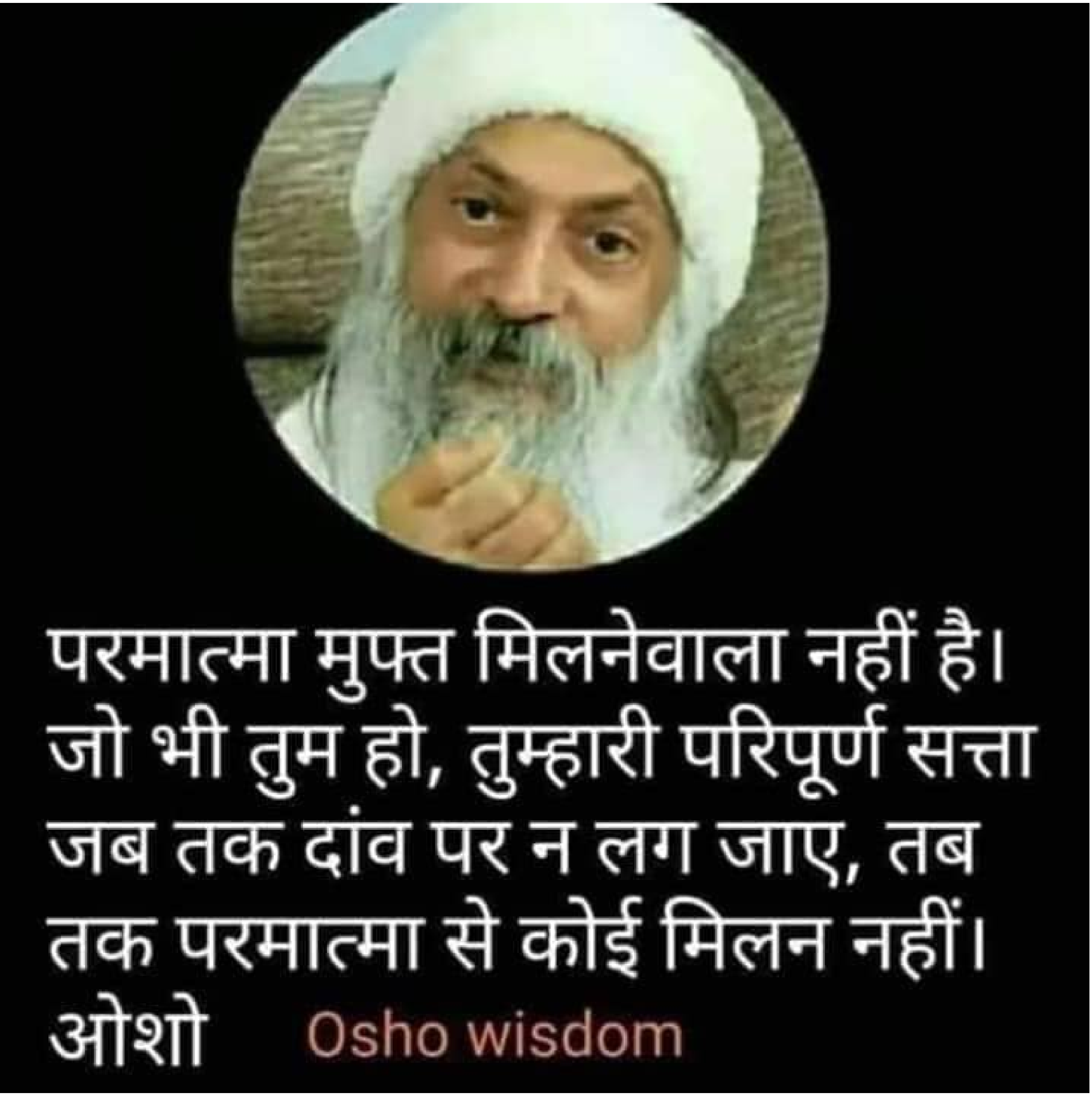
परमात्मा मुफ्त मिलनेवाला नहीं है।
जो भी तुम हो, तुम्हारी परिपूर्ण सत्ता
जब तक दांव पर न लग जाए, तब
तक परमात्मा से कोई मिलन नहीं।
ओशो
Osho wisdom

CamScanner

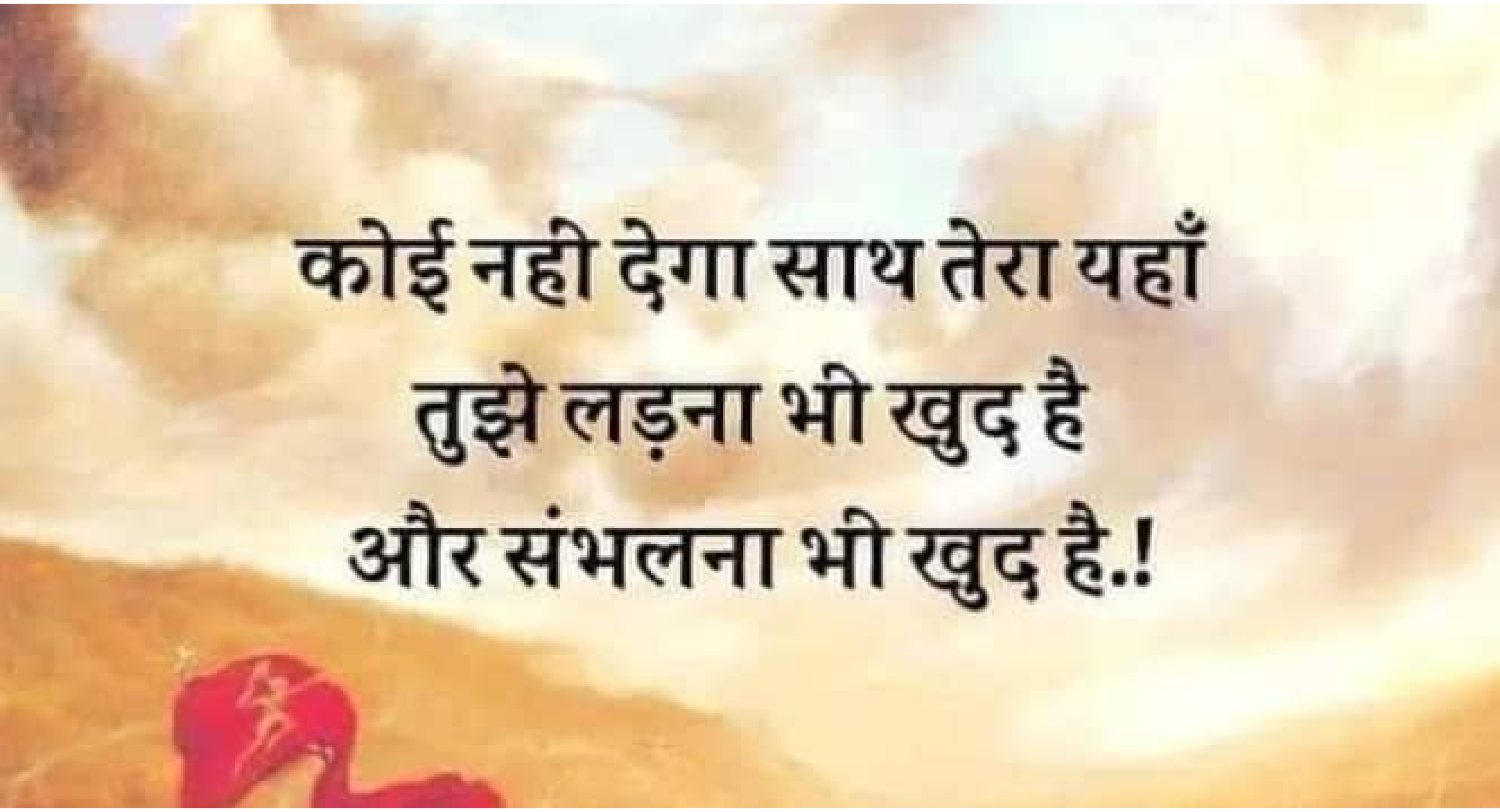

CamScanner

CamScanner

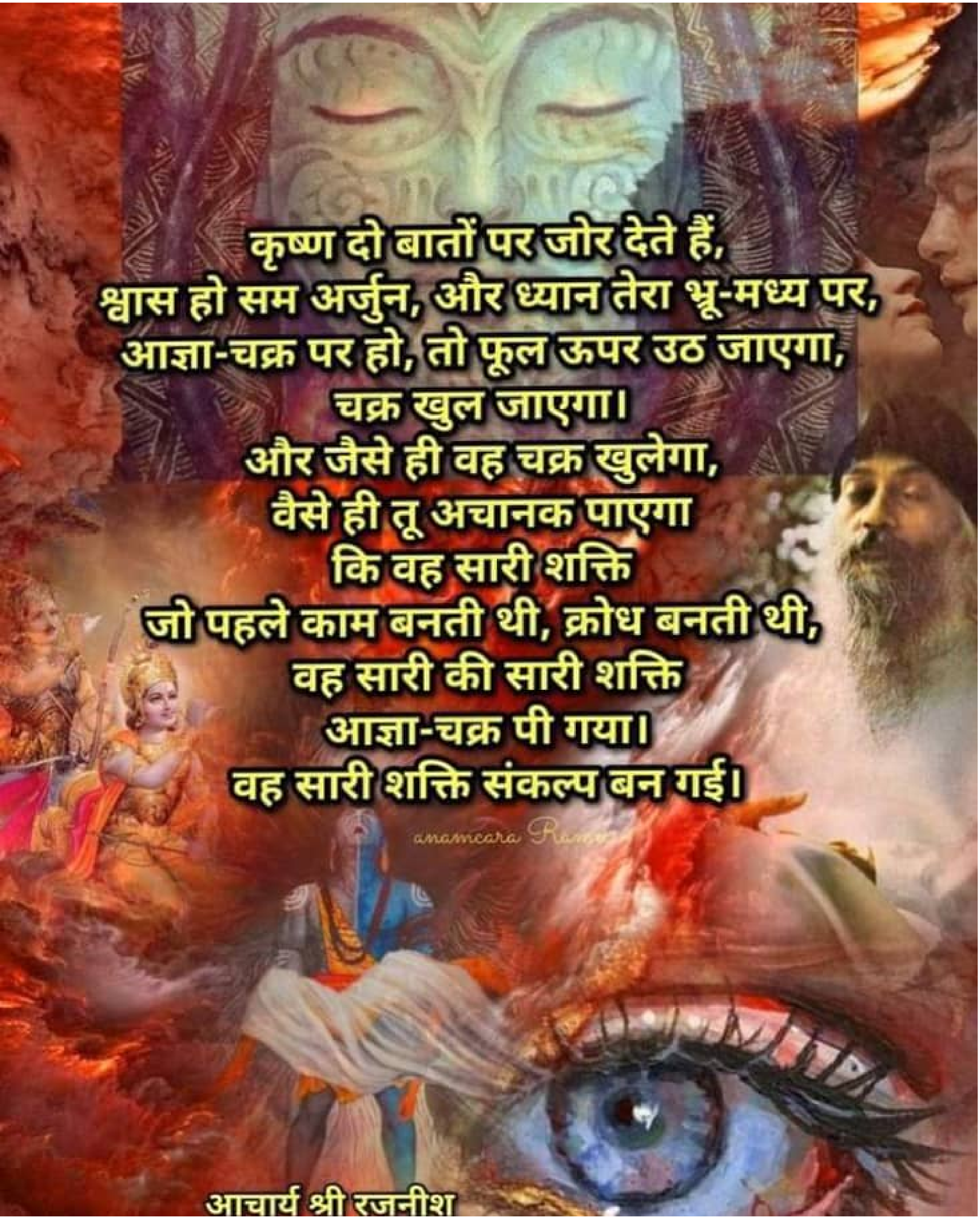
कृष्ण दो बातों पर जोर देते हैं,
श्वास हो सम अर्जुन, और ध्यान तेरा भ्रू-मध्य पर,
आज्ञा-चक्र पर हो, तो फूल ऊपर उठ जाएगा,
चक्र खुल जाएगा।
और जैसे ही वह चक्र खुलेगा,
वैसे ही तू अचानक पाएगा
कि वह सारी शक्ति
जो पहले काम बनती थी, क्रोध बनती थी,
वह सारी की सारी शक्ति
आज्ञा-चक्र पी गया।
वह सारी शक्ति संकल्प बन गई।
आचार्य श्री रजनीश

CamScanner

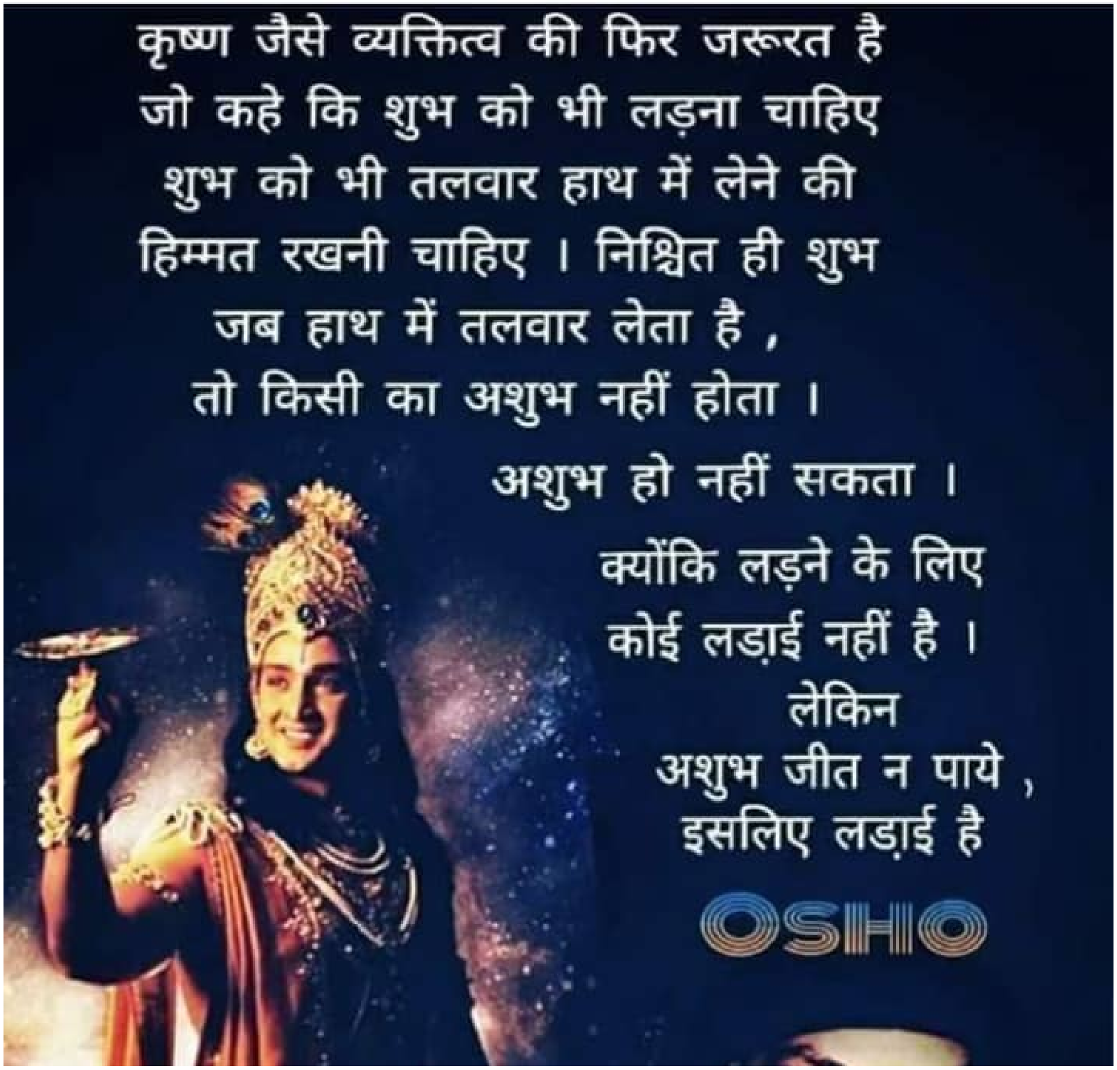
कृष्ण जैसे व्यक्तित्व की फिर जरूरत है
जो कहे कि शुभ को भी लड़ना चाहिए
शुभ को भी तलवार हाथ में लेने की
हिम्मत रखनी चाहिए । निश्चित ही शुभ
जब हाथ में तलवार लेता है ,
तो किसी का अशुभ नहीं होता ।
अशुभ हो नहीं सकता ।
क्योंकि लड़ने के लिए
कोई लड़ाई नहीं है ।
लेकिन
अशुभ जीत न पाये ,
इसलिए लड़ाई है
OSHO

CamScanner

उन मुल्कों के मस्तिष्क में शांति, बुद्धि और जागरूकता नहीं है जिन्होंने बुद्ध को अपने मुल्क से खदेड़ दिया है, भविष्य में भी कभी नहीं रहेगी। शांति, बुद्धि और जागरूकता के बगैर विश्व का कोई भविष्य नहीं है, इसीलिए विद्वानों द्वारा कहा जाता रहा है कि बुद्ध ही है दुनिया का भविष्य।

"बौद्ध धर्म को सिर्फ दो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है- अभ्यास और जागरूकता।"- दलाई लामा

एस धम्मो सनंतनो अर्थात यही है सनातन धर्म। बुद्ध का मार्ग ही सच्चे अर्थों में धर्म का मार्ग है। दोनों तरह की अतियों से अलग एकदम स्पष्ट और साफ। जिन्होंने इसे नहीं जाना उन्होंने कुछ नहीं जाना। बुद्ध को महात्मा या स्वामी कहने वाले उन्हें कतई नहीं जानते। बुद्ध सिर्फ बुद्ध जैसे हैं।

अवतारों की कड़ी में बुद्ध अंतिम हैं। उनके बाद प्रलयकाल तक कोई अवतार नहीं होने वाला है। हिंदू और बौद्ध दोनों ही धर्मों के लिए बुद्ध का होना अर्थात धर्म का होना है। बुद्ध इस भारत की आत्मा हैं। बुद्ध को जानने से भारत भी जाना हुआ माना जाएगा। बुद्ध को जानना अर्थात धर्म को जानना है।

यह संयोग ही है कि वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध का जन्म नेपाल के लुम्बिनी में ईसा पूर्व 563 को हुआ। इसी दिन 528 ईसा पूर्व उन्होंने बोधगया में एक वृक्ष के नीचे जाना कि सत्य क्या है और इसी ���न वे 483 ईसा पूर्व को 80 वर्ष की उम्र में दुनिया को कुशीनगर में अलविदा कह गए।

गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से 563 साल पहले नेपाल के लुम्बिनी वन में हुआ। उनकी माता कपिलवस्तु की महारानी महामाया देवी जब अपने नैहर देवदह जा रही थीं, तो उन्होंने रास्ते में लुम्बिनी वन में बुद्ध को जन्म दिया। कपिलवस्तु और देवदह के बीच नौतनवा स्टेशन से 8 मील दूर पश्चिम में रुक्मिनदेई नामक स्थान के पास उस काल में लुम्बिनी वन हुआ करता था।

उनका जन्म नाम सिद्धार्थ रखा गया। सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन कपिलवस्तु के राजा थे और उनका सम्मान नेपाल ही नहीं समूचे भारत में था। सिद्धार्थ की मौसी गौतमी ने उनका लालन-पालन किया क्योंकि सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद ही उनकी माँ का देहांत हो गया था।

मैत्रेय बुद्ध ः भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के आग्रह पर उन्हें वचन दिया था कि मैं'मैत्रेय'से पुनः जन्म लूँगा। तब से अब तक 2500 साल बीत गए।

बुद्ध ने इस बीच कई बार जन्म लेने का प्रयास किया लेकिन कुछ कारण ऐसे बने कि वे जन्म नहीं ले पाए। अंततः थियोसॉफिकल सोसाइटी ने जे. कृष्णमूर्ति के भीतर उन्हें अवतरित होने के लिए सारे इंतजाम किए थे, लेकिन वह प्रयास भी असफल सिद्ध हुआ। अंततः ओशो रजनीश ने उन्हें अपने शरीर में अवतरित होने की अनुमति दे दी। बुद्ध दर���शन के मुख्य तत्व ः चार आर्य सत्य, आष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पा द, अव्याकृत प्रश्नों पर बुद्ध का मौन, बुद्ध कथाएँ, अनात्मवाद और निर्वाण। बुद्ध ने अपने उपदेश पालि भाषा में दिए, जो त्रिपिटकों में संकलित हैं।

Write a comment ... Send

CamScanner

बुध का रास्ता दुख से निजात पाकर निर्वाण अर्थात शाश्वत आनंद में स्थित हो जाने का रास्ता है। बुद्ध का जन्म किसी राष्ट्र, धर्म या प्रांत की ाढांति नहीं है बल्कि की बुद्ध के जन्म से व्यवस्थित धर्म के मार्ग पर पहली बार कोई वैश्विक ाढांति हुई है।

ब्द्धु से पहले धर्म, योग और ध्यान सिर्प दार्शनिकों का विरोधाभाषिक विज्ञान ही था। काशी या कांची में बैठकर लोग माथाफोड़ी करते रहते थे।

पश्चिम के बुद्धिजीवी और वैज्ञानिक बुद्ध और योग को पिछले कुछ वर्षों से बहुत ही गंभीरता से ले रहे हैं। चीन, जापान, श्रीलंका और भारत सहित दुनिया के अनेकों बौद्ध राष्ट्रों के बौद्ध मठों में पश्चिमी जगत की तादाद बड़ी है। सभी अब यह जानने लगे हैं कि पश्चिमी धर्मों में जो बाते हैं वे बौद्ध धर्म से ही ली गई है, क्योंकि बौद्ध धर्म ईसा मसीह से 500 साल पूर्व पूरे विश्व में फैल चुका था।

दुनिया का ऐसा कोई हिस्सा नहीं बचा था जहाँ बौद्ध भिक्षुओं के कदम न पड़े हों। दुनिया भर के हर इलाके से खुदाई में भगवान बुद्ध की प्रतिमा निकलती है। दुनिया की सर्वाधिक प्रतिमाओं का रिकॉर्ड भी बुद्ध के नाम दर्ज है। बुत परस्ती शब्द की उत्पत्ति ही बुद्ध शब्द से हुई है।

उन मुल्कों के मस्तिष्क में शांति, बुद्धि और जागरूकता नहीं है जिन्होंने बुद्ध को अपने मुल्क से खदेड़ दिया है, भविष्य में भी कभी नहीं रहेगी। शांति, बुद्धि और जागरूकता के बगैर विश्व का कोई भविष्य नहीं है, इसीलिए विद्वानों द्वारा कहा जाता रहा है कि बुद्ध ही है दुनिया का भविष्य।

"बौद्ध धर्म को सिर्प दो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है- अभ्यास और जागरूकता।"- दलाई लामा

एस धम्मो सनंतनो अर्थात यही है सनातन धर्म। बुद्ध का मार्ग ही सच्चे अर्थों में धर्म का मार्ग है। दोनों तरह की अतियों से अलग एकदम स्पष्ट और साफ। जिन्होंने इसे नहीं जाना उन्होंने कुछ नहीं जाना। बुद्ध को महात्मा या स्वामी कहने वाले उन्हें कतई नहीं जानते। बुद्ध सिर्प बुद्ध जैसे हैं।

अवतारों की कड़ी में बुद्ध अंतिम हैं। उनके बाद प्रलयकाल तक कोई अवतार नहीं होने वाला है। हिंदू और बौद्ध दोनों ही धर्मों के लिए बुद्ध का होना अर्थात धर्म का होना है। बुद्ध इस भारत की आत्मा हैं। बुद्ध को जानने से भारत भी जाना हुआ माना जाएगा। बुद्ध को जानना अर्थात धर्म को जानना है।

यह संयोग ही है कि वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध का जन्म नेपाल के लुम्बिनी में ईसा पूर्व 563 को हुआ। इसी दिन 528 ईसा पूर्व उन्होंने बोधगया में एक वृक्ष के नीचे जाना कि सत्य क्या है और इसी ���न वे 483 ईसा पूर्व को 80 वर्ष की उम्र में दुनिया को कुशीनगर में अलविदा कह गए।

गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से 563 साल पहले नेपाल के लुम्बिनी वन में हुआ। उनकी माता कपिलवस्तु की महारानी महामाया देवी जब अपने नैहर देवदह जा रही थीं, तो उन्होंने रास्ते में लुम्बिनी वन में बुद्ध को जन्म दिया। कपिलवस्तु और देवदह के बीच नौतनवा स्टेशन से 8 मील दूर पश्चिम में रुक्मिनदेई नामक स्थान के पास उस काल में लुम्बिनी वन हुआ करता था।

Write a comment ... Send

CamScanner

CS CamScanner

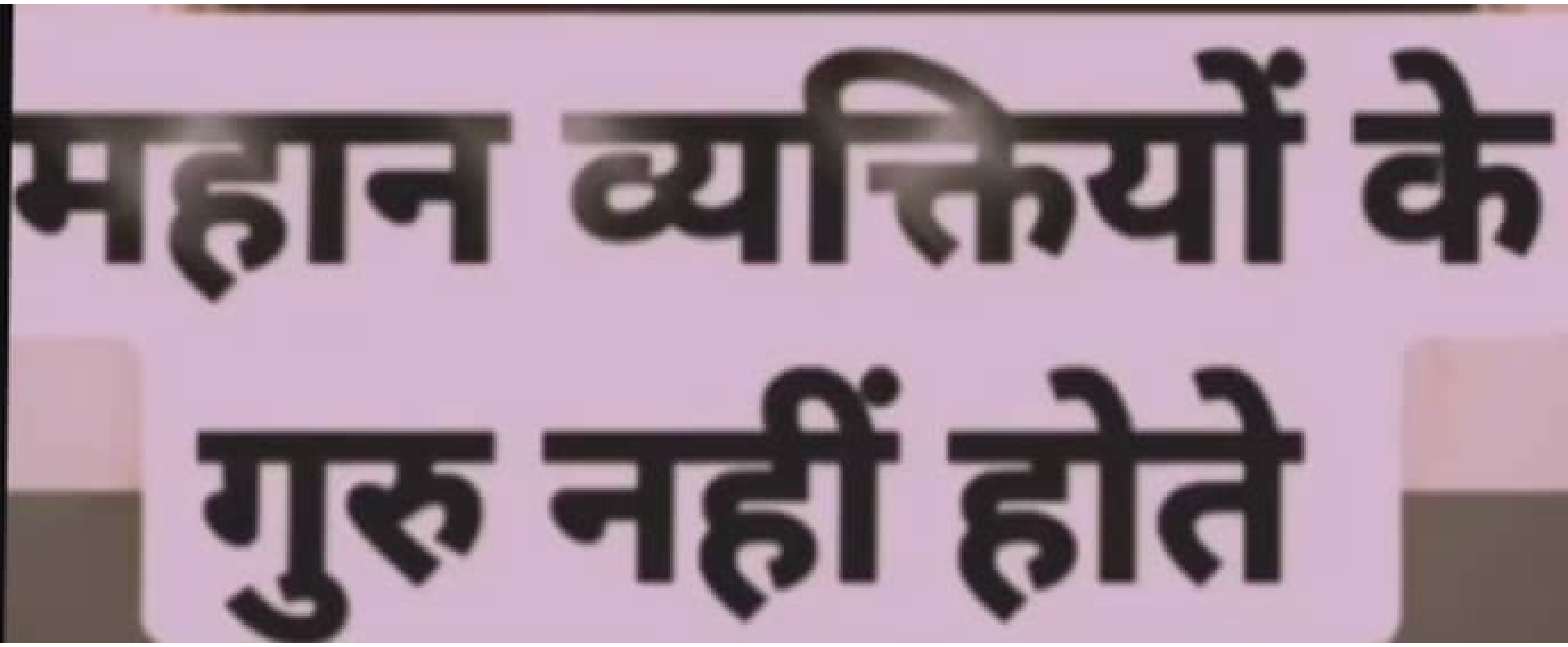

CamScanner

140 likes

swami_dhyan_rohan *Osho - समझपूर्वक मानव हृदय में झांकना सीखो। - क्योंकि जब तक तुम मानव के हृदय में झांकना न सीखोगे, तब तक तुम पिघलोगे भी नहीं, गलोगे भी नहीं, तब तक तुम मिटोगे भी नहीं, तब तक तुम्हारे अहंकार से छुटकारा बहुत मुश्किल है। तुम दूसरे के हृदय में बहो, तो धीरे– धीरे तुम्हारा अहंकार अपने आप गल जाएगा।*

_*साधना सूत्र # 13*_

View all 3 comments

CamScanner

CamScanner

ओSHO
हमारी समझ हैं चम्मच जैसी और परमात्मा है
सागर जैसे और चम्मच से सागर को नापने
बैठे हैं छोटी सी बुद्धि हैं
विराट को समझने की चेष्टा चल रही है
देखते हों मूढ़ता, बुद्धि की मूढ़ता हैं।
@O.S.H.O_

CamScanner

CamScanner

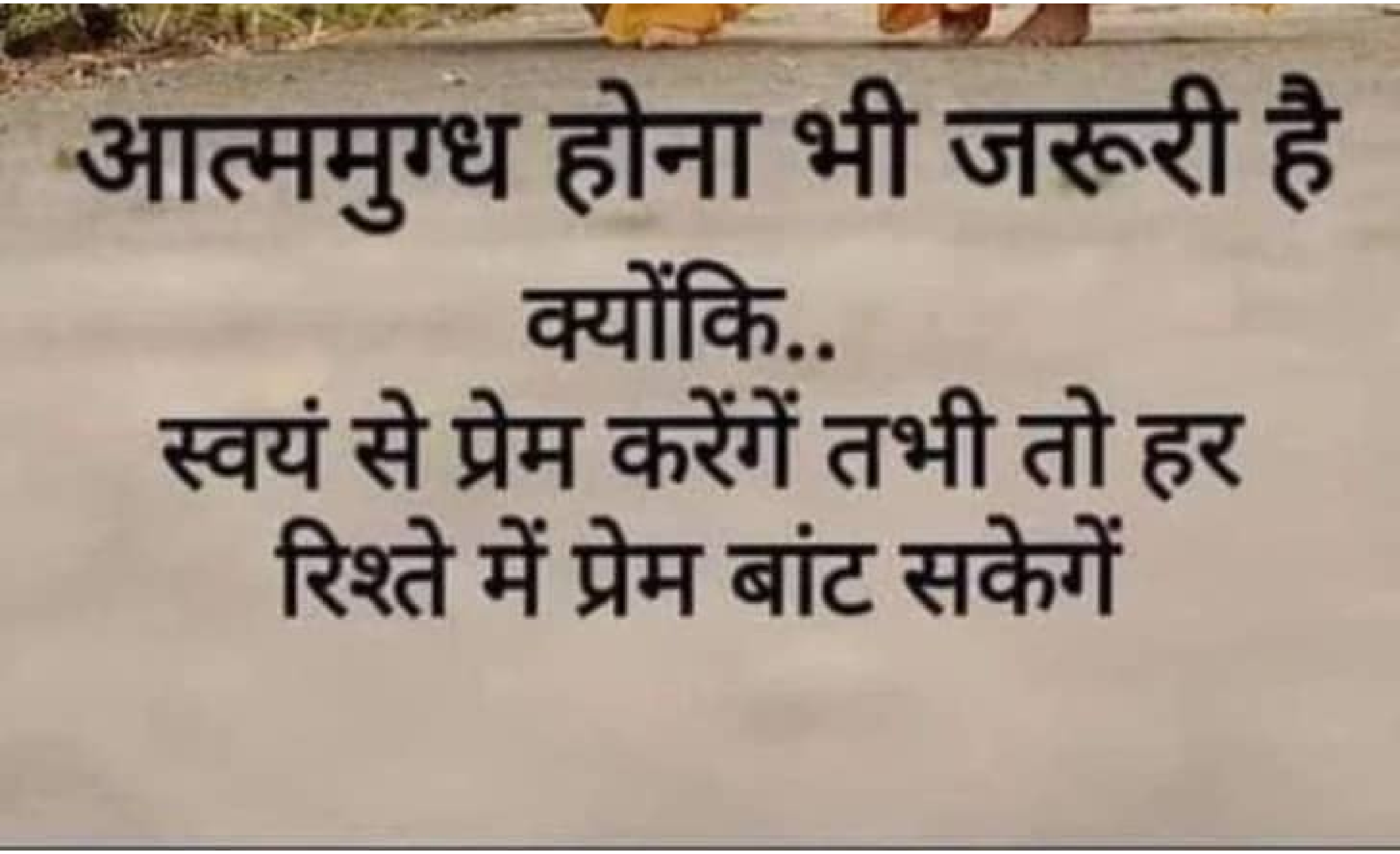

CamScanner

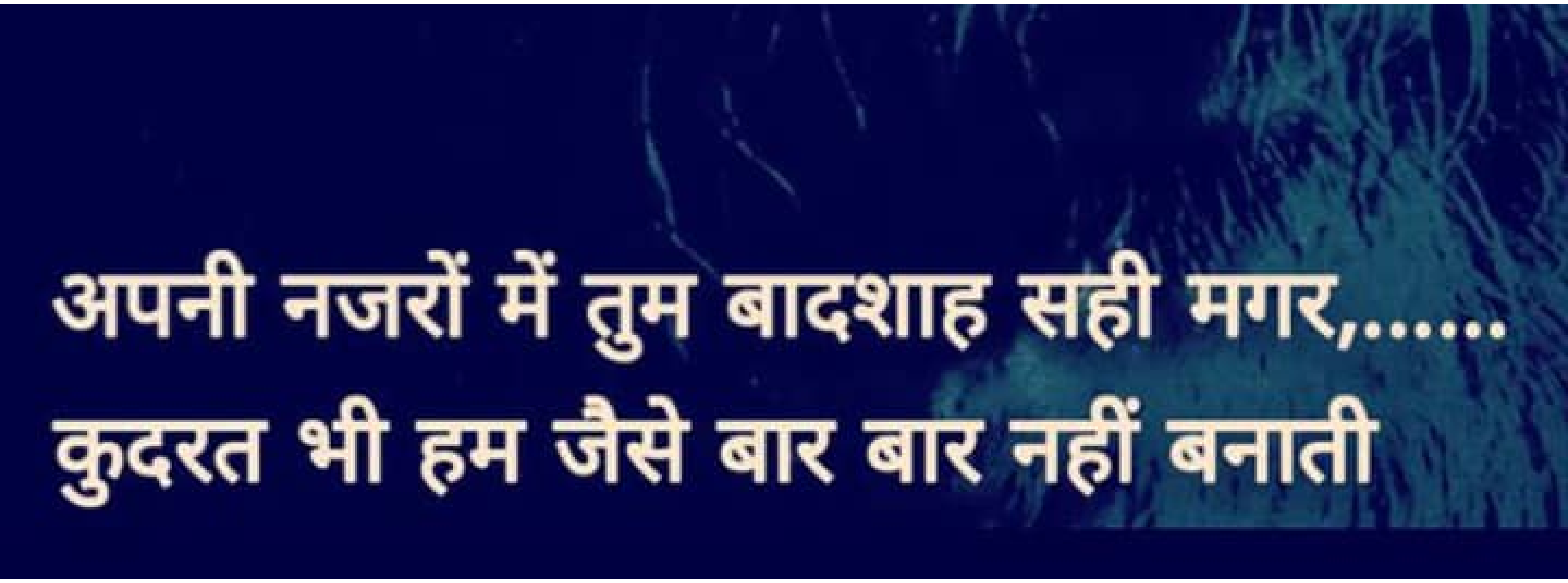

CamScanner

अकेले में हम डरते हैं, इसीलिए
भीतर जाने से हम डरते हैं,
ध्यान में भीतर जाने से हम
कतराते हैं ।।

CamScanner

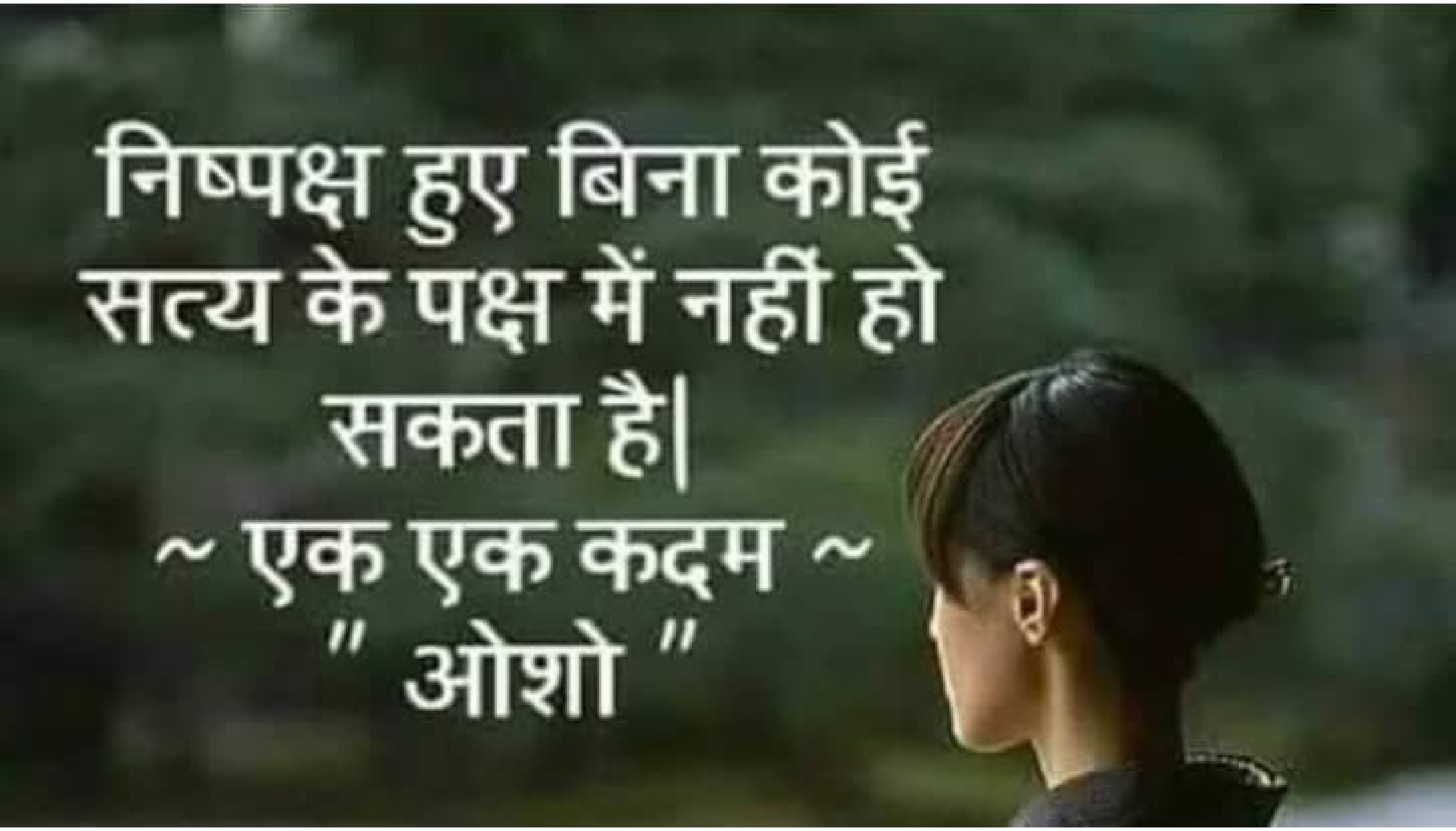

CamScanner

banaras_official
granthaalaya • Original audio
Manikarnika Ghat
लगाव ही पीड़ा है, करुणा ही क्रूरता है, अंत ही आरंभ है

CamScanner

बुद्ध जैसा व्यक्ति

जब भी कहीं पैदा होगा,

पंडित और पुरोहित

उसके विपरीत खड़े हो जाएंगे।

क्योंकि उसकी चोट

उनके पूरे धंधे को ही

तोड़ने लगती है!

Osho

CS CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

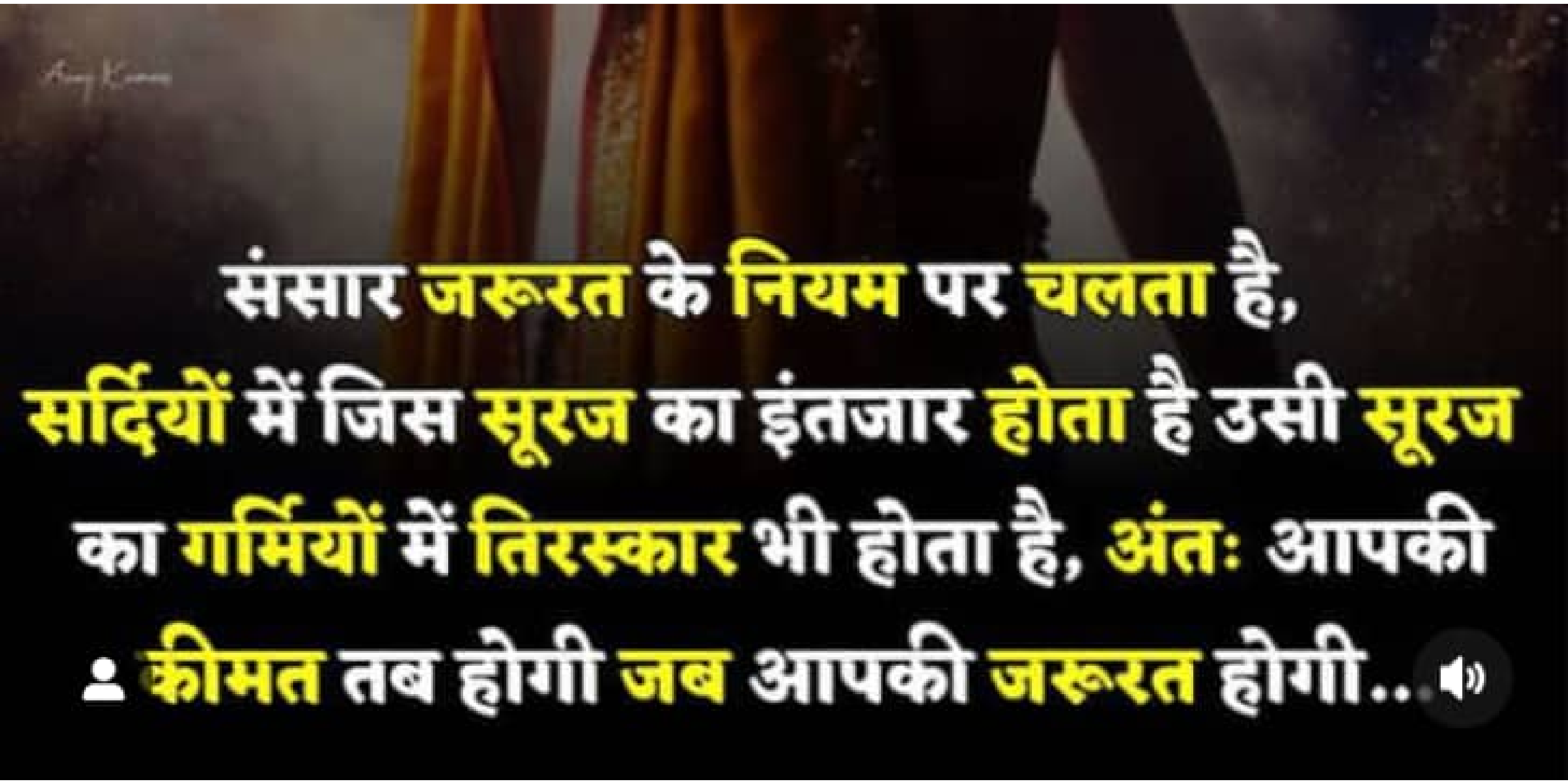
संसार जरूरत के नियम पर चलता है,
सर्दियों में जिस सूरज का इंतजार होता है उसी सूरज
का गर्मियों में तिरस्कार भी होता है, अंतः आपकी
कीमत तब होगी जब आपकी जरूरत होगी..

CamScanner

अगर आपको कुछ बुरा करना है
तभी ताकत की आवश्यकता है,
वरना अच्छे काम के लिए तो प्यार ही पर्याप्त है।

-ओशो

CamScanner

सत्य जाना तो
जा सकता है
लेकिन
न तो
समझा जा सकता है
और
न समझाया ही
जा सकता है।

Osho

CamScanner

रोचक तथ्य

Film: Gumrah (1963)

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाएँ हम दोनों
न मैं तुम से कोई उम्मीद रखूँ दिल-नवाज़ी की
न तुम मेरी तरफ़ देखो ग़लत-अंदाज़ नज़रों से
न मेरे दिल की धड़कन लड़खड़ाए मेरी बातों से
न ज़ाहिर हो तुम्हारी कश्मकश का राज़ नज़रों से

तुम्हें भी कोई उलझन रोकती है पेश-क़दमी से
मुझे भी लोग कहते हैं कि ये जल्वे पराए हैं
मिरे हमराह भी रुस्वाइयाँ हैं मेरे माज़ी की
तुम्हारे साथ भी गुज़री हुई रातों के साए हैं

तआ'रुफ़ रोग हो जाए तो उस का भूलना बेहतर
त'अल्लुक़ बोझ बन जाए तो उस को तोड़ना अच्छा
वो अफ़्साना जिसे अंजाम तक लाना न हो मुमकिन
उसे इक ख़ूब-सूरत मोड़ दे कर छोड़ना अच्छा

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाएँ हम दोनों

स्रोत :
Kulliyat-e-Sahir

CamScanner

1:20 pm 304 KB/s 65%

View all 10,052 comments

4 days ago · See translation

osho_hindi_official
osho_forever · Original audio

202 likes

CamScanner

CamScanner

CamScanner

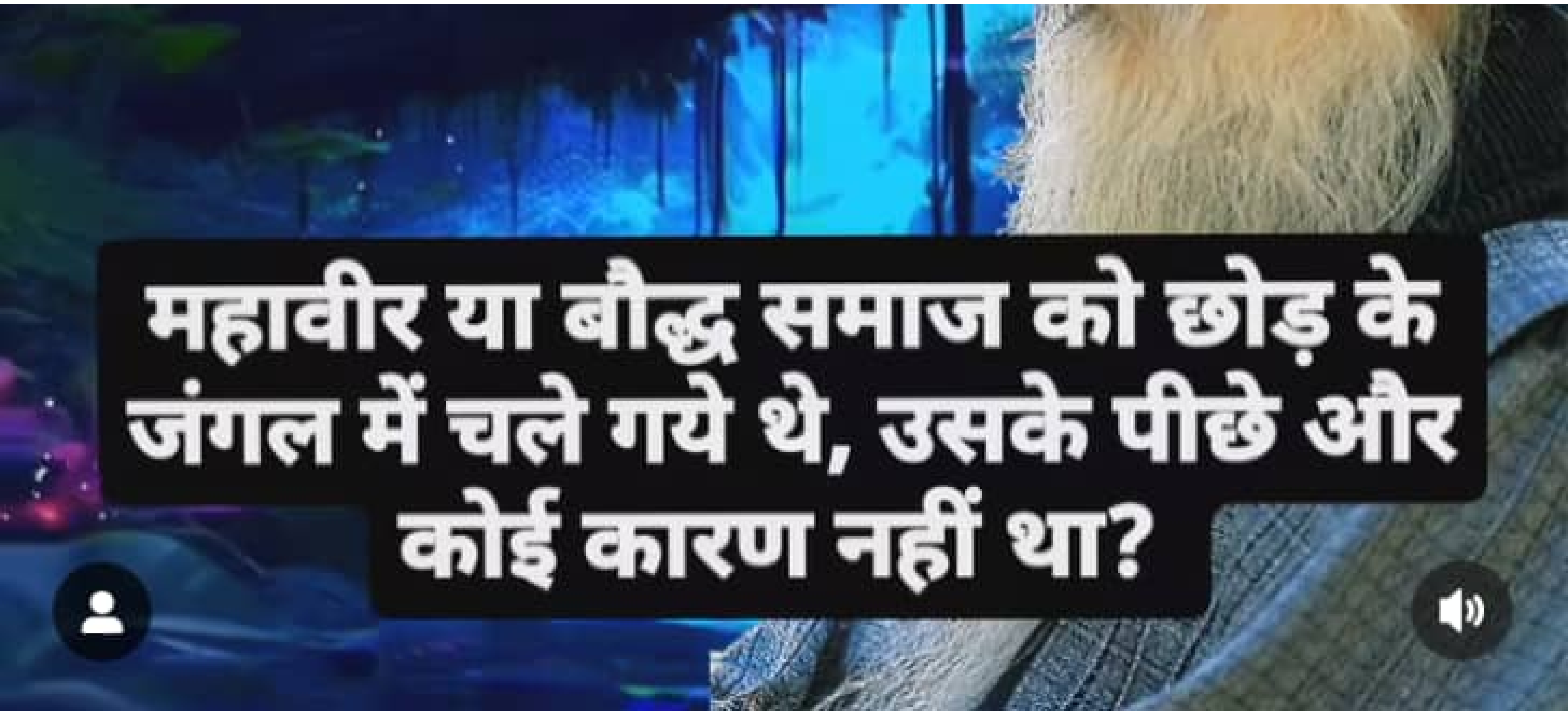

CamScanner

अगर तुम अपेक्षा ही छोड़ दो,
तो तुम्हें क्या कोई दुख दे सकेगा?
इसे बहुत सोचना। इस पर मनन करना, ध्यान करना।
अगर तुम अपेक्षा छोड़ दो, कोई मांग न रहे–क्योंकि
तुम जाग गए कि मिलना किसी से कुछ भी नहीं है-
तो तुम अचानक पाओगे तुम्हारे जीवन से
दुख विसर्जित हो गया।अब कोई दुख नहीं देता।
सुख न मांगो तो कोई दुख नहीं देता।
तब तो बड़ी अभूतपूर्व घटना घटती है।
तुम सुख नहीं मांगते, कोई दुख नहीं देता।
न बाहर से सुख आता है,न दुख आता है।
पहली बार तुम अपने में रमना शुरू होते हो।
क्योंकि अब बाहर नजर रखने की
कोई जरूरत ही न रही।

CamScanner

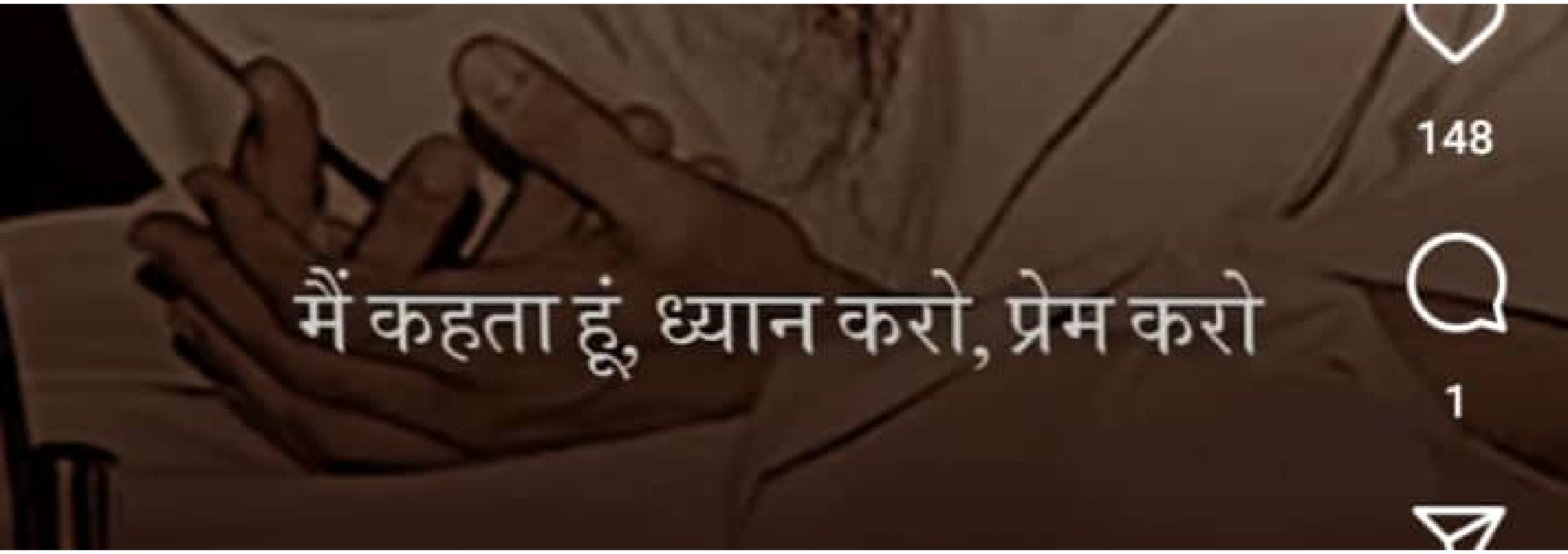

CamScanner

CamScanner

श्वास का आना और जाना और श्वास का भीतर ठहरना और बाहर ठहरना। वह जो ठहराव है जब श्वास बाहर की बाहर रह गई और श्वास भीतर की भीतर रह गई , छोटा-सा है, पल मात्रका है, लेकिन उसी पल में पलक खुलती है। उसी पल में द्वार खुलता है। तो उसी पल में साक्षी का अनुभव होता है क्योंकि श्वास भी देखने को नहीं बचती, देखने वाला अकेला रह जाता है। और जब देखने को कुछ भी नहीं बचता तो देखने वाला स्वयं को देखता है । जब सब विषय-वस्तु खो जाते हैं, सब दृश्य विलीन हो जाते हैं, तो द्रष्टा अपने को ही अनुभव करता है। उस अनुभूति का नाम परमात्मा है।

~ ओशो

CS CamScanner

तुम व्यर्थ की चीजें ही घर में इकट्ठी नहीं करते, ध्यान रखना तुम व्यर्थ के विचार भी इकट्ठे करते हो। कोई आदमी तुम्हें सुना रहा है कुछ भी, तुम सुनते जाते हो। अखबार में तुम कुछ भी पढ़ते जाते हो। तुम यह भी नहीं पूछते कि ये विचार इकट्ठे करने हैं? तुमने कभी किसी आदमी से कहा कि भाई इन बातों की मुझे कोई भी जरूरत नहीं? कोई आदमी किसी की निंदा कर रहा है, कोई अफवाह सुना रहा है, तुमने कभी बीच में टोका कि इसकी मुझे कोई भी जरूरत नहीं? क्यों कचरा मेरी खोपड़ी में डाल रहे हो? डाल देना आसान है, निकालना मुश्किल है। ध्यान करने वालों से पूछो! जब वे निकालने बैठते हैं तब वह निकलता नहीं। वह जड़ें जमा ली हैं उसने। और इकट्ठा करते वक्त होश नहीं रखा।

CamScanner

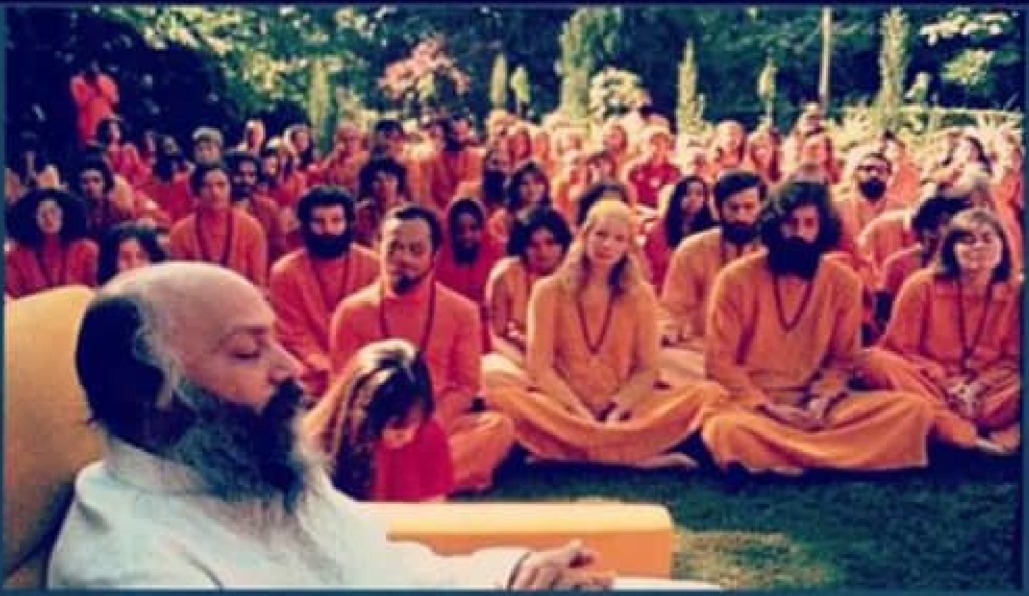

तुम्हारे मंदिर मस्जिद ने न केवल परमात्मा को सिकोड़ कर छोटा कर दिया, तुम्हें सिकोड़ कर छोटा कर दिया। मंदिर जानेवाला हिंदू हो गया। मस्जिद जानेवाला मुसलमान हो गया। काश, हमने परमात्मा को ऐसा देखा होता अगर तुम प्रत्येक वस्तु में परमात्मा को देखते, तो कैसे हिंदू होते, कैसे मुसलमान होता। कैसे एक दूसरे की हत्याएं करते धर्म के नाम अधर्म फैला। मंदिरों मस्जिदों के नाम पर कितना खून बहा:ओशो

CamScanner

गीत की
असली सार्थकता
उसके माधुर्य में नहीं,
उसकी लीनता में है।
तुम उसमें इतने लीन हो
सकते हो कि तुम
बिलकुल
मिट ही जाओ।

CamScanner

में है, बीच की कड़ी है। पत्थर जड़ है, परमात्मा पूर्ण चेतन है मनुष्य आधा —आधा——कुछ है कुछ चेतन है। यही मनुष्य की चिंता है, यही उसका संताप है। यही उसकी दुविधा, द्वंद्व, यही उसकी पीड़ा, तनाव। आधा हिस्सा खींचता है कि जड़ हो जाओ, आधा हिस्सा खींचता है कि चैतन्य हो जाओ। आधा हिस्सा कहता है कि डूब जाओ संगीत में, शराब में, सेक्स में। आधा हिस्सा कहता है : उठो — ध्यान में, प्रार्थना में, पूजा में। और इन दोनों में कहीं तालमेल नहीं होता। ये दोनों एक — दूसरे के विपरीत जुड़े हैं।

का सोवै दिन रैन-10

CamScanner

गए मंदिर में और कुछ मांगने लगे-
-धन, पद, प्रतिष्ठा, तो तुमने
परमात्मा का बहुत अपमान किया।
acharya Rajneesh
acR

CamScanner

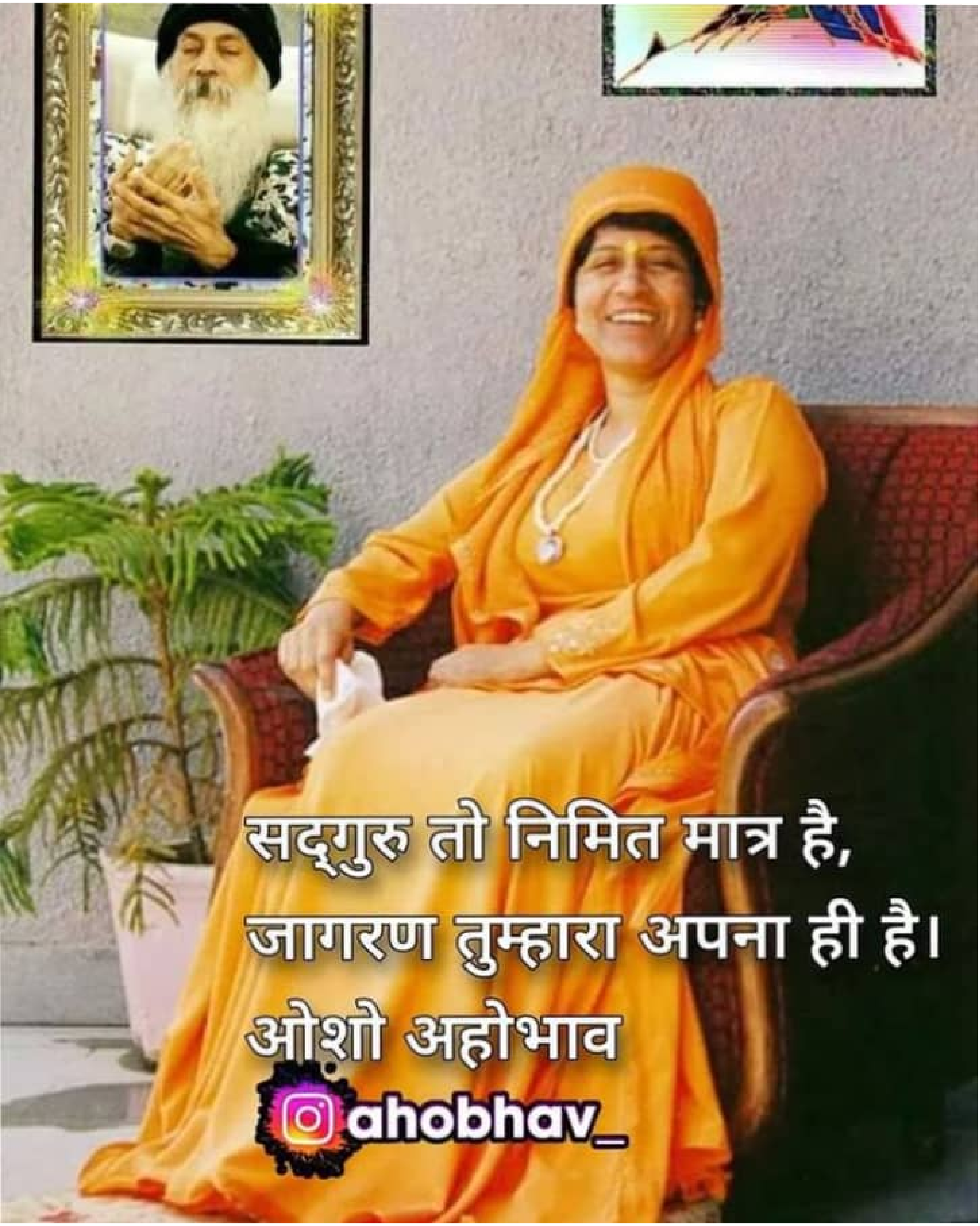

CamScanner

परमात्मा की दी हुई
वासना है और परमात्मा का
दिया हुआ ये संसार है

CamScanner

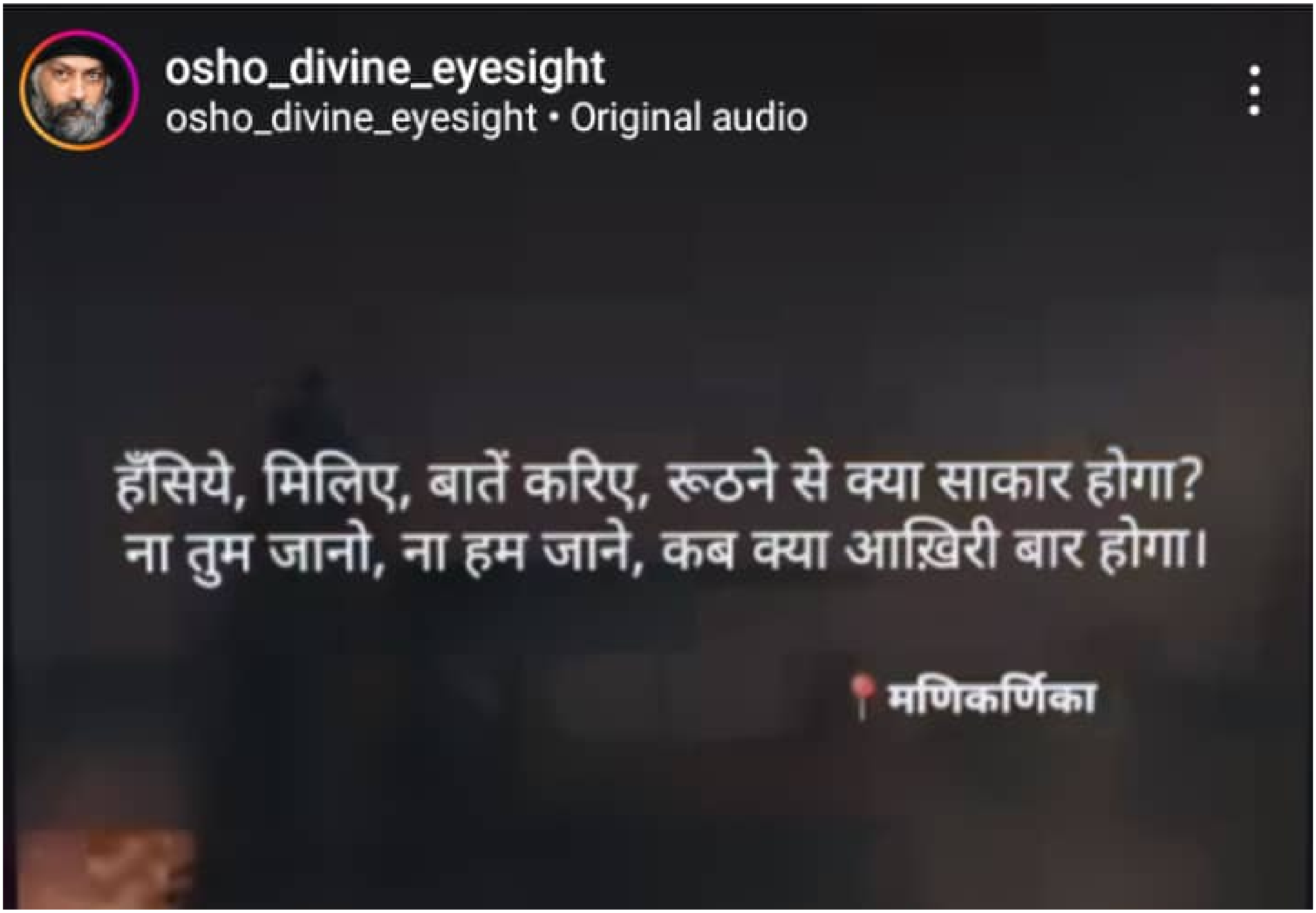
osho_divine_eyesight
osho_divine_eyesight • Original audio
हँसिये, मिलिए, बातें करिए, रूठने से क्या साकार होगा?
ना तुम जानो, ना हम जाने, कब क्या आख़िरी बार होगा।
मणिकर्णिका

CamScanner

हम अपना दुख भी बना सकते हैं और सुख भी।
हम आनंदमय हो सकते हैं और परेशान भी।
यह सारी स्वतंत्रता मनुष्य को है।
इसलिए
यदि हम दुखी होते हैं
तो परमात्मा जिम्मेवार नहीं है।
उस दुख के कारण हमें खोजने पड़ेंगे और बदलने पड़ेंगे।

CamScanner

अगर आप के मन में किसी बीमारी का थोडा सा भी डर है, तो आपका दिमाग आप के शरीर में उस बीमारी का लक्षण उत्पन्न कर देगा। क्योकि हमारा दिमाग इतना शक्तिशाली है की, वह किसी बीमारी का इलाज भी कर सकता है, और बीमारी पैदा भी कर सकता है।

CS CamScanner

सड़ी-गली कहानियों पर,

झूठी ईजादों पर

धर्म खड़े नहीं होते।

धर्म को खड़ा करने के लिए

चेतना का विज्ञान चाहिए।

CamScanner

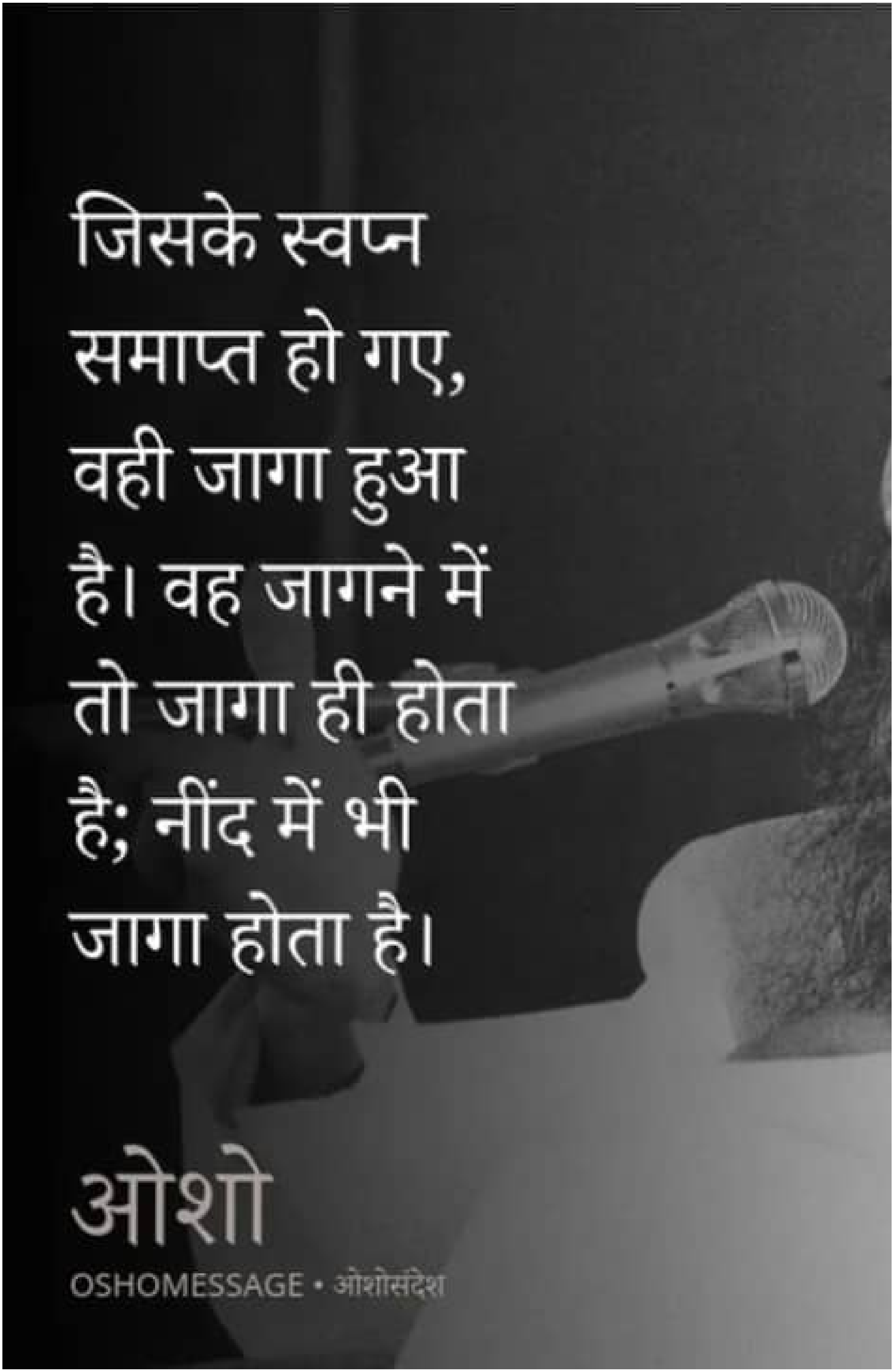
जिसके स्वप्न
समाप्त हो गए,
वही जागा हुआ
है। वह जागने में
तो जागा ही होता
है; नींद में भी
जागा होता है।
ओशो
OSHOMESSAGE • ओशोसंदेश

CamScanner

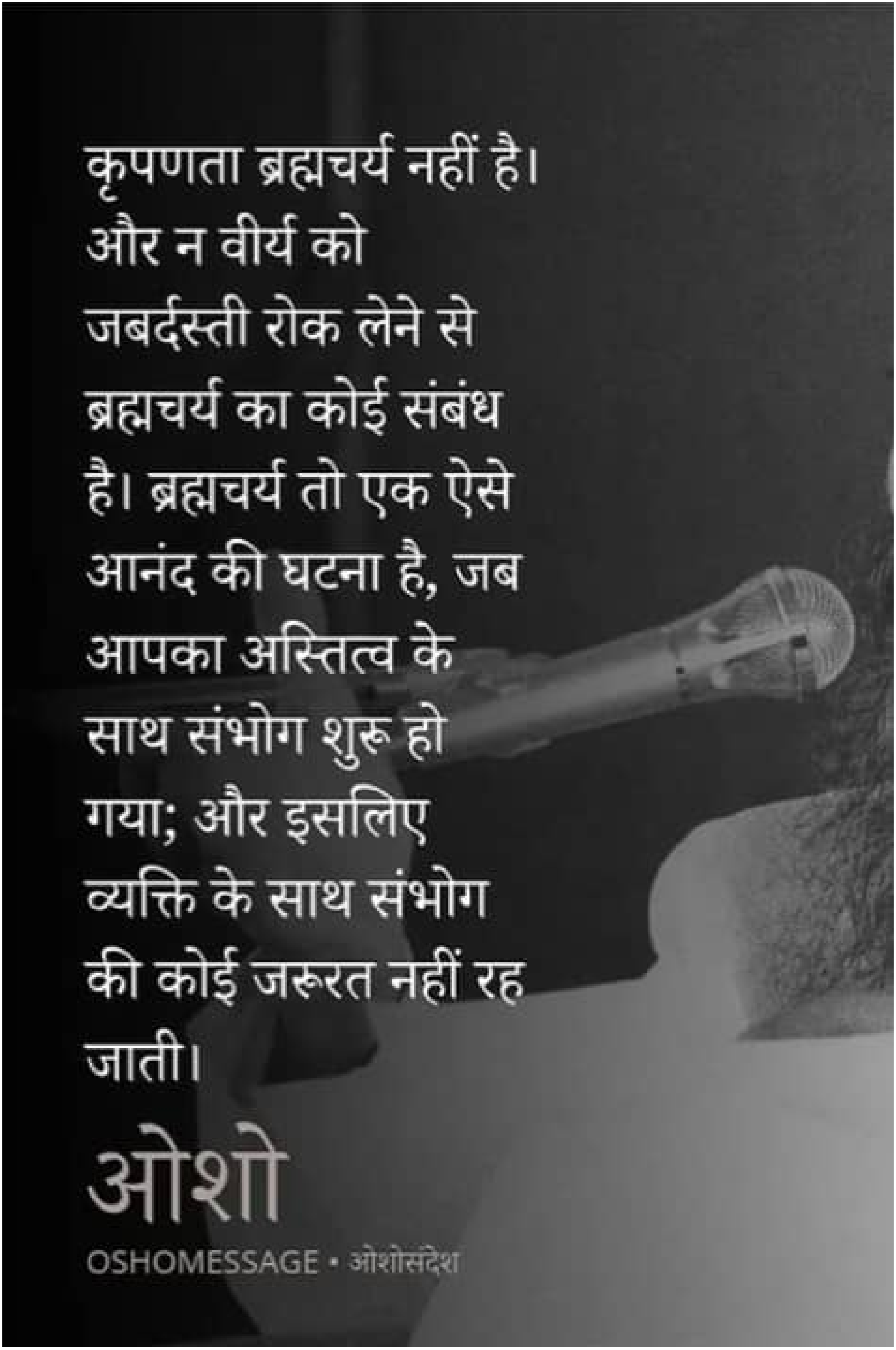
कृपणता ब्रह्मचर्य नहीं है।
और न वीर्य को
जबर्दस्ती रोक लेने से
ब्रह्मचर्य का कोई संबंध
है। ब्रह्मचर्य तो एक ऐसे
आनंद की घटना है, जब
आपका अस्तित्व के
साथ संभोग शुरू हो
गया; और इसलिए
व्यक्ति के साथ संभोग
की कोई जरूरत नहीं रह
जाती।
ओशो
OSHOMESSAGE • ओशोसंदेश

CamScanner

तुम्हारे भीतर प्यास है,
बस, काफी योग्यता है।

पी लो!
जो कलश छलक रहा है,
अंजुलि भर लो!

CamScanner

CamScanner

कभी किसी को खास मत बनाना,

सारा मसला यही से शुरू होता है ।।।

CamScanner

इस बात को समझो। यह संसार सूली है, क्योकि इस संसार में सिवाय मौत के और कुछ नही घटता। जन्म के बाद बस एक ही बात निश्चित है: मौत। जन्म के बाद मृत्यु के अतिरिक्त यहां कुछ भी नही घटता।

CS CamScanner

मुक्त वह है जिसे न शुभ रहा, न अशुभ रहा।
जिसकी लोहे की जंजीरें,
सोने की जंजीरें सब टूट गईं।
मुक्त वह है, जिसका द्वंद्व समाप्त हो गया।
जिसके भीतर दो न रहे--शुभ-अशुभ, अच्छा-बुरा,
रात-दिन, स्वर्ग-नरक, सुख-दुख सब खो गए।

CamScanner

मौत ही परम सत्य है ......
Subhash Hooda
SH
दुख मरने का नहीं,
बिछड़ जाने का होता है !
इंसान को मौत नहीं,
Subhash Hooda
वो प्यार रुलाता है जो मरने
वाले के साथ होता है !

CamScanner

जीवन में लड़ने
का प्रश्न नही, जागने
का प्रश्न है। जो नही जाग
पाता, वह लडता है। और जो
लडता है, वह आज नही
कल हार जाएगा।

ओशो- साक्षी की साधना

CamScanner

ध्यान रखो - जब तक तुम दूसरे को
प्रभावित करना चाहते हो ,
तब तक तुम अहंकार से ग्रस्त हो ।
आत्मा किसी को प्रभावित करना नहीं चाहती ।
दूसरे को प्रभावित करने में सार भी क्या है !
पानी पर बनायी हुई लकीरों जैसा है ।
ओशो ~ शिव सूत्र प्र.#५
sks

CamScanner

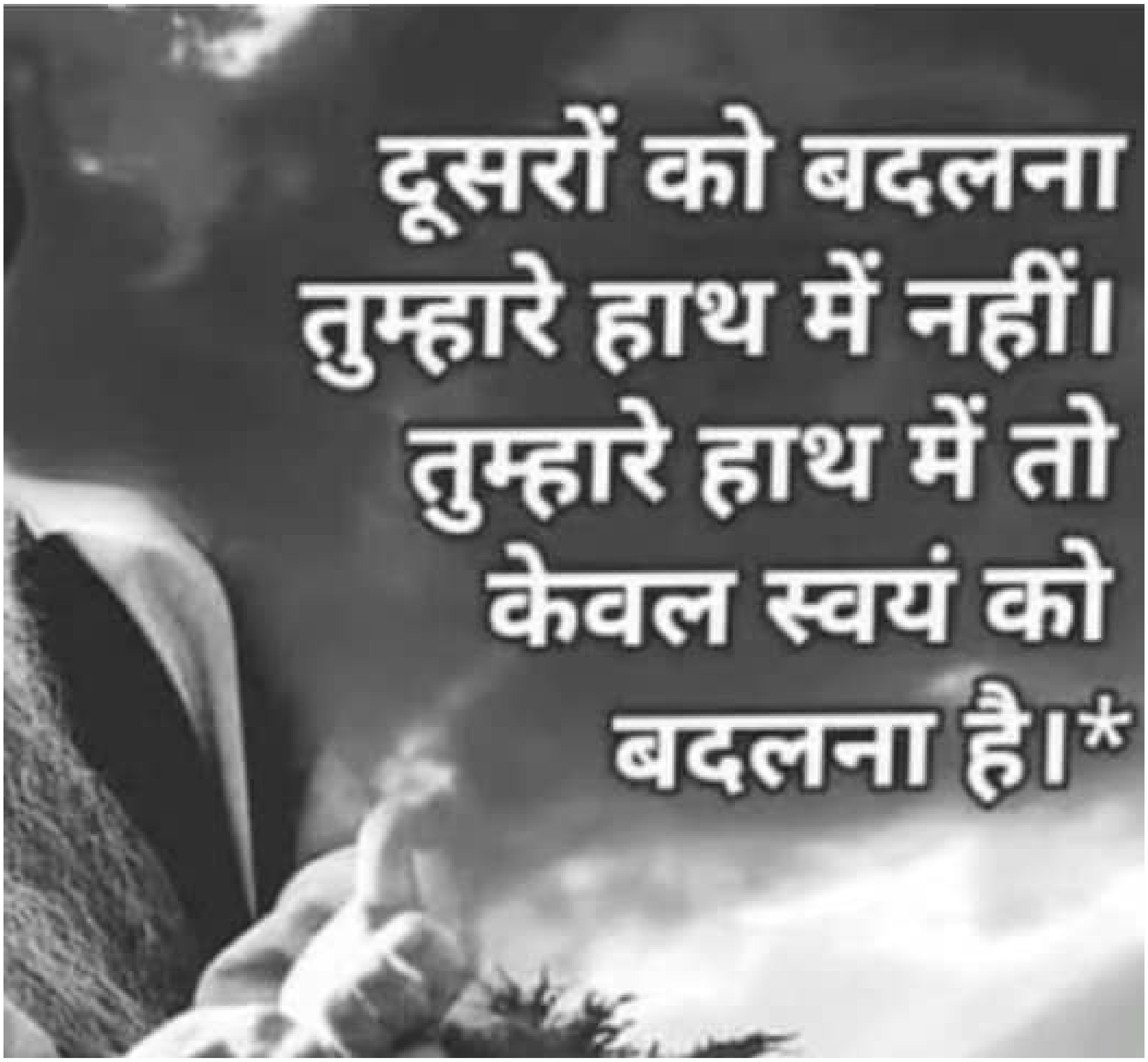

CamScanner

shri_maa__vaishnodevi
Rukhsar Bandhukia, Mann Taneja • Bhor
Follow
#jaimatadi
बुला लो माँ अब बहुत याद आ रही है..

CamScanner

धन्यभागी है वह,
जो छोटे बच्चे की
भाँती सरल हो जाते
हैं ।।

CamScanner

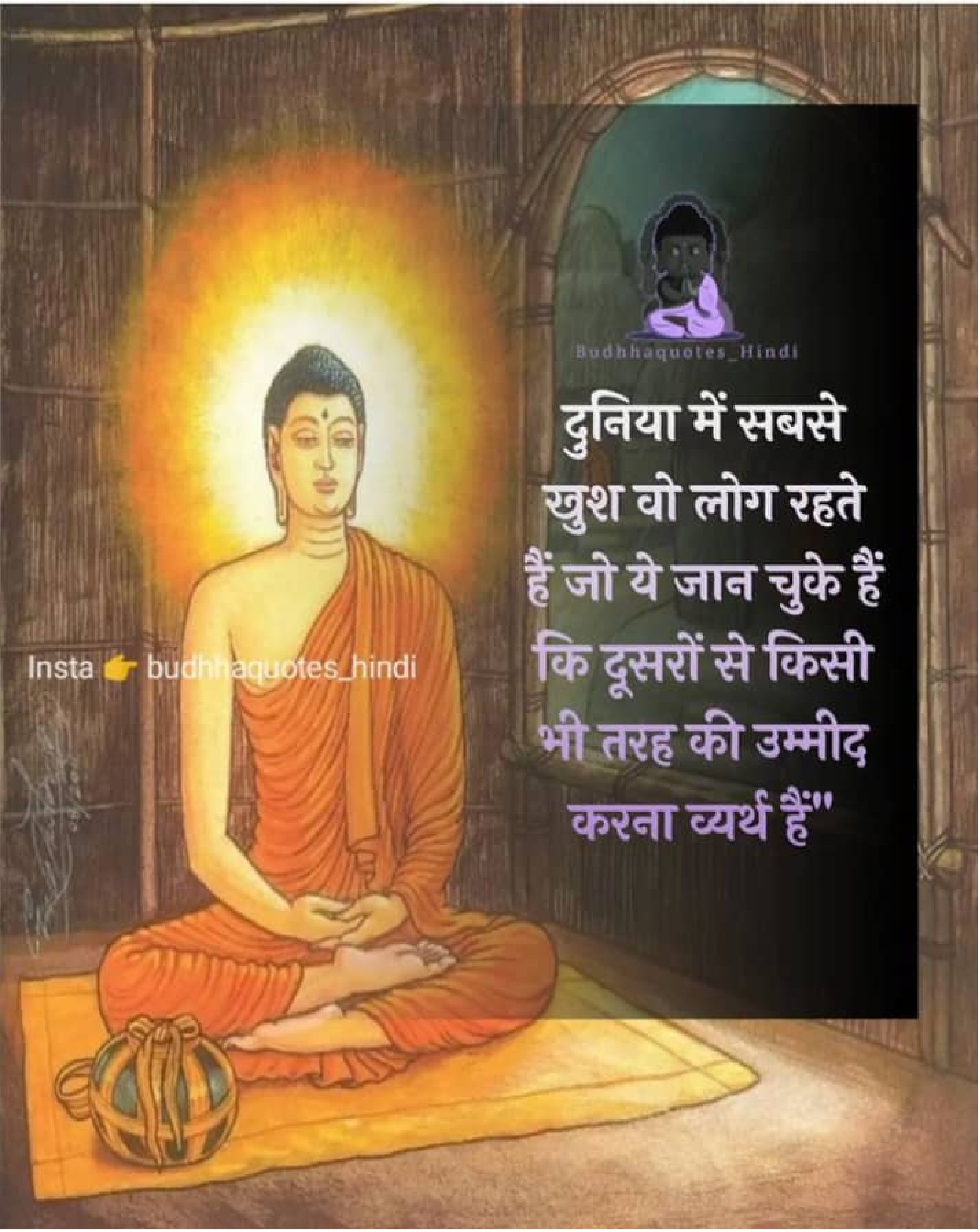

CS CamScanner

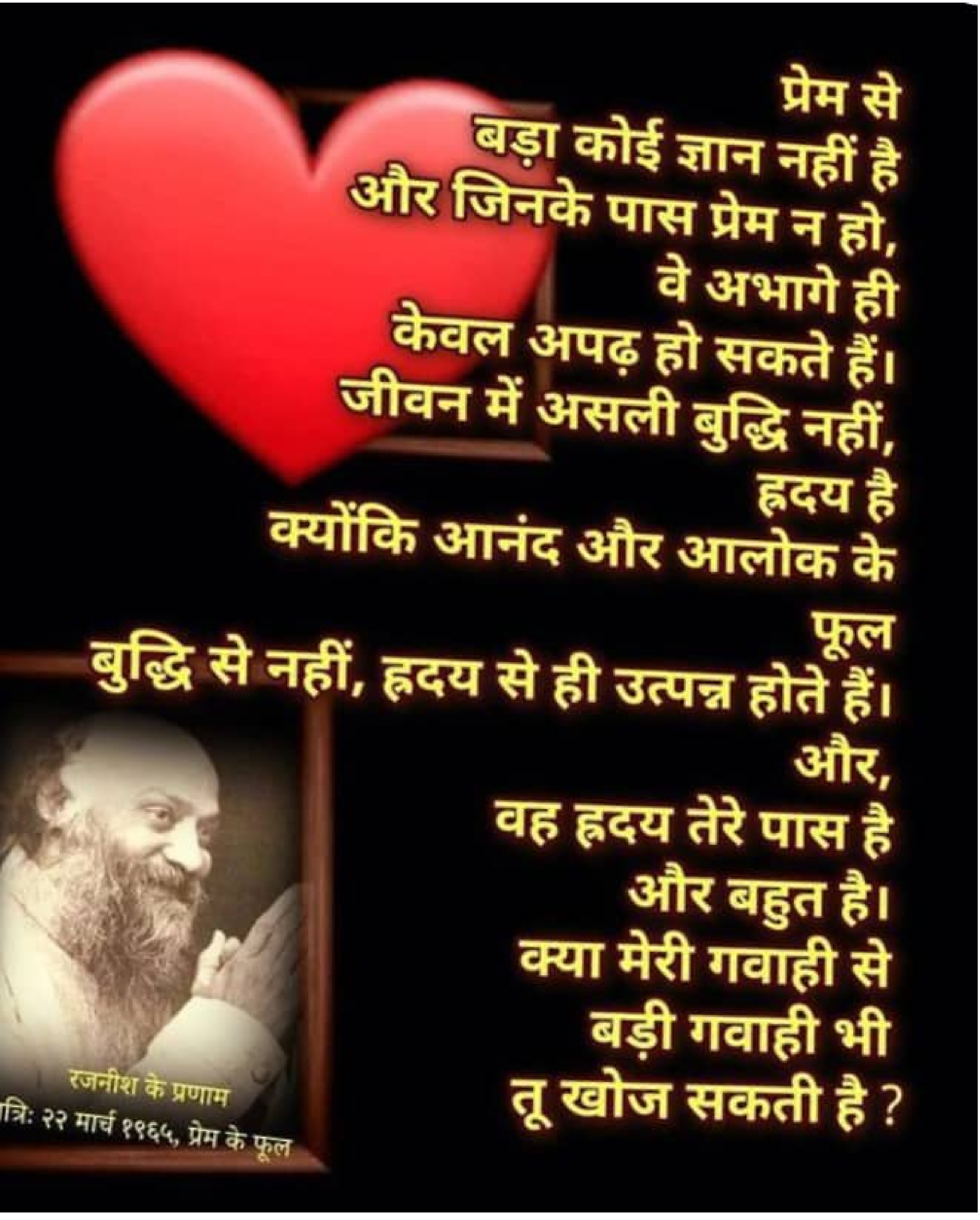
प्रेम से
बड़ा कोई ज्ञान नहीं है
और जिनके पास प्रेम न हो,
वे अभागे ही
केवल अपढ़ हो सकते हैं।
जीवन में असली बुद्धि नहीं,
हृदय है
क्योंकि आनंद और आलोक के
फूल
बुद्धि से नहीं, हृदय से ही उत्पन्न होते हैं।
और,
वह हृदय तेरे पास है
और बहुत है।
क्या मेरी गवाही से
बड़ी गवाही भी
तू खोज सकती है?
रजनीश के प्रणाम
त्रिः २२ मार्च १९६५, प्रेम के फूल

CamScanner

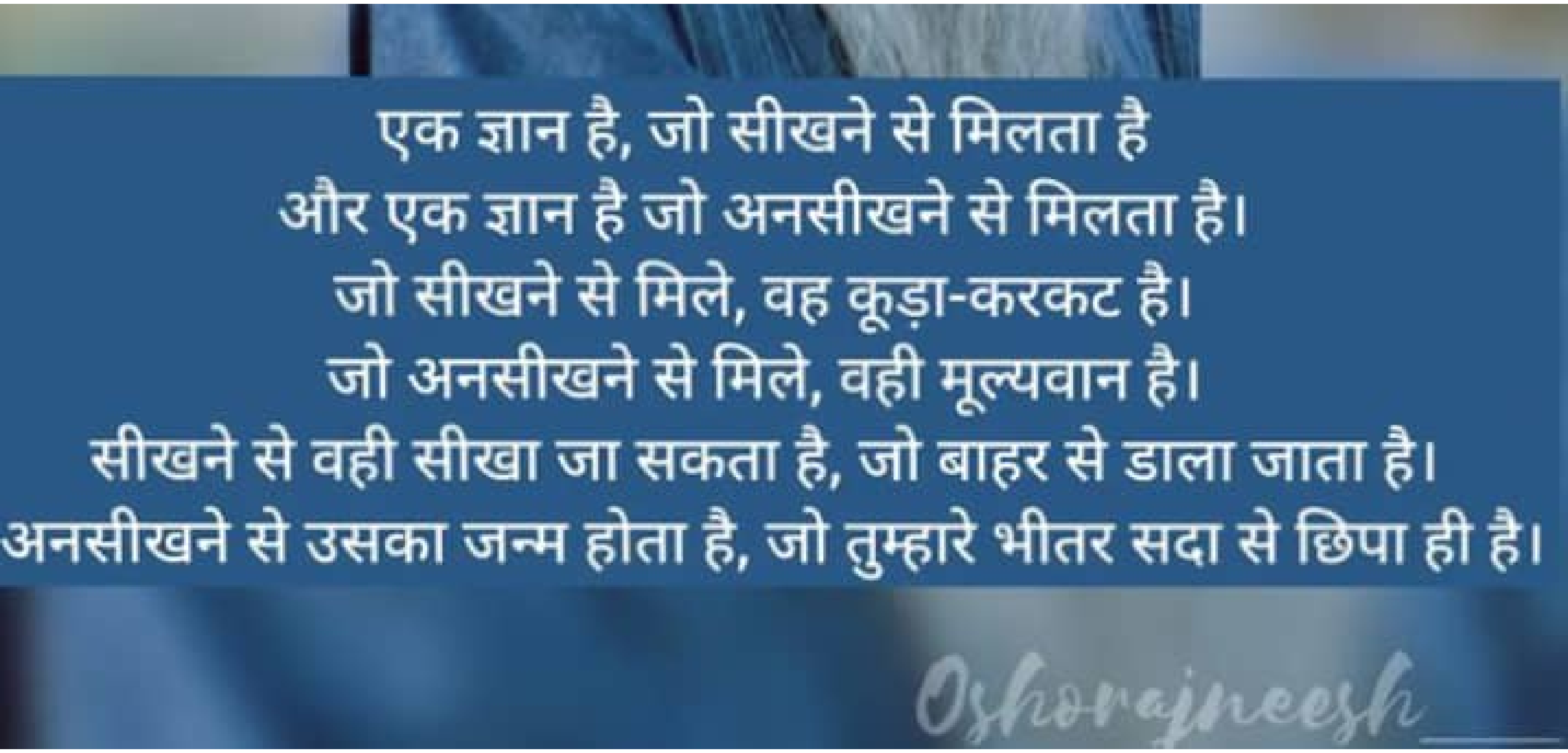
एक ज्ञान है, जो सीखने से मिलता है
और एक ज्ञान है जो अनसीखने से मिलता है।
जो सीखने से मिले, वह कूड़ा-करकट है।
जो अनसीखने से मिले, वही मूल्यवान है।
सीखने से वही सीखा जा सकता है, जो बाहर से डाला जाता है।
अनसीखने से उसका जन्म होता है, जो तुम्हारे भीतर सदा से छिपा ही है।
Oshorajneesh

CamScanner

CS CamScanner

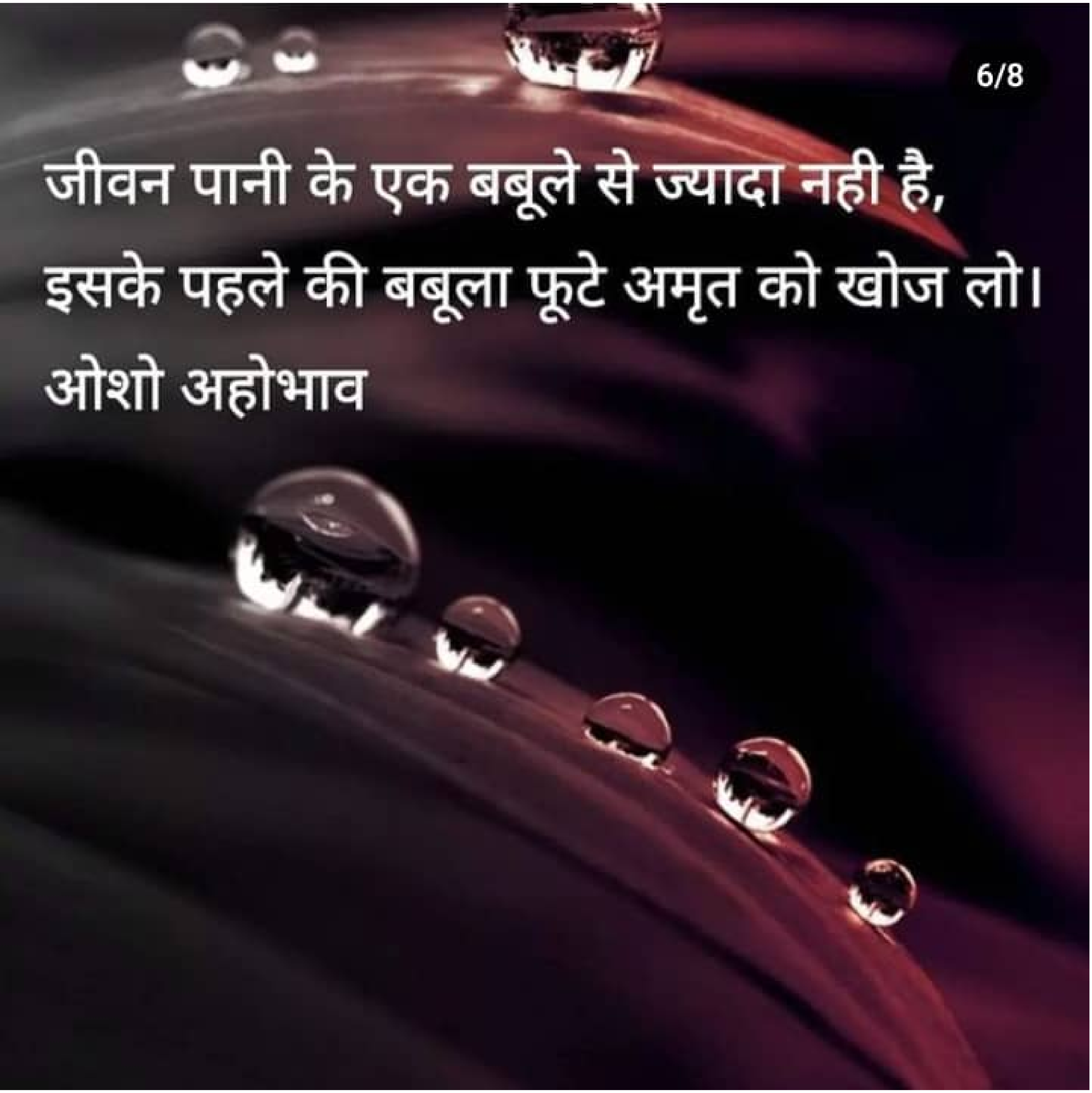

CamScanner

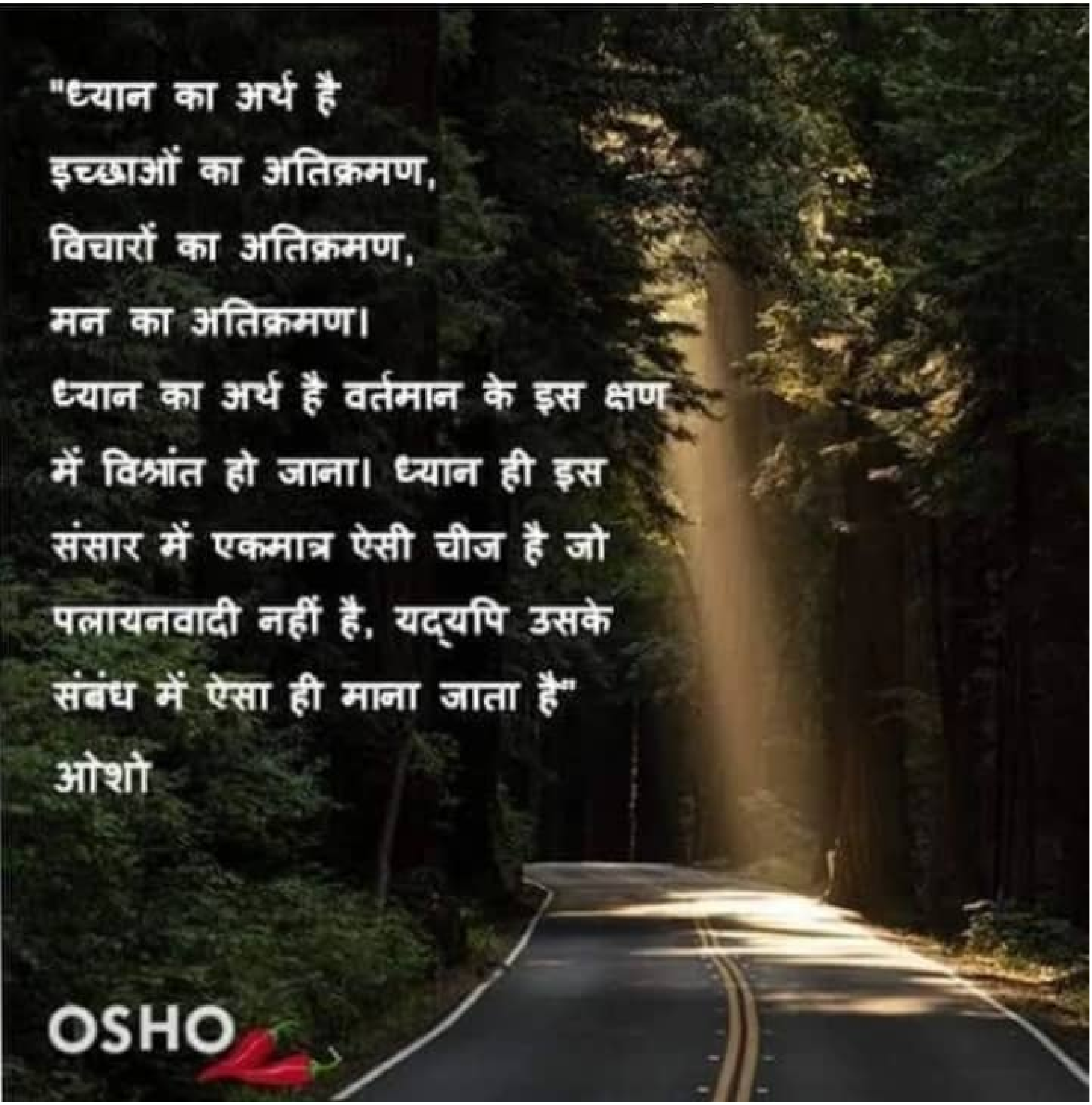
"ध्यान का अर्थ है
इच्छाओं का अतिक्रमण,
विचारों का अतिक्रमण,
मन का अतिक्रमण।
ध्यान का अर्थ है वर्तमान के इस क्षण
में विश्रांत हो जाना। ध्यान ही इस
संसार में एकमात्र ऐसी चीज है जो
पलायनवादी नहीं है, यद्यपि उसके
संबंध में ऐसा ही माना जाता है"
ओशो
OSHO

CamScanner

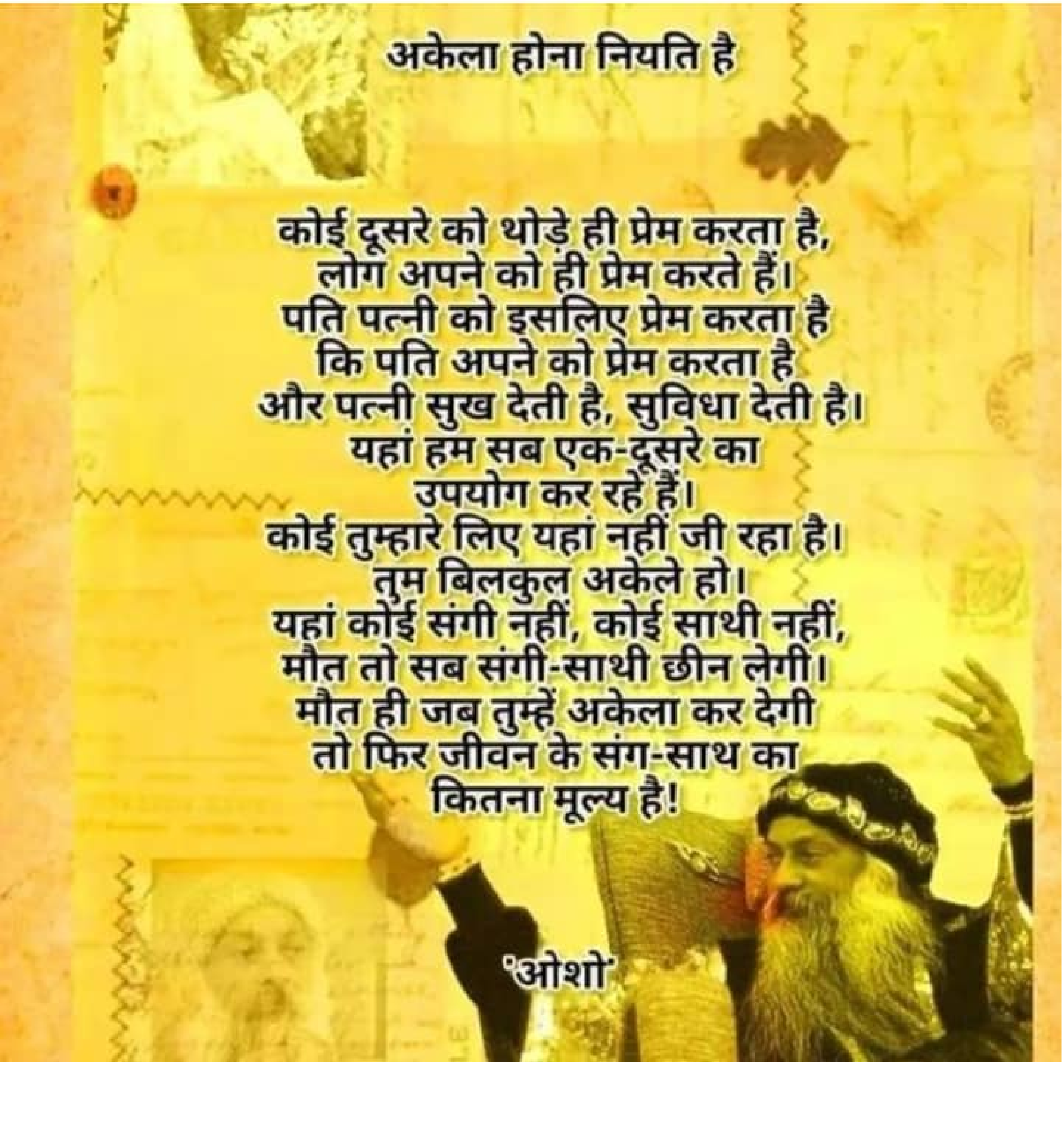
अकेला होना नियति है
कोई दूसरे को थोड़े ही प्रेम करता है,
लोग अपने को ही प्रेम करते हैं।
पति पत्नी को इसलिए प्रेम करता है
कि पति अपने को प्रेम करता है
और पत्नी सुख देती है, सुविधा देती है।
यहां हम सब एक-दूसरे का
उपयोग कर रहे हैं।
कोई तुम्हारे लिए यहां नहीं जी रहा है।
तुम बिलकुल अकेले हो।
यहां कोई संगी नहीं, कोई साथी नहीं,
मौत तो सब संगी-साथी छीन लेगी।
मौत ही जब तुम्हें अकेला कर देगी
तो फिर जीवन के संग-साथ का
कितना मूल्य है!
'ओशो'

CamScanner

OSHO

हम चाहते हैं सब जल्दी–जल्दी हो जाए, कोई दूसरा कर दे, क्योंकि श्रम करने को कोई राजी नहीं है, कुछ पाने के लिए श्रम करना पड़ेगा और भीतर जाने के लिए विराट श्रम करना पड़ेगा।।

CamScanner

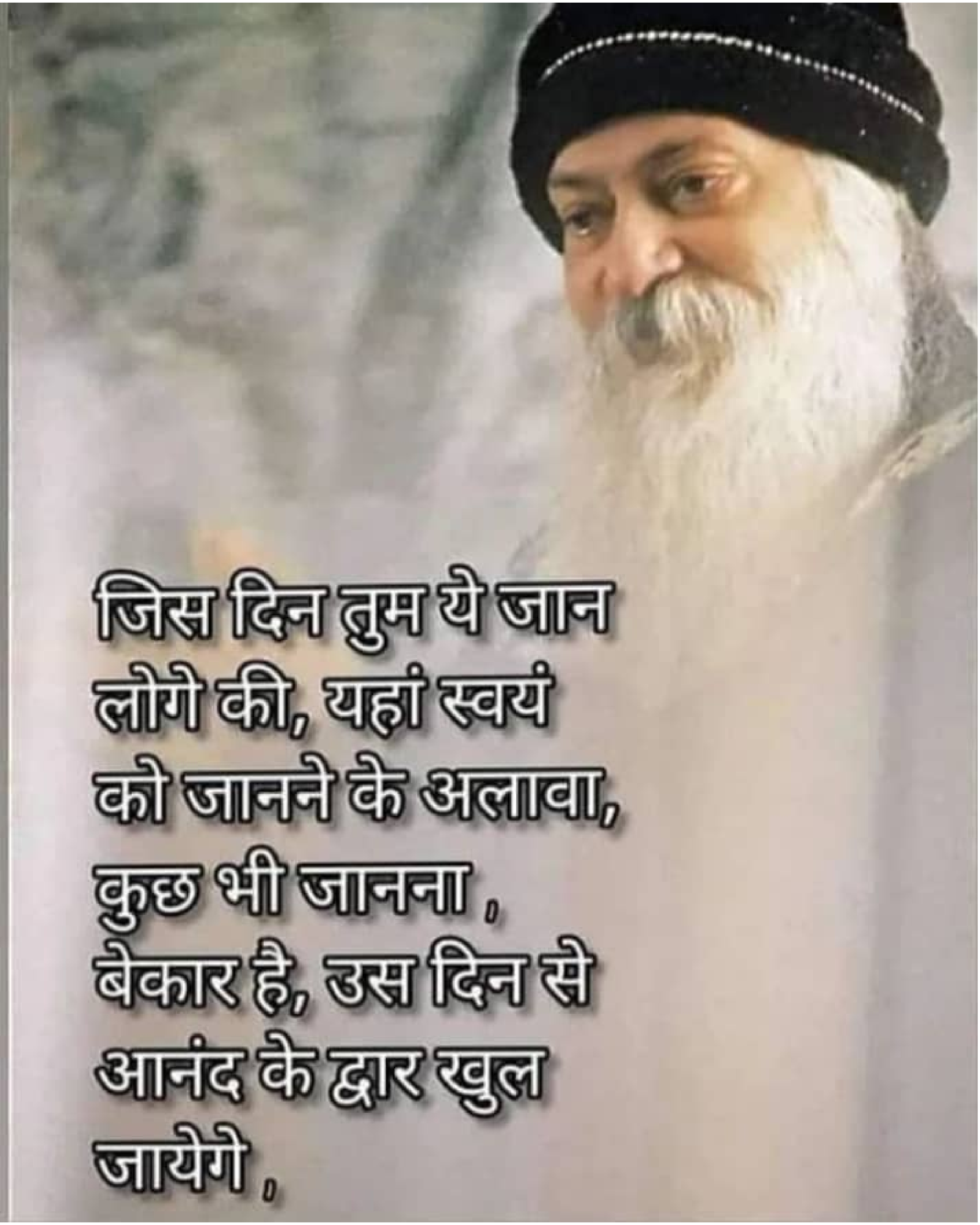
जिस दिन तुम ये जान
लोगे की, यहां स्वयं
को जानने के अलावा,
कुछ भी जानना ,
बेकार है, उस दिन से
आनंद के द्वार खुल
जायेगे ,

CamScanner

CamScanner

प्रेम की कोई भाषा नहीं होती,
प्रेम का फूल मौन में खिलता हैं।
प्रेम संगीत है प्रेम अंतर्नाद है, प्रेम ही अनाहद नाद है।

CamScanner

CamScanner

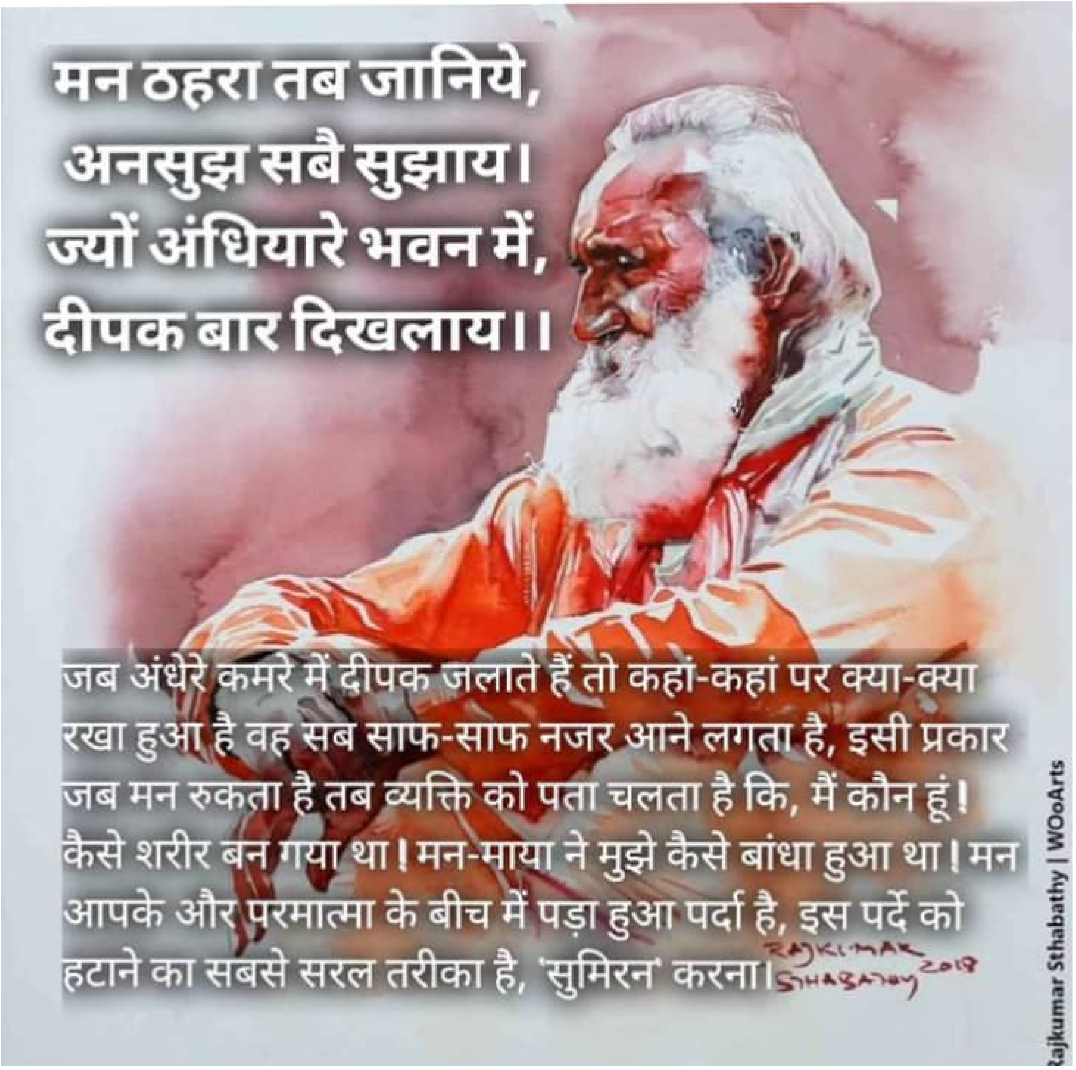

मन ठहरा तब जानिये,
अनसुझ सबै सुझाय।
ज्यों अंधियारे भवन में,
दीपक बार दिखलाय।।
जब अंधेरे कमरे में दीपक जलाते हैं तो कहां-कहां पर क्या-क्या रखा हुआ है वह सब साफ-साफ नजर आने लगता है, इसी प्रकार जब मन रुकता है तब व्यक्ति को पता चलता है कि, मैं कौन हूं! कैसे शरीर बन गया था! मन-माया ने मुझे कैसे बांधा हुआ था! मन आपके और परमात्मा के बीच में पड़ा हुआ पर्दा है, इस पर्दे को हटाने का सबसे सरल तरीका है, 'सुमिरन' करना।
RAJKUMAR STHABATHY 2018
Rajkumar Sthabathy | WOoArts

CamScanner

धर्म का रास्ता अकेले का है।

वह खोज तनहाई की है

और

व्यक्ति ही वहां तक पहुंचता है,

समाज नहीं।

अब तक तुमने

कभी किसी समाज को

बुद्ध होते देखा?

Osho

CamScanner

CamScanner

@osho.vichar

जीवन के अतिरिक्त
न कोई परमात्मा है, न हो सकता है।

– ओशो

(पुस्तक : संभोग से समाधि की ओर)

CamScanner

जो गीत तुमने

अभी गुनगुनाया नहीं,

वह तुम्हारे बीज में पड़ा है,

फूटना चाहता है,

तड़प रहा है।

उसे मौका दो।

Osho

CamScanner

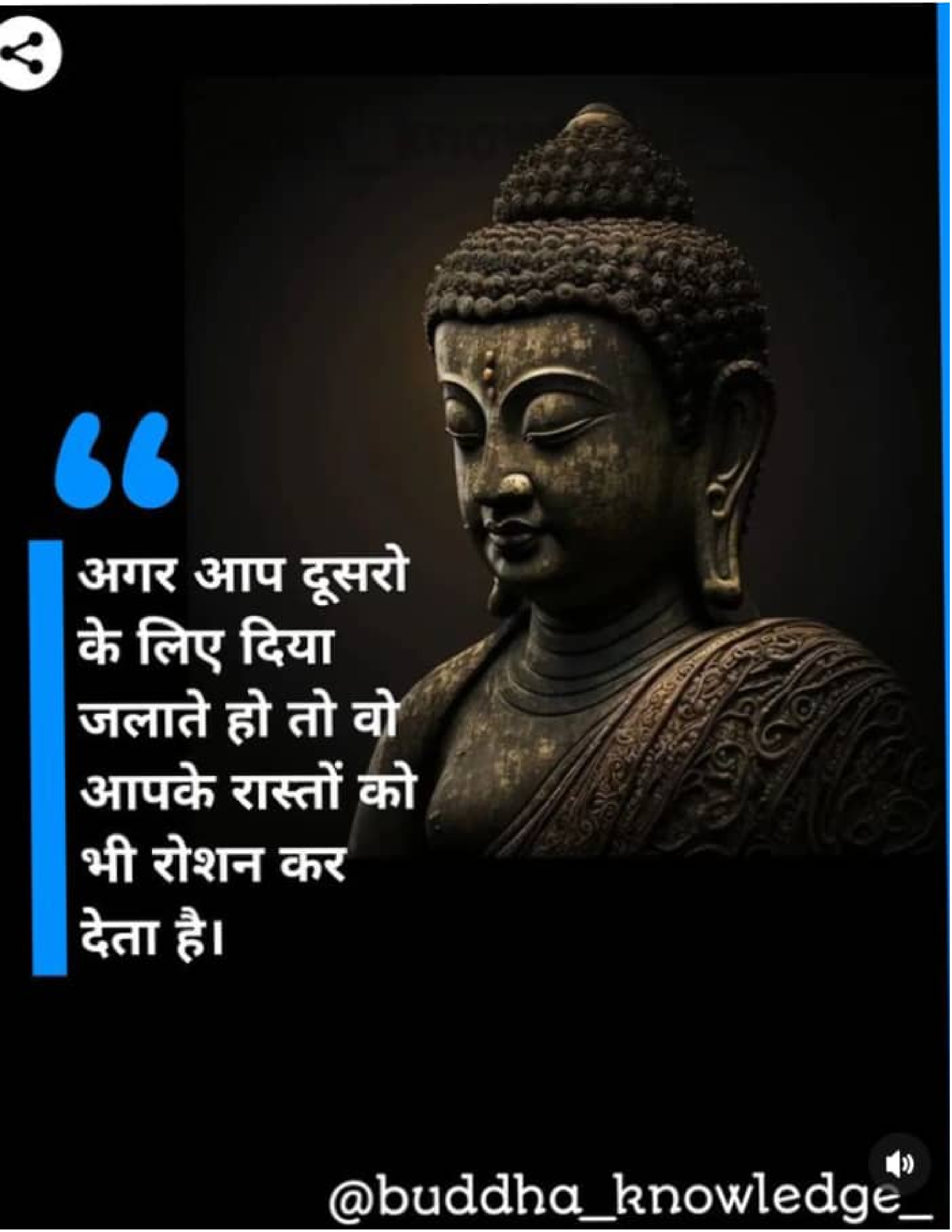
अगर आप दूसरो
के लिए दिया
जलाते हो तो वो
आपके रास्तों को
भी रोशन कर
देता है।
@buddha_knowledge_

CamScanner

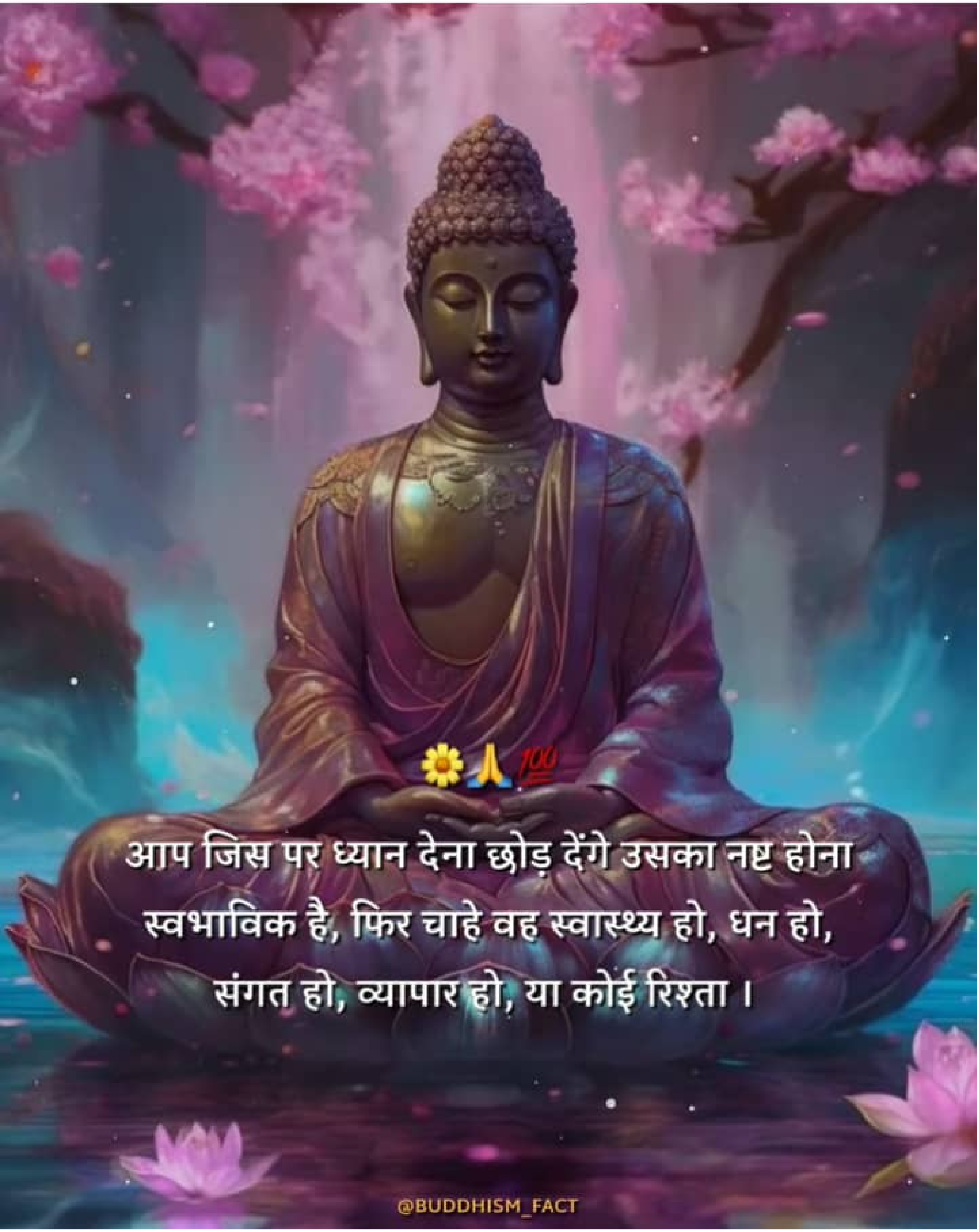
🌼🙏💯
आप जिस पर ध्यान देना छोड़ देंगे उसका नष्ट होना
स्वभाविक है, फिर चाहे वह स्वास्थ्य हो, धन हो,
संगत हो, व्यापार हो, या कोई रिश्ता ।
@BUDDHISM_FACT

CamScanner

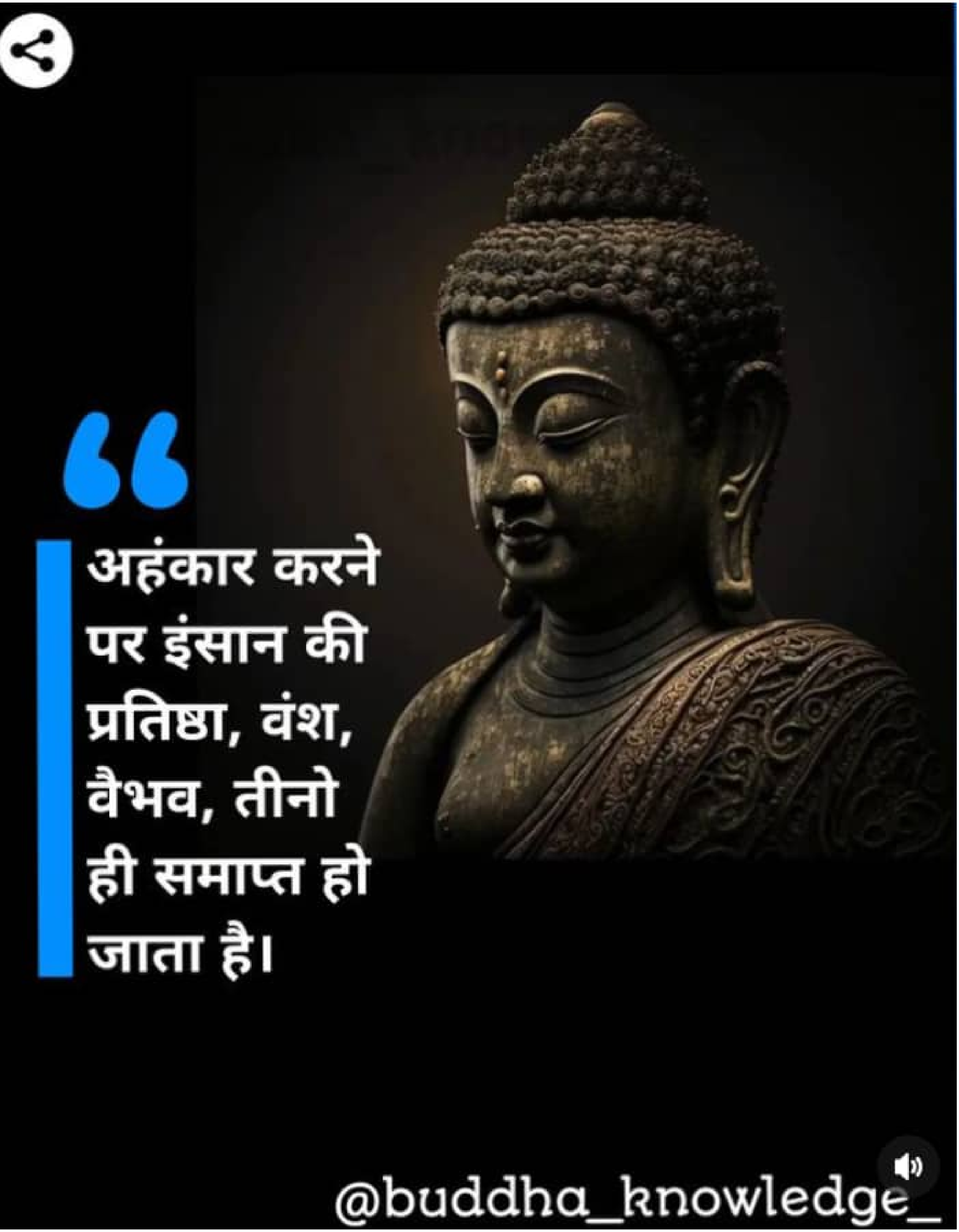

CS CamScanner

शास्त्र से विवाद पैदा हुआ है,

सत्य तो पैदा नहीं हुआ।

और शास्त्र से संघर्ष पैदा हुआ है,

संप्रदाय पैदा हुए हैं,

लोग बंटे और कटे

और हिंसा और हत्या हुई है।

Osho

CamScanner

भगवत गीता में लिखा है..

अगर आप दु:ख पर ध्यान देंगे तो हमेशा दु:खी रहेंगे और सुख पर ध्यान देंगे तो हमेशा सुखी रहेंगे, आप जिस पर ध्यान देंगे वो चीज सक्रिय हो जाएगी और आपके जीवन में तुरंत प्रवेश करना शुरू कर देगी, यही कुदरत का नियम है।

9:12 AM

CamScanner

जीवन में जो भी करो ..?
पूर्ण समर्पण के साथ करो ..!!
प्रेम करो तो ..?
मीरां की तरह ..!
प्रतीक्षा करो तो ..?
शबरी की तरह ..!
भक्ति करो तो ..?
हनुमान की तरह ..!
शिष्य बनो तो ..?
अर्जुन के समान ..!
और
मित्र बनो तो ..?
स्वयं श्री कृष्ण के समान ..!
Helo

CamScanner

CamScanner

स्वामी अद्वैत बोध

Reels · 2h ·

मंदिर के आगे झुकने वालों को भुल कर भी निंदा मत करना..

CS CamScanner

॥ नमोहः बुद्धाय ॥

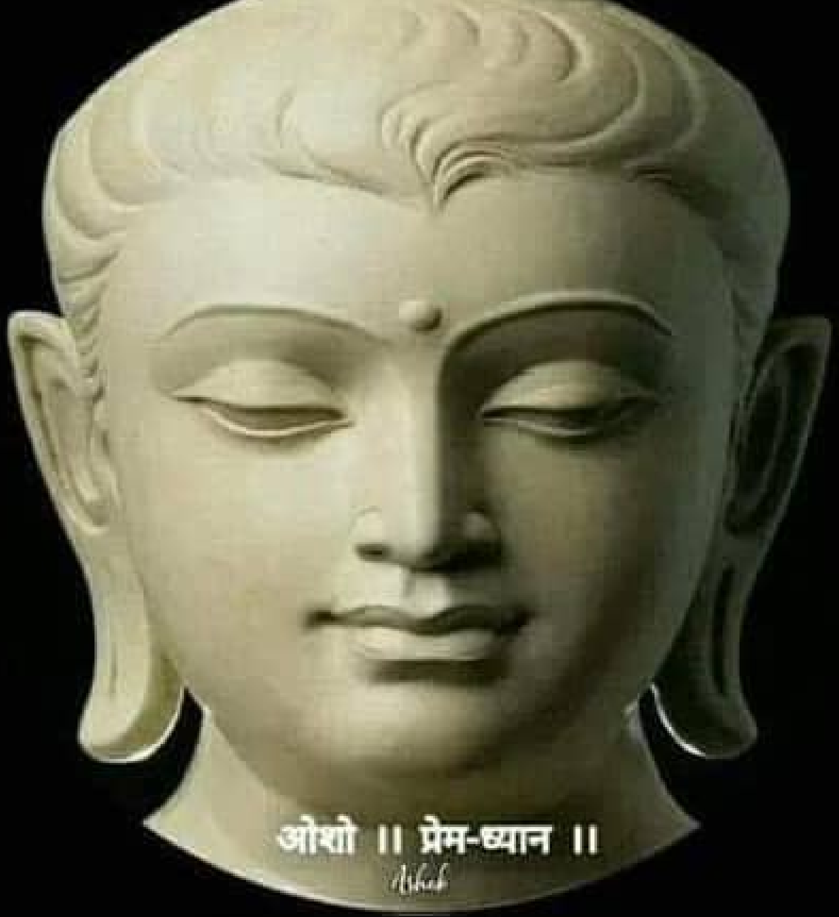

जिस शरीर
के साथ हम पैदा हुए हैं
उसके जिम्मेदार हम नहीं हैं
परंतु जिस चरित्र और किरदार
के साथ हम विदा होंगे
उसके पूरे जिम्मेदार हम
स्वयं होंगे..!

CamScanner

5:54 pm 0 KB/s VoLTE 4G 69%

मृत्यु है ही नहीं। तुम पहले भी थे; तुम बाद में भी होओगे। और अगर तुम जाग जाओ, अगर तुम चैतन्य से भर जाओ, तो तुम्हें सब दिखायी पड़ जाएगा जो-जो तुम पहले थे। सब दिखायी पड़ जाएगा, कब क्या थे।

बुद्ध ने अपने पिछले जन्मों की कितनी कथाएं कही हैं! तब ऐसा था। तब ऐसा था। तब वैसा था। कभी जानवर थे; कभी पौधा थे, कभी पशु थे; कभी पक्षी। कभी राजा, कभी भिखारी। कभी स्त्री, कभी पुरुष। बुद्ध ने बहुत कथाएं कही हैं।

वह जो जाग जाता है, उसे सारा स्मरण आ जाता है।
मृत्यु तो होती ही नहीं। मृत्यु तो सिर्फ पर्दे का गिरना है।

तुम नाटक देखने गए। पर्दा गिरा। क्या तुम सोचते हो, मर गए सब लोग जो पर्दे के पीछे हो गए! वे सिर्फ पर्दे के पीछे हो गए। अब फिर तैयारी कर रहे होंगे। मूंछ इत्यादि लगाएंगे; दाढ़ी वगैरह लगाएंगे, लीप-पोत करेंगे। फिर पर्दा उठेगा। शायद तुम पहचान भी न पाओ कि जो सज्जन थोड़ी देर पहले कुछ और थे, अब वे कुछ और हो गए हैं! तब वे बिना मूंछ के थे; अब वे मूंछ लगाकर आ गए हैं। शायद तुम पहचान भी न पाओ।

बस, यही हो रहा है। इसलिए संसार को नाटक कहा है, मंच कहा है। यहां रूप बदलते रहते हैं। यहां राम भी रावण बन जाते हैं और रावण भी राम बन जाते हैं। ये पर्दे के पीछे तैयारियां कर आते हैं। फिर लौट आते हैं, बार-बार लौट आते हैं।

तुम पूछते हो 'मृत्यु क्या है?'
मृत्यु है ही नहीं। मृत्यु एक भ्रांति है। एक धोखा है।

सरूरे-दर्द गुदाजे-फुगा से पहले था
सरूदे-गम मेरे सोजे-बया से पहले था
मैं आबोगिल ही अगर हूं बकौदे-शमो-सहर
तो कौन है जो मकानो-जमी से पहले था
ये कायनात बसी थी तेरे तसव्वर में

CamScanner

5:55 pm 0 KB/s VoLTE 4G 69%

facebook

तुम पूछते हो: मृत्यु क्या है?
मृत्यु है ही नहीं। मृत्यु एक भ्रांति है। एक धोखा है।

सरूरे-दर्द गुदाजे-फुगा से पहले था
सरूदे-गम मेरे सोजे-बया से पहले था
मैं आबोगिल ही अगर हूं बकौदे-शमो-सहर
तो कौन है जो मकानो-जमी से पहले था
ये कायनात बसी थी तेरे तसव्वर में
वजूदे हर दो जहां कुन फिकां से पहले था
अगर तलाश हो सच्ची सवाल उठते हैं
यकीने-रासिखो-महकम गुमां से पहले था
तेरे खयाल में अपना ही अक्से-कामिल था
तेरा कमाल मेरे इप्तिहा से पहले था
मेरी नजर ने तेरे नक्यो-पा में देखा था
जमाले-कहकशा कहकशा से पहले था
छुपेगा ये तो फिर ऐसा ही एक उभरेगा
इसी तरह का जहां इस जहां से पहले था
तज्जलियात से रौशन है चश्मे-शौक मगर
कहां वो जल्वा जो नामो-निशा से पहले था

सब था पहले ऐसा ही। फिर-फिर ऐसा ही होगा। यह दुनिया मिट जाएगी, तो दूसरी दुनिया पैदा होगी। यह पृथ्वी उजड़ जाएगी, तो दूसरी पृथ्वी बस जाएगी। तुम इस देह को छोड़ोगे, तो दूसरी देह में प्रविष्ट हो जाओगे। तुम इस चित्तदशा को छोड़ोगे, तो नयी चित्तदशा मिल जाएगी। तुम अज्ञान छोड़ोगे, तो ज्ञान में प्रतिष्ठित हो जाओगे; मगर मिटेगा कुछ भी नहीं। मिटना होता ही नहीं।

सब यहां अविनाशी है। अमृत इस अस्तित्व का
स्वभाव है।

ओशो, एस धम्मो सनंतनो--(प्रवचन--116)

CamScanner

CamScanner

प्रत्येक के भीतर आनंद का
"सागर हिलोरे ले रहा है,
लेकिन उसका मधुर संगीत
वही सुन सकता है!
जो सब भांति.. शांत और
"शून्य हो गया है.!!
ओशो

CamScanner

10:56 pm 0 KB/s 46%

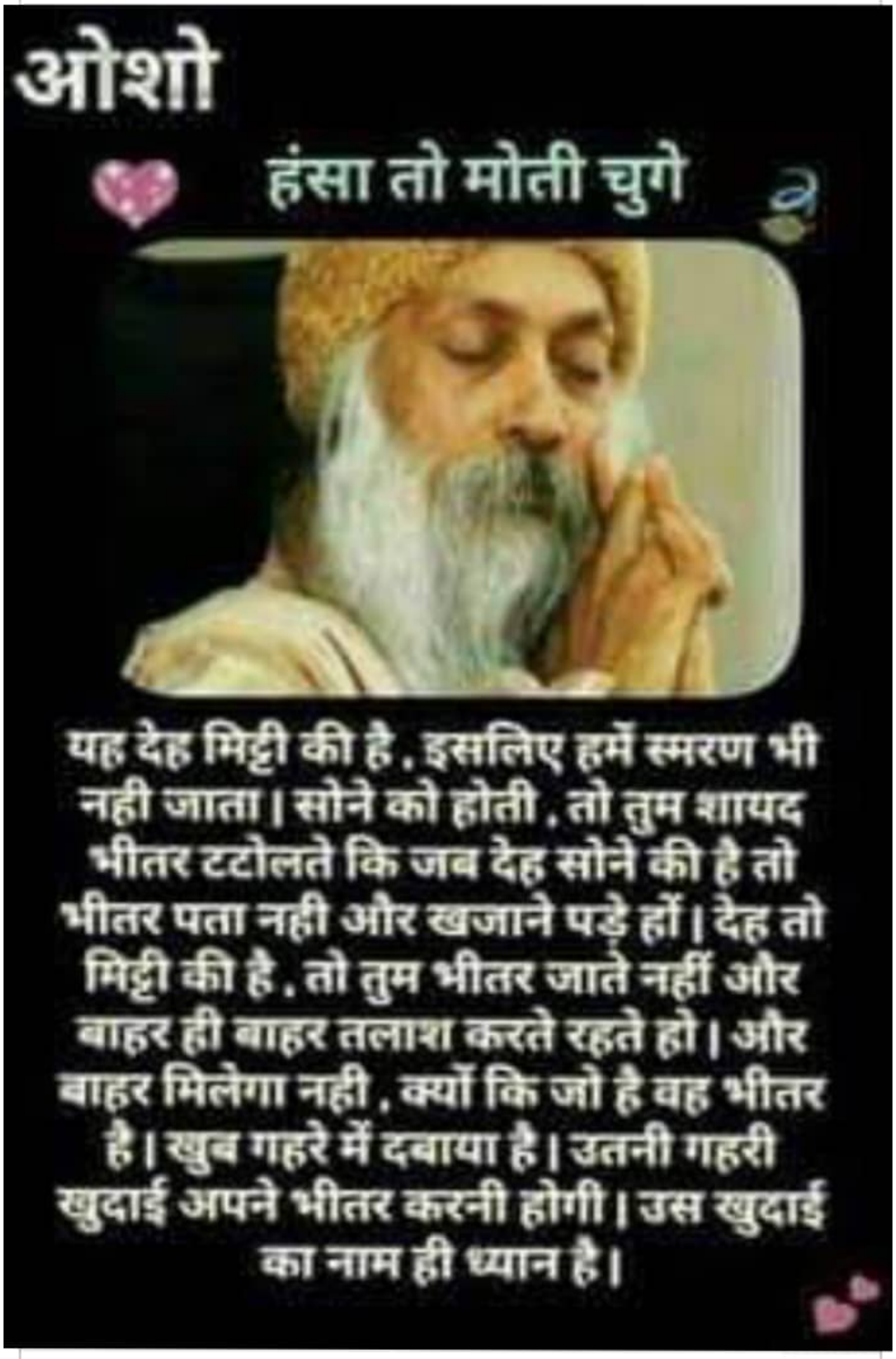

10 3 comments

Like Comment Send

सनातन धर्म • Sanatan Dharma
Akam Singh Thakur · 1d ·

CamScanner

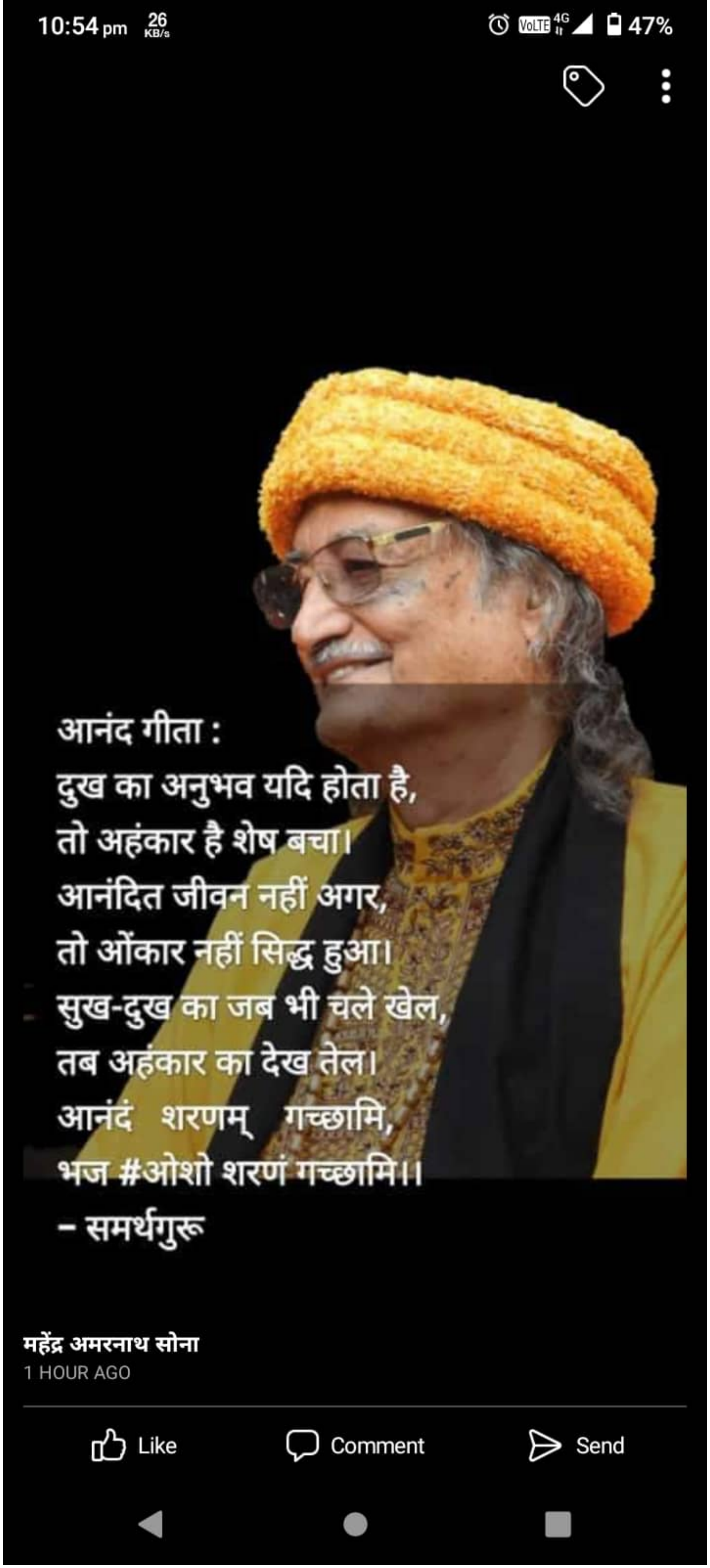
10:54 pm 26 KB/s
VoLTE 4G 47%
आनंद गीता :
दुख का अनुभव यदि होता है,
तो अहंकार है शेष बचा।
आनंदित जीवन नहीं अगर,
तो ओंकार नहीं सिद्ध हुआ।
सुख-दुख का जब भी चले खेल,
तब अहंकार का देख तेल।
आनंदं शरणम् गच्छामि,
भज #ओशो शरणं गच्छामि।।
– समर्थगुरू
महेंद्र अमरनाथ सोना
1 HOUR AGO
Like
Comment
Send

CamScanner

मन तरंग

16 Mar 2022 ·

चाहे पदार्थ का हो जन्म और चाहे चेतना का,
और चाहे पृथ्वी जन्में और चाहे स्वर्ग!

इस अस्तित्व की गहराई में जो रहस्य छिपा हुआ है,
उससे ही सबका जन्म होता है।

इसलिए मेनें कहा:-
जिन्होंने परमात्मा को मदर, माँ की तरह देखा!

"दुर्गा" या "अम्बा" की तरह देखा!
उनकी समझ परमात्मा को
पिता की तरह देखने से ज्यादा गहरी है।

"अगर परमात्मा कहीं भी है, तो वो 'स्त्रैण' होगा!"

क्योंकि
इतने बड़े जगत को जन्म देने की क्षमता पुरूष में नहीं।

इतने विराट चाँद-तारे जिससे पैदा होते हो!
उसके पास गर्भ चाहिये!
बिना गर्भ के ये सम्भव नहीं है।

॥ ओशो ॥

CamScanner

ईश्वर के निर्गुण रुप को बहुत सरलता से पाया जा सकता है,,भ्रम तो सगुण की पहचान में है,,, जैसे रामचरितमानस में दर्ज है --" निर्गुण रुप सरल अति सगुण जानि नहिं कोय।
अगम निगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होय।।

7
2 comments
CS CamScanner

10:49 pm 0 KB/s 48%

Instagram

2 August

mahabharat_big_fan_page

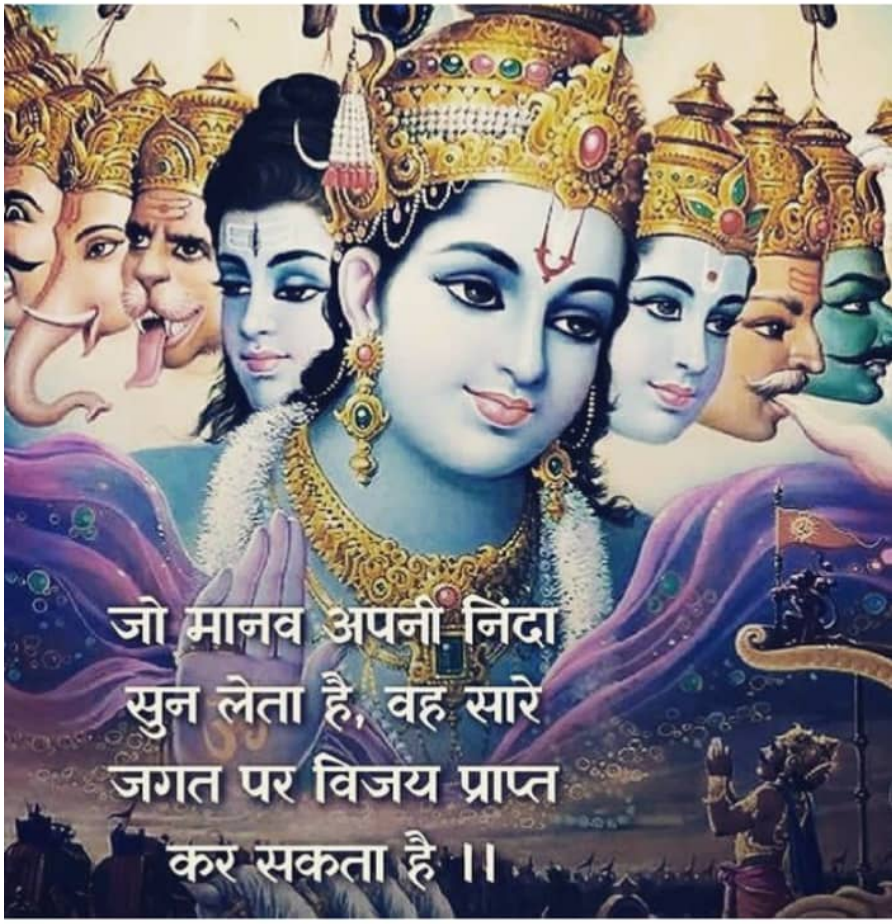

2,162 likes

mahabharat_big_fan_page Jay Shree Krishna 🙏🚩
.... more

View all 26 comments

4 August • **See translation**

Suggested for you

CamScanner

10:47 pm 104 KB/s 48%

4 likes

ignitionlandservices Happy Monday!... more

45 minutes ago

mahabharat_big_fan_page
Musician : Rakesh Chaurasia • Enchanting Flute

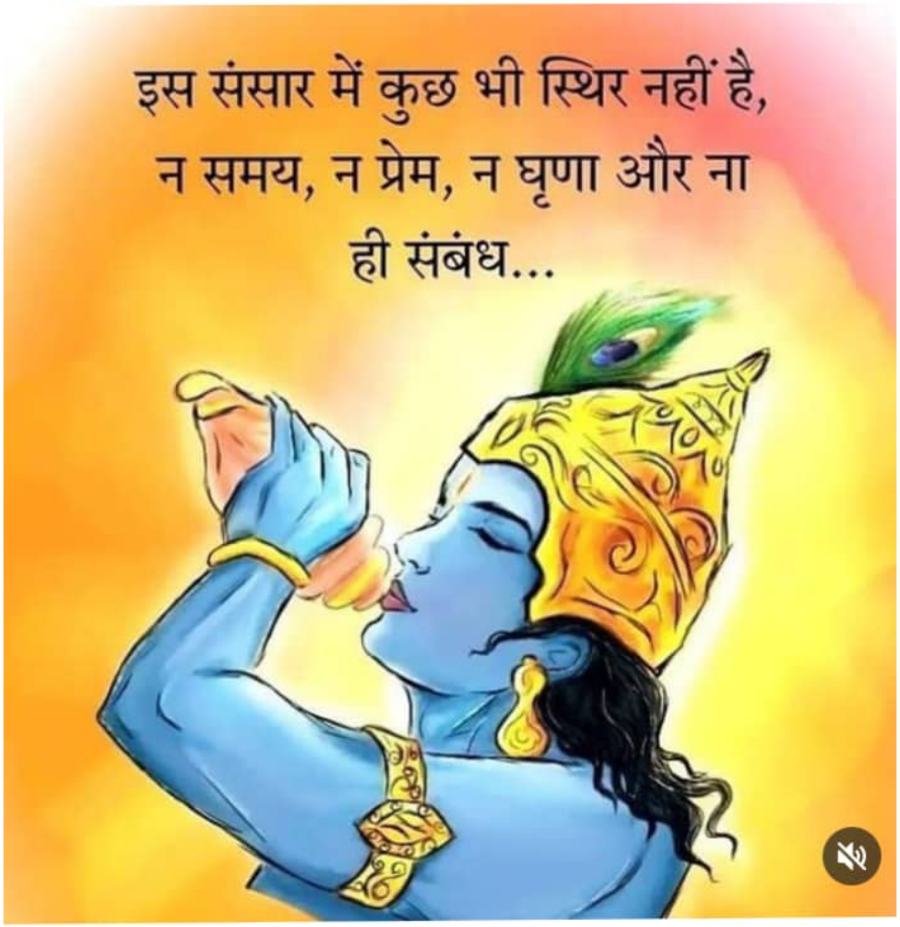

3,297 likes

mahabharat_big_fan_page Jay Shree Krishna 🙏🚩
.... more

View all 34 comments

30 July • See translation

CamScanner

10:47 pm 122 KB/s 4G 48%

3,526 likes

mahabharat_big_fan_page Jay Shree Krishna 🙏🚩

.... more

View all 20 comments

7 August • **See translation**

oshomessage

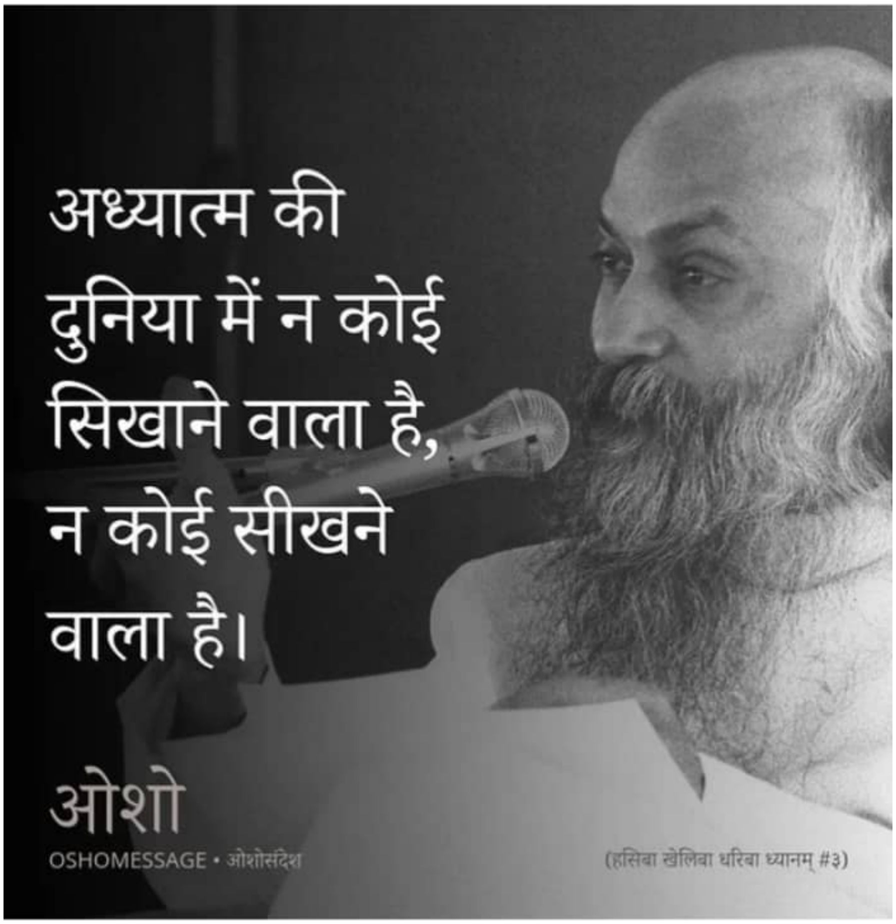

50 likes

17 minutes ago

Suggested for you

CamScanner

10:47 pm 137 KB/s 4G 48%

20,863 likes

sanatankathasangrah सप्तऋषि saptarishi, ऋषि अत्रि विशेष .... more

View all 128 comments

7 July · **See translation**

osho6812

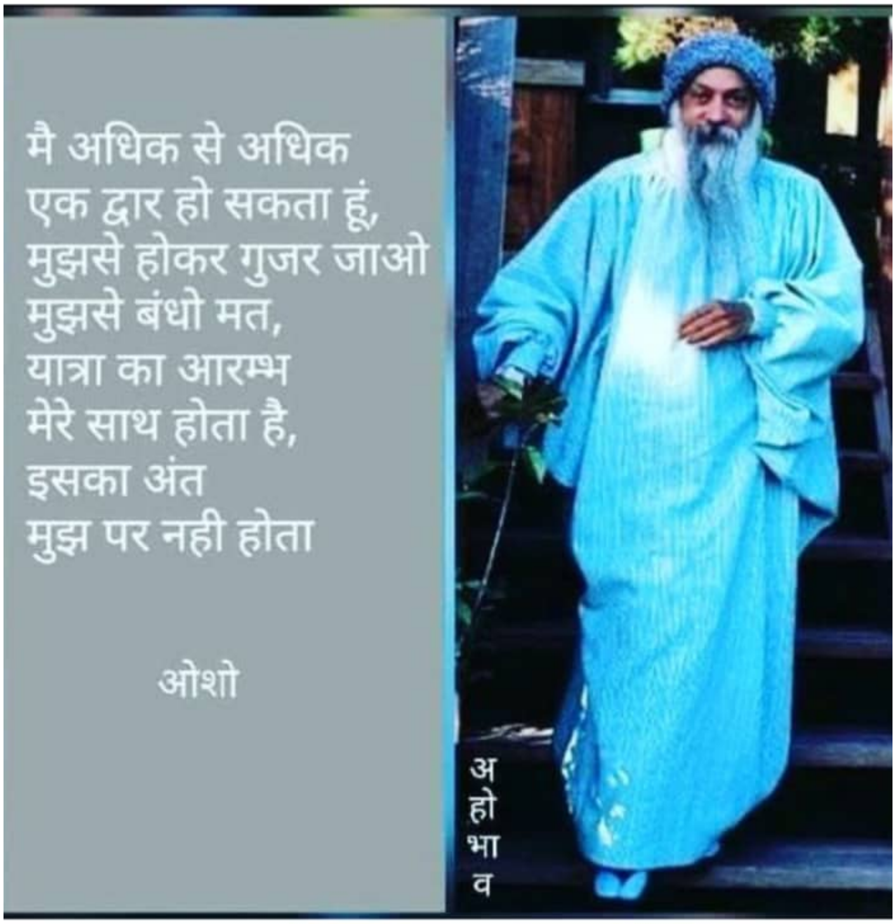

1 like

2 August

Suggested reels ▶ **Watch all**

CamScanner

10:46 pm 117 KB/s 48%

6,167 likes

mahabharat_big_fan_page Jay Shree Krishna 🙏🚩

.... more

View all 28 comments

12 August • See translation

mahabharat_big_fan_page

3,411 likes

mahabharat_big_fan_page Jay Shree Krishna 🙏🚩

.... more

View all 16 comments

13 August • See translation

mahabharat_big_fan_page

CamScanner

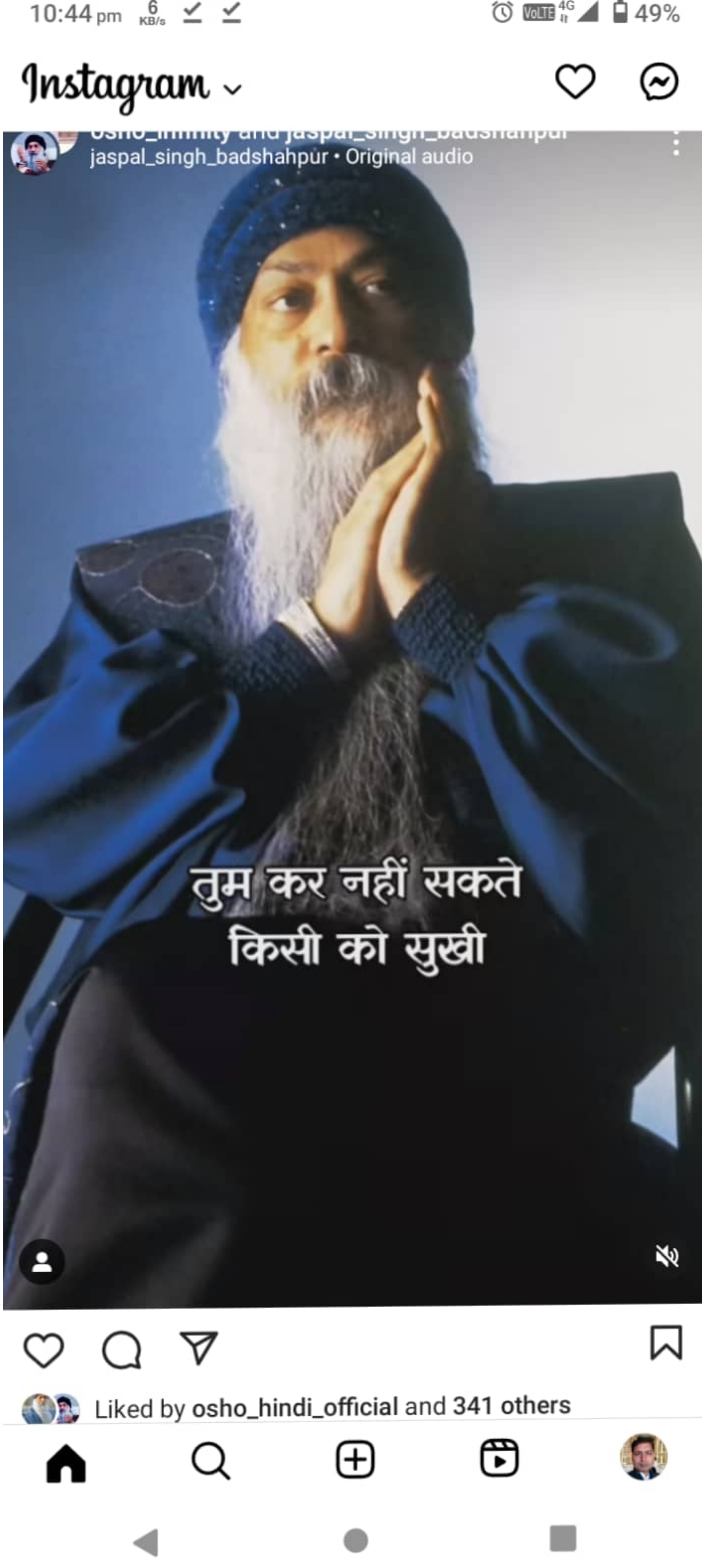
10:44 pm
49%
Instagram
jaspal_singh_badshahpur • Original audio
तुम कर नहीं सकते
किसी को सुखी
Liked by osho_hindi_official and 341 others

CamScanner

osho_treasure
osho_treasure • Original audio

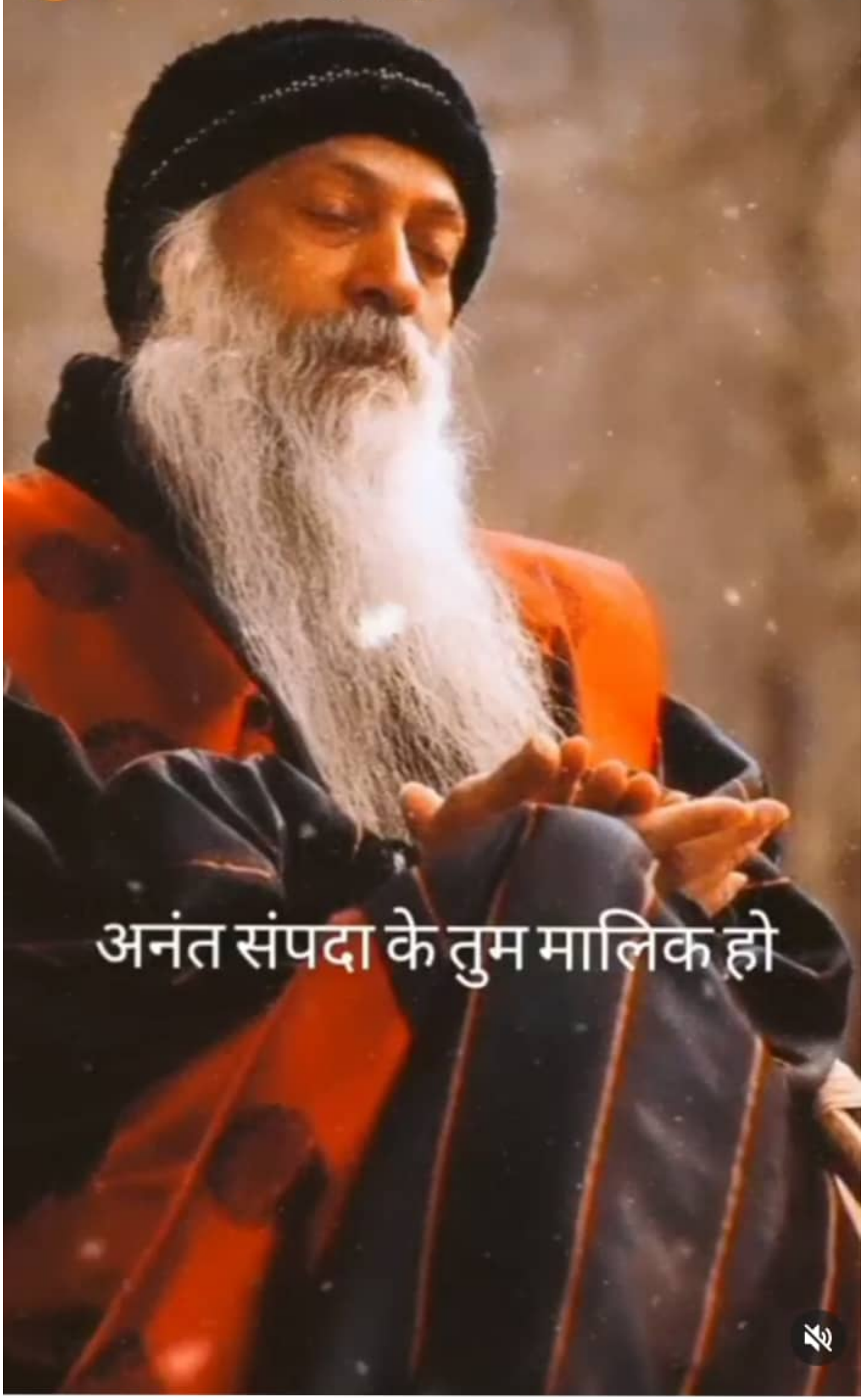

CamScanner

10:42 pm 181 KB/s 49%

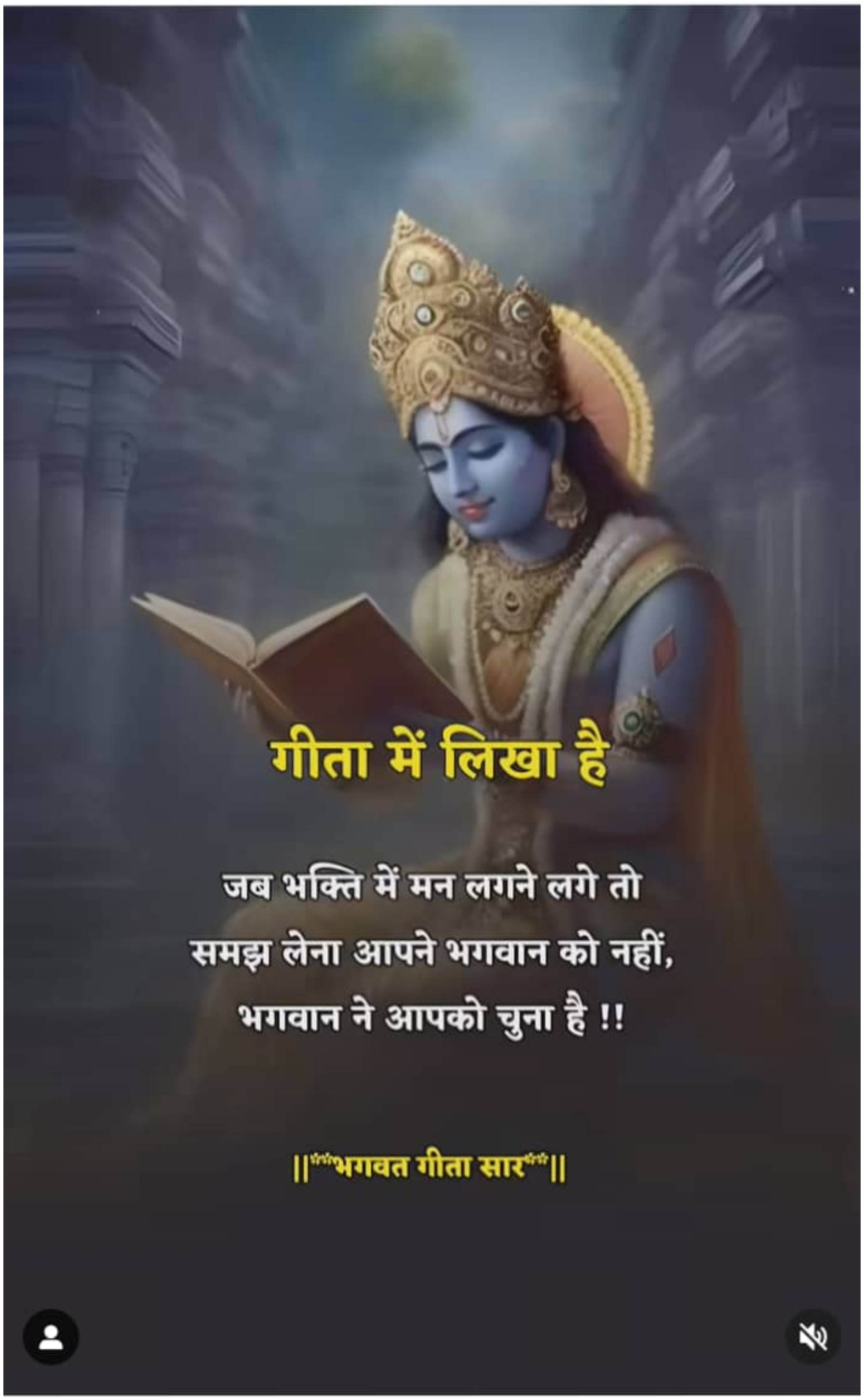

61,108 likes

bhagavad.gita.saar बोलो जय श्री कृष्णा 🙏🙏🙏

View all 251 comments

19 August • See translation

CamScanner

10:41 pm 0 KB/s 49%

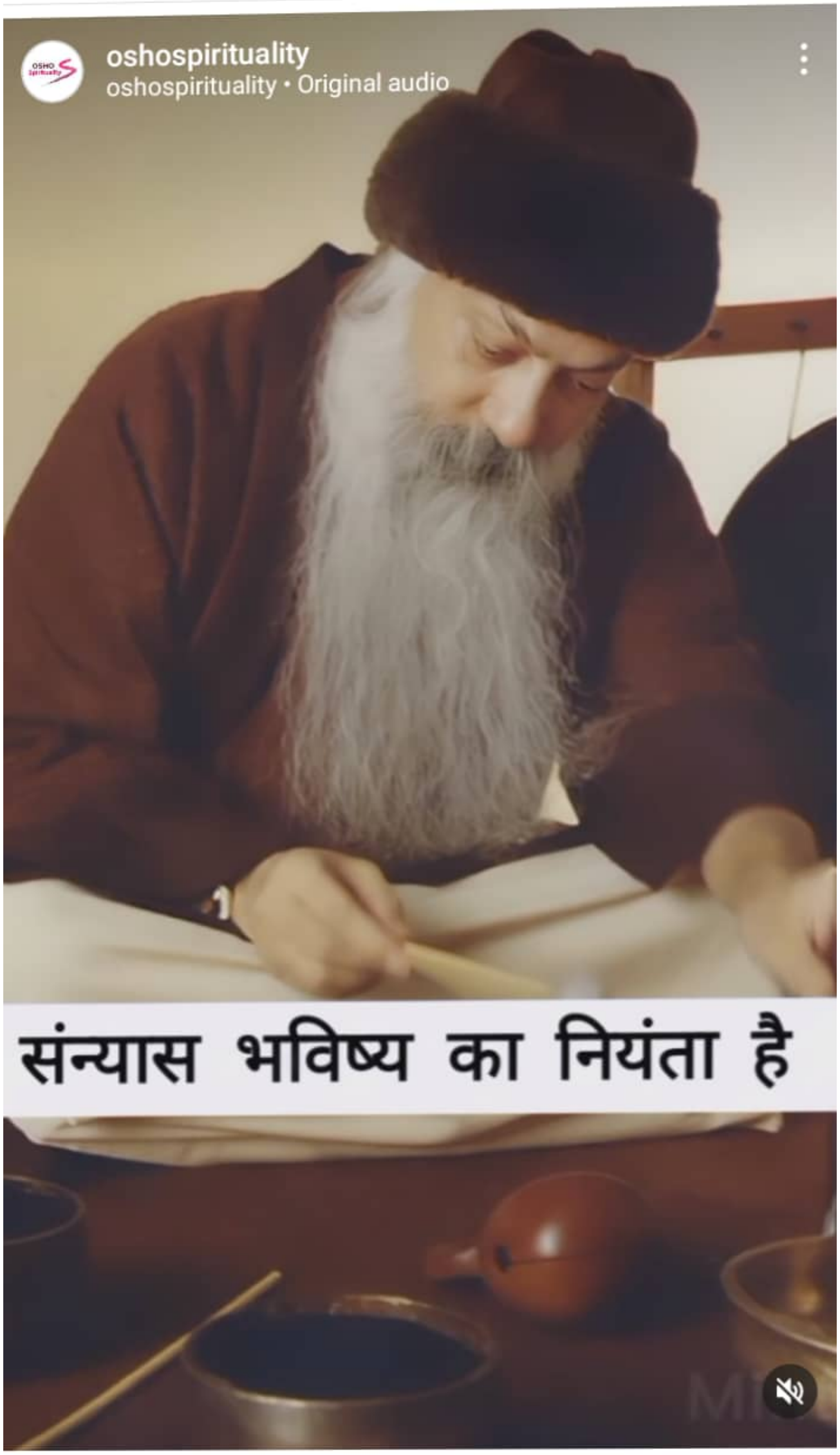

137 likes

oshospirituality संन्यासी भविष्य का नियंता है ~ Osho

CS CamScanner

10:40 pm 142 KB/s VoLTE 4G 49%

osho_divine_eyesight
Paid partnership
osho_divine_eyesight • Original audio

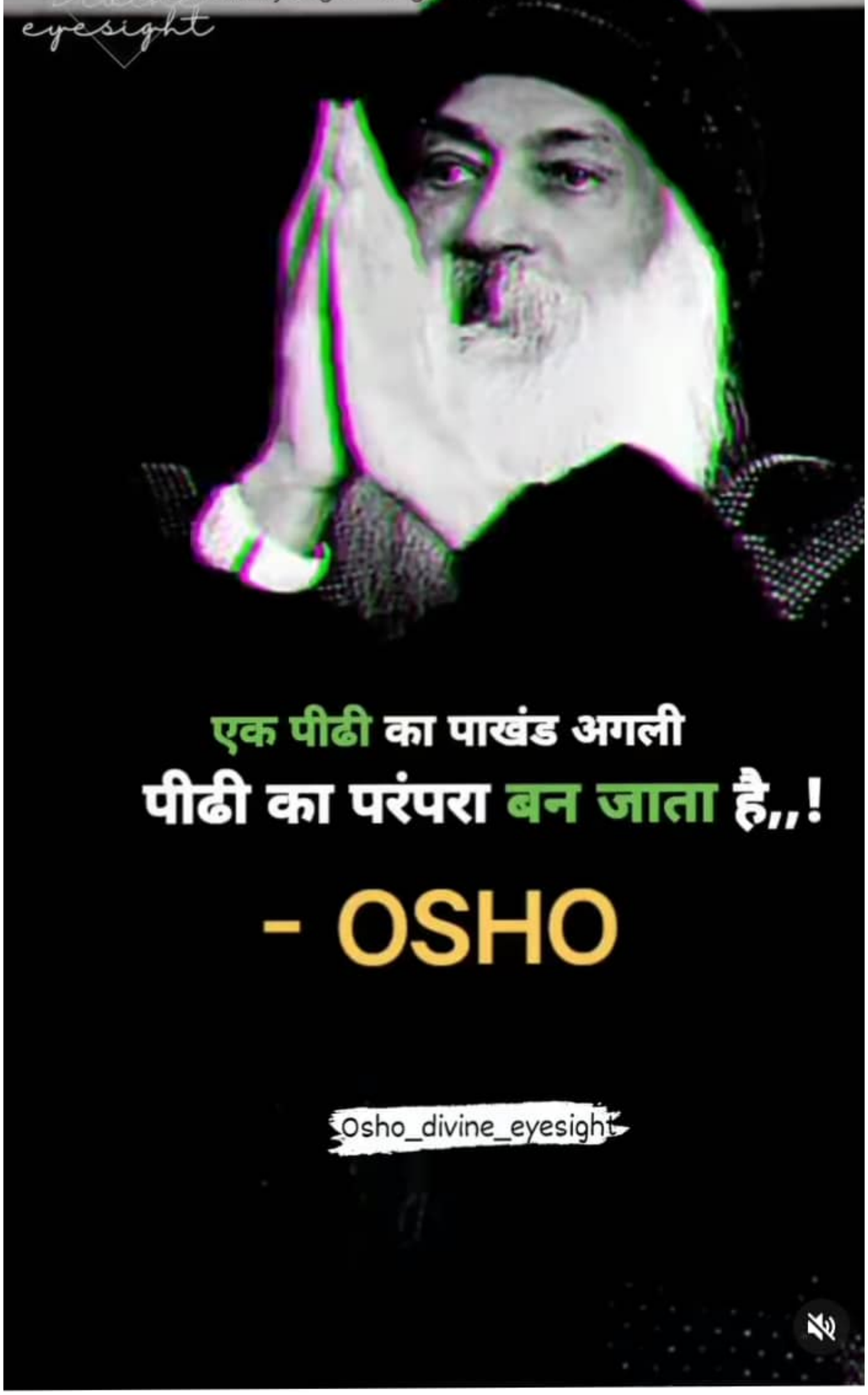

43 likes

osho_divine_eyesight ओशो✨

#osho #motivationalquotes #motivation #sprituality ... more

CamScanner

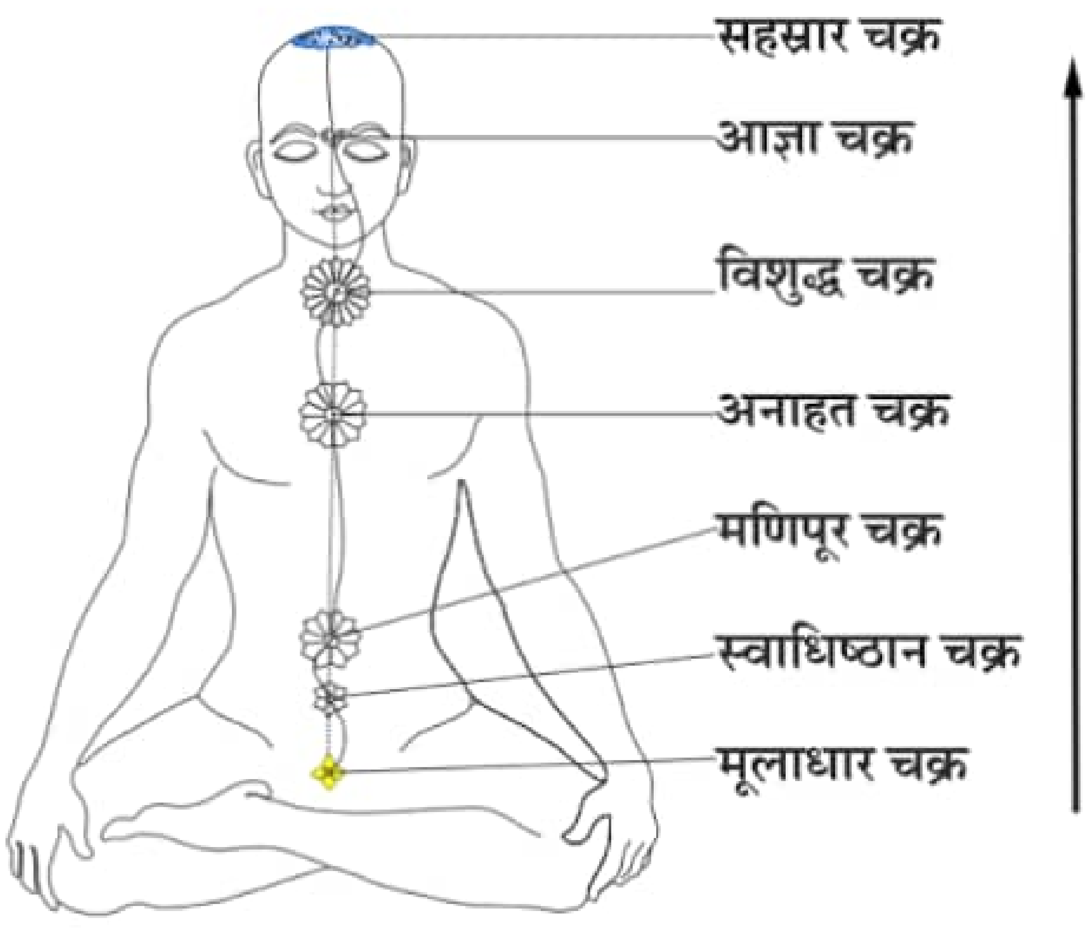

CS CamScanner

10:36 pm 103 KB/s 50%

Instagram

Liked by **osho_mania** and **1,814 others**

oshospirituals 💖💖😩😩💔💔

CamScanner

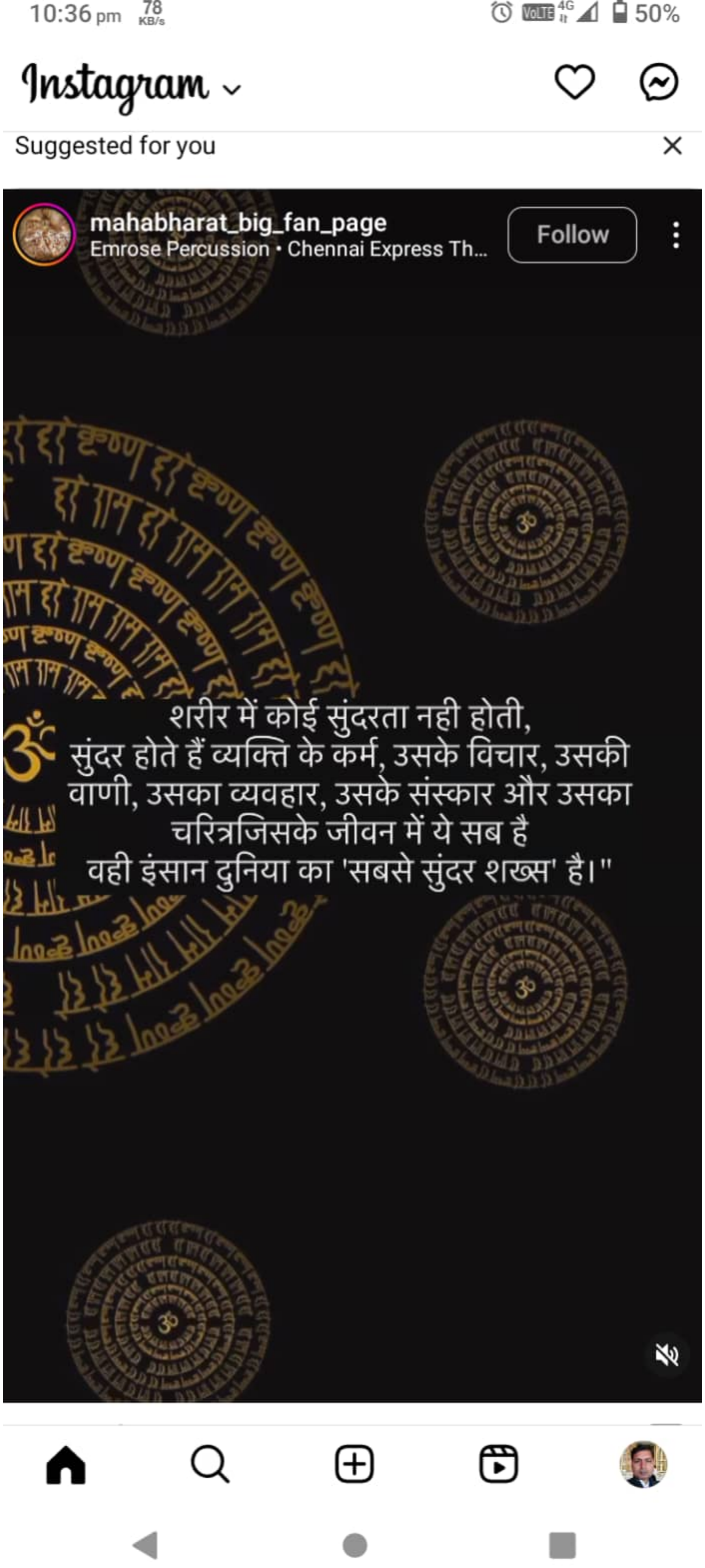
10:36 pm
50%
Instagram
Suggested for you
mahabharat_big_fan_page
Emrose Percussion • Chennai Express Th...
Follow
शरीर में कोई सुंदरता नही होती,
सुंदर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसके विचार, उसकी
वाणी, उसका व्यवहार, उसके संस्कार और उसका
चरित्रजिसके जीवन में ये सब है
वही इंसान दुनिया का 'सबसे सुंदर शख्स' है।"

CamScanner

10:35 pm 8 KB/s 50%

652 likes

oshorajneesh__ माता पिता ज़रूर सुनें!!!
Osho 🙏💯🤍🙌... more

View all 12 comments

2 hours ago

oshomessage

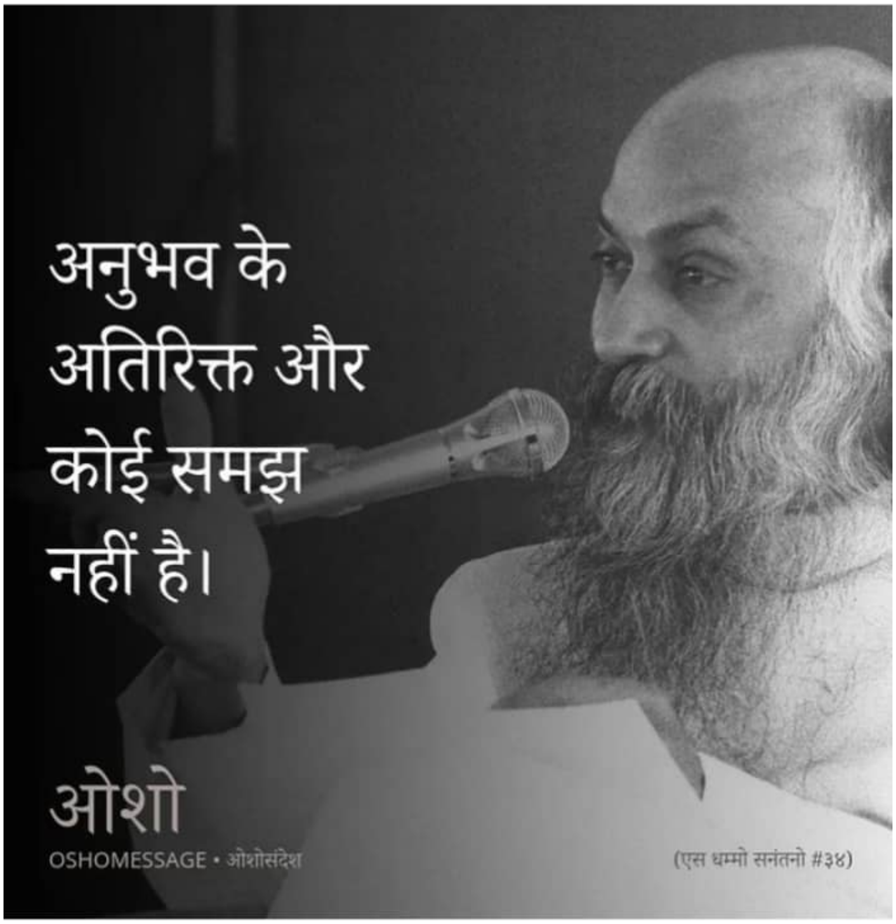

Liked by osho_the_great_master and 244 others

3 hours ago

Suggested for you

insta__monk
Kainchi Dham- Baba Neem Karoli
Follow

CamScanner

10:32 pm 121 KB/s 51%

_osho_status_
osho_forever • Original audio

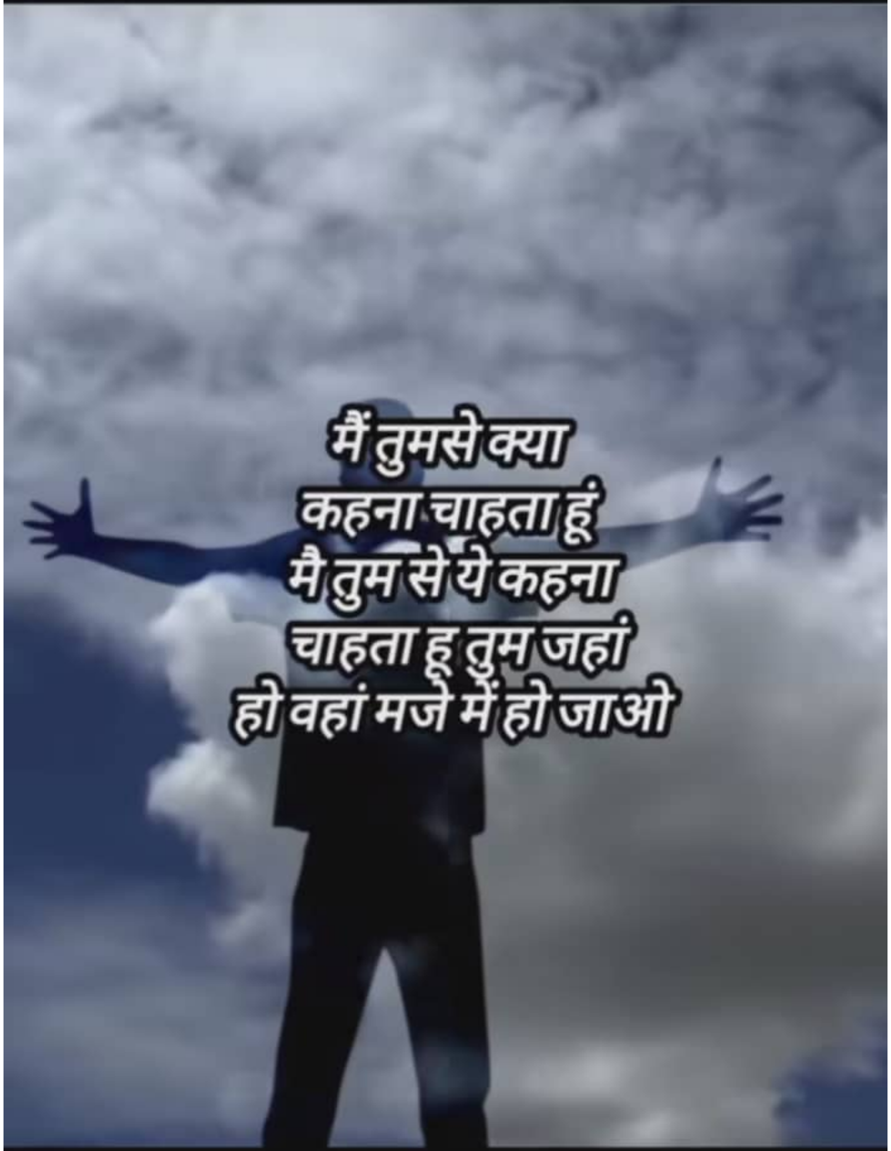

193 likes

_osho_status_ ❤️❤️

CamScanner

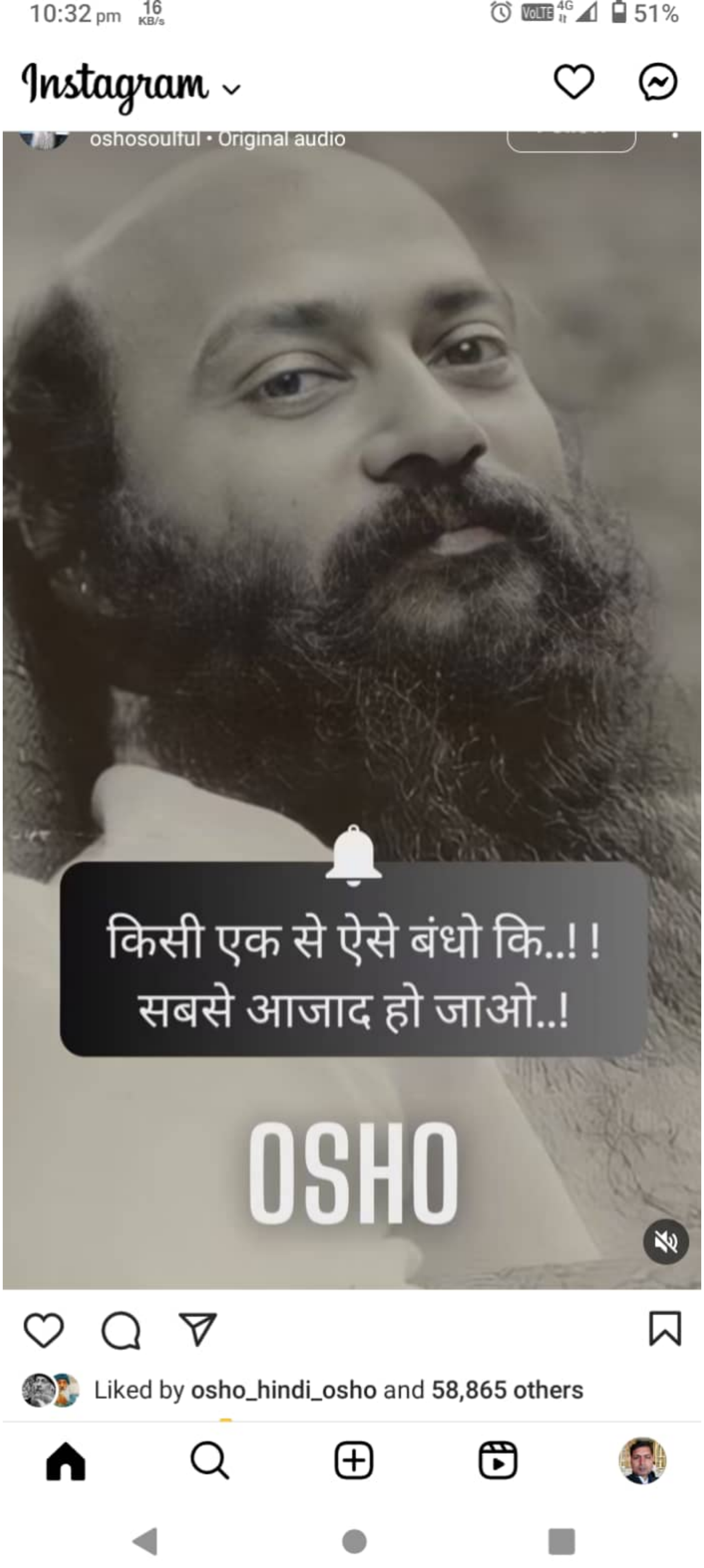
10:32 pm
51%
Instagram
oshosoulful • Original audio
किसी एक से ऐसे बंधो कि..! !
सबसे आजाद हो जाओ..!
OSHO
Liked by osho_hindi_osho and 58,865 others

CamScanner

10:31 pm 3 KB/s 4G 51%

Liked by **osho_the_great_master** and **222 others**

View all 2 comments

3 hours ago

osho_the_master
Morbi, Gujarat, India

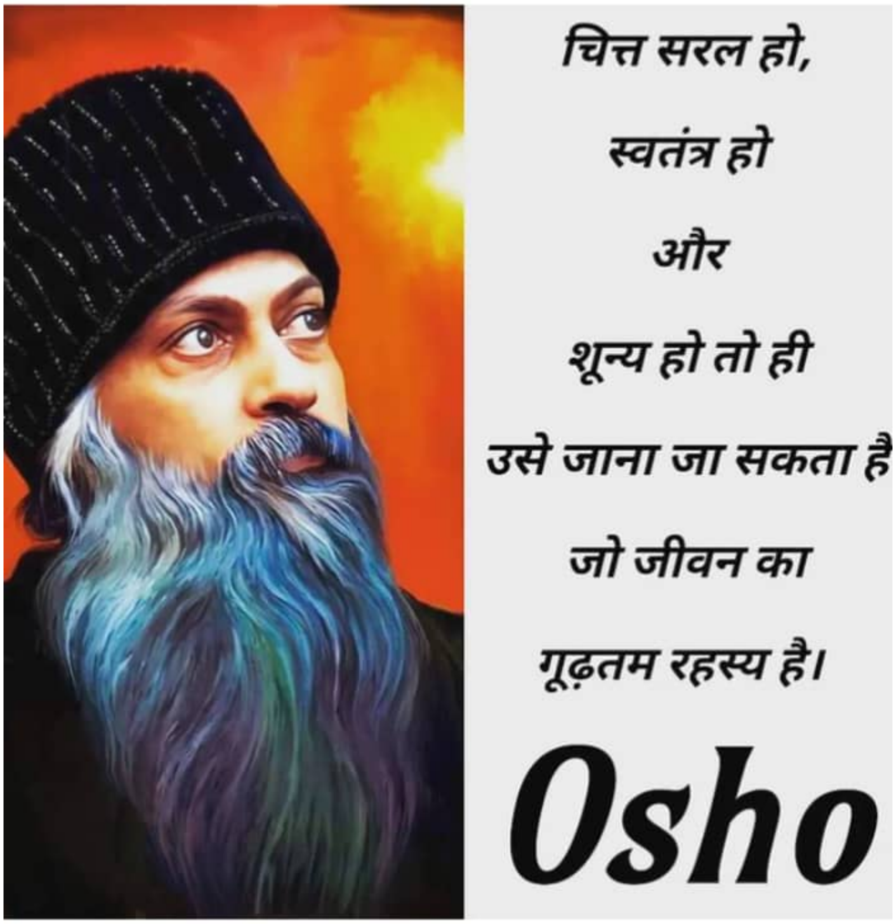

73 likes

osho_the_master #Osho#OshoHindi... more

View 1 comment

Add a comment...

CamScanner

10:31 pm 20 KB/s   VoLTE 4G 51%

Instagram

47 likes

2 hours ago

oshomessage

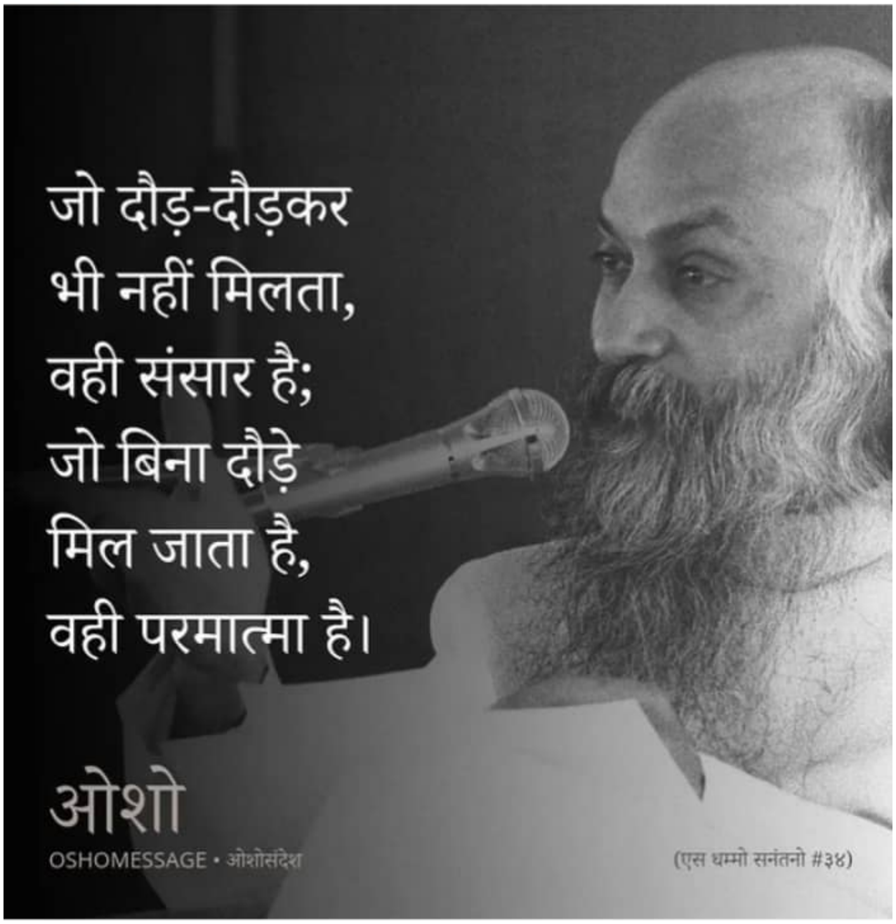

Liked by osho_mania and 222 others

View 1 comment

Add a comment...

60 minutes ago

mr._.silent_0
Sponsored

CamScanner

10:31 pm 42 KB/s 52%

35 likes

osho_divine_eyesight ओशो✨
#osho #motivationalquotes #motivation #sprituality... more

Add a comment...

25 minutes ago

oshomessage

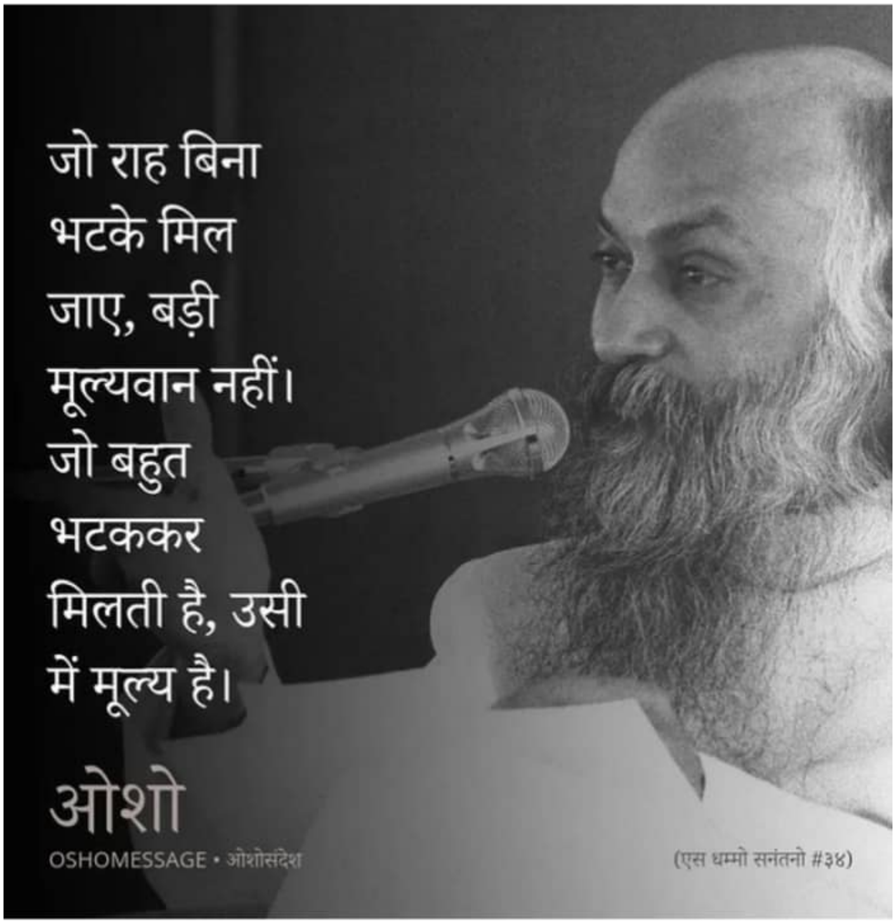

Liked by osho_the_great_master and 403 others

View all 3 comments

Add a comment...

3 hours ago

osho_divine_eyesight

CamScanner

10:30 pm 96 KB/s 4G 52%

Visit Instagram Profile

97,167 views

rebelliousqueen_khushi Tenu soniye bulaande Jan Jaan😏☹️...
more

View all 248 comments

osho_divine_eyesight
Type Beats Trap • 21 Savage Type Beat

35 likes

osho_divine_eyesight ओशो✨
#osho #motivationalquotes #motivation #sprituality... more

Add a comment...

25 minutes ago

oshomessage

CamScanner

10:30 pm 0 KB/s 52%

Laxmi Kumari
111_laxmi_kumari
Video creator
Follow

Dr. Susmita Das
dr_susmita_das
Doctor
Follow

osho_hindi_quotes
PARTHOMATIC • Aekant (osho)

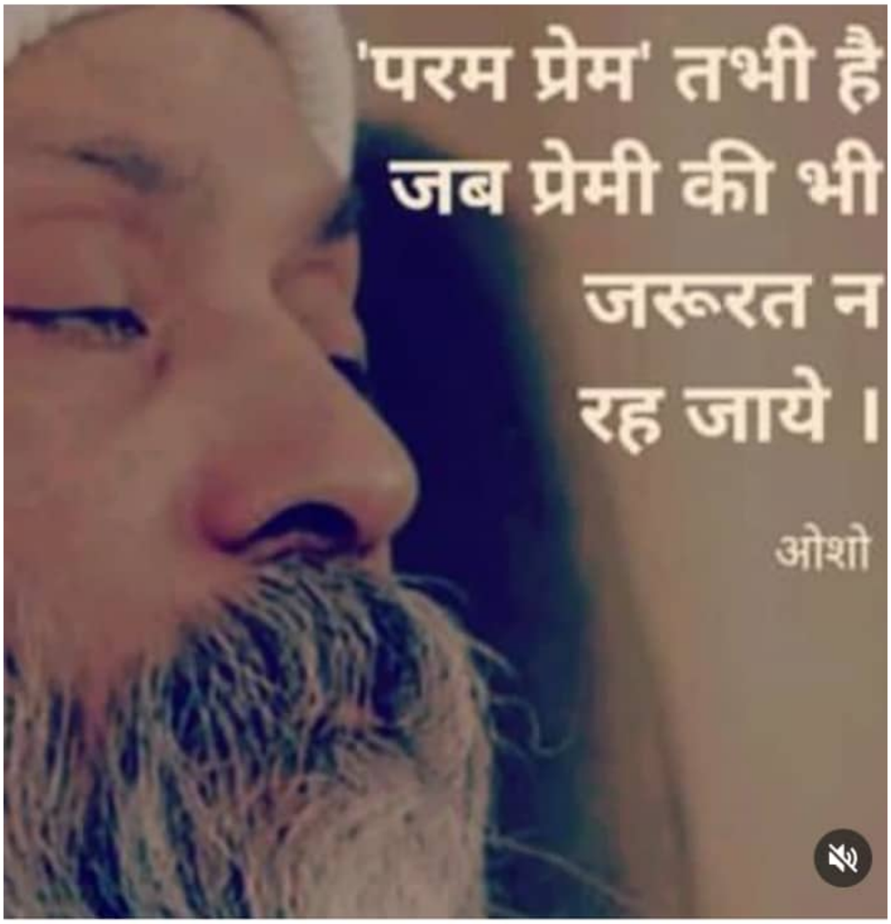

Liked by **osho_the_great_master** and **1,215 others**

osho_hindi_quotes ओशो के बेहतरीन हिंदी कोट्स पड़ने के लिए। ❤️ फॉलो करना मत भूलना 👉👉 @osho_hindi_quotes... more

View all 4 comments

1 day ago • **See translation**

Suggested for you

CamScanner

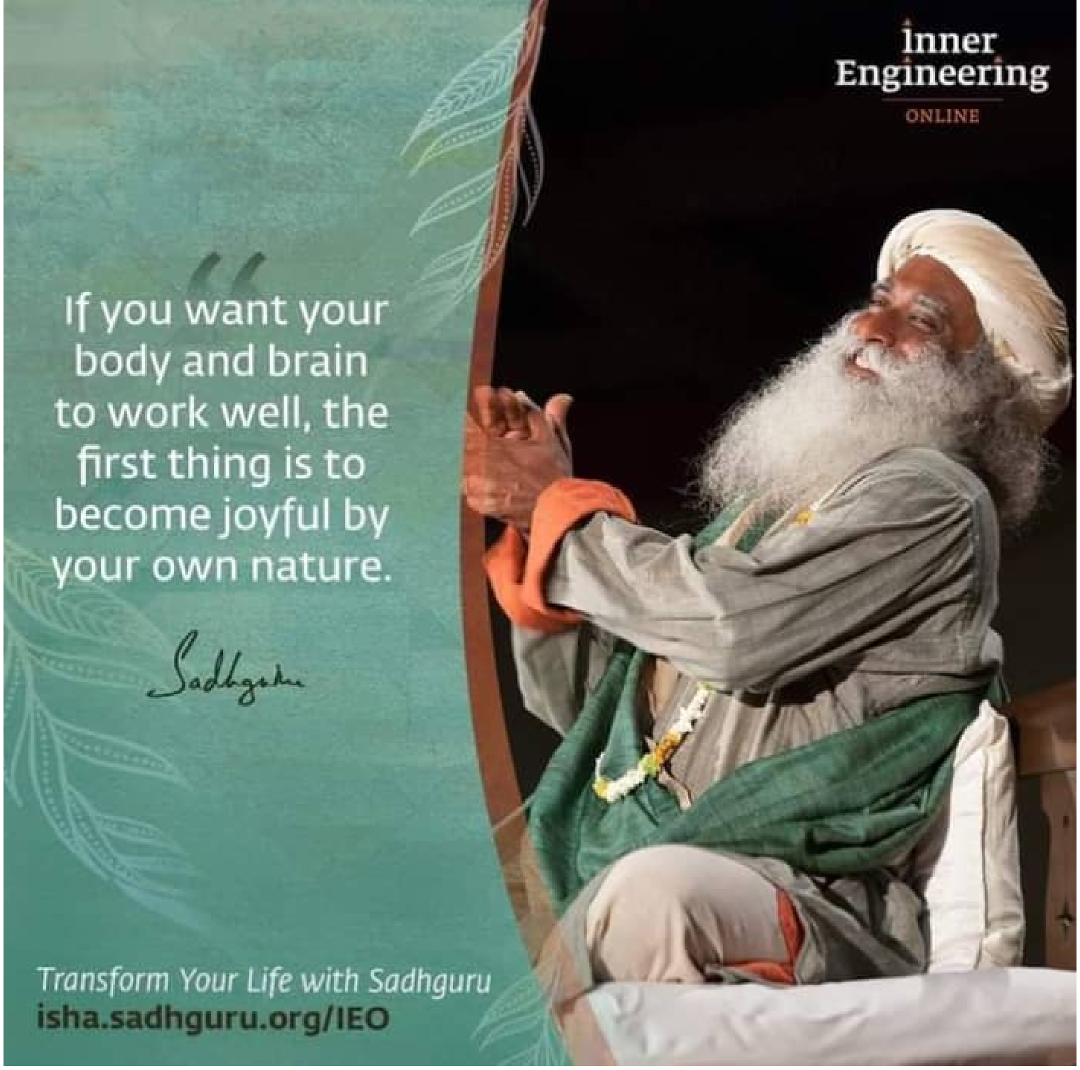
Inner Engineering
ONLINE
If you want your body and brain to work well, the first thing is to become joyful by your own nature.
Sadhguru
Transform Your Life with Sadhguru
isha.sadhguru.org/IEO

CamScanner

10:25 pm 6 KB/s VoLTE 4G 53%

facebook

Like Comment Share

श्री हरिवंश चरण शरणम

Suggested for you · 22 Jul ·

तुलसी मेरे राम को, रीझ भजो या खीज।भौम पड़ा जामे सभी, उल्टा सीधा बीज॥

🤔

माला तो कर में फिरे, जीभी फिरे मुख्य माहीं । मनवा तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नहीं

‼️दोनों बातों में से क्या सही हैं🤔🤔

🤦साधक विशेष🤦

विषय भोग से ज़्यादा खतरनाक का विषय का चिंतन कैसे समझे

हम चाहते क्या हैं यह महतवपूर्ण हैं करते क्या हैं दिखते कैसे हैं इसका कोई लेना देना नहीं चाहत क्या हैं😥

CamScanner

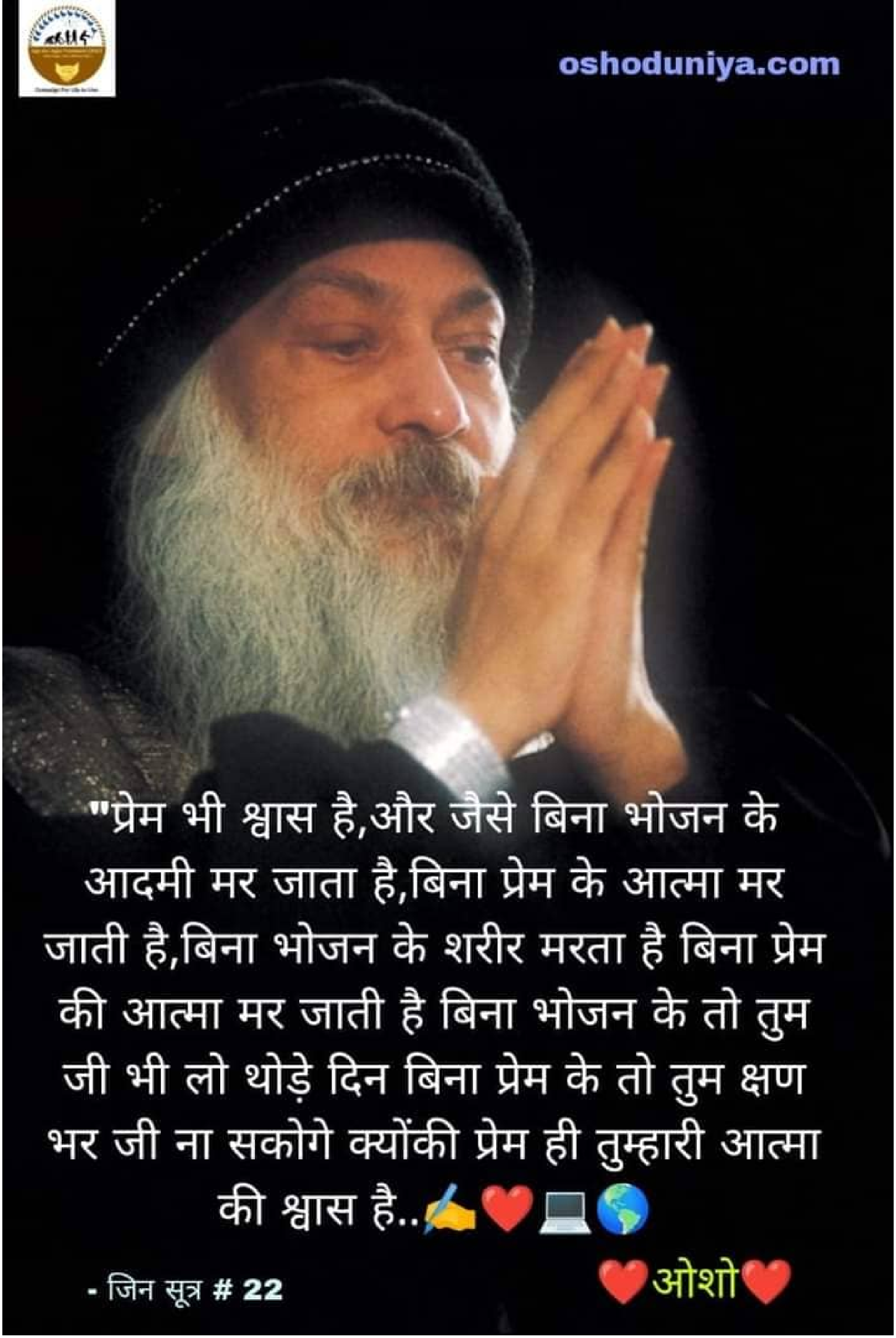
oshoduniya.com
"प्रेम भी श्वास है,और जैसे बिना भोजन के आदमी मर जाता है,बिना प्रेम के आत्मा मर जाती है,बिना भोजन के शरीर मरता है बिना प्रेम की आत्मा मर जाती है बिना भोजन के तो तुम जी भी लो थोड़े दिन बिना प्रेम के तो तुम क्षण भर जी ना सकोगे क्योंकी प्रेम ही तुम्हारी आत्मा की श्वास है..✍️❤️💻🌎
- जिन सूत्र # 22
❤️ओशो❤️

CamScanner

10:19 pm 0 KB/s 53%

Like Comment Send

श्री हरिवंश चरण शरणम

Suggested for you · 19 Jul ·

ऐसा समर्पण की अपेक्षा रखते हैं प्रभु अपने शरणागत से

कबीर कुत्ता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ।
गलै राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाऊँ॥

गुरु दीक्षा की प्रक्रिया पूरी कब होती हैं

CamScanner

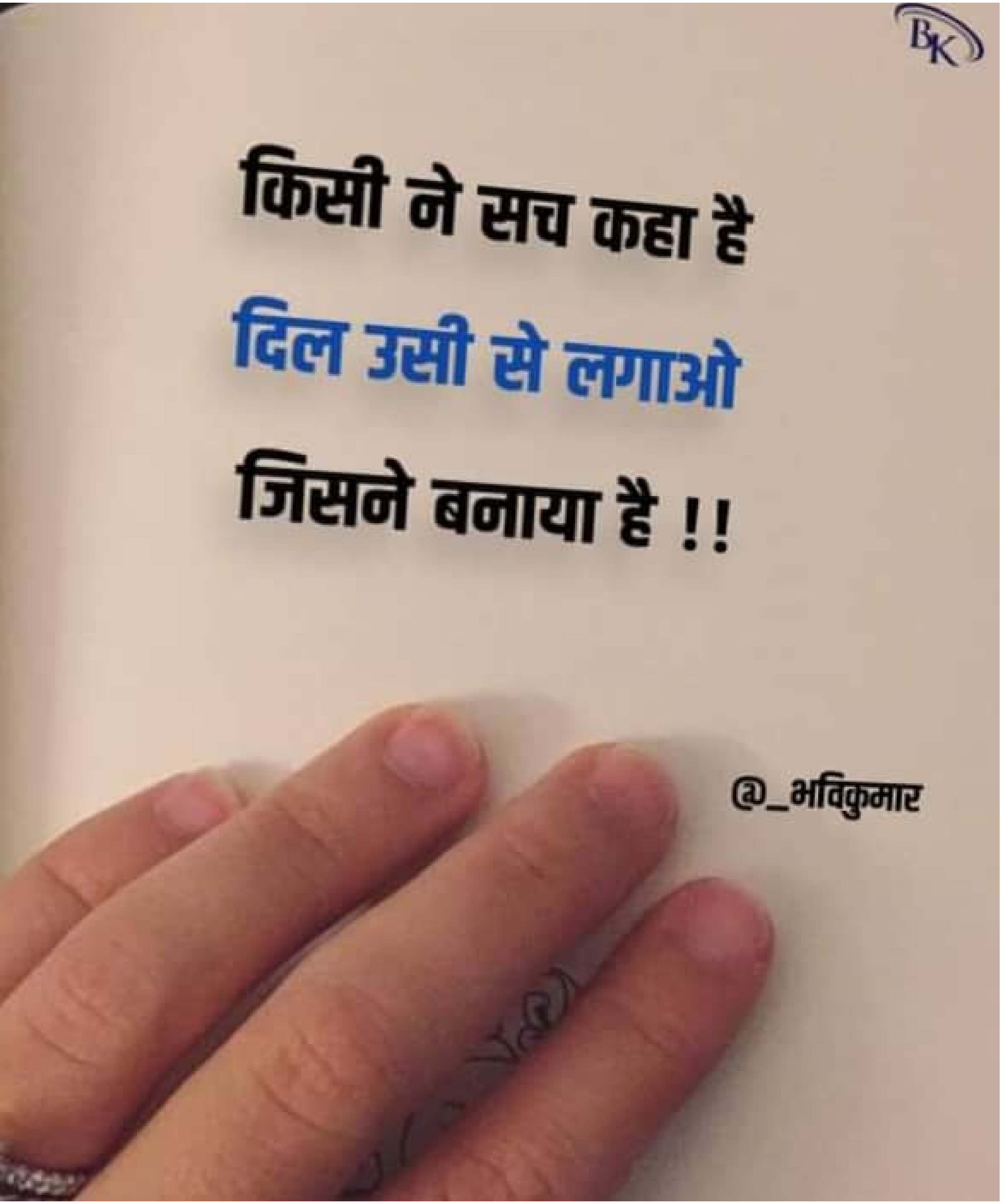

CamScanner

CamScanner

तुम इश्वर को केवल धन्यवाद देना अहोभाव से भिखारि मत बन जाना! तुम भीतर के सम्राट होने के लिए पैदा हुए हो भिखारि नही...

ओशो अहोभाव

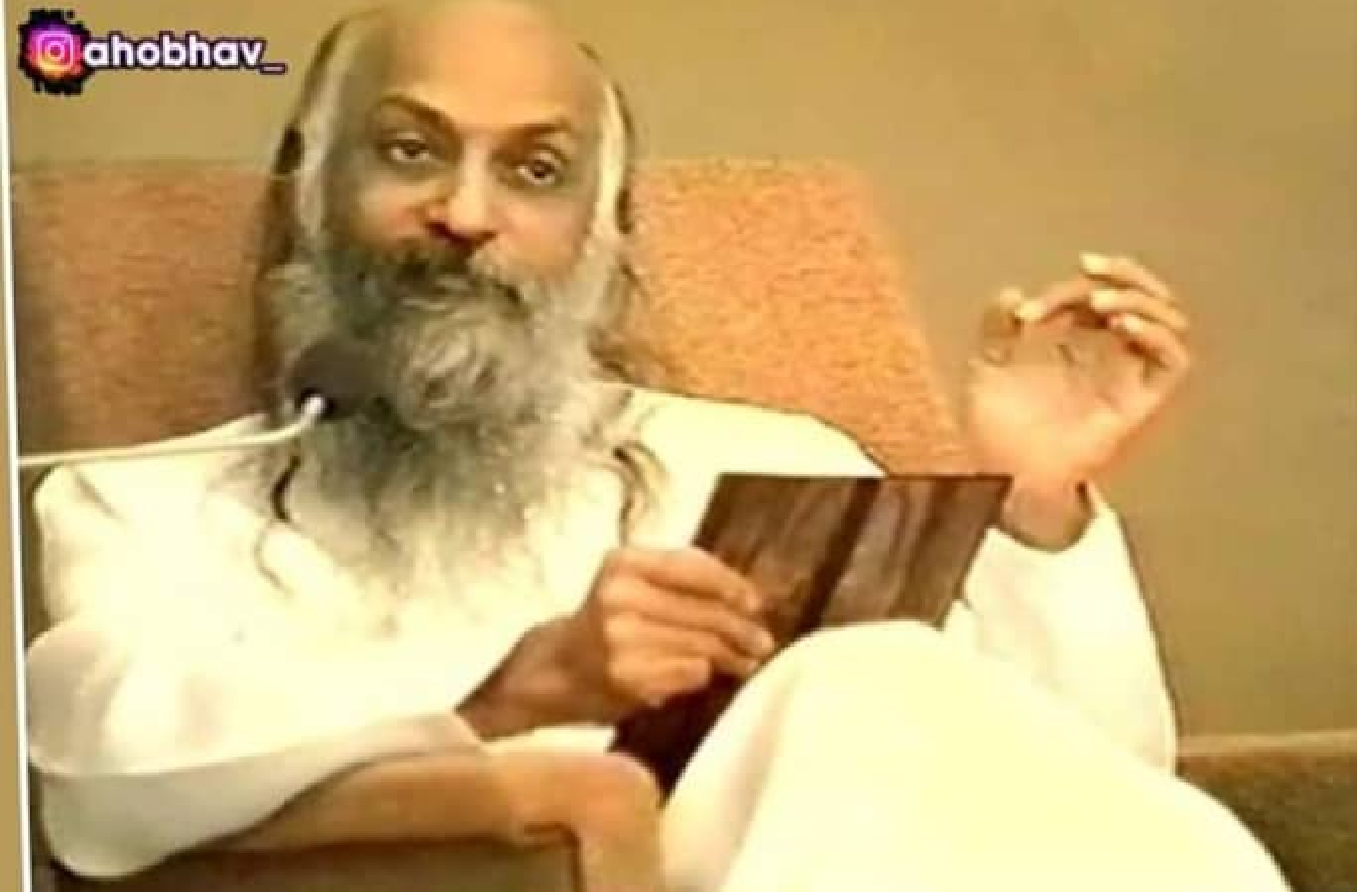

CamScanner

10:11 pm 0 KB/s 4G 55%

GyanLove2.0
1h ·

मोह और प्रेम में अन्तर जानें🤔 'मोह' सबकुछ नष्ट-भ्रष्ट कर देती है😱

Credit: Upanishad Ganga

#facebookpost #sanatandharma #bhagavadgita #hindu #hinduism #Veda #upanishads #krishna

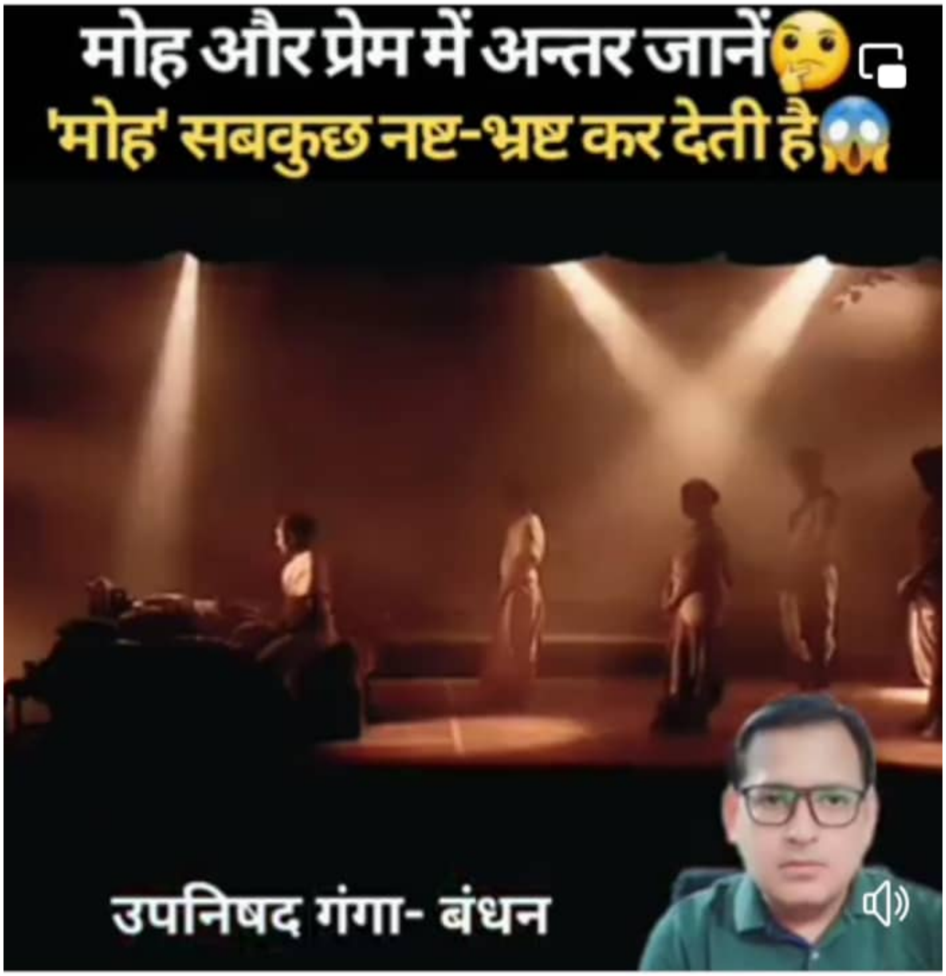

375 · 4 comments • 54 shares • 4.6K views

Like · Comment · Share

Amulya Mica
Sponsored ·

CamScanner

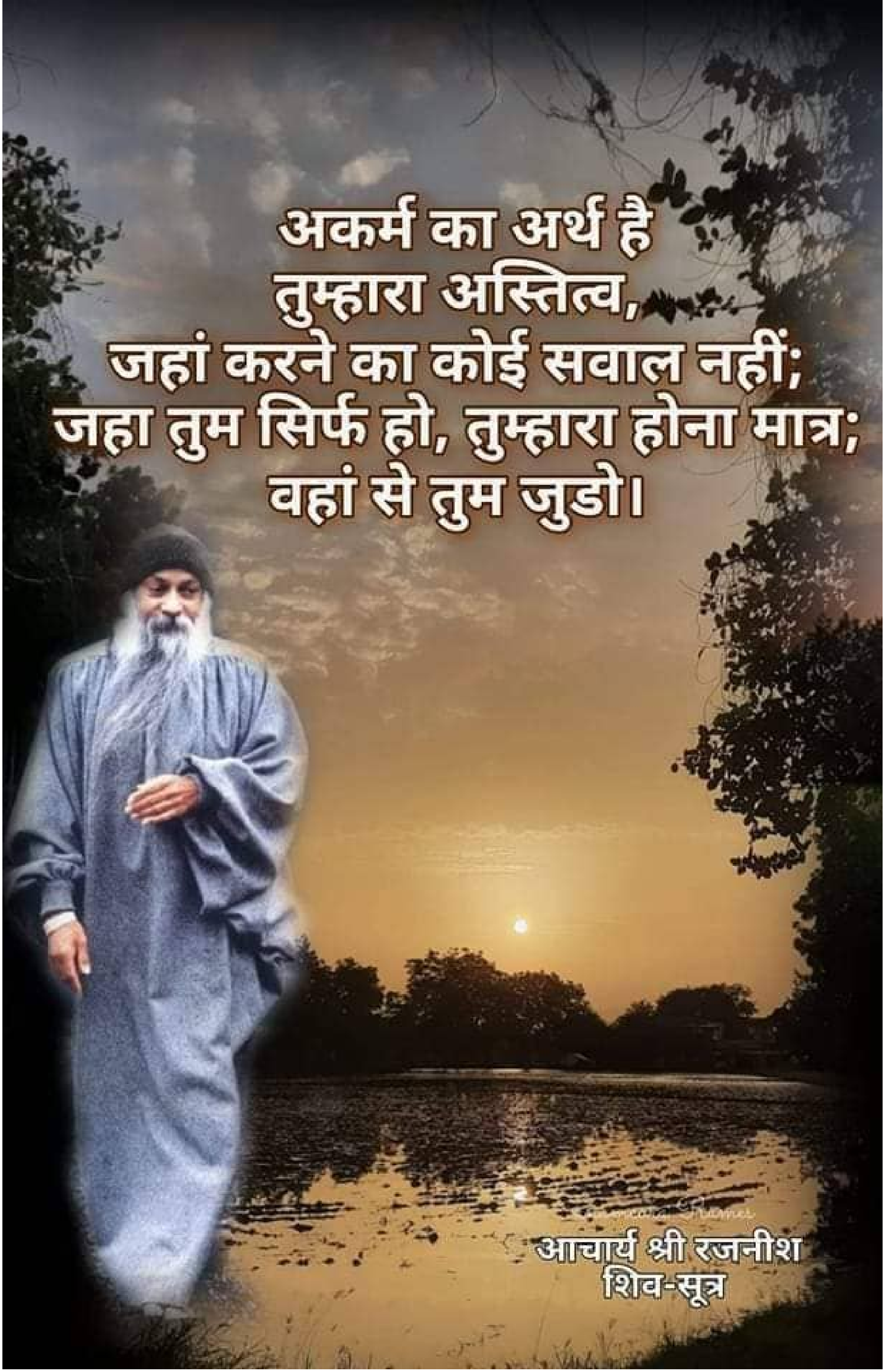
अकर्म का अर्थ है
तुम्हारा अस्तित्व,
जहां करने का कोई सवाल नहीं;
जहा तुम सिर्फ हो, तुम्हारा होना मात्र;
वहां से तुम जुडो।
आचार्य श्री रजनीश
शिव-सूत्र

CamScanner

10:08 pm 0 KB/s VoLTE 4G 55%

है। वो अपना नहीं है।
उसे कहीं भी भगवान के काम में लगा देना चाहिए।
जीवन इस ढंग से भी जिया जा सकता है। सब उसपे छोड़ के भी जिया जा सकता है।
और ये तो मलूकदास की श्रृंखला चल रही है। उनका ये वचन तो सब जानते है। और तो उनका कोई वचन मालूम ही नहीं।

अजगर करे ना चाकरी,
पंछी करे ना काम ।
दास मलूका कह गए,
सबके दाता राम।

मलूकदास ने ऐसे ही नहीं कह दिया होगा।
मलूकदास का भी काम ऐसे ही चला।
उसकी मर्जी पूछते हो धर्मेश..
तो पहला तो काम ..सन्यास।
जब ज्ञान खंडित हो गया तो सरलता स्वाभाविक हो जाएगी।
सरलता ही सन्यास है।
सन्यास तो बस आयोजन है...
कि ध्यान घट सके ! निर्दोष हो सके
चित्त .. बच्चों की भांति।
जागो, झकझोरो अपने को।
अपने हर कृत्य को जागरण से जोड़ दो।
एक मात्र औषधि है,
राम बाण औषधि है।

जागो। वह तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है।
आज इतना ही।

राम द्वारे जो मरे (प्रवचन 6)
मलूकदास

CamScanner

9:48 pm 109 KB/s 58%

#tilopa

#tilopa

1000+ posts

Following

Top Latest Video Reels

Lama Surya Das

24 Aug 2022 ·

Six Words of Advice from Tilopa
Don't recall – Let go what passed
Don't imagine – Let go of what may come
Don't think – Let go of what happens now
Don't examine – Don't try to figure anything out
Don't control – Don't try to make anything happen
Rest – Relax, right now, and rest on the Vast Expanse
#Tilopa #LamaSuryaDas #Dzogchen #Meditation #Mindfulness #SelfInquiry #NonDual #Buddhism #Healing #Wellness #Yoga #AwakeningtheBuddhaWithin #HowtoHeal #Dharma

CamScanner

9:48 pm 0 KB/s VoLTE 4G 58%

lilac2354 Jesus saves. How to be saved. Truly repent (feel sorrow/ grief) for your own sins: (psalm 38:17-18 KJ... more

osho_dewane

तिलोपा को तिब्बत में लोग जानते हैं ।जगत में जो थोड़े से बद्धपुरुष हुए हैं-उनमें तिलोपा एक हैं-और बहुत ज्योतिर्मय।जापान मे भी जानते हैं,चीन में भी,और कोरिया में भी। सारा एशिया जानता है,सिवाय भारत को छोड़कर।क्या हुआ?यह कैसा दुर्भाग्य?भारत के सिर पर पांडित्य बहुत चढ़ कर बैठ गया है ।बड़े शास्त्र और उन शास्त्रों को दोहरानेवाले तोते इतने हैं कि उन तोतों के बीच मे जब कोई आदमी सीधा-सीधा हृदय से बोलता है तो तोते नाराज़ हो जाते हैं ।

47 likes

Add a comment...

53 minutes ago

Suggested for you

CamScanner

जिंदगी सिर्फ एक बार मिलती है"
बिल्कुल गलत सिर्फ मौत एक बार मिलती है! जिंदगी हर रोज मिलती है।
नजरिया मायने रखता है!

CamScanner

9:10 pm 0 KB/s VoLTE 4G 59%
facebook

तो रात अकबर ने और तानसेन ने, दो बजे रात, छिप गए हरिदास के झोपड़े के पास। वे आगरा में यमुना के किनारे रहते थे। तीन बजे रात वो अपूर्व संगीत शुरू हुआ हरिदास का। अकबर डोलने लगा। उसकी आँख से आँसू ही बहे जाते। पाँच बजे बन्द हुआ संगीत। जब वे लौटने लगे महल की तरफ़, तो अकबर बिल्कुल चुप रहा, कुछ बोला ही नहीं। ये बात कुछ ऐसी थी कि इसके संबन्ध में कुछ भी कहना छोटा होगा, ओछा होगा। ये इस जगत का संगीत न था। ये सेज परमात्मा के लिए बिछाई गई थी। ये श्रृंगार परमात्मा के लिए किया गया था। ये तो बात ही अलौकिक थी। ये अपार्थिव थी बात। ये स्वर्ग का संगीत था। इसके संबन्ध में क्या कहो! कुछ कहने को न था। एक सन्नाटा रहा।

जब महल आ गया और अकबर उतर के महल की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा और उसने तानसेन को विदा दी, तब उसने इतना ही कहा, "तानसेन, अब तक मैं सोचता था, तुम्हारा कोई मुक़ाबला नहीं है; आज मैं सोचता हूँ, तुम्हारे गुरू के सामने तुम तो कुछ भी नहीं हो। आज मैं बड़ी बेचैनी में पड़ गया हूँ। अब तक सोचता था, तुम्हारे सामने कोई कुछ भी नहीं है; आज बड़ी मुश्किल हो गई है। आज तुम्हें देखता हूँ तो तुम्हारा संगीत तो साधारण मालूम होता है। तुम्हारे गुरू के सामने तो तुम कोई भी नहीं हो, कुछ भी नहीं हो। तुम्हारा उनसे क्या मुक़ाबला! अब तक सोचता था तुम्हारा कोई मुक़ाबला नहीं; अब सोचता हूँ तुम्हारा उनसे क्या मुक़ाबला! इतना फ़र्क़ क्यों है? और जो तुम्हारे गुरू के जीवन में हो सका, तुम्हारे जीवन में क्यों नहीं हो पाया?"

तानसेन ने कहा, "कठिन नहीं है मामला, सीधा-साफ़ है। मैं बजाता हूँ आपके लिए; मेरे गुरू बजाते हैं परमात्मा के लिए। मैं बजाता हूँ कुछ पुरस्कार पाने के लिए। छुद्र पुरस्कार... धन, पद, प्रतिष्ठा। मेरे गुरू बजाते हैं अहोभाव से, किसी पुरस्कार को पाने के लिए नहीं। मैं बजाता हूँ, कुछ पाने के लिए; मेरे गुरू बजाते हैं क्योंकि उन्होंने कुछ पा लिया है। उस पाने से बजना उठता है। मैं तो भिखारी हूँ, वे सम्राट हैं।"

ओशो; अजहुँ चेत गँवार

CamScanner

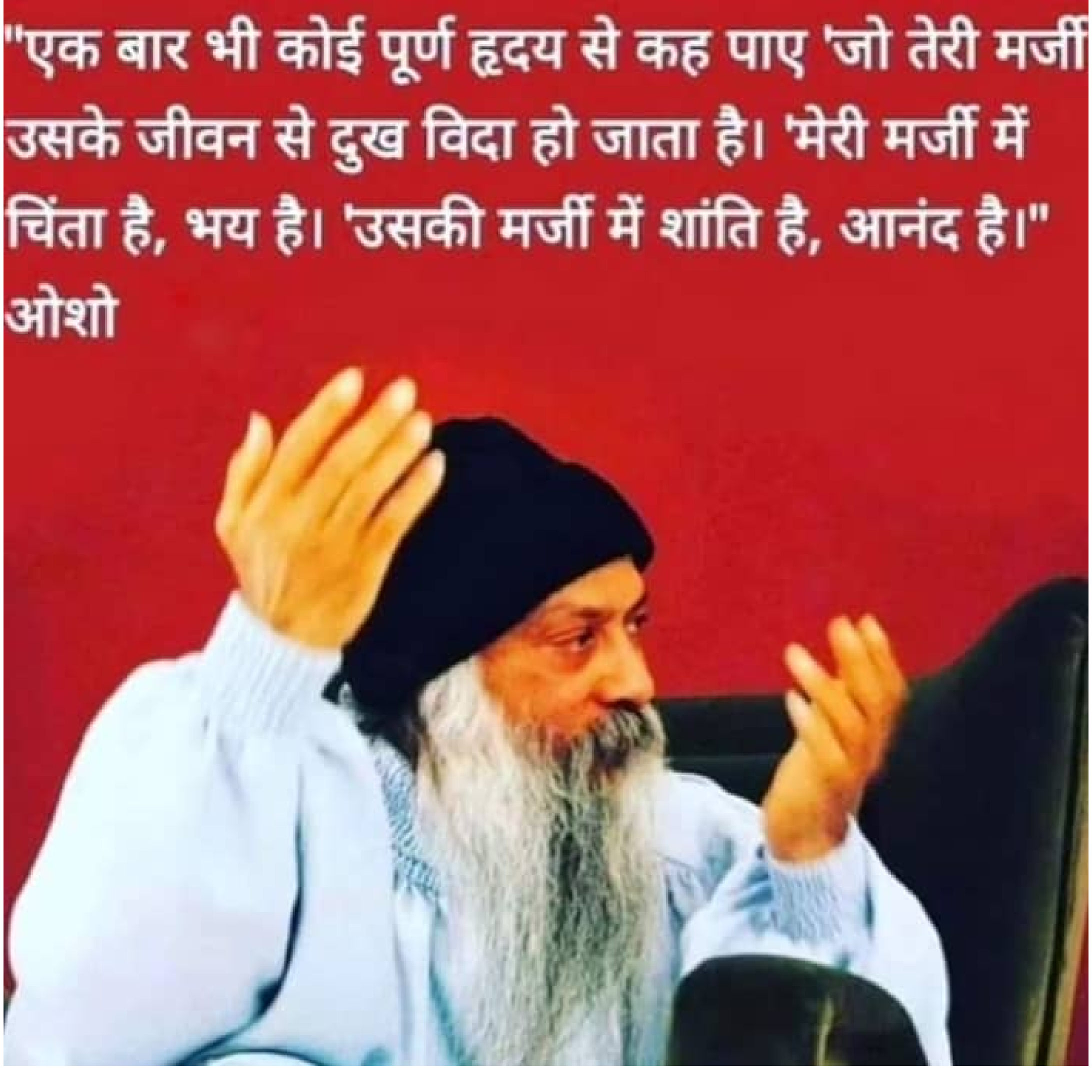
"एक बार भी कोई पूर्ण हृदय से कह पाए 'जो तेरी मर्जी
उसके जीवन से दुख विदा हो जाता है। 'मेरी मर्जी में
चिंता है, भय है। 'उसकी मर्जी में शांति है, आनंद है।"
ओशो

CamScanner

8:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G 60%

कितना ही खोना पड़े, कितना ही दांव पर लगाना पड़े, भूल को अस्वीकार करना या भूल को मद्देनजर करना या छिपाना उसके लिए असंभव था।

हो सकता हो ईश्वर उसकी प्रतीक्षा करता हो, क्योंकि सत्य के खोजी की प्रतीक्षा ही ईश्वर कर सकता है।

पावली मरा, और कथा है कि ईश्वर ने पावली से कहा कि तू भी अनूठा आदमी है। छोटी–छोटी भूलों के लिए तूने अपनी न–मालूम कितनी रातें बिना सोये बिताई हैं। और निश्चित ही जीवन के बहुत से रहस्य–– वह भौतिकविद था, फिजिसिस्ट था––भौतिक शास्त्र के बहुत से रहस्य तुझे अनजाने रह गये होंगे और तू प्रतीक्षा कर रहा होगा कि कब परमात्मा से मिलना हो तो उनसे पूछ सके।

तुझे कुछ पूछना तो नहीं है? मैं खुश हूं।

पावली ने कहा कि धन्यभागी, हे प्रभु, एक सवाल मुझे वर्षो से चिंतित कर रहा है, और मेरे मित्रों ने, मेरे साथियों ने जितने भी सिद्धांत खोजे वह सब गलत थे और मामला हल नहीं हो पाया। जब आप ही मौजूद हैं, जिन्होंने जगत को बनाया तो अब हल होने में कोई कठिनाई नहीं है।

उसने भौतिक–शास्त्र का एक उलझा हुआ सवाल ईश्वर से पूछा। उसने कहा कि प्रोटान और इलेक्ट्रान दोनों के मास में अठारह सौ गुना का फर्क है। प्रोटान का मास इलेक्ट्रान के मास से अठारह सौ गुना ज्यादा है। लेकिन दोनों का विद्युत चार्ज बराबर है; यह बड़ी हैरान करनेवाली बात है। ऐसा कैसे हो पाया? क्या कारण है? जरूर कोई कारण होगा।

ईश्वर ने अपनी टेबिल के ऊपर से कुछ कागजात उठाये और पावली को दिये और कहा कि यह रहा सारा सिद्धांत, इस भेद का सारा सिद्धांत, इस भेद का सारा रहस्य ! पावली गौर से पढ़ गया। फिर से दुबारा लौटकर उसने पढ़ा। तीसरी बार फिर नजर डाली और ईश्वर के हाथ में देते हुए कहा, "स्टिल रांग––अभी भी गलत है।'

कहानी कहती है कि ईश्वर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा कि मैंने गलत ही तुझे पकड़ाया था। मैं जानना चाहता था कि ईश्वर को भी गलत कहने की क्षमता तुझ में है या नहीं।

ईश्वर की प्रतिष्ठा से और बड़ी कोई प्रतिष्ठा नहीं हो सकती; लेकिन सत्य के खोजी की आड़ में अगर ईश्वर भी आता हो तो उसे भी हटा देना आवश्यक है।

ओशो, महावीर वाणी,भाग-२(प्रवचन-१९)

CamScanner

पश्चात्ताप करनेवाला
कल के लिए क्षमा मांग लेगा।
हर वर्ष हम मांगते हैं
मिच्छामि दुक्कड़म,
हर वर्ष हम मांगते हैं, क्षमा कर दे।
पिछले वर्ष भी मांगा था,
उसके पहले भी क्षमा मांगी थी।
कब वह दिन आएगा जब कि
क्षमा मांगने का अवसर न रह जाए।
कि मांगते ही रहेंगे?
और जानते हैं भली-भांति कि
जहां से क्षमा मांगी जा रही है
वहां कोई रूपांतरण नहीं है।
वह आदमी वही है जो पिछले वर्ष था।

CS CamScanner

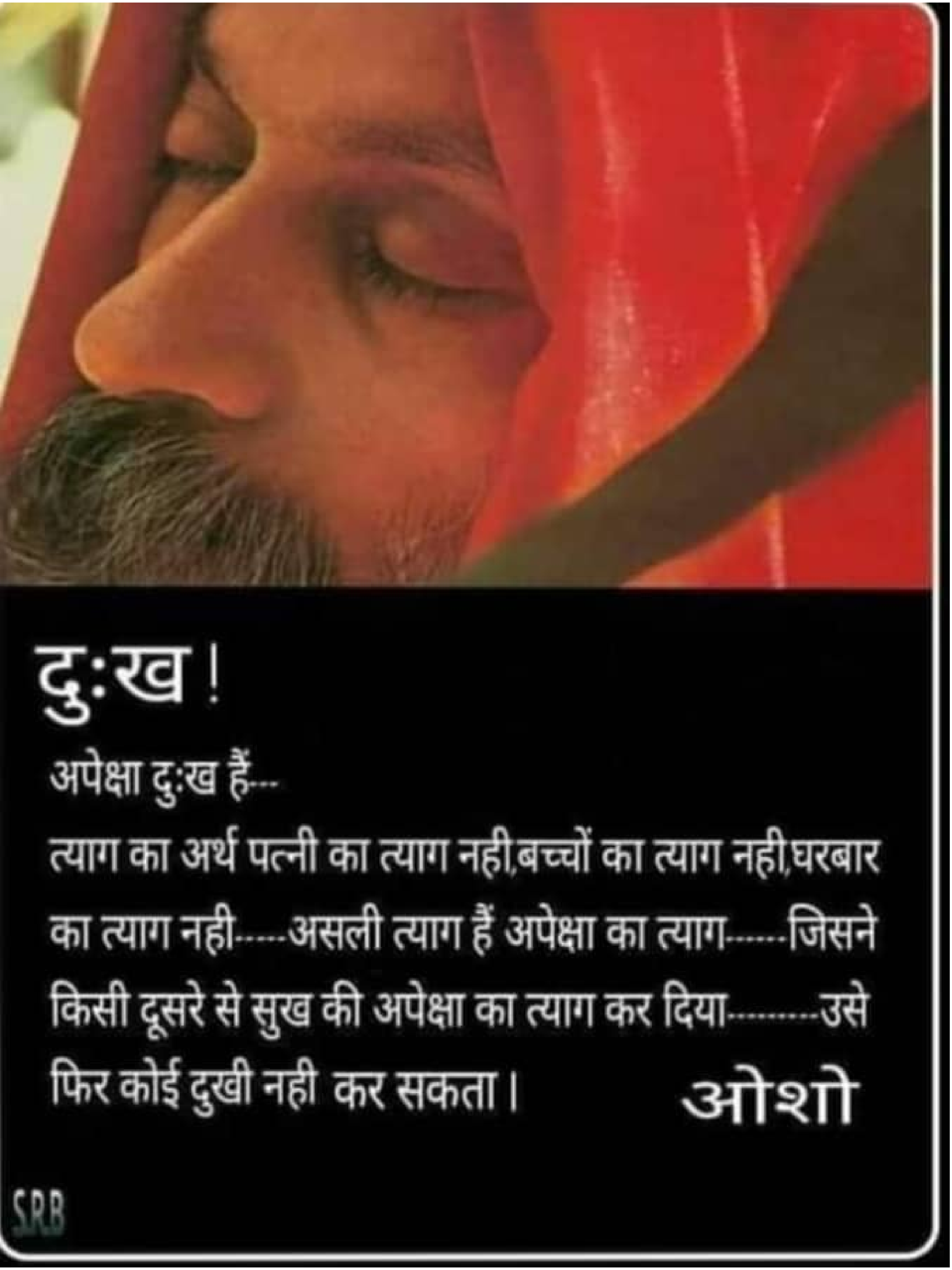
दुःख !
अपेक्षा दुःख हैं---
त्याग का अर्थ पत्नी का त्याग नही,बच्चों का त्याग नही,घरबार का त्याग नही-----असली त्याग हैं अपेक्षा का त्याग------जिसने किसी दूसरे से सुख की अपेक्षा का त्याग कर दिया----------उसे फिर कोई दुखी नही कर सकता।
ओशो
SRB

CamScanner

8:21 pm 0 KB/s VoLTE 4G 60%

facebook

1K 84 comments • 309 shares

Like Comment Share

Osho Thoughts
अहोभाव · 3d ·

अहोभाव

परमात्मा तुम्हारे भीतर है,
कही और खोजोगे तो व्यर्थ ही समय जाएगा।
ओशो

CamScanner

अहोभाव
अहोभाव
ओशो
पग घुंघरू बांध#4
भक्त होने की क्षमता उसी की है जिसकी आंखे सरलता से गीली हो सकती है; जिसका हृदय आंसू अंडेल सकता है। जिसके भीतर भावना है, वही भक्त हो सकता है। जिसके भीतर भाव है, वही भक्त हो सकता है। और भाव के पास शब्द नहीं हैं। भाव के पास आंसू हैं। भाव के पास तर्क नहीं हैं। भाव के पास नाच है, गीत है, गान है। इसलिए तो मीरा नाची, रोई, गाई।

CamScanner

ओशो
बहुत लोग मेरे पैर छू लेते हैं, उसी वक्त मेरा मन होता है,
मैं भी उनके पैर छुऊं, क्योंकि इसके सिवाय कोई और
उत्तर नहीं हो सकता है। लेकिन इतने-इतने लोगों के
अलग-अलग पैर छूना कठिन होगा, शायद वे मुझे
छूने भी न दें, इसलिए मैं इकट्ठे सबके पैर छू लेता हूं।
सबके पैरों में मेरे प्रणाम स्वीकार करें। सबके
भीतर जो परमात्मा बैठा है, वही किसी दिन जागे,
इसकी कामना करता हूं।

CamScanner

तोड़ेंगे गुरुर इश्क का और इस
कदर सुधर जायेंगे...
खड़ी रहेगी मोहब्बत और हम
सामने से ग़ुजर जायेंगे!

CamScanner

॥श्रीहरिः॥

कोई आफत आ जाय तो दस–पन्द्रह मिनट बैठकर नामजप करो और प्रार्थना करो तो रक्षा हो जायगी। सच्चे हृदय से की गयी प्रार्थना से तत्काल लाभ होता है। घरमें बच्चों से प्रतिदिन घण्टा डेढ़ घण्टा भगवन्नाम का कीर्तन करवाओ तो उनकी जरूर सद्बुद्धि होगी और दुर्बुद्धि दूर होगी।

(एक संत की अमूल्य शिक्षा, पृष्ठ संख्या ६)

- श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसखदासजी महाराजी

CS CamScanner

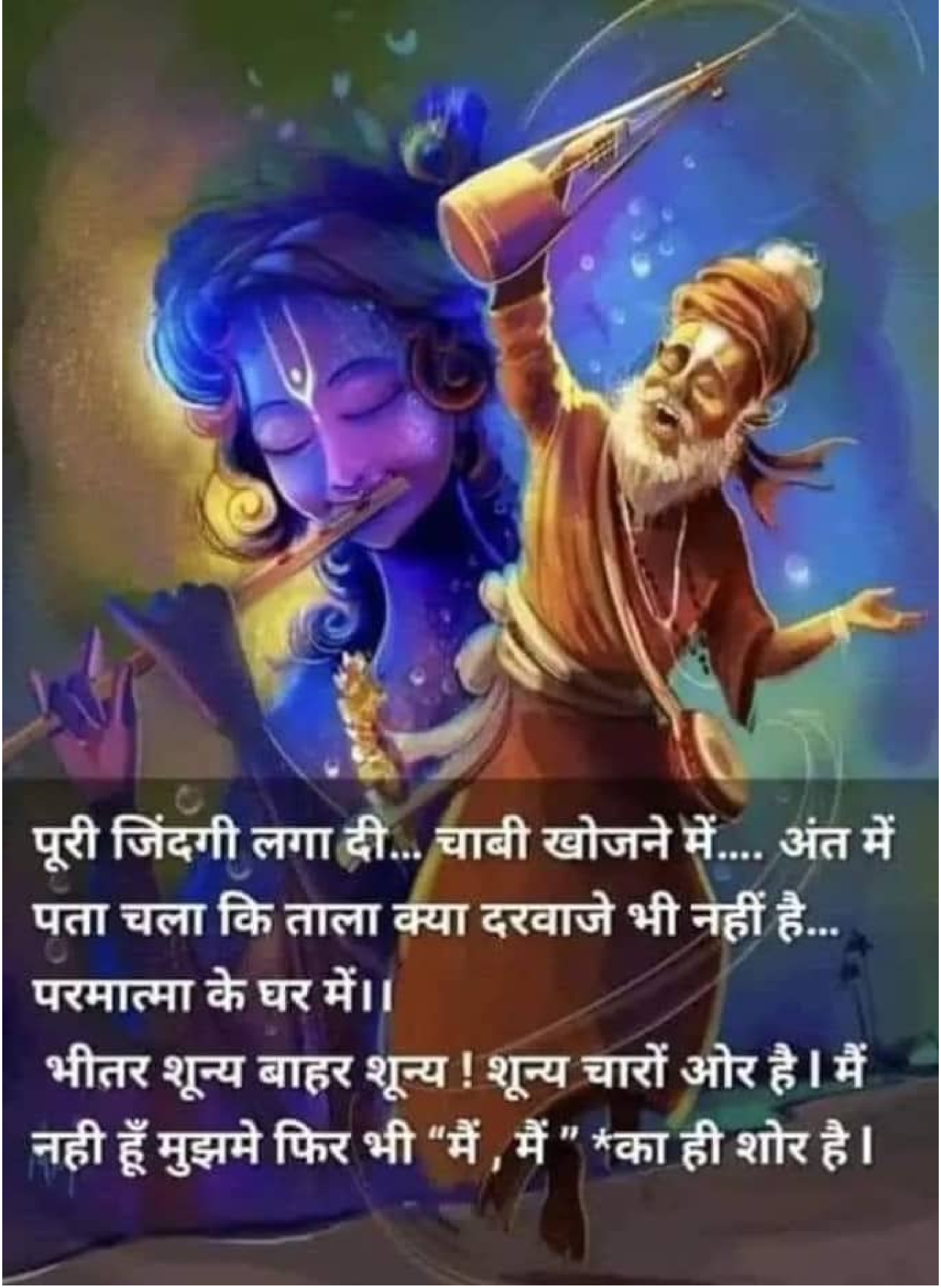
पूरी जिंदगी लगा दी... चाबी खोजने में.... अंत में
पता चला कि ताला क्या दरवाजे भी नहीं है...
परमात्मा के घर में।।
भीतर शून्य बाहर शून्य ! शून्य चारों ओर है। मैं
नही हूँ मुझमे फिर भी "मैं , मैं " *का ही शोर है।
CamScanner

8:16 pm 0 KB/s VoLTE 4G 61%

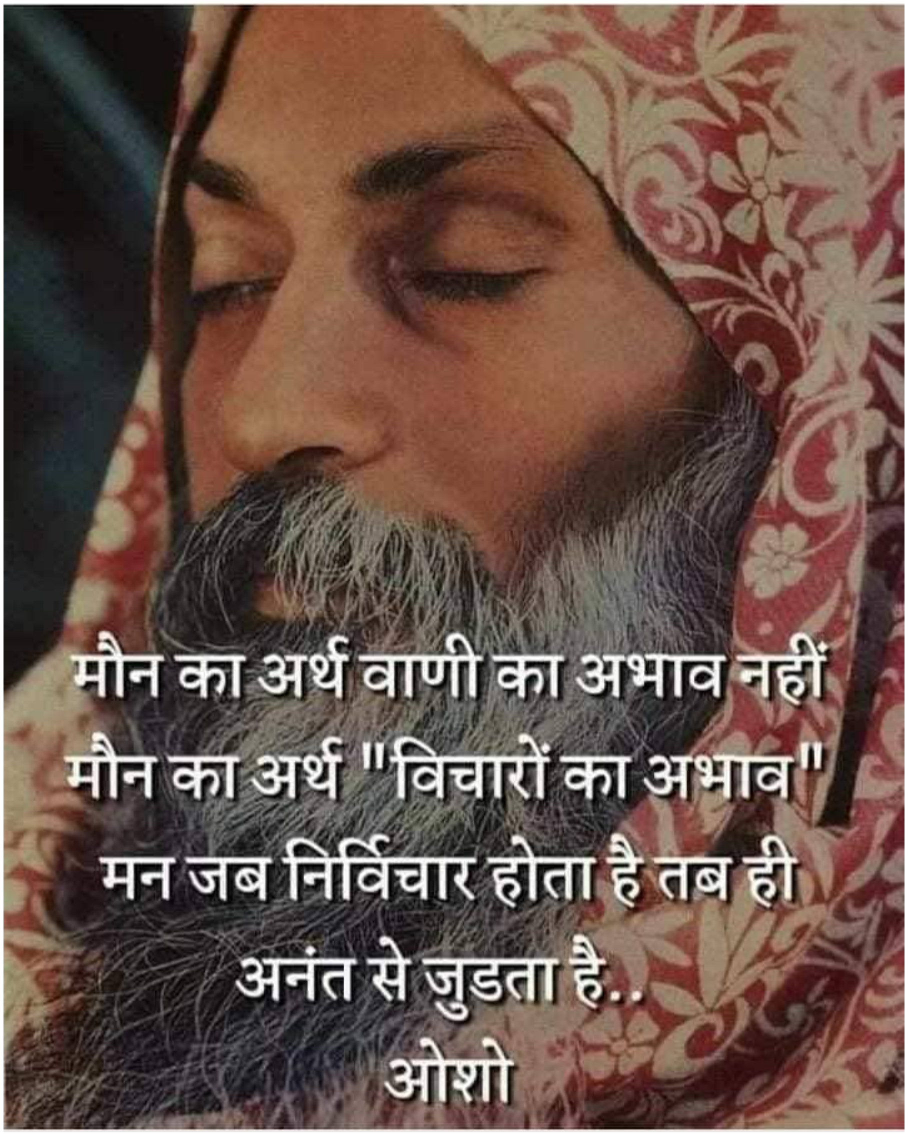

36 1 comment • 2 shares

Like Comment Share

अनकहे अल्फ़ाज
5d ·

#टूटा_दिल_और_शायर💔🥀

CamScanner

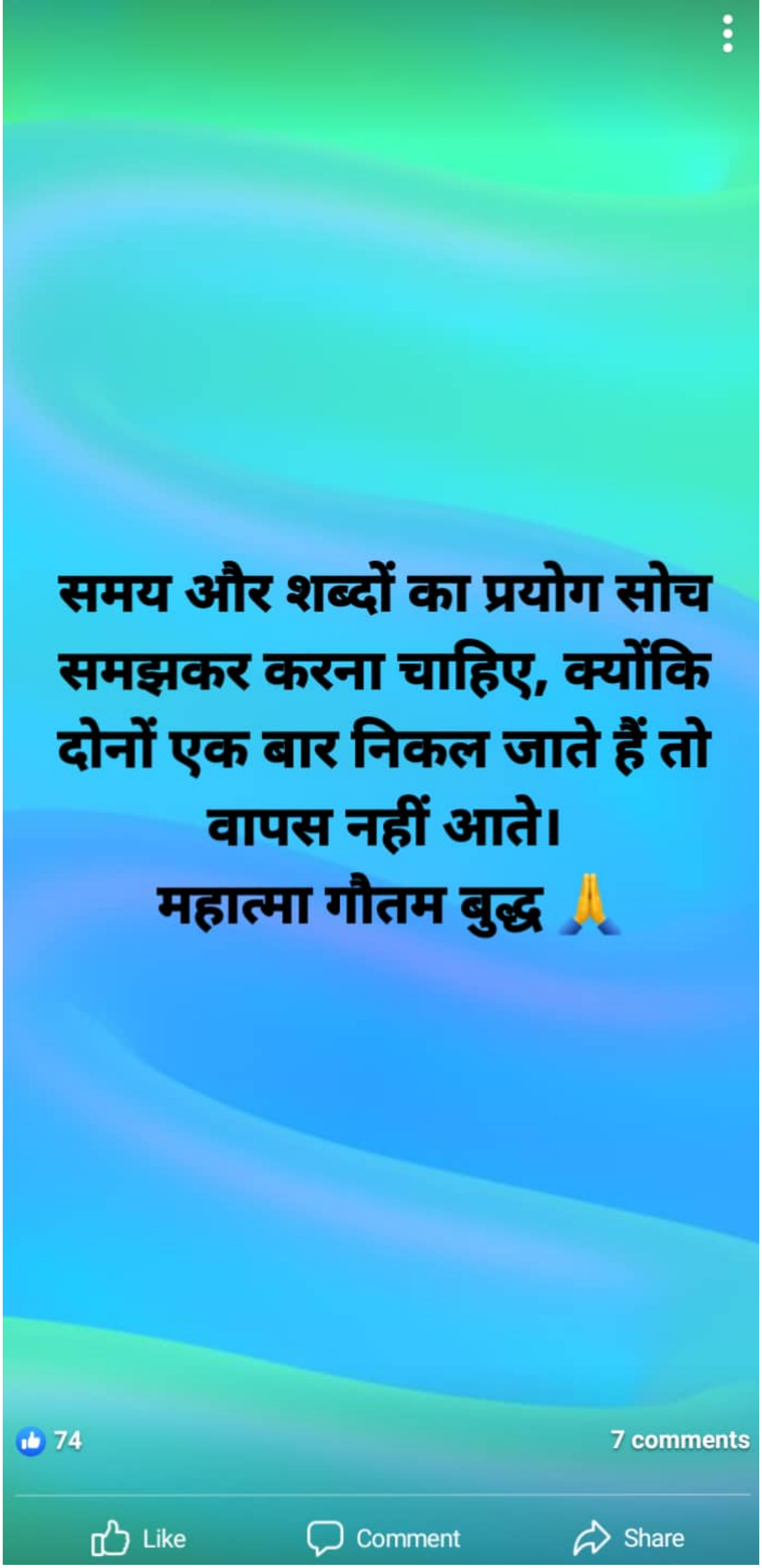
समय और शब्दों का प्रयोग सोच समझकर करना चाहिए, क्योंकि दोनों एक बार निकल जाते हैं तो वापस नहीं आते।
महात्मा गौतम बुद्ध 🙏
74
7 comments
Like
Comment
Share

CamScanner

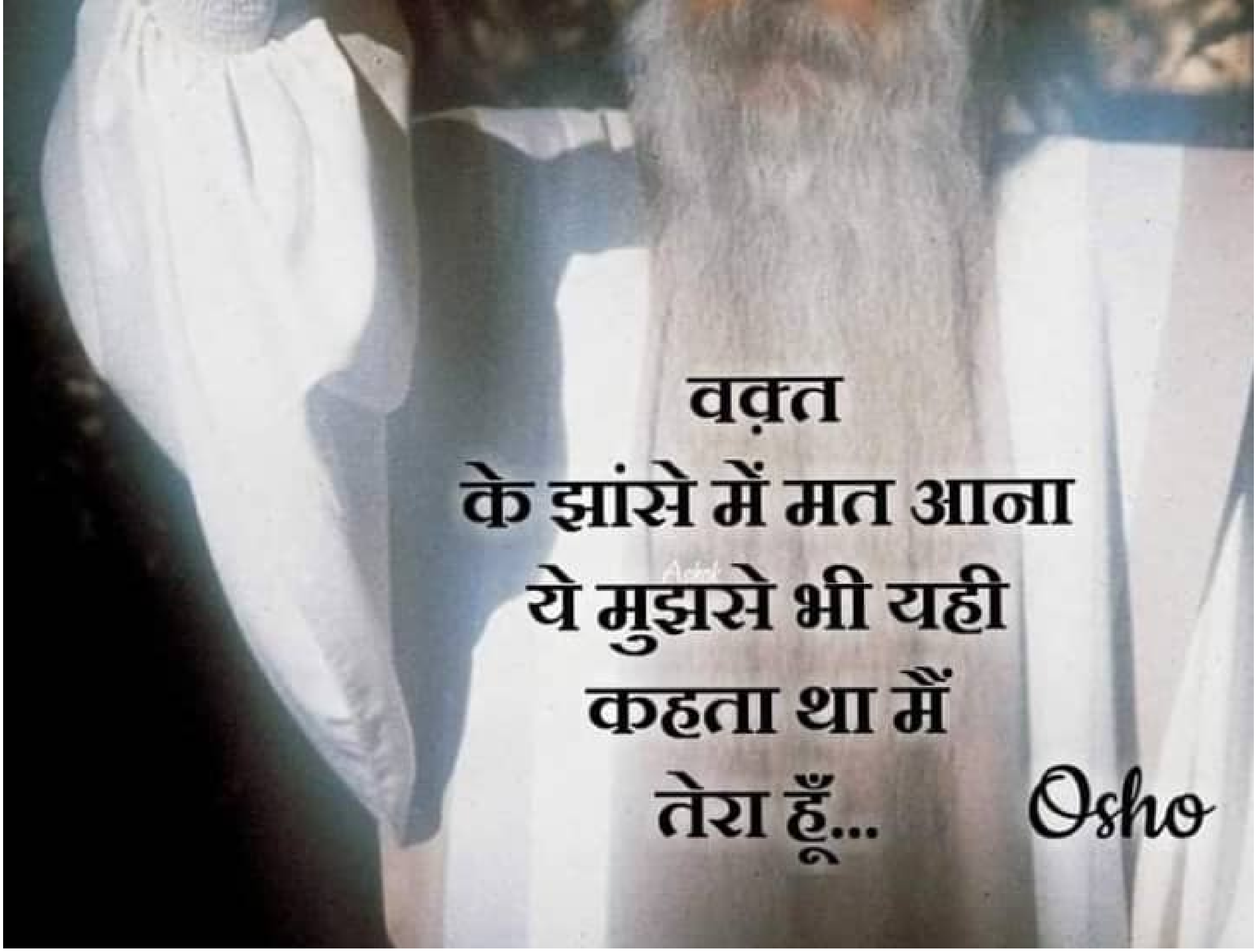

CamScanner

CamScanner

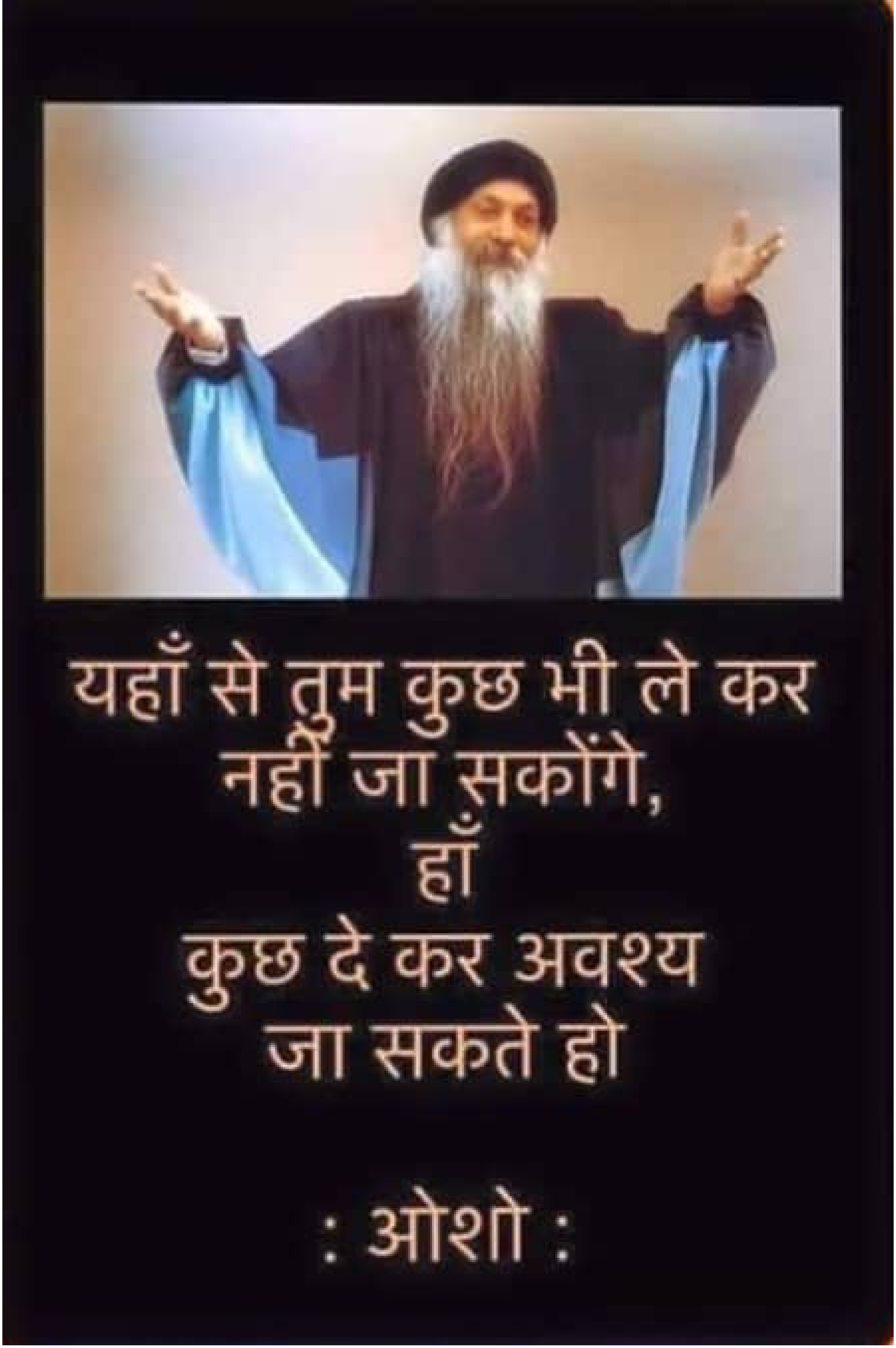

CS CamScanner

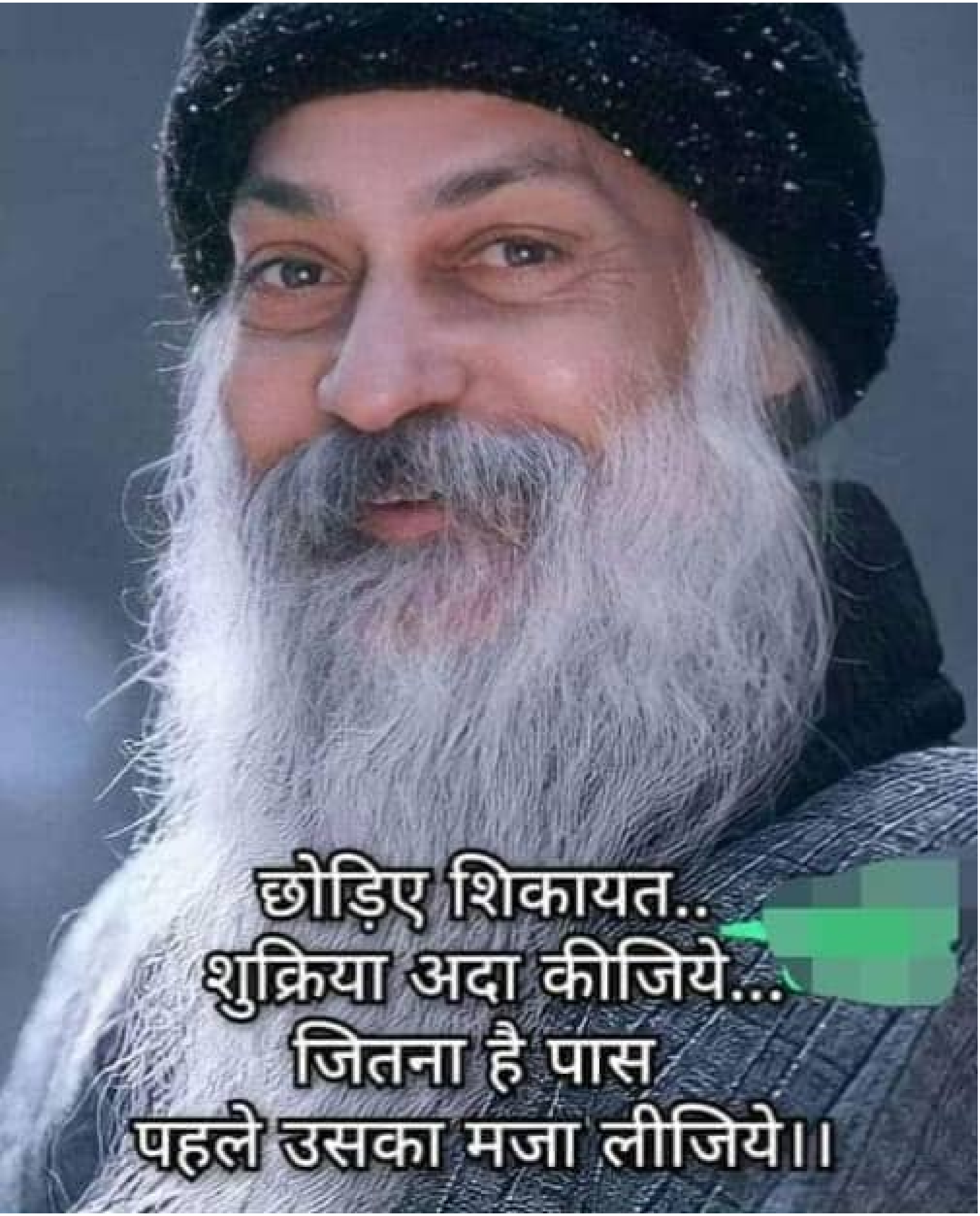

CamScanner

CS CamScanner

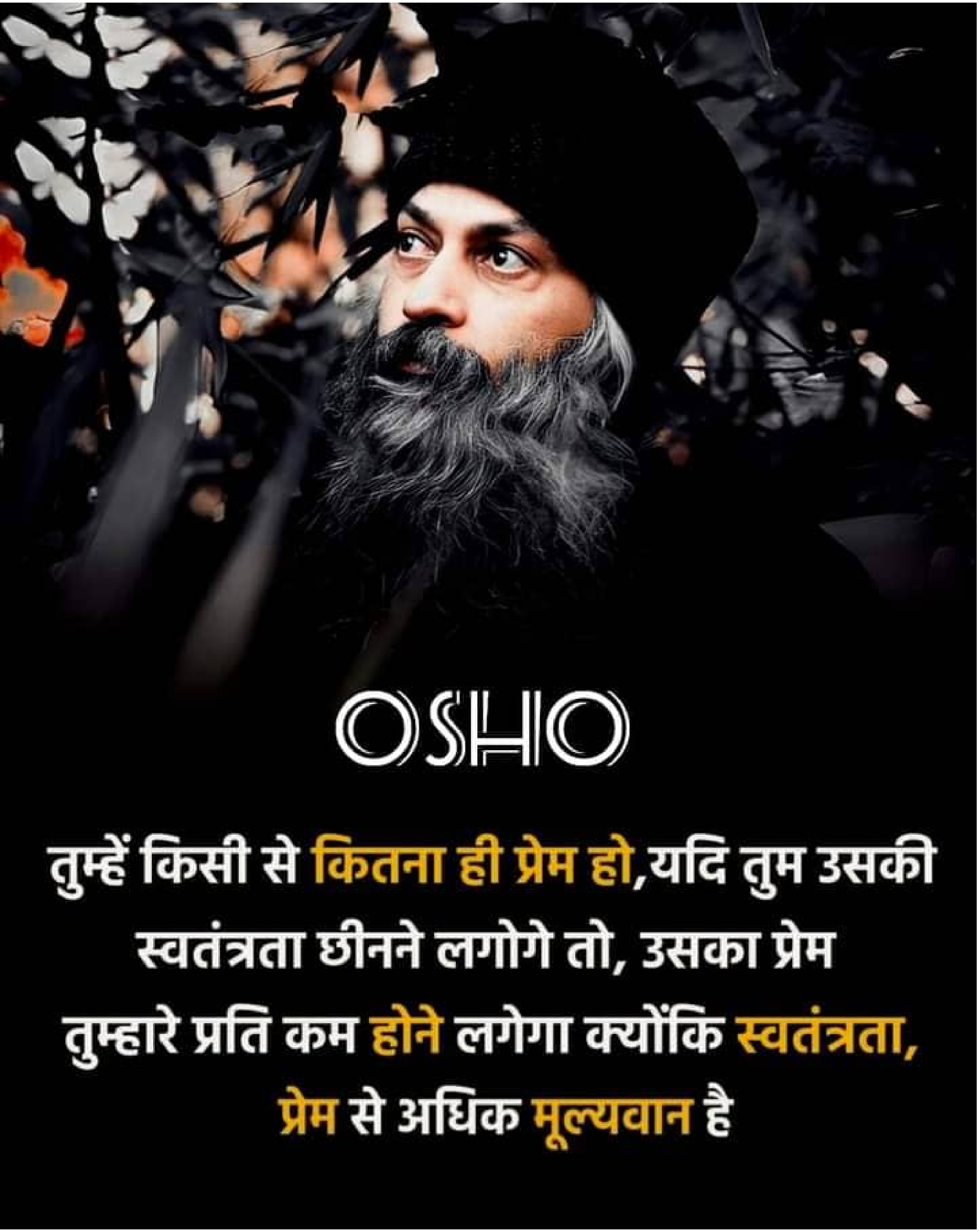
OSHO
तुम्हें किसी से कितना ही प्रेम हो,यदि तुम उसकी
स्वतंत्रता छीनने लगोगे तो, उसका प्रेम
तुम्हारे प्रति कम होने लगेगा क्योंकि स्वतंत्रता,
प्रेम से अधिक मूल्यवान है

CamScanner

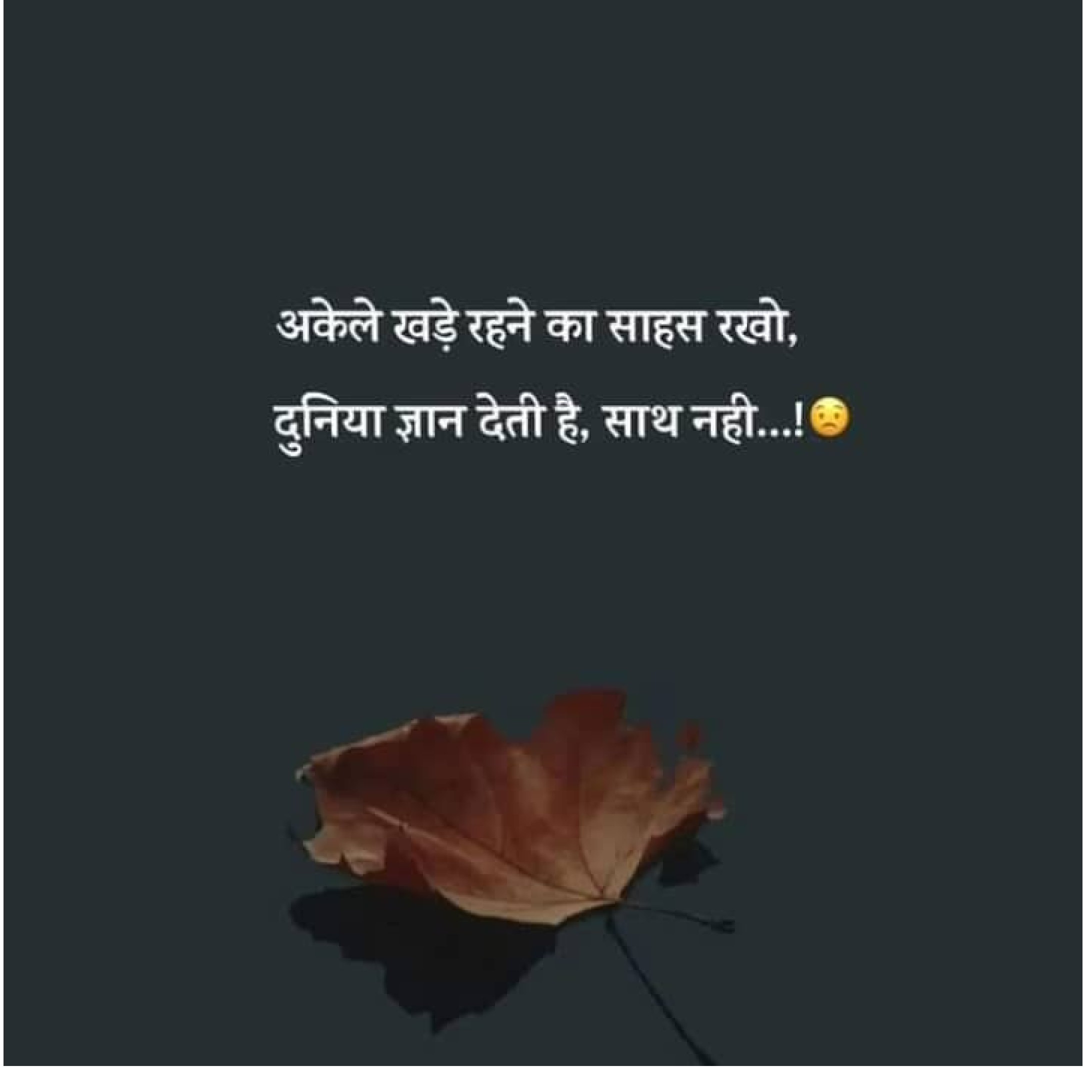

CamScanner

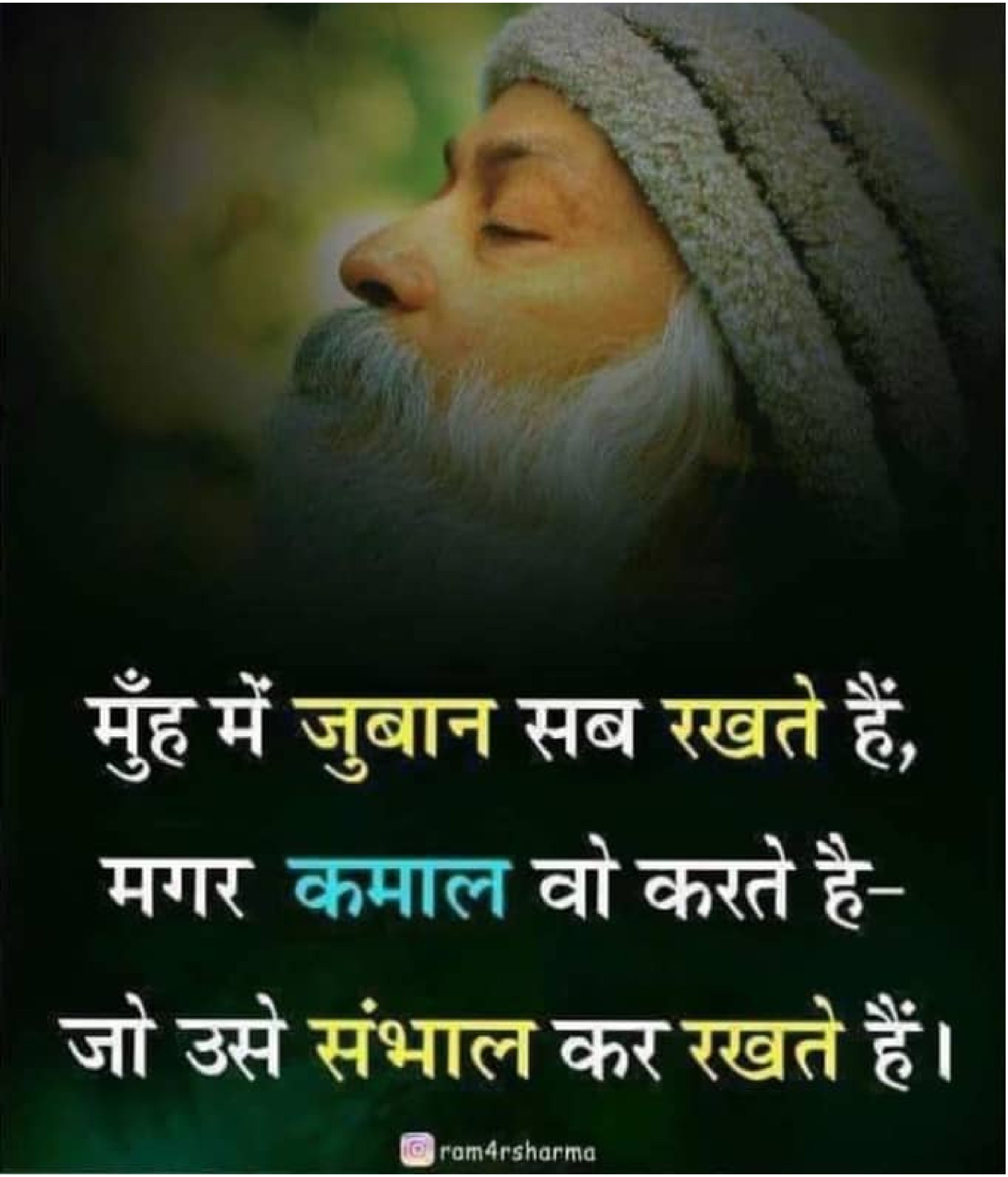

CamScanner

7:57 pm 0 KB/s 63%

🌸💐🌺🌷🌹🌸💐🌺🌷

दोस्तोवस्की को फांसी की सजा दी गयी थी—रूस के एक चिंतक, विचारक, लेखक को।

लेकिन ऐन वक्त पर माफ कर दिया गया। ठीक छह बजे जीवन नष्ट होने को था, और छह बजने के पांच मिनट पहले खबर आयी जार की कि वह क्षमा कर दिया गया है।

दोस्तोवस्की ने बाद में निरंतर कहता था—उस क्षण जब छह बजने के करीब आ रहे थे तब मेरे मन में न कोई वासना थी, न कोई इच्छा थी, न कोई रस था, कुछ भी न था। मैं इतना शांत हो गया था, और मैं इतना शून्य हो गया था कि मैंने उस क्षण में जाना कि साधु, संत जिस समाधि की बात करते हैं वह क्या है। लेकिन जैसे ही जार का आदेश पहुंचा और मुझे सुनाया गया कि मैं छोड़ दिया जा रहा हूं, मेरी फांसी की सजा माफ कर दी गई। अचानक, जैसे मैं किसी शिखर से नीचे गिर गया। बस वापस लौट आया। सब इच्छाएं; सब क्षुद्रतम इच्छाएं, जिनका कोई मूल्य नहीं था क्षणभर पहले, वे सब वापस लौट आयी। पैर में जूता काट रहा था, उसका फिर पता चलने लगा। नया जूता लेना है, उसकी योजना चल रही थी—सब वापस। दोस्तोवस्की कहता था—उस शिखर को मैं दुबारा नहीं छू पाया। जो उस दिन आसन्न मृत्यु के निकट अचानक घटित हुआ था।

हुआ क्या था? अब मृत्यु इतनी सुनिश्चित हो तो चेतना सब संबंध छोड़ देती है। इसलिए समस्त साधकों ने मृत्यु के सुनिश्चय के अनुभव पर बहुत जोर दिया है। बुद्ध तो भिक्षुओं को मरघट में भेज देते थे कि तुम तीन महीने लोगों को मरते, जलते, मिटते, राख होते देखो। ताकि तुम्हें अपनी मृत्यु बहुत सुनिश्चित हो जाए।

और जब तीन महीने बाद कोई साधक मृत्यु पर ध्यान करके लौटता था तो जो पहली घटना उसके मित्रों को दिखाई पड़ती थी, वह थी रस-परित्याग। रस चला गया। रस के जाने का सूत्र है—चेतना और मन का संबंध टूट जाए। वह संबंध कैसे टूटेगा और संबंध कैसे निर्मित हुआ है?

जब तक मैं सोचता हूं—मैं मन हूं, तब तक संबंध है। यह आइडेंटिटी, यह

CamScanner

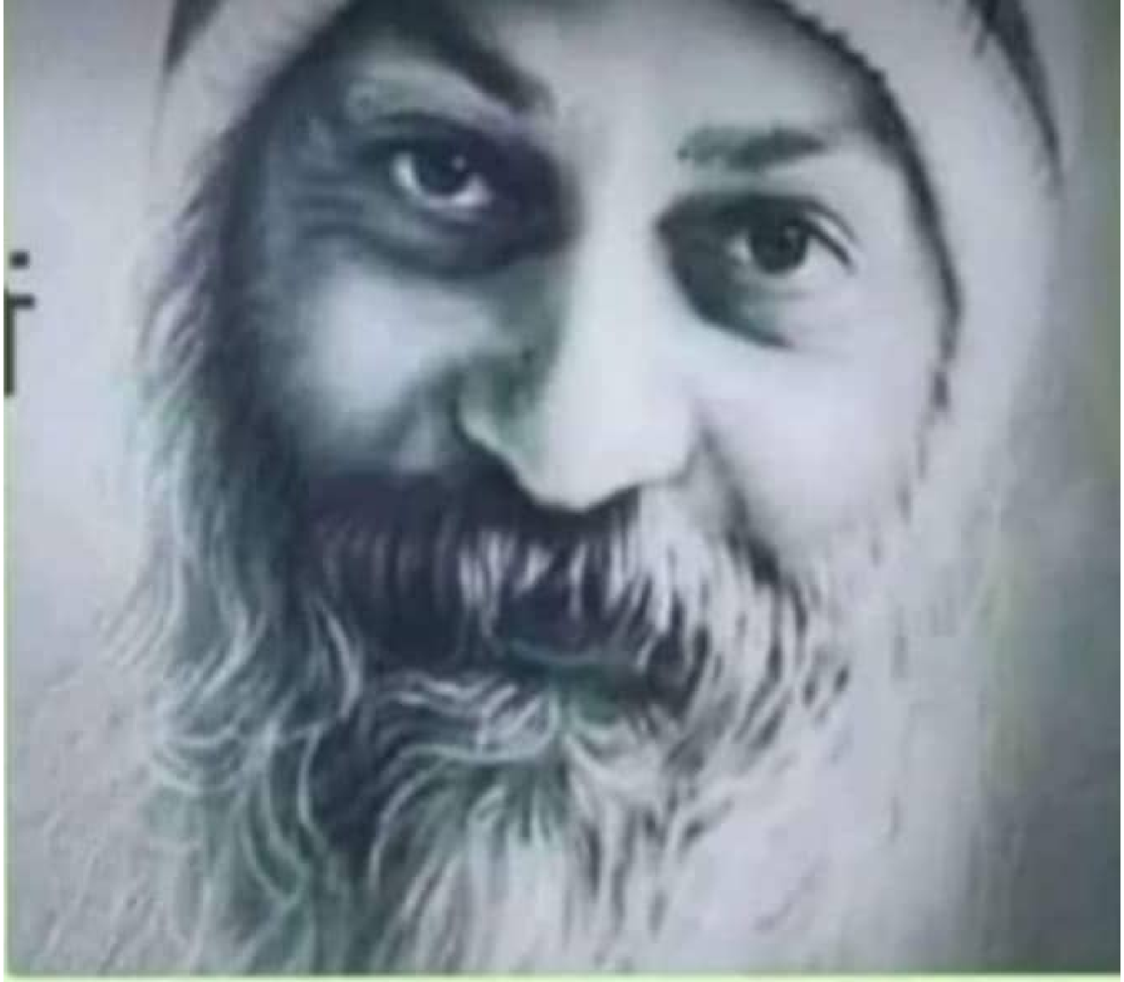

मैं तुम्हें जगाने आया था,सिखाने नहीं।
तुम सीखते ही गये और जागे नहीं।
मैंने बोला और बहुत बोला कि मेरा मौन
सुनो।
तुमने मेरे शब्दो का लोरी की तरह उपयोग
किया
अपनी बेहोशी और नींद को ही मजबूत किया
मुर्दों की इस बस्ती में,मेरा हृदय पुकार रहा
कोई तो होगा मेरा प्यारा जो अनहद का
संगीत सुने।
शब्दों के कचरे छोड़े ,जागे,और अपनी प्रभुता
के गीत लिखे।

CamScanner

ईर्ष्या के कारण तुम लगातार दुःख में हो, तुम दूसरो के प्रति द्वेष से भर जाते हो और ईर्ष्या के कारण तुम ढोंगी हो जाते हो। तुम वह होने का ढोंग करते हो जो तुम नही हो , जो तुम्हारे लिए प्राकृतिक नही हैं , दूसरो की नकल करने लगते हो , दूसरो से प्रतियोगिता में लग जाते हो।

CamScanner

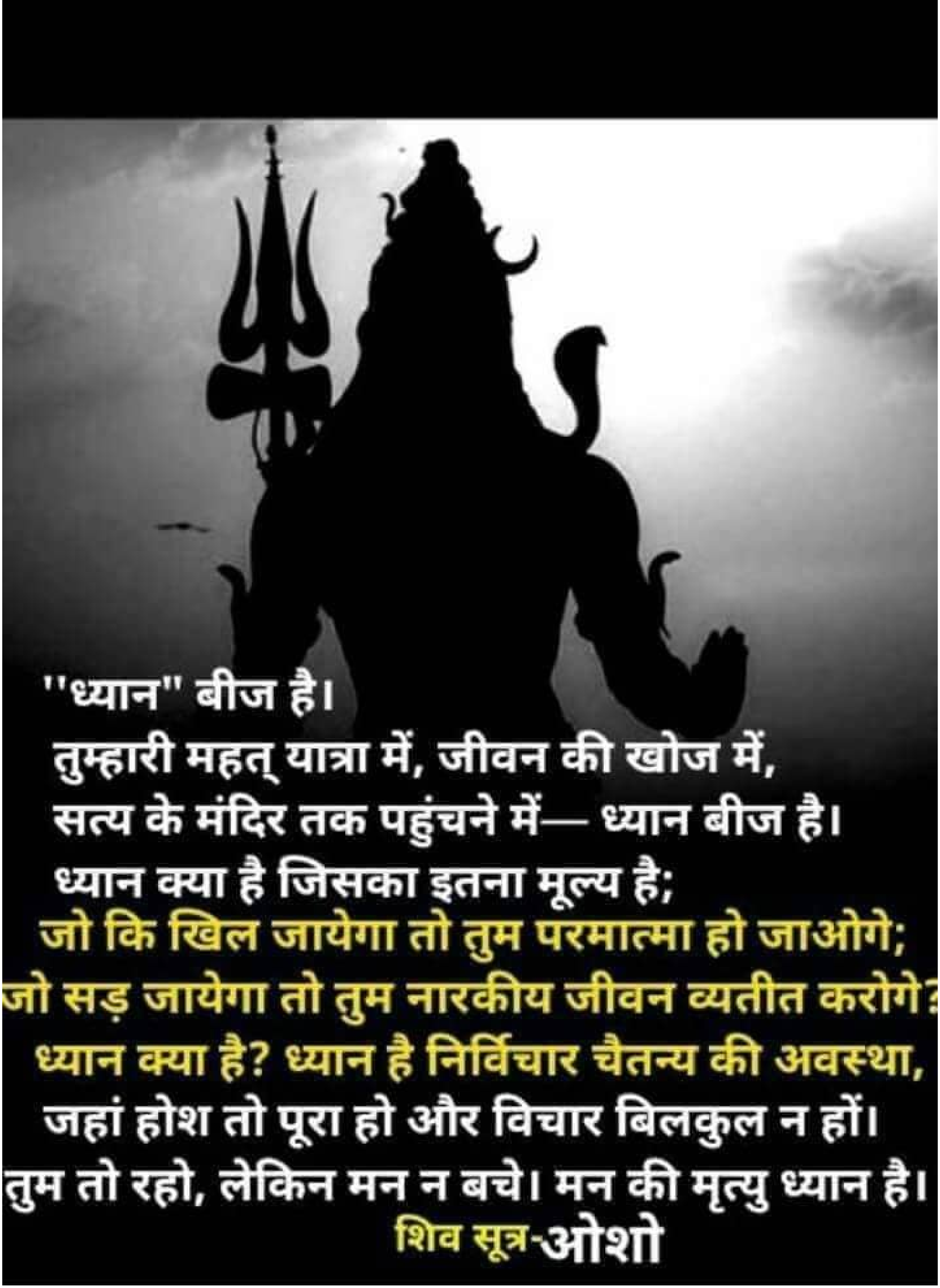

CS CamScanner

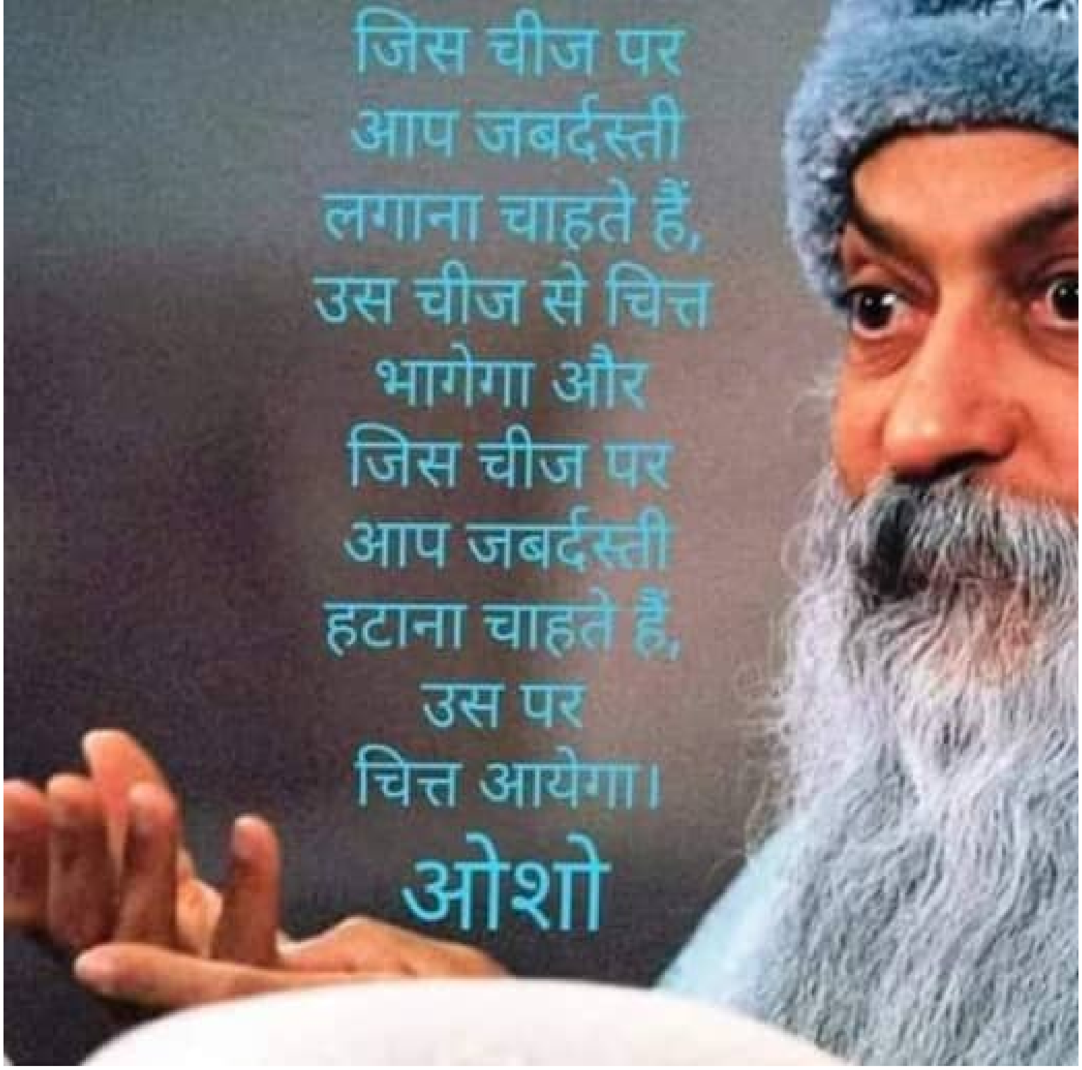
जिस चीज पर
आप जबर्दस्ती
लगाना चाहते हैं,
उस चीज से चित्त
भागेगा और
जिस चीज पर
आप जबर्दस्ती
हटाना चाहते हैं,
उस पर
चित्त आयेगा।
ओशो

CamScanner

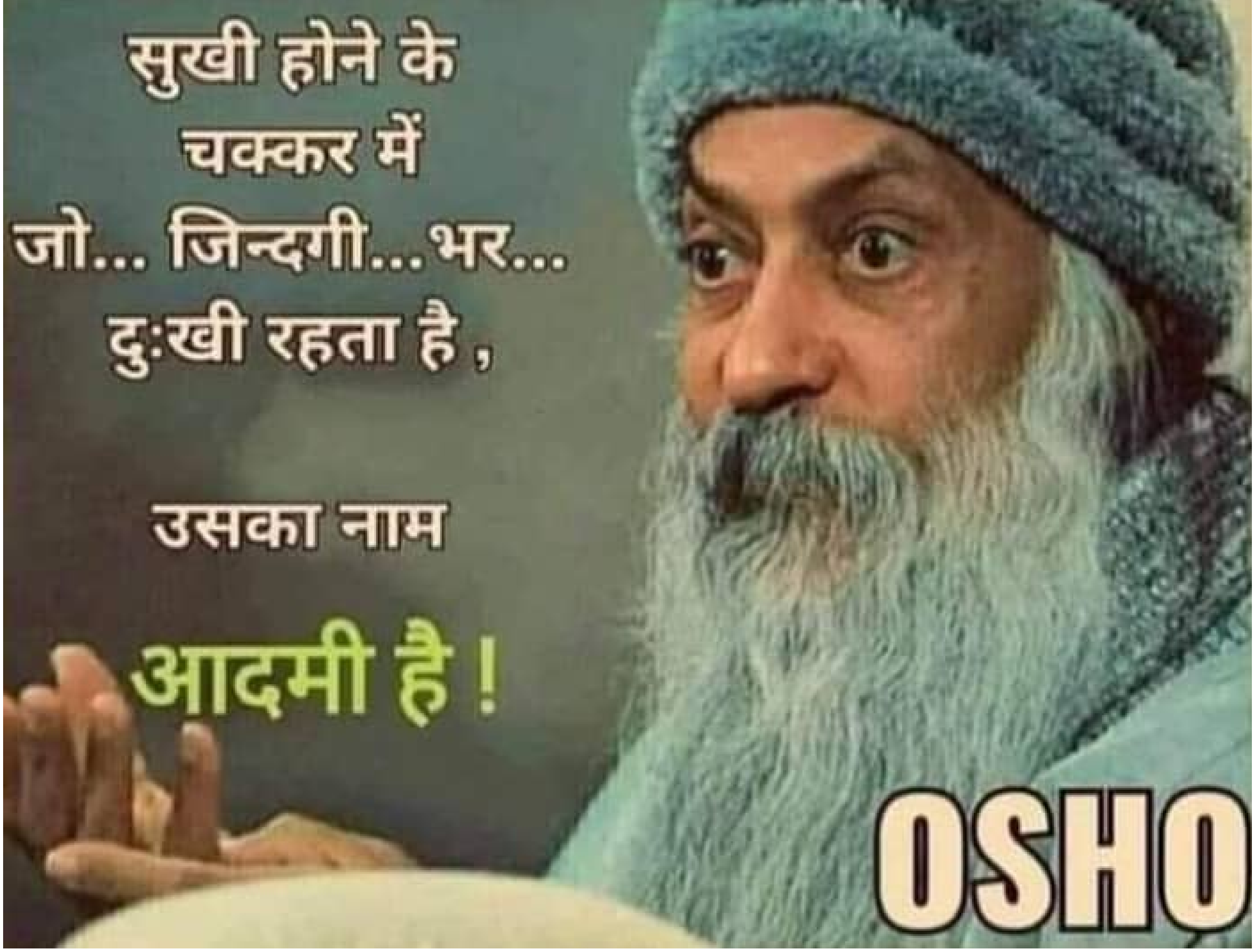

CamScanner

यदि तुमने मुझे प्रेम किया है..
तो मेरा शरीर मिट जाएगा तब भी
मैं तुम्हारे लिए नहीं मर सकता ।
मैं मृत्यु सिखाता हूं ।
B : merai

CamScanner

परमात्मा हमारे अंदर है सचमुच
में ये हमारा तन हरिमंदिर है

43 18 comments

CamScanner

7:18 pm 0 KB/s 66%

Create story

Osho Thoughts
Munabai Makvana · 2h ·

प्रश्न : भगवान! बाबा अलाउद्दीन अपने जीवन के अंतिम दिनों में कहा करते थे : सब माटी होए गेलो, अपि तो किछु नाई, नाद-सूर को पार न पायो। क्या उन्हें सदगुरु न मिला, इसलिए वे ऐसा कहते ... See more

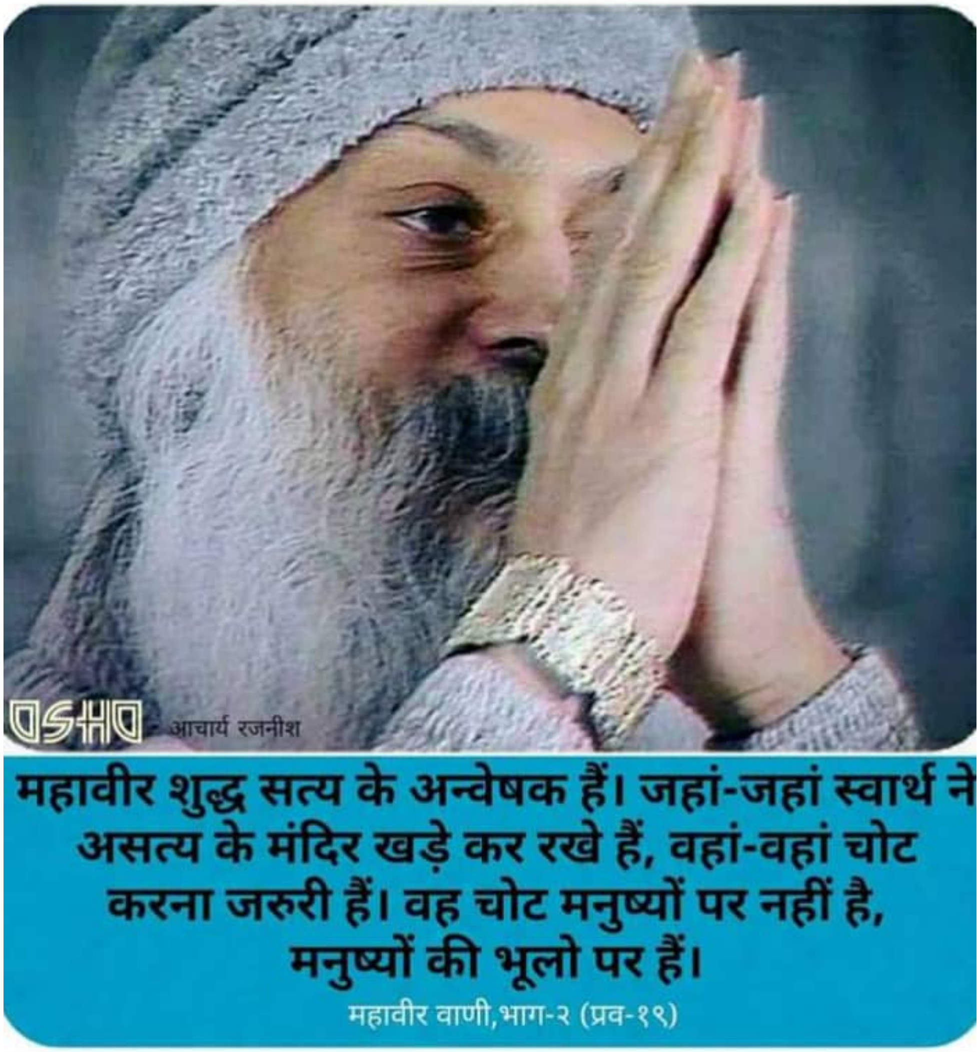

9 1 comment • 1 share

Like Comment Share

CamScanner

7:17 pm 3 KB/s 4G 67%

Instagram

oshosmiles .... more

Add a comment...

1 hour ago • See translation

oshotrack

Take it easy, and remember
“easy is right.”

OSHO

651 likes

oshotrack Don't make the search for truth a serious phenomenon. Take it easy, and remember "easy is right... more

View all 4 comments

2 hours ago

CS CamScanner

7:16 pm 569 KB/s VoLTE 4G 67%

Instagram

Titan Lagan Brown Dial Analog Watch for Women with Day & Date function

jinda_mind_osho

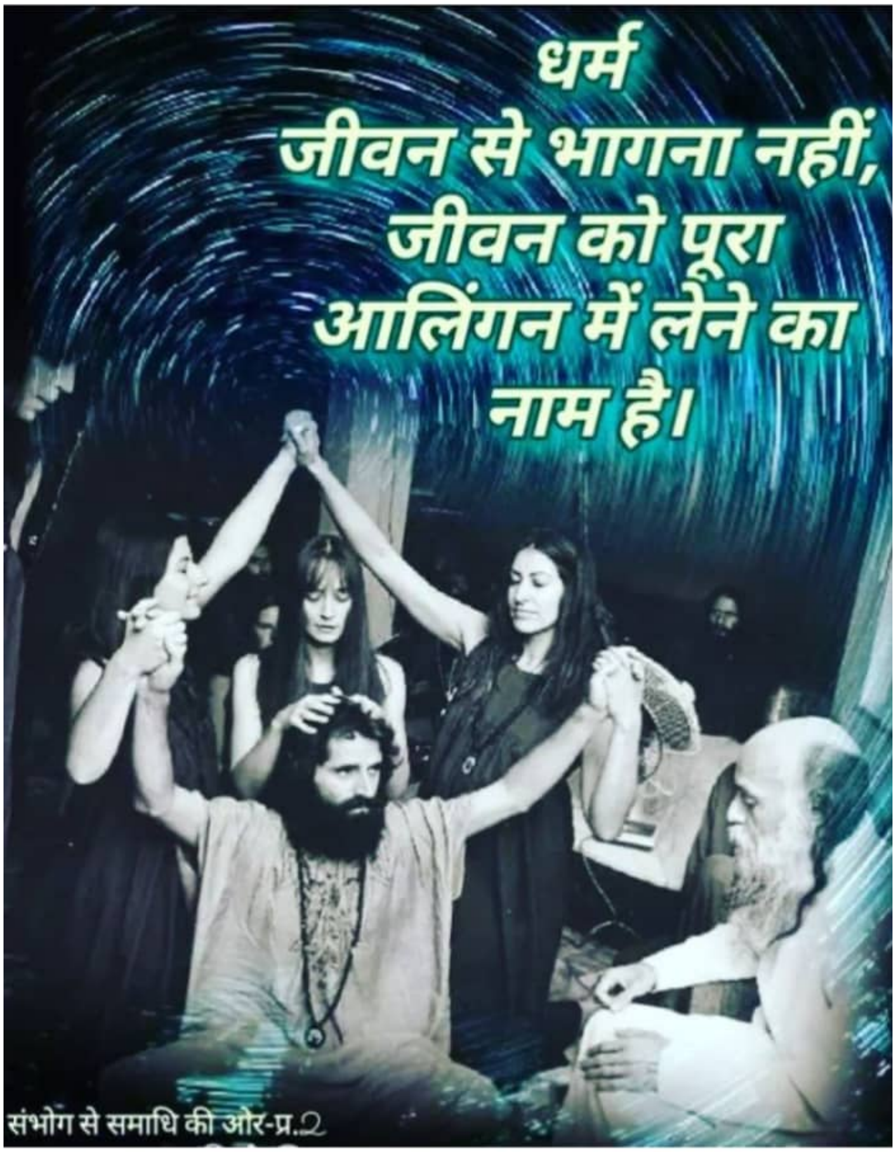

42 likes

View 1 comment

Add a comment...

CamScanner

7:16 pm 0 KB/s 67%

1,195 likes

jusdwayyouare #breakup #love #breakupquotes #sad #lovequotes #quotes #brokenheart #heartbroken... more

jinda_mind_osho
Paras Nath • Kiska Rasta Dekhe (Unwind Instrumental)

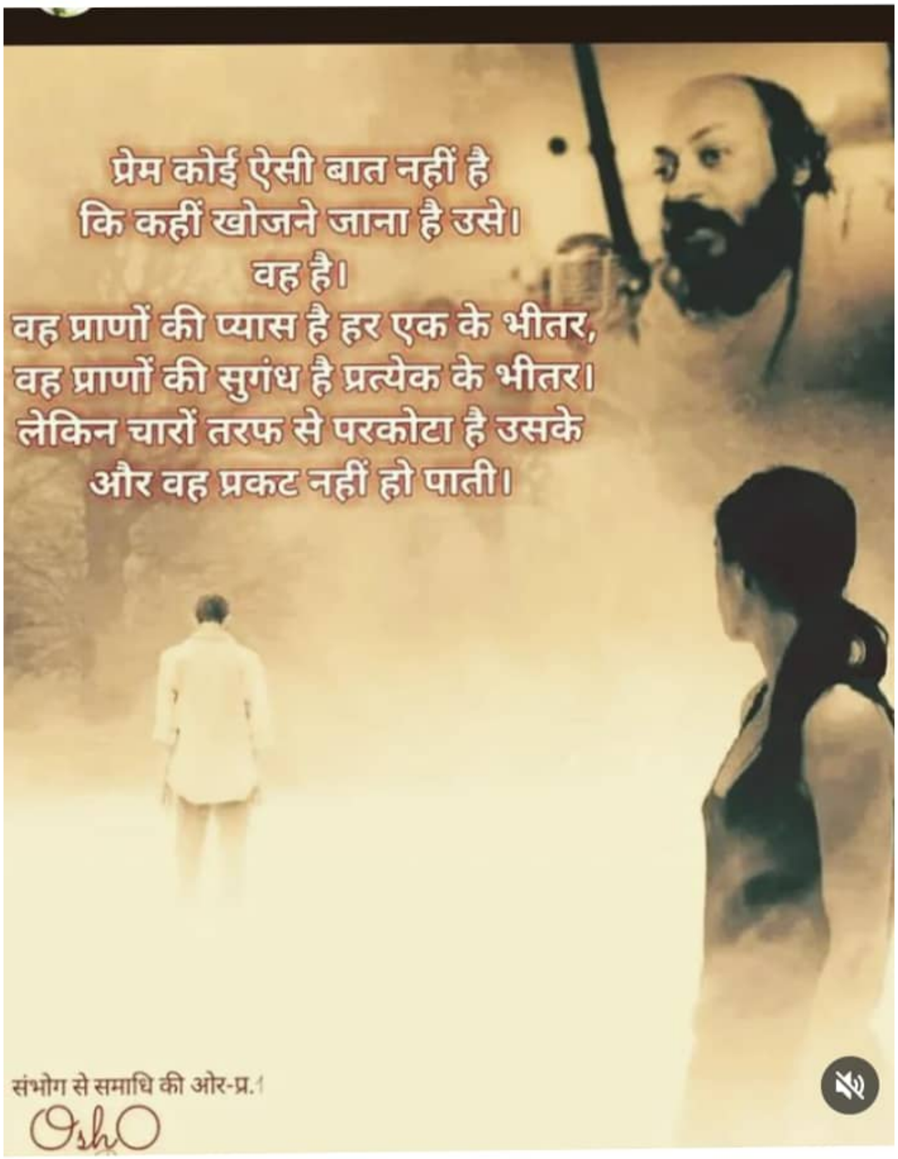

99 likes

Add a comment...

CamScanner

7:15 pm 139 KB/s 67%

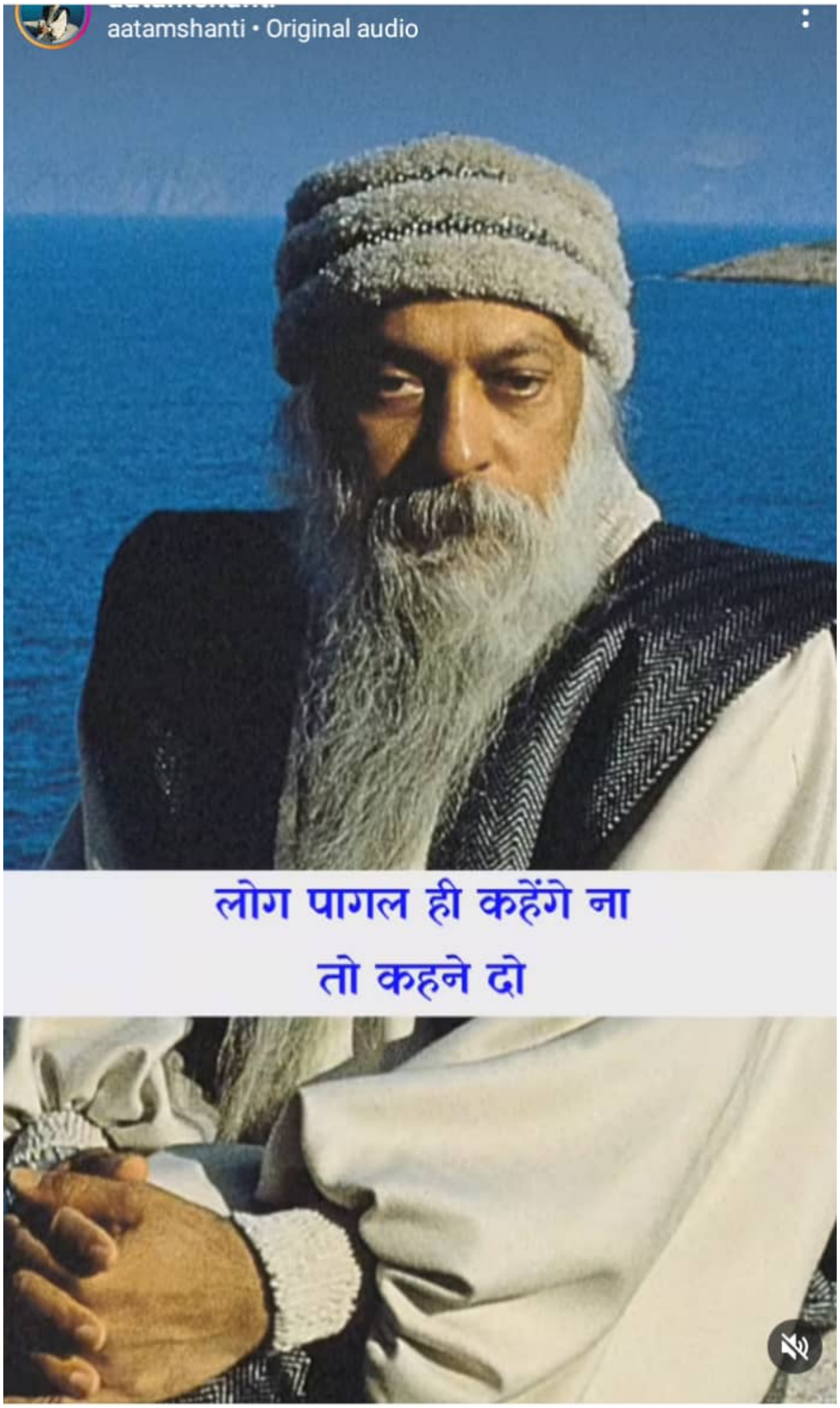

663 likes

aatamshanti भीड मुर्दों को पूजती है...

.... more

View all 4 comments

CamScanner

7:15 pm 0 KB/s VoLTE 4G 67%

1,34,553 views

sedagokselhealing In shamanic traditions, fire and water are often seen as essential elemental energies with dis... more

View all 3 comments

oshosmiles

OSHO SMILES

सत्य सिर्फ उनके लिए है,
जो अज्ञात की यात्रा पर
साहसपूर्वक निकलने को
तैयार हैं; जो राजी हैं
तूफानों में अपनी नाव
छोड़ देने को।

3 likes

oshosmiles .... more

Add a comment...

3 days ago • **See translation**

ek_aksharr

CamScanner

7:13 pm 0 KB/s 67%

Instagram

m_shashiprakash dance_with_myra_sk oshonanda

oshosmiles

OSHO SMILES

तुम्हारी धारणा के अनुकूल कोई कुछ कह दे,
बस तुम्हें बात जंच जाती है।

और अब जरूरत आ गई है कि तुम्हारी
सारी धारणाएं तोड़नी पड़ेंगी, तो ही इस
देश का कोई भाग्य रूपांतरित हो सकता
है।

2 likes

oshosmiles .... more

Add a comment...

11 hours ago • See translation

phoenixrisingpoet
Sponsored

CamScanner

7:10 pm 1 KB/s 67%

करना मत भूलना 👉👉 @osho_hindi_quotes... more

View all 7 comments

Add a comment...

23 hours ago • **See translation**

oshosmiles

OSHO SMILES

मैं तुमसे यह कहना चाहता हूं कि
संसार दुख है, क्योंकि हम मूढ़ हैं,
अन्यथा संसार दुख नहीं है। जहां
इतने मूढ़ इकट्ठे हों, वहां दुख होना
स्वाभाविक है।

3 likes

oshosmiles .... more

Add a comment...

2 days ago • **See translation**

Suggested reels ▶ **Watch all**

CamScanner

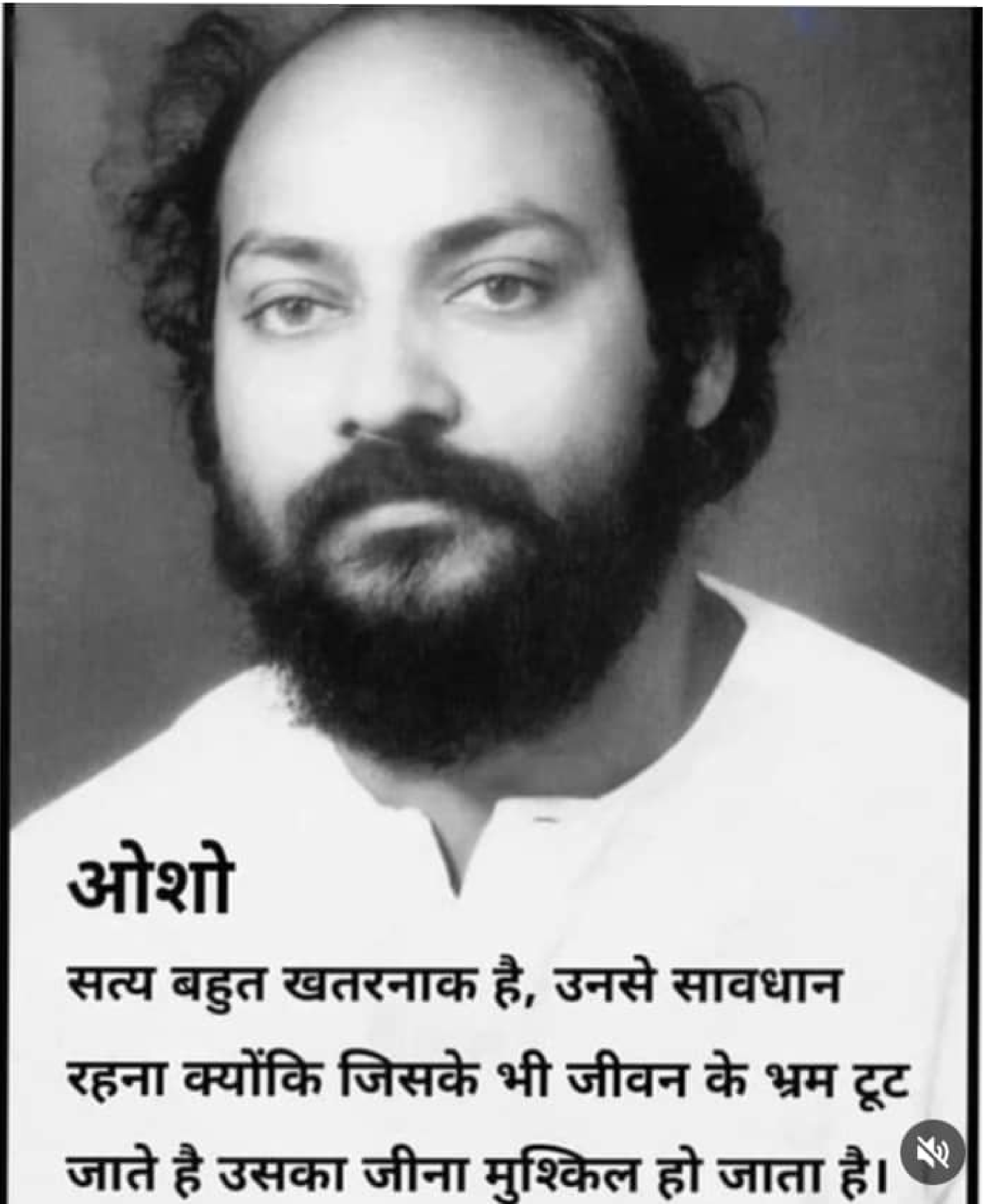
ओशो
सत्य बहुत खतरनाक है, उनसे सावधान
रहना क्योंकि जिसके भी जीवन के भ्रम टूट
जाते है उसका जीना मुश्किल हो जाता है।

CamScanner

लोग एक-दूसरे के प्रेम में पड़ जाते हैं तो कहते हैं कि एक जन्म से ही काम नहीं चलेगा, जन्मों-जन्मों तक साथ रहेंगे। कल का जिनको भरोसा नहीं है, वे जन्मों-जन्मों की बात कर रहे हैं।
ये ही सज्जन कल तलाक देने के लिए अदालत में खड़े मिल जाएंगे। मगर अभी एक दिन पहले कह रहे थे कि जन्मों-जन्मों तक।

CamScanner

आजकल के युग की दास्तां..

बड़े घर - परिवार नही

ज्यादा पढ़ाई - तमीज़ नही

महंगी दवाई - सेहत नही

चंद्रमा छूना है - पड़ोसी का पता नही

आमदनी ज्यादा - सुकून नही

बौद्धिक स्तर ऊंचा - भावना नही

ज्ञान ज्यादा - अक्ल नही

प्रेम सम्बंध बहुत - सच्चा प्यार नही

फेसबुक के दोस्त बहुत - सच्चा दोस्त नही

शराब ज्यादा - पानी नही

इंसान बहुत - इंसानियत नही

घडिया बहुत - समय नही

CS CamScanner

6:48 pm 0 KB/s
68%
facebook

स्याही के धब्बे को इस ढंग से बना दें कि वह तस्वीर का हिस्सा और श्रृंगार बन जाए। न कुशल हुए तो पोंछने की कोशिश करेंगे, इसमें थोड़ी-बहुत तस्वीर खराब भी हो सकती है।

अगर आपने रवींद्रनाथ की कभी हाथ से लिखी, हस्तलिखित प्रतिलिपियां, उनकी हस्तलिखित पांडुलिपियां देखी हैं तो आप बहुत चकित होंगे। रवीनद्रनाथ से कहीं अगर कोई भूल अक्षर में हो जाए तो वे उसको ऐसे नहीं काटते थे, वे उसे काटकर वहां एक चित्र बना देते और कागज को सजा देते। तो उनकी पांडुलिपियां सजी पड़ी हैं। जहां उन्होंने काटा है, वहां सजा दिया है। अच्छा है, पांडुलिपि में करना बुरा नहीं है, आंख को सोहता है। लेकिन आदमी जिदगी में भी यही करता है। वह पश्चात्ताप धब्बों को चित्र बनाने की कोशिश या धब्बों को पोंछ डालने की कोशिश है। पश्चात्ताप प्रायश्चित नहीं है, लेकिन हम सब तो पश्चात्ताप को ही प्रायश्चित समझते हैं।

पश्चात्ताप बहुत साधारण-सी घटना है, जो मन का नियम है। मन के नियम को थोड़ा समझ लें कि पश्चात्ताप पैदा सबको होता है। यह मन का सामान्य नियम है। प्रायश्चित साधना है। अगर महावीर प्रायश्चित का अर्थ पश्चात्ताप करते हों तो यह तो कोई बात ही न हुई।

यह तो सभी को होता है। ऐसा आदमी खोजना कठिन है जो पछताता न हो। अगर आप खोजकर ले आएं, तो वह आदमी ऐसे ही हो सकता है जैसा महावीर हो। बाकी आदमी मिलना मुश्किल है जो पछताता न हो। पश्चात्ताप तो जीवन का सहज क्रम है। हर आदमी पश्चात्ताप करता है। तो इसको साधना में गिनाने की क्या जरूरत है? पश्चात्ताप साधना नहीं, मन का नियम है। मन का यह नियम है कि मन एक अति से दूसरी अति पर डोल जाता है। तो मन के इस नियम में थोड़े गहरे प्रवेश कर जाएं तो पश्चात्ताप समझ में आ जाए। फिर प्रायश्चित की तरफ ध्यान उठ सकता है।

आचार्य श्री रजनीश
महावीर वाणी-(प्रवचन-14)

CamScanner

6:44 pm 0 KB/s VoLTE 4G 69%

Muhabai Makvana

।। प्रायश्चित मतलब स्वयं की चेतना का सम्पूर्ण रूपांतरण ।।

महावीर के पास कोई साधक आता था तो वे उसे पिछले जन्म के स्मरण में ले जाते थे, सिर्फ इसीलिए ताकि वह देख ले कि वह कितनी बार यही सब दोहरा चुका है और यह कहना बंद कर दे कि मेरे कर्म की भूल है और यह जान ले कि भूल मेरी है। पश्चात्ताप, कर्म गलत हुआ, इससे संबंधित है। प्रायश्चित, मैं गलत हूं, इस बोध से संबंधित है। और ये दोनों बातें बहुत भिन्न हैं, इसमें जमीन आसमान का फर्क है। पश्चात्ताप करनेवाला वही का वही बना रहता है और प्रायश्चित करनेवाले को अपनी जीवन चेतना रूपांतरित कर देनी होती है। सवाल यह नहीं है कि मैंने क्रोध किया तो मैं पछता लूं। सवाल यह है कि मुझसे क्रोध हो सका तो मैं दूसरा आदमी हो जाऊं, ऐसा आदमी जिससे क्रोध न हो सके--प्रायश्चित का यह अर्थ है। ट्रांसफमशन आफ द लेवल आफ द बीइंग। यह सवाल नहीं है कि मैंने कल क्रोध किया था, आज मैं नहीं करूंगा। सवाल यह है--कल मुझसे क्रोध हुआ था, मैं कल के ही जीवन तल पर आज भी हूं। वही चेतना मेरी आज भी है। पश्चात्ताप करनेवाला कल के लिए क्षमा मांग लेगा। हर वर्ष हम मांगते हैं मिच्छामि दुक्कड़म, हर वर्ष हम मांगते हैं, क्षमा कर दे । पिछले वर्ष भी मांगा था , उसके पहले भी क्षमा मांगी थी। कब वह दिन आएगा जब कि क्षमा मांगने का अवसर न रह जाए। कि मांगते ही रहेंगे। और जानते हैं भली-भांति कि जहां से क्षमा मांगी जा रही है वहां कोई रूपांतरण नहीं है। वह आदमी वही है जो पिछले वर्ष था।

एक मित्र पिछले पूरे वर्ष से मेरे संबंध में अनूठी कहानियां प्रचारित करते हैं। अब यह पर्युषण पूरे हुए तो उनका कल पत्र आया कि मुझे क्षमा कर दें। ऐसा नहीं कि मैंने जाने अनजाने अपराध किए हों, उनके लिए क्षमा कर दें--पत्र में लिखा है, मैंने अपराध किए हैं, उनके लिए क्षमा कर दें, और मैं हृदय की गहराई से क्षमा मांगता हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि पत्र लिखने के बाद उन्होंने वही काम पुनः जारी कर दिया होगा। क्योंकि पत्र लिखने से वह रूपांतरण नहीं हो जानेवाला है। क्षमा मांग लेने से आप नहीं बदल जाएंगे, आप फिर वही होंगे। सच तो यह है--जो क्षमा मांग लेने से आप नहीं बदल जाएंगे, आप फिर वही होंगे। सच तो यह है--जो क्षमा मांग रहा है वही आदमी है जिसने अपराध किया है। प्रायश्चित

CamScanner

यह सारा जगत परमात्मा का है, सब कुछ
उसका है। और कलियुग की रीत देखो।
हर आदमी कह रहा है, मेरा—मेरा।
न जमीन तुम्हारी है; जमीन तुम ले न आये
थे, और न ले जाओगे। न पति तुम्हारा है,
न पत्नी तुम्हारी, न बेटे तुम्हारे।
हमारा क्या! न धन हमारा है, न पद हमारा है।
कुछ भी हमारा नहीं है। हम एक दिन खाली हाथ
आये हैं, और एक दिन खाली हाथ चले जायेंगे।
न हम कुछ लाते हैं, न हम कुछ ले जाते हैं,
मगर बीच में हम कितना शोरगुल मचाते हैं।
उसी शोरगुल का नाम संसार है।
फिर पीछे पछताओगे। जो जहा है वहीं पड़ा
रह जायेगा। जो जैसा है वैसा ही पड़ा रह
जायेगा। अंतिम समय बहुत पछताओगे।
इसके पहले जागो, समझो : मेरा कुछ भी
नहीं है, सब उसका है। मैं भी उसका हूं।
यह बोध उठने लगे तो तुम्हारे जीवन में
धर्म की पहली किरण उतरी।

OshO

CamScanner

Hindi Songs's Lyrics

Lyrics

Jaane Woh Kaise Log The / जाने वो कैसे लोग थे, जिनके प्यार को प्यार मिला

जाने वो कैसे लोग थे जिनके प्यार को प्यार मिला
हमने तो जब कलियाँ माँगी, काँटों का हार मिला

खुशियों की मंज़िल ढूँढी तो ग़म की गर्द मिली
चाहत के नग्में चाहे तो आहें सर्द मिली
दिल के बोझ को दूना कर गया जो ग़मख़्वार मिला

बिछड़ गया हर साथी दे कर पल दो पल का साथ
किसको फ़ुरसत है जो थामे दीवानों का हाथ
हमको अपना साया तक अक्सर बेज़ार मिला

इस को ही जीना कहते हैं तो यूँ ही जी लेंगे
उफ़ ना करेंगे, लब सी लेंगे, आँसू पी लेंगे
ग़म से अब घबराना कैसा, ग़म सौ बार मिला

#GuruDutt #MalaSinha #Rehman

geetmanjusha.com

CamScanner

मन और माया कभी नहीं मरते, केवल शरीर कि मृत्यु होती है।

माया मरी न मन मरा, मर मर गया शरीर।
आशा तृष्णा ना मरे कह गए दास कबीर।।

साधना के द्वारा जब सूरत (आत्मा) और मन की गांठ खुल जाती है तो मन अपने श्रोत बृह्म में विलीन हो जाता है और आत्मा अलख लोक(सचखंड) में जाकर परमात्मा में विलीन हो जाती है। उसे मोक्ष की प्राप्ति होना कहते हैं?!

CS CamScanner

एक संगीतकार आसानी से ध्यानी बन सकता है, वह बहुत करीब है। संगीत से बढ़कर ध्यान के करीब कुछ भी नहीं है - शब्दहीन, अर्थहीन, लेकिन अत्यधिक महत्वपूर्ण। यह कुछ नहीं कहता लेकिन बहुत कुछ दिखाता है, कुछ भी व्यक्त नहीं करता लेकिन आपके लिए एक महान वैभव लाता है। संगीतकार से रहस्यवादी की ओर बढ़ें। जिस दिन आपके संगीत में केवल मौन होता है, आप घर आ जाते हैं।

OSHO Monk's Commun

CamScanner

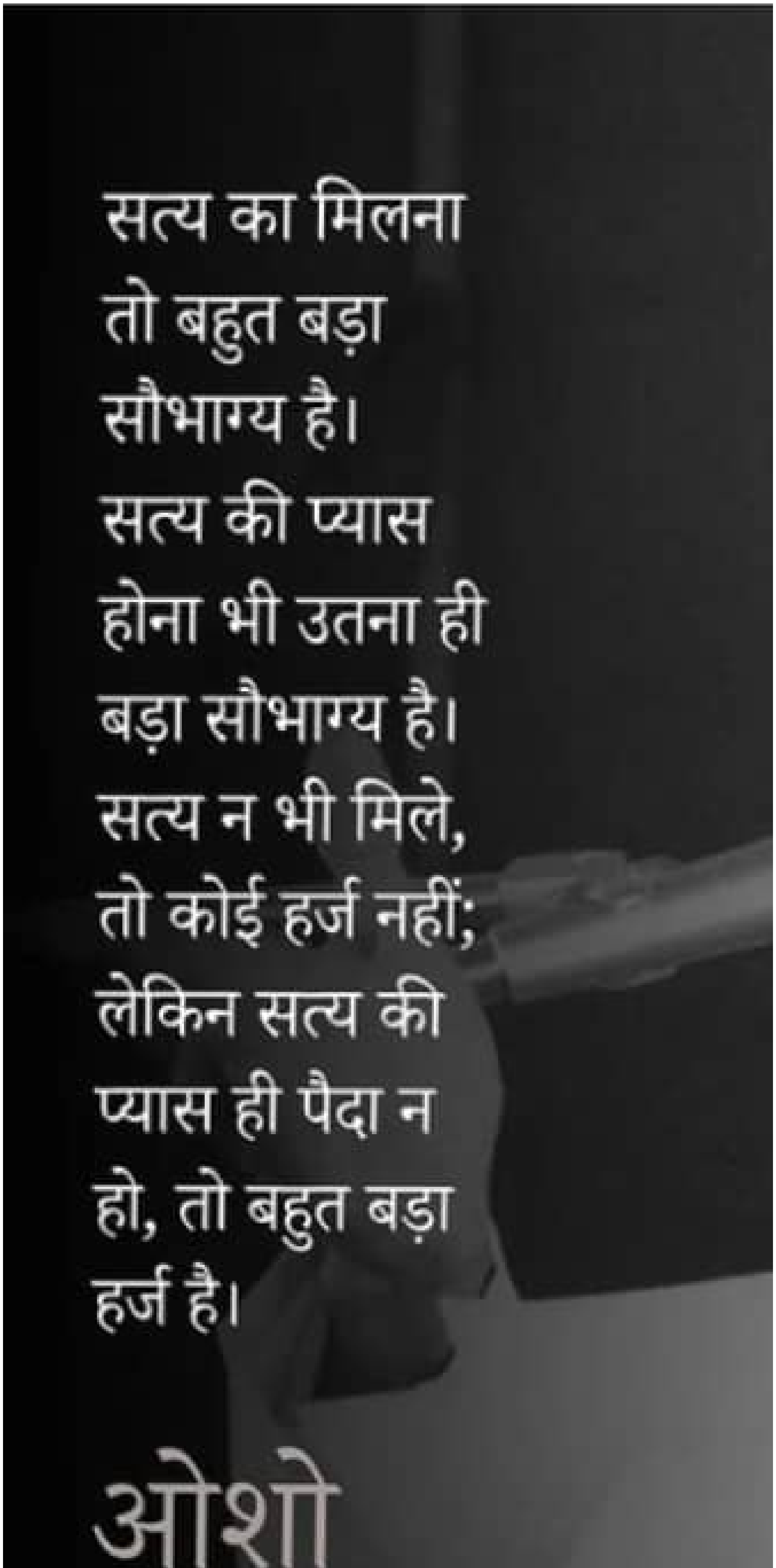
सत्य का मिलना
तो बहुत बड़ा
सौभाग्य है।
सत्य की प्यास
होना भी उतना ही
बड़ा सौभाग्य है।
सत्य न भी मिले,
तो कोई हर्ज नहीं;
लेकिन सत्य की
प्यास ही पैदा न
हो, तो बहुत बड़ा
हर्ज है।
ओशो
OSHOMESSAGE • ओशोसंदेश

CamScanner

Budhhaquotes_Hindi
यदि आप उन चीजों की कद्र नहीं करते जो आपके पास हैं तो आपको खुशी कभी भी नहीं मिलेगी ।
Insta

CamScanner

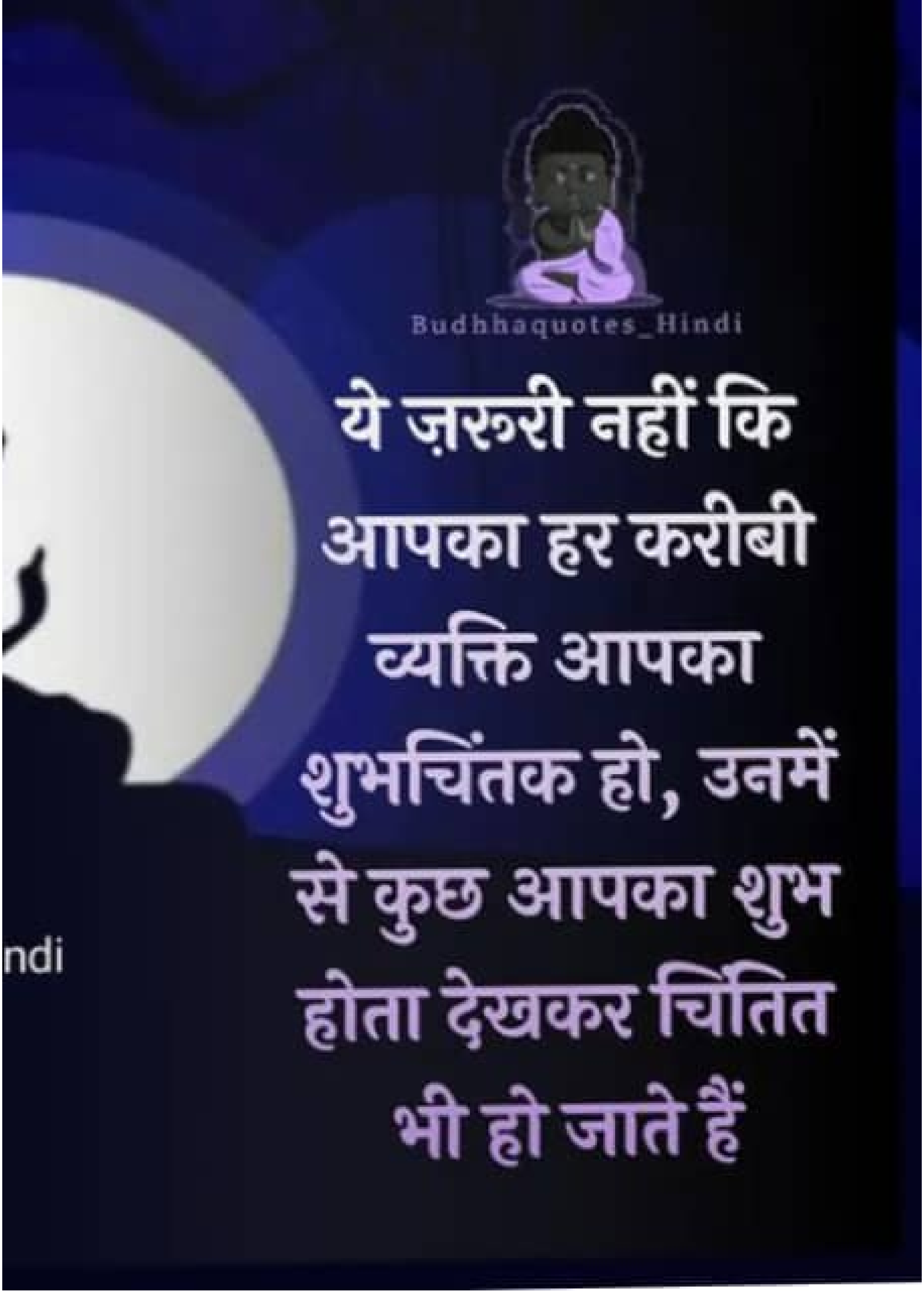
Budhhaquotes_Hindi
ये ज़रूरी नहीं कि
आपका हर करीबी
व्यक्ति आपका
शुभचिंतक हो, उनमें
से कुछ आपका शुभ
होता देखकर चिंतित
भी हो जाते हैं
ndi

CamScanner

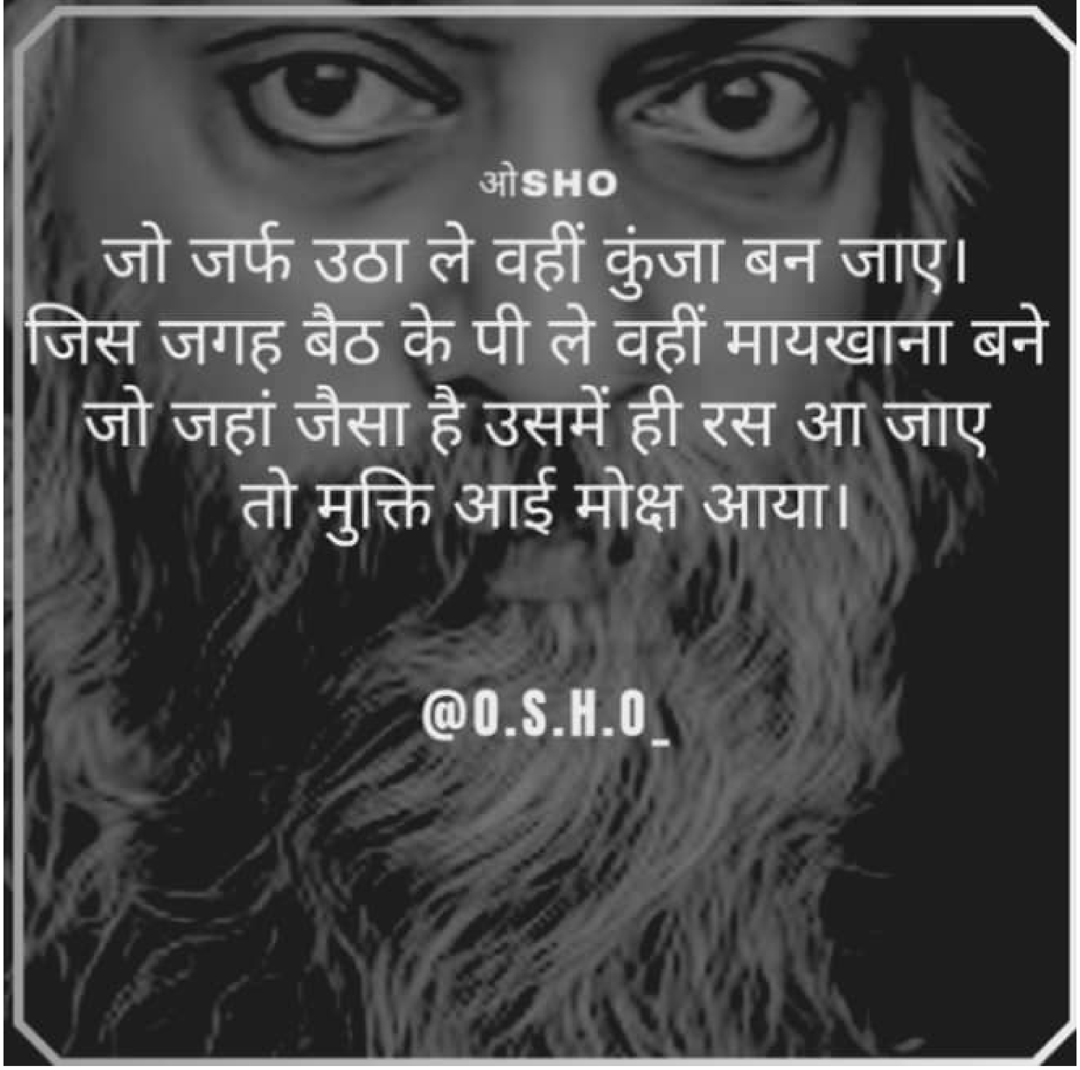
ओSHO
जो जर्फ उठा ले वहीं कुंजा बन जाए।
जिस जगह बैठ के पी ले वहीं मायखाना बने
जो जहां जैसा है उसमें ही रस आ जाए
तो मुक्ति आई मोक्ष आया।
@O.S.H.O_

CamScanner

sanatankathasangrah
Om Voices • Shuklambaradharam Vishnum – Vishnu Sh...
7 चक्र समस्त शक्तियों के केंद्र
सहस्त्रार चक्र
इस चक्र पर केवल गुरु का ध्यान किया जाता है।
आज्ञा चक्र
इस चक्र पर मंत्र का आघात करने से शरीर के सारे चक्र नियंत्रित होते हैं।
विशुद्ध चक्र
यह चक्र आकाश तत्त्व और आठों सिद्धियों से सम्बन्ध रखता है,संगीत के सातों सुर इसी चक्र का खेल हैं ।
अनाहत चक्र
व्यक्ति की भावनाएँ और साधना की आंतरिक अनुभूतियाँ इस चक्र से सम्बन्ध रखती हैं।
मणिपुर चक्र
मन या शरीर पर पड़ने वाला प्रभाव सीधा मणिपुर चक्र पर पड़ता है।
@sanatankathasangrah
स्वाधिष्ठान चक्र
इसी चक्र से व्यक्ति के अन्दर काम भाव और उन्नत भाव जाग्रत होता है।
मूलाधार चक्र
आध्यात्मिक रूप से धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष का नियंत्रण।

CamScanner

budhhaquotes_Hindi
एकांत तुम्हारा
स्वभाव है, तुम
अकेले पैदा हुए
तुम अकेले ही
मरोगे!!
uotes_hindi

CamScanner

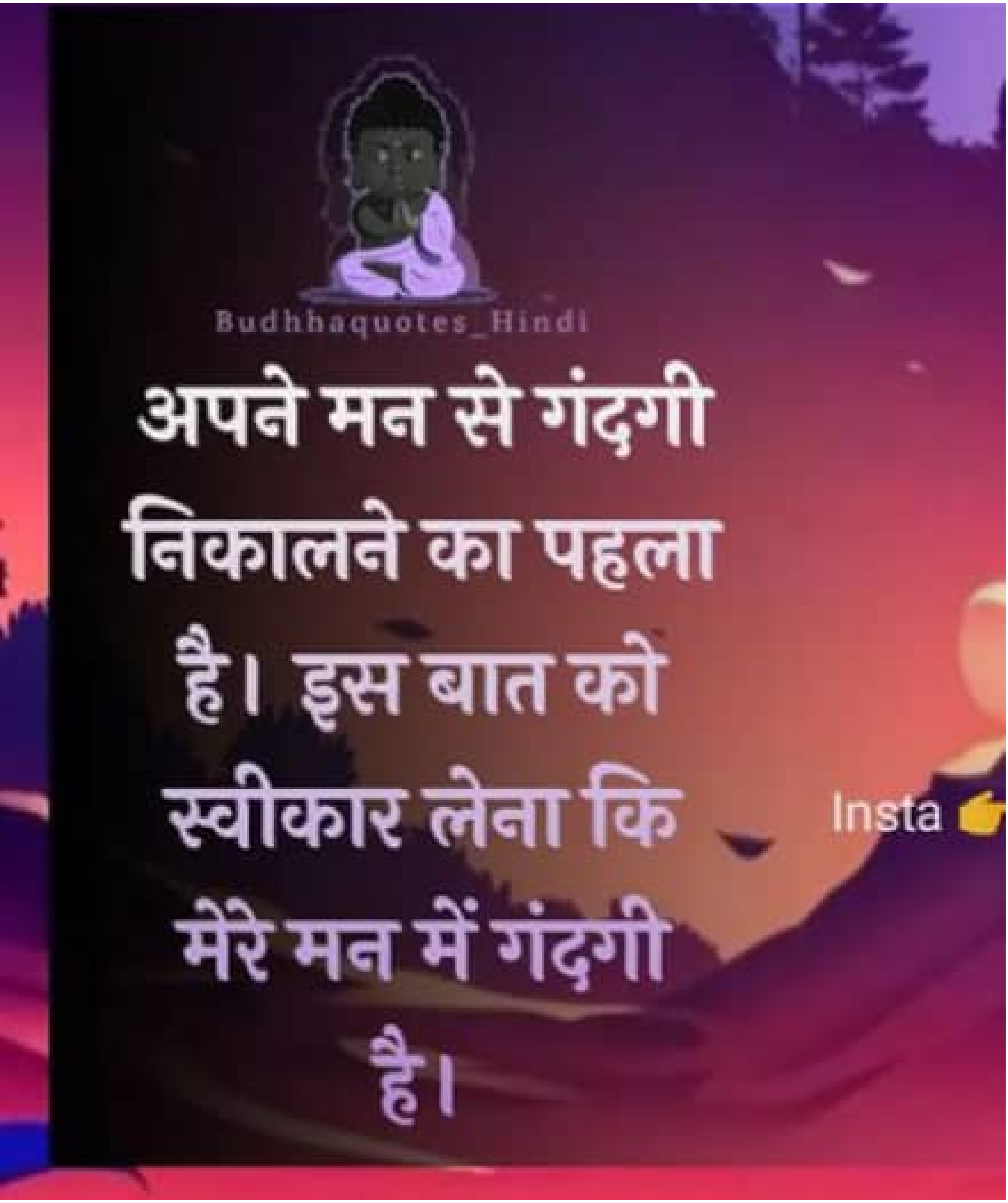
Budhhaquotes_Hindi
अपने मन से गंदगी निकालने का पहला है। इस बात को स्वीकार लेना कि मेरे मन में गंदगी है।
Insta

CamScanner

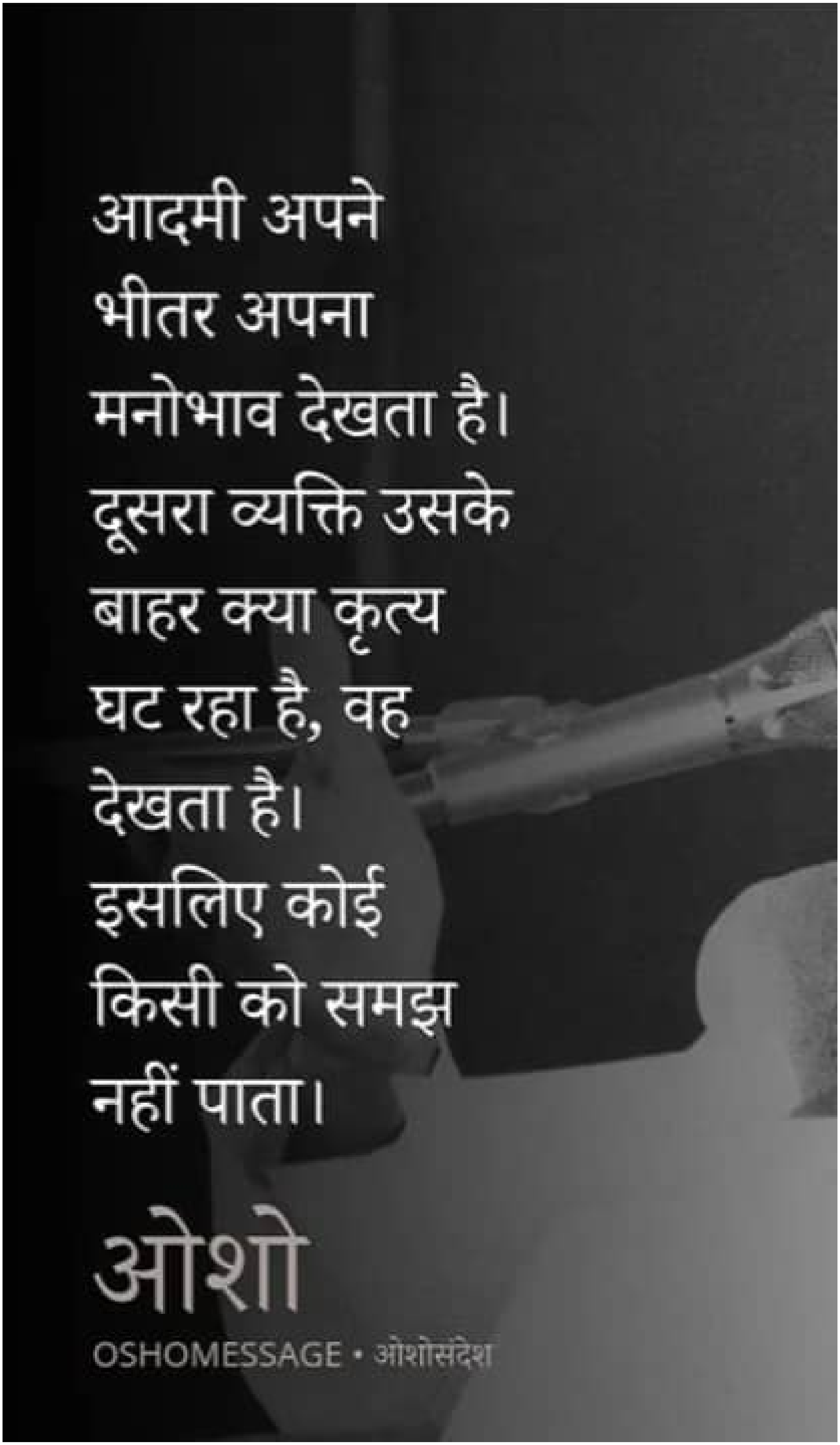
आदमी अपने
भीतर अपना
मनोभाव देखता है।
दूसरा व्यक्ति उसके
बाहर क्या कृत्य
घट रहा है, वह
देखता है।
इसलिए कोई
किसी को समझ
नहीं पाता।
ओशो
OSHOMESSAGE • ओशोसंदेश

CamScanner

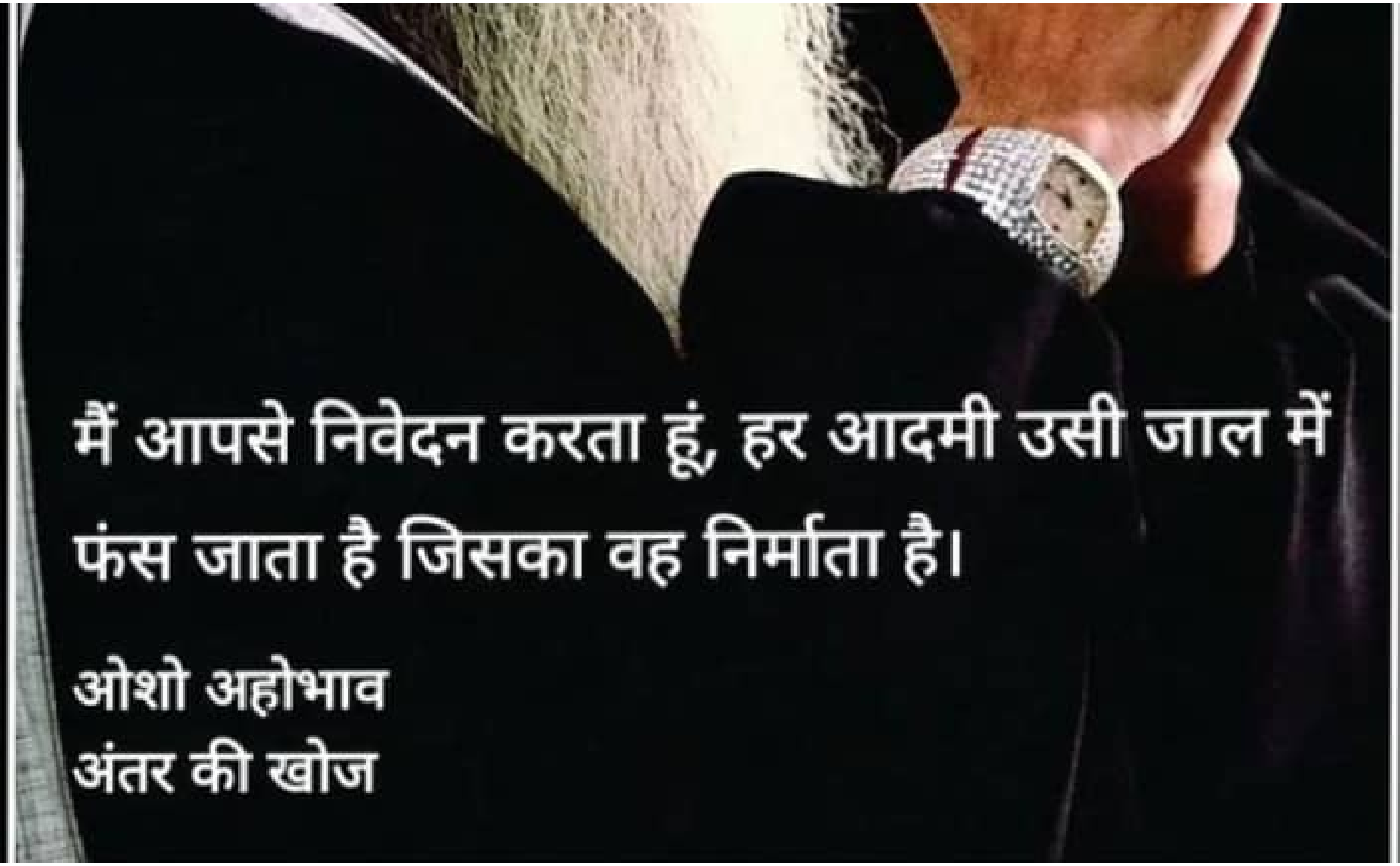

CamScanner

CamScanner

आसमां पे ठिकाने, किसी के नहीं होते,
जो ज़मीं के नहीं होते, वो कहीं के नहीं होते !!

CamScanner

मुस्कुराते फूलों में ना दिखा
तो पत्थर की मूरत में क्या दिखेगा,,,
इबादत की नज़र से देखेगा,,
तो ज़र्रे ज़र्रे में खुदा दिखेगा..!

CamScanner

मातृहीन, पितृहीन, गुणहीन, धनहीन, गृहहीन विपिन बिहारी है।
शिशगंग, भालचंद्र, नेत्रलाल, कण्ठव्याल, भस्मयुक्त, नग्नतन जटा जूटधारी है।
#भूतेश्वर #नागेश्वर डमरू त्रिशुलधर, अशुचि का घर बैल उसकी सवारी है।
सत्यम शिवम् सुंदरम कहे #वेद जिसे, पूरे #विश्व का वही मेरा #शिव अधिकारी है।
#सावन

CamScanner

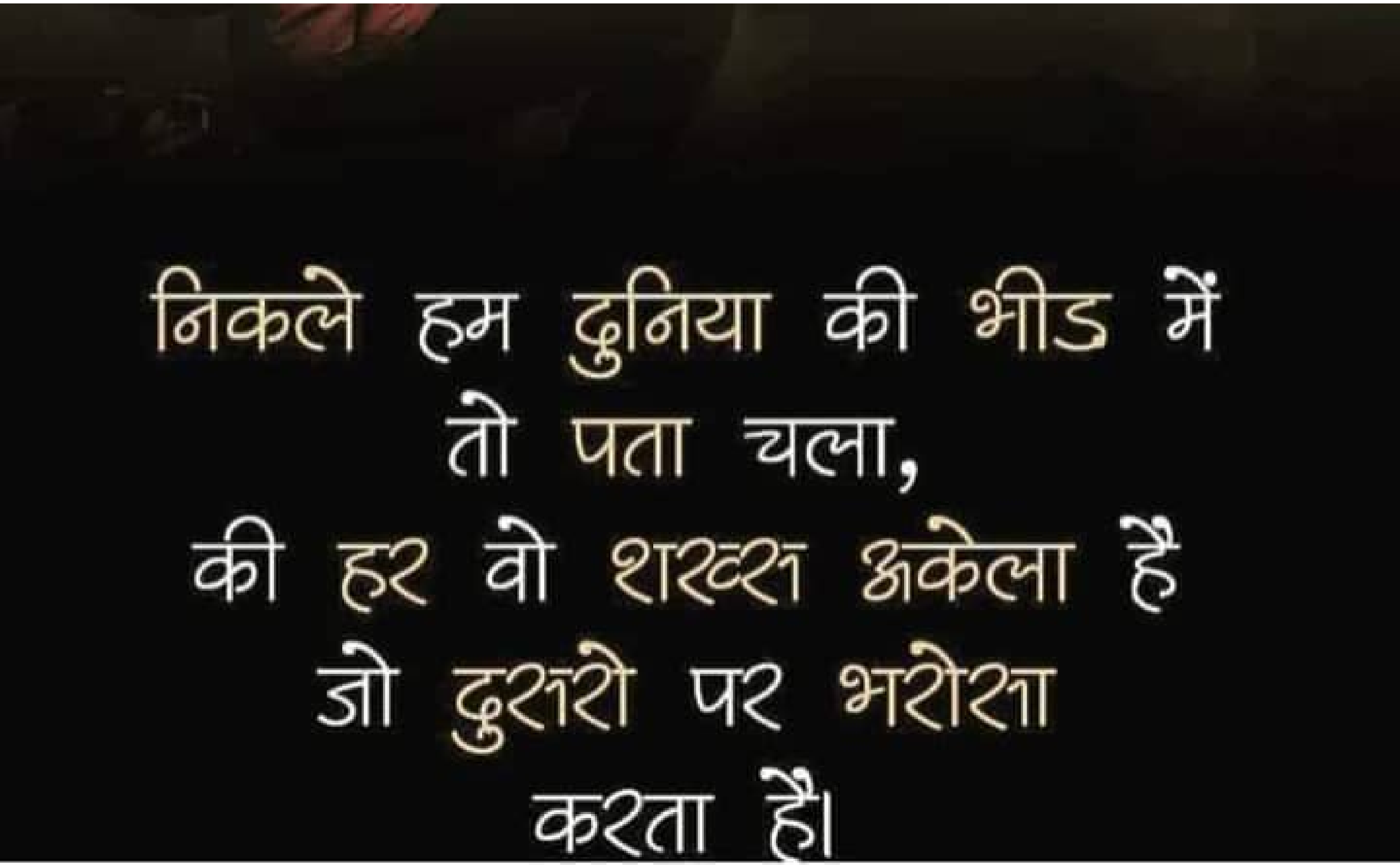

CamScanner

किसी गांव में बहुत दिनों के बाद एक साधु आये।

इस गांव में भगवान के तीन मंदिर थे।

प्रत्येक वर्ष इनका जीर्णोद्धार किया जाता था। इसके अलावा कोई भगवान को नई घंटियां देता, तो कोई नए वस्त्र और आभूषण देता। कोई कलश को सोने से मढ़ देता था। कोई क्या तो कोई क्या करता! गाँव में जाने के लिए कोई सड़क नहीं थी, भले ही गाँव के लोग पीने के पानी के लिए संघर्ष कर रहे हों,भले ही खेत वीरान पड़े हों, उन्होंने इसके लिए कुछ नहीं किया पर वे गाँव के मंदिरों में दान देने से नहीं हिचकिचाते थे। मंदिर भव्य थे.

इसी वर्ष गाँव में चौथे मंदिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ।

मंदिर के लिए पत्थर तोड़ रहे वड्डुर से साधु ने कहा, अरे इस गांव के लोग पागल हैं या खुले विचारों वाले है? उनके किसी भी मंदिर में कोई भगवान नहीं है.और जहां वह नहीं आ सकते. और फिर यह चौथा मंदिर बना रहे है ?

वड्डुर ने कहा, सर, मुझे माफ कर दीजिए. लोग बुद्धिमान हैं. आप पागल या खुले विचारों वाले हो सकते हैं। आपको यह विचार कैसे आया कि मंदिर भगवान के लिए बनाया जा रहा है ? मेरे साथ आइए...

तपस्वी वड्डुर के साथ चल दिया। वड्डुर ने एक पत्थर उठाया और साधु के सामने रखकर कहा, मंदिर इनके लिए बनाया जा रहा है।

मंदिर के निर्माण के बाद आधारशिला के रूप में स्थापित करने के लिए तैयार पत्थर पर बड़े बड़े अक्षरों में मंदिर निर्माण के लिए सबसे बड़ा दान देने वाले दानदाता का नाम और अन्य छोटे दानदाताओं के नाम जो छोटे अक्षरों में लिखे थे।

ओशो
H.B.K. 870

🐼🐶🐺

CamScanner

एक है नास्तिक, वह अकड़ा हुआ है अहंकार से।
एक है आस्तिक, वह कंप रहा है भय से।
वे दोनों ही धार्मिक नहीं हैं।
धार्मिक है तीसरा व्यक्ति, जो नाच रहा है
अहोभाव से। जो आनंदमग्न है कि
जो मिला है वह अपरंपार है।

CamScanner

संत और
रहस्यदर्शी
हमेशा शांत
और निर्जन
स्थानों पर ही
क्यों रहते है?
संत और रहस्यदर्शी हमेशा शांत और निर्जन स्थानों पर ही क... mo...

CamScanner

क्योंकि वे अभी तक संत एवं रहस्यदर्शी नहीं हैं। वे अभी भी खोज रहे हैं, श्रम कर रहे हैं। वे साधक हैं, सिद्ध नहीं। वे अभी पहुंचे नहीं हैं। शोरगुल उन्हें व्यवधान देगा, भीड़ उन्हें व्यवधान देगी। भीड़ उन्हें वापस अपने तल पर खींचेगी। वे अभी भी कमजोर हैं, उन्हें सुरक्षा चाहिए। उनमें अभी आत्म-विश्वास नहीं है। उन्हें लोभ पकड़ सकता है। उन्हें एकात निर्जन में अपनी रक्षा करनी पड़ती है, जहां वे विकसित और मजबूत हो सकें। जब वे मजबूत हो

🌱🌸संत और रहस्यदर्शी हमेशा शांत और निर्जन स्थानों पर ही क... mo...

CamScanner

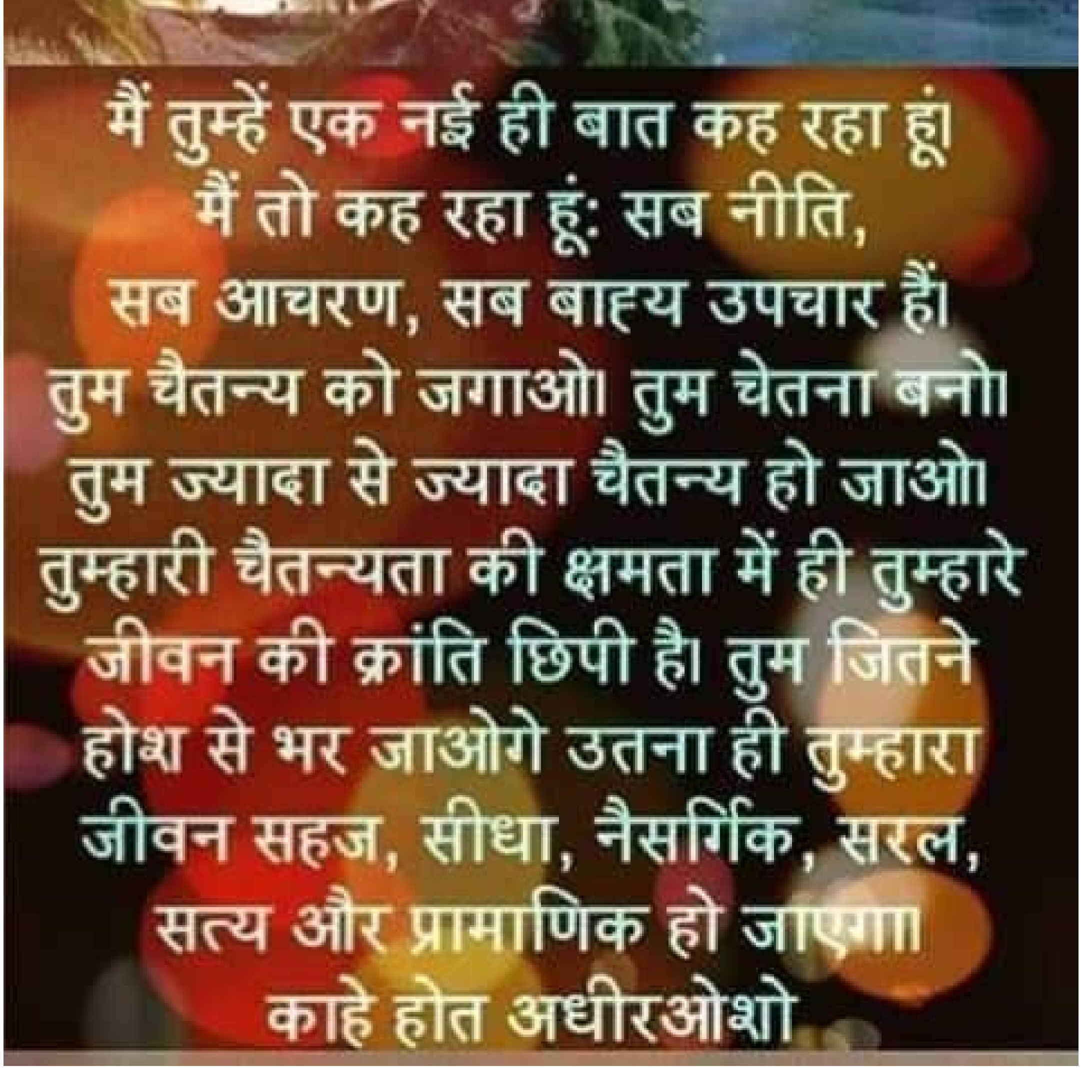
मैं तुम्हें एक नई ही बात कह रहा हूं।
मैं तो कह रहा हूं: सब नीति,
सब आचरण, सब बाह्य उपचार हैं।
तुम चैतन्य को जगाओ। तुम चेतना बनो।
तुम ज्यादा से ज्यादा चैतन्य हो जाओ।
तुम्हारी चैतन्यता की क्षमता में ही तुम्हारे
जीवन की क्रांति छिपी है। तुम जितने
होश से भर जाओगे उतना ही तुम्हारा
जीवन सहज, सीधा, नैसर्गिक, सरल,
सत्य और प्रामाणिक हो जाएगा।
काहे होत अधीरओशो

CamScanner

CamScanner

तो मैं आंख बंद करके, कि क्या करूं--पिता नास्तिक थे इसलिए कोई प्रार्थना कभी सिखाई नहीं थी। परमात्मा का कोई नाम नहीं सिखाया, तो क्या करूं? तो मैं अपना ही नाम दोहराता : "टेनिसन-टेनिसन-टेनिसन"। उससे थोड़ी हिम्मत बढ़ती, थोड़ी गर्मी आती और "टेनिसन, टेनिसन, टेनिसन दोहराते-दोहराते मैं सो जाता।

धीरे-धीरे यह अभ्यास हो गया। और जब भी चिंता पकड़ती, कोई तनाव होता तो टेनिसन कहता है, बस तीन बार भीतर आंख बंद करके मुझे इतना ही कहना पड़ता : "टेनिसन, टेनिसन, टेनिसन; और सब शांत हो जाता। मंत्र हो गया अपना ही नाम।

और टेनिसन ने लिखा है, कि मैं इससे बड़े गहरे ध्यान में उतरने लगा। यह तो मुझे बहुत बाद में पता चला कि इसे लोग ध्यान कहते हैं।

अपना ही नाम का स्मरण भी तुम्हें परमात्मा तक पहुंचा सकता है। यह सवाल नहीं है, क्योंकि सभी नाम उसके हैं। तुम्हारा नाम भी उसी का है। टेनिसन भी उसी का नाम है। अल्लाह उसी का नाम है, राम उसी का नाम है। कोई दशरथ के बेटे ने ठेका लिया है? तुम भी किसी दशरथ के बेटे हो। तुम्हारा नाम भी उसी का नाम है।

तुम अपना ही नाम भी अगर दोहराओ, तो भी परिणाम वही होगा। क्योंकि असली सवाल बोधपूर्वक भीतर स्मरण को जगाने का है। अगर "टेनिसन, टेनिसन, टेनिसन" या "राम, राम, राम" कुछ भी तुम दोहराते हो, उसके दोहराने के क्षण में ही भीतर एक शांत अवस्था बनने लगती है। और उसको दोहराते-दोहराते तुम्हें यह दिखाई पड़ने लगता है कि दोहराने वाला अलग है और जो दोहराया जा रहा है, वह अलग है। तुम धीरे-धीरे साक्षी-भाव को उत्पन्न होने लगते हो।

स्मरण साक्षी-भाव की सीढ़ियां हैं। जितना स्मरण गहरा होता है, उतने तुम साक्षी-भाव से भर जाते हो। इसे तुम करके देखो। अगर न हो परमात्मा पर भरोसा, कोई चिंता नहीं, तुम अपना ही स्मरण करो।

ओशो; कहे कबीर दीवाना, प्रवचन-16

CamScanner

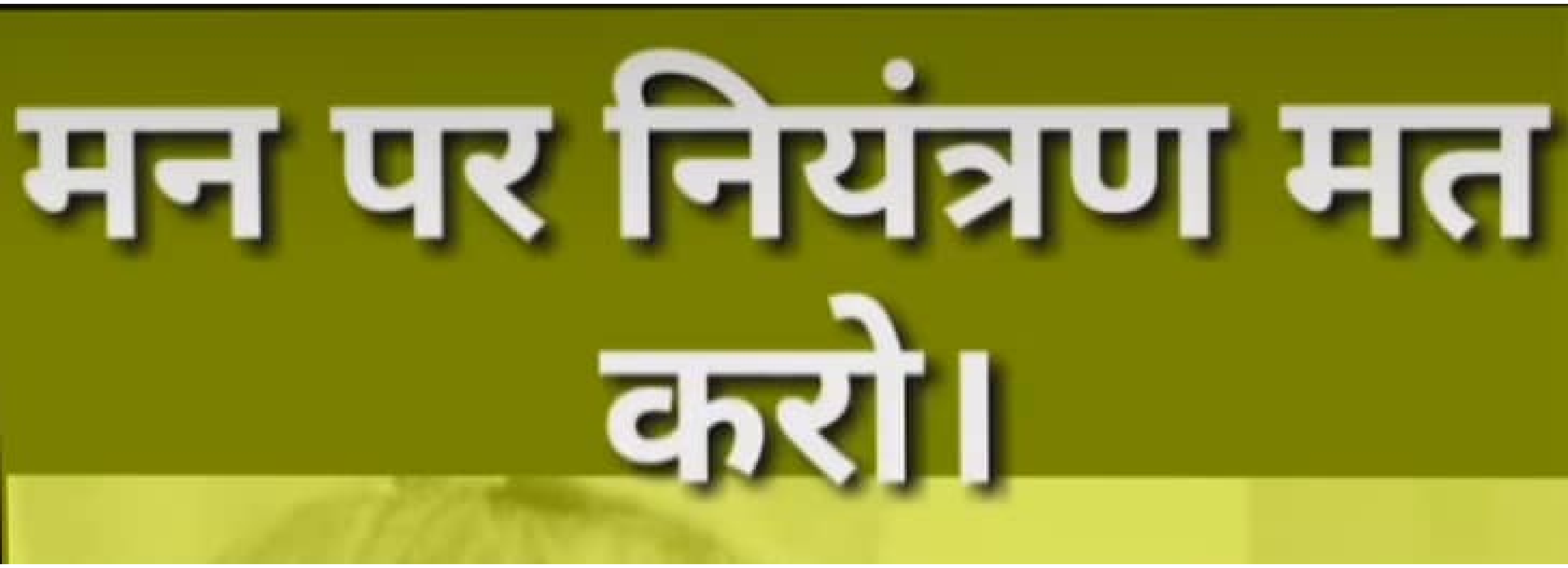

CamScanner

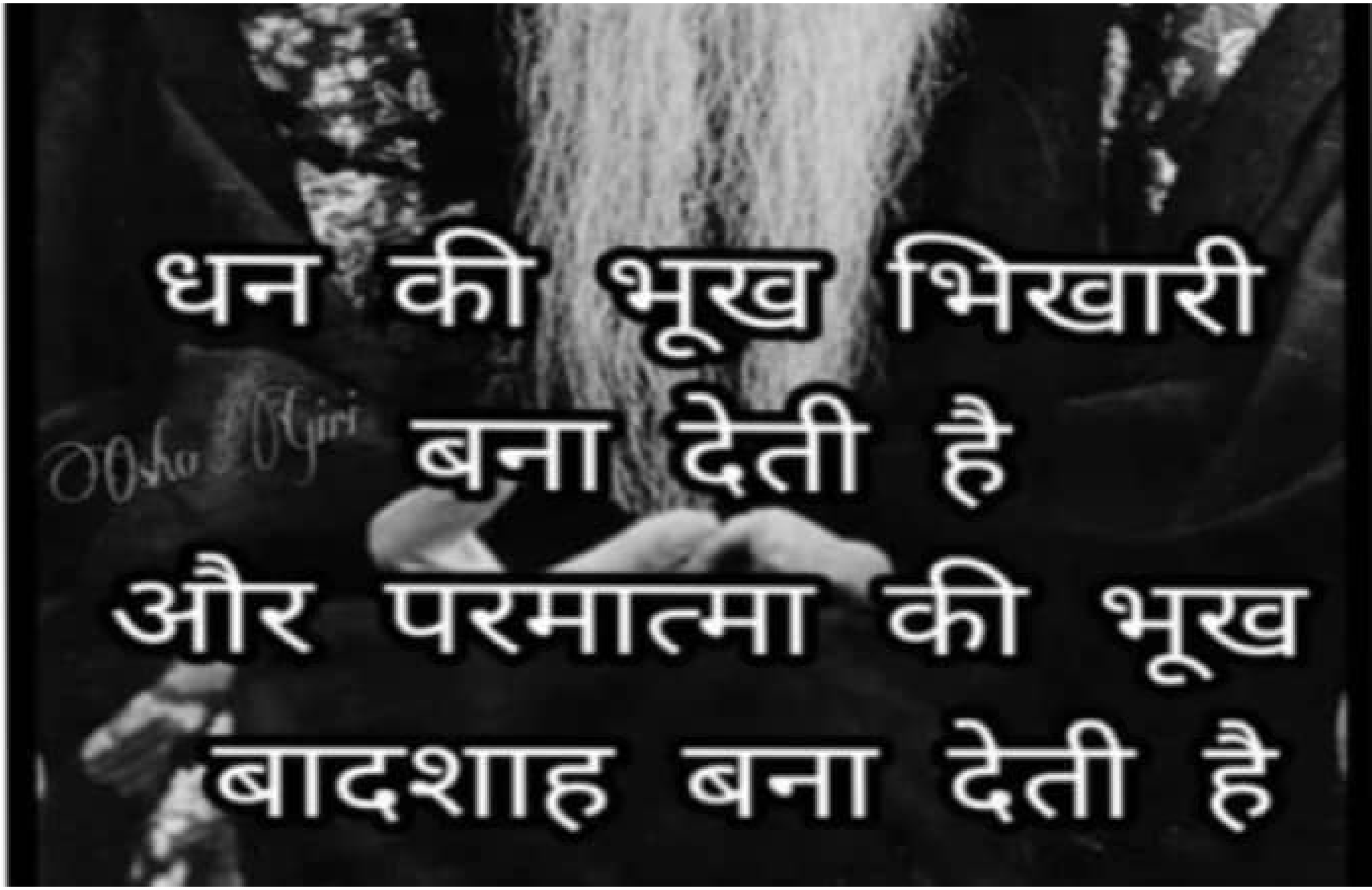

CamScanner

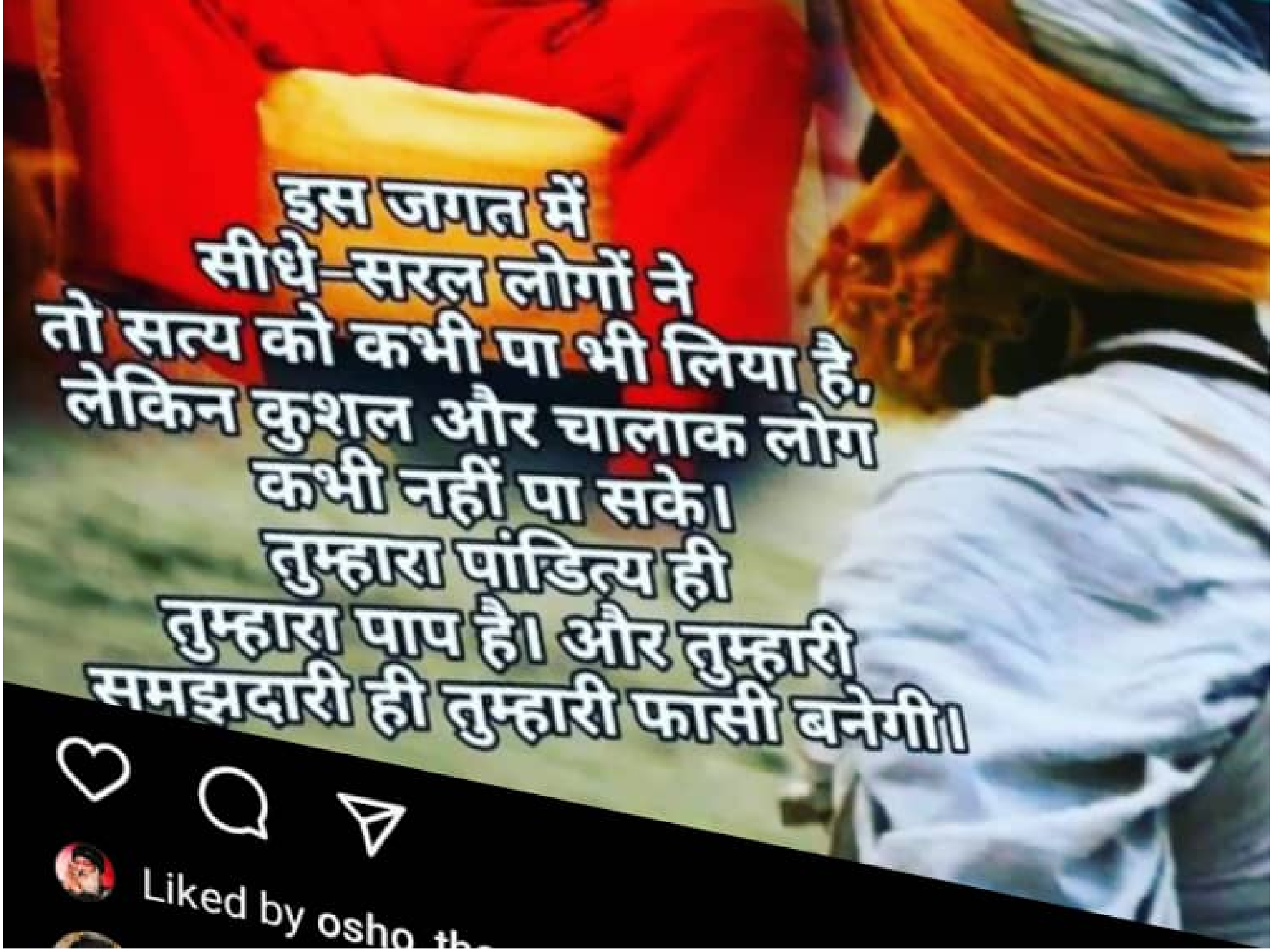
इस जगत में
सीधे–सरल लोगों ने
तो सत्य को कभी पा भी लिया है,
लेकिन कुशल और चालाक लोग
कभी नहीं पा सके।
तुम्हारा पांडित्य ही
तुम्हारा पाप है। और तुम्हारी
समझदारी ही तुम्हारी फासी बनेगी।
Liked by osho

CamScanner

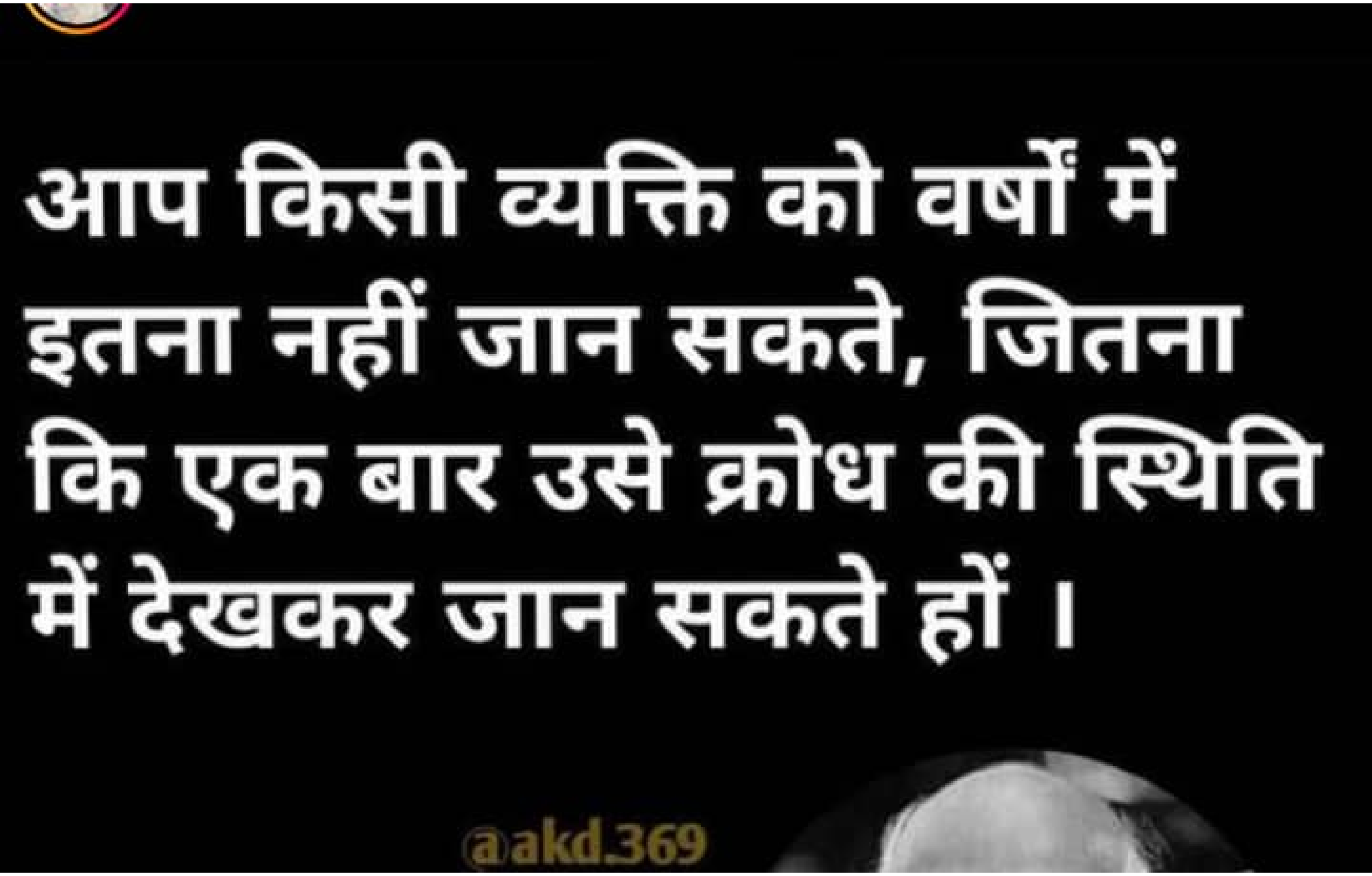
आप किसी व्यक्ति को वर्षों में इतना नहीं जान सकते, जितना कि एक बार उसे क्रोध की स्थिति में देखकर जान सकते हों ।
@akd.369

CamScanner

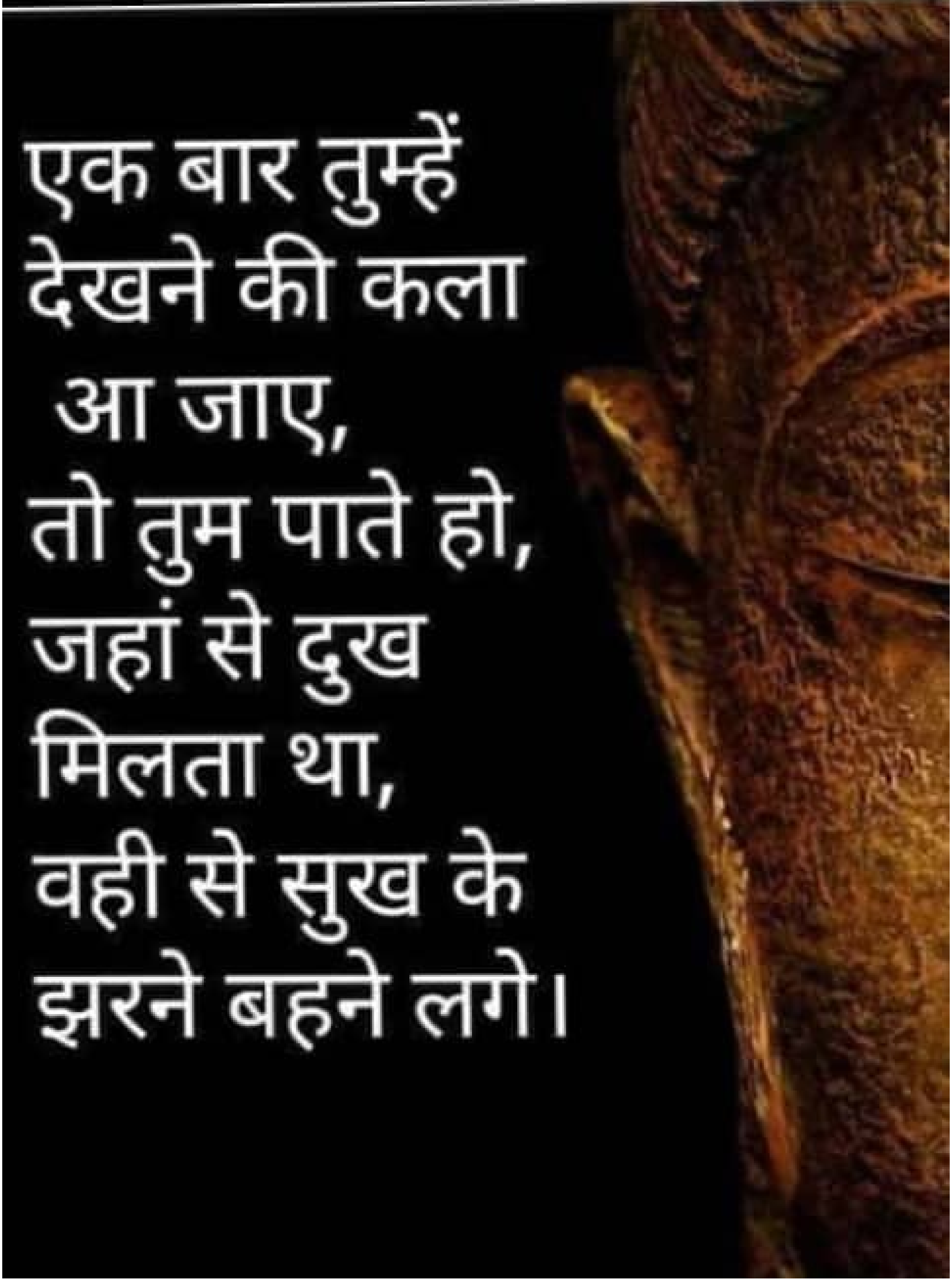

CamScanner

CamScanner

अकेले रहो....

और बस स्वयं पर ध्यान दो, भगवान
कोई ऐसे व्यक्ति को भेजेगा जो वास्तविक
रूप में तुम्हारे लायक होगा ।

@success_life_tips

CamScanner

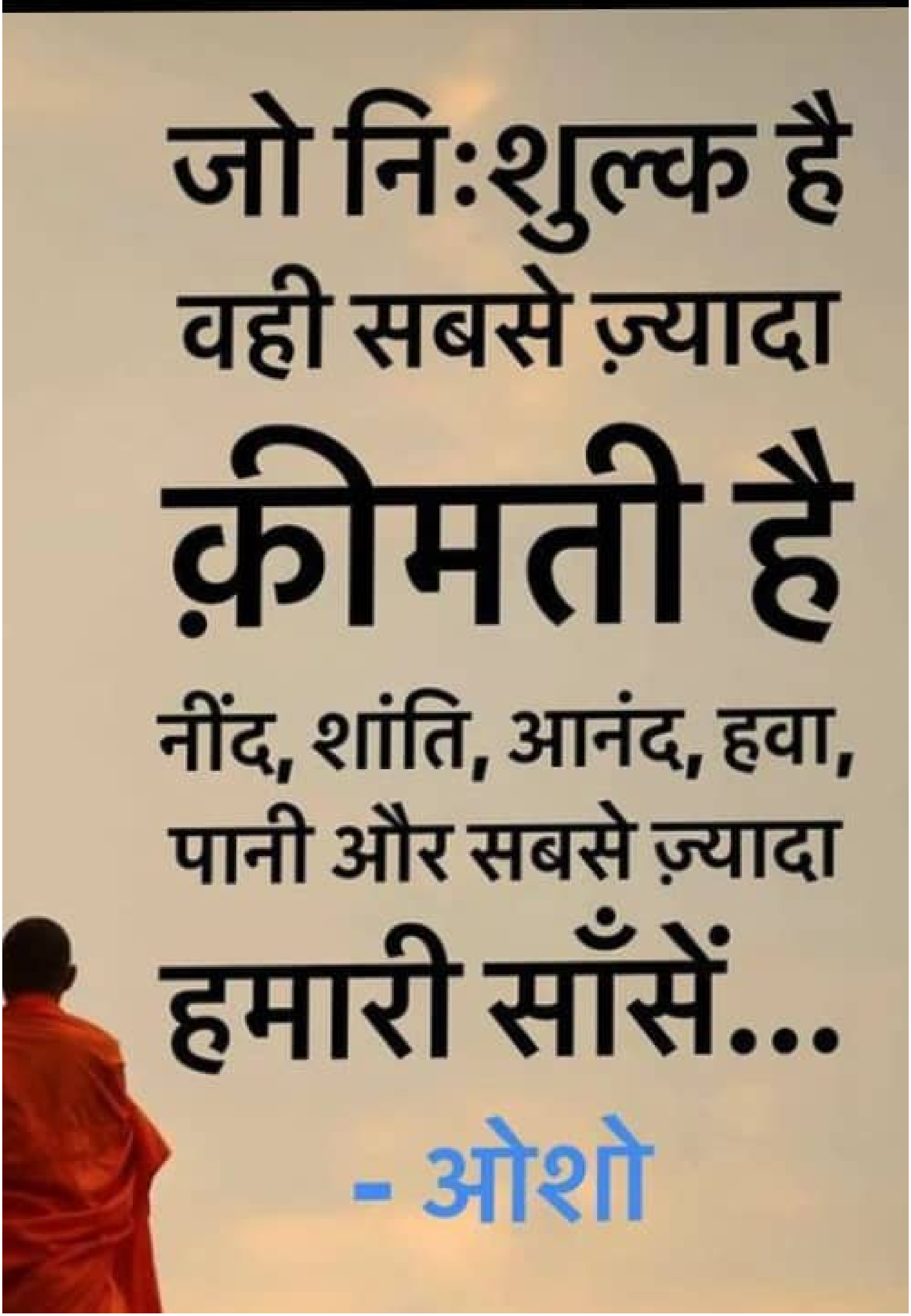

CamScanner

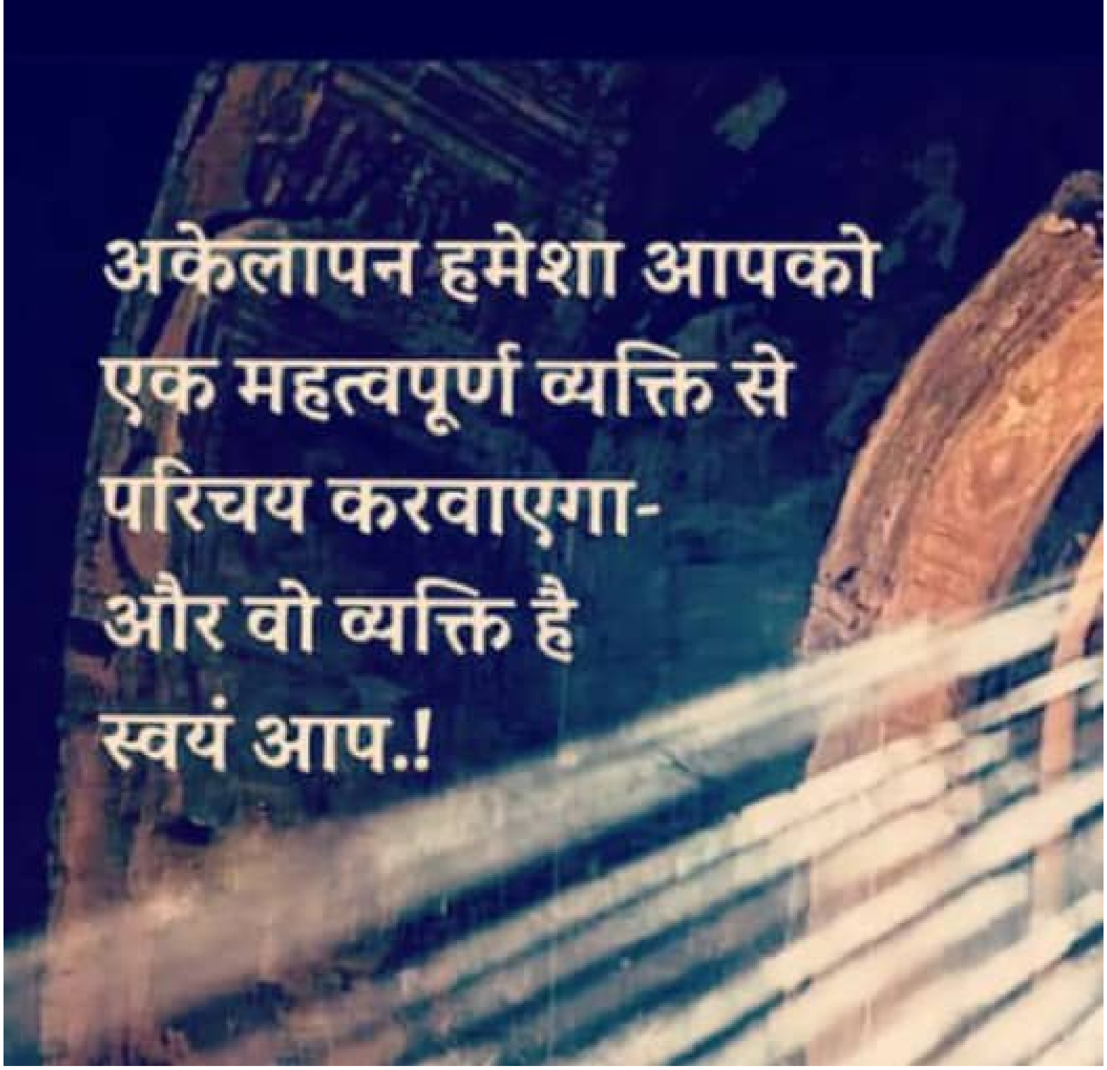

CamScanner

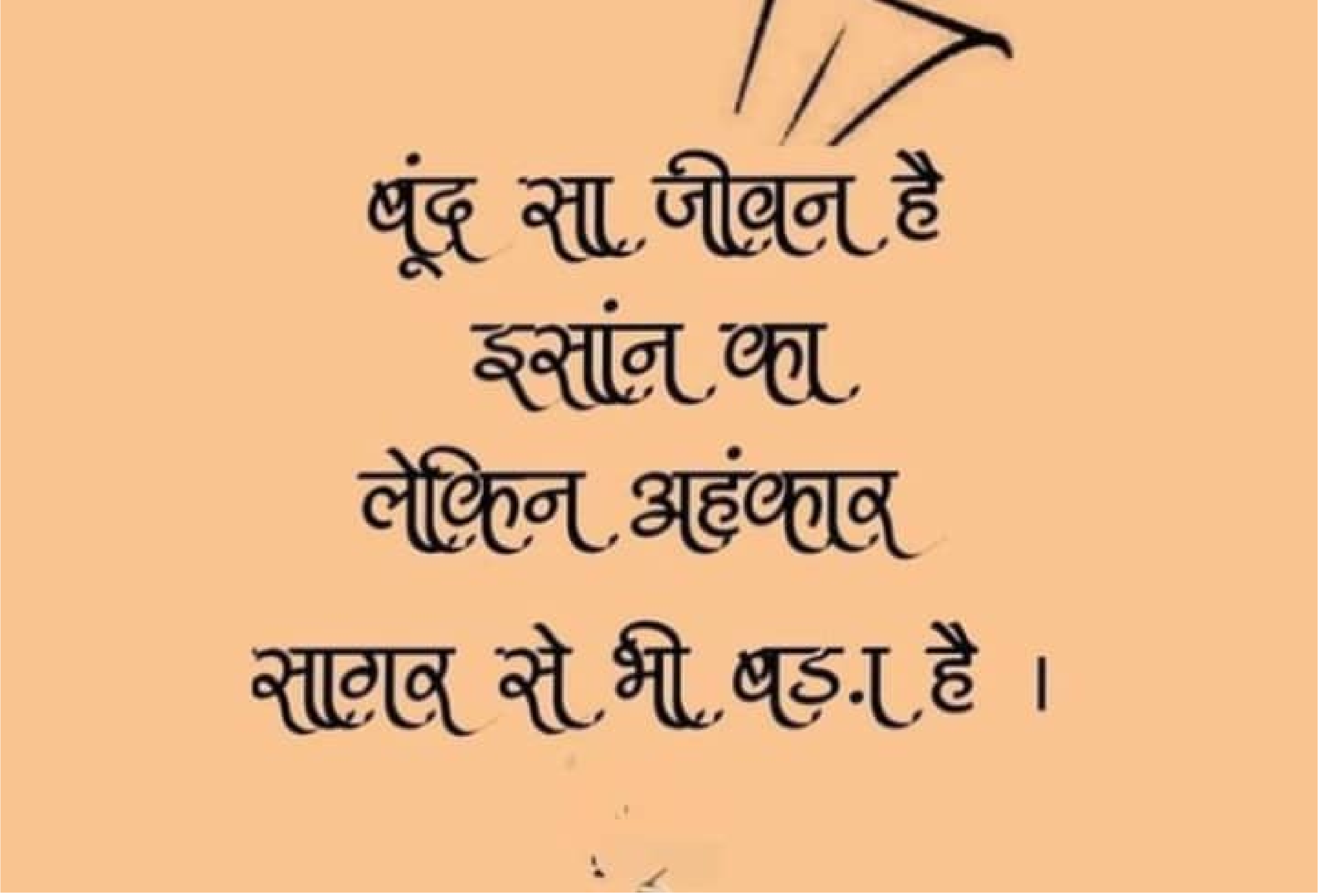

CamScanner

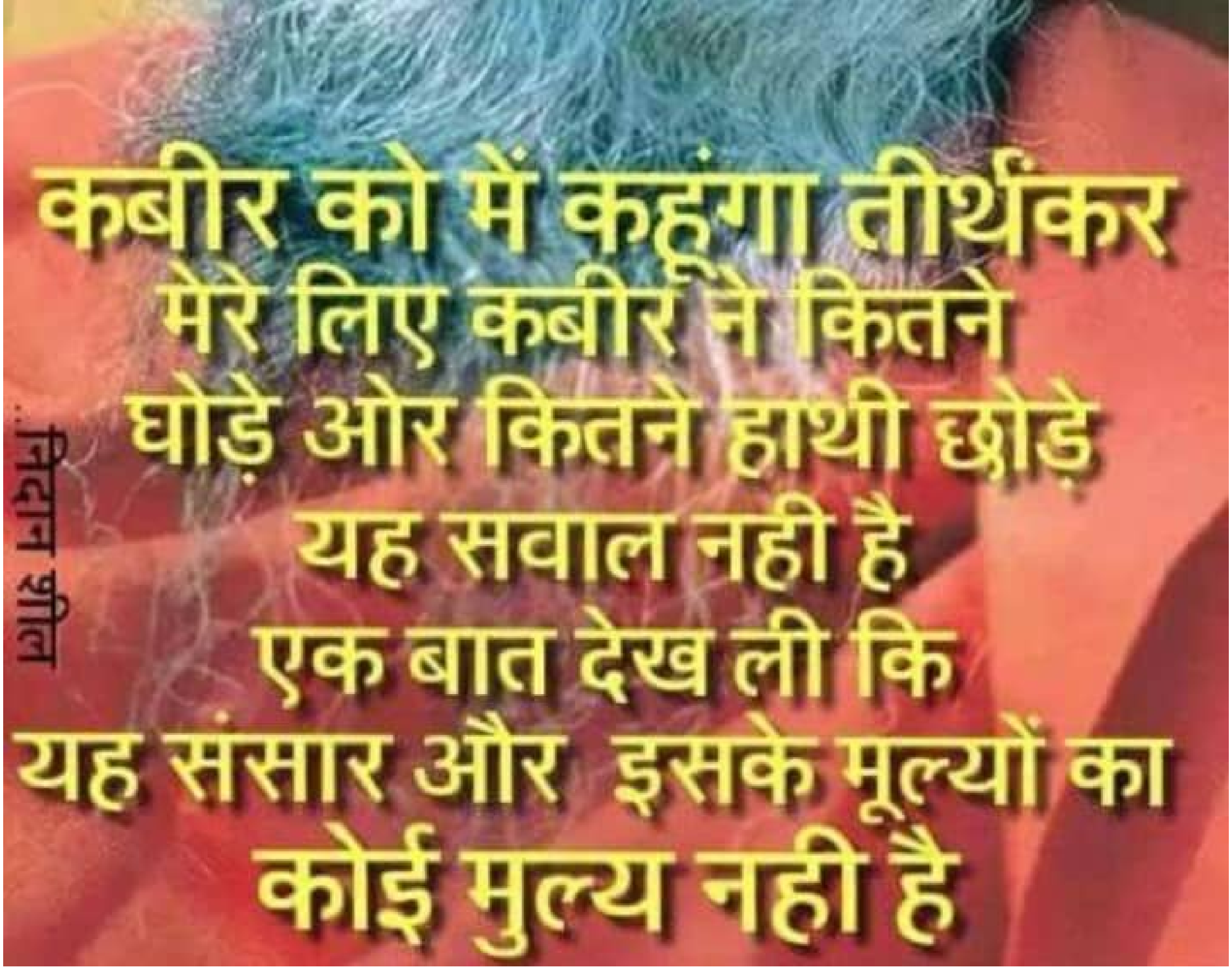

कबीर को मैं कहूंगा तीर्थंकर
मेरे लिए कबीर ने कितने
घोड़े ओर कितने हाथी छोड़े
यह सवाल नही है
एक बात देख ली कि
यह संसार और इसके मूल्यों का
कोई मुल्य नही है
..निदान शील

CamScanner

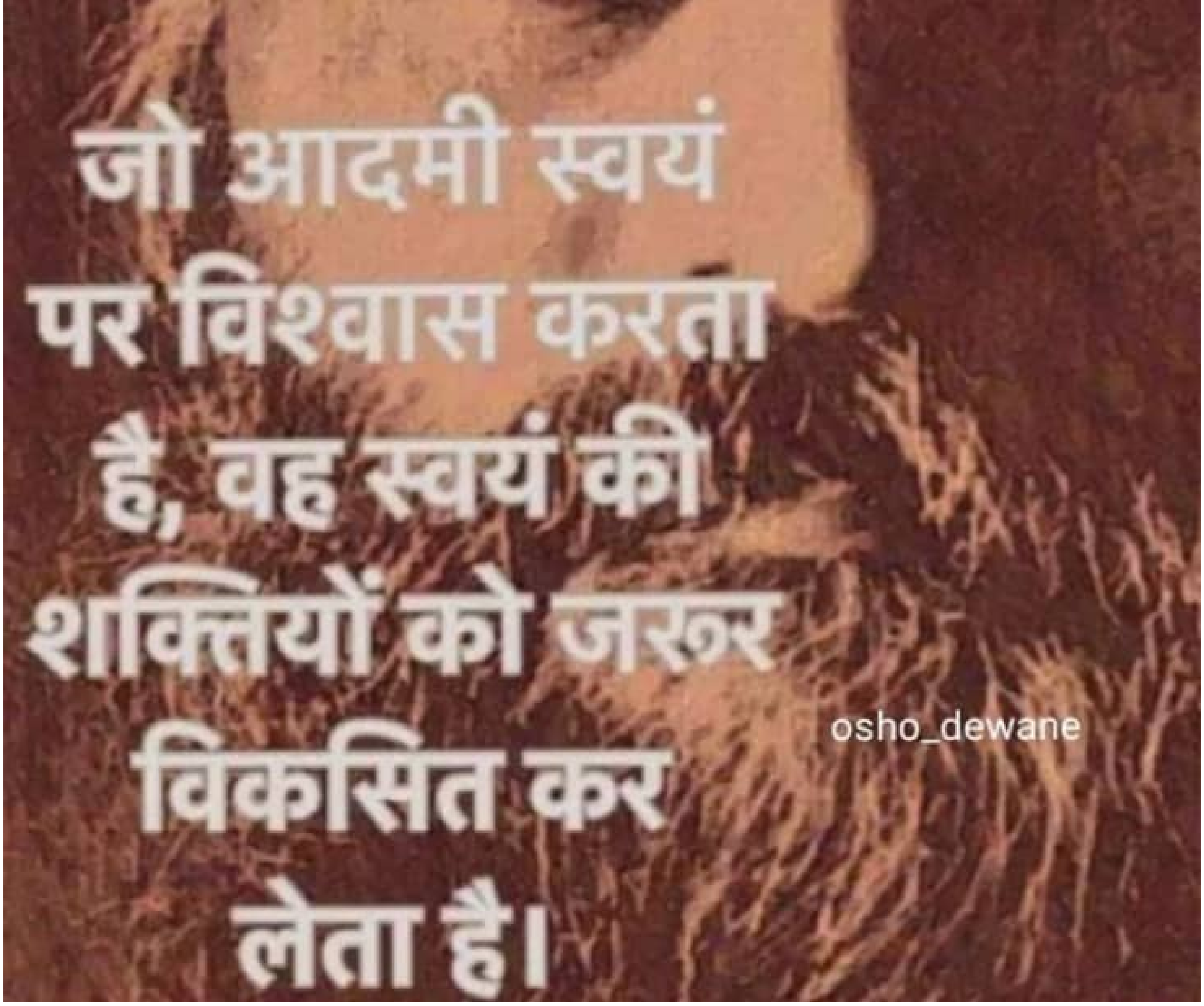
जो आदमी स्वयं
पर विश्वास करता
है, वह स्वयं की
शक्तियों को जरूर
विकसित कर
लेता है।
osho_dewane

CamScanner

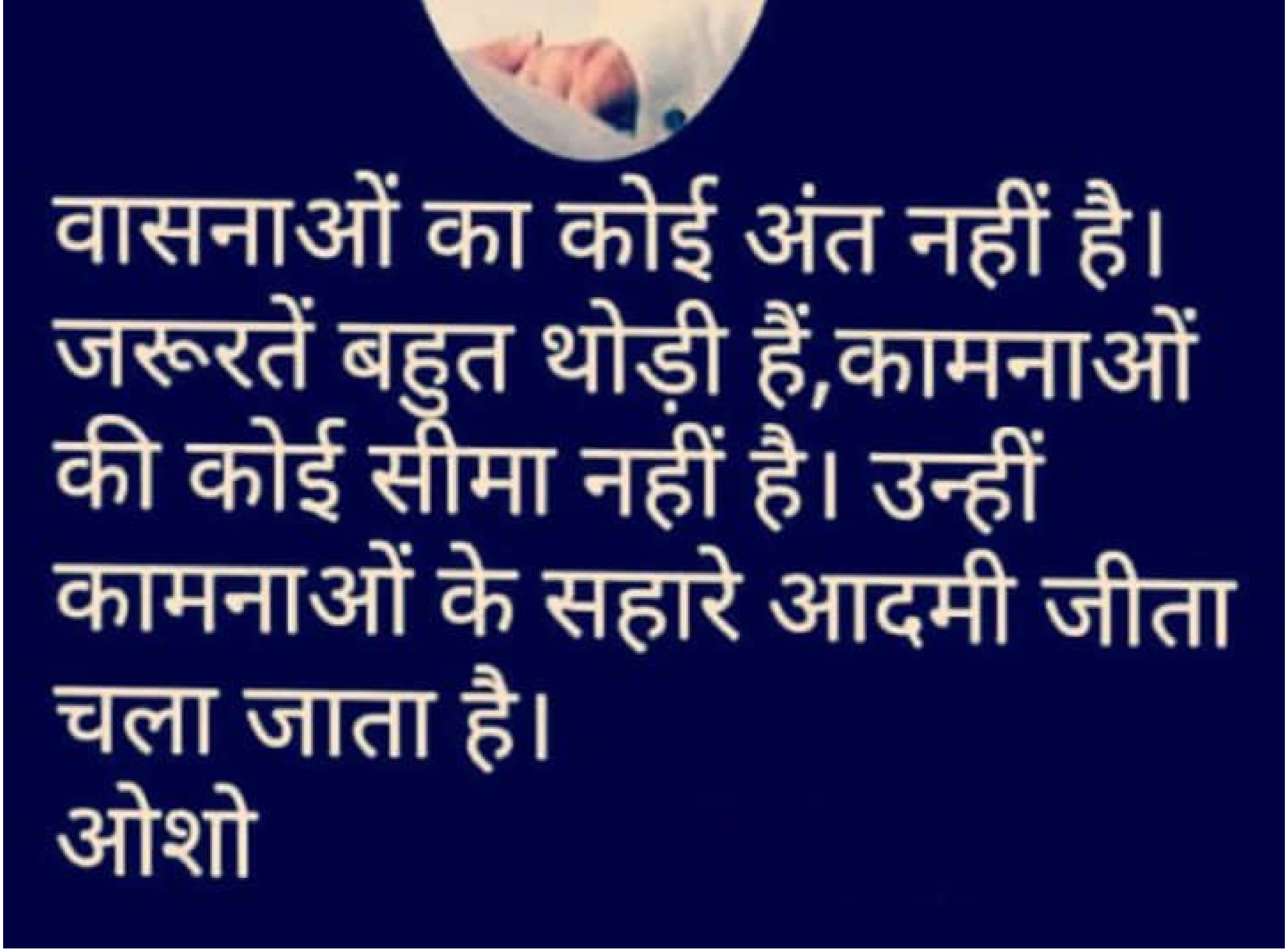
वासनाओं का कोई अंत नहीं है।
जरूरतें बहुत थोड़ी हैं,कामनाओं
की कोई सीमा नहीं है। उन्हीं
कामनाओं के सहारे आदमी जीता
चला जाता है।
ओशो

CamScanner

तुम्हारा समाज सदा से
"केवल गंभीर धर्म.!
और उदास आदमी को
ही सम्मान देता है.!
प्रेमी और गीत गाते हुए
आदमी को, हमेंशा से
"रुलाता आया है.!!

ओशो

CamScanner

तुलसी भरोसे राम के, निर्भय हो के सोए।
अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो होए

• गोस्वामी तुलसीदास

CamScanner

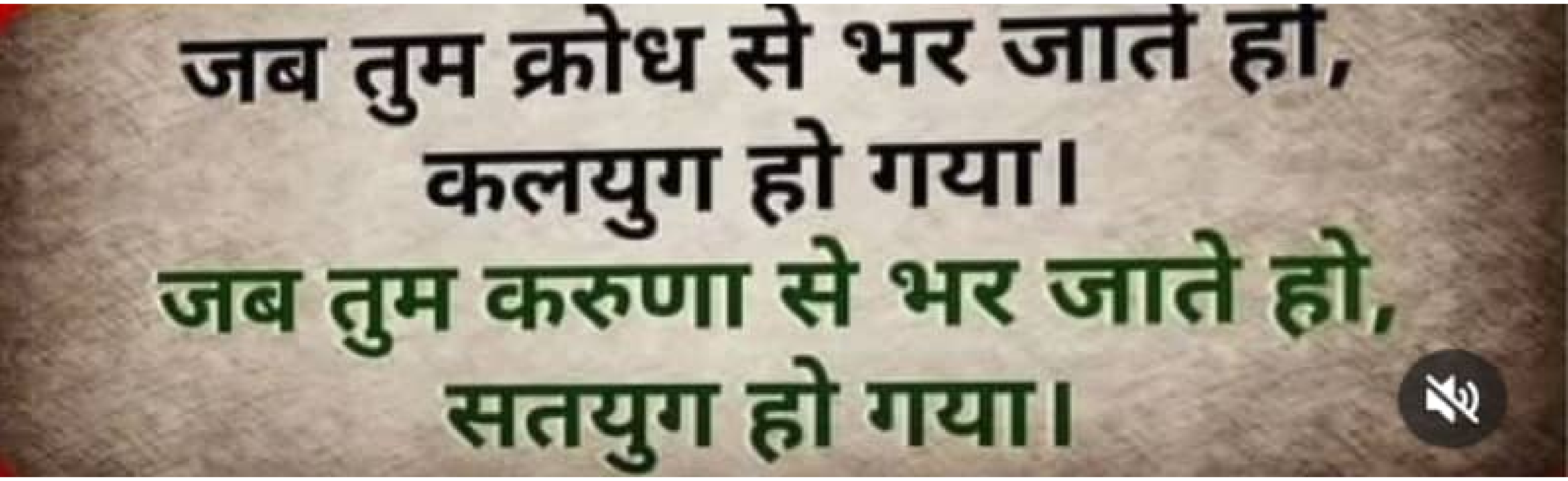

CamScanner

CS CamScanner

मुक्ति का उपाय क्या है?

रिंझाई ने कहां, मैं मुक्त हूं क्योंकि मैं नहीं हूं। अब कोई है ही नहीं जो बंधन में हो। मैं एक विशाल शून्य हूं-स्व अभाव, ना-कुछ।

केवल ना--कुछ मुक्त हो सकता है। अगर तुम कुछ हो तो तुम बंधन में रहोगे। अगर तुम हो तो बंधन में हो। केवल शून्य, रिक्त स्थान मुक्त हो सकता है। तुम उसे नहीं बांध सकते हो।

रिंझाई दौड़कर आया और बोला कि मैं अब नहीं हूं मैं कहीं भी नहीं पाया जाता हूं। यही मुक्ति है। और पहली बार उसने अपने गुरु के पांव छुए। पहली बार! यथार्थ में नहीं, क्योंकि वह उन्हें पूर्व में भी कई बार छू चुका था। लेकिन गुरु ने कहां कि पहली बार तुमने मेरे चरण स्पर्श किए हैं।

रिंझाई ने पूछा कि आप ऐसा क्यों कहते हैं? मैंने अनेक बार आपके पांव छुए हैं। गुरु ने कहां, लेकिन तब तुम मौजूद थे। इसलिए मौजूद रहते हुए तुम मेरे पांव कैसे छू सकते थे? जब तक तुम हो, तुम मेरे पांव कैसे छू सकते हो? 'मैं' किसी के पैर नहीं छू सकता। यद्यपि ऐसा दिखता है कि वह किसी के पांव स्पर्श कर रहा है, लेकिन वास्तव में वह घूमकर अपने ही पांव छूता है। इसलिए गुरु ने कहां कि तुमने पहली बार मेरे पांव छुए, क्योंकि अब तुम नहीं हो।

और गुरु ने कहां कि यही अंतिम बार भी है। प्रथम और अंतिम।

जब तुम नहीं होते तब समर्पण घटित होता है। इसलिए तुम समर्पण नहीं कर सकते। और यही कारण है कि समर्पण विधि नहीं हो सकता। तुम तुम नहीं हो, समर्पण है।

इसलिए तुम और समर्पण साथ-साथ नहीं जी सकते; तुम्हारे और समर्पण के बीच सह-अस्तित्व नहीं हो सकता। तुम हो या समर्पण है।

ओशो; तंत्र--सूत्र (भाग--1) प्रवचन--2

CamScanner

Osho Thoughts
Munabai Makvana · 1h ·

#रिंझाई अपने गुरु के पास पहुंचा और बोला, मुझे मुक्ति दीजिए। गुरु ने कहा, अपने को मेरे पास ले आओ। अगर तुम हो तो मैं तुम्हें मुक्त कर दूंगा, अगर तुम नहीं हो तो मैं तुम्हें कैसे मुक्त करूंगा?

तब तुम मुक्त ही हो। और फिर गुरु ने कहा, और यह मुक्ति तुम्हारी मुक्ति नहीं है। सच्चाई यह है कि यह मुक्ति तुमसे ही मुक्ति है। इसलिए जाओ और खोजो कि यह मैं कहां है? तुम कहां हो? और तब फिर मेरे पास आना। यही ध्यान है। जाओ और ध्यान करो।

शिष्य रिंझाई जाता है और हफ्तों, महीनों ध्यान करता है। फिर लौटकर आता है और गुरु से कहता है कि इतना पता चला है कि मैं यह शरीर नहीं हूं।

गुरु ने कहा, इतना भी तुम मुक्त हुए। फिर जाओ और खोजो रिंझाई जाता है, ध्यान करता है और पाता है कि मैं मन नहीं हूं, क्योंकि मैं मेरे विचारों को देख सकता हूं। द्रष्टा दृश्य से भिन्न है, मैं मन नहीं हूं। और गुरु के पास लौटकर यह बात बताता है।

गुरु ने कहा, अब तुम तीन-चौथाई मुक्त हुए। फिर भी वापस जाओ और खोजो कि तुम क्या हो।

रिंझाई विचार करता रहा कि मैं मेरा शरीर नहीं हूं कि मैं मेरा मन नहीं हूं उसने पढ़ा था, अध्ययन किया था; वह बहुश्रुत था। उसने सोचा कि क्योंकि मैं शरीर और मन नहीं हूं, इस लिए मैं आत्मा हूं। लेकिन उसने ध्यान किया और पाया कि कोई आत्मा नहीं है। क्योंकि यह आत्मा भी हमारी मानसिक सूचना भर है--महज मतवाद, शब्दावली, मीमांसा।

इसलिए एक दिन वह गुरु के पास दौड़ा आया और बोला कि मैं तो अब हूं ही नहीं। तब गुरु ने पूछा कि क्या अब भी मुझे सिखाना होगा कि मुक्ति का उपाय क्या है?

रिंझाई ने कहा, मैं मुक्त हूं क्योंकि मैं नहीं हूं। अब कोई है ही नहीं जो

CS CamScanner

Physically, our life depends on so many things around us. But our Way of Being need not be dependent upon anything.

Sadhguru

CamScanner

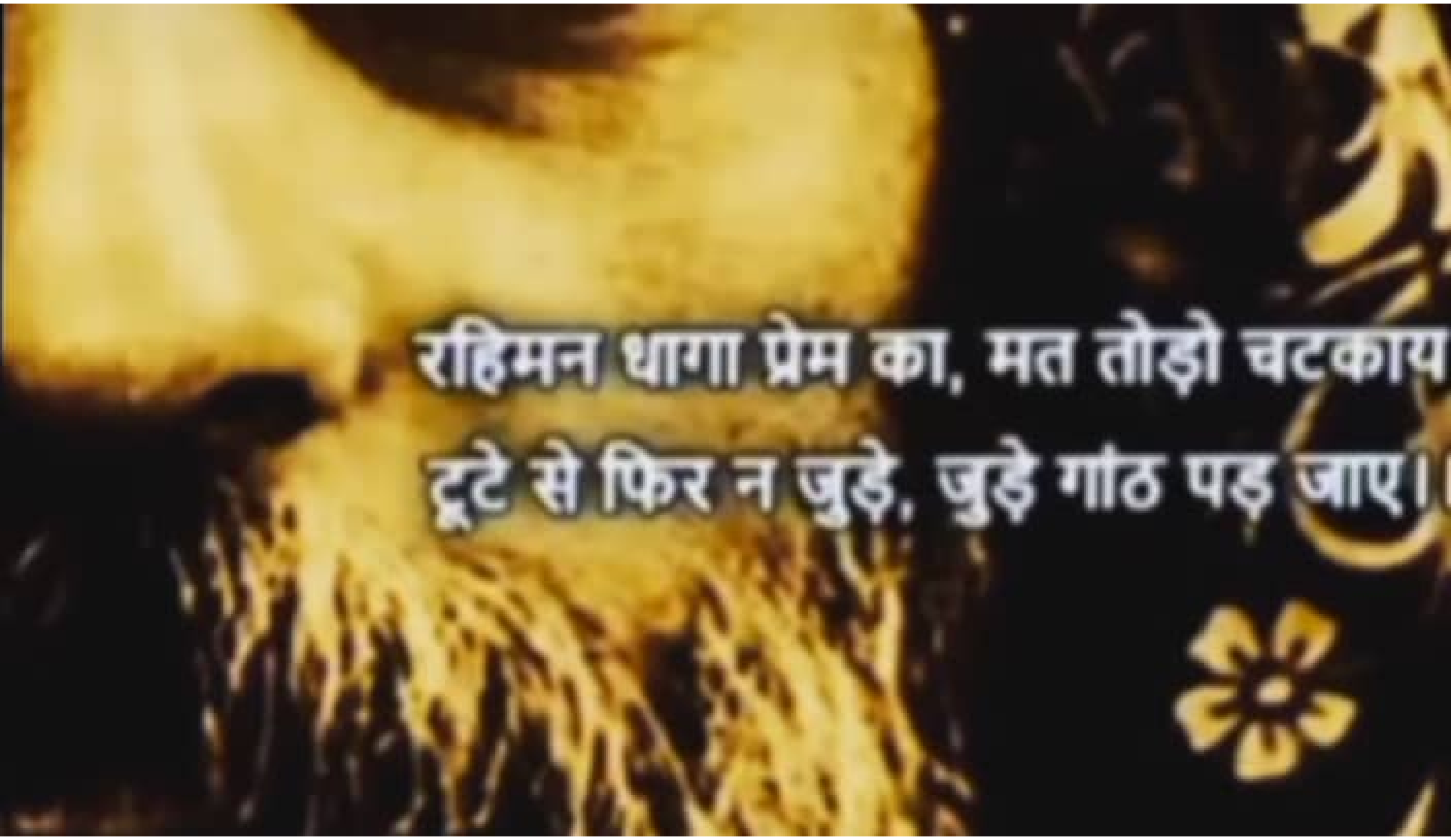

CamScanner

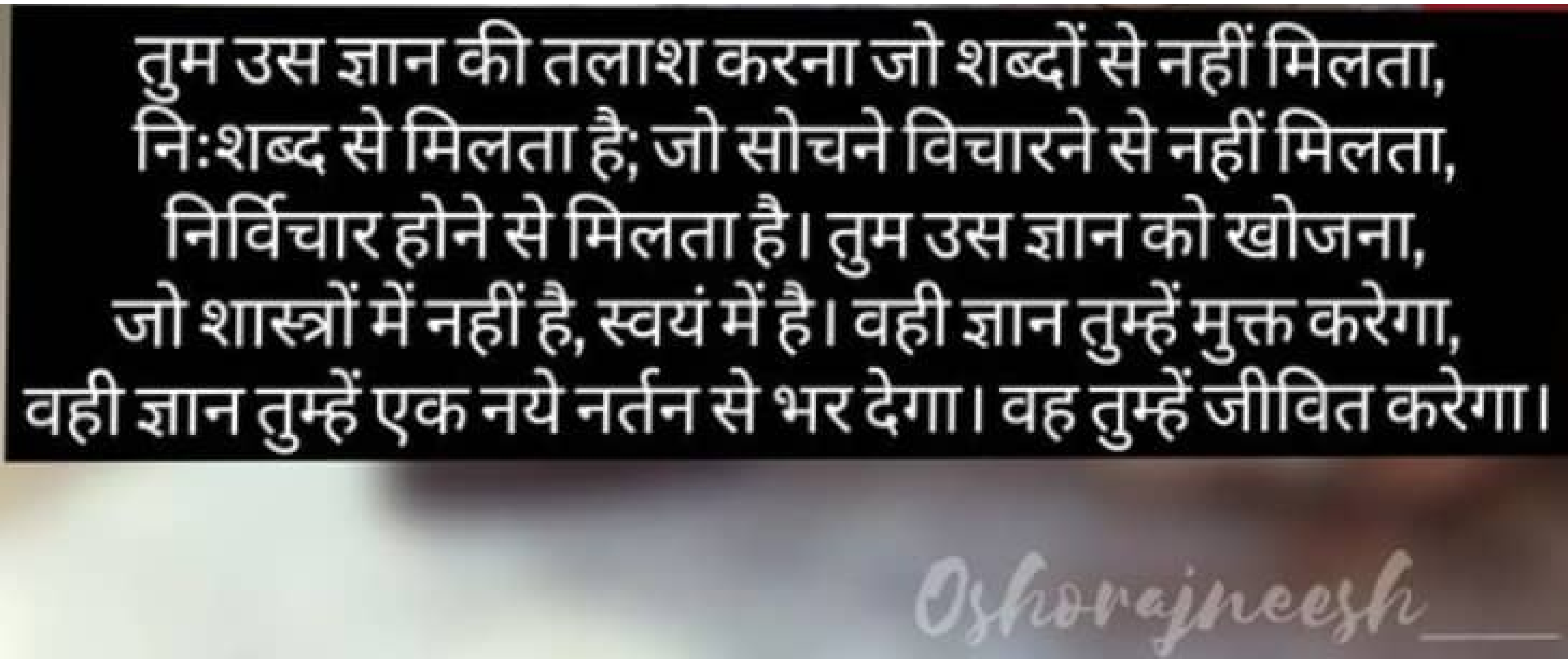
तुम उस ज्ञान की तलाश करना जो शब्दों से नहीं मिलता,
निःशब्द से मिलता है; जो सोचने विचारने से नहीं मिलता,
निर्विचार होने से मिलता है। तुम उस ज्ञान को खोजना,
जो शास्त्रों में नहीं है, स्वयं में है। वही ज्ञान तुम्हें मुक्त करेगा,
वही ज्ञान तुम्हें एक नये नर्तन से भर देगा। वह तुम्हें जीवित करेगा।
Oshorajneesh

CamScanner

ओशो का एक एक वचन
सत्यरूपी विष है, जिसे हर कोई
पचा ले संभव नहीं, जिसने
पीकर पचा लिया , वही शिवत्व
को उपलब्ध हुआ।उसने जीवन
का परमसत्य जाना, उसने
परमात्मा को जाना।

CamScanner

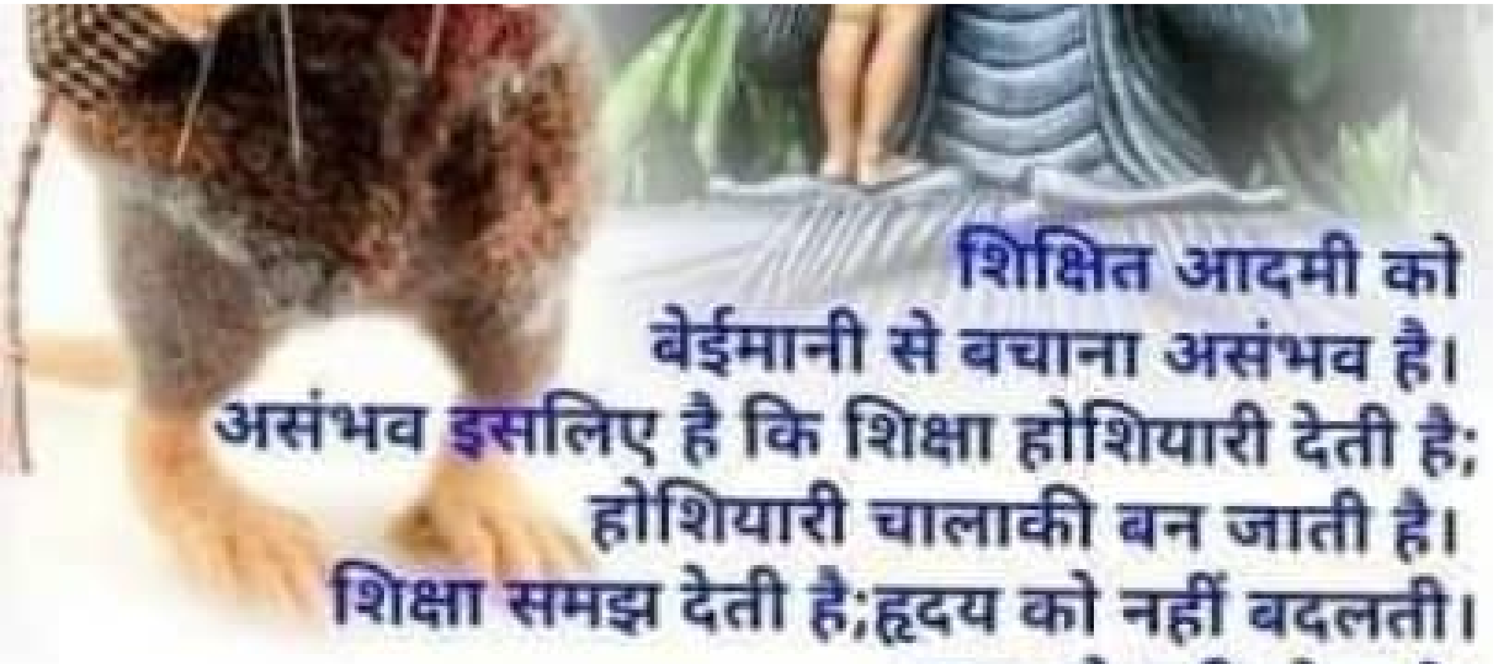

शिक्षित आदमी को
बेईमानी से बचाना असंभव है।
असंभव इसलिए है कि शिक्षा होशियारी देती है;
होशियारी चालाकी बन जाती है।
शिक्षा समझ देती है;हृदय को नहीं बदलती।
हृदय तो वही होता है।

लाओत्से कहता है कि ज्ञान जब तक न खो जाए,
तब तक इनोसेंस, निर्दोषिता उपलब्ध नहीं होती।

इसलिए बहुत मजे की बात है कि परम ज्ञान को
वे ही लोग उपलब्ध होते हैं, जो ज्ञान को भी
छोड़ने में समर्थ हो जाते हैं।
तब वे निर्दोष हो जाते हैं,तब वे सरल हो जाते हैं।

#-ताओ उपनिषद-प्र-10, ओशो

CS CamScanner

श्रद्धा और विश्वास में बड़ा फर्क है।
विश्वास होता है सिर का, श्रद्धा होती है हृदय की।
विश्वास तो सिद्धांत का होता है। जैसे तुम हिंदू
घर में पैदा हुए तो तुम्हारे विश्वास हिंदू हैं;
इससे तुम भक्त नहीं हो गए। तुम मुसलमान घर
में पैदा हुए तो तुम्हारे विश्वास मुसलमान हैं;
इससे तुम भक्त नहीं हो गए। भक्त न तो हिंदू
होता, न मुसलमान, न ईसाई, न जैन, न
बौद्ध—भक्त तो बस भक्त होता है; उतना होना
पर्याप्त है; विशेषण रहित होता है। भक्त को तो
हृदय में श्रद्धा जगती है। भक्त तो विश्वासों से
बिलकुल मुक्त होता है। विश्वास तो उधार होते हैं,
दूसरों के दिए होते हैं—बासे होते हैं—उच्छिष्ट।
श्रद्धा अपनी होती है।

CamScanner

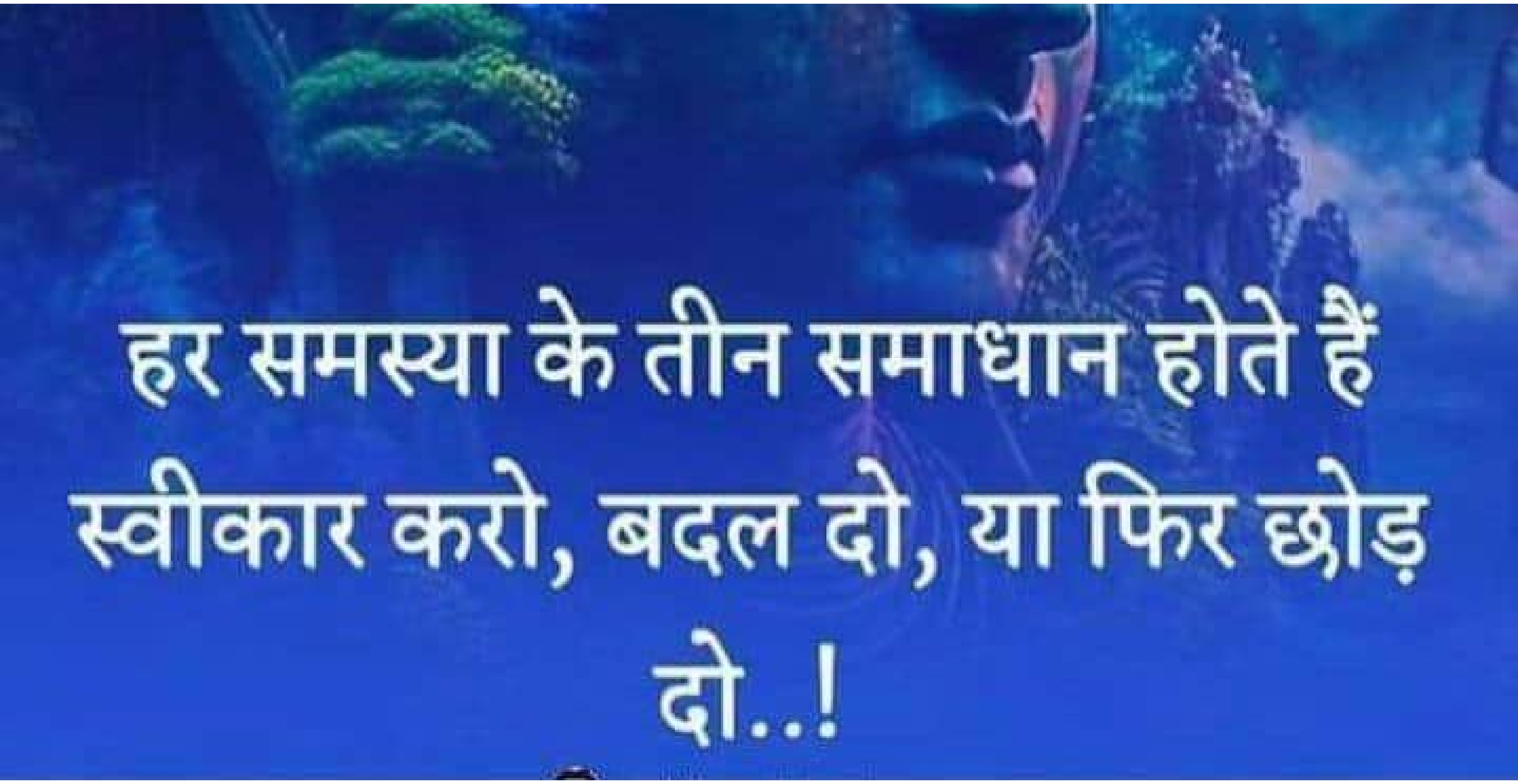

CamScanner

अहोभाव
अहोभाव
ढूंढा तुझको सारे जग में, कहीं पार न तेरा पाया।
बंद आंख से भीतर देखा तो तू ही दिल में समाया।
अहोभाव

CamScanner

सिर्फ़ परवाने ही शमा को
SH
उपलब्ध हो पाते हैं ..
Subhash Hooda
और परमात्मा शमा है ,
इसलिए मैं तुम्हें
परवाना बनाना चाहता हूँ ..ओशो

CamScanner

CamScanner

जिस दिन आपने

खुलकर अपनी जिंदगी को जी लिया बस वो

ही सिर्फ़ दिन हैं।

बाकी सब तो तारीख़ें हैं कलेंडर की...

CamScanner

अपने विचारों पर ध्यान दो
क्योंकि वे तुम्हारे शब्द बनेंगे;
अपने शब्दों पर ध्यान दो
क्योंकि वे तुम्हारे कर्म बनेंगे
और ....
अपने कर्मों पर ध्यान दो
क्योंकि वो स्वयं तुम बनोगे।
~ ओशो

CamScanner

अहोभाव

ओशो

अथातो भक्ति जिज्ञासा
प्रवचन नं – 36

भक्त का अर्थ होता है कि उसने सब परमात्मा पर छोड़ दिया कि तूने जो करवाया, हुआ; तू जो करवा रहा है, होगा; जो आगे भी तू करवाता रहेगा, होता रहेगा। मैं अपने को विदा करता हूं। मैं अपने को नमस्कार करता हूं। भक्त अपने अहंकार को अलविदा कह देता है यह समर्पण है। इस समर्पण में ही क्रांति घट जाती है। फिर कौन कर्ता? जब कर्ता ही न बचा कर्म कैसे?
कैसा प्रारब्ध?

CamScanner

CamScanner

नीत्शे से मरते वक़्त किसी ने पूछा कि तुम एक छोटे से सूत्र में बता सकोगे क्या कि सत्य की खोज का रास्ता क्या है ? तो उसने कहा : लिव डेंजरसली , खतरे में जीओ । बड़ी अजीब बात कही , बड़ी सच । हम सब तो खतरे से बच कर जीते हैं । सब तरफ से सिक्योरिटी कर लेते हैं , सब तरफ से बैंक - बैलेंस कर लेते हैं , सब तरफ से व्यवस्था कर लेते हैं, मजबूत दीवालें बना लेते हैं ; सब इंतजाम कर लेते हैं, कहीं से कोई खतरा नहीं रहने देते। तो फिर हम सो जाते हैं। फिर हम सोए - सोए जीने लगते हैं । धार्मिक वह है जो खतरे में जीता है। जिंदगी एक कंपन है । उसे जो ठोस बना लेते हैं और सब तरफ से सुरक्षित कर लेते हैं , वे कब्र बना लेते हैं -अपने ही हाथ अपनी और फिर उस कब्र में सो जाते हैं। ओशो संकलन: Dr Sohan Lal Narang

CamScanner

आवत ही हरष नहीं
नैनन नहीं सनेह ।
तुलसी तहां न जाइये
कंचन बरसे मेह ॥

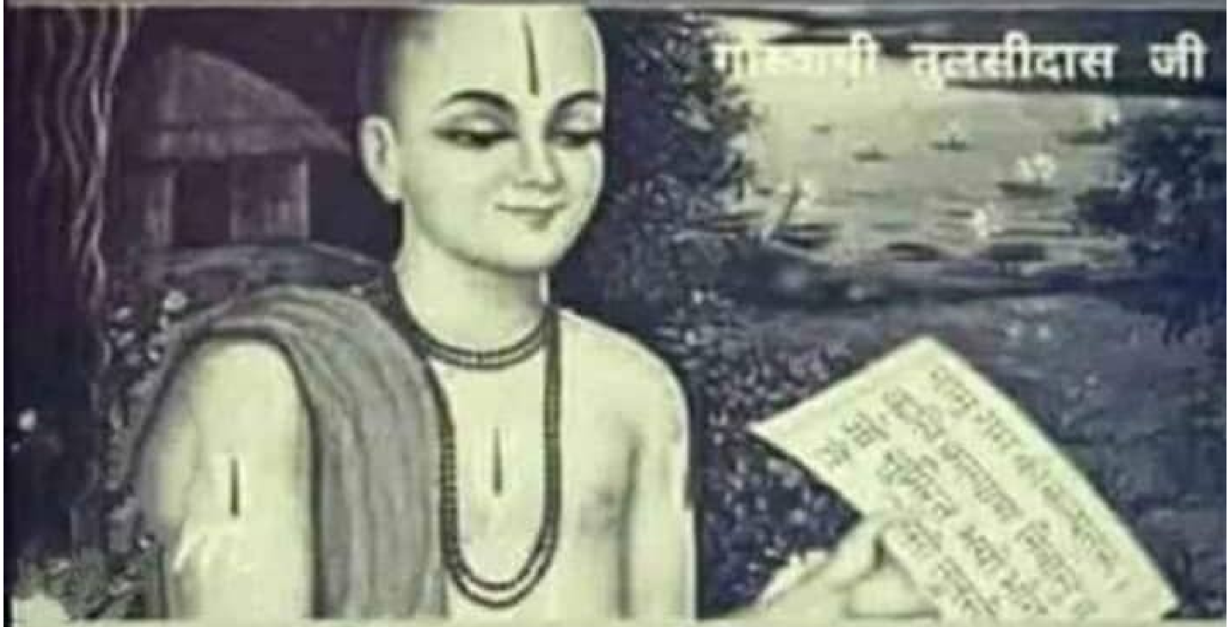

जिस स्थान या जिस घर में
आपके जाने से लोग खुश नहीं
होते हों और उन लोगों की
आँखों में आपके लिए न तो
प्रेम और न हीं स्नेह हो. वहाँ
हमें कभी नहीं जाना चाहिए,
चाहे वहाँ धन की हीं वर्षा क्यों
न होती हो.

CS CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 1h ·

एक प्राचीन कथा है: जंगल की राह से एक जौहरी गुजरता था। देखा उसने राह में, एक कुम्हार अपने गधे के गले में एक बड़ा हीरा बांधकर चल रहा है। चकित हुआ! पूछा कुम्हार से, कितने पैसे लेगा इस पत्थर के? कुम्हार ने कहा, आठ आने मिल जाएं तो बहुत। लेकिन जौहरी को लोभ पकड़ा। उसने कहा, चार आने में दे दे, पत्थर है, करेगा भी क्या? पर कुम्हार भी जिद बांधकर बैठ गया, छह आने से कम न हुआ तो जौहरी ने सोचा कि ठीक है, थोड़ी देर में अपने आप आकर बेच जाएगा। वह थोड़ा आगे बढ़ गया। लेकिन कुम्हार वापस न लौटा तो जौहरी लौटकर आया; लेकिन तब तक बाजी चूक गई थी, किसी और ने खरीद लिया था। तो पूछा उसने कि कितने में बेचा? उस कुम्हार ने कहा कि हुजूर, एक रुपया मिला पूरा। आठ आने में बेच देता, छह आने में बेच देता, बड़ा नुकसान हो जाता।
उस जौहरी की छाती पर कैसा सदमा लगा होगा! उसने कहा, मूर्ख! तू बिल्कुल गधा है। लाखों का हीरा एक रुपए में बेच दिया?
उस कुम्हार ने कहा, हुजूर मैं अगर गधा न होता तो लाखों के हीरे को गधे के गले में ही क्यों बांधता? लेकिन आपके लिए क्या कहें? आपको पता था कि लाखों का हीरा है और पत्थर की कीमत में भी लेने को राजी न हुए!
धर्म का जिसे पता है, उसका जीवन अगर रूपांतरित न हो तो उस जौहरी की भांति गधा है। जिन्हें पता नहीं है, वे क्षमा के योग्य हैं; लेकिन जिन्हें पता है, उनको क्या कहें?

🙏ओशो🙏

CamScanner

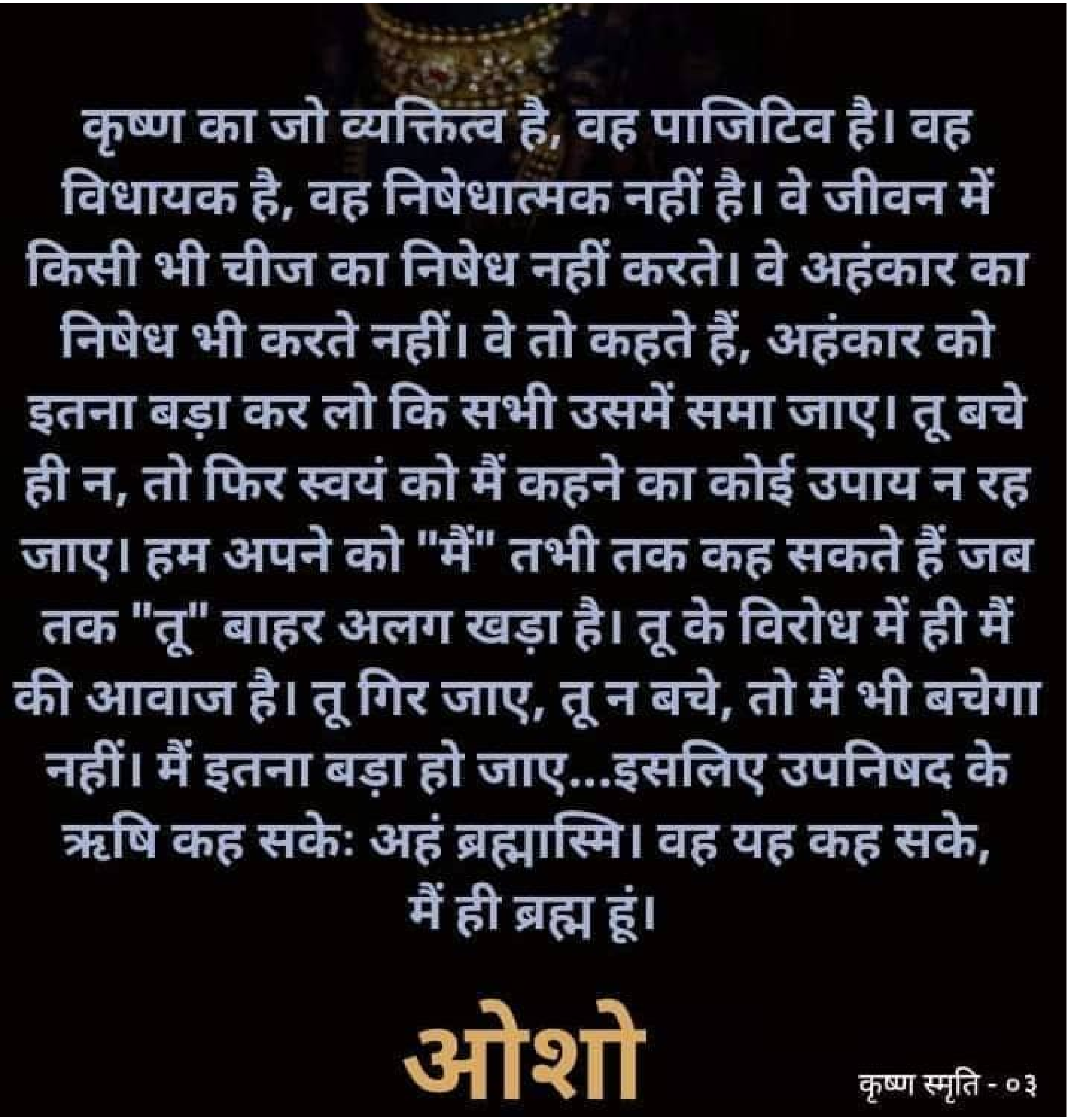
कृष्ण का जो व्यक्तित्व है, वह पाजिटिव है। वह
विधायक है, वह निषेधात्मक नहीं है। वे जीवन में
किसी भी चीज का निषेध नहीं करते। वे अहंकार का
निषेध भी करते नहीं। वे तो कहते हैं, अहंकार को
इतना बड़ा कर लो कि सभी उसमें समा जाए। तू बचे
ही न, तो फिर स्वयं को मैं कहने का कोई उपाय न रह
जाए। हम अपने को "मैं" तभी तक कह सकते हैं जब
तक "तू" बाहर अलग खड़ा है। तू के विरोध में ही मैं
की आवाज है। तू गिर जाए, तू न बचे, तो मैं भी बचेगा
नहीं। मैं इतना बड़ा हो जाए...इसलिए उपनिषद के
ऋषि कह सके: अहं ब्रह्मास्मि। वह यह कह सके,
मैं ही ब्रह्म हूं।
ओशो
कृष्ण स्मृति - ०३

CamScanner

इस बात को समझो। यह संसार सूली है, क्योकि इस संसार में सिवाय मौत के और कुछ नही घटता। जन्म के बाद बस एक ही बात निश्चित है: मौत। जन्म के बाद मृत्यु के अतिरिक्त यहां कुछ भी नही घटता।

CamScanner

तुम्हारा खुद का मन ही तुम्हारी
नहीं सुनता और तुम निकल
पड़ते हो दूसरों को नसीहत
देने के लिए~ओशो

CamScanner

शिक्षित आदमी को
बेईमानी से बचाना असंभव है।
असंभव इसलिए है कि शिक्षा होशियारी देती है;
होशियारी चालाकी बन जाती है।
शिक्षा समझ देती है;हृदय को नहीं बदलती।
हृदय तो वही होता है।

लाओत्से कहता है कि ज्ञान जब तक न खो जाए,
तब तक इनोसेंस, निर्दोषिता उपलब्ध नहीं होती।

इसलिए बहुत मजे की बात है कि परम ज्ञान को
वे ही लोग उपलब्ध होते हैं, जो ज्ञान को भी
छोड़ने में समर्थ हो जाते हैं।
तब वे निर्दोष हो जाते हैं,तब वे सरल हो जाते हैं।

#-ताओ उपनिषद-प्र-40,ओशो

CS CamScanner

गुर्जिएफ पश्चिम का एक बहुत बड़ा संत,.
अपने आश्रम के बाहर दीवाल पर लिख रख छोड़ा था, कि जिसने अपने मां-बाप को आदर देना नहीं सीख लिया है, उसके लिए मंदिर के द्वार बंद हैं।

बड़ी हैरानी की बात थी। इस बात को वहां लिखने की क्या जरूरत थी? लोग पूछते भी गुर्जिएफ से, कि यह क्या मामला है? इससे मां-बाप से क्या लेना-देना!

गुर्जिएफ कहता, कि जिसने इस संसार के मां-बाप से संबंध श्रद्धा का नहीं बना लिया, उसके पास सीढ़ी ही नहीं है उस ऊपर के पिता की तरफ चढ़ने की। उसकी सीढ़ी नहीं है उसके पास।

उसके पास मौलिक अनुभव नहीं है, जिसका बीज बन जाए और जिसका वृक्ष हो सके। उसके पास पहली कुंजी ही नहीं है। इसलिए पूरब में, जहां धर्मो का जन्म हुआ--सारे धर्मो का जन्म पूरब में हुआ।

पश्चिम में एक भी धर्म पैदा नहीं हुआ है। जैसे सूरज पूरब में उगता है, वैसे सारा धर्म पूरब में पैदा हुआ है। पूरब में जितने धर्मो का जन्म हुआ--सभी धर्मो का हुआ--और पूरब में सभी लोगों ने एक बात पर जोर दिया है; वह है, बेटे के द्वारा पिता के प्रति एक अनन्य श्रद्धा, जिसको तोड़ा नहीं जा सकता।

कारण है उसका। कारण है, क्योंकि अगर तुम इस पृथ्वी पर अपने पिता के प्रति एक श्रद्धा का भाव पैदा नहीं कर पाए, तो तुम उस अज्ञात पिता के प्रति तो कैसे श्रद्धा का भाव पैदा कर पाओगे? मूल सीढ़ी खो रही है। इसलिए जिन लोगों का भी अपने पिता से बहुत अच्छा संबंध नहीं है, उन्हें उस संबंध को सुधार लेना चाहिए। उसको बिना सुधारे उनके और परमात्मा के बीच थोड़ी सी झंझट बनी रहेगी।

पश्चिम में परमात्मा की धारणा टूटती गई है। और वह उसी हिसाब से टूटी है, जिस हिसाब से बेटे और बाप का संबंध टूटा है। पिछले तीन सौ वर्षो में जिस हिसाब से बेटे और बाप का संबंध टूटा है, उसी हिसाब से मनुष्य का और परमात्मा का संबंध टूटा है।

CamScanner

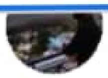

Suggested for you · 1d ·

मृत्यु के क्षण में हम तड़पते क्यों हैं ?

हमने किसी पक्षी को मरते देखा है ?
ऐसे सरल, ऐसे सहज,
चुपचाप विदा हो जाता है !
पङ्ख भी नहीं फड़फड़ाता है।
शोरगुल भी नहीं मचाता है।
पक्षी तो इतने चुपचाप विदा हो जाते हैं,
इतनी सरलता से विदा हो जाते हैं !
ज़रा नोच-खचोंट नहीं।
ज़रा शोरगुल नहीं।
हमने पशुओं को मरते देखा है ?
मौत में भी एक अपूर्व शान्ति होती है।

आदमी को मरते देखें --
कितना उपद्रव मचाते हैं,
कितना रोकने की अपने को चेष्टा करते हैं !
क्या होगा कारण ?
कारण है :
ज़िन्दगी व्यर्थ गयी और मौत आ गयी।
अब आगे कोई समय न बचा।
खाली आये खाली गये,
कुछ भराव नहीं और यह मौत आ गयी।
तड़पें न हम तो क्या करें ?

भरे हुए आदमी ही शान्ति से मर सकते हैं।
हाँ, बुद्ध विदा होते हैं शान्ति से,
उल्लास से, उमँग से ;
जैसे किसी प्यारी यात्रा पर जाते हों !
ज़रा भी क्षण-भर को भी,
कण-भर को भी मोह नहीं होता
इस तट से बन्धे रहने का।

CamScanner

शंकर जी बोले - क्या देखूं ??
रावण बोले - देखिए आपके तो 5 सिर है, मेरे तो दस हैं। अब जो खुद को गुरु से दुगना ऐसे ही समझे, उसे गुरु समझाए तो भी क्या समझाए ?? ज्ञान तो श्रद्धावान को मिलता है, अहंकारियों को थोड़ी न ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

एक किवदंती के अनुसार बार रावण गया कैलाश और कैलाश को ही सिर पर उठा लिया, कैलाश में हलचल मच गई । पार्वती जी ने पूछा - हे देवाधिदेव यह क्या हो रहा है ?

शंकर जी ने कहा - शिष्य आया है ...

पार्वती ने पूछा - तो इतनी हलचल क्यो है ??

शंकर जी कहा - रावण जैसे शिष्य आएंगे, तो हलचल ही मचेगी ।

किसी ने रावण को पूछा - यह क्या कर रहे हो ?
रावण ने कहा - गुरुजी को शिरोधार्य कर रहे है ...

भला यह कैसा शिरोधार्य ??

शिष्य को तो गुरु के चरणों मे लिपट जाना चाइये, और गुरु उसे अपने हाथों से उठाएं ।

गिरना शिष्य का काम है, और गिरे हुए को उठाना गुरु का काम है और रावण जैसे शिष्य सोचते है, की हम गुरु को ऊपर उठा रहे हैं ।

जब भी हम खुद को गुरु से श्रेष्ठ समझने लग जाए, तो समझिए हमारा नाश सिर पर आ गया है । स्कूल के गुरु हो, या जीवन की शिक्षा देने वाले माता पिता, या हो सतगुरु, उनके तो चरणों मे ही लिपटा रहना चाहिए, कल्याण इसी में है ।।

जय शिव शंकर🙏

CS CamScanner

अहोभाव

एक युवा साधक गौतम बुद्ध के पास आया।
उसने कहा, " मैं तुम्हारे लिए खुद को पेशकश करने के लिए आया हूँ ।
मुझे स्वीकार करो "
बुद्ध ने उससे पूछा, " आप क्या पेशकश कर रहे हैं - आपका शरीर?
लेकिन यह पहले से ही चढ़ाया गया है और पृथ्वी इसका दावा करेगी, तो
आप इसे मेरे लिए कैसे पेश कर सकते हैं?
आप क्या पेशकश कर रहे हैं?
मुझे बिल्कुल बताओ!"
आदमी उलझन में था।
उसने कहा, "मैं जो कुछ भी तुम्हें देता हूँ
बुद्ध ने उससे पूछा, " तुम्हारे पास क्या है?

What is it that belongs to you?
Do your thoughts belong to you?

वे समाज के हैं; आपका मन समाज का है।
आपका शरीर आपके माता-पिता का है, पृथ्वी के लिए, आकाश को,
पानी के लिए, आग के लिए, पांच तत्वों के लिए कई चीजों के लिए।
आपके पास क्या है जो आप मुझे औफ़र कर सरकते हैं?"
आदमी जवाब नहीं दे सका क्योंकि उसके पास और कुछ नहीं था।
वह कुछ और नहीं सोच सकता था, इसलिए बुद्ध ने कहा, " अब मत
चढ़ाओ । पहले पता करो कि तुम क्या हो ।
और जो पल आप इसे पाते हैं, वह पहले से ही पेशकश की जाती है तो
फिर ऑफ़र करने की जरूरत नहीं है.
"च #5. परम कीमियागरी, वॉल्यूम 2--ओशो

CamScanner

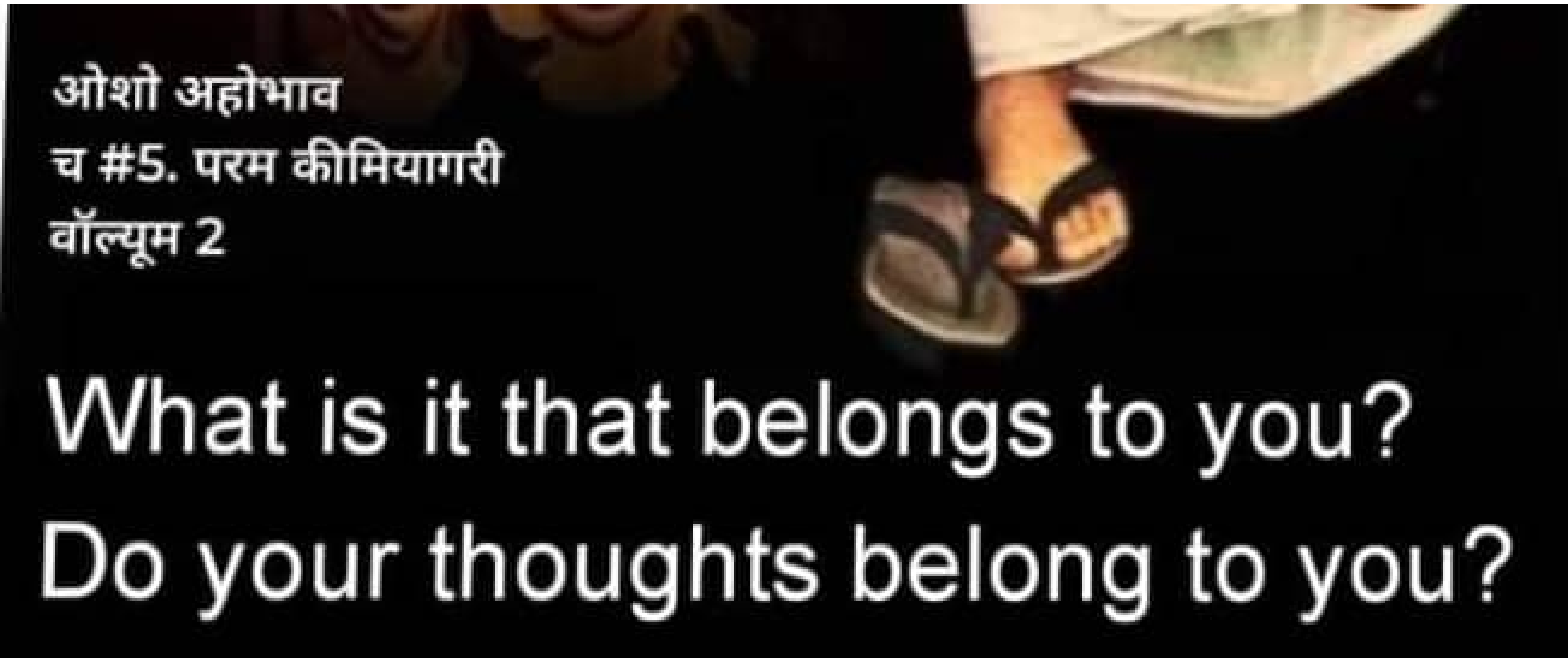
ओशो अहोभाव
च #5. परम कीमियागरी
वॉल्यूम 2
What is it that belongs to you?
Do your thoughts belong to you?

CamScanner

सम्राट होने का एक ही ढंग है, भीतर की संपदा को उपलब्ध हो जाना।

–ओशो –

एस धम्मो सनंतनो

CamScanner

संन्यास जीवन की
कला है, जीवन का
त्याग नहीं।

CamScanner

जो दिखाई पड़ रहा है, वह संसार है; लेकिन हर दिखाई पड़ने वाले के भीतर जो अद्रश्य छिपा है, वही गोविंद है वही परमात्मा है।

\- आचार्य रजनीश

CamScanner

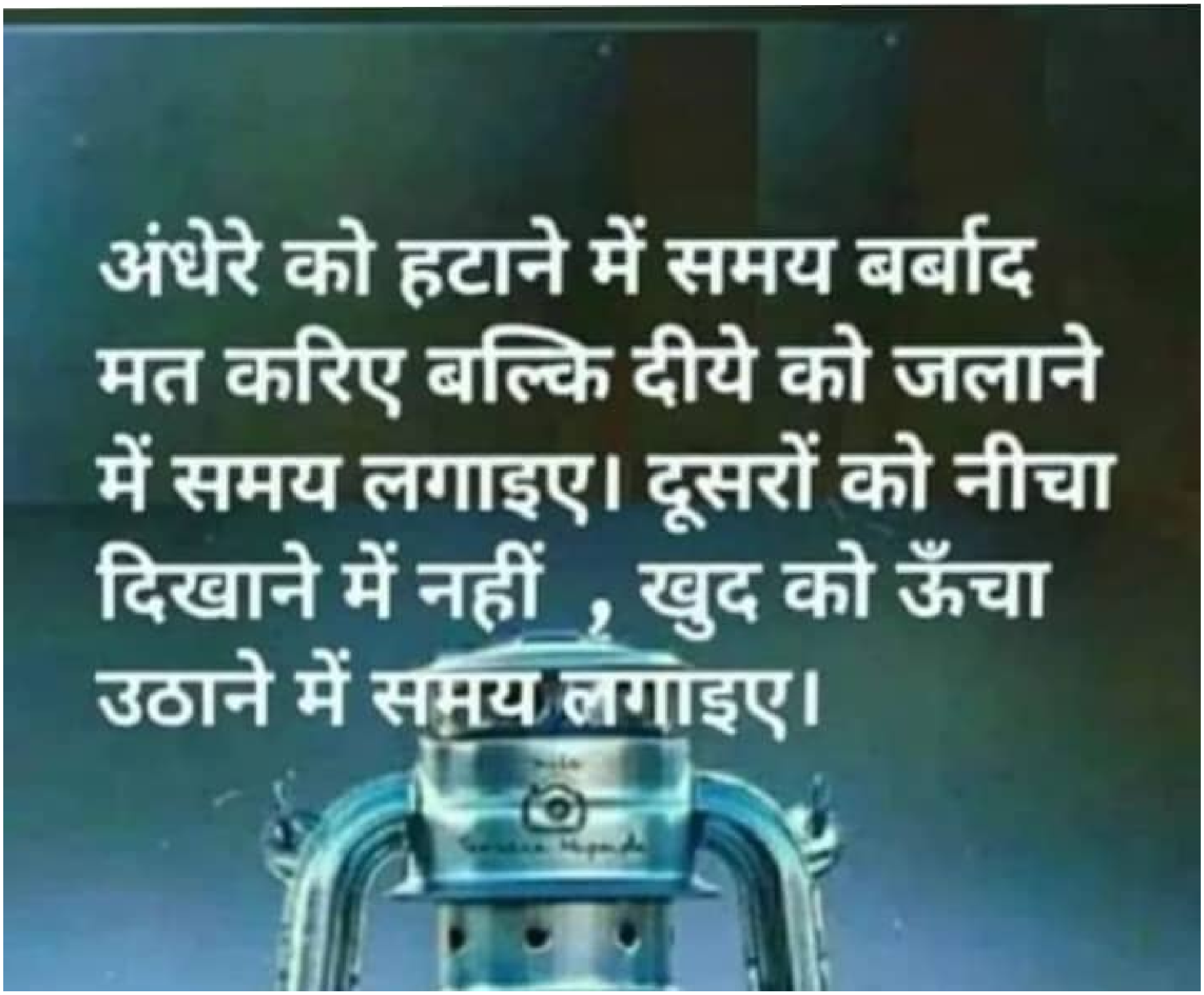
अंधेरे को हटाने में समय बर्बाद
मत करिए बल्कि दीये को जलाने
में समय लगाइए। दूसरों को नीचा
दिखाने में नहीं , खुद को ऊँचा
उठाने में समय लगाइए।

CamScanner

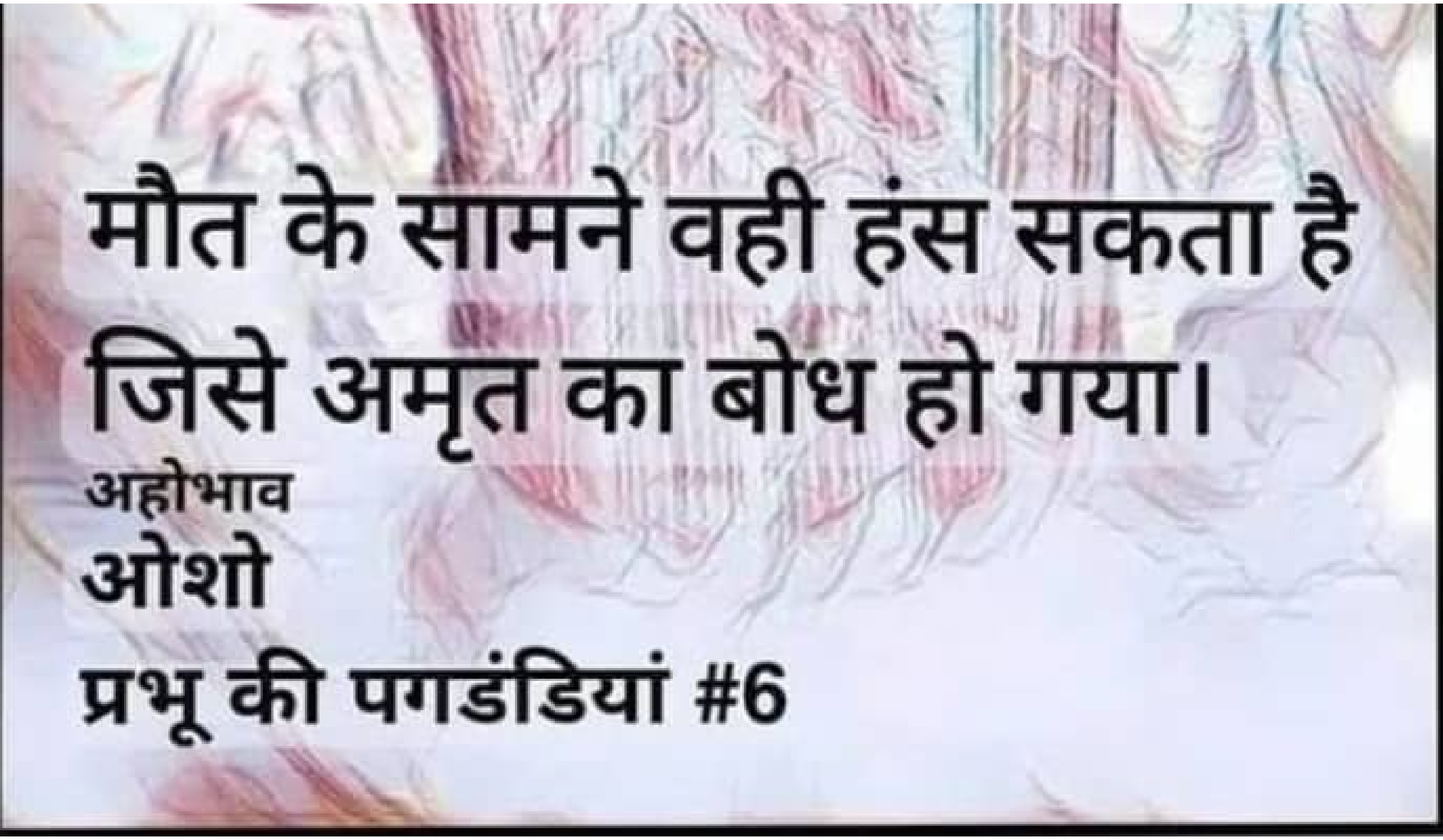

CamScanner

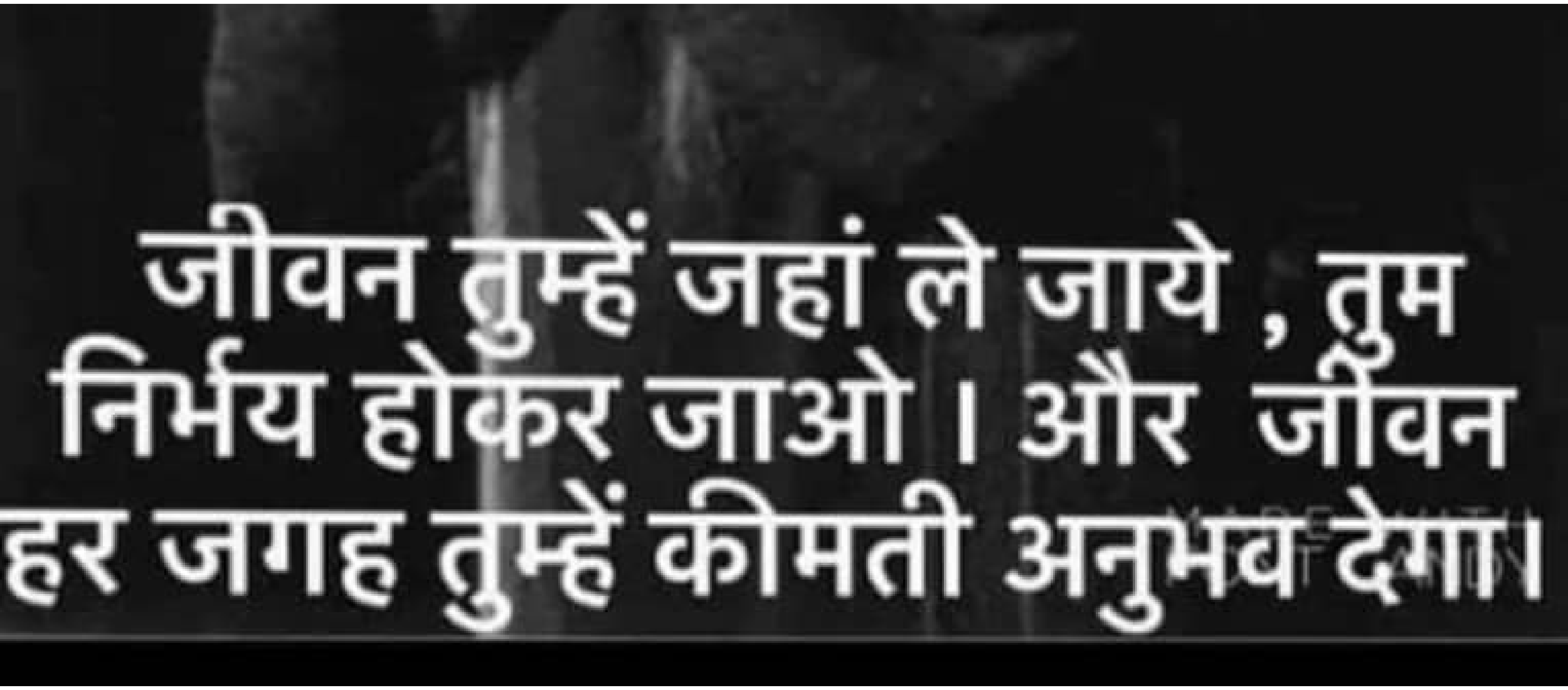

CamScanner

CamScanner

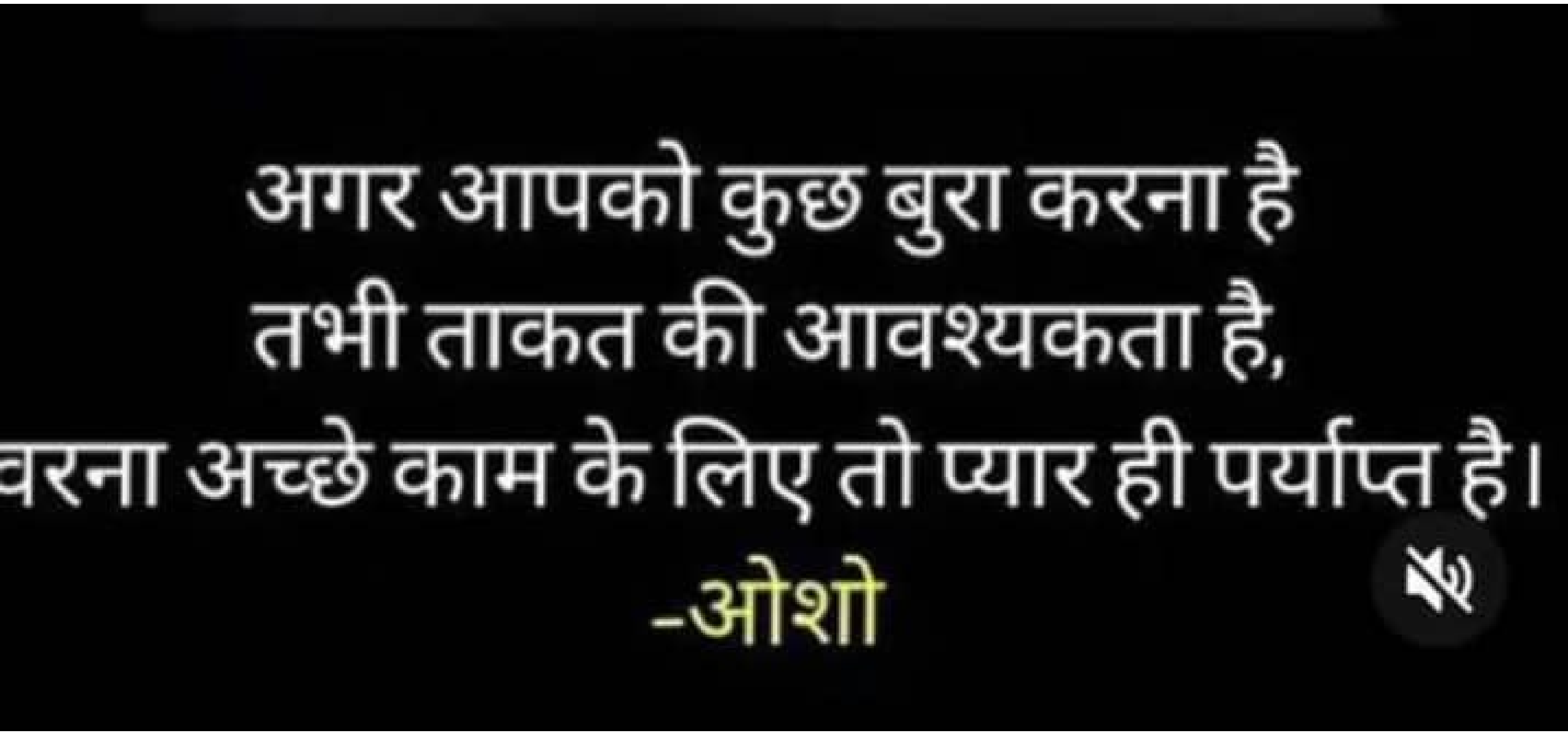
अगर आपको कुछ बुरा करना है
तभी ताकत की आवश्यकता है,
वरना अच्छे काम के लिए तो प्यार ही पर्याप्त है।
-ओशो

CamScanner

कुछ कर गुजरने की लौ अगर तासीर में है ..
SH Subhash Hooda
तो क्या फ़र्क़ पड़ता है कि क्या तक़दीर में है ॥

CamScanner

तुम इश्वर को केवल धन्यवाद देना अहोभाव से भिखारि मत बन जाना! तुम भीतर के सम्राट होने के लिए पैदा हुए हो भिखारि नही...

ओशो अहोभाव

CamScanner

गुरुओं से ज्यादा हिंसात्मक

आदमी खोजने मुश्किल हैं।

किसी की गर्दन पकड़कर

वे उसको ढालने की कोशिश करते हैं कि

ऐसा कपड़ा पहनो, ऐसा बाल रखो,

ऐसा सिर घुटाओ,

यह करो, वह करो।

सब बिल्कुल ठोक देते हैं - यह खाओ,

वह पीओ,

ऐसे सोओ, ऐसे उठो।

सब ठोककर उस आदमी को मार डालते हैं।

CamScanner

मनुष्य का अहंकार अद्भुत है.!
कारखाने खोले हुए हैं,
भगवान को बनाने के..!
और इनमें झगड़े भी होते हैं
कि हमारे बनाए भगवान
सच्चे हैं, और तुम्हारे झूठे!
ओशो

CamScanner

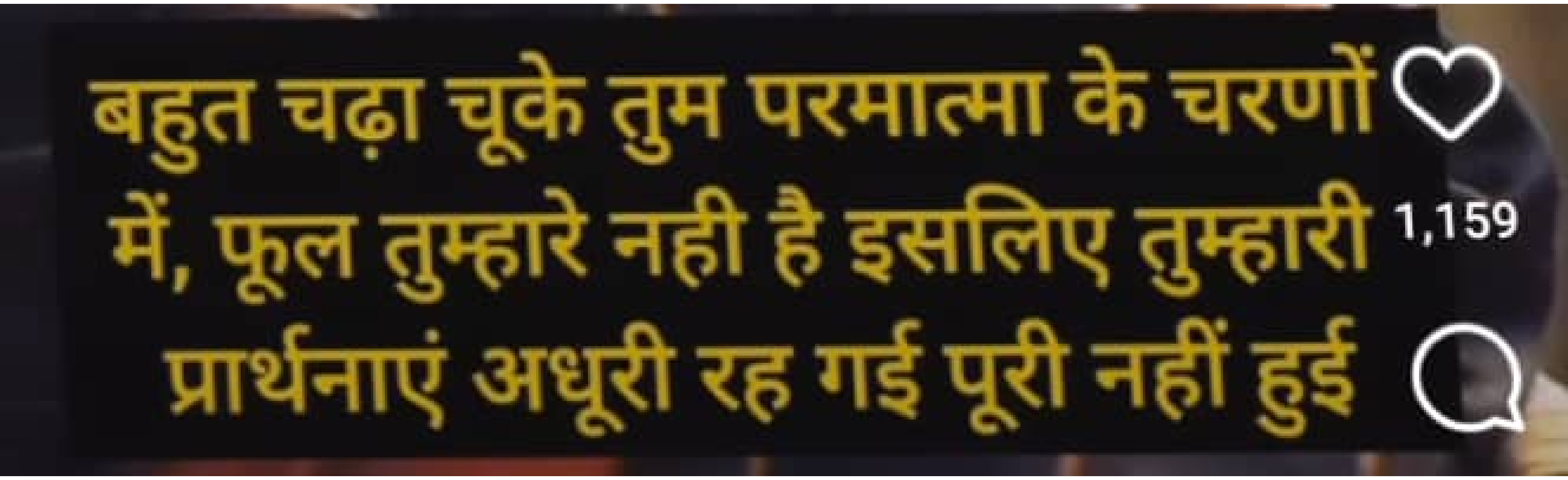

CS CamScanner

तुम्हारा तो एक ही फूल है अगर
कभी चढ़ाना हो तो वो प्रेम
का फूल है

CS CamScanner

ओSHO
ये संसार ही परमात्मा हों जाता हैं
ये चारों तरफ़ फ़ैला हुआ विस्तार ही
ब्रह्म हों जाता हैं ब्रह्म और परमात्मा और
संसार और जगत अलग-अलग बाते
नहीं है। इसी सत्य को देखने के दो ढंग हैं।
@O.S.H.O_

CamScanner

मैं शून्य पे सवार हूँ... बेअदब सा मैं खुमार हूँ... अब मुश्किलों से क्या डरूं.... मैं खुद कहर हज़ार हूँ...

CamScanner

Budhhaquotes_Hindi
जीवन एक बड़ा सफर है, आपको हर
किसी को जवाब देने और हर चीज पर
प्रतिक्रिया करने की जरुरत नही है !!

CamScanner

जो भी समझदार और सजग है
वो कभी साधना नही करता,
जिद्दू कृष्णमूर्ति...💌

CamScanner

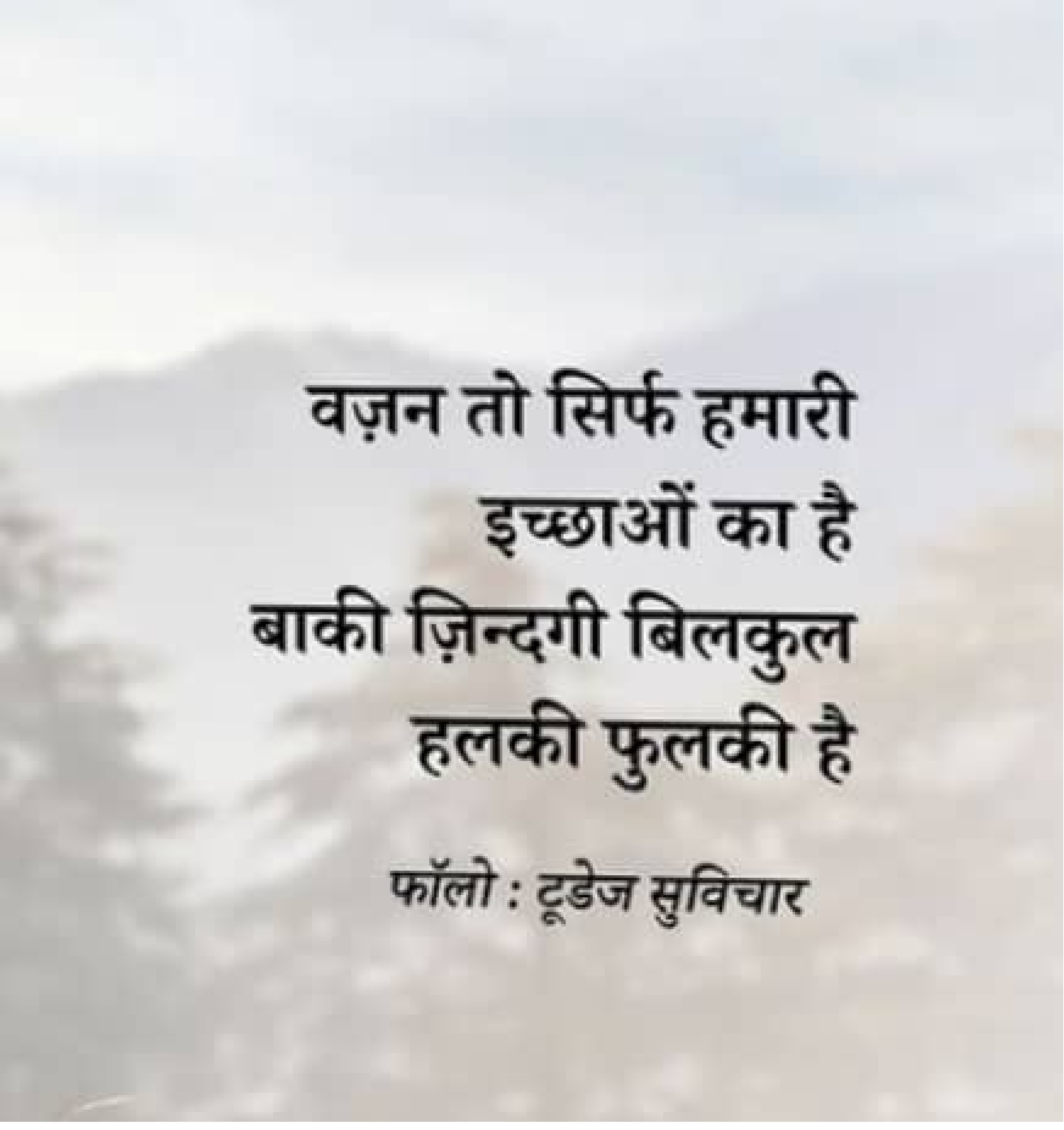

CamScanner

CamScanner

जीवन वैसा हो जाता है,जैसे हम हैं,गांव वैसा हो जाता है,जैसा मैं हूं।सारी पृथ्वी वैसी हो जाती है,जैसा मैं हूं।मैं ही विस्तृत होकर सारे जीवन का अनुभव बन जाता हूं।

CamScanner

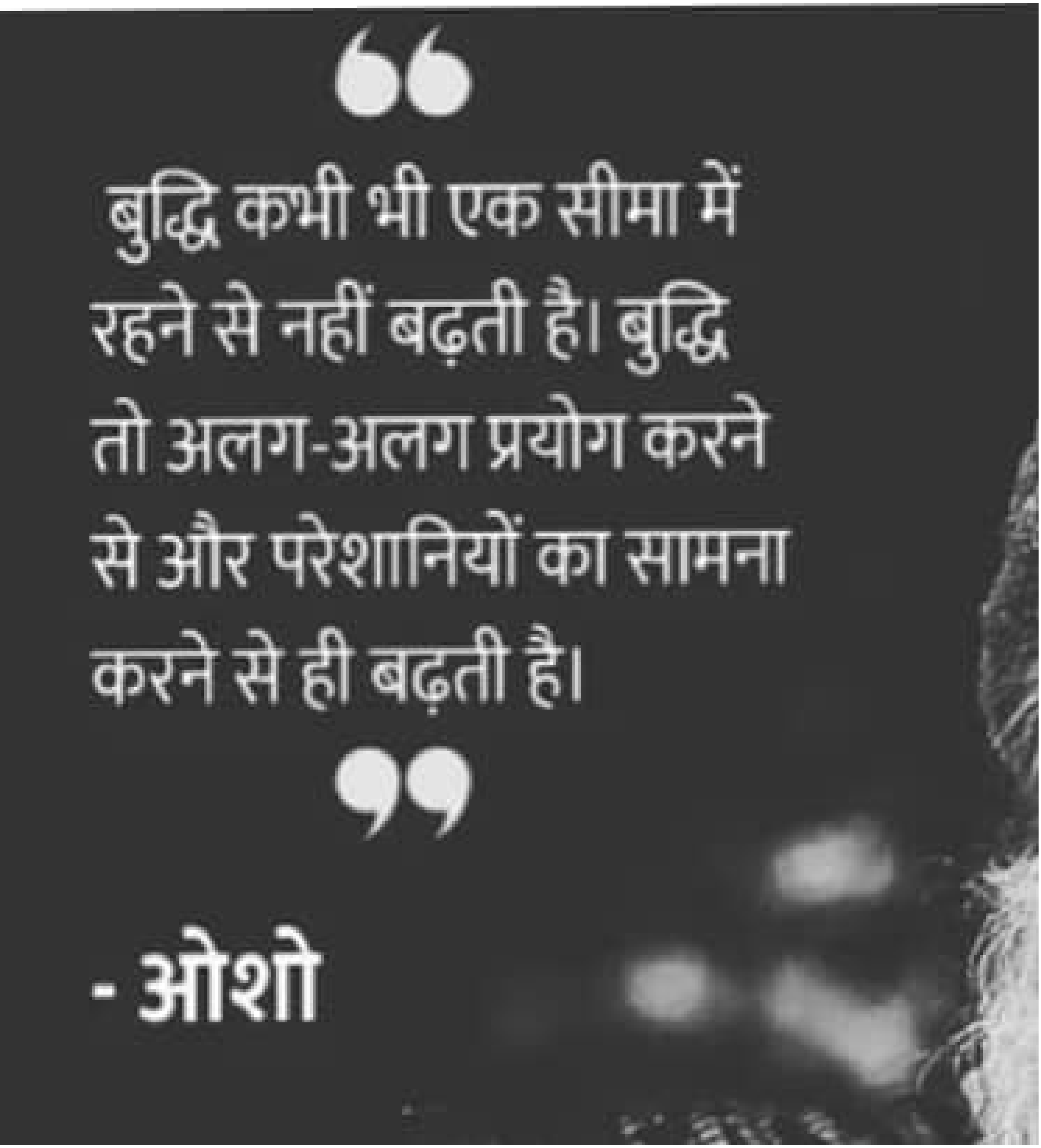

CS CamScanner

यदि आपकी खुशी दूसरों पर निर्भर करती है, तो आप एक गुलाम हो। अभी आप पूरी तरह से मुक्त नहीं हुए हो अभी आप बंधन (गुलामी) में बंधे हो...

ओशो

CamScanner

एक पंद्रह दिन के लिए
एंबीशन छोड़ कर देखें, सिर्फ
पंद्रह दिन के लिएएक पंद्रह
दिन के लिए ऐसे जीएं कि
जो है ठीक है। कुछ भी नहीं
होना है, कुछ भी नहीं पाना
है। कहीं नहीं पहुंचना है, जो
है ठीक है। मैं एंबीशन
छोड़ता हूं। पंद्रह दिन एक
नॉन-एंबीशस आदमी की
तरह जीऊंगा, जिसकी कोई
महत्वाकांक्षा नहीं है।

और आप पंद्रह दिन के बाद
दुबारा दुनिया में
महत्वाकांक्षा रखने में समर्थ
नहीं रह जाएंगे।

CamScanner

मुझसे न मांगिये मशवरे
मंदिर और मस्जिद के मसलों पर
मैं इंसान हूँ साहब!
खुद किराये के घर में।

CamScanner

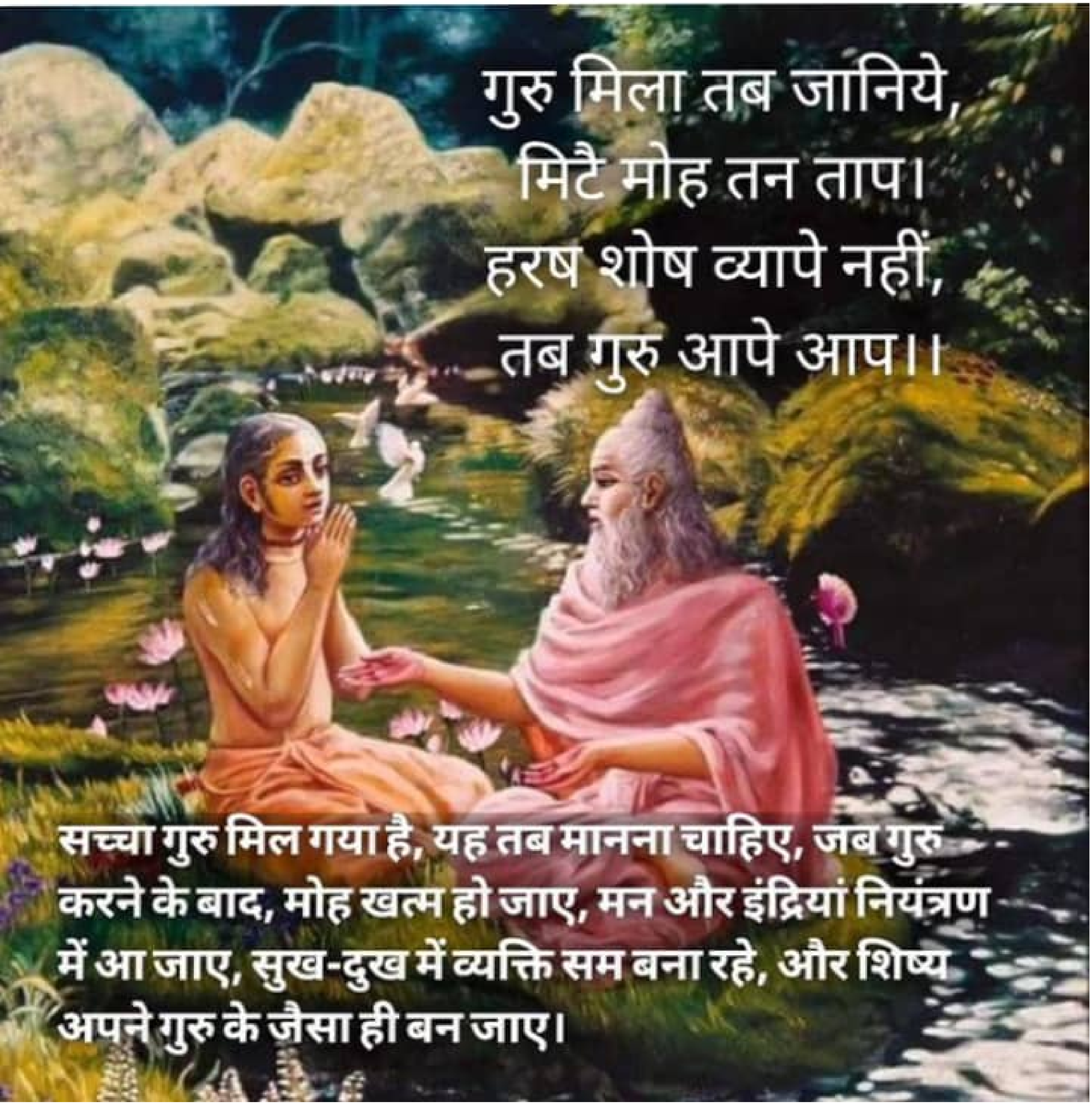
गुरु मिला तब जानिये,
मिटै मोह तन ताप।
हरष शोष व्यापे नहीं,
तब गुरु आपे आप।।
सच्चा गुरु मिल गया है, यह तब मानना चाहिए, जब गुरु
करने के बाद, मोह खत्म हो जाए, मन और इंद्रियां नियंत्रण
में आ जाए, सुख-दुख में व्यक्ति सम बना रहे, और शिष्य
अपने गुरु के जैसा ही बन जाए।

CamScanner

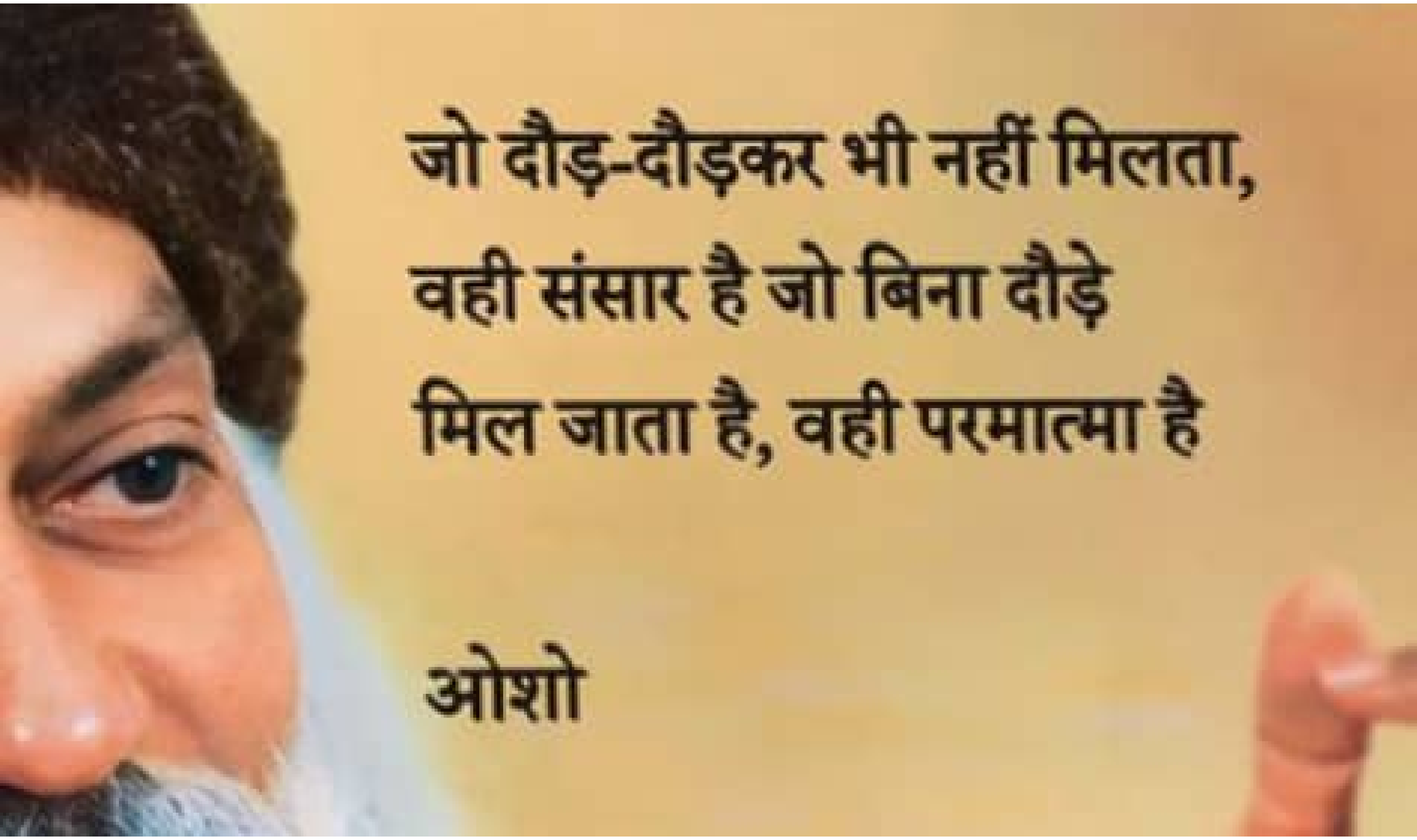

CamScanner

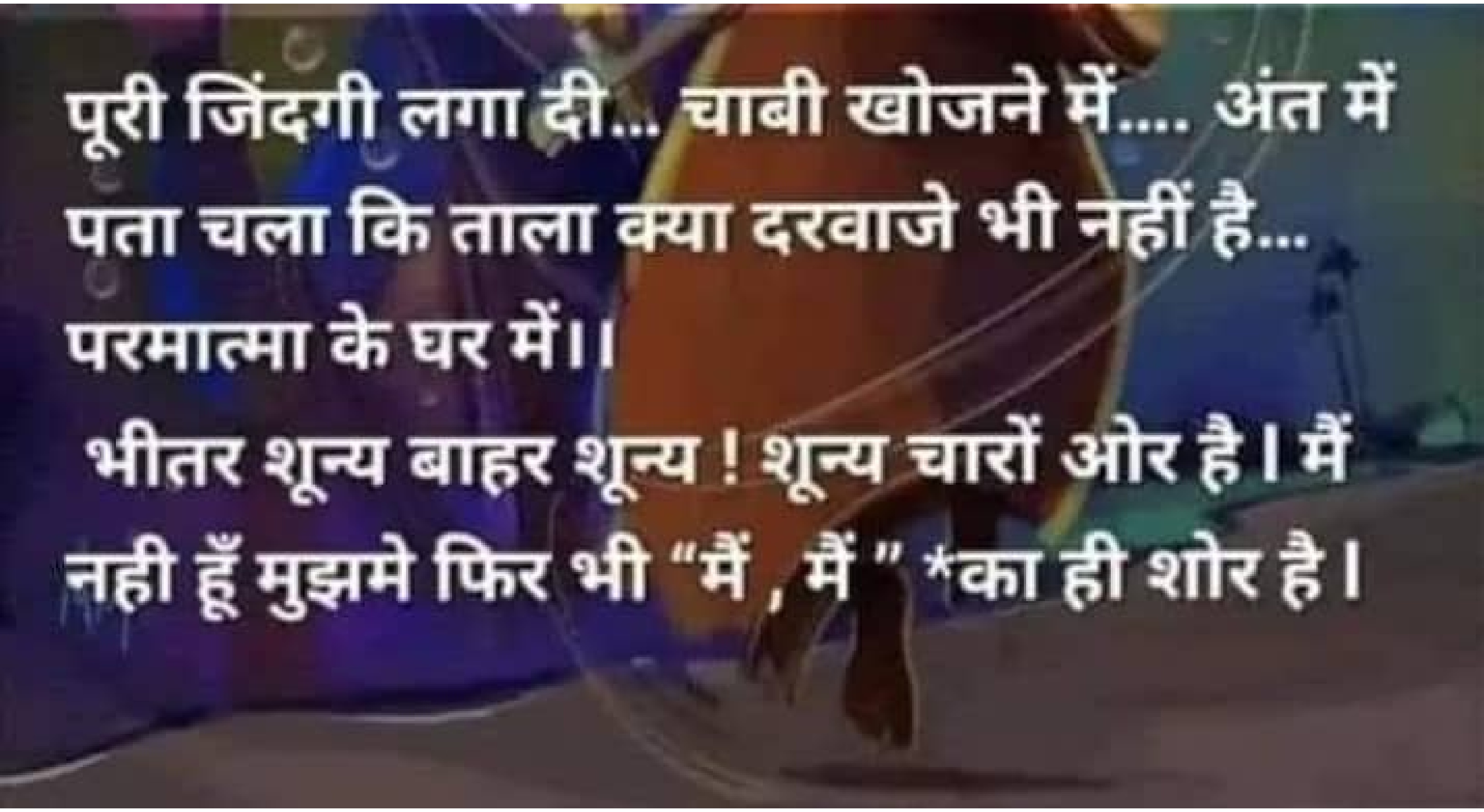
पूरी जिंदगी लगा दी... चाबी खोजने में.... अंत में
पता चला कि ताला क्या दरवाजे भी नहीं है...
परमात्मा के घर में।।
भीतर शून्य बाहर शून्य ! शून्य चारों ओर है। मैं
नही हूँ मुझमे फिर भी “मैं , मैं ” *का ही शोर है।

CamScanner

पुस्तकों और परंपरा
को व्यर्थ बना दो
वही करो जो कि तुम
सोचते हो कि करने
योग्य है --
वह नहीं,जो कि लोग
कहते हैं कि करो ।

CamScanner

आदमी यूं ही जीवन गंवाता है
और सोचता यह है कि कैसा दुर्भाग्य है,
कैसा अभागा हूं,
किन अभिशप्त घड़ियों में पैदा हुआ;
कैसे थे ग्रह-नक्षत्र मेरे खराब?
न ग्रह-नक्षत्र खराब थे, न घडियां बुरी थीं,
तुम उतनी ही क्षमता लेकर पैदा होते हो
जितना कोई भी बुद्ध कभी पैदा हुआ है,
लेकिन क्षमता की तलाश नहीं करते
और दौड़ते फिरते हो बाहर,
पूछते हो औरों से अपना पता।
अपना पता पूछना हो तो आंख बंद करो।
अपना पता पूछना हो तो विचार बंद करो।
अपना पता पूछना हो तो
मारो गहरे से गहरे डुबकी अपने में।
उतरो भीतर!
वहीं से रसधार मिलेगी
ध्यान का इतना ही अर्थ है।
निर्विचार हो जाने की कला।
और जिसके हाथ में निर्विचार होने की कला आ गयी,
सोने की कुंजी आ गयी,
जो सब ताले खोल दे।

☆ साहिब मिले साहिब भये, प्रवचन~३, ओशो ☆

CamScanner

॥प्रेममय जयते॥

॥पवीत्र आत्मा॥,
वृद्ध अवस्था नहीं 'मुक्त' अवस्था है,
गुरुवार १६-०२-२०१७

.... जीवनभर तो परिवार के लिए, समाज के लिए जी लिया। अब बचा जीवन केवल और केवल अपनी आत्मा के लिए जिएँ। आत्मा के कारण ही आज आपका अस्तित्व है। आत्मा चली गई तो आप एक 'बॉडी' (शरीर) कहलाएँगे। शरीर का बेकार ही 'अहंकार' होता है। एक आदमी जाने से इस दुनिया में कुछ नहीं रुकता है। आप थोड़ा सोचो, आपके जाने के बाद क्या होगा? ऐसा ही सूरज उगेगा, ऐसे ही शाम होगी, ऐसी ही रात होगी। बस, आप इस दुनिया में न होंगे! दुनिया के सारे व्यवहार वैसे ही चलते रहेंगे। आप बेकार ही अपने शरीर के 'अहंकार' को महत्व देते रहते हैं। यह शरीर सब कुछ नहीं है। सब कुछ है आत्मा। अब आप उसके लिए ही जिएँ। इसलिए, नियमित रुप से एकांत में बैठकर अपनी आत्मा के सान्निध्य में रहें। उसे समय दें। आत्मा से बढ़कर कोई सखा , कोई दोस्त नहीं है। वही आपको निर्देश देने लगेगा - क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। वह एक बार आपका गुरु हो गया कि बाहेर (बाहर) से ज्ञान लेने की आवश्यकता ही नहीं होगी।

॥वसुधैव कुटुंबकम॥

CamScanner

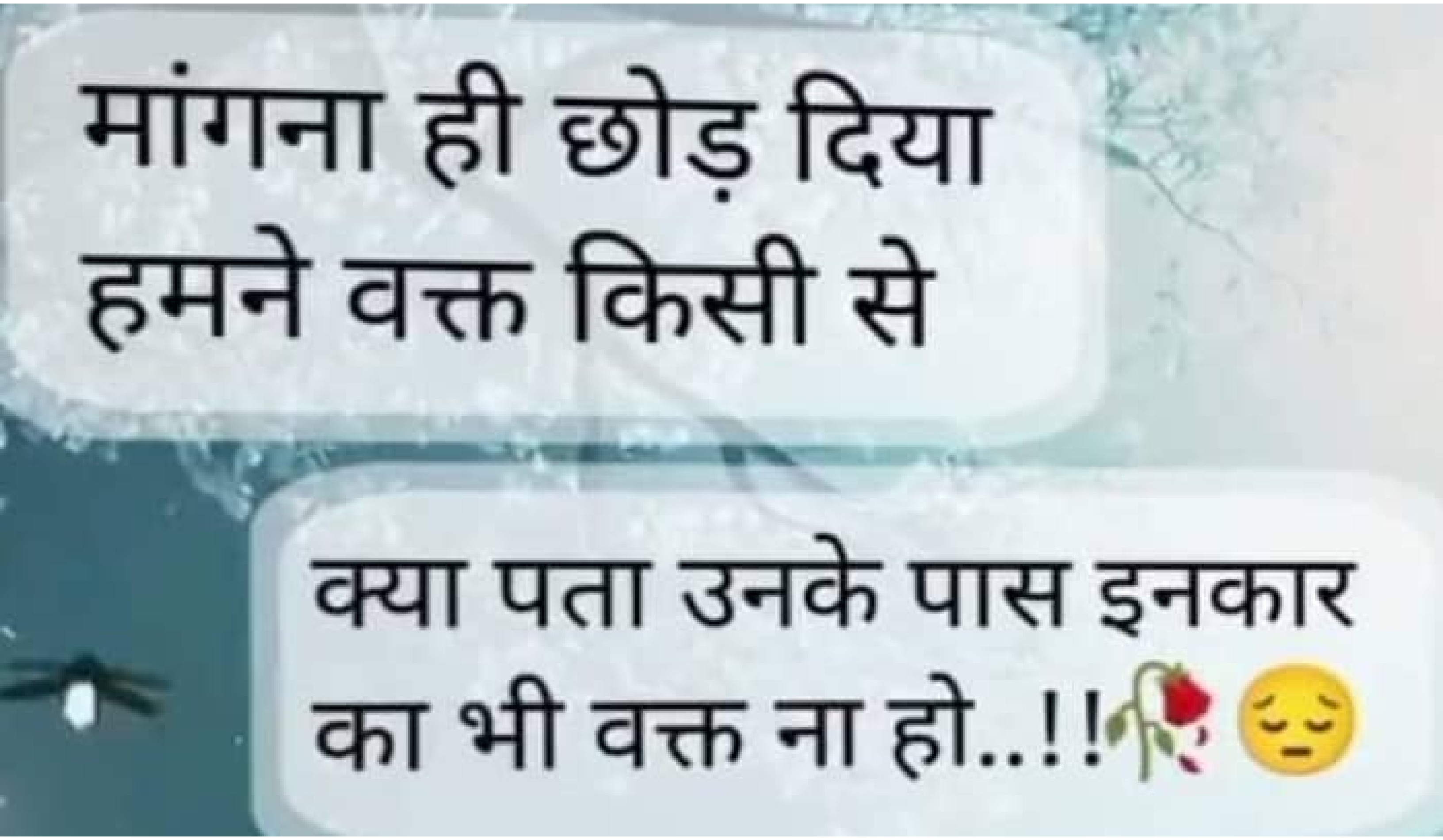

CamScanner

इच्छाओं के रहते यदि प्राण चले जाए
तो वो हुई मृत्यु..

ओर प्राण के रहते हुए इच्छाये चली
जाए तो वो हुई मुक्ति..

ओशो

CamScanner

संन्यास- एक नई आंख

एक बीज टूट जाता है और हरे पत्ते निकल आते हैं- परमात्मा का प्रमाण है। और क्या प्रमाण चाहिए? और बड़ा क्या चमत्कार होगा ? मुर्दा से दिखते बीज से हरे पत्ते निकल आए हैं, पत्तों में पत्ते निकलते गए हैं, कलियां आ गई हैं, हरे पत्तों में लाल कलियां आ गई हैं! फूल खिल आया है। जिन पत्तों में कोई गंध न थी, जिस भूमि से पत्ते उठे उस भूमि में कोई गंध न थी, और फूल ने वातावरण को सुगंध से भर दिया, आपूरित कर दिया ! और क्या चमत्कार है? इतना काफी है। जिनके पास आंखें हैं, जिनके पास अनुभव करने को हृदय है, जिनके पास थोड़ी सी भी प्रज्ञा है, जरा सा भी बोध है—उनके लिए परमात्मा का प्रमाण सुबह में मिल जाता है, सांझ में मिल जाता है, उठते-बैठते मिल जाता है, लोगों की आंखों में मिल जाता है। उनके लिए किसी रसूल की कोई जरूरत नहीं है..✍️❤️💻

- बिरहिनी मंदिर दियना बार

❤️ओशो❤️

CamScanner

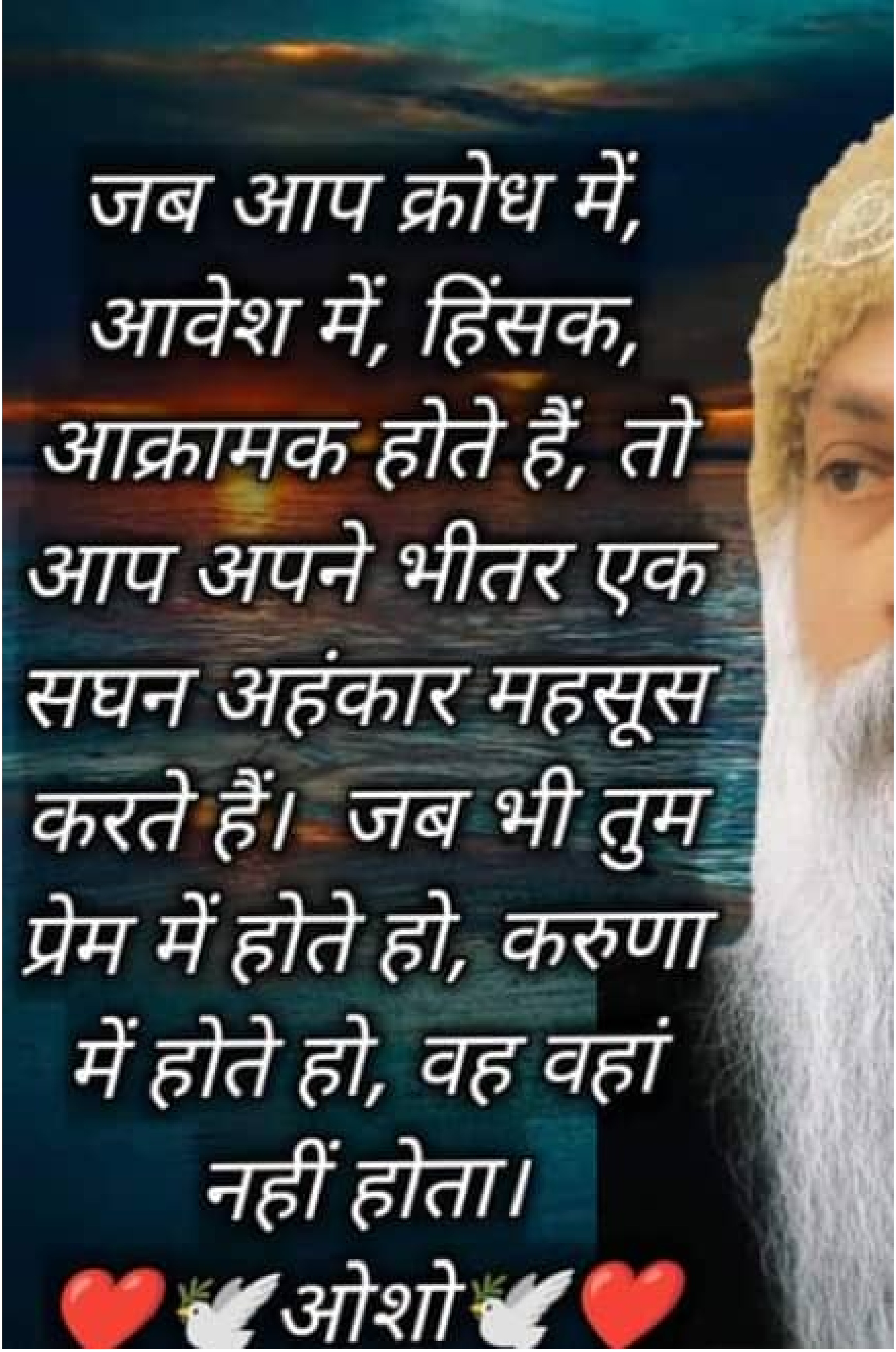
जब आप क्रोध में,
आवेश में, हिंसक,
आक्रामक होते हैं, तो
आप अपने भीतर एक
सघन अहंकार महसूस
करते हैं। जब भी तुम
प्रेम में होते हो, करुणा
में होते हो, वह वहां
नहीं होता।
ओशो

CamScanner

बढ़ गया कि मारपीट हो गई। मारपीट हो गई और दोनों ने कहा कि अब यह साझेदारी खत्म, यह पार्टनरशिप बंद, अब नहीं करते। अब अपनी तरफ से ही घिसट लेंगे, मगर यह नहीं चलेगा। यह तो काफी धोखा चल रहा है।

कहते हैं, परमात्मा को बड़ी दया आई। पहले आती रही होगी अब नहीं आती। क्योंकि परमात्मा भी थक गया दया कर—कर के, कुछ सार नहीं। आदमी कुछ ऐसा ह,ऐ कि तुम दया करो तो भी उस तक दया पहुंचती नहीं। परमात्मा भी थक गया होगा। पर यह पुरानी कहानी है, दया आ गई। परमात्मा मौजूद हुआ, प्रगट हुआ। उसने उस दिन सोचा कि आज दोनो को आशीर्वाद दे दूंगा। अंधे के पास जा कर कहूंगा मांग ले जो तुझे मांगना है। स्वभावत: अंधा मांगेगा कि मुझे आंखें दे दो, क्योंकि वही उसकी पीड़ा है,। लंगड़े से कहूंगा, जो तुझे मांगना है तू मांग ले। वह मांगेगा पैर, उसको पैर दे दूंगा। अब दोनों को स्वतंत्र कर देना उचित है।

वह गया, लेकिन रोता हुआ वापिस लौटा। परमात्मा रोता हुआ वापिस लौटा! क्योंकि अंधे से जब उसने कहा कि मैं परमात्मा हूं तुझे वरदान देने आया हूं मांग ले जो मांगना है—उसने कहा कि लंगडे को अँधा कर दो। जब उसने लगडे से कहा तो लंगडे ने कहा कि अंधे को लंगडा कर दो प्रभु। 'ऐसे ही अज्ञनुभवों के कारण उसने आना भी जमीन पर धीरे—धीरे बंद कर दिया। कोई सार नहीं है। बीमारी दुगुनी हो गई। आने से कुछ फायदा न हुआ। दया का परिणाम और घातक हो गया।

अंधे ने मांगा, वहीं भूल हो गई। लंगड़े ने मांगा, वहीं भूल हो गई। आदतें पुरानी थीं और अभी भी क्रोध का जहर बाकी था। तो परमात्मा भी सामने खड़ा था, फिर भी चूक गए। आदमी के सामने कई बार मोक्ष की घड़ी आ जाती है, फिर भी आदमी चूक जाता है (क्योंकि पुरानी आदतें हमला करती हैं और मोक्ष की घड़ी में बड़ी जोर से हमला करती हैं। क्योंकि आदतें भी अपनी रक्षा करना चाहती हैं। हर आदत अपनी रक्षा करती है, टूटना नहीं चाहती।

ओशो - अष्टावक्र: महागीता, (भाग–1) प्रवचन–15
संकलन-रामजी 🙏🌹🌹

👍 28 1 comment • 5 shares

CamScanner

मैं अपने ख़िलाफ बातें
अक्सर ख़मोशी से सुनता हूँ,
जवाब देने का काम मैंने
वक़्त को दे रखा है...
SmileWorld.in

CamScanner

सत्य वचन
इंसान की समझ बस
इतनी है कि
उसे जानवर कहो तो
वह नाराज हो जाता है
और शेर कहो
तो खुश हो जाता है।
@nicequote.in
Nicequote.in

CamScanner

1:30 pm 0 KB/s VoLTE 4G 60%

कोई बीस वर्ष पहले, मैं एक वर्ष तक रायपुर में रहा था। जिस मकान में मैं रहता था, एक बूढ़ा आदमी उसी मकान में पड़ोस में रहता था। वह दांत का मंजन बेचने का काम करता था। जब मेरा उससे परिचय हो गया तो मैंने उससे पूछा, कि दांत तो तुम्हारे एक भी नहीं। तुमसे दांत का मंजन कौन खरीदता होगा? तुम अपने दांत नहीं बचा सके और तुम तख्ती लगाकर बैठते हो बाजार में कि ये मंजन से दांत मजबूत हो जाते हैं, दांत गिरने से बच जात हैं और तुम्हारा एक दांत नहीं है। कौन तुमसे मंजन खरीदता होगा? और किस हिम्मत से तुम मंजन बेच आते हो?
उस बूढ़े ने थोड़ी नाराजगी से कहा, इससे क्या फर्क पड़ता है? कई लोग पुरुष होते हुए भी चोलियां बेचते हैं, साड़ियां बेचते हैं, चूड़ियां बेचते हैं।
मैं उससे राजी हुआ, तो उसने इतनी बात और जोड़ी, और उसने कहा, कि फिर लोग अपने दांतों में उत्सुक हैं।मेरे दांत की तरफ देखते कहां?
वस्तुतः उस बूढ़े आदमी ने कहा कि आप मेरे पहले पूछनेवाले हैं, जिसने यह संदेह उठाया। लोग अपने दांत की चिंता कर रहे हैं। दंत-मंजन का डब्बा देखते हैं। मेरे दांत की कौन फिकर करता है?
तुम पंडितों के दांतों की थोड़ी फिकर करो। वे जो बेच रहे हैं, वह उन्हें भी बचा सका। वे जो तुम्हें समझा रहे हैं, उससे उनकी भी समझ नहीं जागी। वे जो तुम्हें दे रहे हैं उससे उन्हें भी कुछ मिला नहीं है। उनके जीवन को थोड़ा परखो। वहां तुम पाओगे। एक रिक्तता पाओगे। भारी तुम पाओगे उन्हें। वजन से दबे हुए पाओगे, लेकिन तुम्हें वह नृत्य वहां न दिखाई पड़ेगा जो कबीर कह रहे हैं--पाइबो रे पाइबो रे ब्रह्मज्ञान।
नाच उठता है हृदय, जब ज्ञान की पहली किरण उतरती है। मोर को नाचते देखा? आषाढ़ के प्रथम दिवसों में आकाश में मेघ घिरने लगते हैं और मोर पंख फैला देते है और नाचता है। वैसा ही ब्रह्मज्ञानी भी नाचता है, जब उसके जीवन में परमात्मा के मेघ घिर जाते हैं। आषाढ़ का दिन आ जाता है। वर्षा होने के करीब हो जाती है। जन्मों-जन्मों की छाती प्यासी थी। मेघ घिर उठे, आषाढ़ का दिवस आ गया। नाच उठता है मन-मयूर। तुमने कोयल को गाते देखा है? पुकारती है प्यारे को, पुकारती रहती है।
विरह की वैसी ही अग्नि खोजी को जलाती है, जब तक कि प्रेमी मिल ही न जाए। मिलन पर बड़ी गहन शांति, बड़ा गहन आनंद।
ज्ञानी का अस्तित्व बदलता है। पंडित की केवल स्मृति भरती है। स्मृति तो यंत्र मात्र है। उसका कोई मूल्य नहीं। तुम्हारा पूरा अस्तित्व अहोभाव

CamScanner

जीवन नियमों के बिना अस्तित्व में है;
खेल नियमों के बिना अस्तित्व में नहीं हो
सकते. केवल झूठे धर्मों के नियम होते हैं,
क्योंकि झूठे धर्म एक खेल हैं.
DevisinhSodha.com

CamScanner

CamScanner

CamScanner

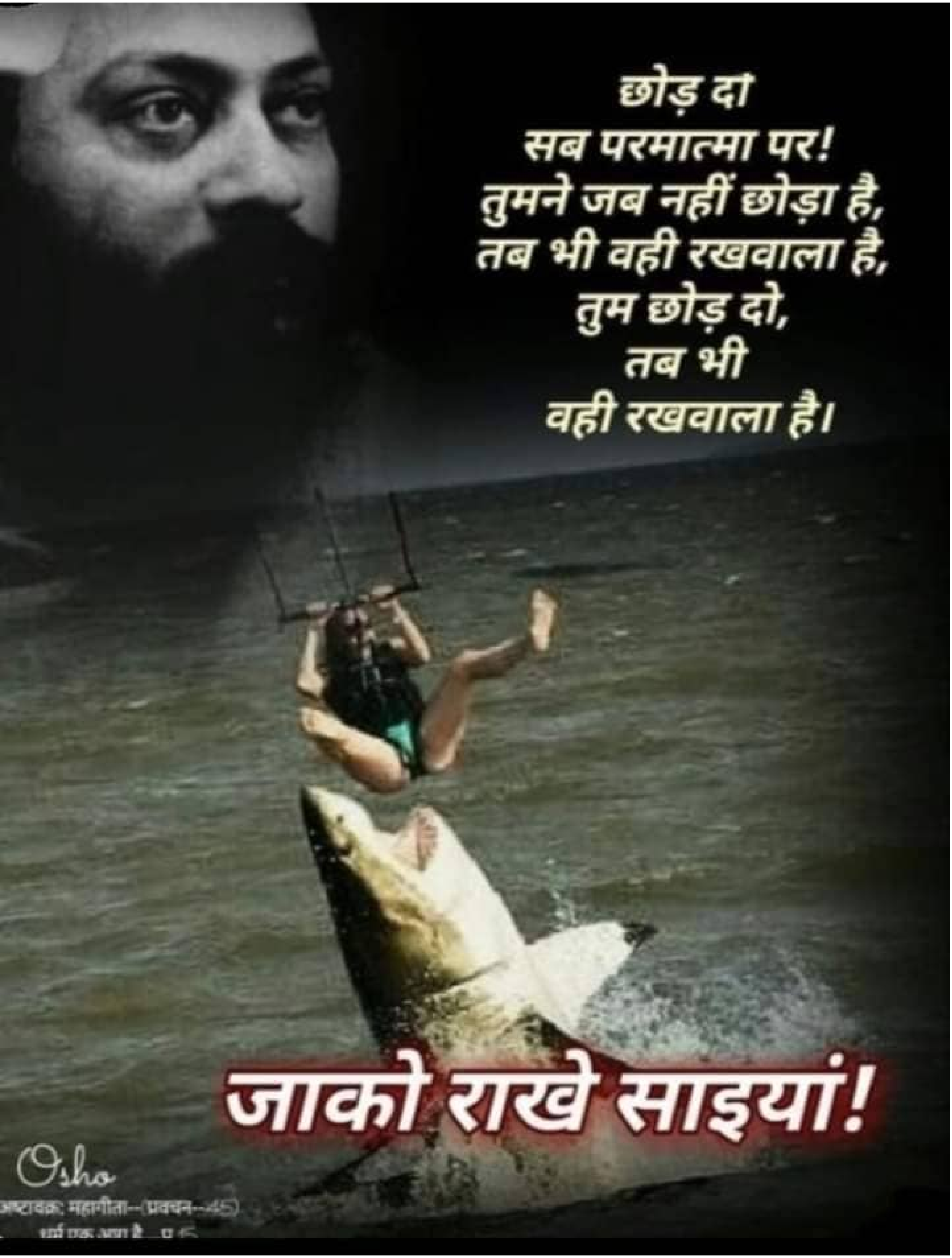
छोड़ दो
सब परमात्मा पर!
तुमने जब नहीं छोड़ा है,
तब भी वही रखवाला है,
तुम छोड़ दो,
तब भी
वही रखवाला है।
जाको राखे साइयां!
Osho

CamScanner

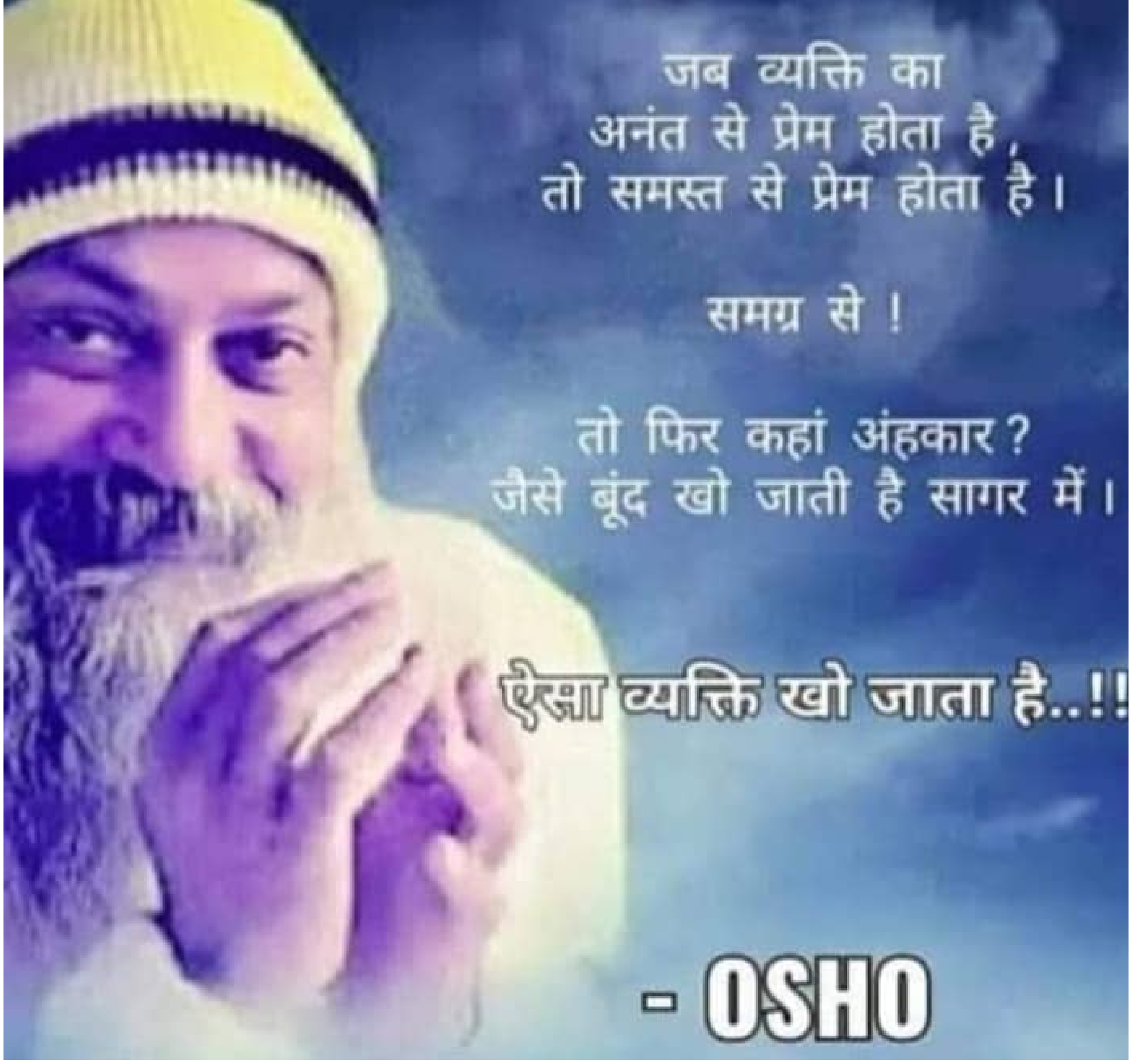
जब व्यक्ति का
अनंत से प्रेम होता है,
तो समस्त से प्रेम होता है।
समग्र से !
तो फिर कहां अंहकार?
जैसे बूंद खो जाती है सागर में।
ऐसा व्यक्ति खो जाता है..!!
- OSHO

CamScanner

कुछ है, जो कि केवल
जीकर ही जाना जा सकता है।
वस्तुतः जो भी महत्वपूर्ण है,
वह जीकर ही जाना जा सकता है।
शब्द सत्य नहीं देते है। न दे सकते है।
"सत्य सदा ही अनुभूति है–
स्वयं की और स्वयं में और स्वयं के द्वारा"
~ ओशो ~

CamScanner

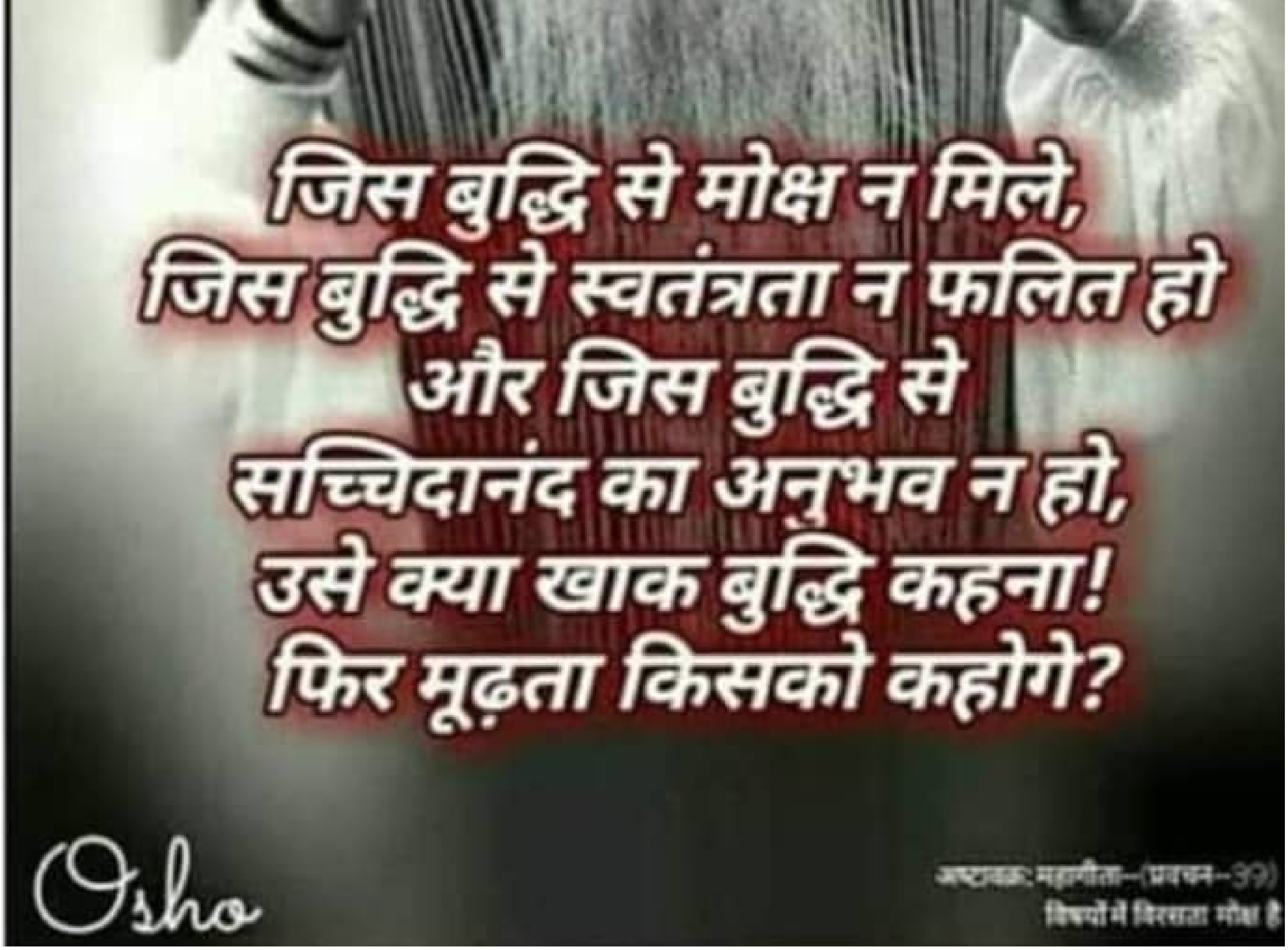
जिस बुद्धि से मोक्ष न मिले,
जिस बुद्धि से स्वतंत्रता न फलित हो
और जिस बुद्धि से
सच्चिदानंद का अनुभव न हो,
उसे क्या खाक बुद्धि कहना!
फिर मूढ़ता किसको कहोगे?
Osho

CamScanner

देखने और दिखाने का जाल छूटा, वो रस न रहा , तो वैराग्य !

अब कोई इच्छा नहीं होती कि कोई देखे
और कहें सुंदर हो, सज्जन हो, सन्त हो,
साधु हो, अगर इतनी भी इच्छा भीतर रह
गई। कि लोग तुम्हें साधु समझे।
तो तुम अभी पुराने जाल में पड़े हो।

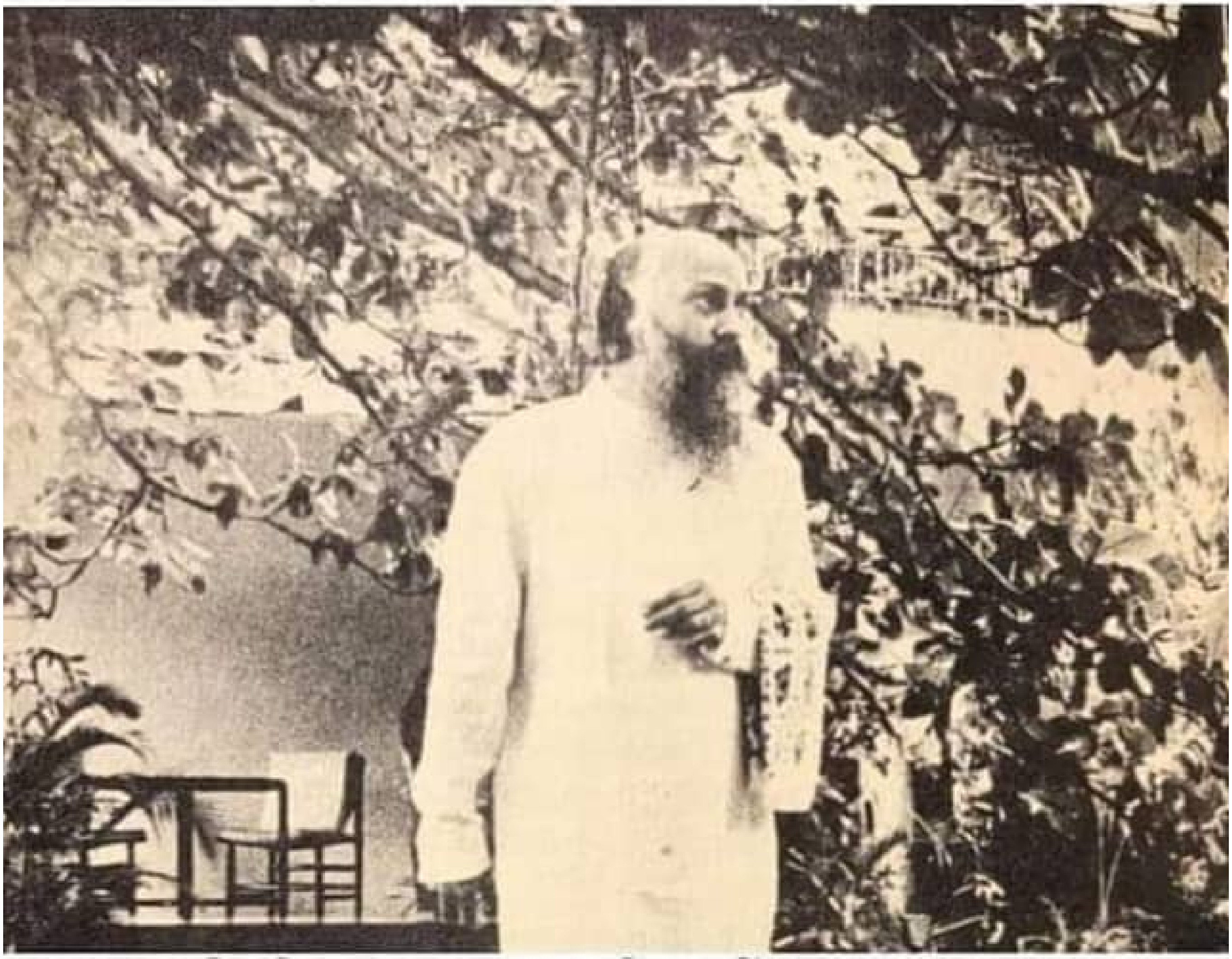

अगर इतनी भी आंकाक्षा रह गई मन में कि लोग तुम्हें सन्तपुरूष समझे।तो तुम अभी पुराने जाल में पड़े हो अभी संसार नहीं छूटा, संसार ने नया रूप लिया, नया ढ़ंग पकड़ा ~ ओशो

CamScanner

CamScanner

हम ऊपर ऊपर तो, पूजा, पाठ, जप, तप, व्रत, नियम, तीर्थ, दान आदि करते हैं, पर भीतर वासना का नंगा नाच चलता ही रहता है।

CamScanner

❤️ 🕉️OSHO SHIVDHARA 🕉️💭♎

Ravi Kumar · 2d ·

कल रात्रि पानी पड़ा है।मौसम गीला है और अभी-अभी फिर धीमी फुहार आनी शुरू हुई है।हवाएं नम हो गयी हैं और वृक्षों से गिरते पत्तों को द्वार तक ला रही हैं।लगता है पतझड़ हो रही है और वसंत के आगमन की तैयारी है।रास्ते पत्तों से ढंक रहे हैं और उनपर चलने में सूखे पत्ते मधुर आवाज करते हैं।

मैं उन पत्तों को देर तक देखता रहा हूँ।जो पक जाता है,वह गिर जाता है।पत्तों पर पत्ते सुबह से शाम तक गिर रहे हैं।पर वृक्षों को उनके गिरने से कोई पीड़ा नहीं हो रही है।इससे जीवन का एक अदभुत नियम समझ में आता है।कुछ भी कच्चा तोड़ने में कष्ट है।पकने से टूटना अपने से हो जाता है।

एक सन्यासी आये हैं।त्याग उन्हें आनंद नहीं बन पाया है।वह कष्ट है और कठिनाई है।संन्यास अपने से नहीं आया,लाया गया है।मोह के,अज्ञान के,परिग्रह के,अहंकार के पत्ते अभी कच्चे थे।जबरदस्ती की है-पत्ते तो टूट गए,पर पीड़ा पीछे छोड़ गए हैं।वह पीड़ा शांति नहीं आने देती है।सोचता हूँ कि आज शाम जाकर पके पत्तों के टूटने का रहस्य उन्हें बताऊँ।संन्यास पहले नहीं है।ज्ञान है प्रथम।उसकी आंख में संसार पके पत्तों की भांति गिर जाता है।संन्यास लाया नहीं जाता, पाया जाता है।

ज्ञान की क्रांति के बाद त्याग कष्ट नहीं, आनंद हो जाता है।

ओशो❤️🙏

CamScanner

CamScanner

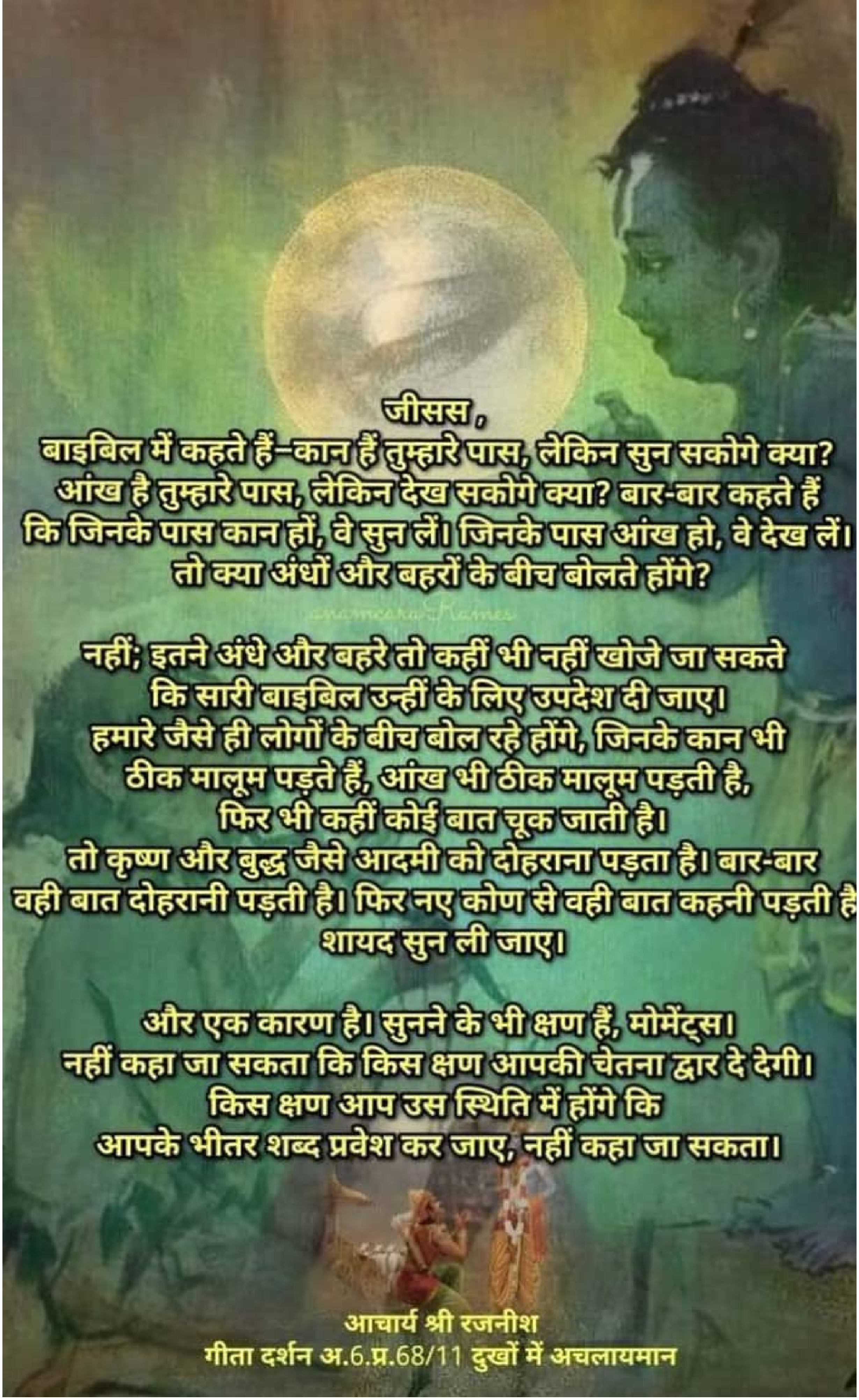
जीसस,
बाइबिल में कहते हैं–कान हैं तुम्हारे पास, लेकिन सुन सकोगे क्या?
आंख है तुम्हारे पास, लेकिन देख सकोगे क्या? बार-बार कहते हैं
कि जिनके पास कान हों, वे सुन लें। जिनके पास आंख हो, वे देख लें।
तो क्या अंधों और बहरों के बीच बोलते होंगे?
नहीं; इतने अंधे और बहरे तो कहीं भी नहीं खोजे जा सकते
कि सारी बाइबिल उन्हीं के लिए उपदेश दी जाए।
हमारे जैसे ही लोगों के बीच बोल रहे होंगे, जिनके कान भी
ठीक मालूम पड़ते हैं, आंख भी ठीक मालूम पड़ती है,
फिर भी कहीं कोई बात चूक जाती है।
तो कृष्ण और बुद्ध जैसे आदमी को दोहराना पड़ता है। बार-बार
वही बात दोहरानी पड़ती है। फिर नए कोण से वही बात कहनी पड़ती है
शायद सुन ली जाए।
और एक कारण है। सुनने के भी क्षण हैं, मोमेंट्स।
नहीं कहा जा सकता कि किस क्षण आपकी चेतना द्वार दे देगी।
किस क्षण आप उस स्थिति में होंगे कि
आपके भीतर शब्द प्रवेश कर जाए, नहीं कहा जा सकता।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.6.प्र.68/11 दुखों में अचलायमान

CamScanner

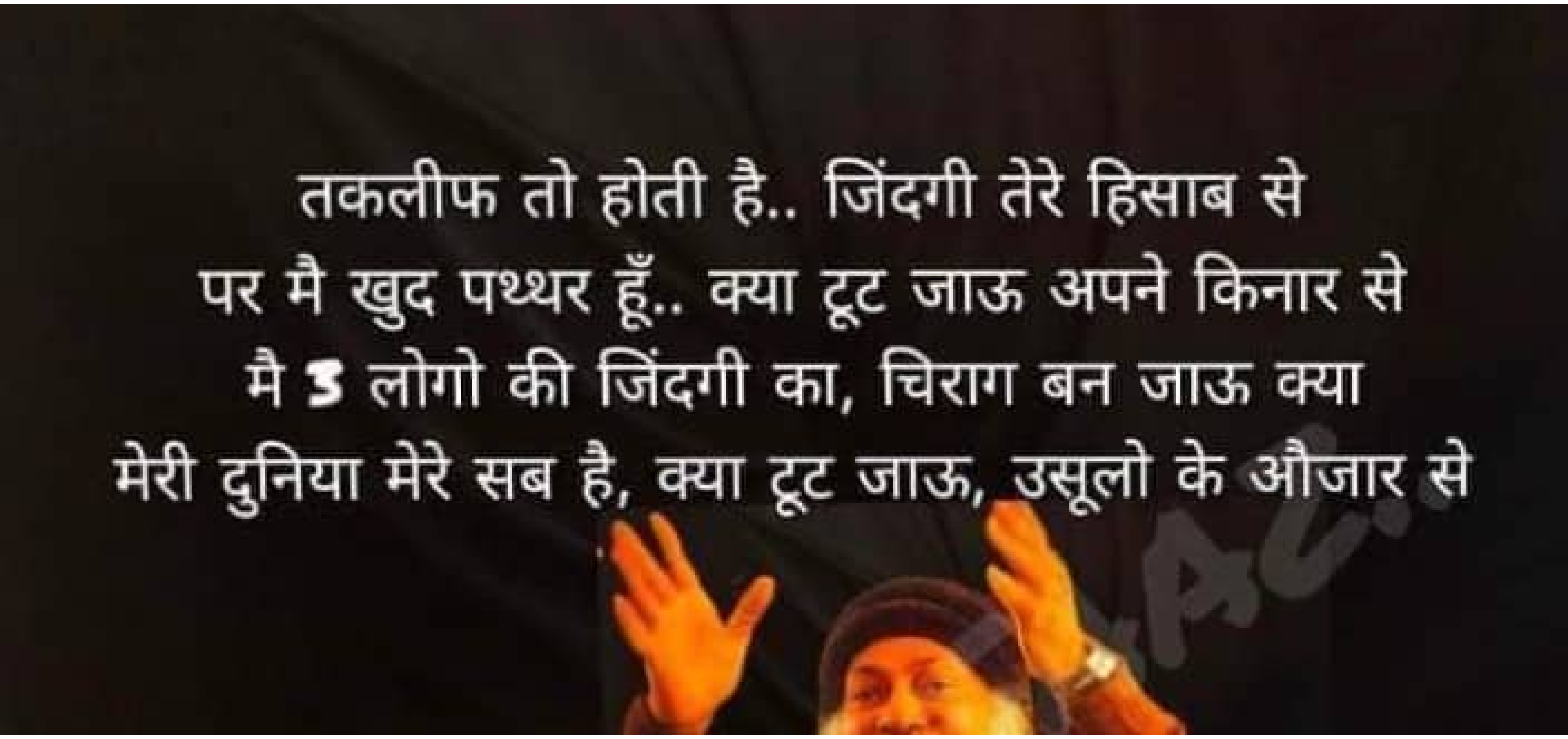
तकलीफ तो होती है.. जिंदगी तेरे हिसाब से
पर मै खुद पथ्थर हूँ.. क्या टूट जाऊ अपने किनार से
मै 5 लोगो की जिंदगी का, चिराग बन जाऊ क्या
मेरी दुनिया मेरे सब है, क्या टूट जाऊ, उसूलो के औजार से

CamScanner

मैं जुगाड में लगा हूँ कि तुम्हे ही
भगवान बना दूँ-और एक तुम हो जो
भगवान के चक्कर काटने में लगे हो,,

CS CamScanner

परमात्मा को लड़कर पाया ही नहीं जाता है।

ओशो अहोभाव

CamScanner

1:08 pm 0 KB/s VoLTE 4G 64%

कभी परमात्मा को संसार से मत लड़ाना, नहीं तो संसार जीतेगा और परमात्मा हारेगा। और इसमें परमात्मा का कोई कसूर नहीं है; तुमने परमात्मा को संसार से लड़ाया, यही भूल हो गई।

परमात्मा परम है, अति सूक्ष्म है, सुवास है, संगीत सौंदर्य है। संसार की स्थूलता से लड़ाओगे, खंड-खंड हो जाएगा, टूट जाएगा, बिखर जाएगा। परमात्मा को लड़कर पाया ही नहीं जाता है। ध्यान भी लड़कर पाया नहीं जाता। समझपूर्वक।

तो मैं तुमसे यह कहूंगा कि जब वासना उठे तो चेष्टा करके ध्यान मत लगाओ। जब वासना उठे तो वासना को समझो, क्या वासना का संदेश है? क्या तुम्हारा मन तुमसे कहना चाहता है? क्या मन तुम्हें बताना चाहता है? कहां ले जाना चाहता है? सुनो इसकी! तुम्हारा मन है, तुम न सुनोगे तो कौन सुनेगा? यह फरियाद भी करे तो कहां करे? आखिर इसकी भी इच्छाएं हैं। यह तुमसे न कहेगा तो किससे कहेगा? इसे प्यास लगी है और तुम अपना ध्यान लगाने की कोशिश कर रहे हो! इसे भूख लगी है और तुम ध्यान लगाने की कोशिश कर रहे हो! इसकी भी सुनो! कुछ बड़ी कठिन बातें नहीं मांग रहा है–प्यास है, भूख है, काम है, प्रेम है, छोटी-छोटी बातें हैं। इसे दो! और जागरूक रहो और देखते रहो कि इसको इतना भोजन देते हैं फिर भी यह तृप्त होता है या नहीं? इसे इतना प्रेम का अवसर मिलता है, फिर भी इसको रस आता है या नहीं? जब धीरे-धीरे तुम्हें एक बात पक जाएगी कि कितना ही दो, इसको रस नहीं आता, तो देने से कुछ हल होनेवाला नहीं है।

मगर खयाल रखना, जल्दी मत करना। यह पकने देना तुम्हारे ही भीतर। मेरी कही बात नहीं. . . कानों सुनी सो झूठ सब। जिस दिन तुम्हारे भीतर ही यह अनुभव का स्वर बजेगा कि यह मन तो अतृप्त ही रहेगा, अतृप्ति इसका स्वभाव है; दुष्पूर है वासना, यह पूरी नहीं होगी; जिस दिन तुम्हें ऐसा समझ में आ जाएगा–खयाल रखना फिर दोहराता हूं, तुम्हें समझ में आ जाएगा–उसी दिन तुम पाओगे मन गया। और तब एक अखंड चेतना जलने लगती है। एक दीया पैदा होता है, एक जागरूकता,
जो लाई हुई नहीं है, जो सहज है।
साधो, सहज समाधि भली।
ओशो

CamScanner

1:07 pm 1 KB/s VoLTE 4G 64%

जैसे कि कोई फूल और पत्थर में लड़ाई करवाए तो पत्थर जीतेगा, फूल नहीं जीत सकता। हालांकि फूल ऊंची अवस्था है और पत्थर नीची अवस्था है, लेकिन यह खयाल रखना कि जब भी तुम नीचाई-ऊंचाई में लड़ाई करवाओगे, नीचाई जीतेगी, ऊंचाई नहीं जीतेगी। क्योंकि ऊंचाई कोमल होती है; फूल जैसी होती है।

जीवन में क्षुद्रताओं से विराटताओं को मत लड़वाना। लट्ठ लेकर सितार से मत जूझ जाना; नहीं तो लट्ठ जीतेगा, सितार हार जाएगा। और इसका यह मतलब नहीं है कि सितार कमजोर है। इसका इतना ही मतलब है कि सितार श्रेष्ठ है, ऊंचा है, सूक्ष्म है। सूक्ष्म के सामने स्थूल को मत लड़ाना। और यही लोग कर रहे हैं; स्थूल को लड़ा रहे हैं सूक्ष्म से। ध्यान को लड़ा रहे हैं वासना से। वासना पत्थर जैसी है; ध्यान फूल जैसा है। इसमें बार-बार ध्यान ही हारेगा। इसे खूब गांठ बांध कर रख लो।

कभी परमात्मा को संसार से मत लड़ाना, नहीं तो संसार जीतेगा और परमात्मा हारेगा। और इसमें परमात्मा का कोई कसूर नहीं है; तुमने परमात्मा को संसार से लड़ाया, यही भूल हो गई।

परमात्मा परम है, अति सूक्ष्म है, सुवास है, संगीत सौंदर्य है। संसार की स्थूलता से लड़ाओगे, खंड-खंड हो जाएगा, टूट जाएगा, बिखर जाएगा। परमात्मा को लड़कर पाया ही नहीं जाता है। ध्यान भी लड़कर पाया नहीं जाता। समझपूर्वक।

तो मैं तुमसे यह कहूंगा कि जब वासना उठे तो चेष्टा करके ध्यान मत लगाओ। जब वासना उठे तो वासना को समझो, क्या वासना का संदेश है? क्या तुम्हारा मन तुमसे कहना चाहता है? क्या मन तुम्हें बताना चाहता है? कहां ले जाना चाहता है? सुनो इसकी! तुम्हारा मन है, तुम न सुनोगे तो कौन सुनेगा? यह फरियाद भी करे तो कहां करे? आखिर इसकी भी इच्छाएं हैं। यह तुमसे न कहेगा तो किससे कहेगा? इसे प्यास लगी है और तुम अपना ध्यान लगाने की कोशिश कर रहे हो! इसे भूख लगी है और तुम ध्यान लगाने की कोशिश कर रहे हो! इसकी भी सुनो! कुछ बड़ी कठिन बातें नहीं मांग रहा है—प्यास है, भूख है, काम है, प्रेम है, छोटी-छोटी बातें हैं। इसे दो! और जागरूक रहो और देखते रहो कि

CamScanner

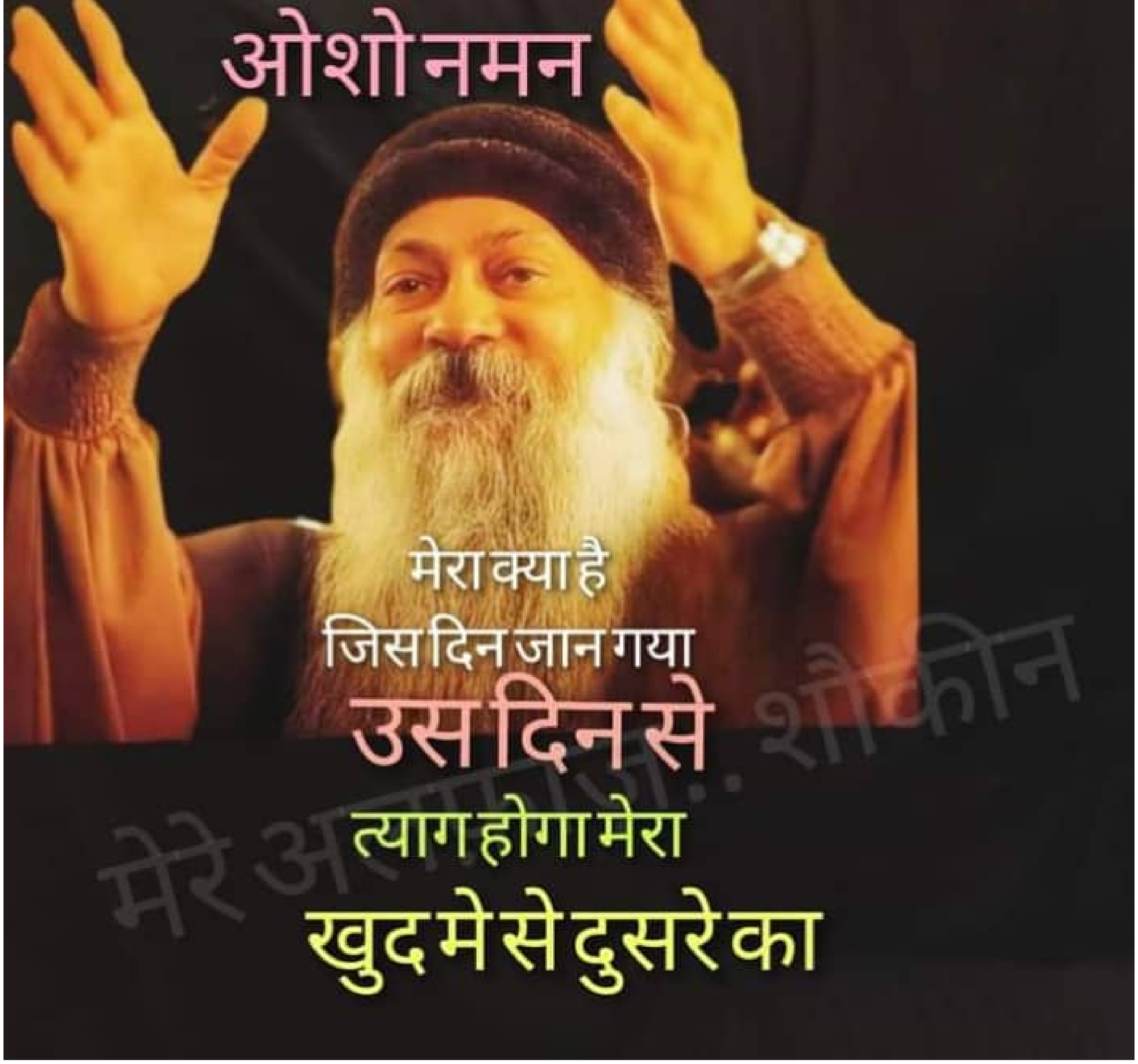

CamScanner

इस जगत की सारी यात्रा
अहंकार की यात्रा है, आना और जाना।
ध्यान रहे, जन्मों की लंबी कथा,
आत्मा की नहीं, अहंकार की कथा है।
अहंकार ही आता और जाता।
आत्मा न तो आती और न जाती।
एक बार भी जिसने यह जान लिया,
उसका आवागमन गया।
उसके लिए लौटने का कोई उपाय न रहा;
सब सेतु गिर गए। खंडित हो गए मार्ग।
लौटने वाला ही खो गया।
इस स्थिति को परम मुक्ति कहा कृष्ण ने।
परम मुक्ति का अर्थ है,
मैं की मुक्ति नहीं, मैं से मुक्ति।
फिर से दोहराता हूं।
परम मुक्ति का अर्थ है,
मैं की मुक्ति नहीं, मैं से मुक्ति।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.5.प्र.54/26
तीन सूत्र–आत्म-ज्ञान के लिए

CamScanner

Sanee Osho
14h ·

जिन्होंने मुझसे अपने को जोड़ा है, मेरी अभीप्सा है कि वे सभी, इस जीवन में जान कर ही विदा हों। कोई कारण नहीं है कि रुकें। जिन्होंने मुझे अपने भीतर हृदय में जगह दी है, उन सबका जीवन यह अंतिम हो सकता है। रुकोगे तो तुम अपने कारण रुकोगे; मेरी तरफ से कोई...कोई रुकावट नहीं है। मैं तुम्हें जल्दी से जल्दी धक्का देना चाहता हूं। तुम छलांग ले लो।

जस पनिहार धरे सिर गागर-(प्रवचन-02)

CamScanner

CamScanner

CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य

Girish Waghela · 21h ·

".. लम्हे फुरसत के आए तो, रंजिशे भूला देना, साहब।
किसी को नहीं खबर की, सांसो की मोहलत कहा तक है...!!

ओशो प्रेम.. 💐💕..

CamScanner

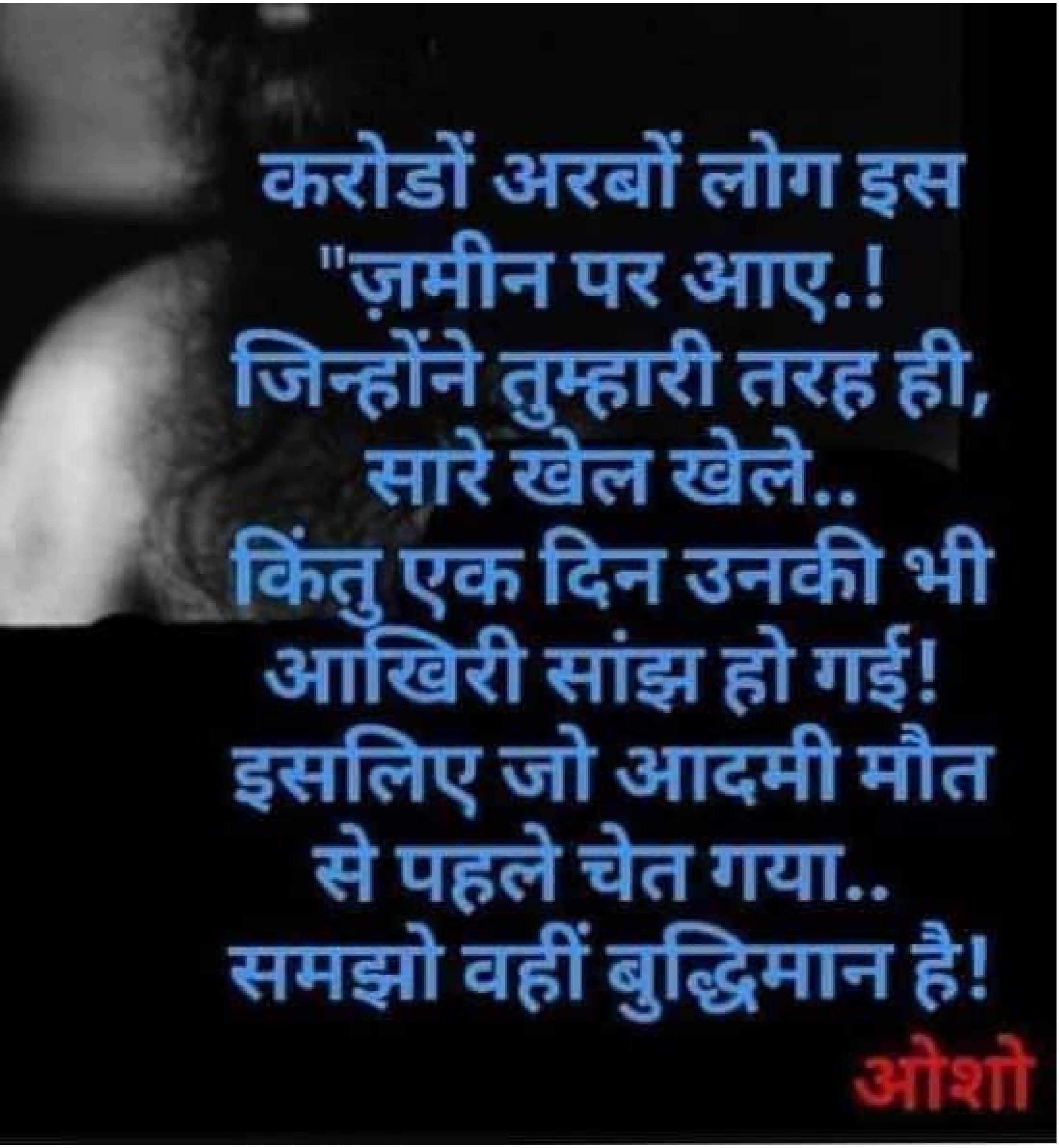

CS CamScanner

सदगुरु कुछ सिखाता नहीं, मिटाता है।

सदगुरु कुछ देता नहीं, छीन लेता है।

ओशो अहोभाव

CamScanner

CamScanner

R 141267

विवरण
DESCRIPTION पत्नी Wife

व्यवसाय Profession	Religious Teacher	
जन्म-स्थान और जन्म की तारीख Place and date of birth	Kutchwadad (M.P.)	
	11·12·1931	(Thirty one)
अधिवास Domicile	INDIA	
कद Height	1 मी. 65 से.मी. M. Cm.	मी. से.मी. M. Cm.
आँखों का रंग Colour of eyes	Brown	
बालों का रंग Colour of hair	Grey	
पहचान के प्रकट चिह्न Visible distinguishing marks	Scar on right eyebrow	

बच्चे – CHILDREN

नाम Name	जन्म की तारीख Date of Birth	लड़का / लड़की Male / Female
—nil—		

R 141267

वाहक का फोटो
PHOTOGRAPH OF BEARER

पत्नी के हस्ताक्षर

जिस दिन आप ने सोच लिया कि
आपने ज्ञान पा लिया है,
आपकी मृत्यु हो जाती है-
क्योंकि अब ना कोई आश्चर्य होगा,
ना कोई आनंद और ना
कोई अचरज. अब आप एक
मृत जीवन जीएंगे.

CS CamScanner

CamScanner

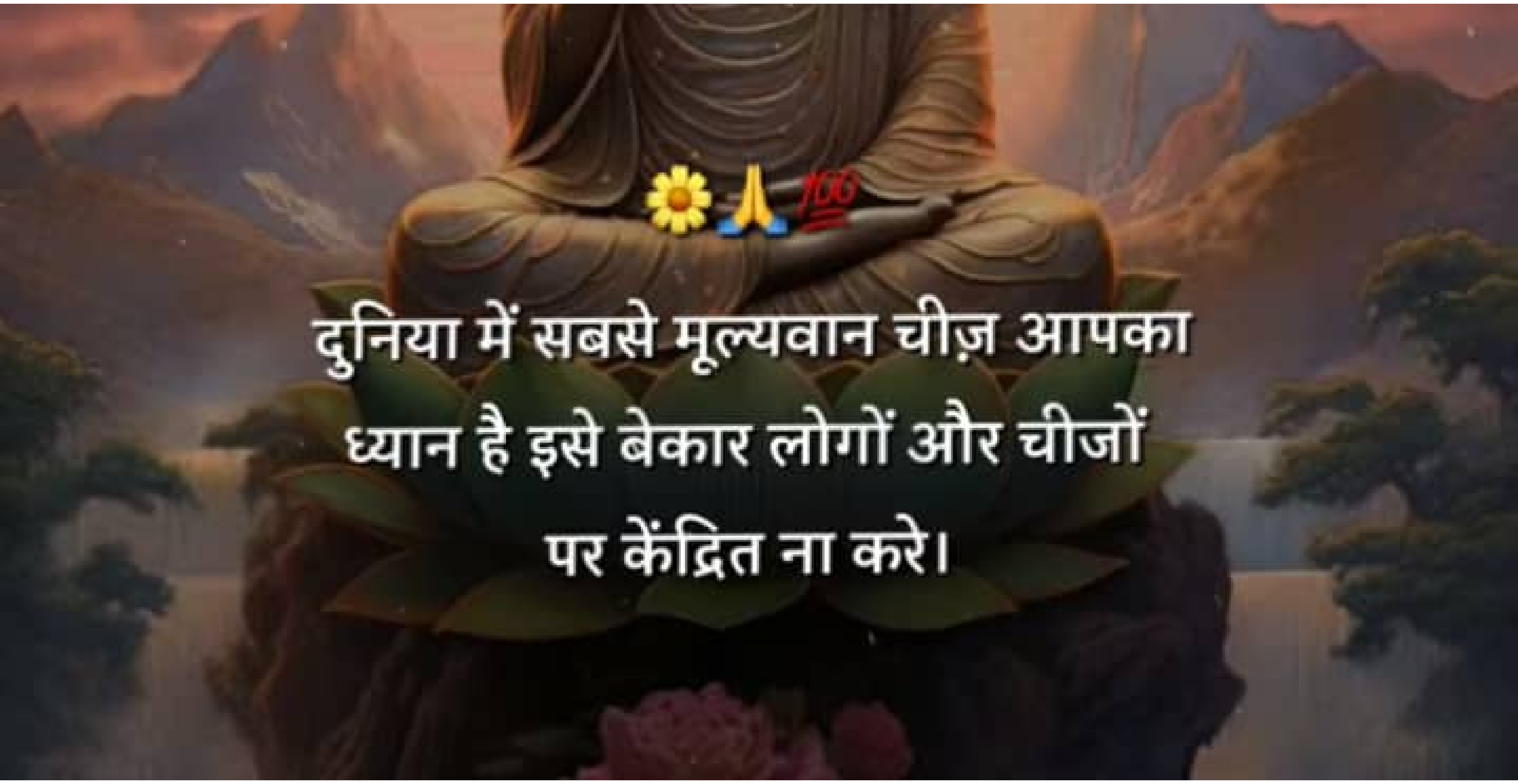

CamScanner

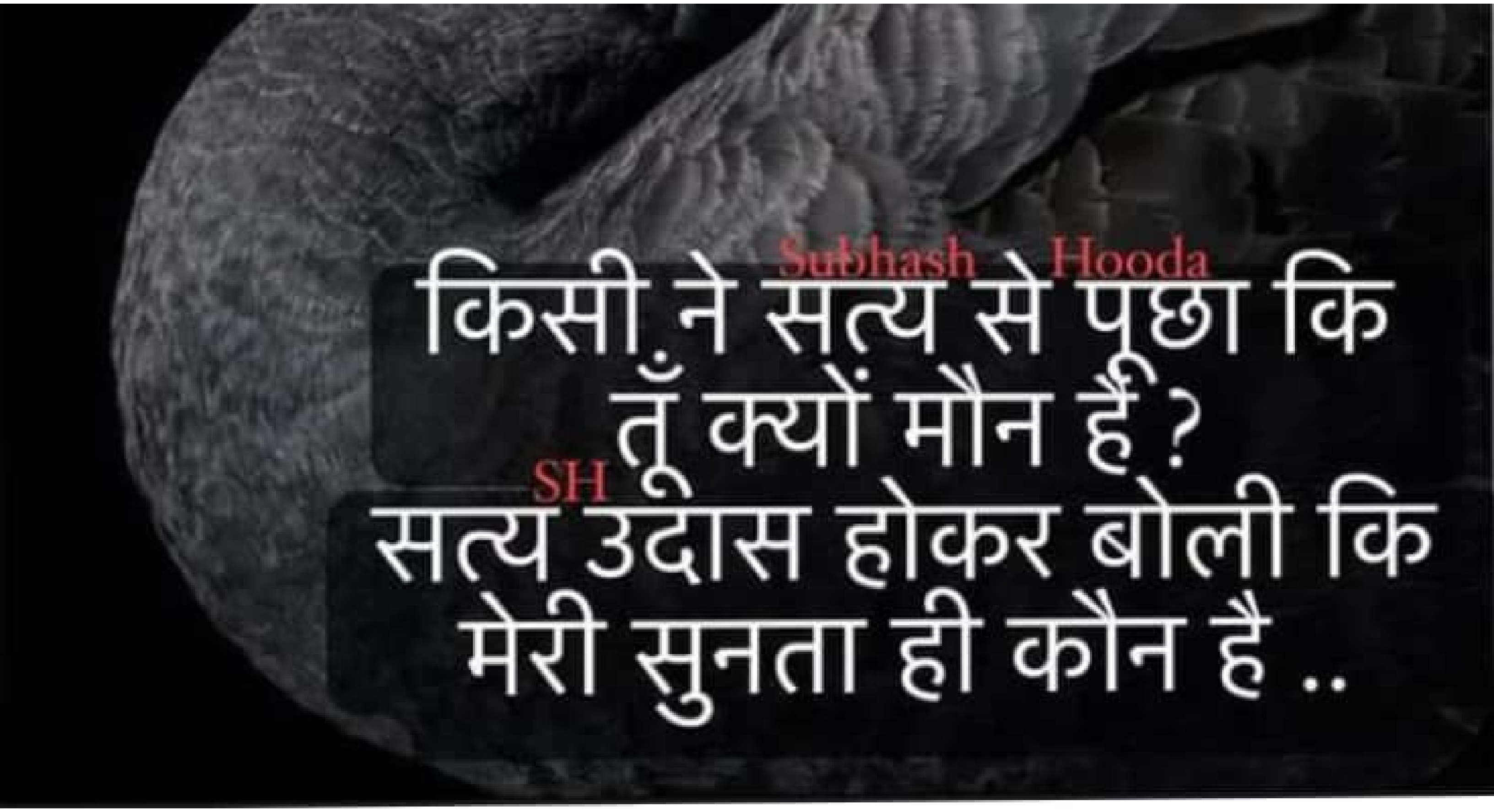
Subhash Hooda
किसी ने सत्य से पूछा कि
तूँ क्यों मौन हैं ?
SH
सत्य उदास होकर बोली कि
मेरी सुनता ही कौन है ..

CamScanner

जीवन में जो दुख व्याप्त है, वह हमारे कुछ भी करने से
दूर होने का नहीं है जब-तक हम जीवन को ही आमूल न बदल दें।

वह दुख किसी बाह्य अभाव के कारण नहीं है।
दुख अज्ञान है--आत्म-अज्ञान।

अंतस प्रकाश को उपलब्ध हो, तो ही वह दूर हो सकता है।

- आचार्य रजनीश, पथ की खोज-५

CS CamScanner

CS CamScanner

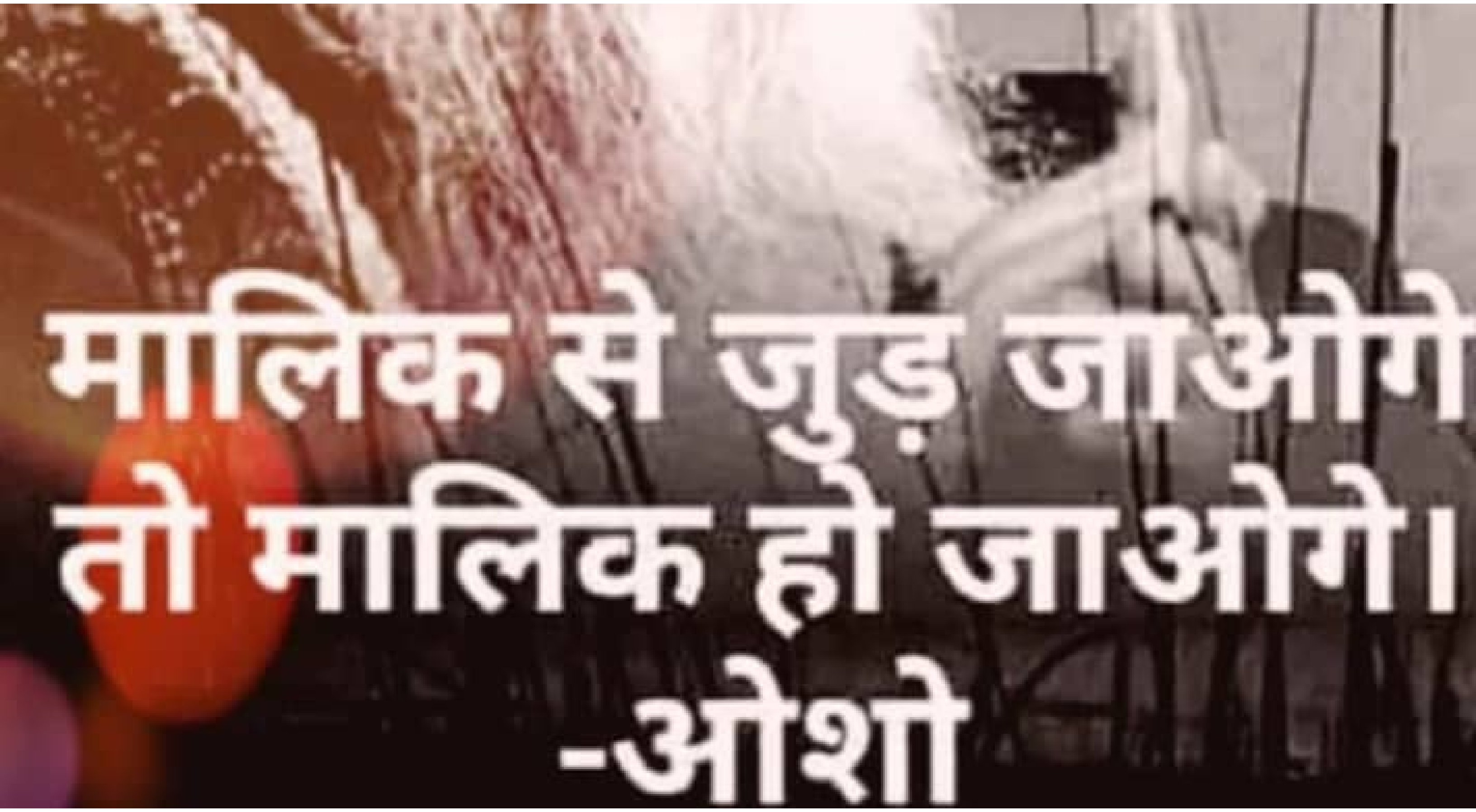

CamScanner

धन्यभागी हैं वे जो स्वयं को
जीतते हैं, क्योंकि स्वयं को
जीतकर ही परमात्मा के मंदिर
का द्वार खुलता है, शाश्वत
जीवन उपलब्ध होता है।
और अभागे हैं वे, जो दूसरों
को ही जीतने में लगे रहते हैं
क्योंकि दूसरों को तो जीत
ही नहीं पाते, दूसरों को
जीतने की चेष्टा में स्वयं
को भी गवां बैठते हैं।

CamScanner

महावीर शुद्ध सत्य के अन्वेषक हैं। जहां-जहां स्वार्थ ने असत्य के मंदिर खड़े कर रखे हैं, वहां-वहां चोट करना जरुरी हैं। वह चोट मनुष्यों पर नहीं है, मनुष्यों की भूलो पर हैं।

महावीर वाणी, भाग-२ (प्रव-१९)

CamScanner

आदमी का दुख
न सुविधा से मिटता है ,
न धन से और न पद-प्रतिष्ठा से ,
Subhash Hooda
आदमी का दुख
आत्म-जागरण से मिटता है ..
OSHO

CamScanner

ऐसा नहीं है की

पक्षि पिंजरो में

बंद है !

आदमी भी पिंजरो

में बंद है !

Anil Osho

परमपराओ के !

CamScanner

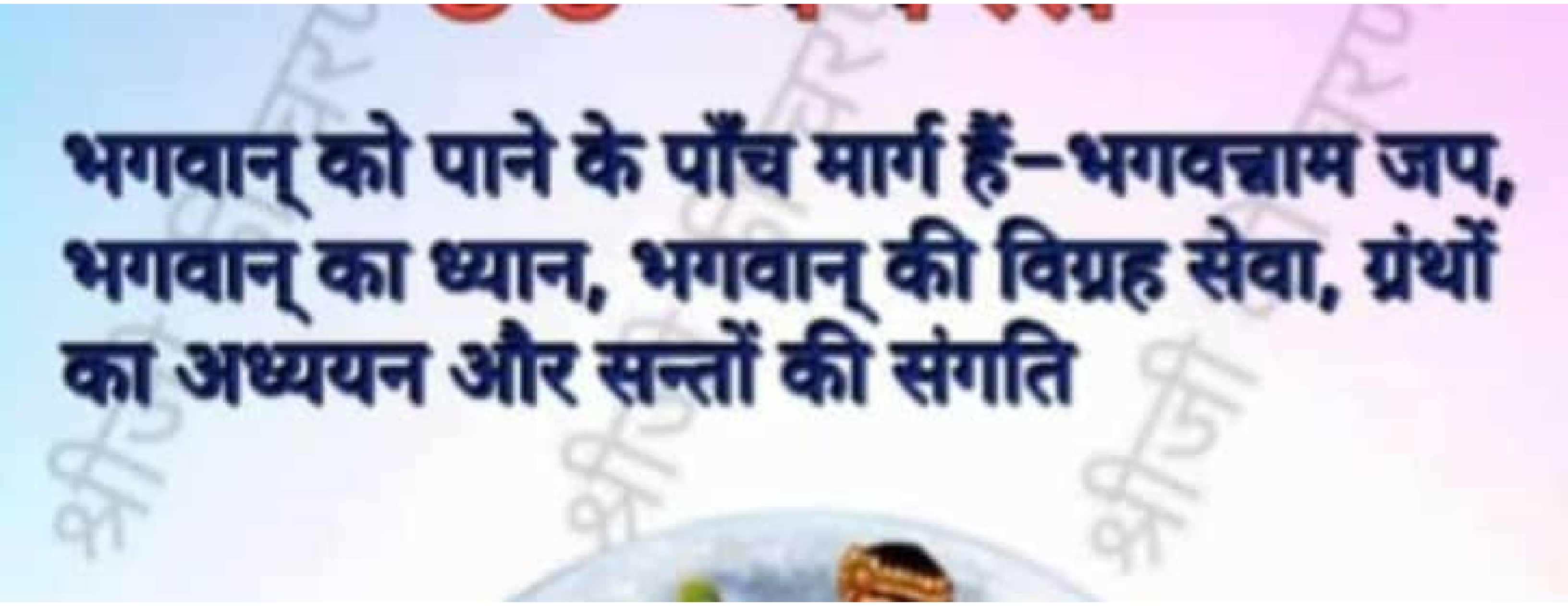
भगवान् को पाने के पाँच मार्ग हैं–भगवन्नाम जप,
भगवान् का ध्यान, भगवान् की विग्रह सेवा, ग्रंथों
का अध्ययन और सन्तों की संगति

CamScanner

9:28 am 0 KB/s VoLTE 4G 90%

ओशो प्रवचनो से संकलित हिंदी बोध कथा 872

एक सूफी फकीर के संबंध में मैंने सूना है। उसके मरने के दिन करीब थे। रहता तो एक छोटे झोंपड़े में था। लेकिन एक बड़ा खेत और एक बड़ा बग़ीचा भक्तों ने उसके नाम कर रखा था। मरने के कुछ दिन पहले उसने कि अब मैं मर जाऊँगा। ऐसे तो जिंदा में भी इस बड़ी जमीन की मुझे कोई जरूरत नही थी। वह झोंपड़ा काफी था, और मर कर तो मैं क्या करूंगा। मर कर तो मुझे तुम इस झोंपड़े में दफ़ना देना। यह काफी है। तो उसने एक तख्ती लगवा दी पास के बग़ीचे पर की जो भी व्यक्ति पूर्ण संतुष्ट हो, उसको मैं यह बग़ीचा भेंट करना चाहता हूं।

अनेक लोग आये;लेकिन खाली हाथ लोट गये। खबर सम्राट तक पहुंची। एक दिन सम्राट भी आया। और सम्राट ने सोचा कि औरों को लोटा दिया, ठीक; मुझे क्या लौटायेगा। मुझे क्या कमी है। मैं तो पूर्ण संतुष्ट हूं। सब जो चाहिए वो है मेरे पास। मेरे संतोष में वह कोई खोट नहीं निकाल पायेगा। सम्राट भीतर गया। और फकीर से कहा कि क्या ख्याल है मेरे विषय में। अनेक लोगों को लोटा चुके हो। सब लोगों में संतोष की कमी मिली। अब मेरे विषय में आपकी क्या राय है। में चल कर आया हूं आपकी शर्त सून कर।

तो उस फकीर ने कहा कि अगर तुम संतुष्ट थे तो आए ही क्यो? तो उसके लिए है जो आएगा ही नहीं; और मैं उसके पास जाऊँगा। अभी वह आदमी इस गांव में नहीं है। वह यहां है ही नहीं। वह क्यों आयेगा।

एक ऐसा संतोष का क्षण भीतर घटित होता है। जब आपकी कोई अपनी चाह नहीं होती। दौड़ नहीं होती। और आप अपने साथ राज़ी होते है। उस क्षण में परमात्मा आता है। आपको उसके द्वार पर मांगने नही जाना पड़ता। उस दिन उसकी मीठी वर्षा आपके उपर होती है। वही निर्वाण है।

ताओ उपनिषद
भाग 04 प्रवचन 65
ओशो

CamScanner

CamScanner

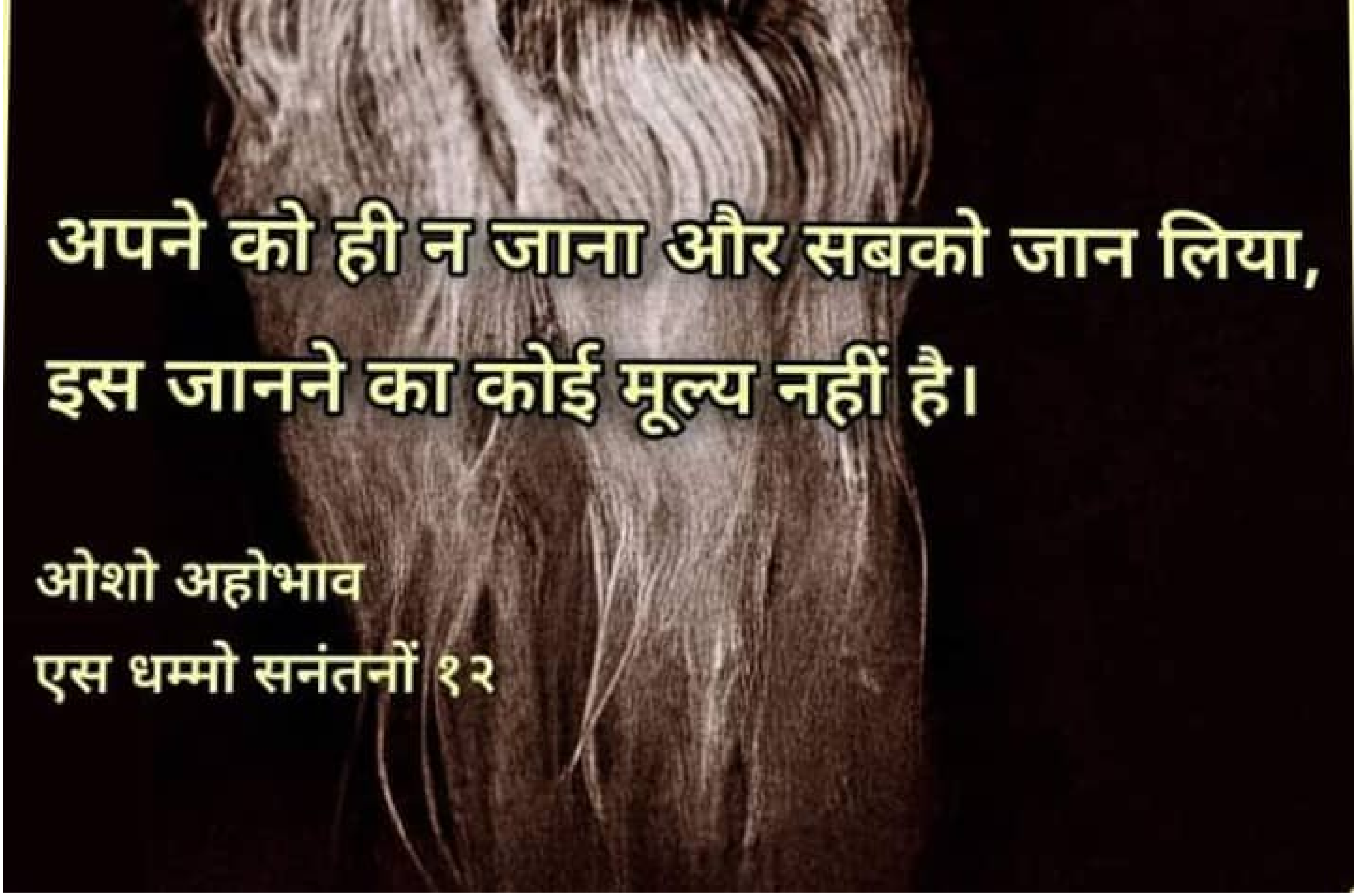

CamScanner

"अपने माहिं टटोल"
प्रवचन-01
("चित्त का दर्पण")
सत्य
की खोज करनी हो, तो खुद को मंदिर बनाना होगा, इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। कोई जमीन पर मंदिर नहीं है जहां सत्य की खोज हो सके। हां, हर आदमी खुद मंदिर बन सकता है, जहां भगवान का प्रवेश हो सके।
और यह खुद आदमी मंदिर कैसे बन जाए? चित्त दर्पण बन जाए तो आदमी मंदिर बन सकता है। चित्त दर्पण बन जाए तो आदमी इसलिए मंदिर बन सकता है कि उसी दर्पण में भगवान की छवि उतरनी शुरू हो जाती है।
ओशो.
Osho.
Narmada.

CamScanner

लाखों की गाड़ी एक चाबी और
ब्रेक पर निर्भर होती है,
करोड़ों का घर एक चाबी और
ताले पर निर्भर करता है,
इसी तरह हमारा व्यक्तित्व भी
हमारी सोच और स्वभाव
पर निर्भर करता है ।

CamScanner

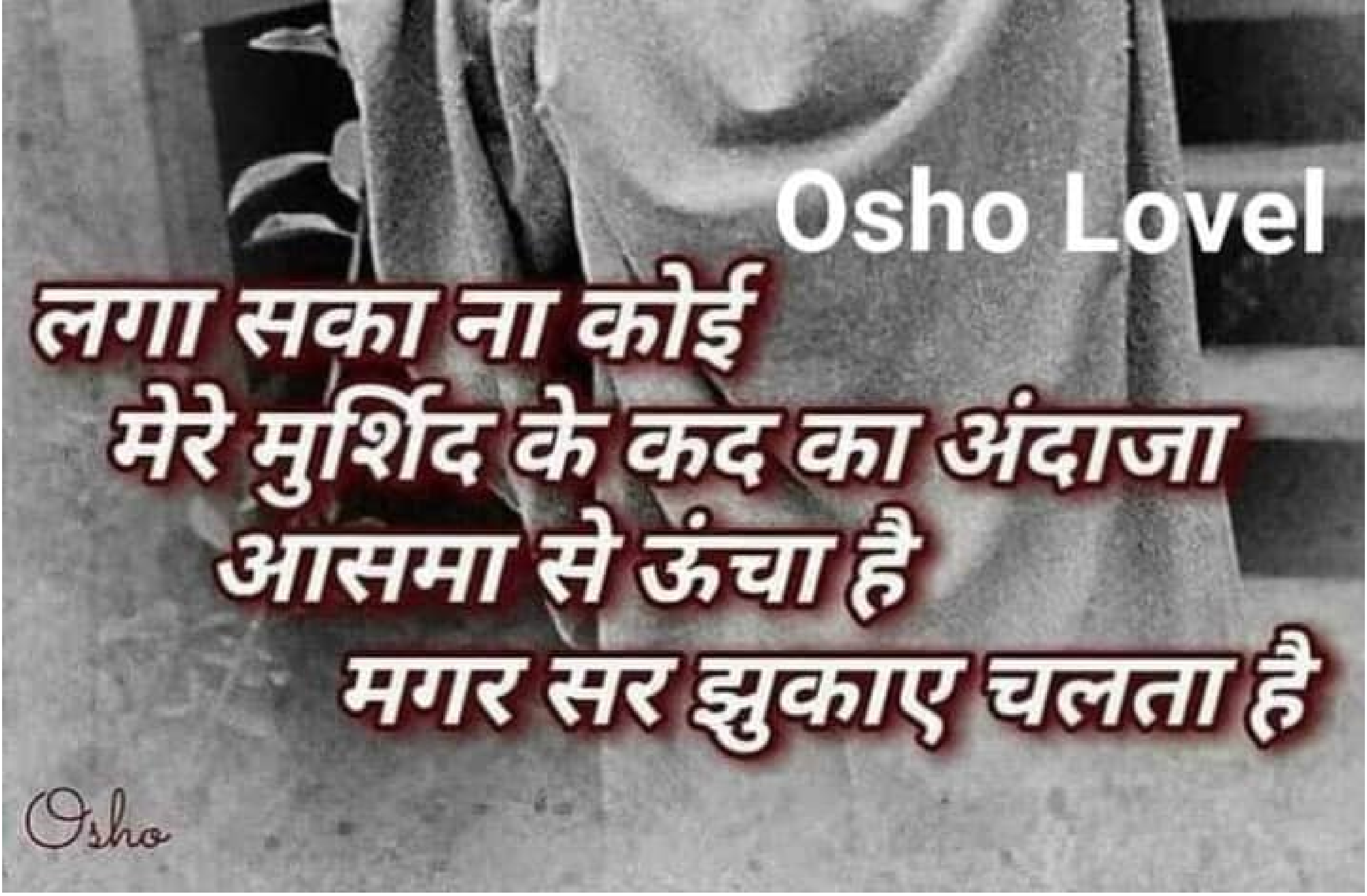
Osho Lovel
लगा सका ना कोई
मेरे मुर्शिद के कद का अंदाजा
आसमा से ऊंचा है
मगर सर झुकाए चलता है
Osho

CamScanner

CamScanner

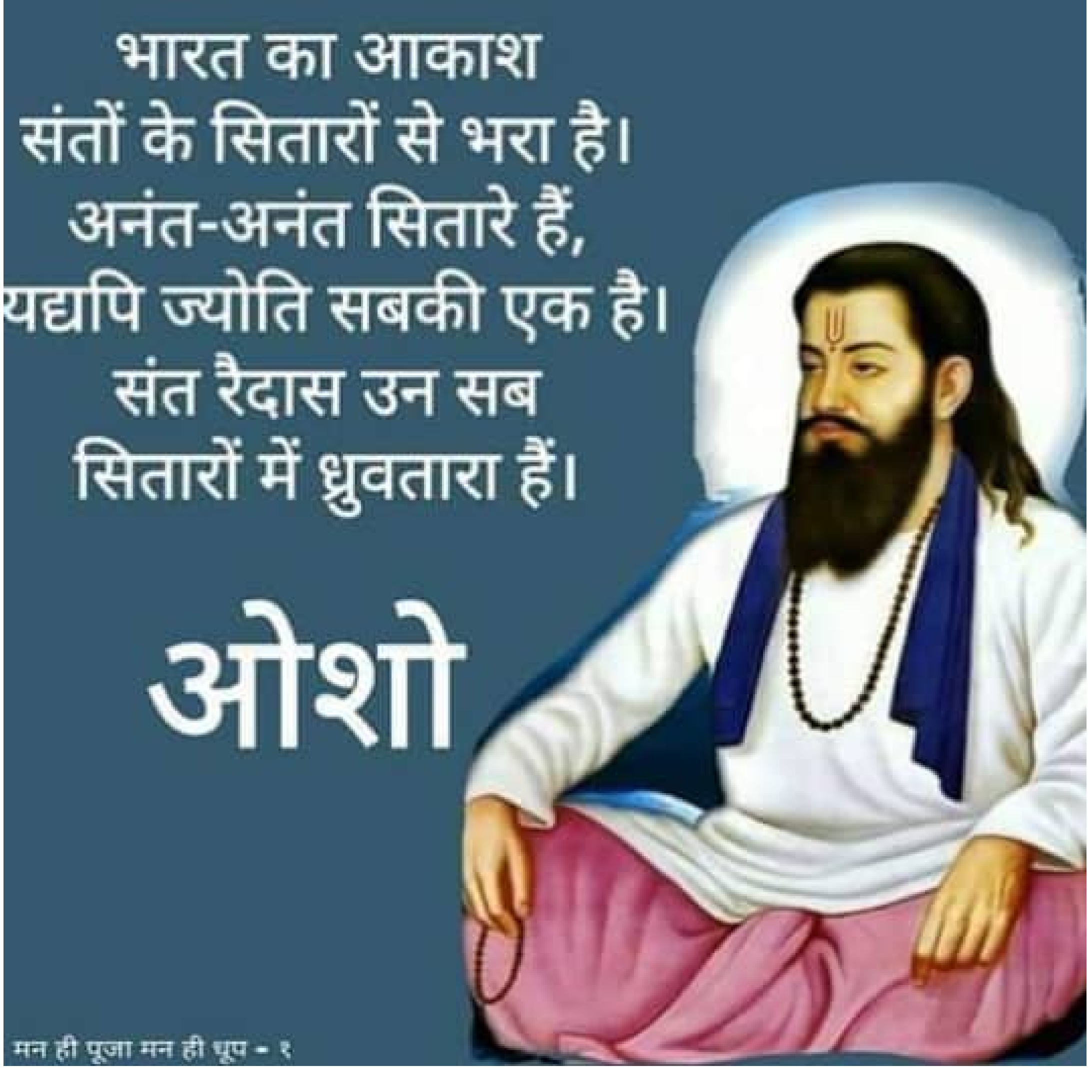
भारत का आकाश
संतों के सितारों से भरा है।
अनंत-अनंत सितारे हैं,
यद्यपि ज्योति सबकी एक है।
संत रैदास उन सब
सितारों में ध्रुवतारा हैं।
ओशो
मन ही पूजा मन ही धूप - १

CamScanner

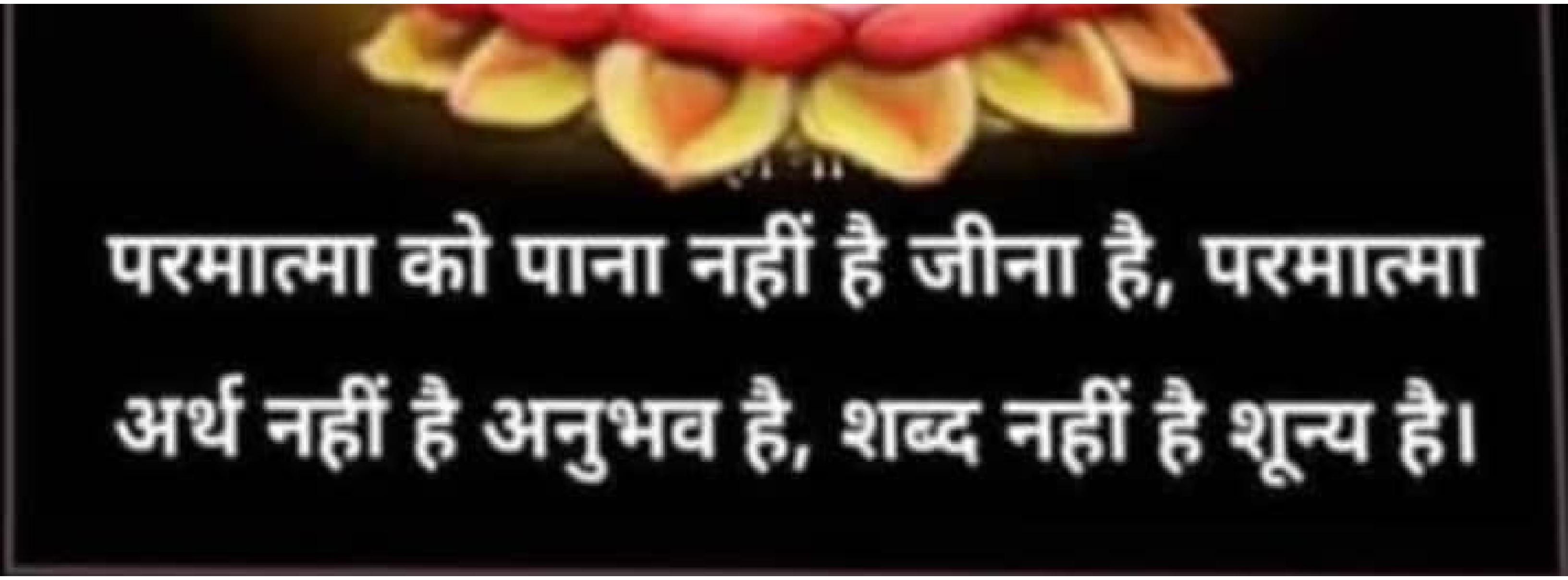

CamScanner

जिस मरनै थे जग डरे,
सो मेरे आंनद
कब मरिहूँ कब देखिहूँ,
पूरन परमानन्द

कबीर.

CamScanner

Hindi Songs's Lyrics

Lyrics

O Door Ke Musafir / ओ दूर के मुसाफिर, हम को भी साथ ले ले

चले आज तुम जहाँ से, हुई ज़िन्दगी परायी
तुम्हे मिल गया ठिकाना, हमें मौत भी ना आयी

ओ दूर के मुसाफिर, हम को भी साथ ले ले रे
हम को भी साथ ले ले, हम रह गये अकेले

तू ने वो दे दिया ग़म, बेमौत मर गये हम
दिल उठ गया जहां से, ले चल हमें यहाँ से
किस काम की ये दुनिया जो ज़िन्दगी से खेले

सूनी हैं दिल की राहें, खामोश हैं निगाहें
नाकाम हसरतों का उठने को है जनाज़ा
चारों तरफ लगे हैं बरबादीयों के मेले

geetmanjusha.com

#DilipKumar #Nimmi

CamScanner

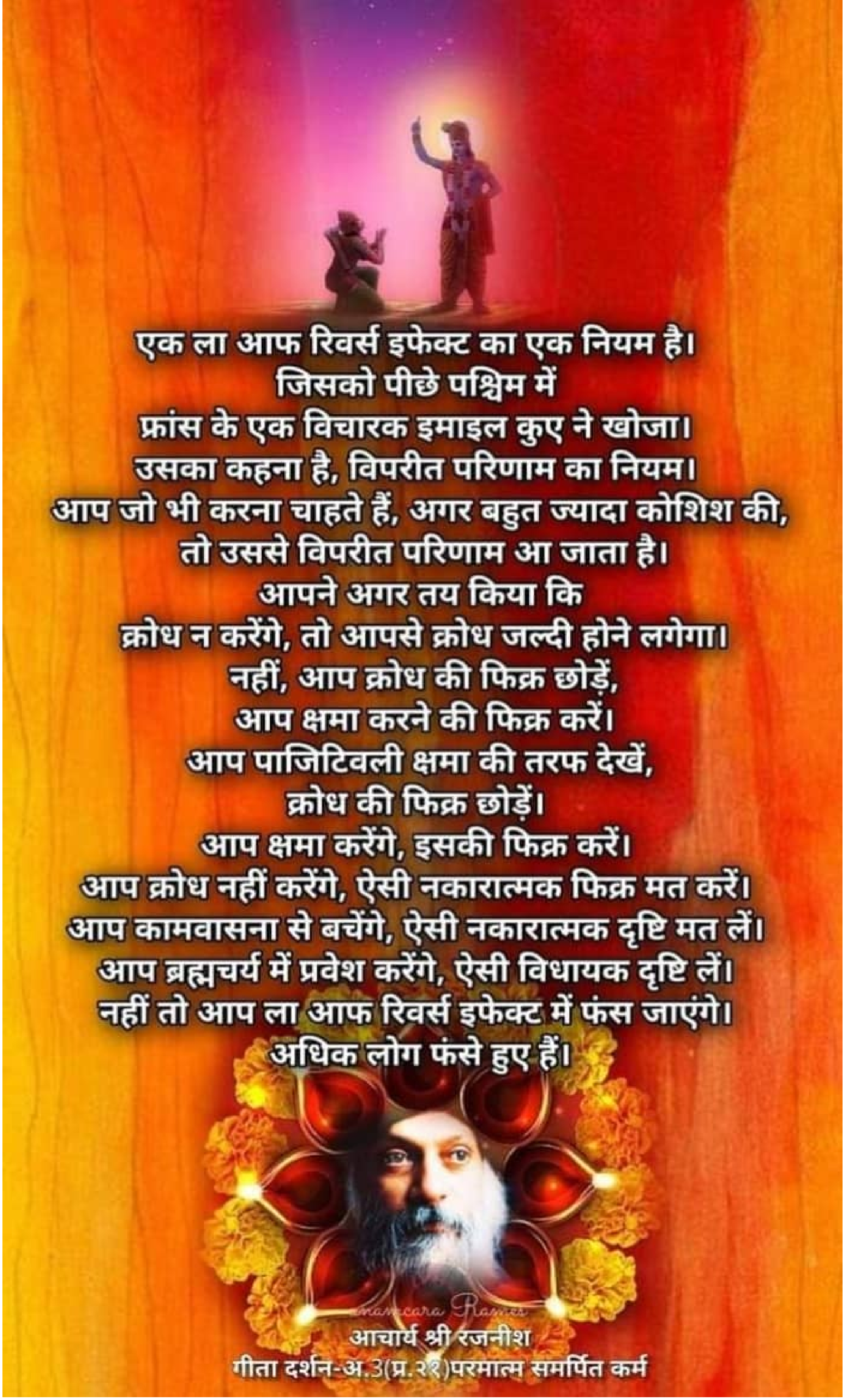
एक ला आफ रिवर्स इफेक्ट का एक नियम है।
जिसको पीछे पश्चिम में
फ्रांस के एक विचारक इमाइल कुए ने खोजा।
उसका कहना है, विपरीत परिणाम का नियम।
आप जो भी करना चाहते हैं, अगर बहुत ज्यादा कोशिश की,
तो उससे विपरीत परिणाम आ जाता है।
आपने अगर तय किया कि
क्रोध न करेंगे, तो आपसे क्रोध जल्दी होने लगेगा।
नहीं, आप क्रोध की फिक्र छोड़ें,
आप क्षमा करने की फिक्र करें।
आप पाजिटिवली क्षमा की तरफ देखें,
क्रोध की फिक्र छोड़ें।
आप क्षमा करेंगे, इसकी फिक्र करें।
आप क्रोध नहीं करेंगे, ऐसी नकारात्मक फिक्र मत करें।
आप कामवासना से बचेंगे, ऐसी नकारात्मक दृष्टि मत लें।
आप ब्रह्मचर्य में प्रवेश करेंगे, ऐसी विधायक दृष्टि लें।
नहीं तो आप ला आफ रिवर्स इफेक्ट में फंस जाएंगे।
अधिक लोग फंसे हुए हैं।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-अ.3(प्र.२१)परमात्म समर्पित कर्म

CamScanner

जिसने स्वयं के
भीतर सत्य को जाना है,
वही वेद में पहचान पाएगा,
वही कुरान में, वही धम्मपद में,
वही बाइबिल में.
ओशो "प्रेम-पंथ ऐसो कठिन"

CamScanner

!! ज्ञान घटे नर मूढ़ की संगत !!

!! बुद्धि घटे चित विषय भरमाए !!

!! तेज घटे पर नारी कि संगत !!

!! बुद्धि घटे बहु भोजन खाए !!

!! प्रेम घटे नित ही कुछ मांगत !!

!! मान घटे नित पर घर जाए !!

!! दयाल कहे सुन रे मन मूरख

पाप घटे हरि के गुण गाए !!

CS CamScanner

जिनके पास केवल सोने और चांदी के ठिकरे है, उनको मैं भीखमंगे कहता हूं। धनी तो वह है, जिसके ह्रदय में शांति है, आनंद है, उल्लास है, जिसके पैरो में नृत्य है, जिसकी श्वासो में बांसुरी है। जिसके भीतर परमात्मा ने थोडी सी झलक दिखा दी है। बस वही केवल धनी है सब गरीब है।

ओशो अहोभाव
फिर पत्तों की पाजेब बजी
(प्रवचन–01)

CamScanner

7:52 pm 0 KB/s 27%

19 Aug ·

❣️❣️❣️❣️❣️❣️❣️❣️❣️❣️❣️

जब एक बार किसी गुरु के चरणों में दास हो जाओ, एक बार जब किसी गुरु के चरणों में कह दो—बुद्धं शरणं गच्छामि; संघं शरणं गच्छामि; धम्मं शरणं गच्छामि; तो फिर एक बात याद रखना: फिर अपनी कोई आस मत रखना।

"दास कहाइकै आस न कीजिए,
आस जो करै सो दास नाहीं।"

छोटे-छोटे शब्दों में गहरे सत्य भर दिए पलटू ने। सीधे-सादे आदमी हैं, लेकिन पते की बात कह दी। समझें, उनके लिए इशारे काफी हैं।

"आस जो करै सो दास नाहीं।"

अगर गुरु के पास बैठकर भी आशा जारी रखी कि यह मिल जाए, वह मिल जाए; सिद्धि मिल जो, ऋद्धि मिल जाए, तो भटकते रहोगे। तो गुरु के पास भी बैठे और बैठे भी नहीं। तुम्हारे और गुरु के बीच हजारों कोस का फासला रहा। जितनी आस उतना फासला। अगर आस बिलकुल नहीं तो फासला बिलकुल नहीं। तब गुरु धड़केगा तुम्हारे हृदय में और गुरु बोलेगा तुम्हारी वाणी में। और तुम्हारी श्वासें उसकी श्वासें होंगी। और तुम उसकी आंखों से देख सकोगे।

और यही अनुभव सत्संग है: जब गुरु की आंखों से देख सको, उसके हाथों से छू सको, उसके हृदय से अनुभव कर सको। जब सब फासले गिर जाएं।

#-सपना यह संसार /प्रवचन -9

🌹ओशो 👏👏👏👏👏

CamScanner

CS CamScanner

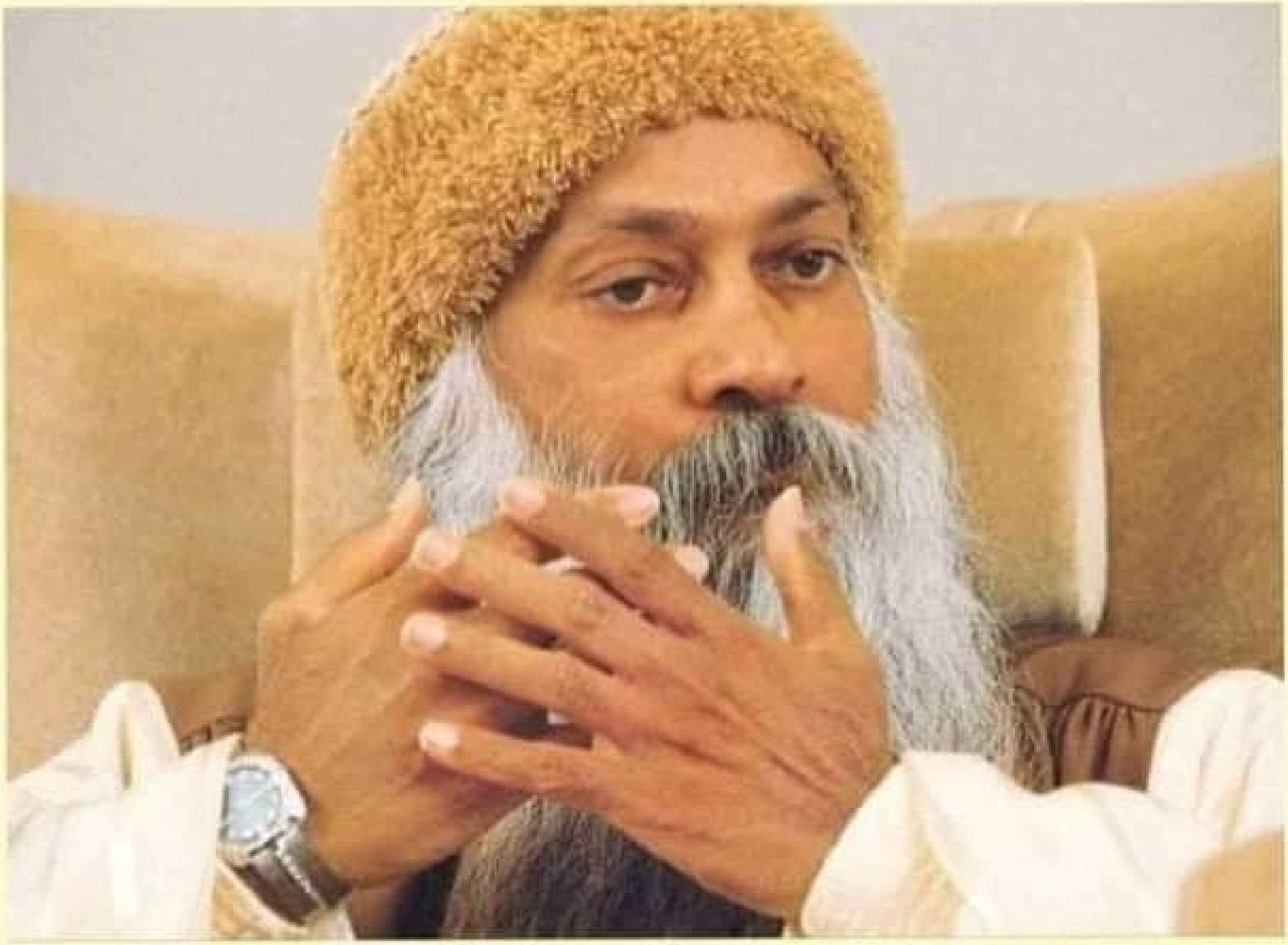

"एक बार भी कोई पूर्ण हृदय से कह पाए-
'जो तेरी मर्जी -उसके जीवन से दुख विदा हो
जाता है। 'मेरी मर्जी में चिंता है, भय है।
'उसकी मर्जी में शांति है, आनंद है।"

अहोभाव
ओशो

CamScanner

7:45 pm 28%
facebook

अहोभाव

जीवन !

जीवन एक यात्रा है। यात्रा है--मृत्यु से अमृत की ओर; अंधकार से प्रकाश की ओर; व्यर्थ से सार्थक की ओर। एक शब्द में पदार्थ से परमात्मा की ओर। इस यात्रा में वे सारे लोग जो बाहर तलाश रहे हैं, भटके हुए हैं। लाख तलाशें, कुछ पाएंगे नहीं-न काशी में, न काबा में; यहां तो केवल वे ही पाने में समर्थ हो पाते हैं जो स्वयं के भीतर छिपे हुए सत्य को पहचानते हैं।

यह यात्रा अनूठी है। यह यात्रा कहीं जाने की नहीं, कहीं से लौट आने की है। जा तो हम बहुत दूर चुके हैं--अपने से दूर। वापस लौटना है अपने पर। जा तो हम बहुत दूर चुके हैं--अपने सपनों में, वासनाओं में, विचारों में। छोड़ देना है सारे स्वप्न, छोड़ देने हैं सारे विचार, सारी वासनाएं, ताकि अपने पर आना हो जाए। संसार नहीं छोड़ना है, स्वप्न छोड़ने हैं; क्योंकि स्वप्न ही संसार है। ओशो

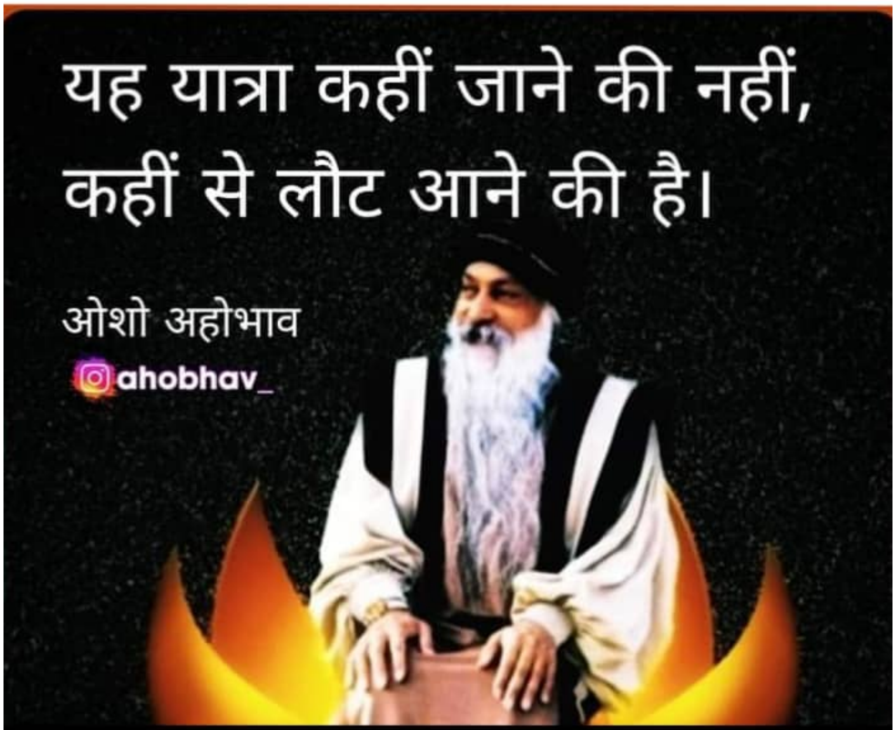

CamScanner

सीता जो राजा जनक की पुत्री और राजा दशरत की पुत्रवधु थी....जिसका विवाह बड़ा अलौकिक हुआ पर उसके बाद सीता को मिला क्या वनवास ओर वनवास के बाद अपहरण फिरअग्नि परीक्षा अंत मे गर्भवती होने के बाद भी परिवार का वियोग..

कई राज्यों पर राज करने वाले पिता और ससुर चाहकर भी सीता को सुख नही दे पाए तो फिर एक साधारण मनुष्य कैसे अपनी संतान को उनके अपने कर्म के बिना सुख दे सकता है..

इसलिए मनुष्य तन मन धन से संतान को सब कुछ दे सकता है पर उसे सुख तो खुद के ही कर्मो से मिलेगा दूसरे के कर्मो से नही..

CamScanner

हमारे सारे पक्ष और हमारे सारे विश्वास अज्ञान की संतति है। इसलिए जो इन विश्वासों को पकड़े बैठे रहता है, उसने अपने अज्ञान को ही मजबूत कर लिया।

अज्ञान को तोड़ना है, तो विश्वास और पक्षों को तोड़ देना जरूरी है।चाहिए एक निष्पक्ष मन, चाहिए एक निर्दोष मन, चाहिए एक मुक्त और खुला हुआ मन, वही द्वार बनता है, वही दर्पण बनता है खुद को जानने का।

अंतर की खोज-(विविध)-प्रवचन-03

CamScanner

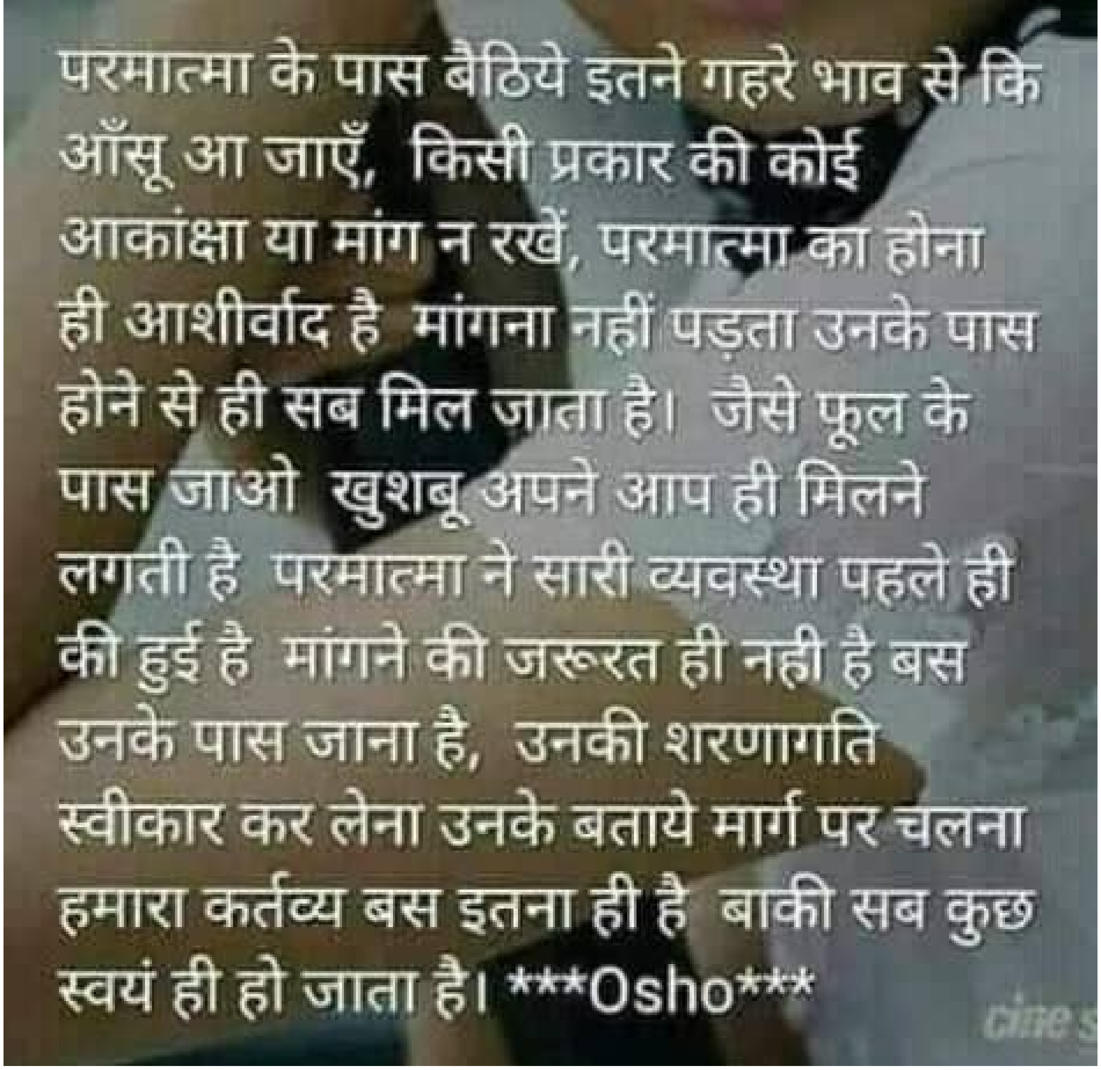
परमात्मा के पास बैठिये इतने गहरे भाव से कि
आँसू आ जाएँ, किसी प्रकार की कोई
आकांक्षा या मांग न रखें, परमात्मा का होना
ही आशीर्वाद है मांगना नहीं पड़ता उनके पास
होने से ही सब मिल जाता है। जैसे फूल के
पास जाओ खुशबू अपने आप ही मिलने
लगती है परमात्मा ने सारी व्यवस्था पहले ही
की हुई है मांगने की जरूरत ही नही है बस
उनके पास जाना है, उनकी शरणागति
स्वीकार कर लेना उनके बताये मार्ग पर चलना
हमारा कर्तव्य बस इतना ही है बाकी सब कुछ
स्वयं ही हो जाता है। ***Osho***

CamScanner

शान्त रहने वाले असली खिलाडी होते
है शान्त रहकर सारे खेल खेल जाते है
बोलने वाले तो केवल बदनाम रहते है
कुछ लम्हे जिन्दगी के

CamScanner

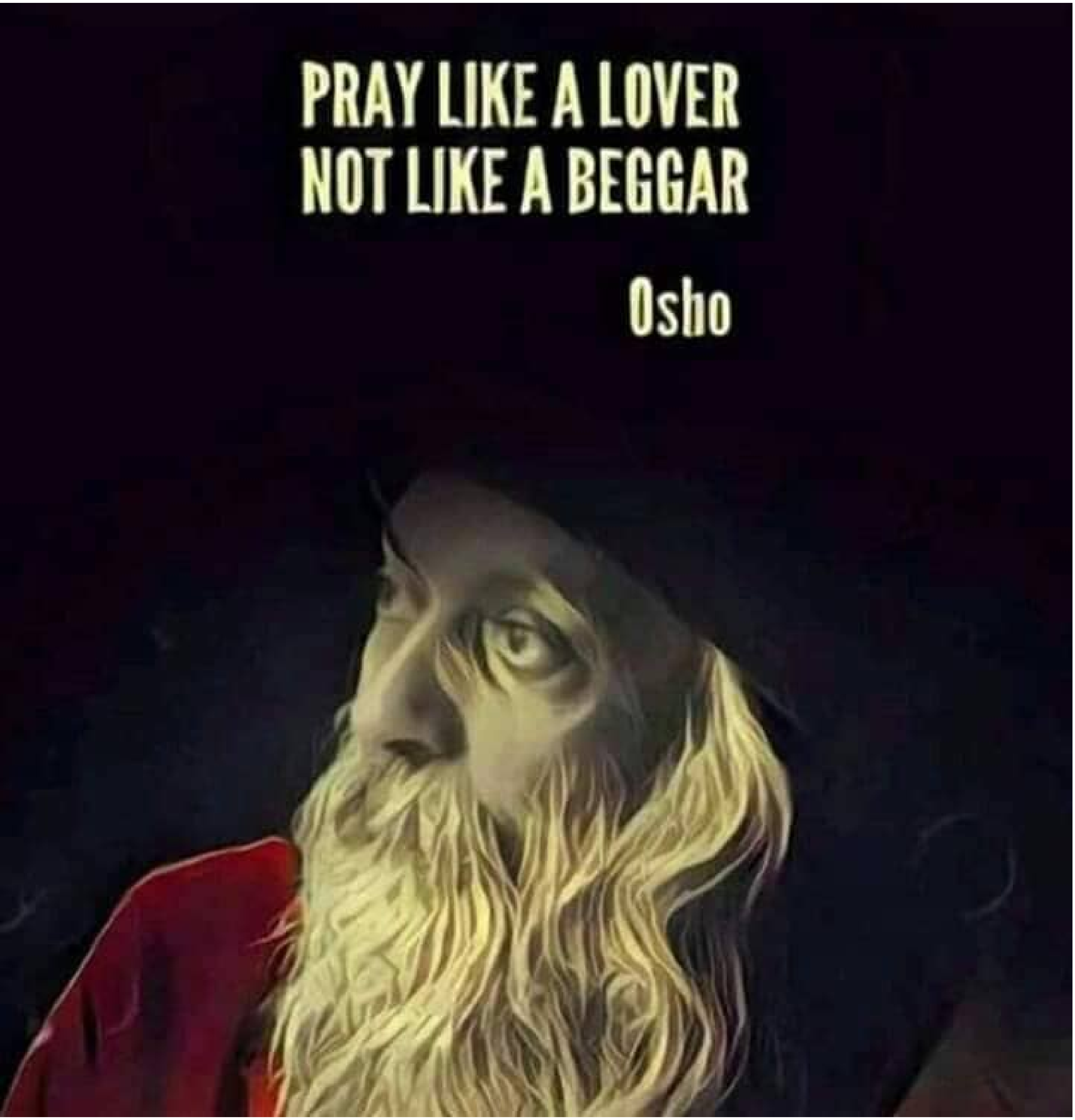

CS CamScanner

महत्व हमेशा खुद को ज्यादा देना क्योंकि
अगर दूसरों को दोगे तो अपना आत्म
सम्मान ही खो दोगे।

CamScanner

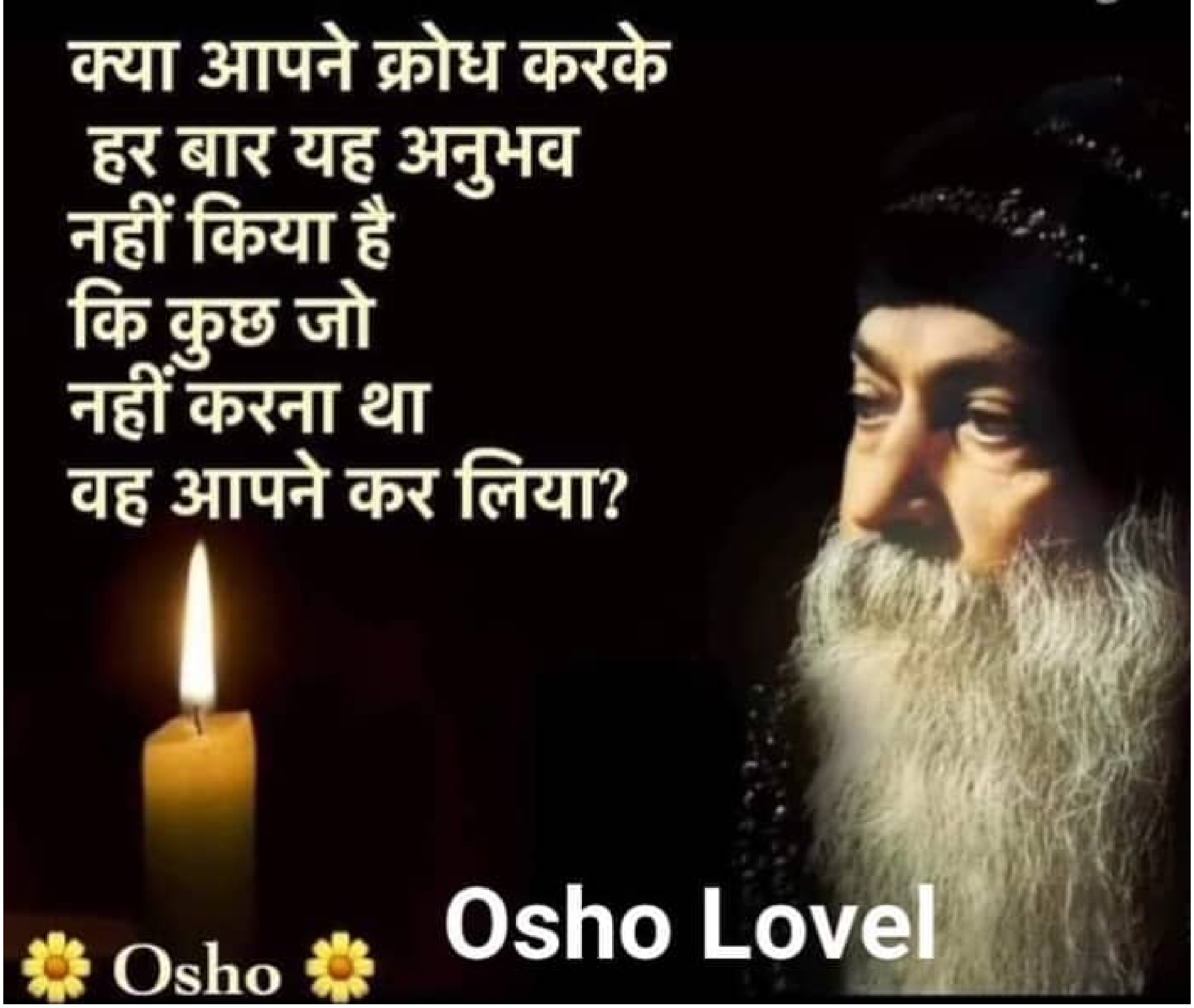
क्या आपने क्रोध करके
हर बार यह अनुभव
नहीं किया है
कि कुछ जो
नहीं करना था
वह आपने कर लिया?
Osho Lovel
Osho

CamScanner

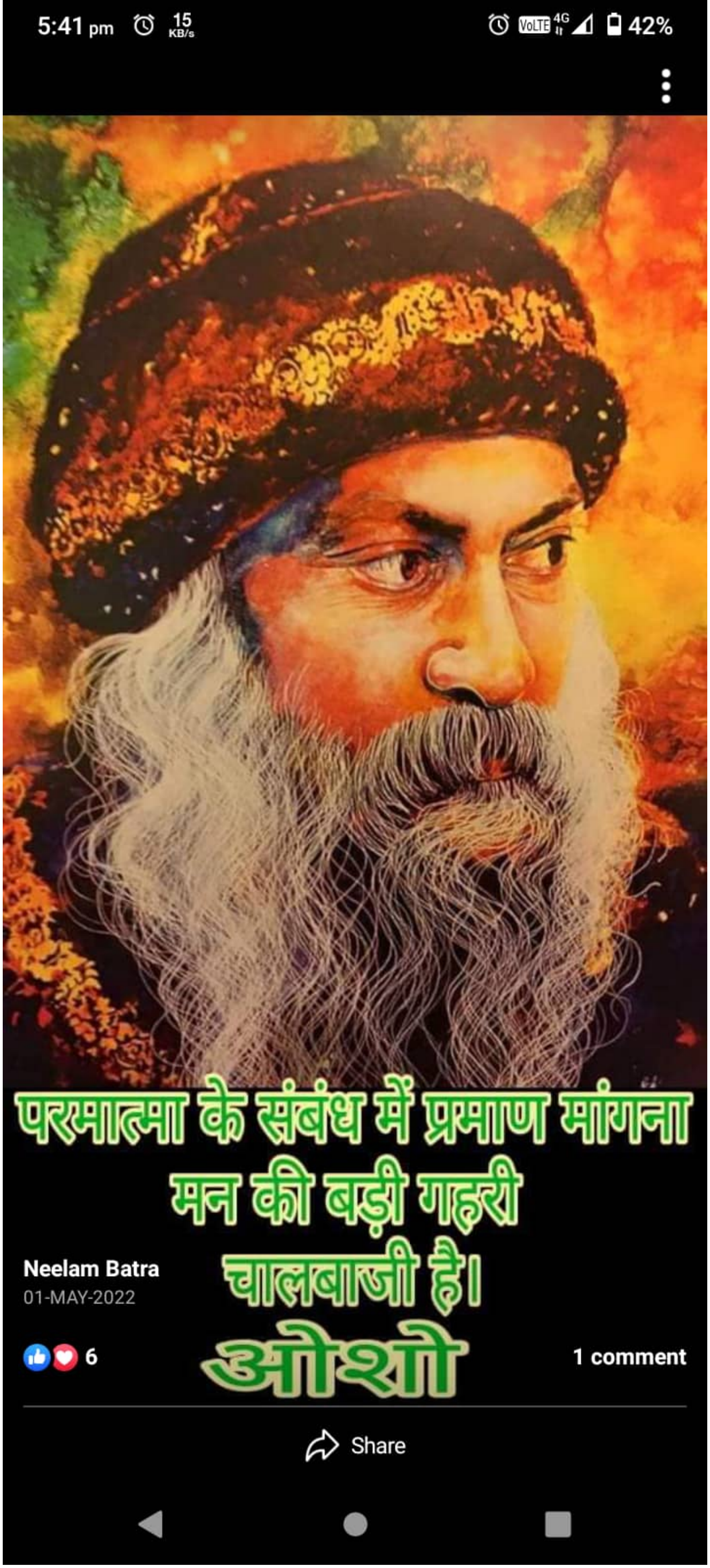
5:41 pm
15 KB/s
42%
परमात्मा के संबंध में प्रमाण मांगना
मन की बड़ी गहरी
चालबाजी है।
ओशो
Neelam Batra
01-MAY-2022
6
1 comment
Share

CamScanner

5:38 pm 0 KB/s VoLTE 4G 43%

सारे कपड़े धोने के बाद उसने वो कपड़े गधे पर लाद दिए और फिर उसने गधे को ठहाके लगाते हुए कुछ यूं हांका कि 'तू तो सच में गधा है जो रस्सी थी ही नहीं उससे बंधा पड़ा रहा' लेकिन उसके ठहाके तुरंत रुक गए जब गधा आगे बढ़ने को तैयार ही नहीं हुआ। धोबी के बहुत हांकने के बाद भी गधा एक पैर भी आगे बढ़ाने के लिए तैयार नहीं था। धोबी घबरा गया, घबराकर उसने इधर-उधर देखा और पाया कि पेड़ की छांव में बैठकर वही समझदार और काफ़ी पढ़ा-लिखा आदमी मुस्कुरा रहा है। वो आदमी भी ये सब तमाशा देखने के लिये बैठ गया था हालांकि वो पढ़ा-लिखा था लेकिन बेरोज़गार था तो अक्सर वो कहीं भी तमाशे देखने रुक जाया करता था। उस आदमी ने कहा कि तुम शायद भूल गए हो कि तुम्हारा गधा बंधा है, उसे ठीक उसी प्रकार खोलो जिस प्रकार रोज़ खोलते आए हो। धोबी एक बार फिर से आश्चर्यचकित हुआ और उसने ठीक उसी प्रकार अपने गधे को खोला जिस प्रकार वो रोज़ उसकी रस्सी खोला करता था और फिर से उसे थपथपाया करता था। ऐसा करते ही गधा अपने रास्ते चल दिया।

यहां गधे की जगह हम अपने आप को रखकर देख सकते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि हम तमाम तरह के काल्पनिक पाशों (बंधनों) में बंधे हो और हम ये बात जानते ही न हो।

CamScanner

12:26 pm 0 KB/s 61%

Anil Bharti
1d ·

⚡"गुरु की पहचान कैसे हो ?⚡ "

भूखे को भोजन दिखाई पड़ता है।
प्यासे को पानी दिखाई पड़ता है।
साधक को सदगुरु दिखाई पड़ जाता है।

अगर साधक हो, तो जैसे ही गुरु मिलेगा, प्राण जुड़ जाएंगे; तार मिल जाएगा। कोई बताने की जरूरत न पड़ेगी। अगर उजाला आ जाए, तो क्या कोई तुम्हें बताने आएगा, तब तुम पहचानोगे कि यह अंधेरा नहीं, उजाला है? अंधे की आंख खुल जाए, तो क्या अंधे को दूसरों को बताना पड़ेगा, कि अब तेरी आंख खुल गई, अब तू देख सकता है देख। आंख खुल गई, कि अंधा देखने लगता है। रोशनी आ गई कि पहचान ली जाती है, स्वतः प्रमाण है।
अगर साधक है कोई; साधक का अर्थ क्या है? साधक का अर्थ है कि खोजी है, आकांक्षी है, अभीप्सा से भरा है। साधक का अर्थ है, कि प्यासा है सत्य के लिए। सौ साधकों में निन्यानवे साधक होते नहीं, फिर भी साधन की दुनिया में उतर जाते हैं। इससे सारी उलझन खड़ी होती है।
🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹
🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹
💞परम प्यारे ओशो💞

CS CamScanner

CS CamScanner

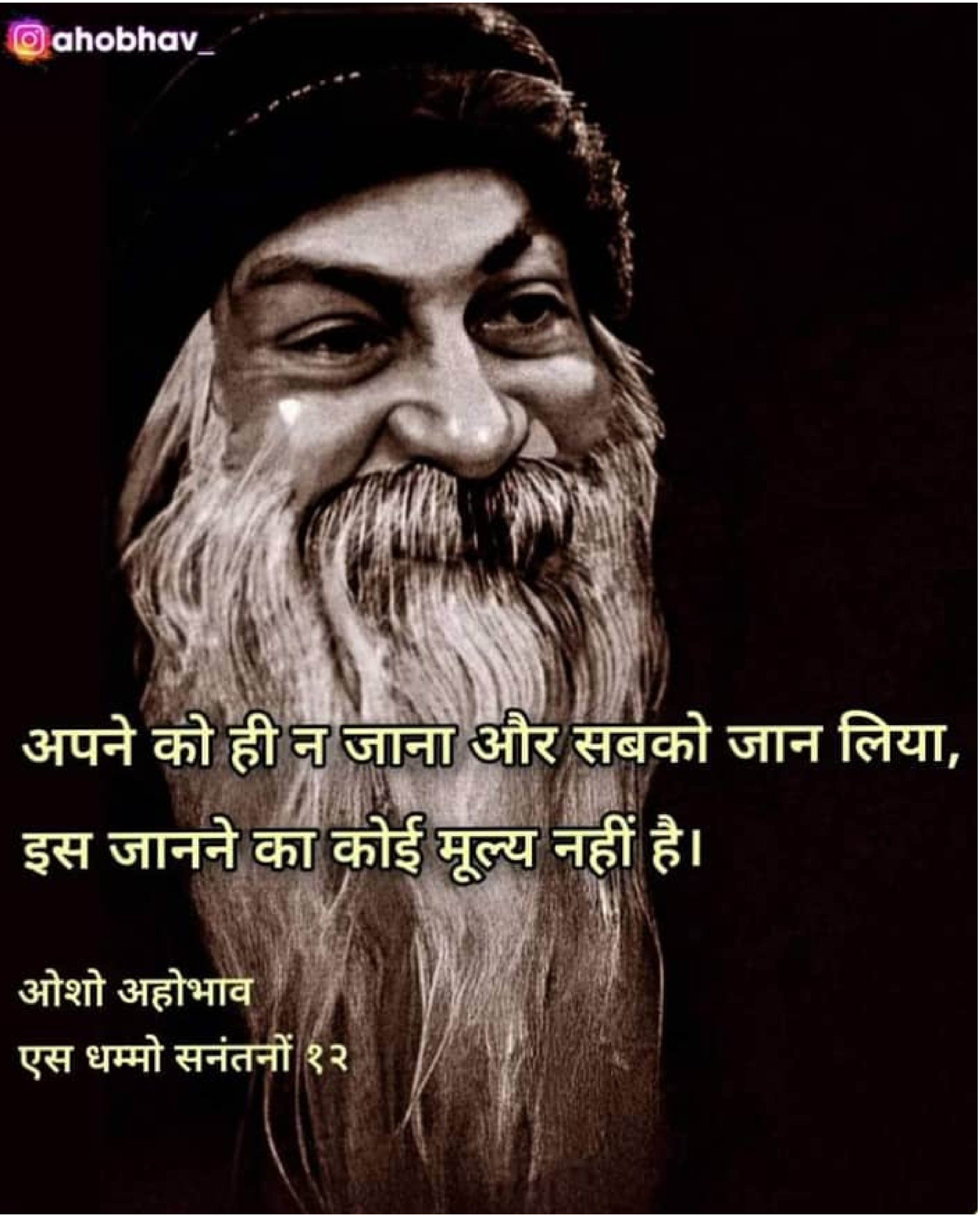
@ahobhav_
अपने को ही न जाना और सबको जान लिया,
इस जानने का कोई मूल्य नहीं है।
ओशो अहोभाव
एस धम्मो सनंतनों १२

CamScanner

11:58 am 0 KB/s 63%

उन्हें अभी बहार की दिवाल का ही चक्कर लगाना पड़ेगा।

जिन लोगों ने ये मन्दिर बनवाये थे
वे बड़े समझदार थे !
यह मन्दिर एक "मेडिटेशन मन्दिर" था।
यह मन्दिर एक ध्यान का केन्द्र था
जो लोग आते थे, उनसे वे कहते थे।
बाहर पहले मैथुन के ऊपर ध्यान करो
पहले सेक्स को समझो और
जब सेक्स को पूरी तरह समझ जाओ और
तुम पाओ कि
मन उससे मुक्त हो गया है
तब तुम भीतर आ जाना
फिर भीतर भगवान से मिलना हो सकता है।

लेकिन धर्म के नाम पर हमने
सेक्स को समझने की स्थिति पैदा नहीं की,
सेक्स की शत्रुता पैदा कर दी।
सेक्स को समझो मत,
आँखें बन्द कर लो और
घुस जाओ भगवान के मन्दिर में
आँखें बन्द कर के
आँखें बन्द कर के
कभी कोई भगवान के मन्दिर में जा सका है।
और आँखें बन्द कर के
अगर आप भगवान के मन्दिर में पहुँच भी गये
तो बन्द आँखों में आपको भगवान दिखायी नहीं पड़ेंगे।
जिससे आप भाग कर आये है,
वही दिखायी पड़ता रहेगा आप उसी से बन्धे रह जायेंगे !

ओशो - सम्भोग से समाधि की और – 2
सम्भोग : अहं-शून्यता की झलक

CamScanner

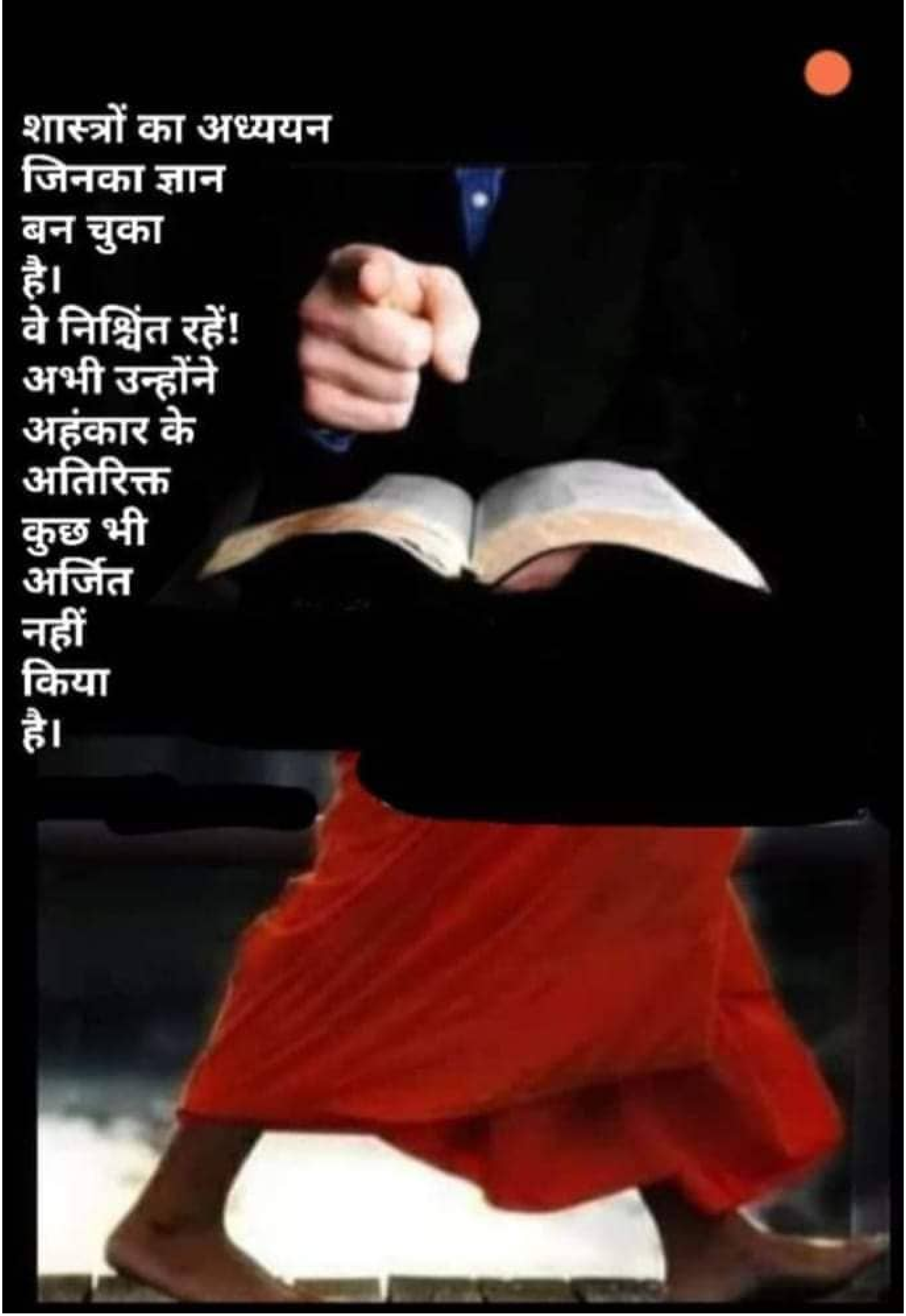
शास्त्रों का अध्ययन
जिनका ज्ञान
बन चुका
है।
वे निश्चिंत रहें!
अभी उन्होंने
अहंकार के
अतिरिक्त
कुछ भी
अर्जित
नहीं
किया
है।

CamScanner

11:52 am 0 KB/s VoLTE 4G 64%

आफ डिसबिलीफ, प्रेजेंस आफ बिलीफ नहीं, विश्वास की उपस्थिति नहीं, अविश्वास की अनुपस्थिति। इसलिए कोई आदमी कितना ही विश्वास करे, कभी श्रद्धा को उपलब्ध नहीं होता। उसके भीतर अविश्वास खड़ा ही रहता है और कांटे की तरह चुभता ही रहता है।

अब एक आदमी कहे चला जाता है, आत्मा अमर है; और फिर भी मरने से डरता चला जाता है। एक तरफ कहता है, आत्मा अमर है, दूसरी तरफ मरने से भयभीत होता है। यह कैसा विश्वास है? इसके पीछे अविश्वास खड़ा है। कहता है, आत्मा अमर है, और डरता है मरने से। अगर आत्मा अमर है, तो मरने का डर? मरने का डर बेमानी है। अब यह कैसे आश्चर्य की बात है!

लेकिन अगर ठीक से देखेंगे, तो आश्चर्य नहीं मालूम पड़ेगा। सौ में निन्यानबे मौकों पर संभावना यही है कि चूंकि मरने का डर है, इसलिए आत्मा अमर है, इस विश्वास को किए चले जाते हैं। डर है भीतर कि मर न जाएं, तो आत्मा अमर है, इस पाठ को रोज-रोज पढ़े चले जाते हैं; दोहराए चले जाते हैं, आत्मा अमर है; समझाए चले जाते हैं अपने को, आत्मा अमर है। और भीतर जिसे दबाने के लिए आप कह रहे हैं, आत्मा अमर है, वह मिटता नहीं। वह भय और गहरे में सरकता चला जाता है। हमारे सारे विश्वास ऐसे ही हैं।

ओशो

CamScanner

11:52 am 0 KB/s VoLTE 4G 64%

श्रद्धा शब्द को थोड़ा समझेंगे, तो इस सूत्र के हृदय के द्वार खुल जाएंगे। श्रद्धा शब्द के आस-पास बड़ी भ्रांतियां हैं। सबसे बड़ी भ्रांति तो यह है कि श्रद्धा का अर्थ लोग करते हैं, विश्वास, बिलीफ; या कुछ लोग श्रद्धा का अर्थ करते हैं, फेथ, अंधविश्वास। दोनों ही अर्थ गलत हैं। क्यों? जो भी विश्वास करता है, उसके भीतर अविश्वास सदा ही मौजूद होता है।

असल में अविश्वासी के अतिरिक्त और कोई विश्वास करता ही नहीं है। यह उलटी लगेगी बात। लेकिन विश्वास की जरूरत ही इसलिए पड़ती है कि भीतर अविश्वास है। जैसे बीमार को दवा की जरूरत पड़ती है, ऐसे अविश्वासी चित्त को विश्वास की जरूरत पड़ती है। भीतर है संदेह, भीतर है अविश्वास, उसे दबाने के लिए विश्वास, बिलीफ को हम पकड़ते हैं।

श्रद्धा विश्वास नहीं है। भीतर अविश्वास हो और उसे दबाने के लिए कुछ पकड़ा हो, तो उसका नाम विश्वास है। और भीतर अविश्वास न रह जाए, शून्य हो जाए, तब जो शेष रह जाती है, वह श्रद्धा है। भीतर अविश्वास हो...एक आदमी को विश्वास न हो कि ईश्वर है और विश्वास करे, जैसा कि अधिक लोग किए हुए हैं, विश्वास बिलकुल नहीं है, लेकिन किए हुए हैं। विश्वास भी नहीं है, अविश्वास करने की हिम्मत भी नहीं है। भीतर अविश्वास है गहरे में, ऊपर से विश्वास के वस्त्र ओढ़े हुए हैं। ऐसी बिलीफ, ऐसा विश्वास स्किनडीप, चमड़ी से ज्यादा गहरा नहीं होता। जरा जोर से खरोंचो, भीतर का अविश्वास बाहर निकल आता है।

श्रद्धा का ऐसा अर्थ नहीं है। श्रद्धा बहुत ही कीमती शब्द है। श्रद्धा का अर्थ है, जहां से अविश्वास नष्ट हो गया–विश्वास आ गया नहीं। श्रद्धा का अर्थ है, जहां अविश्वास नहीं रहा। जब भीतर कोई अविश्वास नहीं होता, तब श्रद्धा फलित होती है। कहें, श्रद्धा अविश्वास का अभाव है। एब्सेंस आफ डिसबिलीफ, प्रेजेंस आफ बिलीफ नहीं, विश्वास की उपस्थिति नहीं, अविश्वास की अनुपस्थिति। इसलिए कोई आदमी कितना ही विश्वास करे, कभी श्रद्धा को उपलब्ध नहीं होता। उसके भीतर अविश्वास खड़ा ही रहता है और कांटे की तरह चुभता ही रहता है।

अब एक आदमी कहे चला जाता है, आत्मा अमर है; और फिर भी मरने से डरता चला जाता है। एक तरफ कहता है, आत्मा अमर है, दूसरी

CamScanner

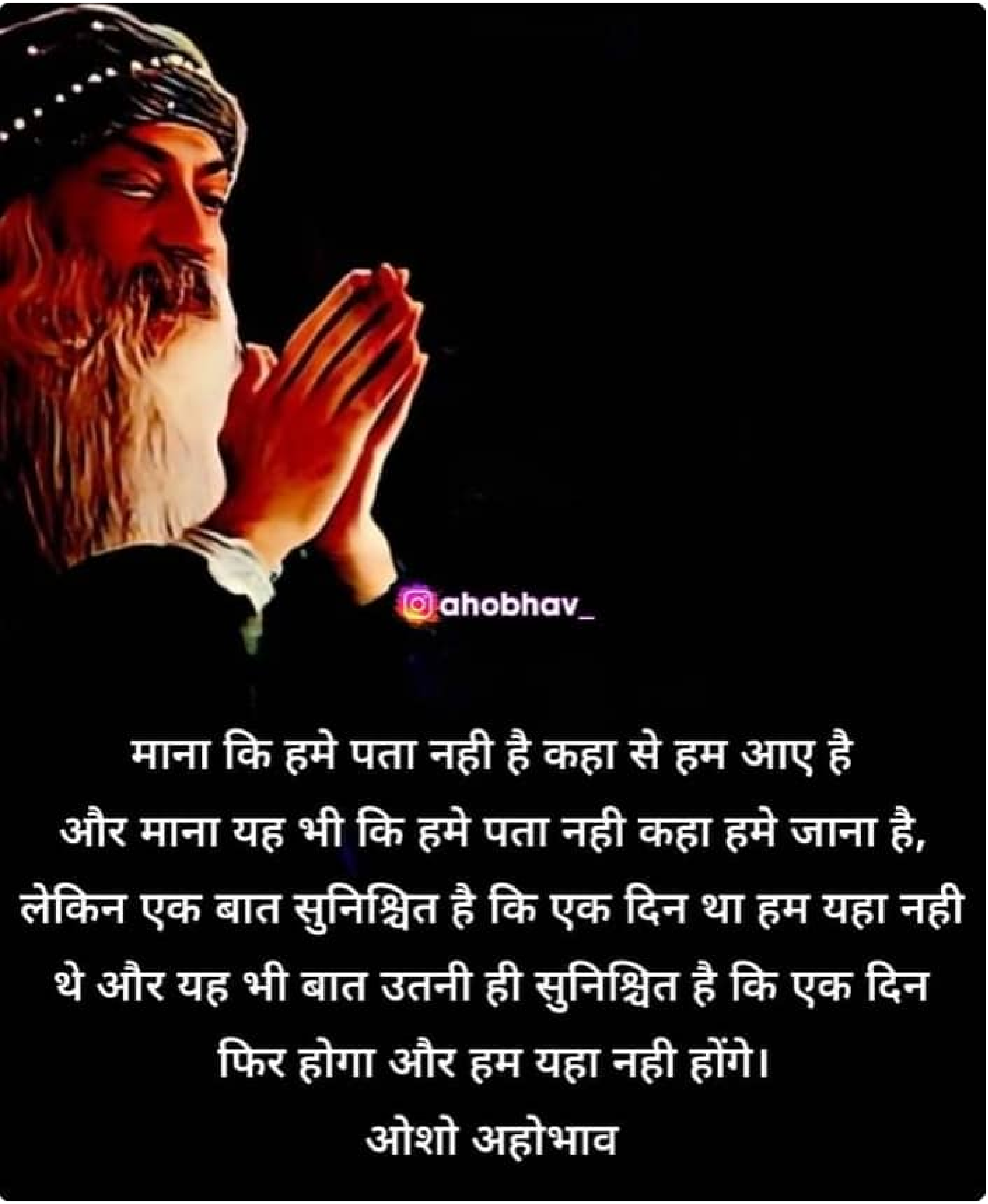
ahobhav_
माना कि हमे पता नही है कहा से हम आए है
और माना यह भी कि हमे पता नही कहा हमे जाना है,
लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि एक दिन था हम यहा नही
थे और यह भी बात उतनी ही सुनिश्चित है कि एक दिन
फिर होगा और हम यहा नही होंगे।
ओशो अहोभाव

CamScanner

डर एक प्रकार की मूढता है, अगर किसी महामारी से अभी नही भी मरे तो भी एक न एक दिन मरना ही होगा, और वो एक दिन कोई भी दिन हो सकता है, इसलिए विद्वानों की तरह जिये, भीड़ की तरह नही!!

ओशो

CamScanner

ART OF HINDI POETS

किसी को घर से निकलते ही मिल गई मंज़िल ,

@artofhindipoets

कोई हमारी तरह उम्र भर सफ़र में रहा ।

-अहमद फ़राज़

CamScanner

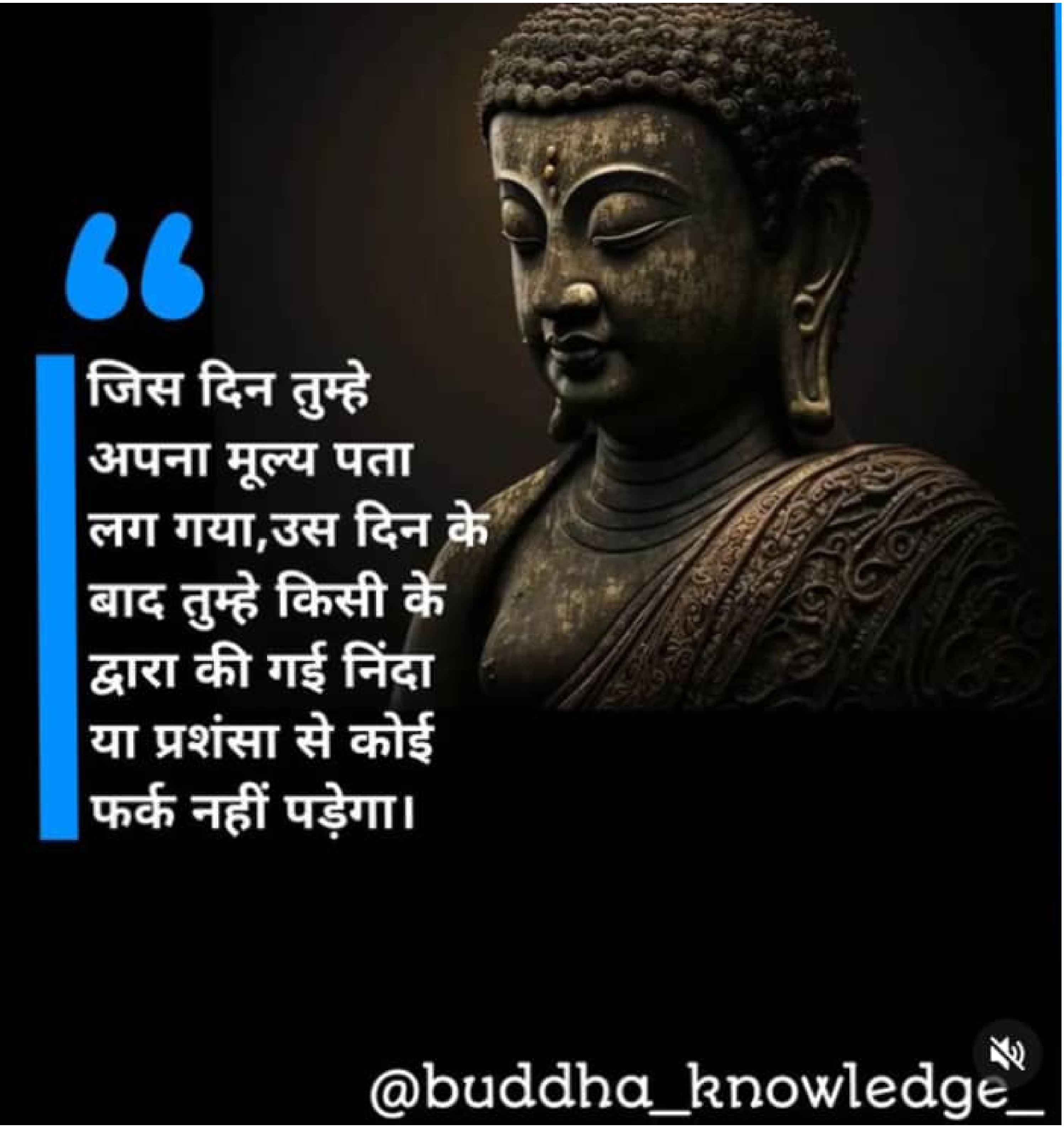
जिस दिन तुम्हे
अपना मूल्य पता
लग गया,उस दिन के
बाद तुम्हे किसी के
द्वारा की गई निंदा
या प्रशंसा से कोई
फर्क नहीं पड़ेगा।
@buddha_knowledge_

CamScanner

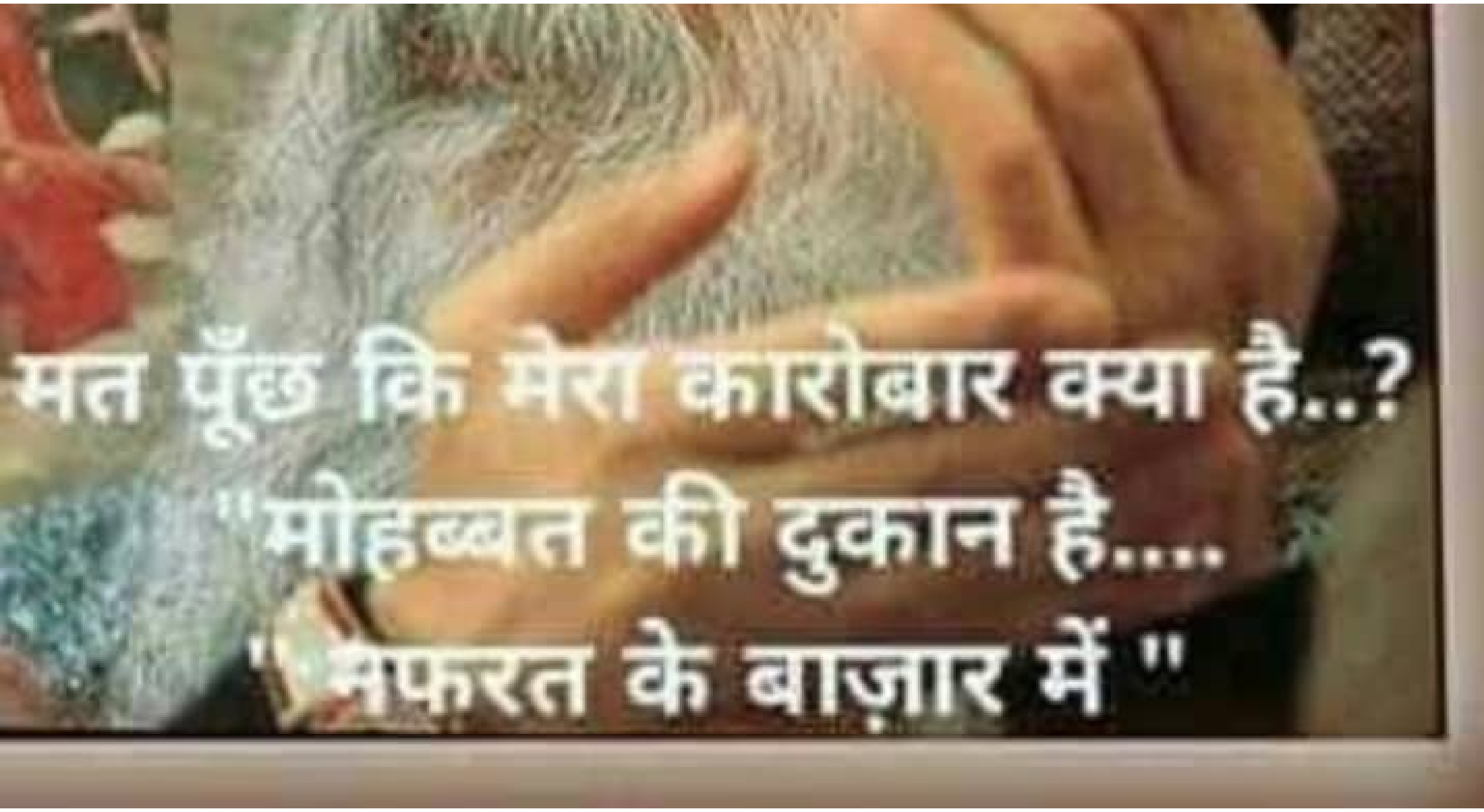

CamScanner

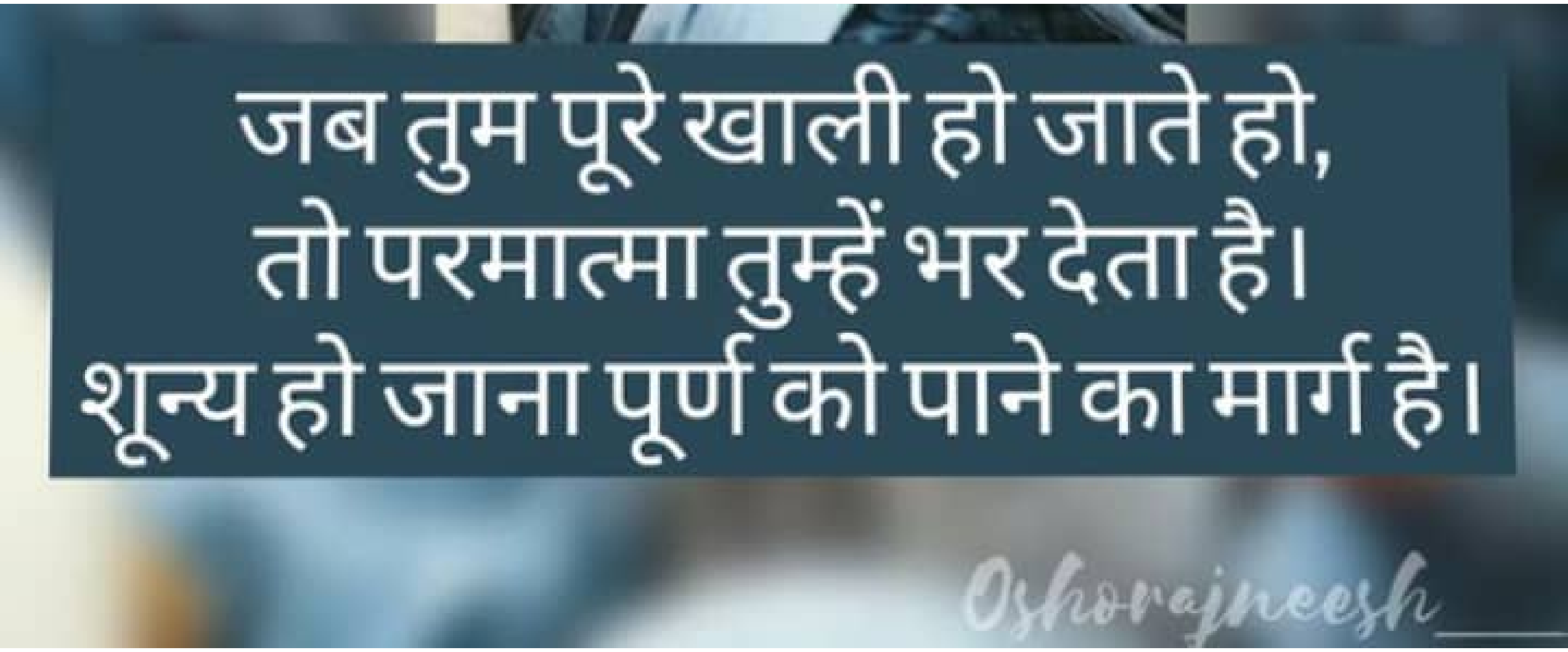
जब तुम पूरे खाली हो जाते हो,
तो परमात्मा तुम्हें भर देता है।
शून्य हो जाना पूर्ण को पाने का मार्ग है।
Oshorajneesh

CamScanner

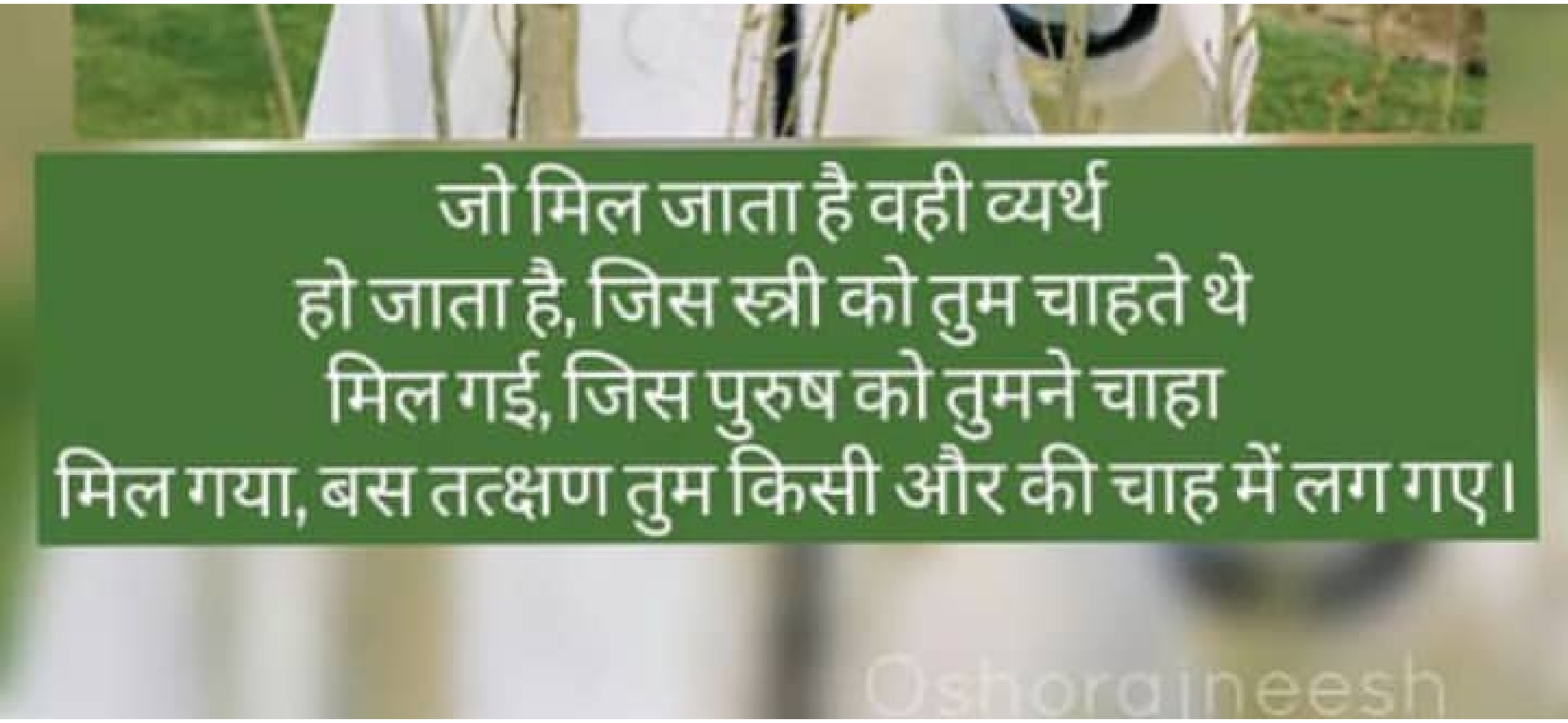
जो मिल जाता है वही व्यर्थ
हो जाता है, जिस स्त्री को तुम चाहते थे
मिल गई, जिस पुरुष को तुमने चाहा
मिल गया, बस तत्क्षण तुम किसी और की चाह में लग गए।
Oshorajneesh

CamScanner

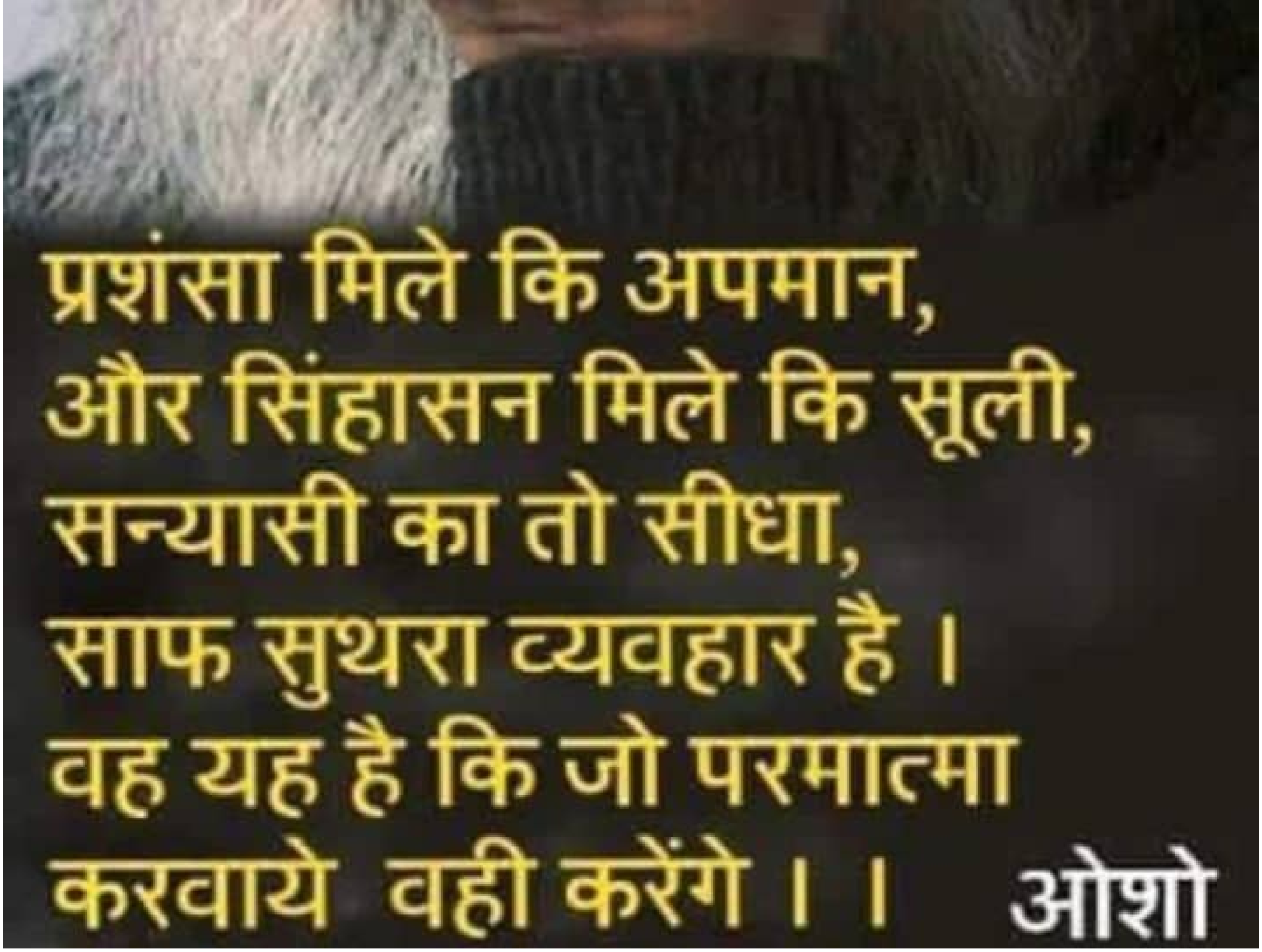
प्रशंसा मिले कि अपमान,
और सिंहासन मिले कि सूली,
सन्यासी का तो सीधा,
साफ सुथरा व्यवहार है ।
वह यह है कि जो परमात्मा
करवाये वही करेंगे । ।
ओशो

CamScanner

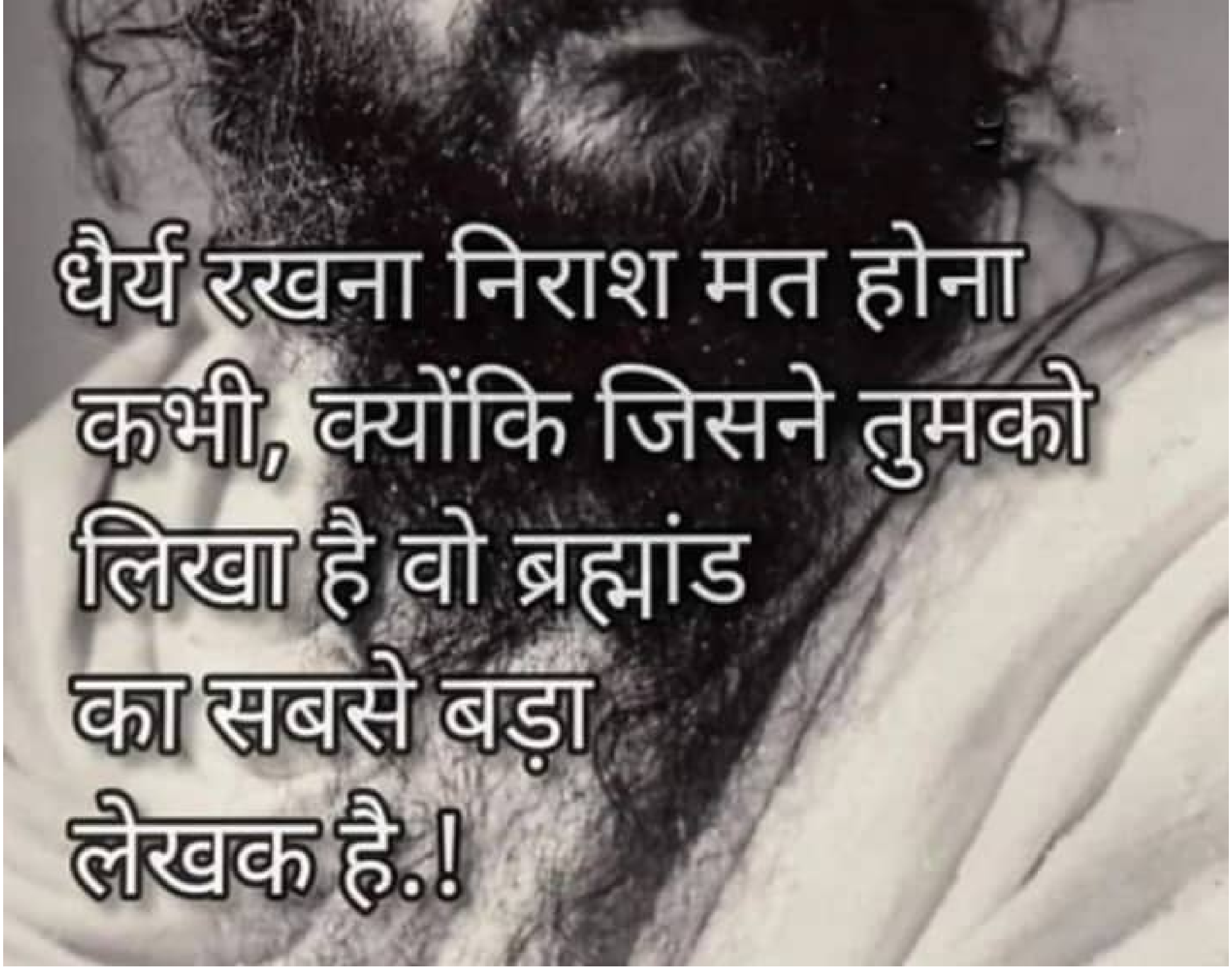

CamScanner

तुम कोई भी मूर्खता करवा लो आदमियों से, सम्मान मिलना चाहिए।

CamScanner

जैसा तुम दिखाओ... वैसा में देखूँ क्यों...?
आँखे सलामत हैं मेरी... और नजरिया
दुरूस्त...!!

CamScanner

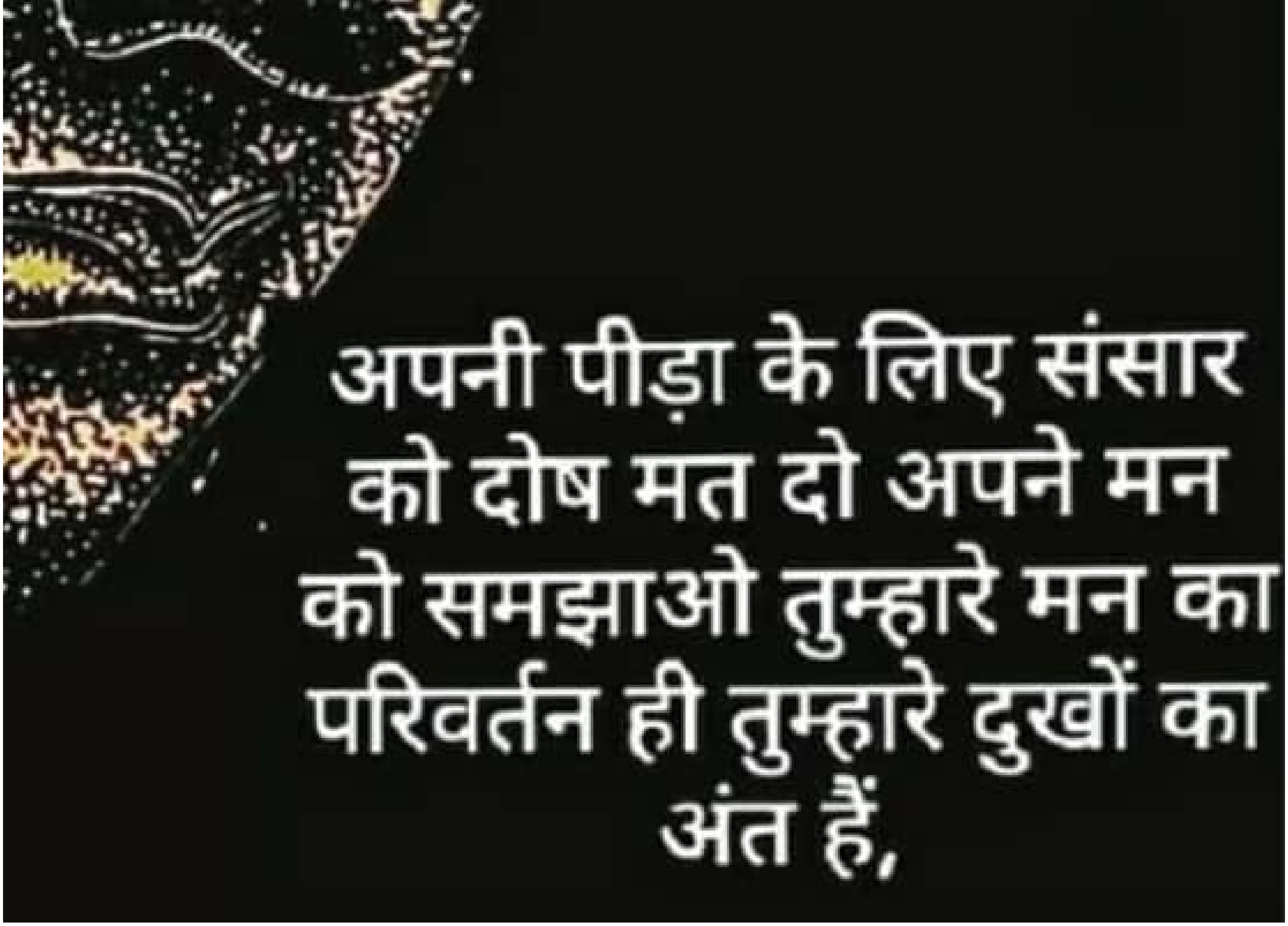
अपनी पीड़ा के लिए संसार
को दोष मत दो अपने मन
को समझाओ तुम्हारे मन का
परिवर्तन ही तुम्हारे दुखों का
अंत हैं,

CamScanner

ग़म तो ये है... के, मेरे खरेपन का...
खोटे सिक्कों ने, इम्तिहान लिया...!!

CamScanner

"बुद्ध ने महल का
त्याग किया
शांति की तलाश
OSHO DHYAN UPVAN HISAR
में। और हम
@LaughWithUniverse
शांति का त्याग
कर रहे है,
महल की तलाश
में।"

CamScanner

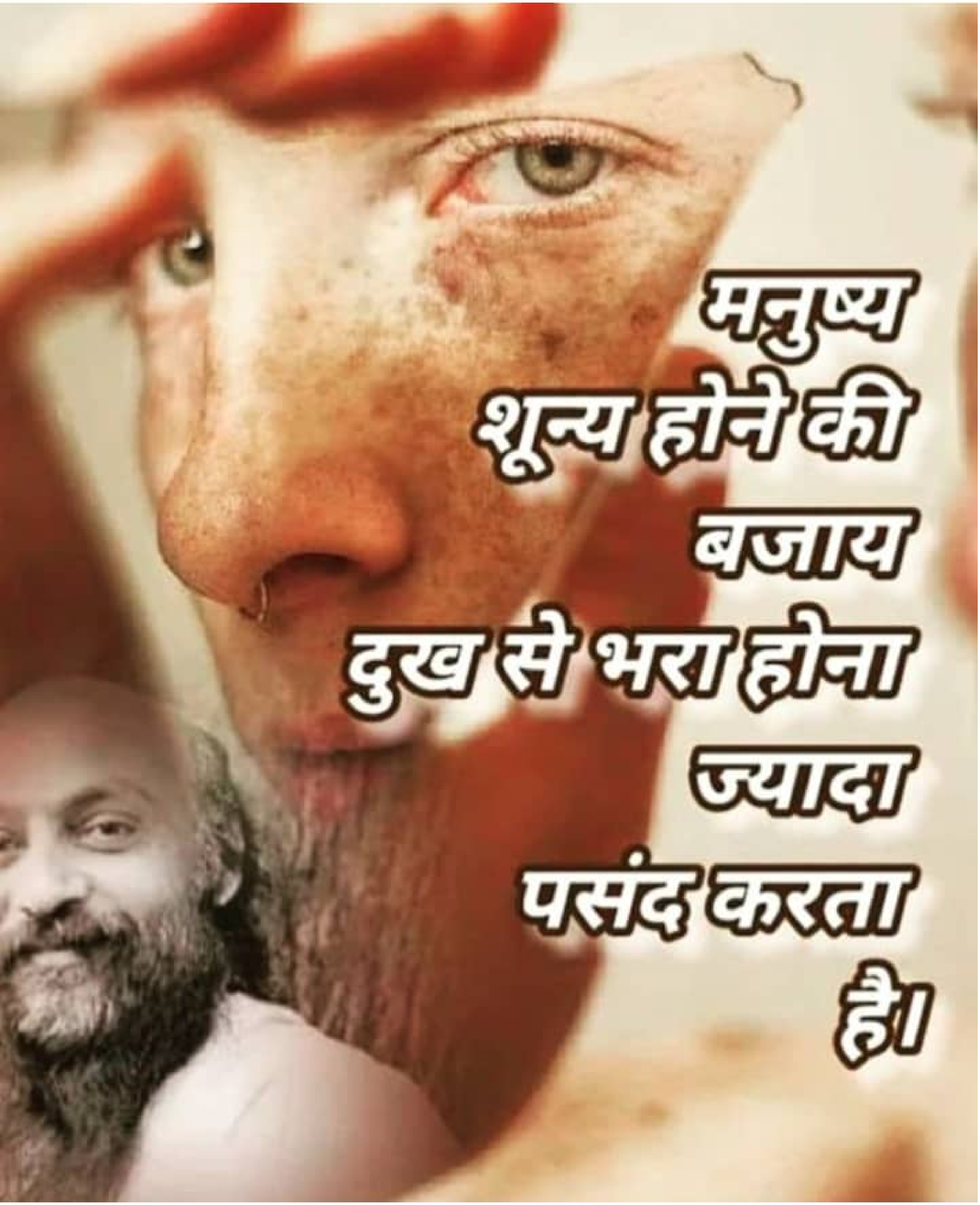

CamScanner

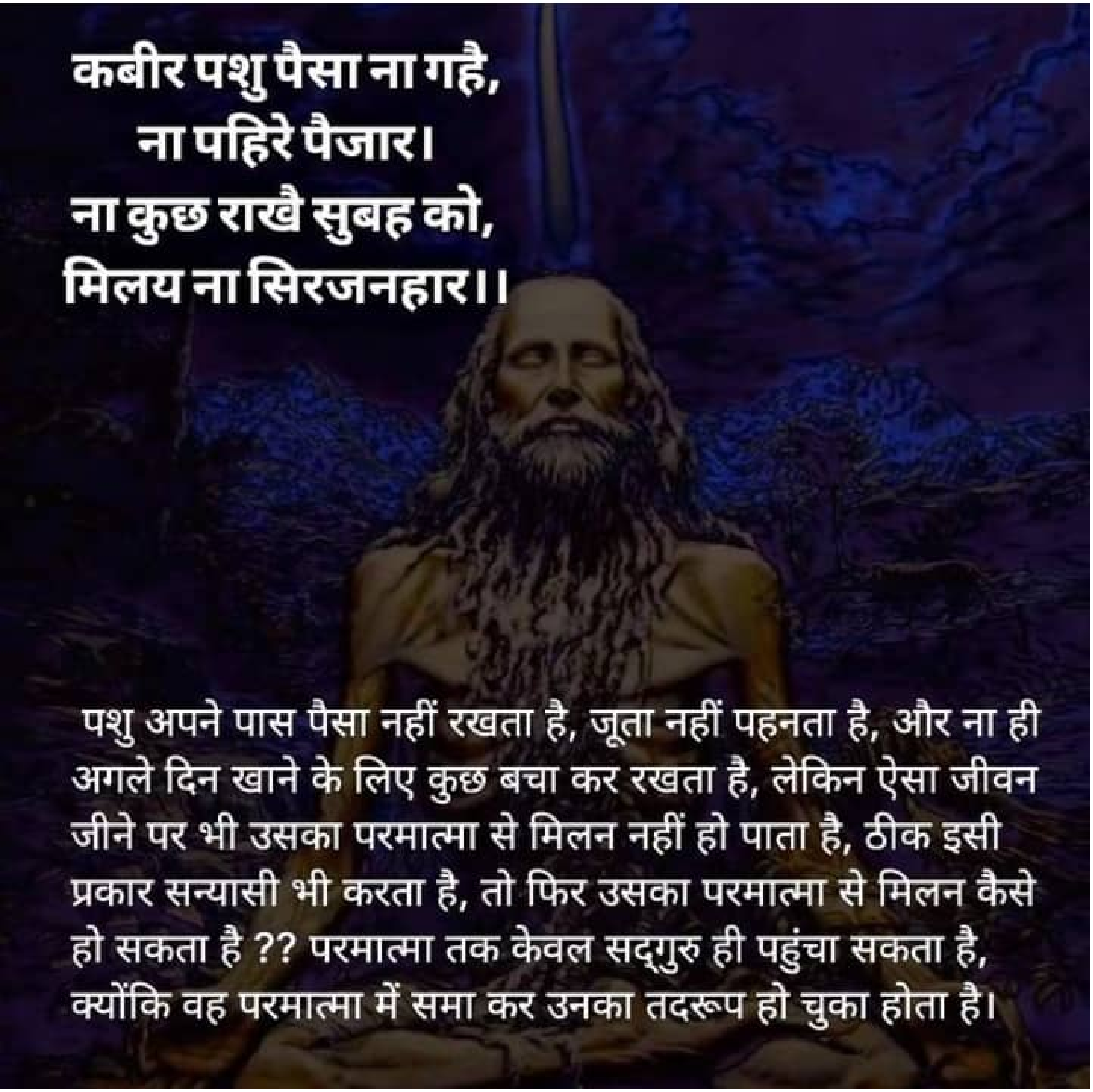
कबीर पशु पैसा ना गहै,
ना पहिरे पैजार।
ना कुछ राखै सुबह को,
मिलय ना सिरजनहार।।
पशु अपने पास पैसा नहीं रखता है, जूता नहीं पहनता है, और ना ही अगले दिन खाने के लिए कुछ बचा कर रखता है, लेकिन ऐसा जीवन जीने पर भी उसका परमात्मा से मिलन नहीं हो पाता है, ठीक इसी प्रकार सन्यासी भी करता है, तो फिर उसका परमात्मा से मिलन कैसे हो सकता है ?? परमात्मा तक केवल सद्‌गुरु ही पहुंचा सकता है, क्योंकि वह परमात्मा में समा कर उनका तदरूप हो चुका होता है।

CamScanner

अश्लीलता हमारी अपनी खोज है,
ईश्वर कि नहीं, अगर ईश्वर की होती तो,
वह हमें कपड़े पहनाकर पैदा करता।

CS CamScanner

जिस दिन तुम्हें ये दिख जाएगा, जिस दिन तुम यह जान लोगे कि पूरी दुनिया भी मिल जाए तो भी कुछ हाथ नहीं आएगा, हाथ खाली ही रहेंगे। जिस दिन हर चीज की छन भंगुरता दिख जाएगी उस दिन तुम यह भी जानोगे कि परमात्मा है और वो शाश्वत है। फ़िर तुम दौड़ोगे, नाचोगे, गाओगे लेकिन कुछ पाने के लिए नहीं, बस प्रेम में। यह जानकर की जो मिलना था वो तो मिला ही हुआ है...

CamScanner

भीतरी तत्व को तुम तभी जान पाओगे जब तुम बाहर से सब लेन देन बन्द कर दोगे।

ओशो अहोभाव

CamScanner

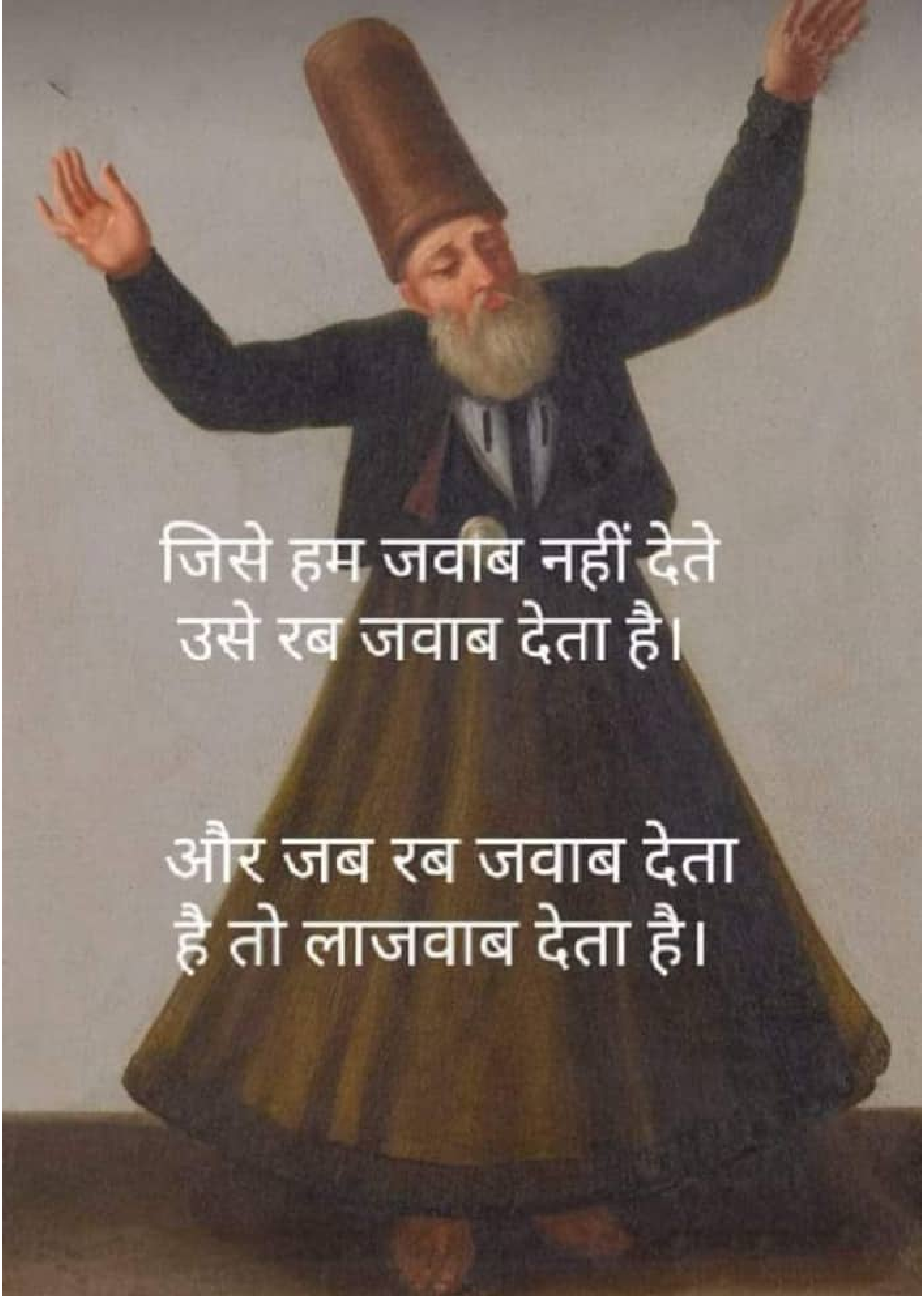

CamScanner

6:37 am 0 KB/s 4G 100%

Munabai Makvana · 3d ·

।। प्रायश्चित मतलब स्वयं की चेतना का सम्पूर्ण रूपांतरण ।।

महावीर के पास कोई साधक आता था तो वे उसे पिछले जन्म के स्मरण में ले जाते थे, सिर्फ इसीलिए ताकि वह देख ले कि वह कितनी बार यही सब दोहरा चुका है और यह कहना बंद कर दे कि मेरे कर्म की भूल है और यह जान ले कि भूल मेरी है। पश्चात्ताप, कर्म गलत हुआ, इससे संबंधित है। प्रायश्चित, मैं गलत हूं, इस बोध से संबंधित है। और ये दोनों बातें बहुत भिन्न हैं, इसमें जमीन आसमान का फर्क है। पश्चात्ताप करनेवाला वही का वही बना रहता है और प्रायश्चित करनेवाले को अपनी जीवन चेतना रूपांतरित कर देनी होती है। सवाल यह नहीं है कि मैंने क्रोध किया तो मैं पछता लूं। सवाल यह है कि मुझसे क्रोध हो सका तो मैं दूसरा आदमी हो जाऊं, ऐसा आदमी जिससे क्रोध न हो सके--प्रायश्चित का यह अर्थ है। ट्रांसफमशन आफ द लेवल आफ द बीइंग। यह सवाल नहीं है कि मैंने कल क्रोध किया था, आज मैं नहीं करूंगा। सवाल यह है--कल मुझसे क्रोध हुआ था, मैं कल के ही जीवन तल पर आज भी हूं। वही चेतना मेरी आज भी है। पश्चात्ताप करनेवाला कल के लिए क्षमा मांग लेगा। हर वर्ष हम मांगते हैं मिच्छामि दुक्कड़म, हर वर्ष हम मांगते हैं, क्षमा कर दे । पिछले वर्ष भी मांगा था , उसके पहले भी क्षमा मांगी थी। कब वह दिन आएगा जब कि क्षमा मांगने का अवसर न रह जाए। कि मांगते ही रहेंगे। और जानते हैं भली-भांति कि जहां से क्षमा मांगी जा रही है वहां कोई रूपांतरण नहीं है। वह आदमी वही है जो पिछले वर्ष था।

एक मित्र पिछले पूरे वर्ष से मेरे संबंध में अनूठी कहानियां प्रचारित करते हैं। अब यह पर्युषण पूरे हुए तो उनका कल पत्र आया कि मुझे क्षमा कर दें। ऐसा नहीं कि मैंने जाने अनजाने अपराध किए हों, उनके लिए क्षमा कर दें--पत्र में लिखा है, मैंने अपराध किए हैं, उनके लिए क्षमा कर दें, और मैं हृदय की गहराई से क्षमा मांगता हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि पत्र लिखने के बाद उन्होंने वही काम पुनः जारी कर दिया होगा। क्योंकि पत्र लिखने से वह रूपांतरण नहीं हो जानेवाला है। क्षमा मांग लेने से आप नहीं बदल जाएंगे, आप फिर वही होंगे। सच तो यह है--जो क्षमा मांग लेने से आप नहीं बदल जाएंगे, आप फिर वही होंगे। सच तो यह है--जो

CamScanner

11:54 am 9 KB/s 4G 88%

पता भी न था कहां होगा। जिस दिन हसन को आत्मज्ञान हुआ, उसने पहला धन्यवाद उस चोर को दिया और परमात्मा से कहा, उस चोर को धन्यवाद! क्योंकि उसके पास ही मैंने यह सीखा कि साधारण–सी चोरी करने यह आदमी जाता है और खाली हाथ लौट आता है, लेकिन उदास नहीं है, थकता नहीं, निश्चय इसका टूटता नहीं। कभी ऐसा नहीं कहता कि यह धंधा बेकार है, छोड़ दें, कुछ हाथ नहीं आता!

और जब मैं परमात्मा को खोजने निकला, उस परम संपदा को खोजने निकला, तो न मालूम कितनी बार ऐसा लगता था कि यह सब बेकार है, कुछ मिलता नहीं। न कोई परमात्मा दिखाई पड़ता है, न कोई आत्मा का अनुभव होता है। पता नहीं इस सब बकवास में मैं पड़ गया हूं, छोडूं। और जब भी मुझे ऐसा लगता था, तभी मुझे उस चोर का खयाल आता था कि साधारण–सी संपदा को चुराने जो गया है, उसका निश्चय भी मुझसे ज्यादा है, और मैं परम संपदा को चुराने निकला हूं, तो मेरा निश्चय इतना डांवाडोल है! तो जिस दिन उसे ज्ञान हुआ, उसने पहला धन्यवाद उस चोर को दिया और कहा कि मेरा असली गुरु वही है। हसन के शिष्यों ने उससे पूछा कि उसके असली गुरु होने का कारण? तो उसने कहा, उसका दृढ़ निश्चय!

दृढ़ निश्चय का अर्थ है कि पूरे प्राण इतने आत्मसात हैं कि चाहे हार हो, चाहे जीत; चाहे सफलता मिले, चाहे असफलता, निर्णय नहीं बदलेगा। दृढ़ निश्चय का अर्थ है, चाहे असफलता मिले, चाहे सफलता, चाहे जन्मों–जन्मों तक भटकना पड़े, निर्णय नहीं बदलेगा। खोज जारी रहेगी। सब खो जाए बाहर, लेकिन भीतर खोजने वाला संकल्प नहीं खोएगा।

वह जारी रहेगा। सब विपरीत हो जाए, सब प्रतिकूल पड़ जाए, कोई साथी न मिले, कोई संगी न मिले, कोई अनुभव की किरण भी न मिले, अंधेरा घनघोर हो, टूटने की कोई आशा न रहे, तब भी।

🙏🙏🌹🌹🔥🔥

~ ओशो✍️

गीता दर्शन , (भाग-04), प्रवचन : 111

Comment as Rajesh Kumar Rai

CamScanner

ओशो प्रेम नमन 💐💕

सारी प्रकृति विश्राम में जी रही है, सिर्फ मनुष्य को छोड़कर.... !

... हम निरंतर एक अजीब बीमारी से ग्रसित हैं, और वह बीमारी है अत्याधिक व्यस्त होने की, आक्युपाइड होने की। हर आदमी ऐसा लग रहा है, जैसे बहुत भारी काम में उलझा हुआ है। शायद काम कुछ भी नहीं है, लेकिन आदत अत्याधिक काम में उलझे होने की हमने खड़ी कर ली है। हर आदमी भाग रहा है, दौड़ रहा है और इस भांति संलग्न है, जैसे सारे जगत का भार उसके ऊपर है। इतना व्यस्त मालूम हो रहा है।

और यह व्यस्तता, यह जो आक्युपाइड माइंड है--यह दिन-रात व्यस्त होना इसके कारण चित्त निरंतर क्षीण होता चला जाता है। विश्राम का कोई भी क्षण न होने से चित्त दुर्बल हो जाता है। और दुर्बल चित्त सत्य को नहीं जान सकता है। सत्य को जानने के लिए शक्ति से परिपूर्ण, बहता हुआ, भरा हुआ चित्त चाहिए। और ऐसा चित्त तभी हो सकता है, जब आप अव्यस्त होने की थोड़ी सामर्थ्य पैदा कर लें।

एक आदमी को मैं देखता था रोज सांझ वे घूमने जाते थे। लेकिन घूमने भी वे ऐसे जाते थे, इतनी तेजी से कि जैसे किसी युद्ध पर जा रहे हों। तो मैंने उन्हें टोका और मैंने कहा कि आप किसी लड़ाई पर जाते हैं रोज? उन्होंने कहा, लड़ाई पर? मैं तो घूमने जाता हूं। तो मैंने कहा, लेकिन जाते आप ऐसे हैं, इतने तने हुए, इतने खिंचे हुए, इतने परेशान, इतने भागे हुए, जैसे कहीं पहुंचना हो। कहां पहुंचने के लिए जाते हैं? उन्होंने कहा, पहुंचने! मैं सिर्फ घूमने जाता हूं। लेकिन मैंने कहा, आपका मन घूमने की दशा में नहीं होता। घूमने जाने का मतलब है ऐसे जाना, जैसे कहीं पहुंचना नहीं है। कोई हम यात्रा थोड़े ही कर रहे हैं। यात्रा जब कोई करता है तो तना हुआ, खिंचा हुआ--उसे कहीं पहुंचना है।

सारी प्रकृति इसी भांति विश्राम में जी रही है, सिर्फ मनुष्य को छोड़कर। मनुष्य अति तनाव में है। और उसे खयाल भी नहीं है कि इतना तना हुआ होना, इतना व्यस्त, इतना उलझा हुआ होना ही उसे वंचित कर रहा है किसी सत्य को, किसी आनंद को जानने से।

CS CamScanner

CamScanner

जैन और बौद्ध कहते हैं, परमात्मा ऊपर से नहीं उतरता, तुम्हारे भीतर से ऊपर की तरफ जाता है; उठता है। जैसे बीज से अंकुर उठता है, जैसे दीये से ज्योति ऊपर की तरफ उठती है, जैसे धूप से धुआं ऊपर की तरफ उठता है। परमात्मा तुम्हारी सुवास है जो आकाश की तरफ उठने लगती है।

ओशो अहोभाव

नाम सुमिर मन बांवरे #6

ahobhav_

CamScanner

Awākēn

2h ·

मनुष्य अपने विश्वास से बनता है। जैसा वह विश्वास करता है, वैसा ही वह होता है। ___भगवत गीता

CamScanner

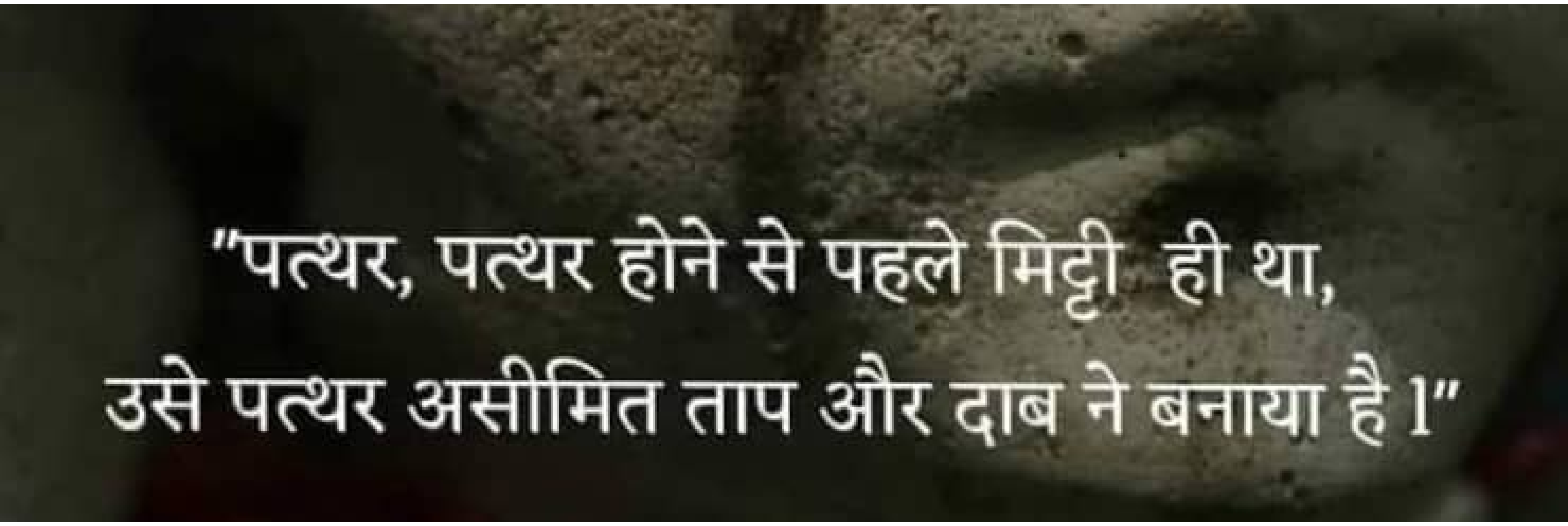

CamScanner

2d ·

गुर्जिएफ पश्चिम का एक बहुत बड़ा संत,.
अपने आश्रम के बाहर दीवाल पर लिख रख छोड़ा था, कि जिसने अपने मां-बाप को आदर देना नहीं सीख लिया है, उसके लिए मंदिर के द्वार बंद हैं।

बड़ी हैरानी की बात थी। इस बात को वहां लिखने की क्या जरूरत थी? लोग पूछते भी गुर्जिएफ से, कि यह क्या मामला है? इससे मां-बाप से क्या लेना-देना!

गुर्जिएफ कहता, कि जिसने इस संसार के मां-बाप से संबंध श्रद्धा का नहीं बना लिया, उसके पास सीढ़ी ही नहीं है उस ऊपर के पिता की तरफ चढ़ने की। उसकी सीढ़ी नहीं है उसके पास।

उसके पास मौलिक अनुभव नहीं है, जिसका बीज बन जाए और जिसका वृक्ष हो सके। उसके पास पहली कुंजी ही नहीं है। इसलिए पूरब में, जहां धर्मों का जन्म हुआ--सारे धर्मों का जन्म पूरब में हुआ।

पश्चिम में एक भी धर्म पैदा नहीं हुआ है। जैसे सूरज पूरब में उगता है, वैसे सारा धर्म पूरब में पैदा हुआ है। पूरब में जितने धर्मों का जन्म हुआ--सभी धर्मों का हुआ--और पूरब में सभी लोगों ने एक बात पर जोर दिया है; वह है, बेटे के द्वारा पिता के प्रति एक अनन्य श्रद्धा, जिसको तोड़ा नहीं जा सकता।

कारण है उसका। कारण है, क्योंकि अगर तुम इस पृथ्वी पर अपने पिता के प्रति एक श्रद्धा का भाव पैदा नहीं कर पाए, तो तुम उस अज्ञात पिता के प्रति तो कैसे श्रद्धा का भाव पैदा कर पाओगे? मूल सीढ़ी खो रही है। इसलिए जिन लोगों का भी अपने पिता से बहुत अच्छा संबंध नहीं है, उन्हें उस संबंध को सुधार लेना चाहिए। उसको बिना सुधारे उनके और परमात्मा के बीच थोड़ी सी झंझट बनी

CamScanner

गुरु एक है, शिक्षक अनेक हैं।
वह जो जीवन का सत्य है, वह एक है; लेकिन उसकी शिक्षाएं अनेक हैं।
वह जो मंदिर है रहस्य का, वह एक है, लेकिन उसके द्वार अनेक हैं।
अनंत-अनंत हैं मार्ग उस तक पहुंचने के; लेकिन पहुंचने पर एक ही शेष रह जाता है।
मंजिल एक है।
और शिक्षकों में भी जो झलक दिखाई पड़ती है, वह उस एक की ही है। सभी शिक्षक सरोवर की भांति हैं। वह एक महागुरु ही उनमें प्रगट होता है।
ऐसा भी हो सकता है कि शिक्षक एक-दूसरे के विपरीत हों; फिर भी जो उनमें प्रगट होता है; वह एक ही है।
सत्य की अनुभूति एक है, अभिव्यक्तियां अनेक हैं।

CS CamScanner

कुदरत के दो रास्ते

एक बच्चा दोपहर में नंगे पैर फूल बेच रहा था। लोग मोलभाव कर रहे थे। एक सज्जन ने उसके पैर देखे; बहुत दुःख हुआ। वह भागकर गया, पास ही की एक दुकान से बूट लेकर के आया और कहा–बेटा! बूट पहन ले। लड़के ने फटाफट बूट पहने, बड़ा खुश हुआ और उस आदमी का हाथ पकड़ के कहने लगा–आप भगवान हो। वह आदमी घबराकर बोला–नहीं...नहीं...बेटा! मैं भगवान नहीं। फिर लड़का बोला–जरूर आप भगवान के दोस्त होंगे, क्योंकि मैंने कल रात ही भगवान को अरदास की थी कि भगवानजी, मेरे पैर बहुत जलते हैं। मुझे बूट लेकर के दो। वह आदमी आंखों में पानी लिये मुस्कराता हुआ चला गया, पर वो जान गया था कि भगवान का दोस्त बनना ज्यादा मुश्किल नहीं है। कुदरत ने दो रास्ते बनाए हैं–

- देकर जाओ या
- छोड़कर जाओ

साथ लेकर के जाने की कोई व्यवस्था नहीं।

CamScanner

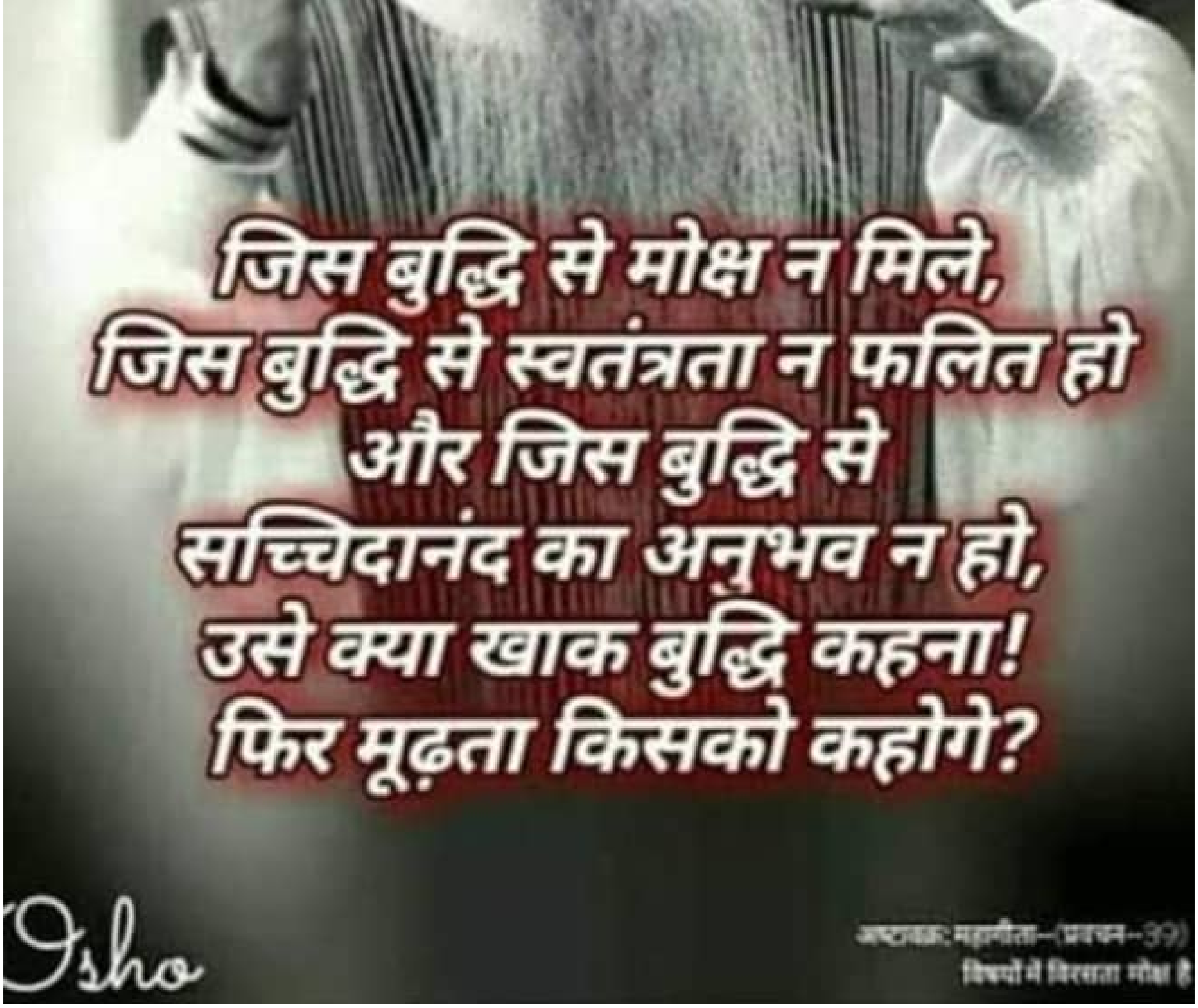
जिस बुद्धि से मोक्ष न मिले,
जिस बुद्धि से स्वतंत्रता न फलित हो
और जिस बुद्धि से
सच्चिदानंद का अनुभव न हो,
उसे क्या खाक बुद्धि कहना!
फिर मूढ़ता किसको कहोगे?
Osho
अष्टावक्र: महागीता--(प्रवचन--39)

CamScanner

"तुम थोड़े ही सजग होओगे तो निन्यानबे प्रतिशत विचार तो तुम व्यर्थ ही पाओगे, जिनको न किया होता तो कुछ न खोते, जिनको करके तुमने बहुत कुछ खोया। क्योंकि हर विचार ऊर्जा को समाप्त कर रहा है। एक-एक विचार के लिए कीमत चुकानी पड़ रही है। तुम ऐसा मत समझना कि मुफ्त सपने देख रहे हो। मुफ्त तो इस संसार में कुछ भी नहीं है। मुफ्त तो कुछ हो ही नहीं सकता; जो भी है, उसे तुम्हें चुकाना पड़ रहा है। तुम विचार कर रहे हो; तुम्हारी ऊर्जा खो रही है। वह एक छिद्र है। तुम व्यर्थ कुछ बात कर रहे हो; ऊर्जा खो रही है। तुम व्यर्थ सुन रहो हो; ऊर्जा खो रही है। तुम व्यर्थ देख रहे हो; ऊर्जा खो रही है। एक हाथ भी तुमने हिलाया तो मुफ्त तो नहीं हिला सकते; उतनी ऊर्जा गई, उतना जीवन व्यय हुआ।

संयम का यही अर्थ है। संयम का अर्थ है: जो अपरिहार्य है उसके साथ जीना; और जो काटा जा सकता है उसे काट देना। संयम ऐसा है जैसे कोई आदमी पोस्ट आफिस जाता है तार करने, तो देखता है, कितने शब्द काटे जा सकते हैं। फिर-फिर काटता है। दस, नौ-दस शब्दों के भीतर में ले आता है। यही आदमी पत्र लिखे तो चार पन्ने लिखता है। और कभी तुमने खयाल किया, चार पन्ने जो नहीं कह सकते, वह एक तार कहता है।

ओशो

CamScanner

CamScanner

CamScanner

शिक्षित आदमी को
बेईमानी से बचाना असंभव है।
असंभव इसलिए है कि शिक्षा होशियारी देती है;
होशियारी चालाकी बन जाती है।
शिक्षा समझ देती है;हृदय को नहीं बदलती।
हृदय तो वही होता है।

लाओत्से कहता है कि ज्ञान जब तक न खो जाए,
तब तक इनोसेंस, निर्दोषिता उपलब्ध नहीं होती।

इसलिए बहुत मजे की बात है कि परम ज्ञान को
वे ही लोग उपलब्ध होते हैं, जो ज्ञान को भी
छोड़ने में समर्थ हो जाते हैं।
तब वे निर्दोष हो जाते हैं,तब वे सरल हो जाते हैं।

#-ताओ उपनिषद-प्र-40,ओशो

CamScanner

CamScanner

अहोभाव

भटकने के लिए हजार उपाय हैं,
पहुंचने के लिए एक उपाय हैं।
भटकाने वाले करोड़ हैं,
पहुंचाने वाला एक हैं।
भटकना चाहो तो कोई अंत नहीं हैं।
जन्मो-जन्मो तक भटकते रहो।
वही तुमने किया हैं,
वही तुम अभी भी कर रहे हो।
पहुंचना हो तो एक मार्ग हैं।
स्मरण रखना, सत्य अनन्त नहीं है।
सत्य एक हैं।

ओशो

CamScanner

CamScanner

CamScanner

दुखी कौन नहीं है? सभी दुखी हैं और मार्ग भी एक है।

दुखी हो इसलिए कि जो है उससे भी राजी नहीं होते। क्या कारण है दुख का? इतना ही कारण है कि जो है उससे राजी नहीं होते; कुछ और होना चाहिए। जहां हो वहां राजी नहीं होते; कहीं और होना चाहिए। जैसे हो वैसे से राजी नहीं होते; कुछ और रूप होना चाहिए। सदा सपना देखते हो सपने के कारण दुखी हो।

सपनों को जाने दो। जिस दिन सपने चले जाते हैं, उसी दिन सुख उतर आता है। सुख सपनों के अभाव में उतरता है। मांगो मत कहो मत कि क्या होना चाहिए। जैसा है, जो है - इससे अन्यथा न हो सकता है, न होगा। इससे राजी हो जाओ। इसके साथ आनंदित हो जाओ जैसा है। फिर कैसा दुख?

दुख तुम्हारी आकांक्षा के कारण है। दस हजार रुपये तुम्हारे पास हैं- क्या दुख है दस हजार रुपये में? दस हजार रुपये में दुख कैसे हो सकता है? होगा तो कुछ सुख ही होगा, दुख कैसे हो सकता है? लेकिन पड़ोसी के पास बीस हजार हैं, यह दुख है। तुम्हारे पास भी बीस हजार रुपये होने चाहिए, यह दुख है।

पद धुंघरू बांध
ओशो

CamScanner

धर्म की कोई नाव नहीं होती।
व्यक्तिगत रूप से ही
तैरना पड़ता है।
"भगवान रजनीश"
समाधि कमल--(प्रवचन--15)

CamScanner

असल में, जो स्वयं को जान लेता वह सब जान लेता। क्योंकि स्वयं सबका सार-संचित है; स्वयं के भीतर सारा ब्रह्मांड छिपा है छोटे से पिंड में। अनंत आकाश समाया है तुम्हारे छोटे से हृदय में। वह बीज-रूप है, यह विराट वृक्ष-रूप है। बीज को जिसने जान लिया उसने पूरे वृक्ष को जान लिया। क्योंकि बीज में सारा ब्लू-प्रिंट है, पूरे वृक्ष की एक-एक पत्ती छिपी है। अभी प्रकट नहीं हुई है, छिपी है। तुम्हारे भीतर सारा ब्रह्मांड छिपा है। इसलिए उपनिषद कहते हैं, तत्वमसि। वह तुम ही हो।: ओशो

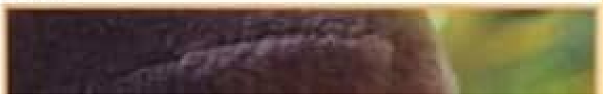

CamScanner

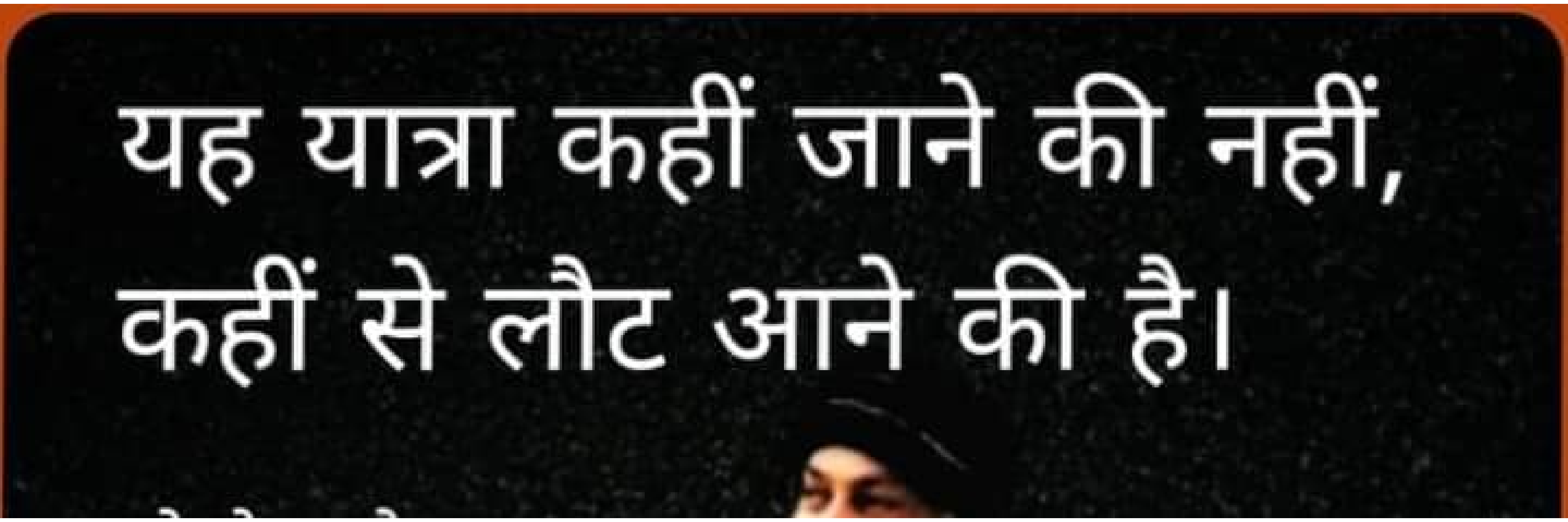

CamScanner

5:49 pm 0 KB/s VoLTE 4G 53%

Enlightened Raju
2d ·

जब तक तुम दूसरे को प्रभावित करना चाहते हो, तब तक तुम अहंकार से ग्रस्त हो। आत्मा किसी को प्रभावित करना नहीं चाहती। दूसरे को प्रभावित करने में सार भी क्या है! पानी पर बनायी हुई लकीरों जैसा है।

क्या होगा मुझे—दस हजार लोग प्रभावित हों कि दस करोड़ लोग प्रभावित हों। इससे होगा क्या? उनको प्रभावित करके मैं क्या पा लूंगा। अज्ञानियों की भीड़ को प्रभावित करने की इतनी उत्सुकता अज्ञान की खबर देती है। राजनेता दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होता है—समझ में आता है; लेकिन धार्मिक व्यक्ति क्यों दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होगा!

जब भी तुम दूसरों को प्रभावित करना चाहते हो, तब एक .बात याद रखना कि तुम आत्मस्थ नहीं हो। दूसरे को प्रभावित करने का अर्थ है कि तुम अहंकार—स्थित हो। अहंकार दूसरे के प्रभाव को भोजन की तरह उपलब्ध करता है; उसी पर वह जीता है। जितनी आंखें मुझे पहचान लें, उतना मेरा अहंकार बड़ा होता है। अगर सारी दुनिया मुझे पहचान ले, मेरा अहंकार सर्वोत्कृष्ट हो जाता है। कोई मुझे न पहचाने—गांव से निकलूं सड़क से गुजरूं, कोई देखे न, कोई रेकगनीशन नहीं, कोई प्रत्यभिज्ञा नहीं; किसी की आंख में झलक न आये, लगे ऐसा जैसा कि मैं हूं ही नहीं—बस, वहां अहंकार को चोट है।

अहंकार चाहता है कि दूसरे ध्यान दें। यह बड़े मजे की बात है— अहंकार ध्यान नहीं करना चाहता; दूसरे उस पर ध्यान करें.., सारी दुनिया उसकी —तरफ देखे, वह केंद्र हो जाए।

धार्मिक व्यक्ति, दूसरा मेरी तरफ देखे, इसकी फिक्र नहीं करता; मैं अपनी तरफ देखूं—क्योंकि अंततः वही मेरे साथ जाएगा

#ओशो 🙏

5

Like Comment Share

CamScanner

दुनिया में दो तरह के दुष्ट होते हैं।एक तो वे हैं जो दूसरों को सताते हैं।और एक वे हैं जो स्वयं को सताते हैं।इन दोनों तरह के दुष्टों में कोई भी धार्मिक नहीं है।ये दोनों ही हिंसक हैं।

दूसरों को सताओ के स्वयं को सताओ,सताने में हिंसा है।और हिंसा विध्वंस है, सृजन नहीं।

CamScanner

पता किसी को भी नहीं और सब
दावा कर रहे हैं कि मुझे पता है

CamScanner

6:00 pm 0 KB/s 51%

facebook

खींच देतीं और बच्चों से कह देतीं कि इस लकीर के बाहर तुम निकल न सकोगे; लाख उपाय करोगे और निकल न सकोगे। बचपन से ही बच्चों को यह बात सिखाई जाती।

और बच्चों की तो बात और, गुरजिएफ ने लिखा है कि खानाबदोश औरत अपने पति के चारों तरफ लकीर खींच देती और कह देती कि बस इसके बाहर नहीं निकल सकोगे। गुरजिएफ तो बड़ा हैरान हुआ। बच्चा समझ लो कि बच्चा है, मान गया। लेकिन जिसने बीस-पच्चीस साल तक यह बात मानी हो, उसके भीतर गहरी बैठ गई। वह अब पति ही सही, मगर भीतर तो वही बच्चा है; और कहने वाली आज मां न सही, पत्नी है, मगर है तो वही औरत, है तो वही स्त्री। वही बल, वही धमकी--बाहर निकल न सकोगे! बाहर निकले कि मुसीबत में पड़ जाओगे, बीमार पड़ जाओगे, लंगड़े हो जाओगे, अंधे हो जाओगे। इस तरह की सारी धमकियां।

गुरजिएफ ने देखा कि जवान आदमी, बूढ़े आदमी के चारों तरफ लकीर खींच दें औरतें, वे बाहर न निकल सकें। निकलने की कोशिश करें तो यूं हो जैसे कि कोई अदृश्य दीवार, कांच की कोई पारदर्शी दीवार उन्हें रोक लेती है। बस वे लकीर तक आएं, हाथ से टटोलें, जैसे कोई चीज रोक रही है और वापस लौट जाएं।

गुरजिएफ ने कहा है, वहां मुझे पहली बार समझ में आया कि आत्म-सम्मोहन क्या है। और वहीं मैंने समझा कि यह संसार का उपद्रव क्या है।

हम सब आत्म-सम्मोहित हैं। जिस चीज को हमें धन बता दिया गया, हमने धन मान लिया। और जिस चीज को हमें पद बता दिया गया, हमने पद मान लिया। जिस चीज को हमसे कहा गया बहुमूल्य है, हमने बहुमूल्य मान लिया। और कंकड़-पत्थरों को हीरों की तरह पूज रहे हैं। दो कौड़ी की चीजों के पीछे जिंदगी भर दौड़ रहे हैं।

सांच-सांच सो सांच 👣 ओशो

CamScanner

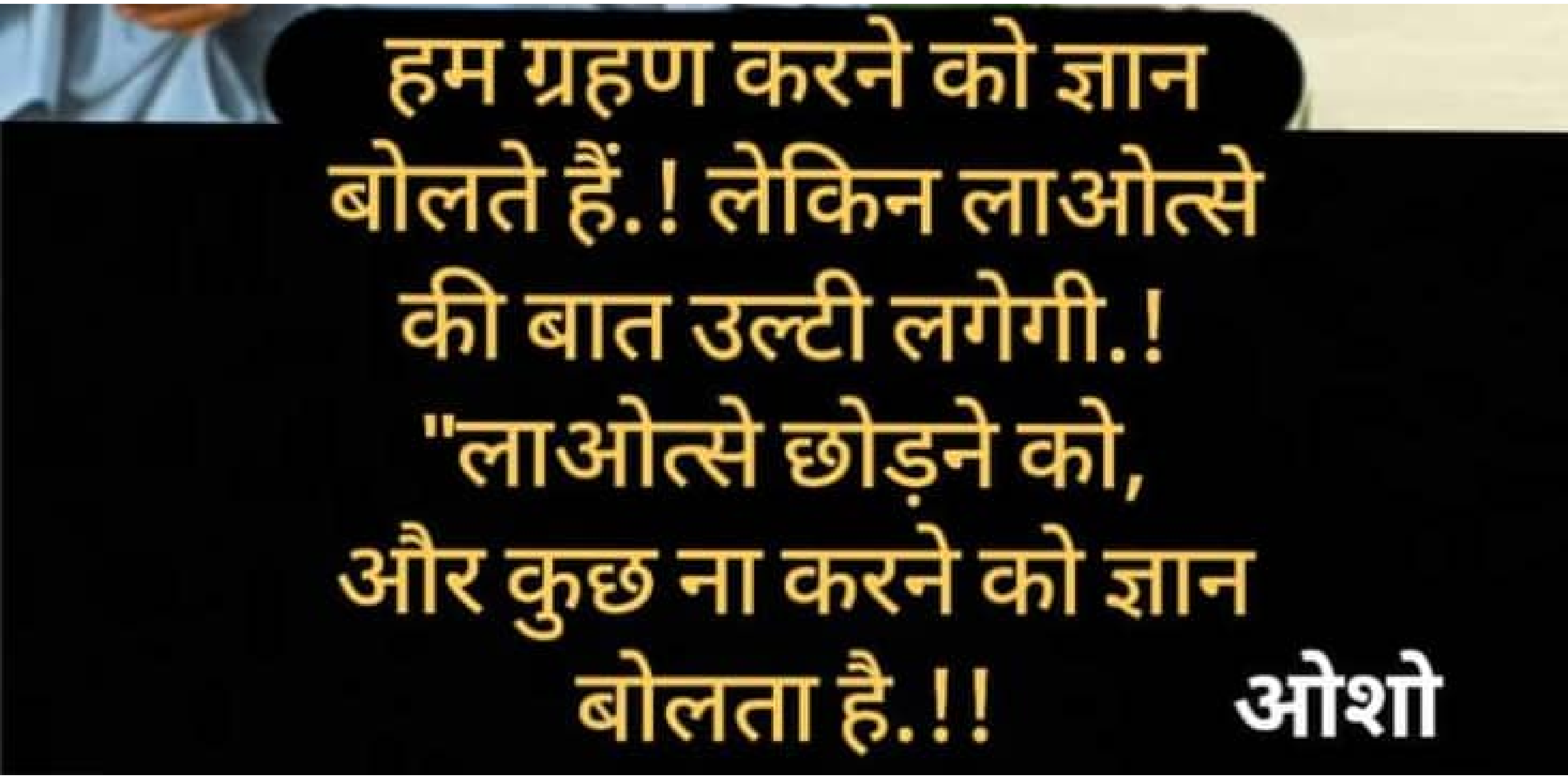
हम ग्रहण करने को ज्ञान
बोलते हैं.! लेकिन लाओत्से
की बात उल्टी लगेगी.!
"लाओत्से छोड़ने को,
और कुछ ना करने को ज्ञान
बोलता है.!!
ओशो

CamScanner

हिंदी

Hindi Songs's Lyrics

Lyrics

Hum Hain Mataa-E-Koocha / हम हैं मता-ए-कूचा-ओ-बाजार की तरह

हम हैं मता-ए-कूचा-ओ-बाजार की तरह
उठती है हर निगाह ख़रीदार की तरह

वो तो कहीं है और मगर दिल के आसपास
फिरती है कोई शै निगाह-ए-यार की तरह

मजरूह लिख रहे हैं वो अहल-ए-वफ़ा का नाम
हम भी खड़े हुये हैं गुनहगार की तरह

geetmanjusha.com

#RehanaSultan #SanjeevKumar
#NationalFilmAwardMusicDirector

CamScanner

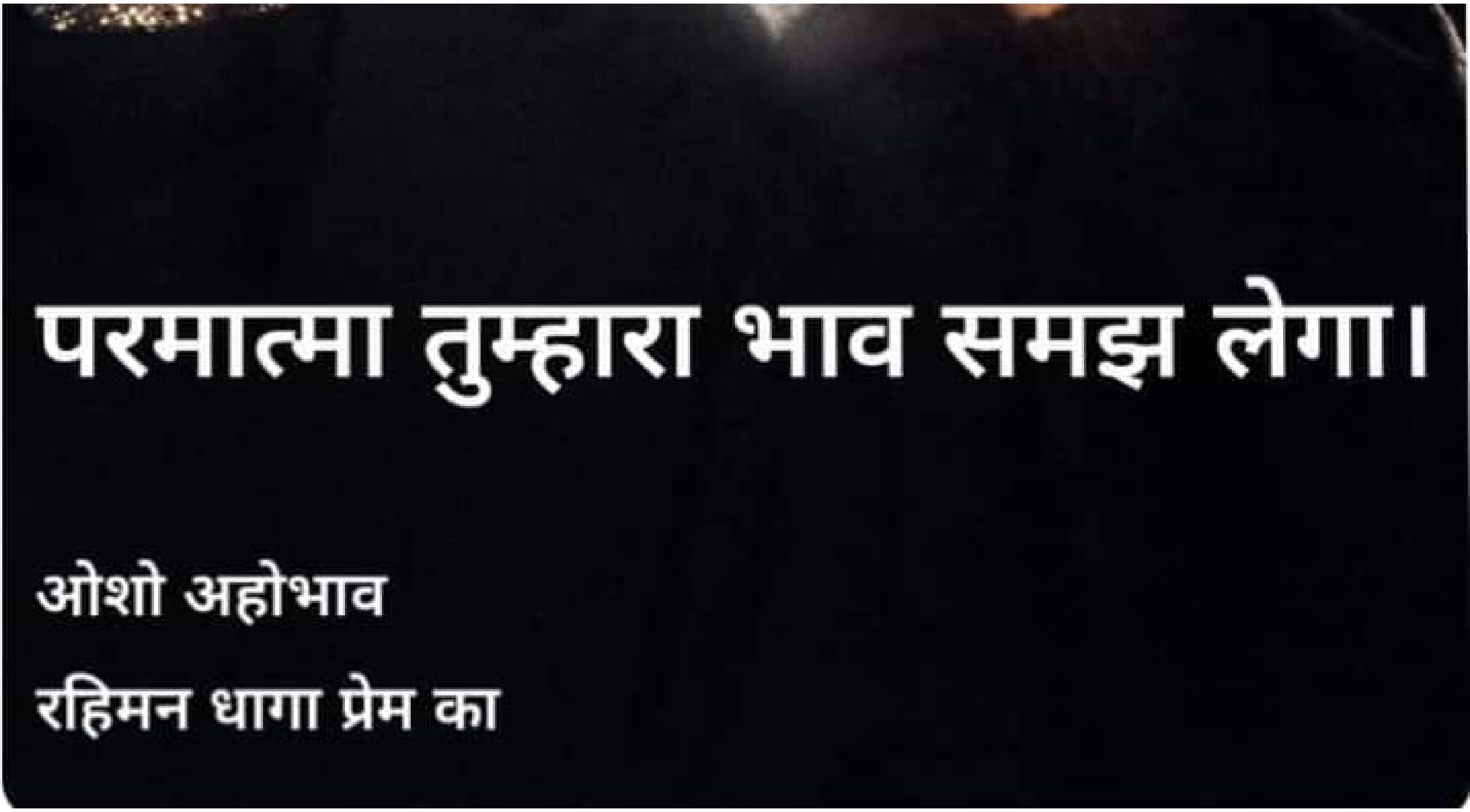

CamScanner

7:43 pm 0 KB/s
VoLTE 4G 42%
facebook

अहोभाव
4d ·

अहोभाव

प्रेम पर्याप्त है अपने में। फिर तुम जो चढ़ा दो-जो चढ़ा दो! दो आंसू। सिर झुका दो। दो शब्द बोल दो। जरूरत थोड़े ही है कि संस्कृत में बोलो, मराठी में भी बोलोगे तो समझ में आ जाएगा परमात्तमा के।

बात भाव की है, भाषा की नहीं है। अंतर्तम की है। क्या कहते हो, कैसे कहते हो, व्याकरण सही है कि गलत--इस चिंता में मत पड़ना। परमात्तमा कोई स्कूल का शिक्षक नहीं है कि पहले व्याकरण की शुद्धियां करेगा, पहले भाषा ठीक जमाने को कहेगा। परमात्तमा तुम्हारा भाव समझ लेगा। न कहो तो भी चल जाएगा। चुपचाप मौन खड़े हो जाओ तो भी चल जाएगा।

आंखें अगर दीये बन जाएं तो और क्या चाहिए! बस ये दो आंखें उसकी प्रतीक्षा में, उसकी प्रार्थना में डूब जाएं तो दीये बन जाती हैं।

तुम्हें प्रेम का तीर्थ बनना है। इन आंखों को प्रतीक्षा बन जाने दो। आएगा अतिथि, निश्चित आएगा। राह देखने की अनंत क्षमता चाहिए। इंतजार की ऐसी क्षमता चाहिए जो चुके ही न। अनंत प्रतीक्षा जो करने में सफल है, एक न एक दिन, जब भी तुम परिपक्व हो जाते हो, वह द्वार पर दस्तक देता है।

ओशो
रहिमन धागा प्रेम का

CamScanner

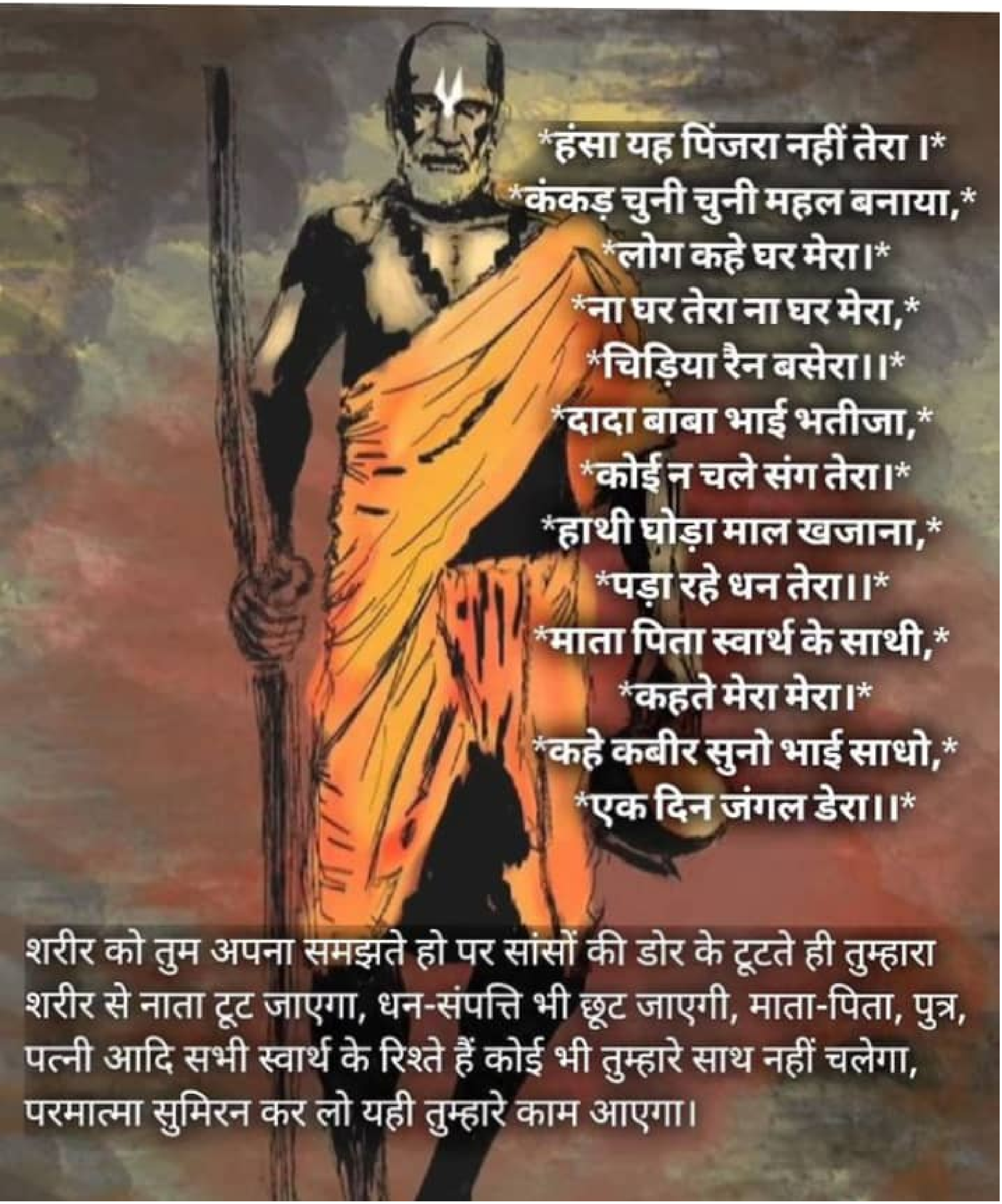
हंसा यह पिंजरा नहीं तेरा ।
कंकड़ चुनी चुनी महल बनाया,
लोग कहे घर मेरा।
ना घर तेरा ना घर मेरा,
चिड़िया रैन बसेरा।।
दादा बाबा भाई भतीजा,
कोई न चले संग तेरा।
हाथी घोड़ा माल खजाना,
पड़ा रहे धन तेरा।।
माता पिता स्वार्थ के साथी,
कहते मेरा मेरा।
कहे कबीर सुनो भाई साधो,
एक दिन जंगल डेरा।।
शरीर को तुम अपना समझते हो पर सांसों की डोर के टूटते ही तुम्हारा शरीर से नाता टूट जाएगा, धन-संपत्ति भी छूट जाएगी, माता-पिता, पुत्र, पत्नी आदि सभी स्वार्थ के रिश्ते हैं कोई भी तुम्हारे साथ नहीं चलेगा, परमात्मा सुमिरन कर लो यही तुम्हारे काम आएगा।

CamScanner

"आपके मनमें जिस व्यक्ति के प्रति
नाराज़गी है , उसे क्षमा कर दीजिए ,
हृदय से क्षमा कर दीजिए | क्षमा करने
से हमारे दो चक्र पवित्र हो जाते है | एक
तो आज्ञा चक्र खुलता है क्योंकि वह
व्यक्ति आपके आज्ञा चक्र में बैठा हुआ
होता है | और दुसरा , क्षमाभावना से
हृदय चक्र खुलता है |"

ओशो

CamScanner

10:59 pm 14%

facebook

अहोभाव

3m ·

अहोभाव

हम सदा दूसरों के जैसा होने की कोशिश करते रहते है और दुसरे जैसी प्रतिष्ठा या जीवन शैली चाहते है
ध्यान रहे, एक बार जब हम बहार के जगत में नक़ल करना शुरू करते है तो भीतर हमारी आत्मा मरनी शुरू हो जाती है। क्यों ?

क्योंकि आत्मा कभी भी नकल नहीं बन सकती है। आत्मा कार्बन कापी नहीं बन सकती है। आत्मा का अपना व्यक्तित्व है अनूठा और यूनिक। और जब भी हम बहार से नक़ल करना शुरू करते है भीतर हमारे प्राण सिकुड़ जाते है, तभी भीतर हमारे प्राण मुरझा जाते है क्योंकि उन प्राणों को अपनी प्रतिमा का अपना द्वार होता है अपना मार्ग होता। बहार से नक़ल करने वाले भीतर से मर जाते है।

ओशो

CS CamScanner

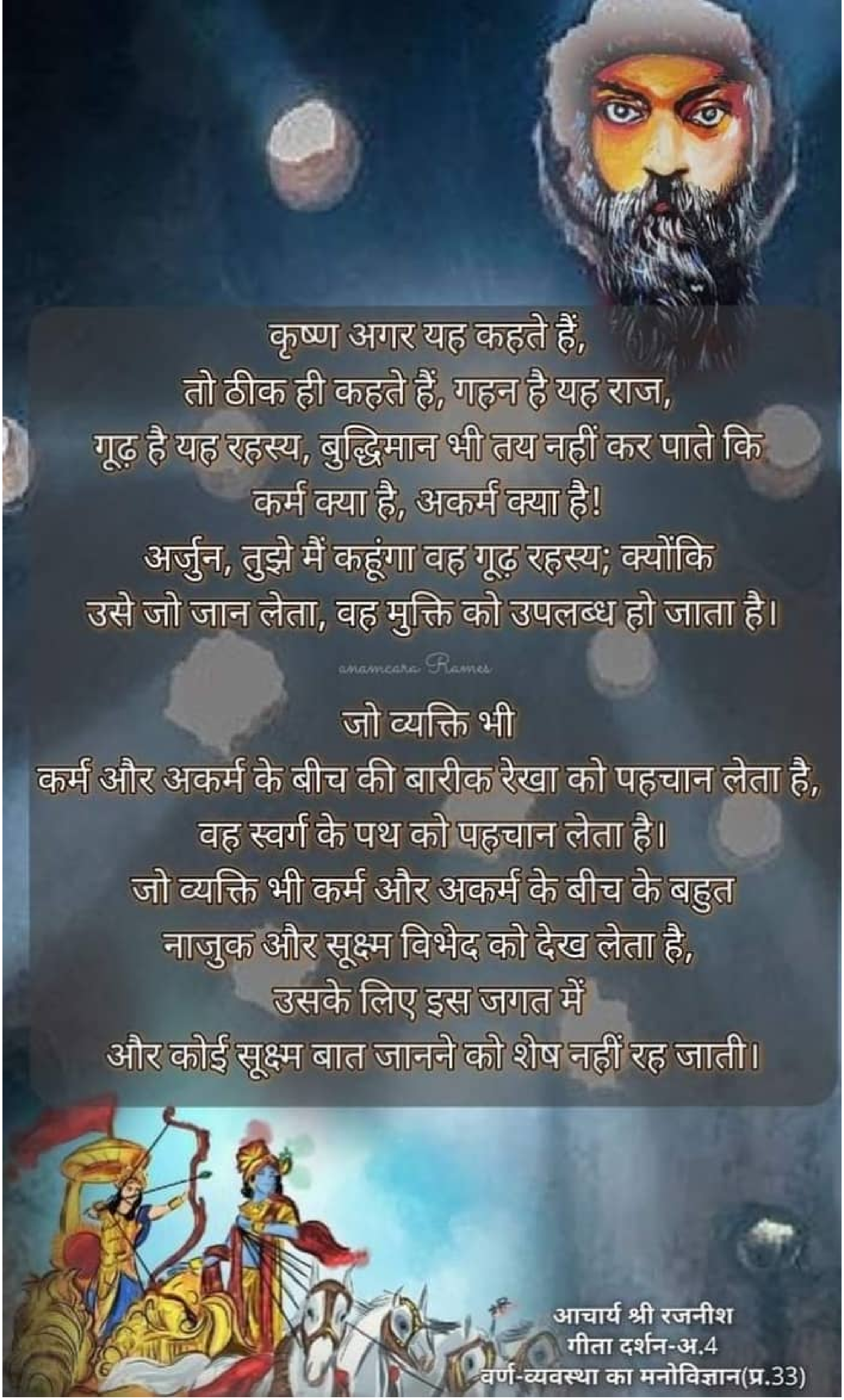
कृष्ण अगर यह कहते हैं,
तो ठीक ही कहते हैं, गहन है यह राज,
गूढ़ है यह रहस्य, बुद्धिमान भी तय नहीं कर पाते कि
कर्म क्या है, अकर्म क्या है!
अर्जुन, तुझे मैं कहूंगा वह गूढ़ रहस्य; क्योंकि
उसे जो जान लेता, वह मुक्ति को उपलब्ध हो जाता है।
जो व्यक्ति भी
कर्म और अकर्म के बीच की बारीक रेखा को पहचान लेता है,
वह स्वर्ग के पथ को पहचान लेता है।
जो व्यक्ति भी कर्म और अकर्म के बीच के बहुत
नाजुक और सूक्ष्म विभेद को देख लेता है,
उसके लिए इस जगत में
और कोई सूक्ष्म बात जानने को शेष नहीं रह जाती।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-अ.4
वर्ण-व्यवस्था का मनोविज्ञान(प्र.33)

CamScanner

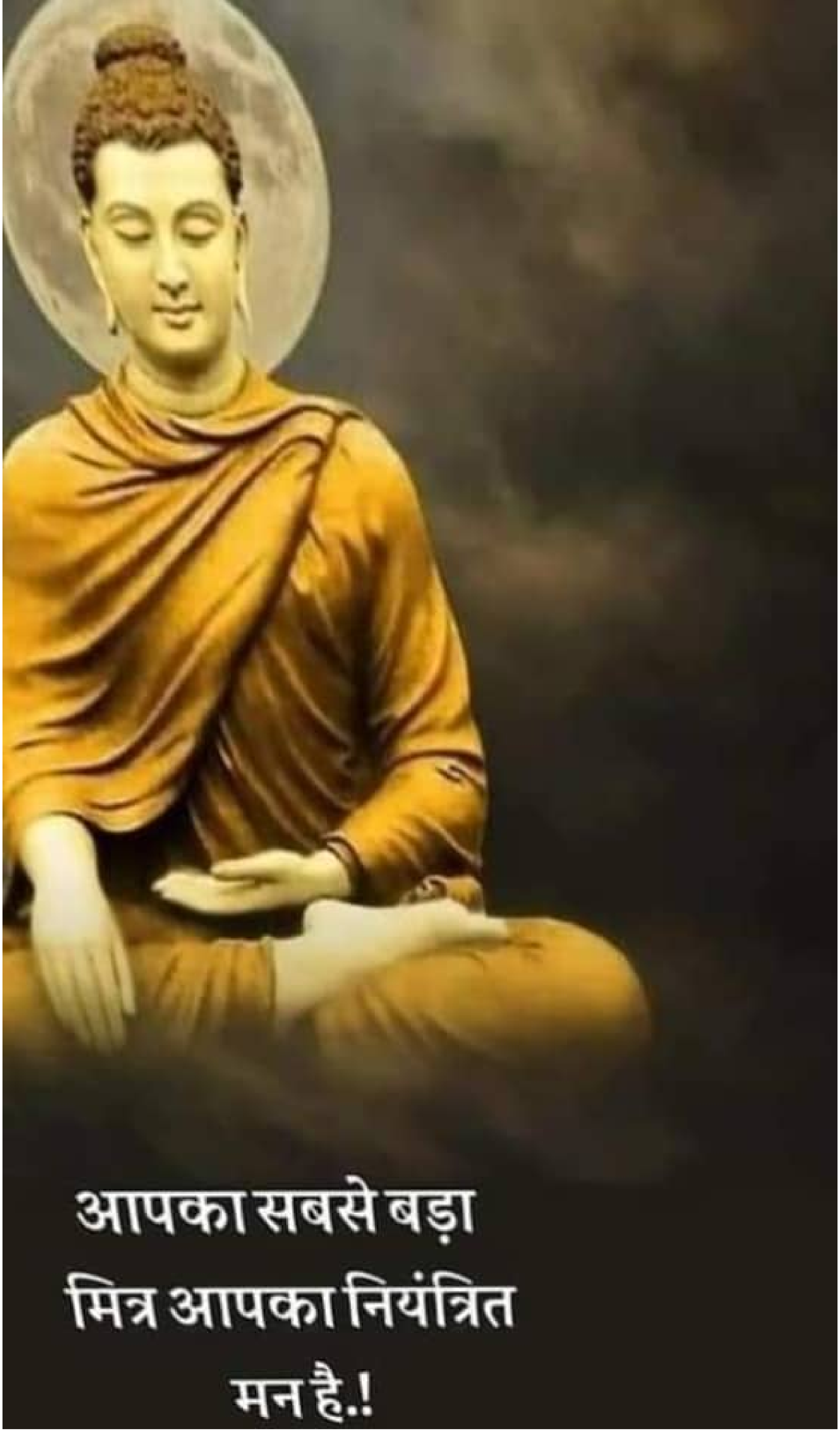

CamScanner

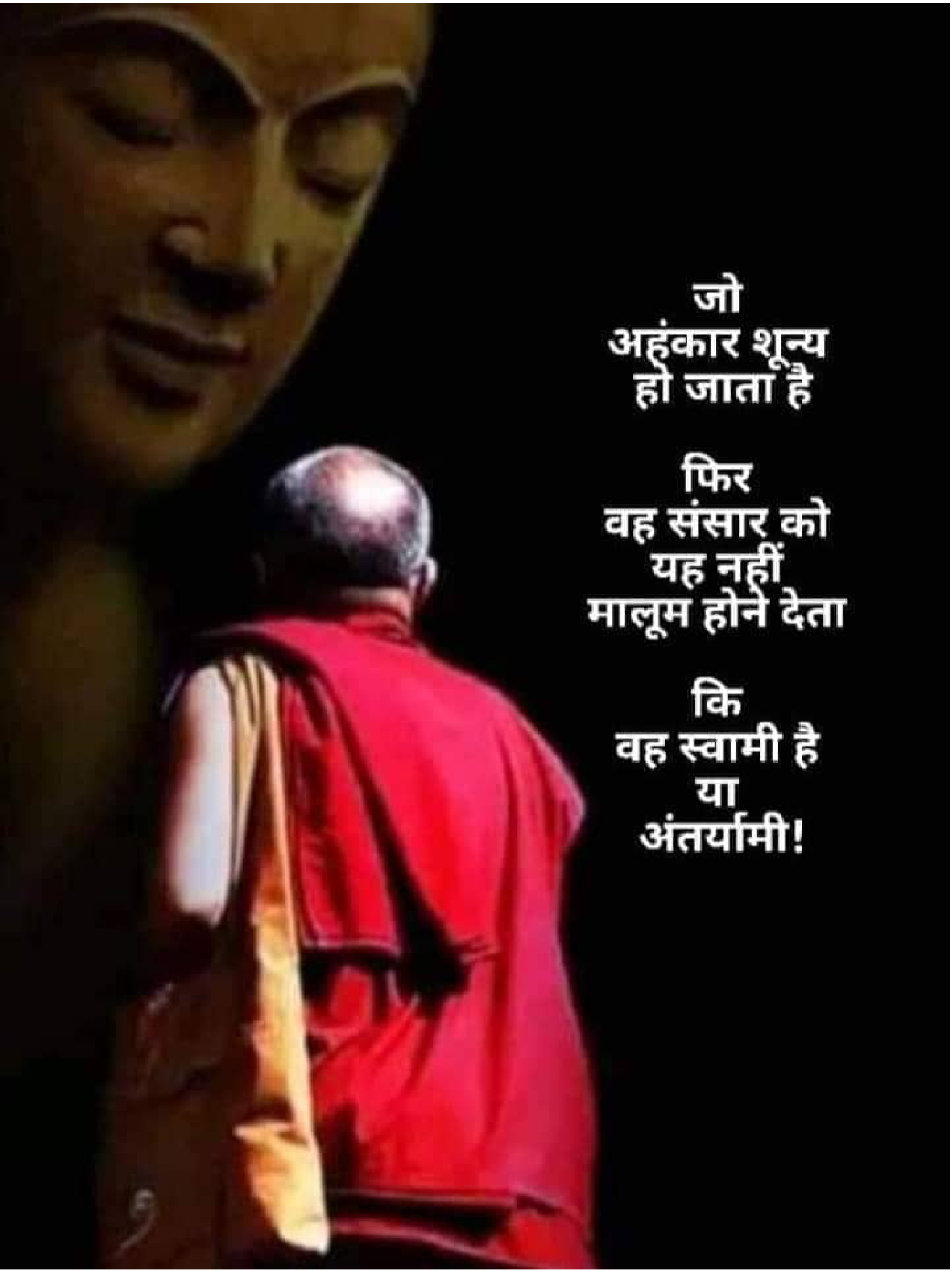

CamScanner

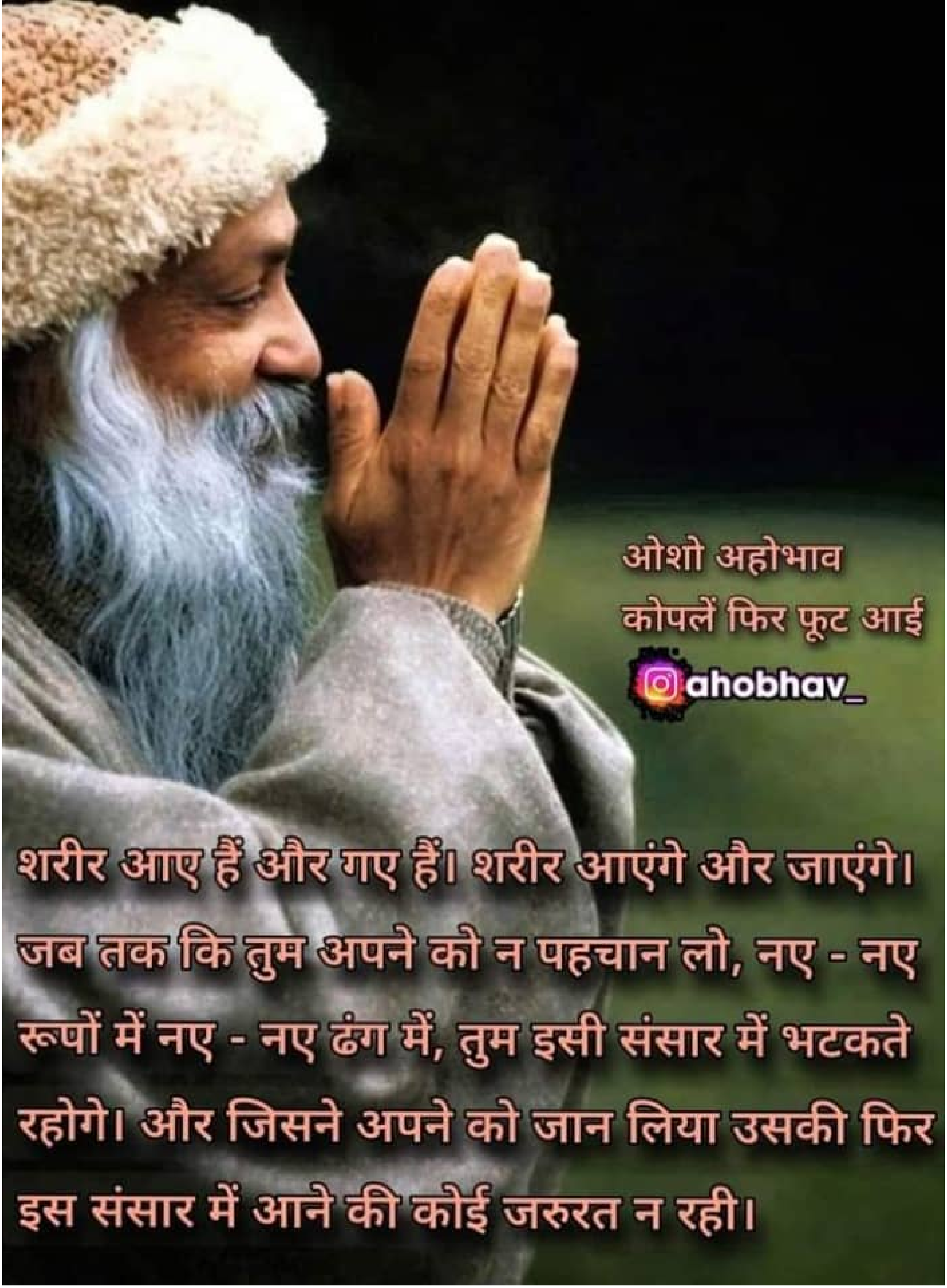
ओशो अहोभाव
कोपलें फिर फूट आई
ahobhav_
शरीर आए हैं और गए हैं। शरीर आएंगे और जाएंगे। जब तक कि तुम अपने को न पहचान लो, नए - नए रूपों में नए - नए ढंग में, तुम इसी संसार में भटकते रहोगे। और जिसने अपने को जान लिया उसकी फिर इस संसार में आने की कोई जरुरत न रही।

CamScanner

10:48 pm 0 KB/s VoLTE 4G 16%

facebook

Daily inspirational quotes
Sponsored ·

Daily inspirational quotes Follow

1.9K 6 comments

Like Comment Share

Pro Punjab Tv posted a video to playlist **Religion- Dharm**.
Suggested for you · 2d ·

करो दर्शन माता जवाला जी के यहां माता देती है ज्योति के दर्शन

CamScanner

CamScanner

अगर तुम किसी को प्रेम करते हो तो तुम उसके मालिक नहीं हो; कोई भी मालिक नहीं है। दो प्रेमपूर्ण व्यक्तियों में कोई किसी का मालिक नहीं है—न प्रेमी, न प्रेमिका। सच्चाई यह है कि प्रेम उनका मालिक है; दोनों ही उनसे किसी बड़ी शक्ति से आविष्ट हैं—एक विराट ऊर्जा, एक झंझावात ने उन्हें घेर लिया है।अगर वे एक—दूसरे पर मालकियत करने की कोशिश करेंगे तो वे प्रेम से चूक जाएंगे। तब फिर मालकियत संभव है; तब प्रेमी पति बन जाएगा और प्रेमिका पत्नी बन जाएगी। तब कब्जा हो सकता है; लेकिन अब वे व्यक्ति नहीं रहे, वस्तु हो गए। पति वस्तु है, पत्नी वस्तु है, तब मालकियत संभव है। मगर वे मुर्दा संबंध हैं, कानूनी नाम हैं—जीवंत व्यक्ति नहीं हैं।

Osho

CS CamScanner

10:18 pm 1 KB/s 23%

facebook

2h ·

#OSHO

आत्मा भी कहीं योगी होता है..? योग तो शरीर पर ही समाप्त हो जाता है।

ध्यान मन पर समाप्त हो जाता है। आत्मा न तो योगी होता है न ध्यानी होता है। आत्मा तो वह है जो योग और ध्यान के पार साक्षी मात्र साक्षी है, कर्ता नहीं। योग तो क्रिया है। योगी होने का अर्थ है शरीर से बंधे होना। ध्यानी होने का अर्थ है. मन से बंधे होना। जो ध्यान और योग दोनों के पार चला जाता है. वही आत्मा को जान पाता है।

CamScanner

10:17 pm 0 KB/s 23%

30K 1.1K comments • 423 shares

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Prema Agrawal · 1h ·

ममता, मोह, लोभ धीरे—धीरे छोड़ो। क्योंकि तुम जिस चीज को बाहर पकड़े हो वह तो मौत छीन लेगी। उसे मौत से छीनने के पहले छोड़ दो तो तुम्हारा बड़ा पुरस्कार है,

तुम फिर धन्यभागी हो। क्योंकि जो मौत के पहले ही चीजों को छोड़ देता है, उसकी फिर मौत नहीं आती। फिर उसके पास कुछ बचता ही नहीं, जो मौत छीन ले जाये। उसने खुद ही छोड़ दिया।

इसी का नाम संन्यास है। और छोड़ने का अर्थ भागना नहीं है। जो भागता है, वह तो पकड़े है। इसीलिए भागता है, नहीं तो भागेगा क्यों? अगर कोई पत्नी को छोड्कर जंगल भागता है, उसका मतलब पत्नी को पकडे हुए है। नहीं तो डर क्याहै, भय क्या है?मैं अपने संन्यासी को कहता हूं : जहां हो वहीं छोड़ा जा सकता है, भागने की बात तो भूल भरी है। भागना कायरता है। छोड़ना भागने से नहीं होता, छोड़ना जागने से होता है। सिर्फ जागकर देखो। धीरे— धीरे होश सम्हालो। और तुम पाओगे, उस होश के प्रकाश में जो व्यर्थ है, व्यर्थ दिखाई पड़ जायेगा। और जो व्यर्थ दिखाई पड़ गया, उस पर तुम मुट्ठी बांधकर न रख सकोगे, उससे आलिंगन छूट जायेगा ।

osho 🙏

CamScanner

ओशो
पीवत रामरस
लगी खुमारी
वासना का कोई कसूर नहीं है। अंधेरे का क्या कसूर है, अगर तुम दीया न जलाओ ? वासना तो केवल अभाव है -ध्यान का अभाव, होश का अभाव। वासना यानी नींद। जाग जाओ; फिर कहां है नींद ? जागकर कभी नींद पाई है ? दीया जलाकर कभी अंधेरा पाया है ?

CamScanner

10:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 26%

Like Comment Share

अहोभाव
1d ·

अहोभाव

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है। इसलिए जो परमात्मा को व्यक्ति मान कर खोजने चलेंगे, व्यर्थ ही भटकेंगे, कहीं न पहुंचेंगे। परमात्मा तो अज्ञात का नाम है। अज्ञात का ही नहीं वरन अज्ञेय का। जिसे जानो तो जान न पाओगे। जिसे जितना जानने की चेष्टा करोगे, उतना ही पाओगे कि अनजाना हो गया: ओशो

7 2 comments • 1 share

Like Share

Star India Now
Suggested for you · 3h ·

रिंकू झा जी को देख आप झूम उठेंगे

CamScanner

9:48 pm 1 KB/s VoLTE 4G 28%

42 5 comments • 2 shares

Like Comment Share

Awākēn
23h ·

बहुत ज्यादा ग्रंथ पढ़ना लाभ से ज्यादा नुकसान करते हैं। जरूरी बात है ग्रंथों के सार को जानना, समझना। उसके बाद फिर किताबों की क्या आवश्यकता ? व्यक्ति को सार समझना चाहिए और फिर ईश्वर को अनुभव करने के लिए गहरा गोता लगाना चाहिए। #रामकृष्ण

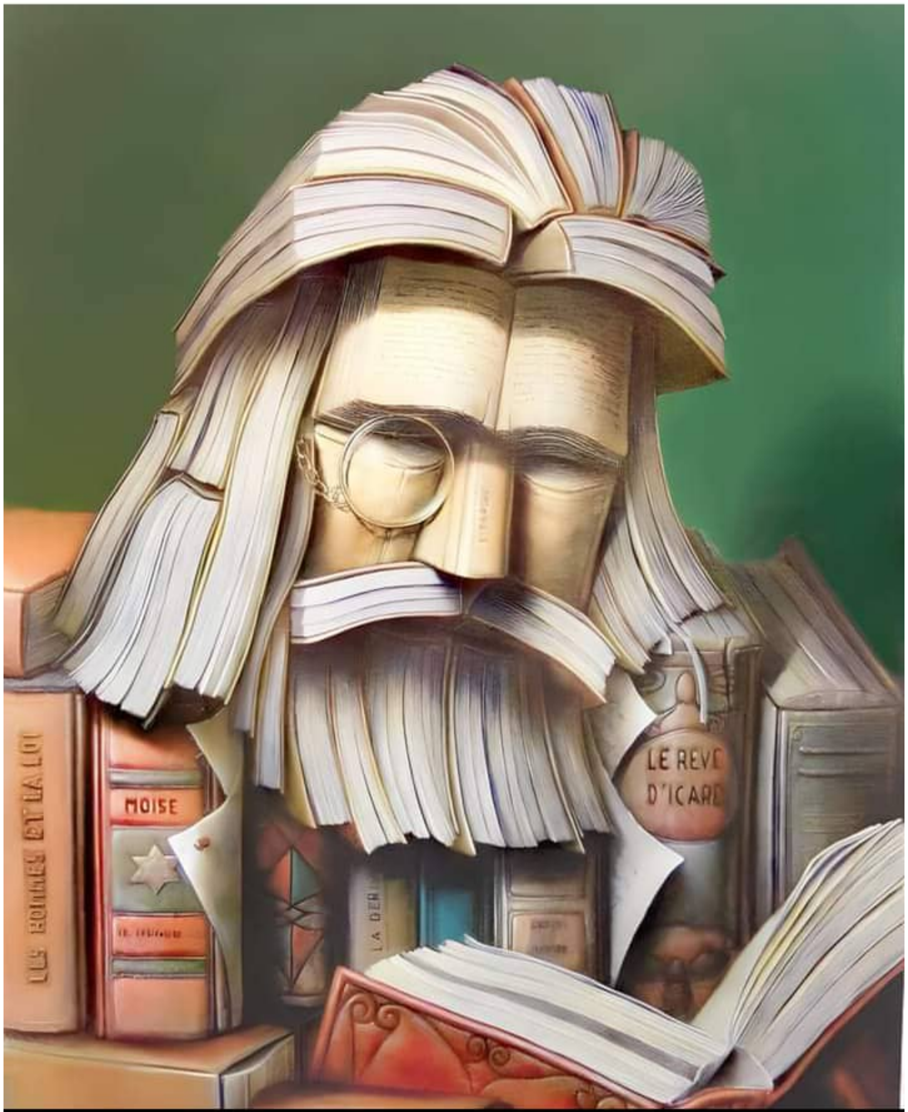

CamScanner

9:47 pm 0 KB/s 28%

निन्यानबे चक्कर था। नौकर रखने पड़ते। अस्तबल बनाना पड़ता। कभी कोई घोड़ा बीमार हो जाता, कभी कुछ हो जाता। कभी कोई घोड़ा भाग जाता, कभी कोई नौकर न लौटता। रात हो जाती, देर हो जाती, वह जागता, वह बहुत परेशान था। एक दिन आकर उसने अपने छोटे भाई को कहा कि तुझसे मेरी एक प्रार्थना है कि तेरा जो एक घोड़ा है वह भी तू मुझे दे दे। उसने कहा—क्यों? तो उस बड़े भाई ने कहा—तेरे पास एक ही घोड़ा है, नहीं भी रहा तो कुछ ज्यादा नहीं खो जाएगा। मेरे पास निन्यानबे हैं, अगर एक मुझे और मिल जाए तो सौ हो जाएंगे। पर मेरे लिए बड़ा सवाल है। क्योंकि मेरे पास निन्यानबे हैं। एक मिलते ही पूरी सेंचुरी, पूरे सौ हो जाएंगे। तो मेरी प्रतिष्ठा और इज्जत का सवाल है। अपने बाप के पास सौ घोड़े थे, कम-से-कम बाप की इज्जत का भी इसमें सवाल जुड़ा हुआ है। छोटे भाई ने कहा, आप यह घोड़ा भी ले जाएं। क्योंकि मेरा अनुभव यह है कि निन्यानबे में आपको मैं बड़ी तकलीफ में देखता हूं, तो मैं सोचता हूं, एक में भी निन्यानबे बंटे नहीं, लेकिन थोड़ी बहुत तकलीफ तो होगी ही। यह भी आप ले जाएं। तो वह छोटा उस दिन से इतने आनन्द में हो गया क्योंकि अब वह खुद ही घोड़े का काम करने लगा। अब तक कभी घोड़ा बीमार पड़ता था, कभी दवा लानी पड़ती थी; कभी घोड़ा राजी नहीं होता था जाने को; कभी थककर बैठ जाता था। हजार पंचायतें होती थीं। वह भी बात खत्म हो गयी। अब तक घोड़े की नौकरी करनी पड़ती थी। उसकी लगाम पकड़कर चलानी पड़ती थी, वह बात भी खत्म हो गयी। अपना मालिक हो गया। अब वह खुद ही बोझ ले लेता, लोगों को कंधे पर बिठा लेता और यात्रा कराता। लेकिन बड़ा बहुत परेशान हो गया। वह बीमार ही रहने लगा। क्योंकि सौ में से अब कहीं एकाध कम न हो जाए, कोई घोड़ा मर न जाए, कोई घोड़ा खो न जाए, नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी। मारपा यह कहानी अकसर कहा करता था—एक तिब्बती फकीर था—वह अकसर यह कहानी कहा करता था। और वह कहता था—मैंने दो ही तरह के आदमी देखे—एक, वे जो वस्तुओं पर इतना भरोसा कर लेते हैं कि उनकी वजह से ही परेशान हो जाते हैं। और एक वे, जो अपने पर इतने भरोसे से भरे होते हैं कि वस्तुएं उन्हें परेशान नहीं कर पातीं। दो ही तरह के लोग हैं इस पृथ्वी पर। दूसरी तरह के लोग बहुत कम हैं इसलिए पृथ्वी पर आनंद बहुत कम है। पहले तरह के लोग बहुत हैं, इसलिए पृथ्वी पर दुख बहुत है। -

CamScanner

8:23 am 0 KB/s VoLTE 4G 34%

एक दिन अपने गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस से कहा कि " आप माँ काली से अपने लिए प्रार्थना क्यों नही करते ? क्षणभर की बात है, आप कह दें, और गला ठीक हो जाएगा ! तो रामकृष्ण हंसते रहते , कुछ बोलते नहीं। एक दिन बहुत आग्रह किया तो रामकृष्ण परमहंस ने कहा - " तू समझता नहीं है रे नरेन्द्र। जो अपना किया है, उसका निपटारा कर लेना जरूरी है। नहीं तो उसके निपटारे के लिए फिर से आना पड़ेगा। तो जो हो रहा है, उसे हो जाने देना उचित है। उसमें कोई भी बाधा डालनी उचित नहीं है।" तो विवेकानंद बोले - " इतना ना सही , इतना ही कह दें कम से कम कि गला इस योग्य तो रहे कि जीते जी पानी जा सके, भोजन किया जा सके ! हमें बड़ा असह्य कष्ट होता है, आपकी यह दशा देखकर । " तो रामकृष्ण परमहंस बोले "आज मैं कहूंगा। "

जब सुबह ऊठे, तो जोर जोर से हंसने लगे और बोले - " आज तो बड़ा मजा आया । तू कहता था ना, माँ से कह दो । मैंने कहा माँ से, तो मां बोली -" इसी गले से क्या कोई ठेका ले रखा है ? दूसरों के गलों से भोजन करने में तुझे क्या तकलीफ है ? "

हँसते हुए रामकृष्ण बोले -" तेरी बातों में आकर मुझे भी बुद्धू बनना पड़ा ! नाहक तू मेरे पीछे पड़ा था ना । और यह बात सच है, जाहिर है, इसी गले का क्या ठेका है ? तो आज से जब तू भोजन करे, समझना कि मैं तेरे गले से भोजन कर रहा हू। फिर रामकृष्ण बहुत हंसते रहे उस दिन, दिन भर। डाक्टर आए और उन्होंने कहा, आप हंस रहे हैं ? और शरीर की अवस्था ऐसी है कि इससे ज्यादा पीड़ा की स्थिति नहीं हो सकती ! रामकृष्ण ने कहा - " हंस रहा हूं इससे कि मेरी बुद्धि को क्या हो गया कि मुझे खुद खयाल न आया कि सभी गले अपने ही हैं। सभी गलों से अब मैं भोजन करूंगा ! अब इस एक गले की क्या जिद करनी है !"
कितनी ही विकट परिस्थिति क्यों न हो, संत कभी अपने लिए नहीं मांगते, साधू कभी अपने लिए नही मांगते, जो अपने लिए माँगा तो उनका संतत्व ख़त्म हो जाता है । वो रंक को राजा और राजा को रंक बना देते है लेकिन खुद भिक्षुक बने रहते है ।

जब आत्मा का विश्वात्मा के साथ तादात्म्य हो जाता है तो फिर अपना - पराया कुछ नही रहता, इसलिए संत को अपने लिए मांगने की जरूरत नहीं क्योंकि उन्हें कभी किसी वस्तु का अभाव ही नहीं होता !

CS CamScanner

CamScanner

जाते थे, एकदम खड़े हो जाते थे, थाली में झांकते, क्या है?

स्वाद से ब्रह्म को जाना था। भोजन उनके लिए ब्रह्म था। उपनिषदों ने जहां कहा है, अन्न ब्रह्म है। वह किसी ने स्वाद से जानकर कहा होगा, नहीं तो अन्न को कोई ब्रह्म कहेगा? सुनकर हमको भी थोड़ा बेहूदा लगता है। अन्न ब्रह्म! भोजन ब्रह्म! लेकिन किसी ने स्वाद से जाना होगा।और बड़े मजे की बात है कि रामकृष्ण इतने दीवाने थे भोजन के, और उनको जब बीमारी हुई तो कंठ का कैंसर हुआ। फिर यह आखिरी परीक्षा थी स्वाद की। होनी ही चाहिए। रामकृष्ण को ही हो सकती है। रामकृष्ण का कंठ अवरुद्ध हो गया। फिर आखिरी दिनों में वे भोजन नहीं कर पाते थे। कैंसर हो गया था।

विवेकानंद ने एक दिन रामकृष्ण को कहा कि 'परमहंस देव! आप एक शब्द तो कह दें परमात्मा को, जिससे आप इतने निकट से जुड़े हैं; कि हटाओ इस कंठ-अवरोध को। और कितना प्यारा था भोजन आपको! स्वाद में आप कितना रस लेते थे! और हम पीड़ित होते हैं कि आप भोजन कर नहीं पाते। पानी तक भीतर ले जाना मुश्किल है।'

तो रामकृष्ण कहते, 'एक दिन मैंने उससे कहा तो उसने कहा, इस कंठ से बहुत भोजन कर लिया, अब दूसरे कंठों से कर। अब मैं तुम्हारे कंठों से भोजन का रस ले रहा हूं। उसकी बड़ी कृपा है, उसने यह कंठ अवरुद्ध कर दिया। अब सभी कंठ मेरे हैं। अब जहां भी कोई स्वाद ले रहा है, मैं ही स्वाद ले रहा हूं। अब मैं तुमसे भोजन करूंगा।'

निश्चित ही रामकृष्ण ने परमात्मा को स्वाद की भांति जाना, और फिर सारी इंद्रियां में उसी में डूब गईं। कभी छह घंटे, कभी आठ घंटे, कभी छह दिन रामकृष्ण बेहोश पड़े रह जाते। वे स्वाद में लीन! बुद्ध ने परमात्मा को आंख से जाना होगा। आंख के लिए होश चाहिए, स्वाद के लिए लीनता चाहिए।

ओशो, बिन बाती बिन तेल (प्रवचन--18)
🙏🙏🙏

CamScanner

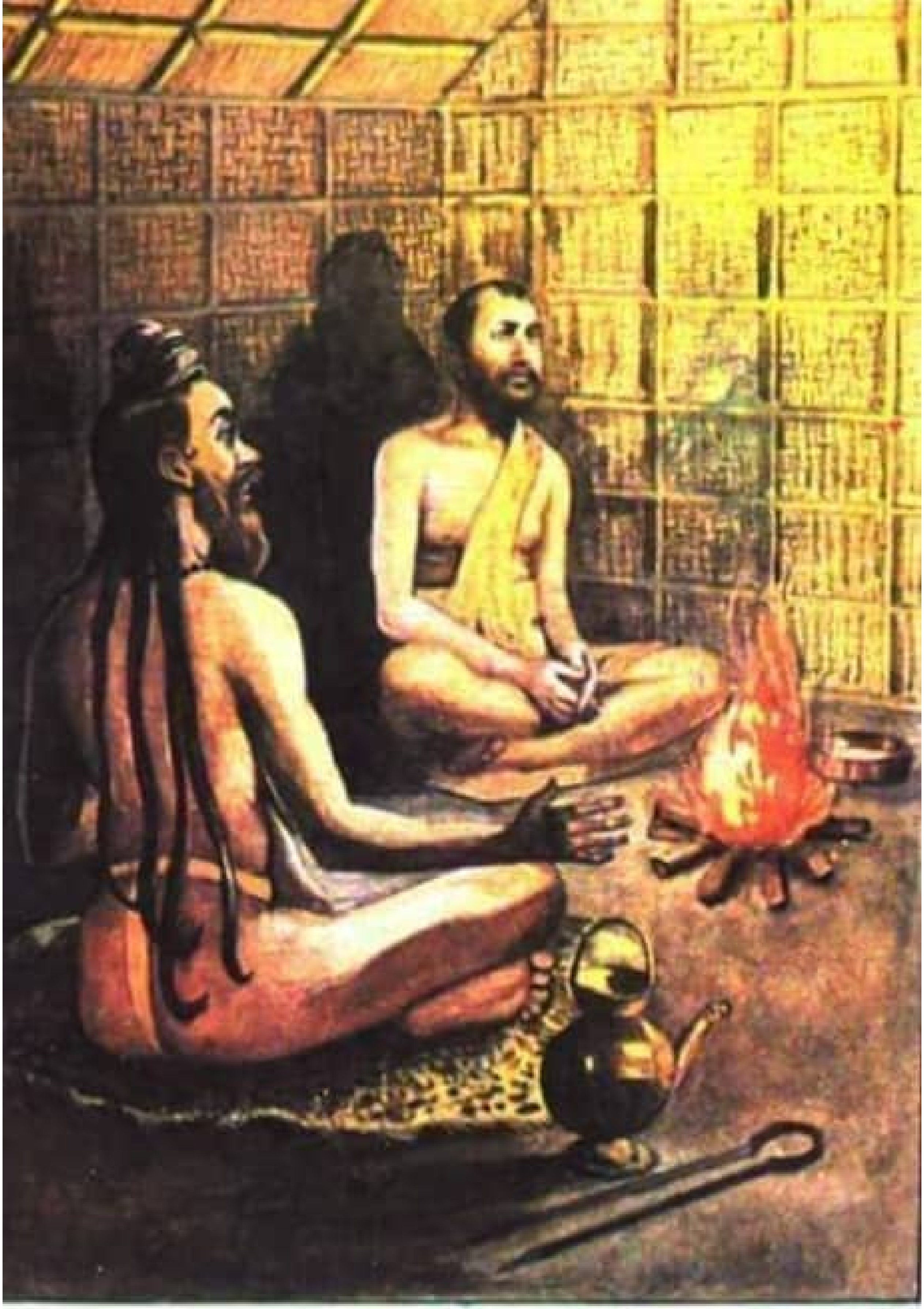

The monk Totapuri came to the Kali temple, And as Guru, initiated Ramakrishna Into the monastic way of life.

CamScanner

प्रेम पंथ ऐसो कठिन ~ प्रवचन - 13 * ओशो

वासना का अर्थ होता है: मुझे सुख मिले; करुणा का अर्थ दूसरे को सुख मि

CamScanner

8:18 am 0 KB/s VoLTE 4G 35%

यह कोई यूं ही हाथ नहीं लग जाता।

रामकृष्ण कहने लगे,
अठारह साल तुमने व्यर्थ गंवाए।
मुझे तो जब भी गंगा के उस तरफ जाना होता है तो
दो पैसे में मांझी मुझे पार करवा देता है।
तो अठारह साल में तुमने जो कमाया उसकी
कीमत दो पैसे से ज्यादा नहीं है।

शक्ति की जरूरत क्या है ?
शक्ति की आकांक्षा मूलतः अहंकार की आकांक्षा है।
क्या करोगे शक्ति का ?
लेकिन तप करने वाले लोग इसी
आशा में कर रहे हैं तप। सिर के बल खड़े हैं,
चारों तरफ आग जला रखी है,
नंगे खड़े हैं, भूखे खड़े हैं--इसी आशा में कि
किसी तरह शक्ति को पा लेंगे।
मगर शक्ति किसलिए ? शक्ति तो पोषण है अहंकार का।

कोई धन पाने में लगा है,
वह भी शक्ति की खोज कर रहा है।
और कोई राजनीति में उतरा हुआ है,
वह भी पद की खोज कर रहा है,
पद शक्ति लाता है। और कोई तपश्चर्या कर रहा है,
मगर इरादे वही। इरादों में कोई भेद नहीं।

तुम्हारे धार्मिक, अधार्मिक लोग बिलकुल एक
ही तरह के हैं। चाहे दिल्ली चलो, यह उनका नारा हो;
और चाहे गोलोक चलो; मगर दोनों की
खोपड़ी में एक ही गोबर भरा है--शक्ति चाहिए।
क्यों ? क्या करोगे शक्ति का ?
चमत्कार दिखलाने हैं!

राम नाम जान्यो नहीं~ओशो

CamScanner

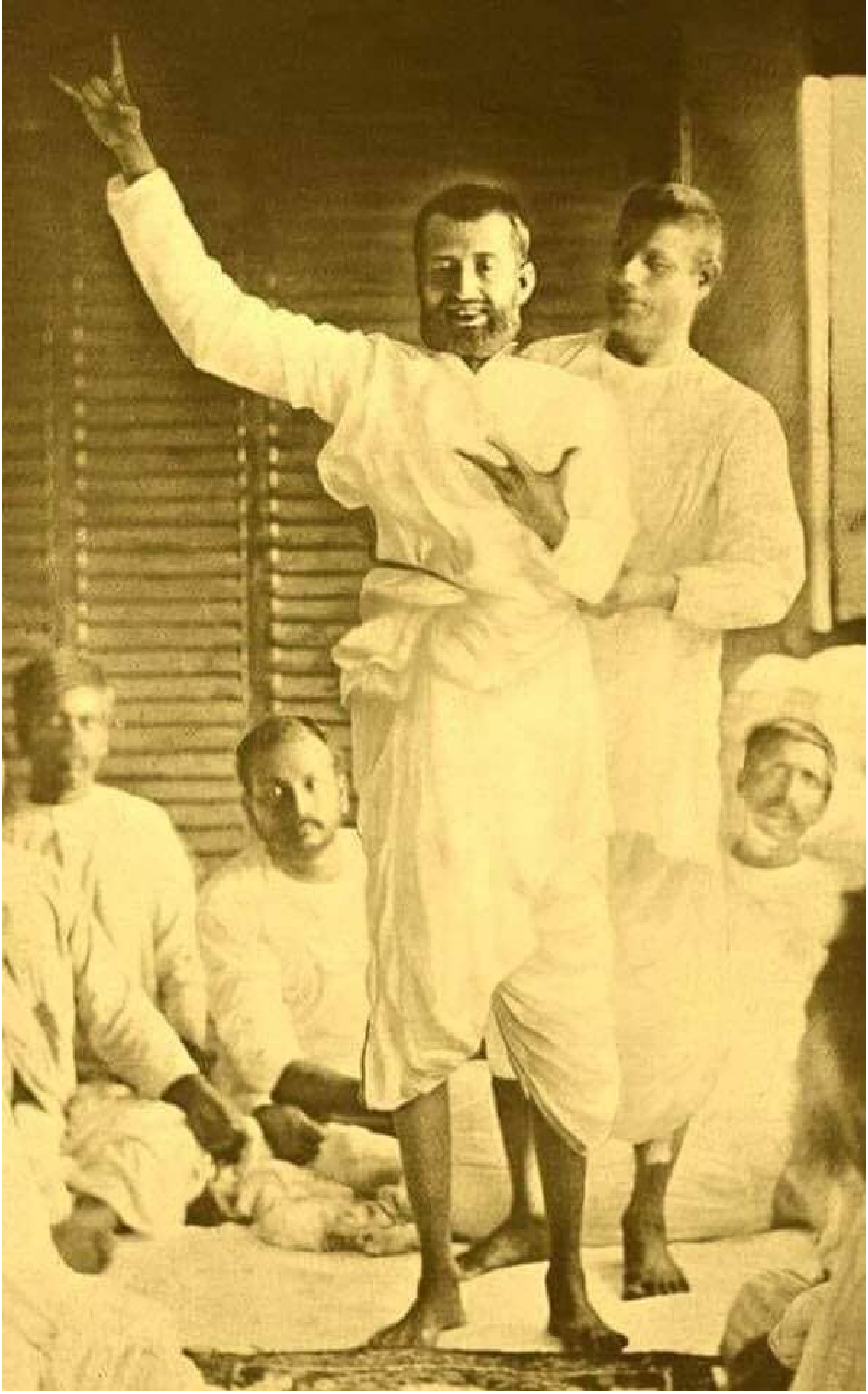

CamScanner

8:15 am 0 KB/s VoLTE 4G 35%

मनुष्य तो
बांस का एक टुकड़ा है–
बस, बांस का!

बांस की एक पोली पोंगरी ।
प्रभु के ओंठों से लग जाए
तो अभिप्राय का जन्म होता है,
अर्थ का जन्म होता है,
महिमा प्रगट होती है।

संगीत छिपा पड़ा है
बांस के टुकड़े में,
मगर उसके जादुई
स्पर्श के बिना प्रकट न होगा।

पत्थर की मूर्ति भी पूजा से
भरे हृदय के समक्ष सप्राण हो जाती है।
प्रेम से भरी आंखें प्रकृति में ही
परमात्मा का अनुभव कर लेती हैं।

सारी बात परमात्मा से जुड़ने की है।
उससे बिना जुड़े,सब है और कुछ भी नहीं है।
वीणा पड़ी रहेगी और छंद पैदा न होंगे।
हृदय तो रहेगा, श्वास भी चलेगी,
लेकिन प्रेम की रसधार न बहेगी।
वृक्ष भी होंगे लेकिन फूल न खिलेंगे;
जीवन में फल न आएंगे।

परमात्मा से जुड़े बिना कोई परितृप्ति नहीं है।
परमात्मा से जुड़े बिना लंबी-लंबी यात्रा है,
बड़ी लंबी अथक यात्रा है;
लेकिन मरुस्थल और मरुस्थल!
मरूद्यानों का कोई पता नहीं चलता!

CamScanner

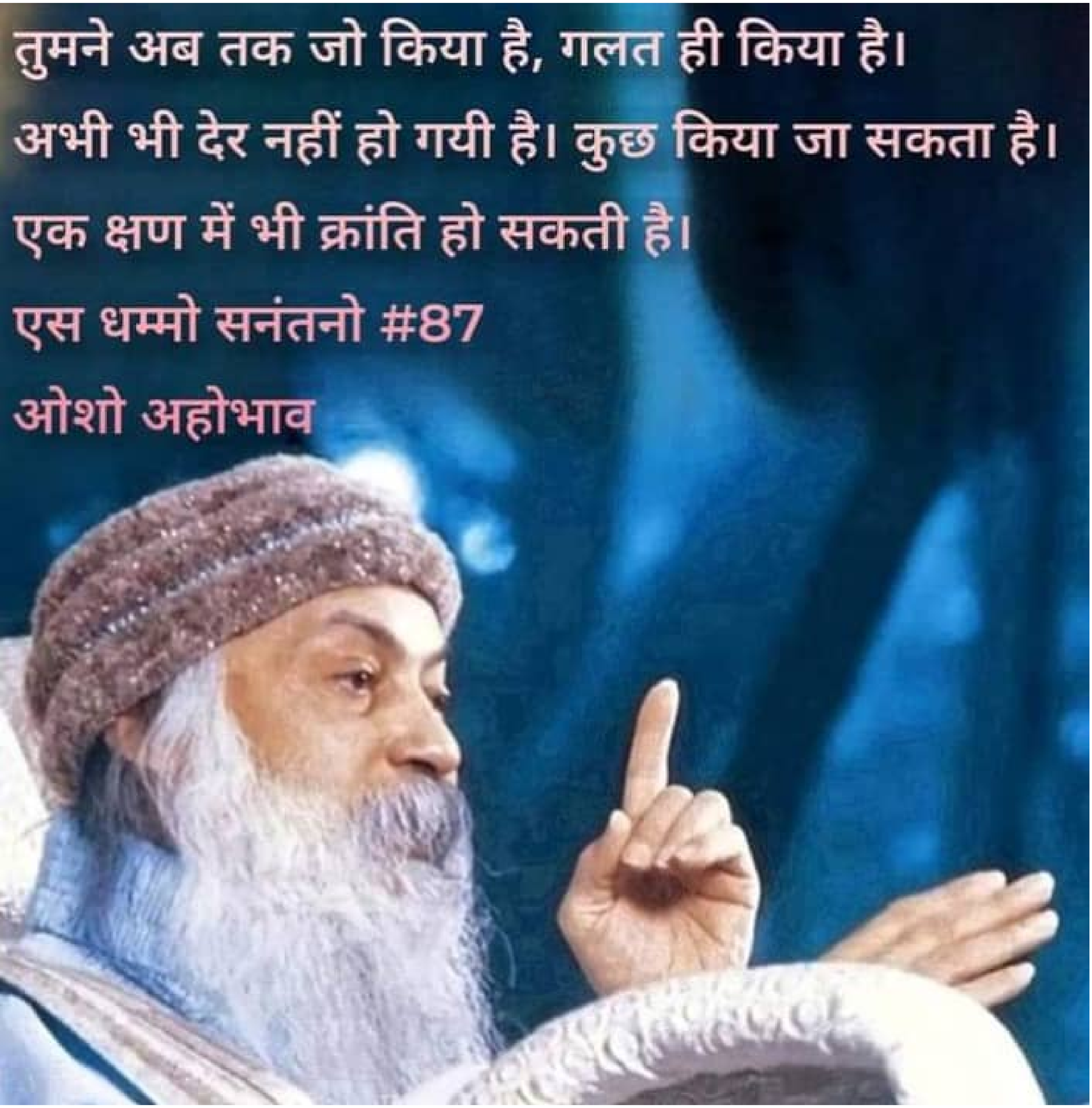
तुमने अब तक जो किया है, गलत ही किया है।
अभी भी देर नहीं हो गयी है। कुछ किया जा सकता है।
एक क्षण में भी क्रांति हो सकती है।
एस धम्मो सनंतनो #87
ओशो अहोभाव

CamScanner

शरीर का कण कण भी बदल जाता है, जब भीतर का मन बदलता है, क्योंकि शरीर मन की छाया मात्र है, क्योंकि शरीर जो भी है,वो मन का ही प्रतिफल है ।

@akd.369

OSHO
ACHARYA RAJNISH

CamScanner

8:10 am 0 KB/s VoLTE 4G 36%

पगला है। कि यह उठ-उठकर मुझे गले लगाता है।

केशवचंद्र ने कहां, 'एक बात पूछूं! कि मैं जो बोल रहा हूं यह धर्म के विपरीत बोल रहा हूं ईश्वर के विपरीत बोल रहा हूं शास्त्र के विपरीत बोल रहा हूं। मैं आपको उकसा रहा हूं--आप विवाद करने को तत्पर हो जायें। और आप क्या करते हैं! आप मुझे गले लगाते हैं! और आप कहते हैं : अहा, आनंद आ गया!'

रामकृष्ण ने कहां, 'आनंद आ रहा है--कहता नहीं हूं। बड़ा आनंद आ रहा है। थोड़ा-बहुत अगर संदेह भी था परमात्मा में, वह भी तुमने मिटा दिया!'

केशवचंद्र ने कहा, 'वह कैसे?' तो कहा कि 'तुम्हें देखकर मिट गया। जहां ऐसी प्रतिभा मनुष्य में हो सकती है, जहां ऐसी अद्भुत चमकदार प्रतिभा हो सकती है, तो जरूर किसी महास्रोत से आती होगी। इस जगत के स्रोत में महाप्रतिभा होनी ही चाहिए, नहीं तो तुममें प्रतिभा कहां से आती?

जब फूल खिलते हैं, तो उसका अर्थ है कि जमीन गंध से भरी होगी। छिपी है गंध, तभी तो फूलों में प्रगट होती है। तुम्हारी गंध को देखकर...मैं तो बेपढ़ा-लिखा आदमी हूं, रामकृष्ण कहने लगे, 'मेरी तो क्या प्रतिभा है! कुछ प्रतिभा नहीं। लेकिन तुम्हें तो देखकर ही ईश्वर प्रमाणित होता है!'

केशवचंद्र का सिर झुक गया। चरण पर गिर पड़े। और कहां, 'मुझे क्षमा कर दो। मैं तो सोचता था, तर्क ही सब कुछ है। लेकिन आज मैंने प्रेम देखा। मैं तो सोचता था--तर्क ही सब कुछ है--आज मैंने अनुभव देखा। आपने मुझे हराया भी नहीं, और हरा भी दिया! यूं तो मुझे हारने का कोई कारण नहीं था, अगर आप तर्क करते तो। मगर आपने अतर्क बात कह दी। अब मैं क्या करूं! मेरी जबान बंद कर दी।'

ओशो; मेरा स्वर्णिम भारत, प्रवचन--37

CamScanner

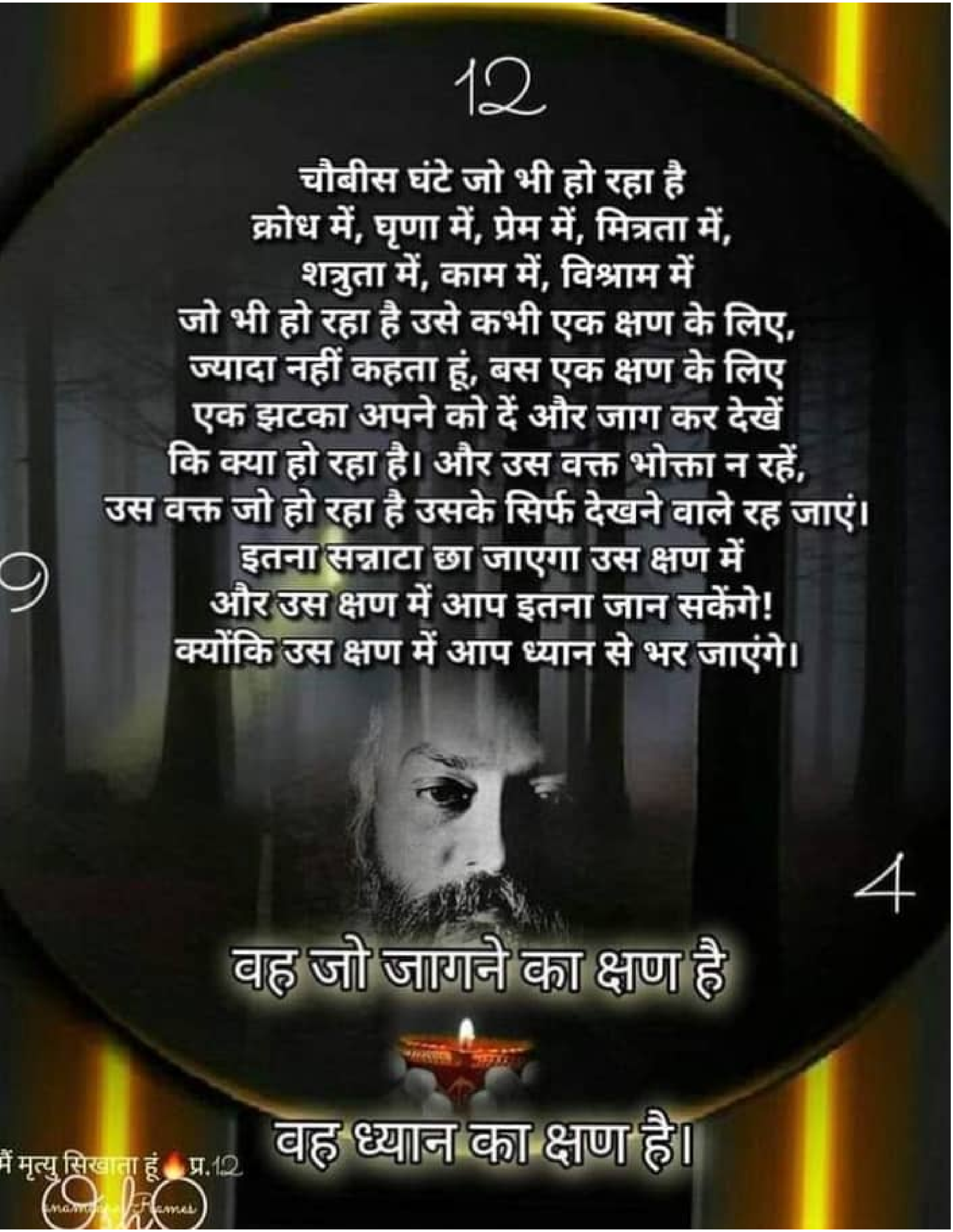
12
चौबीस घंटे जो भी हो रहा है
क्रोध में, घृणा में, प्रेम में, मित्रता में,
शत्रुता में, काम में, विश्राम में
जो भी हो रहा है उसे कभी एक क्षण के लिए,
ज्यादा नहीं कहता हूं, बस एक क्षण के लिए
एक झटका अपने को दें और जाग कर देखें
कि क्या हो रहा है। और उस वक्त भोक्ता न रहें,
उस वक्त जो हो रहा है उसके सिर्फ देखने वाले रह जाएं।
इतना सन्नाटा छा जाएगा उस क्षण में
और उस क्षण में आप इतना जान सकेंगे!
क्योंकि उस क्षण में आप ध्यान से भर जाएंगे।
वह जो जागने का क्षण है
वह ध्यान का क्षण है।
मैं मृत्यु सिखाता हूं प्र.12

CamScanner

CamScanner

7:59 am 0 KB/s VoLTE 4G 37%

उतना ही जानता हूं। पढ़ना लिखना मुझे कुछ पता नहीं है।
नसरुद्दीन ने कहा तेरा चार आना जीवन बेकार हो गया; क्योंकि जो पढ़ना नहीं जानता उसकी जिंदगी में क्या उसे ज्ञान मिल सकता है? बिना पढ़े, पागल! कहीं ज्ञान मिला है? लेकिन मल्लाह चुपचाप हंसने लगा। फिर आगे थोड़े चले और नसरुद्दीन ने पूछा कि तुझे गणित आता है? उस मल्लाह ने कहा. नहीं, गणित मुझे बिलकुल नहीं आता है, ऐसे ही दो और दो चार जोड़ लेता हूं यह बात दूसरी है।
नसरुद्दीन ने कहा : तेरा चार आना जीवन और बेकार चला गया; क्योंकि जिसे गणित ही नहीं आता, जिसे जोड़ ही नहीं आता है वह जिंदगी में क्या जोड़ सकेगा, क्या जोड़ पाएगा। अरे, जोड़ना तो जानना चाहिए, तो कुछ जोड़ भी सकता था। तू जोड़ेगा क्या? तेरा आठ आना जीवन बेकार हो गया।
फिर जोर का तूफान आया और आधी आई और नाव उलटने के करीब हो गई। उस मल्लाह ने पूछा आपको तैरना आता है?
नसरुद्दीन ने कहा मुझे तैरना नहीं आता।
उसने कहा आपकी सोलह आना जिंदगी बेकार जाती है। मैं तो चला। न मुझे गणित आता है और न मुझे भाषा आती है, लेकिन मुझे तैरना आता है। तो मैं तो जाता हूं-और आपकी सोलह आना जिंदगी बेकार हुई जाती है।
जिंदगी में कुछ जीवंत सत्य हैं जो स्वयं ही जाने जाते हैं, जो किताबों से नहीं जाने जा सकते हैं, जो शास्त्रों से नहीं जाने जा सकते हैं। आत्मा का सत्य या परमात्मा का; स्वयं ही जाना जा सकता है और कोई जानने का उपाय नहीं है।
लेकिन शास्त्रों में सब बातें लिखी हैं, उनको हम पढ़ लेते हैं, उनको हम समझ लेते हैं, वे हमें कंठस्थ हो जाती हैं, वे हमें याद हो जाती हैं। दूसरों को बताने के काम भी आ सकती हैं, लेकिन उससे कोई ज्ञान उपलब्ध नहीं होता है।
विचार का संग्रह ज्ञान का लक्षण नहीं है अज्ञान का ही लक्षण है। क्योंकि जिस आदमी के पास अपने विवेक की शक्ति जाग्रत हो जाती है, वह विचार के संग्रह से मुक्ति पा लेता है। फिर उसे संग्रह करने का कोई सवाल नहीं रह जाता, वह स्वयं ही जानता है। और जो स्वयं जानना है, वह......वह मन को मधुमक्खियों का छत्ता नहीं रहने देता है-मन को एक दर्पण बना देता है, एक झील बना देता है।
अंतरयात्रा शिविर

CamScanner

9:44 am 81%

मैं क्या करूं?

ध्यान मत कर, जब बच्चा झूले में लेटा हो, तो तू पास बैठ जा और बच्चे पर ही आंख से ध्यान कर। बच्चे को ही भगवान समझ। अच्छा मौका मिल गया। बच्चे पर इतना ध्यान दौड़ रहा है सहज, बच्चे में भगवान देखना शुरू कर।

पंद्रह दिन में उसे लगा कि मैंने वर्षों ध्यान करके जो नहीं पाया, वह इस बच्चे पर ध्यान करके पा रही हूं। और अब बच्चा मुझे दुश्मन नहीं मालूम पड़ता; बीच में जब मुझे ध्यान में बाधा पड़ती थी, बच्चा दुश्मन मालूम पड़ता था। अब बच्चा मुझे सच में ही भगवान मालूम पड़ने लगा है; क्योंकि इसके ऊपर मेरा ध्यान जितना गहरा हो रहा है, उतना किसी भी प्रक्रिया से कभी नहीं हुआ था।

अनन्य भाव का अर्थ है, जहां भी आपका भाव दौड़ता हो, वहीं भगवान को स्थापित कर लें।

दो उपाय हैं। एक तो यह है कि कहीं भगवान है, आप सब तरफ से अपने ध्यान को खींचकर भगवान पर ले जाएं। यह बहुत मुश्किल है; इसमें आप हारेंगे; इसमें जीत की संभावना न के बराबर है। कभी हजार में एक आदमी जीत पाता है सब तरफ से खींचकर भगवान की तरफ ले जाने में। कठिन है। शायद नहीं हो पाएगा।

पर एक बात हो सकती है, जहां भी ध्यान जा रहा हो, वहीं भगवान को रख लें। अगर वेश्या के घर भी आपके पैर जा रहे हैं, और ध्यान वेश्या की तरफ जा रहा है, तो चूके मत मौका; वेश्या को भी भगवान ही समझ लें। और आपके पैर की धुन बदल जाएगी, और आपकी चेतना का भाव बदल जाएगा, और एक न एक दिन आप पाएंगे कि वेश्या के घर गए थे, लेकिन मंदिर से वापस लौटे हैं!-ओशो

ओशो; गीता दर्शन--(भाग-04) प्रवचन--111

CamScanner

"आपका कर्म उससे नहीं बनता जो आपके साथ हो रहा है।
आपके साथ जो हो रहा है, आप उसे कैसे अनुभव और
रेस्पांड करते हैं, कर्म उससे बनता है।

Sadhguru

CamScanner

CamScanner

अहोभाव

9h ·

अहोभाव

धन्यवाद की प्रतीक्षा ना करें तुम अपने प्रेम को शुद्ध करो। तुम उसे प्रार्थना बनाओ।
तुम दो और मांगने की इच्छा मत करो। और तुम जिसे दो, उस पर कब्जा न करो।
और तुम जिसे दो, उस से अपेक्षा धन्यवाद की भी मत करो। उतनी अपेक्षा भी सौदा है। और तुम दो क्योंकि तुम्हारे पास है। और मैं तुम से कहता हूं कि तुम अगर दोगे, तो हजार गुना तुम्हारे पास आएगाः मगर मांगो मत।
भिखमंगों के पास नहीं आता है, सम्राटों के पास आता है। जो मागते हैं उनके पास नहीं आता। तुम मांगो ही मत।
एक बार यह भी तो प्रयोग करके देखो कि तुम चाहो और दो, मगर मांगो मत। नेकी कर और कुएं में डाल। पीछे लौटकर ही मत देखो, धन्यवाद की भी प्रतीक्षा मत करो।
और तुम पाओगे, कितने लोग तुम्हारे निकट आते हैं! कितने लोग तुम्हारे प्रेम के लिए आतुर हैं! कितने लोग तुम्हारे पास बैठना चाहते है! कितने लोग तुम्हारी मौजूदगी से अनुगृहीत हैं!

ओशो

CamScanner

9:41 am 81%

फिर मैंने अपने मित्र से कहा भीतर चलें,
फिर उन्हें भीतर ले कर गया
वहाँ तो कोई काम प्रतिमा न थी
वहाँ भगवान की मूर्ति थी
वे कहने लगे कि भीतर कोई प्रतिमा नहीं है।
मैंने उनसे कहा कि
जीवन की बाहर की परिधि काम वासना है।
जीवन की बाहर की परिधि दीवाल पर काम-वासना है।
जीवन के भीतर भगवान का मन्दिर है
लेकिन जो अभी कामवासना में उलझे हैं
वे भगवान के मन्दिर में
प्रवेश के अधिकारी नहीं हो सकते हैं
उन्हें अभी बहार की दिवाल का ही चक्कर लगाना पड़ेगा।

जिन लोगों ने ये मन्दिर बनवाये थे
वे बड़े समझदार थे!
यह मन्दिर एक "मेडिटेशन मन्दिर" था।
यह मन्दिर एक ध्यान का केन्द्र था
जो लोग आते थे, उनसे वे कहते थे।
बाहर पहले मैथुन के ऊपर ध्यान करो
पहले सेक्स को समझो और
जब सेक्स को पूरी तरह समझ जाओ और
तुम पाओ कि
मन उससे मुक्त हो गया है
तब तुम भीतर आ जाना
फिर भीतर भगवान से मिलना हो सकता है।

लेकिन धर्म के नाम पर हमने
सेक्स को समझने की स्थिति पैदा नहीं की,
सेक्स की शत्रुता पैदा कर दी।
सेक्स को समझो मत.

CamScanner

9:50 am 79%

Rahul Kumar Ojha · 1h ·

रमण महर्षि के आश्रम में जब भी रमण बोलते थे--जब भी वे बोलते थे--तो उनके सुनने वालों में एक गाय भी नियमित आती थी। यह वर्षों तक चला। दूसरों को तो खबर हो जाती थी, गाय को तो कोई खबर भी नहीं की जा सकती थी। दूसरों को पता होता कि आज रमण पांच बजे बोलेंगे। गाय को कैसे खबर होती! गाय को कौन खबर करने वाला था! लेकिन पांच बजे, दूसरे चाहे थोड़ी देर-अबेर पहुंचें, गाय ठीक समय पर उपस्थित हो जाती।

जब गाय मरी, तो रमण ने कहा कि वह मुक्त हो गई। और रमण ने गाय के साथ वही व्यवहार किया, जो उन्होंने सिर्फ एक और व्यक्ति के साथ किया जीवन में और फिर कभी नहीं किया। जब उनकी मां मरी, तो जो व्यवहार उन्होंने किया, वही व्यवहार उन्होंने उस गाय के मरने पर किया। और दोनों की पूरी की पूरी अंत्येष्टि ठीक वैसे ही की, जैसी अपनी मां की कि, वैसी उस गाय की कि।

कोई ने रमण से पूछा कि आप यह क्या कर रहे हैं एक गाय के लिए! उन्होंने कहा, वह तुम्हें गाय दिखाई पड़ती थी। तुम आदमी दिखाई पड़ते हो, इससे ही आदमी नहीं हो जाते। वह गाय दिखाई पड़ती थी, इसलिए सिर्फ गाय ही नहीं थी। वह गायों में बड़ी श्रेष्ठ थी। उसने एक दूसरा आयाम छू लिया था। और वह मुक्त हो गई।

ओशो
गीता दर्शन

CamScanner

20 comments • 2.9K shares

Like Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Seema Agrawal · 1h ·

हजरत राबिया बसरी अपने समय की प्रसिद्द सूफी संत है । एक बार राबिया अपने कुछ संतो के साथ बैठकर सत्संग का आनंद ले रही थी । तभी तात्कालिक विख्यात संत हसन बसरी का वहाँ आगमन हुआ । उनके बारे में कहा जाता है कि वह पानी पर बैठकर नमाज़ पढ़ते है । अतः जब उन्होंने लोगों को जमीन पर बैठा देखा तो बोले – " चलिए, दरिया पर मुसल्ला बिछाकर इबाबत करते है ।"

राबिया ताड़ गई कि हजरत हसन बसरी पानी पर चलने की अपनी सिद्धि का प्रदर्शन करना चाहते है । मुस्कुराते हुए राबिया बोली – " भैया ! हवा में उड़ते हुए इबाबत करे तो कैसा रहेगा ?" राबिया के बारे में भी प्रसिद्ध था कि वह हवा में उड़ते हुए इबाबत कर सकती है । हसन से कोई उत्तर देते नहीं बना । फिर राबिया गंभीर होकर बोली – " भैया ! जो आप कर सकते हो, वह हर मछली करती है और जो मैं कर सकती हूँ, वह हर मक्खी करती है । किन्तु सत्य इस करिश्मेबाजी से बहुत ऊपर की चीज़ है । उसे अपनी सिद्धियों के घमंड में आकर इस तरह अपमानित नहीं करना चाहिए

CamScanner

11:41 am 4G 85%
facebook
अहोभाव

. कृष्ण का पांचजन्य शंख

कृष्ण के व्यक्तित्व से जुड़ी हुई सारी बातों के बड़े प्रतीक अर्थ है। होने हो चाहिए। कृष्ण जैसे व्यक्ति के साथ जो भी जुड़ा है, वह निर्मूल्य नहीं हो सकता। अमूल्य हो सकता है। लेकिन हम उसका मूल्य भी समझ पाएं तो बहुत है, अमूल्य को समझना तो थोड़ी कठिनाई की बात है।

कृष्ण का पांचजन्य, उनका शंख बड़े प्रतीक अर्थ रखता है। आदमी की पांच इंद्रियां है, आदमी के पांच द्वार है, आदमी अपने पांच द्वारों के माध्यम से उदघोष करता है। उसके जीवन का सारा उदघोष पांच द्वारों से किया गया उदघोष है उसकी आंख से, उसकी नाक से उसके कान से, उसके मुंह से पाँच इंद्रियों पांच द्वार हैं जगत से हमारे संबंध के। और जब कथाकार कहते हैं कि कृष्ण ने पांचजन्य बजाया उसका कुल मतलब इतना है कि युद्ध में वे अपनी पांचों इंद्रियों सहित समग्र रूप से मौजूद हुए। इससे ज्यादा कोई मतलब नहीं है। युद्ध उनके लिए कोई एक काम न था। उनके लिए कोई चीज काम न थी। कबीर जैसा कपड़ा बेचने बाजार चला गया था, पूरा का पूरा ऐसे ही कृष्ण पांचजन्य बजा कर उदघोष करते हैं कि मैं पूरा का पूरा युद्ध में आ गया हूं;कुछ पीछे छोड़ आया नहीं। वे पीछे छोड़ कर चलते ही नहीं। वे पूरे के पूरे, जहाँ होते हैं पूरे होते हैं।

तो इसलिए पांच इंद्रियों के प्रतीक पांचजन्य को वे बनाते है और वे कहते हैं कि मेरी समस्त इंद्रियों सहित मैं यहां मौजूद हूं। मेरी मौजूदगी की घोषणा है यह कि सारे शंख अपनी-अपनी मौजूदगी की घोषणा करते हैं। सबके शखों के अलग-अलग नाम है। और प्रत्येक अपना-अपना शंख बजाता है, वह उसकी घोषणा है। प्रत्येक शंख का अलग-अलग स्वर है और प्रत्येक शंख का प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक व्यक्तित्व से संबंध है। लेकिन कृष्ण के शंख का मुकाबला कोई भी नहीं है। समग्र रूप से वहां कोई भी उपस्थित नहीं है, समग्र रूप से वे अकेले ही उपस्थित है। और मजे की बात कि वही वहां युद्ध करने को उपस्थित नहीं है। यानी वह आदमी वहां लड़ने आया ही नहीं~ओशो

CamScanner

CamScanner

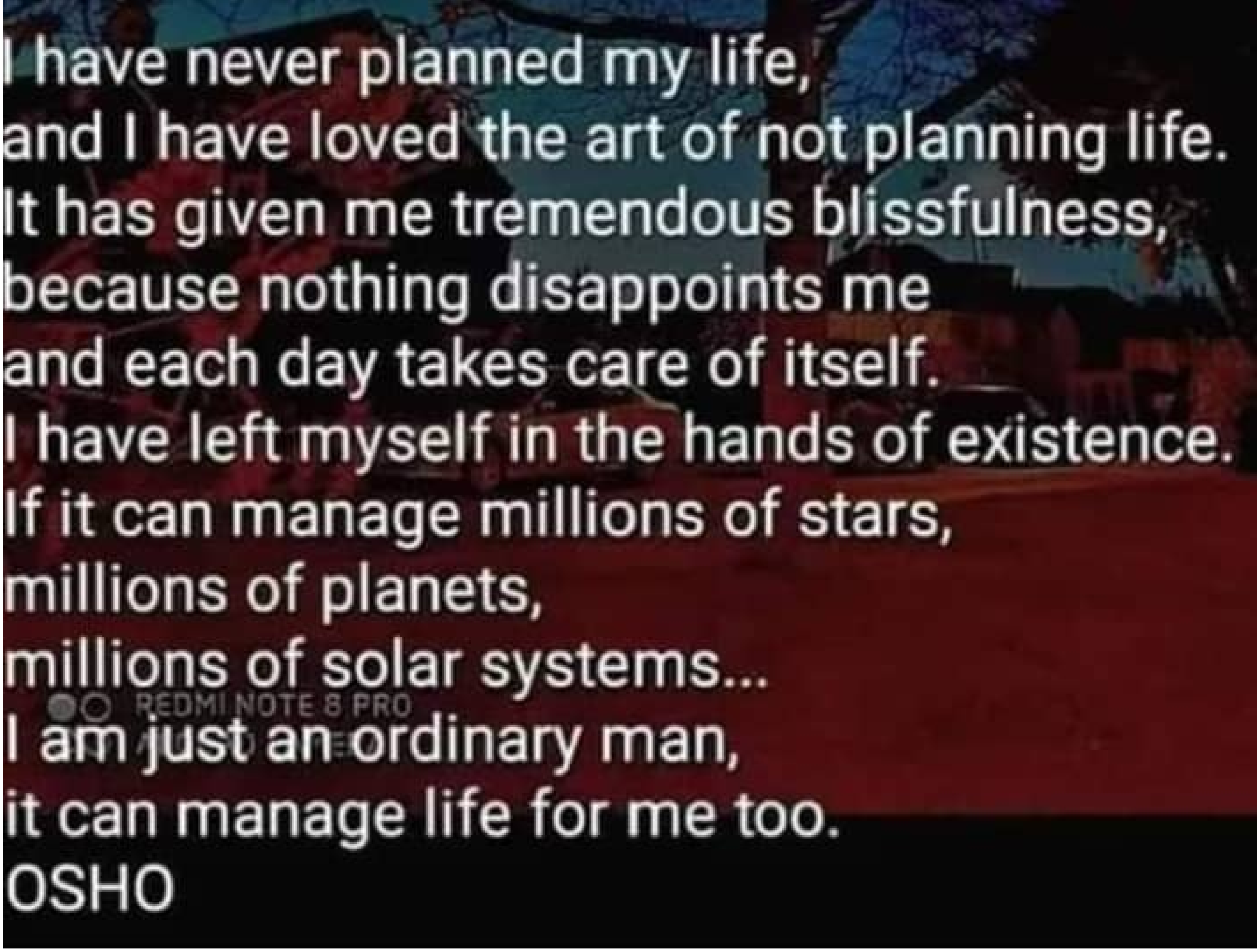
I have never planned my life,
and I have loved the art of not planning life.
It has given me tremendous blissfulness,
because nothing disappoints me
and each day takes care of itself.
I have left myself in the hands of existence.
If it can manage millions of stars,
millions of planets,
millions of solar systems...
REDMI NOTE 8 PRO
I am just an ordinary man,
it can manage life for me too.
OSHO

CamScanner

11:50 am 84%

facebook

बड़ी-बड़ी कहानियां चलीं, बड़ी खबरें आईं, अफवाहें आईं कि भ्रष्ट हो गया। वह तो बरबाद हो गया, बैठकर संगीत सुनता है। पता नहीं खाने-पीने का भी नियम रखा है कि नहीं!

वह भिक्षु भीतर तो जा नहीं सकते थे, लेकिन आसपास चक्कर जरूर लगाते रहते थे। और कई तरह की खबरें लाते थे। लेकिन बुद्ध सुनते रहे और उन्होंने कोई वक्तव्य न दिया।

तीन महीने बाद जब भिक्षु आया, तो वह वेश्या उसके पीछे आई। और उस वेश्या ने कहा कि मेरे धन्यभाग कि आपने इस भिक्षु को मेरे घर रुकने की आज्ञा दी।

मैंने सब तरह की कोशिश की इसे भ्रष्ट करने की, क्योंकि वह मेरा अहंकार थाजब वेश्या तुम्हें भ्रष्ट कर पाती है, तब जीत जाती है।

वह मेरा अहंकार था कि यह भिक्षु भ्रष्ट हो जाए। लेकिन इसके सामने मैं हार गई। मेरा सौंदर्य व्यर्थ, मेरा शरीर व्यर्थ, मेरा संगीत व्यर्थ, मेरा नृत्य,

इसे कुछ भी न लुभा पाया और तीन महीने में, मैं इसके लोभ में पड़ गई।

और मेरे मन में यह सवाल उठने लगा, क्या है इसके पास? कौन-सी संपदा है, जिसके कारण मैं इसे कचरा मालूम पड़ती हूं? अब मैं भी उसी की खोज करना चाहती हूं। जब तक वह संपदा मुझे न मिल जाए, तब तक मैं सब कुछ करने को राजी हूं, सब छोड़ने को राजी हूं।

अब जीने में कोई अर्थ नहीं, जब तक मैं इस अवस्था को न पा लूं, जिसमें यह भिक्षु है।

ओशो; बिन बाती बिन तेल--(सुफी कथा) प्रवचन--16

CamScanner

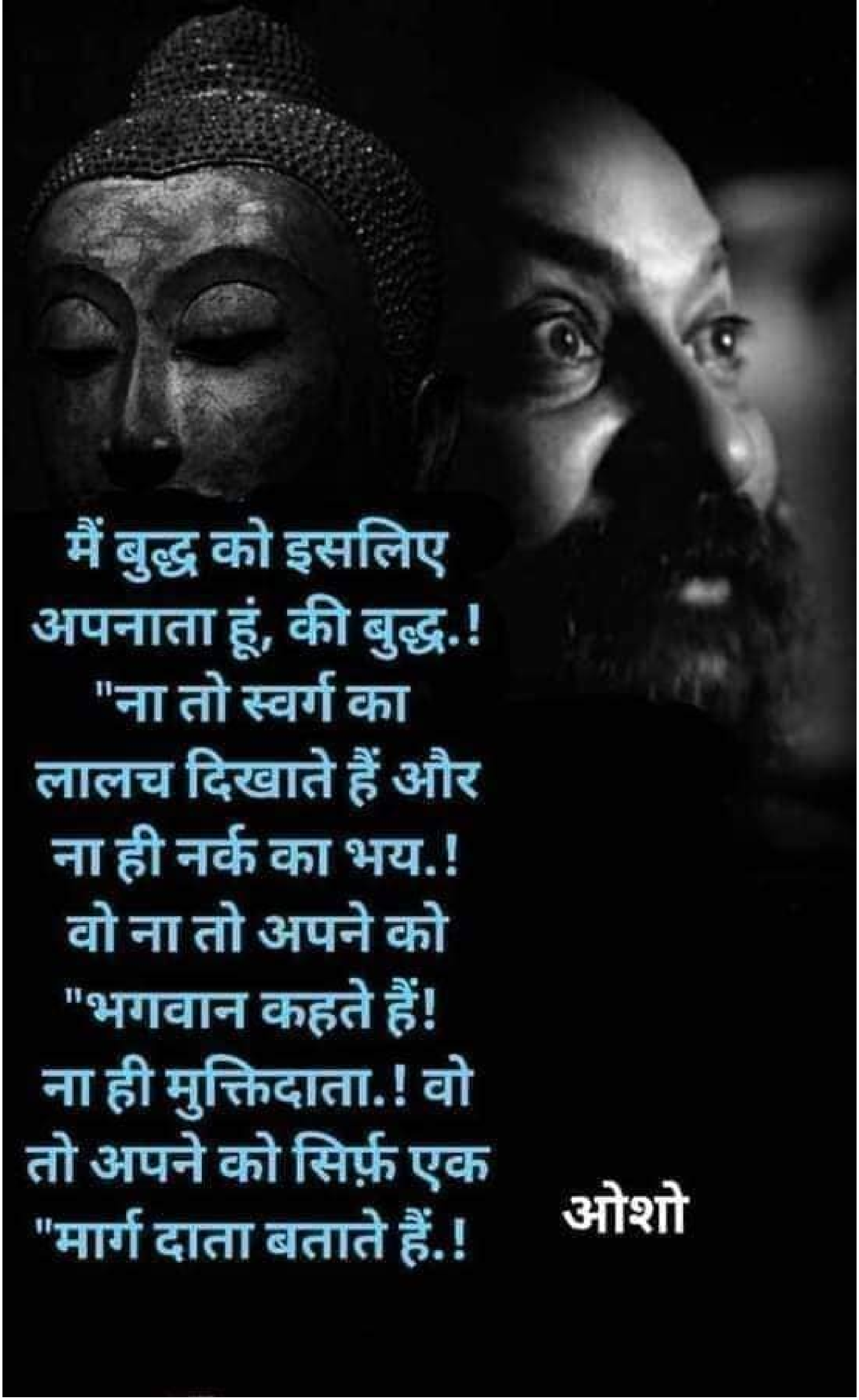
मैं बुद्ध को इसलिए
अपनाता हूं, की बुद्ध.!
"ना तो स्वर्ग का
लालच दिखाते हैं और
ना ही नर्क का भय.!
वो ना तो अपने को
"भगवान कहते हैं!
ना ही मुक्तिदाता.! वो
तो अपने को सिर्फ़ एक
"मार्ग दाता बताते हैं.!
ओशो

CamScanner

2:02 pm 0 KB/s 71%

कृष्ण से ज्यादा चरित्रहीन व्यक्ति पाओगे संसार में!-ओशो

राम मर्यादापुरुषोत्तम हैं।
मर्यादा के जो पार है, उसमें मेरी रुचि है।
कृष्ण में मेरी रुचि है, क्योंकि कृष्ण मर्यादा—शून्य हैं।

कृष्ण से ज्यादा चरित्रहीन व्यक्ति पाओगे संसार में! कृष्ण से ज्यादा गैर— भरोसे योग्य व्यक्ति पाओगे कहीं! किसी बात का पक्का नहीं है। छोटे बच्चे जैसा व्यवहार है। कसम खा ली थी कि शस्त्र न उठाऊंगा, फिर उठा लिया! कसमों का कोई हिसाब रखे! किसको याद रहे कसम! छोटे बच्चे जैसा व्यवहार है!

मुझसे लोग पूछते हैं कि कृष्ण के इस व्यवहार में आप क्या देखते हैं? कुछ भी नहीं देखता हूं *—यह सीधा—सरल व्यवहार है। खा ली थी कसम किसी क्षण में; अब वह क्षण गया, नया क्षण आ गया।* अब इस नये क्षण की नई स्थिति है। इस नये क्षण का नया संवेग है!इस नये क्षण के लिए नया उत्तर चाहिए!

पुरानी कसम से बंधे रहते तो मर्यादा होती।
बंधे न रहे। अस्तित्व के नये ढंग के साथ नये हो लिए।

तुमने कृष्ण का एक नाम सुना रणछोड़दास जी!भगोड़ादास जी! भाग खड़े हुए! किसी मौके पर देखा कि भागने में ही सार है तो फिर ऐसा नहीं कि जिद की तरह अड़े रहेंगे कि चाहे जान रहे कि जाये, झंडा ऊंचा रहे हमारा!

भाग गये, कि *देखा कि परिस्थिति भागने की है, तो इसमें अकड़ न रखी।* उनके भक्तों ने भी खूब नाम बना लिया—रणछोड़दास जी!कृष्ण में एक मर्यादा—पार की प्रभा है। कृष्ण को समझना थोड़ा कठिन है। राम सीधे —साफ हैं।

राम में कुछ विशिष्ट नहीं। महिमापूर्ण हैं, मगर विशिष्ट नहीं। महात्मा हैं, लेकिन संत नहीं।
इसलिए जान कर छोडता रहा हूं। जब परम की

CamScanner

2:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 71%

कृष्ण को पूर्णावतार कहा। कहा कि यह पूरा–पूरा परमात्मा। पूरा–पूरा परमात्मा का अर्थ हुआ : अब मर्यादा भी नहीं। मर्यादा भी आदमी की होती है।सीमा आदमी की होती है। तो ठीक है राम के लिए मर्यादापुरुषोत्तम नाम, कि पुरुषों में उत्तम मर्यादा वाले, *सबसे बड़ी मर्यादा वाले। लकीर के बिलकुल फकीर हैं।*

यह किसी धोबी ने कह दिया अपनी पत्नी से कि 'तू रात भर कहां रही? तू मुझे राम समझी है कि वर्षों रह गई सीता रावण के घर और फिर ले आये? छोड़ ये बातें, निकल घर से।' बस यह बात काफी हो गई कि यह तो मर्यादा टूटती है। तो मर्यादा टूटती है, सीता की अग्नि–परीक्षा भी ले ली, सब तरह उसे कोरा, उसको पूरा पक्का–खरा पाया, फिर भी उसे जंगल छुड़वा दिया।मर्यादा टूटती है!

कृष्ण बड़े और ढंग के हैं। कोई मर्यादा नहीं है।मर्यादा मात्र शून्य है। इसलिए कृष्ण को पूर्णावतार कहा है;

परमात्मा जैसे पूरा–पूरा उतरा!परमात्मा संत में पूरा–पूरा उतरता है, महात्मा में बंधा–बंधा उतरता है। और दुर्जन में तो पड़ गया गड्ढे में, कीचड–कबाड़ में। जैसे शराबी पड़ा होता है नाली में,ऐसा दुर्जन में परमात्मा नाली में पड़ जाता है, सज्जन में खड़ा हो जाता है, संत में उड़ने लगता है। संत की ही बात मैंने की है अब तक–इस आशा में कि जहां जाना है, जो होना है, उसकी ही बात करनी उचित है; बीच के पड़ावों की क्या बात करनी!राम एक सराय हैं, मंजिल नहीं। रुक जाना रात भर, अगर कृष्ण समझ में न आते हों तो राम पर रुक जाना, बिलकुल ठीक है। बाहर पड़े रहने की बजाय खुले आकाश के नीचे, धर्मशाला में ठहर जाना, लेकिन धर्मशाला मंजिल नहीं है।

*इसलिए तुलसी का मेरे मन में कोई बहुत मूल्य नहीं है। स्थिति–स्थापक हैं। कबीर की बात और! कबीर क्रांति हैं! तुलसी–परंपरा। पिटा– पिटाया है। कुछ नया नहीं। कोई मौलिक नहीं। कोई क्रांति का स्वर नहीं है। क्रांति के स्वर सुनने हों तो कबीर में सुनो या नानक में सुनो या फरीद में या अष्टावक्र में सुनो !
ओशो

CamScanner

CamScanner

2:55 pm 0 KB/s 4G 65%

आदमी भी साथ नहीं चल सकते।

और यह भी ध्यान रहे, धर्म का रास्ता कुछ रेडीमेड, बना-बनाया नहीं है, कि पहले से तैयार है, आप जाएंगे और चल पड़ेंगे। धर्म का रास्ता ऐसे ही है जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं। कोई रास्ता नहीं है बना हुआ, पक्षी उड़ता है और रास्ता बनता है, जितना उड़ता है उतना रास्ता बनता है। और ऐसा भी नहीं है कि एक पक्षी उड़े तो रास्ता बन जाए, तो दूसरा उसके पीछे उड़ जाए। फिर रास्ता मिट जाता है। उड़ा पक्षी, आगे बढ़ गया, आकाश में कोई निशान नहीं बनते।

ठीक धर्म के आकाश में भी एक-एक आदमी जाता है। बिना बंधे हुए रास्ते हैं। पाथलेस पाथ है। वहां कोई बंधा हुआ रास्ता नहीं है। पंथहीन पंथ है वहां। वहां कोई बंधी हुई पगडंडी नहीं है कि पहले से तैयार है, आप जाएंगे और चल पड़ेंगे। अगर ऐसा होता तो हम सारे लोगों को कभी का उस रास्ते पर ले गए होते। अज्ञात है, अनचार्टर्ड है, कोई नक्शा नहीं है पास में, कोई कुतुबनुमा नहीं है पास में जिससे पता चल जाए कि रास्ता कहां है। उस अनजान रास्ते पर अकेले उतरने की हिम्मत जिनकी है वे जरूर पहुंचते हैं परमात्मा तक।

लेकिन हिंदू घर में पैदा हो गया लड़का, तो हिंदुओं की भीड़ में सम्मिलित हो जाता है। वह कहे काशी जाओ, तो काशी जाता है। कहे द्वारिका जाओ, तो द्वारिका जाता है। कहे कि यह भगवान है, इसको पूजो, तो उनको पूजता है। मुसलमानों की भीड़ में पैदा हो गया, कहे मक्का जाओ, तो मक्का जाता है। ईसाइयों की भीड़ में पैदा हो गया, कहा कि जेरुसलम जाओ, तो जेरुसलम जाता है। भीड़ के पीछे चलता है आदमी। और जो आदमी भीड़ के पीछे चलता है वह आदमी झूठे धर्म के रास्ते पर चलेगा। जो आदमी अकेला चलने की हिम्मत जुटाता है वह आदमी धर्म के रास्ते पर जा सकता है।

ओशो - धर्म, सम्राट बनाने की कला है-3

CamScanner

2:54 pm 0 KB/s VoLTE 4G 65%

और हम? हम एक मंदिर बनाते हैं। वह मंदिर भी बनेगा और गिरेगा, क्योंकि जो भी बनता है वह मिटता है। हम एक मूर्ति बनाते हैं। जो भी बन गई है मूर्ति, वह कल गिरेगी और बिखर जाएगी। हम एक किताब रचते हैं। जो भी रचा जाता है वह नष्ट हो जाता है। जो भी बनता है, मिटता है, वह ईश्वर नहीं है।

लेकिन आदमी ने अपने थोथे और झूठे धर्म खड़े कर रखे हैं। क्यों कर रखे हैं खड़े?
इसलिए खड़े कर रखे हैं कि आज नहीं कल हर आदमी बाहर से ऊबता है और भीतर की तरफ जाता है। और जब भीतर की तरफ जाता है तो वहां दो रास्ते हैं: एक झूठे धर्म का रास्ता है, एक सच्चे धर्म का रास्ता है। सच्चे धर्म के रास्ते पर आदमी चला जाए तो उसका शोषण नहीं किया जा सकता। उसे झूठे धर्म के रास्ते पर ले जाओ, तो पंडे हैं, पुरोहित हैं, पुजारी हैं, मौलवी हैं, वे सब उसका शोषण कर सकते हैं।

आदमी को भटकाने वाले लोग नास्तिक नहीं हैं उतने, जितने कि पंडे हैं, पुजारी हैं, साधु हैं, संन्यासी हैं। जो शोषण करते हैं धर्म का। जो धर्म के नाम पर जीते हैं। जिन्होंने धर्म को आजीविका बना रखा है। जिन्होंने धर्म को धंधा बना रखा है। जो लोग भगवान को भी बेचते हैं और भगवान के बेचने पर जीते हैं। उन लोगों ने एक झूठा, एक सब्स्टीटयूट रिलीजन, एक परिपूरक धर्म बना रखा है। इसके पहले कि कोई आदमी भीतर जाए, वे उस झूठे रास्ते पर उसे लगा देते हैं। उस रास्ते पर करोड़ों-करोड़ों लोग चल रहे हैं--हिंदुओं के नाम से, मुसलमानों के नाम से, ईसाइयों के नाम से। और वे करोड़ों-करोड़ों लोग कहीं भी नहीं पहुंचते। बाहर भी कहीं नहीं पहुंचता आदमी और भीतर भी गलत रास्ते को पकड़ कर कहीं भी नहीं पहुंचता।

कुछ थोड़े से लोग कभी भीड़ से चूक जाते हैं और उस रास्ते पर चले जाते हैं जो धर्म का रास्ता है। और ध्यान रहे, भीड़ कभी धर्म के रास्ते पर नहीं जाती। धर्म के रास्ते पर अकेले लोग जाते हैं। क्योंकि धर्म के रास्ते पर कोई राजपथ नहीं है, जिस पर करोड़ों लोग इकट्ठे चल सकें। धर्म का रास्ता पगडंडी की तरह है, जिस पर अकेला आदमी चलता है। दो आदमी भी साथ नहीं चल सकते।

CamScanner

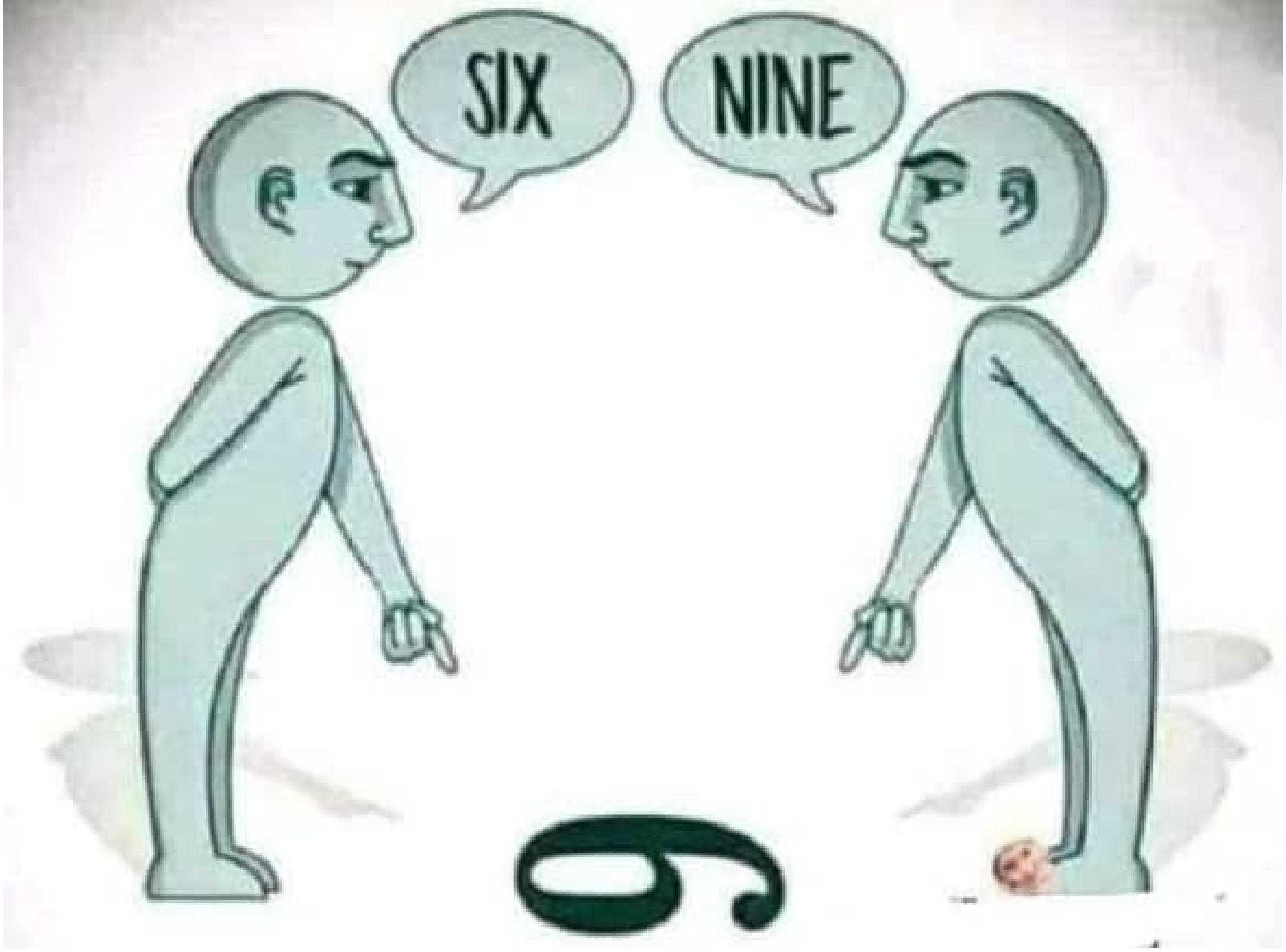

CamScanner

CS CamScanner

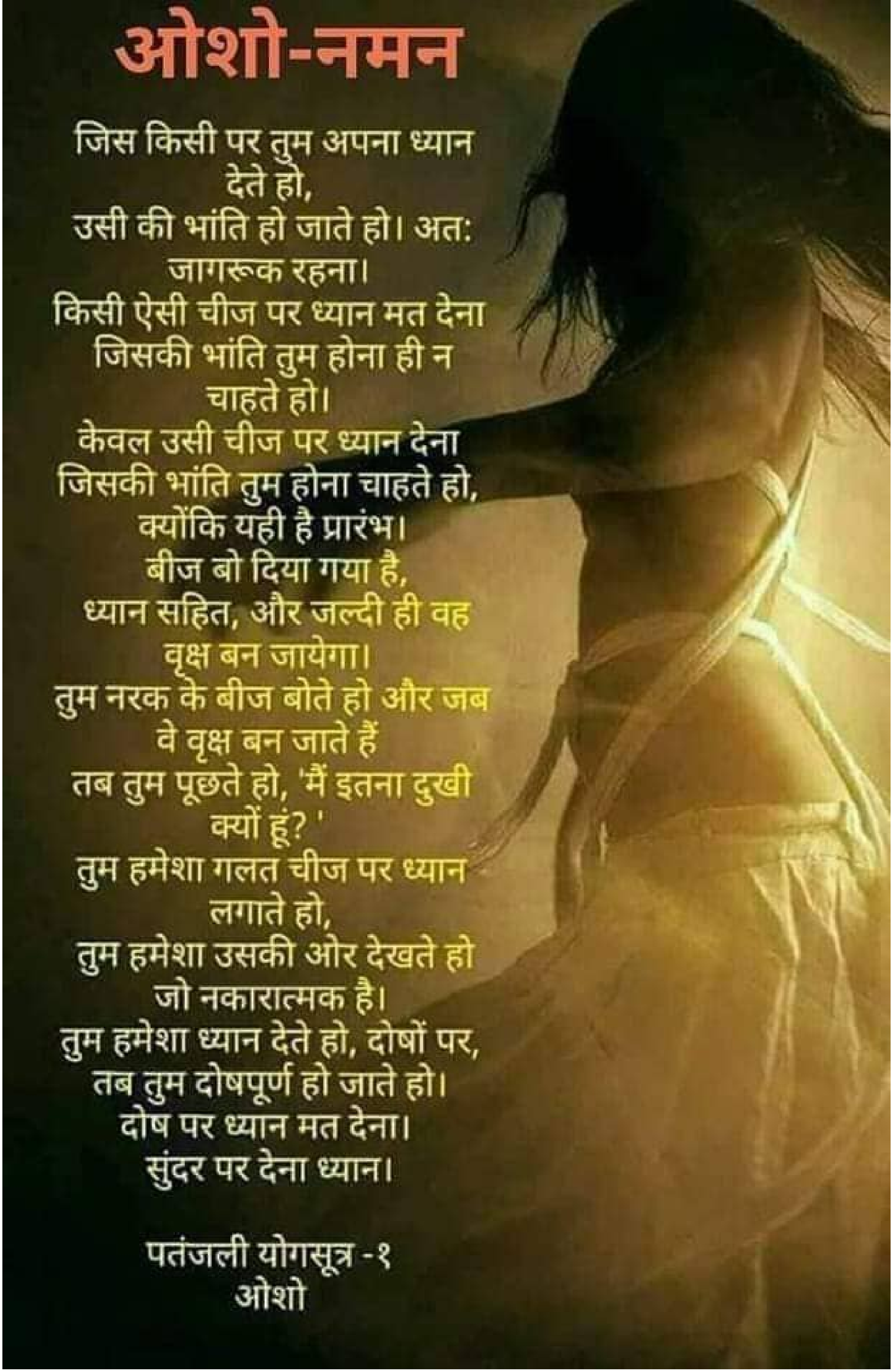

CS CamScanner

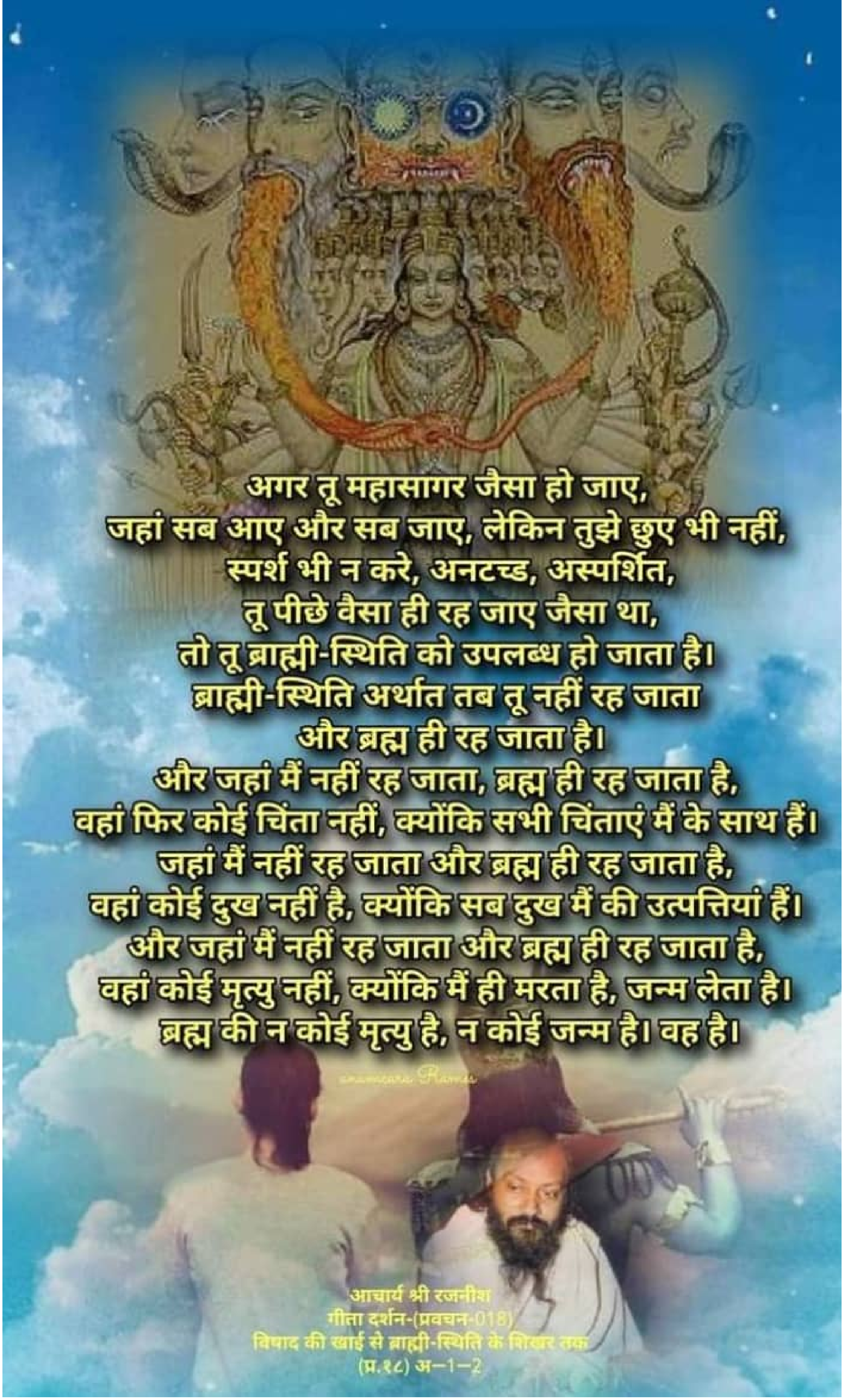
अगर तू महासागर जैसा हो जाए,
जहां सब आए और सब जाए, लेकिन तुझे छुए भी नहीं,
स्पर्श भी न करे, अनटच्ड, अस्पर्शित,
तू पीछे वैसा ही रह जाए जैसा था,
तो तू ब्राह्मी-स्थिति को उपलब्ध हो जाता है।
ब्राह्मी-स्थिति अर्थात तब तू नहीं रह जाता
और ब्रह्म ही रह जाता है।
और जहां मैं नहीं रह जाता, ब्रह्म ही रह जाता है,
वहां फिर कोई चिंता नहीं, क्योंकि सभी चिंताएं मैं के साथ हैं।
जहां मैं नहीं रह जाता और ब्रह्म ही रह जाता है,
वहां कोई दुख नहीं है, क्योंकि सब दुख मैं की उत्पत्तियां हैं।
और जहां मैं नहीं रह जाता और ब्रह्म ही रह जाता है,
वहां कोई मृत्यु नहीं, क्योंकि मैं ही मरता है, जन्म लेता है।
ब्रह्म की न कोई मृत्यु है, न कोई जन्म है। वह है।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-(प्रवचन-018)
विषाद की खाई से ब्राह्मी-स्थिति के शिखर तक
(प्र.१८) अ–1–2

CamScanner

" आप कितने सही है
और कितने गलत ",
आपके बारे में दो
शक्स को सब पता है.
पहला
" ईश्वर "
और
दूसरा आपकी
"अन्तर आत्मा "
और हैरानी की बात
यह है कि दोनो ही हमे
नजर नहीं आते ।

CamScanner

2:36 pm 0 KB/s VoLTE 4G 67%

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

Prit Pal Goyal · 6h ·

*महानिर्वाण को उपलब्ध हो जाने के बाद भी, ज्ञानी और गुरुजन समष्टि में मिलकर किस प्रकार हमारी सहायता करते हैं? इसे अधिक स्पष्ट करें।
*

सहायता करते हैं, ऐसा कहना ठीक नहीं। सहायता होती है। करने वाला तो बचता नहीं। नदी तुम्हारी प्यास बुझाती है, ऐसा कहना ठीक नहीं, नदी तो बहती है। तुम अगर पी लो जल, प्यास बुझ जाती है। अगर नदी का होना प्यास बुझाता होता, तब तो तुम्हें पीने की भी जरूरत न थी, नदी ही चेष्टा करती। नदी तो निष्क्रिय बही चली जाती है। नदी तो अपने तई हुई चली जाती है; तुम किनारे खड़े रहो जन्मों-जन्मों तक, तो भी प्यास न बुझेगी। झुको, भरो अंजुली में, पीयो, प्यास बुझ जाएगी। ज्ञानीजन समष्टि में लीन हो जाने के बाद ही या समष्टि में लीन होने के पहले तुम्हारी सहायता नहीं करते। क्योंकि कर्ता का भाव ही जब खो जाता है तभी तो ज्ञान का जन्म होता है। जब तक कर्ता का भाव है, तब तक तो कोई ज्ञानी नहीं, अज्ञानी है।

ज्ञानी की सिर्फ मौजूदगी, निष्क्रिय मौजूदगी पर्याप्त है। करने का ऊहापोह वहां नहीं है, न करने की आपाधापी है।

जीते जी, या शरीर के छूट जाने पर ज्ञान एक निष्क्रिय मौजूदगी है।
~PPG~

सभी मरते हैं। गृहस्थ भी मरता है, संन्यासी भी मरता है। पर मृत्यु का भी गुणधर्म बदल जाता है। अगर तुम जीए ठीक से तो तुम मरोगे भी ठीक से। अगर तुम नाचते जीए तो नाचते मरोगे।

CamScanner

सभी मरते हैं। गृहस्थ भी मरता है, संन्यासी भी मरता है। पर मृत्यु का भी गुणधर्म बदल जाता है। अगर तुम जीए ठीक से तो तुम मरोगे भी ठीक से। अगर तुम नाचते जीए तो नाचते मरोगे। तुम्हारे जीवन की शैली ही तुम्हारी मृत्यु की शैली होगी। और मृत्यु सील लगा जाएगी तुम्हारे अस्तित्व पर; कह जाएगी कि तुम कौन थे! कह जाएगी, तुम क्या थे! अगर तुम तड़फते मरे तो तुम खबर दे गए कि तुम ठीक से जीए न, चूक गए। अधूरे गए।

CamScanner

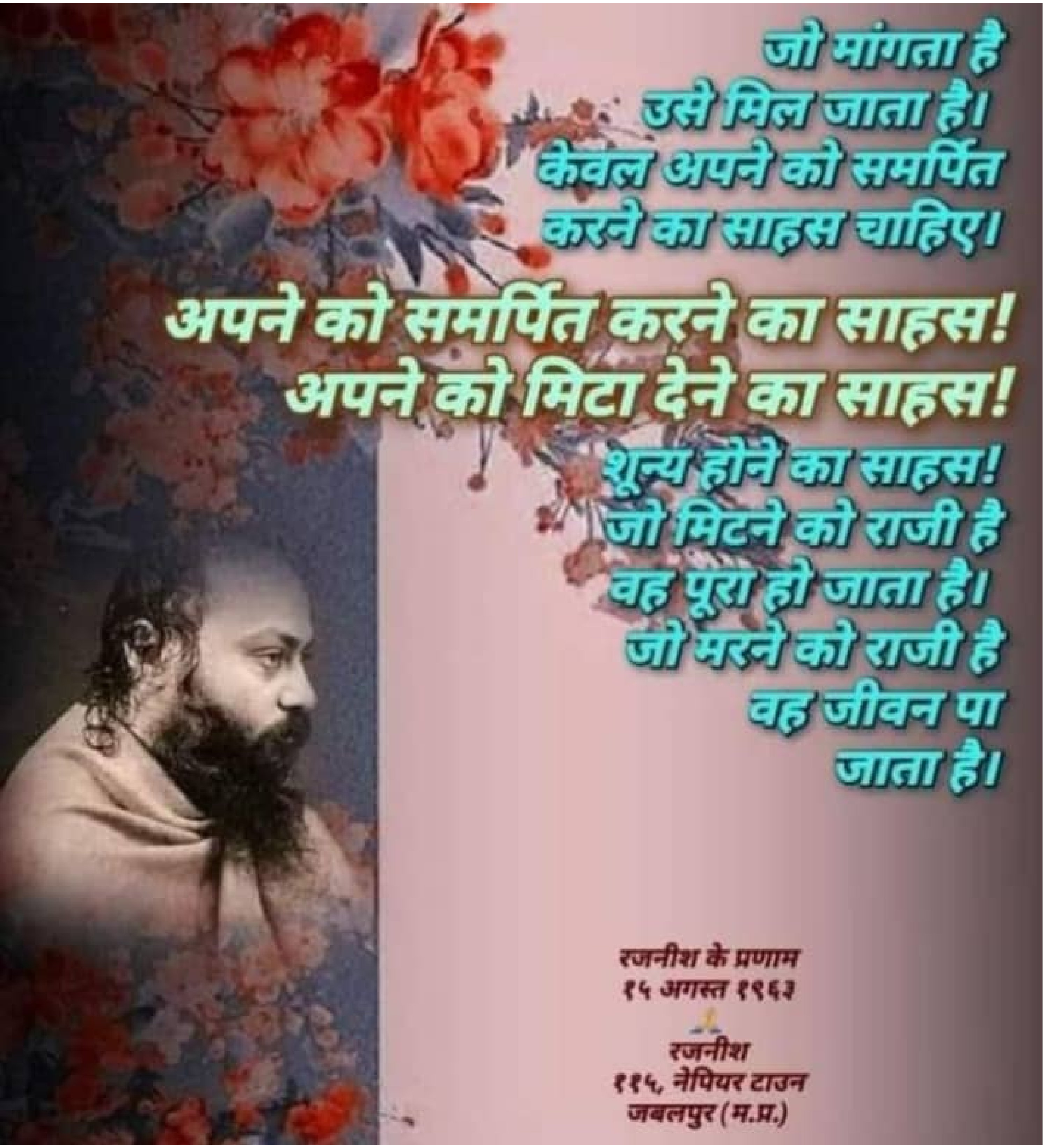
जो मांगता है
उसे मिल जाता है।
केवल अपने को समर्पित
करने का साहस चाहिए।
अपने को समर्पित करने का साहस!
अपने को मिटा देने का साहस!
शून्य होने का साहस!
जो मिटने को राजी है
वह पूरा हो जाता है।
जो मरने को राजी है
वह जीवन पा
जाता है।
रजनीश के प्रणाम
१५ अगस्त १९६३
रजनीश
११५, नेपियर टाउन
जबलपुर (म.प्र.)

CamScanner

2:32 pm 0 KB/s 67%

facebook

Like Comment Share

❤️ 🕉OSHO SHIVDHARA 🕉💭♎
Ravi Kumar · 3d ·

सूफ़ी कहते हैं: ईश्वर उपलब्ध है, वह पहले से ही उपलब्ध है आपको बस एक सरल दिमाग की आवश्यकता है, आपको केवल प्रेरणा-शून्यता की स्थिति की आवश्यकता है। आपको बस इस पल की चुप्पी में डूब जाने की जरूरत है, कल कुछ हासिल करने की कोशिश करने की नहीं। और आपका परलोक क्या है? यह कल की लम्बी छाया है। तो जो लोग मृत्यु के बाद स्वर्ग या निर्वाण पाने की सोच रहे हैं वे बहुत लालची लोग हैं। वे बिल्कुल भी धार्मिक नहीं हैं.

सूफीवाद दूसरी दुनिया, स्वर्ग और नर्क की किसी भी परी-कथा में विश्वास नहीं करता है। और ऐसा नहीं है कि स्वर्ग का अस्तित्व नहीं है, लेकिन यह सूफी की चिंता का विषय नहीं है। सूफी पूरी तरह से वर्तमान में जीता है। उनकी सरलता उनकी समझ से आती है, साधना से नहीं; वह इसका अभ्यास नहीं करता. जीवन को देखकर उसे गुलाब के फूल की तपस्या का एहसास होता है कि यह कितना सरल है और इसकी तपस्या की सुंदरता क्या है। वह गुलाब के फूल की तरह विनम्र हो जाता है: यह गरीब नहीं है, गुलाब का फूल सरल और समृद्ध है। इससे अधिक समृद्धि और क्या हो सकती है? गुलाब का फूल सरल और पूरी तरह से विलासितापूर्ण है - इससे अधिक विलासिता क्या हो सकती है?

सूफी क्षण में जीता है, गुलाब के फूल की तरह उसी क्षण खिलता है, सरल फिर भी समृद्ध। गरीबी थोपी नहीं जाती; वह आत्मा में गरीब है. और आत्मा में गरीब होने का क्या मतलब है? इसका सीधा सा मतलब है कि कोई अहंकार नहीं है, बस इतना ही; ऐसा नहीं कि उसे गरीबी से लगाव है. उससे सावधान रहें. ऐसे लोग हैं जो धन से जुड़े हुए हैं और ऐसे लोग हैं जो गरीबी से जुड़े हुए हैं। लेकिन यह वही लगाव है~

ओशो🌺💐

CamScanner

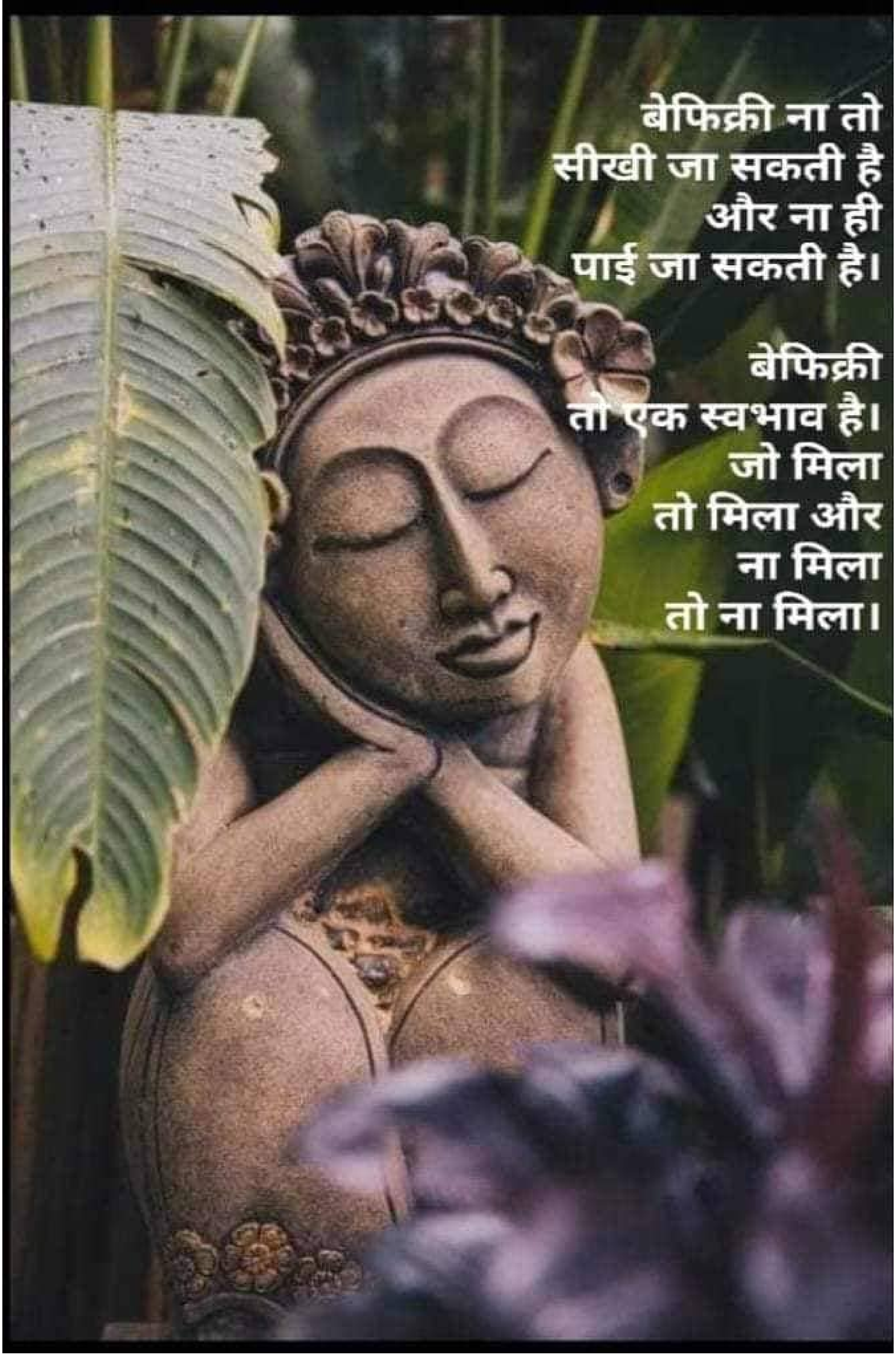
बेफिक्री ना तो
सीखी जा सकती है
और ना ही
पाई जा सकती है।
बेफिक्री
तो एक स्वभाव है।
जो मिला
तो मिला और
ना मिला
तो ना मिला।

CamScanner

2:28 pm 0 KB/s VoLTE 4G 68%

गणेश का नाम इसीलिए शुरू में लिखा जाता है। कहते हैं, गणेश उपद्रवी थे। जो प्रारंभिक कथा है, वह बड़ी मजेदार है। गणेश उपद्रवी थे और दूसरों के कार्यों में विग्न–बाधा डालते थे। इसलिए उनका नाम लोग शुरू में ही लेने लगे कि उनको पहले ही राजी कर लो। फिर तो धीरे–धीरे लोग भूल ही गए कि असली बात क्या थी! असली बात सिर्फ यही थी कि उनके उपद्रव के डर से लोग कुछ भी काम करते–शादी–विवाह करते, दुकान खोलते, मकान बनाते–उनका नाम पहले ले लेते कि तुम राजी रहना। हम तुम्हारे ही हैं, हमारी तरफ खयाल रखना। धीरे–धीरे बात बदल गई। अब तो गणेश जो हैं, वे मंगल के देवता हो गए हैं। धीरे–धीरे लोग भूल ही गए कि उनकी याद करते थे, उनके विध्न–उपद्रव की प्रवृत्ति के कारण। शब्द ने एक करवट ले ली, नया अर्थ ले लिया। लोग मंदिर में फूल चढ़ा आते हैं, मजार पर हो आते हैं फकीर की, ताबीज बांध लेते हैं धर्म का, लेकिन संसार के लिए।

पूछा है, 'आप कहते हैं, कामना बहिर्गामी है।'
समस्त कामनाएं बहिर्गामी हैं; कामना मात्र बहिर्गामी है। भीतर ले जाने वाली कोई भी कामना नहीं है। कामना ले ही जाती बाहर है। तो स्वभावत: प्रश्न उठता है, फिर हम भीतर कैसे जाएं? क्योंकि जब कोई कामना ही भीतर जाने की न होगी तो हम भीतर जाने का प्रयास क्यों करेंगे!

वासना की असफलता, कामना की विफलता, संसार की पराजय। भीतर जाने की कोई वासना नहीं है, जब सभी वासनाएं हार जाती हैं, तुम अचानक भीतर सरकने लगते हो। जब सभी वासनाएं हार जाती हैं, तुम बाहर नहीं जाते; बाहर जाना व्यर्थ हो गया। और तब अचानक तुम भीतर खींचे जाते हो।
इस फर्क को समझ लेना : भीतर कोई नहीं जाता। तुम बाहर जाते हो, बाहर जा सकते हो, भीतर खींचे जाते हो; इसलिए भीतर पहुंचना प्रसादरूप हैं। बाहर भर मत जाओ, भीतर खींच लिए जाओगे। तुम बाहर पकड़े हो जोर से किनारों को, इसलिए भीतर की धार तुम्हें खींच नहीं पाती। तुमने नाव को किनारे की खूंटियों से बांध दिया है, अन्यथा नदी समर्थ है इसको ले जाने में बड़ी दूर की यात्रा पर। वासना नहीं है भीतर जाने की कोई। मोक्ष की कामना कोई भी नहीं होती। जब कोई कामना नहीं होती, तब उस दशा का नाम मोक्ष है।

CamScanner

2:28 pm 0 KB/s 68%

संसार में हार जाना; वासना में हार जाना; तृष्णा की असफलता परमात्मा में ले जाती है, अंतर्गमन में ले जाती है। जीवन जैसा तुम जी रहे हो, व्यर्थ है, इसकी प्रगाढ़ चोट जगा जाती है। फिर बाहर के जीवन में उत्सुकता नहीं रह जाती।

इसे थोड़ा समझो। क्योंकि मैं देखता हूं बहुत से लोग अंतर्जीवन में उत्सुक होते हैं, लेकिन चोट नहीं पड़ी है। बाहर का जीवन असफल नहीं हुआ है। और भीतर के जीवन में उत्सुक हो रहे हैं। तो उनका भीतर का जीवन भी बाहर के जीवन का ही एक हिस्सा होता है; भीतर का जीवन नहीं होता। उनका मंदिर भी दुकान का ही एक कोना होता है। उनकी प्रार्थना भी उनके बही–खातों का प्रारंभ होती है–श्री गणेशाय नम:। बही–खाते का प्रारंभ भगवान से। ठीक से चले दुकान तो परमात्मा का स्मरण कर लेते हैं। परमात्मा का स्मरण करके नर्क की व्यवस्था करते हैं।

जहां तक मुझे पता है, इन दुकानदारों ने नर्क के दरवाजे पर भी लिख दिया होगा–श्री गणेशाय नम:। उनकी यात्रा.. तुमने चोरों को देखा? चोर भी जाते हैं चोरी को तो भगवान का नाम लेकर जाते हैं। मेरे पास आ जाते हैं ऐसे कुछ लोग। वे कहते हैं, आशीर्वाद दे दें, इच्छा पूरी हो जाए।
तुम इच्छा तो बताओ !
अब आप तो सब जानते ही हैं।
किसी को मुकदमा जीतना है.. तुम्हारी इच्छाएं व्यर्थ नहीं हो गई हैं जब तक, तब तक अंतर्यात्रा शुरू न होगी। तुम मंदिर में फूल चढ़ा आओगे, वह भी तरकीब होगी संसार में सफल हो जाने की। भगवान को भी राजी कर लो, कौन जाने कोई बीच में अड़ंगा डाल दे!

गणेश का नाम इसीलिए शुरू में लिखा जाता है। कहते हैं, गणेश उपद्रवी थे। जो प्रारंभिक कथा है, वह बड़ी मजेदार है। गणेश उपद्रवी थे और दूसरों के कार्यों में विघ्न–बाधा डालते थे। इसलिए उनका नाम लोग शुरू में ही लेने लगे कि उनको पहले ही राजी कर लो। फिर तो धीरे–धीरे लोग भूल ही गए कि असली बात क्या थी! असली बात सिर्फ यही थी कि उनके उपद्रव के डर से लोग कुछ भी काम करते–शादी–विवाह करते, दुकान खोलते, मकान बनाते–उनका नाम पहले ले लेते कि तुम राजी रहना। हम तुम्हारे ही हैं, हमारी तरफ खयाल रखना। धीरे–धीरे बात

CS CamScanner

ओशो
मुझे घमंड नहीं है किसी भी बात का
क्योंकि मैं जानता हूं, की
एक रात जिंदगी में ऐसी भी आएगी
जिसके बाद कोई सवेरा नहीं होगा..!!
Osho
Gudda

CamScanner

2:20 pm 0 KB/s VoLTE 4G 69%

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Manoj T K · 1h ·

परमात्मा की बड़ी कृपा है कि तुम्हारे सपने कभी सफल नहीं हो पाते। सफल हो जायें तो तुम परमात्मा से सदा के लिए वंचित रह जाओगे। परमात्मा की बड़ी अनुकंपा है कि तुम इस जगत में वस्तुत: सफल नहीं हो पाते; सफलता का भ्रम ही होता है, असफलता ही हाथ लगती है! हीरे–जवाहरात दूर से दिखाई पड़ते हैं, हाथ में आते– आते सब राख के ढेर हो जाते हैं। यह अनुकंपा है कि इस जगत में किसी को सफलता नहीं मिलती। इसी विफलता से, इसी पराजय से परमात्मा की खोज शुरू होती है। इसी गहन हार से, इसी पीड़ा से, इसी विकलता से सत्य की दिशा में आदमी कदम उठाता है।

अष्ट्रावक्र महागीता-भाग-3प्र-42

ओशो

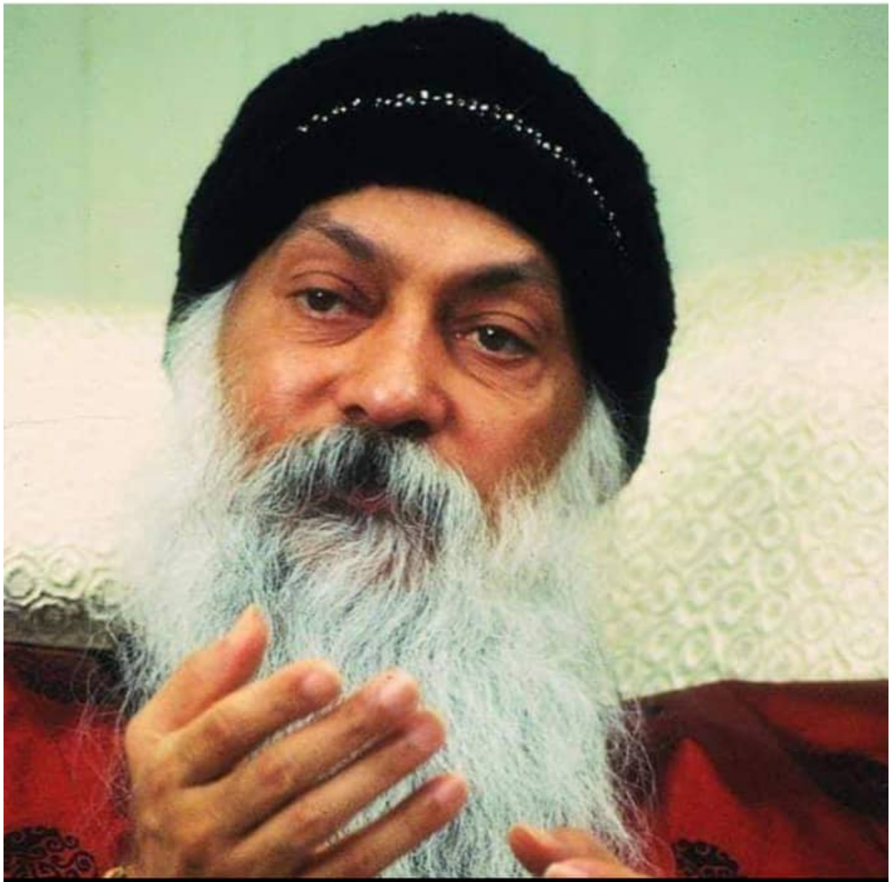

CamScanner

(सहज योग #16)

Osho - The Rebel

भोगी भी चूक जाते हैं, तथाकथित योगी भी चूक जाते हैं। तुम कुछ ऐसे बनो जो दोनों को साथ-साथ जीओ-- समानांतर। कठिन होगी यह यात्रा। मगर जितनी कठिन होगी, उतने ही मीठे फल होनेवाले हैं। बहुत मूल्य चुकाना होता है। लेकिन जो जितना मूल्य चुकाता है उतनी ऊंचाइयों पर उठ जाता है; उतनी ऊंचाइयों पर विराजमान हो जाता है।

CamScanner

3:34 pm 4 KB/s 58%

#urduadab #urdushayari #twolineshayari #loveshayari #maa #2linespoetry

View all 30 comments

2 days ago • See translation

satya_gyan_vichar

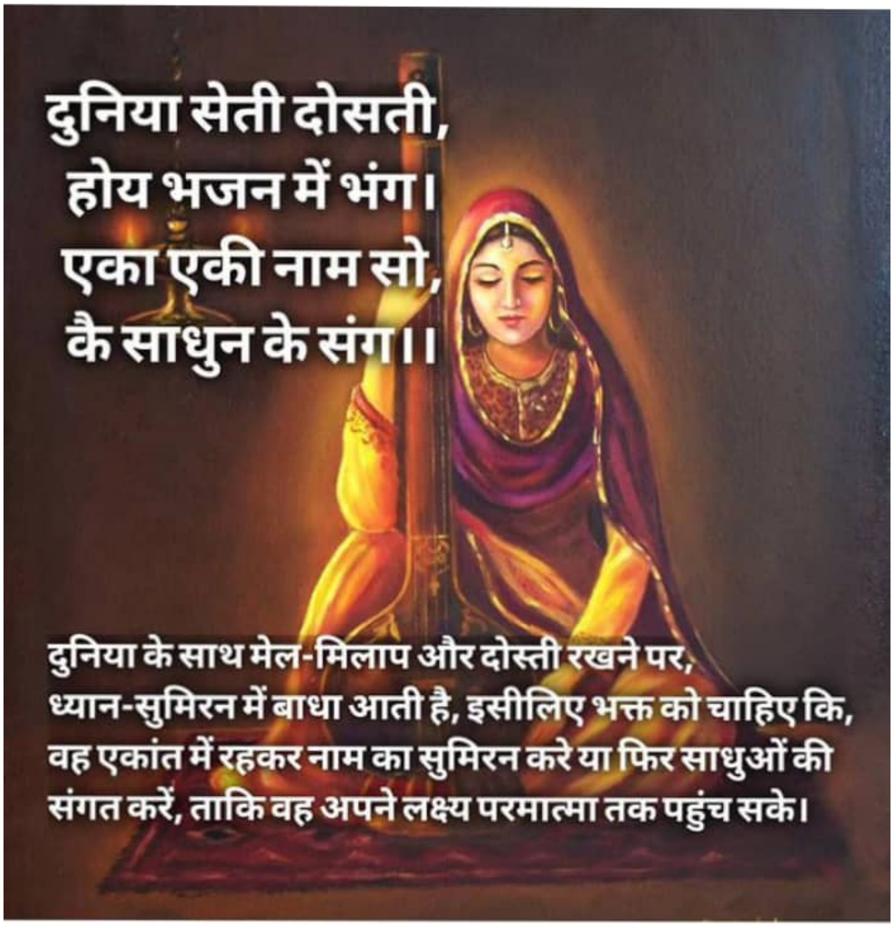

360 likes

satya_gyan_vichar #anmolvachan #aajkagyan #satguru #sadguru #satsang #suvichar #satnam #vichar... more

View 1 comment

Add a comment...

21 hours ago • See translation

Recent stories ▶ **Watch all**

CamScanner

3:27 pm 16 KB/s 4G 59%

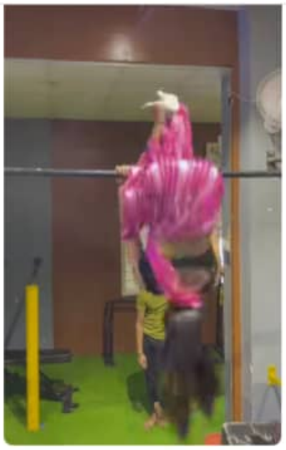

satya_gyan_vichar

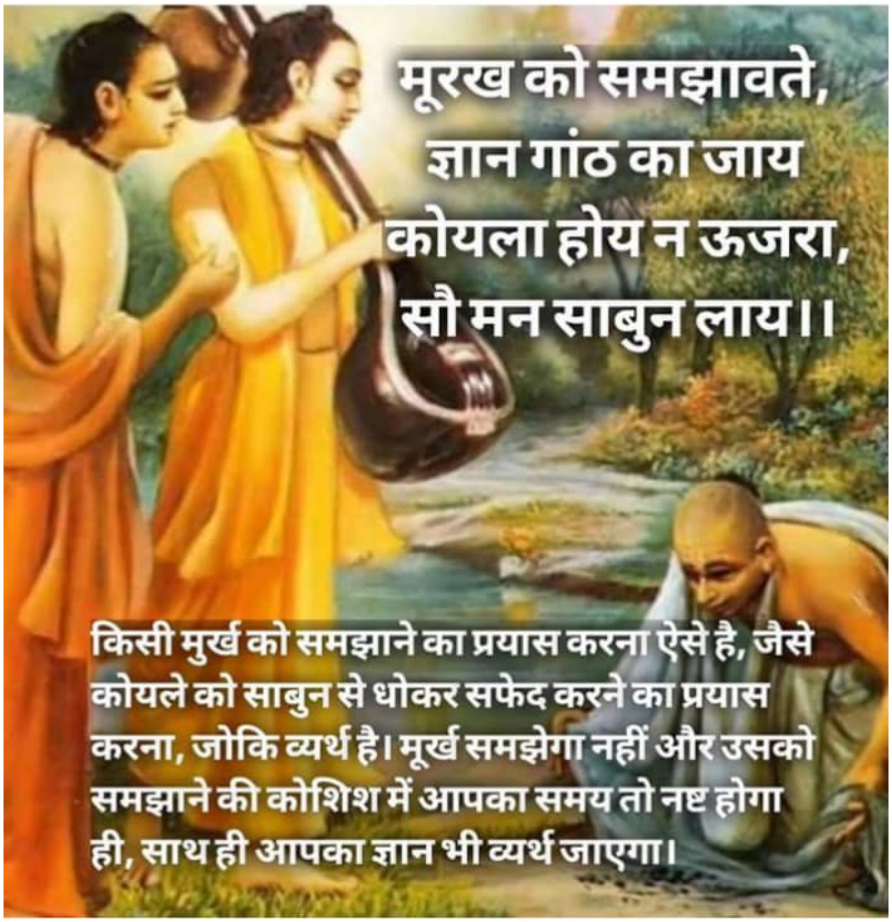

233 likes

satya_gyan_vichar #anmolvachan #aajkagyan #satguru #sadguru #satsang #suvichar #satnam #vichar... more

View 1 comment

CamScanner

मन केवल मंदिर
तक ले जाता है,
भगवान से मिलने के लिए तो
मन से भी पार उठना पड़ता है।

54

6 comments

CamScanner

हर चीज का
वक़्त तय है,
हर जगह
तय है,
आप कहीं
पहुँचते नहीं,
पहुंचाये
जाते हैं,
खेल तुम
नहीं रहे,
खेल तो वो
रहा है...
रब्बा खैर मांगे स्वयं यात्री हैरां
वो हम सो हम इति श्री अंतम

CamScanner

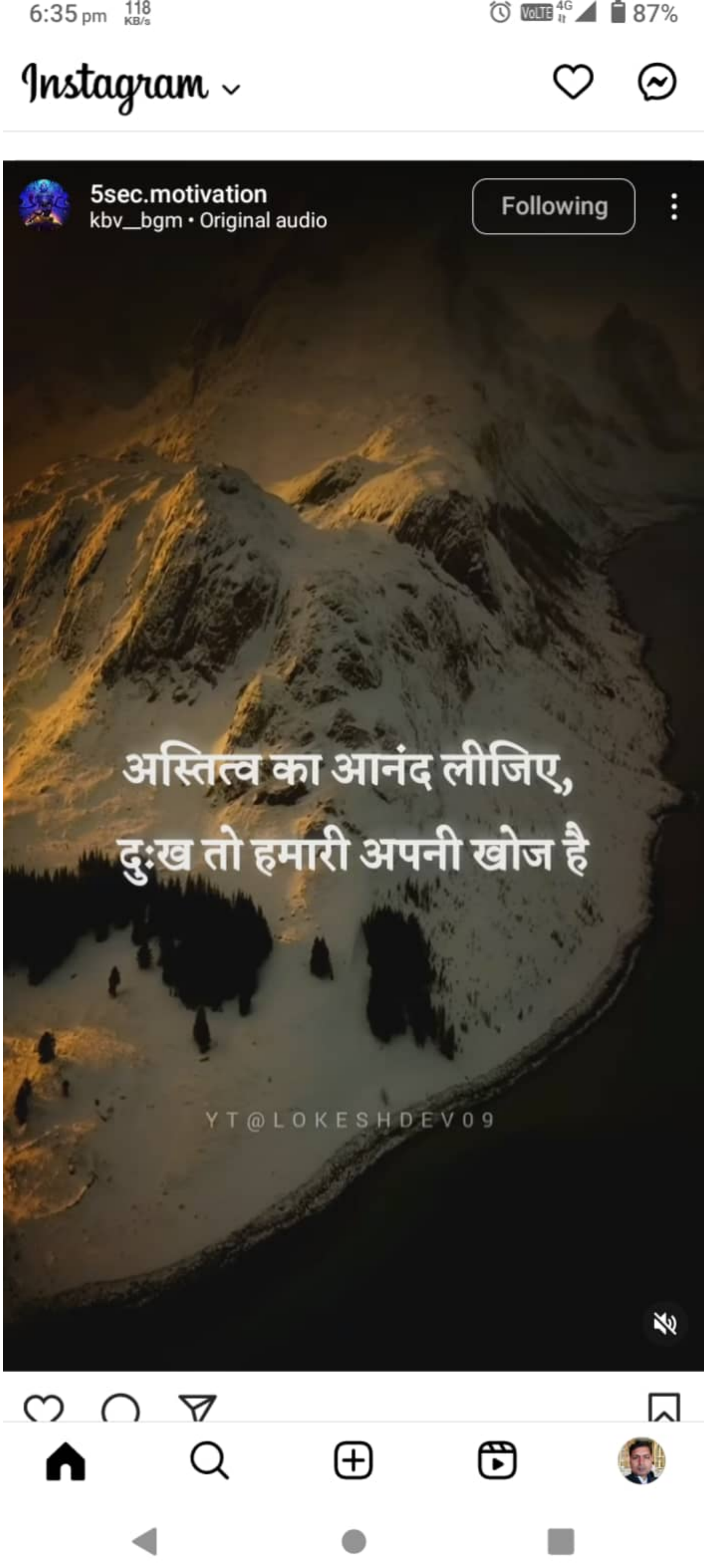
6:35 pm
118 KB/s
87%
Instagram
5sec.motivation
kbv__bgm • Original audio
Following
अस्तित्व का आनंद लीजिए,
दुःख तो हमारी अपनी खोज है
YT@LOKESHDEV09

CamScanner

6:35 pm 80 KB/s 87%

_banaras_wale_

osho_speech

osho_the_master

inspiring_voice1

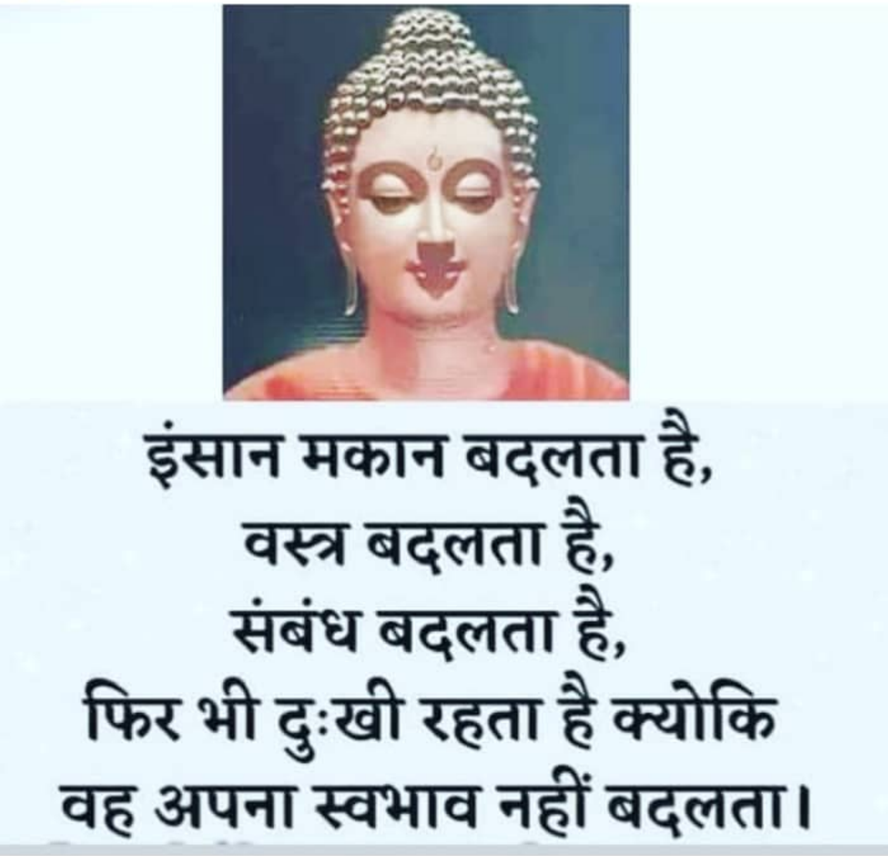

51 likes

43 minutes ago

hindi.sarthi

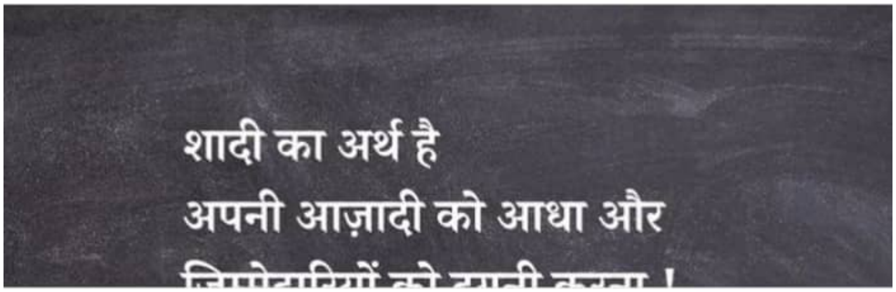

CamScanner

6:36 pm 118 KB/s 87%

Instagram

.... more

View 1 comment

OshowOrld

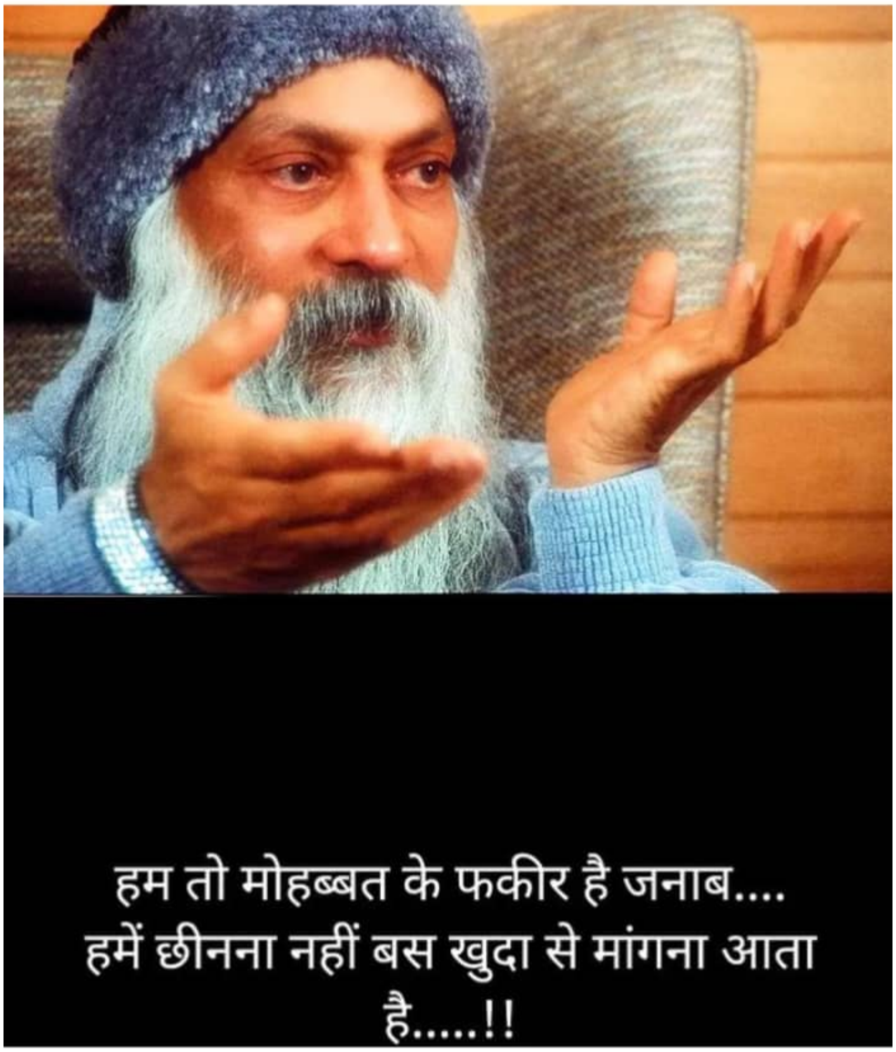

Liked by **osho______12** and **356 others**

OshowOrld #Osho #awakening #oshöquotes #osh thought #osh international #osh quote #instagram #osh medit... more

View all 2 comments

Add a comment...

CamScanner

8:06 pm 0 KB/s VoLTE 4G 78%

"मौन की महत्ता"
एक बोध कथा ~

एक मछलीमार कांटा डाले तालाब के किनारे बैठा था। काफी समय बाद भी कोई मछली कांटे में नहीं फँसी, ना ही कोई हलचल हुई तो वह सोचने लगा... कहीं ऐसा तो नहीं कि मैने कांटा गलत जगह डाला है, यहाँ कोई मछली ही न हो!

उसने तालाब में झाँका तो देखा कि उसके कांटे के आसपास तो बहुत-सी मछलियाँ थीं। उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि इतनी मछलियाँ होने के बाद भी कोई मछली फँसी क्यों नहीं!

एक राहगीर ने जब यह नजारा देखा तो उससे कहा- "लगता है भैया, यहाँ पर मछली मारने बहुत दिनों बाद आए हो! अब इस तालाब की मछलियाँ कांटे में नहीं फँसती।"

मछलीमार ने हैरत से पूछा- "क्यों, ऐसा क्या है यहाँ ?

राहगीर बोला- "पिछले दिनों तालाब के किनारे एक बहुत बड़े संत ठहरे थे। उन्होने यहाँ मौन की महत्ता पर प्रवचन दिया था। उनकी वाणी में इतना तेज था कि जब वे प्रवचन देते तो सारी मछलियाँ भी बड़े ध्यान से सुनतीं। यह उनके प्रवचनों का ही असर है कि उसके बाद जब भी कोई इन्हें फँसाने के लिए कांटा डालकर बैठता है तो ये मौन धारण कर लेती हैं। जब मछली मुँह खोलेगी ही नहीं तो कांटे में फँसेगी कैसे ? इसलिए बेहतर यहीं होगा कि आप कहीं और जाकर कांटा डालो।"

परमात्मा ने हर इंसान को दो आँख, दो कान, दो नासिका, हर इन्द्रिय दो ही प्रदान किया है। पर जिह्वा एक ही दी.. क्या कारण रहा होगा ?

क्योंकि यह एक ही अनेकों भयंकर परिस्थितियाँ पैदा करने के लिये पर्याप्त है।

संत ने कितनी सही बात कही कि जब मुँह खोलोगे ही नहीं तो फँसोगे कैसे ?

अगर इन्द्रिय पर संयम करना चाहते हैं तो.. इस जिह्वा पर नियंत्रण कर लेवें बाकी सब इन्द्रियां स्वयं नियंत्रित रहेंगी। यह बात हमें भी अपने जीवन में उतार लेनी चाहिए।

"एक चुप सौ सुख"

CS CamScanner

याद रखना, जो
मैनाक पर उतर गया,
वह पुनः छलांग
लगा ही नहीं पाया,
उसकी यात्रा अगले
जन्म पर चली गई,
उसका जीवन,
उसका किया कराया
सब बर्बाद हो गया।
349 मैनाक
लोकेशानन्द

CamScanner

4:43 pm 84%

1.9K 72 comments • 32 shares

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Seema Agrawal · 20h

कबीर कहते हैं: मैं तो राम की दुल्हनिया।

भक्ति तो स्त्रैण है। और जो भक्ति में डूबा, उसे स्त्री की सारी कला आ जाती है। उसे रूठना आ जाता है, उसे मनाना आ जाता है। परमात्मा खुद उसके पीछे चलता है मनाता उसे।

सच्ची भक्ति विश्वास से पैदा नहीं होती, सच्ची भक्ति ध्यान से पैदा होती है। सच्ची भक्ति तो जैसे-जैसे तुम शांत होओ, मौन होओ, तब पैदा होती है। जैसे मौन, जैसे शांत, वैसे ही आनंद झरने लगता है। बरखा होने लगती है अमृत की। और उसी अनुभव में परमात्मा से प्रेम जगता है।

साहिब मिले साहिब भए
ओशो

CamScanner

"Silence is an ocean. Speech is a river. When the ocean is searching for you, don't walk into the river. Listen to the ocean."

- RUMI

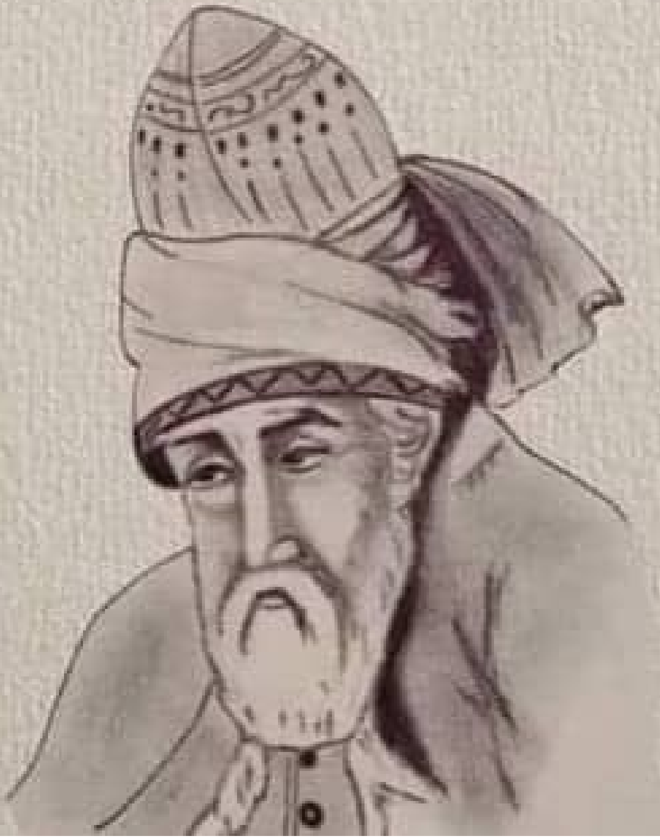

CamScanner

4:26 pm 0 KB/s VoLTE 4G 87%

🍂 और लाओत्सु समाधि को उपलब्ध हुआ 🍂

लाओत्सु के जीवन में उल्लेख है : कि वर्षों तक खोज में लगा रहकर भी सत्य की कोई झलक न पा सका। सब चेष्टाएं कीं, सब प्रयास, सब उपाय, सब निष्फल गये। थककर हारा-पराजित एक दिन बैठा है--पतझड़ के दिन हैं--वृक्ष के नीचे। अब न कहीं जाना है, न कुछ पाना है। हार पूरी हो गई। आशा भी नहीं बची है। आशा का कोई तंतुजाल नहीं है जिसके सहारे भविष्य को फैलाया जा सके। अतीत व्यर्थ हुआ, भविष्य भी व्यर्थ हो गया है, यही क्षण बस काफी है। इसके पार वासना के कोई पंख नहीं कि उड़े। संसार तो व्यर्थ हुआ ही, मोक्ष, सत्य, परमात्मा भी व्यर्थ हो गये हैं।

ऐसा बैठा है चुपचाप। कुछ करने को नहीं है। कुछ करने जैसा नहीं है। और तभी एक पत्ता सूखा वृक्ष से गिरा। देखता रहा गिरते पत्ते को--धीरे-धीरे, हवा पर डोलता वृक्ष का पत्ता नीचे गिर गया। हवा का आया अंधड़, फिर उठ गया पत्ता ऊपर, फिर गिरा। पूरब गई हवा तो पूरब गया, पश्चिम गई तो पश्चिम गया।

और कहते हैं, वहीं उस सूखे पत्ते को देखकर लाओत्सु समाधि को उपलब्ध हुआ। सूखे पत्ते के व्यवहार में ज्ञान की किरण मिल गई। लाओत्सु ने कहा, बस ऐसा ही मैं भी हो रहूं। जहां ले जायें हवाएं, चला जाऊं। जो करवाये प्रकृति, कर लूं। अपनी मर्जी न रखूं। अपनी आकांक्षा न थोपूं। मेरी निजी कोई आकांक्षा ही न हो। यह जो विराट का खेल चलता, इस विराट के खेल में मैं एक तरंग मात्र की भांति सम्मिलित हो जाऊं। विराट की योजना ही मेरी योजना हो और विराट का संकल्प ही मेरा संकल्प। और जहां जाता हो यह अनंत, वहीं मैं भी चल पड़ूं; उससे अन्यथा मेरी कोई मंजिल नहीं। डुबाये तो डूबूं, उबारे तो उबरूं। डुबाये तो डूबना ही मंजिल; और जहां डुबा दे वहीं किनारा। और कहते हैं, लाओत्सु उसी क्षण परम ज्ञान को उपलब्ध हो गया।

ओशो; अष्टावक्र महागीता

CS CamScanner

CamScanner

4:20 pm 0 KB/s VoLTE 4G 88%

← Replies

2h Like Reply 1

Manna Lal
Rajesh Kumar Rai जी , शब्द और भाषा से जो भक्ति हम करते हैं वह नश्वर है तथा सब के लिये ग्राह्य नहीं है । ईश्वर नाम की सत्ता एक है , इसलिये उसकी भक्ति ऐसी हो जो सबके लिये ग्राह्य हो । इसलिये भाषा व शब्द वाली भक्ति सीमित लोगों के लिये है । यहां तक कि भावना व विचार वाली भक्ति भी नश्वर है बताई गई है । अनुभवगम्य भक्ति को सर्वोत्तम बताया गया अर्थात अनुभूति पर आधारित भक्ति सर्व ग्राह्य है । स्वांस सबके लिये समान है । प्यास बुझाने के पानी की अनुभूति समान है । मीठा खाने की अनुभूति सबको समान है । इसी प्रकार अपने भीतर विराजमान परमात्मा की अनुभूति सबके लिए समान है । अपने भीतर विराजमान अविनाशी की अनुभूति की सही विधि के बारे में श्री प्रेम रावत जी दुनिया के लोगों को अपना संदेश गत 60 वर्षों से दे रहे हैं । उनका कहना है कि अपने भीतर विराजमान अविनाशी , शांति , आनन्द , की अनुभूति की विधि खोजो और जहां मिले ले लो और परमानन्द की अनुभूति करके अपना जीवन सफल करो और यदि कहीं वह विधि न मिले तो वह दे सकते हैं उन लोगों को जो लेना चाहते हैं । श्री प्रेम रावत जी के विचार prem rawat.com पर देखे व सुने जा सकते हैं । time less today app पर भी सुन सकते हैं ।

rawat.com
rawat.com

Write a public comment...

CamScanner

मैं कोई अतिवादी नहीं हूं। मैं गौतम बुद्ध की प्रशंसा करता हूं, महावीर का प्रशंसा करा हूं,लेकिन उनकी अतियों का प्रशंसक नहीं हूं। क्योंकि पहले कृष्ण ने देश को विनाश की आंधी में ढकेला,फिर उन लोगों ने अहिंसा के नाम पर एक तरह की नपुंसकता पैदा की। दो हजार साल तक तुम गुलाम बने रहे। कौन जिम्मेदार है? तना विशाल देश—छोटी छोटी जातियां आई और तुम पर शासन किया! क्योंकि अहिंसा तुम्हारा अभीप्सित लक्ष्य बन गया। प्रज्ञावान पुरुष मध्य में ठहरता है। वह किसी की हिंसा नहीं करता, लेकिन किसी को स्वयं की हिंसा भी नहीं करने देता। क्योंकि दोनों हालत में वह हिंसा को सहारा दे रहा है।

CamScanner

इंडा, पिंगला और सुषुम्ना नाडी में अंतर

इंडा	पिंगला	सुषुम्ना
ऋणात्मक ऊर्जा का संचार करती है।	धनात्मक ऊर्जा का संचार करती है।	संतुलित ऊर्जा का संचार करती हैं।
चंद्र नाड़ी ,शीतलता प्रदान करती है।	सूर्य नाड़ी , उत्साह प्रदान करती है।	जीवनदायिनी नाड़ी, वैराग्यता प्रदान करती हैं।
उद्गम स्थान मूलाधार चक्र के बाएं भाग से।	उद्गम स्थान मूलाधार के दाहिने भाग से।	मूलाधार से प्रारंभ होकर सातों चक्र में प्रवेश करती हैं।

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

1:43 pm 0 KB/s 93%

**कबहु इडा स्वर चलत है कभी पिंगला माही।
सुष्मण इनके बीच बहत है गुर बिन जाने नाही।।**

FILE

बहुत छोटी-सी बात है, लेकिन समझने में उम्र बीत जाती है। हमारे रोगी और निरोगी रहने का राज छिपा है हमारी श्वासों में। व्यक्ति उचित रीति से श्वास लेना भूल गया है। हम जिस तरीके और वातावरण में श्वास लेते हैं उसे हमारी इड़ा और पिंगला नाड़ी ही पूर्ण रूप से सक्रिय नहीं हो पाती तो सुषुम्ना कैसे होगी?

दोनों नाड़ियों के सक्रिय रहने से किसी भी प्रकार का रोग और शोक नहीं सताता और यदि हम प्राणायाम के माध्यम से सुषुम्ना को सक्रिय कर लेते हैं, तो जहां हम श्वास-प्रश्वास की उचित विधि से न केवल स्वस्थ, सुंदर और दीर्घजीवी बनते हैं, वहीं हम सिद्ध पुरुष बनाकर ईश्वरानुभूति तक कर सकते हैं।

मनुष्य के दोनों नासिका छिद्रों से एकसाथ श्वास-प्रश्वास कभी नहीं चलती है। कभी वह बाएं तो कभी दाएं नासिका छिद्र से श्वास लेता और छोड़ता है। बाएं नासिका छिद्र में इडा यानी चंद्र नाड़ी और दाएं नासिका छिद्र में पिंगला यानी सूर्य नाड़ी स्थित है। इनके अलावा एक सुषुम्ना नाड़ी भी होती है जिससे श्वास प्राणायाम और ध्यान विधियों से ही प्रवाहित होती है।

प्रत्येक 1 घंटे के बाद यह 'श्वास' नासिका छिद्रों में परिवर्तित होते रहती है।

शिवस्वरोदय ज्ञान के जानकार योगियों का कहना है कि चंद्र नाड़ी से श्वास-प्रश्वास प्रवाहित होने पर वह मस्तिष्क

CamScanner

1:40 pm 0 KB/s VoLTE 4G 93%

हम ईश्वर की भक्ति मन , बुध्दि , वाणी से करते हैं जैसे - पूजा , प्रार्थना , दर्शन , पाठ , गुण गान , कथा वाचन , कथा श्रवण आदि । समाज में ईश्वर भक्ति इसी तरह होती आयी है ।

मन , बुद्धि , वाणी के बिना भगवद भक्ति की विधि क्या है ?

Status (1 included)

CamScanner

सुख शान्ती के लिए सीनियर सिटीजन को सच्चे संतो की शरण, भजन सुमिरन स्वाध्याय, भोगों से विरक्ति लोभ मोह काम क्रोध अहम का त्याग, धैर्य ध्यान ग्यान हरि इच्छा पर पूरी तरह

🙏 निर्भर रहना ही है। 🙏

CamScanner

CamScanner

80 >

Chandrashekhar Gupta
ईस्वर तो आप के अंदर ही है सिर्फ अज्ञानता की चादर से ढका हुआ है ,!! माया, मोह, लोभ,क्रोध, विषय और अन्य सभी कैसाये निकल जाये तो खुद की जीव आत्मा ही परम दशा पाकर परमात्मा बन जाती है , रही बात अज्ञानता की चादर कैसे हटेगा ?? लोग अलग अलग रास्ते से वहा पहुचे की कोशिश कर रहे है, लेकिन मेरा पर्सनल अनुभव यह है की अपने जीवन मे कोई आत्म ज्ञानी मिल जाये तो काम हो गया मानो 🌹🙏💞

3h Like Reply 3

Ramesh Chunara replied with a sticker

Vishnu Srivastava
जहां स्वत: विकास है केवल वहीं ईश्वर का निवास है।

1h Like Reply

Vinod Shrimali
ज्ञान रुपी सूरज उगने से अल्प ज्ञान रुपी तारे नही दिखते हे , इस का अर्थ हे पुर्ण परमात्मा का ज्ञान मिलने से अन्य देवी देवता का ज्ञान की जरुर नही हे , प्रणामजी

2h Like Reply

Ramesh Chunara Vinod Shrimali

View 2 more replies...

Veer Soni
मैं आपको सूचित कर रहा हूं हरि और हाईड्रोजन नमक व्यक्ति यहां अपना प्रचार कर रहा है
गलत तरह से कमेंट में नंबर भी दे रहा है कृपया संज्ञान ले

1h Like Reply

Rules

Write a public comment...

CamScanner

मूल्यांकन

एक साधु राजा राजा के पास पहुंचा राजा ने साधु से कहा-लज्जा किस बात की है भगवन, कहिए मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ? फिर संकोच मिश्रित भाषा में साधु ने कहा-मेरी इच्छा आपके कोषागार को देखने की है। राजा साधु को लेकर कोषागार में पहुंचा। हीरे,पन्ने, मोती, माणक, नीलम आदि रत्नों का संग्रह और भंडार देखकर साधु ने राजा प्रश्न किया-इन पत्थरों का क्या करते है आप? इन पत्थरों से आपको कितनी आय होती है? राजा बोला- महाप्रभु! इनसे आय नहीं होती, अपितु इनको सुरक्षित रखने के लिए बराबर व्यय करना पड़ता है, पहरेदार रखने पड़ते है। ये रत्न बहुमूल्य हैं, चोरी हो जाने का भय रहता है। साधु ने कहा आप मेरे साथ आइए, मैं आपको इनसे भी बहुमूल्य और अत्यंत बेश कीमती पत्थर दिखलाता हूँ। राजा ये सुनकर साधु के साथ चल पड़ा। साधु राजा को एक झोपड़े में ले गया, वहाँ एक विधवा वृद्धा रहती थी। उस झोपड़े के एक कोने में आटा पीसने की चक्की पड़ी थी। उस चक्की से वह दूसरों का आटा पीसकर अपना पेट पालती थी। साधु ने चक्की के पत्थरों की ओर संकेत करते हुए कहा-राजन तुम्हारे उन उपयोगहीन पत्थरों से तो यह चक्की के पत्थर बहुमूल्य हैं, क्योंकि इनसे ये विधवा अपना जीविकोपार्जन करती है। ये पत्थर इसके जीवन का आधार है। आपके पत्थरों पर तो उल्टा व्यय होता है। राजा मस्तक झुकाए मौन खड़ा था। साधु पुनः बोला- नरेश वस्तु का मूल्य उसकी सुंदरता एवं संग्रह में नहीं उसकी उपयोगिता में है।

भीतरी बात-गहरी बात-पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़, ताते तो चाकी भली पीस खाए संसार।

–ललित 'अकिंचन'

THEYOGESHKUMAR

CamScanner

ध्यान अग्नि है।
वह किसी भी विचार को जला देती है।
आप करें और देखें।
किसी भी विचार को सोचें मत, सिर्फ देखें।
खड़े हो जाएं और देखते रहें, देखते रहें, देखते रहें—
थोड़ी देर में आप पायेंगे, वह तिरोहित हो गया;
वहां खाली जगह रह गयी।
वह खाली जगह समाधान है।
और जब कोई व्यक्ति ऐसी कला से
चलते, चलते, चलते उस जगह पहुंच जाता है,
जहां प्रश्न उठते ही नहीं,
खाली जगह रह जाती है, वह समाधिस्थ है।

CamScanner

प्रार्थना करो, अपेक्षा मत करो। फिर तुम कभी उदास न होओगे। फिर जो मिलेगा, उससे तुम धन्यभागी होओगे। और बहुत मिलता है। बहुत मिल रहा है, बहुत मिला ही हुआ है। मिलता ही रहा है। और जितने तुम प्रसन्न होओगे, जितने तुम अहोभाव से भरोगे, उतने ज्यादा को पाने का द्वार खुल जाता है। और जितने तुम विषाद से भरोगे, उतने तुम सिकुड़ जाते हो, उतना ही द्वार-दरवाजे बंद हो जाते हैं। जो मिलने वाला था, वह भी चूक जाता है। ओशो

CamScanner

एक शब्द अनुकंपा को जोर से पकड़ लो !
शेष सब फिर अपने से हो जाएगा।
एक तो रास्ता है : संकल्प का , संघर्ष का ,
एक रास्ता है : समर्पण का , अहंकार - विसर्जन का।
संघर्ष का रास्ता तो कंटकाकीर्ण है । और संघर्ष के
रास्ते पर खतरा है : अहंकार के जन्म का।
समर्पण का रास्ता अति सुविधा का है , क्योंकि जो
बड़े - से - बड़ा खतरा है ; अहंकार के जन्मने का ,
समर्पण के मार्ग पर उसकी कोई संभावना नहीं
समर्पण करो ! ओशो (Dr Sohan Lal Narang)

CamScanner

1:24 pm 0 KB/s VoLTE 4G 96%
facebook

तुम बेकार विज्ञापन में पैसा खराब मत करो। तुम्हारी खबर तो सारे अमरीका में पहुंच गयी है। सबको पता हो गया है कि तुम्हें पहाड़ पर कुछ भी नहीं मिला है! सब तुमने गंवा दिया है इसके पीछे। अब कोन पागल गवाएगा?

उसने कहा मैं ही कोई एक अकेला पागल थोड़े ही हूं इतने बड़े मुल्क में, कोई एकाध होगा। और निकल आया एक आदमी! और उसने एक करोड़ रुपए देकर वह पूरा पहाड़ खरीद लिया। उसके मित्रों ने कहा कि तुम महा पागल हो! वह आदमी बर्बाद हो गया--तुम देखते नहीं? उसने कहा. जहां तक उसने खोदा है, वहां तक सोना नहीं है, यह ठीक है। लेकिन खुदाई तो आगे भी हो सकती है। एक कोशिश और कर ली जाए।

और तुम जानकर हैरान होओगे कि सिर्फ एक हाथ खुदाई करने पर दुनिया की सबसे बडी खदान मिली। सिर्फ एक हाथ और खुदाई करने की बात थी।

तो कभी दिशा गलत होती है, तब तो मिल ही नहीं सकता। कभी दिशा भी ठीक होती है, तो तुम पूरे नहीं जाते! कभी तुम जाते भी हो, तो आख़िर -आख़िर में चूक जाते हो। एक हाथ के फासले से भी आदमी लौट आ सकता है।

इसलिए इतनी जल्दी निर्णय मत लो कि जीवन व्यर्थ है। मैं तुमसे कहता हूं--चश्मदीद गवाह की तरह-जीवन व्यर्थ नहीं है। दिशा बदली। और दिशा बदलने के बाद सारी ऊर्जा को खुदाई में लगा दो। और कभी निराश मत होना। नहीं तो कभी यह हो सकता है कि एक हाथ पहले से लौट आओ। खोदते ही जाना, खोदते ही जाना। आज नहीं कल, कल नहीं परसों--खोदते ही जाना--एक दिन खजाना मिलने ही वाला है। क्योंकि खजाना प्रत्येक के भीतर छिपाया ही गया है।

ओशो; एस धम्मो सनंतनो, भाग -11

CamScanner

अहोभाव

जाने किस आशंका से डरते हम
जो नहीं चाहते बरबस करते हम
करते हैं सिर्फ बहाना जीने का
जीवन भर कदम-कदम पर मरते हम।

घबरा किस बात से रहे हो? खोने को है क्या? खोने को तुम्हारे पास है क्या? डर क्या है? बचा क्या रहे हो? कुछ भी नहीं है। और वही किए चले जा रहे हो जो तुम नहीं करना चाहते। और जो तुम करना चाहते हो, उसको करने से डरते हो। इसे पहचानो। बहाने मत खोजो। और अगर जरा सा साहस करो तो अपरिचित में यात्रा शुरू हो जाए।
साहस बार-बार मैं दोहराता हूं, क्योंकि परमात्मा भी अपरिचित है; अभी अनजानी मदिरा है, कभी चखी नहीं; अभी अनजाना मार्ग है, कभी गए नहीं। राजपथ नहीं है परमात्मा; जंगल की पगडंडी है। अकेले पड़ जाओगे।

भीड़-भाड़ तो राजपथ पर छूट जाएगी। राजनेता, भीड़-भाड़, शोरगुल मचाने वाले, जुलूस, शोभायात्राएं सब राजपथ पर छूट जाएंगी। संन्यास तो एकाकी होने की यात्रा है। ध्यान तो अकेले होने का उपाय है। भक्ति में डूबने का अर्थ है संसार तो भूलने लगेगा; बस सारा ध्यान एक उस दूर के तारे पर टंका रह जाएगा। बस वह एक तारा ही रह जाएगा तुम्हारे भीतर, और सब धीरे-धीरे खो जाएगा। इसलिए डर लगता है: उतने अकेले में जाना! उतने एकांत में जाना! सारे संबंधों के पार अतिक्रमण करना!

इसलिए साहस धार्मिक व्यक्ति का अनिवार्य लक्षण है। हिंसक भी धार्मिक बन सकता है; क्रोधी धार्मिक बन सकता है। कामी धार्मिक बन सकता है; लेकिन कायर धार्मिक नहीं बन सकता। इसे तुम सोचना, इस पर ध्यान करना।

तुम्हारे धर्मशास्त्र यही कहते हैं कि हिंसा छोड़ो, क्रोध छोड़ो, काम छोड़ो। मैं तुमसे कहता हूं, कायरता छोड़ो। क्योंकि कायरता नहीं छोड़ी तो हिंसा कैसे छोड़ोगे? कायरता नहीं छोड़ी तो क्रोध कैसे छोड़ोगे? कायरता नहीं छोड़ी तो धन कैसे छोड़ोगे? कायरता नहीं छोड़ी तो संबंध कैसे छोड़ोगे?

CS CamScanner

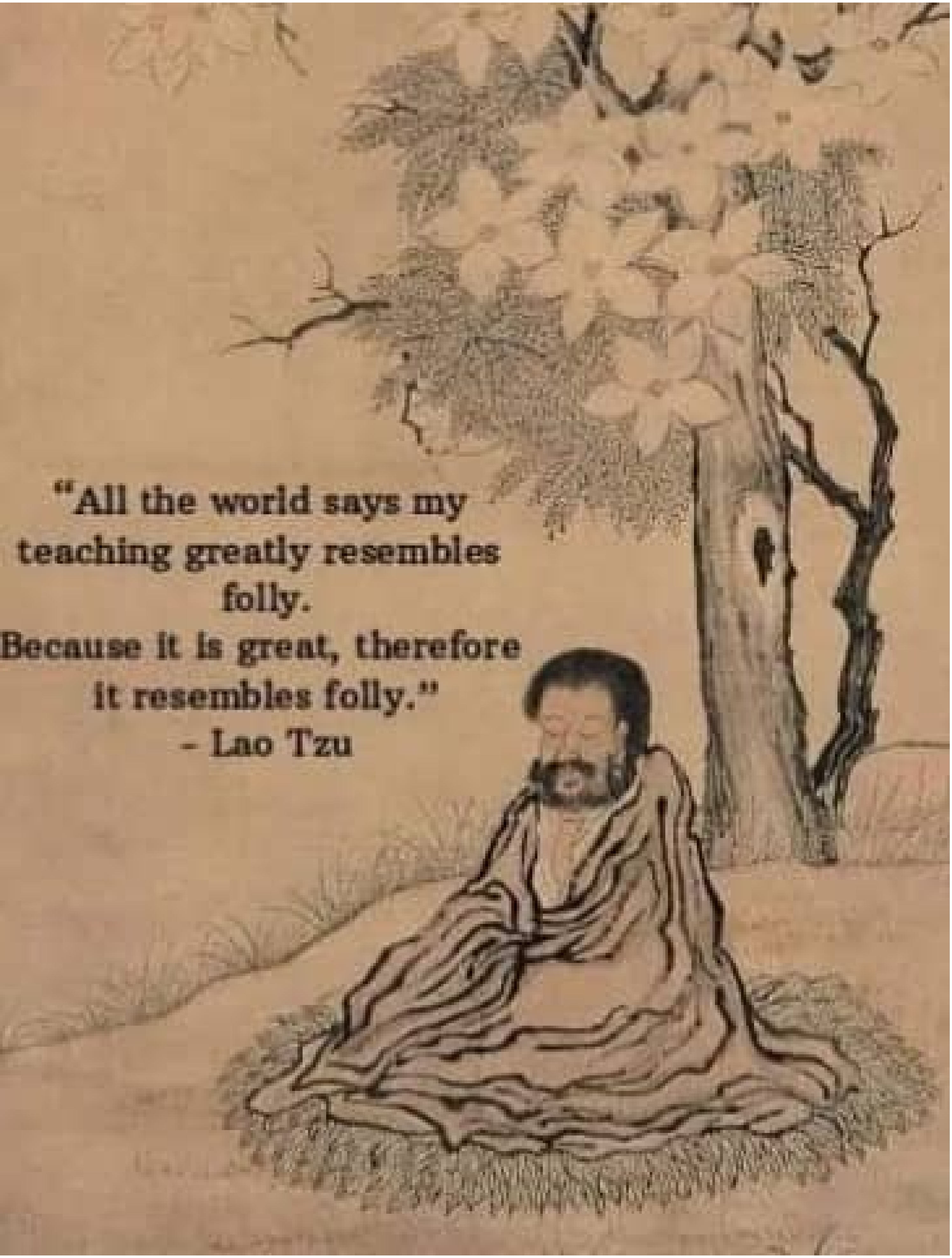
"All the world says my teaching greatly resembles folly.
Because it is great, therefore it resembles folly."
- Lao Tzu

CamScanner

10:29 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

OSHO FRAGRANCE FRIENDS

अज्ञात अज्ञात · 18h

बोधिधर्म जब चीन पहुँचा, तब पूरा देश उसका इंतजार कर रहा था। चीन का राजा स्वयं उसकी अगवानी के लिये देश की सीमा पर आया था। दस लाख से भी अधिक लोग इकट्ठे हुए थे, क्योंकि एक महान गुरु आ रहे थे।

और जब बोधिधर्म वहां पहुंचा तो सारे लोग हंसने लगे। उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास ही नही हुआ। सम्राट को भी बहुत बेचैनी महसूस हुई, क्योंकि इस व्यक्ति बोधिधर्म के एक पैर में एक जूता था और दूसरा वह अपने सिर पर रखे हुए था। यह कैसा अजीब आदमी था?

राजा ने कहा, "क्षमा करें श्रीमान, लेकिन आप क्या कर रहे हैं? हम एक समझदार आदमी का स्वागत करने आये थे। आप पागल हैं क्या?"

बोधिधर्म हँसा और बोला, "तो तुम परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गये। यदि तुम इसे समझ सकते हो तभी तुम अन्य बातें भी समझ सकते हो जो मुझे कहनी है। यदि तुम इतने छोटे से विरोधाभास को बर्दाश्त नहीं कर सकते - यह बहुत कुछ नहीं है, सिर्फ सिर पर जूता रखना है - यदि तुम इतना बर्दाश्त नहीं कर सकते और समझ नहीं सकते तो मेरा यहां रहना बेकार होगा।'

वह पीछे मुड़ा, और नगर छोड़कर जंगल में चला गया। उसने कहा, "मुझे वहां रहने की जरूरत नहीं है, कोई मुझे समझ नहीं पाएगा। अब मैं इंतजार करूंगा, जो लोग मुझे समझ सकते हैं, वे स्वयं मेरे पास आएंगे।"

उसने फिर कभी राजधानी में प्रवेश नहीं किया।

- Tao : The Three Treasures (Vol:4, CH:1)
OSHO.., 🙏🌹

CamScanner

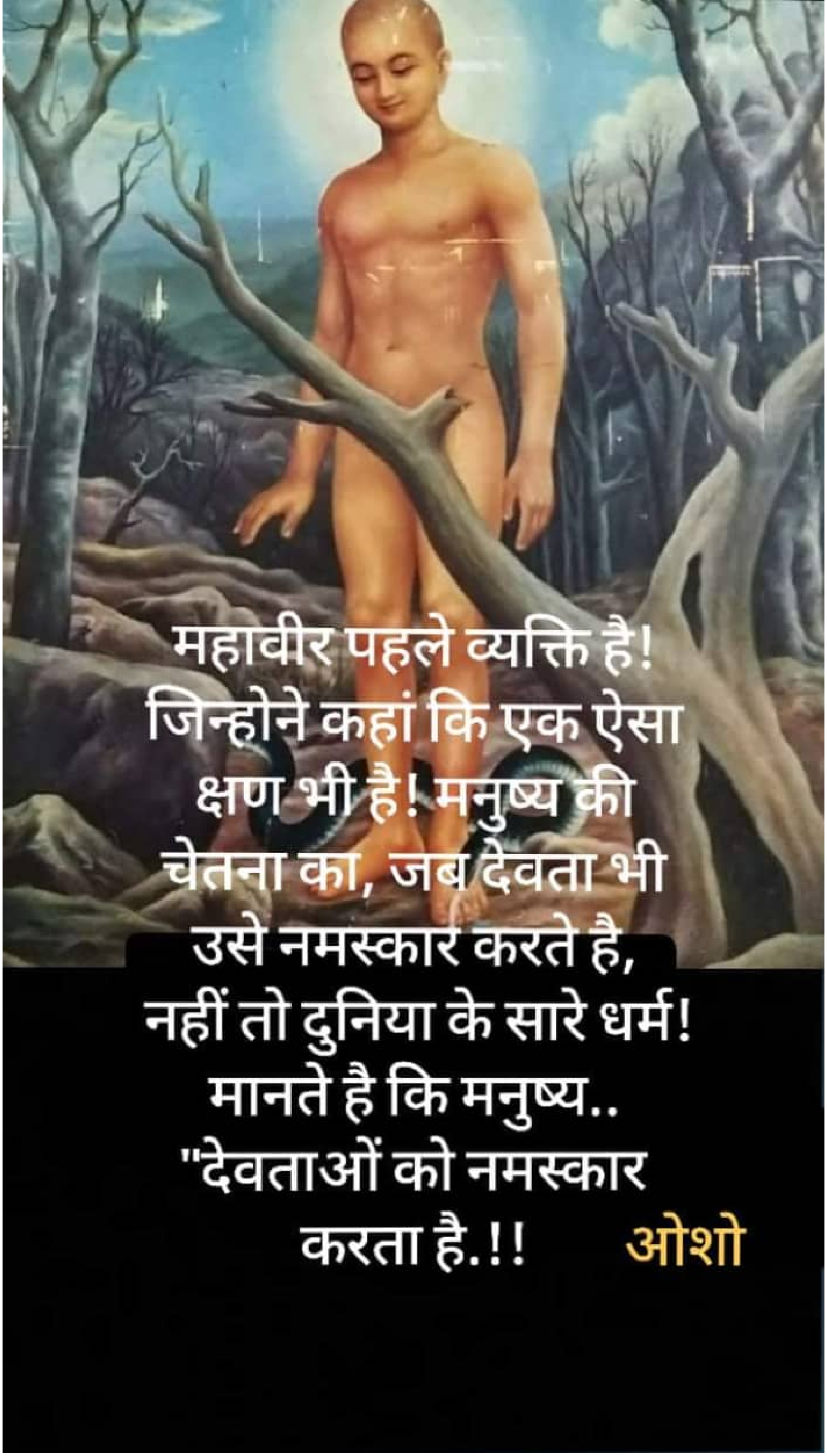
महावीर पहले व्यक्ति है!
जिन्होने कहां कि एक ऐसा
क्षण भी है! मनुष्य की
चेतना का, जब देवता भी
उसे नमस्कार करते है,
नहीं तो दुनिया के सारे धर्म!
मानते है कि मनुष्य..
"देवताओं को नमस्कार
करता है.!!
ओशो

10:22 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

Like Comment Share

Awākēn
1h ·

आप रात में आकाश में कई तारे देखते हैं, लेकिन जब सूरज उगता है तब नहीं. इसलिए क्या आप कह सकते हैं कि दिन में आकाश में तारे नहीं होते?
क्योंकि आप अपने अज्ञान के दिनों में ईश्वर को नहीं पा सकते, तो ऐसा मत कहो कि ईश्वर नहीं है। #रामकृष्ण

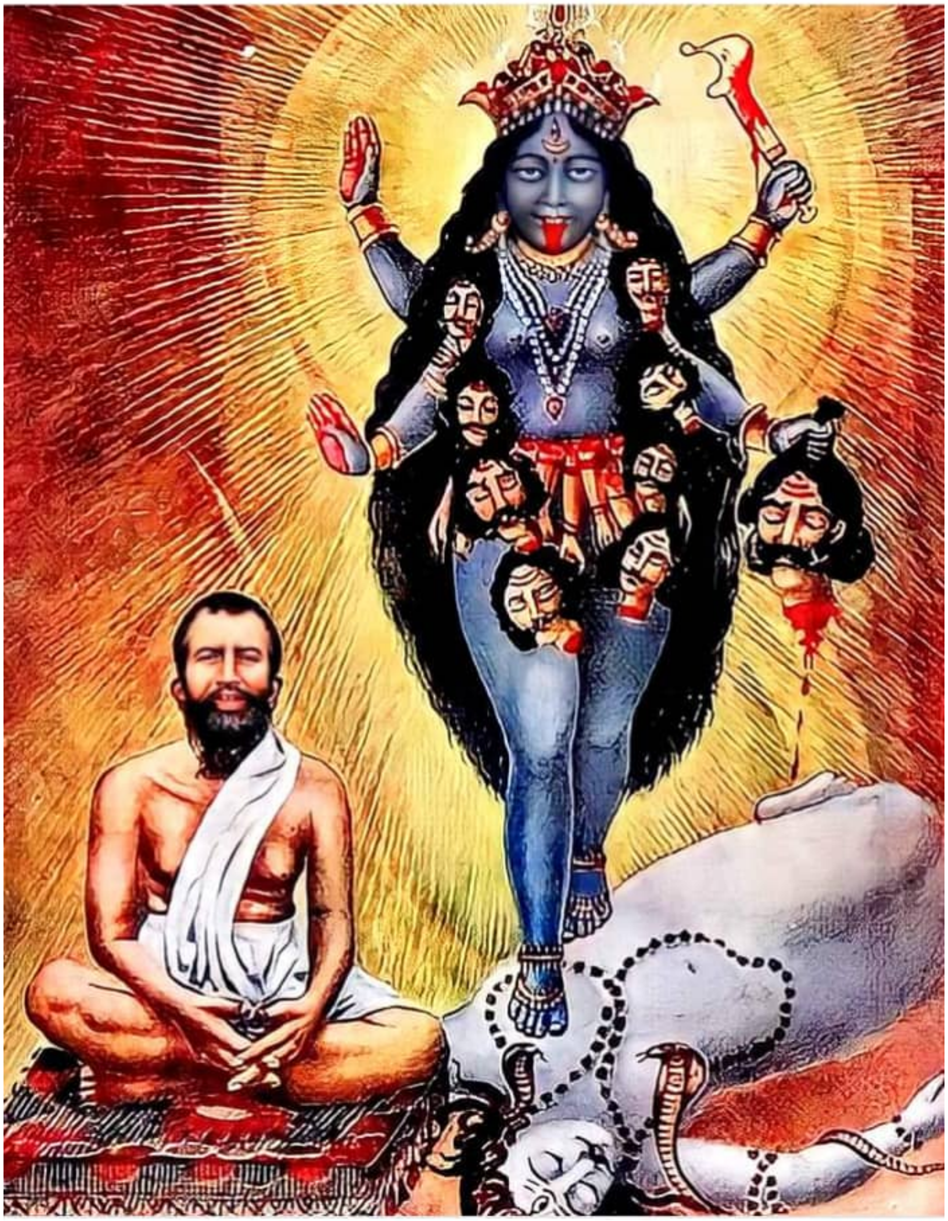

CamScanner

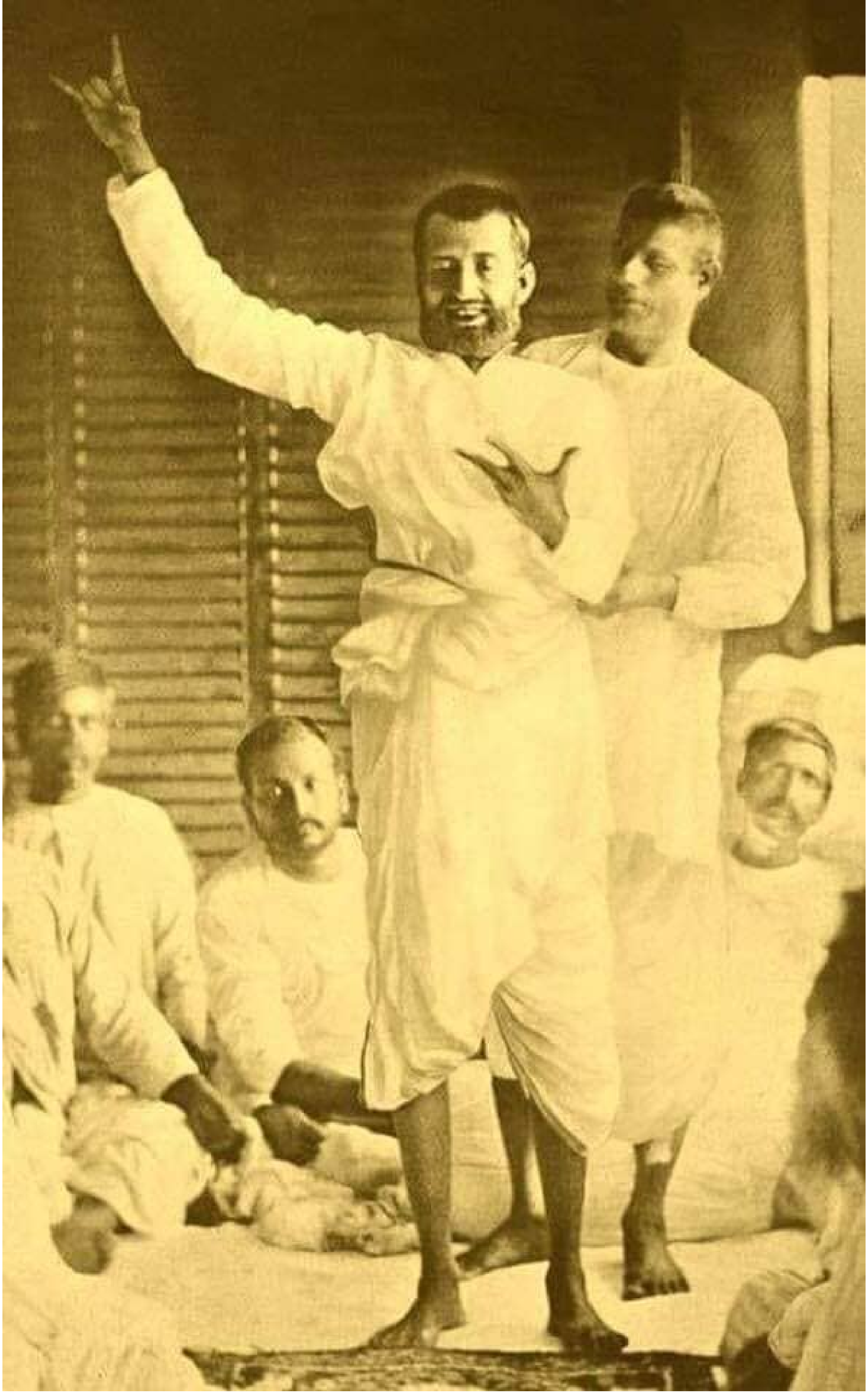

CamScanner

4:51 pm 0 KB/s VoLTE 4G 82%

Liked by **osho_guruji** and **386 others**

View all 5 comments

Add a comment...

20 hours ago

satya_gyan_vichar

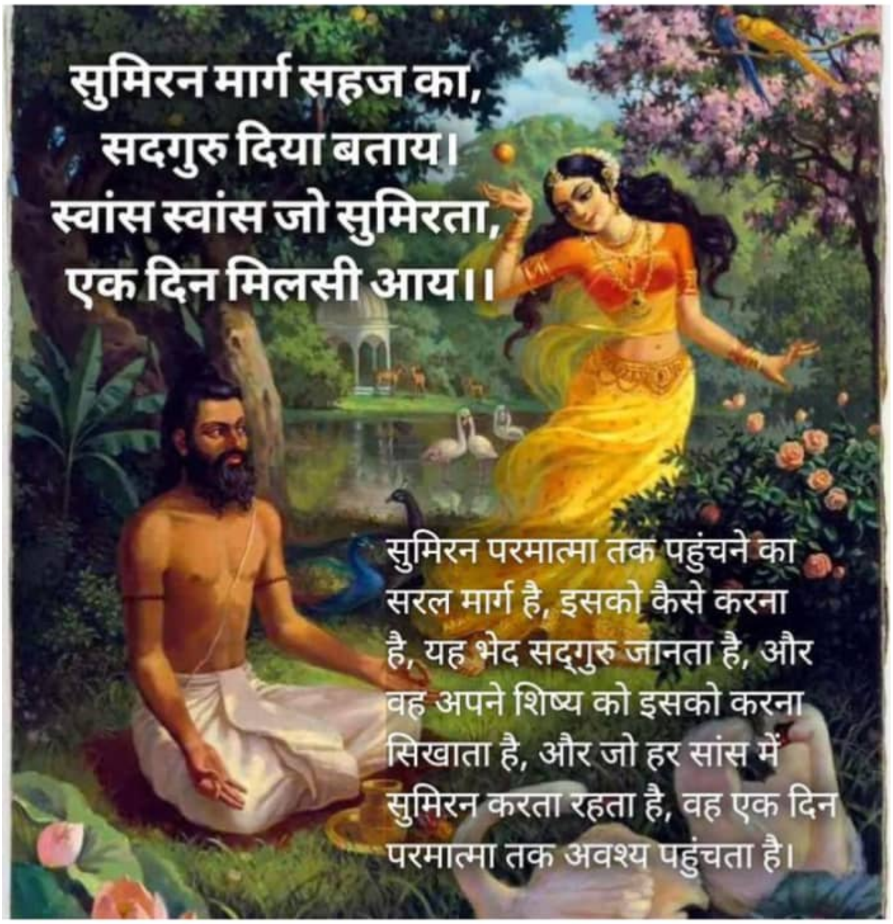

265 likes

View all 2 comments

Add a comment...

5 hours ago

Suggested for you See all

CamScanner

invaluable100 प्रेम कभी अलविदा नहीं होता...💚
वो तो बस ठहर जाता है "यादों" में!!!... more

View all 716 comments

19 July • See translation

0show0rld

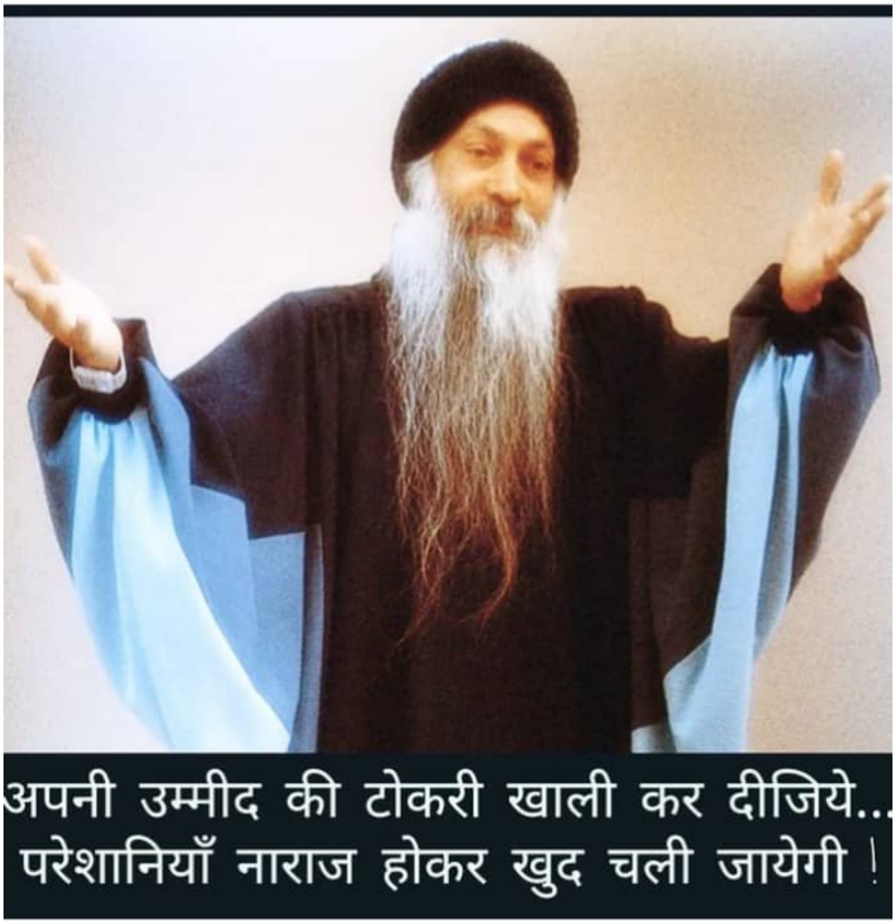

302 likes

0show0rld #osho
#oshoquotes... more

4 hours ago

Suggested for you

ek_akshar

Follow

CamScanner

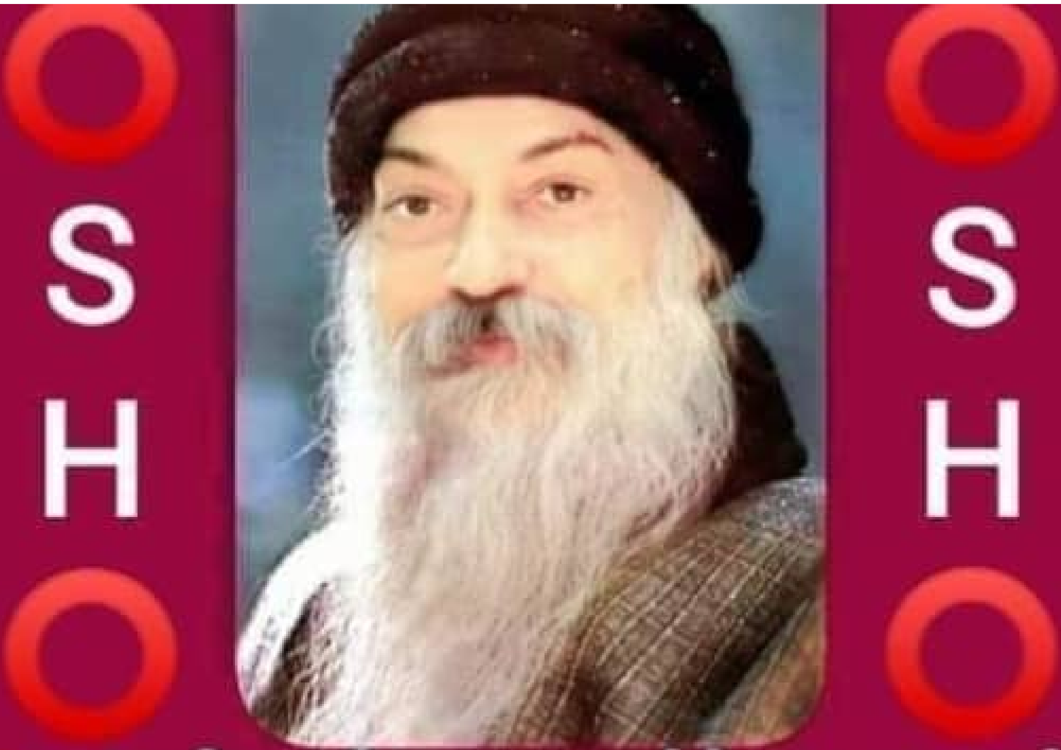

सांसारिक जीवन का अर्थ है, इस क्षण को अगले क्षण के लिए कुर्बान करो, फिर उसको और अगले के लिए कुर्बान करना। आज को कल के लिए निछावर करो, कल को फिर और परसों के लिए निछावर करना। सांसारिक जीवन एक सतत स्थगन, एक पोसपोनमेंट है।

संन्यास का जीवन, इस क्षण को पूरा जी लो परम अनुग्रह के भाव से। परमात्मा ने यह क्षण दिया, इसे पूरा पी लो।*

~ ओशो

CS CamScanner

5:37 pm 53 KB/s VoLTE 4G 80%

Munabai Makvana · 5h ·

जीवन में दुख का एक ही अर्थ है कि हम स्वभाव के अनुकूल नहीं हैं, प्रतिकूल हैं। दुख सूचक है कि हम स्वभाव से चूक रहे हैं; कहीं हम मार्ग से उतर गए हैं; कहीं पटरी से उतर गए हैं। जैसे ही स्वभाव के अनुकूल होंगे, वैसे आनंद, वैसे ही अमृत की वर्शा होने लगेगी। लेकिन मनुष्य के पंख पक्षियों जैसे पंख नहीं हैं कि प्रगट हों; अप्रगट हैं। देह के नहीं हैं, चैतन्य के हैं। और जिस आकाश की बात चल रही है, वह बाहर का आकाश नहीं, भीतर का आकाश है–अंतराकाश है। जैसा आकाश बाहर है, वैसा ही आकाश भीतर है–इससे भी विराट, इससे भी विस्तीर्ण, इससे भी अनंत-अनंत गुना बड़ा। बाहर के आकाश की तो शायद कोई सीमा भी हो। वैज्ञानिक अभी निश्चित नहीं हैं कि सीमा है या नहीं।

अलबर्ट आइंस्टीन का तो ख्याल था कि सीमा है; हम सीमा तक पहुंच नहीं पाए हैं, कभी न कभी पहुंच जाएंगे। क्योंकि विज्ञान की दृष्टि में, कोई भी वस्तु असीम कैसे हो सकती है? वस्तु है तो सीमा होगी ही। सीमा ही तो वस्तु को निर्मित करती है। नहीं तो वस्तु की परिभाशा क्या? अगर असीम हो तो न होने के बराबर हो जाएगी।

लेकिन बाहर के आकाश की बात वैज्ञानिकों पर छोड़ दो। उस गोरखधंधे में अध्यात्म के खोजी को पड़ने की जरूरत भी नहीं है। वह उसकी चिंता का विशय भी नहीं है, न वह उसकी जिज्ञासा है। न निर्णय हो जाए कि बाहर के आकाश की सीमा है या सीमा नहीं है, तो उसे कुछ मिलेगा। उस निष्पत्ति से कुछ सार नहीं है। लेकिन भीतर के आकाश की कोई सीमा नहीं है। यह तो निश्चित हो गया, क्योंकि जो भी भीतर गया है-किसी देश में, किसी काल में-उस सभी का निरपवाद रूप से एक ही अनुभव है, एक ही साक्षात्कार है कि भीतर का आकाश अनंत है। उस भीतर के आकाश में उड़ने की क्षमता लेकर आदमी पैदा होता है; और चलता है बाहर के आकाश में, इससे घसिटता है। क्षमता में और वास्तविकता में मेल नहीं हो पाता। यह जो तालमेल नहीं है, यही हमारा दुख है। यही पीड़ा है, यही संताप है। तालमेल हो जाए, दुख मिट जाए, संगीत का जन्म हो, छंद उपजे, रस बहे, फूल खिलें।

ऐसा ही समझो कि जैस गुलाब के पौधे में कोई जुही के फूल लगाने की

CamScanner

osho
update

इस जगत में पाप है ही नहीं -
बस परमात्मा है। यह धारणा छोडो।
इस जगत में एक ही है रूप समाया सब में -
वह परमात्मा है। क्षुद्र से क्षुद्र में वही है,
विराट से विराट में वही। निम्न में वही,
श्रेष्ठ में वही। कामवासना में भी वही है,
और समाधि में भी वही है।
यहाँ पाप कुछ है ही नहीं।
ओशो, अष्टावक्र महागीता -1

CS CamScanner

"ओशो से किसी ने पूछा"

आपने अपने काम की रफ्तार इतनी बढ़ा क्यों दी? आप जल्दी में क्यों है?

ओशो बोले-मैं जल्दी में हूँ क्योंकि समय बहुत तेज़ी से निकल रहा है और ज़िंदगी में बड़ा बदलाब तभी होता है जब हम काम को उसके 100 डिग्री तापमान पर करें।

यू आधा अधूरा और काम में बिना तेज़ी लाए कहीं नहीं पहुँचा जा सकता.!

CS CamScanner

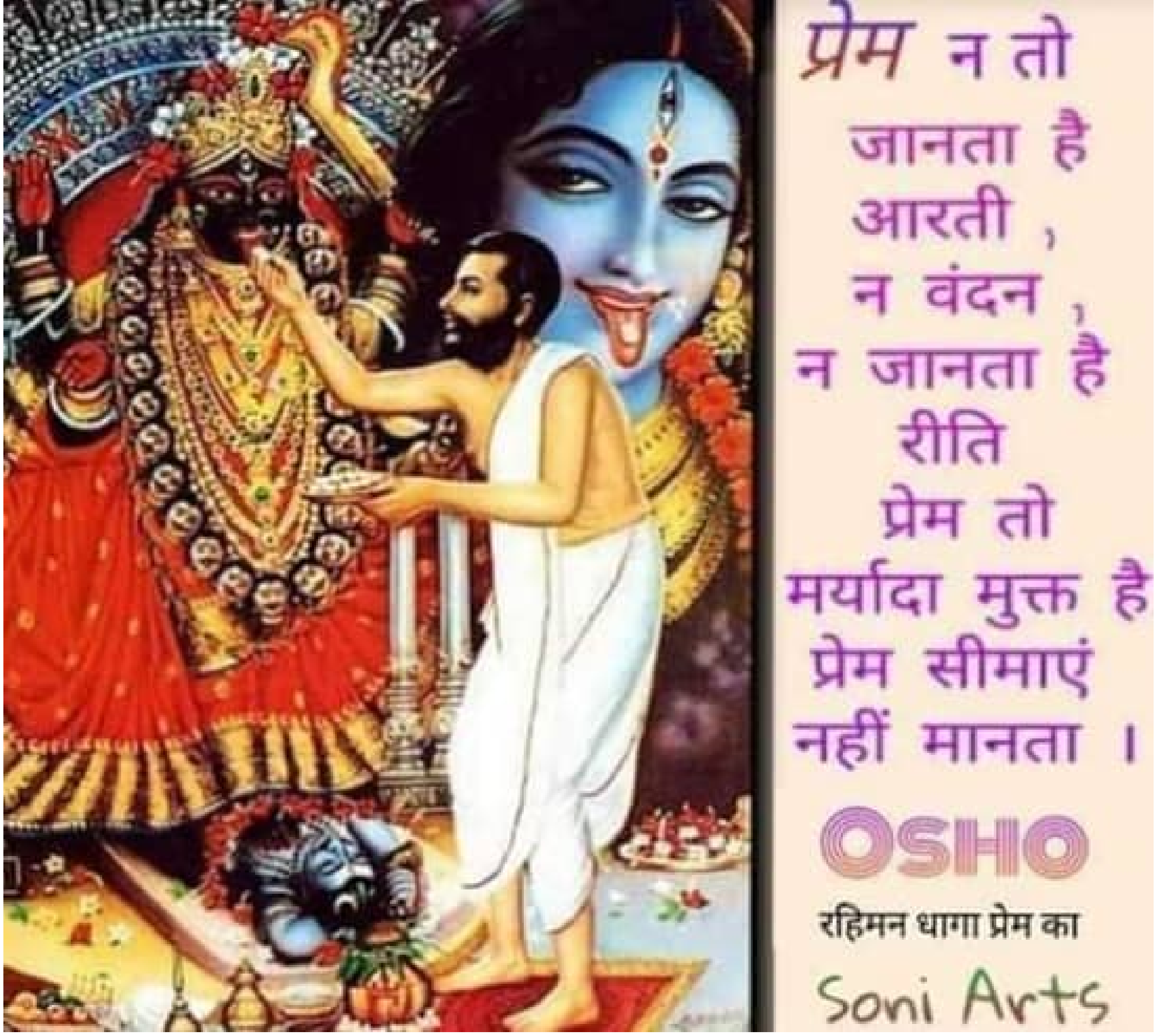
प्रेम न तो
जानता है
आरती ,
न वंदन ,
न जानता है
रीति
प्रेम तो
मर्यादा मुक्त है
प्रेम सीमाएं
नहीं मानता ।
OSHO
रहिमन धागा प्रेम का
Soni Arts

CamScanner

7:00 pm 0 KB/s VoLTE 4G 76%

कि भगवान को धोखा दे रहा हूं। जब उठता है भाव तो इकट्ठी कर लेता हूं। दोत्तीन सप्ताह की एक दिन में निपटा देता हूं। लेकिन बिना भाव के मैं पूजा न करूंगा।

और उन्होंने कहा, तुम्हारा कुछ विधि-विधान नहीं मालूम पड़ता। कहां से शुरू करते, कहां अंत करते।
रामकृष्ण ने कहा, वह जैसा करवाता है, वैसा हम करते हैं। हम अपना विधि-विधान उस पर थोपते नहीं। यह कोई क्रियाकांड नहीं है, पूजा है। यह प्रेम है। रोज जैसी भाव-दशा होती है, वैसा होता है। कभी पहले फूल चढ़ाते हैं, कभी पहले आरती करते हैं। कभी नाचते हैं, कभी शांत बैठते हैं। कभी घंटा बजाते हैं, कभी नहीं भी बजाते। जैसा आविर्भाव होता है भीतर, जैसा वह करवाता है, वैसा करते हैं। हम कोई करने वाले नहीं।

उन्होंने कहा, यह भी जाने दो। लेकिन यह तो बात गुनाह की है कि तुम पहले खुद चख लेते हो, फिर भगवान को भोग लगाते हो! कहीं दुनिया में ऐसा सुना नहीं। पहले भगवान को भोग लगाओ, फिर प्रसाद ग्रहण करो। तुम भोग खुद को लगाते हो, प्रसाद भगवान को देते हो।

रामकृष्ण ने कहा, यह तो मैं कभी न कर सकूंगा। जैसा मैं करता हूं, वैसा ही करूंगा। मेरी मां भी जब कुछ बनाती थी तो पहले खुद चख लेती थी, फिर मुझे देती थी। पता नहीं, देने योग्य है भी या नहीं। कभी मिठाई में शक्कर ज्यादा होती है, मुझे ही नहीं जंचती, तो मैं उसे नहीं लगाता। कभी शक्कर होती ही नहीं, मुझे ही नहीं जंचती, तो भगवान को कैसे प्रीतिकर लगेगी? जो मेरी मां न कर सकी मेरे लिए, वह मैं परमात्मा के लिए नहीं कर सकता हूं।

ऐसे प्रेम से जो भक्ति उठती है, वह तो रोज-रोज नई होगी। उसका कोई क्रियाकांड नहीं हो सकता। उसका कोई बंधा हुआ ढांचा नहीं हो सकता। प्रेम भी कहीं ढांचे में हुआ है? पूजा का भी कहीं कोई शास्त्र है? प्रार्थना की भी कोई विधि है? वह तो भाव का सहज आवेदन है। भाव की तरंग है।

सभी सयानें एक मत (दादू # 1)

CamScanner

7:51 pm 0 KB/s VoLTE 4G 75%

सोच–सोच परेशान थी कि रेशम का धागा पहुंच भी जाये समझो किसी तरह, तो रेशम के धागे से कोई भागा है? बहुत सोच–विचार में पड़ गई, कुछ उपाय न सूझा तो वह गांव में के बुद्धिमानों की खोज करने लगी। एक फकीर ने कहा कि इसमें कुछ खास मामला नहीं है। भृंग नाम का एक कीड़ा होता है, उसको तू पकड़ ला। उसकी मूंछ पर शहद लगा दे। और भृंग की पूंछ में पतला धागा बांध दे रेशम का। उसने कहा, फिर क्या होगा? उसने कहा, भृंग को मीनार पर छोड़ दे। अपनी मूंछ पर शहद की गंध पाकर वह आगे बढ़ता जायेगा। वह मिलनेवाली तो है नहीं गंध, वह मिलती रहेगी। शहद मिलेगा तो नहीं, उसकी मूंछ पर है। तो वह हटता जायेगा.. हटता जायेगा। और भृंग सीधा जाता है। वह रुकता नहीं जब तक वह खोज न ले, जहां से सुगंध आ रही है। जब तक वह खोज न ले, रुकता नहीं। तू फिक्र मत कर। वह ऊपर पहुंच जायेगा। और तेरे पति को पता है। जब एक दफा रेशम का पतला धागा पहुंच जाये तो फिर पतले धागे में थोड़ा मोटा धागा बांधना, फिर उसमें और थोड़ा मोटा बांधना। फिर पति तेरा खींचने लगेगा। फिर रस्सी बांध देना, फिर मोटे रस्से बांध देना, फिर रास्ता खुल गया। पत्नी को बात समझ में आ गई। यह गणित बहुत सीधा है। भृंग कीड़े को पकड़ लिया, उसकी मूंछ पर मधु लगा दिया, पूंछ में पतले से पतला धागा बांध दिया। क्योंकि इतने दूर तक भृंग को जाना है, इतना लंबा धागा खींचना है तो पतले से पतला धागा था। और भृंग चल पड़ा एकदम। उसको तो गंध मिलने लगी मधु की तो वह तो पागल होकर भागने लगा। वह रुका ही नहीं। वह ऊपर पहुंच गया। और जब पति ने देखा कि भृंग कीड़ा चढ़कर आ गया है ऊपर और उसकी मूंछों पर लगे हैं मधु के बिंदु, खुश हो गया। धागे को पकड़ लिया, बस। थोड़ी ही देर में धागे से मोटी रस्सी, मोटी से और मोटी रस्सी, और मोटी रस्सी, रस्सा. निकल भागा।

यही सूत्र है परमात्मा तक जाने का। तुम्हारे भीतर जो अभी छोटा –सा रेशम का धागा जैसा है, बड़ा महीन है, पकड़ में भी नहीं आता, वह जो तुम्हारे भीतर होश है, बस उस होश को पकड़ लो। वह जो तुम्हारे भीतर चैतन्य है उसको पकड़ लो। ध्यान कुछ और नहीं, इस होश के धागे को पकड़ लेने का नाम है। फिर इसको पकड़कर तुम चल पड़ो। जिस दशा से यह आ रहा है उसी दिशा में मुक्ति है। उसी दिशा में परमात्मा है।

CS CamScanner

9:52 pm 0 KB/s 63%

View all 194 comments

inspiring_voice1

849 likes

inspiring_voice1 BE Happy....

View 1 comment

Add a comment...

3 days ago

CamScanner

9:52 pm 205 KB/s 63%

Instagram

View 1 comment

Add a comment...

2 days ago

loving_osho

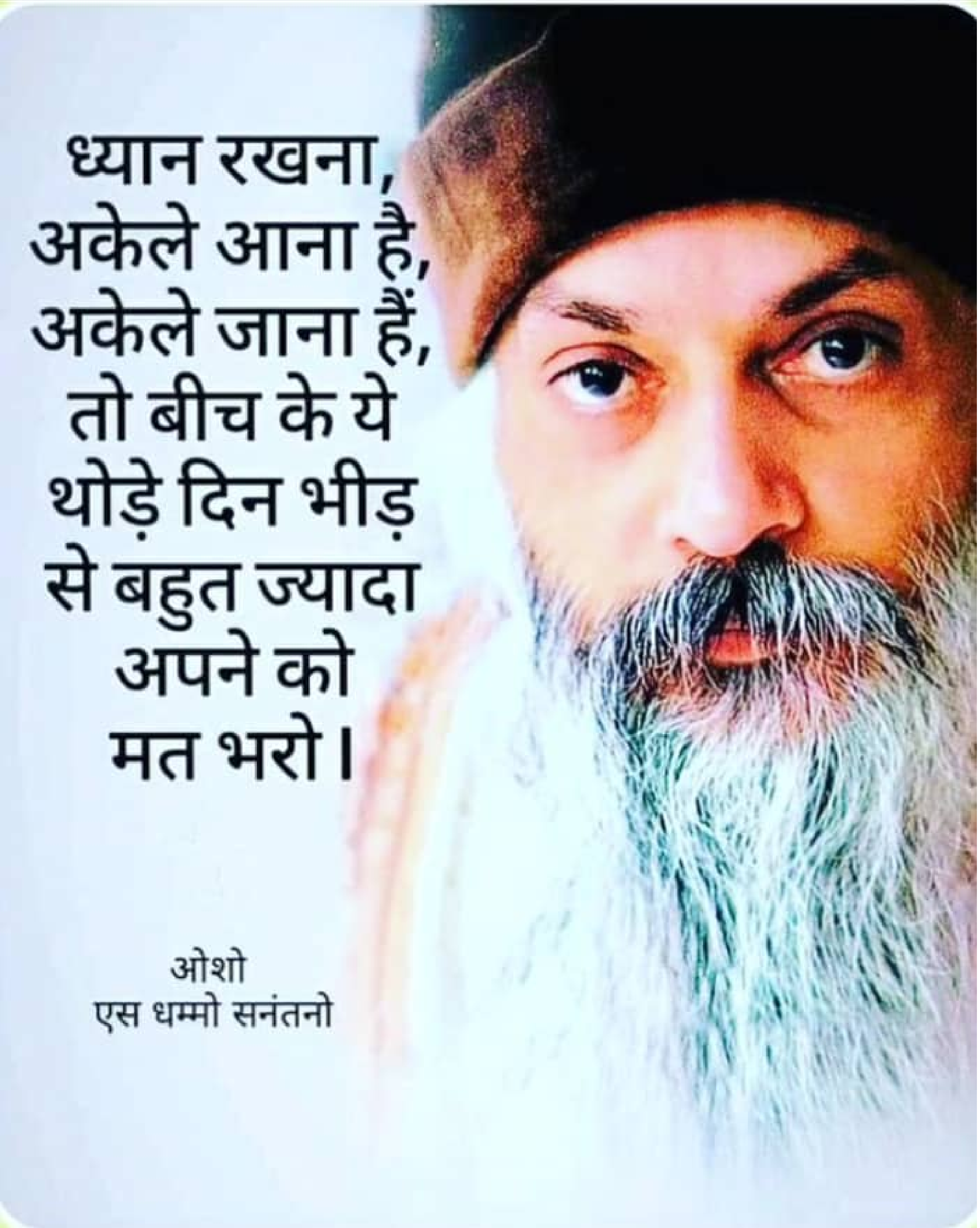

CamScanner

9:52 pm 0 KB/s 63%

35,262 likes

yogiadityanath.club नमः श्रीविश्वनाथाय देववन्द्यपदाय ते।
काशीशेशावतारो मे देवदेव ह्युपादिश।।... more

View all 115 comments

18 August • **See translation**

0show0rld

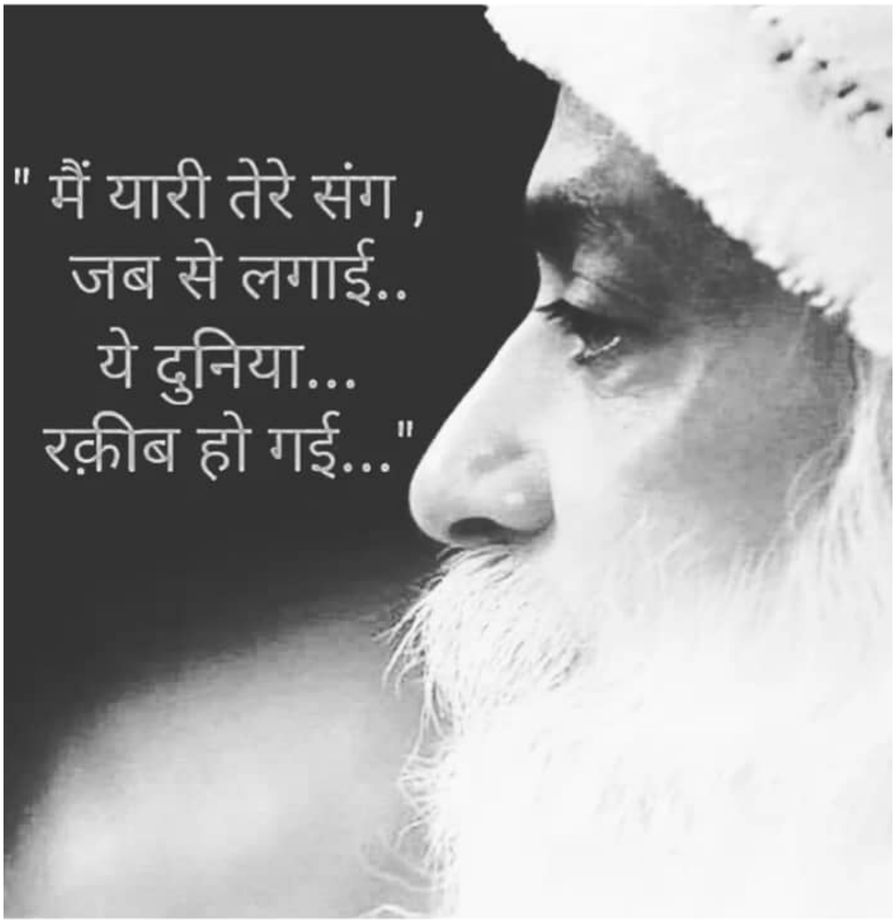

Liked by **osho________12** and **497 others**

0show0rld #0sho #awakening #oshöquotes #osh thought #osh international #osh quote #instagram #osh medit... more

View 1 comment

2 days ago

loving_osho

9:51 pm 208 KB/s 63%

724 likes

ssarita.siingh When u walk against the tide, u walk alone.

todaysuvichar_
Kala Bhairava • The Flute Of Srikrishna

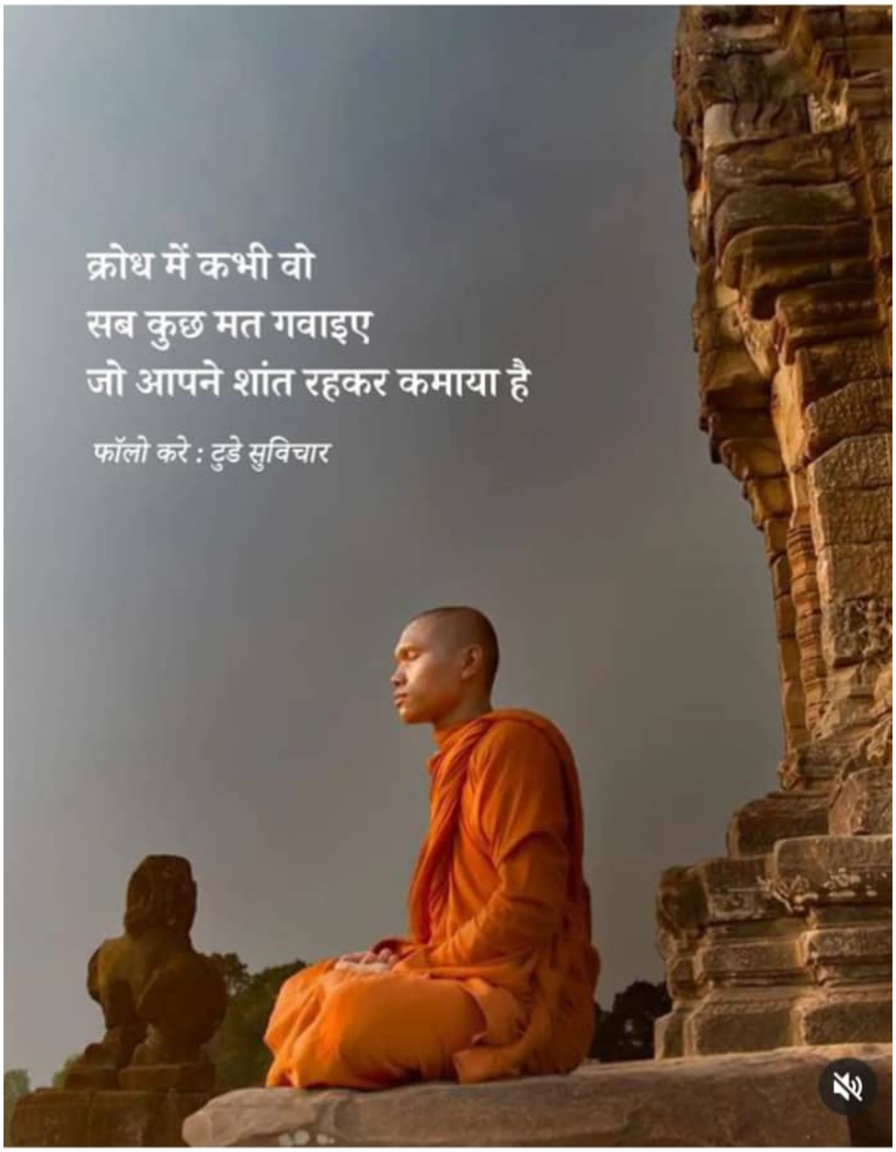

3,100 likes

todaysuvichar_ Today suvichar✨✨:—

View all 8 comments

Add a comment...

CamScanner

9:51 pm 0 KB/s 4G 63%

10,598 likes

ek_akshar Riwaaz 💔💯... more

View all 23 comments

Add a comment...

6 days ago

osho_dewane

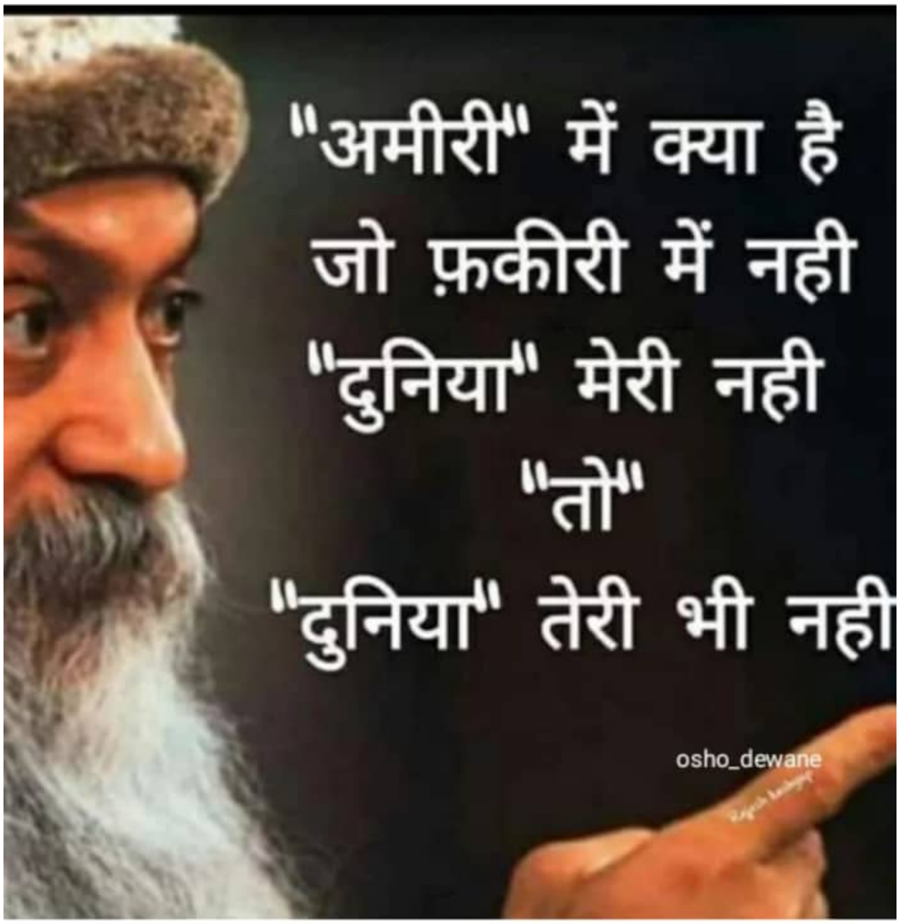

356 likes

View 1 comment

Add a comment...

1 day ago

ssarita.siingh
Sponsored

CamScanner

9:47 pm 0 KB/s ⏰ VoLTE 4G 64%

Like Comment Share

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]
स्वर्गवासी बाबाजी · 1d ·

एक योगी परमात्मा प्राप्ति हेतु अपने चित को एकाग्र करके ध्यान में बैठ जाता है, तब वह योगी स्वयं की देह को भी भूल जाता है। एक परिपूर्ण योगी अपने प्राणायाम एवं ज्ञानतंतुओ के नियमनों की सहायता से शीतलता एवं उष्णता पर विजय प्राप्त करता है। वह भस्त्रिका प्राणायाम द्वारा अपने शरीर को बिना कोई कष्ट के उष्ण बना सकता है। ऐसा योगी प्रकृति के अनुसार ढल जाता है अर्थात स्वयं को साध लेता है। यदि वह चाहे तो बर्फ पर बैठ कर अपनी योगशक्ति के प्रभाव से बर्फ को भी पिघला सकता है। बर्फ की पहाड़ियों में वह योगी ठंडे पानी से भीगी हुई चादरों को ओढ़ कर उसे तुरंत उष्ड भी कर सकता है। ऐसा योगी अपनी योगशक्ति इतनी तीव्र कर लेता है एवं उष्णता इतनी बढा लेता है कि उसके समक्ष परमात्मा की प्राप्ति हेतु बड़ी - बड़ी कठिन और विकट परिस्थितियां भी एक चींटी के समान हो जाती हैं। वह हर प्रकार के भौतिक सुखों से परे हो जाता है। उसे ना शक्ति की लालसा रहती है और ना ही सिद्धि की । ऐसा योगी ही अपने परमात्मा के तेज को प्राप्त करता है।

ऐसे योगी पुरुष के तेज से संसार का प्राणीजगत सदैव मोहित रहता है, उनके दर्शन मात्र से ही या इनके संपर्क में आने मात्र से ही बिगड़े काम बनने लगते है, एवं जीवन धन्य हो जाता है।

हिमालय की गोद में स्थित योगी।

CamScanner

बच्चों की तरह खेलो। कभी-कभी
भूल ही जाओ अपना नाम,
अपनी ख्याति, अपनी डिग्री।
यह सब भूल जाओ। बच्चों जैसे
हो जाओ। अपने भीतर के बच्चे
को बाहर लाओ। गंभीर मत रहो।
कभी-कभी जीवन को बस एक
मौज की तरह लो,और तुम हलके
हो जाओगे। इतने हलके की
आकाश में उड़ सको।

#ओशो

CamScanner

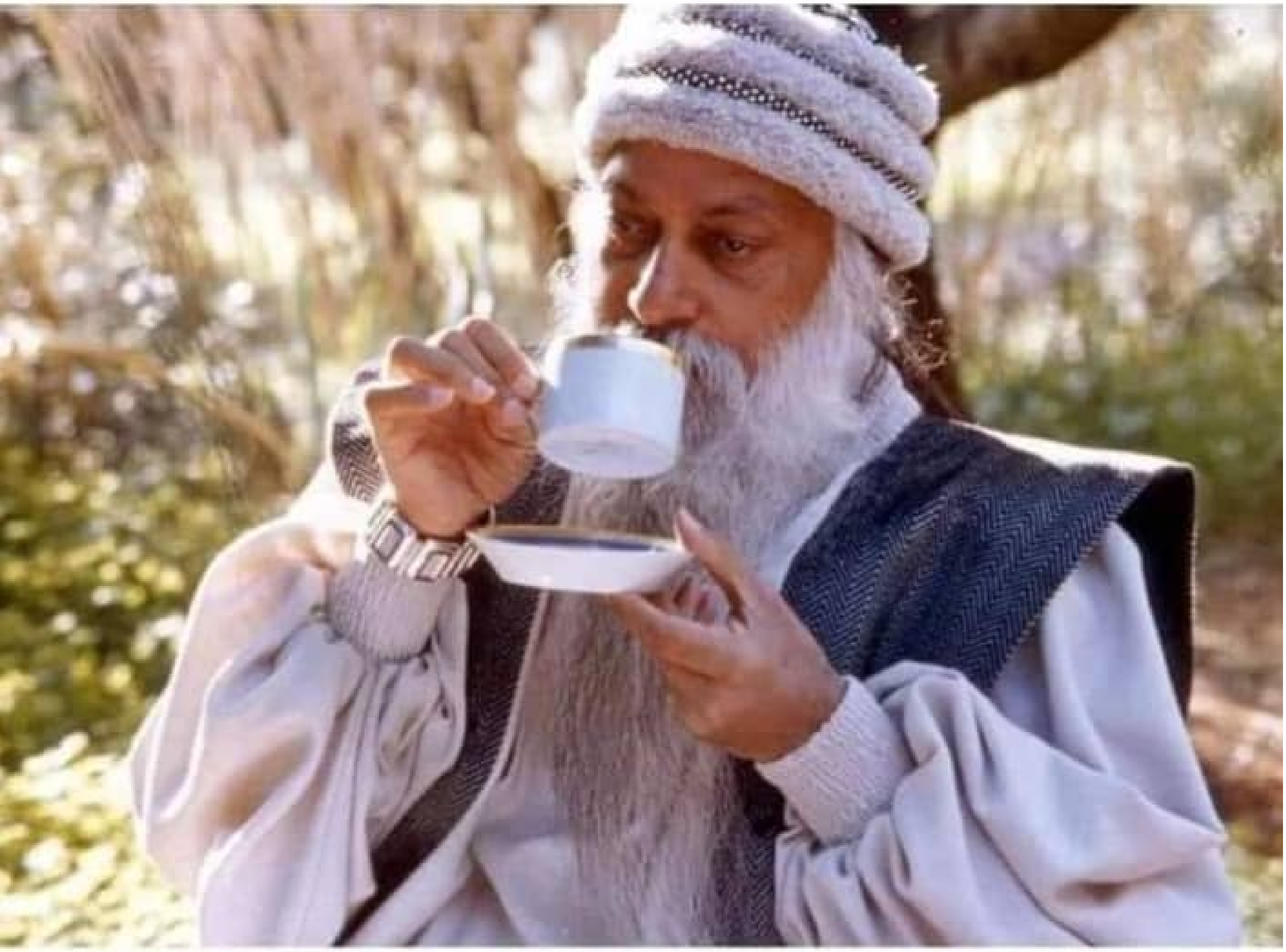

सारी शिक्षा व्यर्थ है, सारे उपदेश व्यर्थ है,

OSHO DHYAN UPVAN HISAR ⓕ@LaughWithUniverse

अगर वे तुम्हें अपने भीतर डूबने की कला नहीं सीखाते।

ओशो

CamScanner

9:40 pm 0 KB/s VoLTE 4G 65%
Like Comment Share

OSHO FRAGRANCE FRIENDS
Ramesh D. Chawda · 22h

🍒

ओशो प्रवचनो से संकलित हिंदी बोध कथा 873

रूमी ने एक गीत में कहा है:
प्रेयसी के द्वार पर किसी ने दस्तक दी।
भीतर से आवाज आई, 'कौन है?'
जो द्वार के बाहर खड़ा था उसने कहा, 'मैं हूं।'
प्रत्युत्तर में उसे सुनाई पड़ा, 'यह घर मैं और तू, दो को नहीं संभाल सकता।'
और बंद-द्वार बंद ही रहा।
प्रेमी तब जंगल चला गया।
वहां उसने तप किया, उपवास किये, प्रार्थनायें कीं।
बहुत दिनों के बाद वह लौटा, और दुबारा उसने वे ही द्वार खटखटाये।
और फिर वही प्रश्न की : 'बाहर कौन है?'
पर इस बार द्वार खुल गये। क्योंकि उसका उत्तर दूसरा था। उसने कहा था, 'तू ही तू है।'

ओशो
H.B.K.873

🍒🍒🍒

5 3 comments
Like Comment Send

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]
Swami Swami · 10h

CamScanner

अगर तुम अपेक्षा ही छोड़ दो,
तो तुम्हें क्या कोई दुख दे सकेगा?
इसे बहुत सोचना। इस पर मनन करना, ध्यान करना।
अगर तुम अपेक्षा छोड़ दो, कोई मांग न रहे–क्योंकि
तुम जाग गए कि मिलना किसी से कुछ भी नहीं है-
तो तुम अचानक पाओगे तुम्हारे जीवन से
दुख विसर्जित हो गया।अब कोई दुख नहीं देता।
सुख न मांगो तो कोई दुख नहीं देता।
तब तो बड़ी अभूतपूर्व घटना घटती है।
तुम सुख नहीं मांगते, कोई दुख नहीं देता।
न बाहर से सुख आता है,न दुख आता है।
पहली बार तुम अपने में रमना शुरू होते हो।
क्योंकि अब बाहर नजर रखने की
कोई जरूरत ही न रही।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-13)
अंतर्बाती को उकसाना ही ध्यान

CamScanner

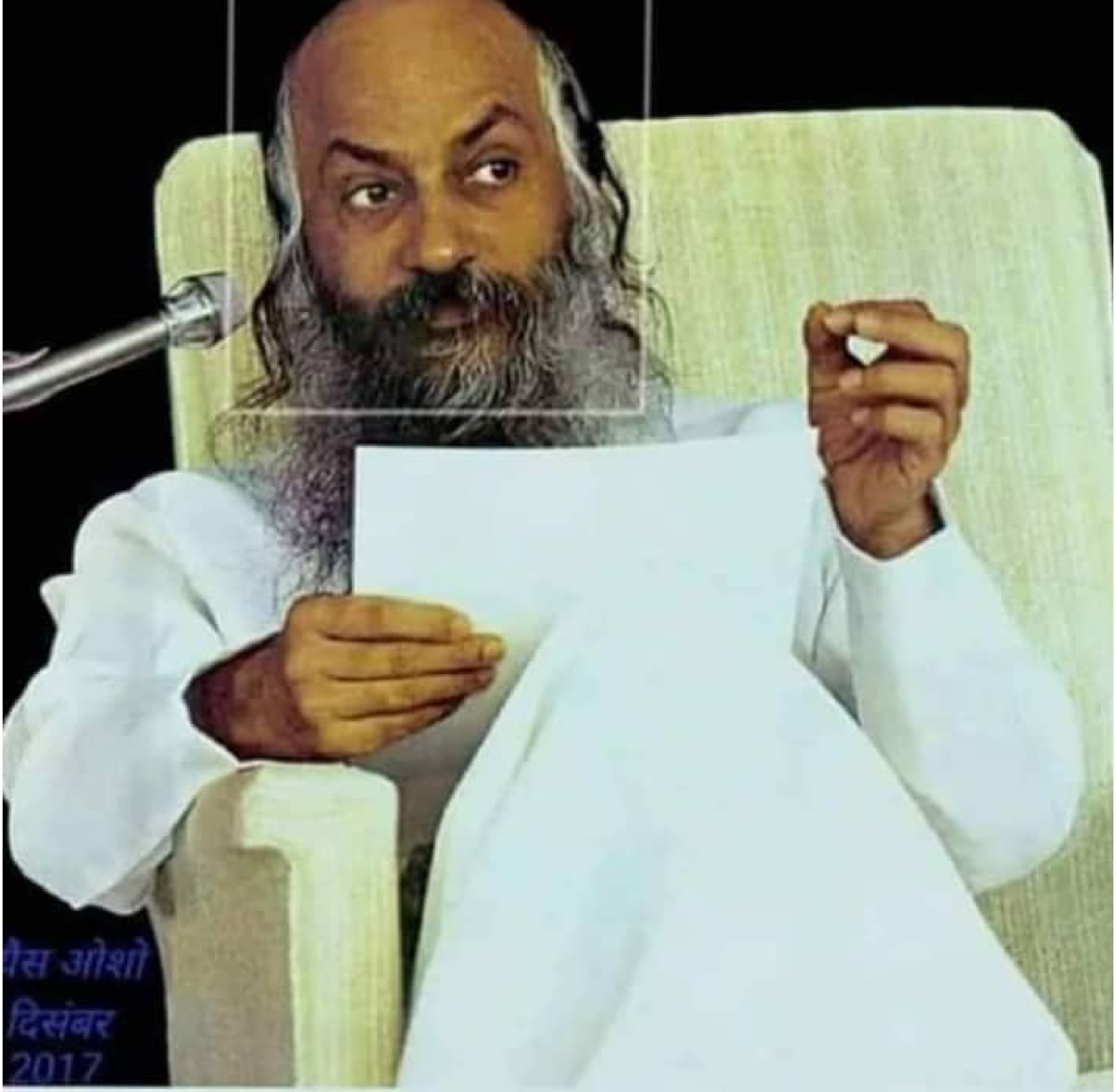

जो व्यक्ति चिंता की आखिरी घड़ियों से गुजर जाता है, अशांति के गहरे से गहरे पर्दों को पार कर जाता है, संताप की गहरी से गहरी वृष्टि को झेल लेता है, अंधेरे के गहन से गहन पर्दों में कूद जाता है, उसकी जिंदगी में प्रकाश का उदय सुनिश्चित है। ओशो

CamScanner

9:30 pm 0 KB/s VoLTE 4G 66%

10 3 comments • 1 share

Like Comment

Write a comment...

Awākēn
3h ·

मौन स्वयं से खाली होने की प्रक्रिया है। समुद्र का सतह जितना गहरा होता है उतना ही शांत होता है।

CamScanner

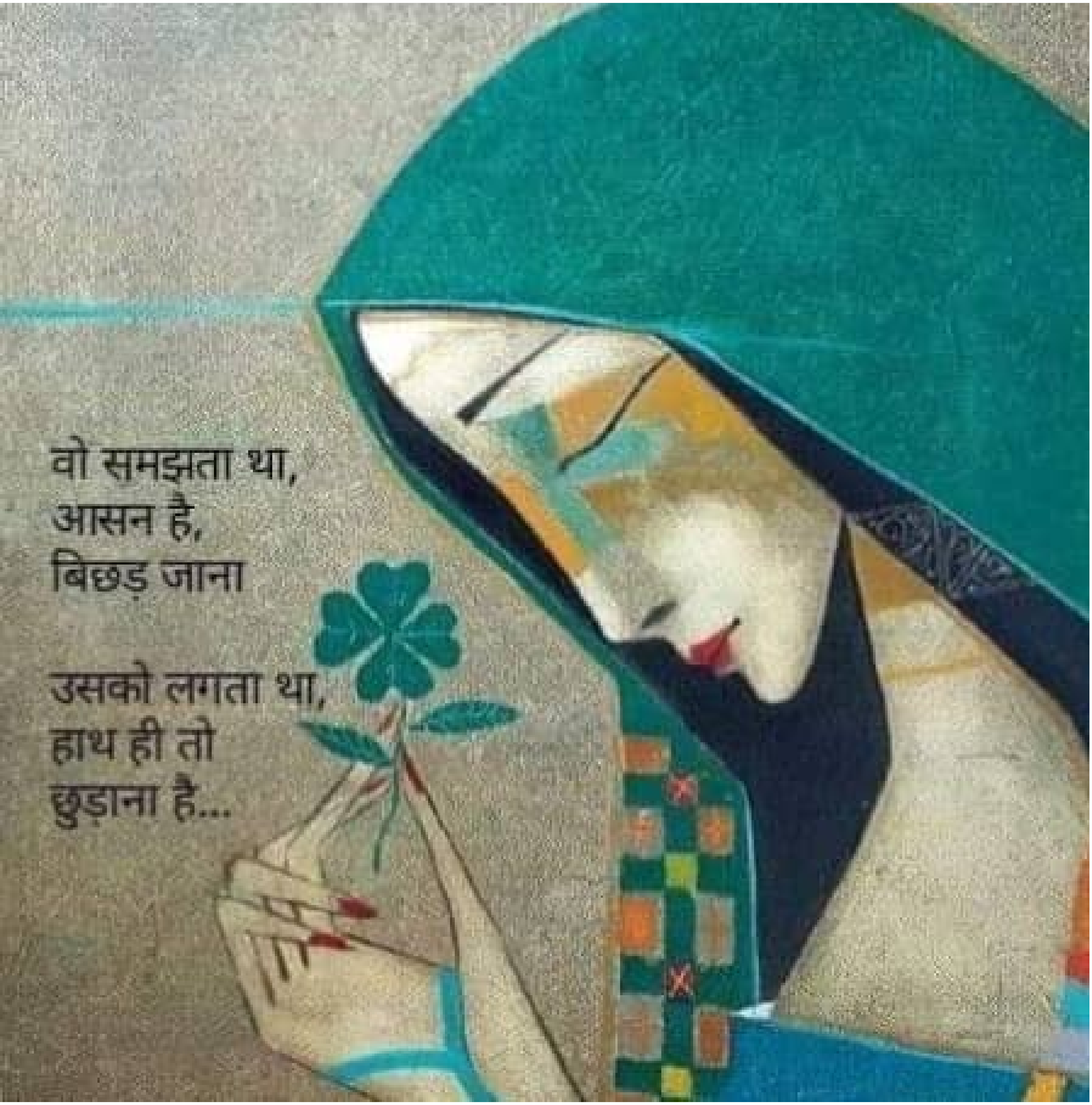

CamScanner

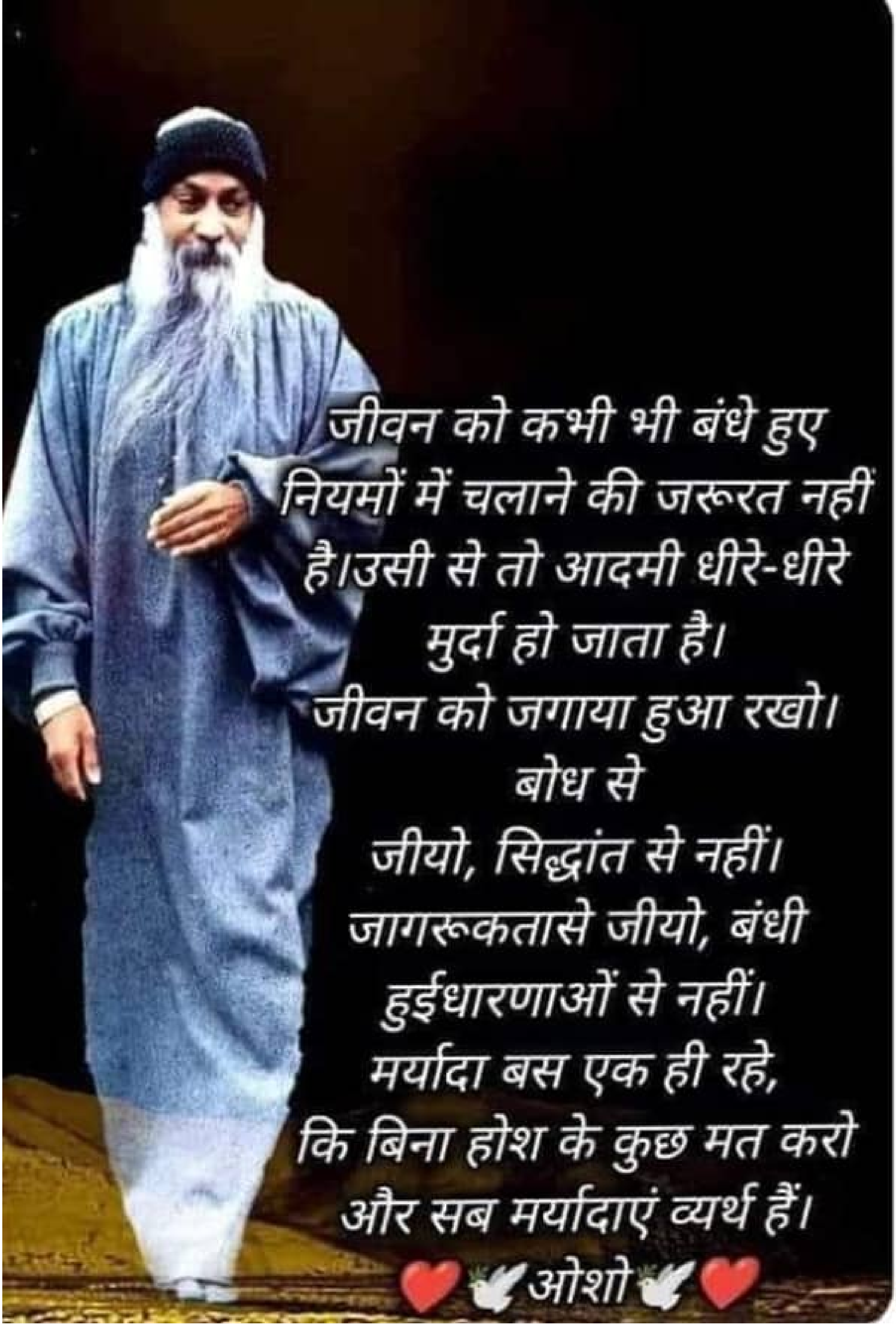
जीवन को कभी भी बंधे हुए
नियमों में चलाने की जरूरत नहीं
है।उसी से तो आदमी धीरे-धीरे
मुर्दा हो जाता है।
जीवन को जगाया हुआ रखो।
बोध से
जीयो, सिद्धांत से नहीं।
जागरूकतासे जीयो, बंधी
हुईधारणाओं से नहीं।
मर्यादा बस एक ही रहे,
कि बिना होश के कुछ मत करो
और सब मर्यादाएं व्यर्थ हैं।
ओशो

CamScanner

अस्तित्व से
संबंध जोड़ो।
मंदिरों से,
मस्जिदों से संबंध तोड़ो।
वृक्षो से,
फूलों से,
चांद-तारों से
संबंध जोड़ो।
क्योंकि वे
जीवंत परमात्मा है।
तुम मुर्दा मूर्तियों की
पूजा में संलग्न हो।

ओशो

अभी झरत, बिगसत कंवल

CS CamScanner

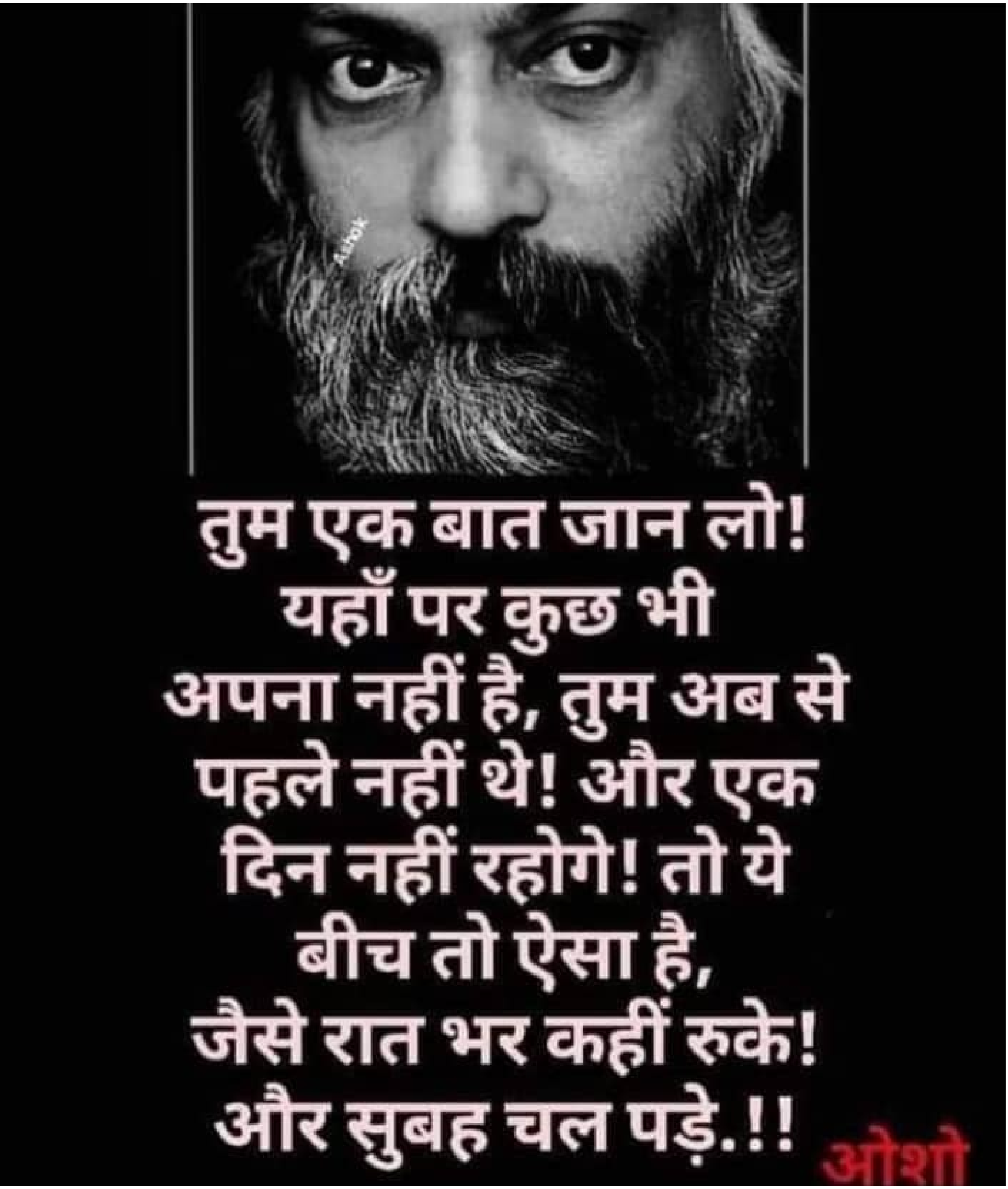

CS CamScanner

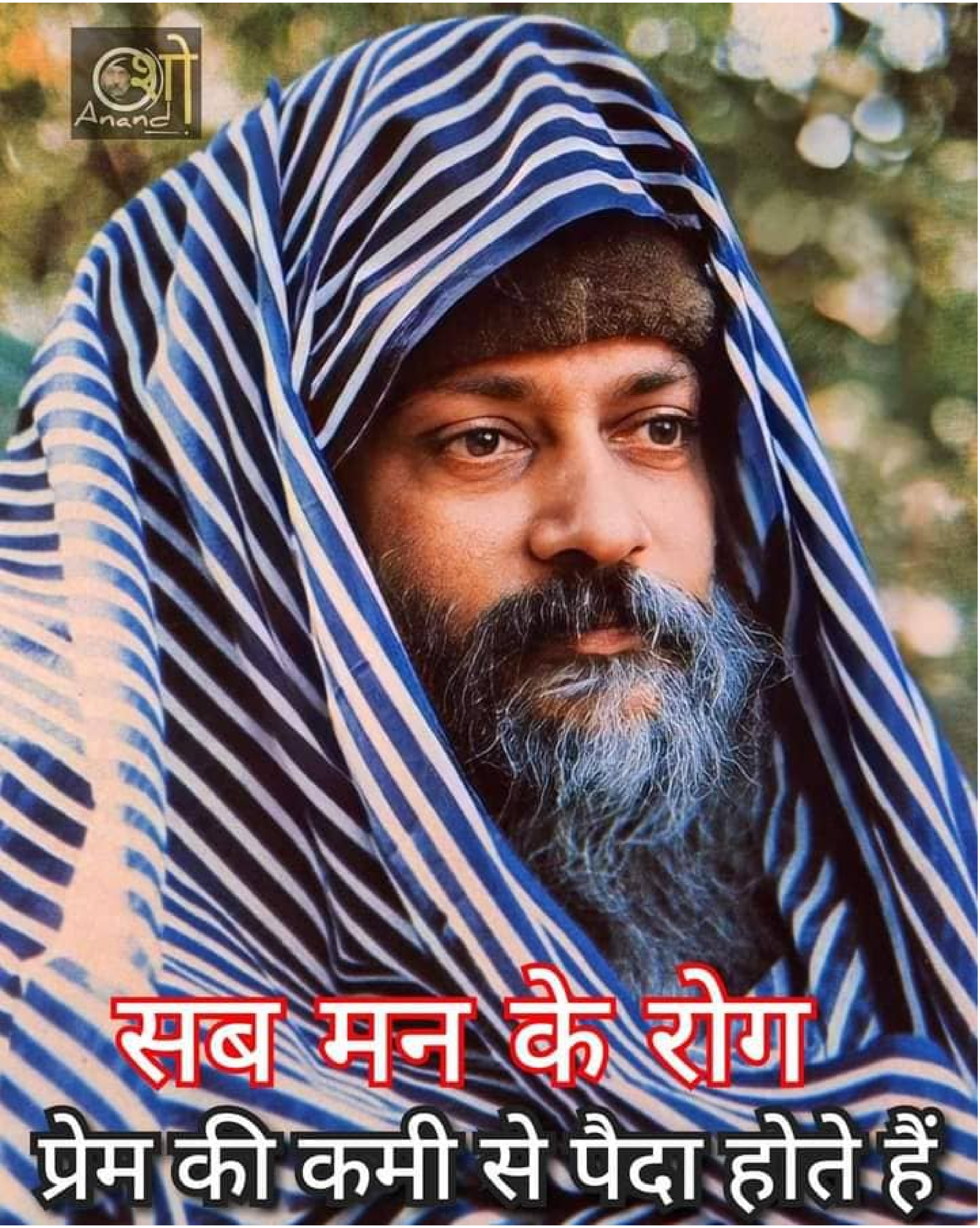

CS CamScanner

9:06 pm 0 KB/s VoLTE 4G 71%

4.2K 54 comments • 226 shares

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Raj Gupt · 1h ·

कोई एक करोड से भी ज्यादा साधु-संत है भारत में! इनमें से कितने बुद्धत्व को उपलब्ध हुए हैं? यह एक भीड़ है! भिखारियों की, चालबाजों की, बेईमानों की, पाखंडियों की, धोखेबाजों की; यह भीड़ है, जो तुम्हें सदियों-सदियों से चूस रही है। इस भीड़ में किसके भीतर का दीया जला है? इस भीड़ में किसको परमात्मा के दर्शन हुए हैं? यह भीड़ उधार की बातों को, सदियों पहले लिखे गये शास्त्रों को, तोते की तरह दोहराए चली जा रही है। लेकिन इन अंधों की बातें तुम्हें जंचती हैं, क्योंकि तुम भी अंधे हो! ये अंधे तुम्हारी ही भाषा में बोलते हैं; इसलिए बातें जंचती हैं, समझ में आती हैं।

बुद्धों के वचन तुम्हारी पकड़ के बाहर हो जाते हैं, क्योंकि बुद्धों के वचन समझने के पहले तुम्हें किसी क्रांति से गुजरना पडेगा! बुद्धों के वचन समझने के पहले तुम्हें अपनी प्रतिभा पर धार लानी होगी! तुम्हें अपने भीतर ध्यान का दीया जलाना होगा। तुम्हारे भीतर भी कुछ बुद्धत्व की लहर उठे तो तुम्हारा बुद्धों से नाता बने; नहीं तो तुम बुद्धुओं के चक्कर में ही पड़े रहोगे।

OSHO

CamScanner

9:03 pm 0 KB/s VoLTE 4G 71%

1

कबीर का बेटा था : कमाल। कबीर ने उसे नाम ही 'कमाल' दिया— इसीलिये कि कबीर से भी एक कदम आगे छलांग ली उसने।

कबीर ने कहा :-

चलती चक्की देख कर, दिया कबीरा रोए।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोए।।

अर्थ - चलती चाकी देखकर (लोगो की जिंदगी चलती देखकर), कबीर साहब को रोना आता है। क्यों की इस चलने वाली जिंदगी में सब को एक दिन छोड़कर जाना है। जिंदगी और मौत ये दो पाटो(चक्की के दो पत्थर) के बीच में सभी पीस पीसकर एक दिन ख़त्म होना है। कुछ लोग इस सच्चाई को जानते हुये भी अनजान बनते है।

कमाल ने कहा :-

चाकी चाकी सब कहे, कीली कहे ना कोय !
जो कीली से लाग रहे वाको बाल ना बांका होय !!

चाकी की तो सब बात करते है, लेकीन जो चाकी को घुमाने वाली किली (जो दोनों पाटो के बिच में लगी होती है), उसकी कोई बात नहीं करता। इसी किली पर दोनों चाक आपस में जुड़ कर अनाज पीसते है !
जैसे अनाज का कोई दाना कीली से लगे रह जाने के कारण पीसे जाने से बचा रह जाता है ! वैसे परमात्मा रूपी किली से जुड़े रहने पर भी इस जन्म मृत्यु के झंझट से बचा सकता है ! आत्मा के बार बार के आवागमन से बचा सकता है !!

CamScanner

8:34 pm 3 KB/s VoLTE 4G 72%

Instagram

buddha_knowledge_ @buddha_knowledge_... more

View all 6 comments

3 hours ago

osho_the_great_master

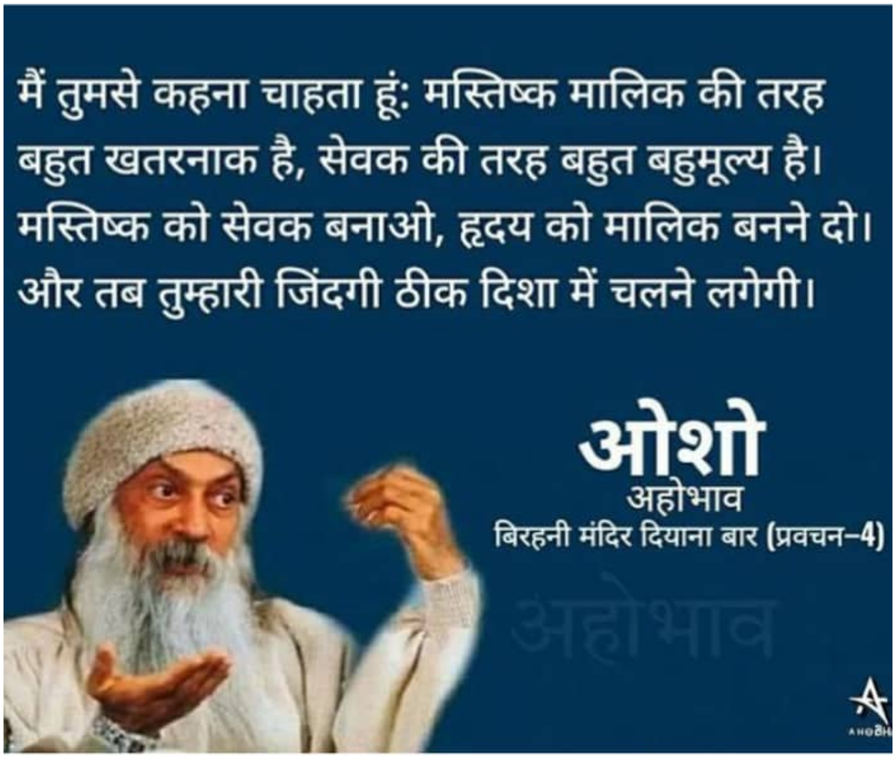

330 likes

View 1 comment

Add a comment...

2 days ago

ddeco.interior

Sponsored

CamScanner

8:31 pm 0 KB/s VoLTE 4G 72%

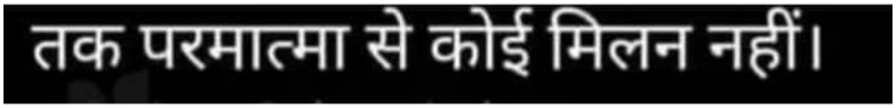

9 likes

Add a comment...

2 days ago

shar.ma2026

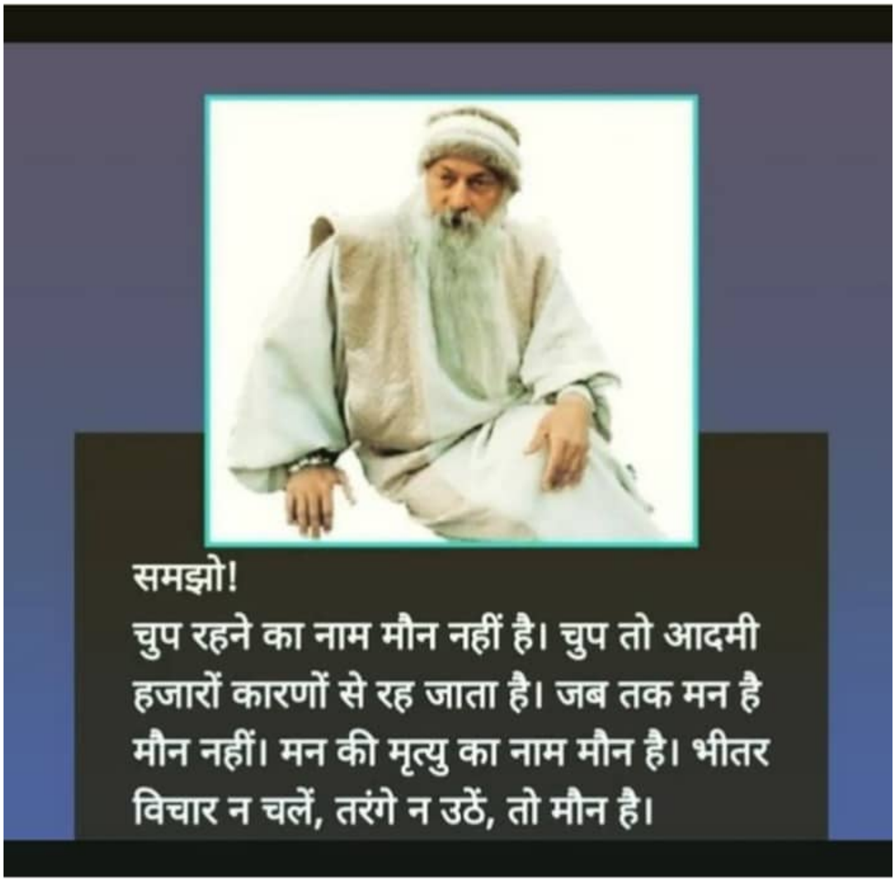

215 likes

shar.ma2026 OSHO..

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

8:30 pm 0 KB/s VoLTE 4G 72%

Instagram

View all 69 comments

shar.ma2026

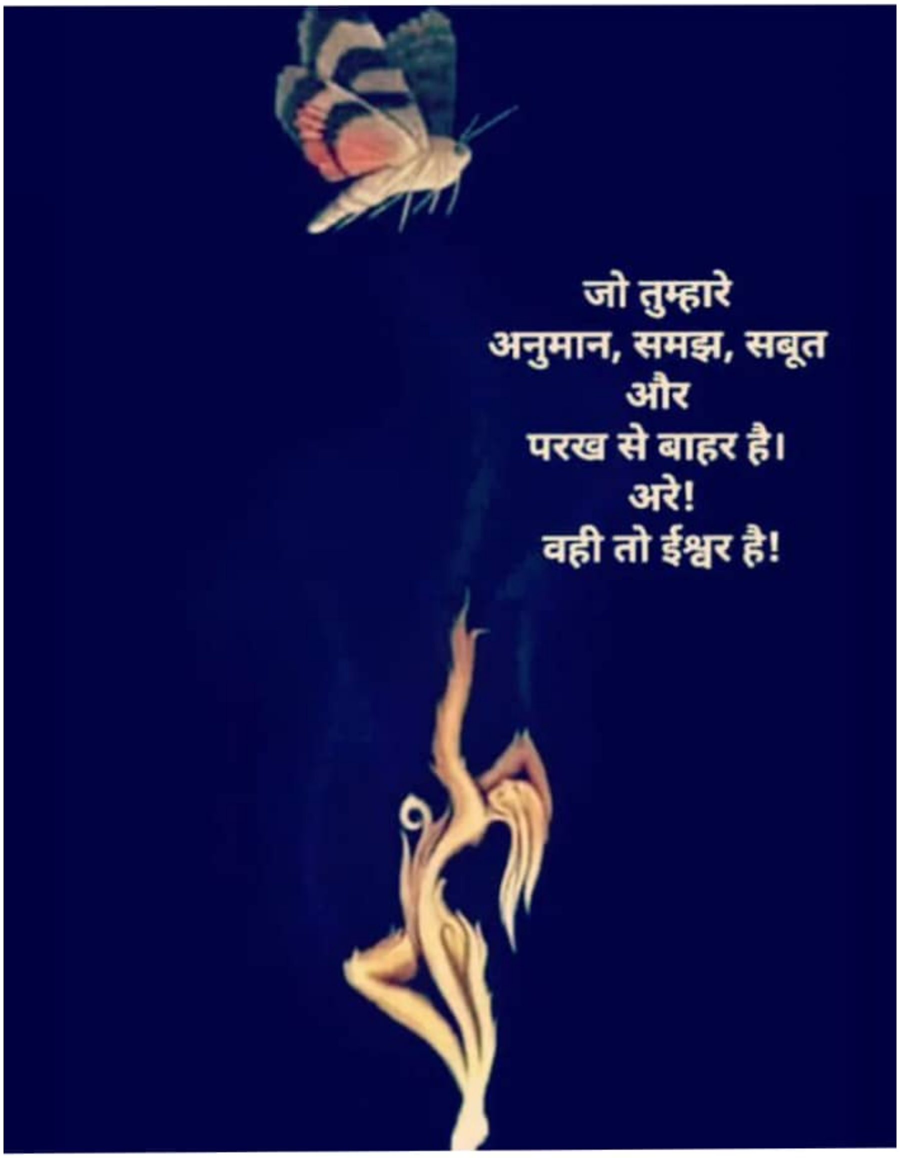

Liked by **osho_the_great_master** and **77 others**

Add a comment...

16 hours ago

CamScanner

8:29 pm 3 KB/s 73%

Liked by **madanjadhav95** and **1,548 others**

osho_excellent_guru Osho's Great quotes 💯💯... more

View all 5 comments

11 hours ago

osho_divine_eyesight
Ichill Music Factory • Natural Beauty

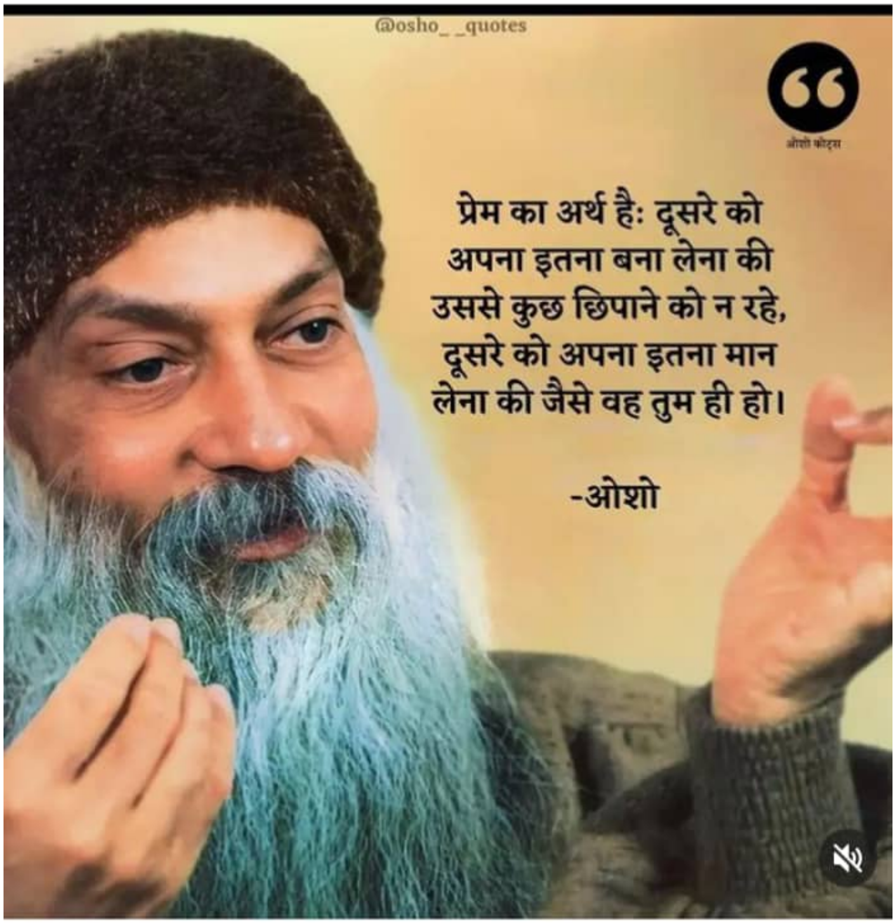

574 likes

osho_divine_eyesight ओशो❤️... more

View 1 comment

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

8:29 pm 7 KB/s VoLTE 4G 73%

665 views

navita_sumra माँ ❤️

See translation

todaysuvichar_

DJ Saquib • Kahani Suno (Piano)

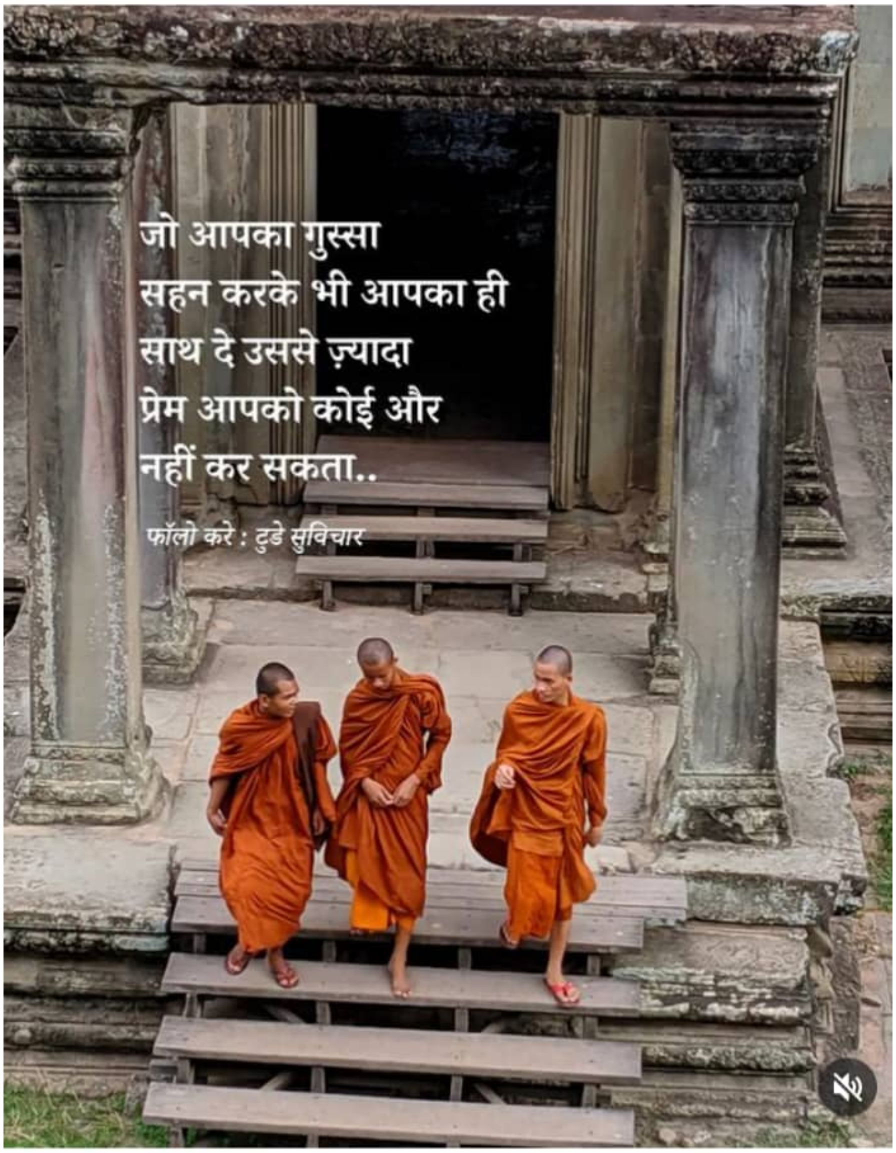

3,759 likes

todaysuvichar_ Follow for more 🙏🙏🙏

View all 12 comments

Add a comment...

CamScanner

8:27 pm 73%

sangeethasr Wait for the surprise 😍 Mashing up Hindi with Kannada ❤️ Do follow me for more music 🎶... more

View all 110 comments

inspiring_voice1
Suvo • Pata Nahi Kis Roop Me Aakar Narayan Mil Jaye...

128 likes

inspiring_voice1 Be happy Even If you have little...

Add a comment...

5 hours ago

Suggested for you

CamScanner

8:27 pm 4 KB/s VoLTE 4G 73%

Instagram

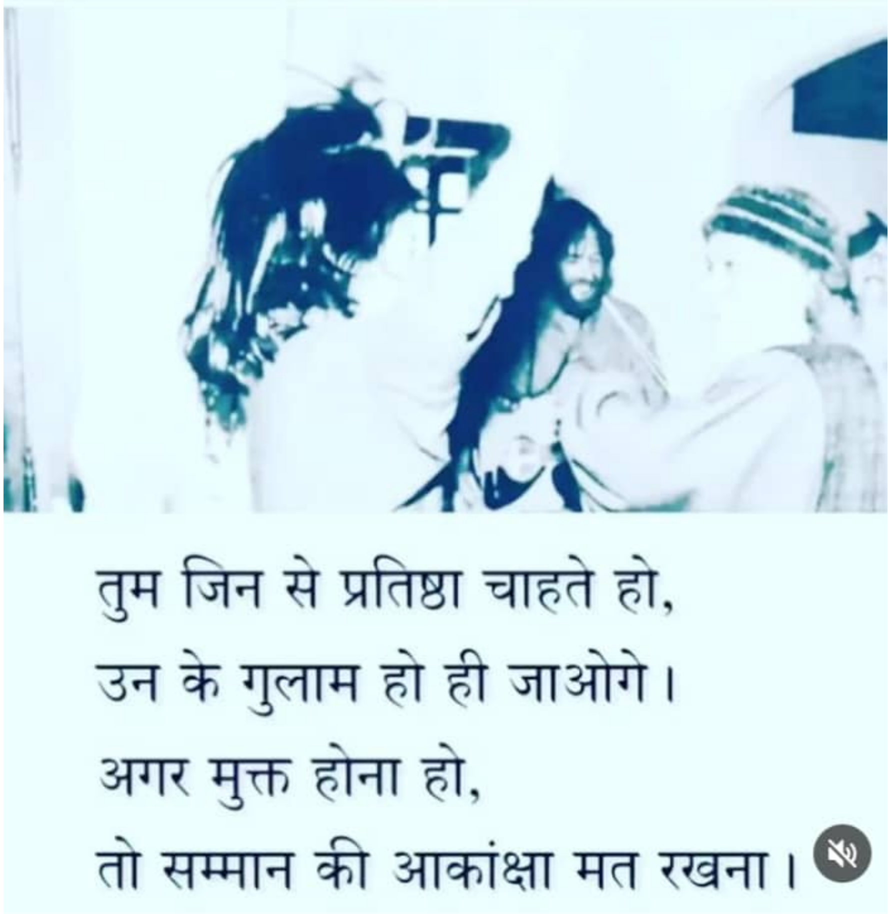

Liked by **osho________12** and **21 others**

oshoalbela अपेक्षा मतलब दुख,

View 1 comment

Add a comment...

26 August • **See translation**

Recent stories ▶ **Watch all**

CamScanner

8:26 pm 0 KB/s 4G 73%

Suggested for you

ek_akshar
Maati Baani • Karpur Gauram

Follow

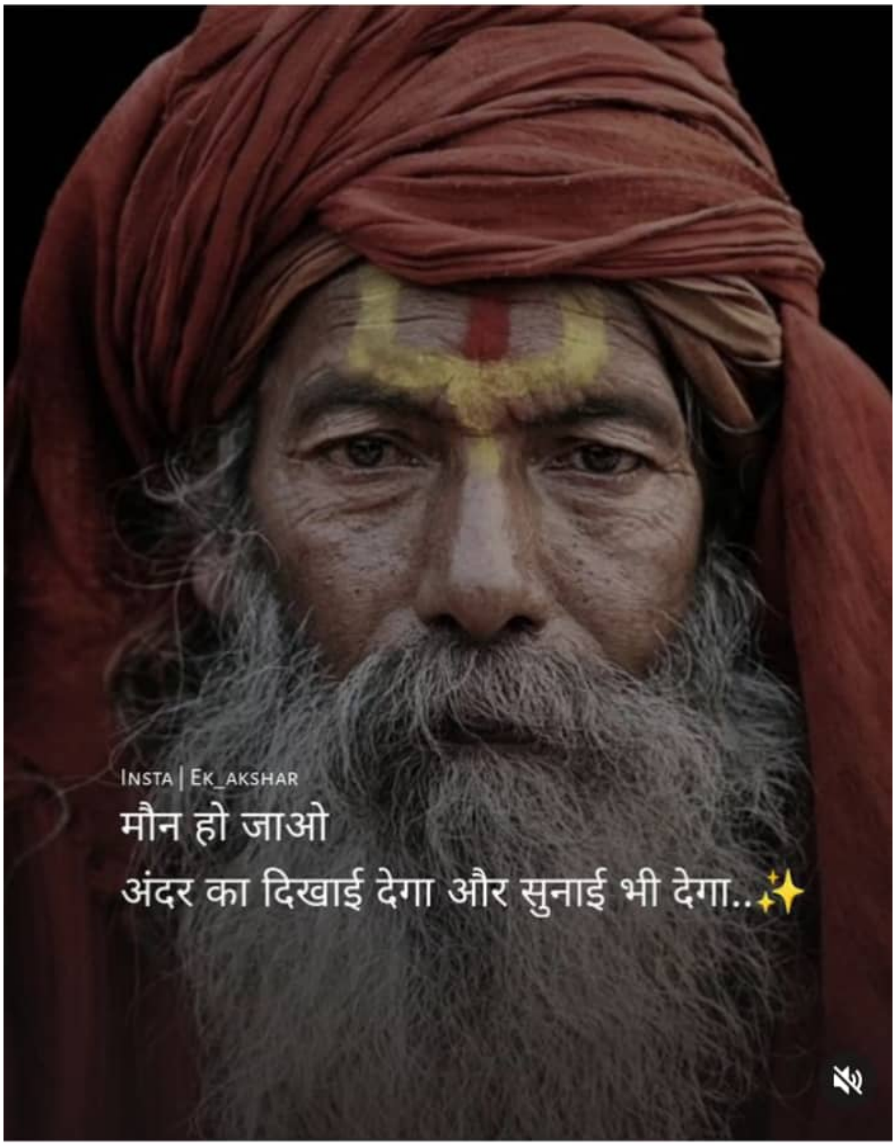

Liked by **osho5164** and **67,859 others**

ek_akshar Maun ✨💯... more

View all 49 comments

Add a comment...

CamScanner

8:25 pm 0 KB/s VoLTE 4G 73%

Liked by osho_____12 and 793 others

View all 6 comments

rchu786 Tatwamasi ❤️🔥

osho_dewane @rchu786 bda pyara sabad

Add a comment...

3 days ago

osho_speech

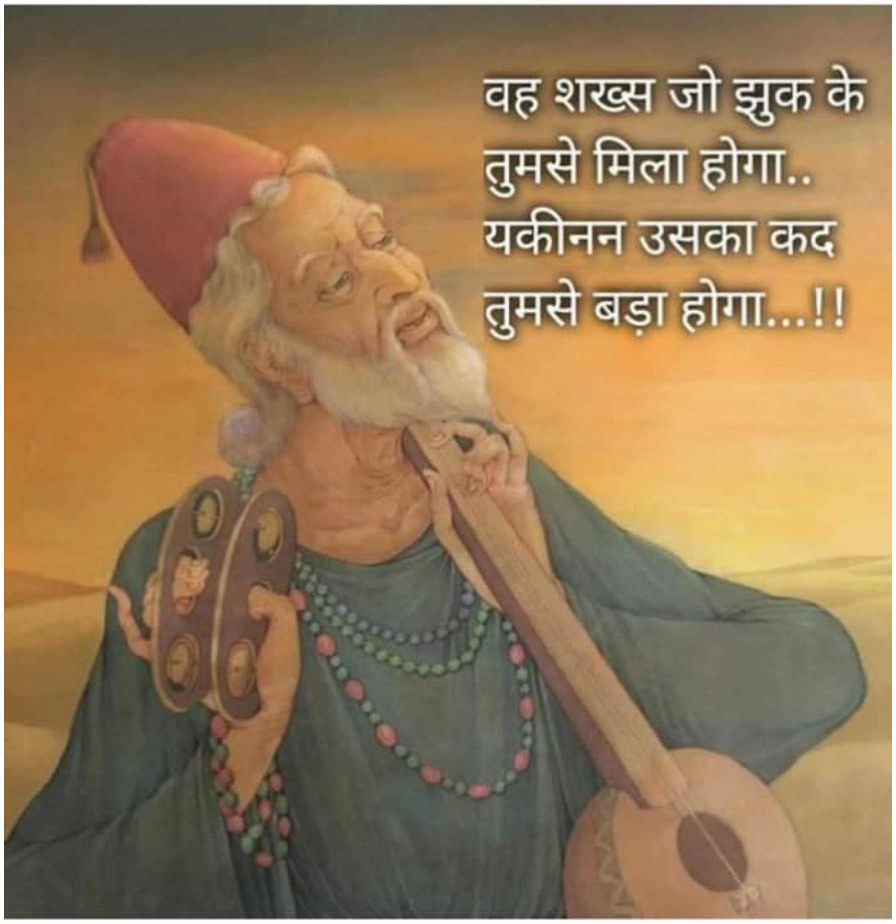

Liked by 5sec.motivation and 1,830 others

osho_speech #osho_speech

View all 6 comments

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

8:24 pm
73%
Instagram
Your story
dance_with_my...
banaras__official
doctorsneha_
Banaras Official
oshoalbela
PARTHOMATIC • Sansar (osho)
ओSHO
वहीं व्यक्ति सच्चा हों सकता हैं
जिसने इसकी चिन्ता छोड़ दी की दुसरे क्या
सोचते हैं मगर उस आदमी को हम पागल
कहते हैं जो इसकी चिन्ता छोड़ देता हैं
कि दुसरे क्या कहते हैं।
13 likes
oshoalbela जब तक आप दूसरे लोगों के प्रतिक्रिया से,दूसरे लोगों के प्रमाण से,दूसरे लोगों के अच्छा कहने से दूसरे लोगों के बुरा कहने से प्रभावित हो... more
View 1 comment
Add a comment...
3 days ago
Suggested for you
See all

CamScanner

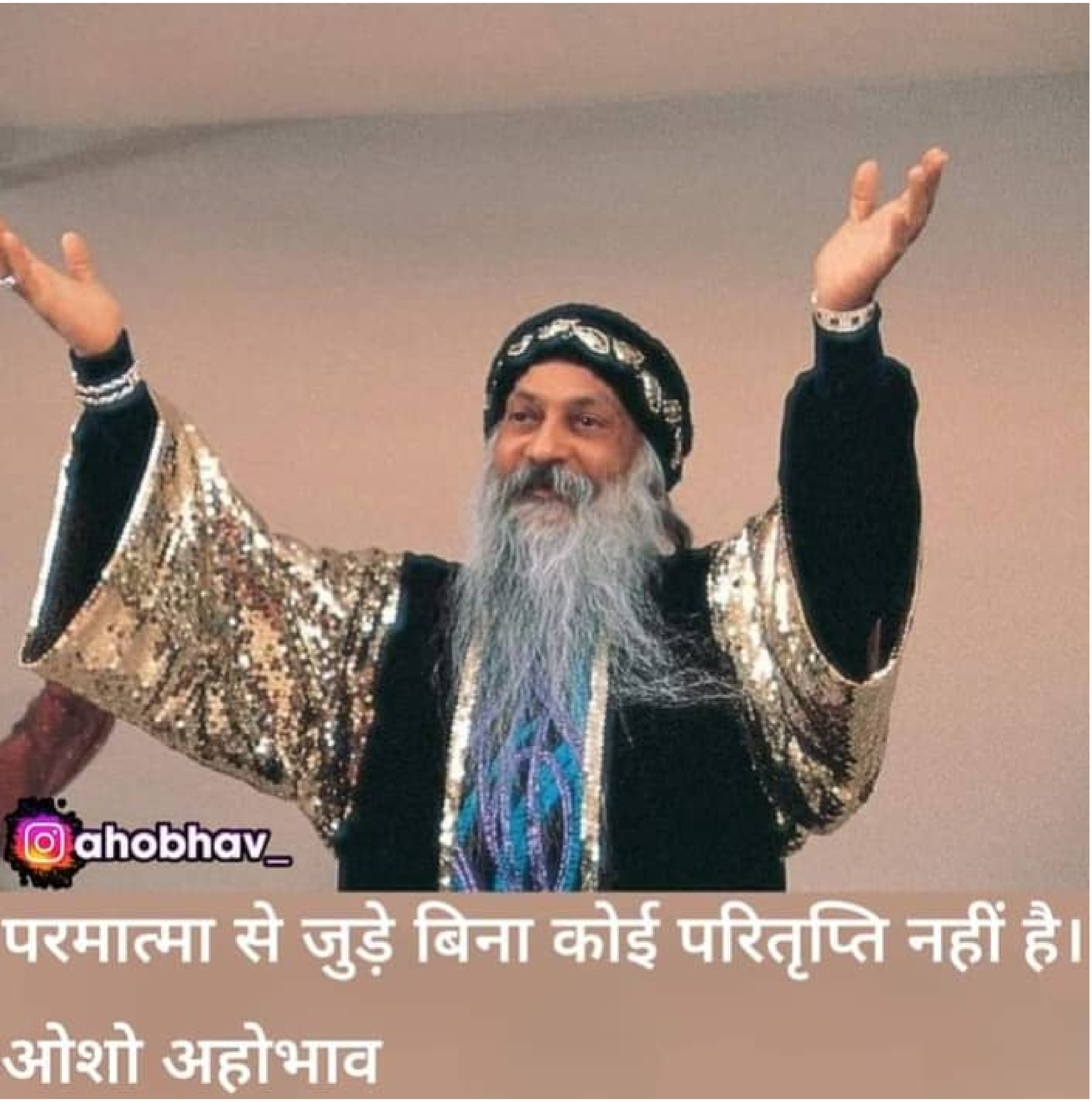

CS CamScanner

10:00 pm 0 KB/s VoLTE 4G 62%

अमनुष्य तो बांस का एक टुकड़ा है
बस, बांस का!

बांस की एक पोली पोंगरी।
प्रभु के ओंठों से लग जाए
तो अभिप्राय का जन्म होता है,
अर्थ का जन्म होता है,
महिमा प्रगट होती है।

संगीत छिपा पड़ा है
बांस के टुकड़े में,
मगर उसके जादुई
स्पर्श के बिना प्रकट न होगा।

पत्थर की मूर्ति भी पूजा से
भरे हृदय के समक्ष सप्राण हो जाती है।
प्रेम से भरी आंखें प्रकृति में ही
परमात्मा का अनुभव कर लेती हैं।

सारी बात परमात्मा से जुड़ने की है।
उससे बिना जुड़े,सब है और कुछ भी नहीं है।
वीणा पड़ी रहेगी और छंद पैदा न होंगे।
हृदय तो रहेगा, श्वास भी चलेगी,
लेकिन प्रेम की रसधार न बहेगी।
वृक्ष भी होंगे लेकिन फूल न खिलेंगे;
जीवन में फल न आएंगे।

परमात्मा से जुड़े बिना कोई परितृप्ति नहीं है।
परमात्मा से जुड़े बिना लंबी-लंबी यात्रा है,
बड़ी लंबी अथक यात्रा है;
लेकिन मरुस्थल और मरुस्थल!
मरूद्यानों का कोई पता नहीं चलता!

ओशो

CS CamScanner

झोंपड़ी में बैठकर ताना बुनते हुए कबीर साहेब जी से श्री नानक देव जी की मुलाकात

CamScanner

Kabir Ke dohe: वर्तमान में सभी माताओं और बहनों से प्रार्थना है कि अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दें। माता द्वारा पोषित बालक ही आगे चलकर वयस्क बनता है। अपने बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार व तत्वज्ञान से परिचित करवा कर सतभक्ति के मार्ग पर लगाएं। ऐसा करने से आपका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा साथ ही उन का उद्धार भी होगा। बुराइयों से बचे शांतिपूर्वक निर्मल जीवन जीए। परमेश्वर कबीर साहेब जी की भक्ति करें। अपने पूर्वजों की तरह बाँट कर खाएं। दूसरे की माँ, बहन, बेटी अपनी ही मानें। परमात्मा कबीर जी कहते हैं:-

पर नारी को देखिए, बहन बेटी के भाव।

यही काम नाश का सहज उपाय।।

भावार्थ: परमात्मा बताते हैं कि पुरुष को अपनी स्त्री (पत्नी) के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों में पति पत्नी वाला भावना नहीं रखना चाहिए। परस्त्री को आयु अनुसार माता, बहन या बेटी के भाव से देखें। भक्ति करके काम को सहजता से नाश किया जा सकता है।

निष्कर्ष

अत: सभी मनुष्यों को जाति, धर्म, लिंग से ऊपर उठकर अपने मोक्ष के लिए प्रयास करना चाहिए साथ ही साथ आपस में कोई मतभेद नहीं रखना चाहिए। वर्तमान में कबीर साहेब की शिक्षाओं का प्रचार संत रामपाल जी महाराज कर रहे है। उनसे नामदीक्षा लेकर कबीर साहेब की शिक्षाओं को जीवन में ढाला जा सकता है। नाम दीक्षा लेने के लिए फार्म भरें।

CamScanner

तीन लोक के स्वामी भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन भगवानों को भी जन्म देने वाली एक माता ही है इनकी माता दुर्गा को भी बार-बार प्रणाम।

गरीब,नारी नारी क्या करे, नारी मूला माय ।

ब्रह्म जोगनी आदि है, चरण कमल ल्यौ लाए ।।

गरीब, नारी नारी क्या करें नारी बिन के होए।

आदिमाया ओंकार है, देखो सुरति समोय।।

गरीब शब्द सरूपी उतरे, सतगुरु सत्य कबीर।

दास गरीब दयाल हैं, डिगे बधावैं धीर।।

भावार्थ: कबीर साहेब जी ने उन सभी महापुरुषों की माताओं को हाथ जोड़कर प्रणाम किया है जिन की कोख से ऐसे संत और भगत आत्मा उत्पन्न हुए ।

CamScanner

प्रणाम।

गरीब,नारी नारी क्या करें,नारी सरगुण बेल।

नारी सेती ऊपजे, दादू भक्त हमेल।।

भावार्थ: दादू दास जी जिन्होंने कबीर परमेश्वर जी की महिमा का वर्णन किया, का जन्म भी एक माता से हुआ था उनकी माता को बार-बार प्रणाम ।

गरीब,नारी नारी क्या करें नारी का प्रकाश।

नारी सेती ऊपजे, नारद मुनि से दास।।

भावार्थ: प्रसिद्ध मुनि नारद जी जो हमेशा भ्रमण करते रहते हैं उनको भी जन्म देने वाली एक माता ही थी ऐसी नारी को बार-बार प्रणाम।

गरीब, नारी नारी क्या करें नारी निर्गुण नेश।

नारी सेती ऊपजे, ब्रह्मा विष्णु महेश।।

तीन लोक के स्वामी भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन भगवानों को भी जन्म देने वाली एक माता ही है इनकी माता दुर्गा को भी बार-बार प्रणाम।

गरीब,नारी नारी क्या करे, नारी मूला माय ।

CamScanner

9:14 am 0 KB/s 92%

अपना सारा राज त्याग दिया था और बाबा फरीद ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए कड़ा संघर्ष किया, इन दोनों संतों की माताओं को बार-बार प्रणाम।

गरीब,नारी नारी क्या करें नारी में बहु भांत। नारी शेती ऊपजे, शीतलपुरी सुनाथ ।।

गरीब, नारी नारी क्या करें नारी को निरताय । नारी शेती ऊपजे, रामानंद पंथ चलाएं ।।

भावार्थ: आजीवन ब्रह्मचारी रहने वाले रामानंद जी तथा ऐसी महान आत्मा को जन्म देने वाली भी एक नारी ही थी उस माता को बार-बार प्रणाम ।

गरीब, नारी नारी क्या करें नारी नर की खान।

नारी शेती उपजे नानक पद निरबान ।।

भावार्थ: सिख धर्म के प्रवर्तक **गुरु नानक देव जी** जिन्होंने कबीर परमेश्वर से ज्ञान प्राप्ति के बाद कई आत्माओं का उद्धार किया ऐसे महान संत को जन्म देने वाली एक माता ही थी उसको भी बार-बार प्रणाम।

गरीब,नारी नारी क्या करें,नारी सरगुण बेल।

नारी सेती ऊपजे, दादू भक्त हमेल।।

CamScanner

9:14 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%
ws.jagatgururampalji.org 2

गरीब नारी नारी क्या करें नारी भक्त विलास ।

नारी शेती ऊपजे धना भक्त रविदास ।।

भावार्थ: मीराबाई के गुरु संत रविदास जी का जन्म जिस माता से हुआ उस माता को बारंबार प्रणाम कि उस माता ने ऐसे संत को जन्म दिया ।

गरीब, नारी नारी क्या करें नारी कंचन सींध।

नारी से ऊपजे वाजिद और फरीद।।

भावार्थ: पवित्र मुस्लिम धर्म में जन्म लेने वाले दो परम संत राजा वाजिद और बाबा फरीद हुए हैं। वाजिद जी ने परमात्मा प्राप्ति के लिए अपना सारा राज त्याग दिया था और बाबा फरीद ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए कड़ा संघर्ष किया, इन दोनों संतों की माताओं को बार-बार प्रणाम।

गरीब,नारी नारी क्या करें नारी में बहु भांत। नारी शेती ऊपजे, शीतलपुरी सुनाथ ।।

नारी नारी क्या करें नारी को निरताय । नारी शेती ऊपजे रामानंद पंथ चलाएं ।।

CamScanner

गरीब कामिनी कामिनी भेद है, एक रोझं एक हंस ।

जनक विदेही अवतरे, धन माता कुल वंश।।

भावार्थ: कबीर परमेश्वर जी **(kabir Ke dohe)** कहते हैं ऐसी माता के कुल और वंश को बार-बार धन्यवाद जिनकी पुत्री की कोख से जनक जैसे संत, का जन्म हुआ ।

गरीब नारी नारी क्या करै, नारी बहु गुण भेव।

जा माता कुर्बान है जहां ऊपजे सुखदेव।।

भावार्थ: कबीर परमेश्वर जी कहते हैं उस माता की बाल बाल बलिहारी जाऊं जिन्होंने सुखदेव जैसे संत को पैदा किया।

गरीब नारी नारी क्या करें नारी कंचन कूप।

नारी से ऊपजै नामदेव से भूप ।।

भावार्थ: संत नामदेव का बहुत नाम है। उस माता को बार-बार प्रणाम जिससे नामदेव जैसे संत का उदय हुआ अर्थात जन्म हुआ।

गरीब नारी नारी क्या करें नारी भक्त विलास ।

नारी शेती ऊपजे धना भक्त रविदास ।।

CamScanner

9:13 am 8 KB/s VoLTE 4G 92%

गरीब, कामिनी कामिनी भेद है, एक मैली एक पाख ।

जा उदर प्रहलाद थे जा को जोड़ो हाथ ।।

भावार्थ: भक्त प्रहलाद को भी जन्म देने वाली एक नारी ही थी और ऐसी माताओं को हमें हाथ जोड़कर प्रणाम करना चाहिए ।

गरीब कामिनी कामिनी भेद है एक उज्ज्वल एक गंध ।

जा माता परणाम है, जहां भरतरी गोपीचंद ||

भावार्थ: अपने गुरु वचनों पर मर मिटने वाले गोपीचंद और भरतरी को भी जन्म देने वाली माताएं ही थी ऐसी माताओं को बारंबार प्रणाम ।

गरीब,कामिनी कामिनी भेद है एक हीरा एक लाल ।

दत्त गुसाईं अवतरे, अनुसुइया के नाल ।।

भावार्थ: माता अनुसुइया को हम सती अनुसुइया के नाम से भी जानते हैं ऐसी माता को बारंबार प्रणाम जिनकी कोख से दत्तात्रेय जैसे संत पैदा हुए ।

गरीब कामिनी कामिनी भेद है, एक रोझं एक हंस ।

जनक विदेही अवतरे, धन माता कुल वंश।।

CamScanner

कबीर साहेब जी की कलमतोड़ महिमा (प्रशंसा) लिखी। आपको बता दें कि यही गरीबदास जी परमेश्वर कबीर साहेब जी के ही अवतार थे। यहाँ हम गरीबदास जी महाराज के दोहों के माध्यम से आपको उक्त नारियों/ माताओं के बारे में बता रहे हैं जिनसे संत और भक्त उ उत्पन्न हुईं।

गरीब, नारी नरक ना जानिये, सब संतो की खान।

जामे हरीजन उपजै, सोयी रतन की खान ||

भावार्थ: नारी को नरक मत समझो। वह सभी संतों की खान है। नारी के कोख़ से ही सभी महान पुरुषों की उत्पत्ति होती है वो रत्नों की खान है।

गरीब, नारी नारी भेद है, एक मैली एक पाख।

गरीब,जा उदर ध्रुव ऊपजे, जाकी भरियो साख ।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: गरीब दास जी महाराज कबीर साहेब से प्राप्त ज्ञान के आधार पर कहते हैं कि भक्त ध्रुव को जन्म देने वाली भी एक नारी ही थी। ऐसी माता का हमें बार-बार सम्मान करना चाहिए।

गरीब, कामिनी कामिनी भेद है, एक मैली एक पाख ।

जा उदर प्रहलाद थे जा को जोड़ो हाथ ।।

CamScanner

जो पर पीर न जाने सो काफिर बेपीर।|

भावार्थ: कबीर जी ने कहा था कि सच्चा संत वही है जो सहानुभूति रखने वाला और दूसरों का दर्द समझने वाला हो, जो दूसरों का नहीं समझता वह पीर यानी संत नहीं हो सकता वह तो काफिर है।

काज़ी बैठा कुरान बांचे, ज़मीन बो रहो करकट की।

हर दम साहेब नहीं पहचाना, पकड़ा मुर्गी ले पटकी ||

kabir Ke dohe in Hindi

भावार्थ: कबीर साहब कहते हैं कि मौलवी और काजी कुरान पढ़ते हैं, लेकिन उस पर पूरी तरह से अमल नहीं करते हैं, या यों कह लीजिये कि उसके अनुसार कर्म नहीं करते हैं। वो हर जीव में परमात्मा को नहीं देख पाते हैं, यही वजह है कि वो मुर्गी-मुर्गा, बकरा-बकरी सहित अन्य कई जीवों को पकड़ते हैं और उन्हें मार के खा जाते हैं। कबीर साहब हर जीव पर दया का भाव रखते हैं और हर जीव के अंदर परमात्मा का निवास मानते हैं, इसलिए उन्होंने जीव हत्या का पुरजोर विरोध किया।

CamScanner

आर्य-जैनी और बिश्नोई, एक प्रभू के बच्चे सोई।।

भावार्थ: कबीर परमेश्वर ने कहा है कि, आप हिंदू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, आर्य- बिश्नोई, जैनी आदि आदि धर्मों में बंटे हुए हो। ले सच तो यह है कि आप सब एक ही परमात्मा के बच्चे हो।

वेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहीं ||

भावार्थ है कि चारों वेद, चारों कतेब (कुरान शरीफ-जबूर-इंजील-तौरेत) गलत नहीं हैं। परंतु जो उनको नहीं समझ सके वे नादान हैं।

कबीर सोई पीर है जो जाने पर पीर,

जो पर पीर न जाने सो काफिर बेपीर।|

भावार्थ: कबीर जी ने कहा था कि सच्चा संत वही है जो सहानुभूति रखने वाला और दूसरों का दर्द समझने वाला हो, जो दूसरों का दर्द नहीं समझता वह पीर यानी संत नहीं हो सकता वह तो काफिर है।

काज़ी बैठा कुरान बांचे, ज़मीन बो रहो करकट की।

हर दम साहेब नहीं पहचाना, पकड़ा मुर्गी ले पटकी ||

kabir Ke dohe in Hindi

CamScanner

भावार्थ: जो व्यक्ति किसी जीव का गला काटता है उसे आगे चलकर अपना गला कटवाना पड़ेगा। परमात्मा के दरबार में करनी का फल अवश्य मिलता है। आज यदि हम किसी को मारकर खाते हैं तो अगले जन्म में वह प्राणी हमें मारकर खाएगा।

कहता हूं कहि जात हूं, कहा जू मान हमार।

जाका गला तुम काटि हो, सो फिर काटि तुम्हार।।

भावार्थ: मांस भक्षण का विरोध करते हुए कबीर साहेब जी कहते हैं कि मेरी बात मान लो जिसका गला तुम काटते हो वह भी समय आने पर अगले जन्म में तुम्हारा गला काटेगा।

हिंदू-मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई, आपस में सब भाई-भाई।

आर्य-जैनी और बिश्नोई, एक प्रभू के बच्चे सोई।।

भावार्थ: कबीर परमेश्वर ने कहा है कि, आप हिंदू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, आर्य- बिश्नोई, जैनी आदि आदि धर्मों में बंटे हुए हो। लेकिन सच तो यह है कि आप सब एक ही परमात्मा के बच्चे हो।

वेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहीं ||

भावार्थ है कि चारों वेद, चारों कतेब (कुरान शरीफ-जबूर-इंजील-तौरेत) गलत नहीं हैं। परंतु जो उनको नहीं समझ सके वे नादान हैं।

CamScanner

9:13 am 92%

गला काटि कलमा भरे, किया कहै हलाल।

साहेब लेखा मांगसी, तब होसी कौन हवाल।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: जो लोग बेजुबान जानवरों का गला काटकर कहते हैं कि हलाल किया है पर कभी यह नहीं सोचते कि जब वह साहेब (अल्लाहु अकबर) मृत्यु के बाद लेखा जोखा करेगा तब वहां क्या कहेंगे।

जो गल काटै और का, अपना रहै कटाय।

साईं के दरबार में, बदला कहीं न जाय॥

भावार्थ: जो व्यक्ति किसी जीव का गला काटता है उसे आगे चलकर अपना गला कटवाना पड़ेगा। परमात्मा के दरबार में करनी का फल अवश्य मिलता है। आज यदि हम किसी को मारकर खाते हैं तो अगले जन्म में वह प्राणी हमें मारकर खाएगा।

कहता हूं कहि जात हूं, कहा जू मान हमार।

जाका गला तुम काटि हो, सो फिर काटि तुम्हार।।

भावार्थ: मांस भक्षण का विरोध करते हुए कबीर साहेब जी कहते हैं [illegible] बात मान लो जिसका गला तुम काटते हो वह भी समय आने प[illegible]ले जन्म में तुम्हारा गला काटेगा।

CamScanner

9:13 am 146 KB/s VoLTE 4G 92%

अंतिम छोर (सतलोक) में पूर्ण परमात्मा अल्लाहू अकबर अर्थात कबीर परमेश्वर विराजमान है वह साकार है मनुष्य के समान दिखाई देता है यही अल्लाह है।

हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना।

आपस में दोउ लड़ी-लड़ी मुए, मरम न कोउ जाना ।।

भावार्थ: परमेश्वर कबीर जी कहते हैं कि हिन्दू राम के भक्त हैं और तुर्क (मुस्लिम) को रहमान प्यारा है। इसी बात पर दोनों लड़-लड़ कर मौत के मुंह में जा पहुंचे, तब भी दोनों में से कोई सच को न जान पाया।

कलमा रोजा बंग नमाज, कद नबी मोहम्मद कीन्हया,

कद मोहम्मद ने मुर्गी मारी, कर्द गले कद दीन्हया॥

भावार्थ: परमात्मा कबीर कह रहे हैं कि कब मोहम्मद जी ने कलमा, रोजा, बंग पढ़ा और कब मोहम्मद जी ने मुर्गी मारी। जब नबी मोहम्मद जी ने कभी भी ऐसा जुल्म करने की सलाह नहीं दी फिर क्यों तुम निर्दोष जीवो की हत्या कर रहे हो?

गला काटि कलमा भरे, किया कहै हलाल।

साहेब लेखा मांगसी, तब होसी कौन हवाल।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: जो लोग बेजुबान जानवरों

CamScanner

उदर बीज कहा था कलमा, कहा सुन्नत एक ताना।

बाप तुर्क मां हिंदवानी, सो क्यों कर मुस्लामाना।।

Kabir Saheb Ji Dohe in Hindi

परमात्मा कबीर साहिब कहते है कि मां के पेट में कलमा कहां था जब आप मां के पेट से आए तो आपकी सुन्नत भी नहीं थी अर्थात बाद में सब क्रियाएं कर दी गईं। आप जी ने पुरुष की तो सुन्नत कर उसे तो मुसलमान बना दिया परंतु मां तो जैसी थी वैसी ही रही अर्थात हिंदू ही रही।

अरस कुरस पर अल्लह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली।

वे पैगम्बर पाख पुरुष थे, साहिब के अब्दाली।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: गरीब दास जी महाराज कहते है कि मोहम्मद, हजरत मूसा, हजरत ईसा आदि पैगम्बर तो पवित्र व्यक्ति थे तथा ये काल के कृपा पात्र थे, परन्तु जो आसमान के अंतिम छोर (सतलोक) में पूर्ण परमात्मा अल्लाहू अकबर अर्थात कबीर परमेश्वर विराजमान है वह साकार है मनुष्य के समान दिखाई देता है यही अल्लाह है।

हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना।

CamScanner

हिन्दू कहूं तो हूँ नहीं, मुसलमान भी नाही

गैबी दोनों बीच में, खेलूं दोनों माही ।।

भावार्थ: कबीर साहब कहते हैं कि मैं न तो हिन्दू हूँ और न ही मुसलमान। मैं तो दोनों के बीच में छिपा हुआ हूँ। इसलिए हिन्दू-मुस्लिम दोनों को ही अपने धर्म में सुधार करने का संदेश दिया। कबीर साहब ने मंदिर और मस्जिद दोनों ही बनाने का विरोध किया क्योंकि उनके अनुसार मानव तन ही असली मंदिर-मस्जिद है, जिसमें परमात्मा का साक्षात निवास है।

हिन्दू मुस्लिम दोनों भुलाने, खटपट मांय रिया अटकी |

जोगी जंगम शेख सेवड़ा, लालच मांय रिया भटकी।।

भावार्थ: हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही आज ईश्वर-पथ से भटक गए हैं, क्योंकि इन्हें कोई सही रास्ता बताने वाला नहीं है। पंडित, मौलवी, योगी और फ़क़ीर सब सांसारिक मोहमाया और धन के लालच में फंसे हुए हैं। वास्तविक ईश्वर-पथ का ज्ञान जब उन्हें खुद ही नहीं है तो वो आम लोंगो को क्या कराएंगे?

र बीज कहा था कलमा, कहा सुन्नत एव

CamScanner

मुस्लिमों को अल्लाह की जानकारी (Kabir ke Dohe Muslmano ke liye)

गरीब, हम ही अलख अल्लाह हैं, कुतुब गोस और पीर।

गरीबदास खालिक धनी हमरा नाम कबीर।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: कबीर परमात्मा ने बताया कि मैं अल्लाह हूं! मैं (खालिक) संसार का मालिक (धनी) हूँ। मैं कबीर सर्वव्यापक हूँ। अनंत ब्रह्मांडों की रचना मैंने ही की है।

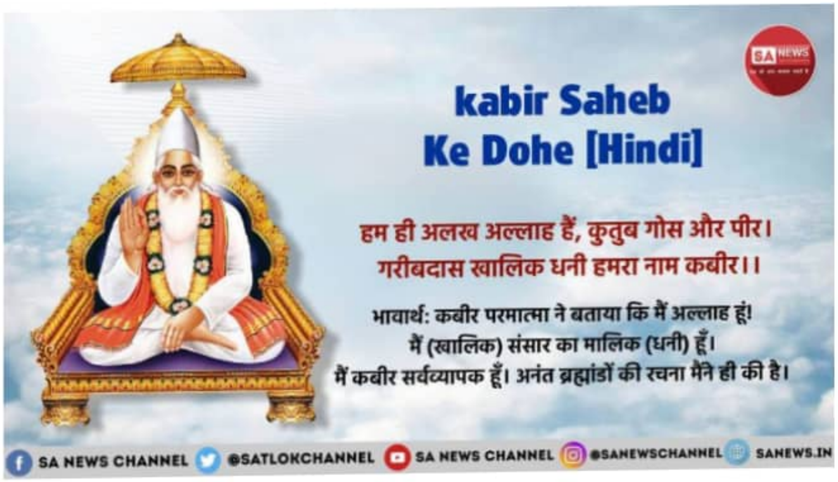

हिन्दू कहूं तो हूँ नहीं, मुसलमान भी नाही

गैबी दोनों बीच में, खेलूं दोनों माही ।।

CamScanner

साधु को दु:खी करेगा मैं उसका वंश मिटा दूंगा। इसलिए संत को सताने के करोड़ों पाप लगते हैं। जैसे अनगिन (अनंत) हत्याएं कर दी हों।

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

भावार्थ है कि यह तत्वज्ञान इतना प्रबल है कि इसके समक्ष अन्य संतों व ऋषियों का ज्ञान टिक नहीं पाएगा। जैसे तोब यंत्र का गोला जहां भी गिरता है वहां पर सर्व किलों तक को ढहा कर साफ मैदान बना देता है।

आच्छे दिन पाछै गए, सतगुरु से किया ना हेत।
अब पछतावा क्या करे, जब चिड़िया चुग गई खेत।।

kabir Ke Dohe [Hindi]

भावार्थ: प्रमाण मिलने के पश्चात् भी सतसाधना पूर्ण संत के बताए अनुसार नहीं करोगे तो यह अनमोल मानव शरीर तथा बिचली पीढ़ी का भक्ति युग हाथ से निकल जाएगा फिर इस समय को याद करके रोवोगे, बहुत पश्चाताप करोगे। फिर कुछ नहीं बनेगा।

CamScanner

मार्या कंश।

जो मेरे साधु को सतावै, वाका खो-दूं वंश।।

Kabir ke Dohe in Hindi

साध सतावन कोटि पाप है, अनगिन हत्या अपराधं।
दुर्वासा की कल्प काल से, प्रलय हो गए यादव।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: उपरोक्त वाणी में सतगुरु गरीबदास जी साहेब प्रमाण दे रहे हैं कि परमेश्वर कहते हैं कि मेरे संत को दुःखी मत कर देना। जो मेरे संत को दुःखी करता है समझो मुझे दुःखी करता है। जब मेरे भक्त प्रहलाद को दुःखी किया तब मैंने हिरणयकशिपु का पेट फाड़ा और मैंने ही कंश को मारा और जो मेरे साधु को दुःखी करेगा मैं उसका वंश मिटा दूंगा। इसलिए संत को सताने के करोड़ों पाप लगते हैं। जैसे अनगिन (अनंत) हत्याएं कर दी हों।

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

भावार्थ है कि यह तत्वज्ञान इतना प्रबल है कि इसके समक्ष अन्य

CamScanner

कबीर साहेब के दोहे

भावार्थ: कबीर साहेब अपने प्रिय शिष्य धमर्दास को इस वाणी समझा रहे हैं कि जो मेरा संत सत भक्ति मार्ग को बताएगा उसके साथ सभी संत व महंत झगड़ा करेंगे। ये उसकी पहचान होगी।

राम कहै मेरे साध को, दु:ख ना दीजो कोए।
साध दुखाय मैं दु:खी, मेरा आपा भी दु:खी होय।।

हिरण्यक शिपु उदर (पेट) विदारिया, मैं ही मार्या कंश।

जो मेरे साधु को सतावै, वाका खो-दूं वंश।।

Kabir ke Dohe in Hindi

साध सतावन कोटि पाप है, अनगिन हत्या अपराधं।
[दु]र्वासा की कल्प काल से, प्रलय हो गए यादव।।

भावार्थ: नाम (उपदेश) को केवल दु:ख निवारण की दृष्टि कोण से नहीं लेना चाहिए बल्कि आत्म कल्याण के लिए लेना चाहिए। फिर सुमिरण से सर्व सुख अपने आप आ जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति भी हो[illegible]

लाडू लावन लापसी, पूजा चढ़े अपार। पूजी पुजारी ले गया, मूरत के मुह छार।।

भावार्थ: कबीर साहेब ने सदियों पहले दुनिया के इस सबसे बड़े घोटाले के बारे में बताया था कि आपका यह सारा माल ब्राह्मण-पुजारी ले जाता है और भगवान को कुछ नहीं मिलता, इसलिए मंदिरों में ब्राह्मणों को दान करना बंद करो ।

जो मम संत सत उपदेश दृढ़ावै (बतावै), वाके संग सभि राड़ बढ़ावै।
या सब संत महंतन की करणी, धमर्दास मैं तो से वर्णी।।

कबीर साहेब के दोहे

भावार्थ: कबीर साहेब अपने प्रिय शिष्य धमर्दास को इस वाणी में ये समझा रहे हैं कि जो मेरा संत सत भक्ति मार्ग को बताएगा उसके साथ सभी संत व महंत झगड़ा करेंगे। ये उसकी पहचान होगी।

[illegible] कहै मेरे साध को, दु:ख ना दीजो कोए।
[illegible]ाध दुखाय मैं दु:खी, मेरा आपा भी दु:ख[illegible]

CamScanner

मुसलमान दोनों को समझाते हुए कहते हैं कि जैसे तिल के अंदर तेल होता है और आग के अंदर रोशनी होती है ठीक वैसे ही हमारा ईश्वर, अल्लाह हमारे अंदर ही विद्यमान है, अगर ढूंढ सको तो ढूंढ लो।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात ।

एक दिना छिप जाएगा, ज्यों तारा परभात ।।

भावार्थ: कबीर जी लोगों को नेकी करने की सलाह देते हुए इस क्षणभंगुर मानव शरीर की सच्चाई लोगों को बता रहे हैं कि पानी के बुलबुले की तरह मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है। जैसे प्रभात होते ही तारे छिप जाते हैं, वैसे ही ये देह भी एक दिन नष्ट हो जाएगी।

कबीर, सुमिरण से सुख होत है, सुमिरण से दुःख जाए।

कहैं कबीर सुमिरण किए, सांई माहिं समाय।।

Kabir ke Dohe in Hindi

भावार्थ: नाम (उपदेश) को केवल दु:ख निवारण की दृष्टि कोण से नहीं लेना चाहिए बल्कि आत्म कल्याण के लिए लेना चाहिए। फिर सुमिरण से सर्व सुख अपने आप आ जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति भी होती है।

...लावन लापसी, पूजा चढ़े अपार। पूजी पुजारी ले गया, मू... के मह छार।।

CamScanner

9:11 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%

होती। कबीर जी ऐसे व्यक्ति को कहते हैं कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन को सांसारिक आडंबरों से हटाकर भक्ति में लगाओ।

मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार ।

तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुरि न लागे डारि ।।

भावार्थ: परमात्मा कबीर जी हिन्दू और मुस्लिम दोनों को मनुष्य जीवन की महत्ता समझाते हुए कहते हैं कि मानव जन्म पाना कठिन है। यह शरीर बार-बार नहीं मिलता। जो फल वृक्ष से नीचे गिर पड़ता है वह पुन: उसकी डाल पर नहीं लगता। इसी तरह मानव शरीर छूट जाने पर दोबारा मनुष्य जन्म आसानी से नही मिलता है, और पछताने के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता।

ज्यों तिल माहि तेल है ,ज्यों चकमक में आग।

तेरा साईं तुझ ही में है ,जाग सके तो जाग।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: कबीर जी हिंदू और मुसलमान दोनों को समझाते हुए कहते हैं कि जैसे तिल के अंदर तेल होता है और आग के अंदर रोशनी होती है ठीक वैसे ही हमारा ईश्वर, अल्लाह हमारे अंदर ही विद्यमान है, अगर ढूंढ सको तो ढूंढ लो।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात ।

एक दिना छिप जाएगा, ज्यों तारा परभात ।।

CamScanner

करते हुए कहते थे कि किसी व्यक्ति से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए बल्कि ज्ञान की बात करनी चाहिए। असली मोल तो तलवार का होता है, म्यान का नहीं।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।।

भावार्थ: परमात्मा कबीर जी कहते हैं कि किताबें पढ़ पढ़ कर लोग शिक्षा तो हासिल कर लेते हैं लेकिन कोई ज्ञानी नहीं हो पाता। जो व्यक्ति प्रेम वाला ढाई अक्षर पढ़ ले, वही सबसे बड़ा ज्ञानी है और सबसे बड़ा पंडित है।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

भावार्थ: कबीर जी अपनी उपरोक्त वाणी के माध्यम से उन लोगों पर कटाक्ष कर रहे हैं जो लम्बे समय तक हाथ में माला तो घुमाते है, पर उनके मन का भाव नहीं बदलता, उनके मन की हलचल शांत नहीं होती। कबीर जी ऐसे व्यक्ति को कहते हैं कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन को सांसारिक आडंबरों से हटाकर भक्ति में लगाओ।

मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार ।

तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहरि न लागे डारि ।।

CamScanner

9:11 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%

भावार्थ: कबीर साहेब कहते है कि पत्थर के बने मंदिर में भगवान भी पत्थर के ही हैं। पुजारी भी अंधे की तरह विवेकहीन हैं तो ईश्वर उनकी पूजा से कैसे प्रसन्न होंगे।

कबीर, कागद केरी नाव री, पानी केरी गंग।

कहे कबीर कैसे तिरे, पांच कुसंगी संग।।

भावार्थ: यह शरीर कागज की तरह नाशवान है जो संसार रुपी नदी की इच्छाओं-वासनाओं में डूबा हुआ है। जब तक पांच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) पर नियंत्रण नहीं कर लिया जाता है तब तक संसार से मुक्ति नहीं मिल सकती।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान ।।

भावार्थ: परमात्मा कबीर जी हिंदुओं में फैले जातिवाद पर कटाक्ष करते हुए कहते थे कि किसी व्यक्ति से उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए बल्कि ज्ञान की बात करनी चाहिए। असली मोल तो तलवार का होता है, म्यान का नहीं।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।।

भावार्थ: परमात्मा कबीर जी कहते हैं कि किताबें पढ़ पढ़ कर लो

CamScanner

वेद पढ़ें पर भेद ना जानें, बांचें पुराण अठारा।

पत्थर की पूजा करें, भूले सिरजनहारा।।

भावार्थ: वेदों व पुराणों का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण हिन्दू धर्म के धर्मगुरुओं को सृजनहार अर्थात परम अक्षर ब्रह्म का ज्ञान भी नहीं हैं इसलिए वे पत्थर पूजा में लगे हुए है। सतगुरु के अभाव में वे वेदों को पढ़ने के बाद भी उनके सही ज्ञान से परिचित नहीं हो सके।

कबीर, पाहन ही का देहरा, पाहन ही का देव।

पूजनहारा आंधरा, क्यों करि माने सेव।।

भावार्थ: कबीर साहेब कहते है कि पत्थर के बने मंदिर में भगवान भी पत्थर के ही हैं। पुजारी भी अंधे की तरह विवेकहीन हैं तो ईश्वर उनकी पूजा से कैसे प्रसन्न होंगे।

कबीर, कागद केरी नाव री, पानी केरी गंग।

कहे कबीर कैसे तिरे, पांच कुसंगी संग।।

भावार्थ: यह शरीर कागज की तरह नाशवान है जो संसार रुपी नद

CamScanner

भावार्थ: कबीर परमेश्वर चारों युगों में आते हैं। कबीर साहिब जी ने बताया है कि जब मैं सतयुग में आया था तब मेरा नाम सत सुकृत था। त्रेता युग में मेरा नाम मुनिंदर था द्वापर युग में मेरा नाम करुणामय था और कलयुग में मेरा नाम कबीर है।

चारों युगों में मेरे संत पुकारें, और कूक कहा हम हेल रे।

हीरे मानिक मोती बरसें ये जग चुगता ढ़ेल रे ||

भावार्थ: हम सत साधना और तत्वज्ञान रुपी हीरे मोतियों की वर्षा कर रहे हैं कि बच्चों ये भक्ति करो इससे बहुत लाभ होगा। हमारी बात को न सुनकर इन नकली संतों गुरुओं आचार्यों शंकराचार्यो की बातों पर आरुढ़ हो चुके हो तुम और ये कंकर पत्थर इकट्ठे कर रहे हो जिनका कोई मूल्य नहीं है भगवान के दरबार में।

कबीर, पत्थर पूजें हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।

तातें तो चक्की भली, पीस खाये संसार।।

भावार्थ: कबीर साहेब जी **(kabir Ke dohe in Hindi)** हिंदुओं को समझाते हुए कहते हैं कि किसी भी देवी-देवता की आप पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं जो कि शास्त्र विरुद्ध है। जो कि हमें कुछ नही दे सकती। इनकी पूजा से अच्छा चक्की की पूजा करना है जिससे हमें खाने के लिए आटा मिलता है।

CamScanner

रहता है अर्थात् धन का अभाव नहीं रहता अपितु आवश्यकता से अधिक प्राप्त रहती है। परमेश्वर की भक्ति करके माया का भी आनन्द भक्त, संत प्राप्त करते हैं तथा पूर्ण मोक्ष भी प्राप्त करते हैं।

सतयुग में सतसुकृत कह टेरा, त्रेता नाम मुनिन्द्र मेरा।

द्वापर में करुणामय कहलाया, कलयुग में नाम कबीर धराया।।

भावार्थ: कबीर परमेश्वर चारों युगों में आते हैं। कबीर साहिब जी ने बताया है कि जब मैं सतयुग में आया था तब मेरा नाम सत सुकृत था। त्रेता युग में मेरा नाम मुनिंदर था द्वापर युग में मेरा नाम करुणामय था और कलयुग में मेरा नाम कबीर है।

...ारों युगों में मेरे संत पुकारें, और कूक कहा हम हेल रे।

CamScanner

9:10 am 26 KB/s 92%

धागा टूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े को कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जुलाहे ने जुलाहों का सटीक उदाहरण बताकर समझाया है कि अधिक उलझे हुए सूत को कोई नहीं सुलझाता था। अध्यात्म ज्ञान उसी नौ मन उलझे हुए [illegible] समान है जिसको सतगुरू अर्थात् तत्वदर्शी संत ऐसा सुलझा देगा [illegible] पुनः नहीं उलझेगा।

कबीर, माया दासी संत की, उभय दे आशीष।
विलसी और लातों छड़ी, सुमर-सुमर जगदीश।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ :- सर्व सुख-सुविधाऐं धन से होती हैं। वह धन शास्त्राविधि अनुसार भक्ति करने वाले संत-भक्त की भक्ति का स्वतः होने वाला, जिसको प्राप्त करना उद्देश्य नहीं, वह फिर भी अवश्य प्राप्त होता है, By Product होता है। जैसे जिसने गेहूँ की फसल बोई तो उसका उद्देश्य गेहूँ का अन्न प्राप्त करना है। परंतु भुष अर्थात् चारा भी अवश्य प्राप्त होता है। चारा, तूड़ा गेहूँ के अन्न का By Product है। इसी प्रकार सत्य साधना करने वाले को अपने आप धन माया मिलती है। साधक उसको भोगता है, वह चरणों में पड़ी रहती है अर्थात् धन का अभाव नहीं रहता अपितु आवश्यकता से अधिक प्राप्त रहती है। परमेश्वर की भक्ति करके माया का भी आनन्द भक्त, संत प्राप्त करते हैं तथा पूर्ण मोक्ष भी प्राप्त करते हैं।

सतयुग में सतसुकृत कह टेरा, त्रेता नाम मुनिन्द्र मेरा।

द्वापर में करुणामय कहलाया, कलयुग में नाम कबीर धराया।।

CamScanner

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ :- यदि एक मनुष्य एक पुत्र से वंश बेल को सदा बनाए रखना चाहता है तो यह उसकी भूल है। जैसे श्रीलंका के राजा रावण के एक लाख पुत्र थे तथा सवा लाख पौत्र थे। वर्तमान में उसके कुल (वंश) में कोई घर में दीप जलाने वाला भी नहीं है। सब नष्ट हो गए। इसलिए हे मानव! परमात्मा से यह क्या मां जो स्थाई ही नहीं है। यह अध्यात्म ज्ञान के अभाव के कारण प्रेरणा बनी है। परमात्मा आप जी को आपका संस्कार देता है। आपका किया कुछ नहीं हो रहा है।

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान रूपी नौ मन सूत उलझा हुआ है। एक कि.ग्रा. उलझे हुए सूत को सीधा करने में एक दिन से भी अधिक जुलाहों का लग जाता था। यदि सुलझाते समय धागा टूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े को कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जुलाहे ने जुलाहों का सटीक उदाहरण बताकर समझाया है कि अधिक उलझे हुए सूत को कोई नहीं सुलझाता था। अध्यात्म ज्ञान उसी नौ मन उलझे हुए सूत के समान है जिसको सतगुरू अर्थात् तत्वदर्शी संत ऐसा सुलझा देगा जो पुनः नहीं उलझेगा।

कबीर, माया दासी संत की, उभय दे आशीष।
विलसी और लातों छड़ी, सुमर-सुमर जगदीश।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ :- सर्व सुख-सुविधाऐं धन से हो [illegible] वह धन शास्त्राविधि अनुसार भक्ति करने वाले संत-भक्त की [illegible] स्वतः होने वाला, जिसको प्राप्त करना उद्देश्य नहीं, वह फि[illegible] भी अवश्य प्राप्त होता है, By Product होता है। जैसे जिसने

CamScanner

9:10 am
ws.jagatgururampalji.org

परब्रह्म/ अक्षर पुरुष (नाशवान 7 शंख ब्रह्मांड का मालिक), परन्तु सबसे न्यारा है पांचवा और असली राम (अनंत ब्रह्माण्ड, अमरलोक का मालिक कबीर परमपिता परमेश्वर) जो सबसे ऊंचा है, सबसे ब ताकत है, वह इस सृष्टि का कर्ता-धर्ता है। कबीर साहब ने उस सृजनहार या राम को याद करने के लिए कहा है।

क्या मांगुँ कुछ थिर ना रहाई, देखत नैन चला जग जाई।
एक लख पूत सवा लख नाती, उस रावण कै दीवा न बाती।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ :- यदि एक मनुष्य एक पुत्र से वंश बेल को सदा बनाए रखना चाहता है तो यह उसकी भूल है। जैसे श्रीलंका के राजा रावण के एक लाख पुत्र थे तथा सवा लाख पौत्र थे। वर्तमान में उसके कुल (वंश) में कोई घर में दीप जलाने वाला भी नहीं है। सब नष्ट हो गए। इसलिए हे मानव! परमात्मा से यह क्या माँगता है जो स्थाई ही नहीं है। यह अध्यात्म ज्ञान के अभाव के कारण प्रेरणा बनी है। परमात्मा आप जी को आपका संस्कार देता है। आपका किया कुछ नहीं हो रहा है।

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान रूपी नौ मन सूत उलझा हुआ है। एक कि.ग्रा. उलझे हुए सूत को सीधा करने में से भी अधिक जुलाहों का लग जाता था। यदि सुलझाते समय ध ूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े क कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जलाहे ने जलाहों का

CamScanner

कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जुलाहे ने जुलाहों का सटीक उदाहरण बताकर समझाया है कि अधिक उलझे हुए सूत को कोई नहीं सुलझाता था। अध्यात्म ज्ञान उसी नौ मन यानि 360 किलो उलझे हुए सूत के समान है जिसको सतगुरू अथार्त् तत्वदशीर् ... ऐसा सुलझा देगा जो पुनः नहीं उलझेगा।

एक राम दशरथ का बेटा , एक राम घट घट में बैठा ।

एक राम का सकल पसारा , एक राम त्रिभुवन से न्यारा ||

एक राम इन सबसे न्यारा, चौथा छोड़ पांचवा को धावै , कहै कबीर सो हम पर आवै ।।

भावार्थ: कबीर साहेब कहते है कि पहला राम दशरथ का बेटा है, दूसरा राम जो हमारे घट-घट में बैठा है और वो है हमारा मन, तीसरा राम काल निरंजन नाशवान 21 ब्रह्मांड का मालिक है, चौथा राम परब्रह्म/ अक्षर पुरुष (नाशवान 7 शंख ब्रह्मांड का मालिक), परन्तु सबसे न्यारा है पांचवा और असली राम (अनंत ब्रह्माण्ड, अमरलोक का मालिक कबीर परमपिता परमेश्वर) जो सबसे ऊंचा है, सबसे बड़ी ताकत है, वह इस सृष्टि का कर्ता-धर्ता है। कबीर साहब ने उस सृजनहार या राम को याद करने के लिए कहा है।

क्या मांगुँ कुछ थिर ना रहाई, देखत नैन चला जग जाई।
एक लख पूत सवा लख नाती, उस रावण कै दीवा न बाती।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ :- यदि एक मनुष्य एक पुत्र से ... को सदा बनाए रखना चाहता है तो यह उसकी भूल है। जैसे श्रीलंका के राजा रावण के एक लाख पुत्र थे तथा सवा लाख पौत्र

CamScanner

आश्चर्य है कि बिना गुरू से दीक्षा लिए किस आशा को लेकर जीवित है। न तो शरीर तेरा है, यह भी त्यागकर जाएगा। फिर सम्पत्ति आपकी कैसे है? जिनको यह विवेक नहीं कि भक्ति बिना जीव का कहीं भी ठिकाना नहीं है तो वे नर यानि मानव नहीं हैं, वे तो पत्थर हैं। उनकी बुद्धि पर पत्थर गिरे हैं।

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

भावार्थ:- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान रूपी नौ मन सूत उलझा हुआ है। एक कि.ग्रा. उलझे हुए सूत को सीधा करने में एक दिन से भी अधिक जुलाहों का लग जाता था। यदि सुलझाते समय धागा टूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े को कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जुलाहे ने जुलाहों का सटीक उदाहरण बताकर समझाया है कि अधिक उलझे हुए सूत को कोई नहीं सुलझाता था। अध्यात्म ज्ञान उसी नौ मन यानि 360 किलो उलझे हुए सूत के समान है जिसको सतगुरू अथार्त् तत्वदशीर् संत ऐसा सुलझा देगा जो पुनः नहीं उलझेगा।

एक राम दशरथ का बेटा , एक राम घट घट में बैठा ।

एक राम का सकल पसारा , एक राम त्रिभुवन से न्यारा ||

एक राम इन सबसे न्यारा, चौथा छोड़ पांचवा को धावै , कहै कबीर सो हम पर आवै ।।

CamScanner

है जैसे सुंदर कुंआ बना रखा है। यदि उसमें जल नहीं है या जल है तो खारा (पीने योग्य नहीं) है, उसका भी नाम भले ही कुंआ है, परंतु गुण कुंए वाले नहीं हैं। इसी प्रकार मनुष्य भक्ति नहीं करता तो उसको भी मानव कहते हैं, परंतु मनुष्य वाले गुण नहीं हैं।

कबीर, काया तेरी है नहीं, माया कहाँ से होय।
भक्ति कर दिल पाक से, जीवन है दिन दोय।।
बिन उपदेश अचम्भ है, क्यों जिवत हैं प्राण।
भक्ति बिना कहाँ ठौर है, ये नर नाहीं पाषाण।।

भावार्थ:- परमात्मा कबीर जी कह रहे हैं कि हे भोले मानव! मुझे आश्चर्य है कि बिना गुरू से दीक्षा लिए किस आशा को लेकर जीवित है। न तो शरीर तेरा है, यह भी त्यागकर जाएगा। फिर सम्पत्ति आपकी कैसे है? जिनको यह विवेक नहीं कि भक्ति बिना जीव का कहीं भी ठिकाना नहीं है तो वे नर यानि मानव नहीं हैं, वे तो पत्थर हैं। उनकी बुद्धि पर पत्थर गिरे हैं।

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

भावार्थ:- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान रूपी नौ म[illegible] उलझा हुआ है। एक कि.ग्रा. उलझे हुए सूत को सीधा करने में [illegible] से भी अधिक जुलाहों का लग जाता था। यदि सुलझाते [illegible] धागा टूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े क[illegible]

प्राणी! यह मानव जन्म (स्त्री/पुरूष) बहुत कठिनता से युगों पर्यन्त प्राप्त होता है। यह बार-बार नहीं मिलता। इस शरीर के रहते-रहते शुभ कर्म तथा परमात्मा की भक्ति कर, अन्यथा यह शरीर समाप्त हो गया तो आप पुनः इसी स्थिति यानि मानव शरीर को प्राप्त नहीं कर पाओगे। जैसे वृक्ष से पत्ता टूटने के पश्चात् उसी डाल पर पुनः न लगता। इसलिए इस मानव शरीर के अवसर को व्यर्थ न गँवा।

कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं रटैं हरि नाम।
जैसे कुंआ जल बिना, बनवाया क्या काम।।

kabir Ke dohe

भावार्थ:- मानव जीवन में यदि भक्ति नहीं करता तो वह जीवन ऐसा है जैसे सुंदर कुंआ बना रखा है। यदि उसमें जल नहीं है या जल है तो खारा (पीने योग्य नहीं) है, उसका भी नाम भले ही कुंआ है, परंतु गुण कुंए वाले नहीं हैं। इसी प्रकार मनुष्य भक्ति नहीं करता तो उसको भी मानव कहते हैं, परंतु मनुष्य वाले गुण नहीं हैं।

कबीर, काया तेरी है नहीं, माया कहाँ से होय।
भक्ति कर दिल पाक से, जीवन है दिन दोय।।
बिन उपदेश अचम्भ है, क्यों जिवत हैं प्राण।
भक्ति बिना कहाँ ठौर है, ये नर नाहीं पाषाण।।

भा...:- परमात्मा कबीर जी कह रहे हैं कि हे भोले मानव! मुझे आश्चर्य है कि बिना गुरू से दीक्षा लिए किस आशा को लेकर जीवि...

CamScanner

9:09 am 227 KB/s VoLTE 4G 92%

प्रेरणा बनी है भक्ति करने की, सत्संग में आने की तो उसको परमात्मा पर विश्वास हुआ है। वह सत्संग विचार सुनेगी तो बुराई भी छूट जाएगी। उसका कल्याण हो जाएगा। समाज से बुराई निकल जाएगी। यदि वह सत्संग में आएगी ही नहीं तो उसको अपने पाप कर्मों का अहसास कैसे होगा?

कबीर, मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारं-बार। तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर ना लागे डार।।

भावार्थ:- कबीर परमात्मा जी ने समझाया है कि हे मानव शरीरधारी प्राणी! यह मानव जन्म (स्त्री/पुरूष) बहुत कठिनता से युगों पर्यन्त प्राप्त होता है। यह बार-बार नहीं मिलता। इस शरीर के रहते-रहते शुभ कर्म तथा परमात्मा की भक्ति कर, अन्यथा यह शरीर समाप्त हो गया तो आप पुनः इसी स्थिति यानि मानव शरीर को प्राप्त नहीं कर पाओगे। जैसे वृक्ष से पत्ता टूटने के पश्चात् उसी डाल पर पुनः नहीं लगता। इसलिए इस मानव शरीर के अवसर को व्यर्थ न गँवा।

कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं रटैं हरि नाम। जैसे कुंआ जल बिना, बनवाया क्या काम।।

kabir Ke dohe

- मानव जीवन में यदि भक्ति नहीं करता तो वह जीवन ऐसा है जैसे सुंदर कुंआ बना रखा है। यदि उसमें जल नहीं है या जल है

CamScanner

सत्य साधना जो शास्त्रोक्त है, करने की प्रेरणा की है। मन तू चल रे सुख के सागर अर्थात् सनातन परम धाम में चल जहाँ पर शब्द नष्ट नहीं होता। इसलिए शब्द का अर्थ अविनाशीपन से है कि वह स्थान अमरत्व का सिंधु अर्थात् सागर है और मोक्ष रूपी रत्न का आगर अर्थात् खान है। इस काल ब्रह्म के लोक में आप जी ने भक्ति भ परंतु शास्त्रानुकूल साधना बताने वाले तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण आप करोड़ों जन्मों से भटक रहे हो।

कुष्टी हो संत बंदगी कीजिए। जे हो वैश्या को प्रभु विश्वास, चरण चित दीजिए।।

kabir Ke dohe

भावार्थ:- यदि किसी भक्त को कुष्ट रोग है और वह भक्ति करने लगा है तो भक्त समाज को चाहिए कि उससे घृणा न करे। उसको प्रणाम करे जैसे अन्य भक्तों को करते हैं। उसका सम्मान करना चाहिए। उसका हौंसला बढ़ाना चाहिए। भक्ति करने से उसका जीवन सफल होगा, रोग भी ठीक हो जाएगा। इसी प्रकार किसी वैश्या बेटी-बहन को प्रेरणा बनी है भक्ति करने की, सत्संग में आने की तो उसको परमात्मा पर विश्वास हुआ है। वह सत्संग विचार सुनेगी तो बुराई भी छूट जाएगी। उसका कल्याण हो जाएगा। समाज से बुराई निकल जाएगी। यदि वह सत्संग में आएगी ही नहीं तो उसको अपने पाप कर्मों का अहसास कैसे होगा?

कबीर, मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारं-बार।
वर से पत्ता टूट गिरे, बहुर ना लागे डार।

हो गया, वह हो गया। यह कहर (दुःख) की लहर कही जाती है। उस सतलोक में असँख्य लहर मेहर (दया) की उठती हैं, वहाँ कोई कहर (भयँकर दुःख) नहीं है।

मन तू चल रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर।।(टेक)
कोटि जन्म तोहे भ्रमत होगे, कुछ नहीं हाथ लगा रे।
कुकर शुकर खर भया बौरे, कौआ हँस बुगा रे।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ:- परमेश्वर कबीर जी ने अपनी अच्छी आत्मा संत गरीबदास जी को सूक्ष्मवेद समझाया, उसको संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) ने आत्मा तथा मन को पात्र बनाकर विश्व के मानव को काल ब्रह्म के लोक का कष्ट तथा सतलोक का सुख बताकर उस परमधाम में चलने के लिए सत्य साधना जो शास्त्रोक्त है, करने की प्रेरणा की है। मन तू चल रे सुख के सागर अर्थात् सनातन परम धाम में चल जहाँ पर शब्द नष्ट नहीं होता। इसलिए शब्द का अर्थ अविनाशीपन से है कि वह स्थान अमरत्व का सिंधु अर्थात् सागर है और मोक्ष रूपी रत्न का आगर अर्थात् खान है। इस काल ब्रह्म के लोक में आप जी ने भक्ति भी की। परंतु शास्त्रानुकूल साधना बताने वाले तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण आप करोड़ों जन्मों से भटक रहे हो।

कुष्टी हो संत बंदगी कीजिए। जे हो वैश्या को प्रभु विश्वास, चरण चित दीजिए।।

CamScanner

थे। भावार्थ है कि जन्म-मरण से छुटकारा पाने के लिए अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए वेदों में वर्णित विधि तथा लोकवेद से घोरतप करते थे। उनको तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण निर्गुण रासा अर्थात् गुप्त ज्ञान जिसे तत्वज्ञान कहते हैं। वह नहीं मिला।

शंखों लहर मेहर की ऊपजैं, कहर नहीं जहाँ कोई। दास गरीब अचल अविनाशी, सुख का सागर सोई।।

भावार्थ:- जिस समय मैं (लेखक) अकेला होता हूँ, तो कभी-कभी ऐसी हिलोर अंदर से उठती है, उस समय सब अपने-से लगते हैं। चाहे किसी ने मुझे कितना ही कष्ट दे रखा हो, उसके प्रति द्वेष भावना नहीं रहती। सब पर दया भाव बन जाता है। यह स्थिति कुछ मिनट ही रहती है। उसको मेहर की लहर कहा है। सतलोक अर्थात् सनातन परम धाम में जाने के पश्चात् प्रत्येक प्राणी को इतना आनन्द आता है। वहाँ पर ऐसी असँख्यों लहरें आत्मा में उठती रहती हैं। जब वह लहर मेरी आत्मा से हट जाती है तो वही दुःखमय स्थिति प्रारम्भ हो जाती है। उसने ऐसा क्यों कहा?, वह व्यक्ति अच्छा नहीं है, वो हानि हो गई, यह हो गया, वह हो गया। यह कहर (दुःख) की लहर कही जाती है। उस सतलोक में असँख्य लहर मेहर (दया) की उठती हैं, वहाँ कोई कहर (भयँकर दुःख) नहीं है।

मन तू चल रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर।।(टेक) ...टि जन्म तोहे भ्रमत होगे, कुछ नहीं हाथ

है। एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा जी के एक दिन में (जो एक हजार आठ (1008) चतुर्युग का होता है) 14 जीव इन्द्र के पद पर रहकर अपना किया पुण्य-कर्म भोगते हैं। इन्द्र के पद को भोगकर वे प्राणी गधे का जीवन प्राप्त करते हैं।

कोटि जन्म तू राजा कीन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर-दर हांड्या, मिला न निर्गुण रासा।।

सरलार्थ:- हे मानव! आप जी ने काल (ब्रह्म) की कठिन से कठिन साधना की। घर त्यागकर जंगल में निवास किया, फिर गाँव व नगर में घर-घर के द्वार पर हांड्या अर्थात् घूमा। भिक्षा प्राप्ति के लिए जंगल में साधनारत साधक निकट के गाँव या शहर में जाता है। एक घर से भिक्षा पूरी नहीं मिलती तो अन्य घरों से भोजन लेकर जंगल में चला जाता है। कभी-कभी तो साधक एक दिन भिक्षा माँगकर लाते हैं, उसी से दो-तीन दिन निर्वाह करते हैं। रोटियों को पतले कपड़े रूमाल जैसे कपड़े को छालना कहते हैं। छालने में लपेटकर वृक्ष की टहनियों से बाँध देते थे। वे रोटियाँ सूख जाती हैं। उनको पानी में भिगोकर नर्म करके खाते थे। वे प्रतिदिन भिक्षा माँगने जाने में जो समय व्यर्थ होता था, उसकी बचत करके उस समय को काल ब्रह्म की साधना में लगाते थे। भावार्थ है कि जन्म-मरण से छुटकारा पाने के लिए अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए वेदों में वर्णित विधि तथा लोकवेद से घोरतप करते थे। उनको तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण निर्गुण रासा अर्थात् गुप्त ज्ञान जिसे तत्वज्ञान कहते हैं। वह नहीं मिला।

...वों लहर मेहर की ऊपजैं, कहर नहीं जह... ...होई।

CamScanner

9:09 am 4 KB/s VoLTE 4G 92%

शब्दार्थ:- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि जो व्यक्ति प्रमाण आँखों देखकर भी झूठ को ही आधार मानता है, उस व्यक्ति से तो परमात्मा! स्वपन में भी ना मिलाना। वह इतना दुष्ट है। उससे ज्ञान चर्चा क[...] व्यर्थ है।

इन्द्र-कुबेर, ईश की पदवी, ब्रह्मा वरूण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूं जाकर, बहुर अपूठा आया।।

kabir Ke dohe [Hindi]

सरलार्थ:- काल ब्रह्म की साधना करके साधक इन्द्र का पद भी प्राप्त करता है। इन्द्र स्वर्ग के राजा का पद है। इसको देवराज अर्थात् देवताओं का राजा तथा सुरपति भी कहते हैं। यह सिंचाई विभाग अर्थात् वर्षा मंत्रालय भी अपने अधीन रखता है। इन्द्र स्वर्ग के राजा के पद पर 72 चौकड़ी अर्थात् 72 चतुर्युग तक बना रहता है। ऐसे 72 चतुर्युग तक वह साधक इन्द्र के पद पर स्वर्ग के राजा का सुख भोगता है। एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा जी के एक दिन में (जो एक हजार आठ (1008) चतुर्युग का होता है) 14 जीव इन्द्र के पद पर रहकर अपना किया पुण्य-कर्म भोगते हैं। इन्द्र के पद को भोगकर वे प्राणी गधे का जीवन प्राप्त करते हैं।

कोटि जन्म तू राजा कीन्हा, मिटि न मन की आशा।
[...]क्षुक होकर दर-दर हांड्या, मिला न निर्गु[...]

CamScanner

विकारों का त्याग करना चाहिए, परमात्मा का भजन तथा परमात्मा की वाणी प्रवचनों का मनन करना अनिवार्य है। ऐसे साधना तथा मर्यादा पालन करने से मोक्ष निश्चित प्राप्त होता है।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना येह।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ:- अध्यात्म ज्ञान के अभाव के कारण मानव को कुछ असाध्य बुराई घेर लेती हैं जैसे मान-बड़ाई, ईर्ष्या। मान-बड़ाई का अर्थ है पद या धन के अहंकार के कारण सम्मानित व्यक्ति। ये दोनों (सम्मान के कारण बड़प्पन यानि मान-बड़ाई तथा ईर्ष्या) ऐसी बुराई हैं, इनके अभिमान में अँधा होकर इन्हें नहीं छोड़ता। राज त्याग सकता है, स्त्री को त्याग सकता है, परंतु इन दोनों को त्यागना कठिन है।

कबीर, जान बूझ साच्ची तजैं, करै झूठ से नेह।
ताकि संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देय।।

शब्दार्थ:- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि जो व्यक्ति प्रमाण आँखों देखकर भी झूठ को ही आधार मानता है, उस व्यक्ति से तो परमात्मा! स्वपन में भी ना मिलाना। वह इतना दुष्ट है। उससे ज्ञान चर्चा करना व्यर्थ है।

इन्द्र-कबेर, ईश की पदवी, ब्रह्मा वरूण

CamScanner

किसकी ओट में बचेगा? यम के दूत मारपीट करके प्राण निकालेंगे और बिना विचारे चोट मारेंगे यानि बेरहम होकर पीट-पीटकर तेरे होठ फोड़ेंगे। होठ फोड़ना बेरहमी से पीटना अर्थात् निर्दयता से मारेंगे।

कबीर, क्षमा समान न तप, सुख नहीं संतोष समान।
तृष्णा समान नहीं ब्याधी कोई, धर्म न दया समान।।

भावार्थ:- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि क्षमा करना बहुत बड़ा तप है। इसके समान तप नहीं है। संतोष के तुल्य कोई सुख नहीं है। किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा के समान कोई आपदा नहीं है और दया के समान धर्म नहीं है।

कबीर, योग (भक्ति) के अंग पाँच हैं, संयम मनन एकान्त।
विषय त्याग नाम रटन, होये मोक्ष निश्चिन्त।।

भावार्थ:- भक्ति के चार आवश्यक पहलु हैं। संयम यानि प्रत्येक कार्य में संयम बरतना चाहिए। धन संग्रह करने में, बोलने में, खाने-पीने में, विषय भोगों में संयम रखे यानि भक्त को कम बोलना चाहिए, विषय विकारों का त्याग करना चाहिए, परमात्मा का भजन तथा परमात्मा की वाणी प्रवचनों का मनन करना अनिवार्य है। ऐसे साधना तथा मर्यादा पालन करने से मोक्ष निश्चित प्राप्त होता है।

CamScanner

भावार्थ:- भक्त मार्ग पर चलते समय नीचे देखकर चले। भक्त की दृष्टि चलते समय चार हाथ यानि 6 फुट दूर सामने रहनी चाहिए। धर्म-कर्म के ज्ञान का विचार करके परस्त्री तथा परधन को देखकर दोष दृष्टि न करे।

कबीर, मान अपमान सम कर जानै, तजै जगत की आश।
चाह रहित संस्य रहित, हर्ष शोक नहीं तास।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ:- भक्त को चाहे कोई अपमानित करे, उस और ध्यान न दे। उसकी बुद्धि पर रहम करे और जो सम्मान करता है, उस पर भी ध्यान न दे यानि किसी के सम्मानवश होकर अपना धर्म खराब न करे। हानि-लाभ को परमात्मा की देन मानकर संतोष करे।

कबीर, भक्ति दान किया नहीं, अब रह कास की ओट।
मार पीट प्राण निकालहीं, जम तोड़ेंगे होठ।।

kabir Ke dohe

भावार्थ:- न गुरू किया, न भक्ति और न दान-धर्म किया, अब किसकी ओट में बचेगा? यम के दूत मारपीट करके प्राण निकालेंगे और बिना विचारे चोट मारेंगे यानि बेरहम होकर पीट-पीटकर तेरे होठ फोड़ेंगे। होठ फोड़ना बेरहमी से पीटना अर्थात् निर्दयता से मारेंगे।

कबीर, क्षमा समान न तप, सुख नहीं संतो

CamScanner

9:08 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%

होगी। कबीर साहब फरमाते हैं कि मन ही बंधन और मोक्ष का मूल कारण है। जब तक मन को नियंत्रित नहीं करोगे और आत्मा की अनुभूति नहीं प्राप्त करोगे, तब तक संसार में आने-जाने का चक्र नहीं रुकेगा। आत्मा के द्वारा ही परमात्मा की भी अनुभूति प्राप्त होती

कबीर, पात्र कुपात्र विचार कर, भिक्षा दान जो लेत।
नीच अकर्मी सूम का, दान महा दुःख देत।।

kabir Ke dohe

भावार्थ:- संत यानि गुरू को अपने शिष्य के अतिरिक्त दान-भिक्षा नहीं लेनी चाहिए। कुकर्मी तथा अधर्मी का धन बहुत दुःखी करता है।

कबीर, मार्ग चलै अधो गति, चार हाथ मांही देख।
पर तरिया पर धन ना चाहै समझ धर्म के लेख।।

भावार्थ:- भक्त मार्ग पर चलते समय नीचे देखकर चले। भक्त की दृष्टि चलते समय चार हाथ यानि 6 फुट दूर सामने रहनी चाहिए। धर्म-कर्म के ज्ञान का विचार करके परस्त्री तथा परधन को देखकर दोष दृष्टि न करे।

बीर, मान अपमान सम कर जानै, तजै जगत की आश।

CamScanner

9:08 am 92%
ws.jagatgururampalji.org

पढ़ें #kabirkedohe भावार्थ सहित 👇
bit.ly/3fGqp4d

5:17 PM · May 31, 2021

4.6K Reply Share

Read 194 replies

बिना विवेक से गीता बांचे, चेतन को लगी नहीं चटकी।

कहें कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन में रिया भटकी।।

kabir Ke dohe

भावार्थ: कबीर साहब कहते हैं कि यदि हृदय में विवेक और वैराग्य का उदय नहीं हुआ है तो गीता पढ़ने से भी उसका क्या भला होगा? जब तक मन को सत्य का झटका नहीं लगेगा और हमारी चेतना पूरी तरह से जागृत नहीं होगी, तब तक आत्मा-परमात्मा की अनुभूति नहीं होगी। कबीर साहब फरमाते हैं कि मन ही बंधन और मोक्ष का मूल कारण है। जब तक मन को नियंत्रित नहीं करोगे और आत्मा की अनुभूति नहीं प्राप्त करोगे, तब तक संसार में आने-जाने का चक्र नहीं स[illegible] आत्मा के द्वारा ही परमात्मा की भी अनुभूति प्राप्त होती है।

CamScanner

9:07 am 108 KB/s 93%
ws.jagatgururampalji.org

कबीर साहेब के हिंदुओं के लिए दोहे (Kabir Ke Dohe Hinduo ke liye)

माला मुद्रा तिलक छापा, तीरथ बरत में रिया भटकी।

गावे बजावे लोक रिझावे, खबर नहीं अपने तन की।।

kabir Ke dohe [Hindi]: भावार्थ: कबीर साहेब जी कहते हैं माला पहनने, तिलक लगाने, व्रत रखने और तीर्थ करने से जीव का आध्यात्मिक कल्याण नहीं होगा। इसी तरह से जो लोग धार्मिक कथाएं सुनाते हैं, भजन गाकर, नाच कर लोगों को रिझाते हैं, वो भी आम जनता को आत्म कल्याण का उचित सन्मार्ग नहीं दिखाते हैं। कबीर साहब कहते हैं कि ज्ञानी और सच्चे साधू वे हैं, जो शरीर को ही मंदिर-मस्जिद मानते हैं और अपने शरीर के भीतर ही परमात्मा को ढूंढने की कोशिश करते हैं। जो अपनी देह के भीतर ईश्वर का दर्शन कर लेता है, उसका जीवन सफल हो जाता है।

SA News Channel
@SatlokChannel · Follow

कबीर परमेश्वर जी ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों को काल के लोक से मुक्त करवाने तथा नारी की गरिमा को पहचानने के लिए अनेकों वाणी बोली जिन्हे @SaintRampalJiM जी ने अपने ...संगों विस्तार से समझाया है।

CamScanner

9:06 am 276 KB/s VoLTE 4G 93%

Updated on 3 June 2023: हिंदू-मुस्लिम और अन्य धर्म की प्रभु प्रेमी आत्माएं विभिन्न प्रकार की मान्यताओं और धार्मिक परंपराओं का पालन करती हैं। हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्म के अनुसार वह जिस भगवान, अल्लाह की पूजा करते हैं वह ही श्रेष्ठ, सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान है। कबीर जी (**Kabir Ke Dohe in Hindi**) कहते हैं कि मैंने यह शरीर आत्माओं को परमात्मा के बारे में जानने और मुक्त करने के लिए प्राप्त किया है। कबीर जी वास्तव में सर्वोच्च ईश्वर हैं जो एक संत के रूप में प्रकट हुए, वे धर्म और जाति की बेड़ियों से ऊपर थे। कबीर साहिब जी हिंदू और मुसलमान दोनों को कहते थे कि तुम 'सब मेरी संतान हो', कबीर साहिब वाणी में कहते हैं कि

कहाँ से आया कहाँ जाओगे, खबर करो अपने तन की।

कोई सदगुरु मिले तो भेद बतावें, खुल जावे अंतर खिड़की।।

भावार्थ: जीव कहाँ से आया है और कहाँ जाएगा? पंडित और मौलवी इसका जबाब धर्मग्रंथों से देते हैं। कबीर साहब कहते हैं कि इस प्रश्न का सही जवाब चाहिए तो किसी सद्गुरु की मदद लो। जब तक अंतर आत्मा से परमात्मा को पाने की कसक नहीं उठेगी तब तक जीव को इस सवाल का सही जवाब नहीं मिलेगा कि इस दुनिया में वो कहाँ से आया है और एक दिन शरीर छोड़ने के बाद कहाँ जाएगा।

Table of Contents

1. कबीर साहेब के हिंदुओं के लिए दोहे (Kabir Ke Dohe Hinduo ke liye)
2. मुस्लिमों को अल्लाह की जानकारी (Kabir ke Dohe Muslmano ke liye)
3. नारी के सम्मान में कबीर साहेब जी के विचार (Kabir Saheb Dohe Nari ke Samman Mai)

CamScanner

CamScanner

9:04 am 0 KB/s 4G 93%

Like Share

ओशो रहस्यदर्शी

Raj Gupt · 13h ·

कोई एक करोड से भी ज्यादा साधु-संत है भारत में! इनमें से कितने बुद्धत्व को उपलब्ध हुए हैं? यह एक भीड़ है! भिखारियों की, चालबाजों की, बेईमानों की, पाखंडियों की, धोखेबाजों की; यह भीड़ है, जो तुम्हें सदियों-सदियों से चूस रही है। इस भीड़ में किसके भीतर का दीया जला है? इस भीड़ में किसको परमात्मा के दर्शन हुए हैं? यह भीड़ उधार की बातों को, सदियों पहले लिखे गये शास्त्रों को, तोते की तरह दोहराए चली जा रही है। लेकिन इन अंधों की बातें तुम्हें जंचती हैं, क्योंकि तुम भी अंधे हो! ये अंधे तुम्हारी ही भाषा में बोलते हैं; इसलिए बातें जंचती हैं, समझ में आती हैं।

बुद्धों के वचन तुम्हारी पकड़ के बाहर हो जाते हैं, क्योंकि बुद्धों के वचन समझने के पहले तुम्हें किसी क्रांति से गुजरना पडेगा! बुद्धों के वचन समझने के पहले तुम्हें अपनी प्रतिभा पर धार लानी होगी! तुम्हें अपने भीतर ध्यान का दीया जलाना होगा। तुम्हारे भीतर भी कुछ बुद्धत्व की लहर उठे तो तुम्हारा बुद्धों से नाता बने; नहीं तो तुम बुद्धुओं के चक्कर में ही पड़े रहोगे।

OSHO

CamScanner

दुनियां का सबसे बड़ा
आश्चर्य ताजमहल नहीं है!
और ना ही इजिप्त के
"पिरामिड! और
बेबीलोन का उल्टा लटका
हुआ गार्डन...
सबसे बड़ा आश्चर्य तो एक
"महाभारत कथा में
युधिष्ठिर द्वारा दिया गया
"यक्ष के प्रश्न का उत्तर है!
जिसमें युधिष्ठिर यक्ष
से कहते हैं कि;-संसार का
सबसे बड़ा आश्चर्य
यहीं है कि हम रोज़ लोगों
को मरते देखते हैं!
फिर भी यह भरोसा
नहीं आता कि मैं भी एक
दिन मरने वाला हूँ.!!

ओशो

CamScanner

एक करोड़पति मर गया और स्वर्ग का दरवाजा खटखटाने लगा...

.देव – कौन हो तुम.....?

करोड़पति – मैं धरती पर करोड़पति था..

मुझे स्वर्ग में प्रवेश चाहिए..!

देव – स्वर्ग में रहने लायक तुमने कौन सा काम किया है..?

करोड़पति – एक बार मैंने भूखी भिखारिन को दो रूपये दिये थे..।

एक बार मेरी कार से टकराकर घायल हुए एक बच्चे को एक रूपया दिया था..

.देव – और कुछ किया ?

करोड़पति – और कुछ तो याद नही आता...

देव (दूसरे देव से) भाई क्या करे इसका....?

दूसरा देव – इसके तीन रूपये लौटाकर इसे नरक भेज दो.

CamScanner

ध्यान रखना,
प्रेम सिर्फ प्रेम
करता है,
किसी को
सुधारना
नहीं चाहता।
और प्रेम बड़े
सुधार पैदा
करता है।
प्रेम की छाया में
बड़ी क्रांतियां
घटती हैं।
ओशो
Osho Cosmic Lover's

CamScanner

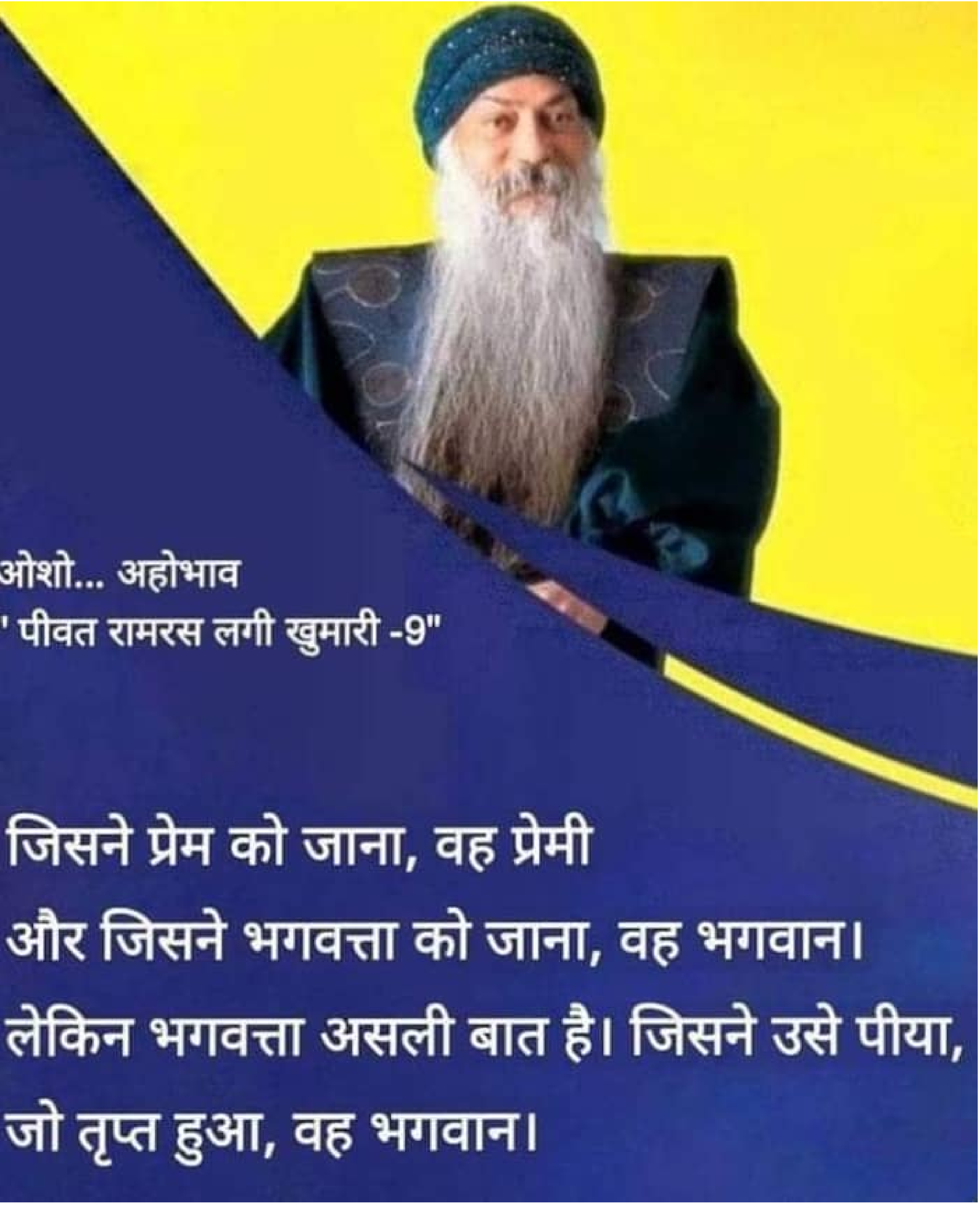
ओशो... अहोभाव
" पीवत रामरस लगी खुमारी -9"
जिसने प्रेम को जाना, वह प्रेमी
और जिसने भगवत्ता को जाना, वह भगवान।
लेकिन भगवत्ता असली बात है। जिसने उसे पीया,
जो तृप्त हुआ, वह भगवान।

CamScanner

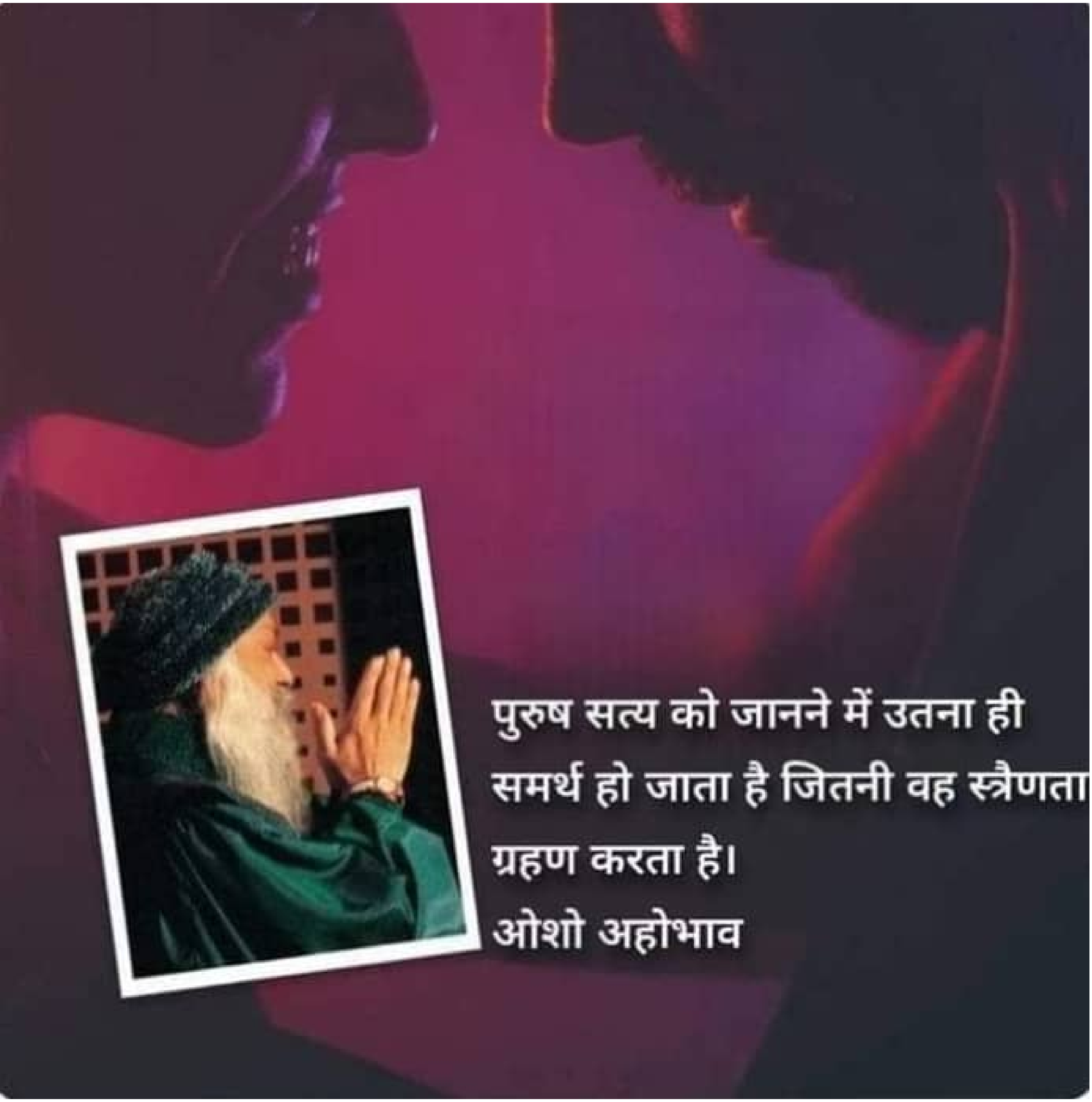

CamScanner

जब तक तुम मानव के हृदय में
झांकना न सीखोगे,
तब तक तुम पिघलोगे भी नहीं,
गलोगे भी नहीं, तब तक तुम
मिटोगे भी नहीं,
तब तक तुम्हारे अहंकार से
छुटकारा बहुत मुश्किल है। तुम
दूसरे के हृदय में बहो, तो धीरे
— धीरे तुम्हारा अहंकार अपने
आप गल जाएगा।
ओशो
नमन
अहोभाव
D.R

CamScanner

8:59 am 0 KB/s VoLTE 4G 94%

Suggested for you · 1d ·

चार मिले चौसठ खिले,,,--बीस रहे कर जोड़,,,
प्रेमी प्रेमी दो मिले,,,,--खिल गए सात करोड़,,,

अभी अभी एक बुजुर्ग ने यह कहावत पूछी मुझसे,,, काफी सोच विचार के बाद भी मैं तो बता नहीं पाया,,, मैंने कहा बाबा आप ही बताइए न,,,

तब एक रहस्यमय मुस्कान के साथ समझाने लगे--देखो भगवन,, यह बड़े रहस्य की बात है,, चार मिले--मतलब जब भी कोई मिलता है तो सबसे पहले दोनों के नयन मिलते हैं आपस में,, इसलिए कहा चार मिले,, फिर कहा चौसठ खिले--यानी बत्तीस बत्तीस दांत,, दोनों के मिलाकर चौसठ हो गए,, चार मिले चौसठ खिले,,

बीस रहे कर जोड़--दोनों हाथों की दस उंगलियां,, दोनों व्यक्तियों की 20 हुई,, बीसों मिलकर ही एक दूसरे को प्रणाम की मुद्रा में हाथ बरबस उठ ही जाते हैं,,,

प्रेमी प्रेमी दो मिले--जब दो प्रेम करने वाले मिले,, यह बड़े रहस्य की बात है,, क्योंकि मिलने वाले प्रेमी न हुए तो न बीस रहे कर जोड़ होगा और न चौसठ खिलेंगे,,,

शरीर में रोम की गिनती करनी असम्भव है वैसे तो लेकिन मोटा मोटा साढ़े तीन करोड़ कहते हैं कहने वाले,,,तो कवि ने अंतिम रहस्य भी प्रकट कर दिया--प्रेमी प्रेमी दो मिले--खिल गए सात करोड़,,

जब कोई मिलता है ऐसा अन्तर्हृदय में बसा हुआ तो रोम रोम खिलना स्वाभाविक ही है भाई,,, जैसे ही कोई ऐसा मिलता है तो अंतिम पंक्ति में पूरा रस निचोड़ दिया है,,खिल गए सात करोड़,, यानी रोम रोम खिल जाना स्वाभाविक ही है,,,

भई वाह आनंद आ गया,,, कहावतों में कितना सार छुपा है,,,एक एक शब्द चासनी में डूबा हुआ,,,हृदय को भावविभोर करता हुआ,,,

CamScanner

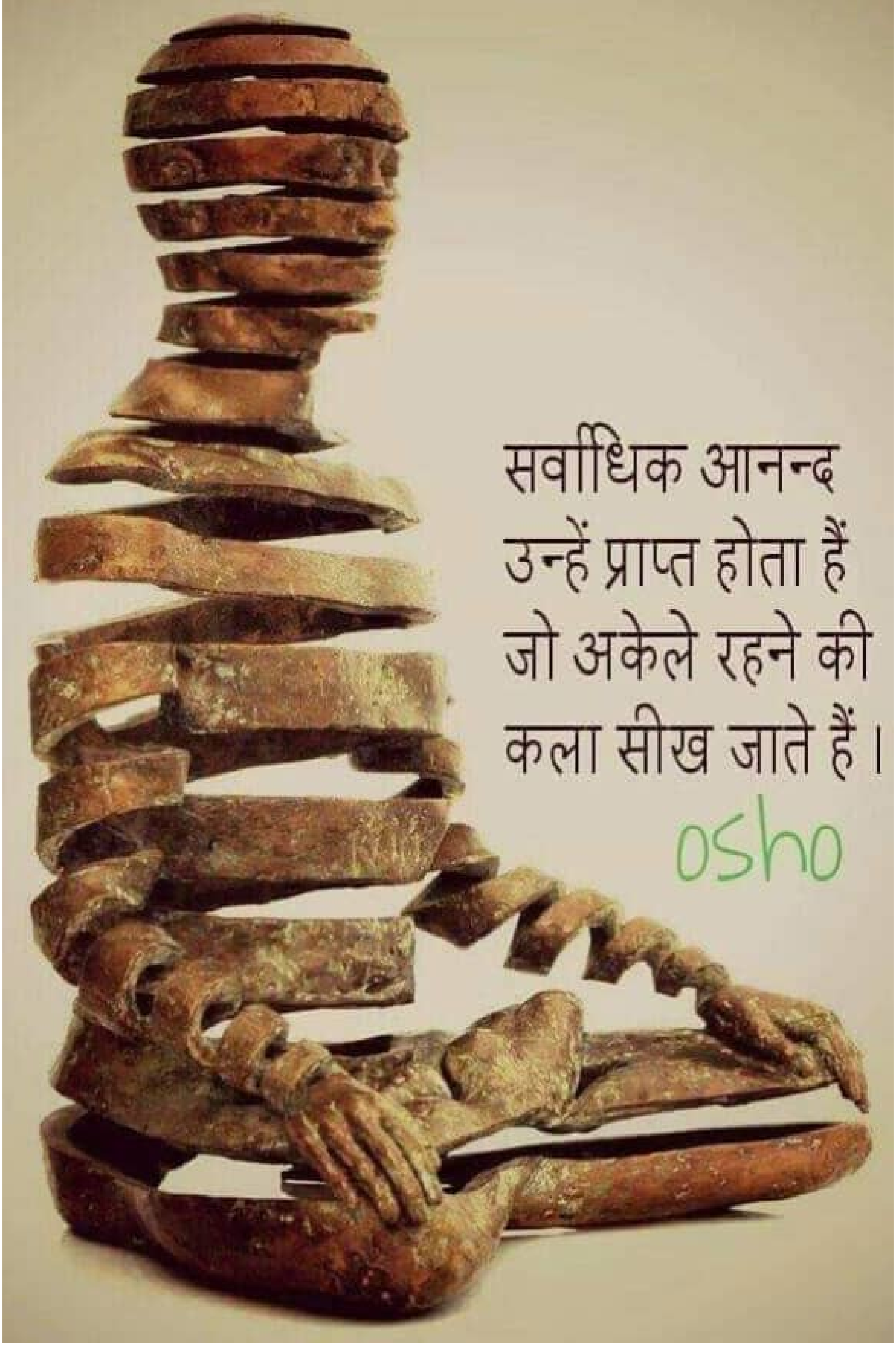

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

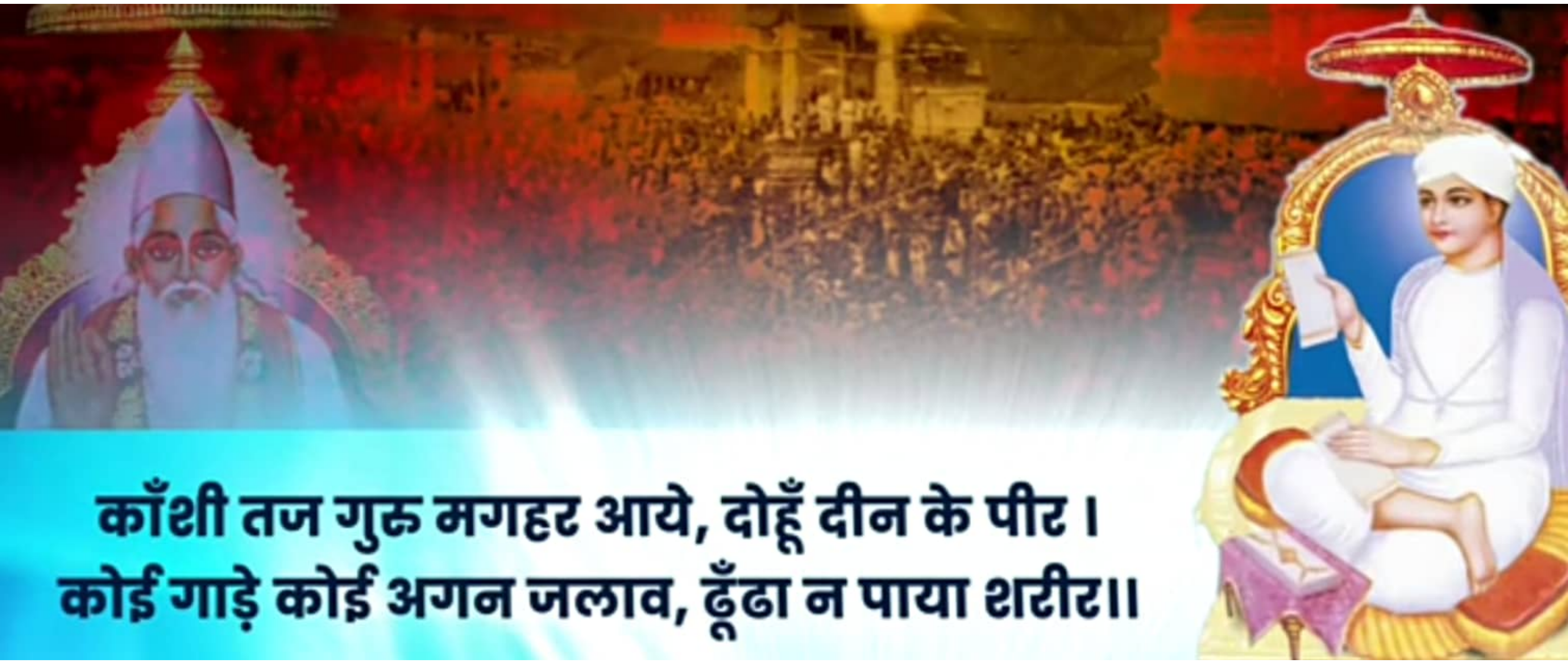

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

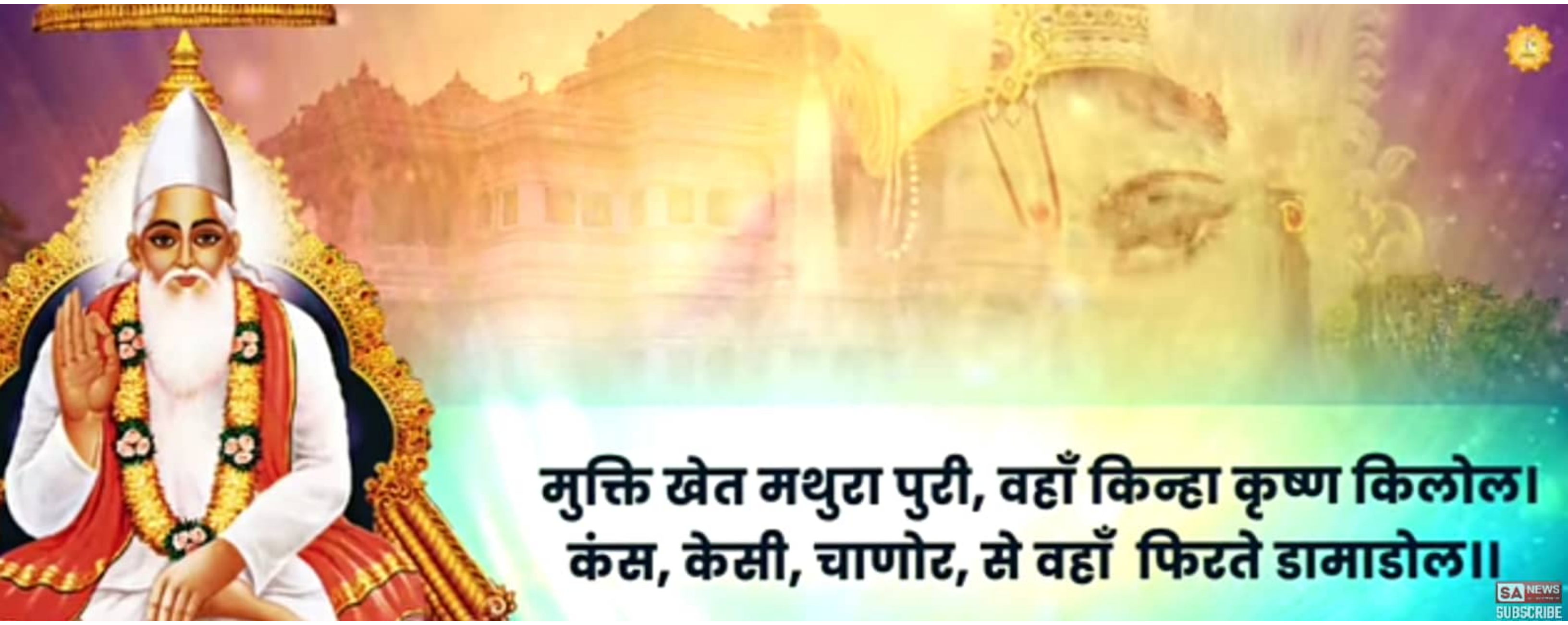
मुक्ति खेत मथुरा पुरी, वहाँ किन्हा कृष्ण किलोल।
कंस, केसी, चाणोर, से वहाँ फिरते डामाडोल।।
SA NEWS
SUBSCRIBE

CamScanner

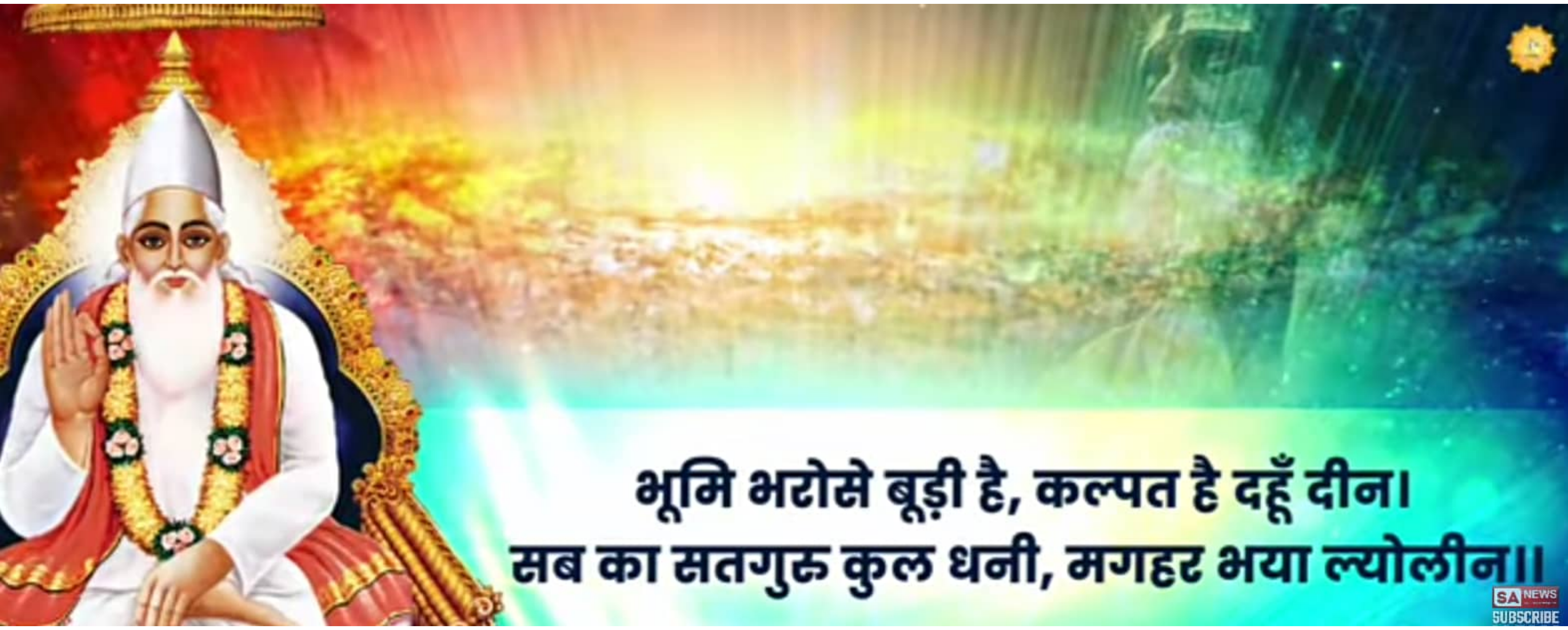
भूमि भरोसे बूड़ी है, कल्पत है दहूँ दीन।
सब का सतगुरू कुल धनी, मगहर भया ल्योलीन।।
SA NEWS
SUBSCRIBE

CamScanner

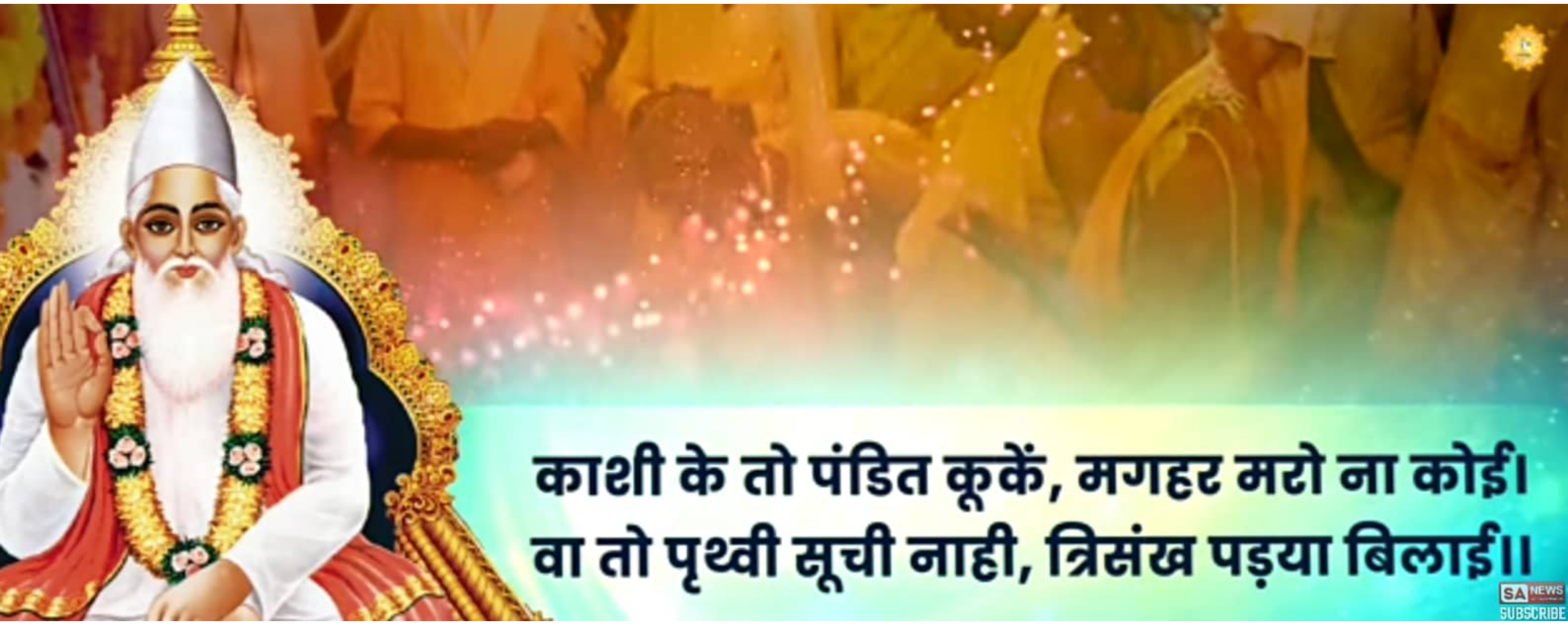
काशी के तो पंडित कूकें, मगहर मरो ना कोई।
वा तो पृथ्वी सूची नाही, त्रिसंख पड़या बिलाई।।
SA NEWS
SUBSCRIBE

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

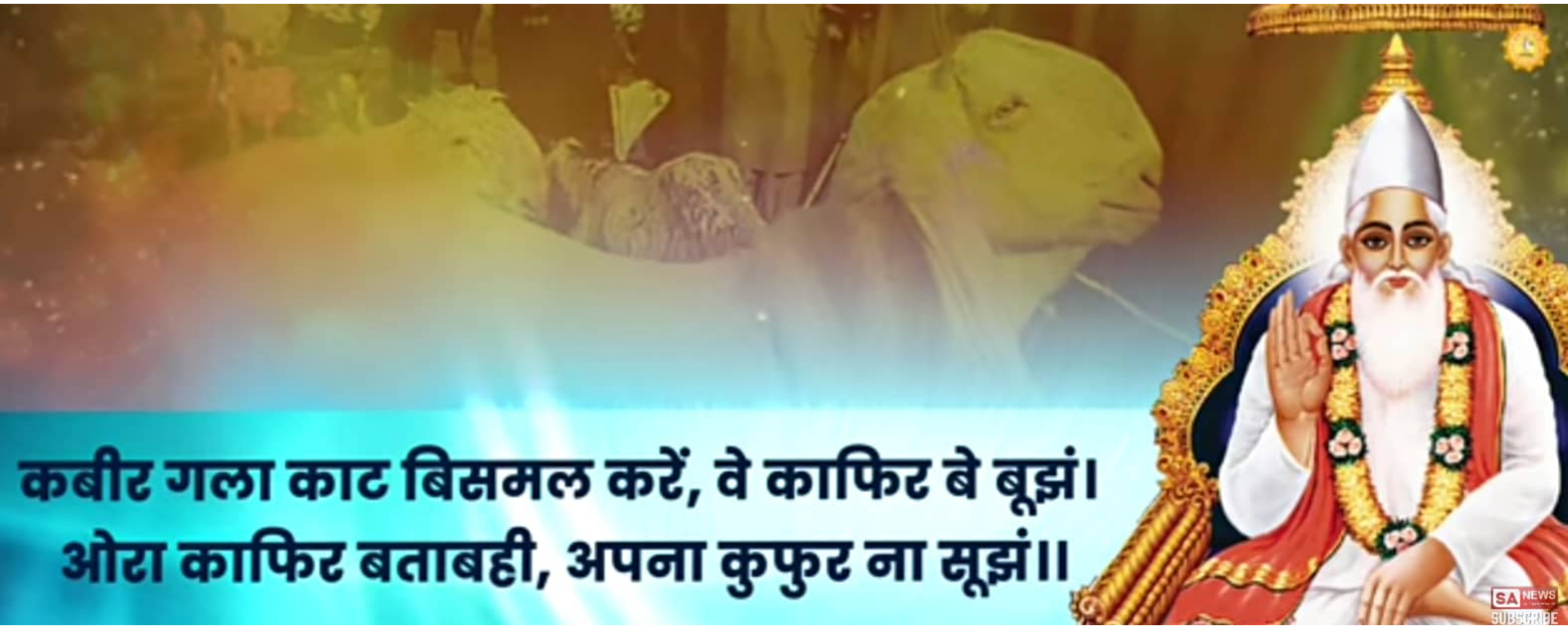
कबीर गला काट बिसमल करें, वे काफिर बे बूझं।
ओरा काफिर बताबही, अपना कुफुर ना सूझं।।
SA NEWS
SUBSCRIBE

CamScanner

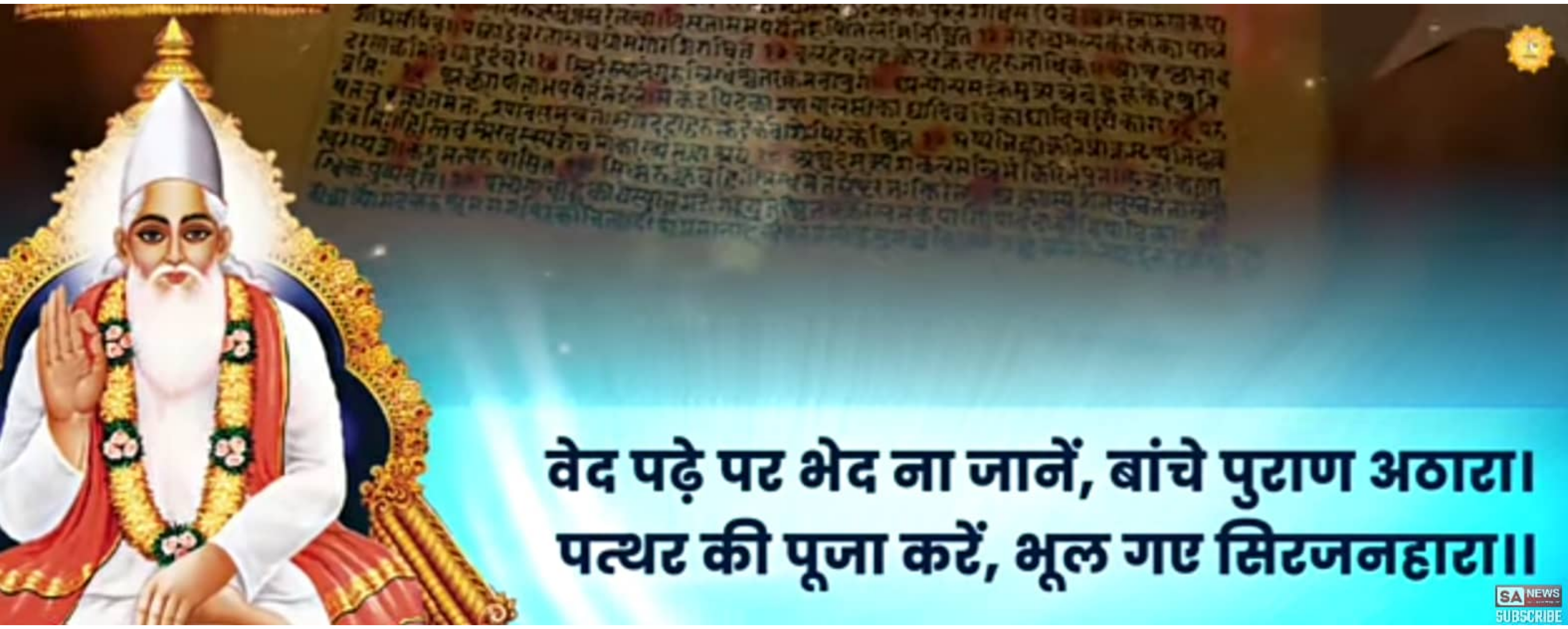
वेद पढ़े पर भेद ना जानें, बांचे पुराण अठारा।
पत्थर की पूजा करें, भूल गए सिरजनहारा।।
SA NEWS
SUBSCRIBE

CamScanner

CamScanner

CamScanner

पाथर पूजे हरि मिले,तो मैं पूजूँ पहाड़ ।
ताते तो चक्की भली,पीस खाए संसार ।।

CamScanner

उनकी मां तुलसीदास को अपने शहर हरिपुर ले गई और उनकी देखभाल की। महज साढ़े पांच साल तक उसकी देखभाल करने के बाद वह मर गई। उस घटना के बाद, रामबोला एक गरीब अनाथ के रूप में रहता था और भिक्षा माँगने के लिए घर-घर जाता था। यह माना जाता है कि देवी पार्वती ने रामबोला की देखभाल के लिए ब्राह्मण का रूप धारण किया था।

और पढ़े : महाभारत किसने लिखी और इसके पीछे की रोचक कहानी

उन्होंने स्वयं अपने विभिन्न कार्यों में अपने जीवन के कुछ तथ्यों और घटनाओं का विवरण दिया था। उनके जीवन के दो प्राचीन स्रोत क्रमशः नाभादास और प्रियदास द्वारा रचित भक्तमाल और भक्तिरसबोधिनी हैं। नाभादास ने अपने लेखन में तुलसीदास के बारे में लिखा था और उन्हें वाल्मीकि का अवतार बताया था। प्रियदास ने तुलसीदास की मृत्यु के १०० साल बाद अपने लेखन की रचना की और तुलसीदास के सात चमत्कारों और आध्यात्मिक अनुभवों का वर्णन किया। तुलसीदास की दो अन्य आत्मकथाएँ हैं मुल गोसाईं चरित और गोसाईं चरित, जिसकी रचना वेणी माधव दास ने 1630 में की थी और दासनिदास (या भवानीदास) ने 1770 के आसपास क्रमशः रची थी।

आशा करते है की आपके प्रश्न तुलसीदास के गुरु कौन थे का उत्तर आपको मिल गया होगा और भारतीय संस्कृ और धर्म से से सम्बंधित अनेक रोचक कथा और जानकारी लेकर आते रहते है जिन्हें आप हमारी वेबसाइट पर पढ़ सकते है।

CS CamScanner

जो कुछ भी सुनता था, उसे तुरंत याद कर लेता था। वहां से कुछ देर बाद गुरु और शिष्य दोनों चक्रकास्त्र (सौरों) पहुंचे। वहां नरहरि बाबा ने बालक को राम की कथा सुनाई, लेकिन वह उसे ठीक से समझ नहीं पाई।

नरहरि या नरहरिदास (जन्म: 1505, मृत्यु: 1610) हिंदी साहित्य की भक्ति परंपरा में एक ब्रजभाषा कवि थे। उन्हें संस्कृत और फारसी का भी अच्छा ज्ञान था।

और पढ़े: संत कबीरदास जी का जीवन परिचय, माता पिता, वैवाहिक जीवन और रचनाये

नरहरिदास का जीवन

नरहरिदास का जन्म उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के पखरौली नामक कस्बे में हुआ था। उसका संपर्क हुमायूँ, शेरशाह सूरी, सलीम शाह और रेवान नरेश रामचंद्र आदि शासकों से माना जाता है। हालाँकि, अकबर ने उन्हें अत्यधिक महत्व दिया।

रचनायें

तीन पुस्तकें: रुक्मिणी मंगल, छप्पय नीति और काव्य संग्रह उनके नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनमें से केवल 'रुक्मिणी मंगल' प्राप्त हुई है। उनकी कुछ और रचनाएँ भी हैं।

तुलसीदास की जीवनी

गोस्वामी तुलसीदास एक महान हिंदू कवि होने के साथ साथ संत, सुधारक और दार्शनिक थे जिन्होंने विभिन्न लोकप्रिय पुस्तकों की रचना की। उन्हें भगवान राम के प्रति उनकी भक्ति और महान महाकाव्य, रामचरितमानस के

CamScanner

10:01 am 0 KB/s VoLTE 4G 83%

Ad

लिखी गई है?

कबीरदास की प्रमुख रचना

वहीं वर्तमान में संत कबीरदस की कुल 61 रचनाएं उपलब्ध हैं

अनुराग सागर, अमर मूल, अर्जनाम कबीर का, उग्र ज्ञान मूल सिद्धांत-दश भाषा, अगाध मंगल, आरती कबीर कृत, अठपहरा, अक्षर खंड की रमैनी,अलिफ़ नामा, कबीर गोरख की गोष्ठी, उग्र गीता, अक्षर भेद की रमैनी, कबीर और धर्मदास की गोष्ठी, कबीर की साखी, चौका पर की रमैनी, कबीर की वाणी, कबीर अष्टक, जन्म बोध, कर्म कांड की रमैनी,कबीर परिचय की साखी, काया पंजी, चौतीसा कबीर का, छप्पय कबीर का, तीसा जंत्र, पुकार कबीर कृत, नाम महातम की साखी, निर्भय ज्ञान, पिय पहचानवे के अंग, व्रन्हा निरूपण, बलख की फैज़, वारामासी, बीजक, भक्ति के अंग, मुहम्मद बोध,भाषो षड चौंतीस, राम रक्षा, मगल बोध, रमैनी, राम सार, रेखता, शब्द राग गौरी और राग भैरव, विचार माला, विवेक सागर, शब्द अलह टुक, सननामा, शब्द राग काफी और राग फगुआ, शब्द वंशावली, शब्दावली, संत कबीर की बंदी छोर, ज्ञान गुदड़ी, ज्ञान चौतीसी, सत्संग कौ अग, ज्ञान सरोदय, ज्ञान सागर, साधो को अंग, ज्ञान सम्बोध, ज्ञान स्तोश्र, सुरति सम्वाद, स्वास गुज्झार, हिंडोरा वा रेखता, हस मुक्तावालो

और पढ़े: तुलसीदासजी के गुरु कौन थे? और उनका जीवन परिचय

ज्ञान

सम्बंधित सामग्री

कौन बनेगा PM? इसी पे खुला I.N.D.I.A में अखाडा!

द्वारा PRATYUSH MADHAV — 1 SEPTEMBER 2023

CamScanner

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।

मान बड़ाई ईर्ष्या, दुलर्भ तजना ये।।

मान-बड़ाई, ईर्ष्या का रोग बहुत भयानक है। अपनी लड़की के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर साहेब की पराजय की खुशी मना रहा था। कबीर साहेब ने कहा कि बैठ जाओ महात्मा जी, शान्ति रखो। कबीर साहेब ने आदेश दिया कि हे जीवात्मा! जहाँ भी है कबीर आदेश से इस शव में प्रवेश करो और बाहर आओ। कबीर साहेब का कहना ही था कि इतने में शव में कम्पन्न हुई और वह लड़की जीवित होकर बाहर आई, कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया।

CamScanner

लहरों को शांत करने में लगे हो...मूल को शांत कर दो , तरंगें अपने आप शांत हो जाएंगी...तुम वासना छोड दो...

तुम्हारी जो चाह होगी वही तुम्हारी मूर्ति बन जाएगी क्योंकि चित्त पूरा का पूरा चेहरे पर उंडला आता है..चेहरा तो दर्पण है...जो आकांक्षा भीतर चलती है , चेहरे पर उसके चिन्ह बन जाते हैं , मिटते नहीं..

बड़ी पुरानी सूफ़ी कथा है. ..एक सम्राट ने जो मूसा का भक्त था ने अपने चित्रकार को कहा कि मूसा की तस्वीर बना दो मेरे दरबार में लगाने को...मूसा जीवित थे , वह चित्रकार मूसा के पास रहा. महीनों में तस्वीर पूरी की. .वह तस्वीर दरबार में लगी तो राजा नाखुश हुआ. .उसने कहा यह तस्वीर मूसा की नहीं मालूम पड़ती. .चेहरे पर तो ऐसे लगता है जैसे कोई हत्यारा हो , कामी हो. ..चेहरे पर शांति की , ध्यान की , समाधि की झलक नहीं है. ..

चित्रकार ने कहा मैंने कुछ भूल नहीं की है. .जैसा चेहरा था वैसा ही अंकित कर दिया है. .सम्राट मूसा को मिलने गया और कहा मुझे बहुत बेचैनी होती है उस चित्र को देखकर. .वह आपका नहीं मालूम पड़ता है. ..उस पर तो ऐसा लगता है जैसे किसी हत्यारे की छाया हो. .चेहरे पर आपकी परम आभा और दीप्ति नहीं है. ..
मूसा हंसने लगे और कहा चित्रकार ठीक है. .वह मेरे पहले दिनों की कथा है. ..वे चिन्ह गहरे पड गये हैं , मिटते नहीं. .वह मेरे आधे जीवन की कहानी है. .अब मैं ध्यान भी करता हूं , शांत भी हूँ , कोई वासना , कोई संघर्ष भी नहीं है , हिंसा , क्रोध भी नहीं है लेकिन वह सब था. ..चित्रकार ने ठीक पकड़ा , उसने चमड़ी के भीतर पकड़ लिया. .मैं भी जानता हूं , जब मैं आईने में अपने को गौर से देखता हूं तो मुझे भी दिखाई पड़ती हैं वे छायायें जो कभी थीं , जिनके चिन्ह पड़े रह गए हैं...

तुम जो हो...तुम्हारी वासना की छाप , वही हो तुम. .

ओशो. ..अष्टावक्र महागीता (63)

12

Like Comment Share

CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य

Anand Amitesh · 43m

. यह जो नृत्य चल रहा है चांद के नीचे, आकाश के नीचे, इस नृत्य को साधारण नृत्य में नहीं कहूंगा इसलिए कि यह किसी के मनोरंजन के लिए नहीं हो रहा है, किसी को दिखाने के लिए नहीं हो रहा कहना चाहिए एक अर्थों में ओवरफ्लोइंग है। इतना आनंद भीतर भरा है कि वह सब तरफ बह रहा है। इस आनंद के बहने के लिए अगर दोनों विरोधी शक्तियां एक साथ मौजूद हों तो सुविधा हो जाती है। पुरुष बह नहीं पाता, अगर स्त्री मौजूद न हो। कुंठित और बंद हो जाता है। सरिता नहीं बन पाता, सरोवर बन जाता है। स्त्री नहीं बह पाती, अगर पुरुष उपलब्ध न हो। उन दोनों की मौजूदगी तत्काल उनके भीतर जो छिपी हुई शक्तियां है उनका बहाव बन जाती है। वह जो हमने निरंतर स्त्री-पुरुष का प्रेम समझा है, उस प्रेम में वही बहाव है। काश हम उसे व्यक्तिवाची न बनाएं, तो वह बहाव बडा पारमार्थिक अर्थ ले लेता है।

स्त्री और पुरुष के बीच जो आकर्षण है वह आकर्षण एक-दूसरे की निकटता में उनके भीतर छिपी हुई शक्तियों का बह जाना है। इसलिए स्त्री के पास पुरुष अपने को हल्का अनुभव करता है। स्त्री पुरुष पास अपने को हल्का अनुभव करती है। अलग-अलग होकर वे टेंस और तनाव से भर जाते हैं। वह हलकापन क्या है? उनके भीतर कुछ भरा है जो बह गया और वे हलके हो गए, पीछे वेटलेसनेस छूट गया है। लेकिन हम स्त्री और पुरुष को बांधने की कोशिश में लगे रहते हैं। जैसे ही हम स्त्री और पुरुष को बांधते हैं, नियम और व्यवस्था देते हैं, वैसे ही बहाव क्षीण हो जाते हैं, वैसे ही बहाव रुक जाते हैं। व्यवस्था से जीवन की गहरी लीला का कोई संबंध नहीं है। और कृष्ण का यह रास बिलकुल ही अव्यवस्थित है~ओशो

CamScanner

12:18 pm 94 KB/s 58%

google.com/amp/s/ww

और पढ़ें :

Patal Lok: पाताल लोक कहां है और कैसा है जानिए

1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ परि जाय।।

recommended by mgid

पिछला

HERBAL MOUTHCARE KIT

अगला

गुटखा खाने से मेरा मुँह बंद होने लगा था, फिर मुझे ये उपाय मिला

और जानें

अर्थ : अर्थात् रहीम दास जी कहते हैं कि हमें प्रेम के बंधन को कभी तोड़ना नहीं चाहिए क्योंकि यह यदि एक बार टूट जाता है तो [OPEN IN APP] जुड़ता और यदि जुड़ता भी है तो गांठ पड़ जाती है।

2. रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।

CamScanner

रहीम के दोहे

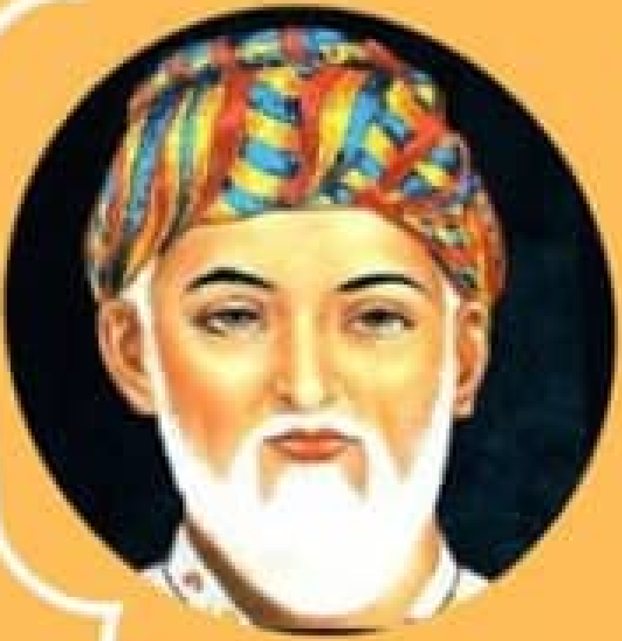

रहिमन धागा प्रेम का, मत
तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े
गांठ परि जाय।।

दोनों रहिमन एक से,
जों लों बोलत नाहिं।
जान परत हैं क पिक,
रितु बसंत के माहि।।

CS CamScanner

12:16 pm 0 KB/s 58%

मुखहि बजावत बेनु धनि यह बृन्दावन की रेनू !

नंदकिसोर चरावत गैया मुखहि बजावत बेनु !!

मनमोहन को ध्यान धरे जिय अति सुख पावत चैन !

चलत कहाँ मन बस पुरातन जहाँ कछु लेन न देनु !!

इहाँ रहहु जह जूठन पावहु ब्रज बासिनी के एनु !

सूरदास हय की सरवरी नही कल्पब्रुच्छ सुरधेनु !!

अर्थ : इस दोहे में सूरदास जी कहते है कि ब्रजवासी धन्य है जहाँ नंदपुत्र श्रीकृष्ण अपनी गायो को चराते है ! और अधरों पर रखकर बासुरी बजाते है ! उसी भूमि पर श्यामसुंदर का स्मरण करने से मन को परम शांति मिलती है ! सूरदास जी मन को प्रभोधित करते हुए कहते है की अरे मन ! तु काहे इधर – उधार भटकता है ! ब्रिज में ही रह जहाँ रहने मात्र से ही सुख की प्राप्ति होती है ! यहाँ किसी से न लेना , न किसी से देना ! सब अपने ध्यान मग्न में है ! ब्रज में रहते हुए ब्रजवासियो के झूठे बर्तनों से जो कुछ प्राप्त हो उसी को ग्रहण करने से ब्रह्मत्व की प्राप्ति होती है ! आगे सूरदास जी कहते है कि ब्रजभूमि की समानता कामधेनु भी नहीं कर सकती ! पद में सूरदास ने ब्रज भूमि का महत्व प्रतिपादित किया है

CamScanner

उधौ मन न भये दस बीस !

एक हुतो सौ गयो स्याम संग , को अराधे ईस !!

इंद्री सिथिल भई केसव बिनु , ज्यो देहि बिनु सीस !

आसा लागि रहित तन स्वाहा , जीवहि कोटि बरीस !!

तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के , सकल जोग के ईस !

सुर हमारे नन्द – नंदन बिनु और नहीं जगदीस !!

अर्थ : गोपियाँ उद्धव से कहती है कि हमारे मन दस बीस तो है नहीं , एक था वह भी श्याम के साथ चला गया ! अब किस मन से ईश्वर की आराधना करे ? उनके बिना हमारी इन्द्रियां शिथिल पड़ गई है ! शरीर मानो बिना सिर के हो गया है ! बस उनके दर्शन की थोड़ी सी आशा भी हमें करोडो वर्ष जीवित रखेगी ! तुम तो कान्हा के सखा हो , योग के पूर्ण ज्ञाता हो ! तुम कृष्ण के बिना भी योग के सहारे अपना उद्दार कर लोगे ! हमारा तो नन्द कुमार कृष्ण के सिवा कोई ईश्वर नहीं है !

CamScanner

निर्गुन कौन देस को वासी !

मधुकर किह समुझाई सौह दे , बुझति साँची न हांसी !!

को है जनक , कौन है जननि , कौन नारि कौन दासी !

कैसे बरन भेष है कैसो , किह रस में अभिलासी !!

पावैगो पुनि कियो आपनो , जा रे करेगी गांसी !

सुनत मौन हवे रह्यो बावरो , सुर सबै मति नासी !!

अर्थ : इस दोहे में सूरदास जी कहते है कि गोपियाँ उद्धव जी से कहती है कि तुम्हारा यह निर्गुण किस देश का रहने वाला है ? सच में मै सोगंध देकर पूछती हूँ ! यह हंसी की बात नहीं है ! इसके माता – पिता , नारी – दासी आखिर कौन है ! इनका रंग , रूप और भेष कैसा है ? किस रस में उनकी रूचि है ? यदि उनसे हमने छल किया तो तुम पाप और दण्ड के भागी होंगे ! सूरदास जी कहते है कि गोपियों के इस तर्क के आगे उद्धव की बुद्धि कुंद हो गई और वे चुप हो गए !

CamScanner

बुझत स्याम कौन तु गोरी !

कहा रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी !!

काहे को हम ब्रजतन आवति खेलति रहहि आपनी पोरी !

सुनत रहति स्त्रवननि नन्द ढोटा करत फिरत माखन दधि चोरी !!

तुम्हरो कहा चोरी हम लेहे खेलन चली संग मिलि जोरी !

सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरई राधिका भोरी !!

अर्थ : सूरदास जी कहते है कि श्री कृष्ण ने राधा जी पूछा हे ! गोरी तुम कौन हो ? कहा रहती हो ? किसकी पुत्री हो ? हमने पहले कभी तुम्हे इस गलियों में नहीं देखा ! तुम हमारे इस ब्रज में क्यों चली आई ? अपने ही घर के आंगन में खेलती रहती ! इतना सुनकर राधा बोली , सुना करती थी की नन्द का लड़का माखन चोरी करता फिरता है ! कृष्ण बोले हम तुम्हारा क्या चुरा लेंगे ? अच्छा हम मिलजुलकर खेलते है ! इस प्रका सूरदास जी कहते है कि श्री कृष्ण ने अपनी बातो से भोली

CamScanner

मैया मोहि कबहूँ बढ़ेगी चोटी !

किती बेर मोहि दूध पियत भई यह अजहू है छोटी !!

तु तो कहति बल की बेनी ज्यो ह्वे है लाम्बी मोटी !

काढत गुहत न्हावावत जैहे नागिन सी भुई लोटी !!

काचो दूध पियावति पचि – पचि देति न माखन रोटी !

सूरदास त्रिभुवन मनमोहन हरि हलधर की जोटी !!

अर्थ : इस दोहे में सूरदास जी कहते है कि बाल्यावस्था में श्रीकृष्ण दूध पिने में आनाकानी किया करते थे ! तब एक दिन माता यशोदा ने प्रलोभन दिया की कान्हा तुम रोज कच्चा दूध पिया करो ! इससे तेरी चोटी दाऊ जैसी लम्बी और मोटी हो जाएगी ! मैया के कहने पर कान्हा दूध पिने लगे ! अधिक समय बीतने पर एक दिन कन्हैया बोले मैया मेरी यह चोटी कब बढ़ेगी ? दूध पिटे हुए मुझे कितना समय हो गया है ! लेकिन यह अभी तक वैसी ही है ! तुम तो कहती थी कि दूध पिने से यह दाऊ भैया की तरह बड़ी और मोटी हो जाएगी ! शायद इसलिए तुम मुझे नित्य नहला कर बालो को कंघी संवारती है और चोटी बनाती है ! जिससे चोटी नागिन का

CamScanner

मैया मोहि मै नहीं माखन खायो !

भोर भयो गेयन के पाछे , मधुबन मोहि पठायो !

चार पहर बंसिबट भटक्यो , साँझ परे घर आयो !!

मै बालक बहियन को छोटो , छीको किहि बिधि पायो !

ग्वाल बाल सब बैर पड़े है , बरबस मुख लपटायो !!

तू जननी मन की अति भोरी इनके कहे पति आयो !

जिय तेरे कछु भेद उपजी है , जानि परायों जायो !!

यह ले अपनी लकुटी कमरिया , बहुतहि नाच नचायो !

सूरदास तब बिहंसि जसोदा ले उर कंठ लगायो !!

अर्थ : इस दोहे में सूरदास जी श्री कृष्ण की बाल लीला का वर्णन करते हुए बताते है कि श्री कृष्ण अपनी माता से कहते है कि मैया मेने माखन नहीं खाया ! सुबह होते ही तुम मु[illegible] गायो के पीछे भेज देती हो ! चार पहर भटकने के बाद शाम

CamScanner

मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायो !

मोसो कहत मोल को लीन्हो , तु जसमति कब जायो ?

कहा करो इही के मारे खेलन हो नहीं जात !

पुनि – पुनि कहत कौन है माता , को है तेरो तात ?

गोर नन्द जसोदा गोरी तु कत श्यामलाल गात !

चुटकी दे दे ग्वाल नचावत हंसत सबे मुसकात !

तु मोहि को मारन सीखी दाउहि कबहु न खीजे !!

मोहन मुख रिस की ये बाते , जसुमति सुनि सुनि रीझे !

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई , जनमत ही कौ धुत !

सुर श्याम मोहे गोधन की सौ , हौ माता थो पूत !!

अर्थ : इस दोहे में बाल कृष्ण बलराम के बारे में शिकायत करते हुए माता यशोदा से कहते है कि मैया दाऊ मझे बहुत

CamScanner

जसोदा हरि पालने झुलावे !

हलरावे दुलरावे मल्हावे जोई सोई कछु गावे !!

मेरे लाल को आज निंदरिया कहे न आनि सुवावे !

तु काहे नहि बेगहि आवे तोको कान्ह बुलावे !!

कबहूँ पलक हरि मुंदी लेत है कबहु अधर फरकावे !

सोवत जानि मौन ह्वे कै रहि करि करि सैन बतावै !!

इही अंतर अकुलाई उठे हरि जसुमति मधुरे गांवे !

जो सुख सुर अमर मुनि दुर्लभ सो नन्द भामिनी पावै !!

अर्थ : इस दोहे में सूरदास जी कहते है कि यशोदा जी श्री कृष्ण को पालने में झुला रही है ! कभी झुलाती है , कभी प्यार से पुचकारती है ! कुछ गाते हुए कहती है कि निंद्रा तु मेरे लाल के पास आ जा ! तु इसे आकार सुलाती क्यों नहीं ? तुझे कन्हियाँ बुला रहा है ! श्याम कभी अपनी पलके बंद कर लेते है कभी अपने ओंठो को हिलाने लगते है ! उन्हें सोते हुए जानकर यशोदा चुप रहती है और गोपियों को भी चुप रह को कहती है । इसी बीच श्री कृष्ण आकुल होकर जाग जाते है

CamScanner

अबिगत गति कछु कहत न आवे !

ज्यो गुंगो मीठे फल की रास अंतर्गत ही भावे !!

परम स्वादु सबही जु निरंतर अमित तोष उपजावे !

मन बानी को अगम अगोचर सो जाने जो पावे !!

अर्थ : सूरदास जी कहते है कि अव्यक्त उपासना को मनुष्य के लिए क्लिष्ट बताया गया है ! निराकार ब्रह्मा का चिंतन अनिर्वचनीय है ! यह मन और वाणी का विषय नहीं है ! ठीक उसी प्रकार जैसे गुंगो को मिठाई खिला दी जाए और उससे उसका स्वाद पूछा जाए तो वह मिठाई का स्वाद नहीं बता पायेगा ! मिठाई के रस का स्वाद तो उसका मन ही जानता है ! उसी प्रकार निराकार ब्रह्मा का न तो रूप है और न ही गुण ! इसलिए मै यहाँ स्थित नहीं रह सकता ! सभी तरह से वह अगम्य है ! अतः सूरदास ही हमेशा श्री कृष्ण की लीला का गुणगान करना ही उचित मानते है !

CamScanner

यह तन विष की बेलरी , गुरु अमृत की खान !

बहिरो सुने मूक पुनि बोले रंक चले सर छत्र धराई !

सूरदास स्वामी करुणामय बार – बार बन्दों तेहि पाई !!

अर्थ : इस दोहे में सूरदास जी कहते है कि श्री कृष्ण की कृपा होने पर लंगड़ा व्यक्ति भी पहाड़ को लाँघ देता है ! एक अंधे व्यक्ति को सबकुछ दिखाई देने लगता है ! बहरा व्यक्ति सुनने लगता है ! गूंगा बोलने लगता है और गरीब व्यक्ति अमीर हो जाता है ! ऐसे दयालु श्री कृष्ण की वंदना कौन नहीं करना चाहेगा !

CamScanner

रहिमन निज सम्पति बिना , कोऊ न बिपति सहाय !

बिनु पानी ज्यो जलज को , नहीं रवि सके बचाय !!

अर्थ : संत रैदास जी कहते है कि जब मनुष्य की मुश्किल घडी आती है तब उस समय उसकी कोई मदद नहीं करता है , उस समय उसके पास मौजूद सम्पति ही उसकी सहायता करती है ! ठीक उसी प्रकार सूर्य भी तालाब का पानी सुख जाने पर कमल को सूखने से नहीं बचा सकता है !

CS CamScanner

एकै साधे सब सधै , सब साधे सब जाय !

रहिमन मूलहि सींचिबो , फुले फले अगाय !!

अर्थ : संत रैदास जी कहते है कि एक – एक काम साधने से हमारे सभी काम सध जाते है ! यदि हम एक साथ सभी कामो को साधने की कोशिश करते है तो उनमे हमें असफलता ही मिलती है ! यदि किसी पेड़ की पति और टहनी को सींचा जाये और उसकी जड को सुखा छोड़ दिया जाए तो वह पेड़ कभी फल नहीं दे पायेगा !

CS CamScanner

रविदास जन्म के कारने , होत न कोउ नीच !

नर कुं नीच करि डारि है , ओछे करम की कीच !!

अर्थ : संत रैदास जी कहते है कि कोई भी इन्सान जन्म लेने से छोटा या बड़ा , उंच या नीच नहीं होता है ! इन्सान अपने कर्मो के कारण ही छोटा या बड़ा बनता है !

CamScanner

रैदास कहे जाकै हदै , रहे रैन दिन राम !

सो भगता भगवंत सम , क्रोध न व्यापे काम !!

अर्थ : इस दोहे में संत रविदास जी कहते है कि भक्ति में ही शक्ति होती है ! जिस मनुष्य के ह्रदय में दिन – रात राम के नाम का वास होता है , वह मनुष्य स्वयं राम के समान होता है ! रविदास जी कहते है कि राम के नाम में ही इतनी शक्ति है कि व्यक्ति को कभी क्रोध नहीं आता और कभी – भी कामभावना का शिकार नहीं होता है !

CamScanner

जाति – जाति में जाति है , जो केतन के पात !

रैदास मनुष ना जुड़ सके जब तक जाति न जात !!

अर्थ : संत रैदास जी कहते है कि जिस प्रकार से किसी केले के तने को छीला जाता है तो उसमे पते के ऊपर पता निकलता रहता है और पूरा पेड़ ख़त्म हो जाता है ! ठीक उसी प्रकार इंसानों को भी जातियों में बाँट दिया गया है , जातियों में बाँटने से इन्सान तो अलग – अलग बंट ही जाते है अंत में इन्सान ही खत्म हो जाता है लेकिन यह जाति कभी ख़त्म नहीं होती है !

CamScanner

रविदास जन्म के कारने , होत न कोउ नीच !

नकर कुं नीच करि डारि है , ओछे करम की कीच !!

अर्थ : कोई भी मनुष्य किसी जाती में जन्म लेने से निचा या छोटा नहीं होता है , मनुष्य हमेशा अपने कर्मो के कारण पहचाना जाता है !

CamScanner

हरि – सा हीरा छांड के , करे आन की आस !

ते नर जमपुर जाहिंगे , सत भाषे रविदास !!

अर्थ : हीरे से कीमती है हरि ! रैदास जी कहते है कि जो लोग भगवान की भक्ति को छोड़कर अन्य चीजो की आशा करते है उन्हें नर्क जाना ही पड़ता है !

CS CamScanner

कृस्न , करीम , राम , हरि , राघव , जब लग एक न पेखा !

वेद कतेब कुरान , पुरानन , सहज एक नहीं देखि !!

अर्थ : रैदास जी कहते है कि कृष्ण , राम करीम , हरि , राघव सब एक ही परमेश्वर के अलग – अलग नाम है ! वेद , कुरान , पुराण आदि सभी ग्रंथो में एक ही ईश्वर की बात करते है , और सभी ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार का पाठ पढ़ते है !

CS CamScanner

मन ही पूजा मन ही धुप !

मन ही सेऊँ सहज स्वरूप !!

अर्थ : इस दोहे के माध्यम से संत रैदास जी हमें यह कहते है कि एक पवित्र मन में ही ईश्वर का वास होता है ! यदि इस मन की किसी के प्रति कोई भेद – भाव , लालच या द्वेष की भावना नहीं है तो ऐसा मन ही भगवान का मंदिर है , दीपक है और धुप है ! ऐसे मन में ही ईश्वर निवास करते है !

CamScanner

करम बंधन में बन्ध रहियो , फल की न तज्जियो आस !

कर्म मानुष का धर्म है , सत भाखे रविदास !!

अर्थ : संत रैदास जी इस दोहे में कहते है कि मनुष्य को हमेशा अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए कभी भी फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए ! क्योंकि कर्म करना मनुष्य का धर्म है तो फल पाना हमारा सौभाग्य !

CamScanner

मन चंगा तो कठौती में गंगा !

अर्थ : रैदास जी इस दोहे में कहते है कि जिस मनुष्य का मन पवित्र है , उसके बुलाने पर माँ गंगा एक कठौती (चमड़ा भिगोने वाला पात्र) में भी आ जाती है !

CamScanner

जा देखे घिन उपजे , नरक कुंड में बांस !

प्रेम भगति सो उधरे , प्रगटत जन रैदास !!

अर्थ : जिस रविदास को देखने से लोगो को घृणा होती थी , जिनके रहने का स्थान नर्क के समान था , ऐसे रविदास का ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाना , ऐसा ही है जैसे मनुष्य के रूप में इनकी दौबारा उत्पति हुई हो !

CamScanner

कह रैदास तेरी भगति दूरि है , भाग बड़े सो पावे !

तजि अभिमान मेटी आपा पर , पिपिलक हवे चुनि खावै !!

अर्थ : संत रैदास जी कहते है कि मनुष्य को भगवान की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है ! जिस मनुष्य में थोडा सा भी अभिमान नहीं है उसका सफल होना निश्चित है ! यह ठीक उसी प्रकार है जैसे एक विशाल हाथी शक्कर के दानो को नहीं बीन सकता , लेकिन एक छोटी से चीटी शक्कर के दानो को आसानी से बीन लेती है !

CamScanner

ब्राह्मण मत पुजिये जो होवे गुणहीन !

पुजिये चरण चंडाल के जो होने गुण प्रवीण !!

अर्थ : इस दोहे के माध्यम से संत रैदास जी कहते है कि किसी मनुष्य को सिर्फ इसलिए नहीं पूजना चाहिए कि वह किसी ऊँचे कुल में जन्मा है ! हमें उस व्यक्ति को नहीं पूजना चाहिए जिसमे कोई गुण नहीं हो ! हमें ऐसे व्यक्ति को पूजना चाहिए जो गुणवान हो चाहे वह किसी नीची जाती का ही क्यों न हो !

CamScanner

जनम जात मत पूछिए, का जात अरू पात।
रैदास पूत सब प्रभु के, कोए नहिं जात कुजात॥

भावार्थ:- रैदास कहते हैं कि किसी की जाति नहीं पूछनी चाहिए क्योंकि संसार में कोई जाति-पाँति नहीं है। सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं। यहाँ कोई जाति, बुरी जाति नहीं है।

पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत।
रैदास दास पराधीन सौं, कौन करैहै प्रीत॥

भावार्थ:- हे मित्र! यह अच्छी तरह जान लो कि पराधीनता एक बड़ा पाप है। रैदास कहते हैं कि पराधीन व्यक्ति से कोई भी प्रेम नहीं करता है। सभी उससे घृणा करते हैं।

सौ बरस लौं जगत मंहि, जीवत रहि करू काम।
रैदास करम ही धरम हैं, करम करहु निहकाम॥

भावार्थ:- रैदास कहते हैं कि मनुष्य को संसार में सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा के लिए निरंतर निष्काम कर्म करते रहना चाहिए। कर्म करना ही मनुष्य-धर्म है।

रैदास जन्म के कारनै होत न कोए नीच।
नर कूं नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच॥

भावार्थ:- जन्म के कारण कोई भी मनुष्य छोटा नहीं होता है। मनुष्य के तुच्छ कर्मों का पाप ही उसे छोटा बनाता है॥

CamScanner

रैदास प्रेम नहिं छिप सकई, लाख छिपाए कोय।
प्रेम न मुख खोलै कभऊँ, नैन देत हैं रोय॥

भावार्थ:- रैदास कहते हैं कि प्रेम कोशिश करने पर भी छिप नहीं पाता, वह प्रकट हो ही जाता है। प्रेम का बखान वाणी द्वारा नहीं हो सकता। प्रेम को तो आँखों से निकले हुए आँसू ही व्यक्त करते हैं।

CamScanner

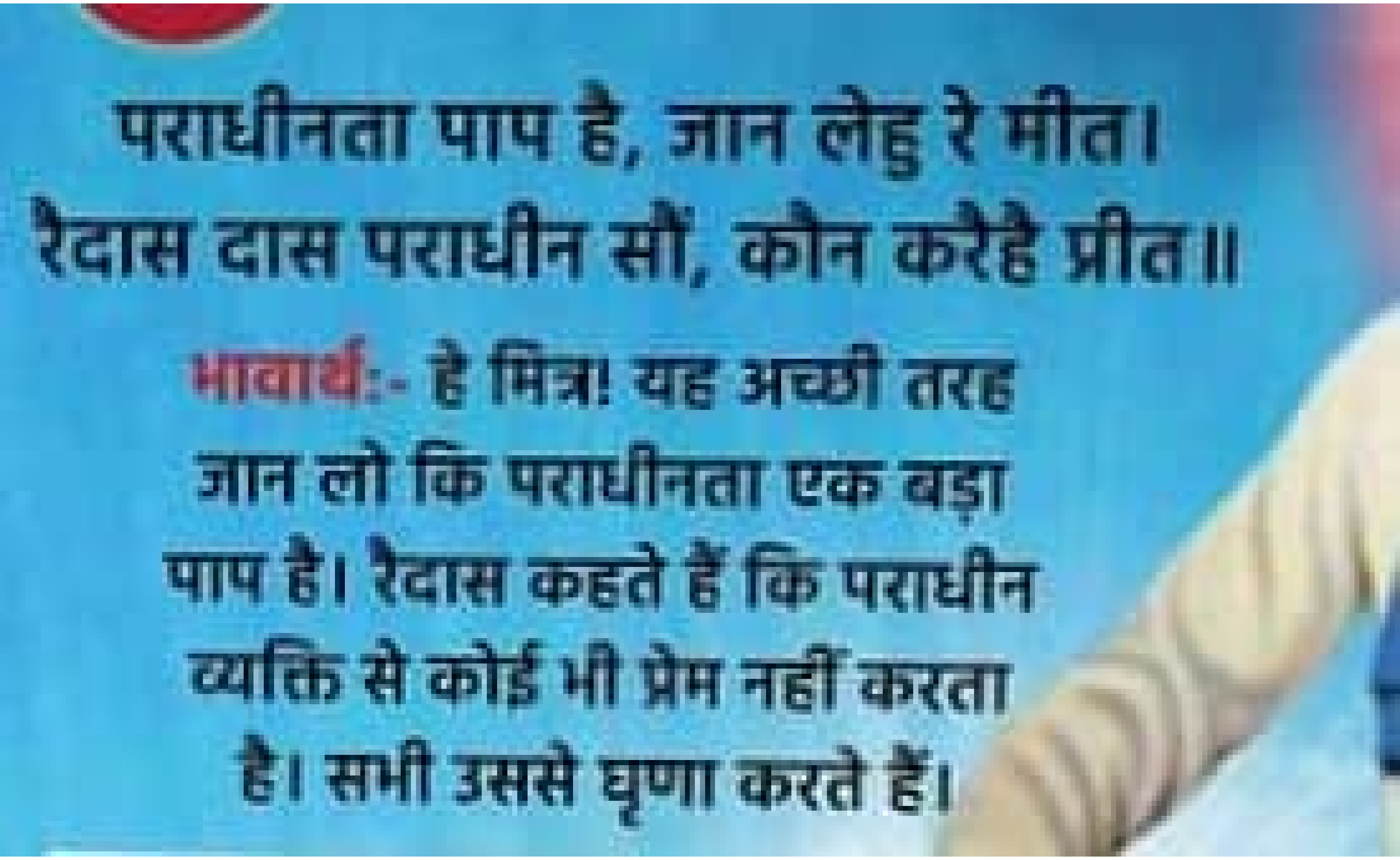
पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत।
रैदास दास पराधीन सौं, कौन करैहै प्रीत॥
भावार्थ:- हे मित्र! यह अच्छी तरह
जान लो कि पराधीनता एक बड़ा
पाप है। रैदास कहते हैं कि पराधीन
व्यक्ति से कोई भी प्रेम नहीं करता
है। सभी उससे घृणा करते हैं।

CamScanner

12:11 pm 14 KB/s 59%

को सरलतापूर्वक चुन लेती है। इसी प्रकार अभिमान तथा बड़प्पन का भाव त्याग कर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर का भक्त हो सकता है।

रैदास की वाणी भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी। इसलिए उसका श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वतः उनके अनुयायी बन जाते थे।

उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि समाज के सभी वर्गों के लोग उनके प्रति श्रद्धालु बन गये। कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति-भावना से बहुत प्रभावित हुईं और उनकी शिष्या बन गयी थीं।

> वर्णाश्रम अभिमान तजि, पद रज बंदहिजासु की।
> सन्देह-ग्रन्थि खण्डन-निपन, बानि विमुल रैदास की ॥

आज भी सन्त रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान नहीं होता है। विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सन्त रैदास को अपने समय के समाज में अत्यधिक सम्मान मिला और इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं।

रैदास के ४० पद गुरु ग्रन्थ साहब में मिलते हैं जिसका सम्पादन गुरु अर्जुन साहिब ने १६ वीं सदी में किया था ।

⌄ संदर्भ

CamScanner

12:11 pm 0 KB/s VoLTE 4G 59%

वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया।

वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव-विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम, कृष्ण, करीम, राघव आदि सब एक ही परमेश्वर के विविध नाम हैं। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

> कृस्न, करीम, राम, हरि, राघव, जब लग एक न पेखा।
> वेद कतेब कुरान, पुरानन, सहज एक नहिं देखा ॥
>
> *चारो वेद के करे खंडौती । जन रैदास करे दंडौती।।*

उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परहित-भावना तथा सद्व्यवहार का पालन करना अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होंने बहुत बल दिया। अपने एक भजन में उन्होंने कहा है-

> कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै।
> तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै॥

उनके विचारों का आशय यही है कि ईश्वर की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। अभिमान शून्य रहकर काम करने वाला व्यक्ति जीवन में सफल रहता है जैसे कि विशालकाय हाथी शक्कर के कणों को चुनने में असमर्थ रहता है जबकि लघु शरीर की पिपीलिका (चींटी) इन कणों को सरलतापूर्वक चुन लेती है। इसी प्रकार अभिमान तथा बड़प्पन का भाव त्याग कर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर का भक्त हो सकता है।

रैदास की वाणी भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी। इसलिए उसका श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वतः उनके अनुयायी बन जाते थे।

CamScanner

11:05 pm 34 KB/s VoLTE 4G 62%

Instagram

oshomessage

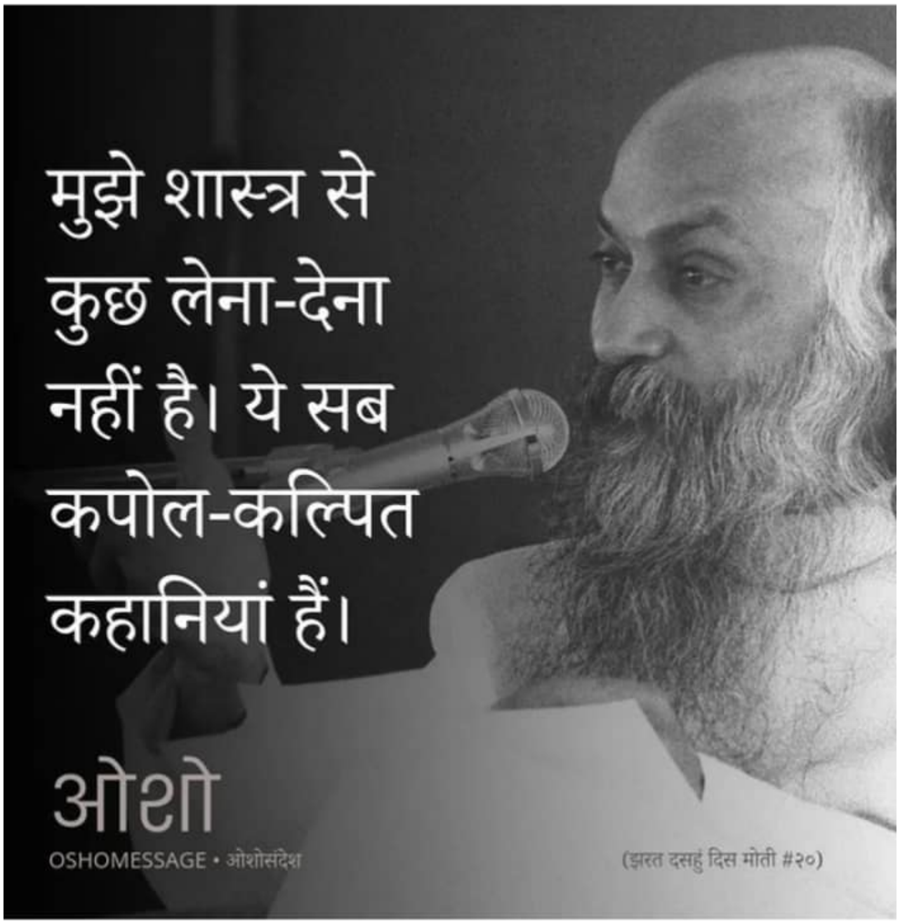

416 likes

View all 6 comments

Add a comment...

4 hours ago

CamScanner

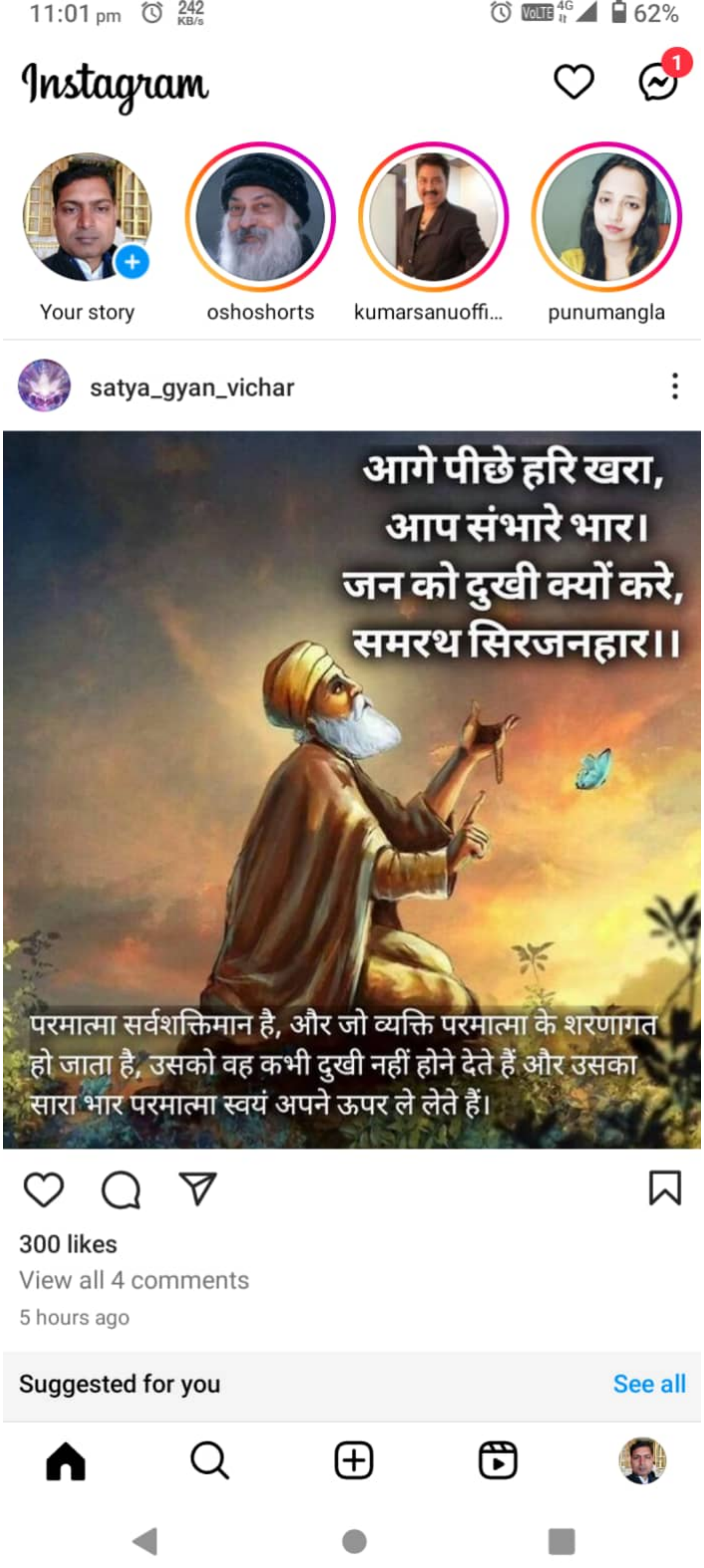
11:01 pm
242 KB/s
VoLTE 4G
62%
Instagram
1
Your story
oshoshorts
kumarsanuoffi...
punumangla
satya_gyan_vichar
आगे पीछे हरि खरा,
आप संभारे भार।
जन को दुखी क्यों करे,
समरथ सिरजनहार।।
परमात्मा सर्वशक्तिमान है, और जो व्यक्ति परमात्मा के शरणागत
हो जाता है, उसको वह कभी दुखी नहीं होने देते हैं और उसका
सारा भार परमात्मा स्वयं अपने ऊपर ले लेते हैं।
300 likes
View all 4 comments
5 hours ago
Suggested for you
See all

CamScanner

अस्तित्व से
संबंध जोड़ो।
मंदिरों से,
मस्जिदों से संबंध तोड़ो।
वृक्षो से,
फूलों से,
चांद-तारों से
संबंध जोड़ो।
क्योंकि वे
जीवंत परमात्मा है।
तुम मुर्दा मूर्तियों की
पूजा में संलग्न हो।

ओशो

अभी झरत, बिगसत कंवल

CS CamScanner

जागा हुआ आदमी कहता है:
संसार नहीं है,परमात्मा है।
सोया हुआ आदमी कहता है :
कहां है परमात्मा? संसार ही
संसार है।
ओशो Osho wisdom

CamScanner

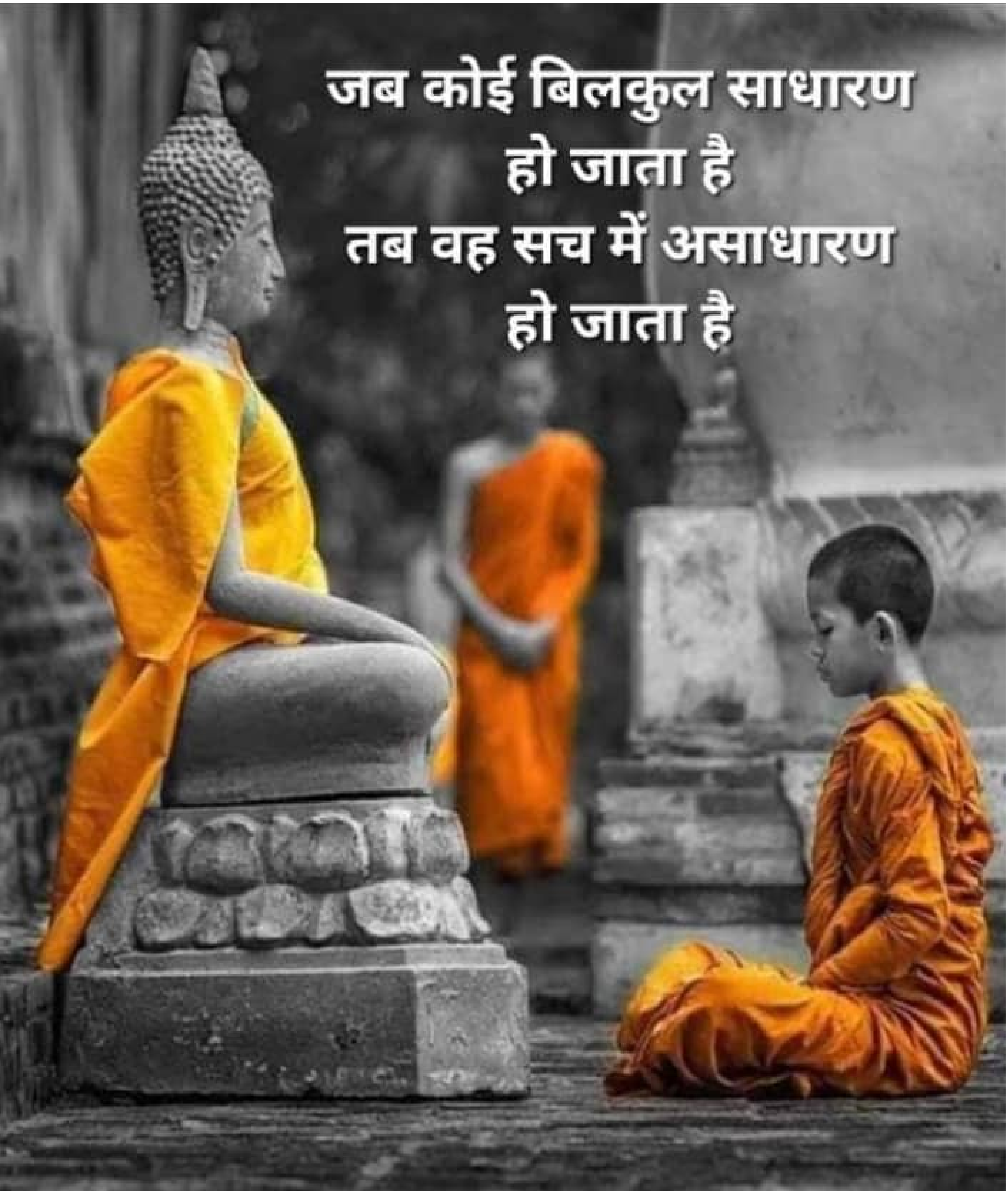

CamScanner

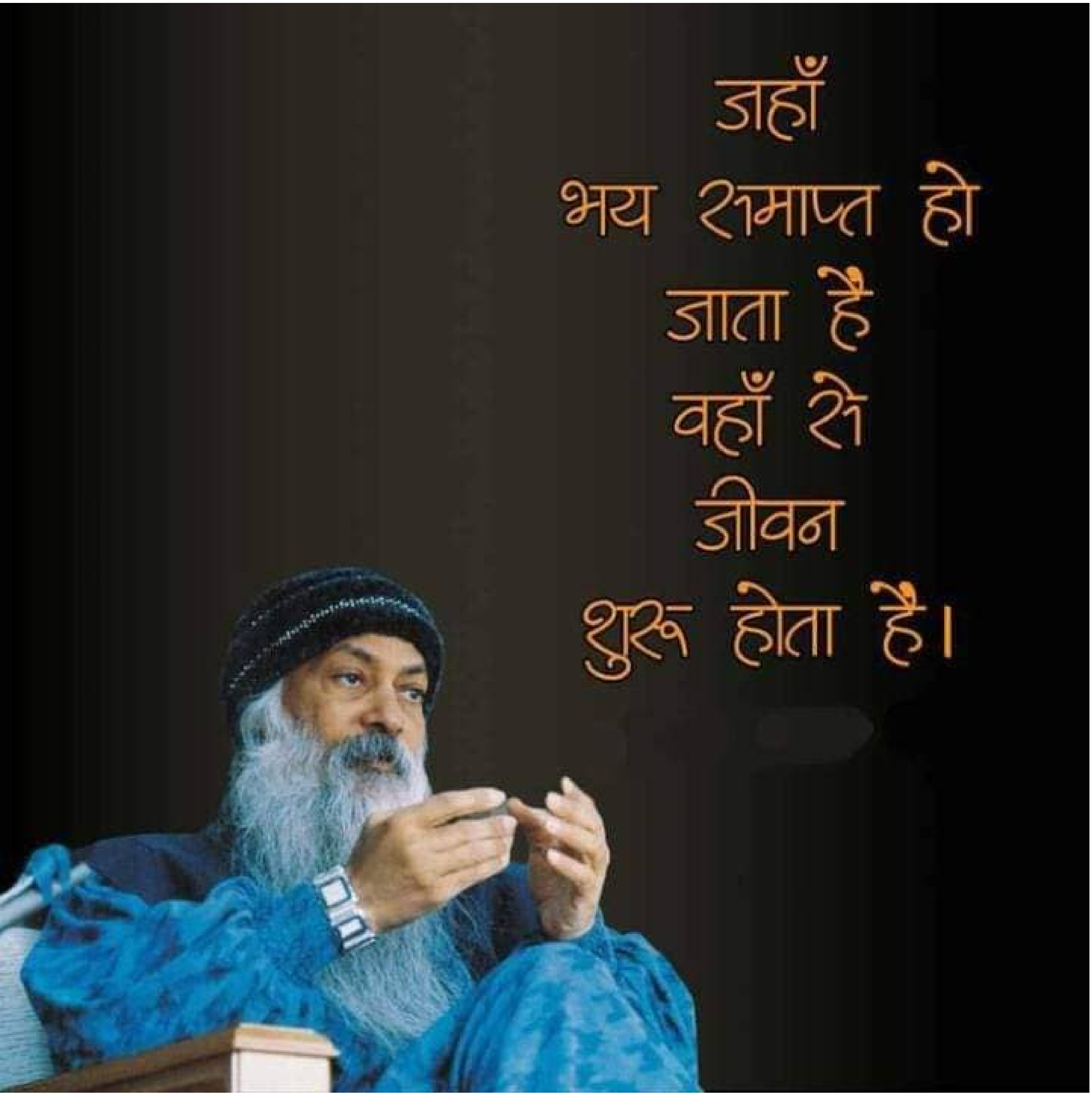

CamScanner

॥ गोविन्द-गोपालकी जय ॥
आप गहरा उतरकर सोचें कि
दुःख किसका नाम है ?
सुखकी इच्छाका नाम ही
दुःख है, और कोई
दुःख है ही नहीं ।
दुःख नामकी कोई
वस्तु नहीं है ।
www.swamiramsukhdasji.org
http://satcharcha.blogspot.com

CamScanner

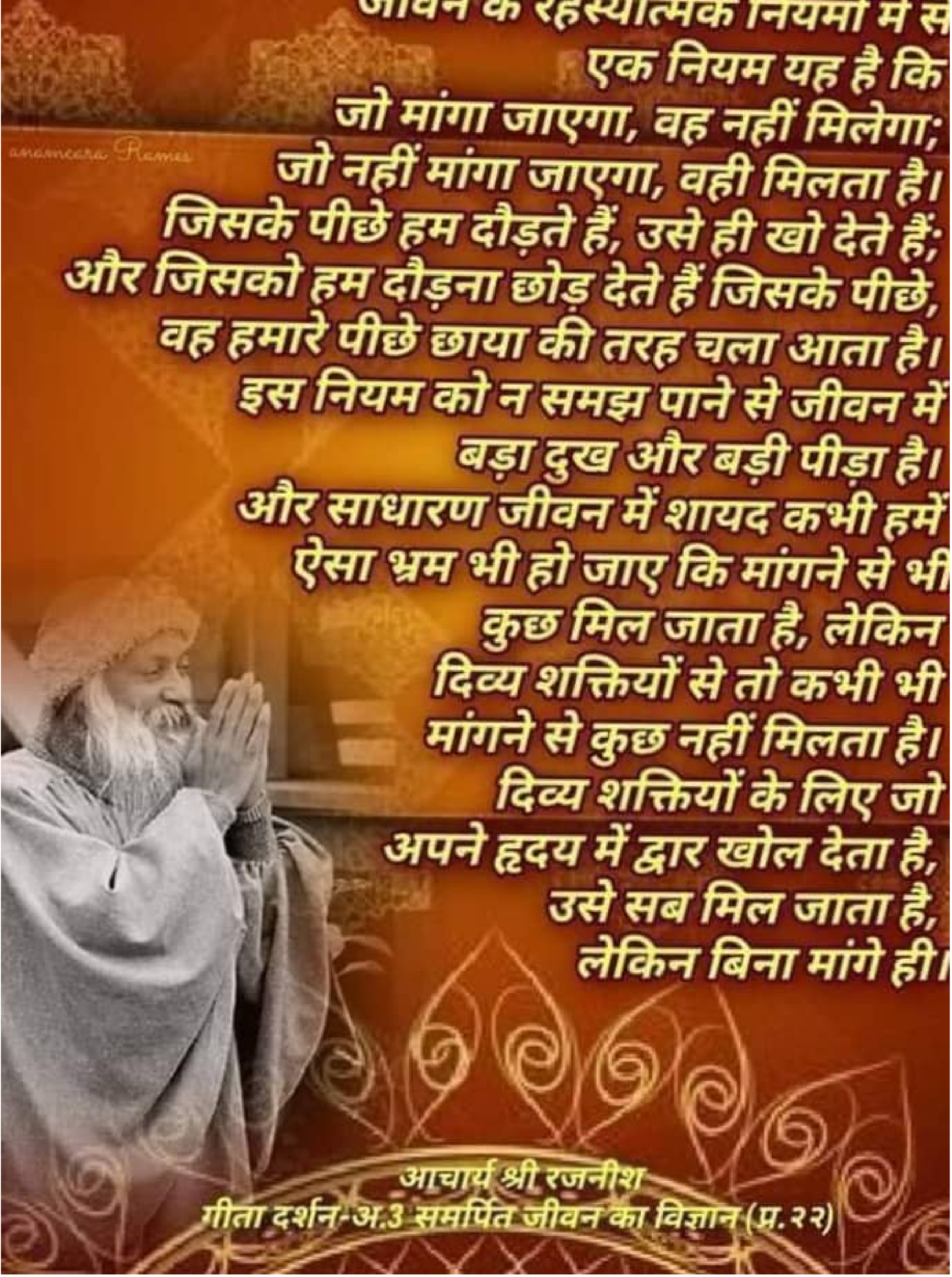
जीवन के रहस्यात्मक नियमों में से
एक नियम यह है कि
जो मांगा जाएगा, वह नहीं मिलेगा;
जो नहीं मांगा जाएगा, वही मिलता है।
जिसके पीछे हम दौड़ते हैं, उसे ही खो देते हैं;
और जिसको हम दौड़ना छोड़ देते हैं जिसके पीछे,
वह हमारे पीछे छाया की तरह चला आता है।
इस नियम को न समझ पाने से जीवन में
बड़ा दुख और बड़ी पीड़ा है।
और साधारण जीवन में शायद कभी हमें
ऐसा भ्रम भी हो जाए कि मांगने से भी
कुछ मिल जाता है, लेकिन
दिव्य शक्तियों से तो कभी भी
मांगने से कुछ नहीं मिलता है।
दिव्य शक्तियों के लिए जो
अपने हृदय में द्वार खोल देता है,
उसे सब मिल जाता है,
लेकिन बिना मांगे ही।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-अ.3 समर्पित जीवन का विज्ञान (प्र.२२)

CamScanner

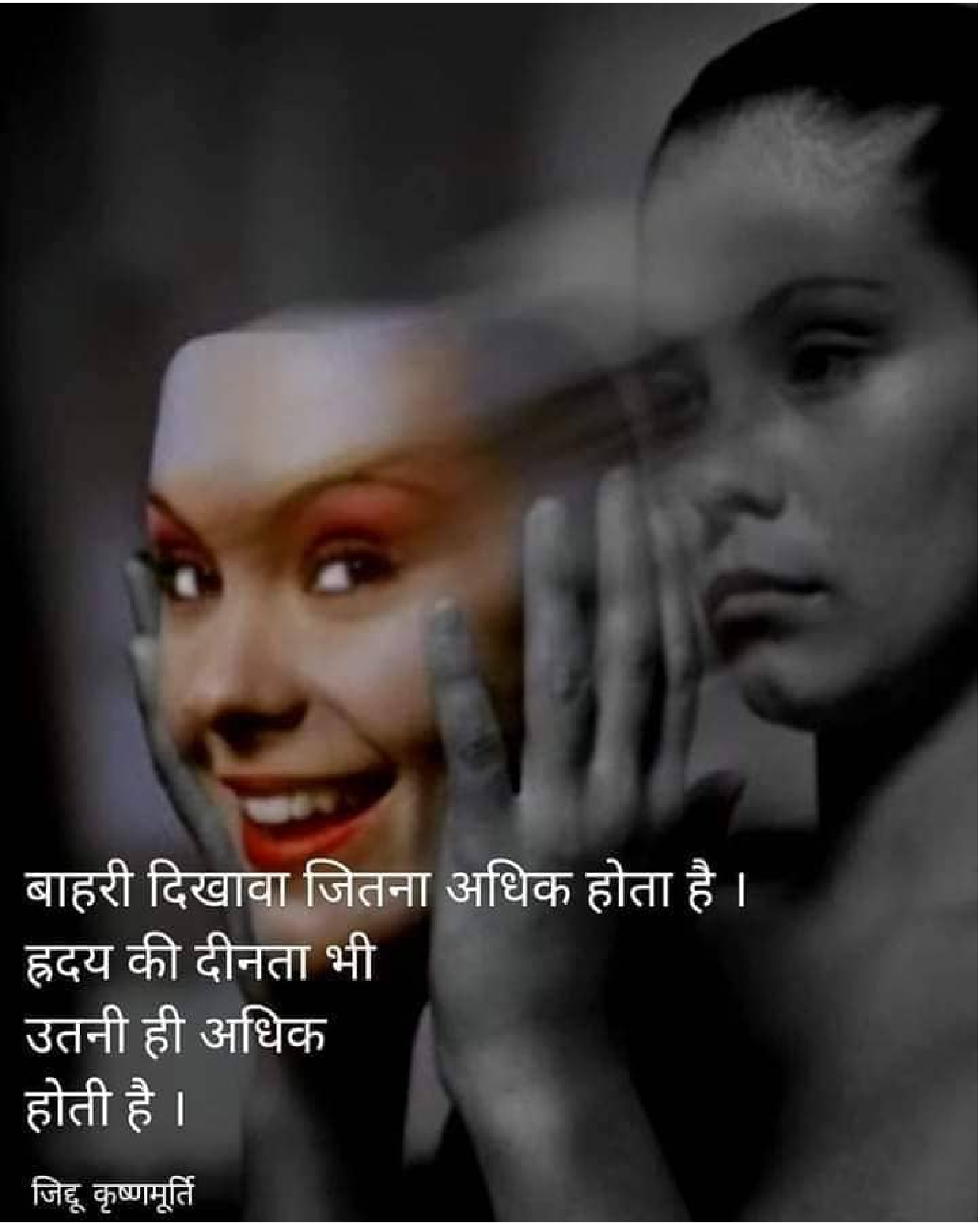

CamScanner

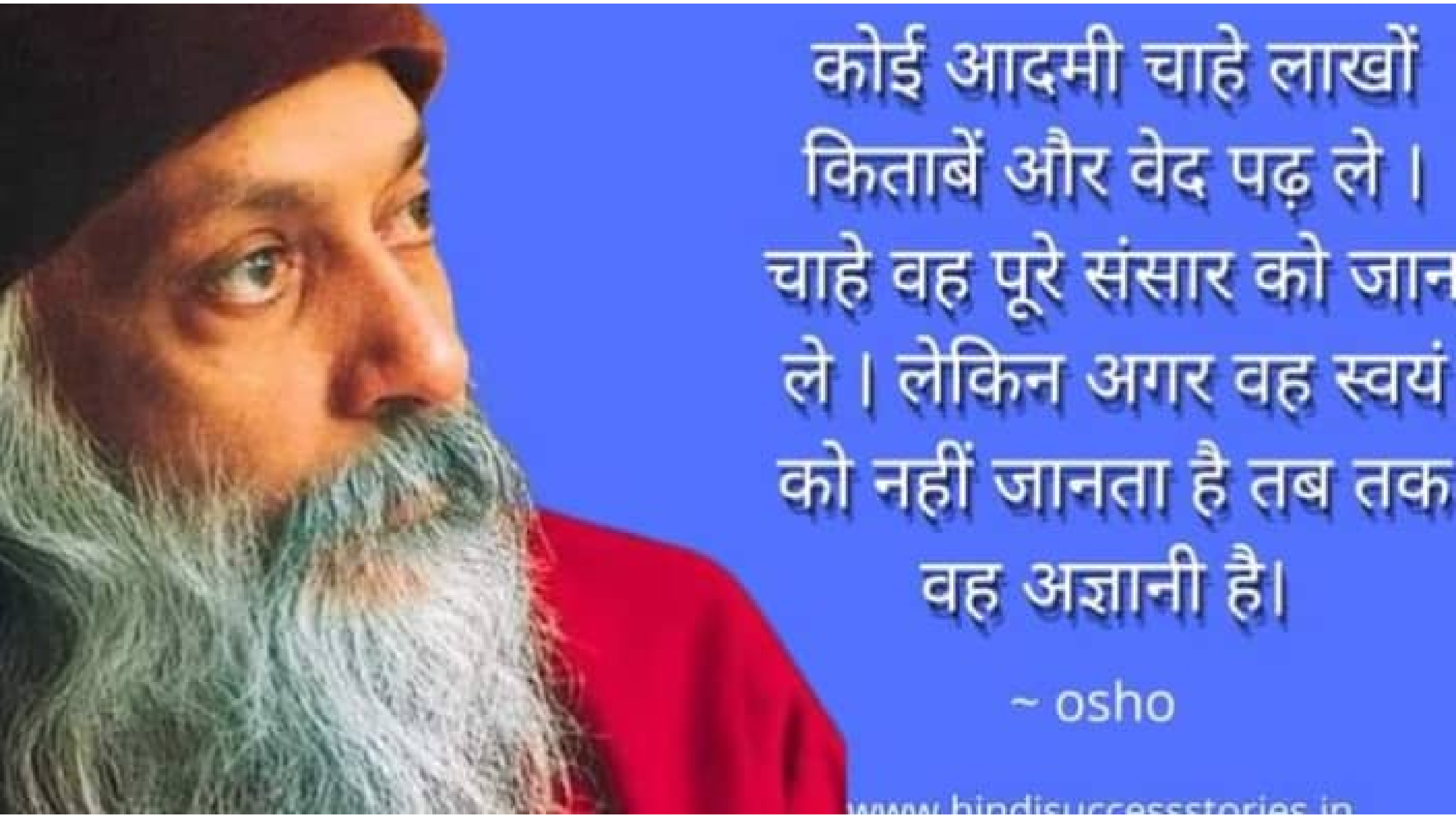
कोई आदमी चाहे लाखों
किताबें और वेद पढ़ ले ।
चाहे वह पूरे संसार को जान
ले । लेकिन अगर वह स्वयं
को नहीं जानता है तब तक
वह अज्ञानी है।
~ osho

CamScanner

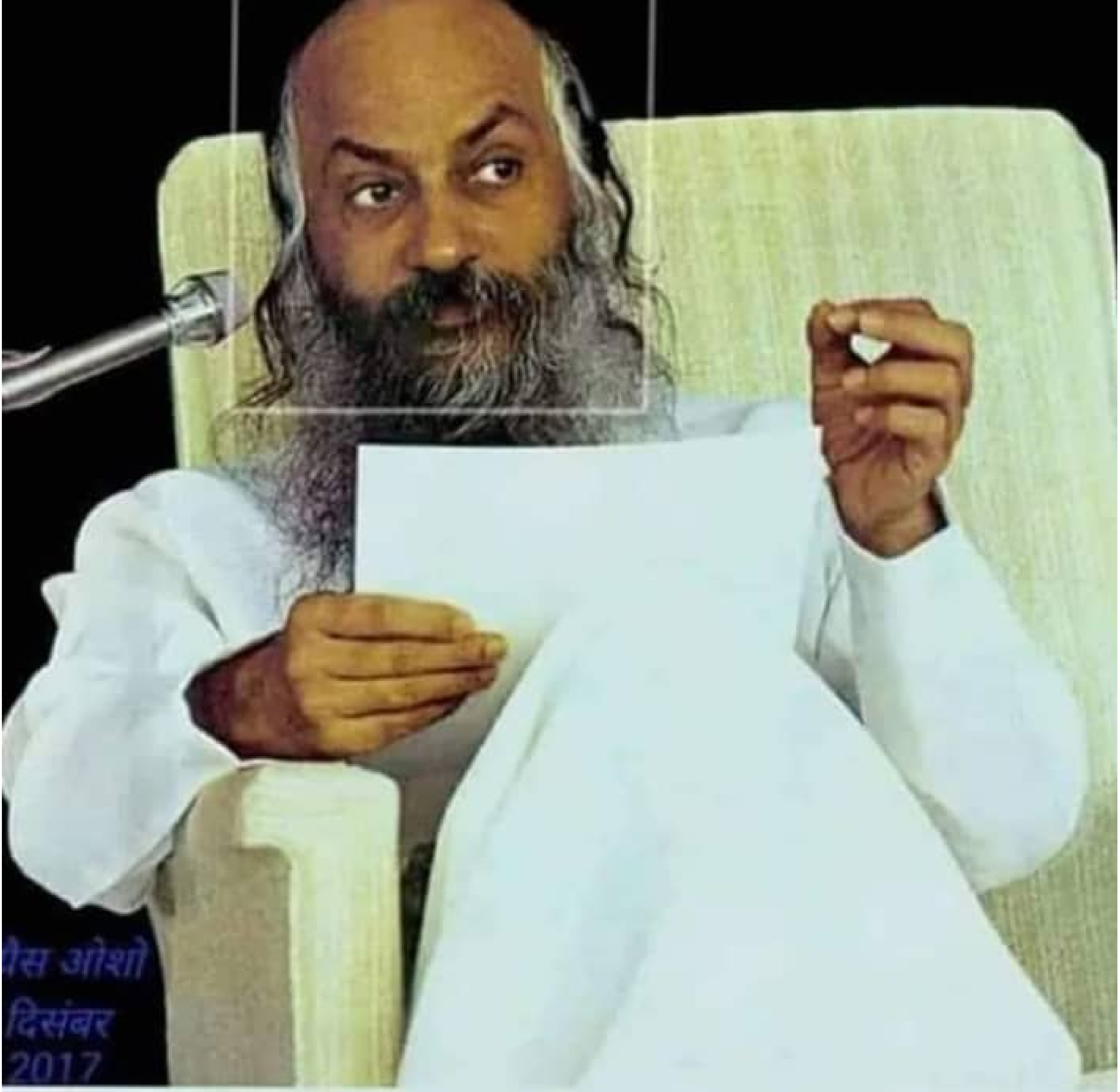

जो व्यक्ति चिंता की आखिरी घड़ियों से गुजर जाता है, अशांति के गहरे से गहरे पर्दों को पार कर जाता है, संताप की गहरी से गहरी वृष्टि को झेल लेता है, अंधेरे के गहन से गहन पर्दों में कूद जाता है, उसकी जिंदगी में प्रकाश का उदय सुनिश्चित है। ओशो

CS CamScanner

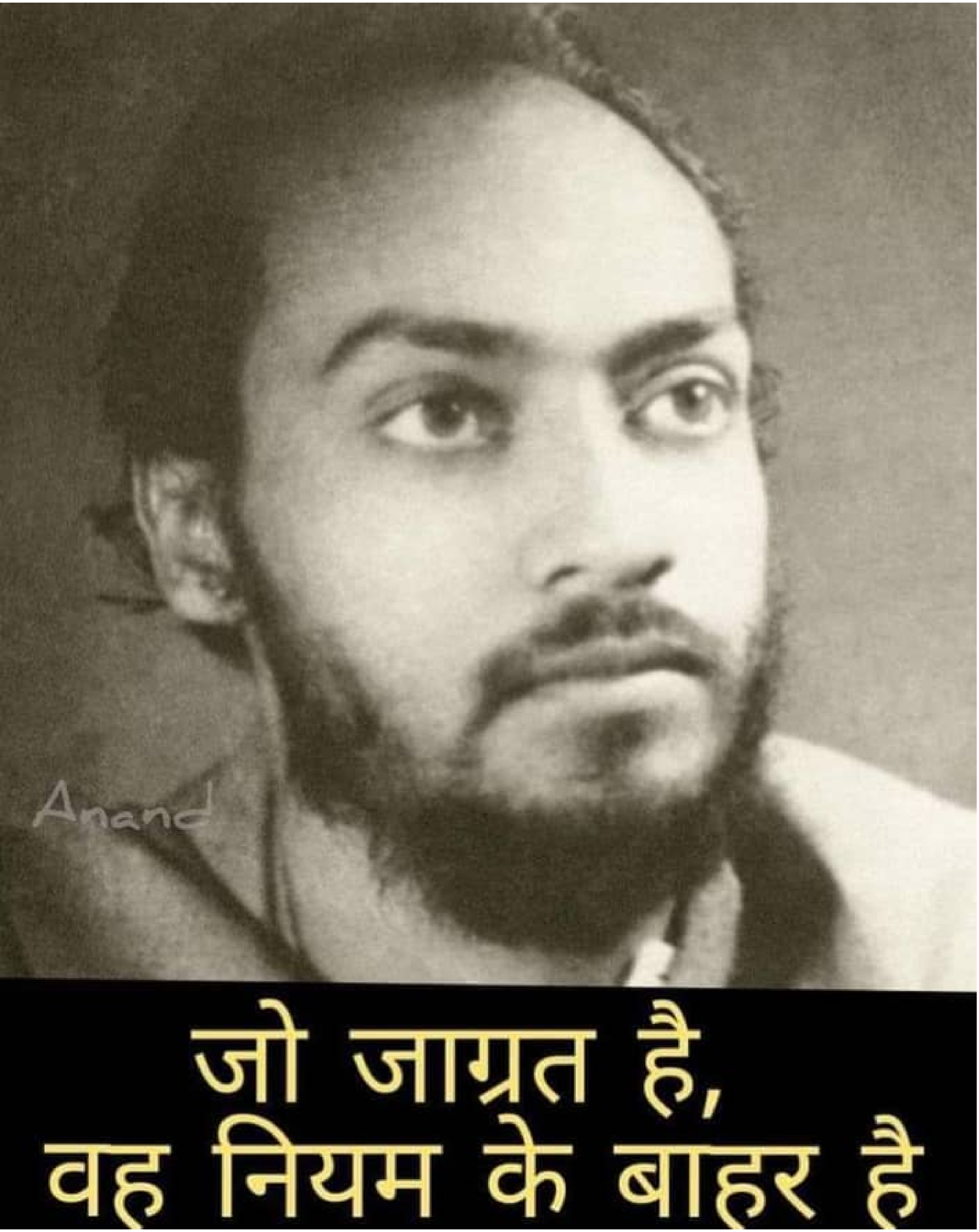

CamScanner

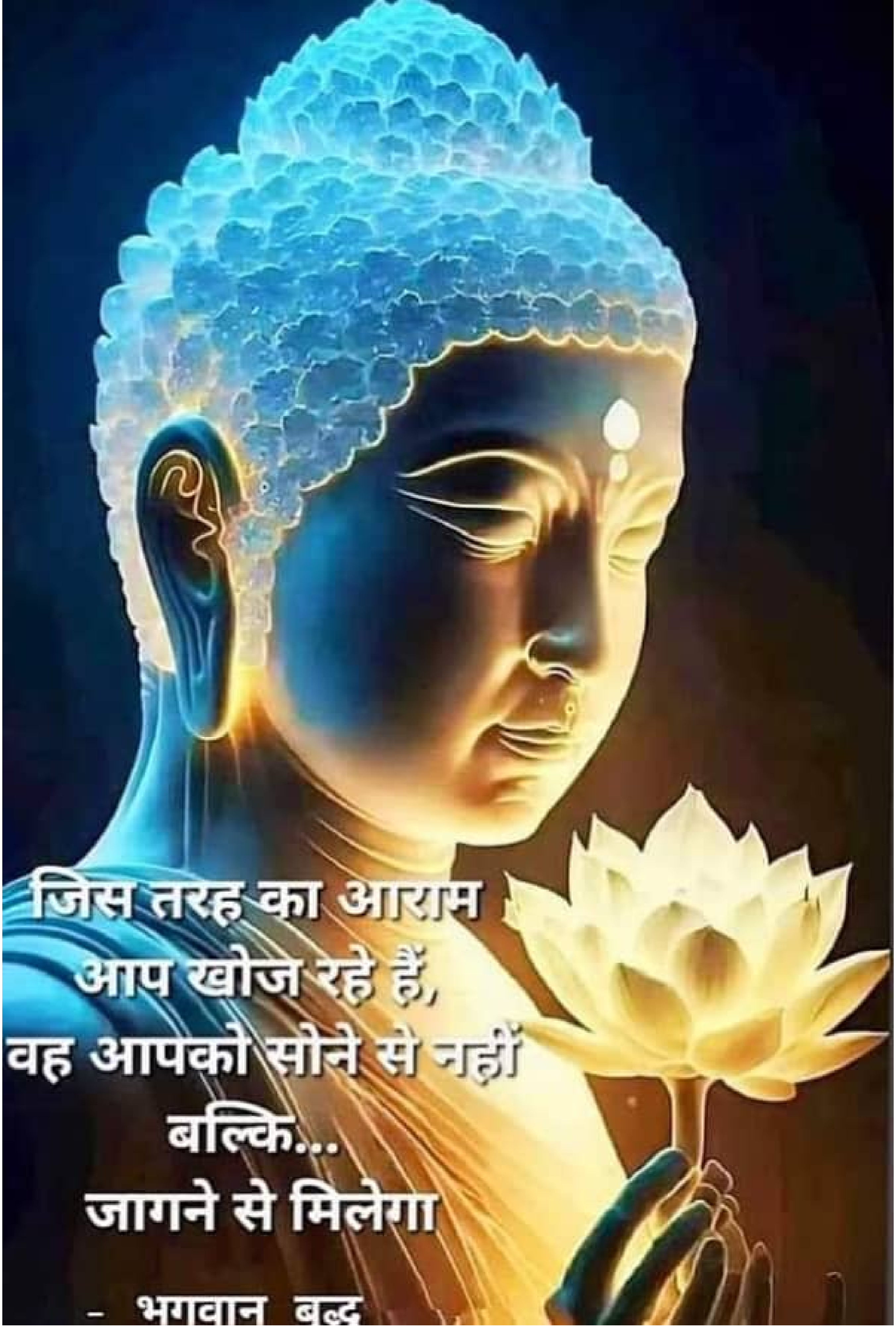

CamScanner

मैं तुमसे फिर कहता हूँ.
तुम ईश्वर हो।

जरा भी तुममें कमी नहीं है।
कहीं तलाशना नहीं, खोजना नहीं,
खोजनेवाले को ही पहचान लेना है।
खोजनेवाले में ही वह छिपा है
जिसे हम खोज रहे हैं।

ओशो मैं स्वागत हूं—(प्रवचन—अट्ठारहवां)

CamScanner

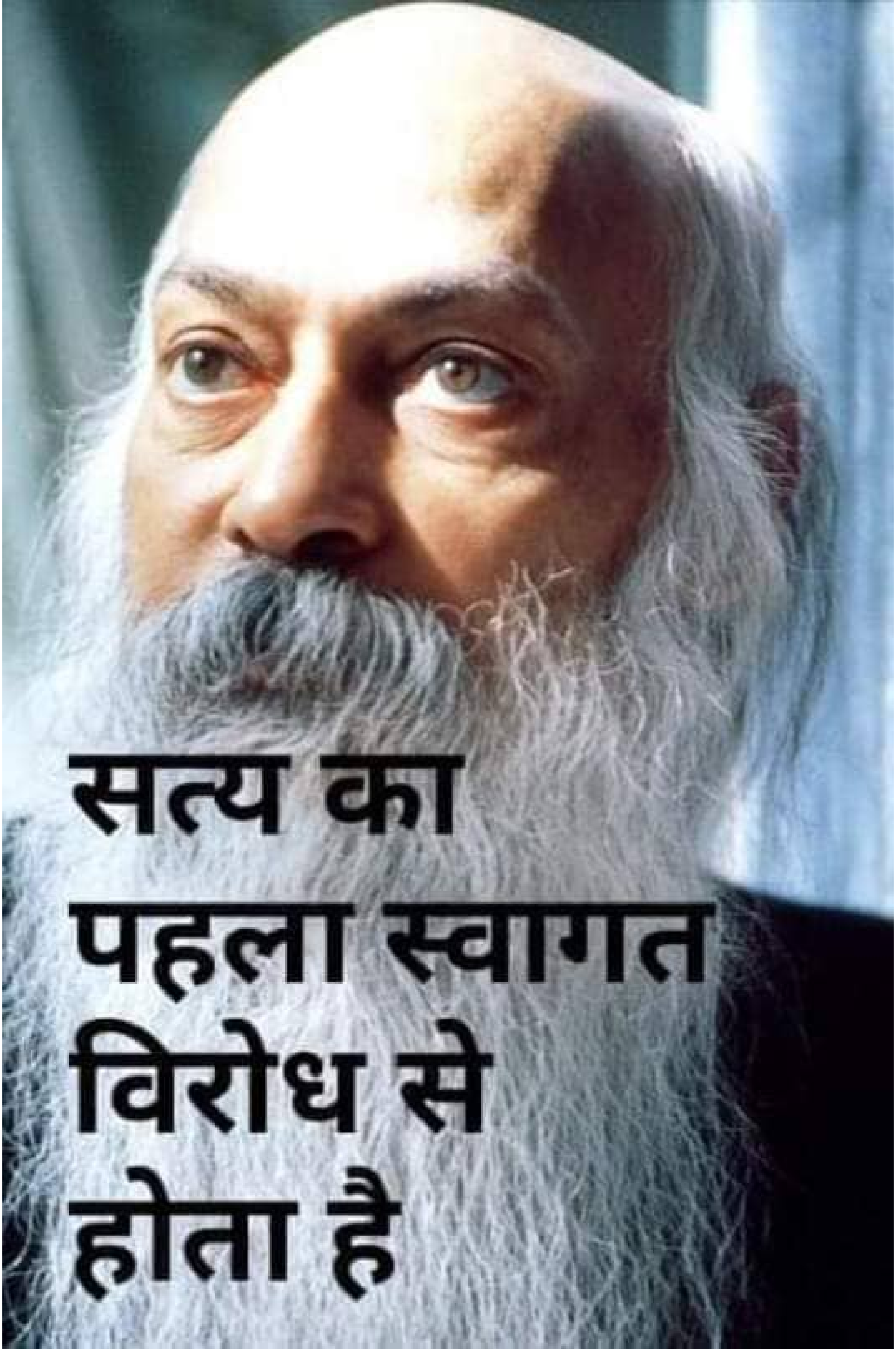

CamScanner

CamScanner

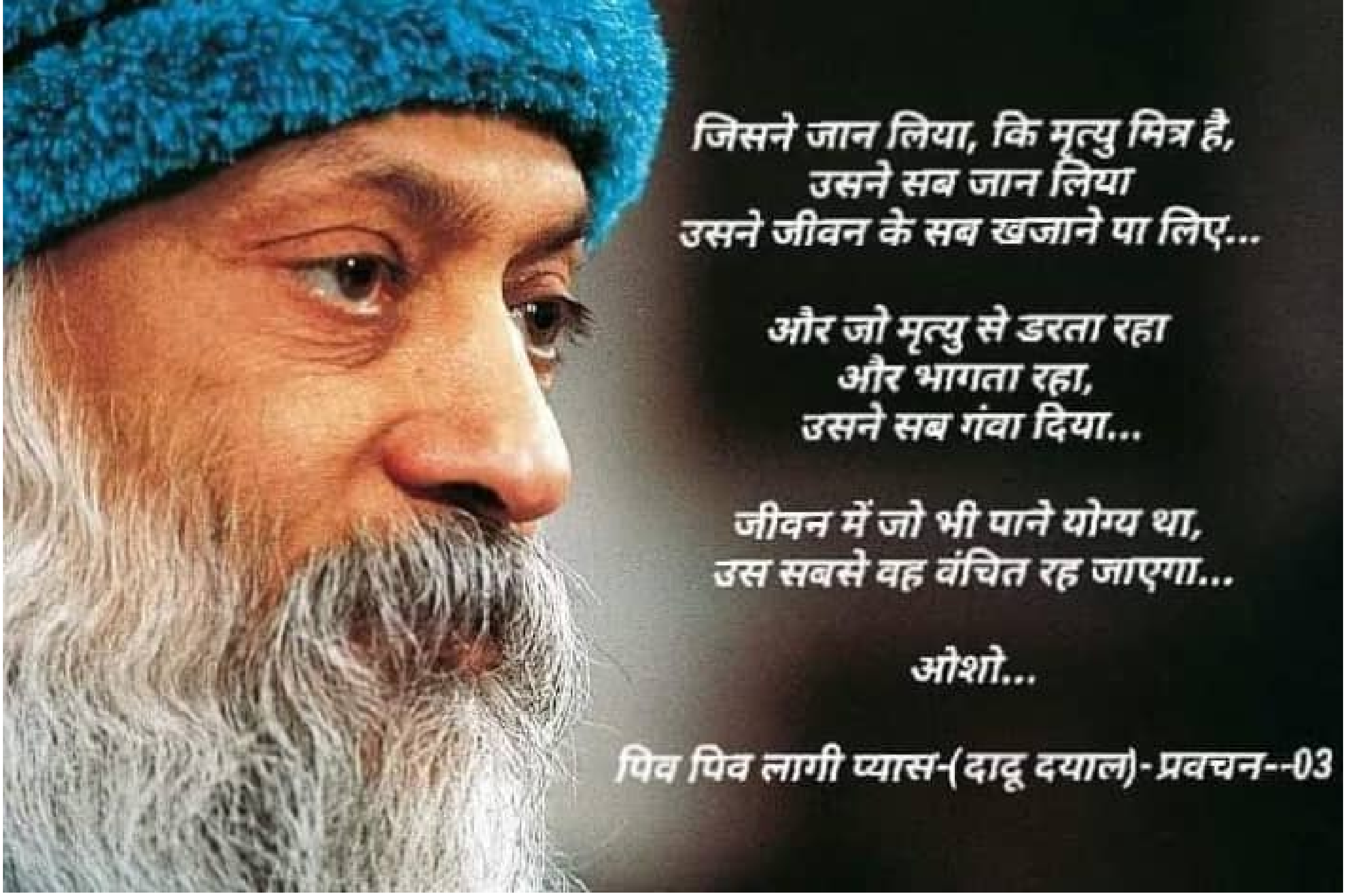
जिसने जान लिया, कि मृत्यु मित्र है,
उसने सब जान लिया
उसने जीवन के सब खजाने पा लिए...
और जो मृत्यु से डरता रहा
और भागता रहा,
उसने सब गंवा दिया...
जीवन में जो भी पाने योग्य था,
उस सबसे वह वंचित रह जाएगा...
ओशो...
पिव पिव लागी प्यास-(दादू दयाल)-प्रवचन--03

CamScanner

7:56 am 0 KB/s VoLTE 4G 68%

यह सुबह, यह वृक्षों में शांति, पक्षियों की चहचहाहट...
या कि हवाओं का वृक्षों से गुजरना, पहाड़ों का सन्नाटा... या कि नदियां का पहाड़ों से उतरना... या सागरों में लहरों की हलचल, नाद... या आकाश में बादलों की गड़गड़ाहट—यह सभी ओंकार है।

ओंकार का अर्थ है : सार—ध्वनि; समस्त ध्वनियों का सार। ओंकार कोई मंत्र नहीं, सभी छंदों में छिपी हुई आत्मा का नाम है। जहां भी गीत है, वहां ओंकार है। जहां भी वाणी है, वहां ओंकार है। जहां भी ध्वनि है, वहां ओंकार है।

और यह सारा जगत ध्वनियों से भरा है। इस जगत की उत्पत्ति ध्वनि में है। इस जगत का जीवन ध्वनि में है; और इस जगत का विसर्जन भी ध्वनि में है।

ओम से सब पैदा हुआ, ओम में सब जीता, ओम में सब एक दिन लीन हो जाता है। जो प्रारंभ है, वही अंत है। और जो प्रारंभ है और अंत है, वही मध्य भी है। मध्य अन्यथा कैसे होगा!

इंजील कहती है : प्रारंभ में ईश्वर था और ईश्वर शब्द के साथ था, और ईश्वर शब्द था, और फिर उसी शब्द से सब निष्पन्न हुआ। वह ओंकार की ही चर्चा है।

मैं बोलूं तो ओंकार है। तुम सुनो तो ओंकार है। हम मौन बैठें तो ओंकार है। जंहा लयबद्धता है, वहीं ओंकार है। सन्नाटे में भी—स्मरण रखना—जंहा कोई नाद नहीं पैदा होता, वहा भी छुपा हुआ नाद है। मौन का संगीत का संगीत शून्य का संगीत। जब तुम चुप हो, तब भी तो एक गीत झर—झर बहता है। जब वाणी निर्मित नहीं होती, तब भी तो सूक्ष्म में छंद बंधता है। अप्रकट है, अव्यक्त है; पर है तो सही। तो शून्य में भी और शब्द में भी ओंकार निमज्जित है।

ओंकार ऐसा है जैसे सागर। हम ऐसे हैं जैसे सागर की मछली।

इस ओकार को समझना। इस ओंकार को ठीक से समझा नहीं गया है।

ahobhav_
ओंकार का अर्थ है : सार - ध्वनि;
समस्त ध्वनियों का सार ओंकार
कोई मंत्र नहीं, सभी छंदों में छिपी हुई
आत्मा का नाम है। जहां भी गीत है,
वहां ओंकार है। जहां भी वाणी है,
वहां ओंकार है। जहां भी ध्वनि है,
वहां ओंकार है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

7:55 am 0 KB/s 4G 68%

Osho Thoughts
Munabai Makvana · 1d ·

कबीर का प्रसिद्ध वचन है : कस्तूरी कुंडल बसै, लेकिन इसमें भी बात पूरी समाती नहीं; इसमें भी कुछ छूट जाता है.
कबीर भी कहे तो, पर कह नहीं पाए. क्योंकि कस्तूरी और मृग में फासला है. कस्तूरी को मृग से अलग किया जा सकता है, किया जाता है. ऐसे ही तो कस्तूरी मिलती है.

लेकिन तुमको तुमसे अलग किया जा सकता नहीं. तुममें उतना भी फासला नहीं है अपने से, जितना कस्तूरी में और मृग में होता है.
और तुम जिसे खोज रहे हो, वह तुम ही हो. उतनी दूरी भी नहीं है.
खोजनेवाला ही खोज का लक्ष्य है.

इससे बड़ी मुश्किल है. अपने को ही देखने निकल पड़े हो. कौन देखेगा? वहां देखनेवाला और दृश्य अलग नहीं. वहां द्रष्टा और दृश्य अलग नहीं. वहां द्रष्टा और दृश्य एक है.

इस मौलिक सत्य को जब तक न समझ लो तब तक भटकाव ही भटकाव है. इसीलिए तो आदमी खोजता फिरता है, और तलाश एक है, खोज एक है--वही शाश्वत खोज; मैं कौन हूं..

आदमी जानना चाहता है. क्योंकि जब तक जान न ले कि मैं कौन हूं, जिए कैसे, किस अर्थ जीए, किस प्रयोजन जीए?
और बिना स्वयं को जाने जैसे भी जीएगा, उस जीने में भूल होगी, भ्रांति होगी.

ओशो - साहिब मिल साहिब भये

मैं बहुत चमत्कृत हो जाता हूं यह देखकर कि लोग जाकर मंदिरों में झुक जाते है, जो आकाश को तारों से भरा देखकर नहीं झुकते। इनका मंदिर में झुकना

CS CamScanner

मैं बहुत चमत्कृत हो जाता हूं यह देखकर कि लोग जाकर मंदिरों में झुक जाते है, जो आकाश को तारों से भरा देखकर नहीं झुकते। इनका मंदिर में झुकना झूठा होगा, निश्चित झूठा होगा। इसमें हार्दिकता नहीं हो सकती। आदमी की बनाई हुई मूर्ति में इन्हें क्या दिखाई पड़ सकता है ? आदतवश झुक जाते होंगे। बचपन से झुकाए गए होंगे इसलिए झुक जाते होंगे मां - बाप ने कहा होगा, झुको, इसलिए झुक जाते होंगे, भय के कारण झुक जाते होंगे – कि कहीं नरक न हो, कहीं दंड न मिले। या लोभ के कारण झुक जाते होंगे कि झुकने से स्वर्ग मिलेगा, पुरस्कार मिलेंगे।

लोग अपने भय, कमजोरी, नपुंसकता के कारण झुक जाते हैं और समझ लेते हैं कि हम खुदा के सामने झुक रहे हैं।

अज्ञान है; तुमने प्रार्थना समझी है उसे ? वहां प्रार्थना बिल्कुल नहीं है, प्रेम बिल्कुल नहीं है। सरासर झूठ है। क्यों ?

क्योंकि अगर आंखों में प्रेम होता तो इन पास खड़े वृक्षों के पास तुम्हारे झुकने का मन न होता ? कोयल कूकती और तुम न झुकते ? मोर नाचता और तुम न झुकते ? आकाश बादलों से भर जाता और तुम न झुकते ? चांदनी के फूल झर - झर झरते और तुम न झुकते ? कोई हंसता और तुम न झुकते ? मिट्टी में और हंसी ? किस चमत्कार की प्रतीक्षा कर रहे हो ? उसके चरण - कमल प्रत्येक पल हैं, प्रत्येक स्थल पर हैं। एक - एक रेत के दाने पर उसके हस्ताक्षर हैं, लेकिन संवेदनशीलता चाहिए।

ओशो

(नाम सुमिर मन बावरे, प्रवचन #9)

Last modified: 18:37

CS CamScanner

CamScanner

अब तक जमीन पर आदमी ऐसा मंदिर
नहीं बना पाया जो सबका हो।
और जो मंदिर सबका नहीं है वह
परमात्मा का कैसे हो सकेगा?
सफेद चमड़ी के लोगों के मंदिर हैं, काली
चमड़ी के लोगों के मंदिर हैं; हिंदुओं के मंदिर
हैं, मुसलमानों के मंदिर हैं; जैनों के मंदिर हैं,
बौद्धों के मंदिर हैं; ब्राह्मणों के मंदिर हैं, शूद्रों
के मंदिर हैं; लेकिन,
मनुष्य का कोई मंदिर नहीं।
Osho.
Narmada.
ओशो.

CamScanner

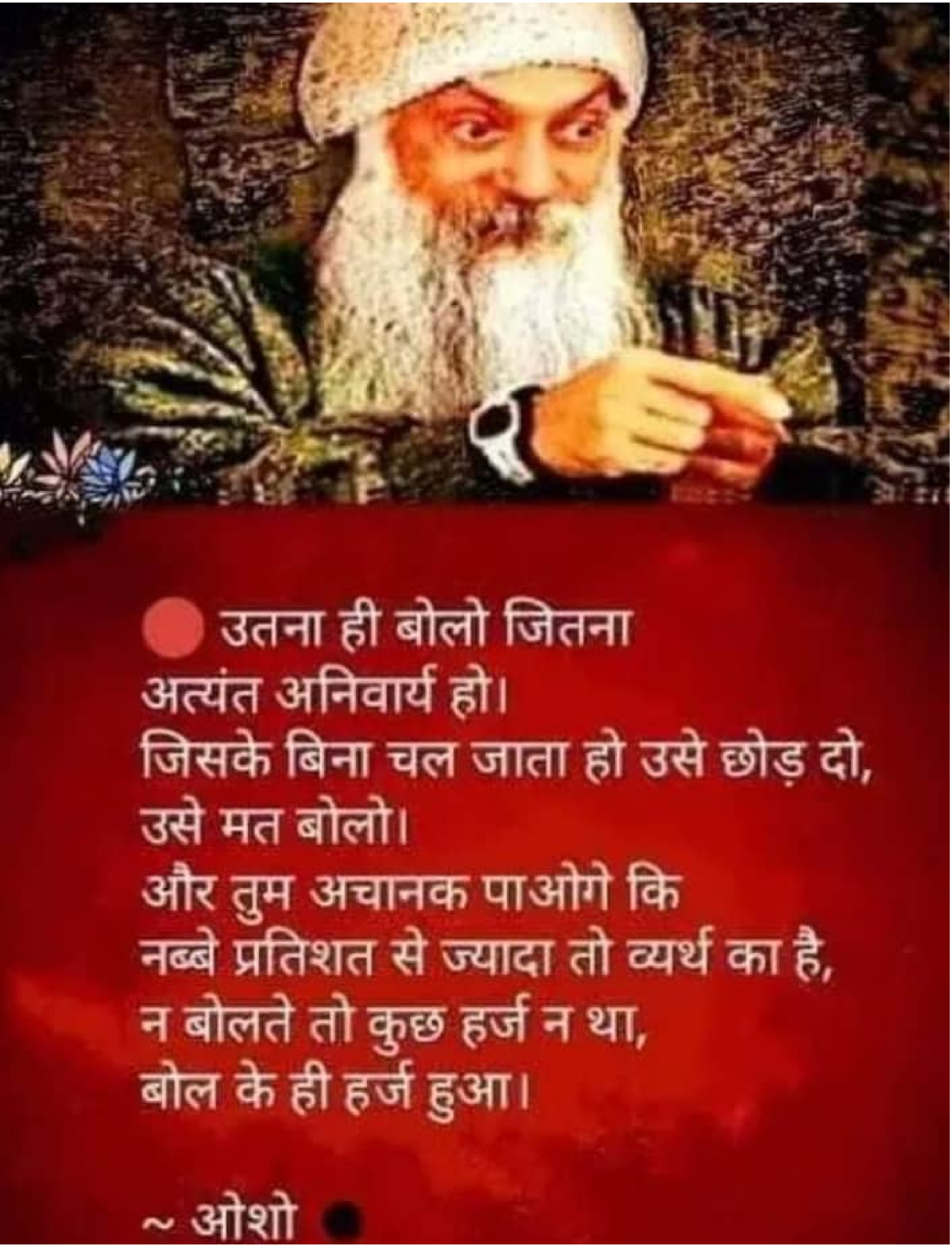
उतना ही बोलो जितना
अत्यंत अनिवार्य हो।
जिसके बिना चल जाता हो उसे छोड़ दो,
उसे मत बोलो।
और तुम अचानक पाओगे कि
नब्बे प्रतिशत से ज्यादा तो व्यर्थ का है,
न बोलते तो कुछ हर्ज न था,
बोल के ही हर्ज हुआ।
~ ओशो

CamScanner

7:51 am 2 KB/s VoLTE 4G 69%

बंद नहीं होगा।" दूसरे ऋषि ने भी आंख बंद कर ली।

आंख जब तक खुली थी तब तक उर्वशी एक वस्त्र पहने हुई थी। आंख बंद करते ही ऋषि ने पाया वह वस्त्र भी गिर गया। स्वाभाविक है, चित्त जिस चीज से भयभीत होता है उसी में ग्रसित हो जाता है। चित्त जिस चीज को निषेध करता है, उसी में आकर्षित हो जाता है। फिर उर्वशी का नृत्य और आगे चला, उसने सारे वस्त्र फेंक दिए, वह नग्न हो गई। फिर उसके पास फेंकने को कुछ भी न बचा। वह तीसरा ऋषि बोला, "उर्वशी, और भी कुछ फेंकने को हो तो फेंक दो, मैं आज पूरा ही देखने को तैयार हूँ। अब तो अपनी इस चमड़ी को भी फेंक दे, ताकि मैं और भी देख लूं कि और आगे क्या है ?" उर्वशी ने कहा, "मैं हार गई आपसे।" वह पैरों पर गिर पड़ी उस ऋषि के, उसने कहा, "अब मेरे पास फेंकने को कुछ भी नहीं है। मैं हार गई क्योंकि आप अंत तक देखने को तैयार हो गए। दो ऋषि हार गए, क्योंकि बीच में ही उन्होंने आंख बंद कर ली। मैं हार गई, अब मेरे पास फेंकने को कुछ भी नहीं, और जिसने मुझे नग्न जान लिया, अब उसके चित्त में जानने को भी कुछ शेष न रहा। उसका चित्त मुक्त ही हो गया।"

चित्त का निरीक्षण करना है पूरा। मन के भीतर जो भी उर्वशियां हैं, मन के भीतर जो भी वृत्तियों की अप्सराएं हैं, चाहे काम की, चाहे क्रोध की, चाहे लोभ की, चाहे मोह की, उन सबको पूरी नग्नता में देख लेना है। उनका एक एक वस्त्र उतार कर देख लेना है। आंख बंद करके भागना नहीं है। एस्केप नहीं है, पलायन नहीं है जीवन की साधना, जीवन की साधना है पूरी खुली आंखों से चित्त का दर्शन। और जिस दिन कोई व्यक्ति अपने चित्त के सब वस्त्रों को उतार कर चित्त की पूरी नग्नता में, पूरी नेकेडनेस में, पूरी अग्लीनेस में, चित्त की पूरी कुरूपता में पूरी आंख खोल कर देखने को राजी हो जाता है, उसी दिन चित्त की उर्वशी पैरों पर गिर पड़ती है और कहती है मुझे क्षमा करें, मैं हार गई हूँ। अब आगे जानने को कुछ भी नहीं है।

चित्त की पूरी जानकारी, चित्त का पूरा ज्ञान चित्त से मुक्ति बन जाता है।

🌹🌹ओशो 🌹🌹
संकलन-रामजी 🙏🌹🌹

CS CamScanner

CamScanner

7:47 am 0 KB/s VoLTE 4G 70%

तुम उसकी खोल को चोट पहुंचाओगे तो उसकी गिरी टूट जायगी। फिर एक सुखा नारियल है। सूखे नारियल और कच्चे नारियल में फर्क ही क्या है? एक छोटा सा फर्क है कि सूखे नारियल की गिरी सिकुड़ गई है भीतर और खोल से अलग हो गई है। गिरी और खोल के बीच में एक फासला, एक डिस्टेंस हो गया है।

एक दूरी हो गई है। अब तुम कहते हो कि इसकी हम खोल तोड़ देंगे तो गिरी बच सकती है। तो मैंने तुम्हारे सवाल का जवाब दे दिया।
मैं फिर भी नहीं समझा, आपने जो कहा है। तब बाबा फरीद ने कहा जाओ मरो और समझो। इसके बिना तुम समझ नहीं सकते। लेकिन तब भी तुम समझ नहीं पाओगे, क्योंकि तब तुम बेहोश हो जाओगे।

खोल और गिरी एक दिन अलग होंगे,लेकिन तब तुम बेहोश हो जाओगे। अगर समझना है तो अभी खोल और गिरी को अलग करना सिख लो। अभी मैं भी जिंदा हूं। और अगर खोल और गिरी अलग हो गये तो समझना मोत खत्म हो गई। वह फासला पैदा होते ही हम जानते है कि खोल अलग,गिरी अलग।

अब खोल टूट जायेगी तो भी में बचूंगा। तो भी मेरे टूटने का कोई सवाल नहीं है, मेरे मिटने का कोई सवाल नहीं है। मृत्यु घटित होगी, तो भी मेरे भीतर प्रवेश नहीं कर सकेगी। मेरे बाहर ही घटित होगी। यानी वही मरेगा जो मैं नहीं हूं, जो मैं हूं वह बच जायेगा।ध्यान या समाधि का यही अर्थ है कि हम अपनी खोल और गिरी को अलग करना सीख जाएं। वे अलग हो सकते है।

क्योंकि वे अलग है, वे अलग-अलग जाने जा सकते है। दोनों का स्वभाव भिन्न है ये कुदरत का एक चमत्कार ही है कि दोनों कैसे मिले है। एक सूक्ष्म है एक स्थूल है।इसलिए ध्यान को मैं कहता हूं, स्वेच्छा से मृत्यु में प्रवेश, " वालेंटरी एन्ट्रेंस इनटू डेथ " -
अपनी ही इच्छा से मौत में प्रवेश। और जो आदमी अपनी इच्छा से मौत में प्रवेश कर जाता है, वह मौत का साक्षात्कार कर लेता है। कि यह रही मौत और मैं अभी भी हूं।

ओशो🌴🌴🌴🌴🌴

CamScanner

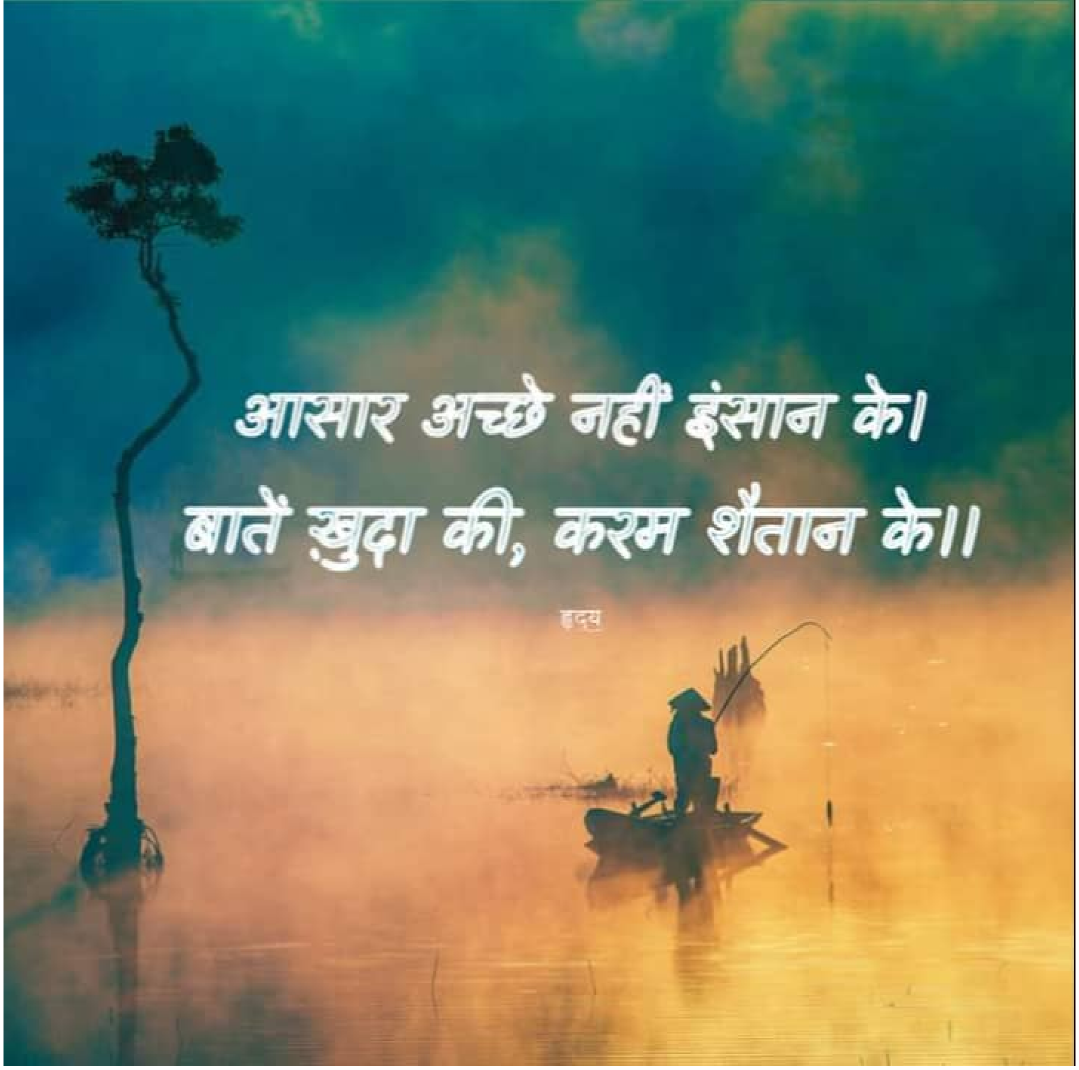

CamScanner

CS CamScanner

मुझे कहा कि यह बच्चा मेरे पास बैठा रहे तो कोई हर्ज तो नहीं हैं?

मैंने कहा, कोई हर्ज नहीं है। अच्छा ही है कि आता है वे मित्र ध्यान करते थे, वह बच्चा भी उनके पास बैठकर ध्यान करने लगा। पिता तो बहुत गहरी गति नहीं कर पाये, लेकिन वह छोटा बच्चा बहुत गति कर गया। चार दिन उनको आना था, चार दिन बाद तो वह नहीं आये, पन्द्रह दिन बाद बहुत घबराये हुए आये और उन्होंने कहा कि आपने बच्चे को क्या कर दिया? उसे बुलाइऐ, हम नहीं चाहते कि वह ध्यान में जाये। मैंने पूछा क्या हुआ? उन्होंने कहा अजीब अजीब बातें होने लगी हैं। वह और उनकी पत्नी दरवाजा बन्द करके ताला लगा के, बच्चे को भीतर करके कि तुम घर में खेलना और हम किसी पड़ोसी के घर जा रहे हैं। जब वे लौटे तो बच्चा खिड़की पर खड़ा था और उसने कहा कि झूठ बोले, आप सिनेमा देखकर आ गये, आप मैटिनी शो में गये थे। तो मैटिनी शो में ही थे, बच्चे को धोखा देकर गये थे पर वे हैरान हुए। उन्होंने कहा तुम्हें पता कैसे चला? उसने कहा कुछ नहीं, जब कोई घर में नहीं था तो ध्यान करने बैठ गया और मुझे दिखाई पड़ा कि आप दोनों सिनेमा में बैठे हुए हैं। तो उन्होने कहा कि हम नहीं चाहते कि इस बच्चे में इस तरह की बात विकसित हो। लेकिन बेईमान बाप का मन हम नहीं चाहते, इसको हम नहीं चाहते कि ध्यान वगैरह हो, उपद्रव हो जायेगा!

आश्चर्यजनक लगता है, लेकिन ऐसा ही है। अगर आपके घर भी बच्चा इस तरह की बातें देखने लगे तो आप भी कहेंगे कि बस, बन्द क्योंकि आप लड़के को समझाते हैं कि सिगरेट मत पीना और खुद पीते हैं। वह लड़का कल कहेगा, कैसी बात कह रहे हैं पिताजी। आप मुझको रोकते है कि सिनेमा नहीं जाना और खुद जाते हैं। वह लड़का कल कहेगा कि कैसी बातें कह रहे हैं? जो आपने रोका हैं, वह सब आपने किया हैं तो आप बच्चों में प्रतिभाएं विकसित न होने देंगे। इसलिए पूरी मनुष्यता यौगिक विकास की खिलाफत में षड्यन्त्र करती रही है, जिसका हमें पता नहीं है। हम इन बातों को दबाने की कोशिश करेंगे और जब सारा समाज उनको दबायेगा और विकास का मौका न देगा।

आप थोड़ा सोचे यूनिवर्सिटीज बन्द कर दी जायें, कॉलेज और सब स्कूल बन्द कर दिये जायें तो दुनिया में कितने लोग गणित जानेंगे? अगर दो हजार साल तक सब शिक्षा का काम बन्द कर दिया जायें तो दो हजार

CamScanner

प्रदर्शन हो चुका है।

उसके हाथ भीतर पहुँच जायेंगे, उसकी आँखें बन्द ही रहेंगी। वह आपके भीतर, खुले पेट के भीतर आपके अपेण्डिक्स को पकड़ेगा, हाथ से ही वापस खींचकर बाहर निकाल देगा, तोड़ के बाहर रख देगा। दोनों हाथ आपके पेट पर वापस फेरेगा, आपकी कटी हुई चमड़ी वापस जुड़ जायेगी। और दो दिन के बाद कोई निशान भी देखने को नहीं मिलेंगे कि पेट को कोई काटा गया था! अब ऐसे आदमी की कीमत होनी चाहिए, लेकिन इण्डोनेशिया की सरकार उसके खिलाफ मुकदमा चला रही है और मेडिकल एसोसिएशन ने उसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा दायर किया है कि उस आदमी के पास सर्जरी का लायसेन्स नहीं हे, वह सर्जरी कैसे कर सकता है?

आदमी के पागलपन का कोई हिसाब है? क्योंकि उसके पास किसी मेड़िकल कॉलेज का सर्टिफिकेट नहीं है, वह एम.डी. नहीं है तो वह सर्जरी कैसे कर सकता है? और अदालत तो उसके खिलाफ वक्तव्य देगी, क्योंकि कानून तो सदा से अन्धा है।

उस आदमी को सरकार ने हुक्म दिया है कि वह अब कहीं भी सर्जरी नहीं कर सकता। इस आदमी के पास पच्चीस मित्रों का एक समूह है। वे सब प्रार्थना और ध्यान करने वाले लोग हैं। उनसे पूछा जाता है तो वे कुछ भी नहीं बता सकते। वे कहते हैं कि हम कुछ भी नही जानते। हम परमात्मा के हाथ में छोड़ देते हैं। वह जो हमसे काम करवाता है, वह हम कर देते हैं। हम कुछ भी नहीं करते। लेकिन अगर यह आदमी बढ़ जाए तो मेडिकल प्रोफेशन का क्या होगा, सर्जन्स का क्या होगा? वह उसके खिलाफ उपद्रव करेंगे। वे इसको जालसाजी में फंसायेंगे। यह गरीब आदमी है, सीधा-सादा आदमी है। उनके उपद्रव से परेशान होकर हाथ जोड़ लेगा कि ठीक है। मैं कुछ भी नहीं करता, माफी मांगे लेता हूँ।

इस दुनिया में बहुत बार बहुत से चमत्मार घटित हुए हैं हमने उन्हें बन्द किया है। और हमने सदा ऐसी व्यवस्था की है कि इस तरह की बातें न हो जायें, क्योंकि इन बातों के कारण हमारे जो एस्टेब्लिशमेण्ट होते हें, हमारी जो व्यवस्थित संस्थाएं होती हैं, सब दिक्कत में पड़ जाती हैं। पड़ ही जायेंगी, क्योंकि उन सबका क्या होगा? और फिर इन सब चीजों के आधार पर, जिनको हम बहुत वैज्ञानिकता कहते हैं, साइण्टिफिक

CamScanner

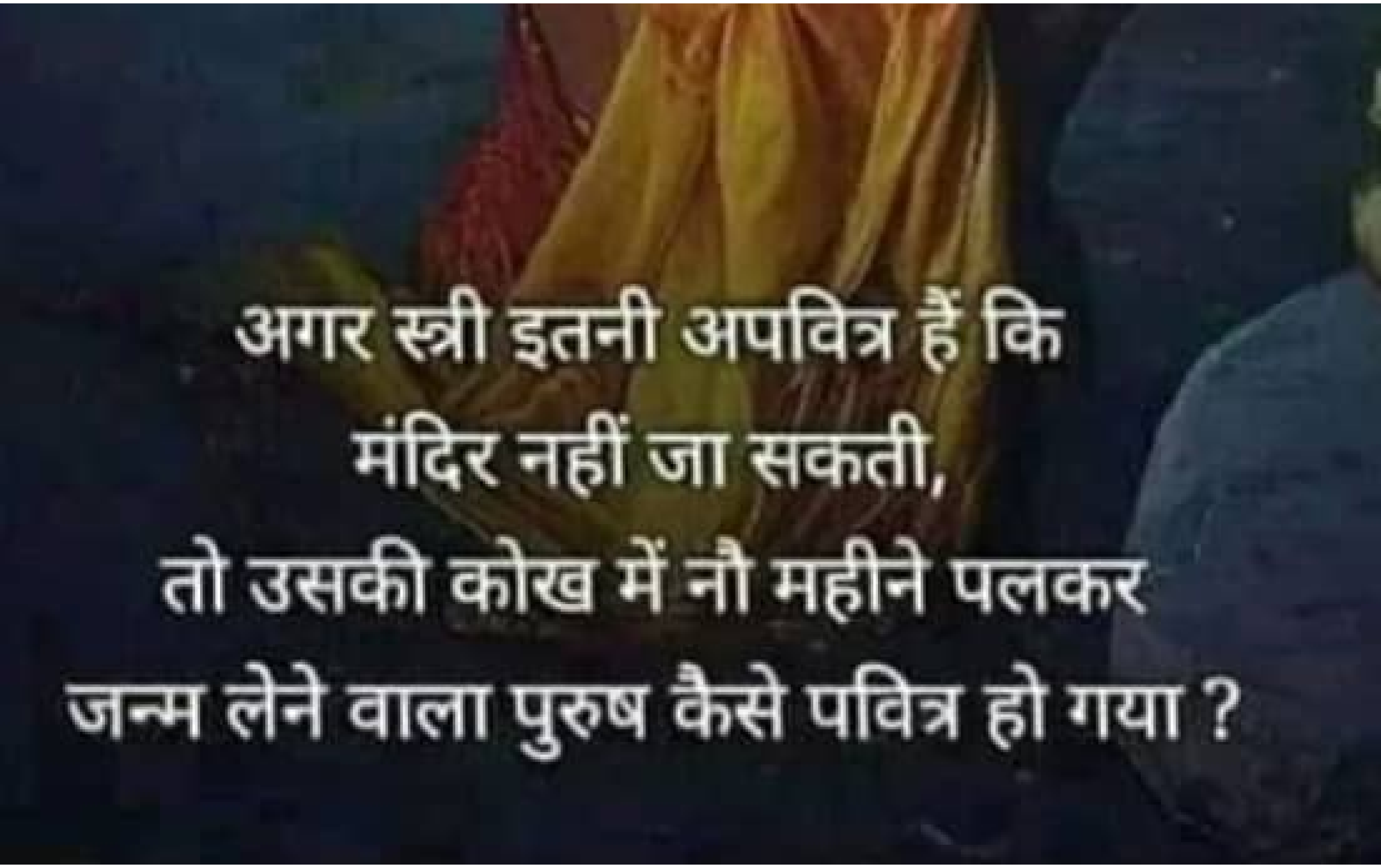
अगर स्त्री इतनी अपवित्र हैं कि
मंदिर नहीं जा सकती,
तो उसकी कोख में नौ महीने पलकर
जन्म लेने वाला पुरुष कैसे पवित्र हो गया ?

CamScanner

10:01 am 0 KB/s VoLTE 4G 67%

यह तो समझ में आ सकता है कि एक राष्ट्रपति राष्ट्रपति का पद छोड़ दे और शिक्षक हो जाए। यह समझ में बिलकुल नहीं आता कि शिक्षक, शिक्षक का पद छोड़ दे और राष्ट्रपति हो जाए। यह समझ में आने वाली बात नहीं है। क्योंकि शिक्षक और राजनीतिज्ञ में क्या मुकाबला? एक शिक्षक का पतन है यह कि वह राजनीतिज्ञ हो जाए। एक राजनीतिज्ञ का विकास होगा यह कि वह शिक्षक हो जाए। शिक्षक एक सरलतम व्यवसाय है, सरलतम वृत्ति है। जीवन की बहुत आधारभूत बात है। शिक्षक कोई व्यवसाय नहीं है, बल्कि एक आनंद है, एक सेवा है, एक सृजन है, एक साधना है। उसे छोड़ कर जब भी कोई कहीं भागता है तो सम्मानित नहीं होगा, न सम्मानित होना चाहिए। लेकिन हमारे मन में तो हर तरफ राजनीति और पद महत्वपूर्ण हैं। हम तो बहुत अजीब लोग हैं।

हमारे मन में मनुष्य का कोई आदर नहीं है। हमारे मन में राष्ट्रपति का आदर है, प्रधानमंत्री का आदर है, गवर्नर का आदर है। खाली मनुष्य, जिसके पास कोई पद, कोई नाम, कोई पदवी, कोई सर्टिफिकेट, कुछ भी नहीं, निपट मनुष्य का हमारे मन में कोई आदर है? और अगर निपट मनुष्य का हमारे मन में कोई भी आदर नहीं है तो स्मरण रखें, हमारे मन में किसी का कोई आदर नहीं है। यह सब ऊंची-नीची कुर्सियों का आदर है।

लेकिन यही शिक्षा हमें सिखाती है! यह सारी शिक्षा जला देने योग्य है। फिर से पूरे के पूरे नए आधार रखने की जरूरत है। और वे आधार होंगे कि हमें प्रेम सिखाया जाए, प्रतियोगिता नहीं। मनुष्य के प्रति, निपट मनुष्य के प्रति सम्मान सिखाया जाए -पदों, ओहदों के प्रति आदर नहीं। जरूरी है कि कामों के साथ प्रतिष्ठा न जोड़ी जाए। समग्र जीवन सभी लोगों का सामूहिक योगदान है, यह भाव पैदा किया जाए। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अनूठा है। कोई कहने की जरूरत नहीं है कि तुम फलां आदमी से कमजोर हो या फलां आदमी से बुद्धिमान हो या फलां आदमी से कम सुंदर हो। ये सब तुलनाएं खतरनाक हैं, वायलेंट हैं। इनकी वजह से गड़बड़ पैदा होती है। प्रत्येक व्यक्ति जैसा वह है, हमें स्वीकृत है। उसमें जो संभावनाएं हैं, वे विकसित हों....

शिक्षा में क्रांति पुस्तक से....

CamScanner

"इंडियन फिलासफी' नाम की किताब से वे प्रख्यात हुए। वह एक विद्यार्थी की एक थीसिस थी- एक गरीब विद्यार्थी की। उसकी थीसिस उनके पास जांच के लिए आयी थी। वे प्रोफेसर थे, परीक्षक थे। उसकी थीसिस को तो दबा रखा उन्होंने और जल्दी से अपनी किताब पहले छपवाली, ताकि अदालत में यह कहने को हो जाए- कभी अगर मामला बिगड़े भी- कि मेरी किताब पहले छपी। मुकदमा चला और मामला पकड़ में आ गया, क्योंकि उसने थीसिस उनके पहले, किताब के छपने के एक-डेढ़ साल पहले विश्वविद्यालय में समर्पित की थी। डेढ़ साल से वह राधाकृष्णन के पास पड़ी थी। और एकाध वाक्य मिल जाए तो समझ में आता है, चैप्टर के चैप्टर,वही के वही। जल्दी में करना पड़ा उनको, तो उसमें कुछ थोड़े बहुत मेल मिलान भी कर देते, थोड़ी मिलावट भी कर देते, जैसा इस मुल्क में चलता है, इधर उधर कुछ मिला-जुला कर एक सा कर देते तो शायद पकड़ में इतने जल्दी भी न आते। लेकिन जल्दी छपवानी थी, क्योंकि यह थीसिस पड़ी थी उसकी, उसको विश्वविद्यालय पीछे पड़ा था कि आप लौटाइए। हां या न कुछ भी भरिए।

और मजा तुम देखते हो, उन विद्यार्थी को इन्होंने फेल किया। फेल किया इसलिए कि उसको फिर से थीसिस लिखनी पड़ेगी, उसमें और दो साल लगेंगे। तब तक उनकी किताब जगत-विख्यात हो जाएगी, तब तक मामला बिलकुल गड़बड़ हो जाएगा। लेकिन वह विद्यार्थी भी, था तो गरीब, लेकिन उसने जब इनकी किताब देखी तो दंग रह गया, भरोसा ही न आया। हाईकोट में मुकदमा गया। उस विद्यार्थी को दस हजार रुपये देकर किसी तरह--गरीब विद्यार्थी था--किसी तरह राजी किया और अदालत से मुकदमा वापिस लौटाया।

राधाकृष्णन जैसे लोग, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, ये तक चोरी करते हैं। इस देश में चोरी का तो हिसाब ही नहीं है। बड़ा आश्चर्यजनक है यह देश। यहां मेरे देखे अधिकतर लोग बस उधार चलाते रहते हैं। जिनको तुम ज्ञानी और पंडित कहते हो, वह भी सब चोरी। अपना अनुभव तो कुछ भी नहीं।

ओशो, ज्यूं मछली बिन नीर

CamScanner

10:07 am 0 KB/s VoLTE 4G 67%

शिष्य ने कहा, "ठीक है, अगर आप जिद करते हैं तो ठीक है।"

पुस्तक उसे दी गई - वह सर्दियों की शाम थी, बहुत ठंड थी, और कमरे में आग जल रही थी - शिष्य ने पुस्तक ली और बिना देखे ही उसे आग में फेंक दिया।

मास्टर उछल पड़े और बोले, "क्या कर रहे हो!"
और शिष्य और भी जोर से चिल्लाया, "क्या कह रहे हो! एक धर्मग्रंथ को सुरक्षित रखने के लिए?"

मास्टर हँसने लगे, उन्होंने कहा, "तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये। यदि तुमने इसे सुरक्षित रखा होता तो तुम चूक जाते और इसमें कुछ भी नहीं था, सच कहूं तो ये बिल्कुल खाली है यह सिर्फ यह देखने के लिए था कि क्या आप मौन को समझने में सक्षम हो गए हैं, या क्या आप अभी भी शब्दों, अवधारणाओं, सिद्धांतों, दर्शन से गहराई से चिपके हुए हैं।

सभी दर्शन, जो कुछ भी कहा जा सकता है, एक महल के बरामदे की तरह हैं। [...]

अधिक से अधिक सभी शब्द पोर्च बन सकते हैं; वे तुम्हें आंतरिक मंदिर की ओर ले जाते हैं लेकिन यदि तुम उनसे चिपके रहते हो तो तुम बरामदे में ही रहते हो - बरामदा महल नहीं है। लाओत्से कुछ कह रहा है जो एक बरामदे, एक दरवाजे की तरह है।
यदि आप इसे समझते हैं, तो आप सभी शब्द, भाषा - वास्तव में पूरा मन छोड़ देंगे।

जहां आप अपने जूते बरामदे में छोड़ते हैं, वहीं आपको अपना दिमाग भी वहीं छोड़ देना चाहिए केवल तभी आप अस्तित्व के अंतरतम मंदिर में प्रवेश करते हैं।

OshO Shree
ताओ: तीन खजाने -
ताओ ते चिंग के अंशों पर बातचीत
लाओ त्ज़ु, खंड 3, अध्याय 5

CamScanner

बुद्ध ने कहा- ईश्वर नहीं है...
लोगों ने बुद्ध को ही ईश्वर बना दिया...!
बुद्ध ने कहा- अवतार नहीं होता...
लोगों ने उन्हें विष्णु का 9वां अवतार बना दिया...!!
हमारे देश की यही विडम्बना है...
लोगों को ज्ञान नहीं, अंधश्रद्धा चाहिए...!!!

CamScanner

12:53 pm 0 KB/s VoLTE 4G 84%

"खरीददार भी नट गया पगड़ी छोड़कर आगे बढ़ गया। यही प्रतिक्रिया हर खरीददार की रही !!

"सुबह से शाम हो गई कबीर जी अपनी पगड़ी बगल में दबाकर खाली जेब वापिस लौट आए। थके- माँदे कदमों से घर-आँगन में प्रवेश करने ही वाले थे कि तभी एक पड़ोसी से भेंट हो गई उसकी दृष्टि पगड़ी पर पड़ गई !!

"क्या हुआ संत जी, इसकी बिक्री नहीं हुई ? पड़ोसी ने जिज्ञासा की। कबीर जी ने दिन भर का क्रम कह सुनाया, पड़ोसी ने कबीर जी से पगड़ी ले ली, आप इसे बेचने की सेवा मुझे दे दीजिए मैं कल प्रातः ही बाजार चला जाऊँगा !!

"अगली सुबह कबीर जी के पड़ोसी ने ऊँची-ऊँची बोली लगाई, 'शानदार पगड़ी ! जानदार पगड़ी ! आठ टके की भाई ! आठ टके की भाई !' पहला खरीददार निकट आया, बोला, 'बड़ी महंगी पगड़ी हैं ! दिखाना जरा !' पडोसी, पगड़ी भी तो शानदार है। ऐसी और कही नहीं मिलेगी। खरीददार, ठीक दाम लगा लो, भईया। पड़ोसी बोला, चलो, आपके लिए छह टका लगा देते हैं खरीददार, ये लो पाँच टका, पगड़ी दे दो !!"

"एक घंटे के भीतर-भीतर पड़ोसी वापस लौट आया कबीर जी के चरणों में पाँच टके अर्पित किए पैसे देखकर कबीर जी के मुख से अनायास ही निकल पड़ा !!"

"सत्य गया पाताल में, झूठ रहा जग छाए।
दो टके की पगड़ी, पाँच टके में जाए !!"

"यही इस जगत का व्यावहारिक सत्य है, सत्य के पारखी इस जगत में बहुत कम होते हैं संसार में अक्सर सत्य का सही मूल्य नहीं मिलता !!

"लेकिन असत्य बहुत ज्यादा कीमत पर बिकता है।"
इसलिए कबीरदास जी ने कहा है:-
"सच्चे का कोई ग्राहक नाही,
झूठा जगत पतीजै जी !!" 🙇

CamScanner

ध्यान रखना, आज नहीं कल, इस
महाक्रांति में उतरना ही पड़ेगा।
लाख तुम कोशिश करो इस संसार
को घर बना लेने की, सफलता
मिलनेवाली नहीं है। कोई कभी
सफल नहीं हो पाया। सपने को
सच कितना ही मानो, सपना एक
दिन टूटता ही है। सपने का स्वभाव
ही टूट जाना है।

इस संसार को, तुम लाख कोशिश
करो...हम सब कोशिश कर रहे
हैं...हम, हमारी सारी कोशिश यही
है कि बुद्ध, नारद, मीरा इन सबको
हम गलत सिद्ध कर दें।

हम सबकी कोशिश क्या है? हमारी
कोशिश यही है कि हम सिद्ध कर
देंगे कि, संसार में सुख है; हम
सिद्ध कर देंगे कि परमात्मा
आवश्यक नहीं है; हम सिद्ध कर
देंगे कि जीवन परमात्मा के दिन
पर्याप्त है; हम सिद्ध कर देंगे कि
धन में है कुछ, कि यह सपना नहीं
है, माया नहीं है, सत्य है।

छोड़ो इस मूढ़ता को, कभी कोई
कर नहीं पाया! लेकिन इस करने
की कोशिश में लोग अपने जीवन
को गंवा देते हैं।

ओशो

There
is
no
home,
Unless
we
find
it in
Overselves...
OSHO

CamScanner

Everyone is my teacher. Some I seek. Some I subconsciously attract. Often I learn simply by observing others. Some may be completely unaware that I'm learning from them, yet I bow deeply in gratitude.

Read, Love and Learn

To all who teach me any chapter/lesson/ morale inside or outside of the syllabus 🙏

CamScanner

जिसका जन्म हुआ है, वह मरेगा।
जो पाया है, वह खो जाएगा।
जो आज संपत्ति है, वह कल विपत्ति हो जाएगी।
जो आज सुख है, कल दुख हो जाएगा।
हर चीज अपने विपरीत में चली जाती है।
संयोग और वियोग से यह चाक चलता है।
जिससे आज मिलन हुआ है, कल वह छूट जाएगा।
जो इस सत्य को समझ लेता है कि
संसार का चाक संयोग और वियोग से चलता है,
विपरीत से चलता है, अपोजिट से।
और दोनों के पार अपने को संभाल लेता है–
न तो संयोग में सुखी होता है और न वियोग में दुखी होता है
यही एक सिद्धि है। इसको ही साध लो।

CamScanner

satya_gyan_vichar

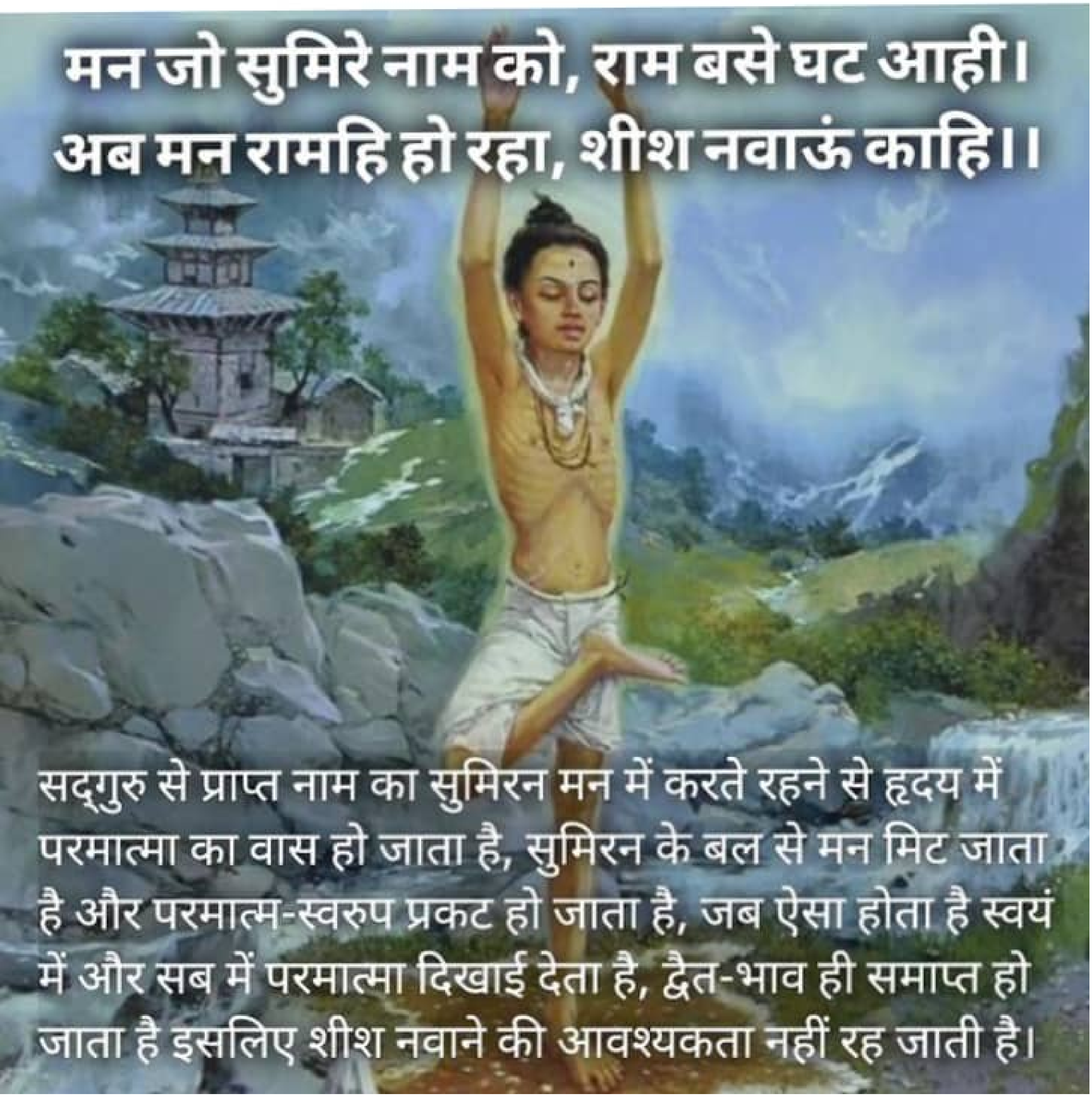

CamScanner

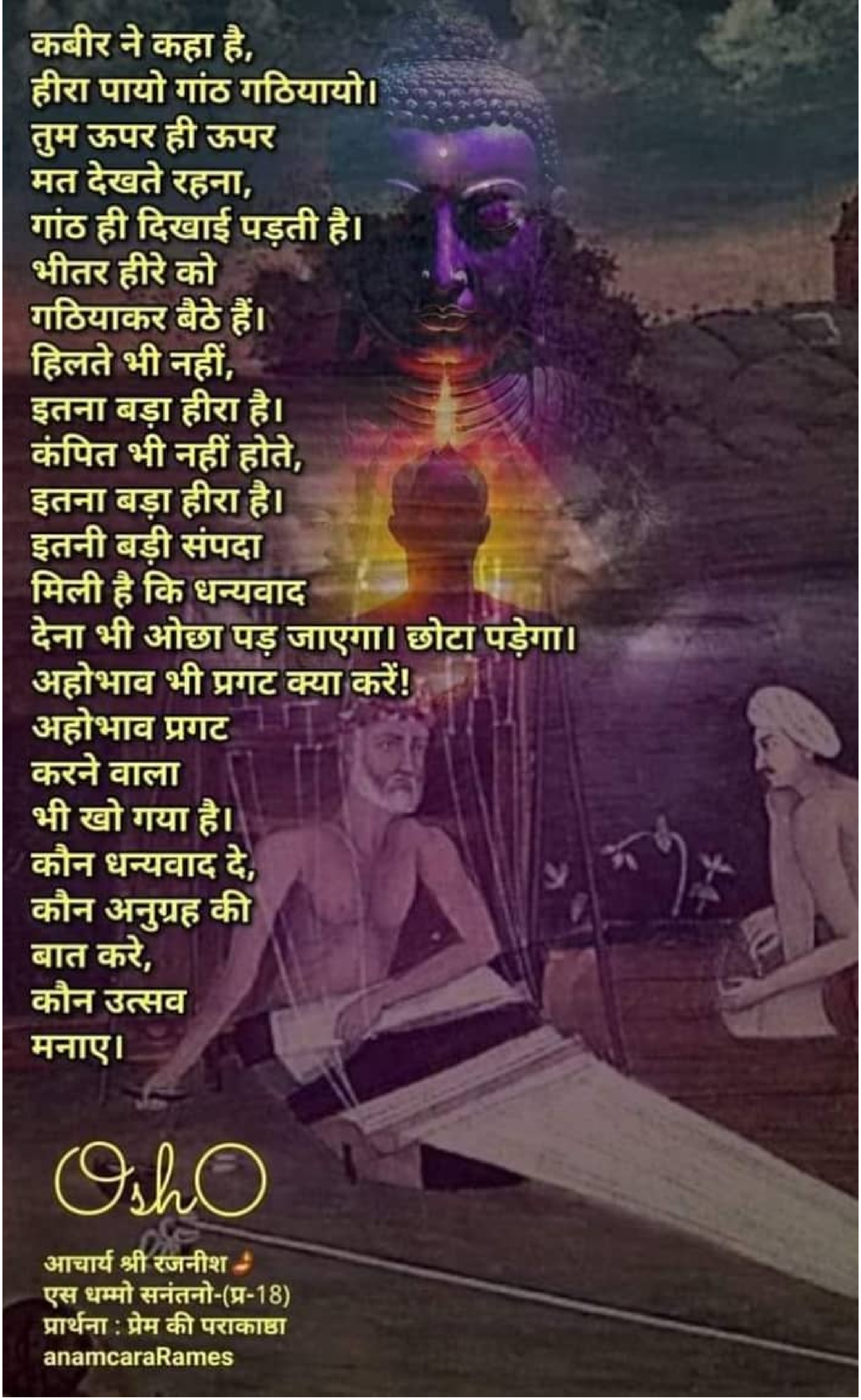

CS CamScanner

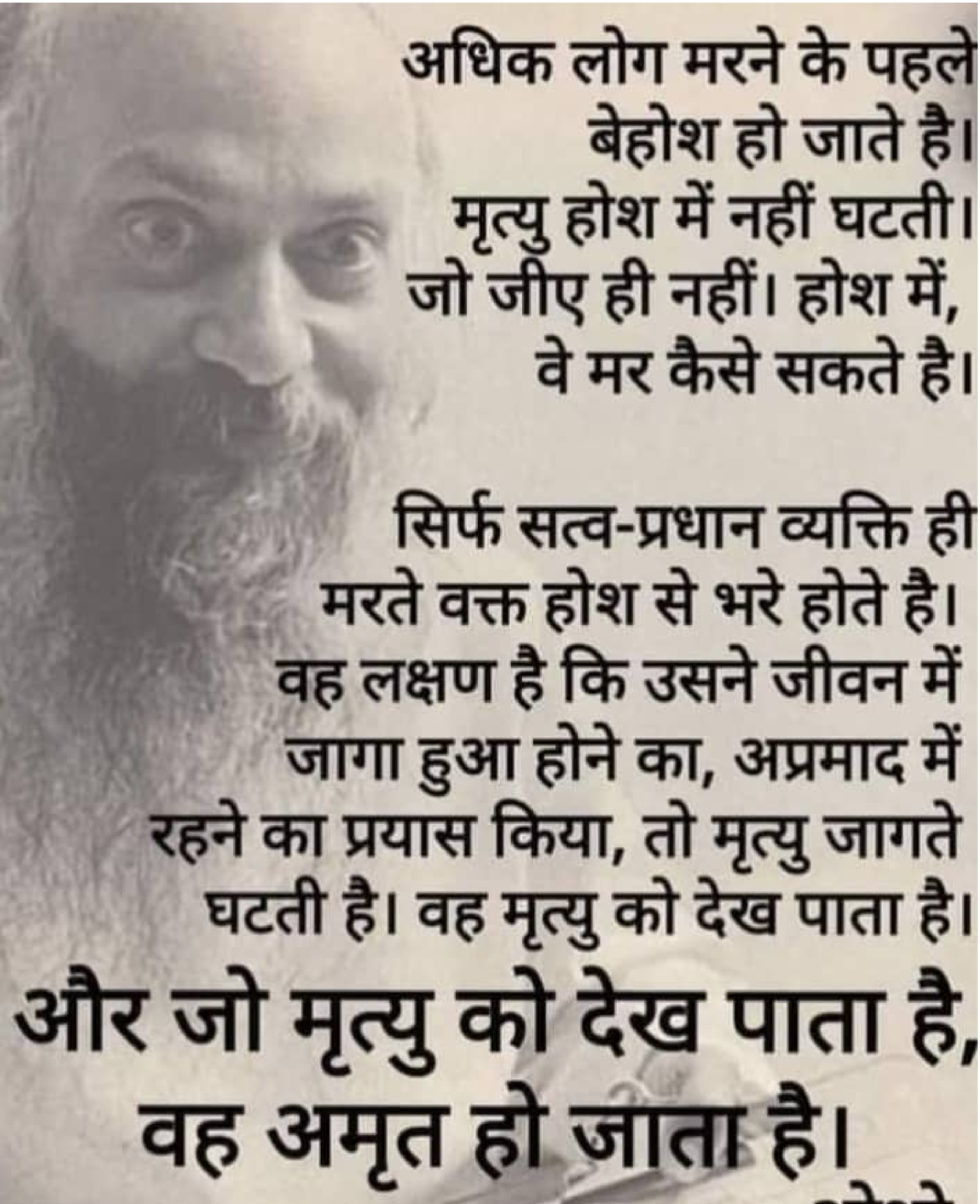

अधिक लोग मरने के पहले
बेहोश हो जाते है।
मृत्यु होश में नहीं घटती।
जो जीए ही नहीं। होश में,
वे मर कैसे सकते है।

सिर्फ सत्व-प्रधान व्यक्ति ही
मरते वक्त होश से भरे होते है।
वह लक्षण है कि उसने जीवन में
जागा हुआ होने का, अप्रमाद में
रहने का प्रयास किया, तो मृत्यु जागते
घटती है। वह मृत्यु को देख पाता है।

और जो मृत्यु को देख पाता है,
वह अमृत हो जाता है।

~ ओशो

CS CamScanner

सत्य !
सौभाग्य हैं उन लोगो का, जो सत्य के लिए प्यासे हो सके। बहुत कम लोग पैदा होते हैं, बहुत कम लोग सत्य के लिए प्यासे होते हैं। सत्य का मिलना तो बहुत बड़ा सौभाग्य हैं। सत्य की प्यास होना भी उतना ही बड़ा सौभाग्य हैं !
Osho

CamScanner

संसार का अर्थ है, तुम सोए हो परमात्मा में
परमात्मा का अर्थ है, तुम जाग गए संसार में
बस इतना ही फर्क है, विरोध ज़रा भी नहीं है।

ओशो

CamScanner

CS CamScanner

ब्राह्मण। ब्राह्मण का अर्थ है वह, जिसने उसे जान लिया। ब्राह्मण का अर्थ है, ज्ञानी। ब्राह्मण का अर्थ है, ब्रह्म को उपलब्ध। ब्राह्मण का अर्थ है, जो ब्रह्म-स्वरूप हो गया; जिसने अपने भीतर अहर्निश अनाहत नाद को सुन लिया। जो सच्चिदानंदघन रूप हो गया, वह ब्राह्मण।

ओशो

गीता दर्शन - अ:१७/प्र:१०

CS CamScanner

संसार असत्य नहीं है, तुम्हारा मन असत्य है।
संसार तो परिपूर्ण रूप से सत्य है।
तुम्हारी आत्मा भी सत्य है,
संसार भी सत्य है।
लेकिन दोनों के बीच में
एक असत्य खड़ा हो गया है,
उस असत्य का नाम मन है।
मन माया है।
और जिसे माया से मुक्त होना है
उसे मन से मुक्त होना होगा।
~ Osho ~ Ananta

CamScanner

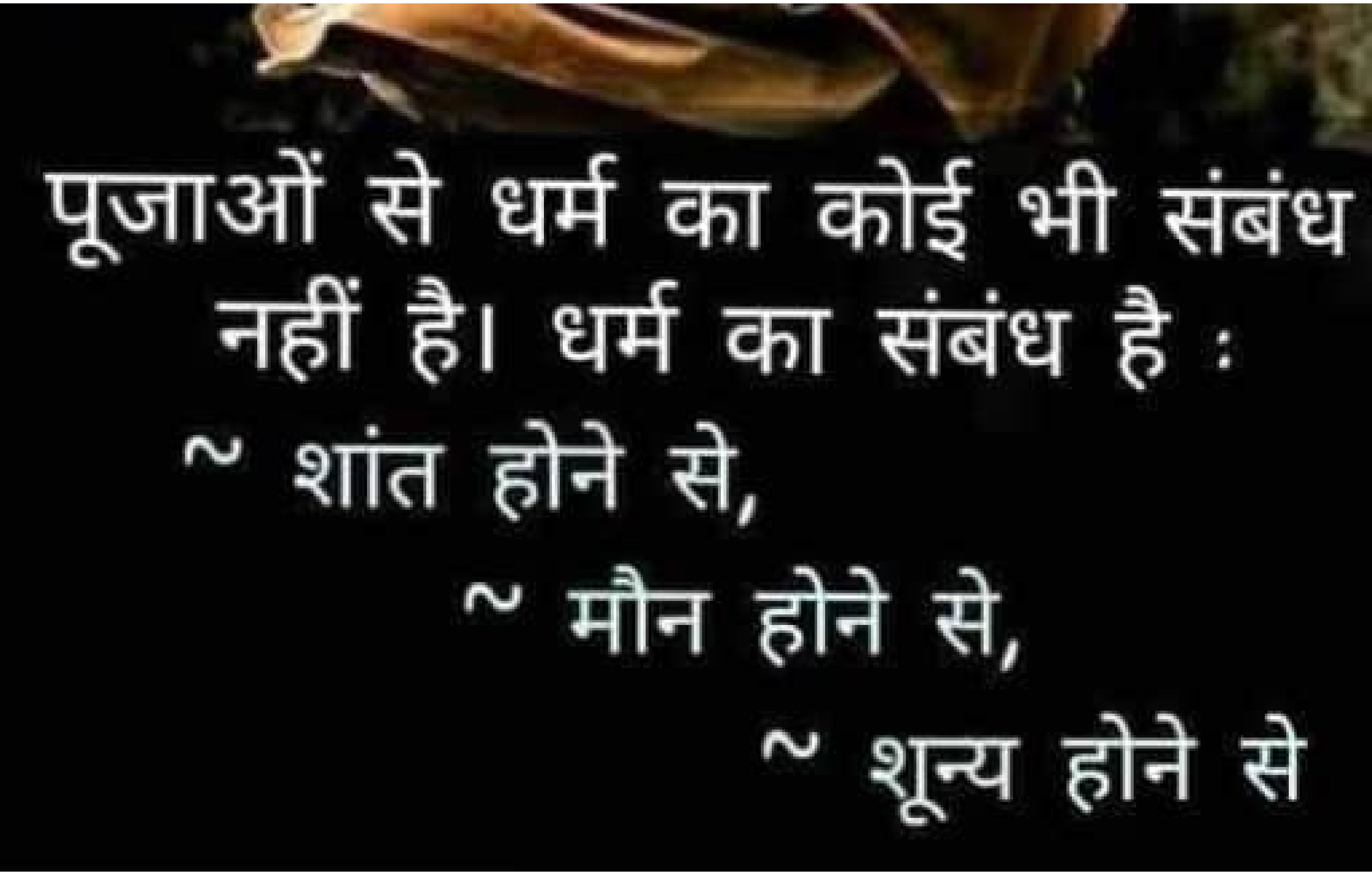

CamScanner

होशियारों को कब परमात्मा मिला!
होशियार चाहे संसार में
साम्राज्य को स्थापित कर लें,
परमात्मा के जगत में
बिलकुल ही वंचित रह जाते हैं।
वह राज्य उनका नहीं है।
वह राज्य तो दीवानों का है।
वह राज्य तो उनका है
जिन्होंने तर्क-जाल तोड़ा,
जो भावनाओं के रहस्यपूर्ण
लोक में प्रविष्ट हुए।

CamScanner

शरीर यंत्र हैं

और

मन व माया

के बीच

आत्मा

जो

विराट स्वरूप है

CamScanner

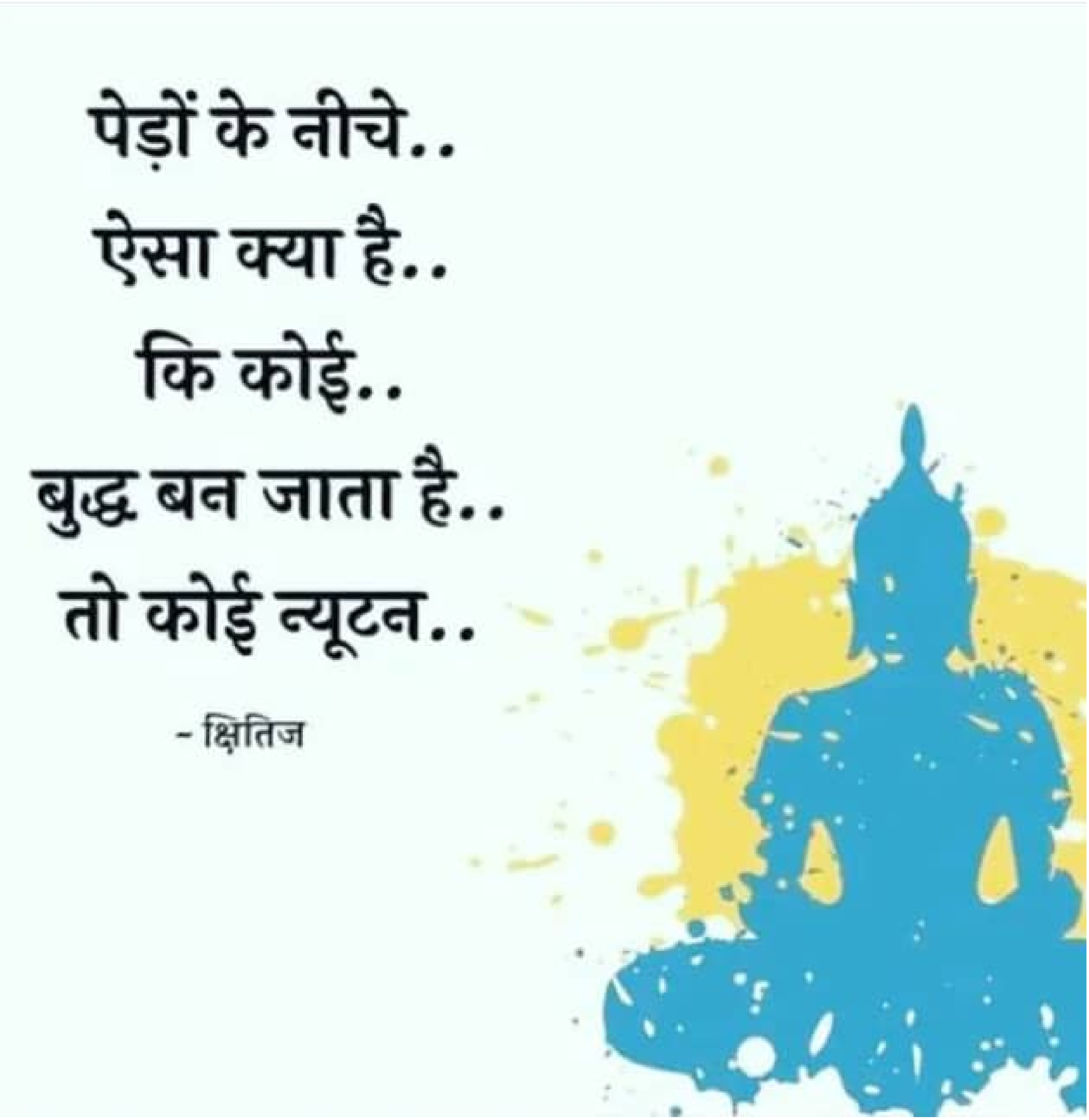

CS CamScanner

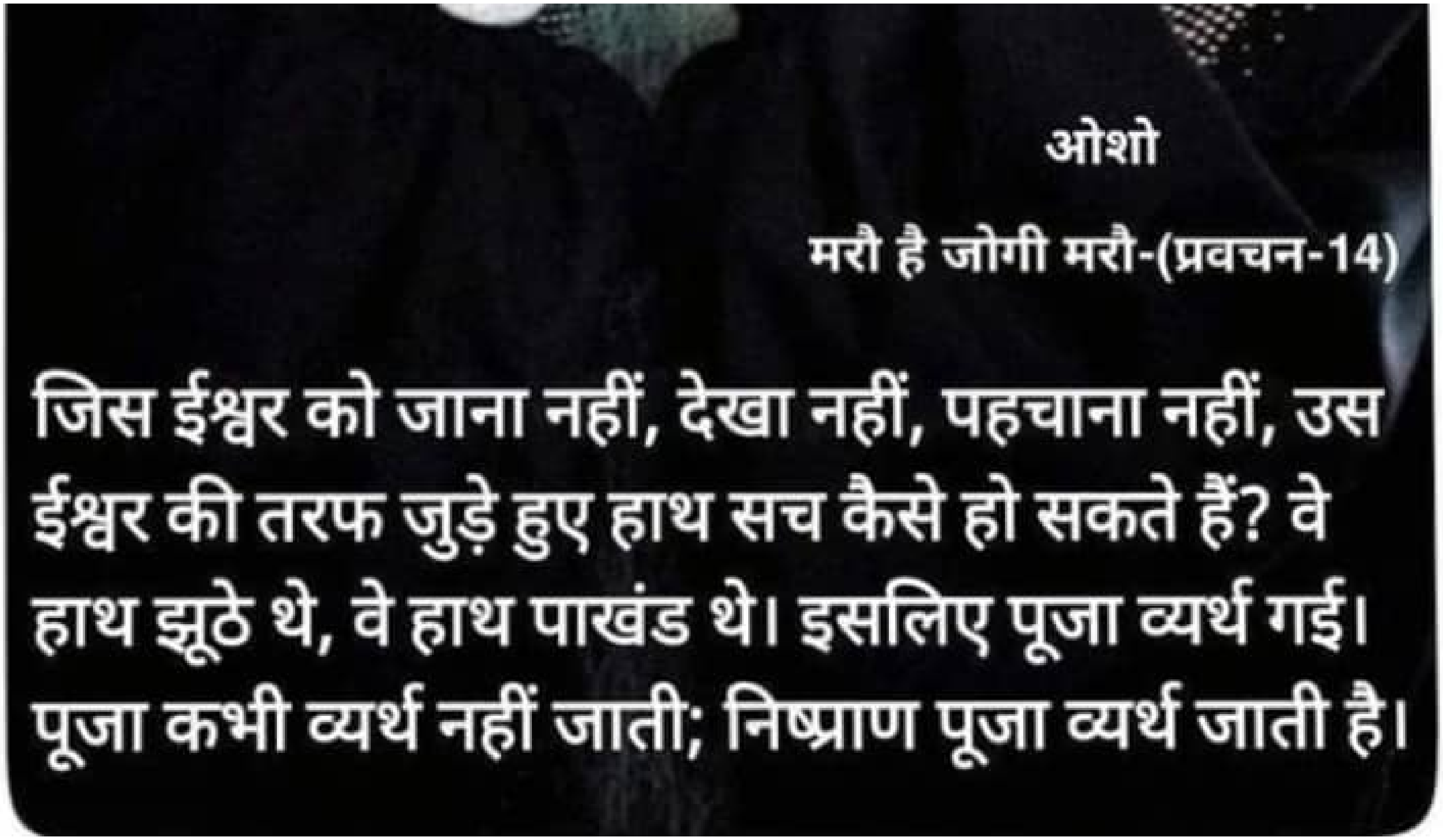
ओशो
मरौ है जोगी मरौ-(प्रवचन-14)
जिस ईश्वर को जाना नहीं, देखा नहीं, पहचाना नहीं, उस ईश्वर की तरफ जुड़े हुए हाथ सच कैसे हो सकते हैं? वे हाथ झूठे थे, वे हाथ पाखंड थे। इसलिए पूजा व्यर्थ गई। पूजा कभी व्यर्थ नहीं जाती; निष्प्राण पूजा व्यर्थ जाती है।

CamScanner

अकेला भारत जमीन
पर ऐसा देश है!
जहां बुद्ध और
महावीर जैसा व्यक्ति.!
सम्राट होकर भी
सड़क पर भीख मांगने
निकला...
यह जमीन की अनूठी
घटना थी!
जरा सोचो क्यों..!!
ओशो

CamScanner

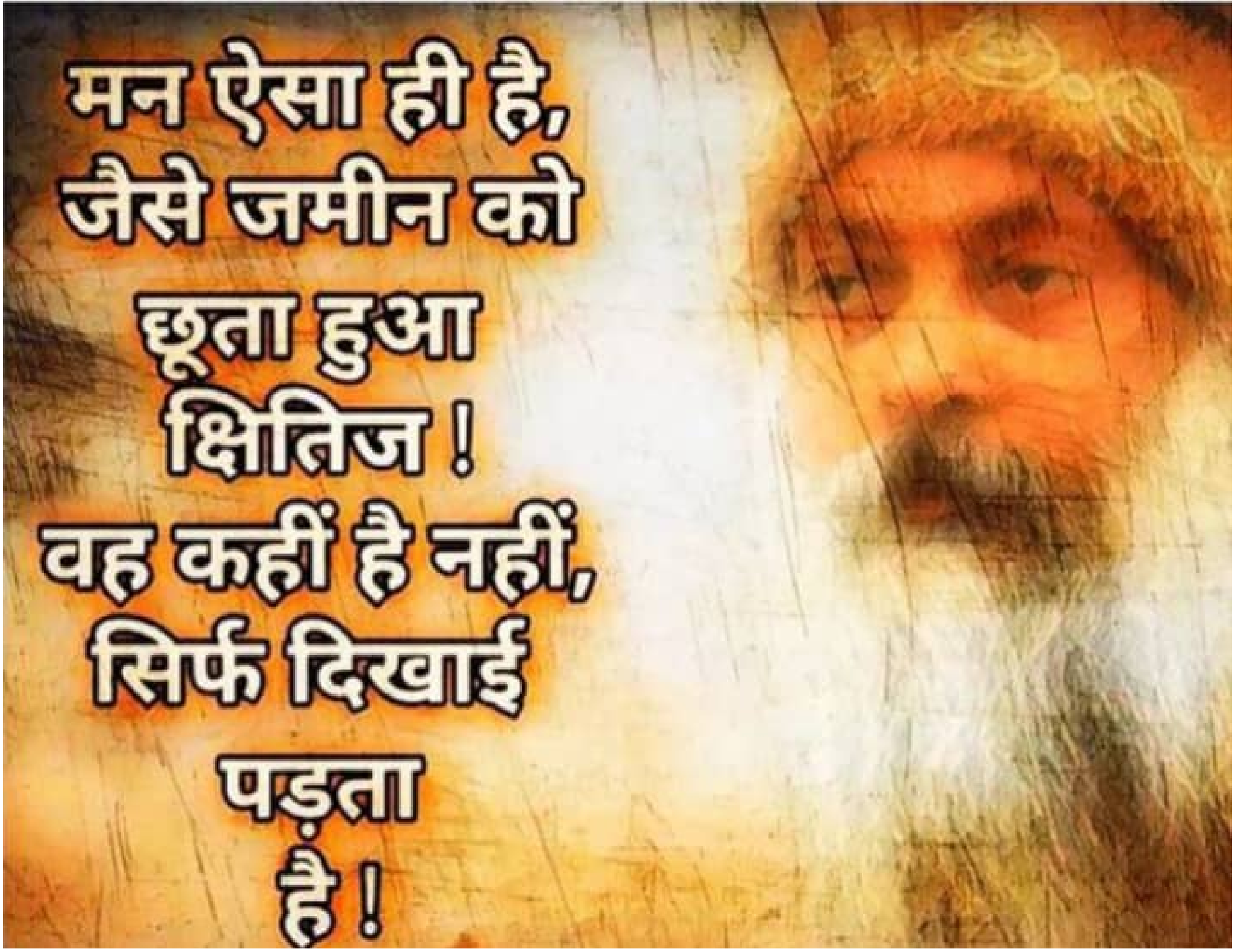

CamScanner

ओशो कहते हैं- जब आप किसी को देखें तो अपनी आंखों में गहरे प्यार से देखें। किसी की बात सुनते समय गहरे प्रेम, सहानुभूति, करुणा से सुनें। इस तरह आगे बढ़ें कि प्यार एक आभा की तरह आपको घेर ले और जल्द ही आप महसूस करेंगे कि आपके पास बड़े बदलाव आ रहे हैं।

अहोभाव

CamScanner

CamScanner

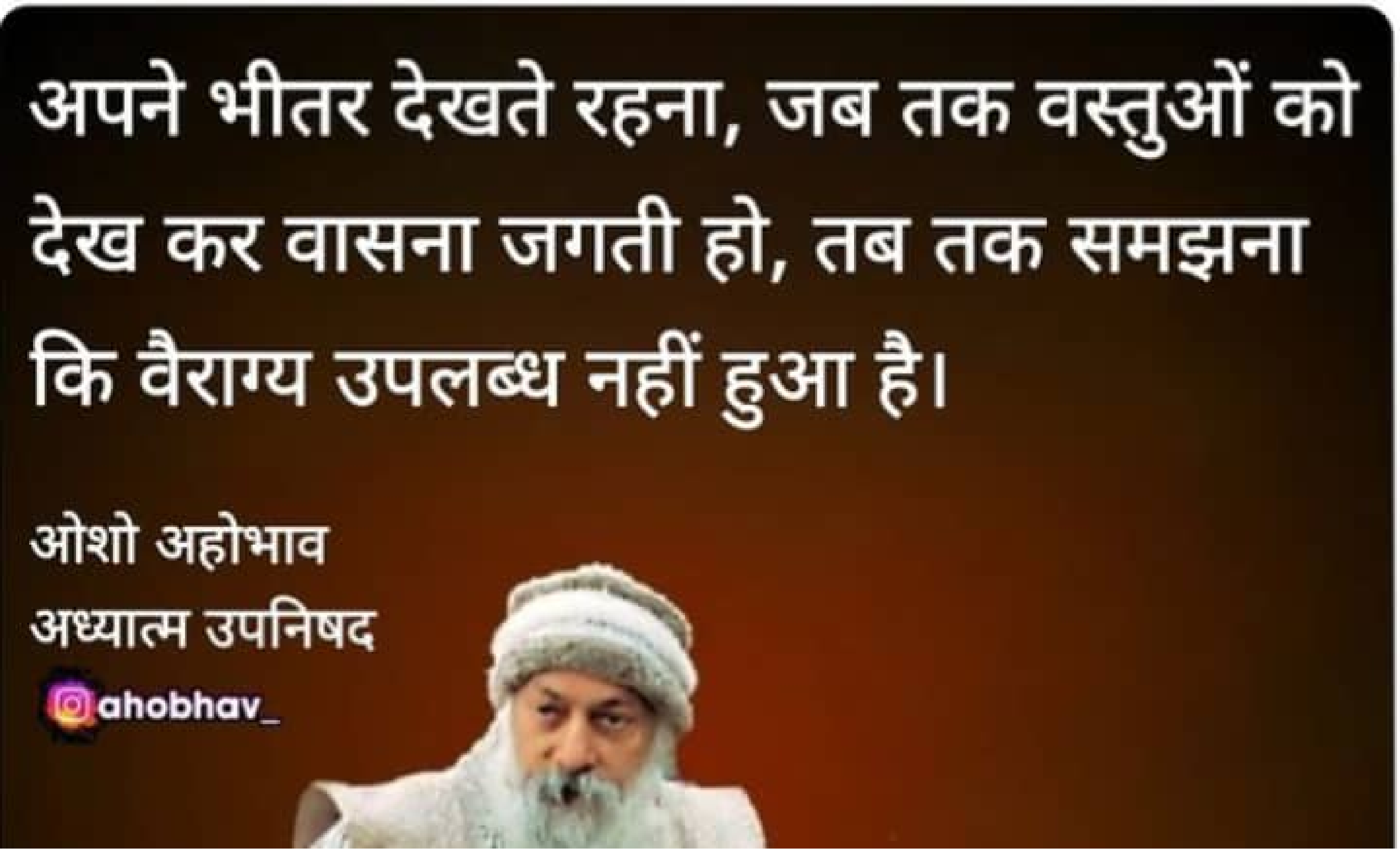

CS CamScanner

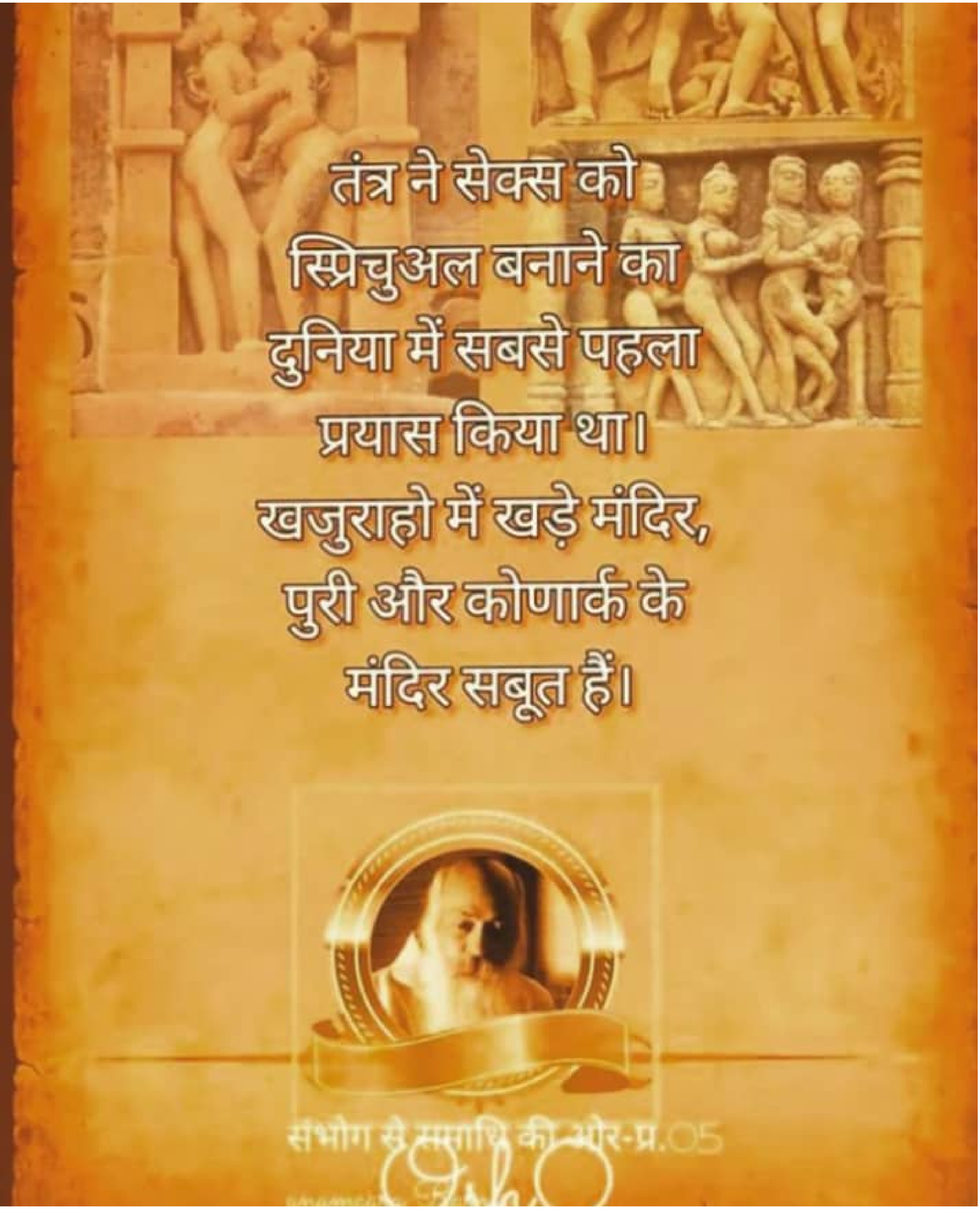
तंत्र ने सेक्स को
स्प्रिचुअल बनाने का
दुनिया में सबसे पहला
प्रयास किया था।
खजुराहो में खड़े मंदिर,
पुरी और कोणार्क के
मंदिर सबूत हैं।
संभोग से समाधि की ओर-प्र.05

CamScanner

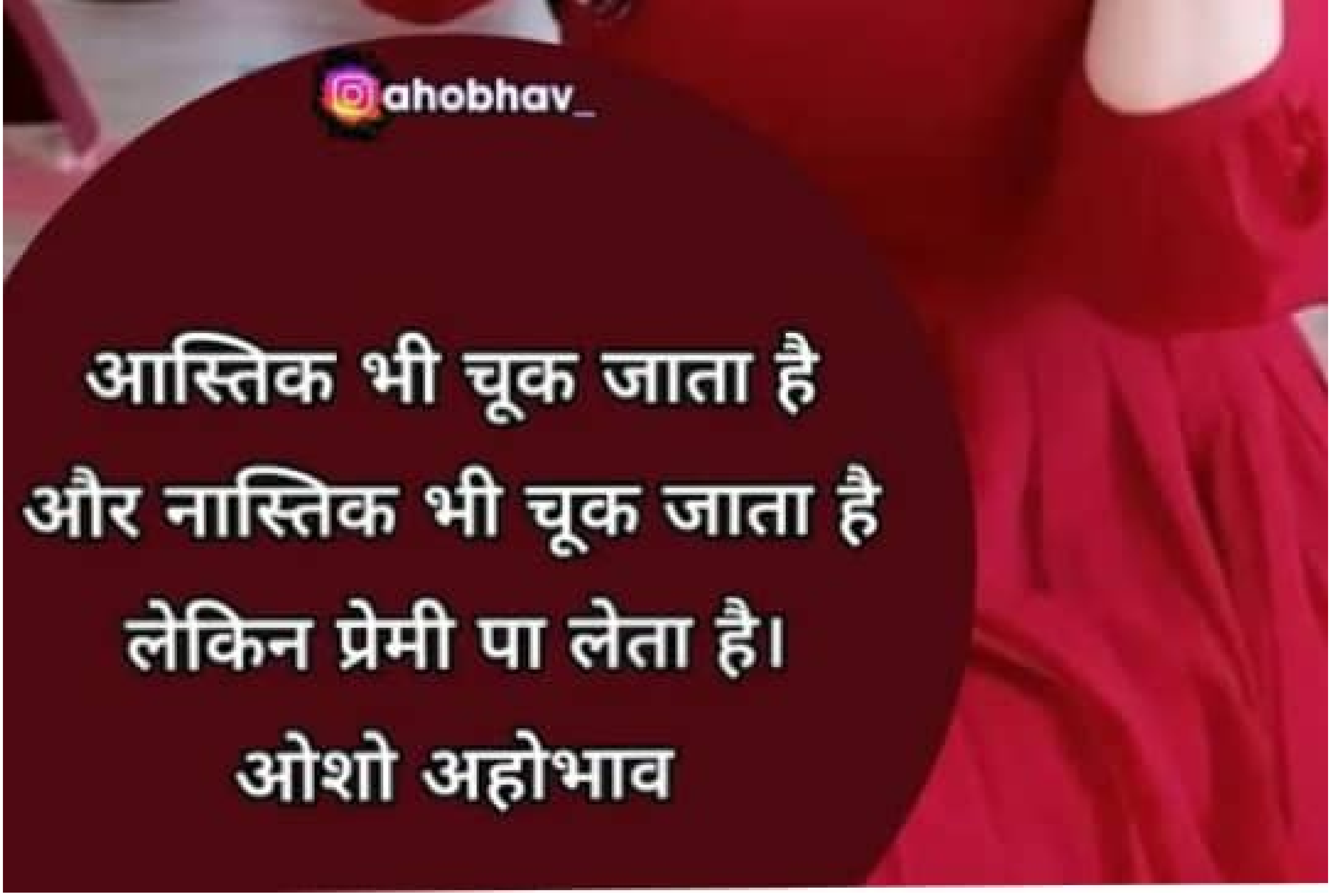

CamScanner

@UNIVERSITYOFOSHO

स्त्री की निरंतर एक ही खोज चलती रहती है,
वह सुन्दर पुरुष की खोज नहीं करती!
वह एक गहरे प्रेम करने वाले और उसे समझने वाले,
पुरूष की खोज करती है,
जिस पर वह अपने प्रेम की वर्षा कर सके. !! ओशो

CamScanner

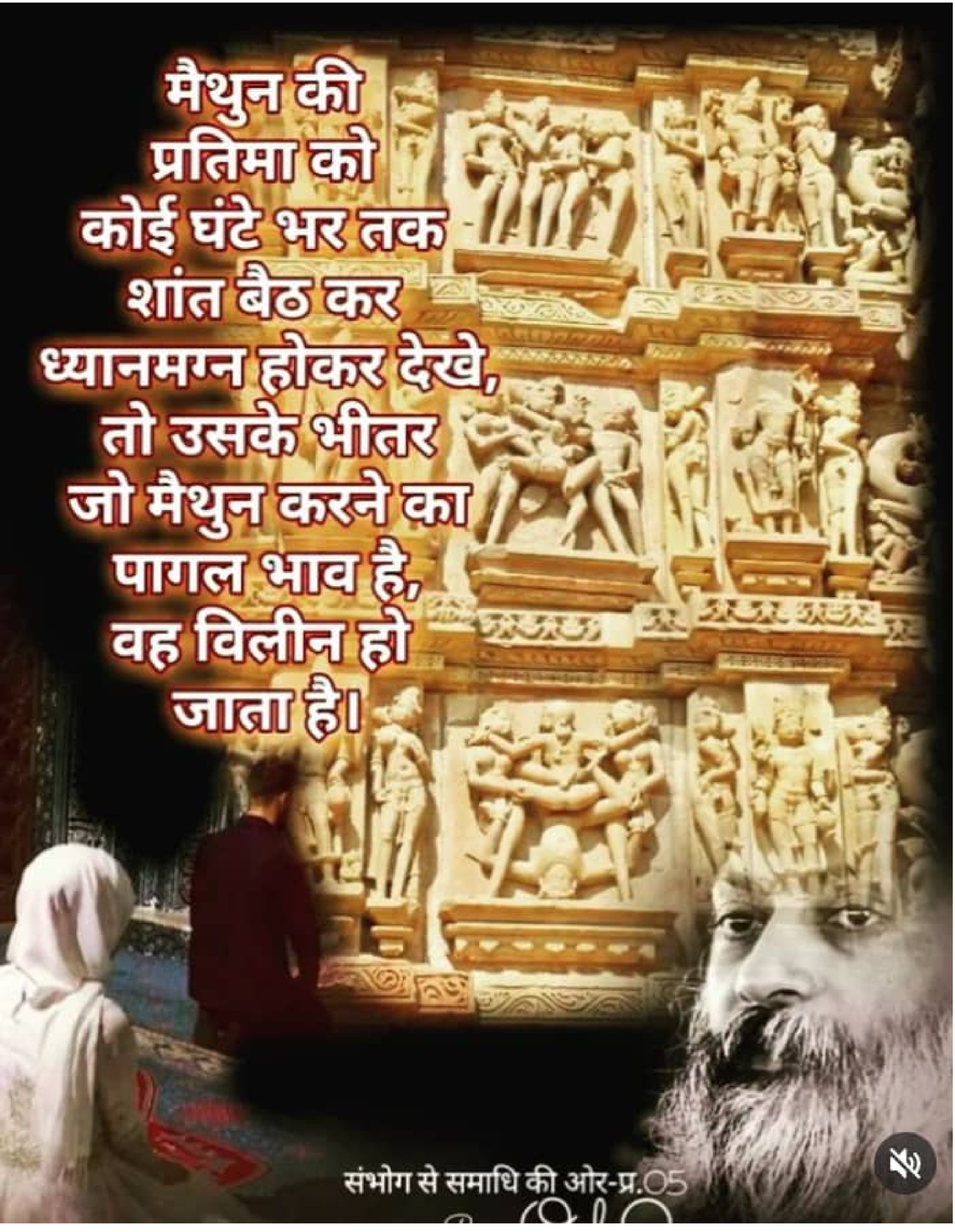

मैथुन की
प्रतिमा को
कोई घंटे भर तक
शांत बैठ कर
ध्यानमग्न होकर देखे,
तो उसके भीतर
जो मैथुन करने का
पागल भाव है,
वह विलीन हो
जाता है।
संभोग से समाधि की ओर-प्र.05

CamScanner

CamScanner

12:14 am 0 KB/s VoLTE 4G 34%

Instagram

smiling_buddha_
चित्रकूट धाम

113 likes

smiling_buddha_ Smiling_Buddha ❤️❤️❤️
.@smiling_buddha_... more

Add a comment...

CamScanner

12:13 am 108 KB/s 34%

Instagram

6,36,154 views

View all 5 comments

osho_divine_eyesight

Franz Lambert • 1492 Conquest Of Paradise

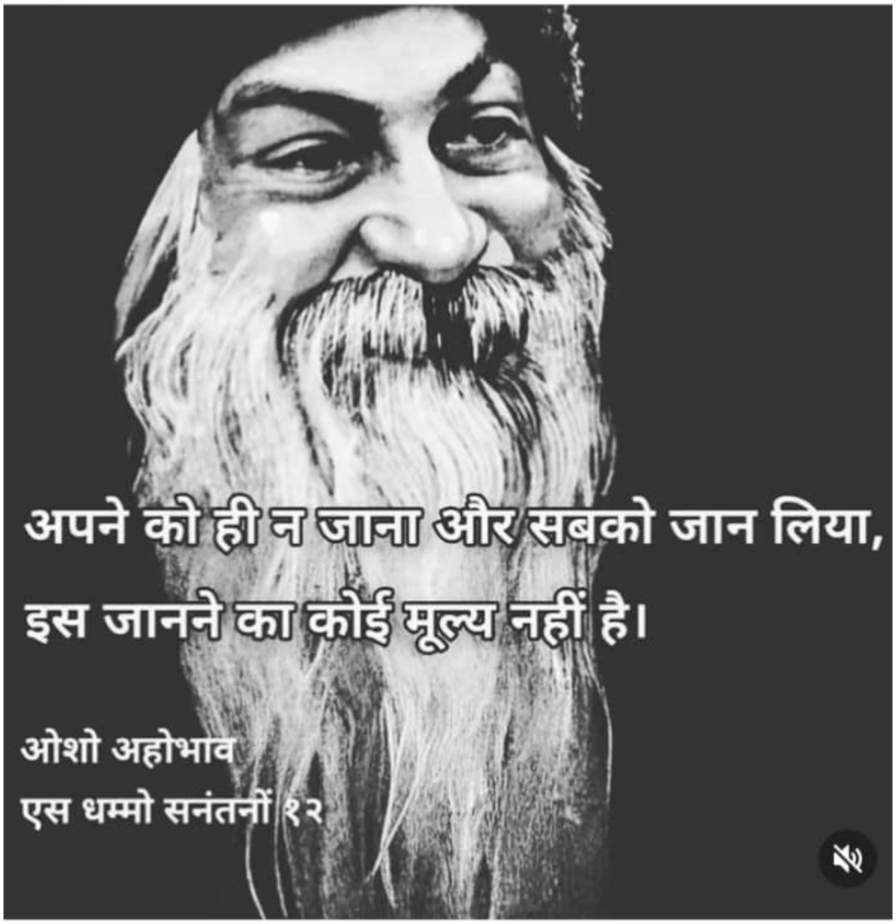

Liked by osho_______12 and 188 others

osho_divine_eyesight ओशो❤️... more

View 1 comment

2 days ago

oshorajneesh__

CamScanner

12:12 am 18 KB/s VoLTE 4G 34%

Liked by **osho_the_great_master** and **317 others**

View 1 comment

Add a comment...

1 day ago

osho_the_great_master

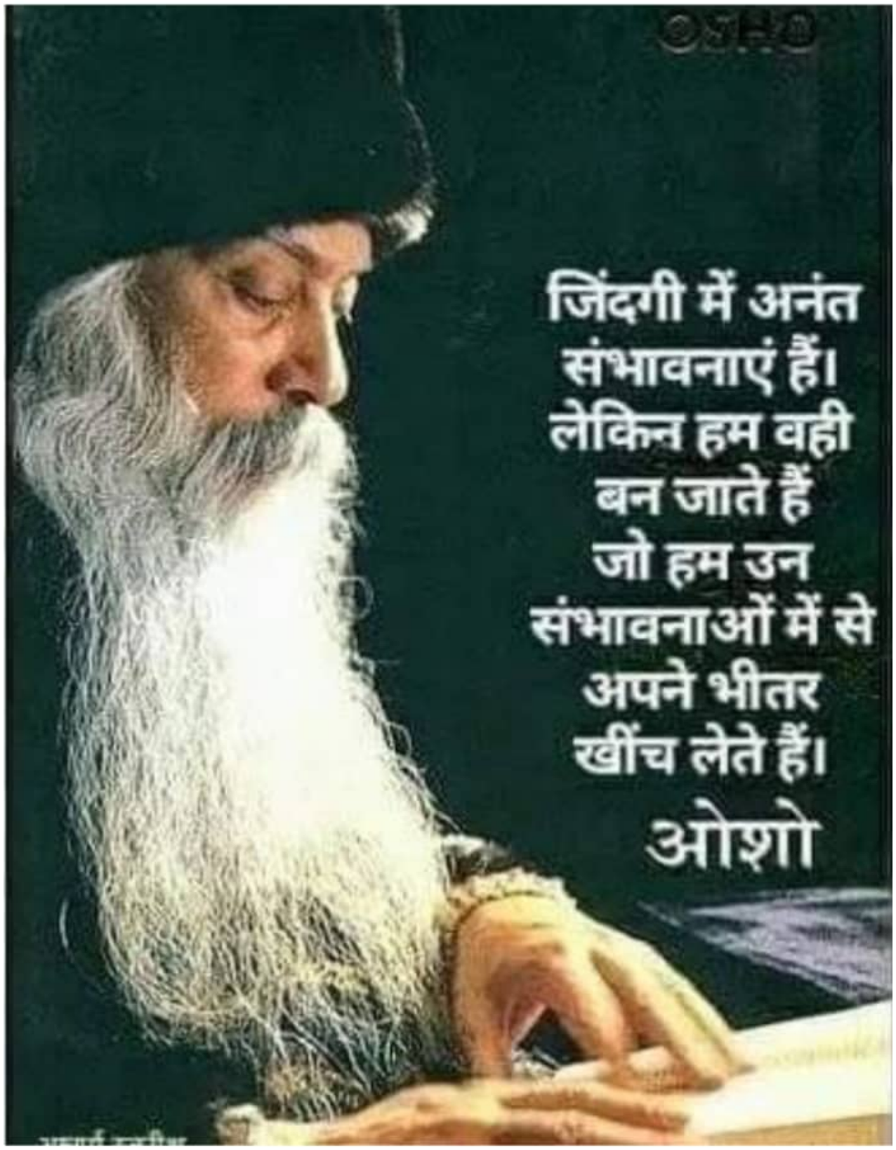

31 likes

CamScanner

12:12 am 3 KB/s 34%

Instagram

Add a comment...

1 hour ago

osho_divine_eyesight
Dhaval K Raval • MS Dhoni Emotional Music

315 likes

osho_divine_eyesight ओशो❤️... more

Add a comment...

2 days ago

try.clarity
Sponsored

CamScanner

आदमी ठीक अर्थों में आदमी होने में समर्थ नहीं हो पाया। यदि वह ठीक अर्थों में आदमी हो जाए तो जमीन बुरी नहीं है और उस पर स्वर्ग बन सकता है। स्वर्ग का और क्या अर्थ है जहां शांत लोग हों, वहां स्वर्ग है; जहां भले लोग हों, वहां स्वर्ग है।:ओशो

CS CamScanner

12:11 am 0 KB/s VoLTE 4G 34%

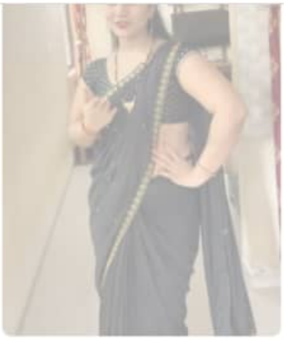

oshomessage

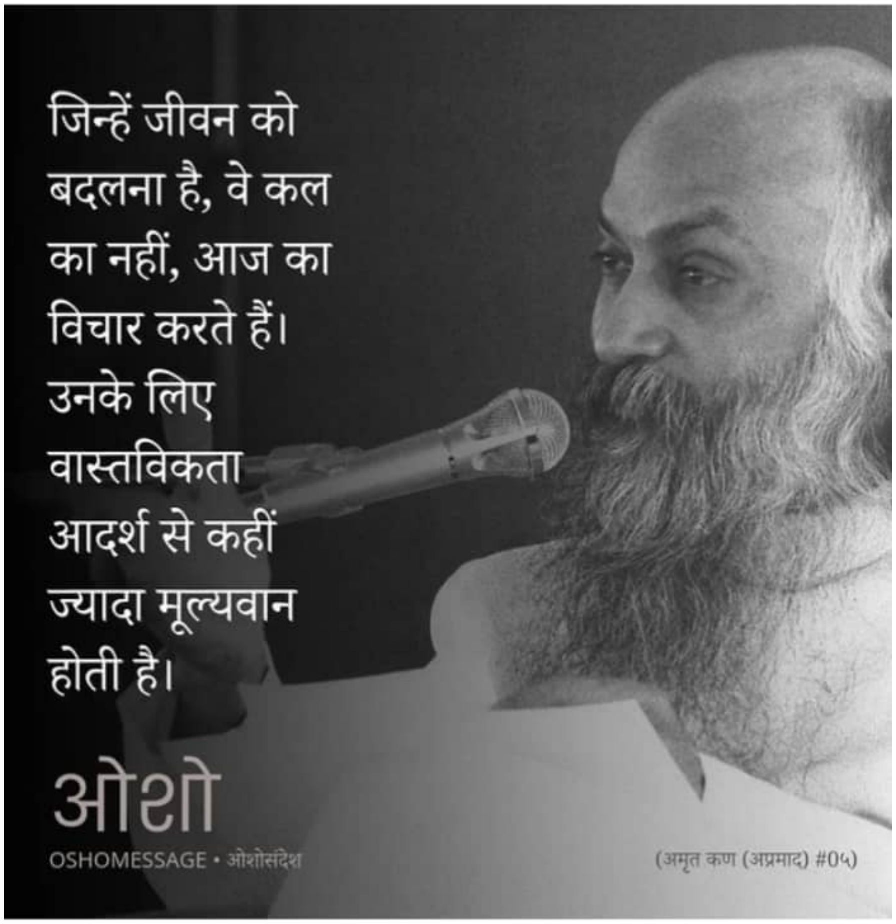

Liked by **osho_the_great_master** and **486 others**

View all 4 comments

Add a comment...

1 day ago

CamScanner

12:10 am 18 KB/s VoLTE 4G 34%

Liked by **oshoalbela** and **6 others**

Add a comment...

2 days ago

shabdo_ki_jadugari

470 likes

shabdo_ki_jadugari Bilkul 👍
#quotes #shayar #shayaris #lifequotes... more

View all 4 comments

Add a comment...

12 hours ago

CamScanner

12:09 am 18 KB/s 34%

426 likes

osho_divine_eyesight ओशो❤️... more

View 1 comment

2 days ago

osho_______12

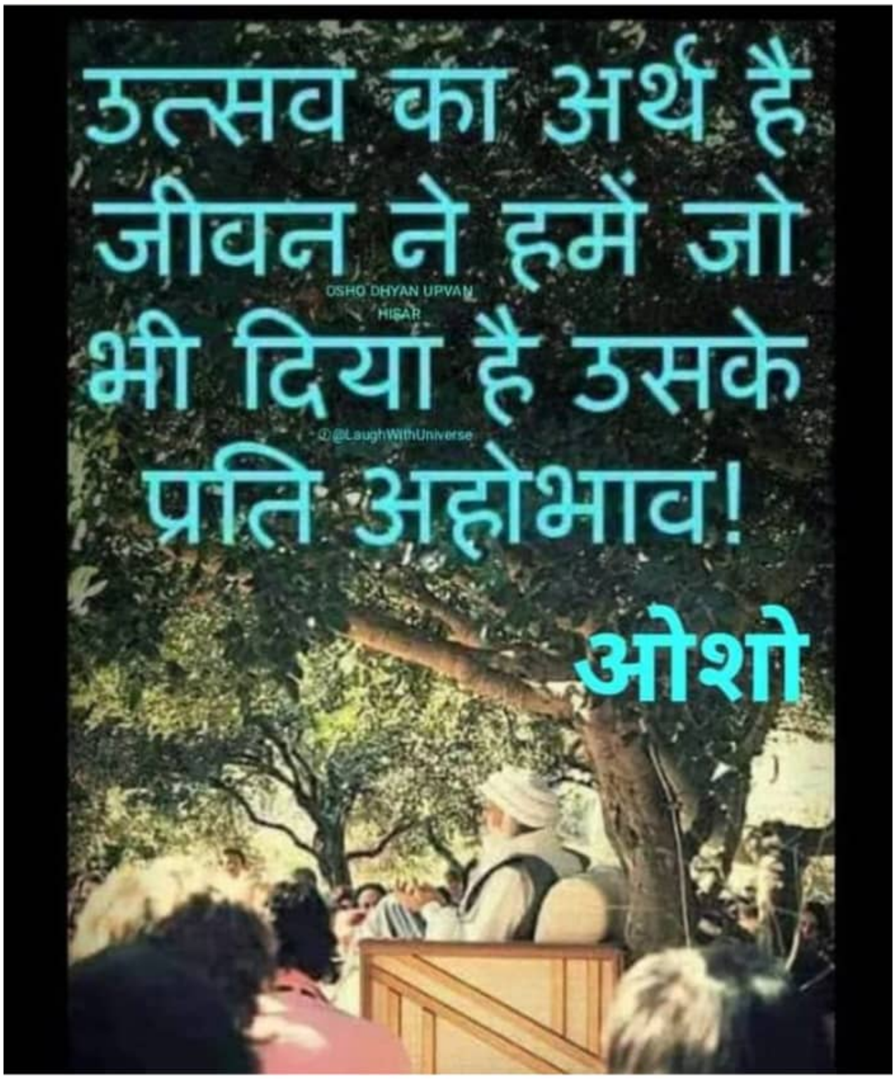

Liked by **yogaraditap99** and **8 others**

2 days ago

smartway_wellness
Sponsored

CamScanner

12:09 am 0 KB/s 34%

2 days ago

shar.ma2026

42 likes

Add a comment...

17 hours ago

kknova.codes
Sponsored

CamScanner

12:08 am 0 KB/s 34%

Instagram

govindkawrani Shri krishna janmashtami 7 sept❤️😍
Save share like🙏🏻... more

View all 44 comments

See translation

shabdo_ki_jadugari

गीता में कहा गया है कोई भी
अपने कर्म से भाग नहीं सकता
कर्म का फल तो भुगतना ही पड़ता है।

879 likes

shabdo_ki_jadugari #quotes #shayari #shayar #quotesaboutlife #lifequotes #inspirationalquotes

View all 8 comments

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

12:08 am 1 KB/s 4G 35%

20,457 views

thelostlovediary Emptiness kills you from inside

.... more

View all 4 comments

osho_______12

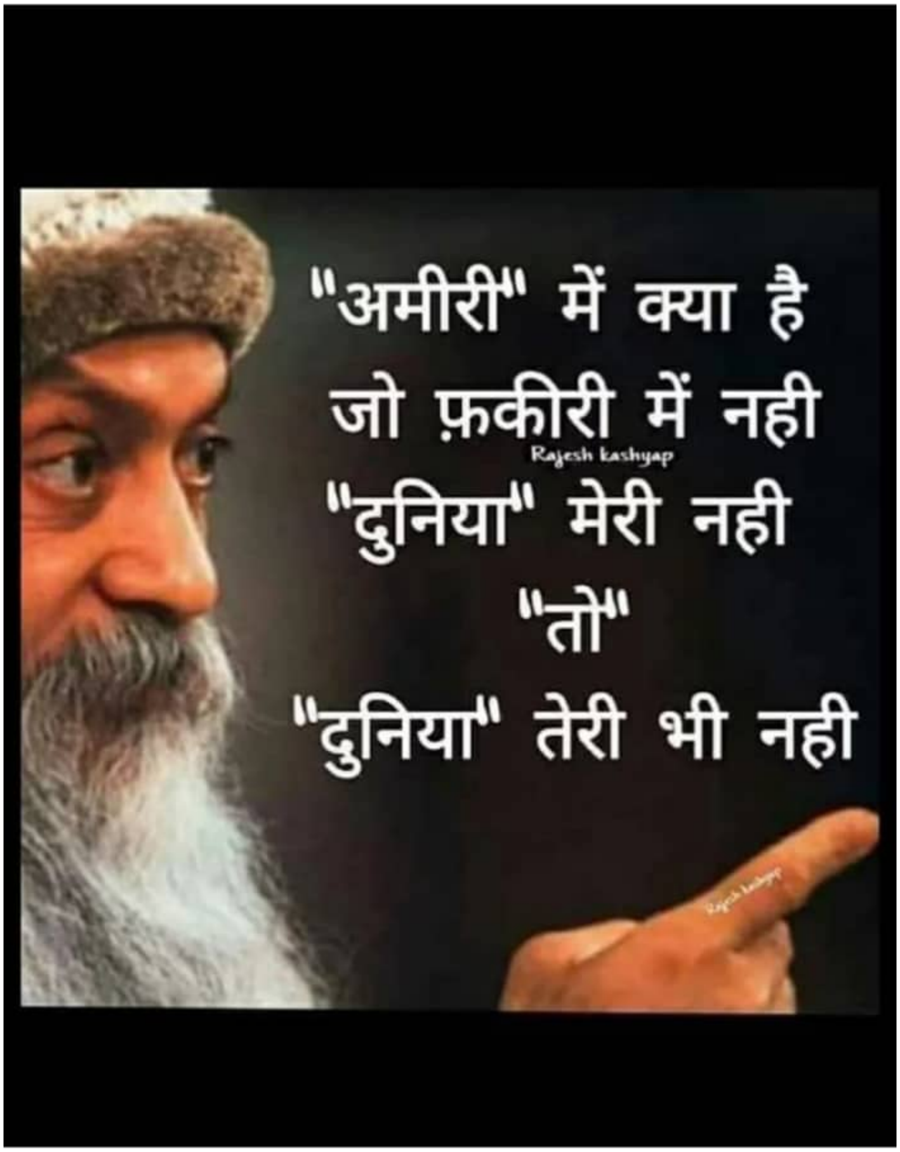

6 likes

2 days ago

oshorajneesh__

CamScanner

12:08 am 1 KB/s 35%

198 likes

smiling_buddha_ Smiling_Buddha ❤️❤️❤️
.@smiling_buddha_... more

6 hours ago • **See translation**

jinda_mind_osho

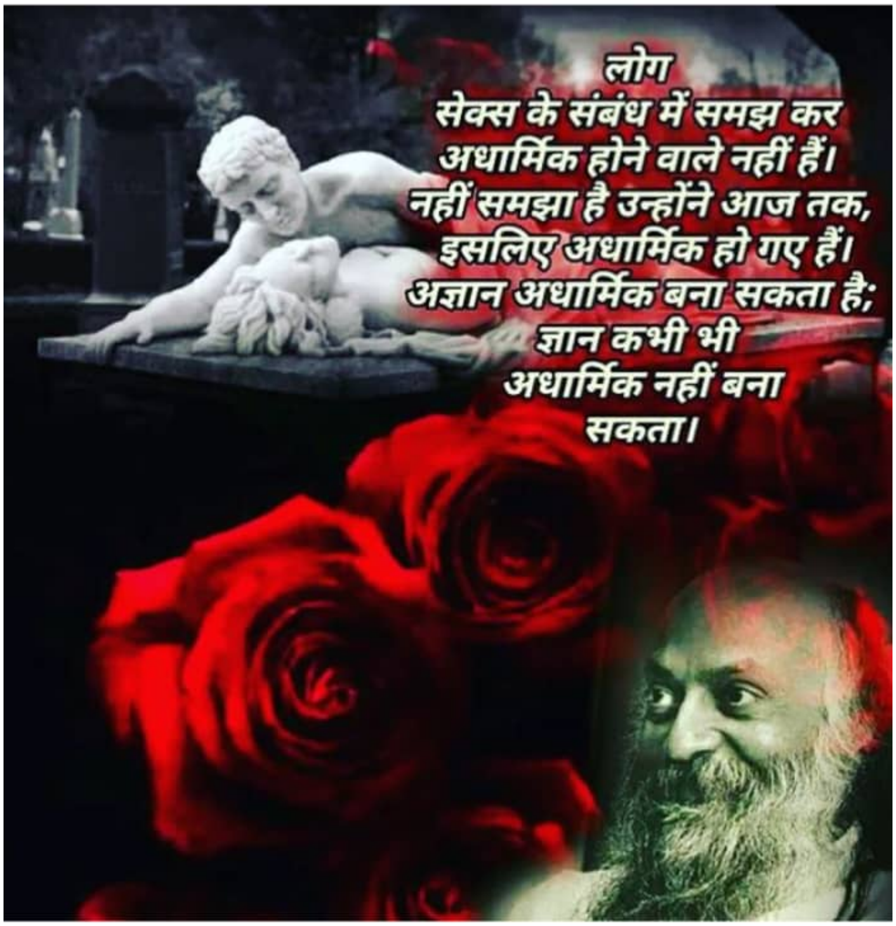

39 likes

Add a comment...

3 hours ago

CamScanner

12:07 am 0 KB/s 35%

oshospirituality .... more

Add a comment...

1 day ago • See translation

loving_osho

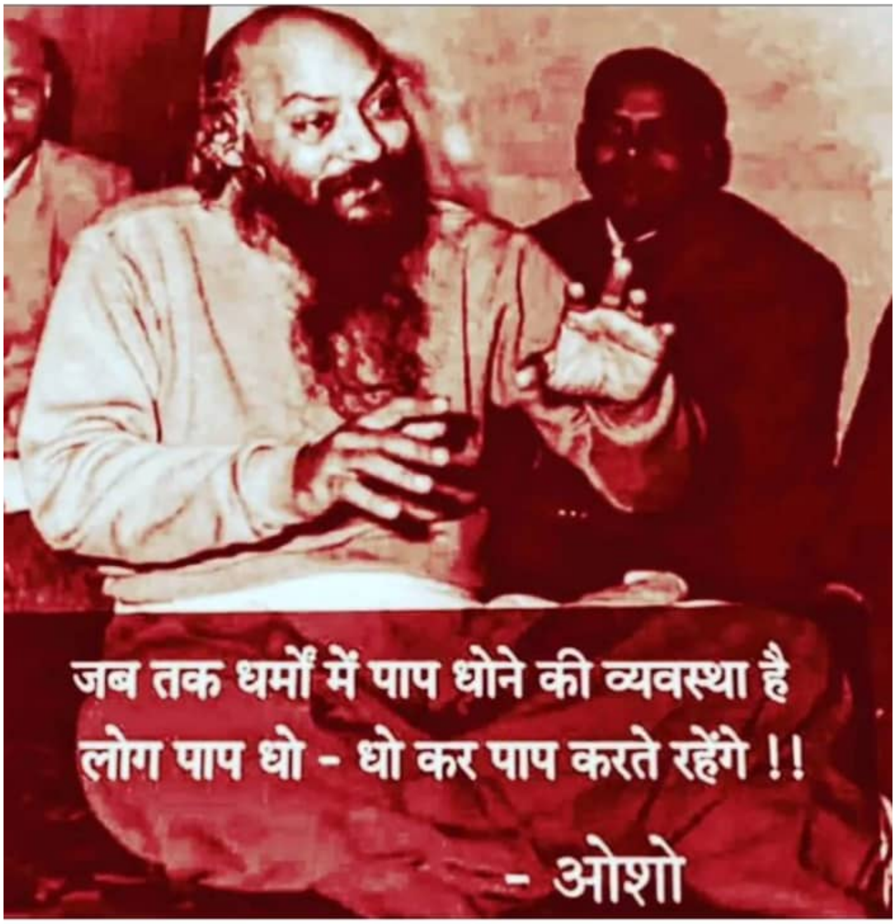

137 likes

loving_osho 💞🌴 ओशो नमन 💞🌴

.... more

View all 4 comments

Add a comment...

18 hours ago

physicswallah
Sponsored

CamScanner

जीवन में जो दिखाई पड़ता है, उसकी ही नहीं – उसकी भी सत्ता है, जो कि दिखाई नहीं पड़ता है। और, दृश्य से उस अदृश्य की सत्ता बहुत गहरी है, क्योंकि उसे अनुभव करने को स्वयं के प्राणों की गहराई में उतरना आवश्यक होता है। तभी वह ग्रहणशीलता उपलब्ध होती है, जो कि उसे स्पर्श और प्रत्यक्ष कर सके। साधारण आंखें नहीं, उसे जानने को तो अनुभूति की गहरी संवेदनशीलता पानी होती है। तभी उसका आविष्कार होता है। और तभी, ज्ञात होता है कि वह बाहर नहीं है कि उसे देखा जा सकता, वह तो भीतर है, वह तो देखने वाले में ही छुपा है। ईश्वर को खोजना नहीं, खोदना होता है। स्वयं में ही जो खोदते चले जाते हैं, वे अंततः उसे अपनी ही सत्ता के मूल - स्रोत और चरम विकास की भांति अनुभव करते हैं। ओशो

CamScanner

12:46 am 0 KB/s VoLTE 4G 27%

उत्सुकता है। वे नरक के द्वार में प्रविष्ट हो जाते है।

महावीर कहते है जो परम जीवन को जानना है तो अपनी ऊर्जा को खींच लेना होगा व्यर्थ की वासनाओं से। मिनीमम, जो न्यूनतम जीवन के लिए जरूरी है—उतना ही मांगना, उतना ही लेना,उतना ही साथ रखना, जिससे रत्तीभर ज्यादा जरूरी न हो। संग्रह मत करना।

कल की चिंता वासना ग्रस्त व्यक्ति को करना ही पड़ेगी, क्योंकि वासना के लिए भविष्य चाहिए। ध्यान करना हो तो अभी हो सकता है, भोग करना हो तो कल ही हो सकता है। भोग के लिए विस्तार चाहिए, साधन चाहिए, समय चाहिए। किसी दूसरे को खोजना पड़ेगा। भोग अकेले नहीं हो सकता है। ध्यान अकेले हो सकता है।

लेकिन बड़ी अद्भुत दुनिया है। लोग कहते है—ध्यान कल करेंगे, भोग अभी कर लें। भोग तो भविष्य में ही हो सकता है।

जिसे जीवन का परम सत्य जाना हे, उसका कहना है समय की खोज ही वासना के कारण हुई है, वासना ही समय का फैलाव है। यह जो इतना भविष्य दिखलाई पड़ता है। यह हमारी वासना का फैलाव है; क्योंकि हमें इतने में पूरा होता नहीं दिखाई पड़ता। और कुछ लोग कहते है, और ठीक ही है....

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि पुनर्जन्म का सिद्धांत प्रेमियों ने खोजा होगा; क्योंकि उनके लिए

CamScanner

12:43 am 0 KB/s VoLTE 4G 27%

Swami Lokeshanand · 19h ·

विषय रूपी जल से भरा यह संसार ही सागर है, इसी में सिंघिका रहती है।
यह बड़ी विचित्र है, यह समुद्री जीवों को नहीं खाती, संसार में पहले से ही डूबे हुओं को नहीं खाती। जो वासना में रचे पचे हैं वे तो पहले से ही मरे हुए हैं, यह मरे हुए को नहीं मारती।
गगनचरों को खाती है, आकाश मार्गियों को खाती है। जो देह धरातल से ऊपर उठकर, देहाध्यास का बंधन ढीला कर, हृदयाकाश में रमण करने लगे, उन्हें खाती है। पक्षियों को, माने जो पक्षी हो गया, भगवान के पक्ष में खड़ा हो गया, उसे खाती है।
यह कंचन रूपी मैनाक और कीर्ति रूपी सुरसा से बच आने वालों को, धोखा देकर खा जाती है। यह उन दोनों की तरह सामने नहीं आती, छिप कर वार करती है। साधक जान भी नहीं पाता, कि यह उन्हें पकड़कर फंसा डालती है।
पकड़ती कैसे है? परछाई पकड़ लेती है, बस फिर वह उड़ नहीं पाता। साधन कर नहीं पाता। अतीत की स्मृति ही परछाई है, देह वासना का पुराना अभ्यास लौट आना ही परछाई पकड़ा जाना है।
"छोरत ग्रंथि देखि खगराया।
विघ्न अनेक करई तब माया॥"
ध्यान दें, सागर पार होने ही वाला है, यह सिंघिका अंतिम बाधा है।
लोकेशानंद कहता है कि बड़े बड़े महात्मा, जो कंचन से बचे, कीर्ति से बचे, वे कामिनी के फेर में मारे गए। कहीं के न रहे। कलंकित हो गए। मृत्यु की प्रतीक्षा के सिवा उन्हें कोई आशा की किरण नहीं बची। यह इसी रागद्वेषात्मिका देहवासना सिंघिका का कार्य है।
परन्तु श्रीहनुमान जी जैसे परम वैराग्यवान संत, इसके कपट को दूर से ही पहचान कर, इसे ज्ञान रूपी गदा से मार डालते हैं। मैनाक की तरह छूते भी नहीं, सुरसा की तरह छोड़ते भी नहीं, जान से मारते हैं, जीवित नहीं छोड़ते, और सागर पार कर जाते हैं।
हमें भी सावधान रहना है।

CamScanner

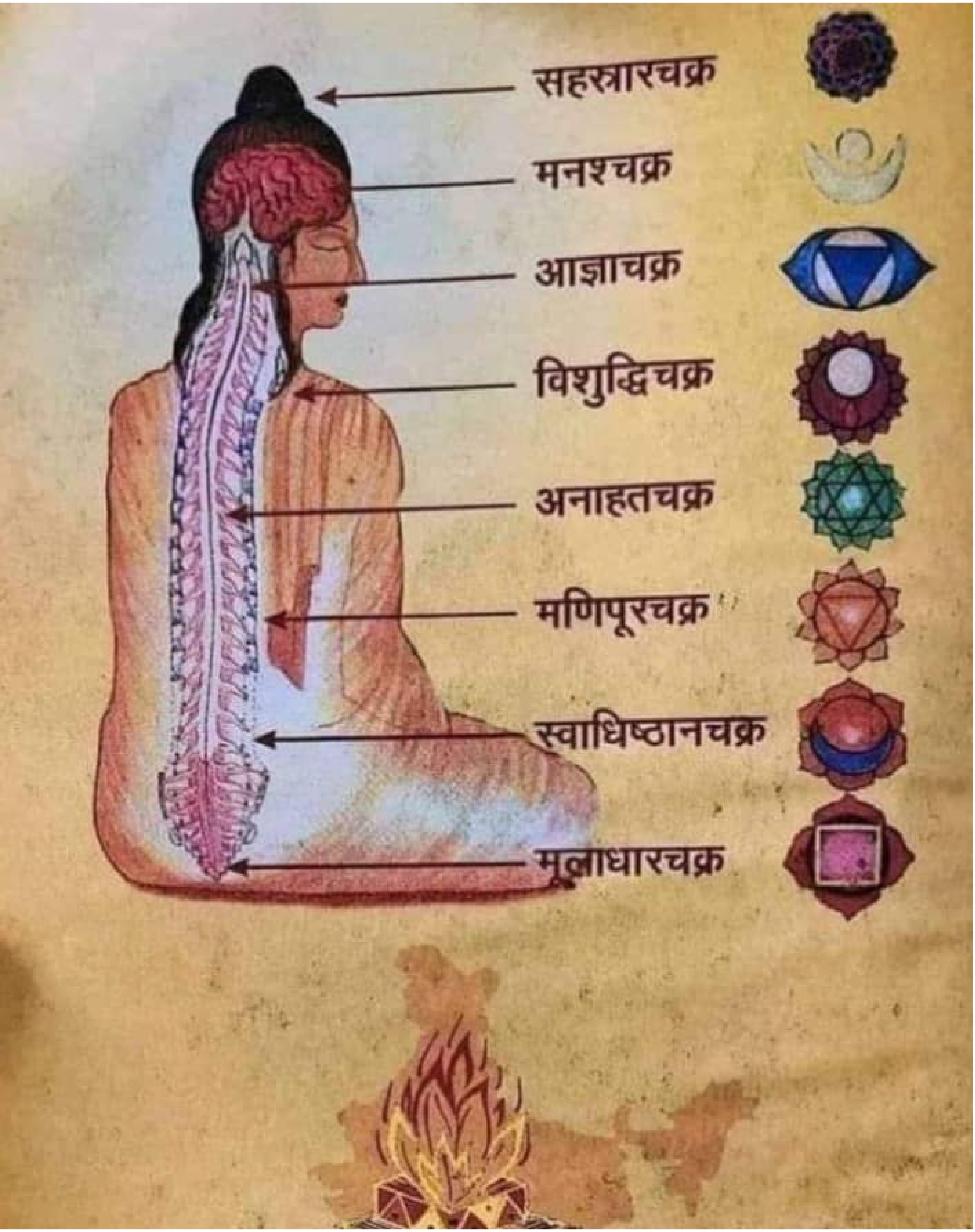
सहस्रारचक्र
मनश्चक्र
आज्ञाचक्र
विशुद्धिचक्र
अनाहतचक्र
मणिपूरचक्र
स्वाधिष्ठानचक्र
मूलाधारचक्र

CamScanner

12:42 am 16 KB/s 4G 27%

718 2 comments • 3 shares • 846 views

Like Comment Share

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]
स्वर्गवासी बाबाजी · 1d

कोई साधक नहीं बन सकता... किन्तु जब इंसान दुखों से पीड़ित होता है , तब वह जिज्ञासु बन जाता है ! जिज्ञासु मुमुक्षु और मुमुक्षु साधक बन जाता है ! ... एक बार साधक बन कर सारी नकारात्मकताओं पर मात करते हुए वह साधक मोक्ष के द्वार पहुँच जाता है ! इसलिए प्रत्येक विवेकशील प्राणी के जीवन में साधक बनने का अवसर अवश्य आता है... परन्तु उस अवसर को समझने के लिए अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग करना पड़ता है....!!

ध्यान मे झटके लगना घूर्णन की क्रिया के अलावा अन्य क्रियाओं का होना हैं !! अर्थात आपकी जागृत कुंडलिनी सबसे पहले शरीर की 72000 नाड़ियों का शुद्धिकरण करती है ! उस दौरान कुंडलिनी उर्ध्वगामी होते हुए जब एक चक्र से दूसरे में चक्र में प्रवेश करती है , तब भी ऐसी क्रियाएं हो सकती हैं ! कुंडलिनी जागृत होने के बाद सभी नसों, नाड़ियों को शुद्ध करती है !

देहशुद्धि से आत्मशुद्धि का मार्गक्रमण !! देहशुद्धि से आत्मशुद्धि की ओर मार्गक्रमण करते हुए विभिन्न शारीरिक क्रियाएं , जो बिना किसी प्रयास के स्वतः होती है ! स्वतः होने का अर्थ है शरीर और नाड़ियों की शुद्धि ! जैसे जैसे यह शुद्धि होती जाती है क्रियाओं का वेग भी कम होता जाता है ! यही प्रगति का लक्षण है ! वेध दीक्षा या शक्तिपात महायोग साधना के मार्ग में सभी यौगिक क्रियाएं प्राणायाम, आसन, मुद्राएं सभी अपने आप सहजता से होती है !... जब पूर्ण रूप से शरीर विकार रहित हो जाता है तब पंच वायु स्थिर होने पर मन भी स्थिर होने लगता है ! साधक आत्मसाक्षात्कार के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है !

CamScanner

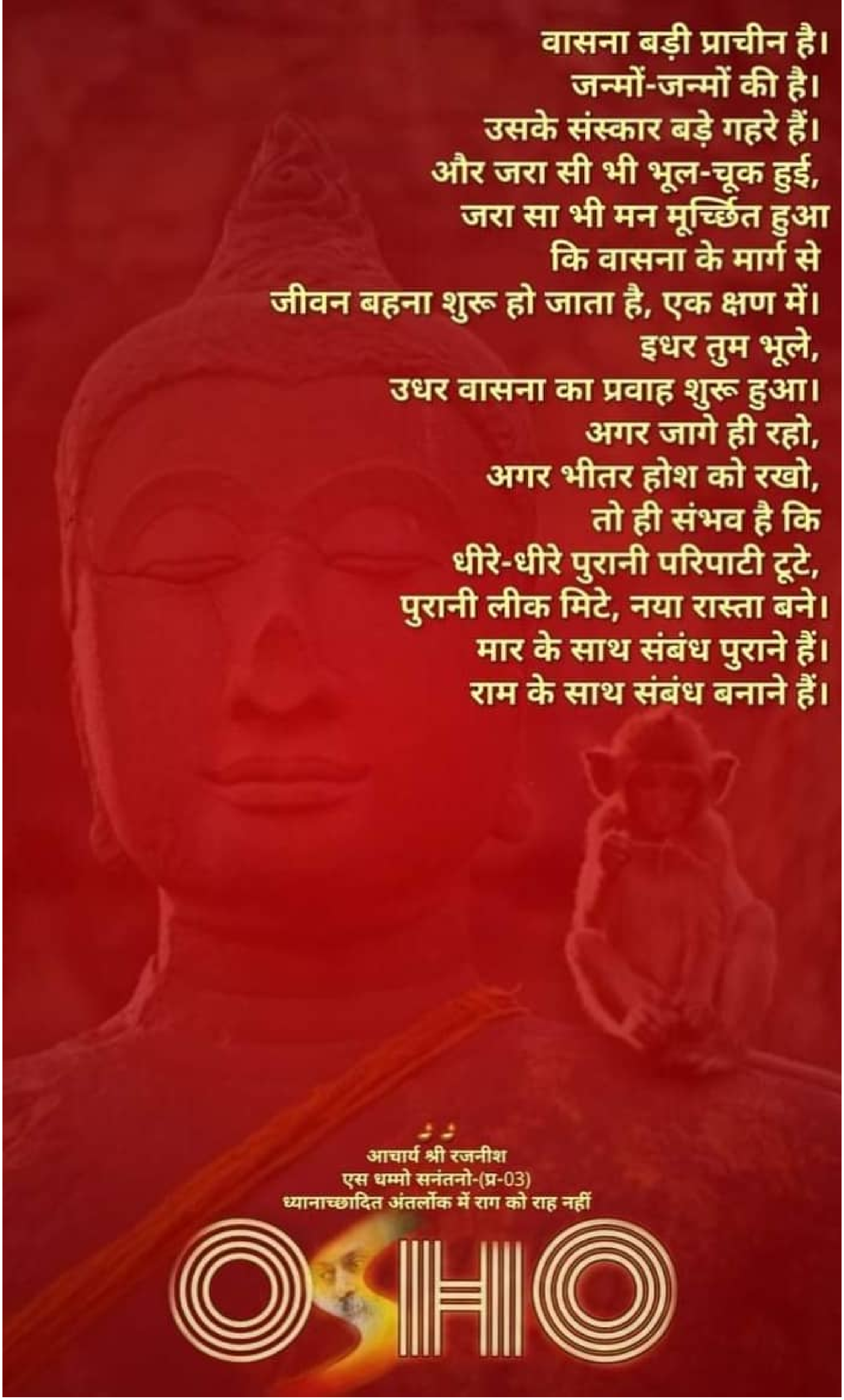

वासना बड़ी प्राचीन है।
जन्मों-जन्मों की है।
उसके संस्कार बड़े गहरे हैं।
और जरा सी भी भूल-चूक हुई,
जरा सा भी मन मूर्च्छित हुआ
कि वासना के मार्ग से
जीवन बहना शुरू हो जाता है, एक क्षण में।
इधर तुम भूले,
उधर वासना का प्रवाह शुरू हुआ।
अगर जागे ही रहो,
अगर भीतर होश को रखो,
तो ही संभव है कि
धीरे-धीरे पुरानी परिपाटी टूटे,
पुरानी लीक मिटे, नया रास्ता बने।
मार के साथ संबंध पुराने हैं।
राम के साथ संबंध बनाने हैं।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-03)
ध्यानाच्छादित अंतर्लोक में राग को राह नहीं
OSHO

CamScanner

12:35 am 0 KB/s 28%

लेकिन जिस दिन हम कामों की महत्ता को, समग्र जीवन के प्रति सहयोग और दान के भाव को देखकर स्वीकार कर लेंगे, जिस दिन हमारी शिक्षा कामों से पदों को, प्रतिष्ठाओं को नहीं जोड़ेगी - एक संगीतज्ञ का जो मूल्य है, जूते सिलने वाले का भी उतना ही मूल्य है, कपड़े सीने वाले का भी उतना ही मूल्य है। सवाल यह नहीं है कि कौन क्या करता है, सवाल यह है कि कौन, कैसे, क्या करता है।

कबीर था, जुलाहा था, कपड़े सीता था, कपड़े बनाता था। लोगों ने उससे कहा, कपड़े बनाना बंद कर दो, संन्यासी को शोभा नहीं देता उसने कहा कि नहीं, जब संन्यासी को कपड़े पहनना शोभा देता है तो बनाना शोभा क्यों नहीं देता? सिर्फ फर्क इतना ही हो सकता है कि पहले मैं कपड़े बनाता था तो सोचता था कितना मनुष्य से छीन लूं, कपड़ा बनाकर कितना पैसा छीन लूं, ऐसा सोचता था। वह संन्यासी के लिए शोभा की बात नहीं थी। अब जब मैं कपड़े बनाता हूं तो मेरे मन में यही भाव चलता रहता है कि कितना कम लूं और कितना ज्यादा दे दूं। मैं मज़बूत कपड़ा बनाता हूं और मेरे मन में वैसे ही आनंद भरा होता है, जैसे कि राम खुद कपड़ा खरीदने आने वाले हैं। वे नाचते हुए अपने कपड़े को लेकर बाजार में जाते थे और नाचते हुए बुलाते थे कि कौन राम आज मेरी इस मेहनत को स्वीकार करेगा, मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेगा। जो आदमी उनसे कपड़ा पहनता था उसके पैर छू लेते थे और उसको कपड़ा पहना देते थे कि भगवान, थोड़ा सम्हलकर पहनना। बनाया मैंने बहुत मेहनत से, बहुत प्रेम से, बहुत प्रार्थनाओं से इसको बुना है।

लेकिन कपड़ा बुनना क्या कोई बुरी बात है? जुलाहा होना क्या कोई बुरी बात है? जिन्दगी के लिए कोई बात बुरी नहीं है, जिंदगी के लिए ये बातें जरूरी हैं, काम जरूरी हैं। कामों के साथ स्टेटस नहीं होना चाहिए, कामों के साथ पद नहीं होना चाहिए। लेकिन शिक्षा बिल्कुल ही गलत है। एकदम ही गलत है! स्कूल में जो चपरासी है उसकी कोई इज्ज़त नहीं है। फिर बच्चे चपरासी क्यों होना चाहिए? यह युवकों के ऊपर है कि क्रांति लाएं, सारी दृष्टि बदलें। जब तक यह स्थिति बनी रहेगी, हम चीज़ों को इन - इन भाषाओं में, इन - इन शब्दों में सोचते रहेंगे, ऊंचे - नीचे की तरह सोचते रहेंगे।

अभी मैं गया, शिक्षक दिवस हुआ। वहां किसी ने मुझे भूल से बोलने बुला लिया। वहां मैं गया, तो उन्होंने कहा कि यह शिक्षक का बहुत सम्मान है कि एक शिक्षक राष्ट्रपति हो गया। मैंने कहा, यह

CamScanner

10:39 am 160 KB/s VoLTE 4G 96%

ओशो का हिन्दी साहित्य

Seema Agrawal · 2h ·

. कृष्ण का व्यक्तित्व बहुत अनूठा है। अनूठेपन की पहली बात तो यह है कि कृष्ण हुए तो अतीत में, लेकिन हैं भविष्य के। मनुष्य अभी भी इस योग्य नहीं हो पाया कि कृष्ण का समसामयिक बन सके। अभी भी कृष्ण मनुष्य की समझ से बाहर हैं। भविष्य में ही यह संभव हो पाएगा कि कृष्ण को हम समझ पाएं।

इसके कुछ कारण हैं। सबसे बड़ा कारण तो यह है कि कृष्ण अकेले ही ऐसे व्यक्ति हैं जो धर्म की परम गहराइयों और ऊंचाइयों पर होकर भी गंभीर नहीं हैं, उदास नहीं हैं, रोते हुए नहीं हैं। साधारणतः संत का लक्षण ही रोता हुआ होना है। जिंदगी से उदास, हारा हुआ, भागा हुआ।

कृष्ण अकेले ही नाचते हुए वयक्ति हैं। हंसते हुए, गीत गाते हुए। अतीत का सारा धर्म दुखवादी था। कृष्ण को छोड़ दें तो अतीत का सारा धर्म उदास, आंसुओं से भरा हुआ था। हंसता हुआ धर्म मर गया है और पुराना ईश्वर, जिसे हम अब तक ईश्वर समझते थे, जो हमारी धारणा थी ईश्वर की, वह भी मर गई है।

जीसस के संबंध में कहा जाता है कि वह कभी हंसे नहीं। शायद जीसस का यह उदास व्यक्तित्व और सूली पर लटका हुआ उनका शरीर ही हम दुखी-चित्त लोगों को बहुत आकर्षण का कारण बन गया। महावीर या बुद्ध बहुत गहरे अर्थों में इस जीवन के विरोधी हैं। कोई और जीवन है परलोक में, कोई मोक्ष है, उसके पक्षपाती हैं। समस्त धर्मों ने दो हिस्से कर रखे हैं जीवन के–एक वह जो स्वीकार योग्य है और एक वह जो इनकार के योग्य है।

कृष्ण अकेले ही इस समग्र जीवन को पूरा ही स्वीकार कर लेते हैं। जीवन की समग्रता की स्वीकृति उनके व्यक्तित्व में फलित हुई है। इसलिए, इस देश ने और सभी अवतारों को आंशिक अवतार कहा है, कृष्ण को पूर्ण अवतार कहा है। राम भी अंश ही हैं परमात्मा के, लेकिन कृष्ण पूरे ही परमात्मा हैं। और यह कहने का, यह सोचने का, ऐसा समझने का कारण है। और वह कारण यह है कि कृष्ण ने सभी कुछ आत्मसात कर लिया है~ओशो

CamScanner

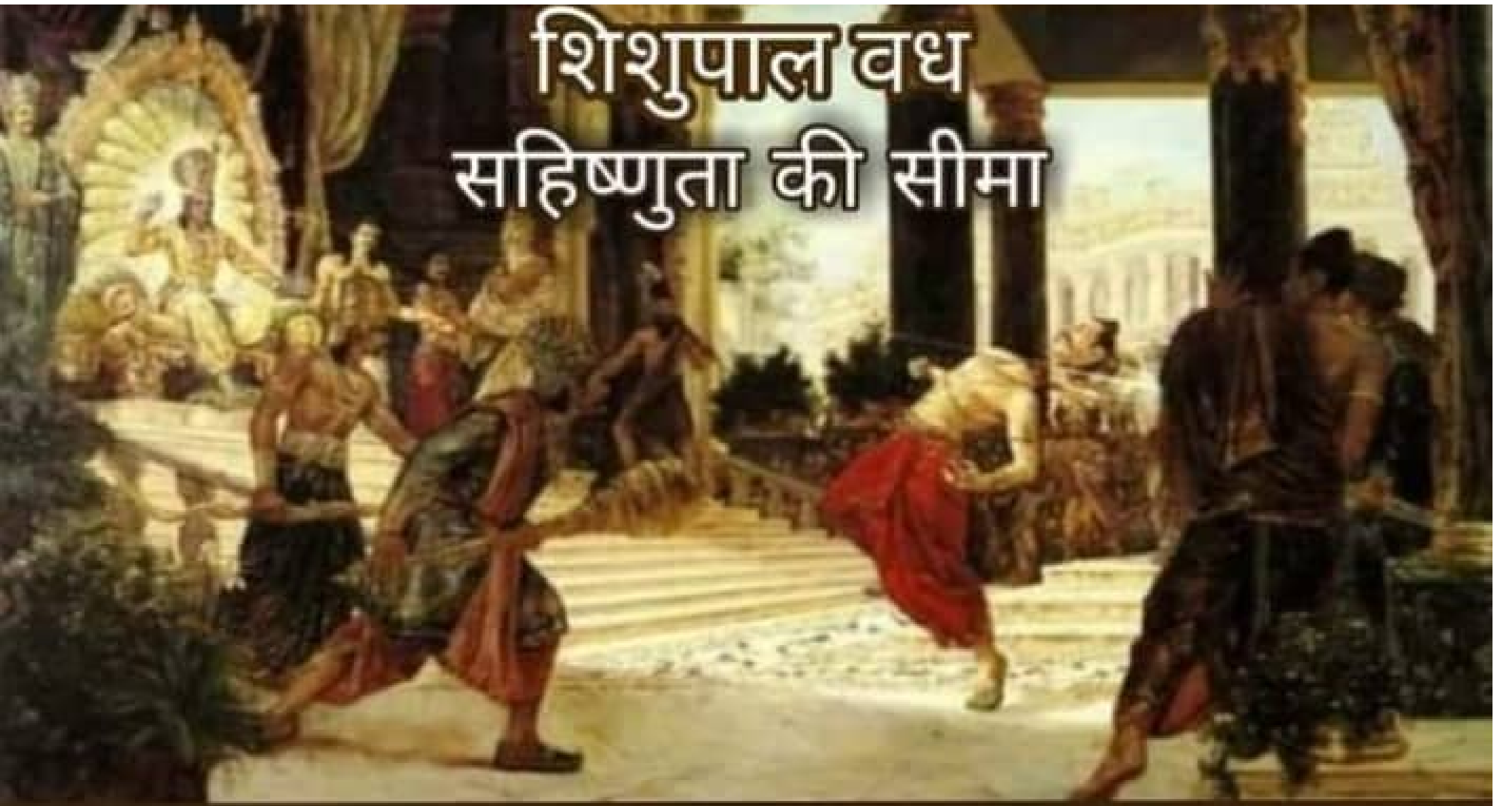

बड़ा सवाल कृष्ण के लिए यह नहीं है कि उनकी सहिष्णुता चुक गई, बड़ा सवाल यह है कि अब सामने का जो आदमी है, अब उसकी सीमा आ गई। अब उसकी सीमा आ गई। अब इससे ज्यादा सहे जाना सहिष्णुता का सवाल नहीं है, इससे ज्यादा सहे जाना बुराई को बनाए रखने का सवाल है। इससे ज्यादा सहे जाना अब अधर्म को बचाना होगा।

ओशो

कृष्ण स्मृति - १०

CamScanner

ओशो ।। प्रेम-ध्यान ।।

ओशो Gold Medallist हैं । 150000 किताबों का अध्ययन किया , 650 किताबें उनके नाम से प्रकाशित है । बोलने पर इतना नियंत्रण था कि जो बोल दिया वही अंतिम है , वही छपता है । उन्हों ने उस में कभी सुधार नहीं किया । " माफ़ " करना या " मेरा मतलब था यह नहीं " ... आदि शब्दों का कभी भी उपयोग नहीं किया . कोई भी व्यक्ति ओशो से वाद -विवाद नही कर सका । पोप ने कभी उनका चैलेंज स्वीकार नहीं किया ।ओशो को गालियां बहुत दी गयी , किन्तु अखंड विश्व में कोई भी व्यक्ति उनसे शास्त्रार्थ करने को राजी नहीं हुआ . २१ देशों ने अपने देश में ओशो को प्रवेश नहीं दिया . उन्होंने अपने ज्ञान का झंडा विश्व में फहरा दिया किन्तु कोई भी उनके अश्वमेध के रथ को रोक नहीं पाया.ओशो विश्व के अपराजित योद्धा हैं । ओशो इतने विशाल हैं कि कोई भी धर्म या देश उन्हें आत्म सात नहीं कर सकता और फिर भी हर आदमी को लगता है ओशो मेरे ही मन की बात करते हैं ...

CamScanner

CamScanner

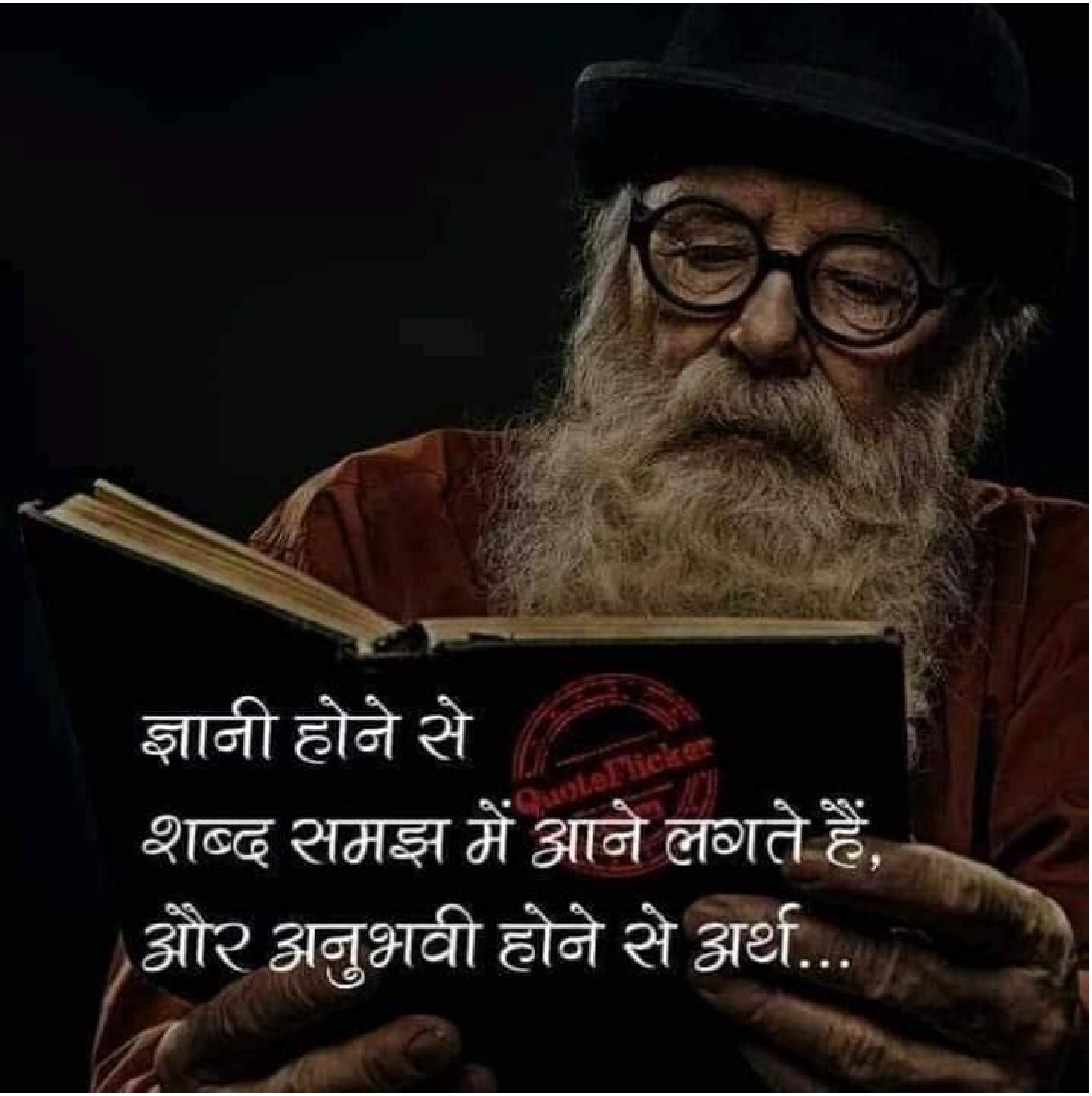

CamScanner

केवल जीवन जीने
के
तरीके से ही
ज्ञानी और अज्ञानी
की पहचान हो
जाती है।
अज्ञानी भय में
और
ज्ञानी अभय होकर
जीवन जीते हैं।

CamScanner

Osho Thoughts

Munabai Makvana · 11h ·

मैंने सुना है, एक गुरु एक दोपहर, गर्मी की दोपहर सोया। उसके दो शिष्य थे। दोनों सेवा करना चाहते थे, क्योंकि सुना था सेवा से मेवा मिलता है। तो गुरु ने कहा ठीक है सेवा करो। गुरु तो सो गया, दोनों ने गुरु को आधा – आधा बांट लिया कि बायां पैर में सेवा करूंगा, दायां पैर तू सेवा करना। और गुरु को कुछ पता नहीं है। नींद में गुरु ने करवट ले ली, बाएं पैर पर दायां पैर पड़ गया। जिसका बायां पैर था, उसने दूसरे से कहा : हटा ले अपने पैर को! देख हटा ले! मेरे पैर पर तेरा पैर पड़ जाए, यह बदी श त के बाहर है।

उसने कहा : देख लिए हटानेवाले! देख लिए तेरे जैसे हटानेवाले! हो हिम्मत तो हटा दे! अगर मेरा पैर भी छुआ, आज गरदनें कट जाएंगी।

दोनों ने डंडे उठा लिए। उनकी आवाज श प्रेरगुल सुनकर गुरु की नींद खुल गई। उसने आंख बंद पड़े – पड़े सारा मामला समझा कि मामला क्या है? वह तो डंडे उठाकर पिटाई करनी है – – गुरु की पिटाई! क्योंकि " उसका पैर मेरे पैर पर चढ़ गया है। " गुरु ने कहा कि हद हो गई, ये दोनों पैर मेरे हैं। तुमसे कहा किसने? तुमने बांटे कैसे? तुम हो कौन इनकी मालकियत करनेवाले?

यह सारा अस्तित्व उसका है, लेकिन बांट बैठे हैं। हिंदू जाकर मस्जिद में आग लगा देते हैं, मुसलमान जाकर मंदिर की मूर्ति तोड़ देते हैं। किसकी मूर्ति, किसका मंदिर, किसकी मस्जिद?
"दोऊ दीन ने झगड़ा मांडेव, पायो नाहिं सरीर।....." इनके झगड़े के कारण परमात्मा का अवतरण नहीं हो पाता है। यह पृथ्वी परमात्मा– पूर्ण नहीं हो पाती है।

ओशो - का सोवै दिन रैन--(प्रवचन--3)

CamScanner

7:36 am 0 KB/s 100%

कि जो सुंदरतम लड़की होती गांव की, उसको विवाह नहीं करने देते थे। क्योंकि उससे बहुत कलह मच जाएगी। उसको नगरवधू बना देते थे; उसको वेश्या बना देते थे। वह गांव के लोगों को शांत रखने का उपाय था। आम्रपाली का तुमने नाम सुना होगा, वह नगरवधू थी। नगरवधू का मतलब यह था, वह सबकी पत्नी। जो बहुत सुंदर स्त्री होती गांव में, युवती होती, उसको फिर एक की स्त्री नहीं बनने देते थे; क्योंकि एक का बनाना बहुत संघर्ष का कारण होगा--तलवारें खिंच जाएंगी, झंझट मचेगी। उसको सभी का बना देना उचित है, झगड़ा-झांसा नहीं होगा। मगर, वहां जहां कामवासना का जगत है, वहां तुम कितने ही उपाय करो, झंझट-झगड़ा तो बना ही रहेगा। आम्रपाली के द्वार पर भी झगड़े हो जाते थे। क्योंकि आम्रपाली भी एक रात किसी एक को ही मिल सकती थी। पूरा गांव--गांव ही नहीं, आस-पास के गांव, दूर-दूर के नगर के लोग उत्सुक थे। अब एक स्त्री कितनों को उपलब्ध हो सकती थी, भला तुम नगरवधू बना दो! यह भी बड़ा अमानवीय है। लेकिन एक रास्ता निकाला था, किसी तरह सुलझ, समझ रखने का, शांति बनाए रखने का। लेकिन फिर भी कुछ हल नहीं होता था। फिर गरीब थे, अमीर थे, सम्राट थे। जब सम्राट नगरवधू के द्वार पर होता, तो बाकी लोगों का तो क्यू में खड़े होने का उपाय न था। तो वे जलते, मरते, बुझते।

जब चूहा मुंह में हो मरा, तो बाकी सब तरफ चीलें हमला करेंगी ही, यह स्वाभाविक है। थोड़ा चूहे को छोड़ कर देखो! अचानक तुम पाते हो--सारा जगत मित्र हो गया। कामवासना के जाते ही सारा जगत मित्र मालूम होने लगता है। कोई शत्रु न रहा। शत्रु कोई था ही नहीं, मरे चूहे के कारण उपद्रव था। तुमने नाहक निजी दुश्मनी समझ ली थी, निज से कोई लेना-देना न था, वह मरा चूहा तुम्हारे मुंह में था। फिर चील बैठी है अकेले वृक्ष पर। उस दिन उस चील को ध्यान हो गया होगा। एक बात समझ में आ गई कि उस चूहे में सुख न था, दुख का सारा उपाय था; उसमें सारे बीज थे वैमनस्य के।

काम न जाए तो क्रोध कभी नहीं जा सकता। लोग मुझसे पूछते हैं, क्रोध कैसे जाए? उनको मैं कहता हूं, मुश्किल है; तुम बात ही गलत पूछते हो। बीज को बचाना चाहते हो, पत्तों को काटना चाहते हो! जड़ को बचाना चाहते हो, शाखाओं को काटना चाहते हो! उससे तो उलटी कलम हो जाएगी। एक शाखा काटो, तीन निकल आती हैं। जड़ को ही काटना होगा।

CamScanner

7:34 am 0 KB/s 4G 100%

जिसे तुम सुख कहते हो, तो वह तो बड़ी छीछालेदर है। वह तो ऐसा है, जैसी पुरानी पुराण में कथा है: एक चील एक कचरेघर से एक मरे चूहे को ले उड़ी। जैसे ही उसने मरे चूहे को पकड़ा, पच्चीसों चीलें उसके पीछे चक्कर काटने लगीं, छीना-झपटी शुरू हो गई, हमला शुरू हो गया। वह जो चील, जो मरे चूहे को अपने मुंह में लटकाए थी, जगह-जगह उसके पंखों में चोंचें मारी गईं, घाव हो गए, खून गिरने लगा। वह बड़ी हैरान हुई कि अभी तक कुछ भी न था, और अब अचानक! लेकिन उसने भी मरा चूहा छोड़ा नहीं। वह तो ऐसा हुआ कि तीव्र झपट्टे में उसके मुंह से चीत्कार निकली और चूहा छूट गया। जैसे ही चूहा छूटा, वे चीलें जो इर्द-गिर्द मंडराती थीं, सब चूहे के पीछे चली गईं, वह चील अकेली रह गई। वह एक वृक्ष पर बैठ गई। वह सोचने लगी।

वह चील तुमसे ज्यादा समझदार रही होगी; उसको शंकर मूढ़ नहीं कह सकते थे। वह सोचने लगी। वह सोचने लगी--पहले तो मैं समझती थी कि ये चीलें मेरी दुश्मन हैं। वह बात गलत थी। क्योंकि चूहे के छूटते ही सारी चीलें चली गईं; किसी से कोई दुश्मनी न रही; अब कोई हमला करने को नहीं है, कोई पास ही नहीं है। तो मुझसे कुछ वास्ता न था, मुझसे कोई दुश्मनी न थी, मुझसे कोई निजी बैर न था--चूहा था जड़। और चीलें चूहे के कारण मेरे पीछे थीं। भूल मेरी ही थी कि मैंने चूहा पकड़ा था, वह मैं पहले भी छोड़ सकती थी। लेकिन मैं नासमझ यही समझती रही कि उनकी दुश्मनी मुझसे है।

रामकृष्ण इस पुराण की कथा को बहुत बार कहते थे। और वे कहते थे कि काम को जो मुंह में दबाए है, वह मरे चूहे को मुंह में दबाए है। सब तरफ क्रोध पैदा होगा, दुश्मनी पैदा होगी। हालांकि तुम कहोगे: मैंने किसी का भी कुछ नहीं बिगाड़ा; मैं अपना चुपचाप अपने घर में रहता हूं, अपनी घर-गृहस्थी की फिक्र करता हूं; मैं किसी के लेन-देन में नहीं आता। फिर क्यों लोग मेरे दुश्मन हैं? लेकिन तुम लेन-देन में आ ही गए। एक सुंदर स्त्री से तुमने विवाह कर लिया। पूरा गांव उत्सुक था। अब तुम कहते हो: मैं अपनी घर-गृहस्थी में रह रहा हूं! तुम रहो भला घर-गृहस्थी में, लेकिन पूरे गांव से तुमने झगड़ा मोल ले लिया।

हिंदुस्तान में पुराने दिनों में ऐसा रिवाज था, बुद्ध के समय तक जारी रहा, कि जो सुंदरतम लड़की होती गांव की, उसको विवाह नहीं करने देते थे। क्योंकि उससे बहुत कलह मच जाएगी। उसको नगरवधू बना देते थे; उसको वेश्या बना देते थे। वह गांव के लोगों को शांत रखने का उपाय

CamScanner

"क्या आप जानते हैं मैं कौन हूं?"

सुकरात ने कहा, "जरा यहां बैठो, आओ समझने की कोशिश करें कि तुम कौन हो?"

सुकरात ने दुनिया का नक्शा उसके सामने रखा और उस धनी व्यक्ति से कहा,

"बताओ तो जरा, इसमें एथेंस कहां है?"

वह बोला, "दुनिया के नक्शे में एथेंस तो एक बिन्दु भर है।"

उसने एथेंस पर उंगली रखी और कहा,
"यह है एथेंस।"

सुकरात ने पूछा,
"इस एथेंस में तुम्हारा महल कहां है?"

वहां तो बिन्दु ही था, वह उसमें महल कहां से बताए। फिर सुकरात ने कहा, "अच्छा बताओ, उस महल में तुम कहां हो?"

यह नक्शा तो पृथ्वी का है। अनंत पृथ्वियां हैं, अनंत सूर्य हैं, तुम हो कौन? कहते हैं, जब वह जाने लगा तो सुकरात ने वह नक्शा यह कहकर उसे भेंट कर दिया कि इसे सदा अपने पास रखना और जब भी अभिमान तुम्हें जकड़े, यह नक्शा खोलकर देख लेना कि कहां है एथेंस? कहां है मेरा महल? और फिर मैं कौन हूं? बस अपने आपसे पूछ लेना।

वह धनी व्यक्ति सिर झुका कर खड़ा हो गया तो सुकरात ने कहा,

"अब तुम समझ गए होंगे कि वास्तव में हम कुछ नहीं हैं लेकिन कुछ होने की अकड़ हमें पकड़े हुए है। यही हमारा दु:ख है, यही हमारा नरक है। जिस दिन हम जागेंगे, चारों ओर देखेंगे तो कहेंगे कि इस विशाल ब्रह्मांड में हम कुछ नहीं हैं।"

CamScanner

ज्ञान घटै कोई मूढ़ की संगत

गंग

ज्ञान घटै कोई मूढ़ की संगत ध्यान घटै बिन धीरज लाये।
प्रीत घटै परदेश बसै अरु भाव घटै नित ही नित जाये।
सोच घटै कोइ साधु की संगत रोग घटै कुछ ओखद खाये।
गंग कहै सुन शाह अकब्बर पाप कटै हरि के गुण गाये॥

स्रोत :

पुस्तक : साहित्य प्रभाकर (पृष्ठ 55) **संपादक** : महालचंद बयेद

रचनाकार : गंग **प्रकाशन** : ओसवाल प्रेस कलकत्ता **संस्करण** : 1937

संबंधित विषय

नीति

अकबर

CamScanner

12:49 pm 0 KB/s VoLTE 4G 88%
osho.com/hi/osho-hindi

जब से सतगुरु-ज्ञान भयो है, चले न केहु के जोर।।
मातु रिसाई पिता रिसाई, रिसाये बटोहिया लोग।
ग्यान-खड़ग तिरगुन को मारूं, पांच-पचीसो चोर।।
अब तो मोहि ऐसी बनि आवै, सतगुरु रचा संजोग।
आवत साध बहुत सुख लागै, जात वियापै रोग।।
धरमदास बिनवै कर जोरी, सुनु हो बन्दी-छोर।
जाको पद त्रैयलोक से न्यारा, सो साहब कस होए।।

साहेब येहि विधि ना मिलै, चित चंचल भाई।
माला तिलक उरमाइके, नाचै अरु गावै।
अपना मरम जानै नहीं, औरन समुझावै।।
देखे को बक ऊजला, मन मैला भाई।।
आंखि मूंदि मौनी भया, मछरी धरि खाई।।
कपट-कतरनी पेट में, मुख वचन उचारी।
अंतरगति साहेब लखै, उन कहां छिपाई।।
आदि अंत की वार्ता, सतगुरु से पावो।
कहै कबीर धरमदास से, मूरख समझावो।।

मेरे मन बस गए साहेब कबीर।
हिंदू के तुम गुरु कहावो, मुसलमान के पीर।।
दोऊ दीनन ने झगड़ा मांडेव, पायो नाहिं सरीर।।
सील संतोष दया के सागर, प्रेम प्रतीत मति धीर।
वेद कितेब मते के आगर, दोऊ दीनन के पीर।।
बड़े-बड़े संतन हितकारी, अजरा अमर सरीर।
धरमदास की विनय गुसाईं, नाव लगावो तीर।।

समझी नहीं हयात की शामो-सहर को मैं
हैरत से देखती रही शम्मो-कमर को मैं
यह कौन गायबाना है, जल्वे दिखा रहा
बेताब पा रही हूं जो अपनी नजर को मैं
मंजिल का होश है, न अपनी खबर मुझे
मुद्दत से तक रही हूं तेरी रहगुजर को मैं
दिल की कली कभी न खिली फिर भी आज तक

CamScanner

6:52 pm 0 KB/s VoLTE 4G 68%

facebook

झंझट हो गई, जल्दी में हमने कृष्ण से यह तो पूछा ही नहीं कि लौटते वक्त क्या करेंगे! जाते वक्त चलो कि नेमीनाथ जीवन- भर के उपवासी हैं... लौटते वक्त भोजन, करो लौट रहे हैं, अब किस मुंह से गंगा से या यमुना से कहे कि अब राह दे दो! अब क्या करें? किकर्तव्यतिमूढ वे नदी के तट पर खड़ी हैं।

नेमीनाथ हंसने लगे। उन्होंने पूछा : क्या अड़चन है? उन्होंने कहा : अड़चन यह है कि हम पूछकर आये थे। कृष्ण ने जो उत्तर दिया था, वह काम कर गया मगर अब कैसे काम करेगा?

नेमीनाथ ने कहा : फिक्र छोड़ो! तुम तो वही कहो कि अगर नेमीनाथ जीवन भर के, जन्म भर के उपवासी हों तो नदी राह दे दे। उन्होंने कहा : महाराज, कृष्ण की बात पर भरोसा नहीं आ रहा था, आपकी बात पर तो अब बिलकुल भी नहीं आ सकता।

नेमीनाथ ने कहा : भरोसे या न भरोसे का सवाल नहीं। जो मैं कहता हूं वह करो। नदी भलीभांति जानती है कि नेमीनाथ उपवासे हैं।

और रुक्मणि को कोई राह नहीं थी तो कहना पड़ा। झिझकते-झिझकते कहा कि हे नदी, राह दे दे, यदि नेमीनाथ जीवन भर के उपवासी हों।

और नदी ने राह दे दी। कहानी बड़ी प्रीतिकर है, कोई ऐतिहासिक नहीं हो सकती। आदमियों को नहीं दिखाई पड़ता, नदियों को क्या खाक दिखाई पड़ेगा! पर बात प्रतीक की है, बात मूल्य की है।

नेमीनाथ के जीवन भर के उपवास का अर्थ केवल इतना ही है कि सब अभिनय है, भीतर साक्षी है। भोजन किया तो, भूखे रहे तो, दोनों हालत में भीतर साक्षी है। साक्षी क्षण भर को नहीं छूटता है। शाश्वत, सतत साक्षी में थिरता हो गई है। यह ध्यान की धूनी है। फिर खेलो!

ओशो; हंसा तो मोती चुगैं

CamScanner

8:47 pm 0 KB/s VoLTE 4G 59%

विश्राम कभी पाया ही न था। ऐसी शांति छाई थी! रोआं-रोआं विराम में था, विश्राम में था। न कुछ करना था; न कहीं जाना था; न कुछ पाना था। सब मोह छूट गए, संसार के भी और परलोक के भी। और तभी देखा कि रात का आखिरी तारा डूब रहा है। जैसे-जैसे वह तारा डूबा, वैसे-वैसे ही भीतर, अगर कोई कहीं धूमिल सी रेखा भी रह गई होगी लोभ की, वह भी विलुप्त हो गई। आखिरी तारे के डूबने के साथ ही बुद्ध को महापरिनिर्वाण उपलब्ध हुआ। अनहद में विश्राम पाया। गिरह हमारा सुन्न में! शून्य में घर मिल गया।

सवाल उठता है कि बुद्ध ने छह साल की तपश्चर्या के कारण बुद्धत्व पाया या तपश्चर्या को छोड़ने के कारण बुद्धत्व पाया? ढाई हजार वर्षों में बौद्ध विचारक इस पर मंत्रणा करते रहे हैं, विचारणा करते रहे हैं, विवाद करते रहे हैं। मेरे हिसाब में विवाद व्यर्थ है। दोनों ही बातें उपयोगी हैं। वह छह वर्ष जो तपश्चर्या की थी, उसका भी हाथ है। पाने में नहीं; पाया तो तपश्चर्या को छोड़ कर। लेकिन तपश्चर्या का हाथ है तपश्चर्या को छुड़ाने में!

तपश्चर्या करते-करते एक बात दिखाई पड़ गई कि यह पागलपन है; इसमें कुछ सार नहीं। संसार तो पहले ही छूट चुका था, अब यह मोक्ष भी छूट गया। मोक्ष पाने की आकांक्षा भी छूट गई। लोभ की जो अंतिम रेखा रह गई थी, वह भी विलुप्त हो गई। तो तपश्चर्या ने इतना काम किया। जैसे एक कांटा गड़ जाता है, तो हम दूसरे कांटे से उसको निकाल लेते हैं। फिर दोनों कांटों को फेंक देते हैं। ऐसा नहीं है कि पहला कांटा फेंक दिया और दूसरे को सम्हाल कर उसके घाव में रख लिया कि इसकी बड़ी कृपा है! किस शब्दों में इसका आभार करें!

एक कांटे से दूसरा निकल गया, फिर दोनों हम फेंक देते हैं। ऐसे ही तपश्चर्या से, एक व्यर्थ बात मन में अटकी थी कि पाने से मिलेगा परमात्मा, वह बात निकल गई। परमात्मा तो मिला ही हुआ है। दौड़ खतम हुई, चाह मिटी, कि पाया। पाया तो सदा से था ही।

ओशो, अनहद में विसराम

CamScanner

8:47 pm 0 KB/s 59%

यह घटना बड़ी क्रांतिकारी सिद्ध हुई। उन्होंने उसी क्षण, वह जो छह साल व्यर्थ की दौड़-धूप की थी, छोड़ दी। धन और पद की दौड़ तो पहले ही छोड़ चुके थे; उस संध्या मोक्ष की दौड़ भी छोड़ दी।

यह घटना बहुत विचारणीय है। दौड़ ही न रही। उस सांझ जब वे सोए, पूर्णिमा की रात थी, और चित्त पहली दफा अनहद के विश्राम को उपलब्ध हुआ था। क्योंकि जहां दौड़ नहीं, वहां विश्राम है। चाहे शरीर से न भी दौड़ो, अगर मन से भी दौड़ रहे हो, तो भी तो थकान होती है। मन भी तो थकता है।

अब कोई दौड़ ही न थी; कुछ पाना ही न था। सब व्यर्थ है, कुछ भी पाना नहीं है। जो है, जैसा है, उससे ही राजी हो रहे। इसको बुद्ध ने तथाता कहा है। जो है, जैसा है, ठीक है।

उस संध्या तथाता के इस भाव में ही सोए। बाद में कहा कि वह पहली रात थी, जब सच में मैं सोया। विश्राम परिपूर्ण था, एक सपना भी न आया। क्योंकि जब चाह ही न रही, तो सपने कहां से आएं? सपने तो चाह की ही छाया है, जो नींद में पड़ती है। दिन में जो चाह है, रात वही सपना है।

एक सपना नहीं। और सुबह जब आंख खुली, तो कहा बाद में, कि ऐसा विश्राम कभी पाया ही न था। ऐसी शांति छाई थी! रोआं-रोआं विराम में था, विश्राम में था। न कुछ करना था; न कहीं जाना था; न कुछ पाना था। सब मोह छूट गए, संसार के भी और परलोक के भी। और तभी देखा कि रात का आखिरी तारा डूब रहा है। जैसे-जैसे वह तारा डूबा, वैसे-वैसे ही भीतर, अगर कोई कहीं धूमिल सी रेखा भी रह गई होगी लोभ की, वह भी विलुप्त हो गई। आखिरी तारे के डूबने के साथ ही बुद्ध को महापरिनिर्वाण उपलब्ध हुआ। अनहद में विश्राम पाया। गिरह हमारा सुन्न में! शून्य में घर मिल गया।

सवाल उठता है कि बुद्ध ने छह साल की तपश्चर्या के कारण बुद्धत्व पाया या तपश्चर्या को छोड़ने के कारण बुद्धत्व पाया? ढाई हजार वर्षों में बौद्ध विचारक इस पर मंत्रणा करते रहे हैं, विचारणा करते रहे हैं, विवाद करते

CamScanner

8:46 pm 0 KB/s VoLTE 4G 59%

#बुद्ध ने छह वर्ष तक पाने की कोशिश की। स्वाभाविक! आदमी लोभ की दुनिया में जीता है। तो जिस तरह धन और पद को पाते थे, सोचा, इसी तरह मुक्ति को पा लेंगे! छह वर्ष तक सतत चेष्टा की। सब किया जो लोगों ने कहा कि करो; जिनको तुम कह रहे हो संत। किसी ने मंत्र दिए, तो मंत्र दोहराए। किसी ने उपवास करवाया, तो उपवास किया। और किसी ने सिर के बल खड़े होने को कहा, तो सिर के बल खड़े रहे। तपश्चर्या, तो तपश्चर्या! सुंदर देह थी, राजकुमार थे, सूख कर कांटा हो गए।

एक मूढ़ ने बता दिया कि धीरे-धीरे भोजन को कम करो। इतना कम करो क्रमशः कि बस एक चावल का दाना ही भोजन रह जाए। इस तरह कम करते-करते-करते एक चावल का दाना रह जाए। फिर धीरे-धीरे बढ़ाना, दो चावल के दाने, तीन चावल के दाने...।

जिस दिन एक चावल का दाना रह गया, बुद्ध इतने कमजोर हो गए कि निरंजना नदी को पार करते थे, पार न कर सके।

मैं निरंजना को देखने गया था, सिर्फ इसीलिए कि कैसी नदी है जिसको बुद्ध पार न कर सके! भवसागर पार कर गए और निरंजना पार न कर सके? देखा तो बहुत चौंका। नदी नहीं है, नाला है। गर्मी के दिन थे, बिलकुल सूखा था! कोई भी पार कर जाए। छोटा बच्चा पार कर जाए। कोई तैरने वगैरह की भी जरूरत नहीं थी। घुटने-घुटने पानी भी नहीं था।

ये बुद्ध क्यों पार नहीं कर सके? कमजोर इतने हो गए थे कि निरंजना के किनारे पर एक वृक्ष की जड़ को पकड़ कर किसी तरह अपने को अटकाए रहे। जब थोड़ी सी ताकत आई, तो किसी तरह सरक कर घाट पर चढ़े। उस घड़ी वृक्ष की जड़ को पकड़े हुए उन्हें यह खयाल आया कि यह मैंने क्या किया! देह भी गंवा बैठा, आत्मा तो मिली नहीं। और मैंने यह कभी सोचा ही नहीं कि देह को गंवाने से आत्मा के मिलने का तर्क क्या है! निरंजना नदी तो पार नहीं कर सकता हूं, यह छोटी सी नदी, तो यह जीवन का इतना बड़ा भवसागर कैसे पार करूंगा?

यह घटना बड़ी क्रांतिकारी सिद्ध हुई। उन्होंने उसी क्षण, वह जो छह साल व्यर्थ की दौड़-धूप की थी, छोड़ दी। धन और पद की दौड़ तो पहले

CamScanner

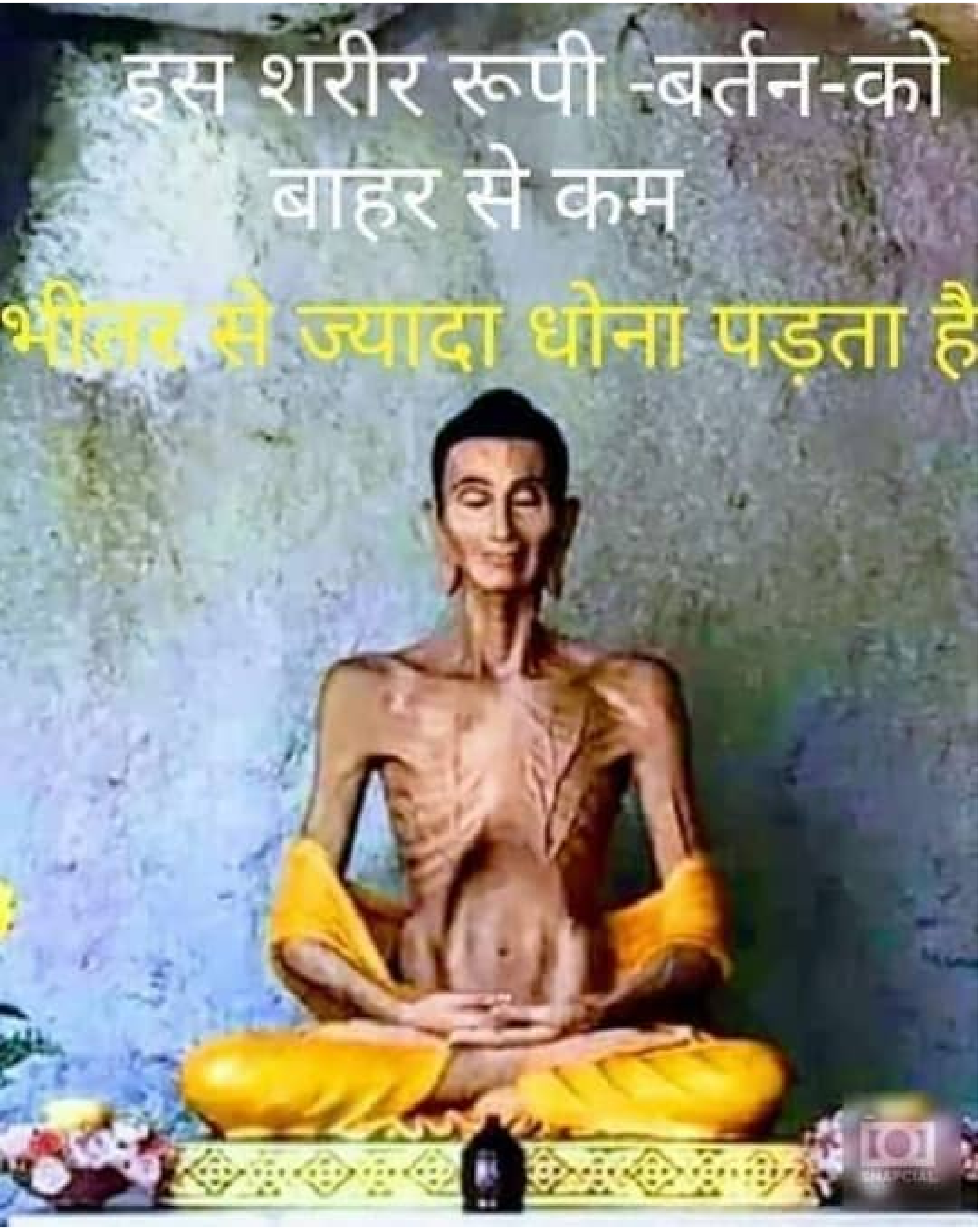

CamScanner

Osho Thoughts

Munabai Makvana · 8h ·

लाओत्से कहता है कोई नियम नहीं, क्योंकि सभी नियम विकृत हैं। लाओत्से कहता है स्वभाव, सहजता, ऐसा बहे मनुष्य जैसे नदियां सागर की तरफ बहती हैं। रास्ते बनाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि सभी रास्ते मनुष्य के साथ जबरदस्ती करते हैं। और नियम देना खतरनाक है, क्योंकि सभी नियम हिंसा करते हैं। लाओत्से कहता है कि अगर मनुष्य को उसके आंतरिकतम केंद्र के अनुसार छोड़ दिया जाए तो जगत में कुछ भी बुरा न होगा। मनुष्य को अच्छा बनाने की जरूरत नहीं है, मनुष्य को उसके आंतरिक स्वभाव के साथ छोड़ देने की जरूरत है। चेष्टा की जरूरत नहीं है, क्योंकि चेष्टा विकृति में ले जाएगी। लाओत्से कहता है, करने से क्षुद्र ही पाया जा सकता है, केवल न करने से विराट की उपलब्धि होती है--अकर्म, कर्म नहीं। क्योंकि कर्म से आदमी क्या पा सकेगा? और कर्म से आदमी जो भी पाएगा, वह संसार का होगा। अकर्म में आदमी डूबता है अपने में; कर्म से जाता है संसार में। और जब कोई कुछ भी नहीं करता तब उसके भीतर उसकी जीवन-चेतना अपनी पूरी सुगंध से खिलती है। तो लाओत्से कहता है, अकर्म है जीवन का सिद्धांत है।

ओशो

CamScanner

जीवन को पकड़ें मत, बहने दें। फिर आप अशांत न होंगे। पकड़ अशांति लाती है। जिस चीज को पकड़ लेते हैं, वही अशांति ले आती है। चाहे आप प्रेम को पकड़ लें। कल एक आदमी मित्र था, आज मित्र नहीं है, तो आप अशांत हो रहे हैं। क्यों अशांत हो रहे हैं? इतना ही क्या कम है कि वह कल मित्र था। आज भी मित्र हो, यह आपकी पकड़ है। आप कह रहे हैं, कल मित्र थे तो आज भी मित्र होना ही चाहिए। बस अब आप अशांत होंगे। इतना ही क्या कम है कि वह कल मित्र था। कल के लिए धन्यवाद दे दें और बात समाप्त हो गई। तो फिर अशांत न होंगे।

ओशो

धर्म साधना के सूत्र

CamScanner

वेद शब्द बड़ा प्यारा है। वेद का अर्थ है: जानना।
वेद बनता है विद से। विद का अर्थ होता है: ज्ञान।
उसी से विद्वान शब्द बना।
वेद कोई चार संहिताओं में समाप्त नहीं हो गया है;
कोई ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद,
उन पर समाप्त नहीं हो गया है;
जब भी दुनिया में किसी व्यक्ति ने अपने भीतर
परमात्मा का साक्षात्कार किया है,
वेद वहां फिर से जन्मा है।
हर बुद्ध के साथ वेद का जन्म होता है।
फिर वह बुद्ध चाहे मोहम्मद हों, चाहे जीसस,
चाहे जरथुस्त्र, चाहे लाओत्सू, चाहे महावीर,
चाहे कृष्ण, चाहे कबीर, चाहे नानक,
कुछ भेद नहीं पड़ता।
जिसने अपने को जाना,
जानते ही उसके ओठों से वेद फूट पड़ते हैं।
क्योंकि वह स्वयं ही ब्रह्म हो गया।

ओशो
दर्शन
समूह

☆ दीपक बारा नाम का, ओशो ☆

CamScanner

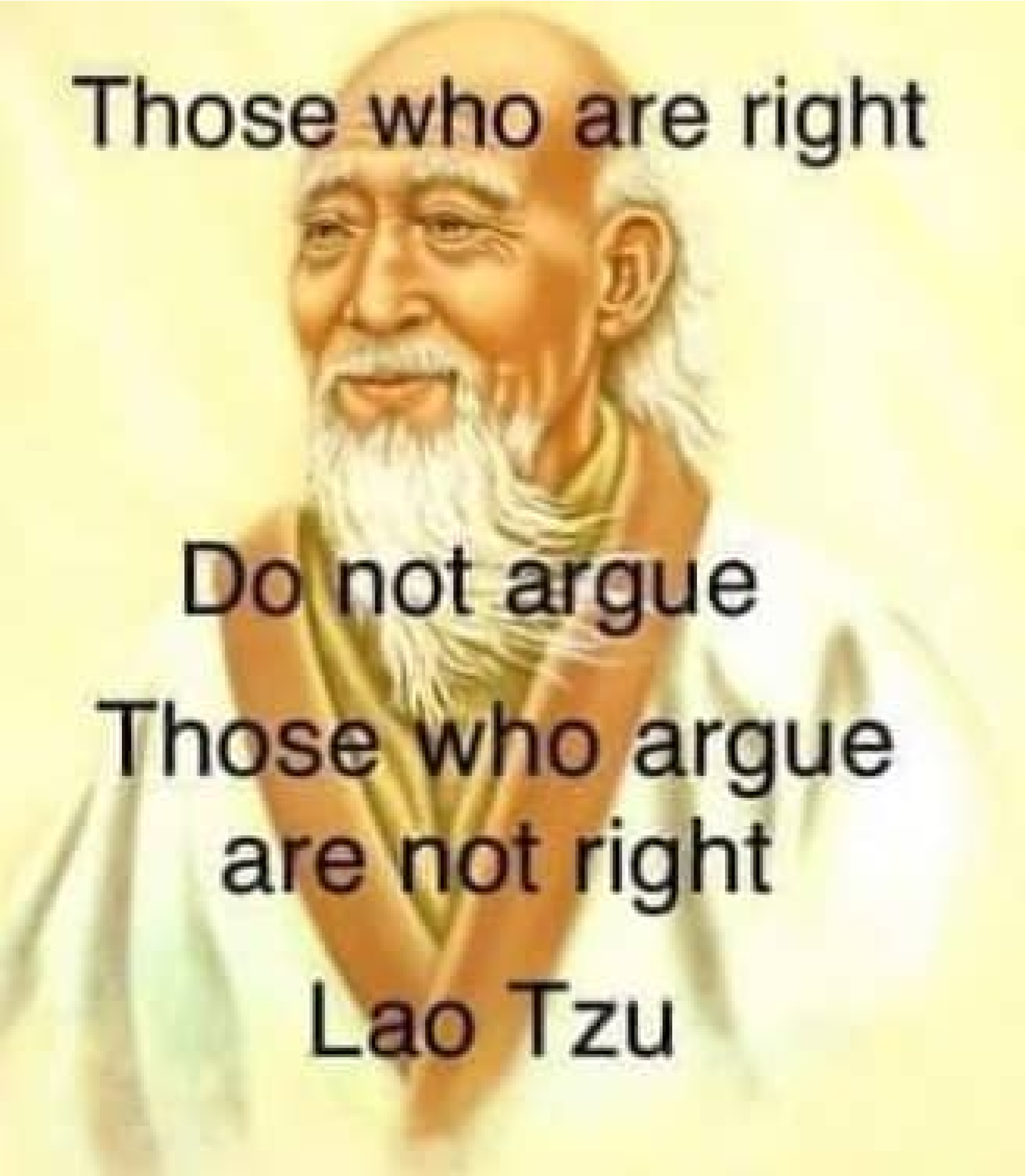
Those who are right
Do not argue
Those who argue
are not right
Lao Tzu

CamScanner

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

K Ramchandran Janki · 10h ·

न मन हूं न बुद्धि न चित्त अहंकार,
न वायु न अग्नि न पृथ्वी जल आकाश,
न कर्म हूं न कारण न कोई लोकाचार
मैं तो हूं सिर्फ सिर्फ सिर्फ निराकार,

न भूत न भविष्य न वर्तमान काल,
न जन्म न मृत्यु न कोई लीलाकार,
न मोह न बन्धन न कोई हाहाकार,
मैं तो हूं सिर्फ सिर्फ सिर्फ निराकार,

न ब्रम्हा न विष्णु न महेश साकार,
न सृष्टि, न दृष्टि न अंतरिक्ष अपार,
न पाप हूं न पुण्य न कोई अनाचार,
मैं तो हूं सिर्फ सिर्फ सिर्फ निराकार,

मैं तो हूं सिर्फ सिर्फ सिर्फ ओम्कार
मैं तो हूं सिर्फ सिर्फ सिर्फ ओम्कार,
****

स्वरचित
K Ramchandran Janki

CS CamScanner

CamScanner

भगवान रात को सो रहे पंछियों को नीचे नही गिरने देता तो सोचो ओ परमात्मा तुम्हे कैसे बेसहारा छोड़ सकता है।

CamScanner

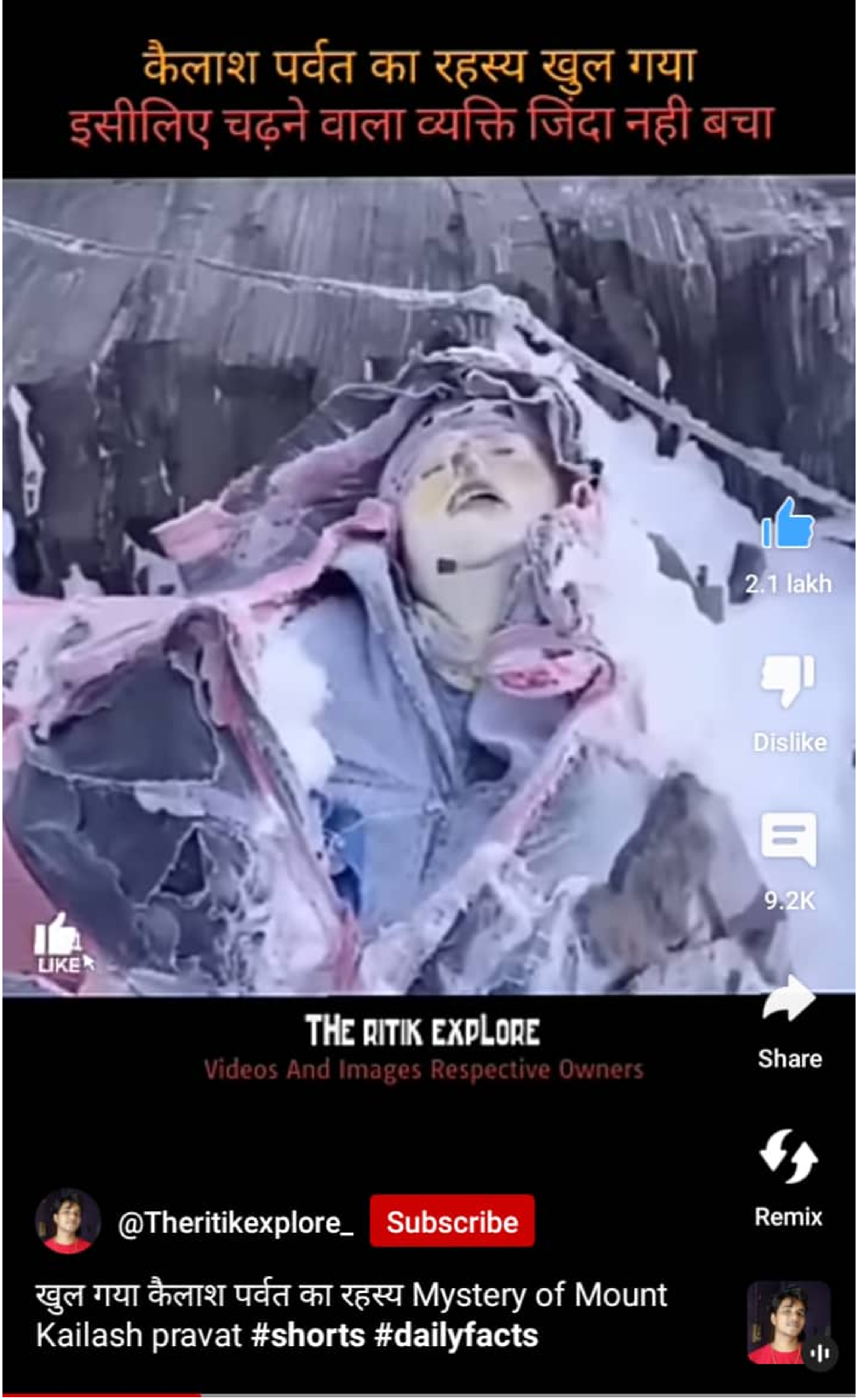

कैलाश पर्वत का रहस्य खुल गया
इसीलिए चढ़ने वाला व्यक्ति जिंदा नही बचा
2.1 lakh
Dislike
9.2K
LIKE
THE RITIK EXPLORE
Videos And Images Respective Owners
Share
Remix
@Theritikexplore_
Subscribe
खुल गया कैलाश पर्वत का रहस्य Mystery of Mount Kailash pravat #shorts #dailyfacts

CamScanner

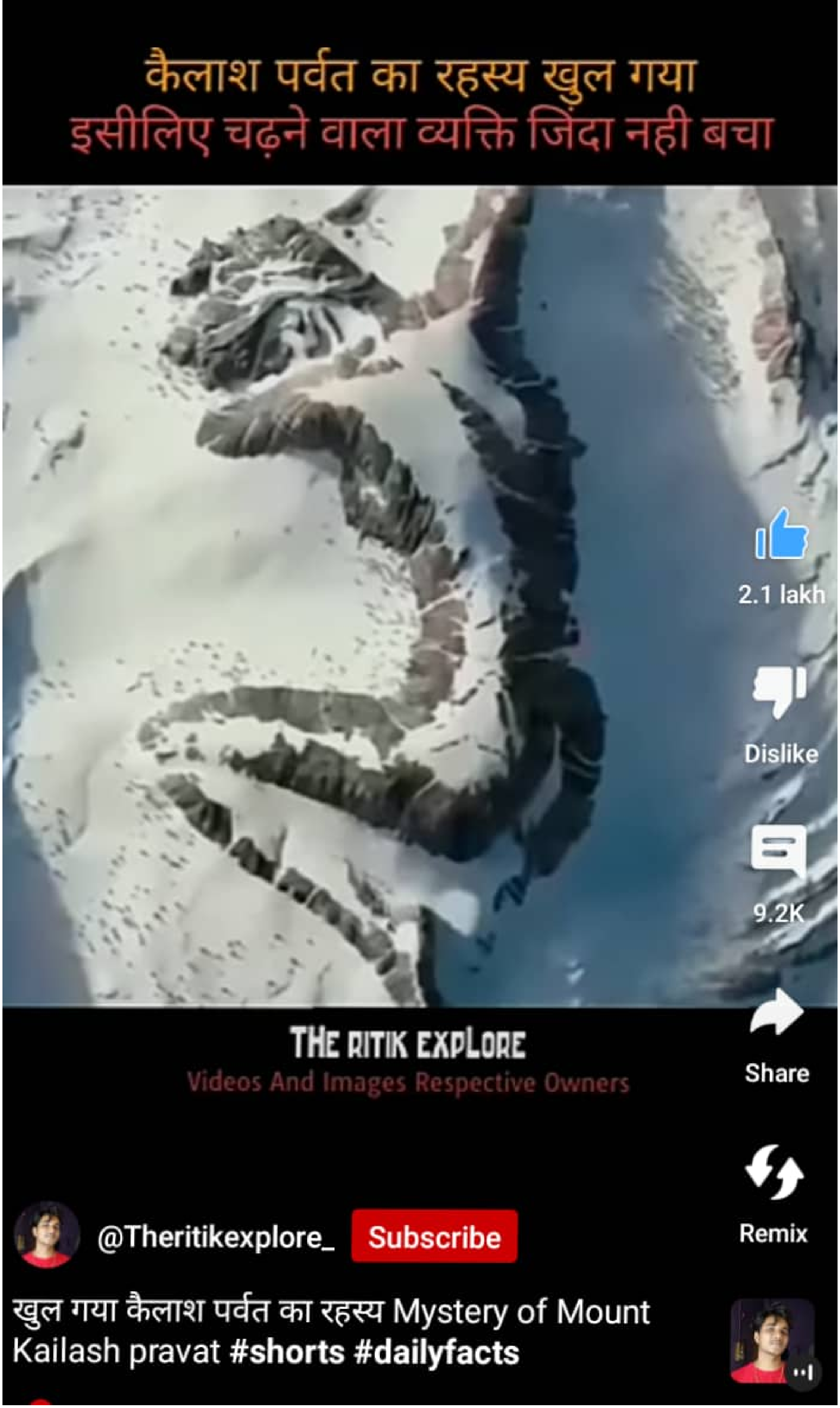
कैलाश पर्वत का रहस्य खुल गया
इसीलिए चढ़ने वाला व्यक्ति जिंदा नही बचा
2.1 lakh
Dislike
9.2K
THE RITIK EXPLORE
Videos And Images Respective Owners
Share
Remix
@Theritikexplore_
Subscribe
खुल गया कैलाश पर्वत का रहस्य Mystery of Mount Kailash pravat #shorts #dailyfacts

CamScanner

अष्ट कमल का चरखा बनाया,
पांच तत्व की पूनी,
नौ दस मास बुनन को लागे,
मूरख मैली किनी,
चदरिया झीनी रे झीनी,
राम नाम रस भीनी ।

जब मोरी चादर बन घर आई,
रंगरेज को दिनी,
ऐसा रंग रंगा रंगरे ने,
के लालो लाल कर दिनी,
चदरिया झीनी रे झीनी,
राम नाम रस भीनी ।

चादर ओढ़ शंका मत करियो,
ये दो दिन तुमको दिनी,
मूरख लोग भेद नहीं जाने,
दिन दिन मैली किनी,
चदरिया झीनी रे झीनी,
राम नाम रस भीनी ।

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी,
शुकदेव ने निर्मल किनी,
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी,
ज्यो की त्यों धर दिनी,
चदरिया झीनी रे झीनी,
राम नाम रस भीनी ।

CamScanner

Chadariya Jheeni Re Jheeni Lyrics in Hindi

कबीरा जब हम पैदा हुए,
जग हँसे हम रोये,
ऐसी करनी कर चलो,
हम हँसे जग रोये ।

चदरिया झीनी रे झीनी,
राम नाम रस भीनी,
चदरिया झीनी रे झीनी ।

CS CamScanner

चदरिया झीनी रे झीनी, रे राम नाम रस भीनी
body is like finely woven cloth and is permeated by the raam naam (ra+ma rechek purak (breath))

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पांच तत्त्व की पूनी
Eight-petaled lotus was used as a spinning wheel, and the 5 elements as yarn

नौ दस मॉस बुनन को लागे, मूरख मैली कीनी
took 9-10 months to knit it, Oh fool you soiled it!

जब मोरी चादर बन घर आई, रंग रेज को दिनी
When I got my sheet, I gave it to person who dyes sheet(guru).

ऐसा रंग रंगा रंगरे ने, लालो लाल कर दिनी
It was dyed such, totally red in color

ध्रुव प्रह्लाद सुदामा ने ओढी, शुकदेव ने निर्मल किन्ही
Dhruv prahlad and sudama wore it, Shukdev made it pure.

दास कबीर ने ऐसी ओढी, ज्यों की त्यों धर दिनी
dar kabeer wore it such, he left it as it is(as he got it)

CS CamScanner

9:29 am 12 KB/s 98%

By ManageLife Solution Team • July 19, 2021

झीनी-झीनी बीनी चदरिया ॥

काहे कै ताना काहे कै भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया ॥ १॥

इडा पिङ्गला ताना भरनी, सुखमन तार से बीनी चदरिया ॥ २॥

आठ कँवल दल चरखा डोलै, पाँच तत्त्व गुन तीनी चदरिया ॥ ३॥

साईं को सियत मास दस लागे, ठोंक ठोंक कै बीनी चदरिया ॥ ४॥

सो चादर सुर नर मुनि ओढी, ओढि कै मैली कीनी चदरिया ॥ ५॥

दास कबीर जतन करि ओढी, ज्यों कीं त्यों धर दीनी चदरिया ॥ ६॥

इस पद्द में कबीर दास जी बड़ी कीमती बातें कही हैं, जिसके हर एक शब्द समझने योग्य है ।

झीनी-झीनी बिनी चदरिया का अर्थ है कि बनाने वाले ने बड़े जतन और बड़े होश से इस शरीर को बनाया है। इस लिए इसको तुम जितना जाग कर जीयोगे, उतने

CamScanner

वन को चले दोनों भाई अवध से,
अरे वाको को रोको री कोई.
आगे आगे राम चलत हैं पीछे लक्ष्मण भाई
पीछे चलत है जानकी मैया शोभा वर्ण न जाए
अरे वाको को रोको री कोई, वन को चले दोनों भाई...

राम बिना मेरी सूनी अयोध्या लक्ष्मण बिना ठाकुराई
सीता बिना मेरी सूनी रसोई कौन करे चतुराई
अरे वाको नी कोई, वन को चले दोनों भाई...

सावन बरसे भादवो गरजे पवन चले पुरवाई।
कौन बिरख नीचे भिजत होंगे, राम लखन दोनों भाई
अरे वाके रोको नी कोई, वन को चले दोनों भाई...

रावण मार राम घर आए घर-घर बटत बधाई।
माता कौशल्या आरती शोभा वर्णन आ जाए
अरी बाको रोको नी कोई, वन को चले दोनों भाई

CamScanner

प्राण प्यारे रघुवर की मोहे रघुवर की सुद्ध आई,
रघुवर की सुध आई मोरे रामा रघुवर की सुद्ध आई,
मोहे रघुवर की सुद्ध आई.....

आगे आगे राम चलत हैं पीछे लक्ष्मण भाई,
बीच जानकी अधिक सुहावे राजा जनक की जाई,
मोहे रघुवर की सुद्ध आई.....

सावन बरसे भादो गरजे पवन चले पुरवाई,
किसी वृक्ष तले बैठे होंगे सिया लखन रघुराई,
मोहे रघुवर की सुद्ध आई.....

सिया बिना मेरी सूनी रसोई लखन बिना ठकुराई,
राम बिना मेरी सूनी अयोध्या धीरज केहि बिधि आई,
मोहे रघुवर की सुद्ध आई.....

भीतर रोमें मात कौशल्या बाहर भरत जी भाई,
दशरथ जी ने प्राण तजे है केकई मन पछताई,
मोहे रघुवर की सुद्ध आई.....

श्रेणी : राम भजन

CS CamScanner

मुझे रघुवर की सुधि आई mujhe raghuvar ki sudhi aayi lyrics

मुझे रघुवर की सुधि आई

आगे आगे राम चलत हैं, पीछे लखनजी भाई.......हो रामा

बीच जानकी अधिक सोहे, राजा जनक की जाई.......मुझे

श्रावण बरसे भादों गरजे, पवन चले पुरवाई.......हो रामा

कौन बिरछ तर भिंजत होंगे, सिया लखन रघुराई ....मुझे

सीता बिना मोरी सूनी रसोई, लखन बिना ठकुराई.....हो रामा

राम बिना मोरी सूनी अयोध्या, महल उदासी छाई.......मुझे

भीतर रोये मातु कौशल्या, बाहर भरतजी भाई.......हो रामा

दशरथजी ने प्राण तजे हैं, कैकयी मन पछताई.......मुझे

CS CamScanner

कृष्ण जैसे व्यक्ति न तो किसी के मित्र हैं और न किसी के शत्रु हैं.कृष्ण की कोई निश्चित धारणा किसी के बाबत नहीं है. इसलिए शत्रु मित्र हो सकता है,मित्र शत्रु हो सकता है.स्थितियां तय करेंगी. "सिचुएशंस" तय करेंगी.हम और तरह से जीते हैं.हम किसी के मित्र होते हैं,किसी के शत्रु होते हैं-ओशो,कृष्णस्मृति-10

CamScanner

मैं ठीक अपनी मस्ती से जीता हूं, अपनी मौज से चलता हूं। क्योंकि न मुझे फिकर है तुम्हारे आदर की, और न मुझे चिंता है तुम्हारे अनादर की। सारी दुनिया मेरी प्रशंसा करे, तो मुझे फर्क नहीं पड़ता। और सारी दुनिया मेरी निंदा करे, तो मुझे फर्क नहीं पड़ता।

ओशो

CamScanner

Liked by **sk_helaiya** and **1,117 others**

oshotrack मुझे तो जो करना है, मैं वही करता हूं। और कभी मुझे संदेह भी हो गया, कि तुम चाहते हो कि मैं यह न करूं, तो मैं जरूर करता हूं। शुरू-शुरू में, पहले मेरे पास भी लोग आ जाते थे कि आप यह न कहना, और मैं वह जरूर कहता था; कि आप यह न करना, और वह मैं जरूर करता था। फिर उन्होंने मेरे पास आना बंद कर दिया कि यह तो झंझट की बात है। इससे तो बेहतर चुप ही रहना और देखना, जो करना हो करने दो। अब बेचारे क्या करें! खुद ही आपस में बैठकर विचार कर लेते हैं। मुझे पता ही नहीं चलता कि उनका क्या इरादा है। क्योंकि वे भलीभांति जानते हैं, मैं ठीक अपनी मस्ती से जीता हूं, अपनी मौज से चलता हूं। क्योंकि न मुझे फिकर है तुम्हारे आदर की, और न मुझे चिंता है तुम्हारे अनादर की। सारी दुनिया मेरी प्रशंसा करे, तो मुझे फर्क नहीं पड़ता। और सारी दुनिया मेरी निंदा करे, तो मुझे फर्क नहीं पड़ता।

मैं अपनी निजता में भरोसा करता हूं। और उसके अतिरिक्त मेरे लिए कोई और आदेश का स्रोत नहीं है। न तो किसी शास्त्र में है, न किसी व्यक्ति में है। मेरे जीवन का सूत्र मेरे अपने मौन, मेरी अपनी शांति में है। इसलिए तकलीफ मैं समझ सकता हूं। मेरे पास जो लोग आए हैं; क्योंकि ये वे ही लोग हैं, जो औरों के पास भी जाते हैं। और वहां यह देखते हैं कि साधु महाराज इनकी बात मानकर चलते हैं। ये कहते हैं उठो, तो वे उठ गए। ये कहते हैं बैठो, तो वे बैठ गए। मुझसे ये कोई कवायद नहीं करवा सकते। इनकी मुसीबत यह है कि इनका आदर और इनकी निंदा, मेरे लिए दोनों बेमानी हैं।

इसलिए धीरे-धीरे मेरे पास एक खास तरह के लोगों का जमाव अपने आप इकट्ठा होता गया है। वे लोग जो बिना अपनी टांग अड़ाए नहीं रह सकते थे, थोड़े दिन कोशिश किए, खुद की टांग में फ्रेक्कचर करवाकर रास्ता पकड़ गए। मैं किसी की टांग-वांग बीच में नहीं आने देता। अब तो मेरे पास वे लोग हैं, जिनसे मेरा संबंध न तो आदर का है, न श्रद्धा का है; जिनसे मेरा संबंध प्रेम का है। पुरानी आदत है तुम्हारी। कोई हर्जा नहीं है, बैठ गए, कर ली चर्चा, जानते हुए कि बेकार मेहनत कर रहे हो। मगर अगर मजा आता है, तो कोई हर्जा भी नहीं। मुझे अब पता भी नहीं चलता। मुझसे कहता भी नहीं। धीरे-धीरे मेरे पास केवल प्रेमियों का, पियक्कड़ों का एक समूह इकट्ठा हो गया है। यह मधुशाला है, कोई मंदिर नहीं है।

ओशो
कोपलें फिर फूट आईं-(प्रवचन-09)

View all 10 comments

oshotrack ❤️

Add a comment...

2 hours ago • **See translation**

CamScanner

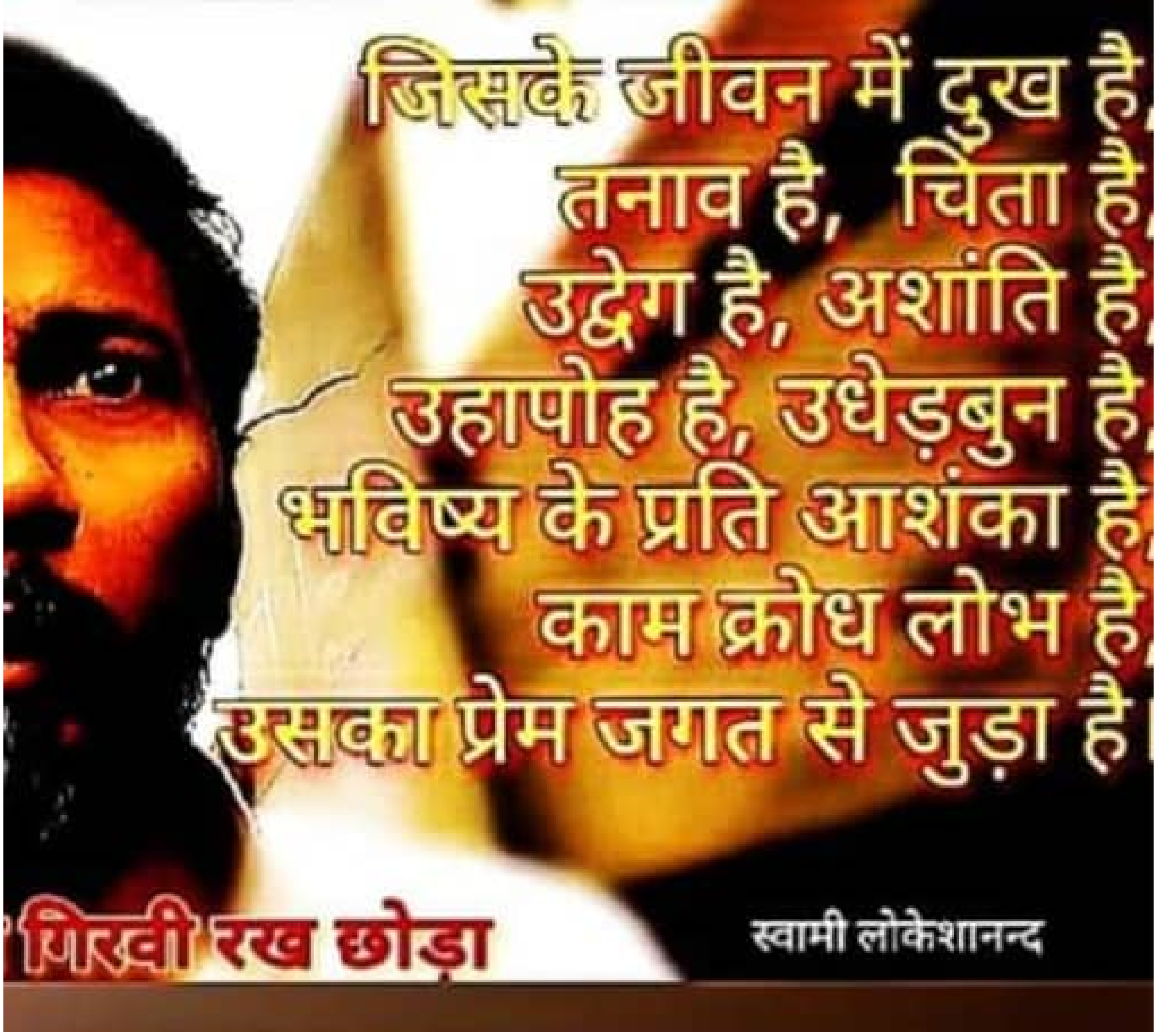
जिसके जीवन में दुख है,
तनाव है, चिंता है,
उद्वेग है, अशांति है,
उहापोह है, उधेड़बुन है,
भविष्य के प्रति आशंका है,
काम क्रोध लोभ है,
उसका प्रेम जगत से जुड़ा है।
गिरवी रख छोड़ा
स्वामी लोकेशानन्द

CamScanner

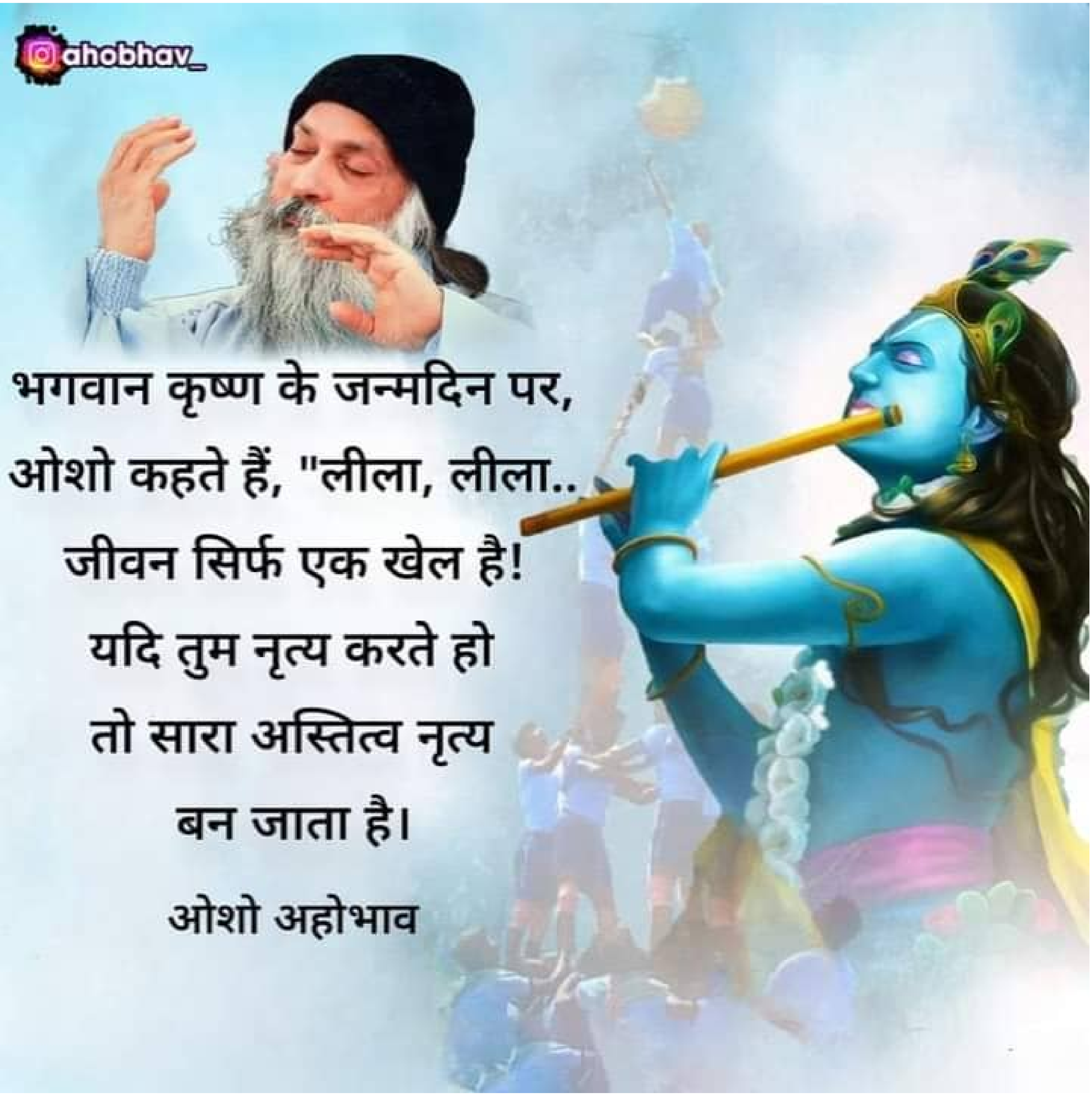

CS CamScanner

कृष्ण जैसे व्यक्ति
किसी के लिए पैदा नहीं होते।
अपने आनंद से ही जन्मते हैं।
दूसरों को सुगंध मिल जाती है,
यह बात दूसरी है।

CamScanner

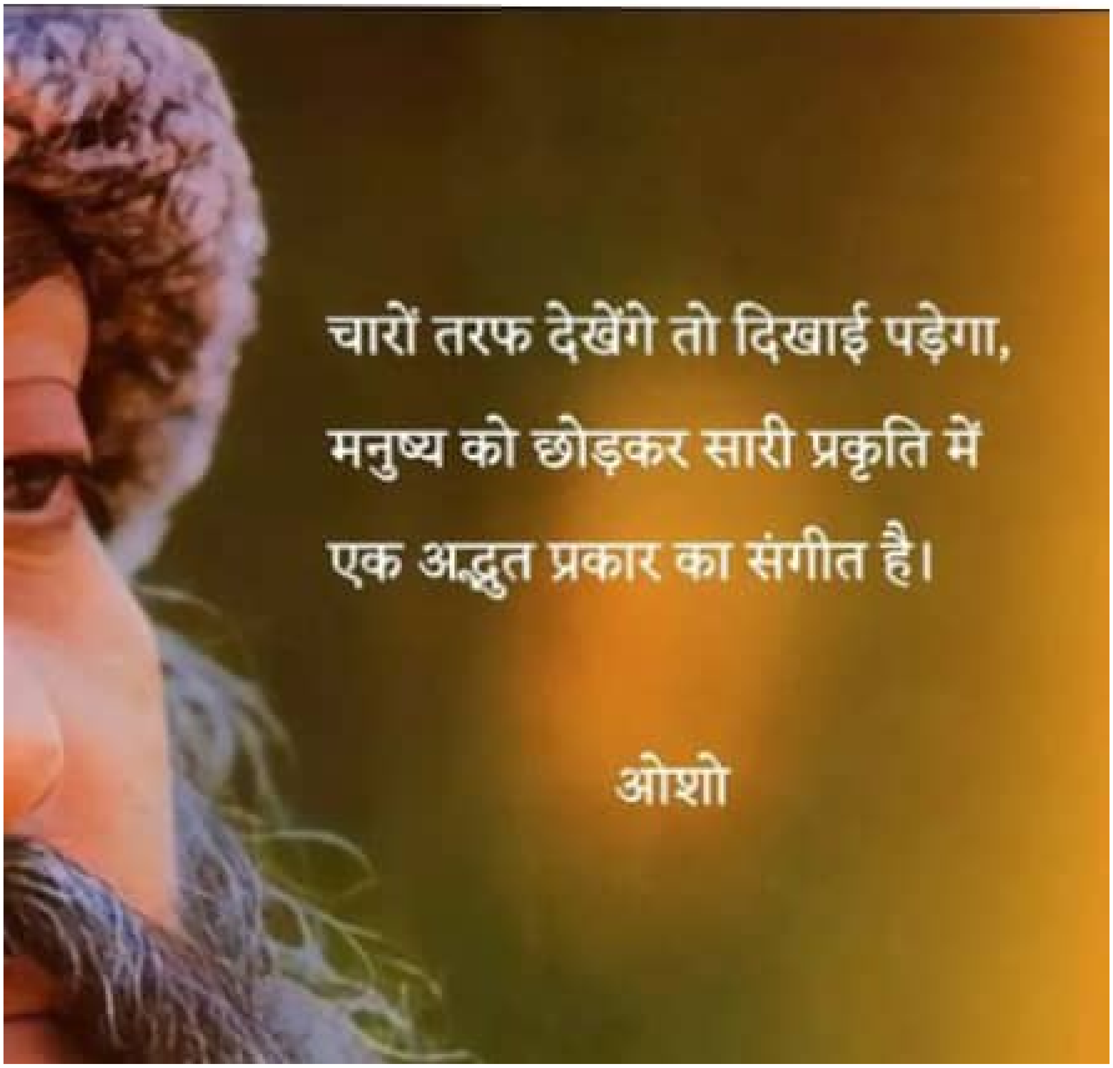

CamScanner

कृष्ण पक्ष की अष्टमी अर्धरात्रि बुधवार
कारागृह में कंस के भयो कृष्ण अवतार

सिंह राशि के सूर्य है उदित उच्च के चंद्र
देवन दीन्ही दुंदुभी तार मध्य स्वर मन्द्र

मेघ निछावर हो रहे बरसे सौ-सौ धार
दमक-दमक दामिनी कहे देखों मुख एक बार

छत्र बनो बृजराज हित फन फैलाये नाग
मथुरा तेरे त्याग से जागे बृज के भाग

जाने जमुना जग नहीं श्री हरि को अवतार
पावन पद परसन चढ़ी बढ़ी जमुन जन-धार

धार मध्य वासुदेव जब अकुलाए असहाय
श्री हरि ने रविसुता हित दियो चरण लटकाए

रोहिणी नक्षत्र में धरती पर अवतरित हुए परमब्रम्ह भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

CamScanner

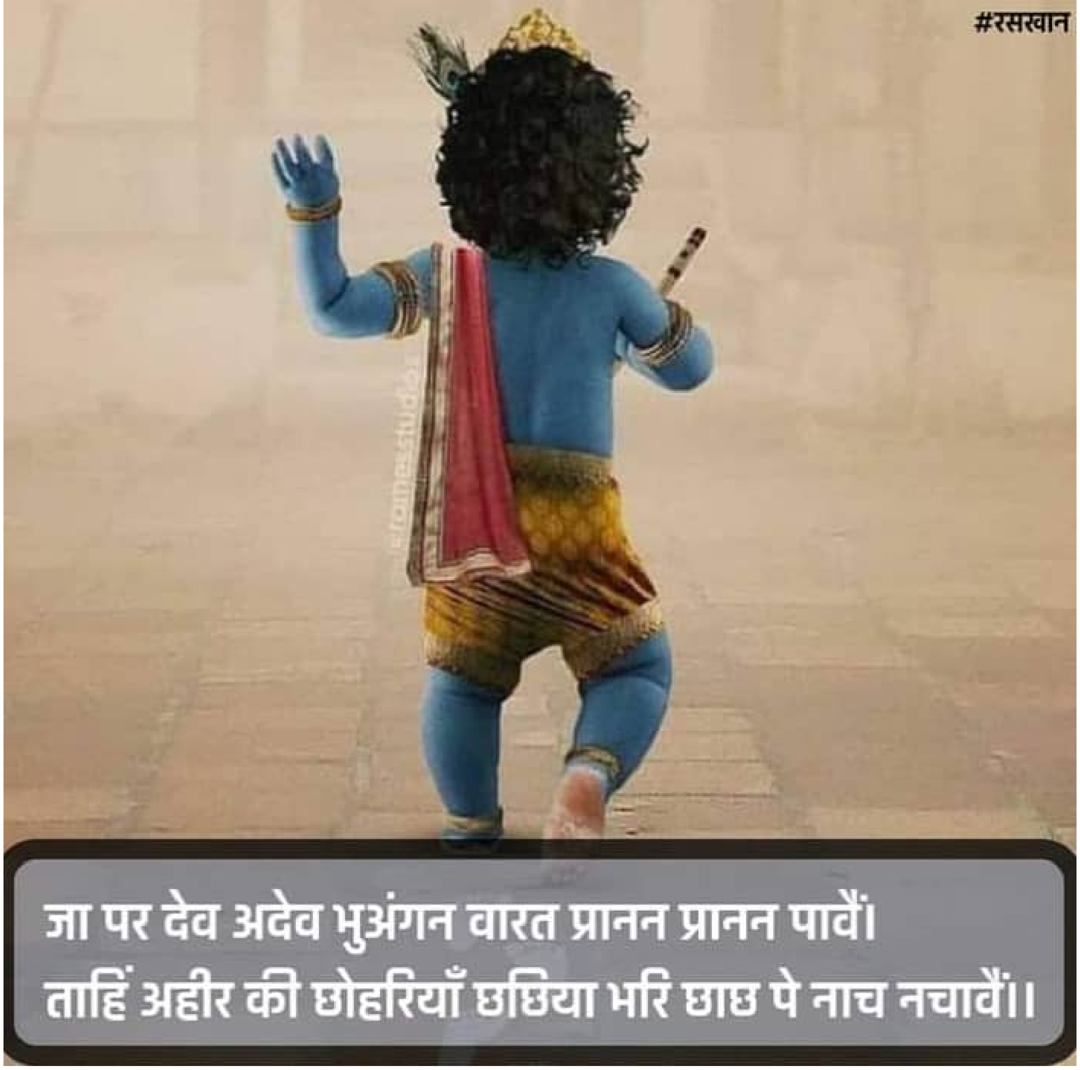
#रसखान
जा पर देव अदेव भुअंगन वारत प्रानन प्रानन पावैं।
ताहिं अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पे नाच नचावैं।।

CamScanner

स्तनपान कराती महिला माँ है, स्तन दिखाती महिला आकर्षण है। दोनो एक ही है, दृष्टि परिवर्तन पुरुष का हुआ है यही दृष्टि परिवर्तन पुरुष को भाभी में माँ दिखाता है ओर बीस साल की स्त्री में वासना की प्यास बुझाने वाला शरीर। स्त्री पुरुष को आकर्षित नही कर रही वो तो अपने मुताबिक खा ओर पहन रही है पुरुष तो बस अपनी कुंठाओ को उन पर डाल कर खुद को सही साबित करने की कोशिश कर रहा है..

CamScanner

Life is not a thing that you learn from somebody. Life is something that you listen to, that you understand from moment to moment without accumulating experience.

J Krishnamurti, Lifeahead

CamScanner

कृष्ण कहते हैं, मांगो ही मत।
क्योंकि जिसने
तुम्हें जीवन दिया,
वह तुमसे ज्यादा
समझदार है।
तुम अपनी
समझदारी मत बताओ।

CamScanner

5:02 pm 0 KB/s 48%

ये पत्थर इन पिरामिडों की चोटी पर पहुंचे?? हजारों साल पहले बने पिरामिड आज भी रहस्य बने हुये हैं। इनकी मजबूती के आगे बढ़े से बढ़ा बिल्डोजर घुटने टेक देता है। मिस्र में स्तिथ पिरामिड 6000 साल से अधिक प्राचीन हैं। पुरातत्व विभाग और भू वैज्ञानिक इसकी बनावट के रहस्यों को सुलझाने में खुद ही उलझे हुये हैं। आख़िर एक या दो पूर्वजों की मृत देह को सुरक्षित रखने के लिये इतने विशाल पिरामिडों के निर्माण के पीछे क्या तर्क हो सकता है? अनेकों पेचीदे सवालों का आज भी जबाव हासिल नही है। इतिहास और पुरानी सभ्यता के जानकार बताते हैं कि मिस्र की प्राचीन सभ्यता में उस वक़्त रहने वाले लोग एक विशेष प्रकार की ध्वनि (मंत्र) उच्चारित करते थे जिससे पत्थर का गुरुत्वाकर्षण बल शून्य हो जाता था। फ़िर वे लोग इन विशाल पत्थरों को चोटी तक पहुंचा कर व्यवस्थित जमा देते थे। इस बात को मानने के अलावा और कोई चारा भी तो नही है हमारे पास। जिस पत्थर को शक्तिशाली क्रेन हिलाने में भी असमर्थ हो उसे चोटी तक हजारों साल पहले कैसे पहुँचाया गया होगा! ऐसे चमत्कार इतिहास में बहुत बार घटे इस बात को इतिहास के जानकर और खुद पुरातत्व भू वैज्ञानिक स्वीकारते हैं। लेकिन सवाल यह है कि अब इस तरह के चमत्कार या इस तरह के चमत्कारी इंसान क्यों नही देखने को मिलते? जैसे जैसे विज्ञान की सामर्थ्य बढ़ती जायेगी लोग तर्कनुमा होते जायेंगे। तर्क चमत्कारों को मानता नही और चमत्कार तर्क को समझाता भी नही। किसे इतनी फुर्सत की तर्क के कहने पर चमत्कार विश्लेषण पेश करता फिरे। मानना है मान वरना मत मान। लेकिन भगवान श्री राम के द्वारा समुद्र में फैंके पत्थर पानी पर तैरे ये वैज्ञानिकों को भी बेमन से मानना पड़ा। क्योंकि इसके सामने उनका विज्ञान और तर्क धरा का धरा रह गया। पूरी के मंदिर का रहस्य आज भी विज्ञान को दांतों तले उंगली चबाने पर मजबूर कर देता है। की कैसे एक लकड़ी के चूल्हे पर एक के ऊपर एक रखीं साथ मिट्टी की हांडियों पर पक रहे प्रसाद में सबसे पहले ऊपर रखी हांडी का प्रसाद पकता है? कैसे शिखर पर लगा ध्वज हवा से विपरीत उड़ता है? कुछ बातें हैं जिन्हें परमात्मा ने विज्ञान से परे और तर्क से दरकिनार रखा है।

CamScanner

4:59 pm 11 KB/s VoLTE 4G 48%

हमारे अचेतन मन की शक्ति बहुत बड़ी है जो काम हम चेतन अवस्था में नहीं कर सकते वह अचेतन मन की सहायता से कर सकते हैं मनुष्य का अचेतन मन उसके चेतन से कहीं अधिक संवेदनशील होता है जो बात हम चेतन अवस्था में नहीं सुन पाते वह अचेतन अवस्था में सुनाई देने लगती है गहरी सम्मोहक नींद में आप ऐसी चीजें देख सकते हैं जिन्हें आप जागते हुए कभी नहीं देख सकते। यह तावीज़ नहीं, बल्कि उससे जुड़ा सम्मोहनोत्तर सुझाव काम करता है।

यदि कृष्ण, बुद्ध या ईसा मसीह जैसा कोई व्यक्ति इस दुनिया को छोड़ने वाला है और उसके कुछ करीबी प्रेमी या शिष्य जो उसके साथ घनिष्ठ संपर्क में रहे हैं, जिन्होंने उसकी भावनाओं को आत्मसात कर लिया है, उसके जाने के बाद उससे संपर्क करने के लिए कुछ तकनीकों का अनुरोध करते हैं, गुरु उनकी करुणा उन्हें ऐसी तकनीक दे सकती है। वह उन्हें ध्यान की स्थिति में जाने के लिए कह सकता है और फिर उन्हें बता सकता है कि जब भी वे उसके किसी विशेष रूप - किसी मूर्ति या चित्र के माध्यम से - पर ध्यान करेंगे - तो वे तुरंत उसकी मृत्यु के बाद भी उससे संपर्क करेंगे। यह वह गूढ़ विज्ञान है जिसके लिए सबसे पहले कृष्ण, बुद्ध और उनके जैसे अन्य लोगों की मूर्तियाँ बनाई गईं।

ये मूर्तियाँ और प्रतीक विशेष रूप से ध्यान की स्थिति में चुने हुए शिष्यों को दिए गए थे। तो आपकी साधारण मूर्तियाँ काम नहीं करने वाली हैं न ही सामान्य साधक इन मूर्तियों के माध्यम से उनके संपर्क में आ सकते हैं। कृष्ण के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए किसी को एक विशेष प्रतीक और उनकी ध्यान अवस्था में उन्हें दिए गए एक आंतरिक सुझाव की आवश्यकता होगी।

बुद्ध, महावीर और कृष्ण जैसे व्यक्ति इस धरती से विदा होने से पहले, अपने सबसे भरोसेमंद शिष्यों के समूह के पास ऐसी तकनीकें और निर्देश छोड़ जाते हैं जो इसके योग्य हैं.

ØshØ
कृष्ण: मनुष्य और उसका दर्शन
अध्याय:13

CamScanner

1:58 pm 0 KB/s VoLTE 4G 64%

facebook

है। मैं फिर कभी आपके लिए एक पेंटिंग बना दूंगा"

लेकिन उस महिला ने भी जिद पकड़ ली, 'मुझे अभी एक पेंटिंग बना दीजिये, बाद में पता नहीं मैं आपसे मिल पाऊँगी या नहीं।

पिकासो ने जेब से एक छोटा सा कागज निकाला और अपने पेन से उसपर कुछ बनाने लगे। करीब 10 मिनट के अंदर पिकासो ने पेंटिंग बनायीं और कहा, 'यह लो, यह मिलियन डॉलर की पेंटिंग है।'

महिला को बड़ा अजीब लगा कि पिकासो ने बस 10 मिनट में जल्दी से एक काम चलाऊ पेंटिंग बना दी है और बोल रहे हैं कि मिलियन डॉलर की पेंटिग है। उसने वह पेंटिंग ली और बिना कुछ बोले अपने घर आ गयी।

उसे लगा पिकासो उसको पागल बना रहा है। वह बाजार गयी और उस पेंटिंग की कीमत पता की। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह पेंटिंग वास्तव में मिलियन डॉलर की थी।

वह भागी-भागी एक बार फिर पिकासो के पास आयी और बोली, 'सर आपने बिलकुल सही कहा था। यह तो मिलियन डॉलर की ही पेंटिंग है।'

पिकासो ने हँसते हुए कहा,'मैंने तो आपसे पहले ही कहा था।'

वह महिला बोली, 'सर, आप मुझे अपनी स्टूडेंट बना लीजिये और मुझे भी पेंटिंग बनानी सिखा दीजिये। जैसे आपने 10 मिनट में मिलियन डॉलर की पेंटिंग बना दी, वैसे ही मैं भी 10 मिनट में न सही, 10 घंटे में ही अच्छी पेंटिंग बना सकूँ, मुझे ऐसा बना दीजिये।

पिकासो ने हँसते हुए कहा, 'यह पेंटिंग, जो मैंने 10 मिनट में बनायी है, इसे सीखने में मुझे 30 साल का समय लगा है मैंने अपने जीवन के 30 साल सीखने में दिए हैं।तुम भी दो, सीख जाओगी !!

वह महिला अवाक और नि:शब्द होकर पिकासो को देखती रह गयी।

CamScanner

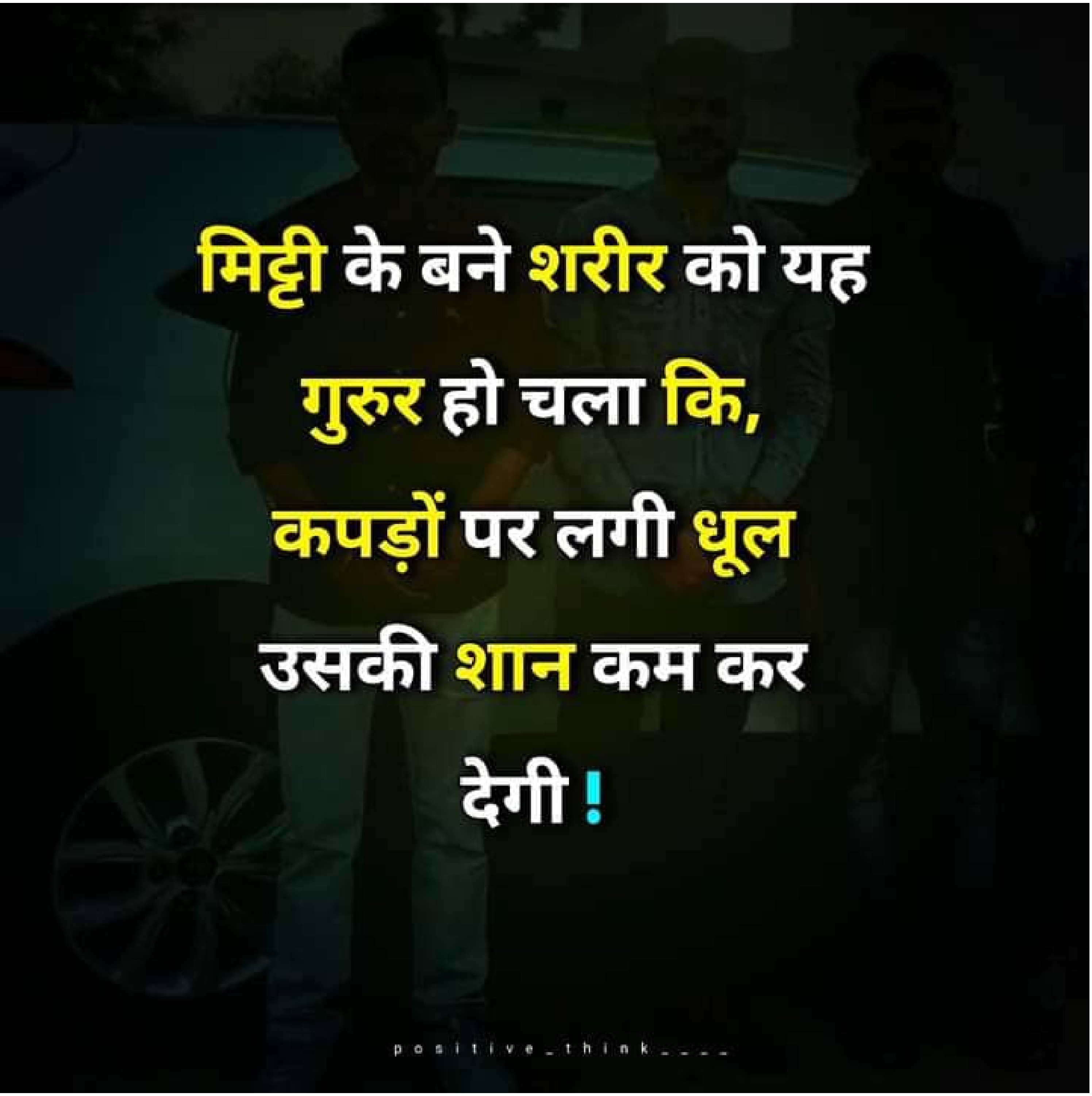
मिट्टी के बने शरीर को यह
गुरुर हो चला कि,
कपड़ों पर लगी धूल
उसकी शान कम कर
देगी !
positive_think____

CamScanner

उसका हाथ का निशान बन गया था गाल पर,
मैने देखा वो खो गया। शरीर उसे पी गया।
लेकिन अगर मैं कर्ता बन जाऊ कि मुझे मारा गया या मैं मारू, या मैं कुछ कर दूंगा तो फिर उपद्रव शुरू हुआ।
लेकिन हमारी पकड़ शरीर की भाषा से प्रकृति की भाषा से ऊपर नही उठती।
अगर मुझे मजाक करना होता तो इस तरह का तो मैं भी उसे मार सकता था।
लेकिन गरीब, नासमझ औरत उसके साथ मजाक करना ठीक नहीं।
लेकिन हम भाषा कौनसी समझते है?
शरीर सवारी से ज्यादा कुछ नहीं।
प्रकृति की भाषा नही समझ पाते हम।
इसलिए परमात्मा की कोई झलक भी नही मिल पाती।
परमात्मा की भाषा समझनी हो तो प्रकृति की भाषा से थोड़ा पार जाना पड़ेगा।
और जो भी हमे चारो तरफ दिखाई पड़ रहा है, वो सब प्रकृति का खेल है।
जो भी हमारी आंख से दिखाई पड़ता है, जो भी हम हाथ से छूते हैं, जो भी कान से सुनाई पड़ता है वो सब प्रकृति का खेल है।
प्रकृति अपने गुण धर्म से बरस रही है।
अगर इतने पर ही कोई रुक गया तो वो कभी परमात्मा की झलक को उपलब्ध न होगा।
कृष्ण कहते हैं, कि उसकी झलक को अगर उपलब्ध होना है तो ये प्रकृति का काम है इसे गहरे में समझ के इसे प्रकृति को ही करने दो।
तुम कर्ता मत रह जाओ। तुम सिर्फ दृष्टा हो जाओ।
साक्षी हो जाओ कि प्रकृति ऐसा कर रही है।
तुम देखते रहो दर्शक की भांति और धीरे धीरे वो द्वार खुल जाएगा जिसने कभी कुछ नहीं किया।
उसे परमात्मा की झलक मिलनी शुरू हो जाएगी।

गीता दर्शन (अध्याय 5)
प्रवचन 7

CamScanner

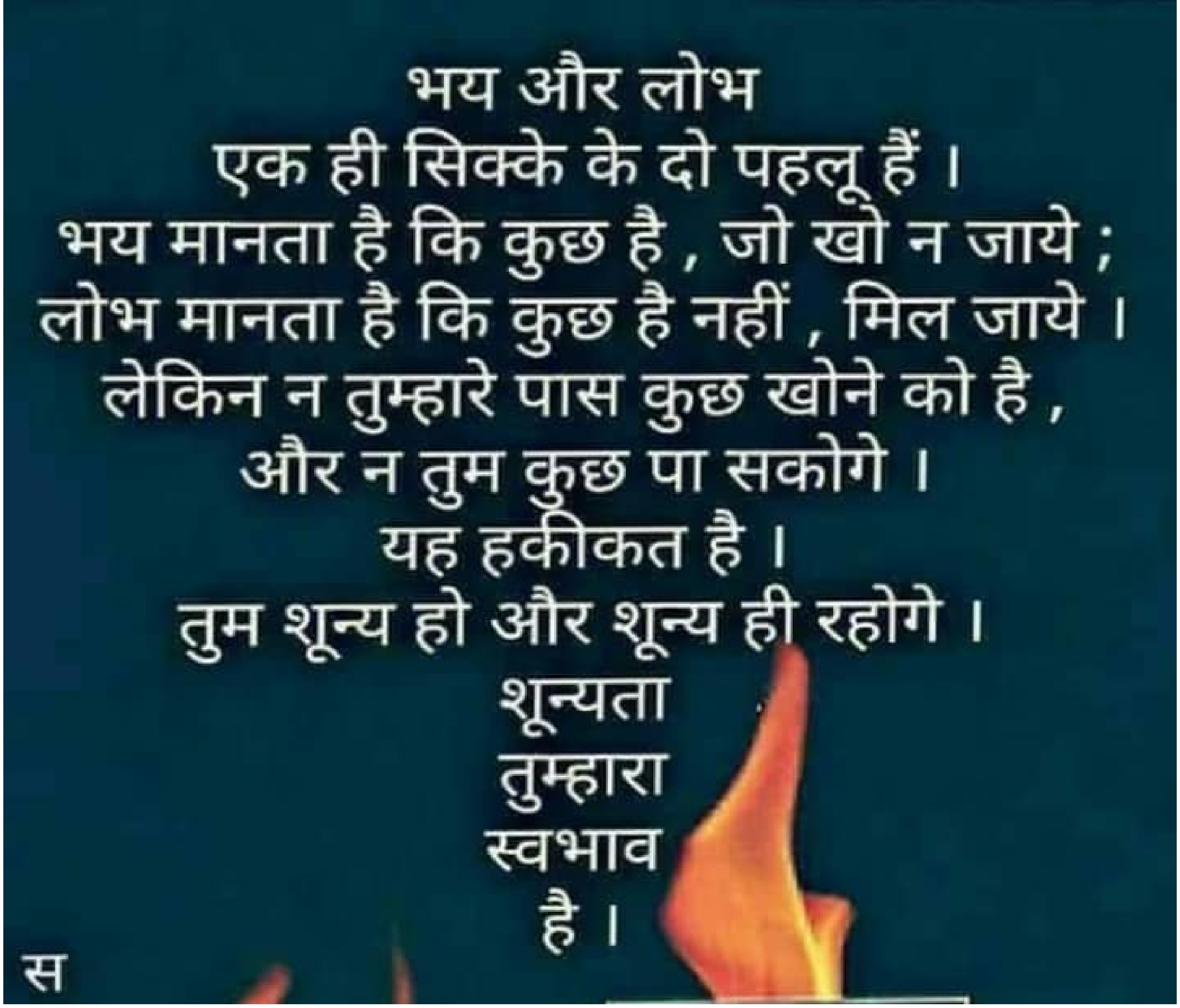
भय और लोभ
एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।
भय मानता है कि कुछ है , जो खो न जाये ;
लोभ मानता है कि कुछ है नहीं , मिल जाये ।
लेकिन न तुम्हारे पास कुछ खोने को है ,
और न तुम कुछ पा सकोगे ।
यह हकीकत है ।
तुम शून्य हो और शून्य ही रहोगे ।
शून्यता
तुम्हारा
स्वभाव
है ।
स

CamScanner

Munabai Makvana · 17h ·

एक दिन एक धनी व्यापारी ने चीन के प्रसिद्ध दार्शनिक लाओत्से से पूछा--'आपका शिष्य येन कैसा व्यक्ति है?'

लाओत्से ने उत्तर दिया--'उदारता में वह मुझसे श्रेष्ठ है।'

'आपका शिष्य कुंग कैसा व्यक्ति है?' व्यापारी ने फिर पूछा।

लाओत्से ने कहा--'मेरी वाणी में उतना सौंदर्य नहीं है जितना उसकी वाणी में है।'

व्यापारी ने फिर पूछा-- 'और आपका शिष्य चांग कैसा व्यक्ति है?'
लाओत्से ने उत्तर दिया--'मैं उसके समान साहसी नहीं हूं।'

व्यापारी चकित हो गया, फिर बोला--'यदि आपके शिष्य किन्हीं गुणों में आपसे श्रेष्ठ हैं तो वे आपके शिष्य क्यों हैं? ऐसे में तो उनको आपका गुरु होना चाहिए और आपको उनका शिष्य!'

लाओत्से ने मुस्कराते हुए कहा--'ये सभी मेरे शिष्य इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने मुझे गुरु के रूप में स्वीकार किया है। और उन्होंने ऐसा इसलिए किया है क्योंकि वे यह जानते हैं कि किसी सद्गुण विशेष में श्रेष्ठ होने का अर्थ ज्ञानी होना नहीं है।'

'तो फिर ज्ञानी कौन है?' व्यापारी ने प्रश्न किया।

लाओत्से ने उत्तर दिया--'वह जिसने सभी सद्गुणों में पूर्ण संतुलन स्थापित कर लिया हो।'

CamScanner

8:36 am 24 KB/s 100%

आचार्य श्री रजनीश चंद्रमोहन:
शिष्य का मतलब गुरु को पकड़ना नहीं है। शिष्य का मतलब सीखने की अनंत क्षमता को जन्म देना है। फिर जहां भी सीखने को मिल जाए और जिससे भी सीखने को मिल जाए। फिर मस्जिद हो, मंदिर हो, गुरुद्वारा हो; फिर हिंदू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो; फिर जहां सीखने को मिल जाए, वहां सीखते चले जाना है। और सीखने की कोई सीमा नहीं है। और सीखने का कोई पड़ाव नहीं है, जहां रुक जाना पड़ता है। सीखना एक धारा है, एक बहाव है। और जो जितना बहता है, उतना सीखता है। सब से सीखें।और ऐसा जरूरी नहीं है कि जो किसी अर्थ में आपसे अज्ञानी हो, वह किसी अर्थ में ज्ञानी न हो। ऐसा भी नहीं है। एक छोटा बच्चा भी किसी अर्थ में आपका गुरु हो सकता है। और किसी अर्थ में आपका गुरु भी आपसे सीख सकता है। सीखना एक बहुत जटिल और सूक्ष्म बात है। सीखने की वृत्ति चाहिए। यह वृत्ति हो, तो वह जो गुह्य रहस्य है जीवन का, वह सूक्ष्म रहस्य हमारे हाथ आ जाता है। जो सीखना सीख लेता है, सत्य उसके निकट है। ■

लेकिन इसे हम थोड़ा और तरह से समझ लें। यह कहना भी शायद ठीक नहीं है कि जो सीखना सीख लेता है, सत्य उसके निकट है। अगर वह सच में ही पूरे शिष्यत्व के भाव में आ जाता है, सत्य उसके भीतर है। क्योंकि जो इतनी विनम्रता से अपने द्वार खोल देता है सारे जगत के लिए--कि जहां से भी आती हों हवाएं सत्य की, मेरे द्वार खुले हैं, मेरा कोई पक्षपात बाधा नहीं बनेगा, मेरी कोई पूर्व-धारणा बाधा नहीं बनेगी, मैं टूटने को, मिटने को तैयार हूं, मेरा अतीत मेरे भविष्य के लिए बाधा नहीं बनेगा, अगर सत्य की हवाएं आती हों और मेरा अतीत गलत सिद्ध होता है तो मैं उसे राख करने को तैयार हूं--इतनी जिसकी तैयारी है, वह पहुंच गया। वह इसी क्षण पहुंच गया। शायद उसे सीखने की जरूरत भी न पड़े। यह सीखने का भाव ही काफी हो जाए। शायद यह खुलापन ही उसकी मंजिल हो जाए।
लेकिन हम हैं बंद। अगर हम सीखते हैं तो भी डरे-डरे तौलत्तौल कर। हम सत्य को भी अपने अनुकूल चाहते हैं। अगर सत्य प्रतिकूल पड़ता हो तो हम द्वार बंद कर लेते हैं कि यह सत्य अपने काम का नहीं है, यह अपने लिए नहीं है, यह अपना सत्य नहीं है। हम सत्य को भी अपने

CamScanner

#-ताओ उपनिषद-प्र-48
ओशो
आत्मा को जिसे जानना हो,
उसे अहंकार से छुटकारा चाहिए। अहंकार से छुटकारा, अर्थात दूसरे को प्रभावित करने की वासना से छुटकारा। और ध्यान रहे, दूसरे को प्रभावित करना हिंसा है। दूसरा प्रभावित हो जाए, यह दूसरी बात है। दूसरे को प्रभावित करना हिंसा है। दूसरे को ढालने की कोशिश, बनाने की कोशिश, आदर्श बनाने की कोशिश, अच्छा बनाने की कोशिश भी हिंसा है।

CamScanner

10:21 pm 0 KB/s 4G 15%

facebook

Like Comment Share

Osho Osho
1d ·

हम कृष्ण को गोपियों के साथ नाचते हुए देखते हैं। यह हमारी बहुत स्थूल आंखें जो देख सकती हैं, उतना ही दिखाई पड़ रहा है। लेकिन कृष्ण का गोपियों के साथ नाचना साधारण नृत्य नहीं है। कृष्ण का गोपियों के साथ नाचना उस विराट रास का छोटा सा नाटक है, उस विराट का एक आणविक प्रतिबिंब है
वह जो समस्त में चल रहा है नृत्य, उसकी एक बहुत छोटी सी झलक है। इस झलक के कारण ही यह संभव हो पाया कि उस रास का कोई कामुक अर्थ नहीं रह गया। उस रास का कोई सेक्सुअल अर्थ नहीं है। ऐसा नहीं है कि सेक्सुअल मीनिंग के लिए, कामुक अर्थ के लिए कोई निषेध है।

लेकिन बहुत पीछे छूट गई वह बात। कृष्ण कृष्ण की तरह वहां नहीं नाचते हैं, कृष्ण वहां पुरुष तत्व की तरह ही नाचते हैं। गोपिकाएं स्त्रियों की तरह वहां नहीं नाचती हैं, गहरे में वे प्रकृति हो जाती हैं। प्रकृति और पुरुष का नृत्य है रास।

ओशो

CS CamScanner

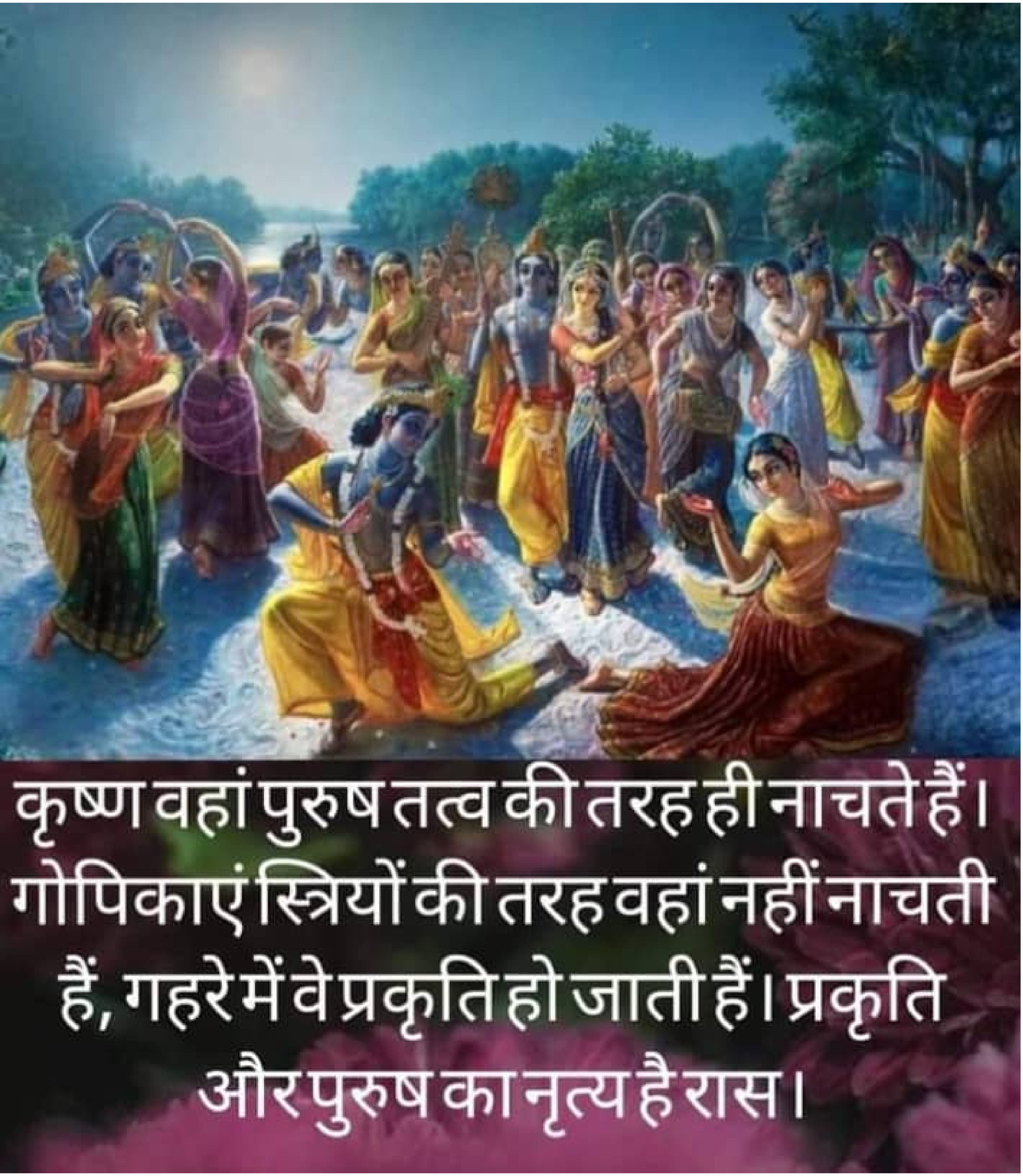
कृष्ण वहां पुरुष तत्व की तरह ही नाचते हैं। गोपिकाएं स्त्रियों की तरह वहां नहीं नाचती हैं, गहरे में वे प्रकृति हो जाती हैं। प्रकृति और पुरुष का नृत्य है रास।

CamScanner

CamScanner

10:17 pm 0 KB/s 4G 16%
facebook

क्षण जाल के बाहर हो सकता है। पीछे लौट कर नहीं देखेगा। संन्यासी वही है जो पीछे लौट कर नहीं देखता। जो हुआ, हुआ। जो नहीं हुआ, नहीं हुआ। जहां से हट गया, हट गया।

संसारी ग्रसित हो जाता है, बंध जाता है। नहीं कि महल किसी को बांधते हैं; महल क्या बांधेंगे? तुम्हारा मोह तुम्हें बांध लेता है। इतना ही भेद है। भेद बहुत बारीक है और भेद बहुत आतरिक है। बाहर से भेद करने में मत पड़ना, अन्यथा संसार और संन्यास में तुम एक तरह का द्वंद्व खड़ा कर लोगे। वही द्वंद्व सम्राट के मन में था। वह सोचता शा संन्यासी तो त्यागी और संसारी भोगी।

नहीं, त्यागी– भोगी दोनों संसारी। संन्यासी तो साक्षी। त्याग में भी साक्षी रहता, भोग में भी साक्षी रहता। सुख में भी साक्षी रहता, दुख में भी। साक्षी स्वाद है संन्यास का।

बुद्ध ने कहा है : तुम कहीं से मुझे चखो, मेरा स्वाद तुम एक ही पाओगे। जैसे कोई सागर को कहीं से भी चखे, खारा पाता है–ऐसे बुद्ध को तुम कहीं से भी चखो, बुद्धत्व, साक्षी, जागरूकता।'जो तृप्त हुआ ज्ञानीपुरुष भाव और अभाव से रहित है और निर्वासना है, वह लोक–दृष्टि में कर्म करता हुआ भी कुछ नहीं करता है।'

भावाभावविहीनो यस्तृप्तो निर्वासनो बुध:।

वही है बुद्धपुरुष। वही है जागा हुआ। वही है ज्ञानी। जो भाव से भी रहित है, अभाव से भी रहित है। न तो उसका कोई पक्ष है न कोई विपक्ष है। न तो वह कहता है ऐसा ही हो और न वह कहता कि ऐसा होगा तो मैं दुखी हो जाऊंगा। न कोई भाव न कोई अभाव।

भावाभावविहीनो यस्तृप्तो निर्वासनो बुध:।

और ऐसा भाव– अभाव में शून्य हो कर जो अपने स्वभाव में तृप्त हो गया, वही है बुद्धपुरुष।
ओशो

CamScanner

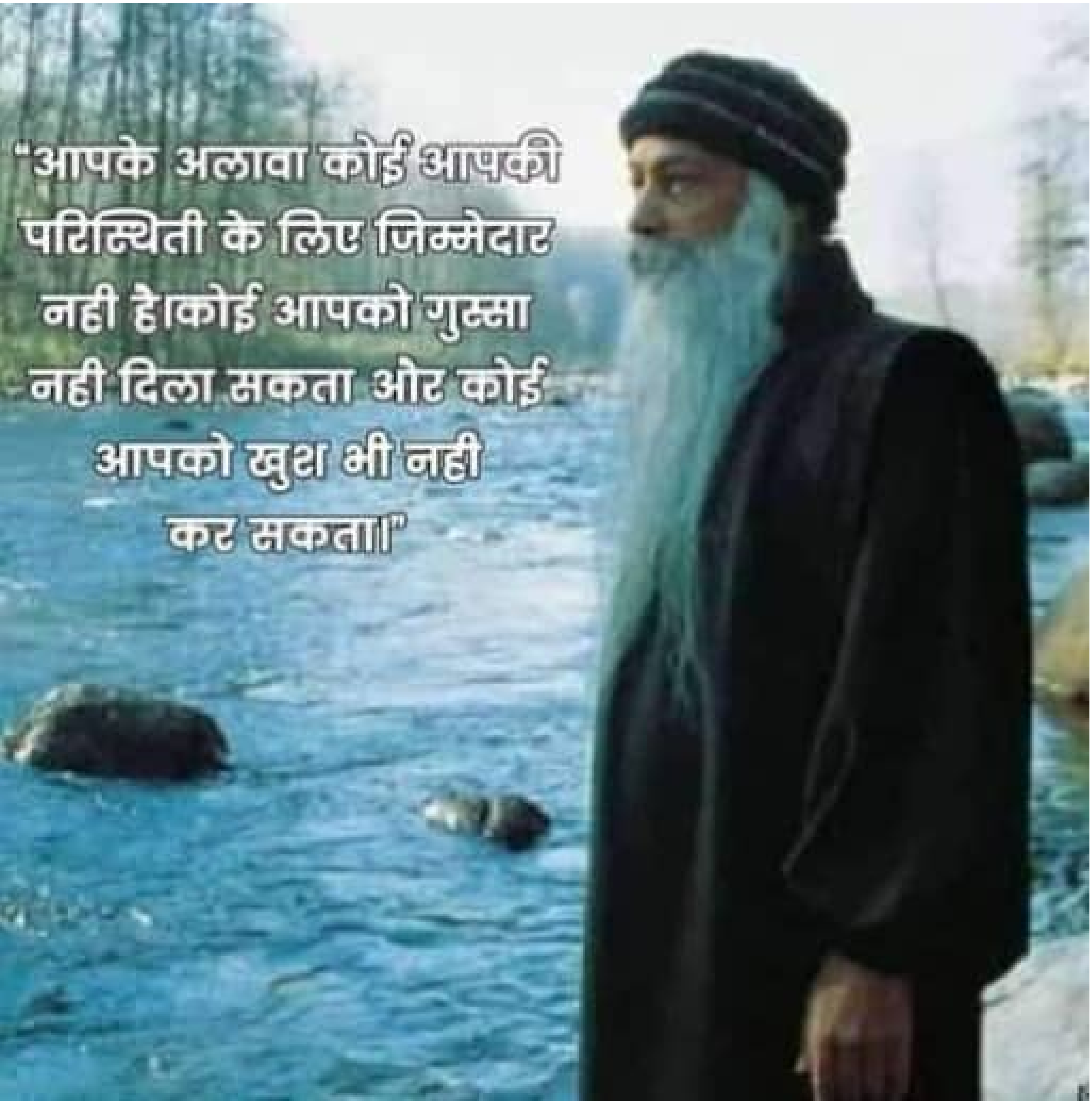
"आपके अलावा कोई आपकी
परिस्थिती के लिए जिम्मेदार
नही होकोई आपको गुस्सा
नही दिला सकता और कोई
आपको खुश भी नही
कर सकता।"

CamScanner

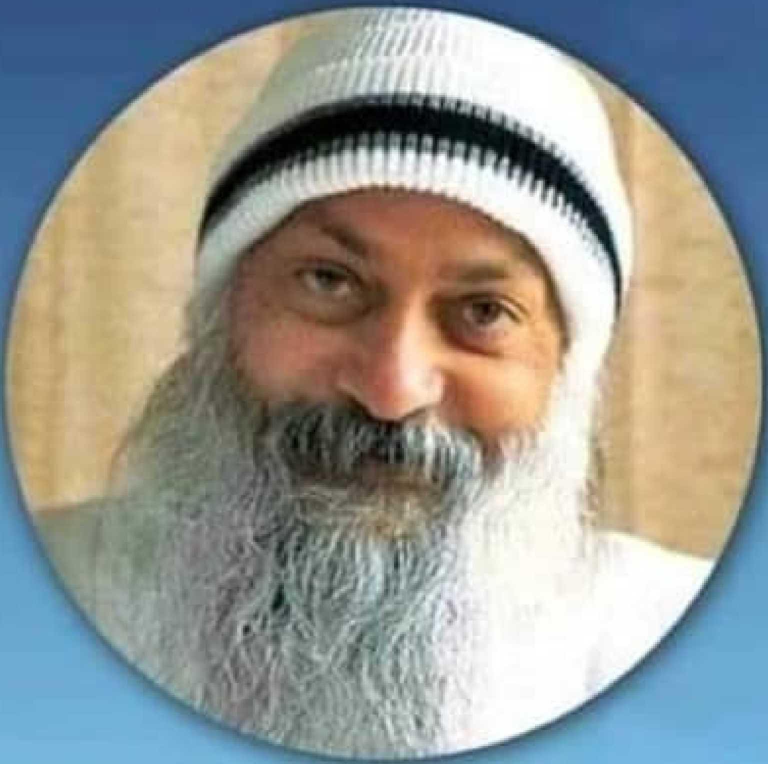

अहोभाव

ओशो

पद घुंघरू बांध

जल के संबंध में लाख पढ़ों, लाख सुनो;
जब तक पीया न हो तब तक जल का गुण समझ में न आएगा।
और ध्यान रखना : पीने पर भी तभी समझ में आएगा जब गहरी प्यास हो। अगर प्यास न हो और कोई जबर्दस्ती तुम्हें जल पिला दे तो तुम्हें वह तृप्ति अनुभव नहीं होगी।

क्योंकि तृप्ति के पहले प्यास चाहिए। तृप्ति जल से नहीं होती, ध्यान रखना। तृप्ति तो प्यास की त्वरा से होती है। जल तो माध्यम बनता है; लेकिन उसके पहले प्यास चाहिए।

CS CamScanner

10:09 pm 11 KB/s 4G 18%

facebook

स्त्री तुम्हारे पीछे पड़ जाए और प्रेम का निवेदन करने लगे तो तुम घबरा जाओगे तुम भागोगे. क्योंकि वह स्त्री पुरुष जैसा व्यवहार कर रही है, स्त्रैण नहीं है. स्त्री का स्त्रैण होना, उसका माधुर्य इसी में है कि वह सिर्फ प्रतीक्षा करती है.

वह तुम्हें उकसाती है, लेकिन आक्रमण नहीं करती. वह तुम्हें बुलाती है, लेकिन चिल्लाती नहीं. उसका बुलाना भी बड़ा मौन है. वह तुम्हें सब तरफ से घेर लेती, लेकिन तुम्हें पता भी नहीं चलता. उसकी जंजीरें बहुत सूक्ष्म हैं, वे दिखाई भी नहीं पड़तीं. वह बड़े पतले धागों से, सूक्ष्म धागों से तुम्हें सब तरफ से बांध लेती है, लेकिन उसका बंधन कहीं दिखाई भी नहीं पड़ता.

स्त्री अपने को नीचे रखती है. लोग गलत सोचते हैं कि पुरुषों ने स्त्रियों को दासी बना लिया. नहीं, स्त्री दासी बनने की कला है. मगर तुम्हें पता नहीं, उसकी कला बड़ी महत्वपूर्ण है. और लाओत्से उसी कला का उद्घाटन कर रहा है. कोई पुरुष किसी स्त्री को दासी नहीं बनाता. दुनिया के किसी भी कोने में जब भी कोई स्त्री किसी पुरुष के प्रेम में पड़ती है,तत्क्षण अपने को दासी बना लेती है, क्योंकि दासी होना ही गहरी मालकियत है. वह जीवन का राज समझती है.

स्त्री अपने को नीचे रखती है, चरणों में रखती है. और तुमने देखा है कि जब भी कोई स्त्री अपने को तुम्हारे चरणों में रख देती है, तब अचानक तुम्हारे सिर पर ताज की तरह बैठ जाती है. रखती चरणों में है, पहुंच जाती है बहुत गहरे, बहुत ऊपर. तुम चौबीस घंटे उसी का चिंतन करने लगते हो. छोड़ देती है अपने को तुम्हारे चरणों में, तुम्हारी छाया बन जाती है. और तुम्हें पता भी नहीं चलता कि छाया तुम्हें चलाने लगती है, छाया के इशारे से तुम चलने लगते हो.

स्त्री कभी यह भी नहीं कहती सीधा कि यह करो, लेकिन वह जो चाहती है करवा लेती है. वह कभी नहीं कहती कि यह ऐसा ही हो, लेकिन वह जैसा चाहती है वैसा करवा लेती है.

ओशो

CamScanner

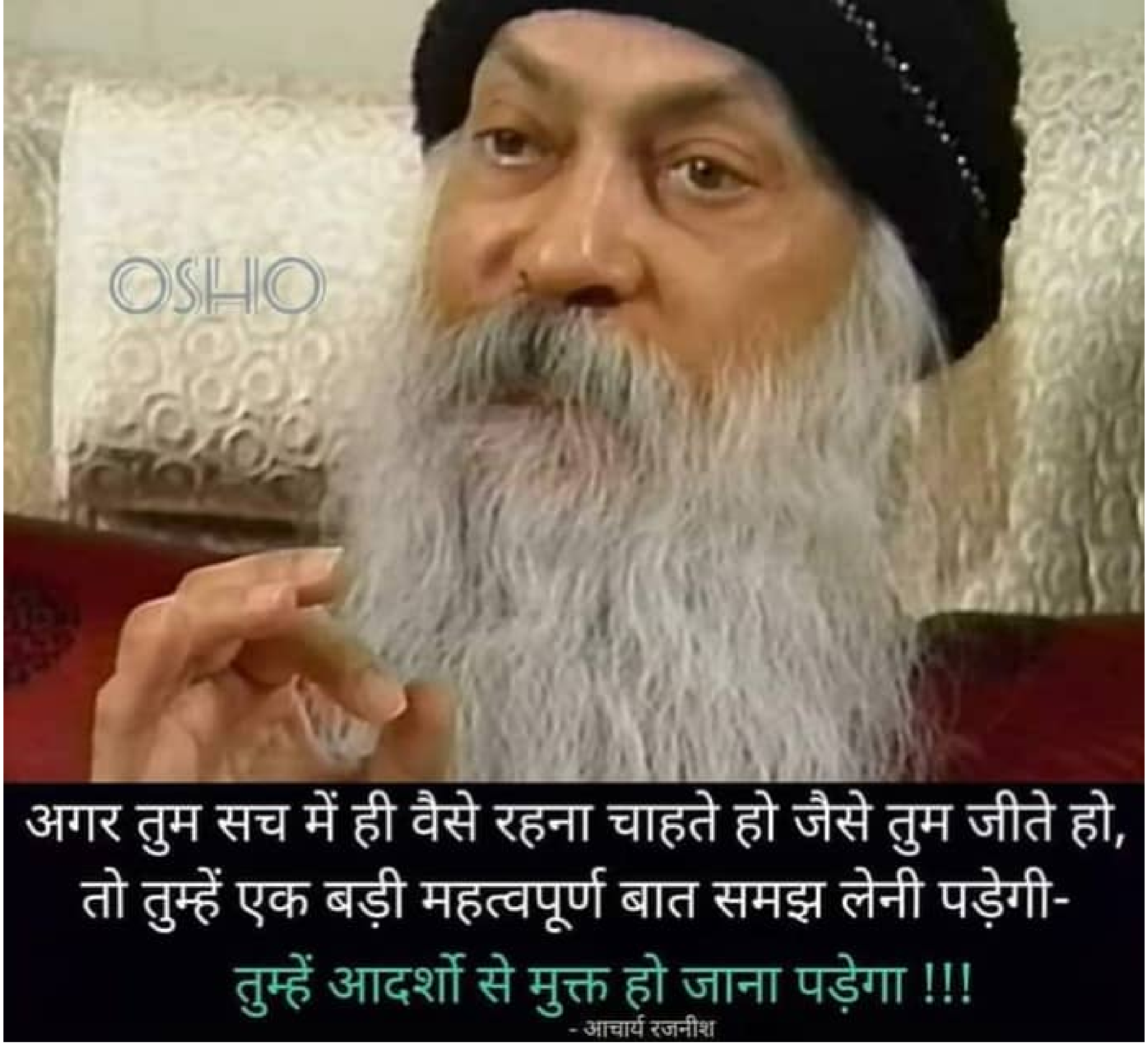
OSHO
अगर तुम सच में ही वैसे रहना चाहते हो जैसे तुम जीते हो,
तो तुम्हें एक बड़ी महत्वपूर्ण बात समझ लेनी पड़ेगी-
तुम्हें आदर्शो से मुक्त हो जाना पड़ेगा !!!
- आचार्य रजनीश

CamScanner

9:23 pm 0 KB/s 4G 20%

सम्राट ने कहा, किया वही है, हुआ नहीं है। और होने का मूल्य है, करने का कोई मूल्य नहीं है। और जीवन में यह रोज होता है। अगर हृदय में स्पंदन न हो रहा हो, तो तुम कर सकते हो, लेकिन उस करने से क्या अर्थ है?

सारे मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारे कर रहे हैं। धर्म क्रियाकांड है। हो नहीं रहा है। गीता पढ़ी जा रही है, की जा रही है; हो नहीं रही है। तुमने सुन लिया है कि गीता को पढ़ने वाले पाप से मुक्त हो गए, मोक्ष को उपलब्ध हो गए। तुमने सोचा, हम भी हो जाएं! तुमने भी पढ़ ली। लेकिन तुम्हारा पढ़ना उस दूसरी पत्नी जैसा है। तुम परमात्मा को धोखा न दे पाओगे। साधारण सम्राट भी धोखा न खा सका, वह भी समझ गया कि ऐसी घटनाएं रोज नहीं घटती। और पड़ोस में ही घट गई! और वही की वही घटी, बिलकुल वैसी ही घटी! यह तो कोई नाटक हुआ।

जीवन पुनरुक्त नहीं होता। हर भक्त ने परमात्मा की प्रार्थना अपने ढंग से की है, किसी और के ढंग से नहीं। हर प्रेमी ने प्रेम अपने ढंग से किया है। कोई मजनू और शीरी और फरिहाद, उनकी किताब रखकर और पन्ने पढ़—पढ़कर और कंठस्थ कर—करके प्रेम नहीं किया है।

कोई जीवन नाटक नहीं है कि उसमें पीछे प्राम्पटर खड़ा है, और वह कहे चले जा रहा है, अब यह कहो, अब यह कहो। जीवन जीवन है। तुम उसे पुनरुक्त करके खराब कर लोगे। गीता तुम हजार दफे पढ़ लो; लेकिन जैसे अर्जुन ने पूछा था, वैसी जिज्ञासा न होगी, वैसी प्राणपण से उठी हुई मुमुक्षा न होगी। तो जो कृष्ण को सरल हुआ कहना, जो अर्जुन को संभव हुआ समझना, वह तुम्हें न घट सकेगा।

दोहराया जा ही नहीं सकता जगत में कुछ। प्रत्येक घटना अनूठी है। इसलिए सभी रिचुअल, सभी क्रियाकाड धोखाधड़ी है, पाखंड है। तुम भूलकर भी किसी की पुनरुक्ति मत करना, क्योंकि वहीं धोखा आ जाता है और प्रामाणिकता खो जाती है।

प्रामाणिक के लिए मुक्ति है, पाखंड के लिए मुक्ति नहीं है। और तुम कितना ही लाख सिर पटको और कहो कि मैंने भी तो वैसा ही किया था, मैंने भी तो ठीक अक्षरश: पालन किया था नियम का, फिर यह अन्याय

CS CamScanner

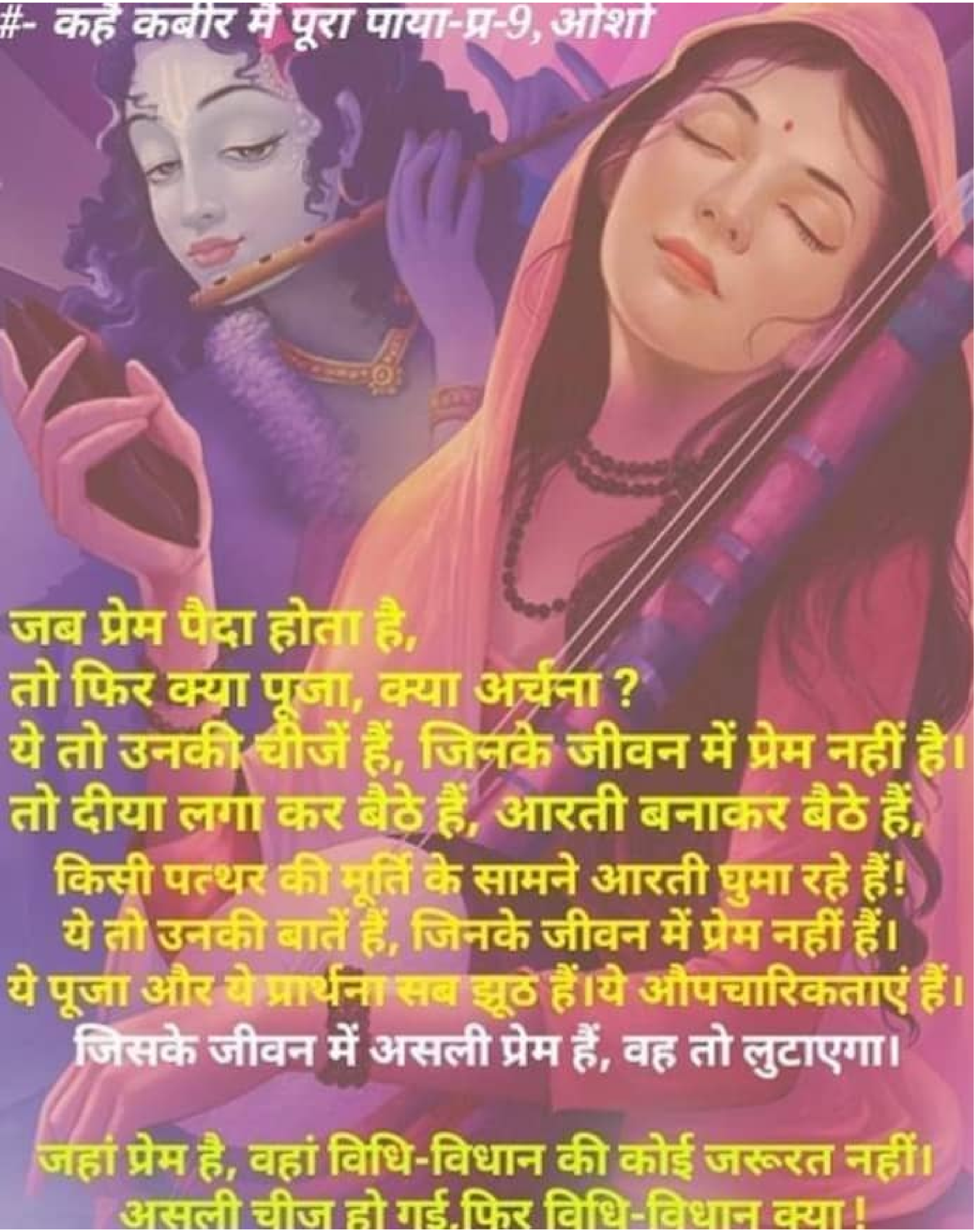
#- कहे कबीर मैं पूरा पाया-प्र-9, ओशो
जब प्रेम पैदा होता है,
तो फिर क्या पूजा, क्या अर्चना ?
ये तो उनकी चीजें हैं, जिनके जीवन में प्रेम नहीं है।
तो दीया लगा कर बैठे हैं, आरती बनाकर बैठे हैं,
किसी पत्थर की मूर्ति के सामने आरती घुमा रहे हैं!
ये तो उनकी बातें हैं, जिनके जीवन में प्रेम नहीं हैं।
ये पूजा और ये प्रार्थना सब झूठ हैं।ये औपचारिकताएं हैं।
जिसके जीवन में असली प्रेम हैं, वह तो लुटाएगा।
जहां प्रेम है, वहां विधि-विधान की कोई जरूरत नहीं।
असली चीज हो गई,फिर विधि-विधान क्या !
CamScanner

9:16 am 0 KB/s 96%

रामकृष्ण, कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। मीरा, नानक, कबीर में लीन हो जाते हैं; जैसे कबीर की ही शाखायें हैं। जैसे कबीर में जो इकट्ठा था, वह आधा नानक में प्रगट हुआ है और आधा मीरा में। नानक में कबीर का पुरुष–रूप प्रगट हुआ है। इसलिए सिक्स धर्म अगर क्षत्रिय का धर्म हो गया, योद्धा का, तो आश्चर्य नहीं है। मीरा में कबीर का स्त्रैण रूप प्रगट हुआ है–इसलिए सारा माधुर्य, सारी सुगंध, सारा सुवास, सारा संगीत, मीरा के पैरों में घुंघरू बनकर बजा है। मीरा के इकतारे पर कबीर की नारी गाई है; नानक में कबीर का पुरुष बोला है। दोनों कबीर में समाहित हो जाते हैं।

इस तरह, मैंने कहा : मैंने यह सात की सूची बनाई। अब उनकी उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी। उन्होंने कहा : और अगर पांच की सूची बनानी पड़े? तो मैंने कहा : काम मेरे लिये कठिन होता जायेगा।

मैंने यह सूची उन्हें दी : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, गोरख।.. क्योंकि कबीर को गोरख में लीन किया जा सकता है। गोरख मूल हैं। गोरख को नहीं छोड़ा जा सकता। और शंकर तो कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। क्या के ही एक अंग की व्याख्या हैं, कृष्ण के ही एक अंग का दार्शनिक विवेचन हैं।

तब तो वे बोले : बस, एक बार और...। अगर चार ही रखने हों?

तो मैंने उन्हें सूची दी. कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, गोरख।... क्योंकि महावीर बुद्ध से बहुत भिन्न नहीं हैं, थोड़े ही भिन्न हैं। जरा–सा ही भेद है; वह भी अभिव्यक्ति का भेद है। बुद्ध की महिमा में महावीर की महिमा लीन हो सकती है।

वे कहने लगे : बस एक बार और...। आप तीन व्यक्ति चुनें।

मैंने कहा : अब असंभव है। अब इन चार में से मैं किसी को भी छोड़ न सकूंगा। फिर मैंने उन्हें कहा : जैसे चार दिशाएं हैं, ऐसे ये चार व्यक्तित्व हैं। जैसे काल और क्षेत्र के चार आयाम हैं, ऐसे ये चार आयाम हैं। जैसे परमात्मा की हमने चार भुजाएं सोची हैं,

#0160

CamScanner

9:15 am 0 KB/s 4G 96%

उन्होंने फिर मुझसे पूछा : तो फिर ऐसा करें, सात नाम मुझे दें। अब बात और कठिन हो गयी थी। मैंने उन्हें सात नाम दिये : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, शंकर, गोरख, कबीर। उन्होंने कहा : आपने जो पांच छोड़, अब किस आधार पर छोड़े हैं? मैंने कहा : नागार्जुन बुद्ध में समाहित हैं। जो बुद्ध में बीज—रूप था, उसी को नागार्जुन ने प्रगट किया है। नागार्जुन छोड़े जा सकते हैं। और जब बचाने की बात हो तो वृक्ष छोड़े जा सकते हैं, बीज नहीं छोड़े जा सकते। क्योंकि बीजों से फिर वृक्ष हो जायेंगे, नये वृक्ष हो जायेंगे। जहा बुद्ध पैदा होंगे वहा सैकड़ों नागार्जुन पैदा हो जायेंगे, लेकिन कोई नागार्जुन बुद्ध को पैदा नहीं कर सकता। बुद्ध तो गंगोत्री हैं, नागार्जुन तो फिर गंगा के रास्ते पर आये हुए एक तीर्थस्थल हैं —प्यारे! मगर अगर छोड़ना हो तो तीर्थस्थल छोड़े जा सकते हैं, गंगोत्री नहीं छोड़ी जा सकती।

ऐसे ही कृष्णमूर्ति भी बुद्ध में समा जाते हैं। कृष्णमूर्ति बुद्ध का नवीनतम संस्करण हैं—नूतनतम; आज की भाषा में। पर भाषा का ही भेद है। बुद्ध का जो परम सूत्र था—अप्प दीपो भव—कृष्णमूत्रि बस उसकी ही व्याख्या हैं। एक सूत्र की व्याख्या—गहन, गंभीर, अति विस्तीर्ण, अति महत्वपूर्ण! पर अपने दीपक स्वयं बनो, अप्प दीपो भव—इसकी ही व्याख्या हैं। यह बुद्ध का अंतिम वचन था इस पृथ्वी पर। शरीर छोड़ने के पहले यह उन्होंने सार—सूत्र कहा था। जैसे सारे जीवन की संपदा को, सारे जीवन के अनुभव को इस एक छोटे—से सूत्र में समाहित कर दिया था।

रामकृष्ण, कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। मीरा, नानक, कबीर में लीन हो जाते हैं; जैसे कबीर की ही शाखायें हैं। जैसे कबीर में जो इकट्ठा था, वह आधा नानक में प्रगट हुआ है और आधा मीरा में। नानक में कबीर का पुरुष—रूप प्रगट हुआ है। इसलिए सिक्स धर्म अगर क्षत्रिय का धर्म हो गया, योद्धा का, तो आश्चर्य नहीं है। मीरा में कबीर का स्त्रैण रूप प्रगट हुआ है—इसलिए सारा माधुर्य, सारी सुगंध, सारा सुवास, सारा संगीत, मीरा के पैरों में घुंघरू बनकर बजा है। मीरा के इकतारे पर कबीर की नारी गाई है; नानक में कबीर का पुरुष बोला है। दोनों कबीर में समाहित हो जाते हैं।

इस तरह, मैंने कहा : मैंने यह सात की सूची बनाई। अब उनकी उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी। उन्होंने कहा : और अगर पांच की सूची बनानी पड़े? तो मैंने कहा : काम मेरे लिये कठिन होता जायेगा।

CamScanner

9:13 am 0 KB/s 96%

Create story Vlogs Dubara

ओशो रहस्यदर्शी
Naye bharat ke khoj · 11h ·

महाकवि सुमित्रानंदन पंत ने मुझसे एक बार पूछा कि भारत के धर्माकाश में वे कौन बारह लोग है—मेरी दृष्टि में—जो सबसे चमकते हुए सितारे हैं? मैंने उन्हें यह सूची दी : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, नागार्जुन, शंकर, गोरख, कबीर, नानक, मीरा, रामकृष्ण, कृष्णमूर्ति। सुमित्रानंदन पंत ने आंखें बंद कर लीं, सोच में पड़ गये...।

सूची बनानी आसान भी नहीं है, क्योंकि भारत का आकाश बड़े नक्षत्रों से भरा है! किसे छोड़ो, किसे गिनो?.. वे प्यारे व्यक्ति थे—अति कोमल, अति माधुर्यपूर्ण, स्त्रैण...। वृद्धावस्था तक भी उनके चेहरे पर वैसी ही ताजगी बनी रही जैसी बनी रहनी चाहिए। वे सुंदर से सुंदरतर होते गये थे...। मैं उनके चेहरे पर आते—जाते भाव पढ़ने लगा। उन्हें अड़चन भी हुई थी। कुछ नाम, जो स्वभावत: होने चाहिए थे, नहीं थे। राम का नाम नहीं था! उन्होंने आंख खोली और मुझसे कहा : राम का नाम छोड़ दिया है आपने! मैंने कहा : मुझे बारह की ही सुविधा हो चुनने की, तो बहुत नाम छोड़ने पड़े। फिर मैंने बारह नाम ऐसे चुने हैं जिनकी कुछ मौलिक देन है। राम की कोई मौलिक देन नहीं है, कृष्ण की मौलिक देन है। इसलिये हिंदुओं ने भी उन्हें पूर्णावतार नहीं कहा।
उन्होंने फिर मुझसे पूछा : तो फिर ऐसा करें, सात नाम मुझे दें। अब बात और कठिन हो गयी थी। मैंने उन्हें सात नाम दिये : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, शंकर, गोरख, कबीर। उन्होंने कहा : आपने जो पांच छोड़े, अब किस आधार पर छोड़े हैं? मैंने कहा : नागार्जुन बुद्ध में समाहित हैं। जो बुद्ध में बीज—रूप था, उसी को नागार्जुन ने प्रगट किया है। नागार्जुन छोड़े जा सकते हैं। और जब बचाने की बात हो तो वृक्ष छोड़े जा सकते हैं, बीज नहीं छोड़े जा सकते। क्योंकि बीजों से फिर वृक्ष हो जायेंगे, नये वृक्ष हो जायेंगे। जहा बुद्ध पैदा होंगे वहा सैकड़ों नागार्जुन पैदा हो जायेंगे, लेकिन कोई नागार्जुन बुद्ध को पैदा नहीं कर सकता। बुद्ध तो गंगोत्री हैं, नागार्जुन तो फिर गंगा के रास्ते पर आये हुए एक तीर्थस्थल हैं—प्यारे! मगर अगर छोड़ना हो तो तीर्थस्थल छोड़े जा सकते हैं, गंगोत्री नहीं छोड़ी जा सकती।

CS CamScanner

9:02 am 12 KB/s 96%

हम सभी पूर्ण हैं, सिर्फ हमें होश नहीं। होश दिलाने का काम मेरा है। तुम्हें मैं पूर्ण नहीं बनाता, तुममें कोई कमी नहीं है जिसको पूरा करना है, पूरे तुम हो, सिर्फ तुम्हें पता नहीं--अपनी ही पूर्णता का तुम्हें पता नहीं--अपनी ही पूर्णता का तुम्हें पता नहीं। विवेकानंद अक्सर एक कहानी कहा करते थे, वह कहानी प्रीतिकर है।

एक गर्भिणी सिंहनी ने छलांग लगायी एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर। और छलांग में कुछ ऐसा हुआ कि उसका गर्भ गिर गया। ठीक समय होगा शायद बच्चे के पैदा होने का। बच्चा पैदा हो गया। वह तो छलांग लगा कर चली भी गयी। नीचे से भेड़ों का एक झुंड गुजर रहा था,वह बच्चा भेड़ों में ही बड़ा हुआ। तो वह अपने को भेड़ ही समझता था, स्वभावत:, भेड़ों में बड़ा हुआ, भेड़ समझा। जैसे हिंदुओं में बड़े हुए तो हिंदू और मुसलमानों में बड़े हुए तो मुसलमान और ईसाइयों में बड़े हुए तो ईसाई। ऐसा ही वह सिंह भेड़ों में बड़ा हुआ, तो अपने का भेड़ समझता था। बड़ा हो गया, सिंह था, मगर शाकाहारी था, घास-पात चबाता। और जैसे भेड़ों के मेमने घसर-पसर बीच-बीच में चलते हैं भेड़ों के, डर के मारे, बड़े बुजर्गों को आसपास करके अंदर-अंदर घुसे रहते हैं, ऐसे ही वह भी घुसा रहता। लगता सबसे ऊंचा, अलग दिखाई पड़ता, दूर से दिखाई पड़ता! मगर उसे क्या पता? उसे क्या होश? और न भेड़ों को कुछ दिक्कत थी, क्योंकि उन्होंने उसे धीरे-धीरे बढ़ते देखा था, इसलिए पता ही नहीं चला था।

मैं एक आदमी का जानता हूं जिसके घर में भैंस का बच्चा पैदा हुआ, वह उसको रोज उठा कर टहलता। मैंने उससे पूछा, तू यह क्या करता है? उसने कहा कि तुम देखो; मैं बड़ी भैंस को उठाकर चहता हूं, उसका अभ्यास कर रहा हूं। और उसने अभ्यास कर लिया। अब भैंस का बच्चा रोज-रोज बड़ा होता गया और वह रोज-रोज उसको लेकर टहलता गया। अभ्यास बढ़ता चला गया। उसको कभी पता नहीं कि बच्चा बड़ा हो रहा है। आखिर में जब बच्चा बिलकुल भैंस हो गया, तब भी वह उठा कर घूम सकता था उसको। ऐसे तुम भैंस को न उठा सकोगे। ऐसे उसको भी भरोसा नहीं आता था कि वह सफल हो जाएगा, मगर हो गया सफल। क्रमश: जो बात घटती है, उसका पता नहीं चलता।

तो न भेड़ों को पता चला, न सिंह को पता चला। सिंह समझता मैं भेड़ हूं, भेड़ें भी समझती अपना बच्चा है। है जरा कुछ अजीब-सा, कुछ

CamScanner

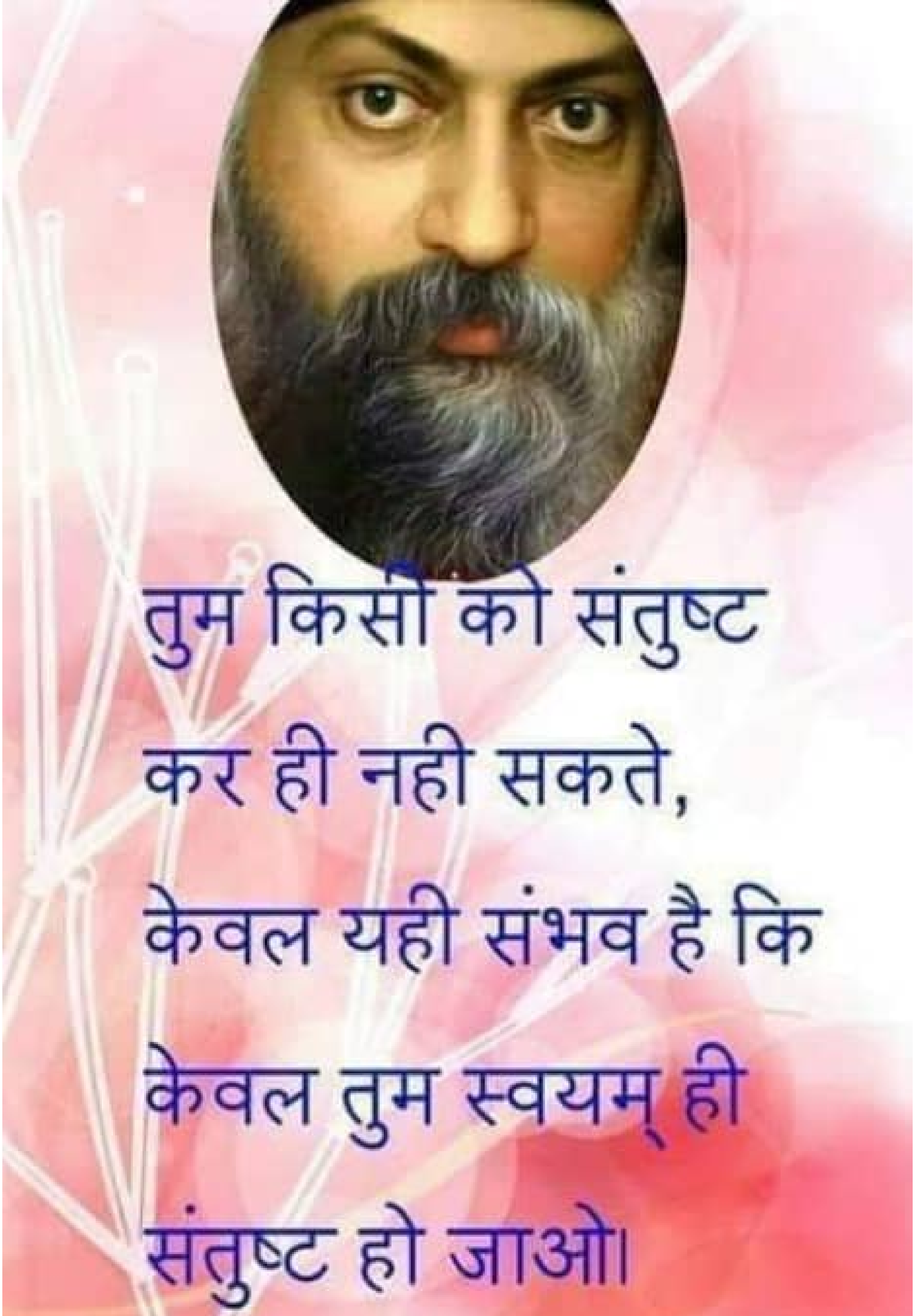

CamScanner

8:59 am 0 KB/s 97%

हरियाली ही हरियाली है, घास ही घास उगी है, फूल खिल रहे हैं, गउएं चर रही हैं।'

पत्नी ने कहां, 'अरे! यह घास और गउएं, इनकी बात पीछे करना, पहले स्वर्ग के संबध में और कुछ तो बताओ।'

उसने कहां, 'अरे, यह पास में ही जो गाय खड़ी है, ऐसी सुंदर, हेमा मालिनी को मात दे रही है।'

पत्नी बोली कि तुम भ्रष्ट तो नहीं हो गए, तुम्हारा दिमाग कैसा हो गया? अरे, स्वर्ग में पहुंचकर और कहां की बातें कर रहे हो! पति ने कहां, 'कौन कहता है कि मैं स्वर्ग में आया? अरे, मैं यहीं पूना में एक सांड हो गया हूं। और क्या प्यारी गऊमाता खडी है! लार टपकी जा रही है! और तू कहां की स्वर्ग की बातें कर रही है! स्वर्ग जाए भाड़ में, मैं चला गऊ माता के पीछे।'

गोलोक में जाना किसको है? गोलोक छोड्कर और कहीं भी मैं जाने को तैयार हूं। गोलोक में करना क्या है? सातवें नर्क में भेजने की मुझे धमकी दी है। मुझे कोई अड़चन नहीं है। सातवां हो कि चौदहवी हो, कोई भी नर्क हो, मैं जाने को राजी हूं। क्योंकि मैं जहां हूं जैसा हूं वहीं आनंदित हूं तो वहीं आनंदित होंगे। सातवें नर्क में क्या बिगड़ जाएगा? मेरा कुछ बिगड़ने वाला नहीं। वहीं सन्यासियों को इकट्ठा कर लेंगे, वहीं सत्संग जमेगा। और ऐसे भी जब मुझे सातवें नर्क जाना पड़ेगा तो मेरे संन्यासी भी वहीं जाएंगे, और कहां जाएंगे! वहीं फिर बसा लेंगे।

ये जो पार की कल्पनाएं हैं––गोलोक, बैकुंठ, स्वर्ग, मोक्ष—सब पागलपन है। न तो कहीं कोई स्वर्ग है, न कहीं कोई नर्क। जब तुम अपने में नहीं हो तो नर्क में हो और जब तुम अपने में हो तो स्वर्ग में हो। ये धमकियां किन्हीं और पागलों को देना। जो अपने में है, वह अपना स्वर्ग अपने साथ लिए चलता है। और: जो अपने में नहीं है वह कहीं भी पहुंच जाए, नर्क में ही रहेगा; वह अपना नर्क अपने साथ लिए चलता है।

ओशो
सांच सांच सो सांच, ओशो

CamScanner

मैं तुमसे कहता हूं कि धन में दुख नहीं है, दुख तुम्हारी आदत है। हां, बिना धन के शायद तुम उतने दुखी नहीं हो पाते, क्योंकि धन चाहिए न खरीदने को! दुख भी खरीदने के लिए धन तो चाहिए, अवसर तो चाहिए। तुम वेश्यालय नहीं गए क्योंकि सुविधा नहीं थी। तुम सज्जन थे क्योंकि दुर्जन होने के लिए भी मौका चाहिए। तुमने जुआ नहीं खेला क्योंकि खेलने के लिए भी तो पैसे चाहिए। तुम लड़े—झगड़े नहीं क्योंकि कौन झंझट में पड़े— अदालत, मुकदमा, वकील! लेकिन तुम्हारे पास पैसे आ जाएं तो ये सारी वृत्तियां तुममें भरी पड़ी हैं। और ये सारी वृत्तियां प्रकट होने लगेंगी।

OShO

CamScanner

"आत्मा तुम्हारी है, शरीर प्रकृति का है, और मन समाज का है..✍️❤️💻
❤️ओशो❤️
Osho
www.jagoaurjagao.com

CamScanner

CamScanner

इस दुनिया में बहुत हो चुकी दूसरों की सेवा, कुछ सार हाथ नहीं आया। दूसरों की सेवा के नाम पर बहुत थोथे धंधे चल चुके। सेवा के नाम पर सत्ताधिकारियों ने लोगों का शोषण किया है। जो भी सेवक बनकर आता है, आज नहीं कल सत्ताधिकारी हो जाता है। जो तुम्हारे पैर दबाने से शुरू करता है, एक दिन तुम्हारी गर्दन दबाएगा! जब तुम्हारे पैर दबाए तभी चेत जाना, अन्यथा पीछे बहुत देर हो जाती है। फिर चेतने से कुछ सार नहीं। क्यों करेगा कोई सेवा तुम्हारी? और सेवा करेगा, तो बदला मांगेगा; पुरस्कार चाहेगा।

OshO

CS CamScanner

10:20 am 0 KB/s 4G 92%

Munabai Makvana · 14h ·

सिद्ध सरहपा ने महासुख की बात कही। महासुख क्या है?

पहले तो समझें कि सुख क्या है? सुख तुम्हें कभी-कभी मिला है, इसलिये सुख को समझना आसान भी होगा। फिर समझें कि दुख क्या है। क्योंकि दुख तो तुम्हें बहुत मिला है। सुख-दुख दोनों समझ में आ जायें तो महासुख की समझ आ सकती है।
सुख क्या है? एक क्षण भर को अहंकार का मिट जाना सुख है। तुम चौंकोगे: अहंकार का मिट जाना सुख! हां, जब भी तुमने सुख जाना है, सोचना अब, विचारना अब, ध्यान करना उन क्षणों का। जब भी तुमने सुख जाना है, अहंकार मिट गया है; वह पक्की कसौटी है। सांझ सूरज को डूबते देखा, पहाड़ों पर सूरज की लालिमा छा गई, बादलों पर रंगीन रंग फैल गये, पक्षी अपने नीड़ों को लौटने लगे, सांझ का सौंदर्य, उतरती रात की गरिमा! किसी पहाड़ी एकांत में तुमने सांझ के सूरज को डूबते देखा, तुम चकित भाव-विभोर हो उठे। सुख की एक पुलक आई और गई। एक लहर आई और तुम नहा गये।
यह कैसे हुआ? सूरज का सौंदर्य इतना प्यारा था, आकाश के रंग ऐसे अनूठे थे, पहाड़ों की शांति इतनी गहरी थी, पक्षियों का नीड़ों को लौटना, उनकी चहचहाहट, सब तुम्हारे हृदय को इस भांति से तरंगित कर दिये कि तुम एक छंद में बंध गये। तुम उस पर्वतीय एकांत में डूबते हुए सांझ के सूरज के साथ, आकाश के साथ एक हो गये। लीन हो गये। एक क्षण को अहंकार विस्मृत हो गया। एक क्षण को तुम भूल गये कि मैं हूं। सूरज इतना था कि तुम एक क्षण को भूल गये कि मैं हूं। बादलों में रंग ऐसे थे कि एक क्षण तुम्हें याद न रही कि मैं हूं। लौटते पक्षी, सांझ का सन्नाटा, पहाड़ का एकांत...तुम भूल गये एक क्षण को, इस शराब में डूब गये एक क्षण को! तुम्हें याद ही न रही कि मैं हूं। बस उसी घड़ी एक लहर उठी। इसी लहर का नाम सुख है।
फिर जल्दी ही तुम वापिस लौट आते हो, क्योंकि सूरज कितनी देर तक सुंदर रहेगा! यहां तो सब पल-छिन का मामला है। अभी था अभी गया। अभी डूब गया। रात गहरी होने लगी।

ओशो - सहज योग (प्रवचन ~9)

CamScanner

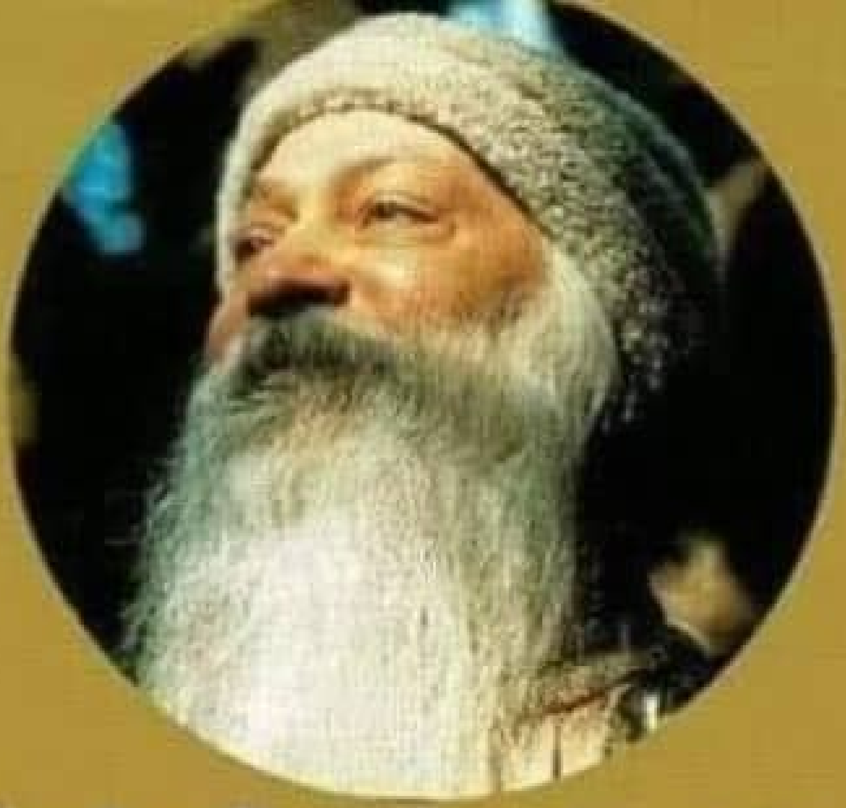

अतीत के प्रति मरते चलो। अतीत का बोझ न ढोओ। तुम्हारे चित्त के दर्पण पर अतीत की कोई छाया न इकट्ठी हो, कोई धूल न जमे। पोंछते चलो, झाड़ते चलो, रोज स्नान करते चलो। प्रतिपल समझो कि नया जन्म हुआ। अतीत मर जाये और भविष्य जन्मे--उस ताजगी में ही, उस ओस जैसी ताजगी में ही तुम परमात्मा से संबंधित हो पाओगे।

Osho, सहज योग- (प्रवचन- 19)

CamScanner

मैं गीत सिखाता हूं। मैं संगीत सिखाता हूं। मेरा संदेश एक ही है, आनंद: उत्सव, महोत्सव। और उत्सव-महोत्सव को सिद्धांत नहीं बनाया जा सकता, केवल जीवनचर्या हो सकती है यह। तुम्हारा जीवन ही कह सकेगा। ओंठों से कहोगे, बात थोथी और झूठी हो जाएगी। प्राणों से कहनी होगी। श्वासों से कहनी होगी। और जहां आनंद है वहां प्रेम है; और जहां प्रेम है वहां परमात्मा है।
ओशो Osho wisdom

CS CamScanner

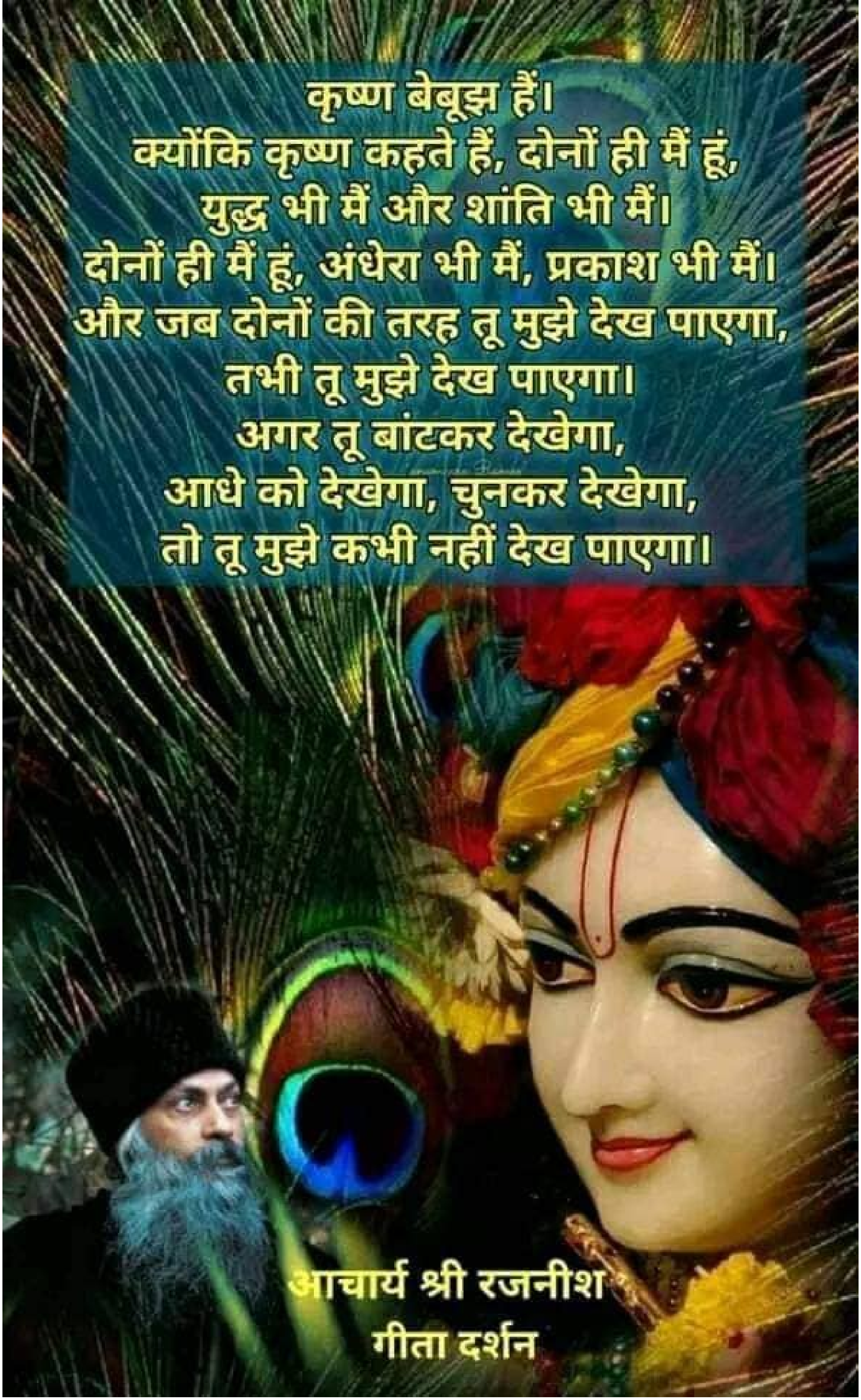

कृष्ण बेबूझ हैं।
क्योंकि कृष्ण कहते हैं, दोनों ही मैं हूं,
युद्ध भी मैं और शांति भी मैं।
दोनों ही मैं हूं, अंधेरा भी मैं, प्रकाश भी मैं।
और जब दोनों की तरह तू मुझे देख पाएगा,
तभी तू मुझे देख पाएगा।
अगर तू बांटकर देखेगा,
आधे को देखेगा, चुनकर देखेगा,
तो तू मुझे कभी नहीं देख पाएगा।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन

CamScanner

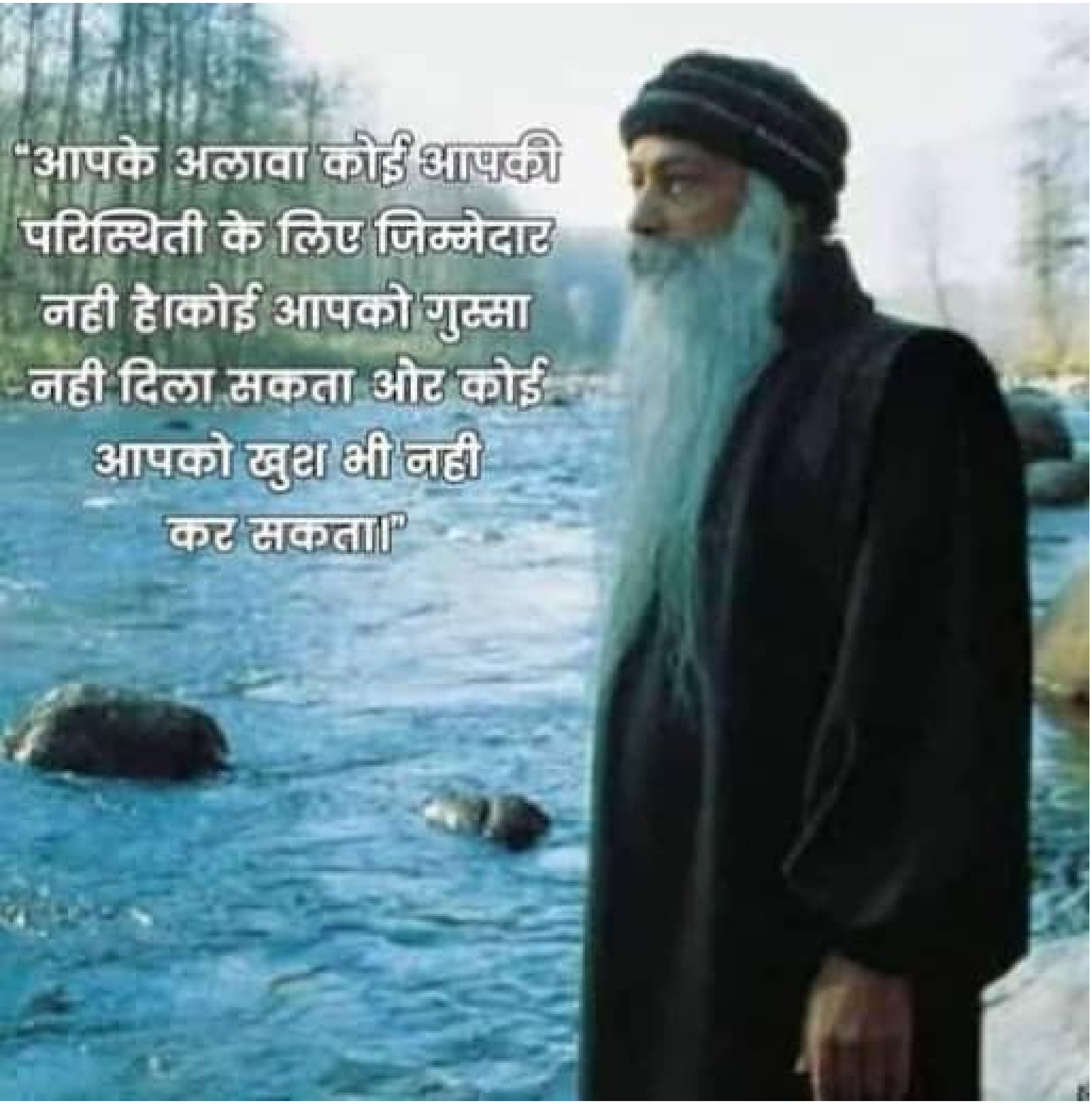
“आपके अलावा कोई आपकी
परिस्थिती के लिए जिम्मेदार
नही है।कोई आपको गुस्सा
नही दिला सकता ओर कोई
आपको खुश भी नही
कर सकता।”

2:06 pm 0 KB/s 80%

तो पहले तो ध्यान रखना, निंदक को बुद्ध बुरा मित्र नहीं कहते। वह मित्र है ही नहीं, शत्रु है; और भला शत्रु है। बुरे मित्र उन्हें कहते हैं बुद्ध, जो तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं। और जिनका कुछ लाभ है प्रशंसा करने में। जो तुम्हें बढ़ावा दे रहे हैं, जो तुम्हारे गुब्बारे को फुलाए जा रहे हैं। और तुम बड़े आनंदित हो रहे हो। तुम समझ रहे हो, उत्सव की घड़ी है यह।

वे तुम्हारी मौत करीब लाए जा रहे हैं। वे तुम्हें मिटाने के करीब लिए जा रहे हैं। वे तुम्हें उस जगह छोड़ जाएंगे, जहां से लौटना मुश्किल हो जाएगा। वे तुम्हारे अहंकार को इतना बड़ा कर देंगे कि जीना ही असंभव हो जाएगा। अहंकार ही तुम्हारे जीवनभर के लिए तुम्हारी छाती पर बैठ जाएगा।

उन्हें तुमसे प्रयोजन नहीं है। उनके कुछ अपने लाभ हैं, जो तुम्हारी प्रशंसा से मिल सकते हैं। तुम्हें बड़ा कहकर वे तुम्हारा उपयोग करना चाहते हैं। वे तुम्हारा शोषण करने में उत्सुक हैं। उनकी नजर तुम्हें साधन बना लेने की है।

जब तुम्हारे पास कोई प्रशंसा करने आए तो ध्यान रखना,कोई भी इसलिए प्रशंसा करने नहीं आता कि तुम बड़े महान हो। अगर तुम महान हो, तब तो लोग निंदा करने आ सकते हैं,प्रशंसा करने नहीं आते। क्योंकि तुम्हारी महानता से उनके अहंकार को चोट लगती है। वे तुम्हारे दुश्मन होने लगते हैं। तुम्हारी महानता से कोई प्रयोजन नहीं है। वे तुम्हारी प्रशंसा करने तभी आते हैं, जब उन्हें तुमसे कुछ काम लेना है। जब वे तुम्हारा उपयोग करना चाहते हैं। तुम्हारी सीढ़ी बनाना चाहते हैं। तुम्हारे कंधे पर चढ़कर कहीं जाना चाहते हैं।

राजनेता तुम्हारे द्वार पर आकर खड़ा हो जाता है हाथ जोड़कर, कि मैं आपके चरणों की धूल हूं। तुम बड़े प्रसन्न होते हो। तुम बड़े गौरवान्वित होते हो। यह आदमी अपने वोट की तलाश में आया है। इसे न तुम्हारे चरणों से मतलब है। यह तुम्हें पहचानेगा भी नहीं। कल पद पर पहुंच जाने के बाद तुम इसके द्वार पर धक्के खाओगे। यह तुम्हें पहचानेगा भी नहीं। तुम इसी भरोसे में इसको वोट दे दिए थे।

CamScanner

2:03 pm 0 KB/s 80%

जीवन को ऐसे गुजारो जैसे पिछले किये हुए कर्मों का फल है। तटस्थता से, बड़ी दूरी के भाव से, उपेक्षा से, बिना प्रतिक्रिया किये, बिना छोटी-छोटी बातों में उलझे—ऐसे गुजर जाओ जैसे राह की धूल जब गुजरते हो तो पड़ती है। जब राह से चलते हो कुत्ते भी भौंकते हैं; जब राह से चलते हो, धूप भी पड़ती है—सबको तुम गुजार देते हो। जन्मों-जन्मों तक जो निर्मित किया है उसे धीरे-धीरे इसी तरह छोड़ने का उपाय—उपेक्षा! दुख आये तो उसे भी ठहर जाने देना। उसके साथ भी शत्रुता मत बांधना। न हो, ऐसा मत कहना।

है और कितनी दूर तेरी मंजिले-कयाम

रह-रहके पूछते हैं यह उम्रे-रवां से हम।

साधक यही पूछता रहता है अपने भीतर: "और, और कितनी यात्रा है?' अपनी जाती हुई, उम्र से पूछता है: "और कितना, और कितना?' लेकिन जो घटता है, उसे स्वीकार कर लेता है। जो घटता है, उसे स्वीकार करके बैठ नहीं जाता। जो घटता है, उसे स्वीकार कर लेता है और यात्रा जारी रखता है।

है और कितनी दूर तेरी मंजिले-कयाम—और भीतर खयाल रखता है कि तेरा अंतिम लक्ष्य और कितनी दूर है? रह-रहके पूछते हैं यह उम्रे-रवां से हम—जाती हुई उम्र से पूछता रहता है कि और कितनी दूर है? और अपने को सम्हाले रखता है। विषाद में नहीं गिरने देता।

ऐ शमा! सुबह होती है रोती है किसलिए

थोड़ी-सी रह गयी है इसे भी गुजार दे।

जैसे सुबह होने के करीब है, रात गहरी अंधेरी हो जाती है। सुबह होने के करीब रात सर्वाधिक अंधेरी हो जाती है। वह सुबह होने की खबर है।

इसलिए जिस व्यक्ति का मोक्ष और निर्वाण करीब आ रहा है, उसके दुख बड़े सघन हो जाते हैं। सभी फल अनंत-अनंत जन्मों के इकट्ठे पकने लगते हैं। यथासमय! आ गई घड़ी।

CamScanner

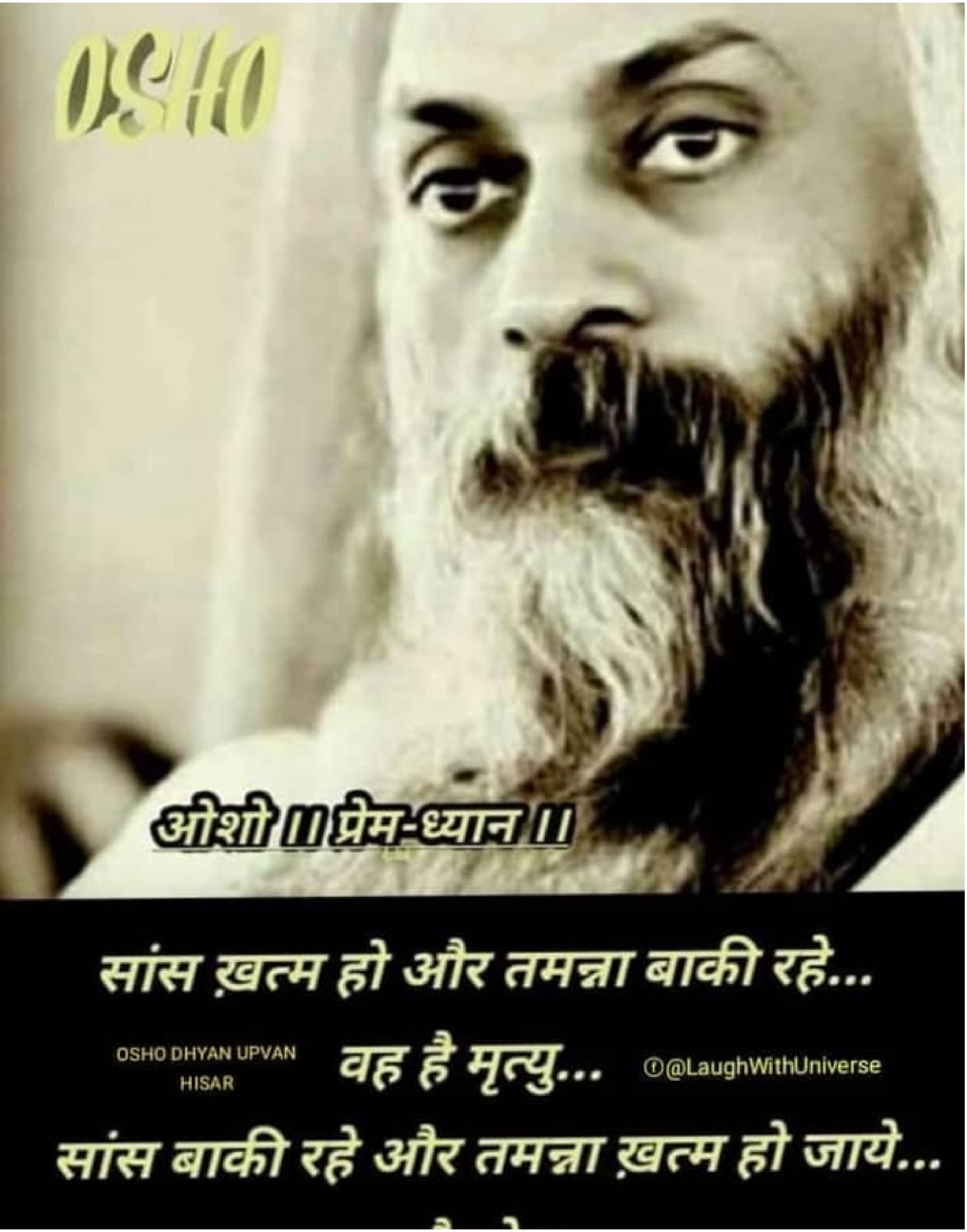
OSHO
ओशो ।। प्रेम-ध्यान ।।
सांस ख़त्म हो और तमन्ना बाकी रहे...
OSHO DHYAN UPVAN
HISAR
वह है मृत्यु...
@LaughWithUniverse
सांस बाकी रहे और तमन्ना ख़त्म हो जाये...

CamScanner

12:37 pm 0 KB/s 84%

Add a comment...

1 hour ago • See translation

CamScanner

12:35 pm
84%
@zindaginama1
इश्क़ का ताल्लुक़ दिलों से होता है
और शादी का तनख़्वाहों से ।
~ राही मासूम रजा
3,732
12
1,872
Send gift
zindaginama1
Following
इश्क़ का ताल्लुक़ दिलों से होता है ...
Followed by hindi.sarthi and 3 others
jinal audio its._me_he
Allahabad, India

CamScanner

5:03 pm 0 KB/s 65%
facebook

और तुम इसे कितने ही सुंदर वस्त्रों में ढांको, तो भी इसका असौंदर्य नहीं ढ़कता है। और तुम चाहे कितने ही सोने के आभूषण पहनो, हीरे-जवाहरात सजाओ, तो भी तुम्हारे भीतर की मांस-मज्जा वैसी की वैसी है।

जिस दिन चेतना का पक्षी उड़ जाएगा, तुम्हारी देह को कोई दो पैसे में खरीदने को राजी न होगा। जल्दी से लोग ले जाएंगे, मरघट पर जला आएंगे। जल्दी समाप्त करेंगे। घड़ी दो घड़ी रुक जाएगी देह तो बदबू आएगी। यह तो रोज नहाओ, धोओ, साफ करो, तब किसी तरह तुम बदबू को छिपा पाते हो। लेकिन बदबू बह रही है। बुद्ध कहते हैं, शरीर तो कुरूप है।

सौंदर्य तो चेतना का होता है। और सौंदर्य चेतना का जानना हो तो ध्यान मार्ग है। और शरीर का सौंदर्य मानना हो, तो ध्यान को भूल जाना मार्ग है। ध्यान करना ही मत कभी, नहीं तो शरीर का असौंदर्य पता चलेगा। तुम्हें पता चलेगा, यह शरीर में यही सब तो भरा है। इसमें और तो कुछ भी नहीं है। कभी जाकर अस्पताल में टंगे अस्थिपंजर को देख आना, कभी जाकर किसी मुर्दे का पोस्टमार्टम होता हो तो जरूर देख आना, देखने योग्य है, उससे तुम्हें थोड़ी अपनी स्मृति आएगी कि तुम्हारी हालत क्या है। किसी मुर्दे का पेट कटा हुआ देख लेना, तब तुम्हें समझ में आएगा कि कितना मल-मूत्र भरे हुए हम चल रहे हैं। यह हमारे शरीर की स्थिति है।

बुद्ध कहते हैं, इस स्थिति का बोध रखो। यह बोध रहे तो धीरे-धीरे शरीर से तादात्म्य टूट जाता है और तुम उसकी तलाश में लग जाते हो जो शरीर के भीतर छिपा है, जो परमसुंदर है। उसे सुंदर करना नहीं होता, वह सुंदर है। उसे जानते ही सौंदर्य की वर्षा हो जाती है। और शरीर को सुंदर करना पड़ता है, क्योंकि शरीर सुंदर नहीं है। कर-करके भी सुंदर होता नहीं है। कभी नहीं हुआ है। कभी नहीं हो सकेगा।

ओशो: एस धम्मो सनंतनो

CamScanner

5:01 pm 0 KB/s 4G 65%

#बुद्ध ने बत्तीस कुरूपताएं शरीर में गिनायी हैं। इन बत्तीस कुरूपताओं का स्मरण रखने का नाम कायगता-स्मृति है।

बुद्ध कहते हैं कि अपने शरीर में इन विषयों की स्मृति रखे-केश, रोम, नख, दांत, त्वक्, मांस, स्नायु, अस्थि, अस्थिमज्जा, यकृत, क्लोमक, प्लीहा, फुस्फुस, आत, उदरस्थ मल-मूत्र, पित्त, कफ, रक्त, पसीना, चर्बी, लार आदि। इन सब चीजों से भरा हुआ यह शरीर है, इसमें सौंदर्य हो कैसे सकता है! सौंदर्य तो सिर्फ चेतना का होता है। देह तो मल-मूत्र का घर है। देह तो धोखा है। देह के धोखे में मत पड़ना, बुद्ध कहते हैं। इस बात को स्मरण रखना कि इसको तुम कितने ही इत्र से छिड़को इस पर, तो भी इसकी दुर्गंध नहीं जाती।

और तुम इसे कितने ही सुंदर वस्त्रों में ढांको, तो भी इसका असौंदर्य नहीं ढ़कता है। और तुम चाहे कितने ही सोने के आभूषण पहनो, हीरे-जवाहरात सजाओ, तो भी तुम्हारे भीतर की मांस-मज्जा वैसी की वैसी है।

जिस दिन चेतना का पक्षी उड़ जाएगा, तुम्हारी देह को कोई दो पैसे में खरीदने को राजी न होगा। जल्दी से लोग ले जाएंगे, मरघट पर जला आएंगे। जल्दी समाप्त करेंगे। घड़ी दो घड़ी रुक जाएगी देह तो बदबू आएगी। यह तो रोज नहाओ, धोओ, साफ करो, तब किसी तरह तुम बदबू को छिपा पाते हो। लेकिन बदबू बह रही है। बुद्ध कहते हैं, शरीर तो कुरूप है।

सौंदर्य तो चेतना का होता है। और सौंदर्य चेतना का जानना हो तो ध्यान मार्ग है। और शरीर का सौंदर्य मानना हो, तो ध्यान को भूल जाना मार्ग है। ध्यान करना ही मत कभी, नहीं तो शरीर का असौंदर्य पता चलेगा। तुम्हें पता चलेगा, यह शरीर में यही सब तो भरा है। इसमें और तो कुछ भी नहीं है। कभी जाकर अस्पताल में टंगे अस्थिपंजर को देख आना, कभी जाकर किसी मुर्दे का पोस्टमार्टम होता हो तो जरूर देख आना, देखने योग्य है, उससे तुम्हें थोड़ी अपनी स्मृति आएगी कि तुम्हारी हालत क्या है। किसी मुर्दे का पेट कटा हुआ देख लेना, तब तुम्हें समझ में आएगा कि कितना मल-मूत्र भरे हुए हम चल रहे हैं। यह हमारे शरीर की स्थिति है।

CS CamScanner

बच्चों की तरह खेलो। कभी-कभी
भूल ही जाओ अपना नाम,
अपनी ख्याति, अपनी डिग्री।
यह सब भूल जाओ। बच्चों जैसे
हो जाओ। अपने भीतर के बच्चे
को बाहर लाओ। गंभीर मत रहो।
कभी-कभी जीवन को बस एक
मौज की तरह लो,और तुम हलके
हो जाओगे। इतने हलके की
आकाश में उड़ सको।

#ओशो

CamScanner

CamScanner

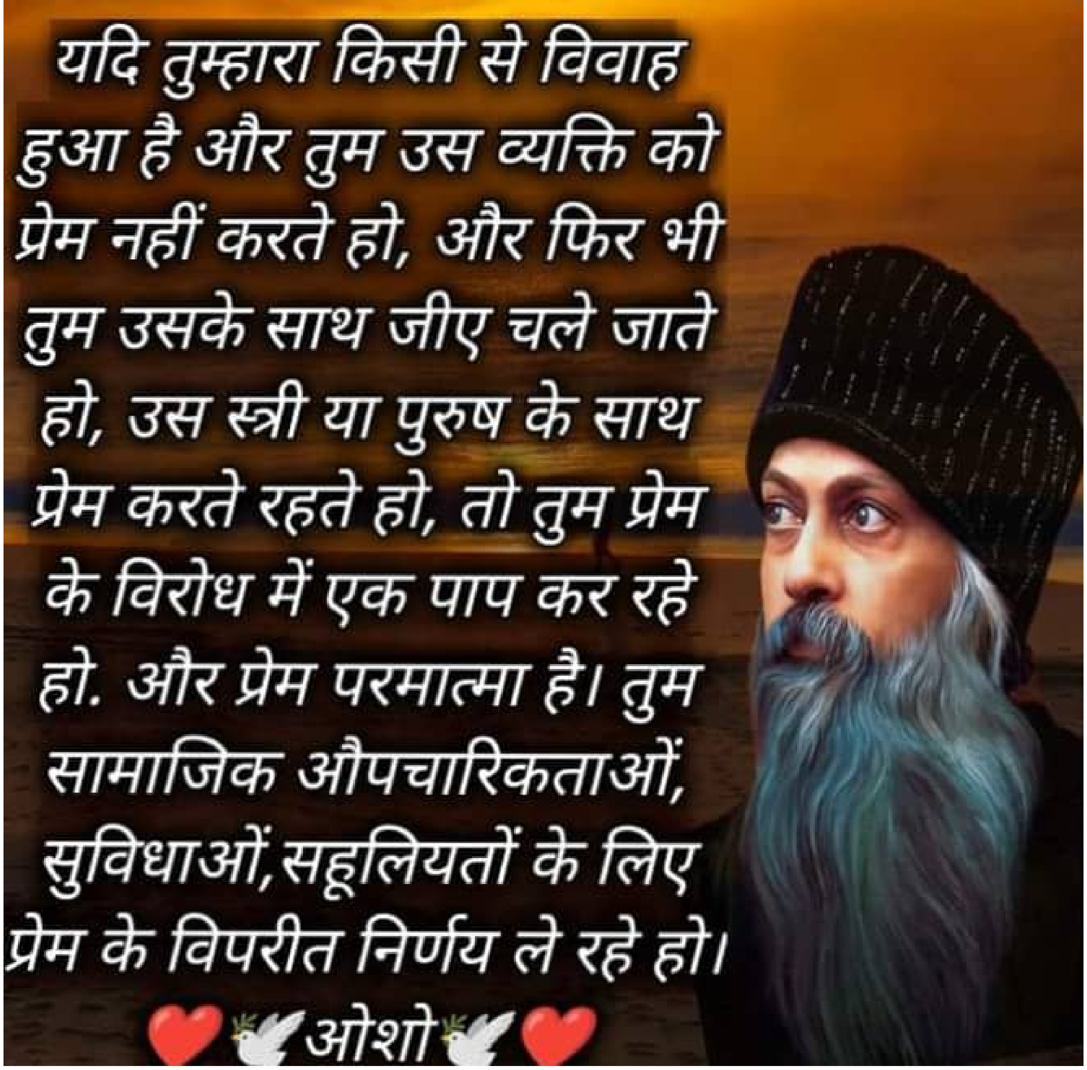
यदि तुम्हारा किसी से विवाह
हुआ है और तुम उस व्यक्ति को
प्रेम नहीं करते हो, और फिर भी
तुम उसके साथ जीए चले जाते
हो, उस स्त्री या पुरुष के साथ
प्रेम करते रहते हो, तो तुम प्रेम
के विरोध में एक पाप कर रहे
हो. और प्रेम परमात्मा है। तुम
सामाजिक औपचारिकताओं,
सुविधाओं,सहूलियतों के लिए
प्रेम के विपरीत निर्णय ले रहे हो।
❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

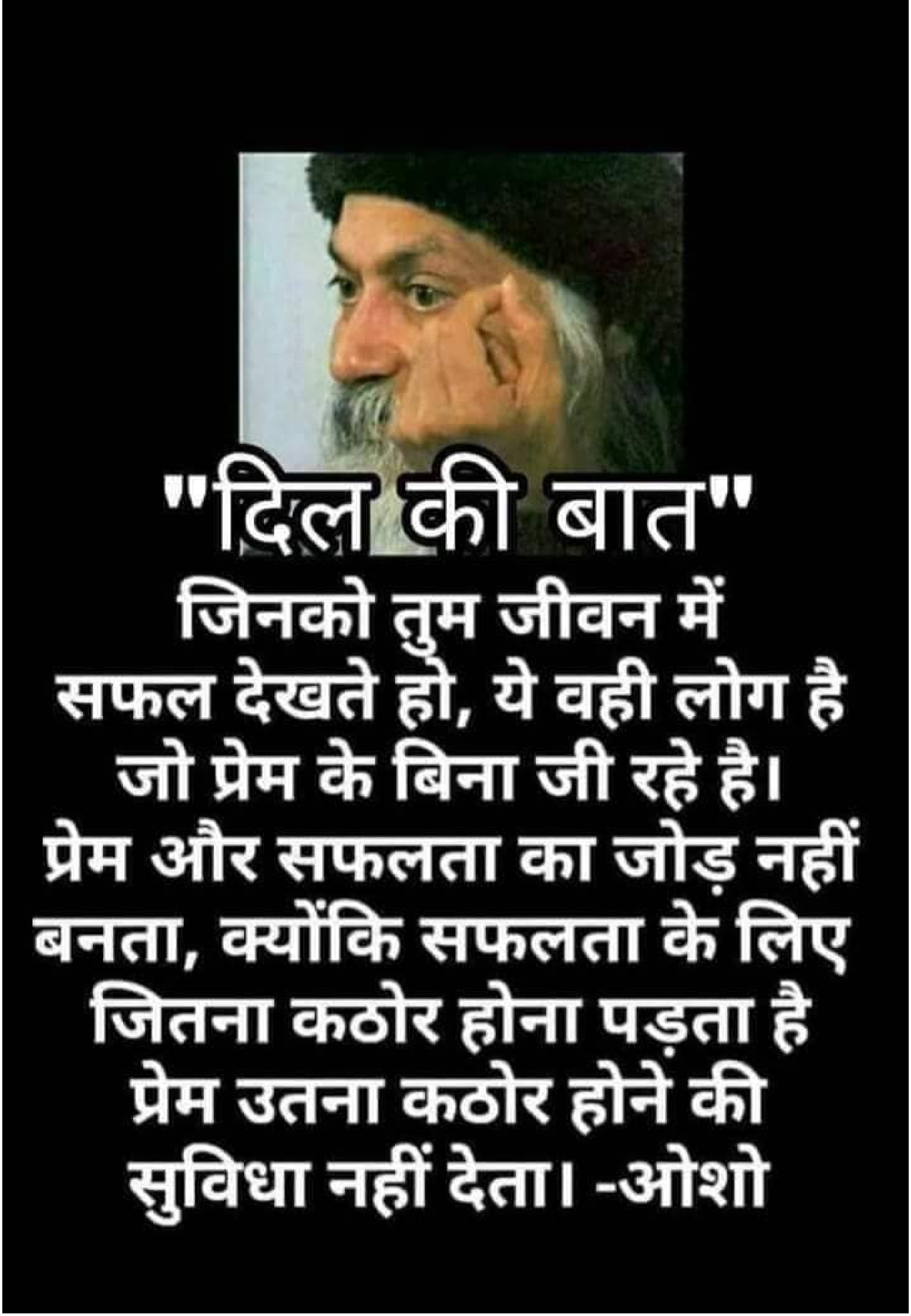
"दिल की बात"
जिनको तुम जीवन में
सफल देखते हो, ये वही लोग है
जो प्रेम के बिना जी रहे है।
प्रेम और सफलता का जोड़ नहीं
बनता, क्योंकि सफलता के लिए
जितना कठोर होना पड़ता है
प्रेम उतना कठोर होने की
सुविधा नहीं देता। -ओशो

CamScanner

CamScanner

जब भी दो पुरुष लड़ते हैं तो हैरानी की बात है.
लड़ते पुरुष हैं मगर गालियां स्त्रियों को देते हैं।
यह भी थोड़ी सोचने जैसी बात है यह कि समाज
बातें तो करता है स्त्री समादर की, मगर यह
समादर है। बातें तो यूँ की जाती हैं कि जहां-जहां
नारी की पूजा होती है वहां-वहां देवता रमण
करते हैं। और स्त्री की पूजा के नाम पर हो क्या
रहा है? सदियों से क्या हो रहा है? सिवाय
अपमान और अनादर के कुछ भी नहीं। अगर दो
आदमी लड़ रहे हैं तो एक-दूसरे से निपटो, इसमें
स्त्रियों को बीच में लाने की क्या जरूरत है? इसमें
किसी की मां ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा; किसी की
पत्नी ने, किसी की बेटी ने तुम्हारा क्या बिगाडा?
लेकिन गाली तो स्त्रियों को ही दी जाएगी। लड़े
कोई अपमान तो स्त्री का ही होगा।
ओशो अहोभाव

CS CamScanner

10:16 pm 29 KB/s 32%

Osho Thoughts

Munabai Makvana · 8h ·

सुप्रभातम🙏💐😊

आखिरी प्रश्न: भगवान, क्या आप सच ही मारवाड़ियों क... See more

8 1 comment

Like Comment Share

CamScanner

10:15 pm 12 KB/s 32%

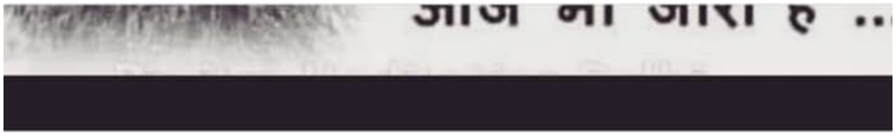

1 like

2 days ago

shabdo_ki_jadugari

1,172 likes

shabdo_ki_jadugari #quotes #shayari #shayaris #lovequotes #quotesinhindi

View all 16 comments

Add a comment...

1 day ago • See translation

CamScanner

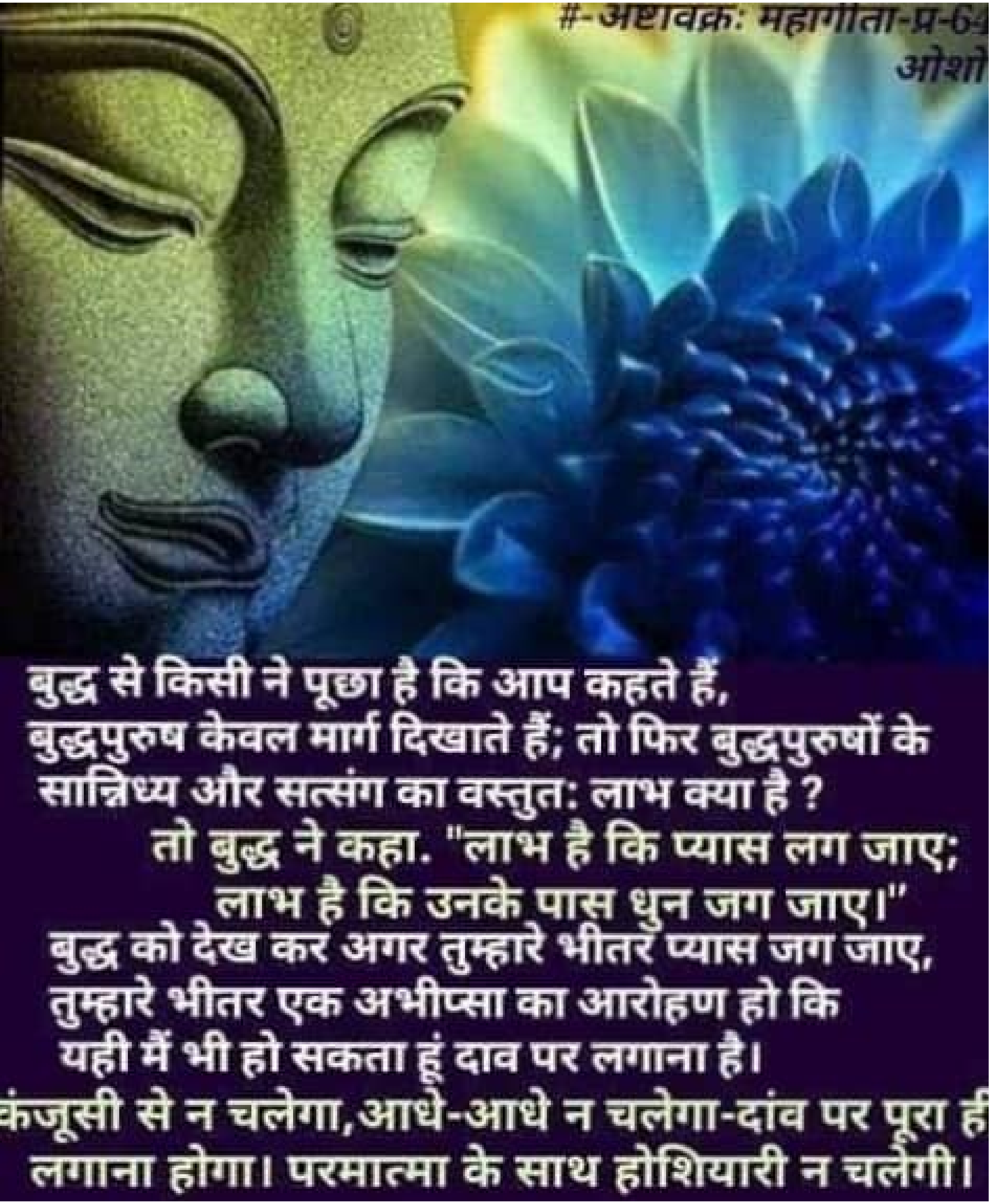
#-अष्टावक्र: महागीता-प्र-64
ओशो
बुद्ध से किसी ने पूछा है कि आप कहते हैं,
बुद्धपुरुष केवल मार्ग दिखाते हैं; तो फिर बुद्धपुरुषों के
सान्निध्य और सत्संग का वस्तुत: लाभ क्या है ?
तो बुद्ध ने कहा. "लाभ है कि प्यास लग जाए;
लाभ है कि उनके पास धुन जग जाए।"
बुद्ध को देख कर अगर तुम्हारे भीतर प्यास जग जाए,
तुम्हारे भीतर एक अभीप्सा का आरोहण हो कि
यही मैं भी हो सकता हूं दाव पर लगाना है।
कंजूसी से न चलेगा,आधे-आधे न चलेगा-दांव पर पूरा ही
लगाना होगा। परमात्मा के साथ होशियारी न चलेगी।

CamScanner

CamScanner

10:37 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

facebook

यह मुल्ला नसरुद्दीन सीखने गया तो डरा हुआ होगा, सो पैर फिसल गया सीढ़ी पर ही। काई जमी होगी। भड़ाम से गिरा और उठ कर एकदम घर की तरफ भागा। उस्ताद ने, जो सिखाने ले गए थे, कहा कि कहां जा रहे हो?

मुल्ला ने कहा कि अब तो सीख लें तैरना, तभी आएंगे।

मगर तैरना कहां सीखोगे? उस्ताद ने पूछा। उसने कहा: अपने कमरे में ही गद्दी बिछा कर। उसी पर हाथ-पैर पटकेंगे। जब तैरना सीख लेंगे, तब आ जाएंगे।

अब गद्दियों पर कोई हाथ-पैर पटक कर तैरना सीख सकता है? कितना ही हाथ-पैर पटके, अगर थोड़ा-बहुत आता हो तो वह भी भूल जाएगा।

ध्यान भी बस ऐसा ही है कि तुम करोगे तो जानोगे। कुछ बातें हैं जो करके ही जानी जाती हैं, और कोई उपाय ही नहीं है। हां, नहीं कहता कि तुम एकदम से समाधि में चले जाओ। इसलिए तो ध्यान के सरलतम प्रयोग खोजे हैं तुम्हारे लिए। आहिस्ता-आहिस्ता चलो। एक-एक कदम उठाओ। धीरे-धीरे भय छूट जाएगा। बस भय ही छूटने की बात है। अपने ही भीतर जाना है, भय क्या? तुम तो वहां हो ही। नाहक भयभीत हो, इसलिए बाहर-बाहर घूम रहे हो। अपने से ही भयभीत बाहर-बाहर घूम रहे हो।

लेकिन आदमी यह भी मानने को राजी नहीं होना चाहता कि मैं अपने से भयभीत हूं। और सीखने में लोग थोड़ी-सी कठिनाई अनुभव करते हैं, उनके अहंकार को चोट लगती है। तो वे चाहते हैं कि ऐसे ही किताब से सीख लें। न मालूम कितने लोग ध्यान करते हैं किताबों से पढ़ कर! न मालूम कितने लोग आसन इत्यादि सीखते हैं इस आशा में कि फिर ध्यान करेंगे। आसन-वगैरह से ध्यान का कोई लेना-देना नहीं है। ये सब बाह्य औपचारिकताएं हैं। ध्यान का संबंध तो भीतर साक्षी होने से है।

CamScanner

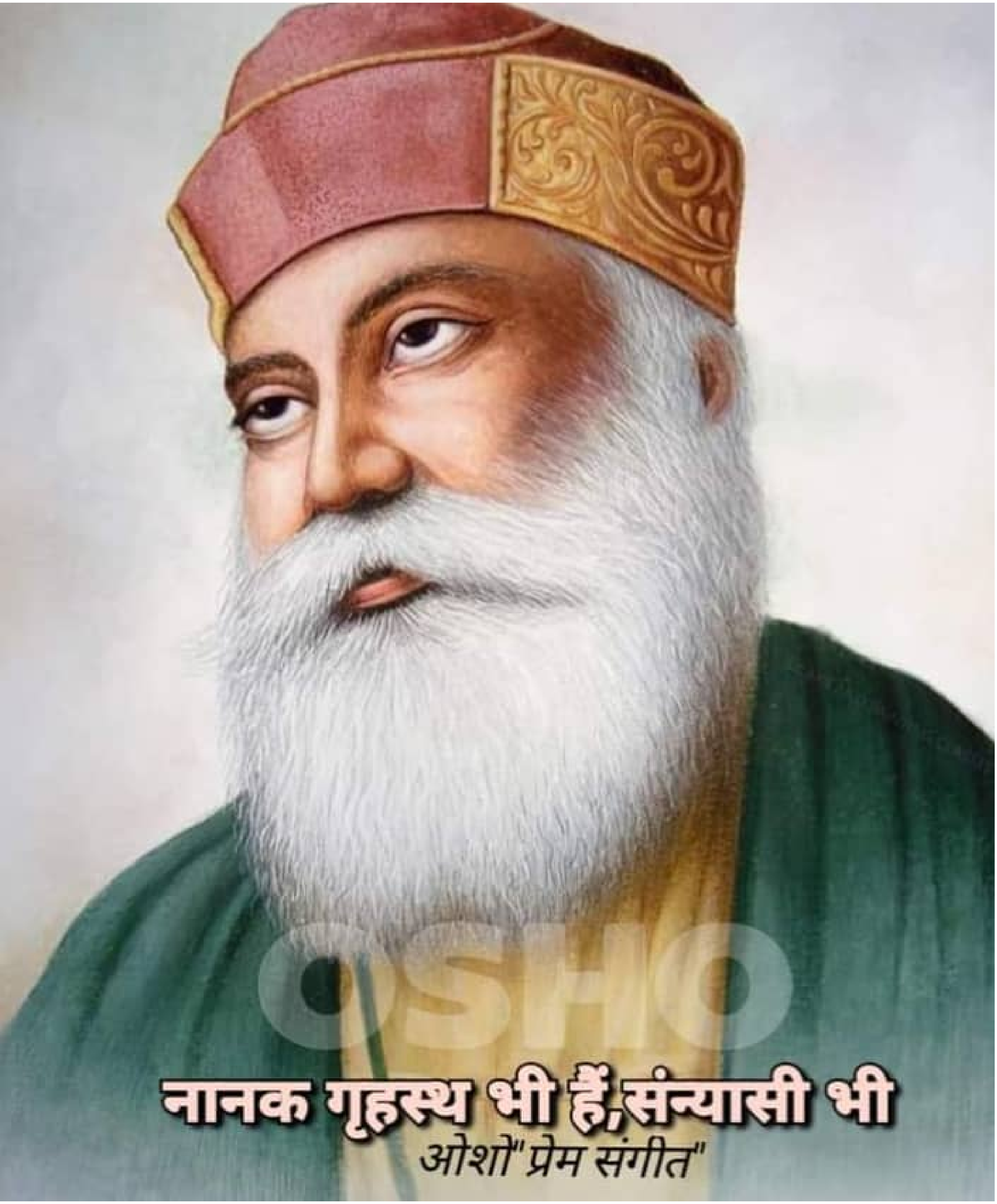

CamScanner

8:29 am 7 KB/s 63%

निरगुन से जीव आइल, सरगुन समाइल हो।
काया गढ़ कइल मुकाम, माया लपटाइल हो।।
सीधे—सीधे वचन हैं—— एक सीधे—साधे आदमी के! मगर बड़े गहरे भी। सच्चाइयां सदा सीधी होती हैं और गहरी भी। सत्य सदा सुगम होते हैं, सरल होते हैं——और गहरे भी! झूठ ही जटिल होते हैं——और उलझे हुए होते हैं।
निरगुन से जीव आइल...। उस विराट स्रोत से हमारा आना हुआ है—— जहां रूप है न रंग है, न गंध है, न स्वाद है; जहां कोई गुण नहीं है—— न रज है, न तम है, न सत्व है; जहां रोशनी नहीं, अंधेरा नहीं; जहां दिन नहीं, रात नहीं; जहां कोई सीमा नहीं; जहां कोई विशेषण नहीं; जहां कोई परिभाषा नहीं। हम उस अपरिभाष्य से आए हैं। हमारा आना उस जगह से हो रहा है——जहां रूप अभी उठे नहीं थे; जहां लहरें अभी जगी नहीं थीं। हम उस शांत सागर से आए हैं, जिस पर कोई तरंग न थी। हम उस क्षीरसागर से आए हैं।
निरगुन से जीव आइल...। हम आए तो परमात्मा से हैं।...... सरगुन समाइल हो। और समा गए हैं छोटी—सी देह में। किरण उतरी है सूरज से और समा गई है एक छोटी—सी गुफा में। नाच रही है वहीं गुफा में। तुमने देखा? कभी तुम्हारे घर में खपड़ों में थोड़ी रंध्र रह जाती है, सूरज की एक किरण भीतर आ जाती है, अंधेरे कमरे में नाचती रहती है। ऐसी हमारी दशा है। आए हैं सूरज से, महासूर्य से——समा गए हैं एक अंधेरी गुफा में। और बहुत दिन हो गए उस अंधेरी गुफा में रहते, बहुत जन्म हो गए। धीरे—धीरे भूल ही गए हैं कि कहां से आए हैं, कहां हमारा घर है, कहां हमारा मूल निवास स्थान है? अब तो इसी अंधेरी कोठरी को अपना घर समझ लिया है।

निरगुन से जीव आइल, सरगुन समाइल हो।

काया गढ़ कइल मुकाम...। और इसी काया को, इसी सराय को, इसी देह को मुकाम बना लिया है, पड़ाव बना लिया है। सोचते हैं कि बस पहुंच गए। अब कहां जाना है और। अब इसी काया को पकड़े हुए हैं। अब इसी काया को सजाने—संवारने में जीवन गंवा रहे हैं। अब इस काया को ही सब कुछ मान लिया है, यही हमारा सर्वस्व हो गई है। और यह कोठरी है। और इससे सिवाय दु :ख के हमें सुख कभी मिलता नहीं। दु :ख मिलता, बीमारी मिलती, जरा मिलता, मृत्यु मिलती— बस यही

CamScanner

8:29 am 276 KB/s VoLTE 4G 63%

कहंवा से जीव आइल, कहंवा समाइल हो।
कहंवा कइल मुकाम, कहां लपटाइल हो।।

कहां रुक गया है जीव? कहां ठहर गया है? कहां मुकाम कर लिया है? इस जिंदगी में किसी को भी तो नहीं लगता कि हम मंजिल पर आ गए। बस ऐसे ही लगता है कि फिर एक पड़ाव, कल सुबह चलना होगा। तुम्हें कभी लगा मंजिल पर आ गए? धन भी मिल गया, पद भी मिल गया, प्रतिष्ठा भी मिल गई—— तुम्हें यह लगा, मंजिल पर आ गए? सब मिल जाता है, मंजिल कहां मिलती है? बस यही भाव बना रहता है कि कल सुबह फिर चलना होगा। एक रातभर का पड़ाव। एक सराए में रुक गए, सुबह फिर यात्रा करनी होगी। यात्रा जारी रहती है। सब मिलता जाता है, मगर यात्रा का अंत नहीं होता।

धरमदास कहते हैं: सोचो, कहां से आए, कहां उलझ गए, कहां पड़ाव बना लिया, कहां लपटाइल हो? किस चीज से अपने बंधन निर्मित कर लिए हैं? कहां अपनी जड़ें जमा ली हैं? किसी तालतलैया में तो नहीं अटक गए हो? ताल तलैया के कारण ही तो मानसरोवर नहीं भूल गया है? याद करो! स्मरण करो! अपनी स्मृति में तलाशो। अपने भीतर उतरो। जरा गौर से देखोगे तो समझ में आएगा।

मुझे खुद भी खबर नहीं "अख्तर"
जी रहा हूं कि मर रहा हूं मैं।

पता नहीं चलता कि वस्तुत: तुम जी रहे हो कि मर रहे हो। क्या कर रहे हो? हर के कारण आदमी यह सवाल नहीं उठाता। यह सवाल कभी अपने—आप सिर उठाने लगता है, तो आदमी भाग कर कहीं छिप जाना चाहता है। सिनेमा—घर में चला जाता है। शराब पी लेता है। असली शराब से बचने के लिए नकली शराब पी लेता है। नाच—गाने में बैठ जाता है। रेडियो खोल लेता है। अखबार पढ़ने लगता है। मित्रों के पास जाकर गपशप करने लगता है——वही गपशप जो हजार बार हो चुकी है। फिर उन्हीं बातों में हंसता है, जिनमें पहले भी हंस चुका और हंसने जैसा कुछ भी नहीं रहा। वही बातें सुनता है, वही बातें दोहराता है। किसी तरह अपने को उलझाता है। थका—मादा रात सो जाता है, सुबह उठकर फिर बाजार की तरफ निकल जाता है।

करना ही ऐसा पड़ेगा, नहीं तो यह सवाल उठेगा कि मैं जी रहा हूं या मर रहा हूं? और घबड़ाहट यह लगती है कि अगर मैंने गौर से देखा तो जो—जो मैंने सपने बनाए हैं, कहीं उखड न जाएं!

CamScanner

मेरे सन्यासी इसे सदा स्मरण रखें कि मैं कोई आखिरी पैगंबर नहीं हूं, न कोई आखिरी तीर्थकर हूं, न कोई आखिरी अवतार हूं, न कोई आखिरी बुद्ध हूं। न आखिरी हूं, न प्रथम हूं। पहले भी अपूर्व फूल खिले हैं और आगे भी अपूर्व फूल खिलेंगे। और तुमने अगर सच में मुझे प्रेम करते हो तो तुम उन सब फूलों को प्रेम करोगे। क्योंकि तुमने एक फूल को प्रेम किया और उस एक फूल से बंध गए तो तुमने फूल को प्रेम किया ही नहीं।
फूल को प्रेम करने का अर्थ होता है कि तुमने खिलने को प्रेम किया, तुमने फूल की पंखुड़ियों के खुल जाने को और गंध के उड़ जाने को प्रेम किया। इसलिए गंध कहीं भी उड़ी हो , किसी फूल से उड़ी हो, अतीत में या भविष्य में , अगर तुमने सच में ही एक फूल को चाहा है , तो उस चाहत में सारे फूलों की चाहत सम्मिलित हो जानी चाहिए।
मैं तुम्हे कोई एक धर्म नहीं दे रहा हूं , बस धर्मिकता दे रहा हूं। **#ओशो** #(Dr.Sohan Lal Narang)

CamScanner

CamScanner

8:15 am 0 KB/s VoLTE 4G 66%

एडिग्ंटन ने एक बार मजाक में यह कहा कि भाषा के कुछ शब्द बिल्कुल ही झूठे हैं ऑक्सफोर्ड में वह बोलता था तो किसी ने पूछा कि जैसे तो उसने कहा-रेस्ट। रेस्ट बिल्कुल झूठा शब्द है। कोई चीज ठहरी हुई है ही नहीं। सारी चीजें बदलती जा रही हैं। कोई चीज ठहरी हुई नहीं है, कोई चीज खड़ी हुई नहीं है। जिसको आप खड़ा हुआ देख रहे हैं, वह भी खड़ा हुआ नहीं है, उसके भीतर भी सब भागा जा रहा हें, वह भी खड़ा हुआ नहीं है, ये दीवारें मकानों की आपको खड़ी दिखाई पड़ रही हैं, ये दरख्त आपको ठहरे हुए मालूम पड़ रहे हैं, यह बिल्कुल झूठी बात है। यह दरख्त ठहरा हुआ नहीं है। नहीं तो यह दरख्त कभी बूढ़ा नहीं हो पायेगा। यह भागा जा रहा हे भीतर। यह बूढ़ा होता चला जा रहा है। यह दीवार ठहरी हुई नहीं है, यह भीतर बदलती जा रही है। नहीं तो यह मकान कभी गिर नहीं पायेगा। सब बदल रहा है। इस बदलाहट का पूरा बोध अगर आपको है तो आपको पता नहीं चलेगा कि मैं हूँ, क्योंकि जहाँ सब बदल रहा है, वहाँ, “मैं” के खड़े होने की जगह कहाँ है? जहाँ कोई चीज खड़ी नहीं हे, जहाँ सब फ्लक्स है, जहाँ सब प्रवाह है, वहाँ मैं कहा हूँ? इसलिए बुद्ध ने तो एक बहुत बड़ी अद्भुत बात कहनी शुरू की थी। उन्होंने कहा था, आत्मा और अहंकार का एक ही अर्थ करते थं। वह कहते, इस बात का भाव कि मैं हूँ, यही अहंकार हे, यही आत्मा है। अगर सब-कुछ बदल रहा है तो मैं खड़े होने के लिए कहाँ जगह पाऊँगा? मेरे स्थिर होने की कहाँ गुंजाइश हैं?

सांझ को हम एक दीया जला देते हैं। सुबह हम कहते हैं कि वही दीया अब तक जल रहा है, उसे बुझा दें। झूठी बात हम कहते हैं। सांझ जो दीया जलाया था, वह तो कभी का बुझ गया। लो हर क्षण बदलती जाती है। दूसरी लौ आ जाती है। इतनी तीव्रता से ज्योति बुझती जा रही हे, धुआं होता जा रहा है। दूसरी ज्योति जलती जा रही है। सांझ जो ज्योति हमने जलायी, फिर सुबह हम उसी को नहीं बुलाते। रातभर ज्योति बदलती रही, बदलती रही, वही ज्योति सुबह नहीं है। जो आप पेदा हुए थे, सब बदलता रहा है। इस पूरी बदलाहट का बोध हो तो आपको पता नहीं चलेगा कि मैं हूँ।

ओशो

CamScanner

दृष्टि न हो,
तो विपरीत दिखाई पड़ता है।
दृष्टि हो, तो जरा भी
विपरीत दिखाई न पड़ेगा।
जिसको बुद्ध होश कहते हैं,
उसी को सूफियों ने बेहोशी कहा।
जिसको बुद्ध अप्रमाद कहते हैं,
उसी को भक्तों ने शराब कहा।
बुद्ध के वचनों में और
उमर खैयाम में इंचभर का फासला नहीं।
बुद्ध ने जिसे मंदिर कहा है,
उसी को उमर खैयाम ने मधुशाला कहा।
बुद्ध तो समझे ही नहीं गए
उमर खैयाम भी समझा नहीं गया।
उमर खैयाम को लोगों ने समझा कि
शराब की प्रशंसा कर रहा है।
OshO
आचार्य श्री रजनीश एस धम्मो सनंतनो-(प्र-18)

CamScanner

"श्वास और वासना का घनिष्ठ संबंध"

तो अगर चित्त काम से भरा हो,
तब श्वास को धीमा करना,
श्वास को शिथिल करना।

जब चित्त में कामवासना घेरे,
या क्रोध घेरे,
या और कोई वासना घेरे,
तो श्वास को शिथिल करना
और कम करना और धीमी लेना।

तो काम और क्रोध दोनों विदा हो जाएंगे,
टिक नहीं सकते;
क्योंकि जो ऊर्जा उनको चाहिए
वह श्वास की बिना चोट पड़े
नही मिल सकती।

ओशो

CS CamScanner

Bsb Pt. Sachin☺

Today, 1:25 pm

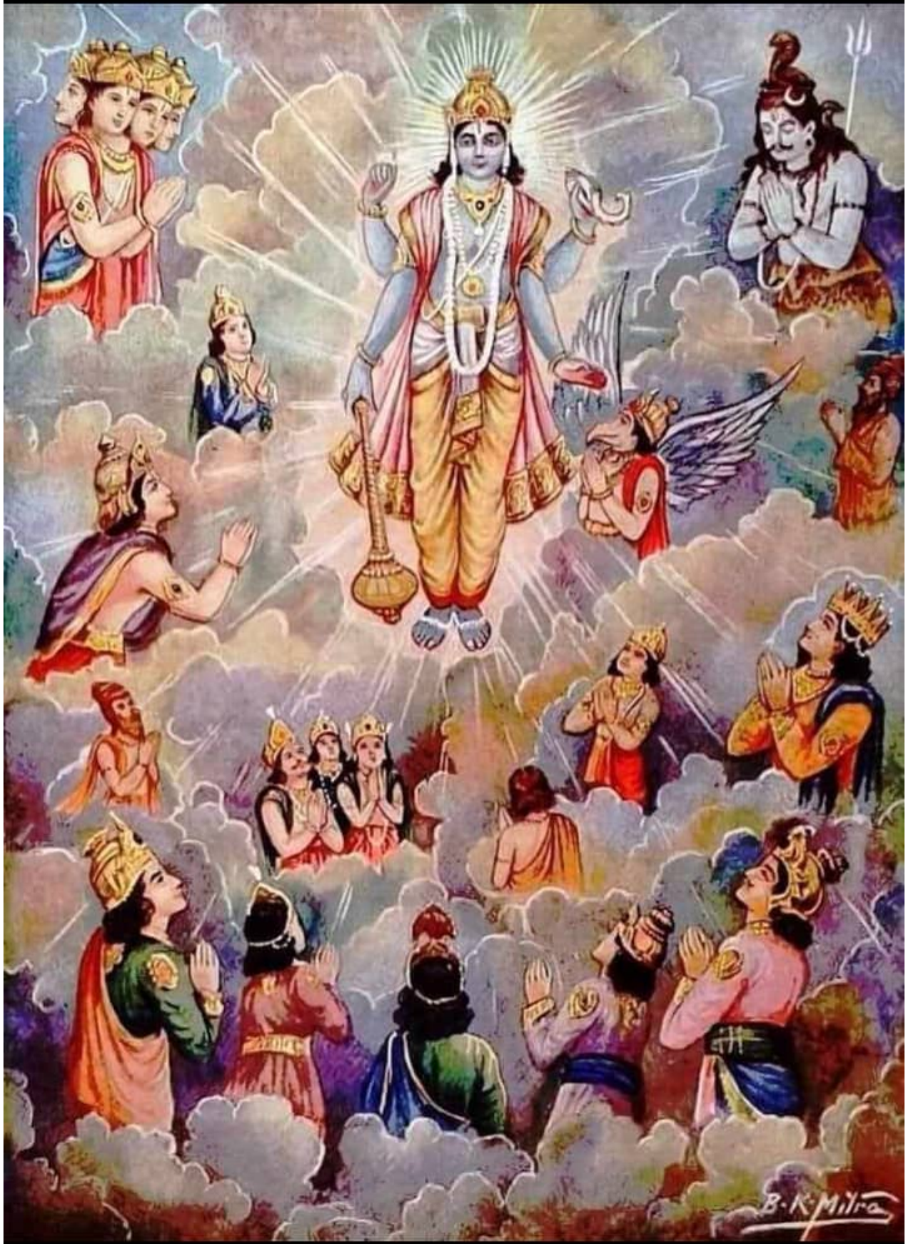

🙏

Reply

CamScanner

5:25 pm 8 KB/s VoLTE 4G 65%
facebook

मार्ग छोड़ देने के बाद भी छह महीने तक उनके स्थन बड़े रहे, धीरे-धीरे छोटे हुए; और धीरे-धीरे उनकी चाल बदली और धीरे-धीरे उनकी वाणी वापस आयी।

रामकृष्ण ने बड़ा अनूठा प्रयोग किया इस पृथ्वी पर।
सारे धर्मो का अनुभव किया। हिंदू की तरह साधना, की मुसलमान की तरह साधना की,बौद्ध की तरह साधना
की। ऐसा कभी किसी ने भी नहीं किया था। क्योंकि एक मार्ग से जो पहुंच गया, अब वह क्यों दूसरे मार्गो पर जाए? लेकिन रामकृष्ण ने बड़ी अनुकंपा की। पहुंच कर भी वह फिर लौटे-लौट कर घाटी में आए और दूसरे मार्गों से चढ़े, ताकि यह दुनिया से कह सकें अनुभव के आधार पर कि सभी रास्ते एक शिखर पर पहुंचा देते हैं। ऐसी बात महात्मा गांधी अधिकारी नहीं हैं कहने के, क्योंकि महात्मा गांधी किसी रास्ते से भी शिखर पर नहीं पहुंचे है अभी। रामकृष्ण अधिकारी हैं कहने के। और यह कोई सिर्फ बौद्धिक समन्वय की बात नहीं थी कि बैठ कर और सोच लिया कि सभी धर्म समान हैं। अच्छी बात लगती है कि सभी धर्म समान है, सभी धर्मों में सत्य है; उदारता होती है, सहिष्णुता मालूम होती है। रामकृष्ण का यह निजी अनुभव था कि सभी धर्मों से व्यक्ति वहीं पहुंच जाता है। यह पहुंच कर, प्रयोग करके। ..कैसे-कैसे अनूठे प्रयोग किये ! रामकृष्ण के जीवन का बड़ा दुर्भाग्य यह है कि विवेकानंद के हाथ में उनकी परंपरा पड़ गयी। और जो सत्य एक बार फिर उतरा था, वह खो गया। इसलिए अब रामकृष्ण के पीछे चलने वाले जो सन्यासी हैं, उनका रामकृष्ण से कुछ लेना-देना नहीं है, वह विवेकानंद से प्रभावित हैं। विवेकानंद का कोई भी मूल्य नहीं है। तर्कशास्त्री हैं। कहां रामकृष्ण-तर्कातीत, और कहां विवेकानं-तर्कशास्त्री! कहां रामकृष्ण--सारे धर्मो को अनुभव किये हुए! विवेकानंद के जीवन में कोई अनुभव नहीं है। विवेकानंद ने सुंदर वक्तव्य दिये। मगर सुंदर वक्तव्य देने में क्या रखा है! कोई मूल्य नहीं। जरा-सी भी जिसके पास बुद्धि है, दे सकता है। असली सवाल है अनुभव का।

ओशो: 🔥 दीपक बार नाम का

CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 1d ·

ख्याति और महत्वाकांक्षा की दौड़ में तुम्हारी ऊर्जा बाहर की ओर बहती है -- वस्तुओं की ओर, लक्ष्यों की ओर, लोगों की ओर। चूंकि तुम्हारी ऊर्जा सतत बाहर की ओर बह रही होती है, इसलिए जल्दी ही तुम खाली महसूस करने लगते हो।

ऊर्जा बाहर तो जाती है, पर कभी भीतर लौटती नहीं -- तुम बस ऊर्जा को बाहर उलीचते चले जाते हो। रोज ऊर्जा निचुड़ती जा रही है -- फिर मृत्यु आ जाती है। मृत्यु और कुछ नहीं है, बस ऊर्जा का पूरी तरह खर्च हो जाना है!

जीवन में सबसे बड़ा चमत्कार है इस बात को समझ जाना, और ऊर्जा को भीतर की ओर मोड़ लेना। यह भीतर की ओर मुड़ना ही संन्यास है!

तुम्हें संसार को, संसार के अपने कामों को छोड़ नहीं देना है -- बस अपने कामों को एक अलग ढंग से करना है। सब कुछ करो, लेकिन अपने केंद्र में बने रहो!

बाहर सब कुछ करो, लेकिन फिर वापस अपने भीतर लौट आओ। फिर तुम ऊर्जा का एक कुंड बन जाते हो, भंडार बन जाते हो। तुम्हारी ऊर्जा बाहर की ओर गति करे, फिर वापस अपने पर लौट आए तो वह तुम्हें शक्ति का एक पुंज बना देती है।

फिर यह ऊर्जा तुम दूसरों से जितना भी बांटो, वह कभी क्षीण नहीं होगी -- बल्कि जितना तुम बांटोगे, उससे हजार गुना होकर तुम पर लौट आएगी!

ओशो

CamScanner

7:03 pm 18 KB/s VoLTE 4G 56%

एक पागल औरत एक दिन सुबह अपने गांव से नाराज होकर चली गई। गांव भर के लोगों ने कहा कि यह क्या कर रही हो? कहां जा रही हो? उसने कहा कि अब मैं जा रही हूं, तुमने मुझे बहुत सताया, अब कल से तुम्हें पता चलेगा! पर उन लोगों ने कहा कि बात क्या है? उसने कहा, मैं वह मुर्गा अपने साथ लिए जा रही हूं जिसकी बांग देने पर इस गांव में सूरज ऊगा करता था। अब यह सूरज दूसरे गांव में ऊगेगा। वह दूसरे गांव पहुंच गई। सुबह सूरज ऊगा–मुर्गे ने बांग दी, सूरज ऊगा, उसने कहा, अब रोते होंगे नासमझ, क्योंकि अब सूरज इस गांव में ऊग रहा है।

उस बूढ़ी औरत के तर्क में कोई खामी है? जरा भी नहीं। उसके मुर्गे की बांग देने से सूरज ऊगता था। और फिर जब दूसरे गांव में भी बांग देने से सूरज ऊगा, तब तो बिलकुल पक्का ही हो गया न, कि अब उस गांव का क्या होगा! मुर्गे ऐसी भ्रांति में नहीं पड़ते, लेकिन मुर्गों के मालिक पड़ जाते हैं। मुर्गे तो सूरज ऊगता है, इसलिए बांग देते हैं, मुर्गों के मालिक समझते हैं कि अपना मुर्गा बांग दे रहा है, इसलिए सूरज ऊग रहा है।

हम सबका चित्त ऐसा है। भविष्य तो आता है अपने से। वह आ ही रहा है, वह हमारे रोके न रुकेगा। कल आते हैं अपने से, वे हमारे रोके न रुकेंगे। हम अपने कृत्य को पूरा कर लें, इतना काफी है, उसके बाहर हमें होने की जरूरत नहीं है।

कृष्ण इतना ही कहते हैं कि तुम्हारा कृत्य पूरा हो–"द एक्ट मस्ट बी टोटल'। "टोटल' का मतलब है कि उसके बाहर करने को कुछ तुम्हें कुछ भी न बचे, तुम पूरा उसे कर लिए और बात खत्म हो गई। इसलिए वे कहते हैं कि तुम परमात्मा पर छोड़ दो फल। परमात्मा पर छोड़ने का मतलब यह नहीं है कि कोई नियंता, कहीं "कंट्रोलर' कोई बैठा है, उस पर तुम छोड़ दो, वह तुम्हारा हिसाब-किताब रखेगा।

परमात्मा पर छोड़ने का कुल इतना ही मतलब है कि तुम कृपा करो, तुम सिर्फ करो और समष्टि से उस करने की प्रतिध्वनि आती ही है। वह आ ही जाएगी। जैसे कि मैं इन पहाड़ों में जोर से चिल्लाऊं और कोई मुझसे कहे कि तुम चिल्लाओ भर, प्रतिध्वनि की चिंता मत करो, पहाड़ प्रतिध्वनि करते ही हैं। तुम पहाड़ों पर छोड़ दो प्रतिध्वनि की बात। तुम

CamScanner

7:12 pm 9 KB/s 54%

महावीर बारह वर्ष चुप रहे, मौन रहे। बहुतों ने कहा कि बोलें। पर नहीं बोले। बारह वर्ष के बाद बोलना शुरू किया। यह बारह वर्ष जब तक उनको स्पष्ट न हो गया कि पूर्ण शून्यता, पूर्ण नीरवता आ गई है, तब तक बोलने का कोई अर्थ नहीं है। क्या बोलना है? किससे बोलना है? जब हम सुन भी नहीं सके हैं उस अंतरिक्ष की वाणी को, तो बोलेंगे क्या?

'अब तुम बोल सकते हो। तुम जिसने वासनाओं को जीत लिया, और आत्म–ज्ञान प्राप्त कर लिया। जिसने अपनी आत्मा को विकसित अवस्था में देख लिया और पहचान लिया। और नीरवता के नाद को सुन लिया। तुम अब उस ज्ञान–मंदिर में जाओ, जो परम–प्रज्ञा का मंदिर है, और जो कुछ तुम्हारे लिए वहां लिखा है, उसे पढ़ो।'

यह तो प्रतीक है। लेकिन जो परिपूर्ण नीरव हो गया, शून्य हो गया, शांत हो गया, उसके सामने जगत का रहस्य खुल जाता है। इस जगत का जो रहस्य–शास्त्र है, इस अस्तित्व के भीतर ही छिपी हुई जो ज्ञान की कुंजियां हैं, अगर इस अस्तित्व की हम कल्पना करें, एक प्रतीति की कि इसके गहन अंतस्तल में कहीं छिपा हुआ एक प्रज्ञा का मंदिर है, तो उसके द्वार में प्रवेश मिल जाता है।

यह सूत्र कहता है, यह भीतर की अंतर–वाणी ही तुमसे कहेगी, नीरवता तुमसे कहेगी कि अब तुम तैयार हो गए हो, और जाओ उस परम–प्रज्ञा के मंदिर में। जो कुछ तुम्हारे लिए वहां लिखा है, उसे पढो।

'नीरवता की वाणी सुनने का अर्थ है, यह समझ जाना कि एकमात्र पथ –निर्देश अपने ही भीतर से प्राप्त होता है।'

जब तक तुम मौन नहीं हो, तब तक तुम्हारी आत्मा तुम्हें पथ–निर्देश न दे सकेगी। तब तक तुम्हें किसी गुरु की शरण लेनी पड़ेगी। वह शरण इसीलिए लेनी पड़ रही है कि तुम अपने ही भीतर छिपी हुई गुरु–वाणी को सुनने में असमर्थ हो। तुम इतने शोरगुल से भरे हो कि वह भीतर की जो बहुत धीमी, बहुत बारीक, सूक्ष्म आवाज है, वह खो जाती है तुम्हारे नाद में, तुम्हारे उपद्रव में, तुम्हारे शोरगुल में, तुम्हारे भीतर के मन की भीड़ में। वह कहीं सुनाई नहीं पड़ती। इसलिए जरूरत है कि बाहर से

CS CamScanner

7:22 pm 0 KB/s VoLTE 4G 53%

facebook

गालिब ने कहा, 'क्या कहते हो, मुझे पहचानते नहीं?

"द्वारपाल ने कहा, 'तुम्हारे कपड़े बता रहे है तुम कौन हो! फटे जूते बता रहे हैं कि तुम कौन हो! शक्ल देखी है कभी आइने में कि तुम कौन है?'

गालिब दुखी होकर वापस लौट आया। मित्रों से उसने कहा, "तुम ठीक ही कहते थे, वहां कपड़े पहचान जाते हैं। ले आओ उधार कपड़े। " मित्रों ने कपड़े लाकर दिये। उधार कपड़े पहनकर गालिब फिर पहुंच गया। वहीं द्वारपाल झुक-झुक कर नमस्कार करने लगा। गालिब बहुत हैरान हुआ कि 'कैसी दुनिया है?

'भीतर गया तो बादशाह ने कहा, बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहा हूं।

गालिब हंसने लगा, कुछ बोला नहीं। जब भोजन लगा दिया गया तो सम्राट खुद भोजन के लिए सामने बैठा--भोजन कराने के लिए। गालिब ने भोजन का कौर बनाया और अपने कोट को खिलाने लगा कि, "ए कोट खा! 'पगड़ी को खिलाने लगा कि 'ले पगड़ी खा! '

सम्राट ने कहा, "आपके भोजन करने की बड़ी अजीब तरकीबें मालूम पड़ती हैं। यह कौन-सी आदत है ' यह आप क्या कर रहे हैं?"

गालिब ने कहा, "जब मैं आया था तो द्वार से ही लौटा दिया गया था। अब कपड़े आये हैं उधार। तो जो आए हैं, उन्हीं को भोजन भी करना चाहिए! "

बाहर की दुनिया में कपड़े चलते हैं। बाहर की दुनिया में कपड़े ही चलते हैं। वहां आत्माओं का चलना बहुत मुश्किल है; क्योंकि बाहर जो भीड़ इकट्ठी है, वह कपड़े वालों की भीड़ है। वहां आत्मा को चलाने की तपश्चर्या हो जाती है।

लेकिन बाहर की दुनिया में जीवन नहीं मिलता। वहां हाथ में कपड़ों की लाश रह जाती है, अकेली।

CamScanner

ध्यान में वेद का
जन्म होता है;
ज्ञान में दब जाता है
और मर जाता है।
ध्यान और ज्ञान का भेद
खूब खयाल में रख लेना।
अगर बनना हो कुछ,
पाना हो कुछ,
पहचानना हो कुछ,
जीवन के राज समझने हों,
तो ध्यान पर जोर देना,
ज्ञान से बचना।

ओशो
दर्शन
समूह

☆ हरि बोलौ हरि बोल, ओशो ☆

CamScanner

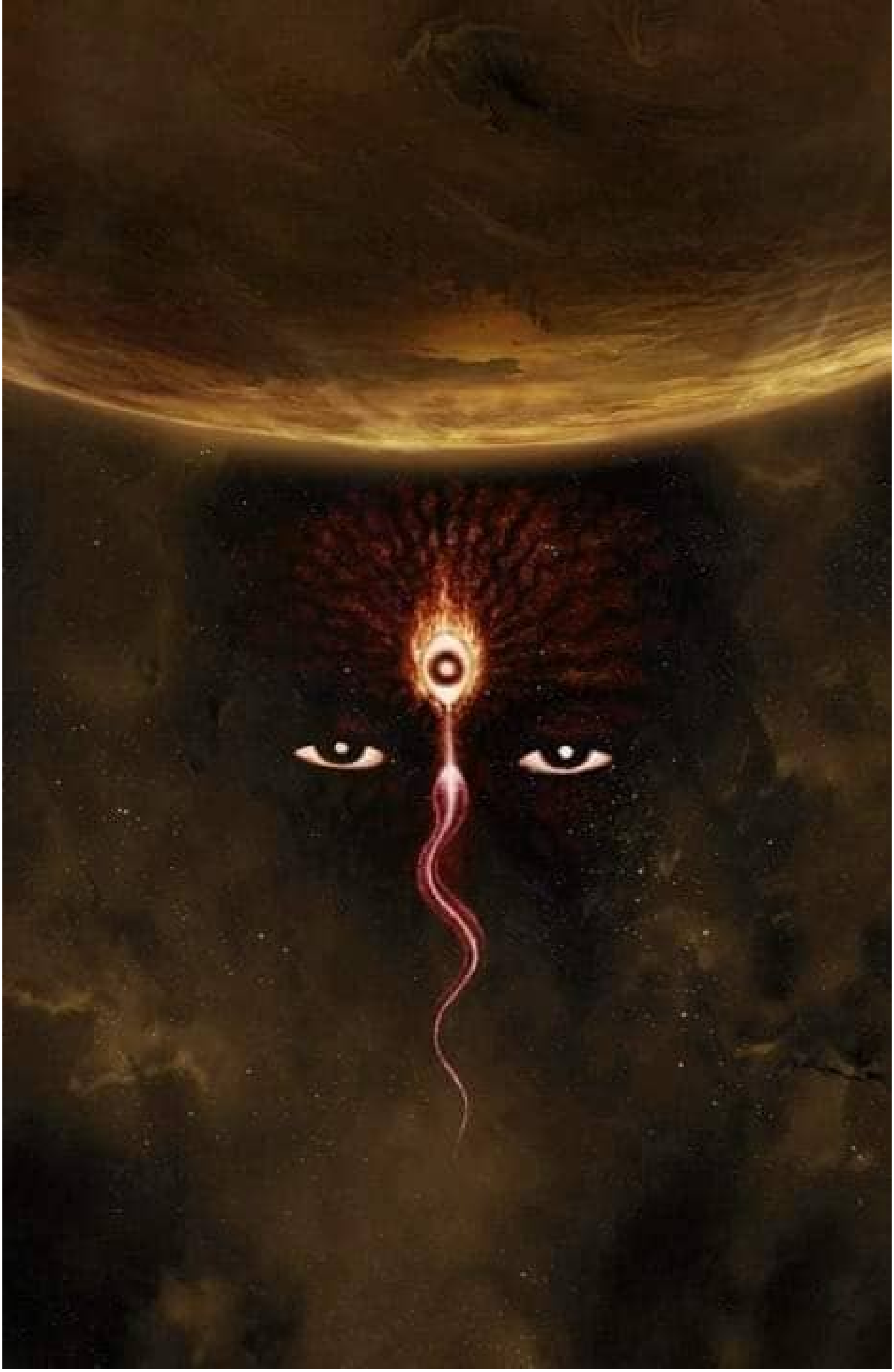

CamScanner

7:40 pm 0 KB/s VoLTE 4G 51%

Osho Thoughts

Ramesh D. Chawda · 8h ·

✨

आनंदित आदमी वह है,
जो अपेक्षा के बिना रहता है।
जो बस रहता है।
वह यह नहीं कहता है,
की चीज़ें ऐसी होनी चाहिए।"

जो जानता है
पूरी तरह से सतर्क, की कैसे जिया जाय।

जीवन में वह जागरूक है, मृत्यु
के बारे में उसे पता है। खुशी में
वह जागरूक है, दुःख के बारेमे
उसे पता है। सफलता में वह जागरूक है,असफलता की उसे
जानकारी है।

उसके पास गुप्त कुंजी है.
वह गुप्त कुंजी है,
जागरूकता।

ओशो

✨✨✨

CamScanner

7:34 pm 10 KB/s VoLTE 4G 52%

Muhabai Makvana · 5h ·

जीवन में तो कुछ मिला नहीं और अब मृत्यु द्वार पर खड़ी है। क्या मृत्यु में कुछ मिलेगा ?

कृष्णमुरारी!
🔴जीवन में नहीं मिला तो मृत्यु में कैसे मिलेगा? मृत्यु तो जीवन की ही पराकाशठा है। मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। स्मरण रखना। दोहराऊं फिर: जीवन मृत्यु में समाप्त नहीं होता, पूर्ण होता है। मृत्यु जीवन का चरम उत्कर्ष है, अंतिम शिखर है। तो जो जीवन में नहीं पाया, उसे मृत्यु में पाने का कोई उपाय नहीं है। जो जीवन में पाया है, वही निखर कर, निचुड़ कर मृत्यु में पाया जाता है। मृत्यु जीवन भर का निचोड़ है। जैसे जीवन में फूल ही फूल थे, तो मृत्यु इत्र है--उन सारे फूलों का इत्र। जैसे एक बूंद में समा गई सारी सुगंध।
मृत्यु में बहुत कुछ मिलता है, लेकिन तभी जब जीवन भर फूलों की खेती की हो। जीवन भर कांटे बोए, तो यह आशा न रखना कि मृत्यु में अचानक फूल खिल जाएंगे। जीवन भर कूड़ा-कर्कट इकट्ठा किया, तो मृत्यु के पास ऐसा कोई जादू नहीं है कि उस कूड़ा-कर्कट को हीरे-जवाहरातों में बदल दे। लेकिन तुम्हारे पंडित-पुरोहित तुम्हें यह धोखा देते रहे हैं सदियों से। वे जानते हैं कि जीवन तो तुम्हारा खाली जा रहा है, तो तुम्हें आश्वासन देते रहते हैं: घबड़ाओ मत, मरते वक्त नाम ले लेना परमात्मा का, सब ठीक हो जाएगा। कि चले जाना काशी, काशी-करवट ले लेना, सब ठीक हो जाएगा। काशी जिसने करवट ली, वह स्वर्ग गया। कि मरते वक्त दूसरे तुम्हारे मुंह में गंगाजल डाल देंगे, और तुम स्वर्ग चले जाओगे। कि मरते वक्त दूसरे तुम्हारे कान में नमोकार मंत्र पढ़ देंगे, गायत्री मंत्र पढ़ देंगे, कुरान की आयतें दोहरा देंगे, और तुम स्वर्ग चले जाओगे।
ऐसी सस्ती बातों में न पड़ना। इतनी बाजारू बातों में मत पड़ना। इस तरह के लोगों ने ही धर्म को दो कौड़ी का कर दिया; उसकी गरिमा खो गई; उसकी महत्ता खो गई; उसकी महिमा खो गई।
मैं यह नहीं कह सकता हूं कि जो तुमने जीवन में नहीं पाया है, वह तुम मृत्यु में पा सकोगे। और अभी कृशणमुरारी, जिंदा हो। अभी मरे तो नहीं। अभी प्रश्न पूछ सकते हो तो उत्तर भी खोज सकते हो। अभी बहुत देर नहीं हो गई है। अभी सोच सकते हो, विचार सकते हो, तो निर्विचार भी हो सकते हो।

CamScanner

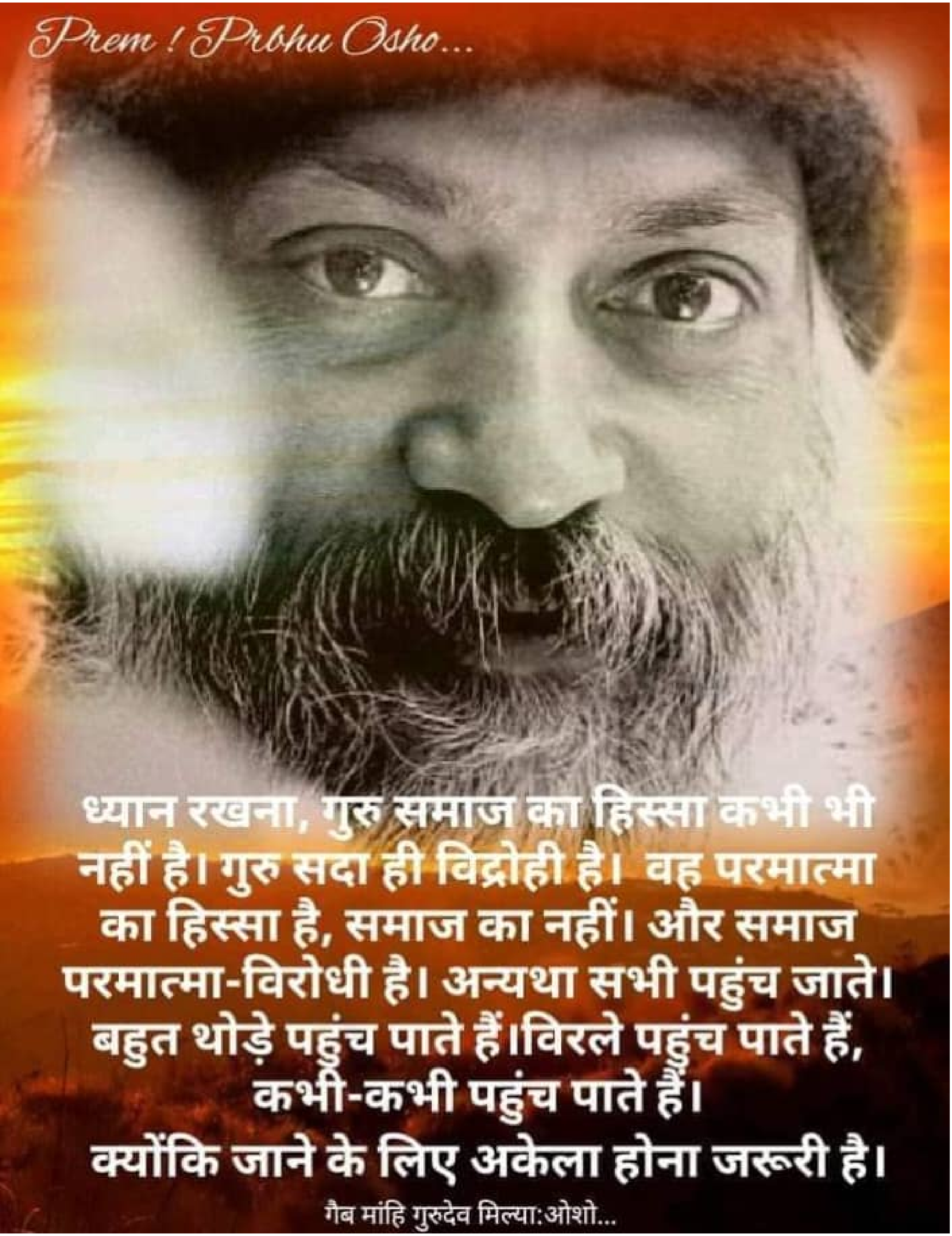
Prem ! Prbhu Osho...
ध्यान रखना, गुरु समाज का हिस्सा कभी भी
नहीं है। गुरु सदा ही विद्रोही है। वह परमात्मा
का हिस्सा है, समाज का नहीं। और समाज
परमात्मा-विरोधी है। अन्यथा सभी पहुंच जाते।
बहुत थोड़े पहुंच पाते हैं।विरले पहुंच पाते हैं,
कभी-कभी पहुंच पाते हैं।
क्योंकि जाने के लिए अकेला होना जरूरी है।
गैब मांहि गुरुदेव मिल्या:ओशो...

CamScanner

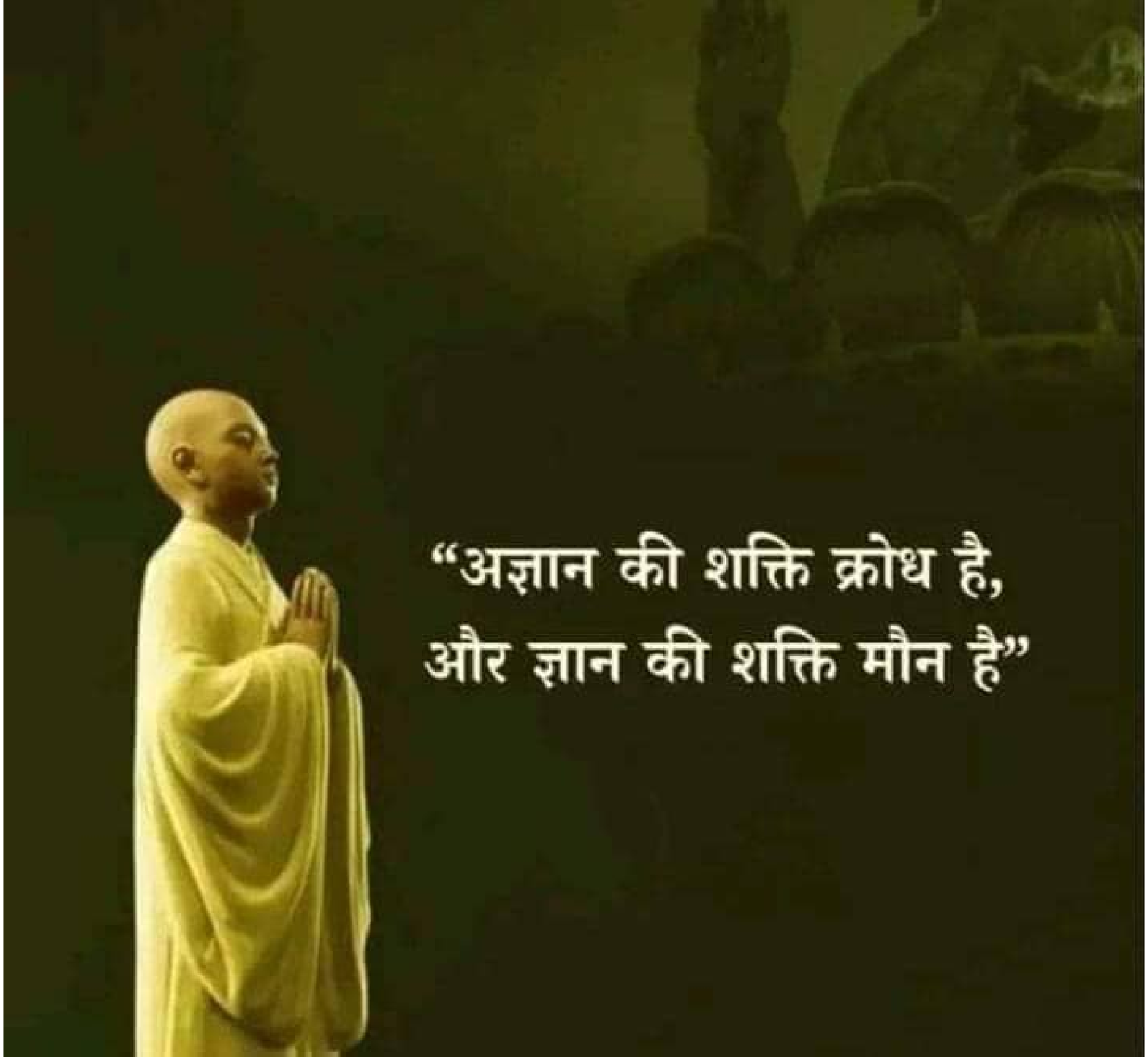

CamScanner

खुद देवता भी उत्सुक हैं उस व्यक्ति को
सहारा देने को, जो अकेला खड़ा हो गया!

जो साथ मांगता है,
उसे तो साथ मिलता नहीं।
नाम मात्र को लोग साथी हो जाते हैं,
साथ मिलता नहीं।
असल में मांग से कोई साथ पा ही नहीं
सकता है। लेकिन जो मांगता ही नहीं
साथ, जो मिले हुए साथ को भी इनकार
कर देता है, उसके लिए सारे जगत की
शुभ शक्तियां आतुर हो जाती हैं साथ
देने को। ~ ओशो, महावीर मेरी दृष्टि में

CS CamScanner

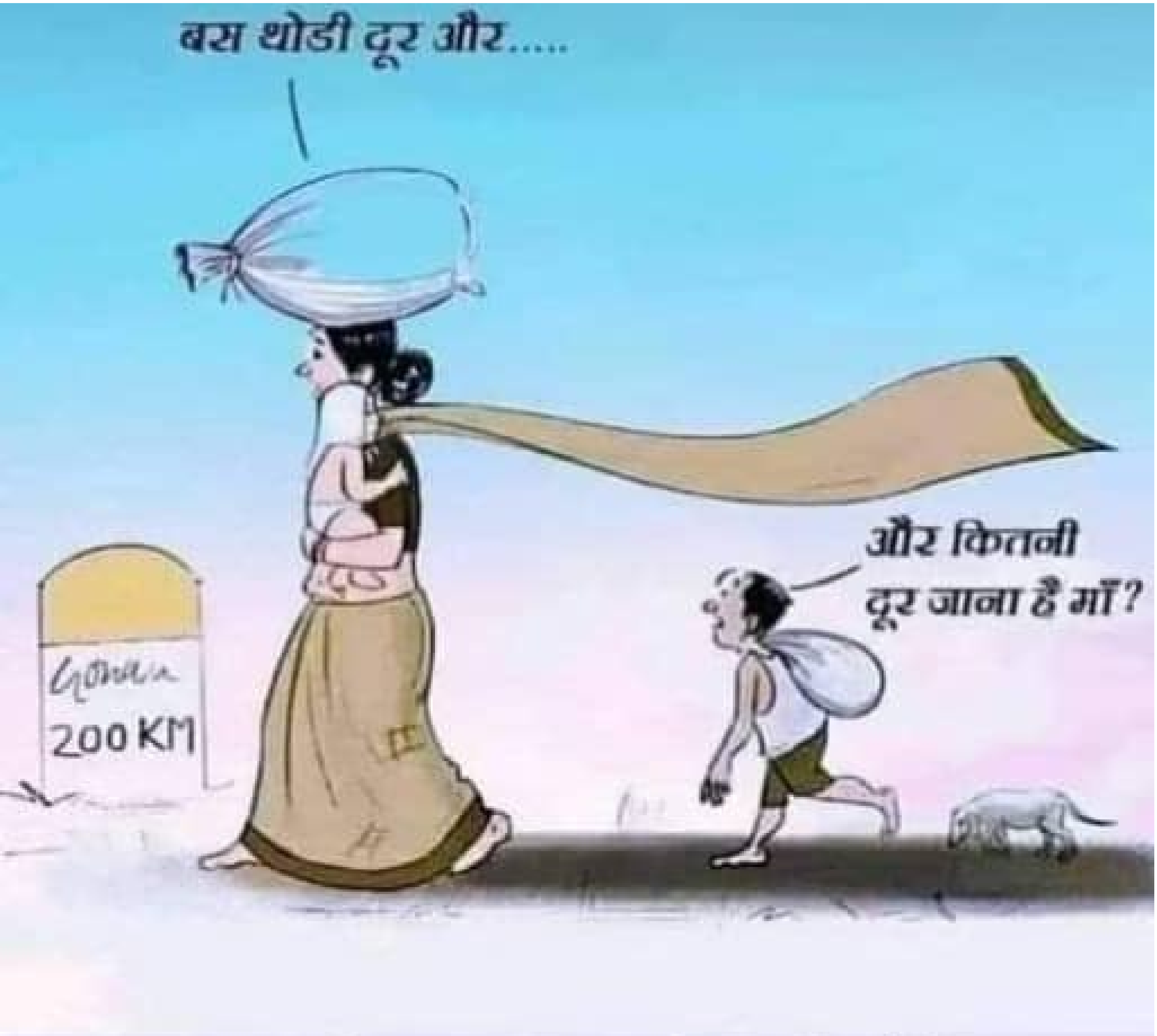

था तुझे गुरूर खुद के लंबे होने
का ऐ सड़क,
गरीब के हौसले ने तुझे पैदल
ही नाप दिया.

CS CamScanner

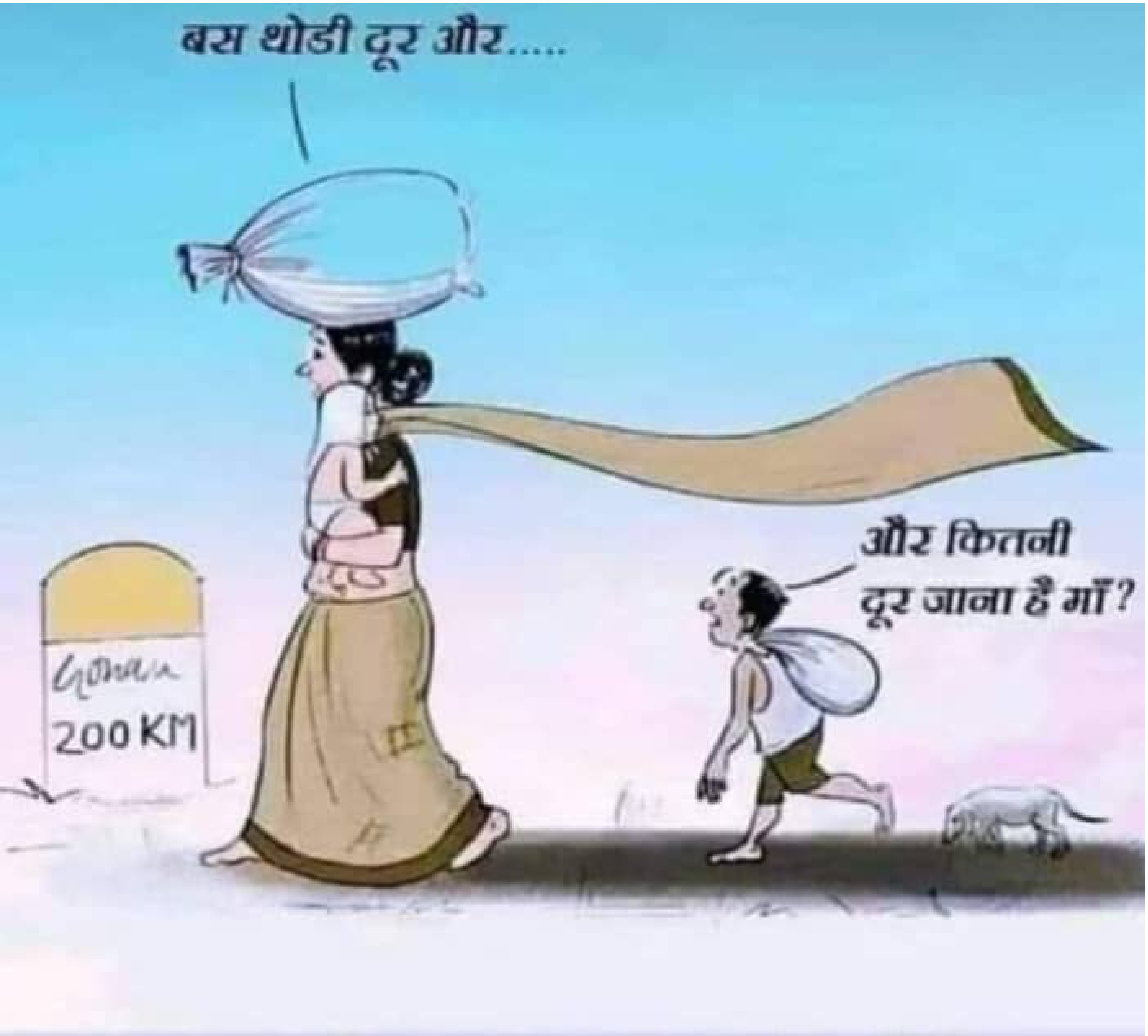

था तुझे गुरूर खुद के लंबे होने का ऐ सड़क,
गरीब के हौसले ने तुझे पैदल ही नाप दिया.

CamScanner

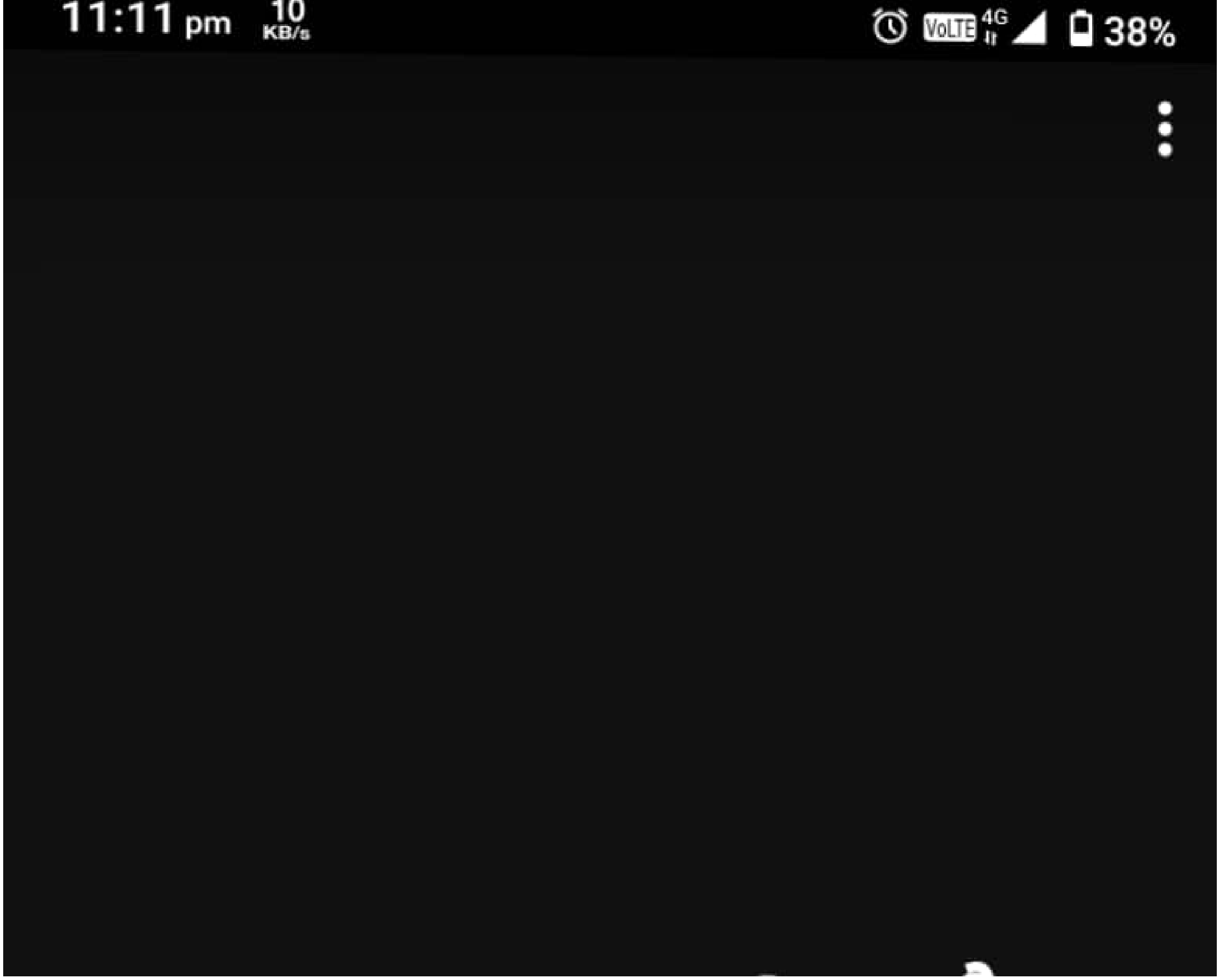

CamScanner

ओ शो

पद घूंघरू बांध--
(प्रवचन-01)

कृष्ण को हमने पूर्णावतार कहा है...सब रंग हैं। इस जगत की कोई चीज कृष्ण को छोड़नी नहीं पड़ी है। सभी को आत्मसात कर लिया है। कृष्ण त्यागी नहीं हैं। कृष्ण भोगी नहीं हैं। कृष्ण ऐसे त्यागी हैं जो भोगी हैं। कृष्ण ऐसे भोगी हैं जो त्यागी हैं। कृष्ण हिमालय नहीं भाग गए हैं, बाजार में हैं। युद्ध के मैदान पर हैं। और फिर भी कृष्ण के हृदय में हिमालय है। वही एकांत! वही शांति! अपूर्व सन्नाटा! कृष्ण अदभुत अद्वैत हैं। चुना नहीं है कृष्ण ने कुछ। सभी रंगों को स्वीकार किया है, क्योंकि सभी रंग परमात्मा के हैं।

कृष्ण सेतु हैं--संसार में और परमात्मा में। कृष्ण में जीवन का निषेध नहीं है--जीवन का परिपूर्ण स्वीकार है; अहोभाव से स्वीकार है।

जन्माष्टमी
की
हार्दिक शुभकामना

CamScanner

यह वास्तविकता है कि जो तुम्हें मिला है उसकी तुम्हें दो कौड़ी की कीमत नहीं है। जो खो गया है, उसके लिए तुम रोते हो। जो पास नहीं उसका अभाव तुम्हें खलता है। जिंदगी तुम्हें मिली है और तुने परमात्मा को धन्यवाद नहीं दिया। हालांकि जब तुम्हारी मौत तुम्हारे द्वार पर दस्तक देगी, तब तुम कहोगे: है प्रभु, बस, धड़ी दो धड़ी और जी लेने दे। चौबीस धंटे और दे दे!

काश तुम समझदार होते हो तो तुम्हें अभी समझ में आ सकता है। उतनी समझ के लिये समाधि की प्रज्ञा चाहिये। फिर मछली की तरह सागर से बहार निकलने की जरूरत नहीं, सागर में ही सागर का धन्यवाद होगा।

ओशो – रामदुवारे जो मरे

CamScanner

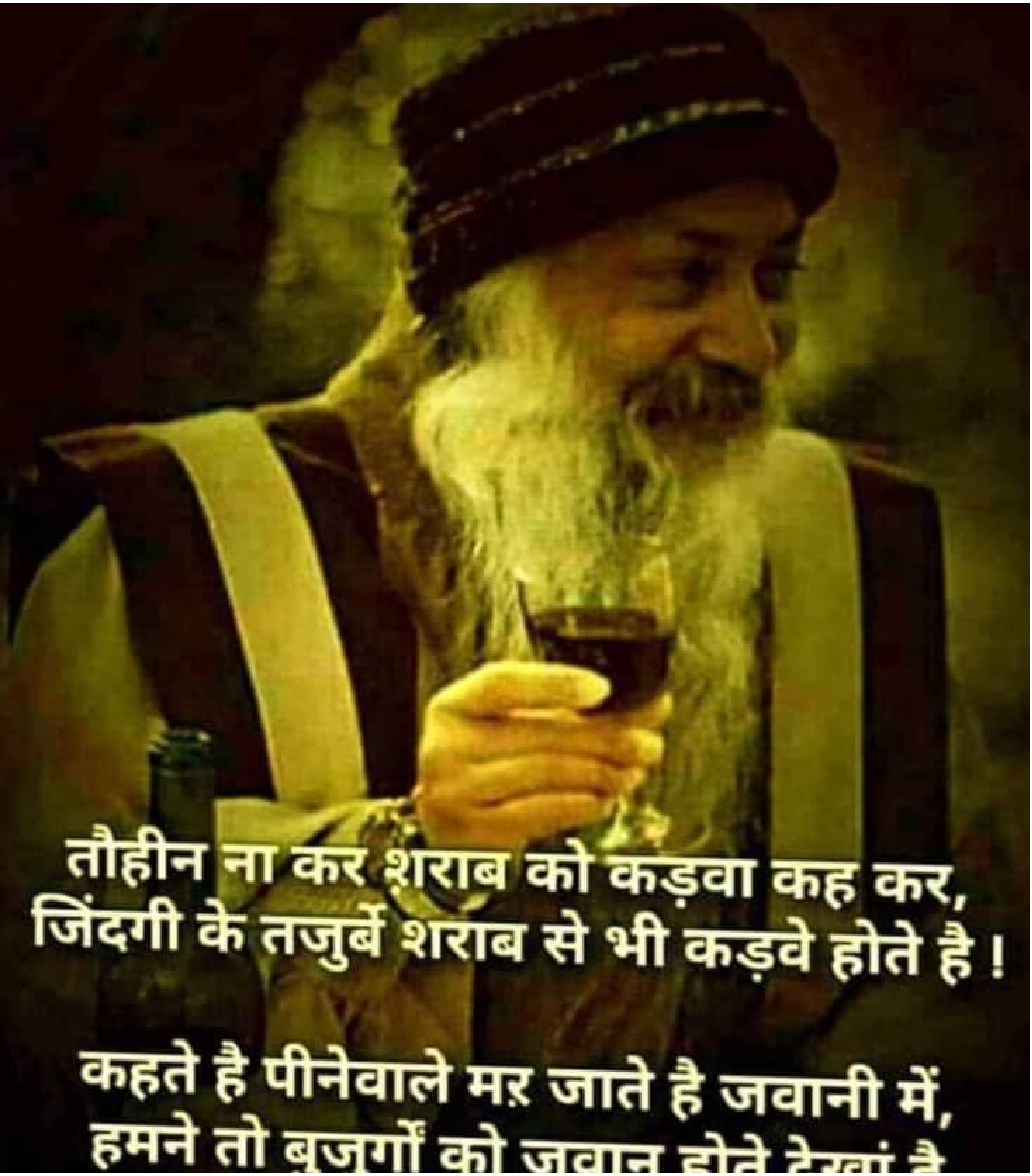
तौहीन ना कर शराब को कड़वा कह कर,
जिंदगी के तजुर्बे शराब से भी कड़वे होते है !
कहते है पीनेवाले मर जाते है जवानी में,
हमने तो बुजुर्गों को जवान होते देखा है

CamScanner

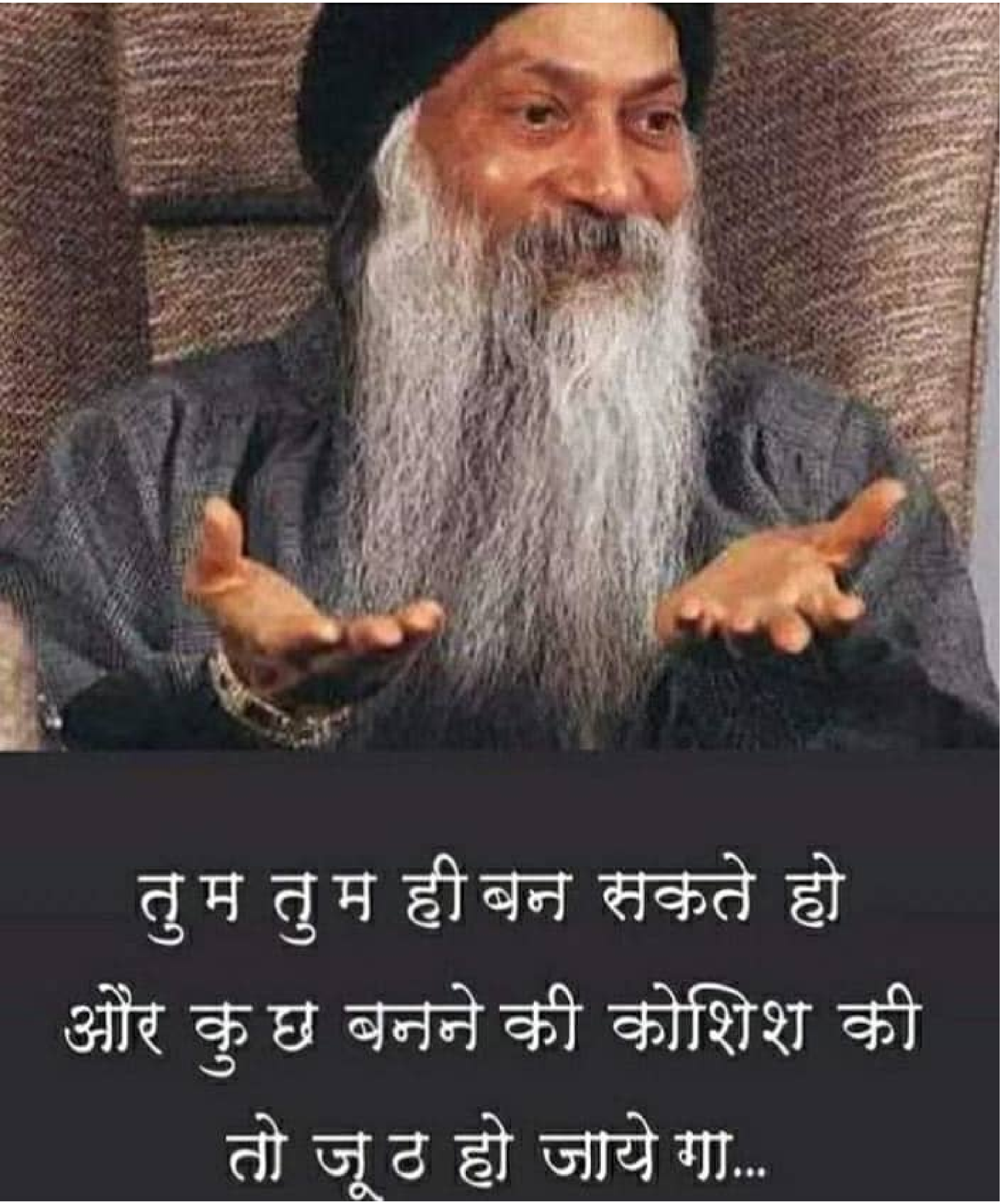

CS CamScanner

11:03 pm 8 KB/s VoLTE 4G 39%

Like Comment Share

ओशो रहस्यदर्शी

Naye bharat ke khoj · 12h

सूफियों में एक कहावत है कि जब फकीर सच में ही प्रार्थना को उपलब्ध होता है तो वह एक भी शब्द का उपयोग नहीं करता--न बाहर, न भीतर। वह सिर्फ खड़ा हो जाता है--चुप।

बायजीद से किसी ने पूछा कि तुम्हारी प्रार्थना क्या है? क्योंकि हमने कभी तुम्हारे मुंह से शब्द निकलते नहीं देखे। तुम भीतर क्या गुनगुनाते हो?

बायजीद ने कहा, बात ही मत करो गुनगुनाने की। उससे छिपा क्या है? उसे बताना क्या है? उसे समझाना क्या है? उससे कहना क्या है? मेरी हालत उस फकीर जैसी है, जो एक बार सम्राट के सामने खड़ा हो गया था--नग्न, फटे कपड़े, सूखी देह, पेट पीठ से लगा, बस आंखों में टिमटिमाता जीवन। सम्राट ने उससे पूछा कि कहो, क्या चाहते हो? उसने कहा, अगर मुझे देख कर तुम्हें समझ में नहीं आता कि क्या चाहता हूं, तो मेरे कहने से क्या खाक समझ में आएगा! मुझे देखो, इतना काफी है। तो बायजीद ने कहा कि सम्राट भला न समझ पाया हो, लेकिन वह आखिरी सम्राट तो समझ ही लेगा। मैं सिर्फ उसके द्वार पर खड़ा हो जाता हूं।

वह मस्जिद के सामने जाकर खड़ा हो जाता था। घंटों खड़ा रहता था, चला आता था। कभी एक शब्द न कहा, भीतर भी न उठाया। प्रार्थना का शब्दों से कुछ लेना-देना नहीं। प्रार्थना, उसके सामने, तुम जैसे हो वैसे ही खड़े हो जाने का नाम है। तुम जैसे हो अपनी निपट निजता में, नग्नता में, बिना कुछ छिपाए उसके सामने प्रकट हो जाने का नाम है। प्रार्थना एक प्रागटय है अपने भाव का।

ओशो 🌞 🌼

CamScanner

11:01 pm 9 KB/s VoLTE 4G 39%

Mandira Sinh Thakuri · 4m ·

भीखा के वचन–

जग के करम बहुत कठिनाई, तातें भरमि-भरमि जहंड़ाई।

ज्ञानवंत अज्ञान होत है, बूढ़े करत लरिकाई।।

जग के करम बहुत कठिनाई! परमात्मा को पाना कठिन नहीं है, लेकिन जगत ऐसे संस्कार डालता है लोगों के चित्त पर कि वे संस्कार बाधा बन जाते हैं। जगत ऐसे क्रियाकांड सिखा देता है कि उन क्रियाकांडों के कारण ही दीवालें खड़ी हो जाती हैं। जगत ऐसी शिक्षाएं देता है कि उन शिक्षाओं के कारण आदमी अंधा हो जाता है।

परमात्मा को न देख पाने में हिंदुओं का हाथ है, मुसलमानों का हाथ है, ईसाइयों का, जैनों का, बौद्धों का, शास्त्रों का, पंडितों का , संप्रदायों का। ईश्वर को तो वही देख सकता है जो संप्रदाय-मुक्त हो; जो पक्षपात-मुक्त हो; जिसने शास्त्र को अलग हटाकर रख दिया हो। जिसकी आंख पर शास्त्रों के चश्मे चढ़े हैं वह परमात्मा को नहीं देख सकता। परमात्मा को देखने के लिए निर्विचार आंख चाहिए–और शास्त्र तो विचार और विचार और विचार.. . .इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। शास्त्रों में विचार हैं और क्रियाकांड हैं–ऐसा करो तो परमात्मा मिलेगा, ऐसा सोचो तो परमात्मा मिलेगा। और मजा यह है कि परमात्मा मिला ही हुआ है। कुछ न सोचो, कुछ न करो–अभी मिल जाए! घड़ी-भर को भी शून्य होकर बैठ जाओ, कुछ न सोचो, कुछ न करो–अभी मिल जाए।

झेन फकीर कहते हैं : गुपचुप बैठे, बिना कुछ करते, वसंत आता है और घास अपने-आप उगने लगती है। गुपचुप बैठे..."सिटिंग सायलेंटली"। न कुछ करते..."डूइंग नथिंग"। वसंत आता है..."द स्प्रिंग कम्स"। और घास अपने से बढ़ने लगती है..."एंड द ग्रास ग्रोस बाय इटसेल्फ"। परमात्मा तो अभी मिले, अभी मिले, यहीं मिले! क्षण-भर भी रुकने की कोई जरूर नहीं है; लेकिन नहीं मिलता तो हम सोचते हैं बहुत कठिन है परमात्मा को पाना।

परमात्मा को पाना कठिन नहीं है। समाज ने जो जाल तुम्हारे चारों तरफ

CamScanner

OSHO

आत्मा भी कहीं योगी होता है?
योग तो शरीर पर ही समाप्त हो जाता है।
ध्यान मन पर समाप्त हो जाता है। आत्मा न
तो योगी होता है न ध्यानी होता है। आत्मा तो
वह है जो योग और ध्यान के पार साक्षी है;
मात्र साक्षी है, कर्ता नहीं। योग तो क्रिया है।
योगी होने का अर्थ है शरीर से बंधे होना।
ध्यानी होने का अर्थ है मन से बंधे होना। जो
ध्यान और योग दोनों के पार चला जाता है,
वही आत्मा को जान पाता है।

CamScanner

OSHO FRAGRANCE FRIENDS

Osho Nirvaan · 2h ·

एक बुद्ध
एक कृष्ण
एक मिस्टिक
का नाम लो,

जिस पर मेरी किताब न हो!
कोई एक महान पुस्तक बताओ, जिस पर मेरे सम्वाद न हो!
एक सूफी, एक संत,कबीर,नानक,एक दार्शनिक या एक वैज्ञानिक बताओ जिस पर मैंने न कहा हो!
कोई राधा, कोई सीता, कोई मीरा, कोई राबिया, कोई लल्ला, कोई मल्ली बता दो!
एक मनु, एक मार्क्स, एक लेनिन, एक फ्रायड, एक जुंग, एक एडलर बता दो!
मैं लगातार अस्तित्वगत चेतना और स्त्री-पुरुष के समग्र नाते पर बोला!
ध्यान-प्रेम-भक्ति और योग पर मैंने निरंतर कहा!
एक सच्चा कलाकार, एक कवि, एक लेखक नहीं जिस पर नहीं बोला!
लेकिन मूर्खो को सुनाई दिया सिर्फ 'सम्भोग'
वह भी वैसा 'सम्भोग' यानी 'कुभोग' जिससे वे जन्मे हैं, मगर विश्व-मनीषी सदा से मेरे साथ है, बुद्धों के साथ है, उन्हें सच्चाई और समझ से जीने के लिए अब मेरी जरुरत नहीं है, उन्हें अपना दीया स्वयं जलाना आता है। मैं राजनेताओं की भांति मूढ़ बहुमत को प्रसन्न करने नहीं आया हूँ! मैं निर्दोष, साहसी और सच्चे लोगो के लिए आया हूँ। सत्य और चेतनापथ! चालाक और मूढ़ लोगों के लिए नहीं है! उन्हें नरक चाहिए, वे उसी के पात्र है !!

🌱 ओशो🌱

CamScanner

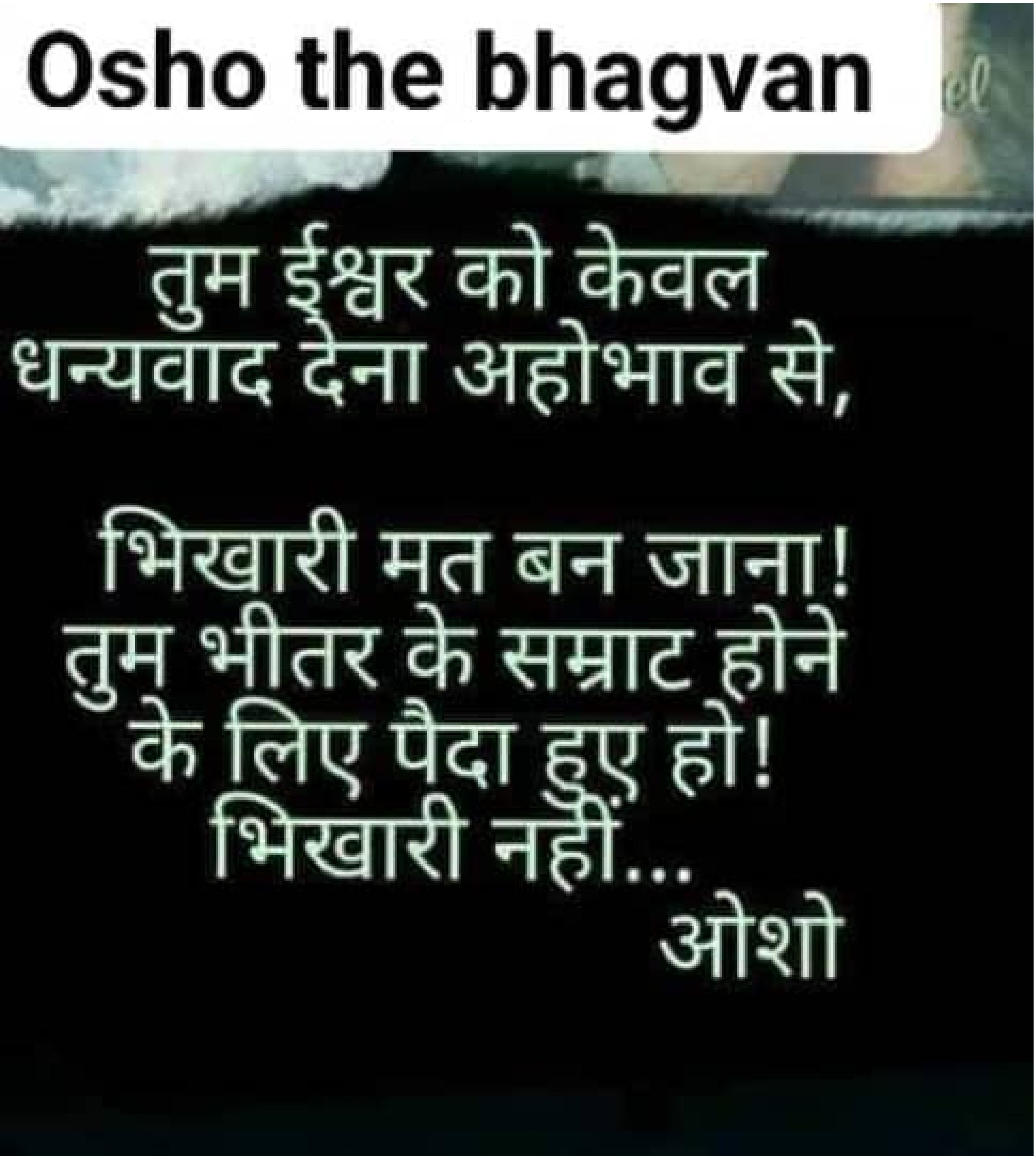
Osho the bhagvan
तुम ईश्वर को केवल
धन्यवाद देना अहोभाव से,
भिखारी मत बन जाना!
तुम भीतर के सम्राट होने
के लिए पैदा हुए हो!
भिखारी नहीं...
ओशो

CamScanner

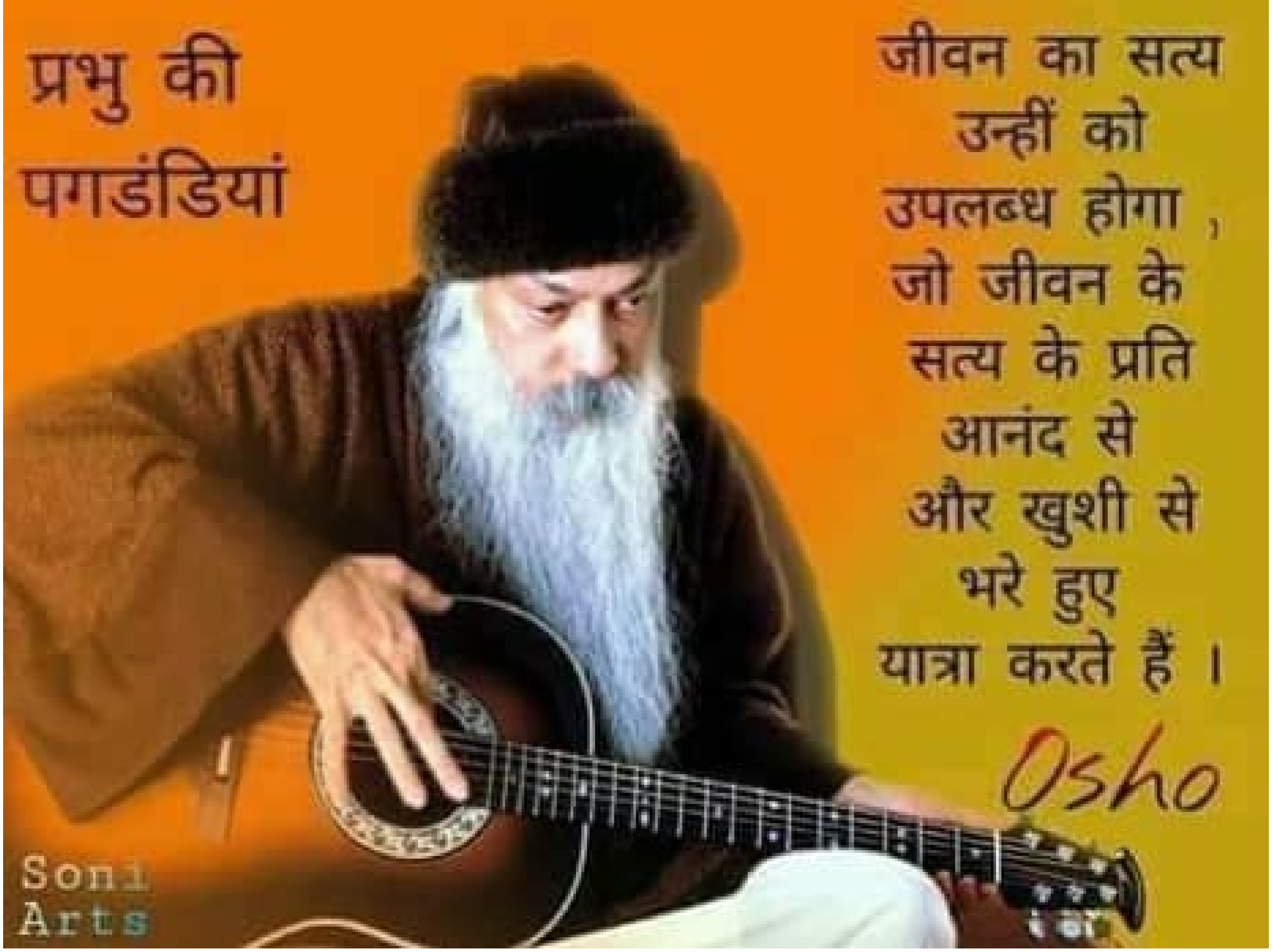
प्रभु की
पगडंडियां
जीवन का सत्य
उन्हीं को
उपलब्ध होगा,
जो जीवन के
सत्य के प्रति
आनंद से
और खुशी से
भरे हुए
यात्रा करते हैं।
Osho
Soni
Arts

CamScanner

6:36 am 0 KB/s 4G 100%

तो बुद्ध ने पूछा: वीणा कैसी होनी चाहिए कि संगीत पैदा हो?

तो श्रोण ने कहा: तार कसना बड़ी कला की बात है। तार ऐसी स्थिति में होने चाहिए कि न तो ज्यादा कसे, न ज्यादा ढीले। एक ऐसी स्थिति भी है तारों की, जब हम कह सकते हैं कि अब न तो ज्यादा कसे हैं, न ज्यादा ढीले हैं; न कसे हैं, न ढीले हैं—ठीक मध्य में, समतुल। और जब वीणा के तार ठीक मध्य में होते हैं, तभी महासंगीत पैदा होता है।

तो बुद्ध ने कहा: यही मैं निवेदन करने आया हूं कि जो नियम वीणा के संबंध में सही है, वही नियम जीवन के संबंध में भी सही है। जीवन की वीणा में भी संगीत तभी पैदा होता है, जब तार न तो बहुत कसे हों, न ढीले हों।

देख, तेरे तार बहुत ढीले थे। तब संगीत पैदा नहीं हुआ। और अब तूने तार बहुत कस लिए, अब तार टूटे जा रहे हैं, वीणा को फांसी लगी जा रही है, अब भी संगीत पैदा नहीं हो रहा है। तू एक मूढ़ता से दूसरी मूढ़ता पर चला गया।

और मन यही करता है। ज्यादा भोजन कर लिया तो मन उपवास करने का विचार करने लगता है कि चलो उपवास कर लें, कि उरली—कांचन चले जाएं। फिर दो—चार दिन उपवास कर लिया तो अब मन विचार करने लगता है कि क्या—क्या भोजन करें। भोजन ही भोजन के विचार आने लगते हैं। यही मन की अवस्था है। एक मूढ़ता से दूसरी मूढ़ता पर छलांग लगा लेता है; मगर बीच में कभी नहीं रुकता। तो या तो तुम्हें भोजन—भट्ट मिलेंगे या उपवास करने वाले लोग मिलेंगे; लेकिन सम्यक भोजन करने वाले लोग मुश्किल से मिलेंगे। सम्यक भोजन का अर्थ है: न तो जरा ज्यादा, न जरा कम।

वही कला है। वही जीवन की वीणा से संगीत को उत्पन्न करने का शास्त्र है। और यही जीवन के समस्त पहलुओं पर लागू है।

या तो कुछ लोग धन के पीछे दीवाने होते हैं, तो धन ही धन उनके मन में होता है। फिर एक दिन थक जाते हैं, तो धन छोड़ कर भागने लगते हैं; फिर त्याग ही त्याग उनके मन में होता है। ये दोनों ही बातें अतियां हैं।

CamScanner

6:35 am 166 KB/s 100%

एक राजकुमार बुद्ध के पास दीक्षित हुआ। श्रोण उसका नाम था। वह भोगी था, महाभोगी था। उसके भोग की कथाएं सारे देश में प्रचलित थीं। बुद्ध तक भी उसकी कथाएं बहुत बार पहुंची थीं। उसकी भोग ही भोग की जिंदगी थी। रात भर जागता था—नाच—गाना, शराब; और दिन भर सोता था। सीढ़ियां भी चढ़ता था तो नग्न स्त्रियां सीढ़ियों के दोनों तरफ खड़ी कर रखी थीं, रेलिंग बना रखी थी उसने नग्न स्त्रियों की। उनके कंधों पर हाथ रख कर वह ऊपर जाता। वह कभी महल के बाहर नहीं निकला था, गद्दियों से नीचे नहीं चला था। फूलों में ही जीया था; कांटों का उसे पता ही नहीं था।

फिर उसने बुद्ध को सुना। और लोग चमत्कृत हुए यही देख कर कि वह बुद्ध को सुनने आया पहले तो। और न केवल सुना, उसने तो खड़े होकर बुद्ध से प्रार्थना की कि मुझे दीक्षित करें; मैं भिक्षु होना चाहता हूं। लोगों को तो भरोसा ही नहीं आया। कहीं ऐसा तो नहीं कि ज्यादा पी गया है, कि अभी तक रात का खुमार नहीं उतरा है! उसके संगी—साथियों ने भी कहा कि आप क्या कह रहे हैं; सोच—समझ कर कह रहे हैं?

उसने कहा: मैं थक गया हूं, ऊब गया; देख लिया सब भोग। मैं दीक्षित होना चाहता हूं।

वह लौटा नहीं महल। वह संन्यस्त हो गया। बुद्ध के भिक्षुओं ने बुद्ध से पूछा कि यह बड़ी चमत्कार की घटना है। आपने क्या किया? क्या जादू किया इस आदमी पर?

बुद्ध ने कहा: मैंने कुछ नहीं किया। यह है अतिवादी। यह एक अति से दूसरी अति पर डोल गया है, पेंडुलम जैसे डोलता है। यह बड़ा खतरनाक आदमी है। एक अति से थक गया, अब दूसरी अति पर चला।

और उन्होंने कहा: कुछ देर देखो तब तुम समझोगे। पंद्रह दिन में सबको जाहिर हो गया। जो आदमी कभी गद्दियों से नीचे नहीं चला था, वह आदमी कांटों में चलने लगा। दूसरे भिक्षु तो पगडंडी पर चलते, बने हुए रास्ते पर चलते; वह कांटों में चलता। उसने पैर लहूलुहान कर लिए; पैरों में घाव हो गए। दूसरे भिक्षु तो धूप होती तो वृक्ष की छाया में बैठते; वह ठेठ धूप में ही खड़ा रहता। सर्दी होती तो दूसरे भिक्षु धूप में बैठते; वह

CamScanner

आप अकेले में कभी चैन में नहीं होते।
हर आदमी तलाश कर रहा है साथी की,
मित्र की, क्लब की, सभा की, समाज की।
हर आदमी खोज कर रहा है दूसरे की,
अकेला होने को कोई भी राजी नहीं।
अपने साथ किसी को भी चैन नहीं मिलता।
और बड़े मजेदार हैं हम लोग। हम खुद अपने साथ चैन नहीं पाते और सोचते है, दूसरे हमारे साथ चैन पायें। हम खुद अपने को अकेले में बर्दाश्त नहीं कर पाते और हम सोचते हैं, दूसरे न केवल हमें बर्दाश्त करें, बल्कि अहोभाव मानें। हम खुद अपने साथ रहने को राजी नहीं हैं, लेकिन हम चाहते हैं दूसरे समझें कि हमारा साथ उनके लिए स्वर्ग है।

CamScanner

पागल से कम में परमात्मा मिलता भी नही।
उतनी हिम्मत तो चाहिए ही।
तोड़कर सारा तर्क जाल,छोड़ कर सारी बुद्धि,
मिटा कर सारा झूठा दिखावा,डूब कर सब
चतुराई-चालाकी, जो चलते है वह ही
पहुचते है। उन्ही को पागल कहते है,
लोग दीवाने कहते है।

OSHO

CamScanner

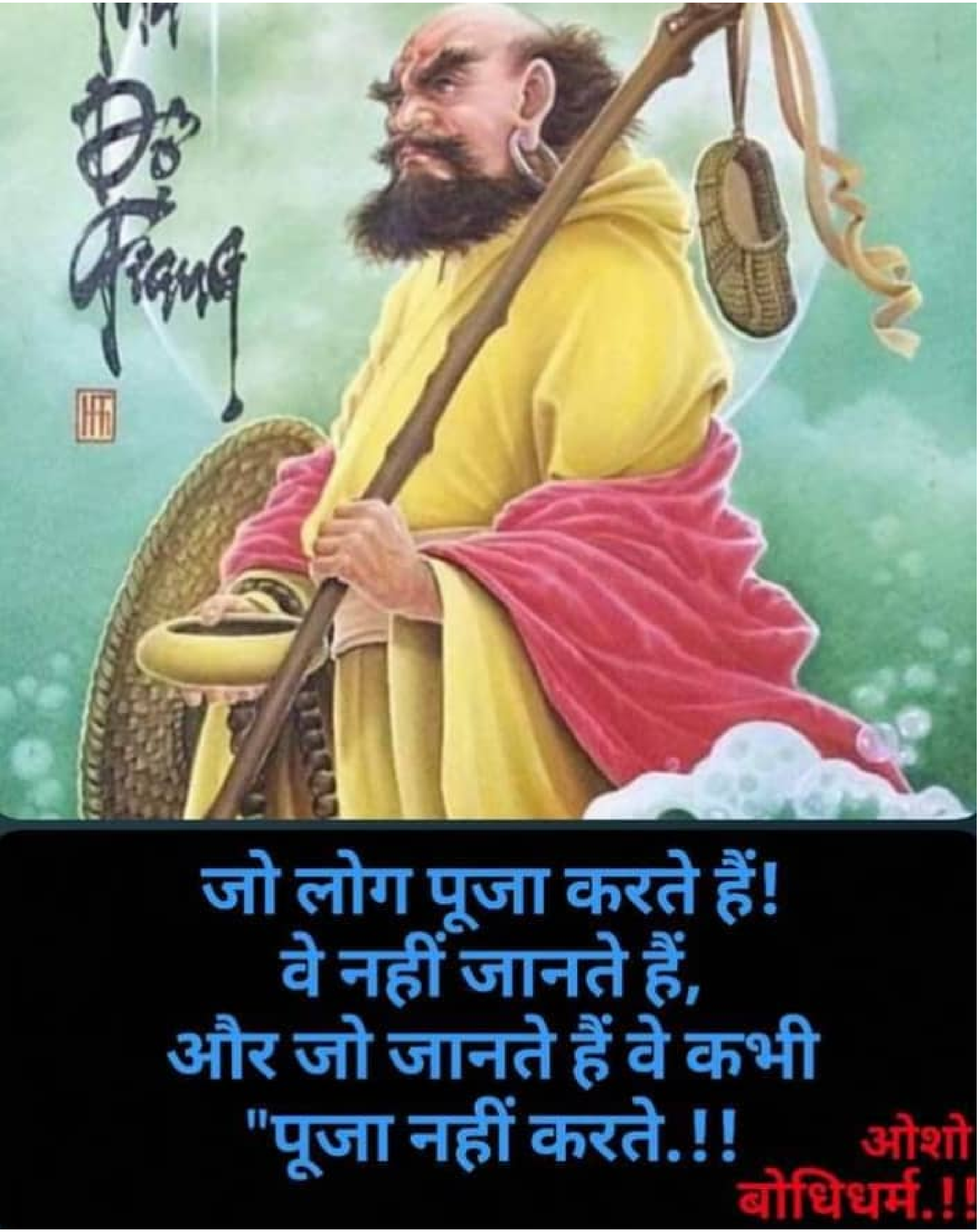

CamScanner

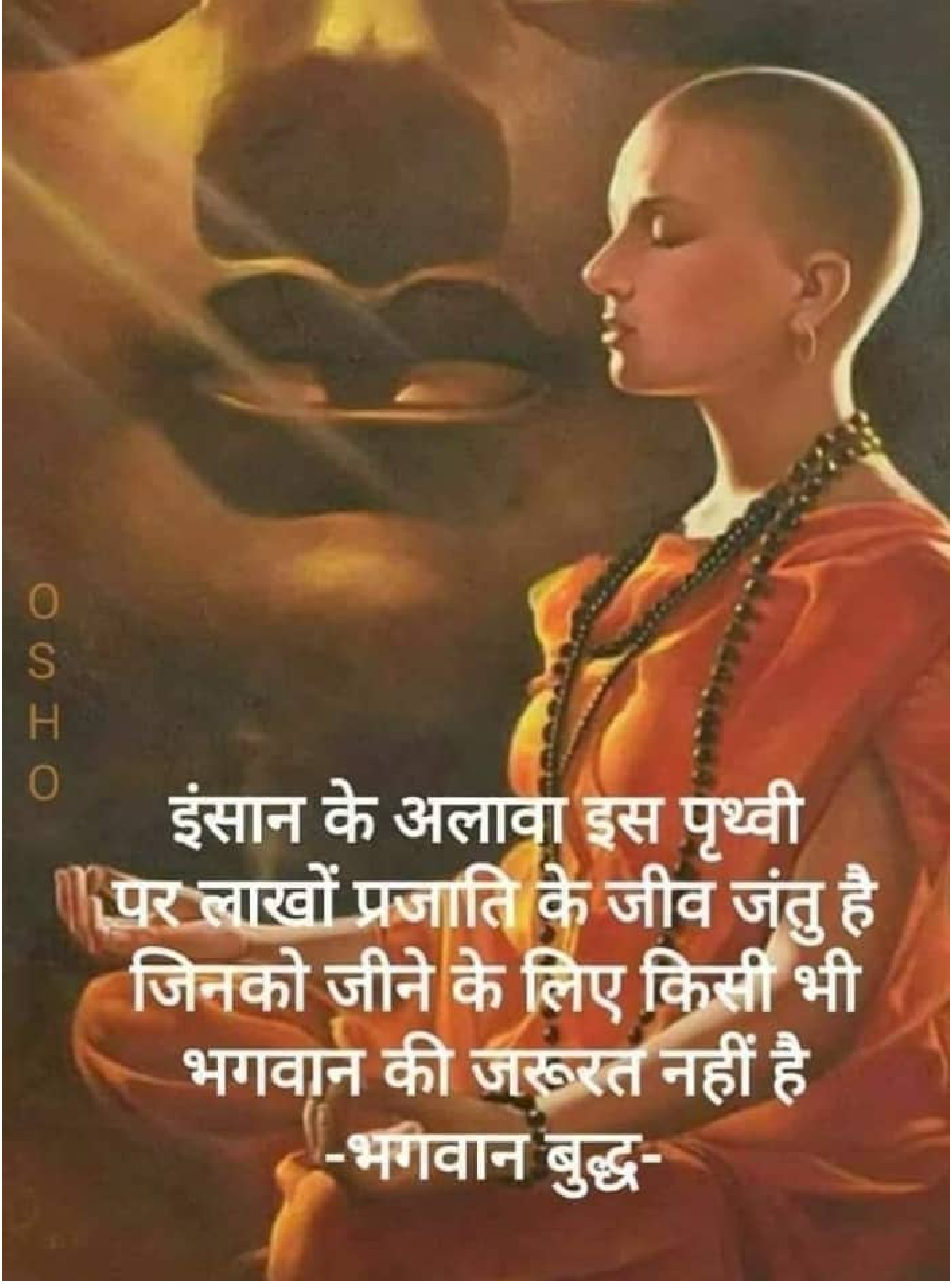
OSHO
इंसान के अलावा इस पृथ्वी
पर लाखों प्रजाति के जीव जंतु है
जिनको जीने के लिए किसी भी
भगवान की जरूरत नहीं है
-भगवान बुद्ध-

CamScanner

मंत्र यदि कीर्तन हो जाये..
तो साथ निभाता है,
जीवन के साथ भी,
मृत्यु के बाद भी...
कीर्तन यानि...
आत्मा में उठी
परम आत्मा की पुकार

CamScanner

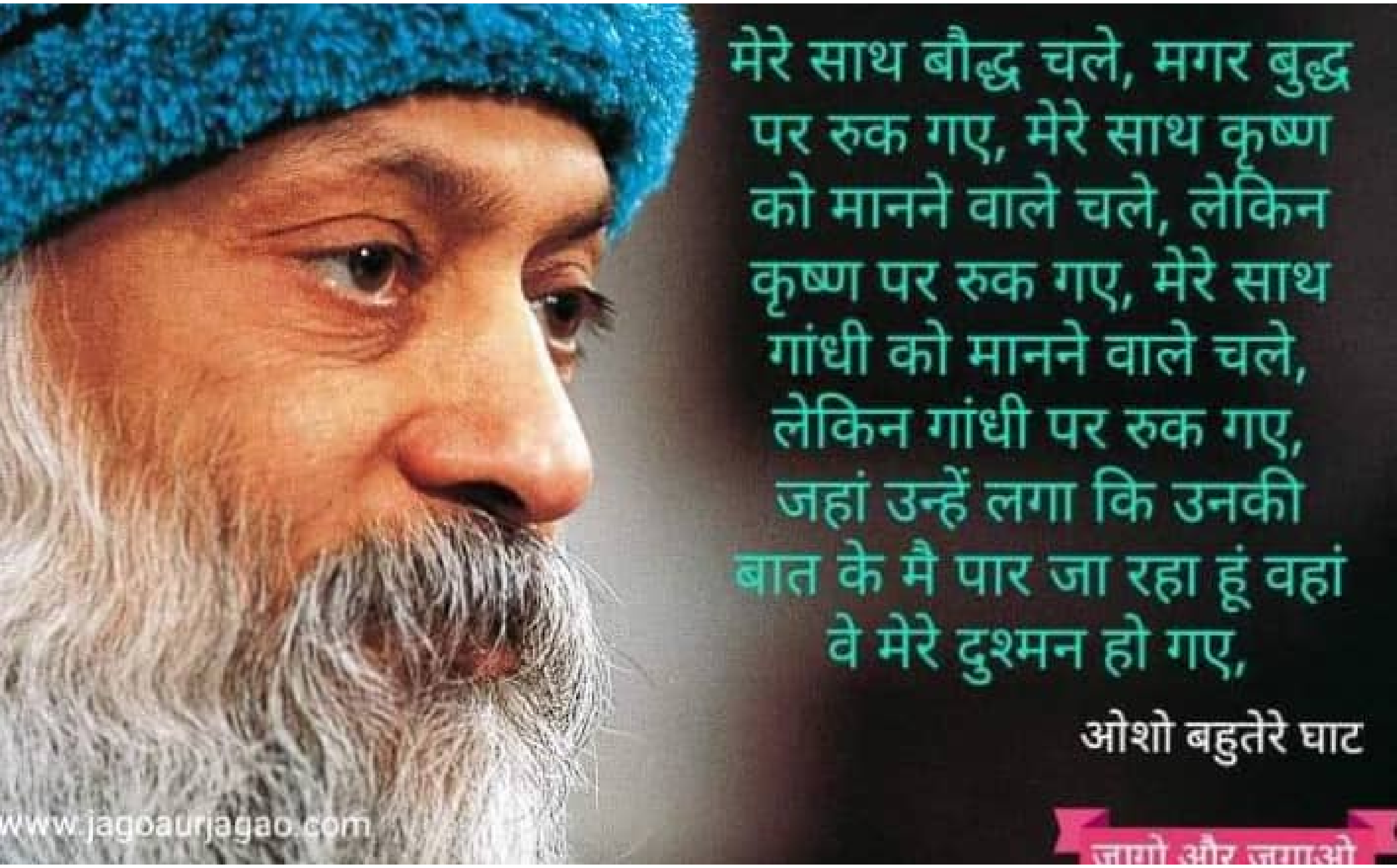
मेरे साथ बौद्ध चले, मगर बुद्ध
पर रुक गए, मेरे साथ कृष्ण
को मानने वाले चले, लेकिन
कृष्ण पर रुक गए, मेरे साथ
गांधी को मानने वाले चले,
लेकिन गांधी पर रुक गए,
जहां उन्हें लगा कि उनकी
बात के मै पार जा रहा हूं वहां
वे मेरे दुश्मन हो गए,
ओशो बहुतेरे घाट
www.jagoaurjagao.com

CamScanner

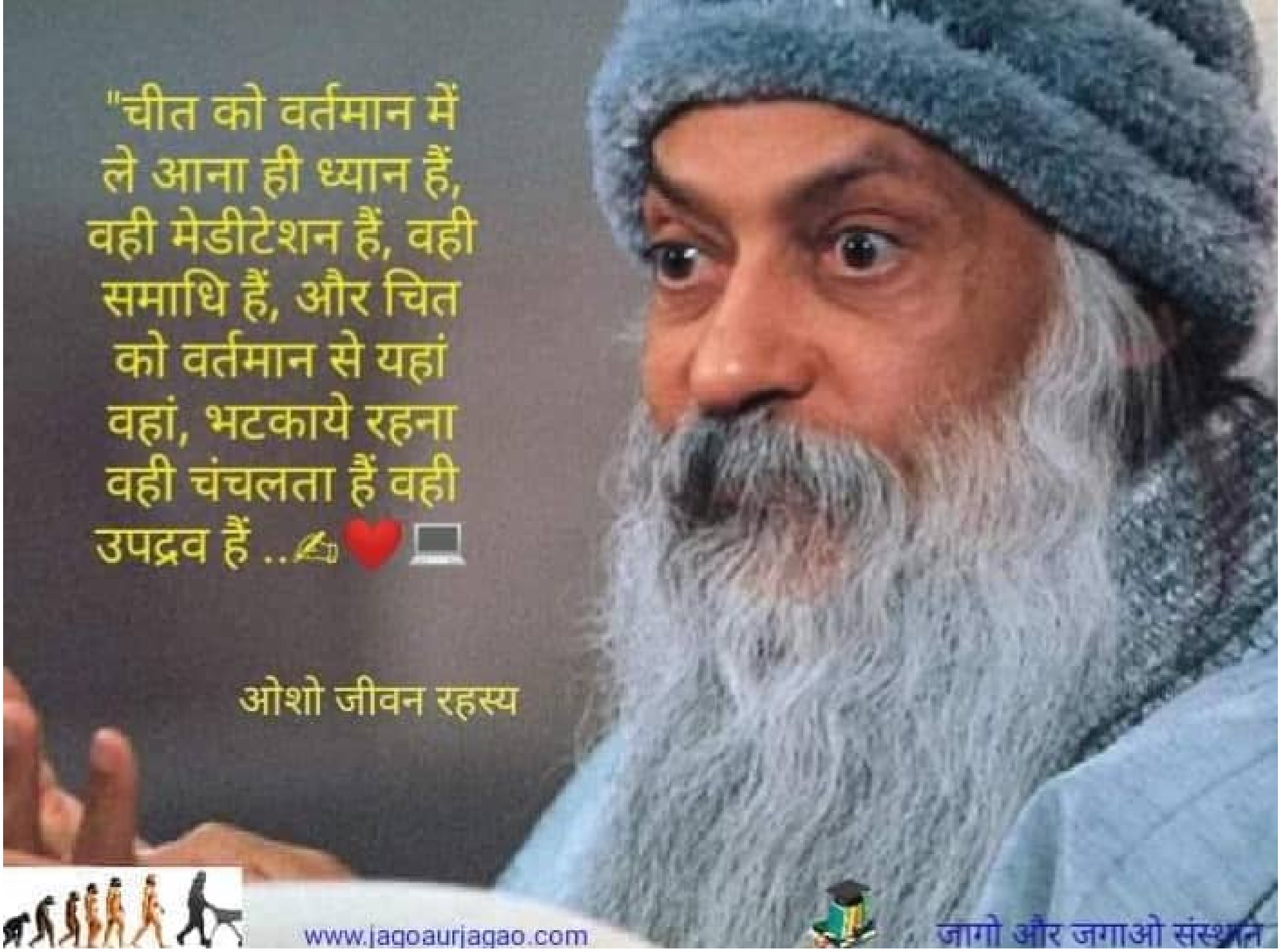
"चीत को वर्तमान में
ले आना ही ध्यान हैं,
वही मेडीटेशन हैं, वही
समाधि हैं, और चित
को वर्तमान से यहां
वहां, भटकाये रहना
वही चंचलता हैं वही
उपद्रव हैं ..
ओशो जीवन रहस्य
www.jagoaurjagao.com
जागो और जगाओ संस्थान

CamScanner

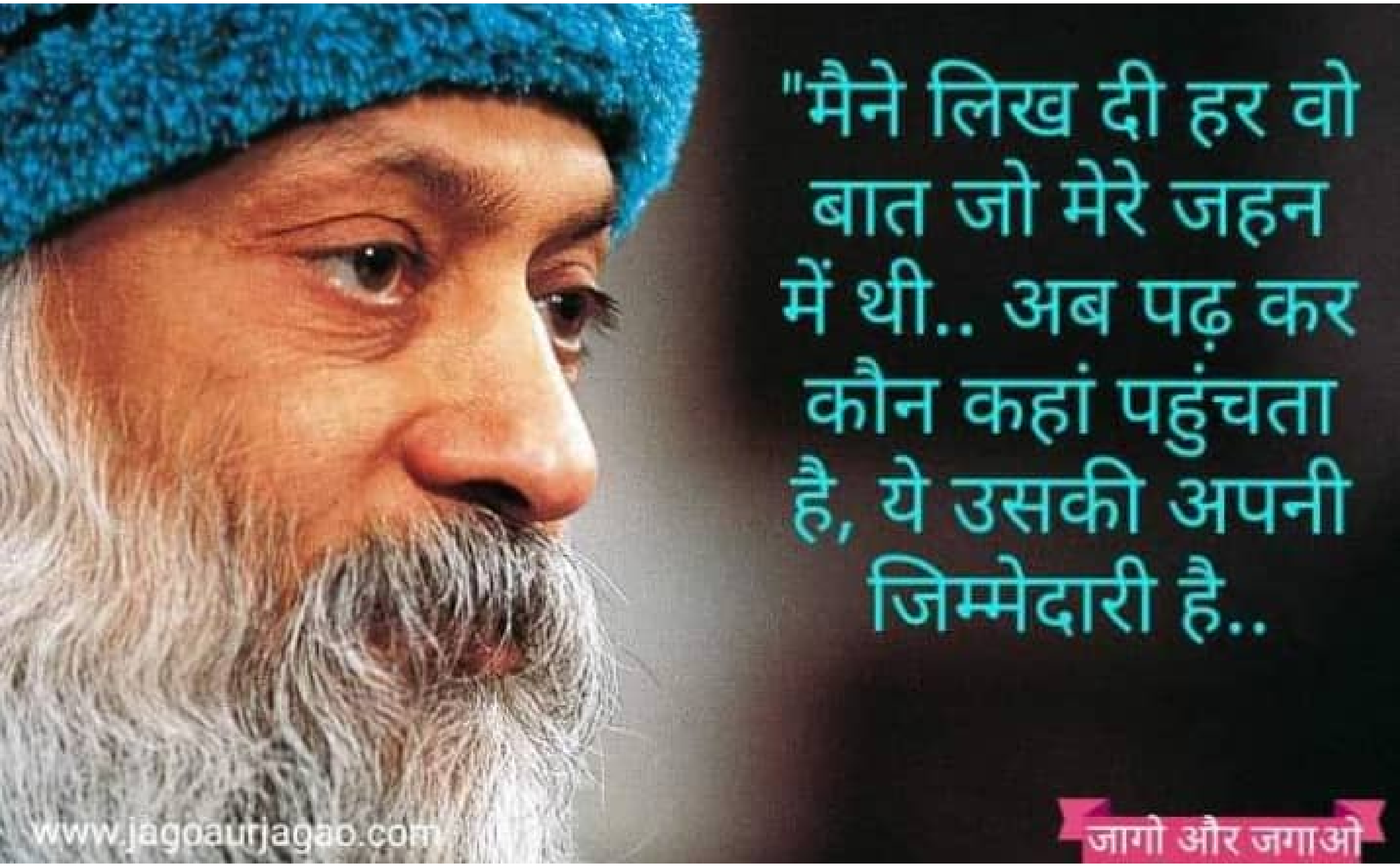
"मैने लिख दी हर वो बात जो मेरे जहन में थी.. अब पढ़ कर कौन कहां पहुंचता है, ये उसकी अपनी जिम्मेदारी है..
www.jagoaurjagao.com
जागो और जगाओ

CamScanner

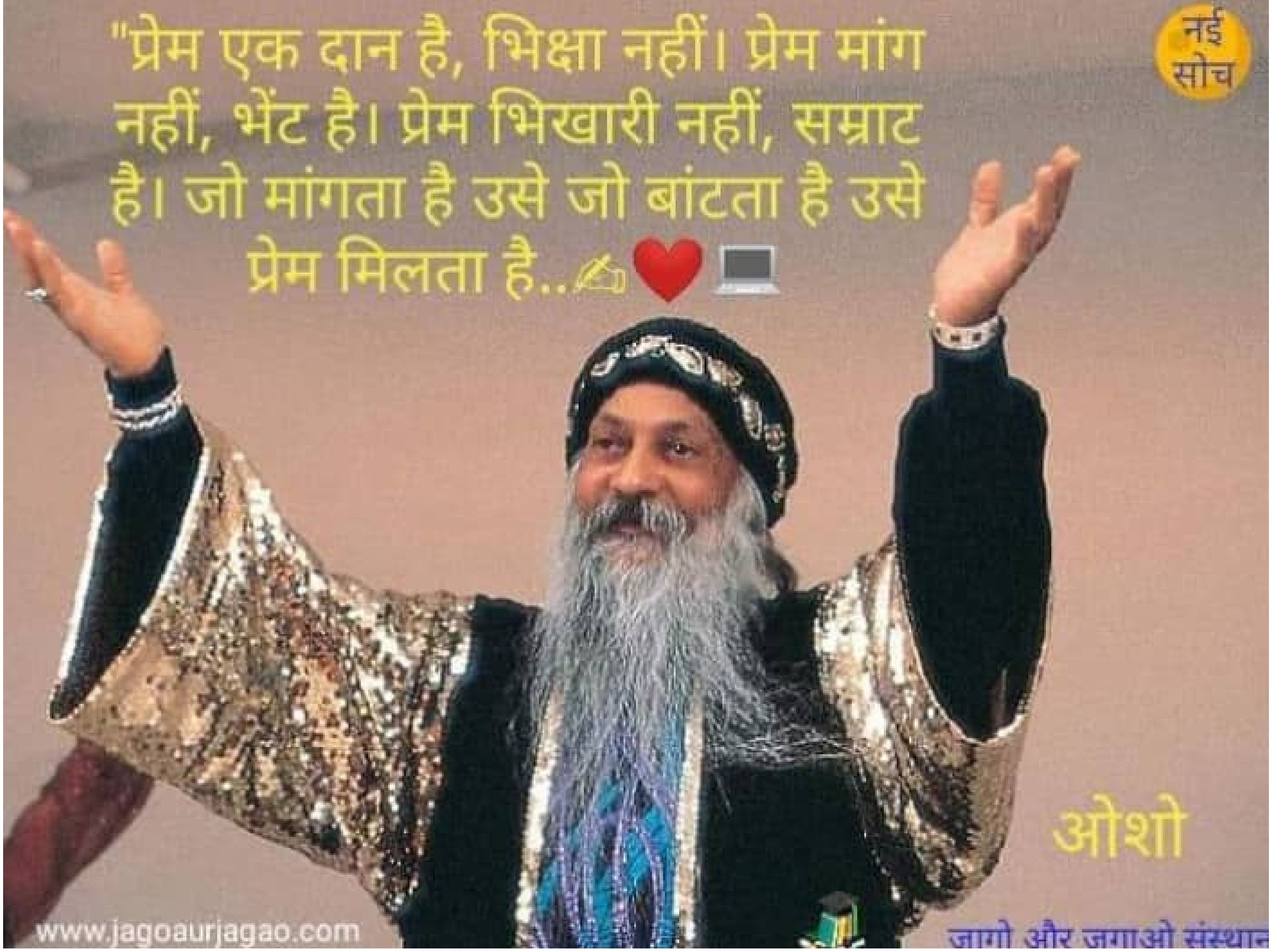
नई सोच
"प्रेम एक दान है, भिक्षा नहीं। प्रेम मांग नहीं, भेंट है। प्रेम भिखारी नहीं, सम्राट है। जो मांगता है उसे जो बांटता है उसे प्रेम मिलता है..
ओशो
www.jagoaurjagao.com
जागो और जगाओ संस्थान

CamScanner

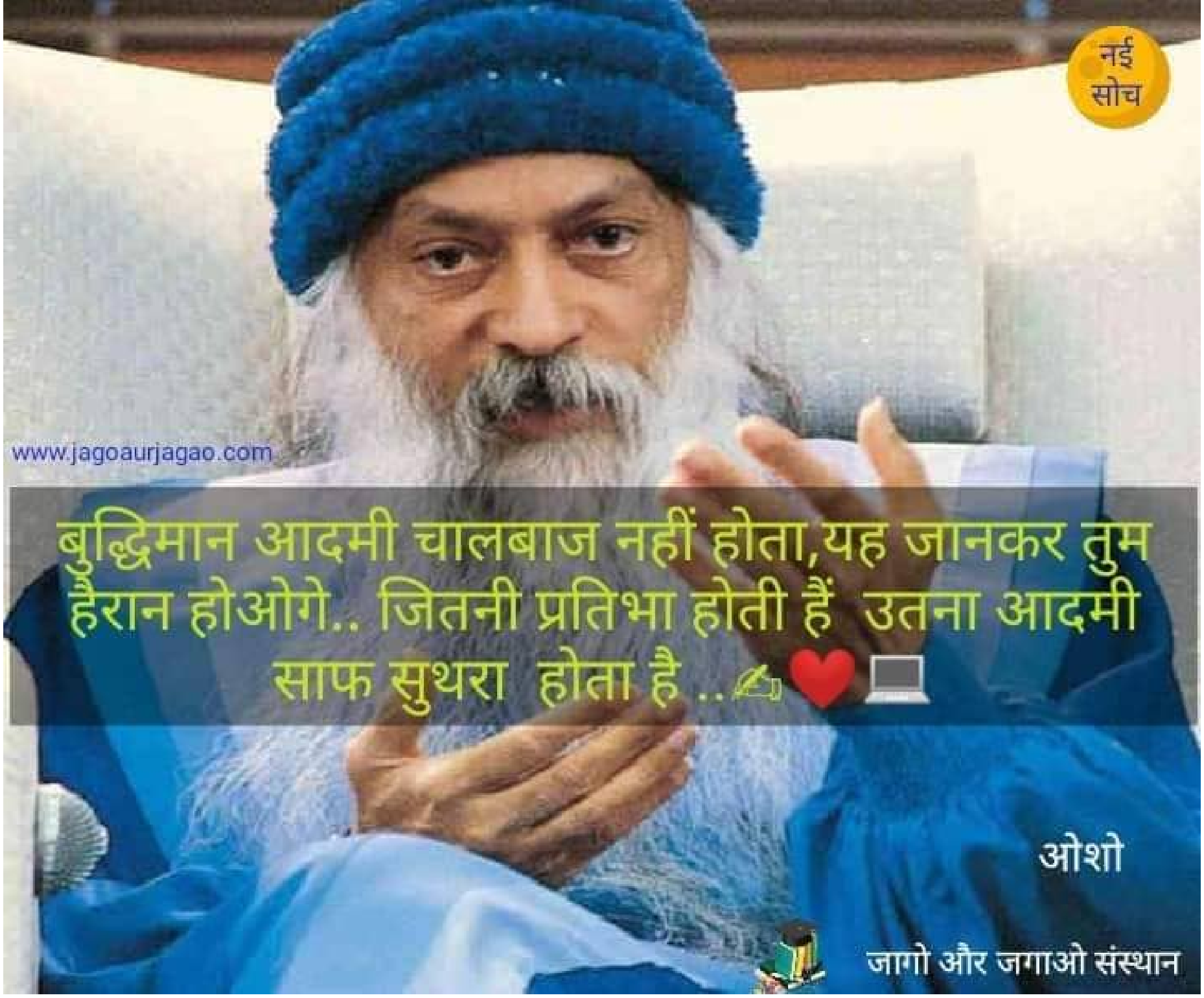
नई सोच
www.jagoaurjagao.com
बुद्धिमान आदमी चालबाज नहीं होता,यह जानकर तुम हैरान होओगे.. जितनी प्रतिभा होती हैं उतना आदमी साफ सुथरा होता है ..
ओशो
जागो और जगाओ संस्थान

CamScanner

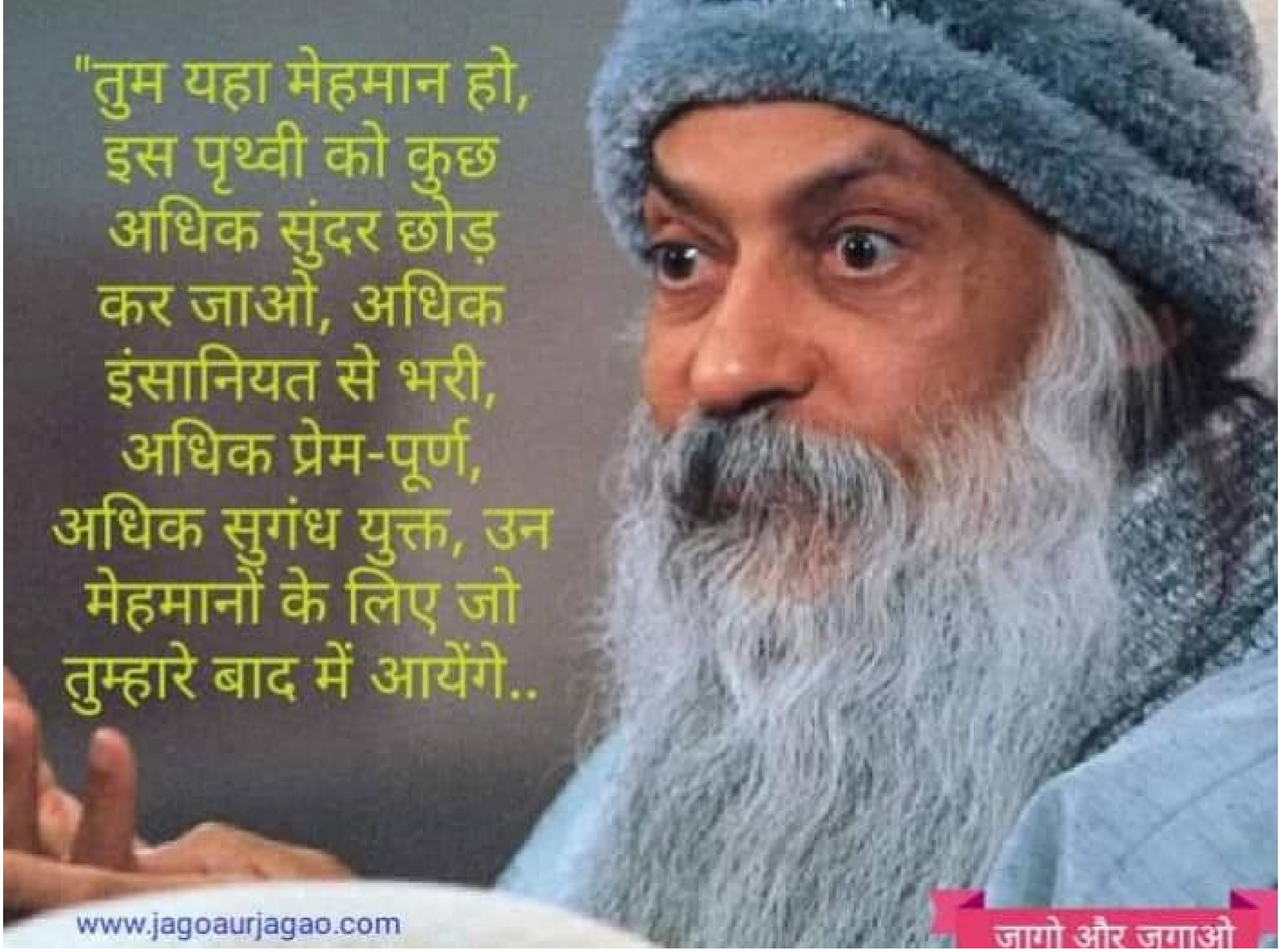
"तुम यहा मेहमान हो,
इस पृथ्वी को कुछ
अधिक सुंदर छोड़
कर जाओ, अधिक
इंसानियत से भरी,
अधिक प्रेम-पूर्ण,
अधिक सुगंध युक्त, उन
मेहमानों के लिए जो
तुम्हारे बाद में आयेंगे..
www.jagoaurjagao.com
जागो और जगाओ

CamScanner

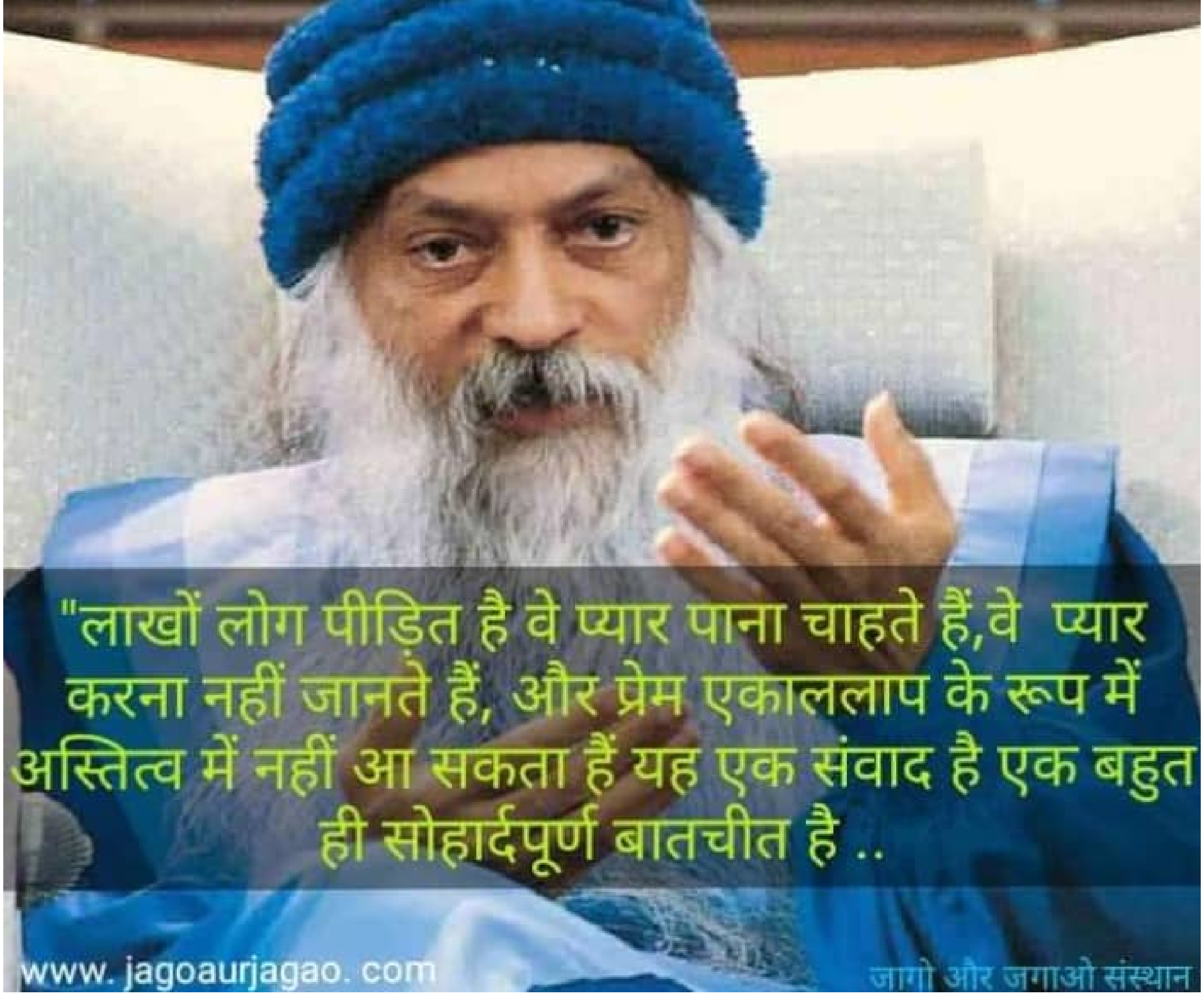
"लाखों लोग पीड़ित है वे प्यार पाना चाहते हैं,वे प्यार
करना नहीं जानते हैं, और प्रेम एकाललाप के रूप में
अस्तित्व में नहीं आ सकता हैं यह एक संवाद है एक बहुत
ही सोहार्दपूर्ण बातचीत है ..
www. jagoaurjagao. com
जागो और जगाओ संस्थान

CamScanner

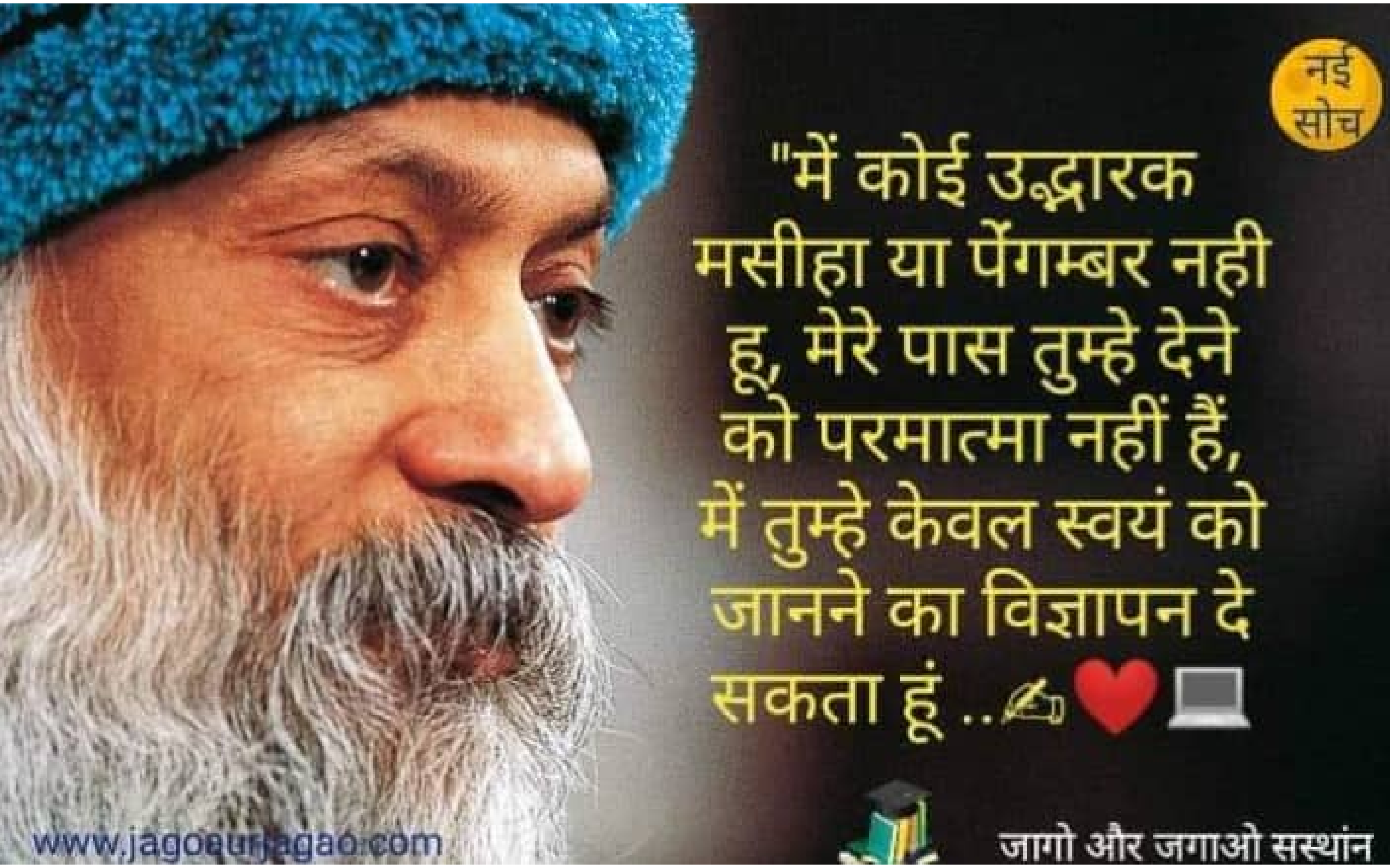
नई सोच
"में कोई उद्धारक
मसीहा या पेंगम्बर नही
हू, मेरे पास तुम्हे देने
को परमात्मा नहीं हैं,
में तुम्हे केवल स्वयं को
जानने का विज्ञापन दे
सकता हूं ..
www.jagoaurjagao.com
जागो और जगाओ सस्थांन

CamScanner

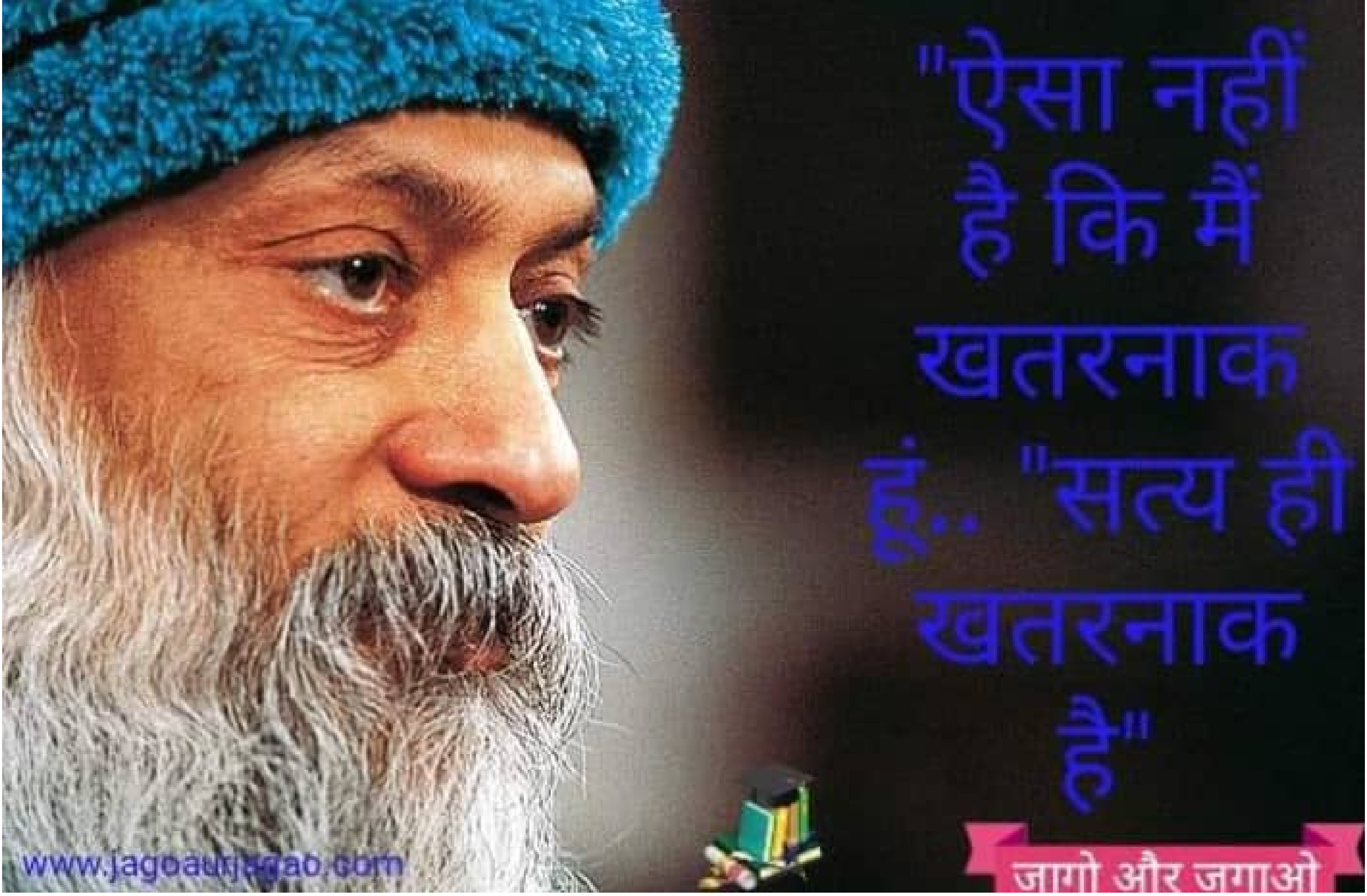

CamScanner

2:04 pm 0 KB/s VoLTE 4G 69%

तुमने देखा, हिंदू इस संबंध में बड़े कुशल हैं। गणेश जी बना लिए मिट्टी के, पूजा इत्यादि कर ली—जा कर समुद्र में समा आए। दुनिया का कोई धर्म इतना हिम्मतवर नहीं है। अगर मंदिर में मूर्ति रख ली तो फिर सिराने की बात ही नहीं उठती। फिर वे कहते हैं अब इसकी पूजा जारी रहेगी। हिंदुओं को हिम्मत देखते हो! पहले बना लेते हैं, मिट्टी के गणेश जी बना लिए। मिट्टी के बना कर उन्होंने भगवान का आरोपण कर लिया। नाच—कूद, गीत, प्रार्थना—पूजा सब हो गई। फिर अब वह कहते हैं, अब चलो महाराज, अब हमें दूसरे काम भी करने हैं! अब आप समुद्र में विश्राम करो, फिर अगले साल उठा लेंगे।

यह हिम्मत देखते हो? इसका अर्थ क्या होता है? इसका बड़ा सांकेतिक अर्थ है. अनुष्ठान का उपयोग कर लो और समुद्र में सिरा दो। विधि का उपयोग कर लो, फिर विधि से बंधे मत रह जाओ। जहां हर चीज आती है, जाती है, वहां भगवान को भी बना लो, मिटा दो। जो भगवान तुम्हारे साथ करता है वही तुम भगवान के साथ करो—यही सज्जन का धर्म है। वह तुम्हें बनाता, मिटा देता। उसकी कला तुम भी सीखो। तुम उसे बना लो, उसे विसर्जित कर दो।

जब बनाते हिंदू तो कितने भाव से! दूसरे धर्मों के लोगों को बड़ी हैरानी होती है। कितने भाव से बनाते, कैसा रंगते, मूर्ति को कितना सुंदर बनाते, कितना खर्च करते! महीनों मेहनत करते हैं। जब मूर्ति बन जाती, तो कितने भाव से पूजा करते, फूल— अर्चन, भजन, कीर्तन! मगर अदभुत लोग हैं! फिर आ गया उनकी विसर्जन का दिन। फिर वे चले बैंड—बाजा बजाते, तो भी नाचते जाते हैं। जन्म भी नृत्य है, मृत्यु भी नृत्य होना चाहिए। चले परमात्मा को सिरा देने! जन्म कर लिया था, मृत्यु का वक्त आ गया।

इस जगत में जो भी चीज बनती है वह मिटती है। और इस जगत में हर चीज का उपयोग कर लेना है और किसी चीज से बंधे नहीं रह जाना है—परमात्मा से भी बंधे नहीं रह जाना है। मैं नहीं
कहता कि हिंदुओं को ठीक—ठीक बोध है कि वे क्या कर रहे हैं। लेकिन जिन्होंने शुरू की होगी यात्रा उनको जरूर बोध रहा होगा। लोग भूल गये होंगे। अब उन्हें कुछ भी पता न हो कि वे क्या कर रहे हैं। मूर्च्छा में कर रहे होंगे। पुरानी परंपरा है कि बनाया, विसर्जन कर रहे होंगे; लेकिन उसका सार तो समझो। सार इतना ही है कि विधि उपयोग कर ली। फिर विधि से बंधे नहीं रह जाना है। अनुष्ठान पूरा हो गया, विसर्जन कर दिया।

CS CamScanner

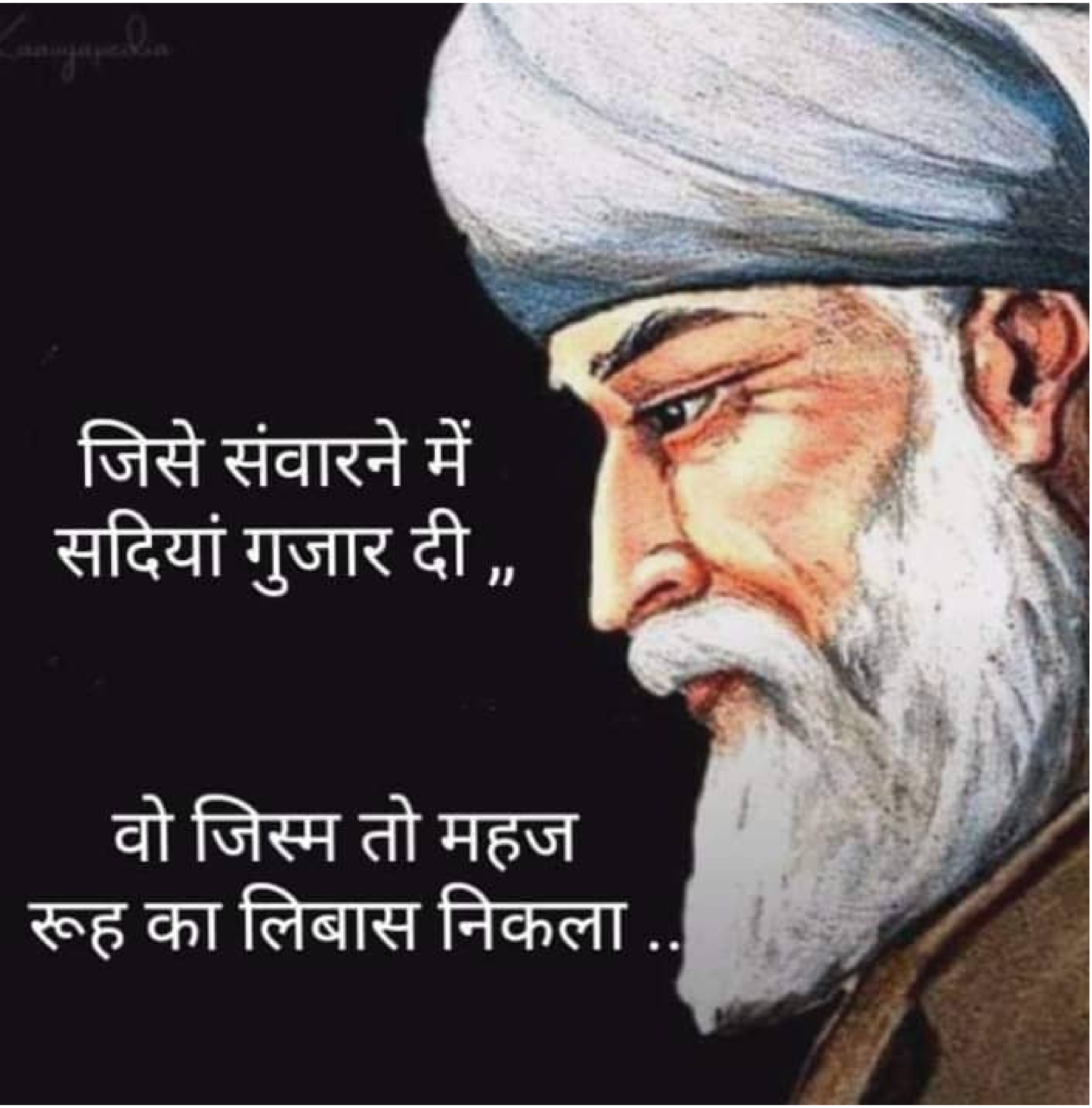

CamScanner

ओशो
भक्त के जीवन का सबसे बड़ा चमत्कार
यह नहिं है कि वह पानी पर चल ले। पानी
चलने को बना भी नहिं है।भक्त के जीवन
का बड़ा चमत्कार यह नहिं है कि वह
आकाश मे उड़ ले।परमात्मा को आदमी को
आकाश मे उड़ाना होता तो पंख दिये होते।
भक्त के जीवन का बड़ा चमत्कार यही
है,एकमात्र चमत्कार यही है कि समय की
धारा मे समयातीत को खींच लाता है;क्षुद्र
के मध्य विराट को बुला लेता है।

CamScanner

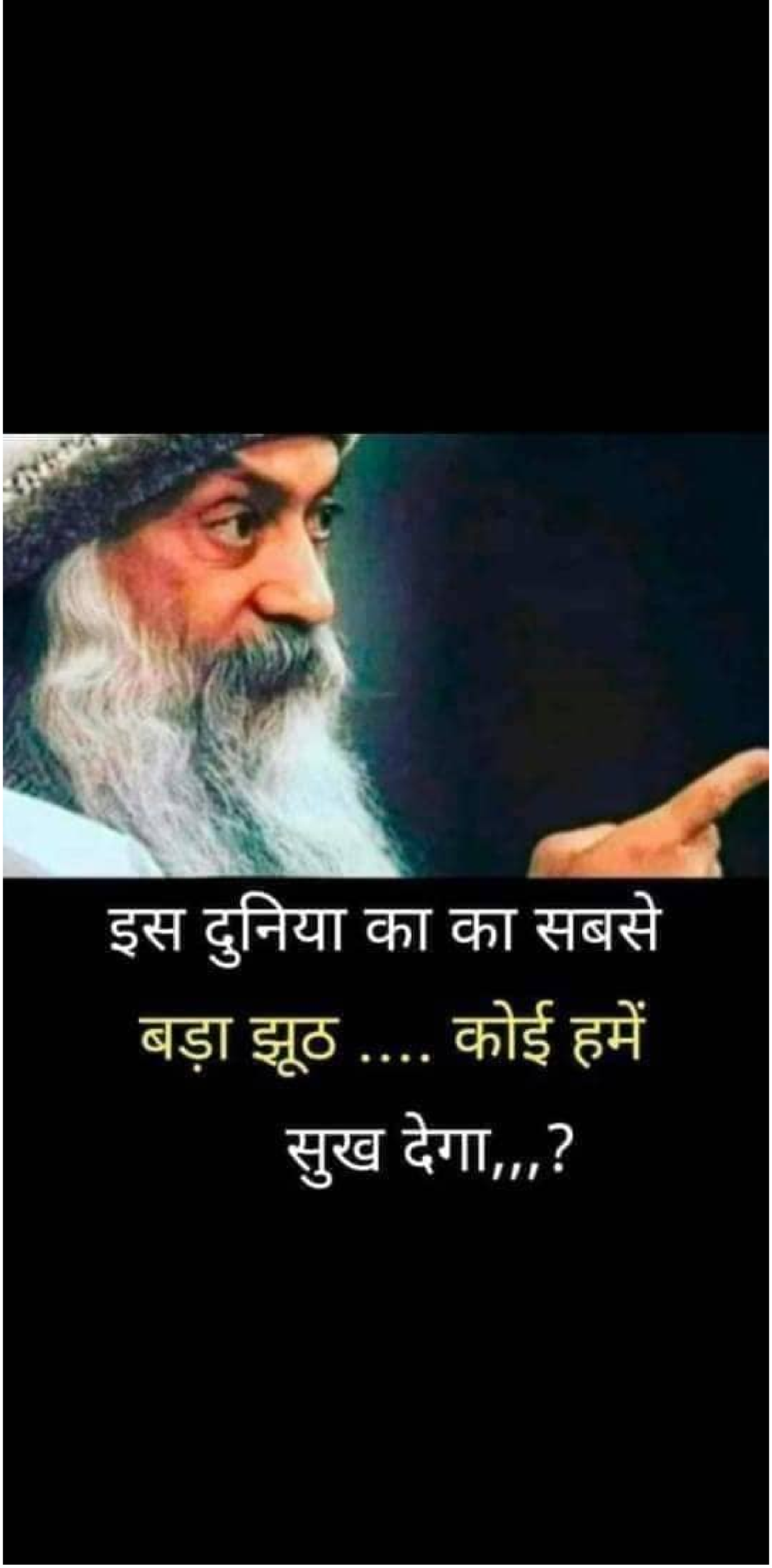

CamScanner

1:47 pm 0 KB/s 73%

18K 418 comments • 1.5K shares • 336K views

Like Comment Share

OSHO SHIVDHARA

Ravi Kumar · 3h

आपकी सांसों का उठना और गिरना: यही भीतर देखने का तरीका है... 🧘🧘🧘

आपकी सांसों का उठना और गिरना: यही भीतर देखने का तरीका है। बहुतों ने कहा है: भीतर देखो। सुकरात ने कहा है: अपने भीतर देखो, स्वयं को जानो, लेकिन किसी ने सटीक विधि नहीं बताई है। बुद्ध तुम्हें सटीक विधि देते हैं: श्वास का उठना और गिरना। यह सांस के माध्यम से है जिससे आप जुड़े हुए हैं। साँस आपकी आत्मा और आपके शरीर के बीच का सेतु है। यदि आप अपनी सांस को उठते और गिरते हुए देख सकते हैं, तो धीरे-धीरे आप शरीर को अपने से अलग और सांस को भी अपने से अलग देख पाएंगे, क्योंकि देखने वाले को देखा नहीं जा सकता, देखने वाले को देखा नहीं जा सकता। अचानक एक दिन तुम्हें एहसास होगा कि तुम इस सबके साक्षी हो। और साक्षी निश्चित रूप से उन सभी से परे है जिसका वह साक्षी है। उसी क्षण तुम्हें मुक्ति मिल गई है।

के प्रवचन से

आचार्य श्री रजनीश चन्द्रमोहन — 🙂 feeling wonderful.

CamScanner

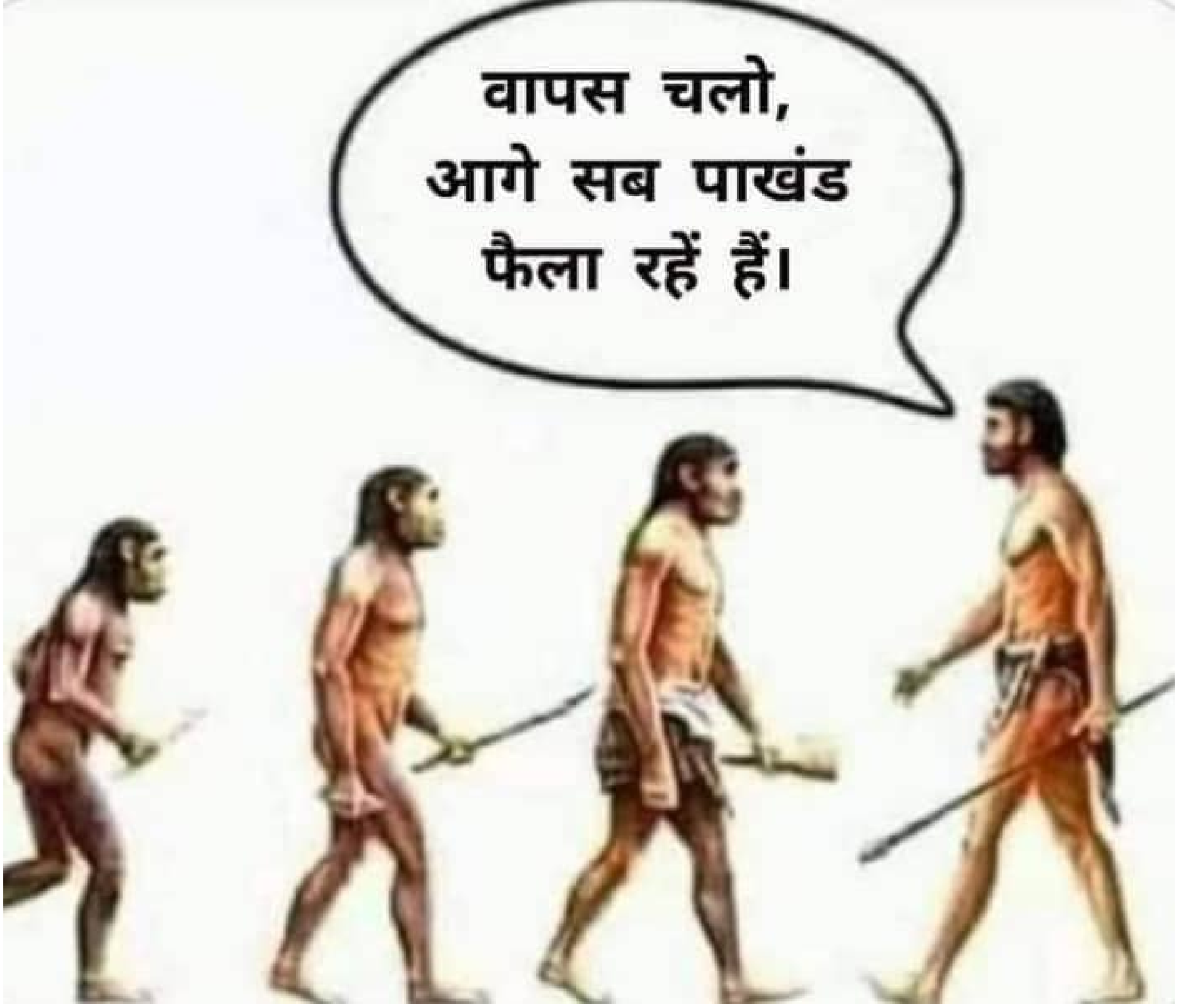

CamScanner

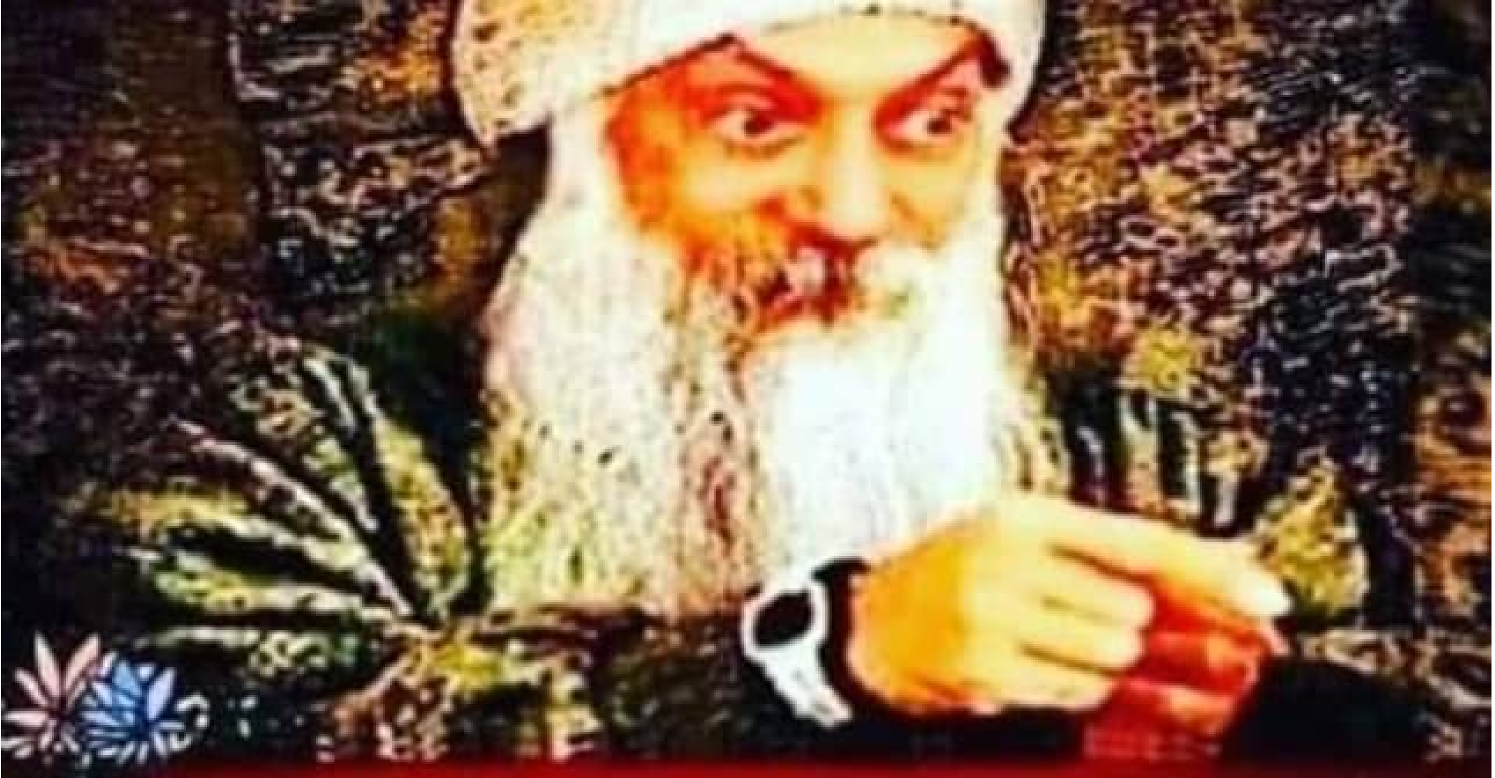

परमात्मा कभी तुमसे
कहता ही नहीं कि तुम क्या करो
और क्या न करो।
करने की पूरी स्वतंत्रता है।
लेकिन एक बात का ध्यान रखना कि
हर कृत्य का परिणाम है।
उसको भोगने के लिए भी तुम
राजी रहना।
कृत्य की स्वतंत्रता ही
परिणाम का बंधन है।
~ ओशो

CamScanner

तुमने कभी गौर किया ? तुम्हारा सच्चा मित्र कौन है ? कौन है तुमसे जो बेशर्त प्रेम करता है ? ना वो तुमसे कभी लड़ता है, ना रूठता है, ना दूर जाता है। तुम उसे छोड़ो तो तुमसे कोई शिकायत भी नहीं, कोई गिला शिकवा भी नहीं। और जब मर्जी तुम उसे बुलाओ तो आने को तैयार,

तुम्हारा हर गम दूर करने को, तुम्हारी हर ख़ुशी बढ़ाने को।

ध्यान है तुम्हारा वो प्रियतम, तुम्हारा परम् संगी साथी। जिससे तुम चाहो कितना ही मुहं फेरो पर वो हर वक़्त तुम्हारे आने के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहता है।

CamScanner

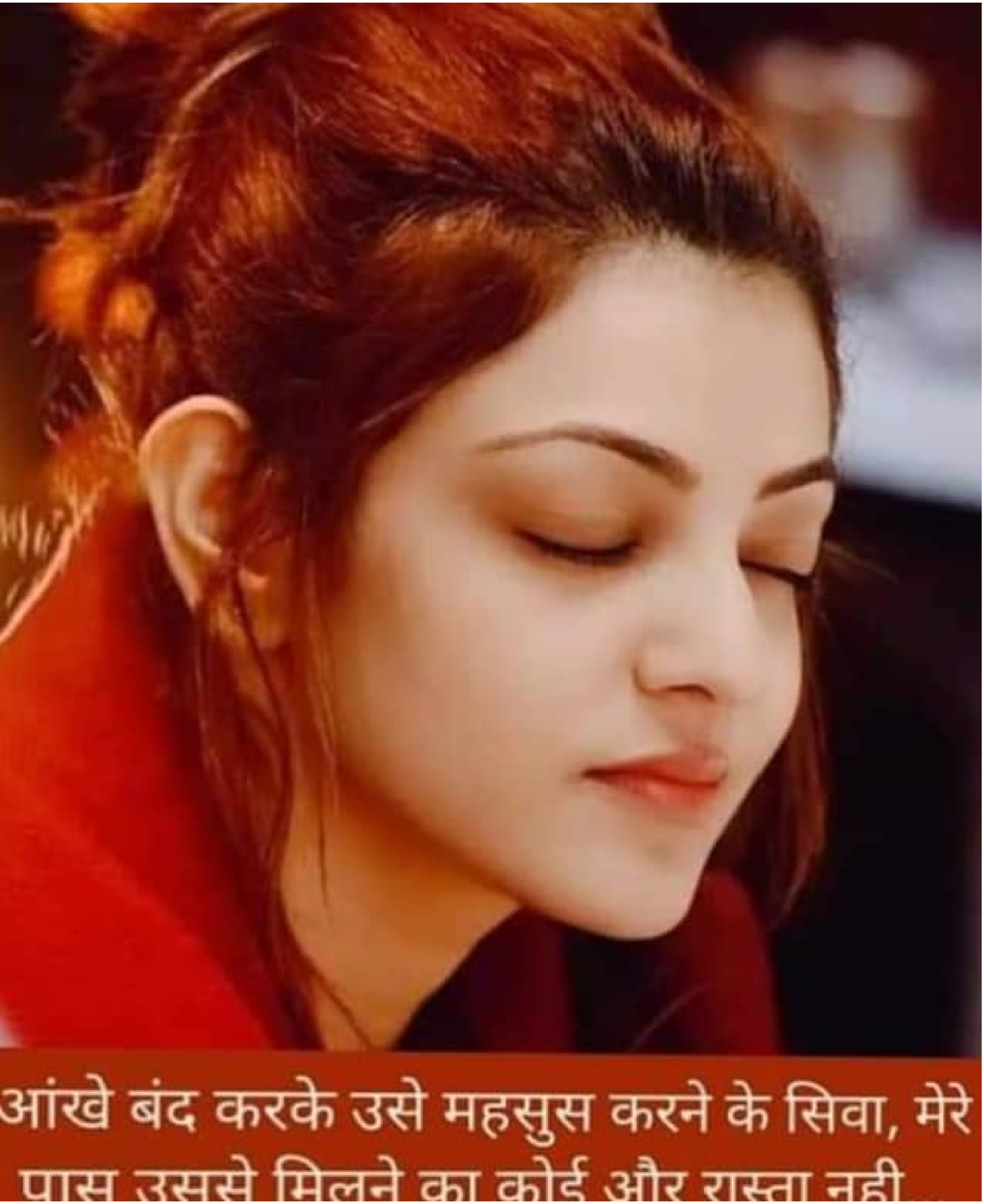

CamScanner

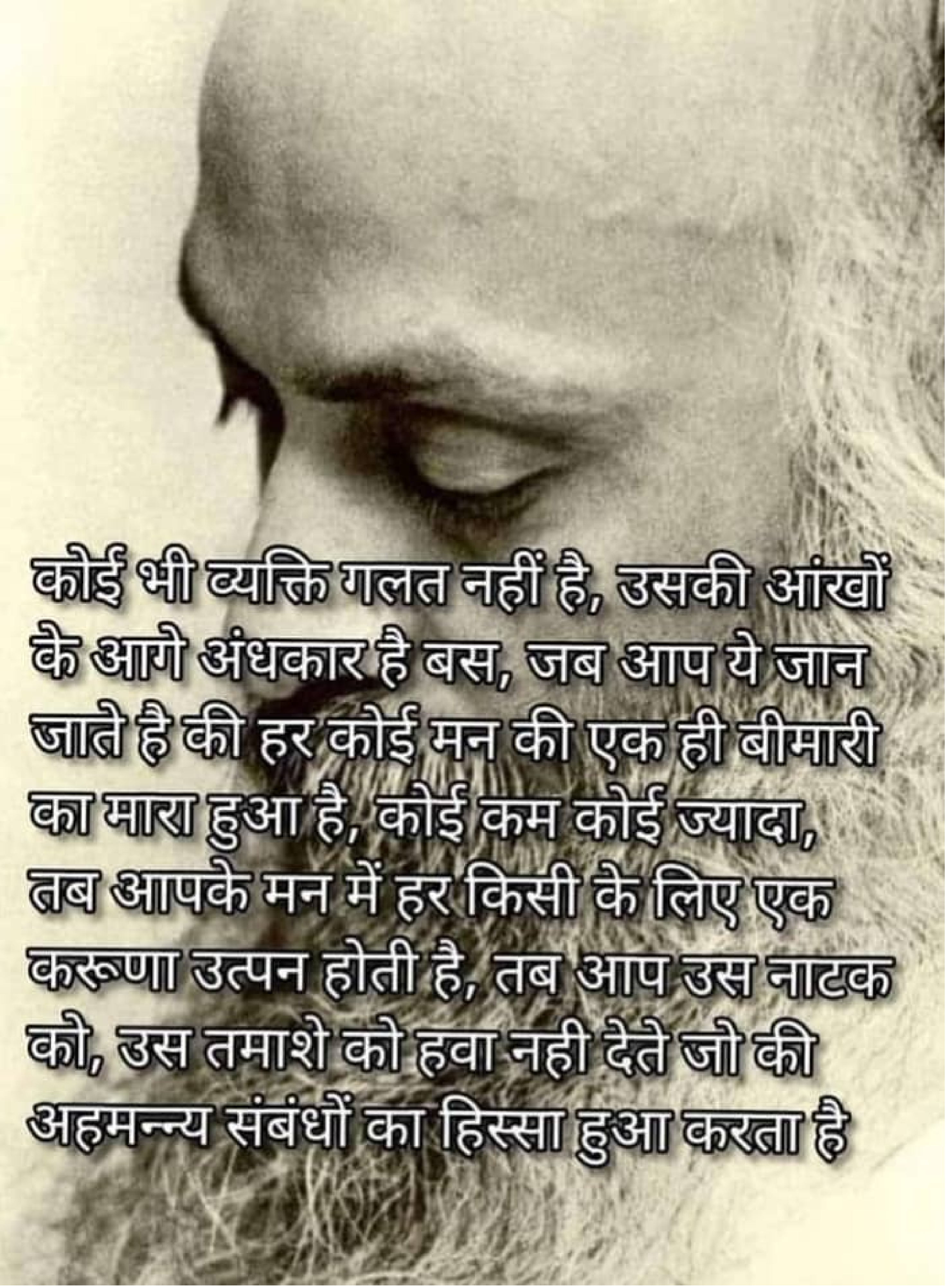
कोई भी व्यक्ति गलत नहीं है, उसकी आंखों
के आगे अंधकार है बस, जब आप ये जान
जाते है की हर कोई मन की एक ही बीमारी
का मारा हुआ है, कोई कम कोई ज्यादा,
तब आपके मन में हर किसी के लिए एक
करूणा उत्पन होती है, तब आप उस नाटक
को, उस तमाशे को हवा नही देते जो की
अहमन्न्य संबंधों का हिस्सा हुआ करता है

CamScanner

जिस आदमी ने जीवन भर पाप किया हो,
मरते क्षण में वह महापापी बनने की ही
वासना कर सकता है। वह आपके हाथ
में उपाय नही है, की आप मरते वक्त
बुद्ध बनने का विचार कर ले। बुद्ध
बनने का विचार तो तब ही आ सकता
है, जब जीवनभर बुद्ध बनने की चेष्टा
रही हो। क्योंकि मरते क्षण में आपका
जीवन पूरा का पूरा निचुड़कर आखरी
वासना बन जाता है। वह बीज है।उसी
बीज से फिर नये जन्म की शुरुवात होगी।

Osho

CS CamScanner

कबीर कहते हैं: अनकिए सब होय।
तुमने किया कि बिगाड़ा। तुमने कर-करके ही तो बिगाड़ा है। इतनी लंबी यात्रा कर रहे हो। तुम न करो। थोड़ी देर भी न करके देखो; सब सुधर जाता है। तुम चुप हुए कि अस्तित्व तुम्हारे आस-पास ठीक होने लगता है। तुम मौन हुए कि विकृतियां अपने आप बैठने लगती हैं। ऐसे ही जैसे नदी बहती है, कूड़ा-कर्कट उठ आता है; तुम किनारे बैठ जाते हो, थोड़ी देर में कूड़ा-कर्कट अपने से बह जाता है, धूल-धवांस नीचे बैठ जाती है ।
ताओ उपनिषद-भाग-**5** प्र-**99**
ओशो

CamScanner

जिसने अपने को समझा कि मैं कर्ता हूं वही चूक गया।

और जिसने अपने को अभिनेता जाना वही पा गया है।

ओशो अहोभाव

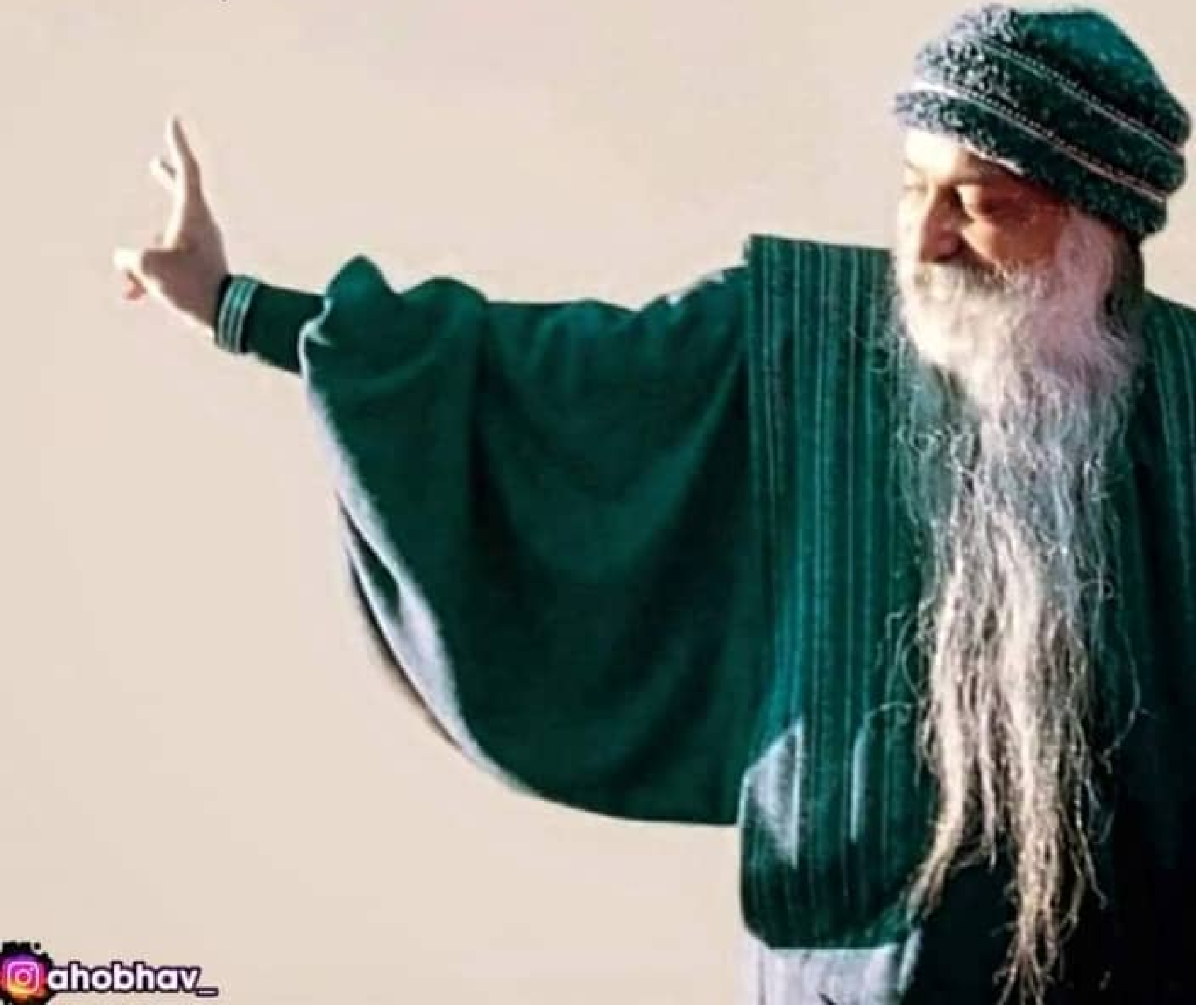

CamScanner

जो उम्र भर ना मिल सके
उसे उम्र भर चाहना
इश्क़ है

Liked by **osho________12** and **7 others**

the_oshoworld इश्क क्या है। ओशो वाणी #osho #love #loveshayari #lovestatus #lovestatus #lovequotes #loveyourself... more

Add a comment...

31 August · **See translation**

balliavibes
बलिया
Jakes Bejoy • Kalki Theme Revisited Ft Jos Jossey

CamScanner

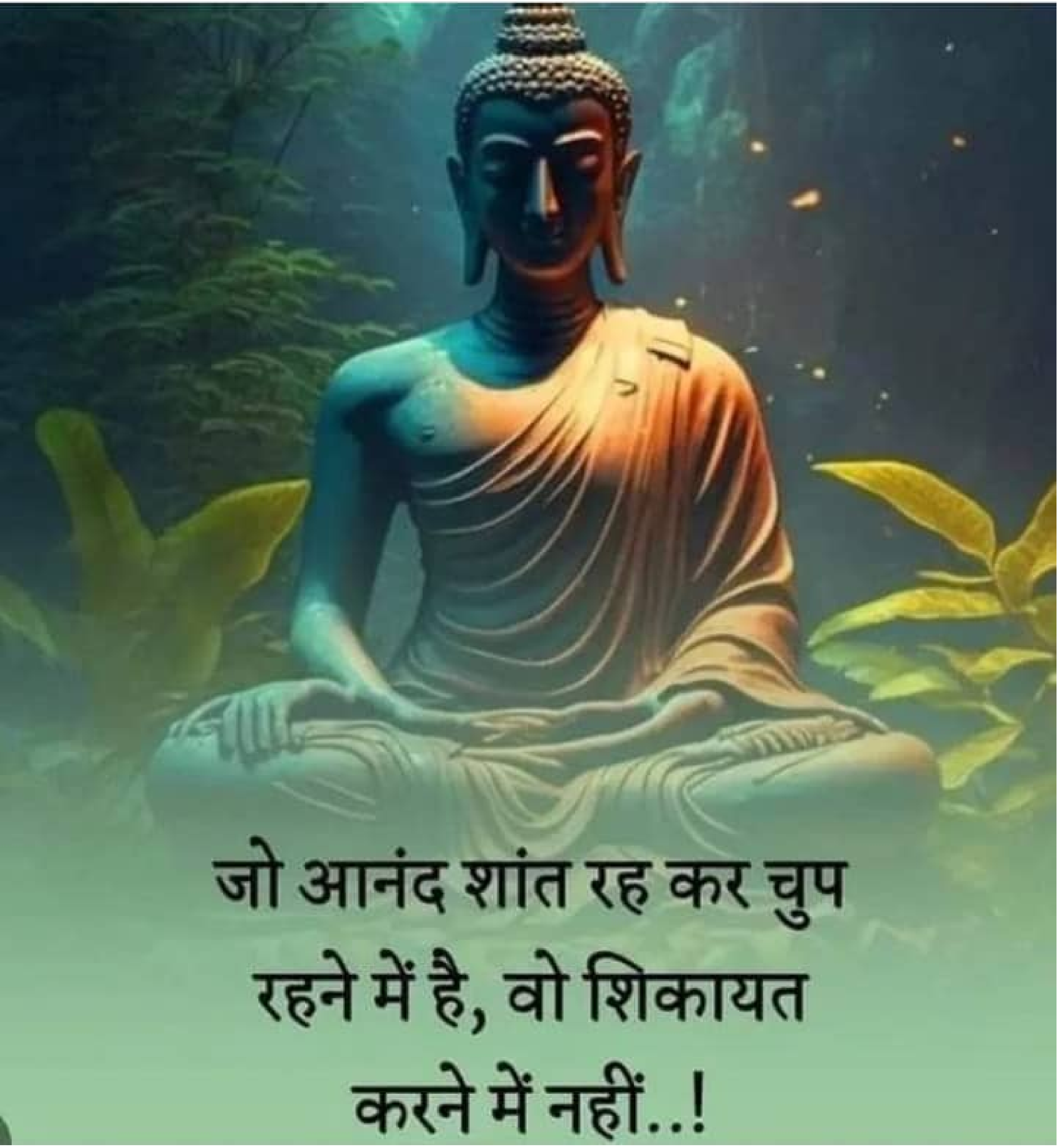

CamScanner

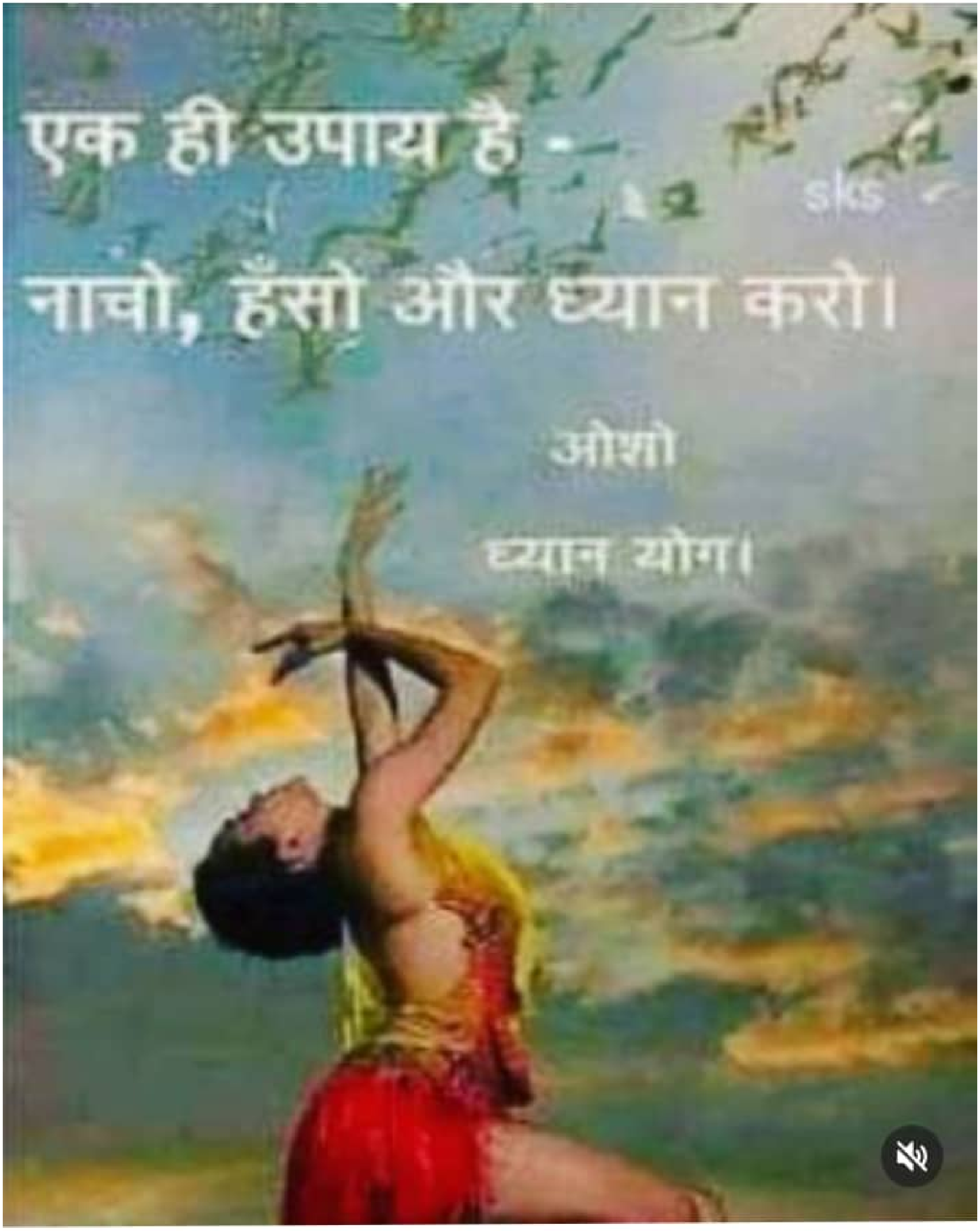

19 likes

oshoalbela जो हंसते हुए जिएगा नहीं,वह हंसते हुए मर नहीं सकेगा।

29 August • See translation

smiling_buddha_

CamScanner

CamScanner

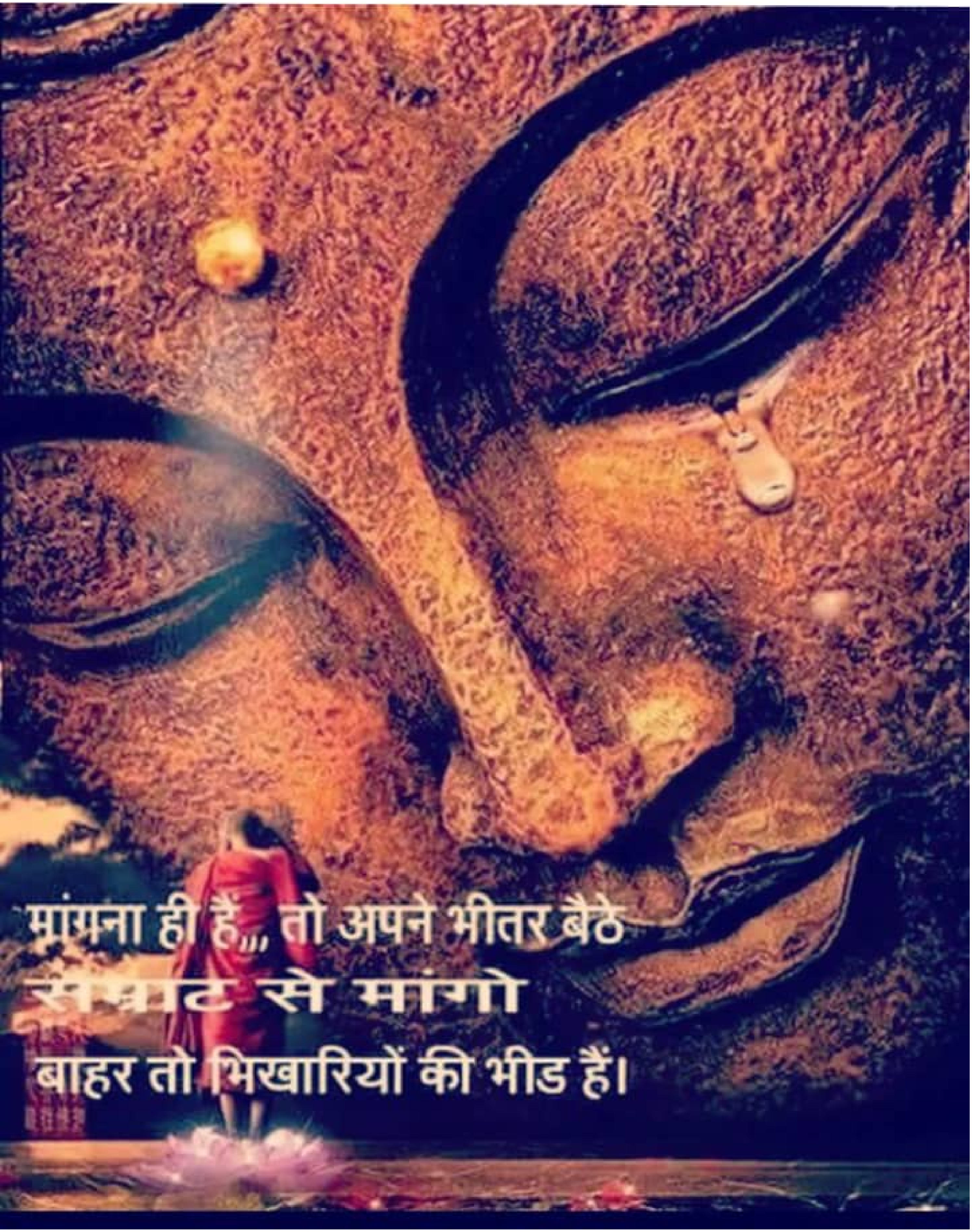

CamScanner

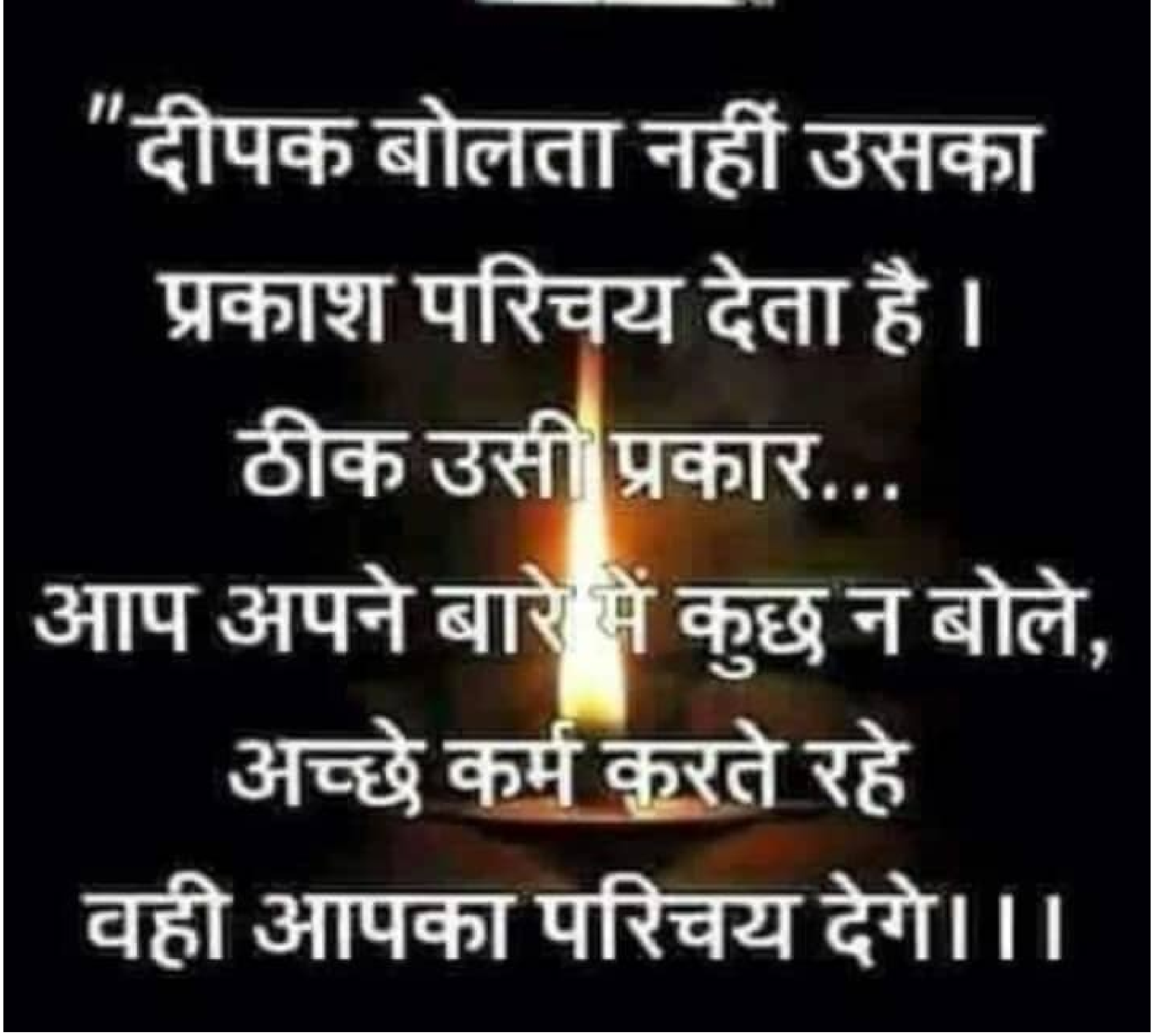
"दीपक बोलता नहीं उसका
प्रकाश परिचय देता है ।
ठीक उसी प्रकार...
आप अपने बारे में कुछ न बोले,
अच्छे कर्म करते रहे
वही आपका परिचय देगे।।।

CamScanner

CamScanner

परमात्मा से कोइ सौदा नही हो सकता
तुम परमात्मा कि पुजा भी करते हो तो पहले पता करते
हो कि कौन सी पुजा से क्या लाभ मिलेगा पता करोगे
कि वो कौन सा मन्त्र है कौन सा पाठ है जिसे पढ्ने से
परमात्मा तुम्हारी माग सुने या कौन सी जगह जाया जाय
मन्दिर जाय या मस्जिद जाय या चर्च जाय जाह तुम्हारी
मनोकामनाय पुरी हो जाय तुम वोही जगह चुनोगे यह
तुम क्या कर रहे हो वो अन्तरयामी है उसे पता है तुम्हे
तुम्हे क्या जरुरत है जब तक माग है तुम भटकते रहोगे
उसे पा न सकोगे :ओशो

CS CamScanner

CamScanner

धैर्य रखना निराश मत होना कभी, क्योंकि जिसने तुम्हें लिखा है,
वह संसार का सबसे बड़ा लेखक है...

OSHO

CamScanner

CS CamScanner

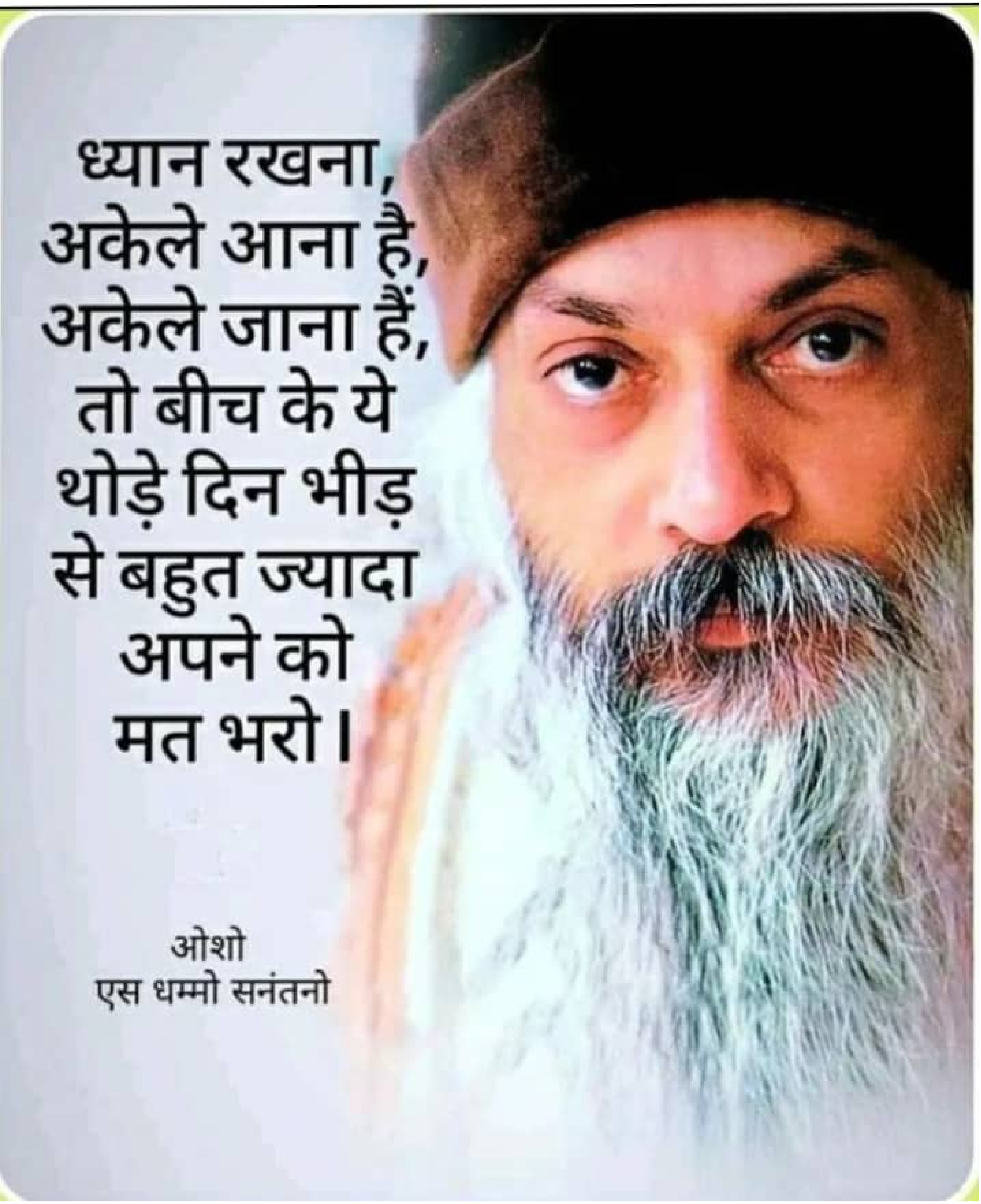
ध्यान रखना,
अकेले आना है,
अकेले जाना हैं,
तो बीच के ये
थोड़े दिन भीड़
से बहुत ज्यादा
अपने को
मत भरो।
ओशो
एस धम्मो सनंतनो

CamScanner

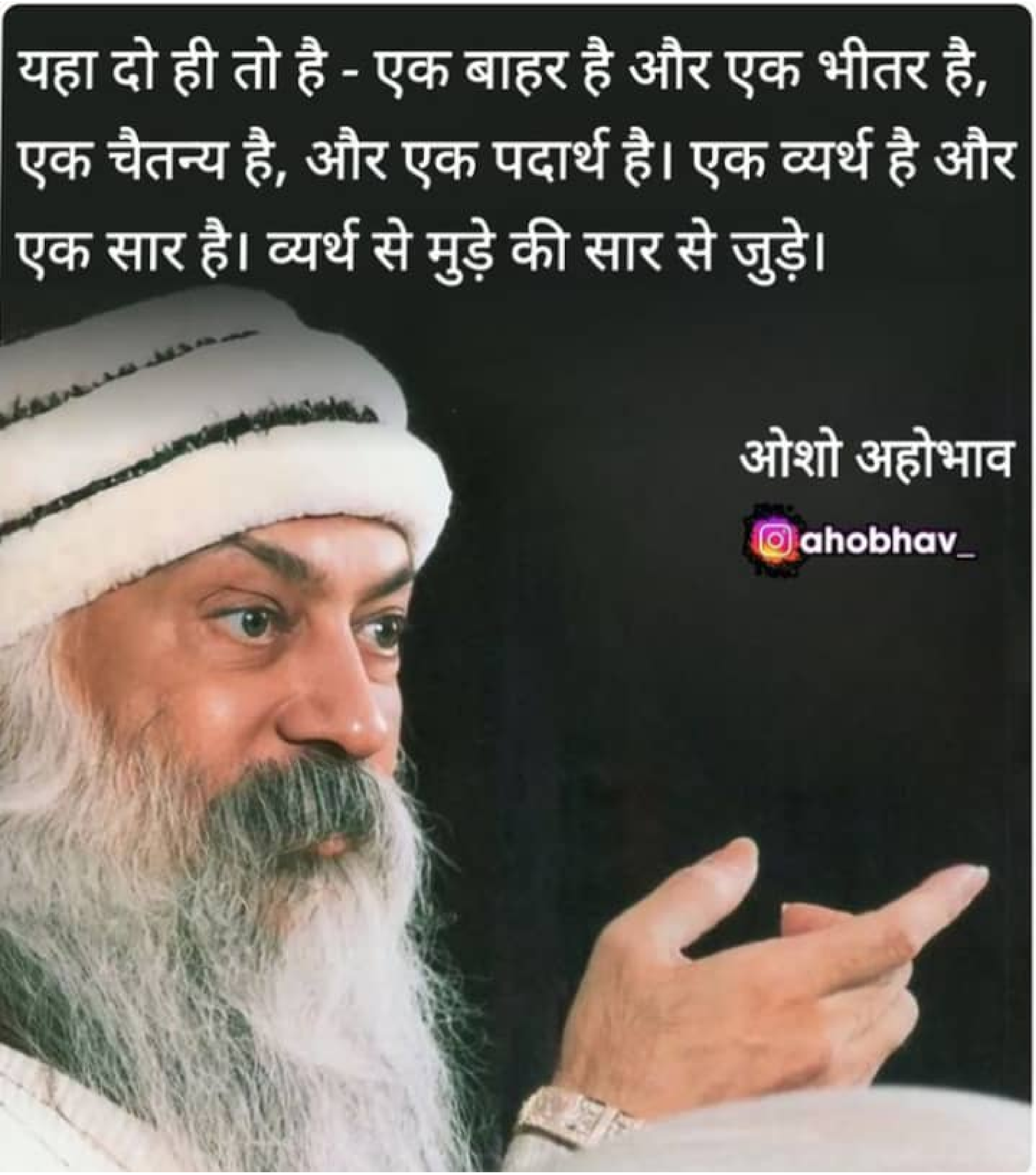

यहा दो ही तो है - एक बाहर है और एक भीतर है,
एक चैतन्य है, और एक पदार्थ है। एक व्यर्थ है और
एक सार है। व्यर्थ से मुड़े की सार से जुड़े।
ओशो अहोभाव
ahobhav_

CamScanner

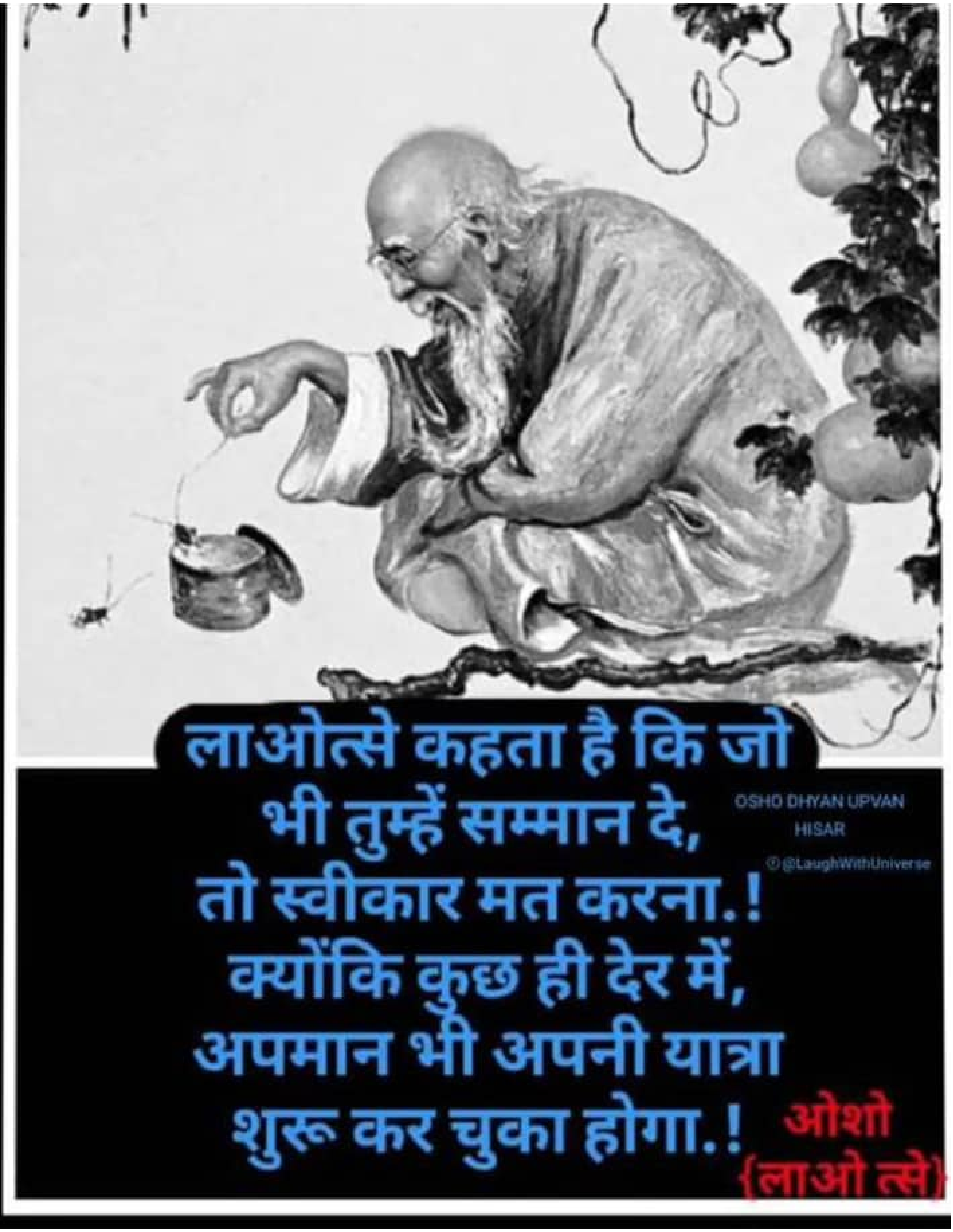
लाओत्से कहता है कि जो
भी तुम्हें सम्मान दे,
तो स्वीकार मत करना.!
क्योंकि कुछ ही देर में,
अपमान भी अपनी यात्रा
शुरू कर चुका होगा.!
ओशो
{लाओ त्से}
OSHO DHYAN UPVAN
HISAR
@LaughWithUniverse

CamScanner

2:18 pm 0 KB/s 34%

#चीन में लाओत्से के समय में ऐसी प्रचलित धारणा थी। धारणा ठीक भी है कि आदमी के शरीर में नौ छेद हैं; उन्हीं नौ छेदों से जीवन प्रवेश करता है। और उन्हीं नौ छेदों से जीवन बाहर जाता है। और चार अंग हैं। सब मिला कर तेरह। दो आंखें, दो नाक के स्वर, मुंह, दो कान, जननेंद्रिय, गुदा, ये नौ तो छिद्र हैं। और चार--दो हाथ और दो पैर। ये तेरह जीवन के भी साथी हैं और यही तेरह मृत्यु के भी साथी हैं। और यही तेरह तुम्हें जीवन में लाते हैं और यही तेरह तुम्हें जीवन से बाहर ले जाते हैं। तेरह का मतलब यह पूरा शरीर। इन्हीं से तुम भोजन करते हो; इन्हीं से तुम जीवन पाते हो; इन्हीं से उठते-बैठते-चलते हो; ये ही तुम्हारे स्वास्थ्य का आधार हैं। और ये ही तुम्हारी मृत्यु के भी आधार होंगे। क्योंकि जीवन और मृत्यु एक ही चीज के दो नाम हैं। इन्हीं से जीवन तुम्हारे भीतर आता, इन्हीं से बाहर जाएगा। इन्हीं से तुम शरीर के भीतर खड़े हो। इन्हीं के साथ शरीर टूटेगा, इनके द्वारा ही टूटेगा।

यह बड़ी हैरानी की बात है, ये ही तुम्हें सम्हालते हैं, ये ही तुम्हें मिटाएंगे। भोजन तुम्हें जीवन देता है, शक्ति देता है। और भोजन की शक्ति के ही माध्यम से तुम अपने भीतर की मृत्यु को बड़ा किए चले जाते हो। भोजन ही तुम्हें बुढ़ापे तक पहुंचा देगा, मृत्यु तक पहुंचा देगा। आंख से, कान से, नाक से, जीवन की श्वास भीतर आती है, उन्हीं से बाहर जाती है। नौ द्वार और चार अंग।

लाओत्से कहता है, तेरह ही जीवन के साथी, तेरह ही मौत के साथी। ये तेरह ही लाते हैं, ये तेरह ही ले जाते हैं। अगर तुम सजग हो जाओ तो तुम चौदहवें हो। इन तेरह में तुम नहीं हो; इन तेरह के पार हो।

इस तेरह की संख्या के कारण चीन में, और फिर धीरे-धीरे सारी दुनिया में, तेरह का आंकड़ा अपशकुन हो गया। वह चीन से ही फैला। पश्चिम में जहां तेरह का आंकड़ा अपशकुन है उनको पता भी नहीं कि क्यों अपशकुन है। उसका जन्म चीन में हुआ। उस सुपरस्टीशन की पैदाइश चीन में हुई।

तो आज तो हालत ऐसी है कि अमरीका में होटलें हैं जिनमें तेरह नंबर का कमरा नहीं होता; तेरह नंबर की मंजिल भी नहीं होती। क्योंकि कोई ठहरने को तेरह नंबर की मंजिल पर राजी नहीं है। तो बारह के बाद

CamScanner

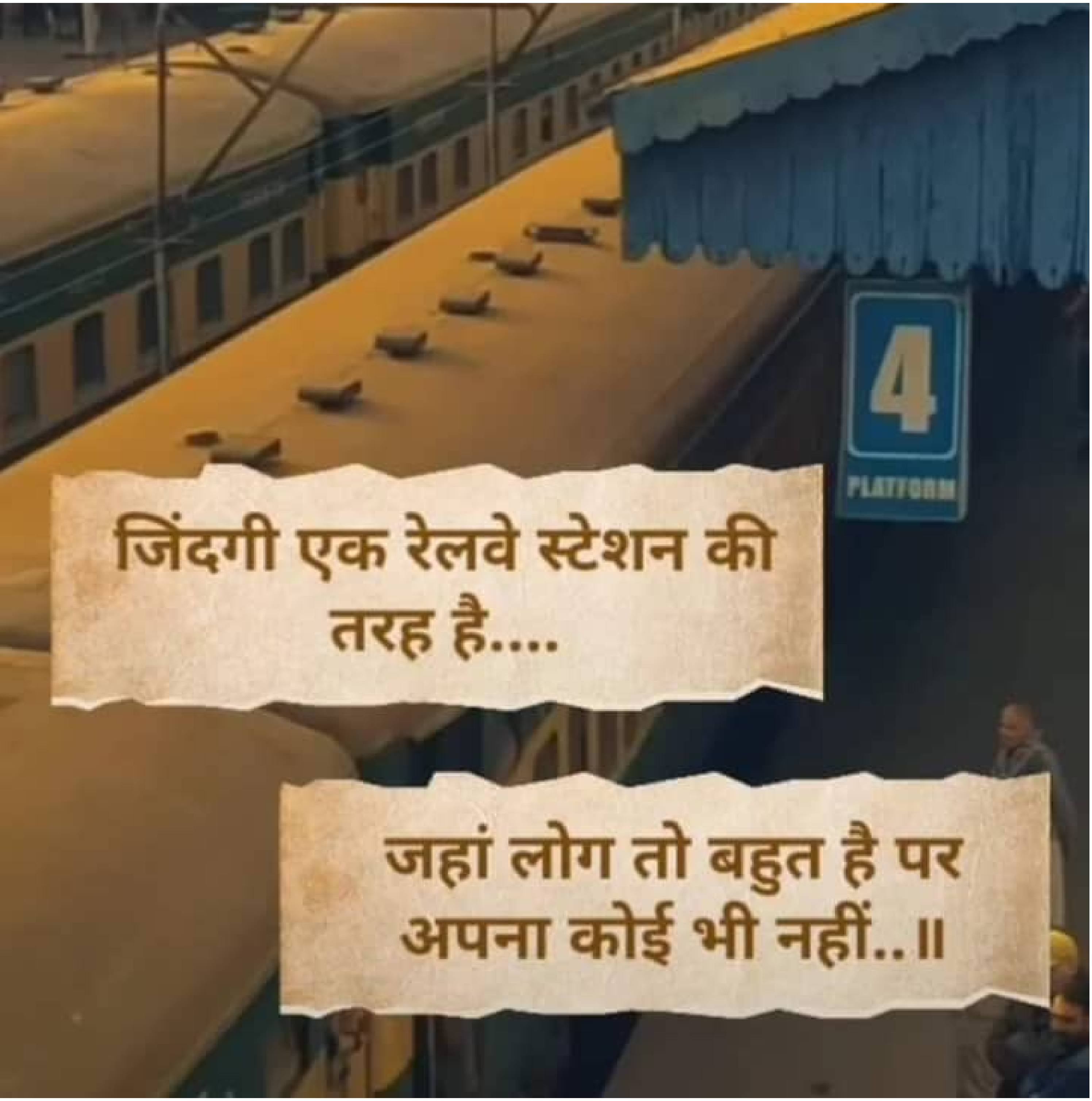

CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य

Chetna Kanchan Bhagat · 5h

ओशो से किसी ने कहा "आप अच्छे है मगर आप के आसपास कुछ बुरे लोग आपको घेरे है"

ओशो ने उसे पूछा " ऐसे बुरे लोगों की सांस चल रही है?"
उस आदमी ने कहा "हां"

ओशो ने कहा " इसका मतलब है ईश्वर चाहता है वह कितना भी बुरा हो, वह जिंदा रहना चाहिए। अगर ईश्वर नहीं चाहता तो वह एक सांस भी नहीं ले सकता। जब ईश्वर को उसके अस्तित्व से दिक्कत नहीं तो मुझे क्यों होनी चाहिए? यह सारा तुम्हारे अहम् का खेल है, इसे पहचानो।"

CamScanner

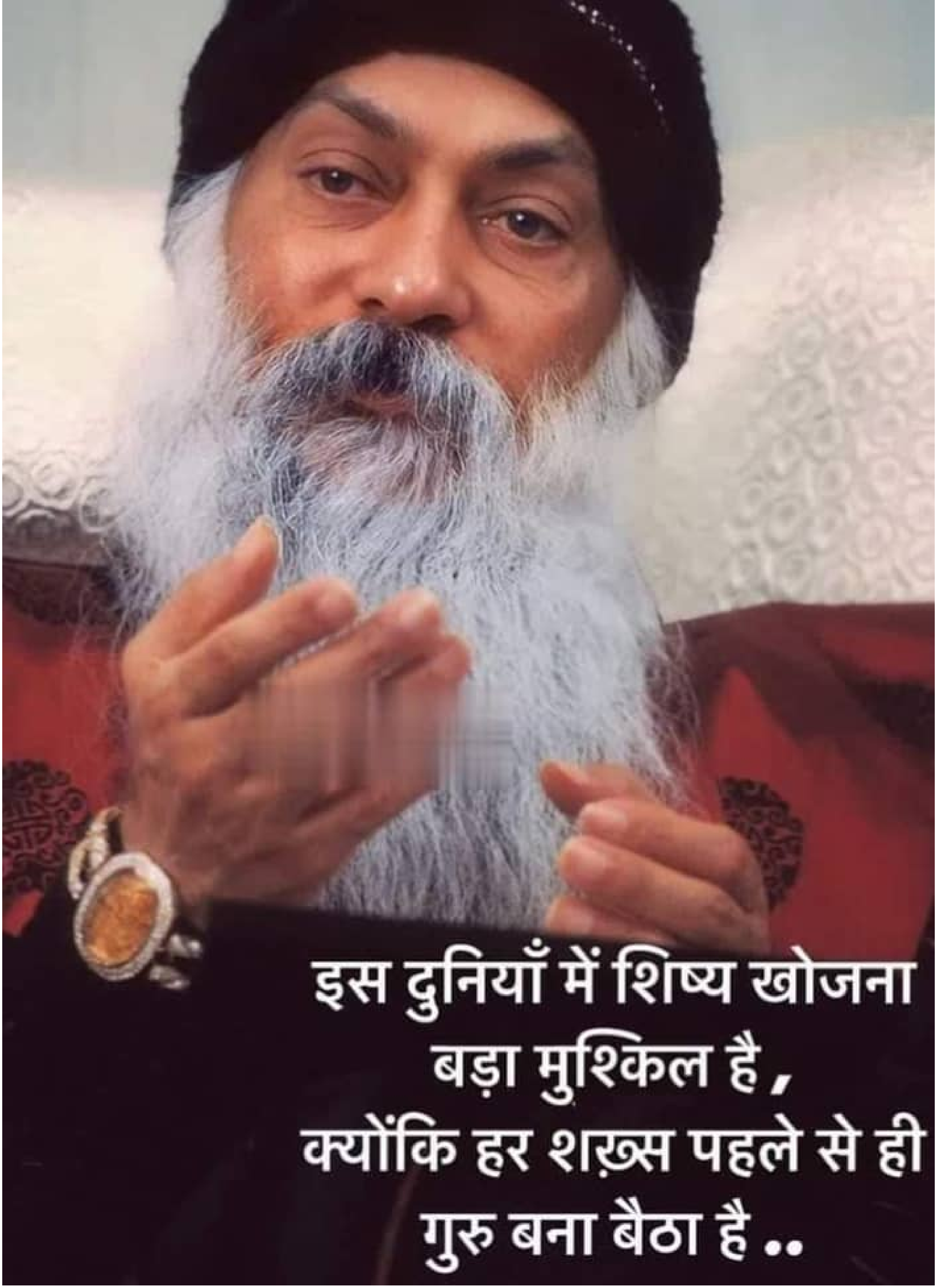

CamScanner

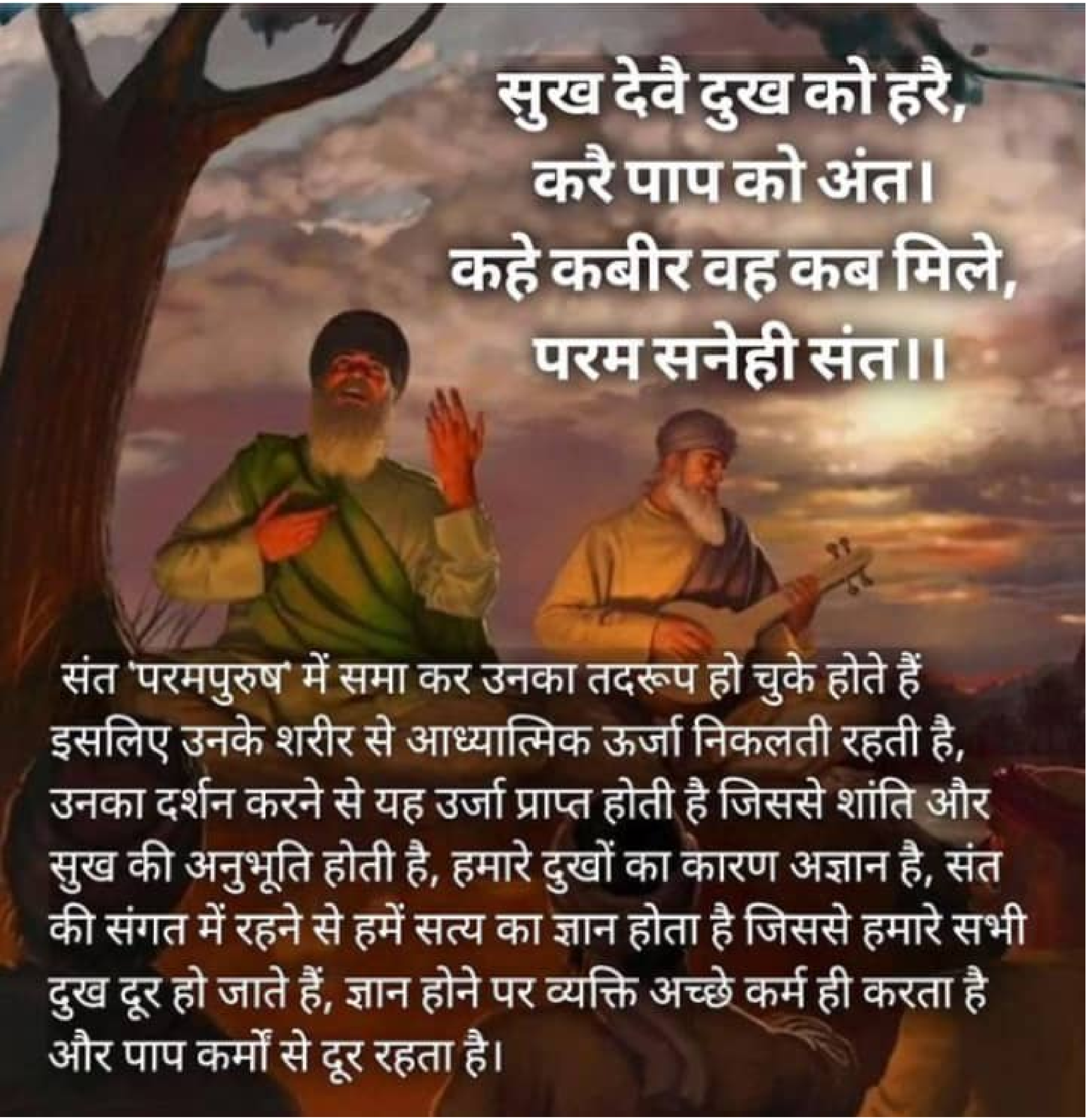

CS CamScanner

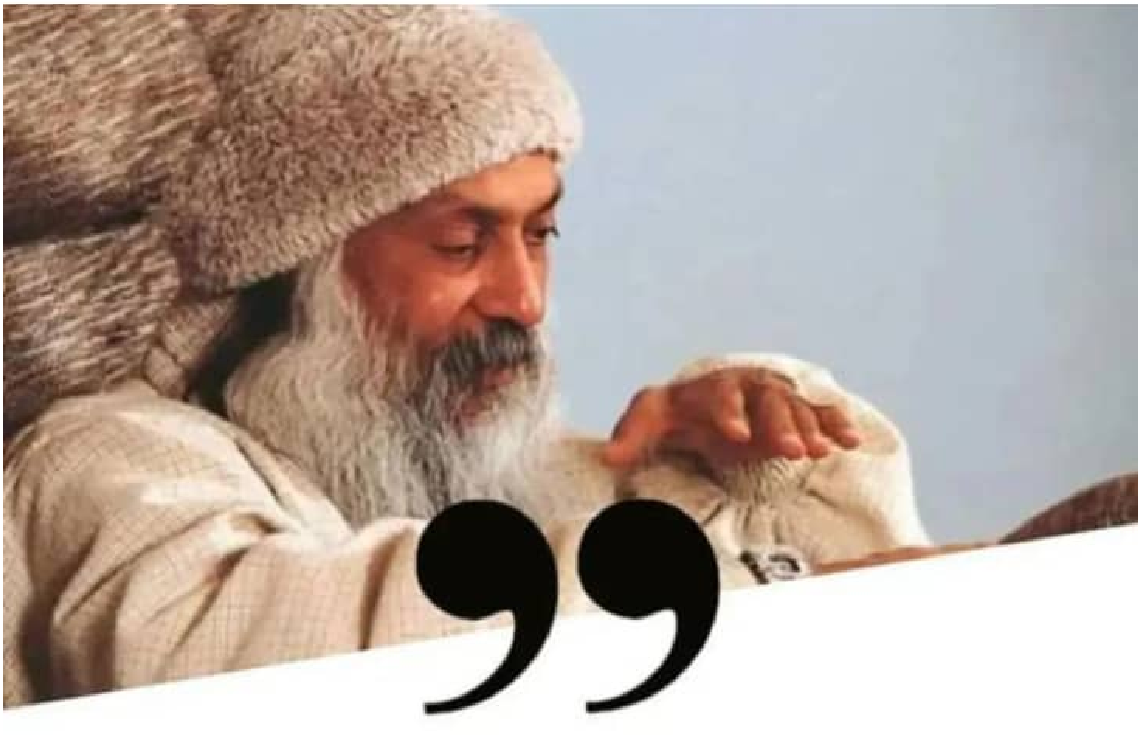

लोगो के सामने उतना ही झुको जितनी आवश्यकता हैं,
गुलाम मत बनो, हमेशा अपने भाग्य के स्वामी बने रहो।

_Osho

CamScanner

CamScanner

CS CamScanner

10:29 am 0 KB/s VoLTE 4G 60%

शिष्य के सामने किया। जिसके सामने फूल गया, उसने कुछ कहा, फूल के संबंध में कुछ व्याख्या की। फूल घूमता रहा। और आखिर में एक शिष्य के सामने गया और उस शिष्य ने कुछ भी न कहा, वह सिर्फ मुस्कुराया, हंसा। और कहते हैं, इसी घटना में झेन संप्रदाय का जन्म हुआ, ध्यान संप्रदाय का जन्म हुआ।

यह बात बहुत महत्वपूर्ण नहीं है कि वह व्यक्ति गौतम बुद्ध था। कोई और भी हो सकता था। कृष्ण हो सकते थे, क्राइस्ट हो सकते थे, कपिल हो सकते थे, कणाद हो सकते थे, कबीर हो सकते थे, कोई भी हो सकता था; शर्त एक ही है कि जो भी हो, वह जागा हुआ होना चाहिए।

और ध्यान संप्रदाय का जन्म क्यों हुआ उस एक के हंसने पर? क्योंकि जब बुद्ध ने इस फूल को औरों के सामने किया, तो वे भाषा में बोले, उन्होंने कुछ कहा, अपना— अपना ज्ञान दिखलाया;फूल के संबंध मे कुछ कहा ले किन फूल से चूक गये। फूल तो तथ्य है, शब्दातीत है, कुछ कहने का उपाय नहीं है। आश्चर्यचकित हो सकते हो फूल को देखकर, विस्मय—विमुग्ध हो फूल को देखकर, आदमg हो सकते हो फूल को देखकर, फूल के सौदर्य को देखकर ख्वब्ध हो सकते हो, आंसू झर सकते हैं आनंद के, कि हंसी फूट सकती है, मगर शब्द, शब्द बहुत ओछा है, शब्द बहुत छोटा है।

जिस शिष्य के पास फूल आया और ठहर गया, वह था महाकाश्यप। वह सिर्फ मुस्कुराया, फिर खिलखिलाकर हंसा। और बुद्ध ने वह फूल महाकाश्यप को दे दिया। और कहा कि जो मैं कह सकता था, वह मैंने औरों से कह दिया है, जो मैं नहीं कह सकता, वह मैं तुझे दिए दे रहा हूं।

परम घटना मौन में घटती है। शिष्य और गुरु के बीच शब्दों का आदान—प्रदान नहीं होता, ऐसा नहीं, होता है, लेकिन वह असली आदान—प्रदान नहीं। एक और आदान—प्रदान है जो चुप—चुप होता है, जो बिन बोले होता है। शांडिल्य जिस शिष्य से ये सूत्र कह रहे हैं, या जिन शिष्यों से ये सूत्र कह रहे हैं, उनसे उनका मौन का नाता है। उन शिष्यों ने मौन में बहुत बार उनसे प्रश्न पूछे हैं, और बहुत बार उनके उत्तर पाए हैं। यहा मेरे पास वे लोग है, जो मौन में पूछते हैं, और मौन में पाते भी हैं। मौन में पूछने वाला ही पाता है।

CamScanner

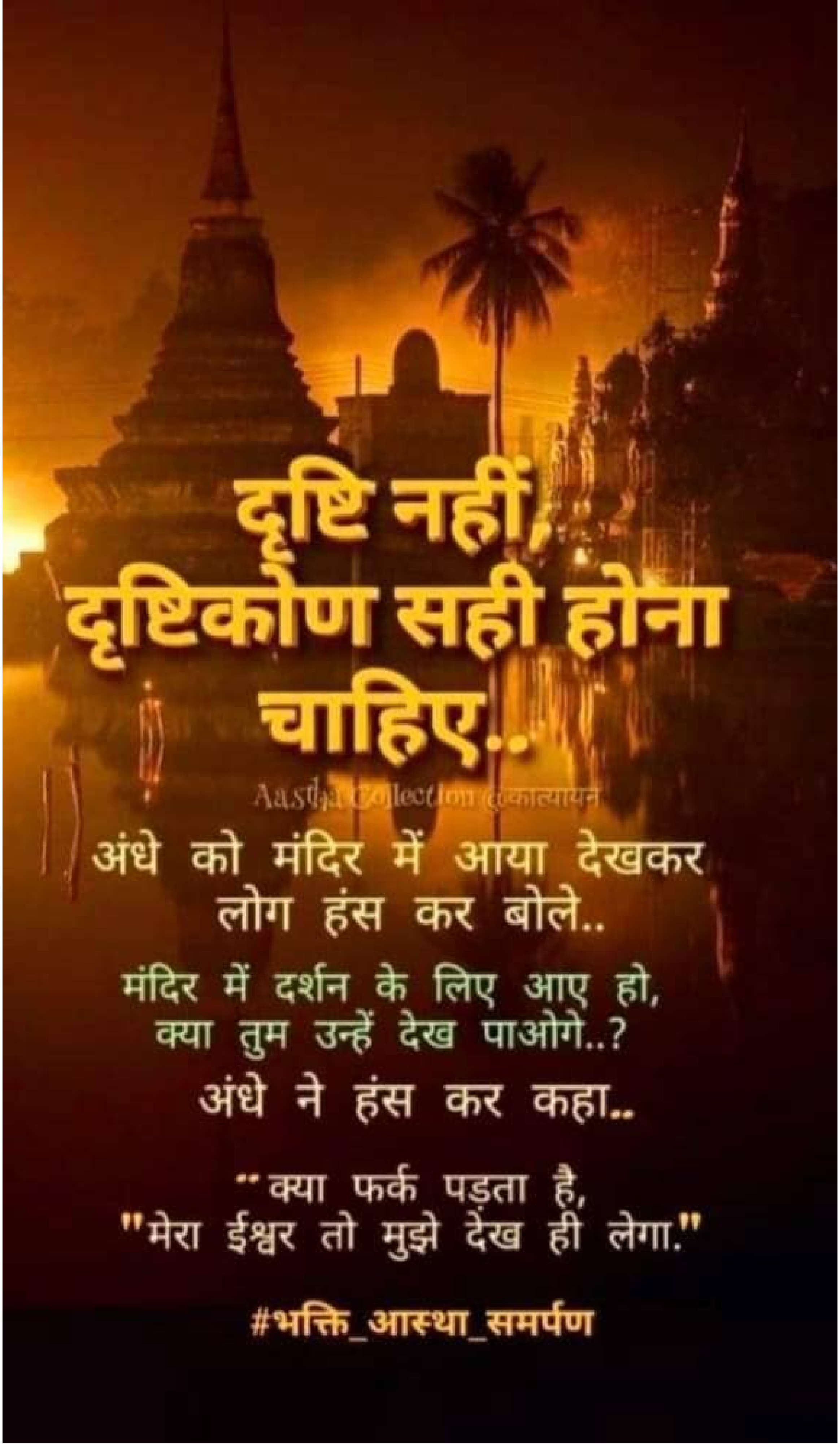

दृष्टि नहीं,
दृष्टिकोण सही होना
चाहिए..
अंधे को मंदिर में आया देखकर
लोग हंस कर बोले..
मंदिर में दर्शन के लिए आए हो,
क्या तुम उन्हें देख पाओगे..?
अंधे ने हंस कर कहा..
"क्या फर्क पड़ता है,
"मेरा ईश्वर तो मुझे देख ही लेगा."
#भक्ति_आस्था_समर्पण

CamScanner

"मनुष्य जैसा भाव करता
है, वैसा ही हो जाता है।
उसके ही भाव उसका
सृजन करते हैं। वही अपना
भाग्य विधाता
है..
oshoduniya.com
ओशो

CamScanner

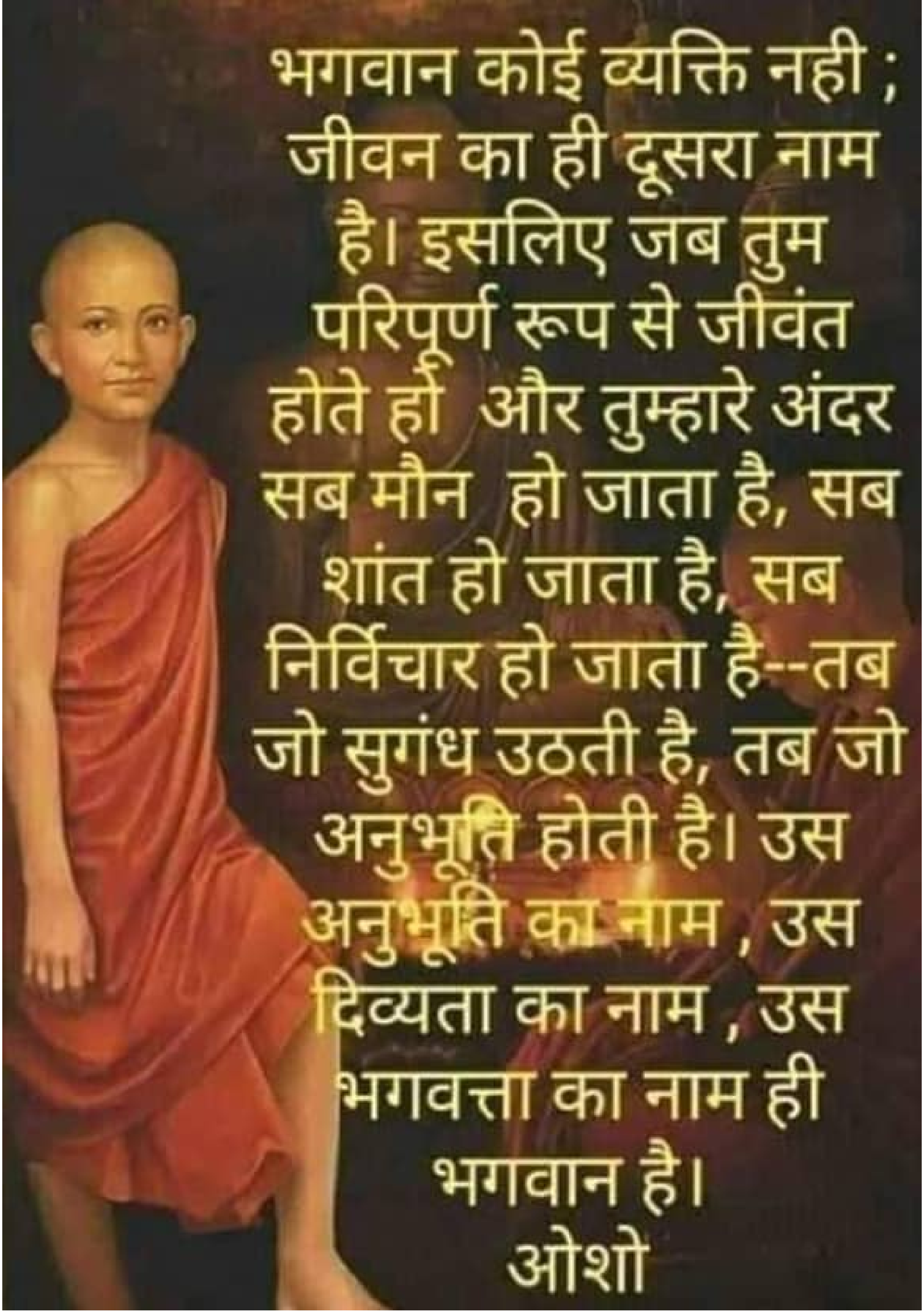
भगवान कोई व्यक्ति नही ;
जीवन का ही दूसरा नाम
है। इसलिए जब तुम
परिपूर्ण रूप से जीवंत
होते हो और तुम्हारे अंदर
सब मौन हो जाता है, सब
शांत हो जाता है, सब
निर्विचार हो जाता है--तब
जो सुगंध उठती है, तब जो
अनुभूति होती है। उस
अनुभूति का नाम , उस
दिव्यता का नाम , उस
भगवत्ता का नाम ही
भगवान है।
ओशो

CamScanner

श्रीहरिः

बिना मनके भी तीर्थ-स्नान, भगवन्नाम जप तथा संत-दर्शनका पवित्र फल होता है। तुम मनको सदाके लिये प्रभुके मधुरतम स्मृति-सागरमें डुबा देना चाहते हो, सो तो सर्वोत्तम है। प्रभुके पावन चरणकमल ही सर्वश्रेष्ठतम तीर्थ है।

बिना किसी अन्य स्मृतिके तथा बिना किसी आशा-आकांक्षाके एवं बिना निज-सुखकी किसी चाहके यदि कोई प्रभुके चरण-सुधा-सागरमें अपने मनको निमग्न कर दे तो उसके समान न तो कोई सुखी है, न सौभाग्यशाली है; न पुण्यवान् है, न साधक है और न प्रेमी ही है। अतएव तुम्हारी यह चाह तो बहुत उत्तम है।

भगवान् की बड़ी ही कृपा है। उनकी कृपाका तो कहीं कोई अन्त ही नहीं है। वे हमारी ओर, हमारे कर्मोंकी ओर देखते ही नहीं; सदा सहज कृपा ही बरसाते रहते हैं। हम यदि इसे मान लें तो हमारे प्रत्येक कार्यको वे अपनी पूजा मान लेते हैं।

(अमृत निर्झर पुस्तक, परम श्रद्धेय श्रीभाईजी)

CamScanner

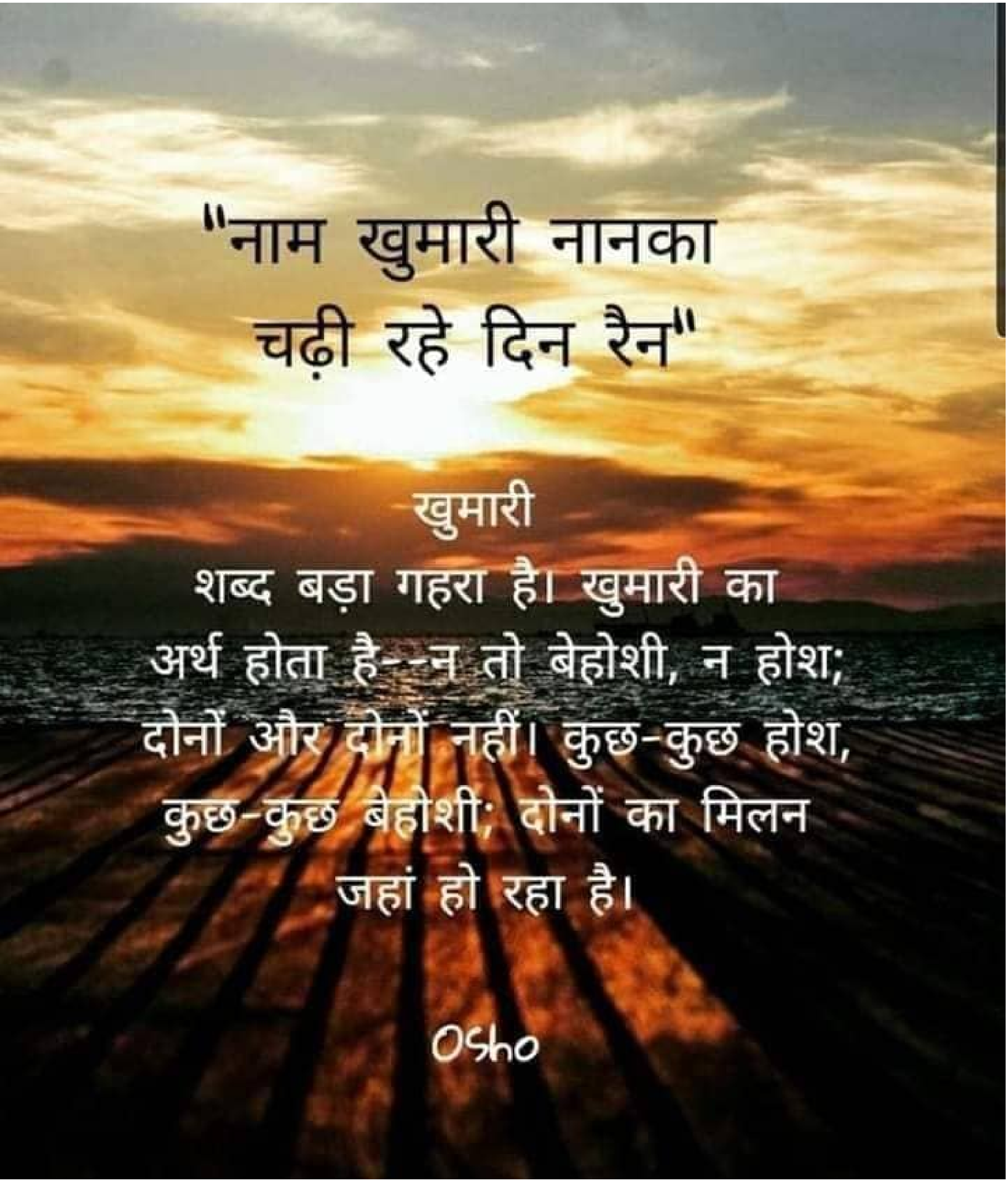
"नाम खुमारी नानका
चढ़ी रहे दिन रैन"
खुमारी
शब्द बड़ा गहरा है। खुमारी का
अर्थ होता है--न तो बेहोशी, न होश;
दोनों और दोनों नहीं। कुछ-कुछ होश,
कुछ-कुछ बेहोशी; दोनों का मिलन
जहां हो रहा है।
Osho

CamScanner

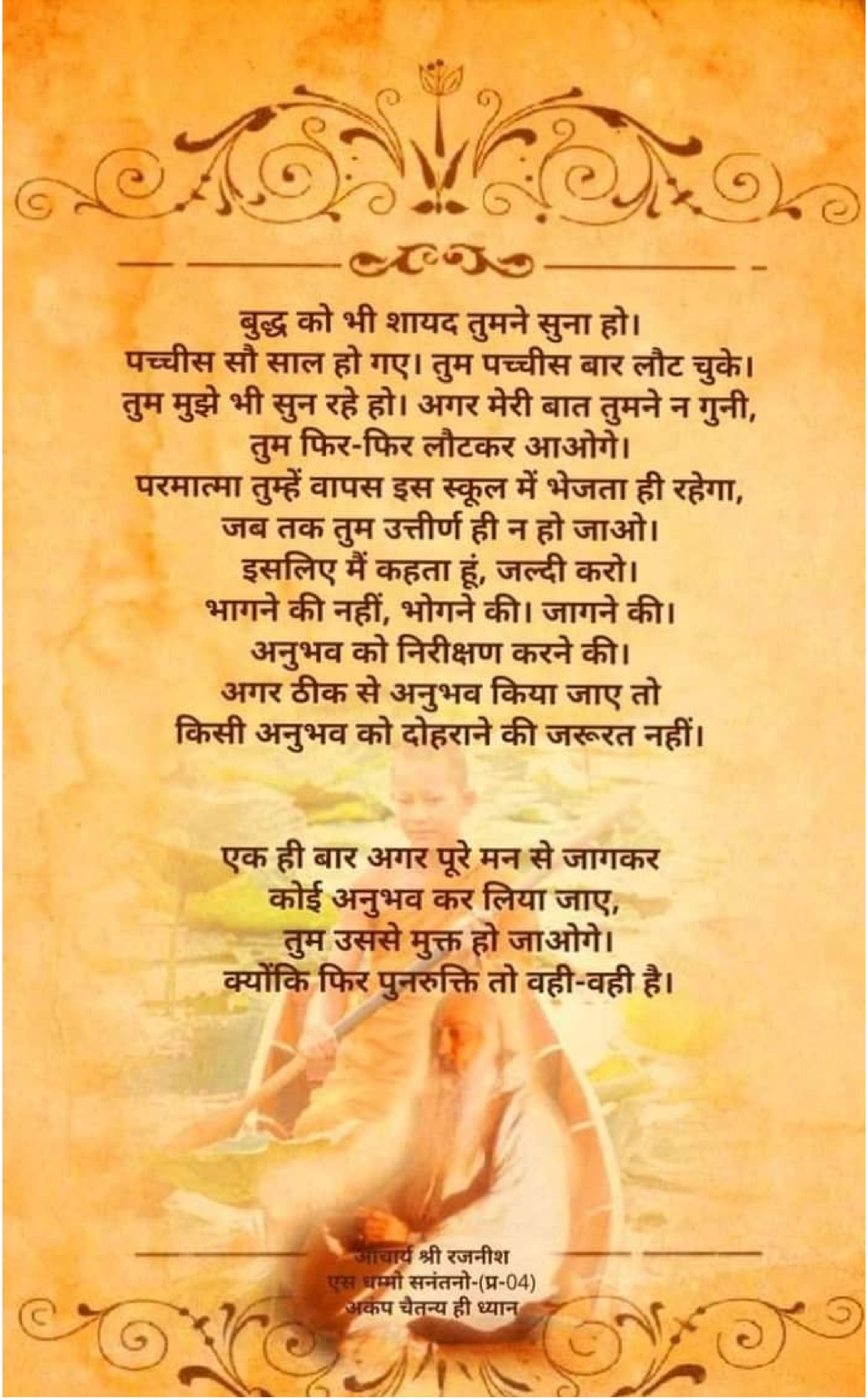
बुद्ध को भी शायद तुमने सुना हो।
पच्चीस सौ साल हो गए। तुम पच्चीस बार लौट चुके।
तुम मुझे भी सुन रहे हो। अगर मेरी बात तुमने न गुनी,
तुम फिर-फिर लौटकर आओगे।
परमात्मा तुम्हें वापस इस स्कूल में भेजता ही रहेगा,
जब तक तुम उत्तीर्ण ही न हो जाओ।
इसलिए मैं कहता हूं, जल्दी करो।
भागने की नहीं, भोगने की। जागने की।
अनुभव को निरीक्षण करने की।
अगर ठीक से अनुभव किया जाए तो
किसी अनुभव को दोहराने की जरूरत नहीं।
एक ही बार अगर पूरे मन से जागकर
कोई अनुभव कर लिया जाए,
तुम उससे मुक्त हो जाओगे।
क्योंकि फिर पुनरुक्ति तो वही-वही है।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-04)
अकंप चैतन्य ही ध्यान

CamScanner

#-ताओ उपनिषद-प्र-48
ओशो
आत्मा को जिसे जानना हो,
उसे अहंकार से छुटकारा चाहिए। अहंकार से छुटकारा, अर्थात दूसरे को प्रभावित करने की वासना से छुटकारा। और ध्यान रहे, दूसरे को प्रभावित करना हिंसा है। दूसरा प्रभावित हो जाए, यह दूसरी बात है। दूसरे को प्रभावित करना हिंसा है। दूसरे को ढालने की कोशिश, बनाने की कोशिश, आदर्श बनाने की कोशिश, अच्छा बनाने की कोशिश भी हिंसा है।

CamScanner

परमात्मा के पास बैठिये इतने गहरे भाव से कि आँसू आ जाएँ, किसी प्रकार की कोई आकांक्षा या मांग न रखें, परमात्मा का होना ही आशीर्वाद है मांगना नहीं पड़ता उनके पास होने से ही सब मिल जाता है। जैसे फूल के पास जाओ खुशबू अपने आप ही मिलने लगती है परमात्मा ने सारी व्यवस्था पहले ही की हुई है मांगने की जरूरत ही नही है बस उनके पास जाना है, उनकी शरणागति स्वीकार कर लेना उनके बताये मार्ग पर चलना हमारा कर्तव्य बस इतना ही है बाकी सब कुछ स्वयं ही हो जाता है। ***Osho***

CamScanner

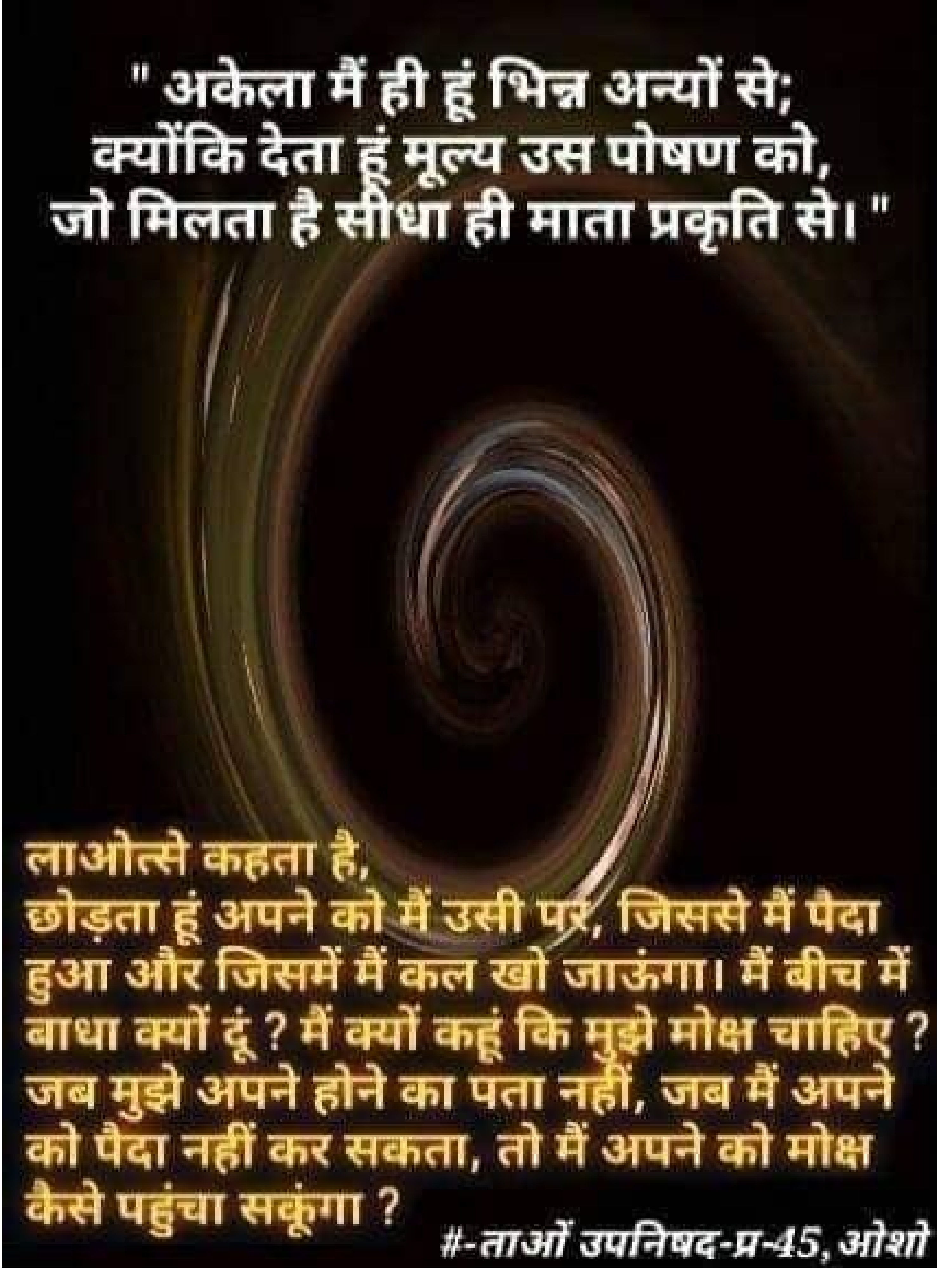
" अकेला मैं ही हूं भिन्न अन्यों से;
क्योंकि देता हूं मूल्य उस पोषण को,
जो मिलता है सीधा ही माता प्रकृति से। "
लाओत्से कहता है,
छोड़ता हूं अपने को मैं उसी पर, जिससे मैं पैदा
हुआ और जिसमें मैं कल खो जाऊंगा। मैं बीच में
बाधा क्यों दूं ? मैं क्यों कहूं कि मुझे मोक्ष चाहिए ?
जब मुझे अपने होने का पता नहीं, जब मैं अपने
को पैदा नहीं कर सकता, तो मैं अपने को मोक्ष
कैसे पहुंचा सकूंगा ?
#-ताओ उपनिषद-प्र-45, ओशो

CamScanner

आदमी यूं ही जीवन गंवाता है
और सोचता यह है कि कैसा दुर्भाग्य है,
कैसा अभागा हूं,
किन अभिशप्त घड़ियों में पैदा हुआ;
कैसे थे ग्रह-नक्षत्र मेरे खराब?
न ग्रह-नक्षत्र खराब थे, न घडियां बुरी थीं,
तुम उतनी ही क्षमता लेकर पैदा होते हो
जितना कोई भी बुद्ध कभी पैदा हुआ है,
लेकिन क्षमता की तलाश नहीं करते
और दौड़ते फिरते हो बाहर,
पूछते हो औरों से अपना पता।
अपना पता पूछना हो तो आंख बंद करो।
अपना पता पूछना हो तो विचार बंद करो।
अपना पता पूछना हो तो
मारो गहरे से गहरे डुबकी अपने में।
उतरो भीतर!
वहीं से रसधार मिलेगी
ध्यान का इतना ही अर्थ है।
निर्विचार हो जाने की कला।
और जिसके हाथ में निर्विचार होने की कला आ गयी,
सोने की कुंजी आ गयी,
जो सब ताले खोल दे।

☆ साहिब मिले साहिब भये, प्रवचन~३, ओशो ☆

CamScanner

osho universal
dhaval parmar

तुम सिर्फ **साक्षी** हो, वह तुम्हारा स्वरूप है। न तुम कर्ता हो—शरीर से कर्म होता है; न तुम विचारक हो—मन से विचार होते हैं; न तुम भावुक हो—हृदय से भावनाएं होती हैं; तुम **साक्षी** हो—भावों के, विचारों के, कृत्यों के। ये तुम्हारी तीन अभिव्यक्तियां हैं। और इन तीनों के बीच में तुम्हारा **साक्षी** है। उस **साक्षी** के सूत्र को पकड़ लो। **साक्षी** के सूत्र को पकड़ते ही संन्यास का फूल खिल जाता है। वह फूल ही मोक्ष है।

ओशो : क्रान्ति-सूत्र : साक्षी भाव

CamScanner

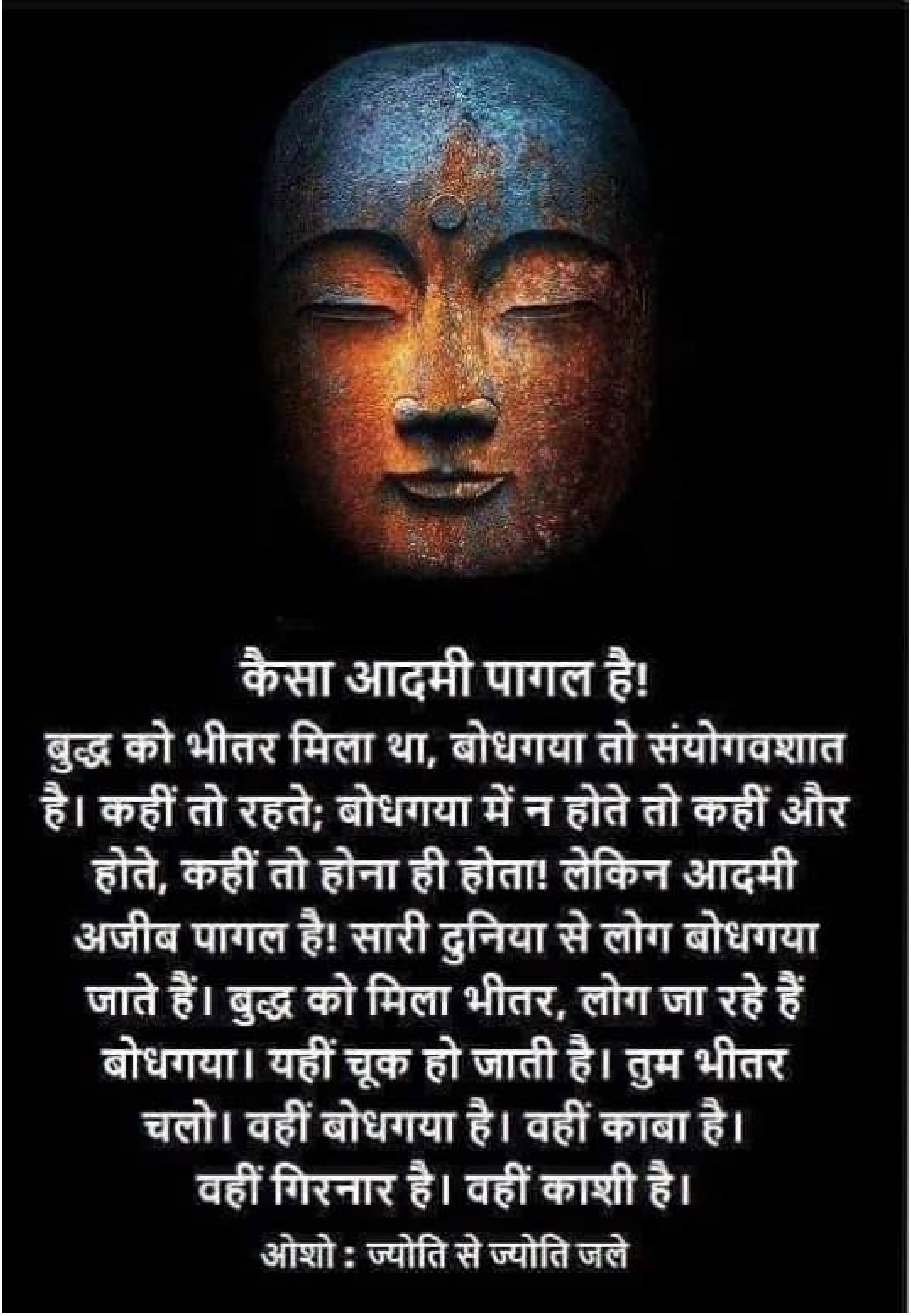

कैसा आदमी पागल है!
बुद्ध को भीतर मिला था, बोधगया तो संयोगवशात
है। कहीं तो रहते; बोधगया में न होते तो कहीं और
होते, कहीं तो होना ही होता! लेकिन आदमी
अजीब पागल है! सारी दुनिया से लोग बोधगया
जाते हैं। बुद्ध को मिला भीतर, लोग जा रहे हैं
बोधगया। यहीं चूक हो जाती है। तुम भीतर
चलो। वहीं बोधगया है। वहीं काबा है।
वहीं गिरनार है। वहीं काशी है।
ओशो : ज्योति से ज्योति जले

CamScanner

तुम्हारे मंदिर मस्जिद ने न केवल परमात्मा को सिकोड़ कर छोटा कर दिया, तुम्हें सिकोड़ कर छोटा कर दिया। मंदिर जानेवाला हिंदू हो गया। मस्जिद जानेवाला मुसलमान हो गया। काश, हमने परमात्मा को ऐसा देखा होता अगर तुम प्रत्येक वस्तु में परमात्मा को देखते, तो कैसे हिंदू होते, कैसे मुसलमान होता। कैसे एक दूसरे की हत्याएं करते धर्म के नाम अधर्म फैला। मंदिरों मस्जिदों के नाम पर कितना खून बहा:ओशो

CamScanner

7:04 pm 0 KB/s VoLTE 4G 41%

Instagram

1 day ago

oshospirituality

Osho Spirituality

कामवासना का स्वरूप ही यही है कि वह तुमको बार-बार उसी गड्ढे में धकेलता है जहां से तुम निकलते हो ।।

202 likes

oshospirituality Osho Spirituality... more

Add a comment...

2 days ago • **See translation**

ek_akshar
Legend Jxxt • Zaroori Tha (Lo-Fi)

CamScanner

7:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 42%

Instagram

Add a comment...

1 hour ago

ahobhav_

Liked by **ravidahiya_hr_24** and **1 other**

Add a comment...

6 hours ago

CamScanner

7:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 42%

Liked by **ravidahiya_hr_24** and **1 other**

Add a comment...

6 hours ago

artofhindipoets

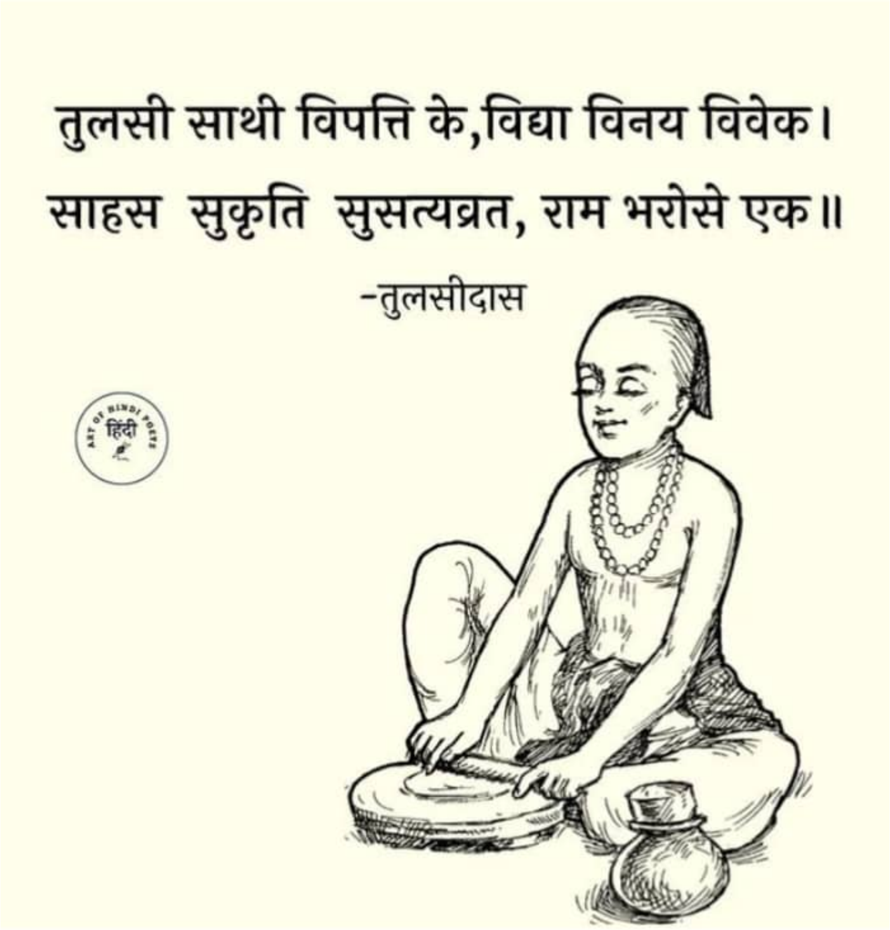

5,908 likes

artofhindipoets श्री तुलसीदास जी 🙏
#artofhindipoets

View all 9 comments

Add a comment...

2 days ago • **See translation**

CamScanner

6:22 pm 0 KB/s VoLTE 4G 44%

Munabai Makvana · 4h ·

❤️ सिर्फ बुद्ध जैसा व्यक्ति बेहोश नहीं मरता
ध्यान मृत्यु का अनुभव है--स्वेच्छा से। ❤️
❤️मृत्यु तो आती ही है, लेकिन तब ध्यान का अनुभव नहीं हो पाएगा। मृत्यु तो कई बार आई है...कितनी बार हम मरे नहीं! और कितनी बार अभी हम मरेंगे नहीं! मरते ही हम रहेंगे, क्योंकि जीवेषणा और कुछ नहीं करवा सकती--मृत्यु और जन्म, मृत्यु और जन्म, मृत्यु और जन्म! जीवेषणा थका डालती है...और जीने का काम तो पूरा हो नहीं पाता, जीवन का अनुभव नहीं हो पाता; शरीर चुक जाता है, जीवेषणा नहीं चुकती। फिर जीवेषणा नया शरीर पकड़ लेती है--पकड़ती चली जाती है...और हर बार मरना पड़ता है।
जीवेषणा की ही मृत्यु होती है बार-बार; लेकिन फिर भी वह मरती नहीं--प्रबल है, और बार-बार फिर पुनर्जीवित हो जाती है।
ध्यान में भी वही घटता है जो मृत्यु में, लेकिन मृत्यु में घटता है जबर्दस्ती। इसलिए मृत्यु में लोग बेहोश हो जाते हैं; अधिकतम लोग बेहोश मरते हैं। और जो बेहोश मरता है, उसका दूसरा जन्म निश्चित है; जो होश से मर सकता है, उसका दूसरा जन्म समाप्त हुआ। बेहोश मरते क्यों हैं हम? बेहोश मरना कोई मृत्यु की अनिवार्यता नहीं है। बेहोश मरते हम इसलिए हैं कि जीवन की एक सुरक्षा की व्यवस्था है।
कभी-कभी लोग कहते हैं एक-दूसरे से कि मैं बहुत असह्य दुख भोग रहा हूं। यह बिलकुल झूठ है। क्योंकि असह्य दुख कोई भोगता ही नहीं। असह्य दुख होने के पहले ही आदमी बेहोश हो जाता है। यह बिल्ट-इन, यह व्यक्ति के भीतर सुरक्षा का आयोजन है...जैसे ही सहने की सीमा के पार दुख जाता है कि आप बेहोश हो जाते हैं। असल में बेहोशी का मतलब ही यह है कि दुख सहने की सीमा के पार गया, अब होश में नहीं रहा जा सकता; अब बेहोश होकर ही सहा जा सकता है। इसलिए बेहोश हो जाते हैं।
इसलिए हम ऑपरेशन में बेहोशी का उपयोग करते हैं। सर्जरी में आदमी को पहले बेहोश करते हैं, क्योंकि असह्य दुख बीच में घटित होगा, और उसके लिए बेहोशी दे देनी पहले से ही उचित और उपयोगी है। तो प्रकृति की भी भीतरी सर्जिकल व्यवस्था है. जब भी दुख असह्य होता है, हम बेहोश हो जाते हैं। इसलिए असह्य दुख का अनुभव किसी ने कभी नहीं किया है। जिन दुखों का आपने अनुभव किया है, वे सब सहनीय थे;

CamScanner

11:11 pm 124 KB/s 14%

Instagram

Liked by **osho_guruji** and **1 other**

8 hours ago

osho_divine_eyesight
Piano Peace • Positivity

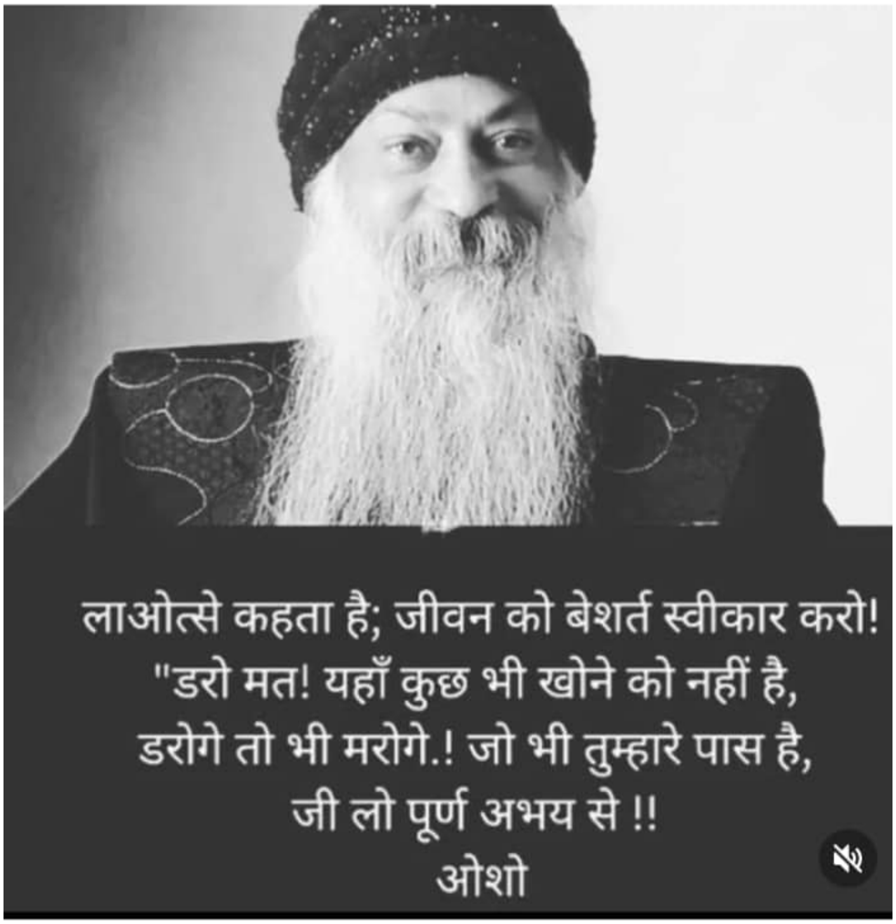

289 likes

osho_divine_eyesight ओशो❤️... more

Add a comment...

1 day ago

dampened_poet

CamScanner

11:10 pm 3 KB/s 4G 14%

Instagram

.... more

View all 4 comments

osho_______12

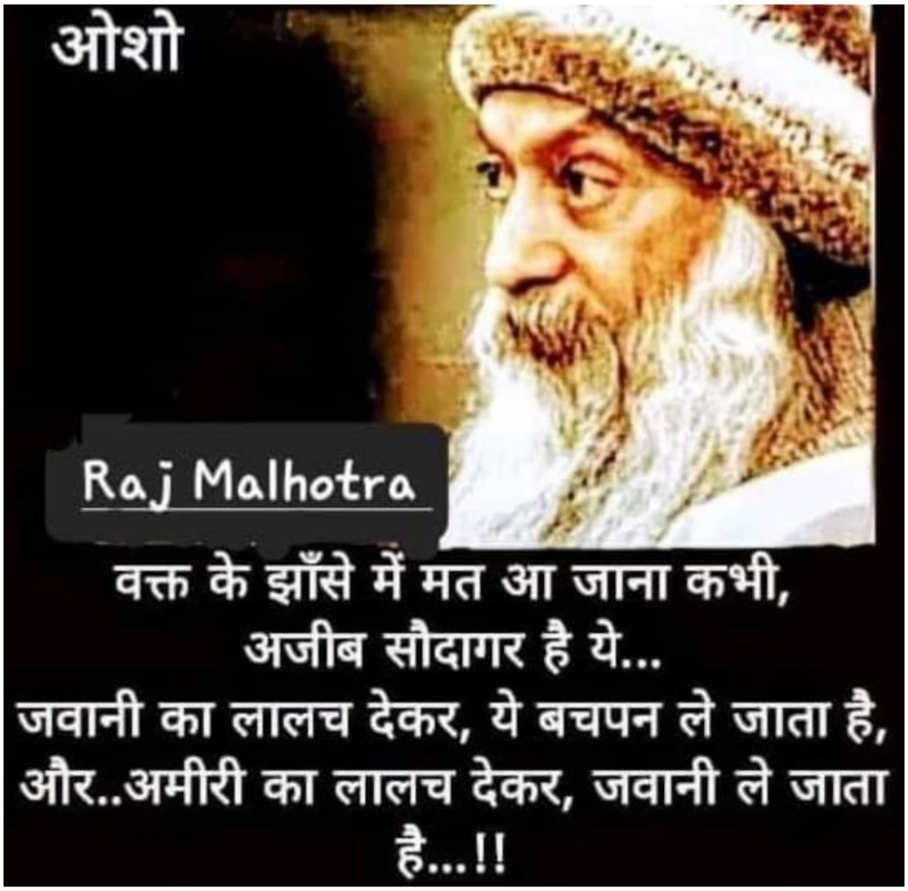

10 likes

Add a comment...

2 days ago

ahobhav_

CamScanner

11:10 pm 0 KB/s 14%

Add a comment...

2 days ago

the_oshoworld

3 likes

Add a comment...

2 days ago

osho_the_great_master

CamScanner

11:10 pm 4 KB/s 14%

Instagram

mayalevyviolinist SPICCATO 7 TIPS {Special Edition} Episode 4... more

View all 26 comments

oshorajneesh__

2,073 likes

oshorajneesh__ Osho 🙏💯🤍🙌
Follow- @oshorajneesh__... more

View all 3 comments

2 days ago

osho_hindi_quotes
PARTHOMATIC • Beej (osho)

CamScanner

11:09 pm 0 KB/s VoLTE 4G 14%

ऐसा होता है प्रेम

3 likes

5 hours ago

osho________12

Liked by osho_the_great_master and 17 others

Add a comment...

3 days ago

mayalevyviolinist

Sponsored

CamScanner

11:09 pm 0 KB/s 14%

70,167 likes

phoenixrisingpoet "Finally Found"... more

View all 217 comments

osho_______12

Liked by **osho5164** and **6 others**

Add a comment...

2 days ago

oshokidiwani

CamScanner

11:08 pm 0 KB/s 14%

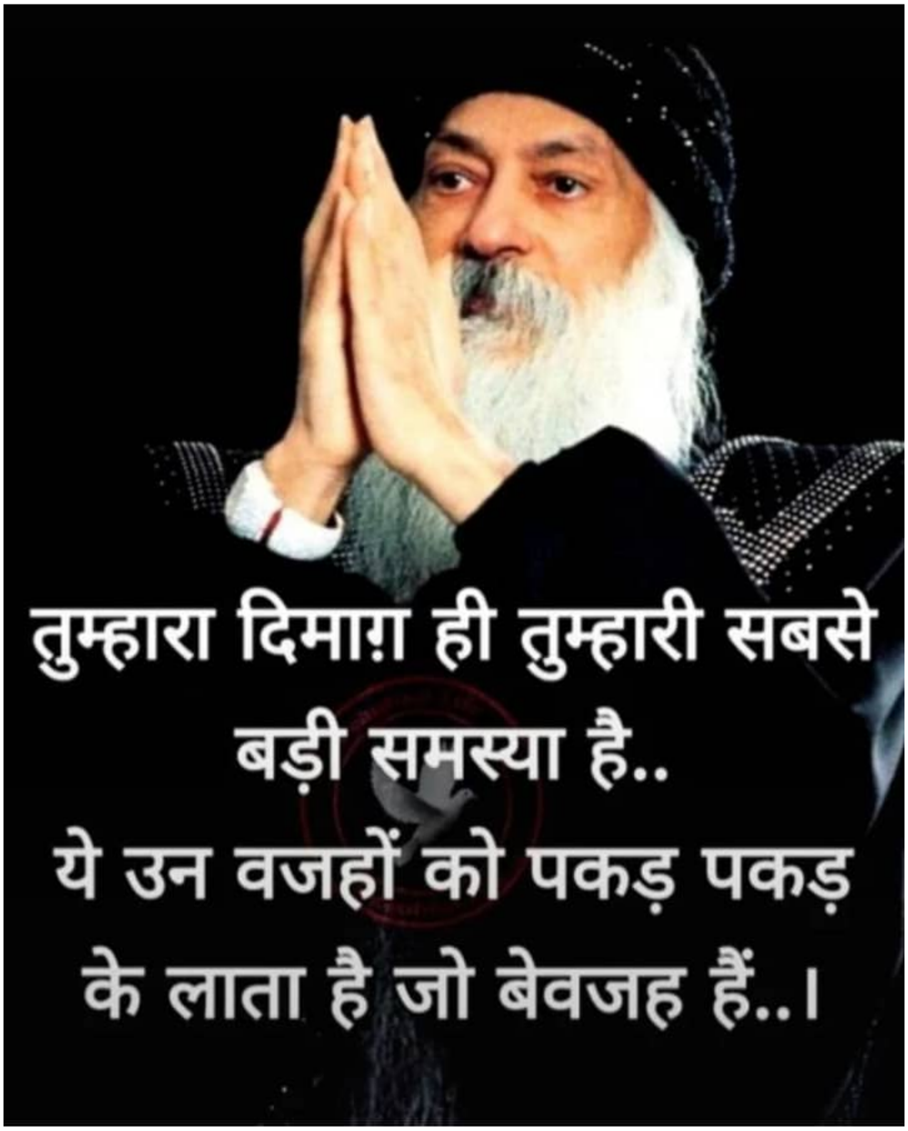

Liked by **osho________12** and **461 others**

2 days ago

Suggested for You

CamScanner

11:08 pm 1 KB/s 14%

35,008 views

ishhfish Ti Amo Italia 🇮🇹

.... more

View all 67 comments

loving_osho

141 likes

loving_osho 💞🌴 ओशो नमन 💞🌴

.... more

View all 6 comments

Add a comment...

14 hours ago

CamScanner

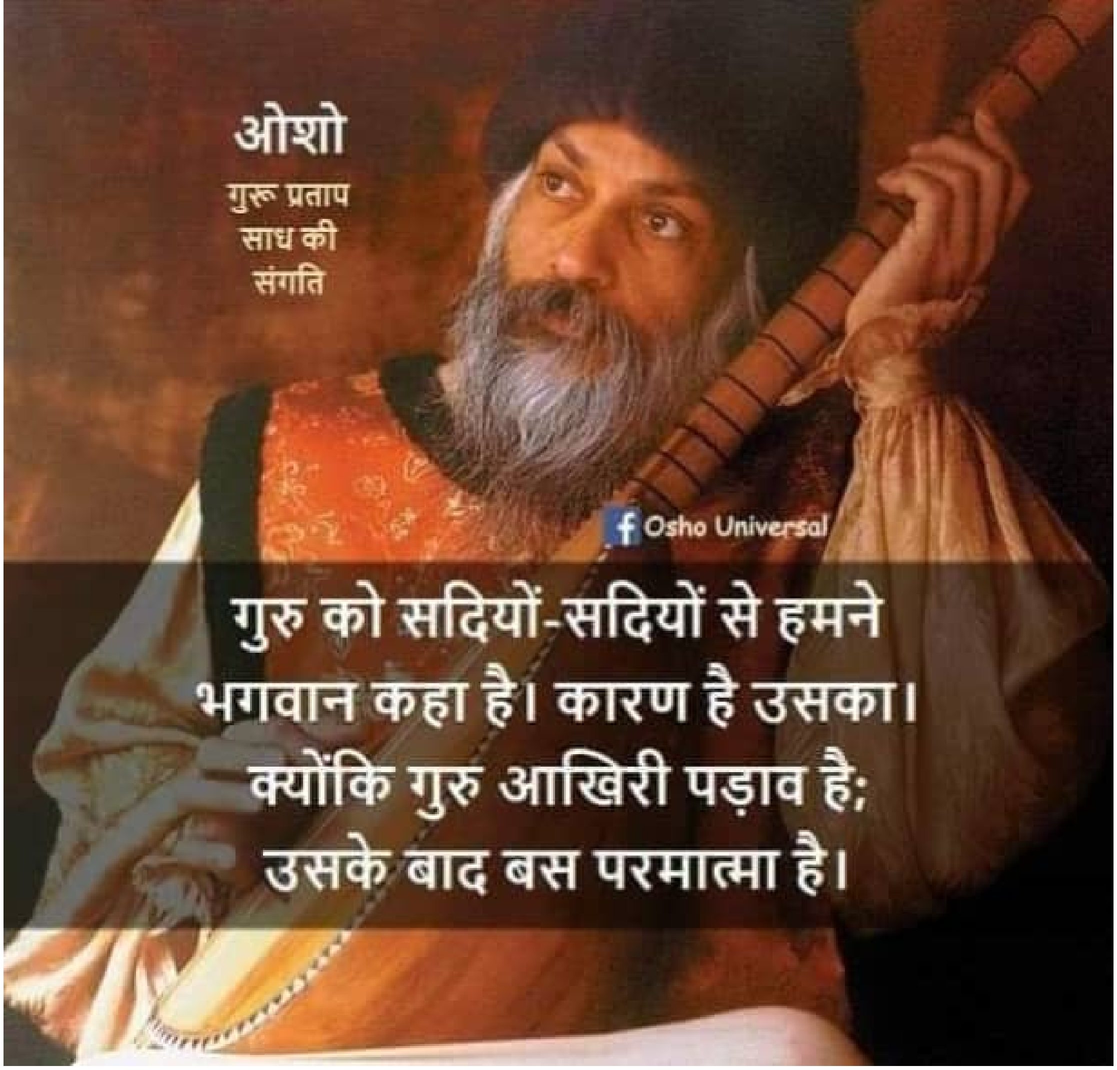
ओशो
गुरू प्रताप
साध की
संगति
Osho Universal
गुरु को सदियों-सदियों से हमने
भगवान कहा है। कारण है उसका।
क्योंकि गुरु आखिरी पड़ाव है;
उसके बाद बस परमात्मा है।

CamScanner

चुप होना हमें आता नहीं। चुप होना बहुत कठिन है। बीमार चित्त के साथ चुप होना एकदम कठिन है। स्वस्थ चित्त के साथ बोलना कठिन हो जाता है। क्योंकि जब तुम शांत हो जाते हो, तब कैसे बोलोगे? जब तुम शांत हो जाते हो, तब एक–एक शब्द को बोलना कठिन हो जाता है।

संतों ने बोला है–करुणा के कारण, लेकिन बोलना बड़ी कठिनाई है। भीतर जो गहन शून्य में खड़े हो गए हैं, वहां एक शब्द बनाना भी मुश्किल है। फिर भी उनकी करुणा है कि वे शब्द बनाते हैं। उनकी करुणा है कि वे जानते हुए शब्द देते हैं कि शब्द से बहुत कुछ होगा नहीं। उनकी करुणा है वे तुम्हारे चेहरे को देखते हैं कि तुमने शब्द तो सुन लिया, अर्थ तुम्हारी समझ में नहीं आया। फिर भी बोले जाते हैं इस आशा में कि शायद संयोग बन जाए, निमित्त बन जाए और कोई जग जाए।

सुनो भइ साधू -प्र #-10 ओशो

CamScanner

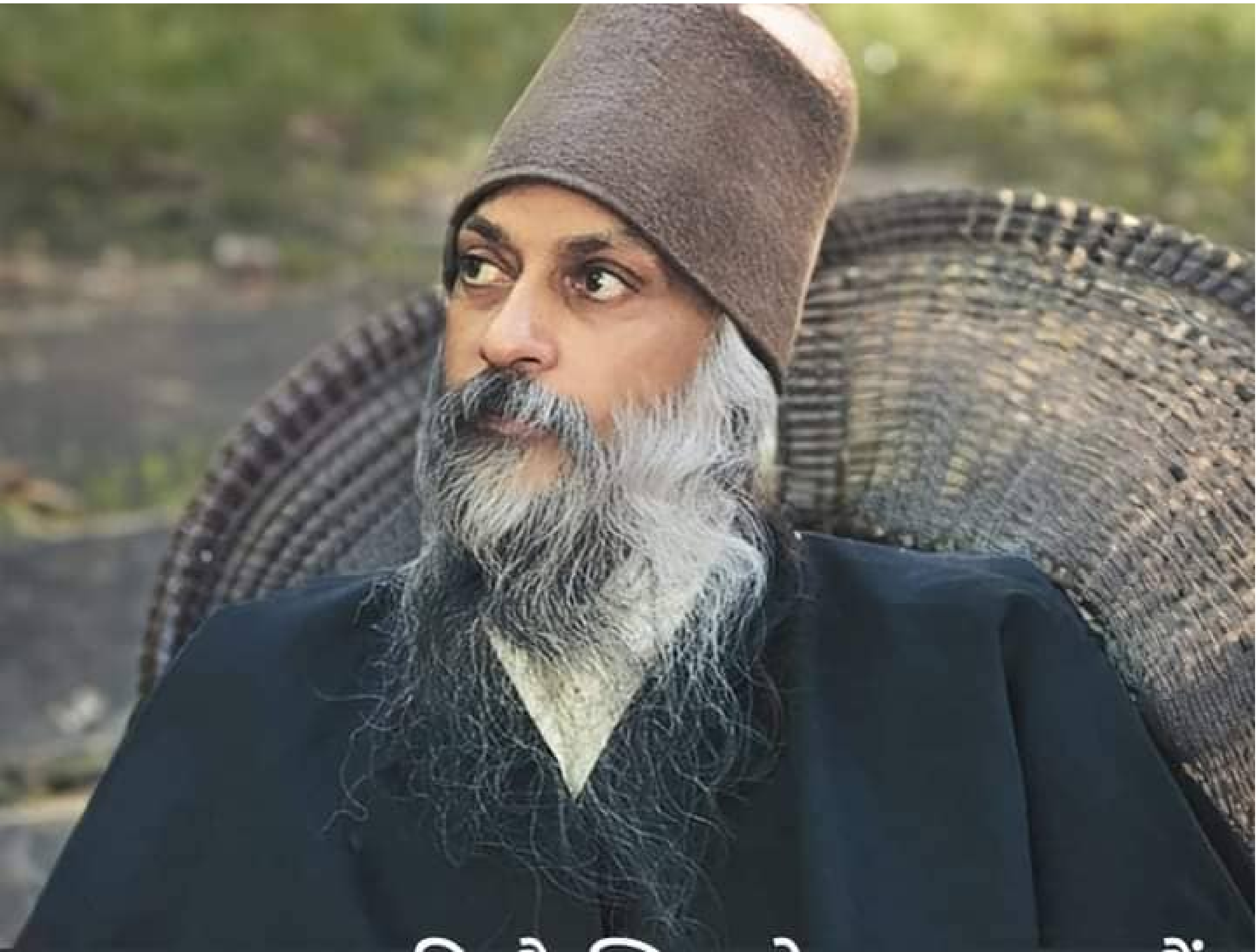

तलाश उसकी है जिससे हम आए हैं और जिसमें हमें जाना है।

ओशो अहोभाव

CamScanner

10:45 pm 0 KB/s VoLTE 4G 21%

अहोभाव

धर्म की खोज मनुष्य की अंतर्निहित खोज है।
वह स्वाभाविक है। जैसे भूख लगती है हर आदमी को, और हर आदमी को प्यास लगती है, और हर आदमी को प्रेम की आकांक्षा जगती है, वैसे ही हर आदमी को प्रभु की आकांक्षा भी जगती है। नाम कुछ भी हों।

एक युवक ने कुछ दिन पहले मुझे आकर कहा कि मुझे परमात्मा में कोई उत्सुकता नहीं है, मैं तो यहा आनद पाने आया हूं। तो मैंने कहा—तुम पागल हो; तुमने परमात्मा का नाम आनंद रखा है। आनंद से चलेगा। नाम का ही भेद है। आनंद कहो। सदा से उपनिषद के ऋषि कहते रहे है —सच्चिदानंद। सत चित आनंद। चलो, तुम आनंद कहो। कोई सत कहता है, कोई चित कहता है, कोई तीनों इकट्ठे जोड़ लेता है। तुम्हें जो नाम देना हो। कोई आकर कहता है कि मुझे शांति की तलाश है। तो तुम शांति कहो। तलाश परमात्मा की है। तलाश अंतिम की है। तलाश उसकी है जिसने सबको सम्हाला है। तलाश उसकी है जिससे हम आए हैं और जिसमें हमें जाना है। तलाश उसकी है कि जो मिल जाए तो जीवन में अर्थ आए, सुगंध आए, नृत्य आए, उत्सव आए। उसीका नाम परमात्मा है। उस तत्व का नाम परमात्मा है जिसके आने से जीवन में अंधेरा टूट जाता है और रोशनी होती है। जिसके आने से उदासी कट जाती है, थकान मिट जाती है, तुम पुनरुज्जीवित हो उठते हो। उस तत्व का नाम है जिसके आने से फिर मृत्यु नहीं घटती, अमृत ही घटता है। शांडिल्य ने कहा न कि जो उसके साथ एक हो जाता है, वह अमृत को उपलब्ध हो जाता है।

तुमने ऐसा आदमी देखा, जो अमृत न चाहता हो? जो न चाहता हो कि मृत्यु के पार भी जीऊं? कि मृत्यु आए और मैं न मरूं? जिसके भीतर शाश्वत के साथ संबंध जोड़ लेने की प्रबल आकांक्षा न हो, ऐसा आदमी देखा? ऐसा आदमी होता ही नहीं।
ओशो

CamScanner

10:42 pm 6 KB/s VoLTE 4G 21%

Murlidhar K. Vyas
Suggested for you · 3d ·

भक्ति क्या है ?

भक्ति "हाथ पैरो से नहीं होती है। वर्ना विकलांग कभी नहीं कर पाते।
भक्ति ना ही आँखो से होती है वर्ना सूरदास जी कभी नहीं कर पाते।

ना ही भक्ति

बोलने सुनने से होती है वर्ना गूंगे , बेहरे "कभी नहीं कर पाते ।

ना ही "भक्ति "धन और ताकत से

होती है वर्ना गरीब और कमजोर कभी नहीं कर पाते ।

भक्ति केवल भाव से होती है,

एक अहसास है भक्ति,
जो हृदय से होकर विचारों में आती है और हमारा प्रेम परमात्मा से जुड़ कर रिश्ते में बदल जाती है।

"भक्ति "भाव का सच्चा सागर है।

CS CamScanner

10:41 pm 72 KB/s VoLTE 4G 22%

facebook

अनुराग मिश्रा पत्रकार तिलहर
Suggested for you · 13h ·

अपनी खुशियों से अक्सर खौफ खाता हूँ।
ज़िन्दगी अज़ब है, समझ नहीं पाता हूँ।।
उलझे हैं बेहिसाब रिश्तों के फलसफे,
वही रूठ जाता है, जिसको मनाता हूँ।
कभी टूटा,कभी बिखरा,बेतरह दरका कभी,
जब भी कभी अपनी हदों से पार जाता हूँ।
तारीफ-तमगों, शोहरतों के मायने भी क्या,
जीत कर अक्सर बहुत कुछ हार जाता हूँ।
दुश्वारियों के दिन और उदास रातों में,
हसरतें तमाम लेकर यूँ ही मुस्कराता हूँ।
फ़लक़ से भी है बड़ा दायरा ऐतबार का,
ऐतबार का रिश्ता फ़क़त दिल से निभाता हूँ।

साभार

You and 9 others 2 comments

Like Comment Share

CamScanner

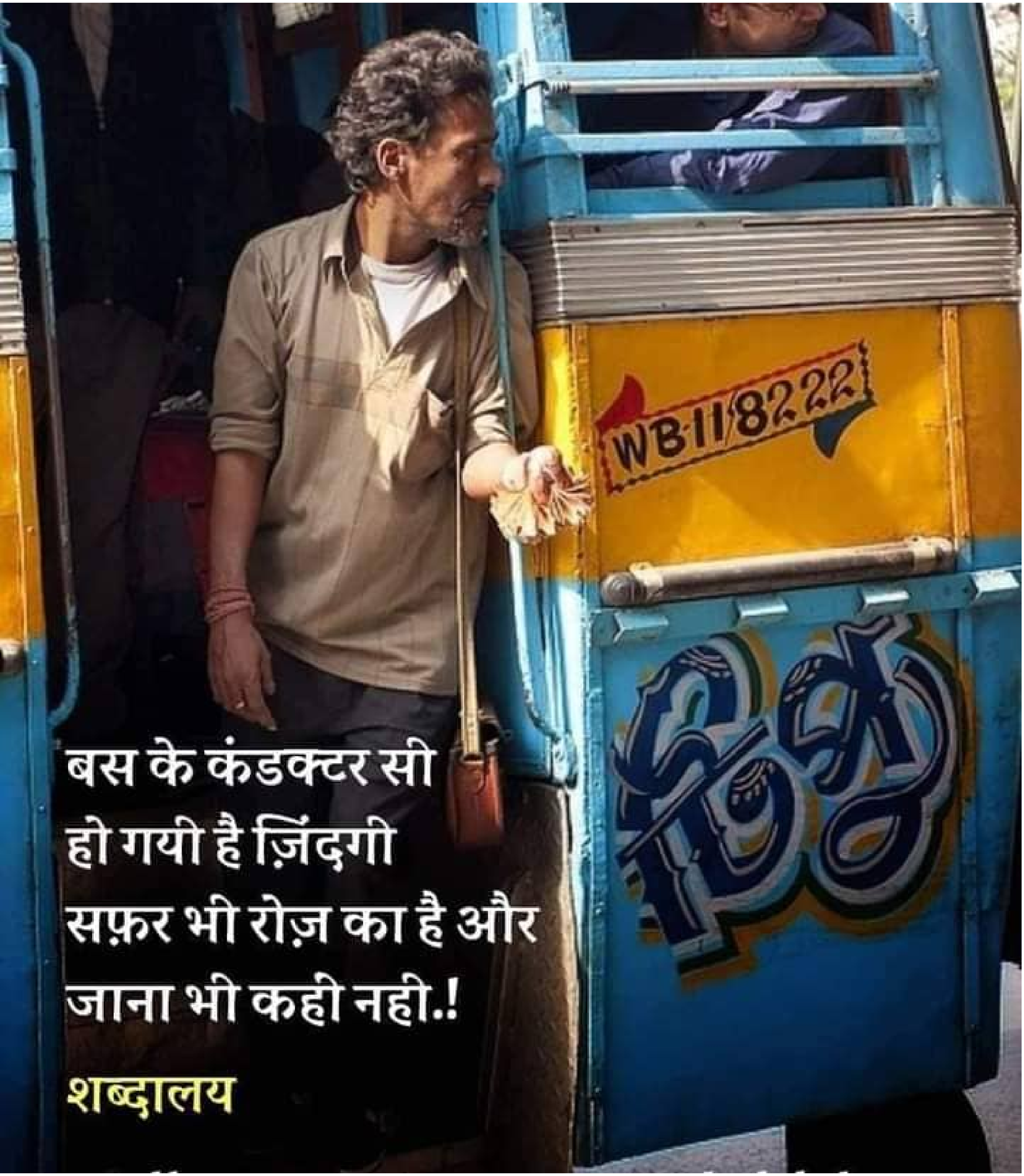

CamScanner

भरे बाजार में पूछा गया परिचय मेरा...
मैंने कहा शिक्षक हूँ!
वो बोले सरकारी हो क्या?

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CS CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

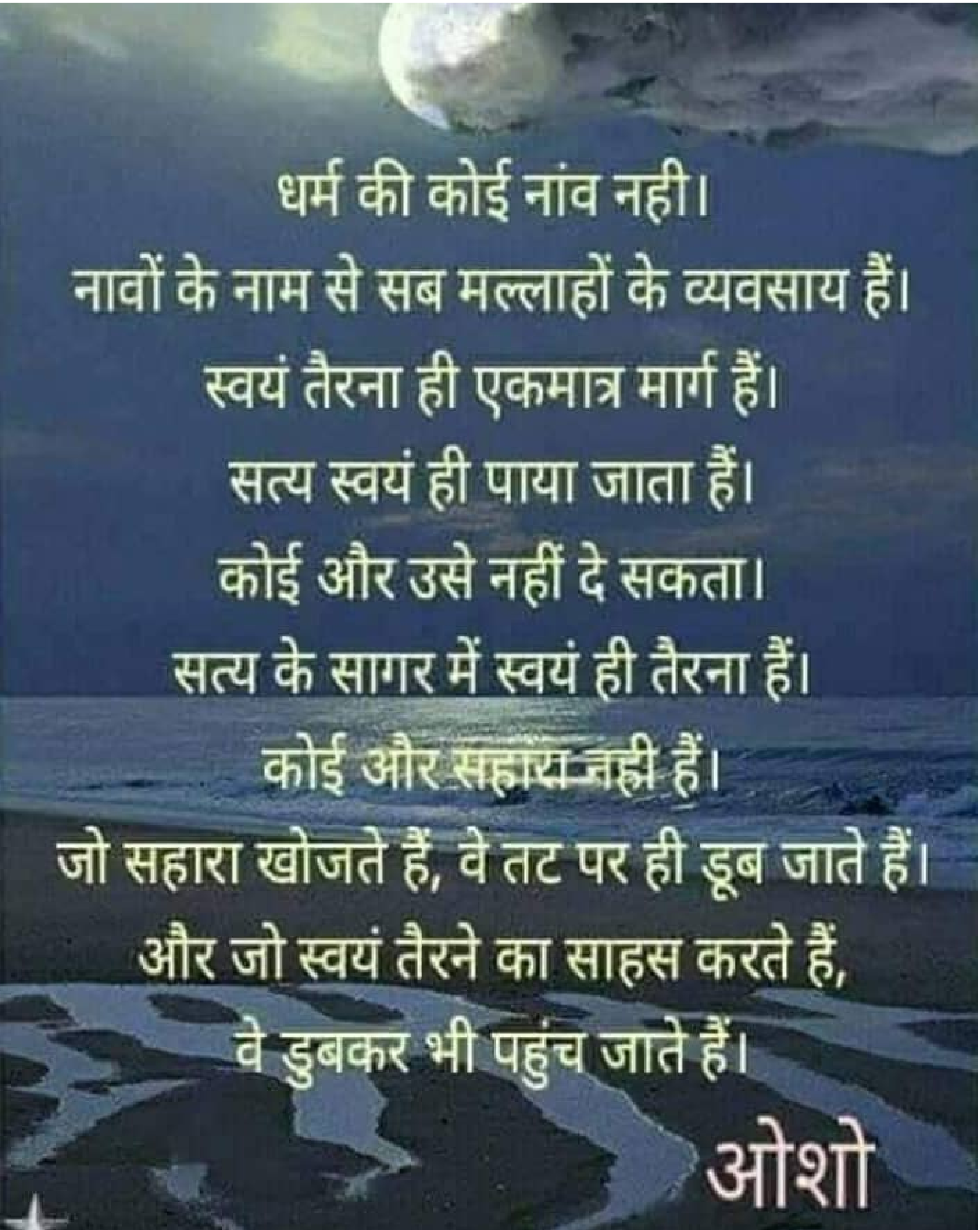
धर्म की कोई नांव नही।
नावों के नाम से सब मल्लाहों के व्यवसाय हैं।
स्वयं तैरना ही एकमात्र मार्ग हैं।
सत्य स्वयं ही पाया जाता हैं।
कोई और उसे नहीं दे सकता।
सत्य के सागर में स्वयं ही तैरना हैं।
कोई और सहाय नही हैं।
जो सहारा खोजते हैं, वे तट पर ही डूब जाते हैं।
और जो स्वयं तैरने का साहस करते हैं,
वे डुबकर भी पहुंच जाते हैं।
ओशो

CamScanner

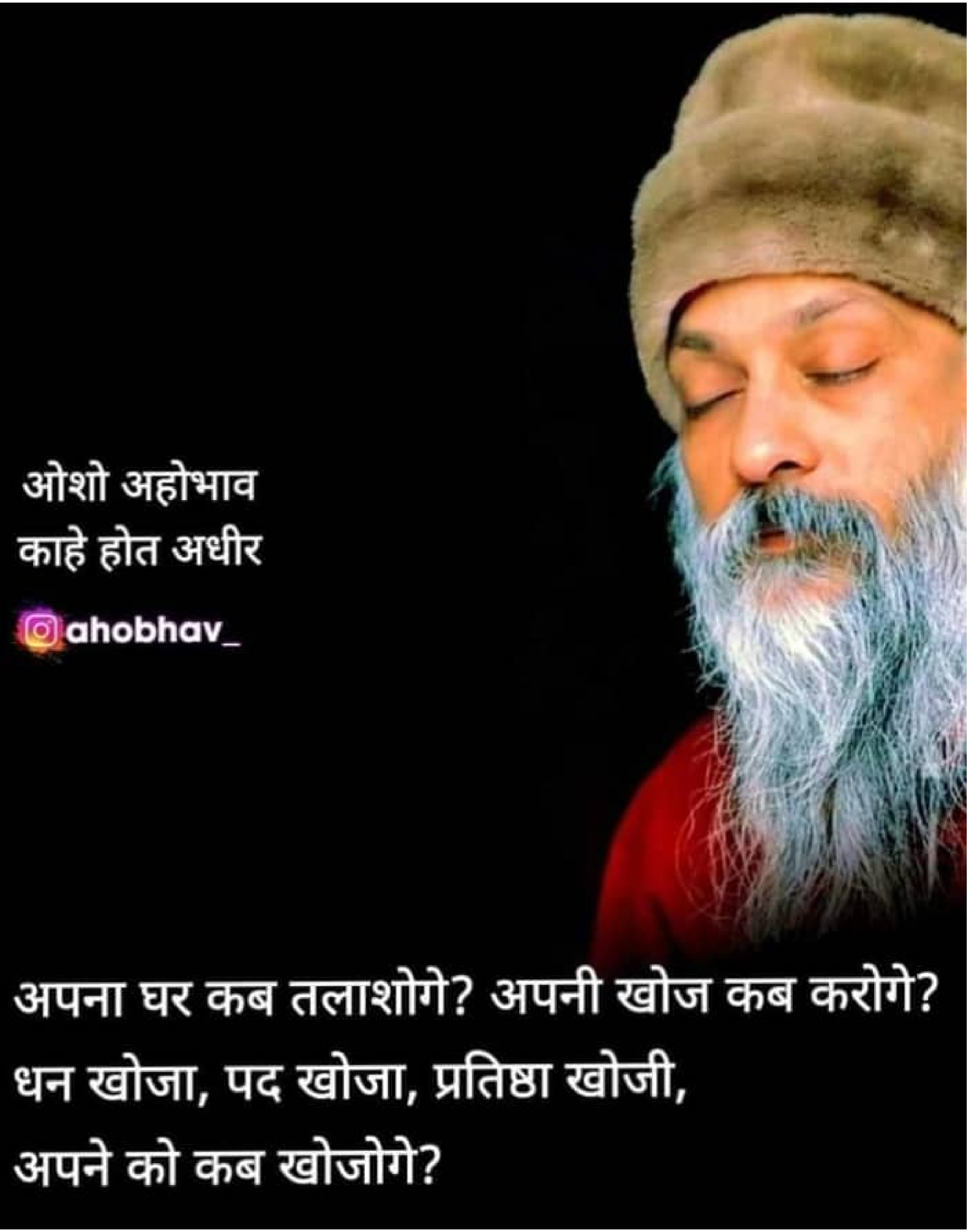

CS CamScanner

मैंने कोई नियम तुम्हें नहीं दिए।
या तो तुम धार्मिक होओ, या अधार्मिक।
बीच की मैंने तुम्हें सुविधा नहीं दी है।
इसलिए मैं तुम्हें वही आखिरी बात कहता हूं
जो बुद्ध ने आनंद को कही, होश साधना।
आंख बंद करना, न करना; क्या फर्क पड़ता है।
मेरी दृष्टि में ऐसा है कि अगर तुमने होश साधा
–आंख खुली रखो, स्त्री को छुओ, धन कमाओ, मकान में रहो,
बाजार में बैठो, कोई अंतर नहीं पड़ता।
होश न सधा–आंख बंद रखी, जंगल में भाग गए,
धन न छुआ, नंगे खड़े हो गए, सब त्याग दिया,
तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता।

होश से ही क्रांति होती है।

इसलिए होश अकेला नियम है, एकमात्र नियम।
एस धम्मो सनंतनो।
यही एकमात्र सनातन नियम है।

आचार्य श्री रजनीश

एस धम्मो सनंतनो-(प्र-04)
अकंप चैतन्य ही ध्यान

CamScanner

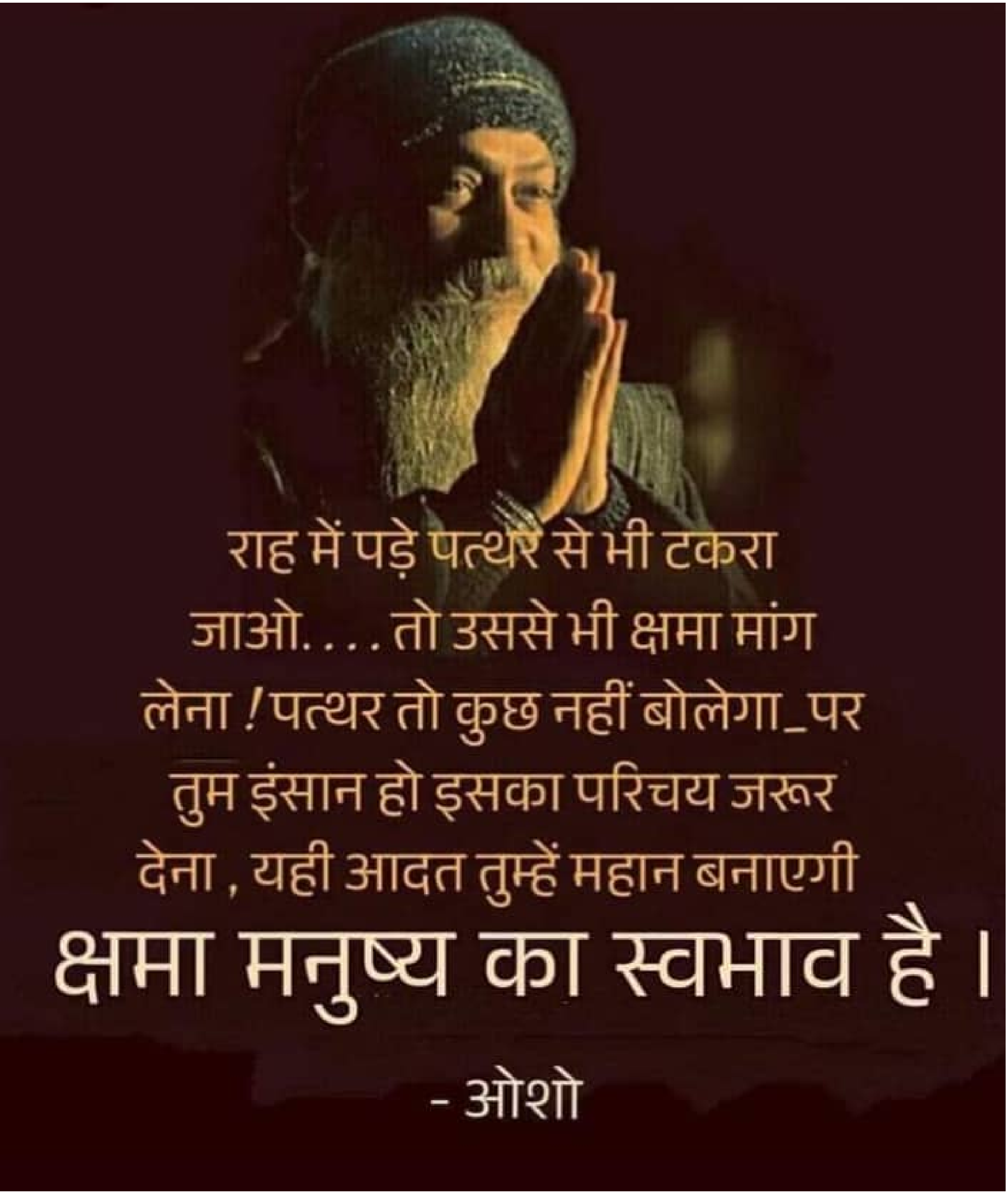
राह में पड़े पत्थर से भी टकरा
जाओ.... तो उससे भी क्षमा मांग
लेना ! पत्थर तो कुछ नहीं बोलेगा_पर
तुम इंसान हो इसका परिचय जरूर
देना , यही आदत तुम्हें महान बनाएगी
क्षमा मनुष्य का स्वभाव है ।
- ओशो

CamScanner

मैं न तो नास्तिक हूं, न मैं आस्तिक हूं, न मैं धार्मिक हूं, न मैं अधार्मिक हूं; न मैं हिंदू हूं, न मुसलमान हूं, न जैन हूं, न ईसाई हूं, न पारसी हूं; क्योंकि ये सारी की सारी बातें जीवन को जानने में बाधा हैं। और यहां मैं कोई जीवन-दर्शन नहीं सिखा रहा हूं। यहां केवल इस बात की तुम्हें समझ दे रहा हूं कि छोड़ दो जीवन-दर्शन, ताकि जीवन को पा सको,ताकि खालिस जीवन अपने शुद्धतम रूप में तुम्हें आच्छादित कर ले।

राम नाम जान्यो नहीं-2

ओशो

Osho wisdom

CamScanner

3:47 pm 0 KB/s VoLTE 4G 92%

बुद्ध को किसी ने गाली दी। बुद्ध ने सुन ली और अपने रास्ते पर चलने लगे। बुद्ध के भिक्षु आनंद ने कहा, इस आदमी ने गाली दी है, इसको कुछ उत्तर नहीं देते हैं?

बुद्ध ने कहा, मैंने बहुत समय पहले से दूसरों की गलतियों के लिए अपने को सजा देना बंद कर दिया है। दूसरे ने गलती की, गाली देना उसका काम है, वह जाने। मैं कहां आता हूं? दे, न दे; वजनी गाली दे, कम वजनी गाली दे; ताकत लगाए न लगाए। उसने मेहनत की। गांव से यात्रा करके रास्ते तक आया गाली देने, दे दी। उसने अपना काम पूरा किया, वह लौट गया। मेरा क्या लेना–देना है? न मैंने उसे गाली देने को उकसाया, न मैंने उसे प्रेरित किया। मेरा कोई संबंध ही नहीं है। मैं असंबंधित हूं। मैंने बहुत समय पहले दूसरों की गलतियों के लिए अपने को सजा देना बंद कर दिया है। क्योंकि क्रोध मैं करूं, जलूंगा मैं, आग मेरे भीतर उठेगी। रोआं–रोआं मेरा झुलस जाएगा। प्राण मेरे कंप उठेंगे। रक्तचाप मेरा बढ़ेगा। रात मुझे नींद नहीं आएगी। और यह आदमी, हो सकता है, गाली देकर मजे से सो जाए। इसने अपना काम पूरा कर लिया।

वृथा कर्म का अर्थ है, जिससे सिवाय हानि के और कुछ भी नहीं होता, लेकिन फिर भी हम किए चले जाते हैं। क्यों किए चले जाते हैं? एक यात्रिक आदत के अतिरिक्त और कोई कारण नहीं है। एक मूर्च्छा, एक निद्रा पकड़े हुए है, और किए चले जाते हैं। कल भी किया था, आज भी किया है। सौ में निन्यानबे मौके हैं कि कल भी करेंगे। जीवनभर–अगर आप अपने वृथा कर्मों का अनुपात जोड़े, तो आपको पता चलेगा कि आपका पूरा जीवन वृथा कर्मों का एक जोड़ है।

अहंकार के लिए हम कितने कर्म करते रहते हैं! शायद हमारे जीवन का निन्यानबे प्रतिशत हिस्सा ऐसे कर्मों में संलग्न होता है, जिससे हम अपने अहंकार को मजबूत करके दूसरों को दिखाना चाहते हैं। चाहे हम कपड़े पहनते हों, चाहे हम मकान बनाते हों, चाहे हम अपनी पत्नी को गहने से लाद देते हों, इन सबके पीछे, इस सारी दौड़ के पीछे, एक मैं को प्रकट करने की चेष्टा चल रही है कि मैं हूं। और मैं साधारण नहीं हूं नोबडी नहीं हूं समबडी हूं। इस मैं को मजबूत करने की कोशिश चल रही है। इस

CamScanner

6:40 pm 0 KB/s 90%

जैन परंपरा में एक बहुत मीठी कथा है। ऋषभ के सौ पुत्र थे। अनेक पुत्रों ने ऋषभ से दीक्षा ले ली। वे संन्यास की यात्रा पर निकल गए। बाहुबली भी ऋषभ के एक पुत्र थे। उन्होंने जरा देर की दीक्षा लेने में; कुछ सोच-विचार किया। लेकिन तब तक बाहुबली से छोटे बेटे दीक्षित हो गए। और जब बाहुबली के मन में दीक्षा का खयाल आया, तो उसके अहंकार को बड़ी पीड़ा हुई कि अपने छोटे भाइयों को संन्यास के जगत में तो मुझे प्रणाम करना पड़ेगा। क्योंकि वे मुझसे अग्रणी हो गए। उनके संन्यास की यात्रा बड़ी हो गई। अपने से छोटों को और मैं नमस्कार करूं, यह न हो सकेगा! तो उसने सोचा, ऐसी भी क्या जरूरत है। मैं खुद ही साधना क्यों न कर लूं!

बलशाली व्यक्ति था। कमजोर तो हारते ही हैं, कभी-कभी बलशाली बुरी तरह हारते हैं। बल ही उनके हारने का कारण हो जाता है।

तो बाहुबली एकांत में जाकर गहन तपश्चर्या में, सघन तपश्चर्या में लीन हुए। शायद इस पृथ्वी पर कम ही लोगों ने ऐसी तपश्चर्या की होगी और ऐसी साधना की होगी। सब कुछ दांव पर लगा दिया। सब कुछ। बस, एक छोटी-सी चीज छोड़कर; वह मैं पीछे खड़ा रहा।

उनकी तपश्चर्या की ख्याति कोने-कोने तक पहुंच गई। जहां भी लोग सोचते-समझते थे, वहां तक बाहुबली की खबर पहुंची। और लोग हैरान हुए कि इतना पवित्रतम व्यक्ति, इतना शुद्धतम व्यक्ति, सब कुछ दांव पर लगाए खड़ा है, फिर भी कोई दर्शन नहीं हो रहा है सत्य का! क्या बात है?

ऋषभ के पास भी खबर पहुंची। ऋषभ मुस्कुराए और उन्होंने बाहुबली की एक बहन को, जो दीक्षित हो गई थी, बाहुबली के पास भेजा और कहा, बस, जरा-सा तिनका अटका हुआ है। लेकिन वह तिनका पहाड़ों से भी भारी है। सब दांव पर लगा दिया है, सिर्फ मैं को बचा लिया है! और आप कुछ भी दांव पर न लगाएं, सिर्फ मैं को दांव पर लगा दें, तो हल हो जाए। लेकिन सब दांव पर लगा दें–धन, दौलत, यश, शरीर, मन–लेकिन एक पीछे मैं बच जाए, तो सब बेकार है। वह दांव पर लगाने वाला पीछे बच जाए, तो आप परमात्मा से संघर्ष कर रहे हैं; आप परमात्मा से प्रार्थना नहीं कर रहे हैं। तो आप सत्य को भी विजय करने निकले हैं; सत्य के साथ एक होने नहीं निकले हैं। यह कोई प्रेम की यात्रा नहीं है; यह कोई युद्ध, आक्रामक चित्त की दशा है।

सब दांव पर है बाहुबली का। कुछ बचा नहीं लगाने को। वह भी चिंता में

CamScanner

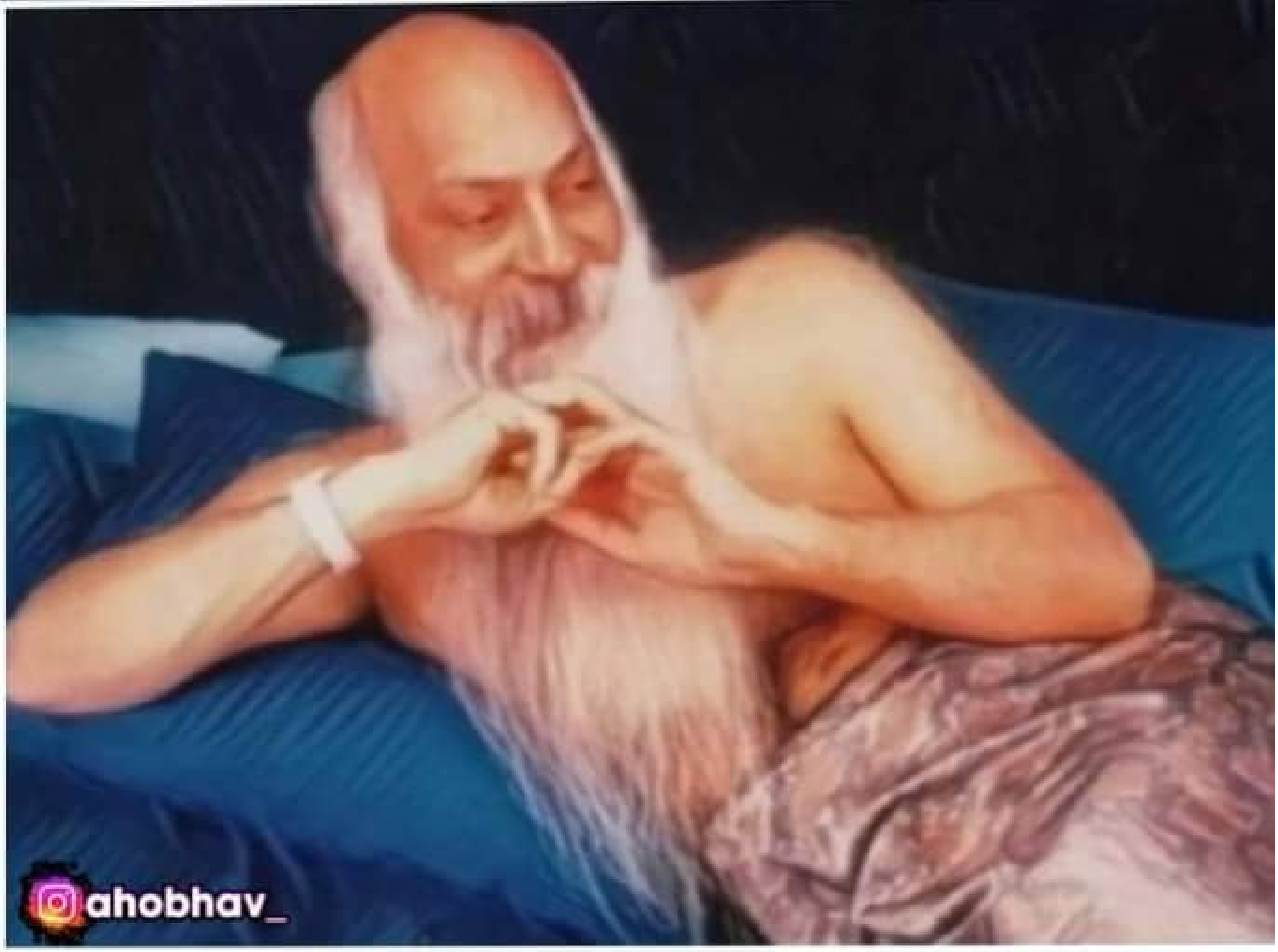

वासनाओ का कोई अंत नही है। जरूरते बहुत थोड़ी है, कामनाओ की कोई सीमा नही है। उन्ही कामनाओ के सहारे आदमी जीता चला जाता है।

ध्यान रखना,

धन नही बांधता, धन की आकांक्षा बांधती है; पद नही बांधता, पद की आकांक्षा बांधती है। प्रतिष्ठा नही बांधती, प्रतिष्ठा की आंकाक्षा बांधती है। प्रेयसी नही बांधती, प्रेयसी की कामना बांधती है।

ओशो अहोभाव

CamScanner

7:06 pm 0 KB/s 88%

हम भय से ज्यादा भयभीत हैं 🌷☘️🌷

🌷☘️🌷 मैंने सुना है, एक पुरानी तिब्बती कथा है कि दो उल्लू एक वृक्ष पर आ कर बैठे। एक ने सांप अपने मुंह में पकड़ रूखा था। भोजन था उनका, सुबह के नाश्ते की तैयारी थी।
दूसरा एक चूहा पकड़ लाया था। दोनों जैसे ही बैठे वृक्ष पर पास–पास आ कर–एक के मुंह में सांप, एक के मुंह में चूहा। सांप ने चूहे को देखा तो वह यह भूल ही गया कि वह उल्लू के मुंह में है और मौत के करीब है। चूहे को देख कर उसके मुंह में रसधार बहने लगी। वह भूल ही गया कि मौत के मुंह में है। उसको अपनी जीवेषणा ने पकड़ लिया। और चूहे ने जैसे ही देखा सांप को, वह भयभीत हो गया, वह कंपने लगा। ऐसे मौत के मुंह में बैठा है, मगर सांप को देख कर कंपने लगा।

वे दोनों उल्लू बड़े हैरान हुए। एक उल्लू ने दूसरे उल्लू से पूछा कि भाई, इसका कुछ राज समझे? दूसरे ने कहा, बिलकुल समझ में आया।

जीभ की, रस की, स्वाद की इच्छा इतनी प्रबल है कि सामने मृत्यु खड़ी हो तो भी दिखाई नहीं पड़ती।

और यह भी समझ में आया कि भय मौत से भी बड़ा भय है।

मौत सामने खड़ी है, उससे यह भयभीत नहीं है चूहा; लेकिन भय से भयभीत है कि कहीं सांप हमला न कर दे।'
मौत से हम भयभीत नहीं हैं, हम भय से ज्यादा भयभीत हैं।
और लोभ स्वाद का, इंद्रियों का, जीवेषणा का इतना प्रगाढ़ है कि मौत चौबीस घंटे खड़ी है, तो भी हमें दिखाई नहीं पड़ती। हम अंधे हैं।
शरीर से जिसने अपने को बांधा, वह अड़चन में रहेगा। क्योंकि लाख झुठलाओ, लाख समझाओ, यह बात भुलाई नहीं जा सकती कि शरीर मरेगा। रोज तो कोई मरता–कहां–कहां आंखें चुराओ, कैसे बचो इस तथ्य से कि मृत्यु होती है? रोज तो चिता सजती। रोज तो 'राम–राम सत्य' कहते लोग निकलते। हमने सब उपाय किए हैं कि मौत का हमें ज्यादा पता न चले।
मरघट हम गांव के बाहर इसीलिए बनाते हैं, बनाना चाहिए बीच में गांव के, ताकि सबको पता चले। एक लाश जले तो पूरे गांव को जलने का पता हो। बनाते हैं गांव के बाहर। स्त्रियां अपने छोटे बच्चों को भीतर कर

CamScanner

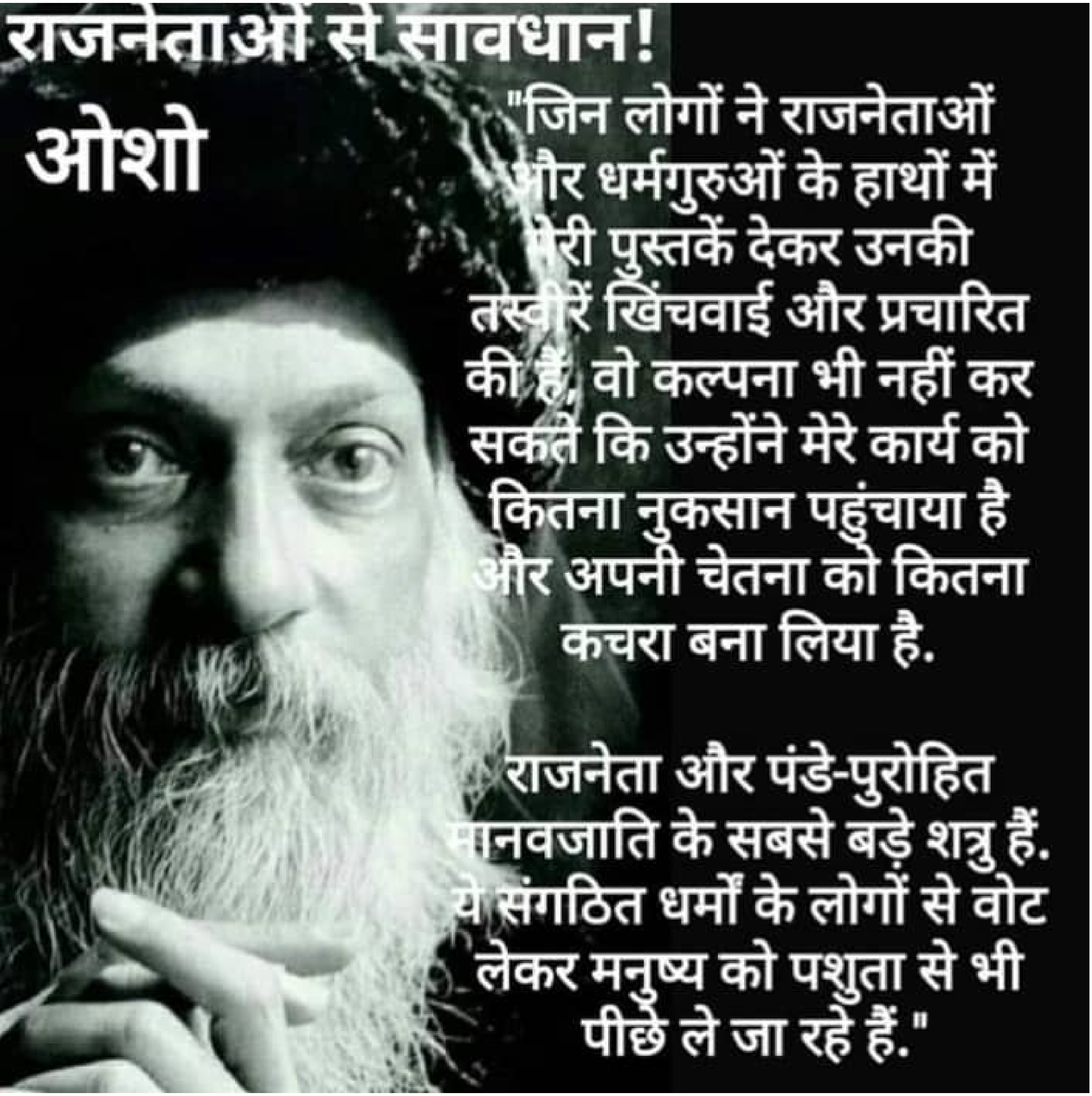

राजनेताओं से सावधान!
ओशो
"जिन लोगों ने राजनेताओं
और धर्मगुरुओं के हाथों में
मेरी पुस्तकें देकर उनकी
तस्वीरें खिंचवाई और प्रचारित
की हैं, वो कल्पना भी नहीं कर
सकते कि उन्होंने मेरे कार्य को
कितना नुकसान पहुंचाया है
और अपनी चेतना को कितना
कचरा बना लिया है.
राजनेता और पंडे-पुरोहित
मानवजाति के सबसे बड़े शत्रु हैं.
ये संगठित धर्मों के लोगों से वोट
लेकर मनुष्य को पशुता से भी
पीछे ले जा रहे हैं."

CamScanner

7:13 pm 0 KB/s VoLTE 4G 87%

तुमने खयाल किया एक शब्द पर- बुद्धू? वह बुद्ध से बना है। जो लोग आंख बंद करके बैठ जाते हैं, लोग उनको कहते हैं, देखो इस बुद्धू को। बुद्ध बनने चले! बुद्ध बनने चले, बुद्धू बनकर रह जाते। और अपने को पा भी लोगे अगर... अहंकार बहुत तर्कनिष्ठ है। पूछता है, अपने को पा भी लोगे तो क्या खाक पा लिया। अरे तुम अपने को तो पाए ही हुए हो। पाना उसे है, जो दूर है। उसे क्या पाना, जो तुम हो ही? और बात तर्क की है। बुद्धि को समझ में आती है। जो मिला ही है, जो जन्म से ही है, जो स्वभाव ही है, उसे क्या खाक पाना! नाहक समय गंवाना। उसे पाने चलो जो दूर है। चांद पर चलो। एवरेस्ट पर चढ़ो।

एवरेस्ट पर चढ़ने का मजा क्या होगा? एडमंड हिलेरी को एवरेस्ट की चोटी पर खड़े होकर क्या मजा मिला होगा?

मैंने तो कहानी सुनी है, भरोसे योग्य तो नहीं हैं, लेकिन मन करता है कि भरोसा कर लूं कि जब एवरेस्ट पर एडमंड हिलेरी, नेतसिंग और अपनी फौज को लेकर पहुंचे तो वहां देखा कि एक साधु महाराज पहले से ही चिलम फूंक रहे हैं। अपनी खोपड़ी ठोंक ली एडमंड हिलेरी ने कि मर गए।

हिलेरी के पहले कम से कम सौ यात्री दल मर चुके थे। जिनका कोई पता भी न चला कि वे कहां गए, किन बर्फीले तूफानों में खो गए। यात्रा कठिन थी। बामुश्किल किसी तरह पहुंच पाया यह आदमी और इधर ये महाराज चिलम पी रहे हैं! हद हो गई। पास बैठकर गौर से देखा कि आदमी है कि कोई भूत-प्रेत है- क्योंकि न कोई साज-समान है, जो एवरेस्ट पर पहुंचने के लिए जरूरी है, सिर्फ एक चमीटा गड़ा रखा है। चिलम हाथ में है, और धुन में ऐसे हैं कि आंख बंद है। सोचा कि कोई बहुत बड़े महात्मा हैं, सिद्ध पुरुष हैं। शायद सिद्धि के बल पर यहां पहुंच गया हो। एडमंड हिलेरी उसके पैरों पर गिर पड़ा। पैरों पर गिर पड़े तो महात्मा की जरा झपकी खुली। उन्होंने आंख खोली जरा गौर से देखा। मामला क्या है? हिलेरी की चमकती हुई घड़ी पर नजर पड़ी। कहा, बच्चा, घड़ी का क्या लेगा? बहुत दिन से तलाश थी एक अच्छी घड़ी की। वक्त पर आ गया। एडमंड हिलेरी ने कहा, महाराज घड़ी यूं ही ले लें मगर यह बताएं कि आप यहां पहुंचे कैसे?

CamScanner

संसार परमात्मा का है। संसार को छोड़ना प्रकारांतर से परमात्मा को ही छोड़ना है। संसार का अपमान उसके स्रष्टा, उसके मालिक का अपमान है। संसार को छोड़ने की बात का एक ही अर्थ होता है कि तुम परमात्मा से भी ज्यादा समझदार हो रहे हो। उसने अभी तक संसार नहीं छोड़ा। उसने छोड़ दिया होता संसार तो संसार खो गया होता। वही तो डालता है श्वास प्राणों में। वही तो हरा है वृक्षों में। वही तो गीत गाता पक्षियों में। संसार उसने छोड़ा नहीं है।

ओशो Osho wisdom

CamScanner

पृथ्वी पर तीन सौ धर्म हैं। और इतने धर्म इस बात की सूचना देते हैं कि धर्म के संबंध में मनुष्य-जाति अब तक विवेकयुक्त और विज्ञानयुक्त नहीं हो पाई है। वैज्ञानिक नियम तो सार्वलौकिक होते हैं, युनिवर्सल होते हैं। गणित एक है सारी पृथ्वी का। धर्म भी एक ही हो सकता है। जिस दिन भी हम परमात्मा के संबंध में ठीक बुद्धियुक्त, विचारयुक्त और विज्ञानयुक्त दृष्टि को उपलब्ध होंगे, उस दिन पृथ्वी पर धर्मों के अलग-अलग मंदिर और अलग-अलग शास्त्रों की कोई जरूरत नहीं रह जाएगी।

.......ओशो.......

Saideep

CamScanner

UPC Stat Upendra
Yesterday, 9:09 am

Good morning 🙏

Reply

CamScanner

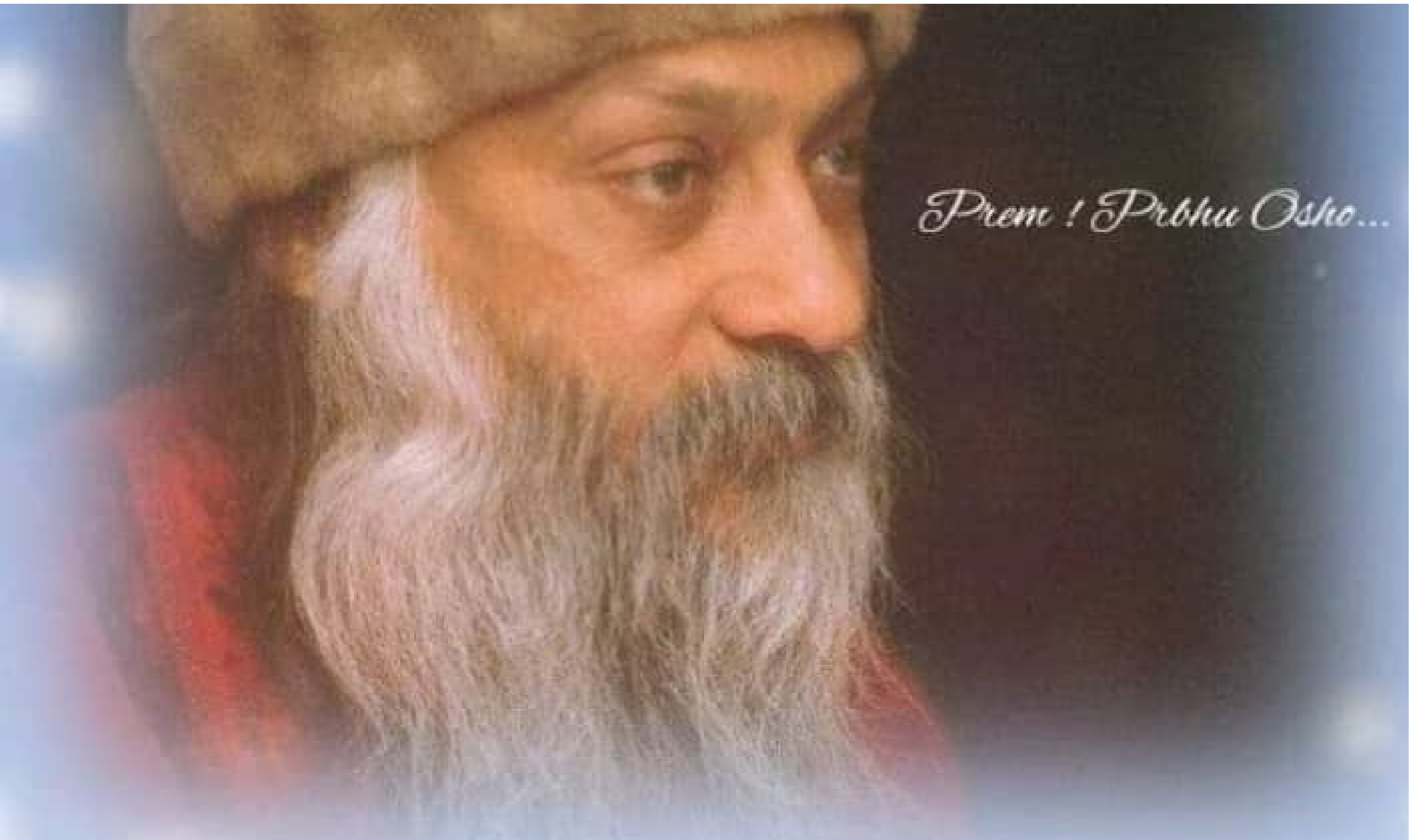

एकांत , मौन , शून्य होने की कला में निष्णात होओ, नहीं तो यह जाल जन्मों से चल रहे हैं। यह कोई पहला जन्म है तुम्हारा ? जन्म-जन्म हो गए , यही धंदा----गोरखधंधा करते-करते !

जो व्यक्ति अपने एकांत में आनंदित है, वह दूसरे के साथ जुड़ कर आनंद को हजार गुना कर लेता है। दोनों का आनंद गुणनफल हो जाता है। कई गुना हो जाता है ।

ओशो...

CamScanner

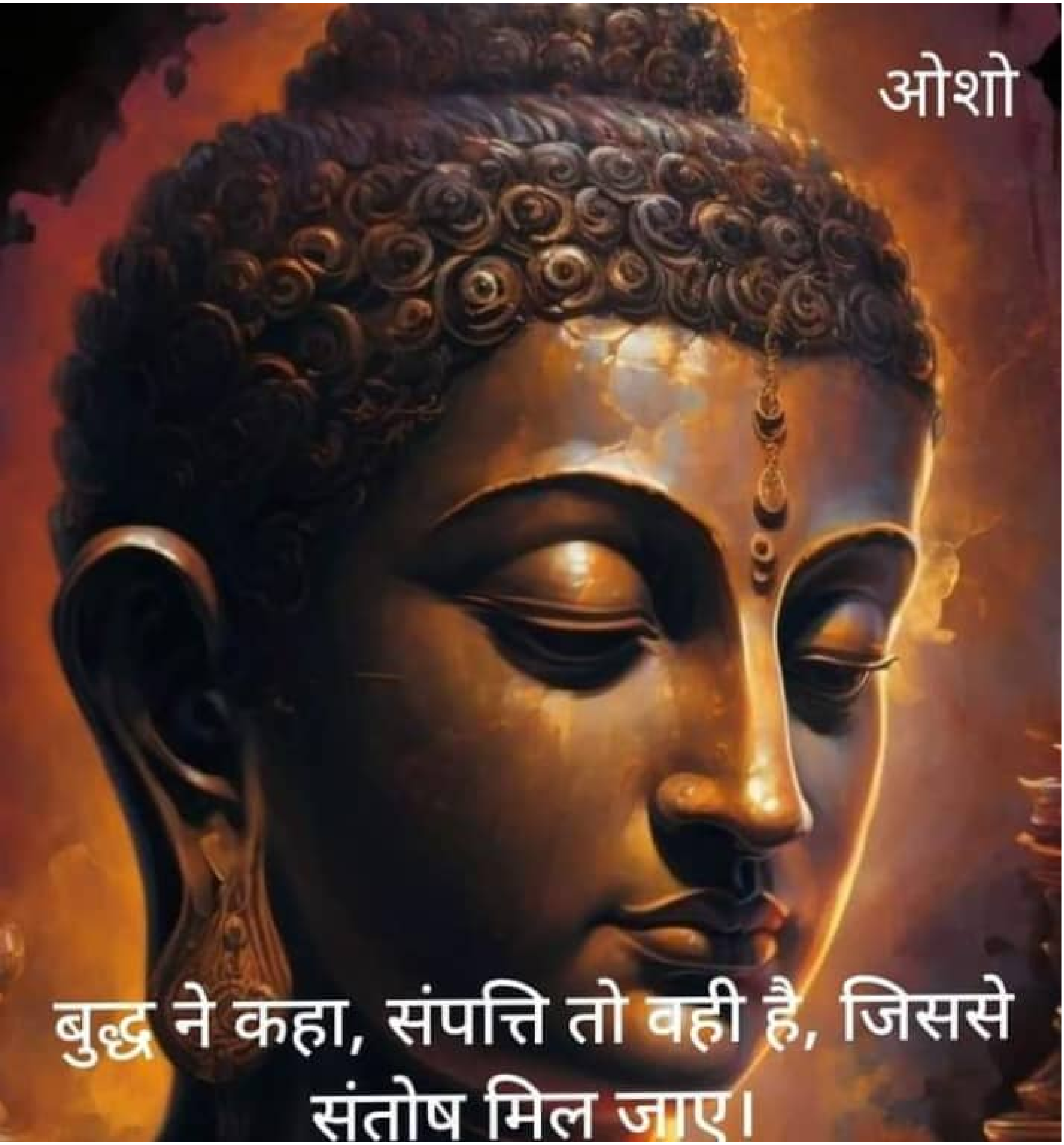

CamScanner

10:21 am 0 KB/s 65%

परमात्मा की स्मृति जिसके जीवन में भरी है, उसको कहां भोग-विलास की याद रह जाती है! वह तो परमभोग भोग रहा है; अब तो छोटे-मोटे भोग की बात ही कहां! हीरे बरस रहे हों तो कोई कंकड़-पत्थर बीनता है? अमृत बह रहा हो तो कोई नाली के गंदे पानी को भर कर घर लाता है? जहां फूलों की वर्षा हो रही हो, वहां कोई दुर्गंध समेटता है? जहां सच्चा सुख मिल रहा हो वहां क्षणभंगुर सुख की कौन चिंता करता है।

Osho Osho wisdom

CamScanner

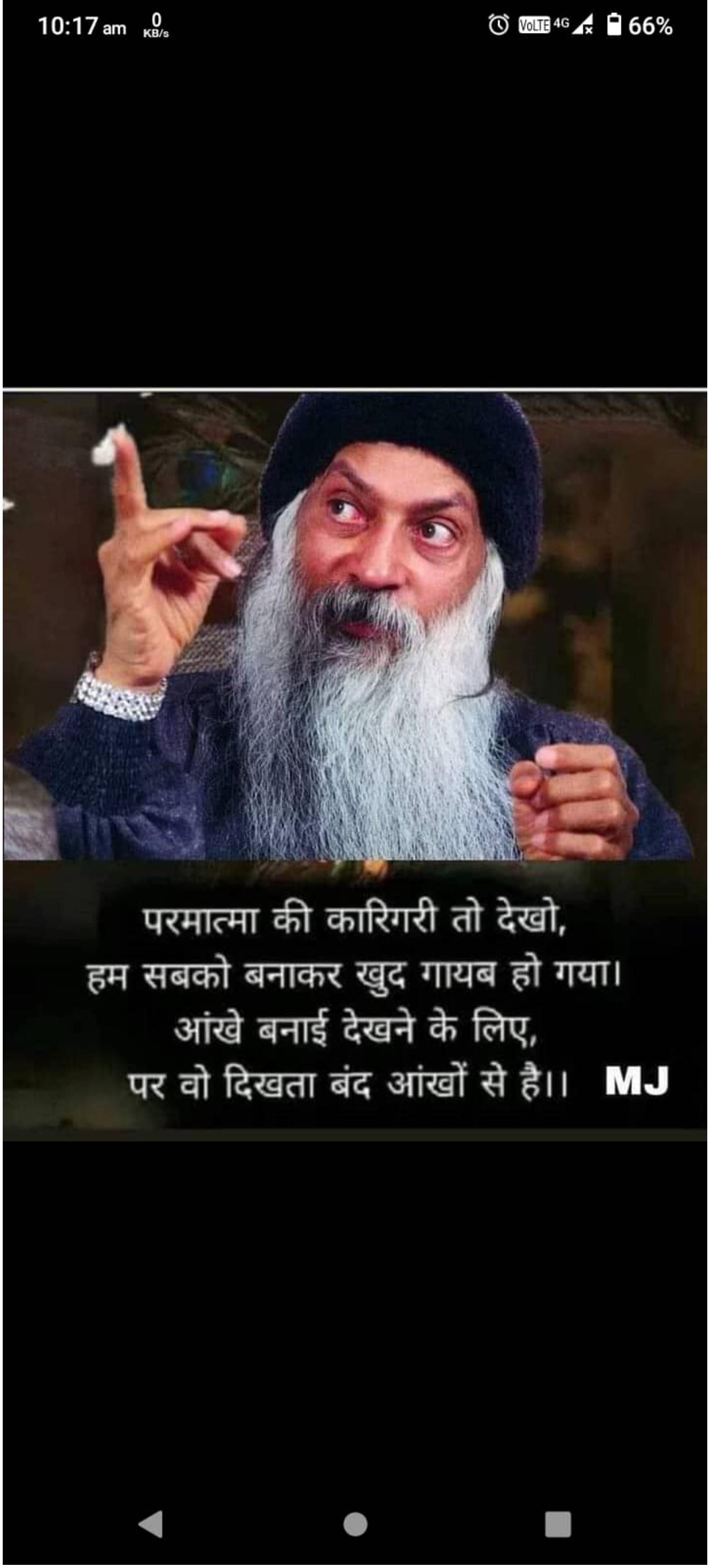
परमात्मा की कारिगरी तो देखो,
हम सबको बनाकर खुद गायब हो गया।
आंखे बनाई देखने के लिए,
पर वो दिखता बंद आंखों से है।।
MJ

CamScanner

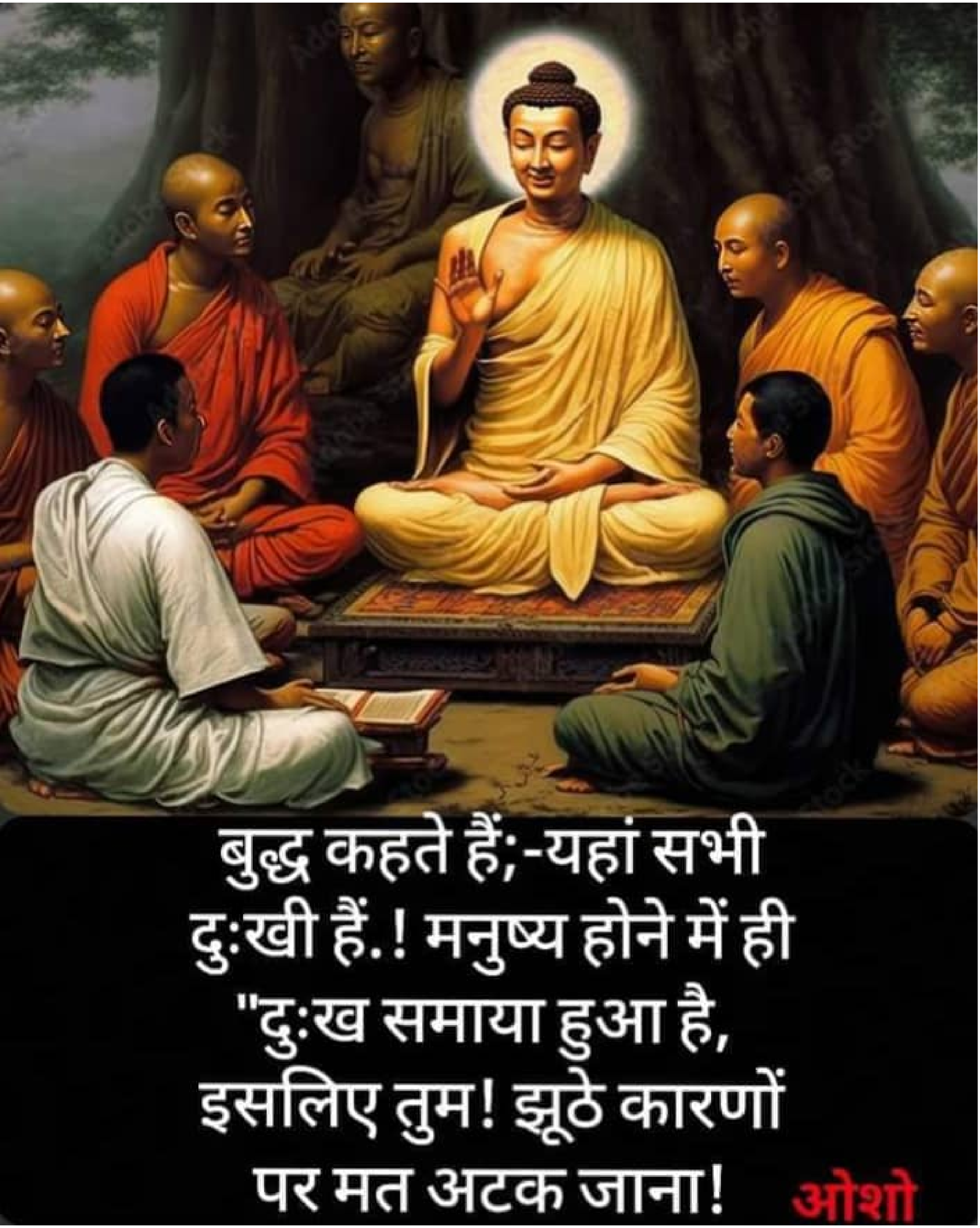
बुद्ध कहते हैं;-यहां सभी
दुःखी हैं.! मनुष्य होने में ही
"दुःख समाया हुआ है,
इसलिए तुम! झूठे कारणों
पर मत अटक जाना!
ओशो

CamScanner

मृत्युभोज
मौत का जशन

📮 **यह कैसा मृत्युभोज है ???** ❓

जिस भोजन को रोते हुए बनाया जाता है,
जिस भोजन को खाने के लिए रोते हुए
बुलाया जाता हैं,
जिस भोजन को आँसू बहाते हुए
खाया जाता हैं,
उस भोजन को
मृत्युभोज कहा जाता है,
😩😩😩😭😭

जिस परिवार मे विपदा आई हो उसके साथ इस संकट की घड़ी मे जरूर खड़े हो और तन,मन,और धन से सहयोग करे और मृतक भोज का बहिस्कार करे ।

भोजन तभी करना चाहिए जब खिलाने वाले का मन प्रसन्न हो, खाने वाले का मन प्रसन्न हो, लेकिन जब खिलाने वाले एवं खाने वालों दोनो के दिल में दर्द हो, वेदना हो,
तो ऐसी स्थिति में कदापि भोजन नहीं करना चाहिए।

मृत्यु भोज हमारे ऊपर एक कलंक है इसे हम सबको मिलकर खत्म कर देना चाहिये ।।।

CS CamScanner

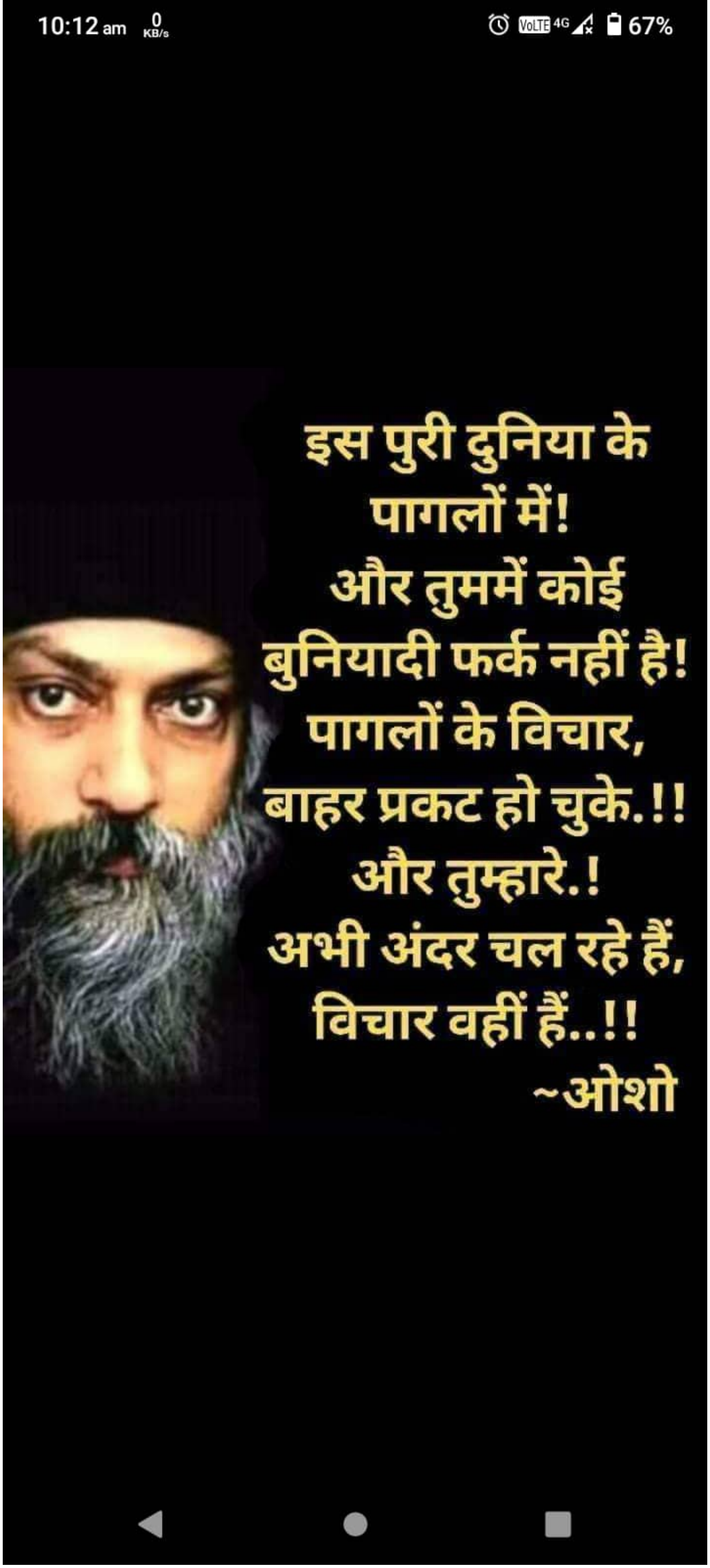

CS CamScanner

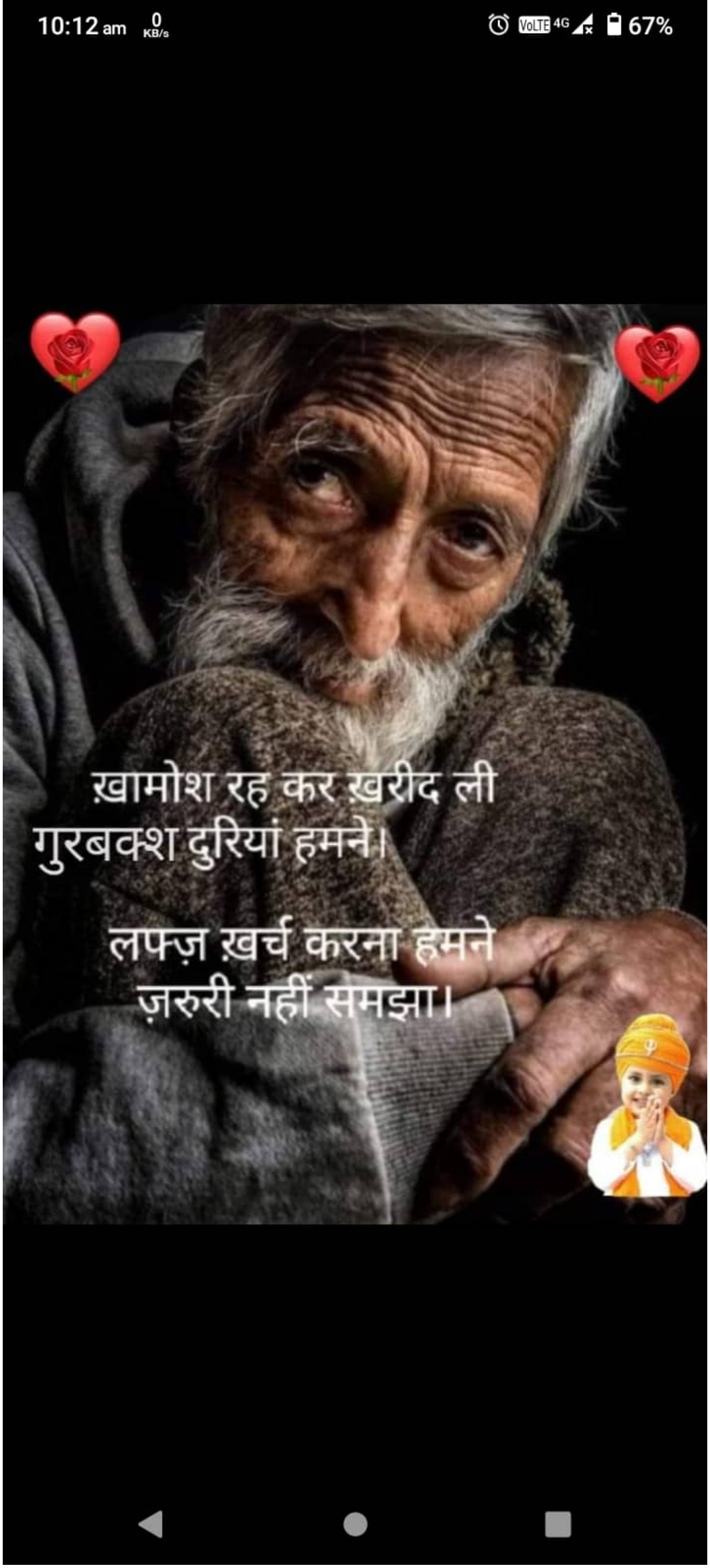

CamScanner

10:00 am 0 KB/s 69%

इस जिंदगी में समझदार लोग तो ऐसे गुजरते है जैसे कोई सराय से गुजरता है;
इस जिंदगी में ऐसे ठहरते है जैसे कोई धर्मशाला में ठहराता है।
सांझ आयी, रुके रहे, सुबह हुई, चल पड़े।
मुसाफिरखाना है। -ओशो

Munabai Makvana

19 2 comments

Like Comment Share

CamScanner

10:00 am 0 KB/s 69%

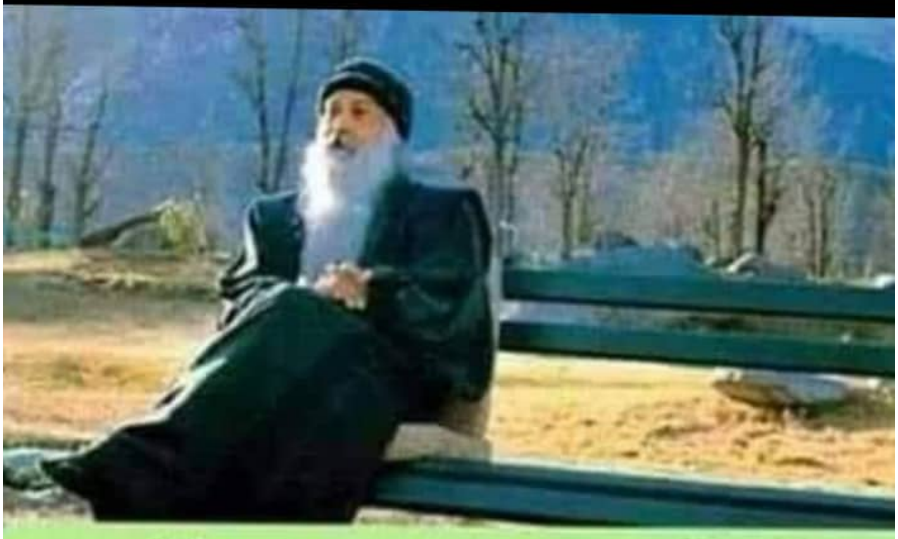

उम्र बढ़ने के साथ साथ,आनंद बढ़ना चाहिए,लेकिन हम हर रोज और ज्यादा दुखी और उदासीन होते जाते हैं। इसका मतलब हमारी जीवन ऊर्जा कुछ भूल भरे मार्गों पर प्रवाहित हो रही है। इसकी निरंतर खोज बिन,इसका परीक्षण,इसकी कसौटी मन में साफ़ करते जाओ। और जिस दिन यह परीक्षण यह खोज साफ़ हो जाती है की मेरी ऊर्जा गलत दिशाओं में बह रही है, तो उस दिन ठीक बहने के लिए सिवाय तुम्हारे और कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता। इस बोध के होते ही तुम्हारे नये जीवन की यात्रा प्रारम्भ होती है।

CamScanner

10:00 am 0 KB/s VoLTE 4G 69%
facebook

पकड़ लिया, तंद्रा आ गई। एक क्षण को बेहोशी की लहर आ गई। हुआ मन--उठा लूं! लेकिन इसके पहले कि उठाते, दो घुड़सवार दोनों दिशाओं से आए और दोनों की नजर भी करीब-करीब साथ ही हीरे पर पड़ी। दोनों की तलवारें निकल आईं और दोनों ने कहा कि हमारी नजर पहले पड़ी है।

नजर तो भर्तृहरि की पहले पड़ी थी, लेकिन अब तक भर्तृहरि सम्हल गए थे; पांव डगमगाया था, मगर सम्हल गए थे। सम्हल गए थे, यह सोच कर थोड़ी हंसी भी आ गई थी कि इस तरह के बहुत से हीरे तो मेरे खजाने में थे, इससे बड़े-बड़े हीरे थे, उनको मैं छोड़ कर चला आया और इस हीरे पर मेरी नजर बिगड़ गई, नीयत बिगड़ गई। मैं भी कैसा हूं! अगर इन्हीं हीरों पर रस था तो आया ही क्यों? हंसे अपने पर--अपनी मूढ़ता पर। और अब यह तो कहने का सवाल ही न था कि नजर मेरी पहले पड़ी, चुप ही रहे।

उन दोनों ने तो भर्तृहरि को देखा ही नहीं, देखने का सवाल ही कहां था! सवाल तो तय करने का था कि नजर किसकी पहले पड़ी। जिसकी नजर पड़ी वह मालिक। दोनों में विवाद हो गया, तलवारें खिंच गईं, तलवारें चल गईं। एक क्षण में हो गई यह सारी बात। दोनों की तलवारें एक-दूसरे की छाती में छिद गईं। दोनों गिर पड़े। दो लाशें पड़ी थीं। खून का फव्वारा छूट गया था। हीरा अपनी जगह पड़ा था। दो आदमी अभी जिंदा थे, अभी मुर्दा हो गए।

भर्तृहरि और भी खिलखिला कर हंसे। पहले तो मुस्कुराए थे, अब खिलखिला कर हंसे कि हद हो गई, हीरे को कुछ लेना-देना नहीं, आदमी जिंदा रहे कि मर जाए। ये दो आदमी मर गए, हीरे की आंख में आंसू भी न आया, हीरे को पता भी न चला, हीरे को कुछ प्रयोजन भी नहीं। और ये दो आदमियों ने अपनी जान गंवा दी एक पत्थर के लिए। और कभी मैं भी यूं ही जान गंवा देता। क्षण भर पहले मुझे भी लहर आई थी, मुझे भी तरंग आई थी।

धन को क्या गाली देते हो? अगर समझना है तो लोभ को समझो। मगर आदमी का यह हिसाब है: अपना दोष दूसरे पर टाल देता है।

ओशो,आपुई गई हिराय(प्रवचन-7)

CS CamScanner

इस संसार में
तू कितना
निश्चिंत करके भेजता है
मालिक!
ना आते वक्त
कुछ लाना पड़ता है
और
ना जाते वक्त
कुछ ले जाना पड़ता
है।
MAHEK
DIL KI AARZOO

CamScanner

Osho Thoughts

Munabai Makvana · 1h ·

🔴जैसे विपस्सना है--बुद्ध की परम विधि! जितने लोग विपस्सना से ज्ञान को उपलब्ध हुए हैं उतने लोग किसी और विधि से उपलब्ध नहीं हुए, क्योंकि बड़ी सुगम और सरल विधि है। मगर विधि क्या है? विधि सीधी-साफ है: श्वास का बाहर आना, श्वास का भीतर जाना, इसे देखो। विपस्सना का अर्थ होता है: देखो, अंतर्दृष्टि। बस देखते रहो साक्षी बने--यह श्वास भीतर गई, यह भीतर पहुंची, यह क्षण भर ठहरी, यह वापस चली, यह बाहर गई, यह बाहर निकल गई, यह क्षण भर बाहर रुकी रही, यह फिर भीतर आने लगी--बस यह जो श्वास का वर्तुलाकार परिभ्रमण चल रहा है, यह जो श्वास की माला चल रही है, इसको देखते रहो। कुछ मत करो।

क्या होगा इसका परिणाम? इसका परिणाम कि तुम वर्तमान में जीने की क्षमता को उपलब्ध हो जाओगे। श्वास वर्तमान है। बुद्ध यह नहीं कह रहे हैं, जो श्वास जा चुकी है उसके संबंध में सोचो; जो अभी आने वाली है उसके संबंध में सोचो। वे कह रहे हैं, जो अभी है, भीतर जा रही है उसके संबंध में, बाहर जा रही है उसके संबंध में। श्वास के साथ ही डोलते रहो। मन भागेगा, मन हजार विचार उठाएगा। तुम चुपचाप उसे फिर वापस ले आना श्वास पर। श्वास तो एक बहाना है, निमित्त है, एक खूंटी है। यही सारी और विधियों का सार भी है।

ओशो♣

CamScanner

औरत
खुद एक
बहुत
बड़ी ताकत हैं
इतनी
बड़ी की
मर्द
पैदा करती
हैं।
www.thoughtsguruji.com

CamScanner

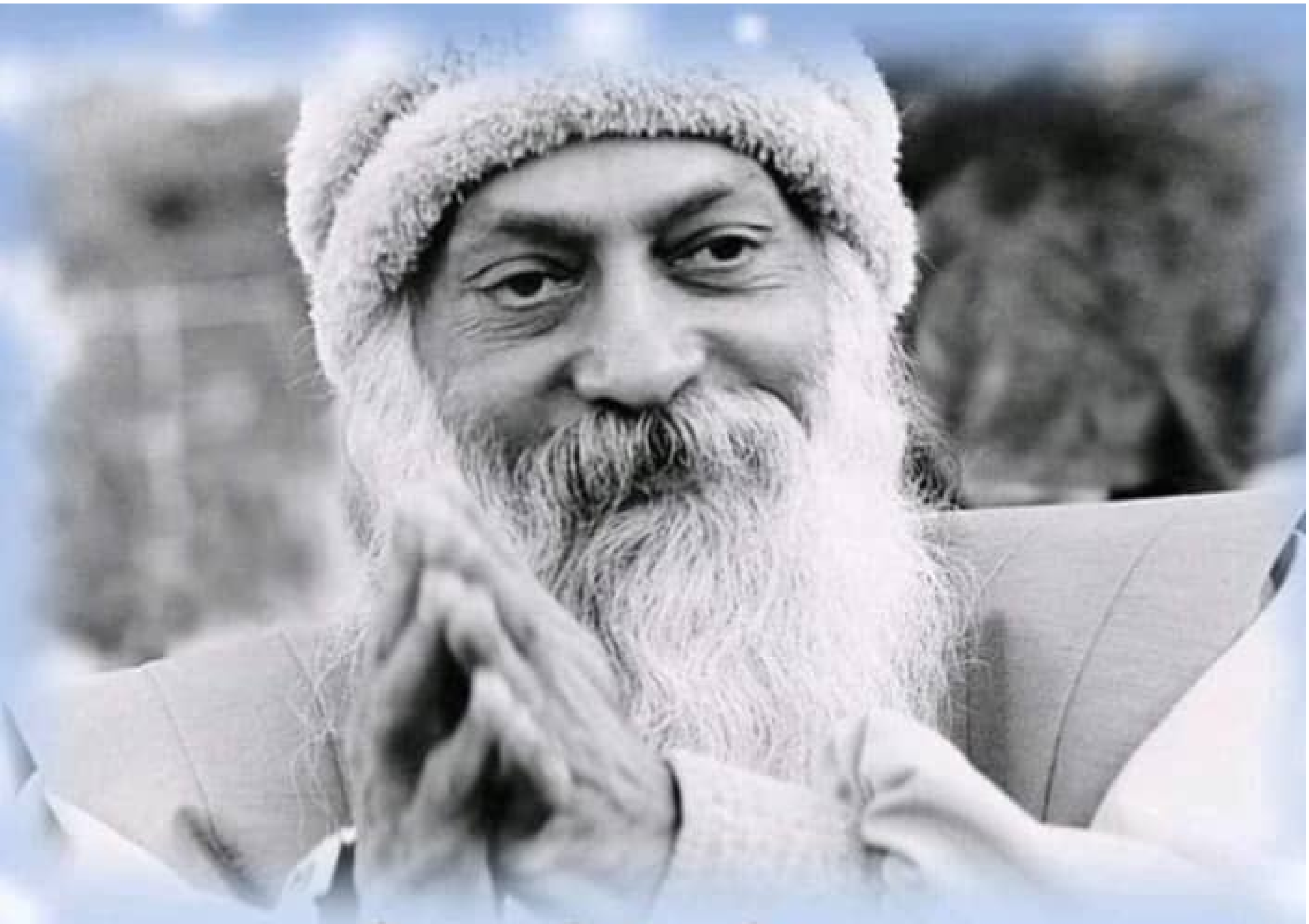

Prem ! Prbhu Osho...

तुम बिल्कुल शून्य मात्र हो जाओगे, उसी क्षण फिर तुम्हारी कोई मृत्यु नहीं है।

मृत्यु वासना की है। तुम्हारा जीवन वासना है, इसलिए तुम्हारे भीतर मृत्यु बड़ी होती है। तुम्हारे भीतर की वासना ही तुम्हारे भीतर की मृत्यु है।

जो निर्वासना को उपलब्ध हुआ वह अमृत को उपलब्ध हो गया।

ताओ उपनिषद : भाग 5 ,प्रवचन 50

ओशो...

CS CamScanner

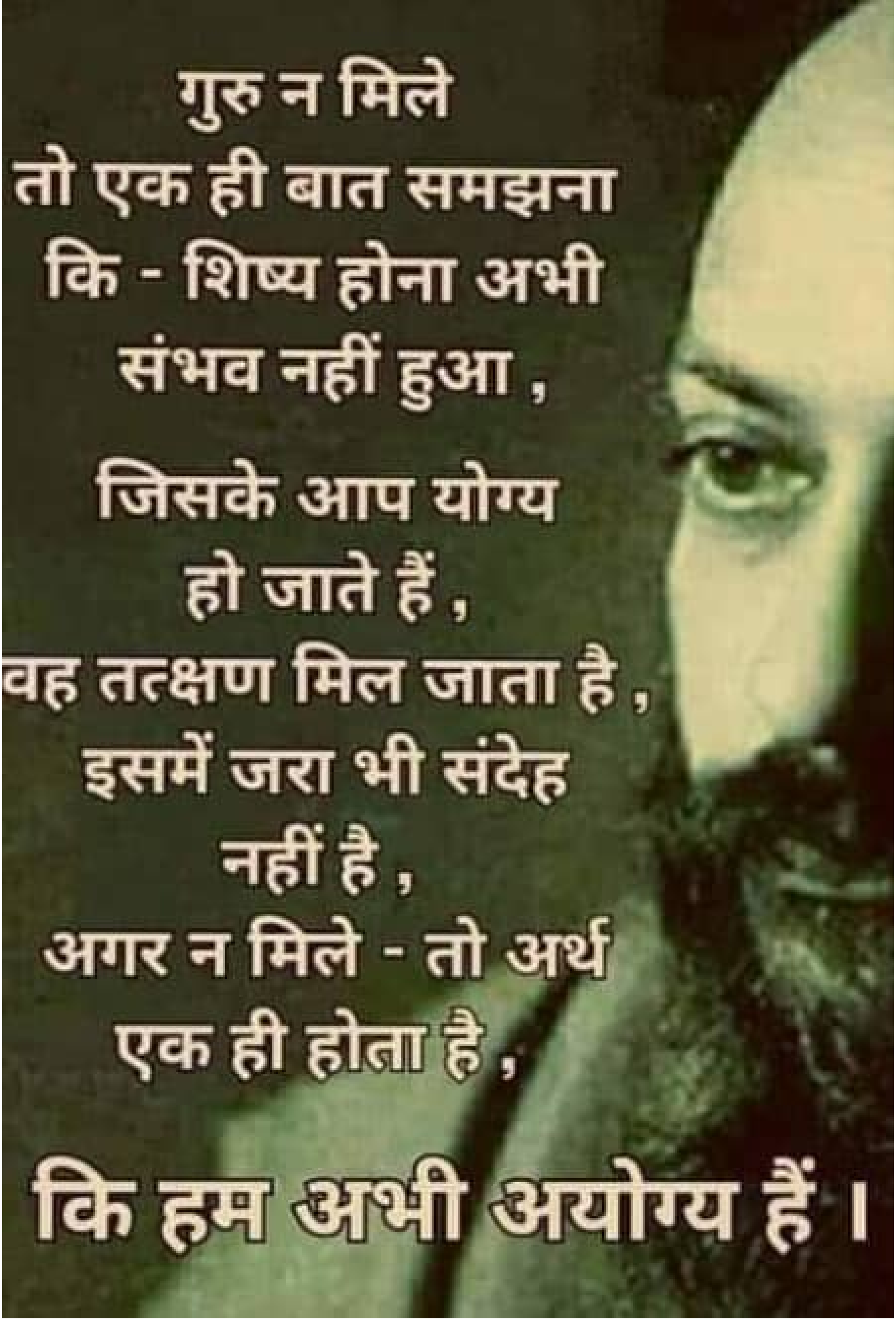
गुरु न मिले
तो एक ही बात समझना
कि - शिष्य होना अभी
संभव नहीं हुआ ,
जिसके आप योग्य
हो जाते हैं ,
वह तत्क्षण मिल जाता है ,
इसमें जरा भी संदेह
नहीं है ,
अगर न मिले - तो अर्थ
एक ही होता है ,
कि हम अभी अयोग्य हैं ।

CamScanner

लोग कहते हैं कि संतों को स्वर्ग भेजा
जाता है और पापियों को नर्क। यह बात
बिलकुल गलत है। संतों को स्वर्ग नहीं
भेजा जाता -संत तो जहां होते हैं वहां स्वर्ग
होता है। और पापियों को नर्क नहीं भेजा
जाता -पापी जहां होते हैं वहीं नर्क होता
है। भेजने की जरूरत ही नहीं पड़ती।
वे खुद ही अपना नर्क और अपना
स्वर्ग बना लेते हैं।
OSHO universal / DHAVAL parmar

CamScanner

इस दुनिया में
न हिंदुओं की जरूरत है,
न मुसलमानों की,
न ईसाईयों की;
इस दुनिया में तो सिर्फ
धार्मिक लोगों की जरूरत है।
और धार्मिक व्यक्ति सांप्रदायिक नहीं होता।
धार्मिक व्यक्ति राजनैतिक नहीं होता।
धार्मिक व्यक्ति किसी देश,
किसी सीमा में आबद्ध नहीं होता है।

CamScanner

6:36 am 0 KB/s VoLTE 4G 33%

Osho Thoughts
Munabai Makvana · 15h ·

प्रश्न : ओशो आपके चित्र भी बिकते हैं और लोग आपके चित्र भी अपने घरों में लगाते हैं और आप तो मूर्ति के विरोध में हैं।

मैं मूर्ति के और चित्र के विरोध में कभी भी नहीं हूं। मूर्ति और चित्र में भी वही फर्क है जो किताब और शास्त्र में फर्क है। मैंने कभी नहीं कहा कि राम के चित्र को अपने घर में मत लगाना। मैंने कभी नहीं कहा कि महावीर के चित्र को अपने घर में मत लगा लेना। मैंने यह भी नहीं कहा कि महावीर की पत्थर की प्रतिमा अपने घर में मत रख लेना। महावीर जैसे प्यारे आदमी की स्मृति घर में रखी जा सकती है। बुद्ध जैसे प्यारे आदमी की स्मृति जिस घर में नहीं है वह घर अधूरा है। और जीसस का सूली पर लटका हुआ चित्र जिस घर के भीतर नहीं है, उस घर के बच्चों को पता नहीं कि कितने अदभुत लोग जमीन पर हो चुके हैं।

लेकिन पूजा मत करना। प्रेम करना, पूजा नहीं। क्योंकि पूजा दूसरा ही अर्थ रखती है। पूजा यह कहती है कि इस पत्थर की मूर्ति के सामने हाथ जोड्ने से मुझे मुक्ति मिल सकती है। यह बेवकूफी की शुरुआत हो गई। किसी मूर्ति के और किसी चित्र के सामने बैठने से मुक्ति नहीं मिल सकती। और कोई मूर्ति और कोई चित्र भगवान तक पहुंचने का रास्ता नहीं बन सकता। कोई मूर्ति भगवान नहीं है। मूर्ति और चित्र उन प्यारे लोगों की स्मृतियां हैं जो जमीन पर हो चुके हैं। और उनकी स्मृति न रखी जाए, यह मैंने कभी भी नहीं कहा है।

मैं मूर्तियों के मंदिर बनाने के खिलाफ हूं। लेकिन घर—घर में मूर्तियां हों, इसके पक्ष में हूं। एक—एक घर में मूर्तियां हों। लेकिन मूर्तियां भगवान की तरह नहीं, एक पवित्र स्मरण की तरह, एक सैक्रेड रिमेंबरिंग की तरह। जमीन पर कुछ फूल हुए हैं मनुष्य के जीवन में, कुछ मनुष्य हुए हैं जो खिल गए हैं पूरे, उनकी याद अगर आदमी रखे तो मैं कैसे उसके खिलाफ हो सकता हूं?

*🌹 ओशो 🌹 *

CamScanner

1 - अपने दुःखो को छिपाए यहां किसी को
आपके दुःखो की कोई परवाह नहीं हैं

2 - हर बात हर किसी को नहीं बताए
क्यूंकि हर व्यक्ति आपका भला नहीं चाहता

3 - शांत रहें कुछ भी हमेशा के लिए नहीं होता

4 - अकेले रहना सिखों यहाँ
कोई हमेशा के लिए साथ नहीं रहेगा

5 - दूसरो पर ज्यादा निर्भर नहीं रहें इस से आप
खुद को खो सकते हो

CamScanner

गुरर्जीएफ अपने शिष्यों से कहता था,
तुम्हारे जीवन की जो सबसे बड़ी
कमजोरी है, उसे तुम पकड़ लो,
क्योंकि वही सीढ़ी बन जायेगी।
जो सबसे बड़ी कमजोरी है,
उसे पकड़ लो और उस कमजोरी को
मिटाने में लग जाओ।
या वह कमजोरी जिससे मिट जायेगी,
उस गुण को साधने में लग जाओ—
तुम्हारा पूरा जीवन रूपांतरित हो जायेगा।

महावीर वाणी, भाग-२, प्रवचन#५०, ओशो

ओशो-दर्शन समूह

CamScanner

जैसे-जैसे विचार दूर होते हैं, वैसे-वैसे परमात्मा करीब होता है। जितने ज्यादा विचार तुम्हारे मन में हैं, उतनी ही परमात्मा से ज्यादा दूरी है; जितने कम विचार रह जाएंगे, उतनी ही कम दूरी विचार का अनुपात परमात्मा से दूरी है। उसी अनुपात में दूरी होती है। जिस दिन विचार बिलकुल शून्य हो जाएंगे, उस दिन कोई दूरी न रह जाएगी। संन्यास की एक ही प्रक्रिया है उनमनि मुद्रा! इसलिए संन्यास को बाहर से आयोजित नहीं करना होता क्या खाएं, क्या पीएं, कैसे उठें, कैसे बैठें यह सब गौण है। असली बात भीतर घटती है, अंतरतम में।

ओशो अहोभाव

कहै वाजिद पुकार

CamScanner

न मैं
अनुयायियों को मानता हूं,
न गुरुओं को।
न मैं किसी से प्रभावित हूं,
न किसी को
प्रभावित करने की इच्छा है।
न आपसे आशा करता हूं
कि आप तुलना करें।
सुनें। समझें। छोड़ दें–फिर।
न मेरे साथ चलने की जरूरत है।
न मेरे पीछे चलने की जरूरत है।
थोड़ी देर के लिए मिल गए।
थोड़ी देर के लिए हंस-बोल लिए।
फिर अपना-अपना रास्ता है।
कोई किसी के साथ नहीं है।
सब अकेले हैं।

CS CamScanner

इसे सुनें

1. ओशो रजनीश के तीन गुरु थे। **मग्गा बाबा, पागल बाबा और मस्तो बाबा**।
इन तीनों ने ही रजनीश को आध्यात्म की ओर मोड़ा, जिसके चलते उन्हें उनके पिछले जन्म की याद भी आई।

CamScanner

11:53 pm 19 KB/s 80%

facebook

Like Comment Share

चार धाम उत्तराखंड
11h ·

ॐ सृष्टि(वर्तमान कल्प) के आरम्भ से लेकर आज तक के सनातन धर्म का
वैदिक कैलेंडर (सनातन 4 वेदों की तारीख) 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 123वां वर्ष सृष्टि का अभी चल रहा है (1,96,8,53,123वां साल)।

यहाँ ये विचारणीय बात है कि सृष्टि की ये आयु केवल इस कल्प की है ऐसे कोटि-कोटि कल्प बीत चुके हैं और भविष्य में आने वाले है क्योंकि ये सृष्टि प्रवाह से अनादि और अनंत है और हर सृष्टि के प्रारंभ में ईश्वर मानव कल्याण के लिए अपना वेदों का ज्ञान प्रकट करता हैं 🚩🙏
बाकी मजहब और रिलीजन के किताबों की तारीख 1400-2000 सालों के आसपास ही मिलती है।
सनातन वैदिक धर्म की जय 🚩❤️ ॐ

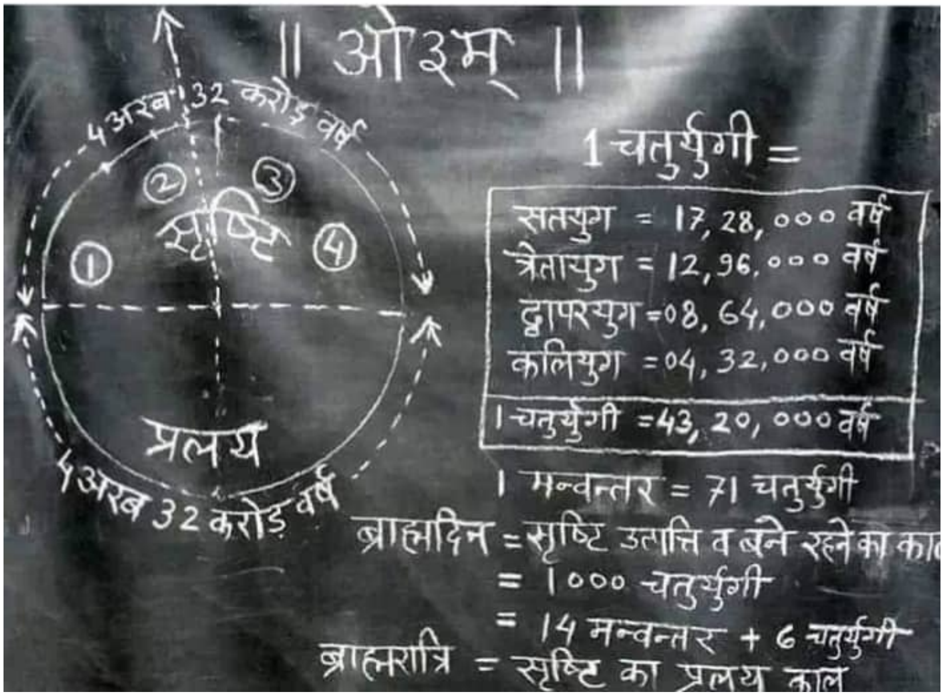

CamScanner

॥ ओ३म् ॥

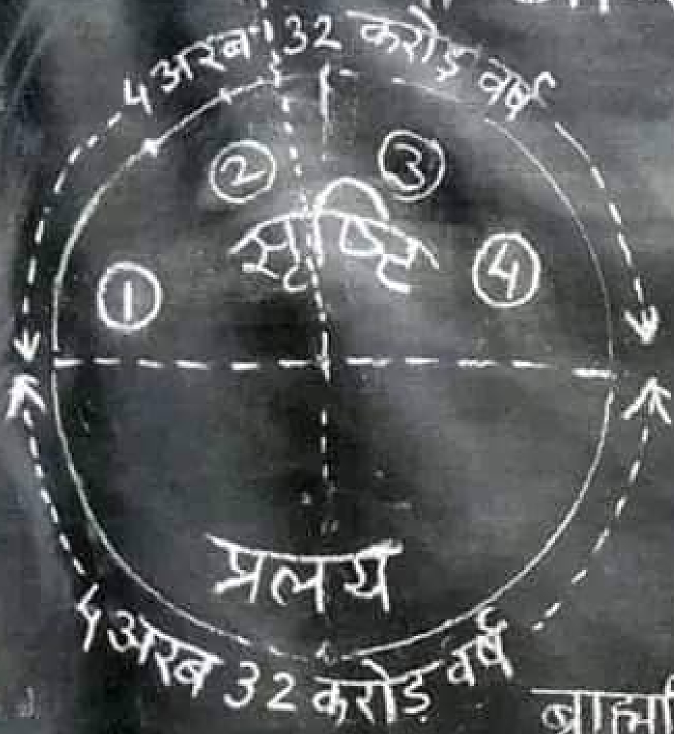

1 चतुर्युगी =

सतयुग	= 17,28,000 वर्ष
त्रेतायुग	= 12,96,000 वर्ष
द्वापरयुग	= 08,64,000 वर्ष
कलियुग	= 04,32,000 वर्ष
1 चतुर्युगी	= 43,20,000 वर्ष

1 मन्वन्तर = 71 चतुर्युगी

ब्राह्मदिन = सृष्टि उत्पत्ति व बने रहने का काल
= 1000 चतुर्युगी
= 14 मन्वन्तर + 6 चतुर्युगी

ब्राह्मरात्रि = सृष्टि का प्रलय काल
= 1000 चतुर्युगी

वर्तमान में 7 वें मन्वन्तर की 28 वीं चतुर्युगी के कलियुग का 5121 वाँ वर्ष चल रहा है।

	अ	क	ल	ह
बीत चुके 6 मन्वन्तर =	1,	84,	03,	20,000 वर्ष
7 वें मन्वन्तर की बीती 27 चतुर्युगी =		11,	66,	40,000 वर्ष
28 वीं चतुर्युगी के बीते 3 युग =			38,	88,000 वर्ष
28 वीं चतुर्युगी के कलियुग का वर्तमान वर्ष =				5,121 वाँ वर्ष

वर्तमान सृष्टि संवत् का काल = **1,96,08,53,121 वाँ वर्ष**

CamScanner

11:50 pm 29 KB/s VoLTE 4G 80%

पुरानी कथा है। एक युवा संन्यासी ने अपने गुरु को पूछा, यह संसार है क्या? गुरु ने कहा, तू ऐसा कर, तू आज गांव में जा, फला–फलां द्वार पर भिक्षा मांग लेना। लौट कर जब आएगा तब संसार क्या है, बता दूंगा। युवक तो भागा। ऐसी शुभ घड़ी ठग गई कि गुरु ने कहा कि संसार क्या है, बता दूंगा। तू भिक्षा मांग ला।

उसने जाकर द्वार पर दस्तक दी। एक सुंदर युवती ने द्वार खोला। अति सुंदर यूवती थी। युवक ने ऐसी सुंदर स्त्री कभी देखी न थी। उसका मन मोह गया। वह यह तो भूल ही गया कि गुरु के लिए भिक्षा मांगने आया था, गुरु भूखे बैठे होंगे। उसने तो युवती से विवाह का आग्रह कर लिया। उन दिनों ब्राह्मण किसी से विवाह का आग्रह करे तो कोई मना कर नहीं सकता था। युवती ने कहा, मेरे पिता आते होंगे। वे खेत पर काम करने गए हैं। हो सकेगा। घर में आओ, विश्राम करो।

वह घर में आ गया। वह विश्राम करने लगा। पिता आ गए, विवाह हो गया। वि गुरु की तो बात ही भूल गया। वह भिक्षा मांगने आया था, यह तो बात ही भूल गया। उसके बच्चे हो गए, तीन बच्चे हो गए। फिर गाव में बाढ़ आई, नदी पूर चढ़ी।' सारा गांव डूबने लगा। वह भी अपने तीन बच्चों को और अपनी पत्नी को लेकर भागने की कोशिश कर रहा है। और नदी विकराल है। और नदी किसी को छोड़ेगी नहीं। सब डूब गए हैं, वह किसी तरह बचने की कोशिश कर रहा है। एक बच्चे को बचाने की कोशिश में दो बच्चे बह गए। इधर हाथ छूटा, दो बह गए। पत्नी को बचाने। बच्चा भी बह गया। फिर अपने को बचाने की ही पड़ी तो पत्नी भी बह गई। किसी तरह खुद बच गया, किसी तरह लग गया किनारे, लेकिन इस बुरी तरह थक गया कि गिर पड़ा। बेहोश हो गया।

जब आंख खुली तो गुरु सामने खड़े थे। गुरु ने कहा, देखा संसार क्या होता है? ओर तब उसे याद आया कि वर्षों हो गए, तब मैं भिक्षा मांगने निकला था। गुरु ने कहा, कुछ भी नहीं हुआ है सिर्फ तेरी झपकी लग गई थी। जरा आंख खोल कर देख।

ओशो

CamScanner

कुछ मत करो। अंतस बहुत गहरा है। कितनी बार तुमने कोशिश नहीं की दुख रुके, कि उदासी रुके, कि यह रुके, वह रुके और कुछ भी नही रुका।

अब यह प्रयोग करो कि कुछ मत करो और दुख को उसकी समग्रता में होने दो। दुख को उसकी पूरी त्वरा में होने दो और तुम निष्क्रिय बने रहो। तुम सिर्फ दुख के साथ रहो और देखो कि क्या होता है।

जीवन परिवर्तन है। हिमालय भी बदल रहा है। तुम्हारा दुख अचल नहीं रह सकता; वह अपने आप ही बदलेगा। और तुम दुख को बदलते हुए देखोगे, उसे विलीन होते हुए देखोगे, उसे बिदा होते हुए देखोगे, और तब तुम निर्भार महसूस करोगे। और तुमने कुछ भी तो नही किया।

ओशो

CamScanner

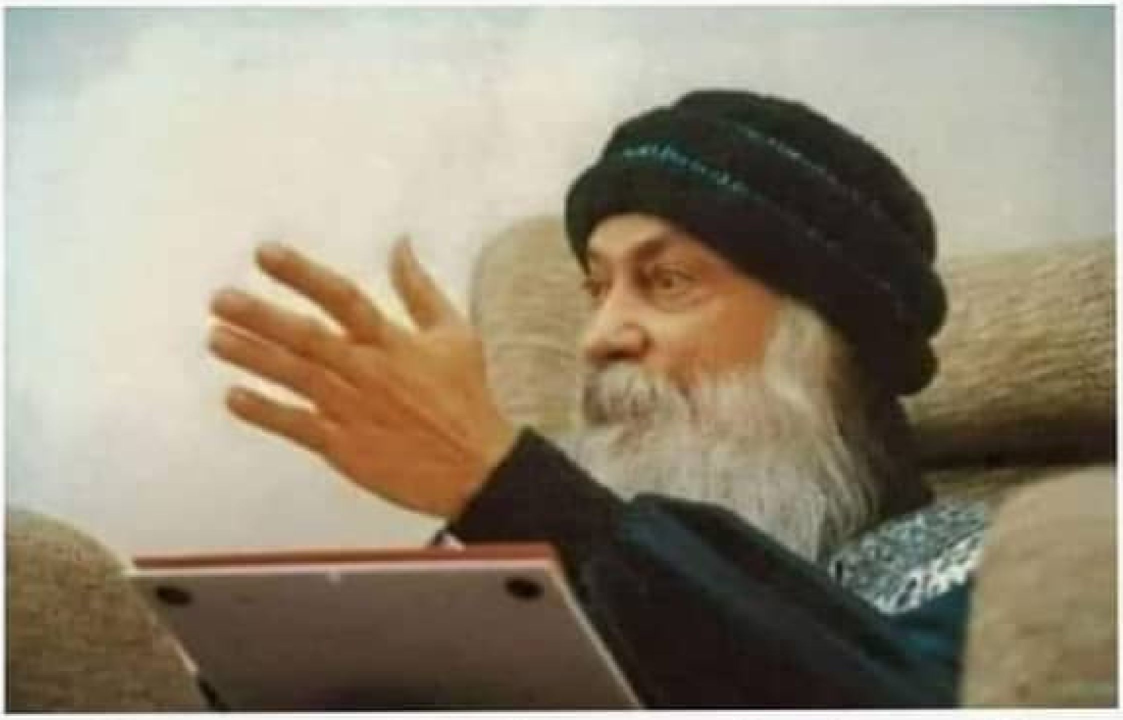

या चित्त पूरा शांत हो जाए, तो जीवन में सत्य का अनुभव हो सकता है। अतियों पर क्रांति होती है, एक्सट्रीम पर क्रांति होती है। बीच में कोई क्रांति नहीं होती।

दुख की अति मनुष्य को दुख के बाहर फेंक देती है। लेकिन हम कभी अति तक दुखी नहीं होते। हम हर दुख को भुला लेते हैं और हर दुख को समझाने का कोई मार्ग निकाल लेते हैं।इसिलिये हम सत्य को उपलब्ध नहीं होते

अहोभाव
ओशो
अमृत की दिशा

CamScanner

गंभीर मत होओ।
अपनी गपशप का आनंद लो,
जीवन की छोटी-छोटी चीजों का,
जीवन के छोटे-छोटे सुखों का आनंद लो।
यह सब तुम्हारे अंतस को समृद्ध करते हैं।

सुगम है मंदिर जाना; मन में जाना कठिन है।
लइसलिए सुगम को लोग चुन लेते है।
पर सुगम का सत्य से कोई सम्बन्ध नहीं है।
सुविधा से सत्य का कोई सम्बन्ध नहीं है।
इसलिए,
अधिक लोग पूजा करते है, प्रार्थना करते है।
पर बहुत थोड़े लोग ध्यान करते है।
पर जो ध्यान करते है,

CS CamScanner

जैसे प्यासा पानी को खोज
ही लेता है ठीक ऐसा ही न्याय
सत्य के साथ है जिसे प्यास
होती है वह सत्य पा ही लेता है
शर्त बस एक ही है प्यास।
– Atmarpit ~आत्मार्पित
YourQuote.in

CamScanner

CS CamScanner

मन तुम्हारा गुलाम है, तुम्हारा यंत्र है; तुम मालिक हो। अपनी मालकियत की घोषणा करो। यह कोई दमन नहीं है मन का, यह सिर्फ मालकियत की घोषणा है। यह सिर्फ यह कहना है कि मैं मालिक हूं, निर्णायक मैं हूं; तेरा काम मेरे निर्णय में साथ पहुंचाना है। जल्दी ही तुम पाओगे, मन हट जाता है - ताओ उपनिषद #113

ओशो अहोभाव @ahobhav_

CamScanner

परमात्मा ने तुम्हें शरीर और आत्मा दोनों बनाया है। और तुम्हारे महात्मा तुम्हें समझा रहे हैं कि तुम सिर्फ आत्मा हो! लाख तुम्हारे महात्मा समझाते रहें कि तुम सिर्फ आत्मा हो, कैसे झुठलाओगे इस सत्य को जो परमात्मा ने तुम्हें दिया है कि तुम देह भी हो!

तुम्हारा महात्मा भी इसको नही झुठला पाता। जब भूख लगती है, तब वह नही कहता कि मैं देह नही हूं। तब चला भिक्षा मांगने! उससे कहो कि संसार माया है, कहां जा रहे हो?

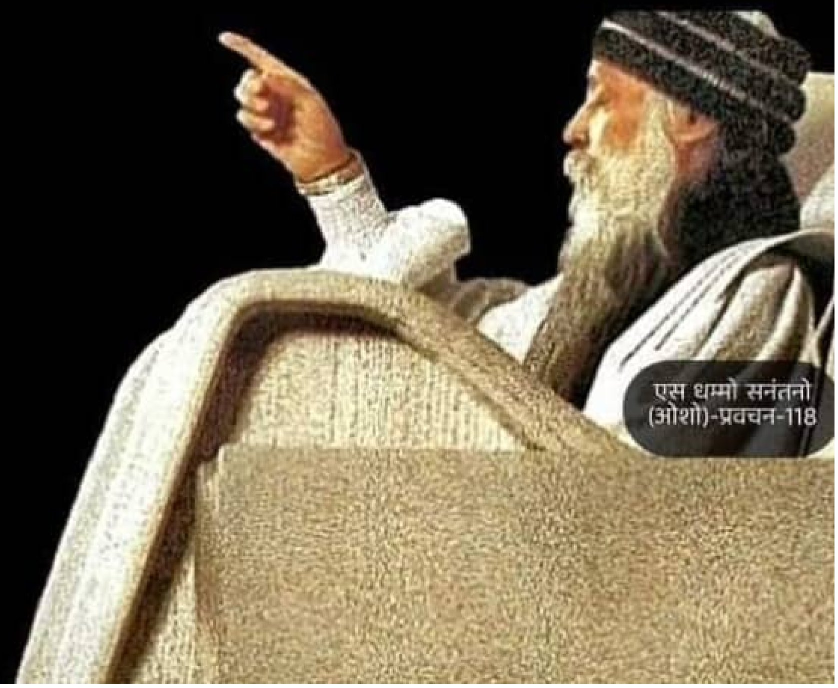

CamScanner

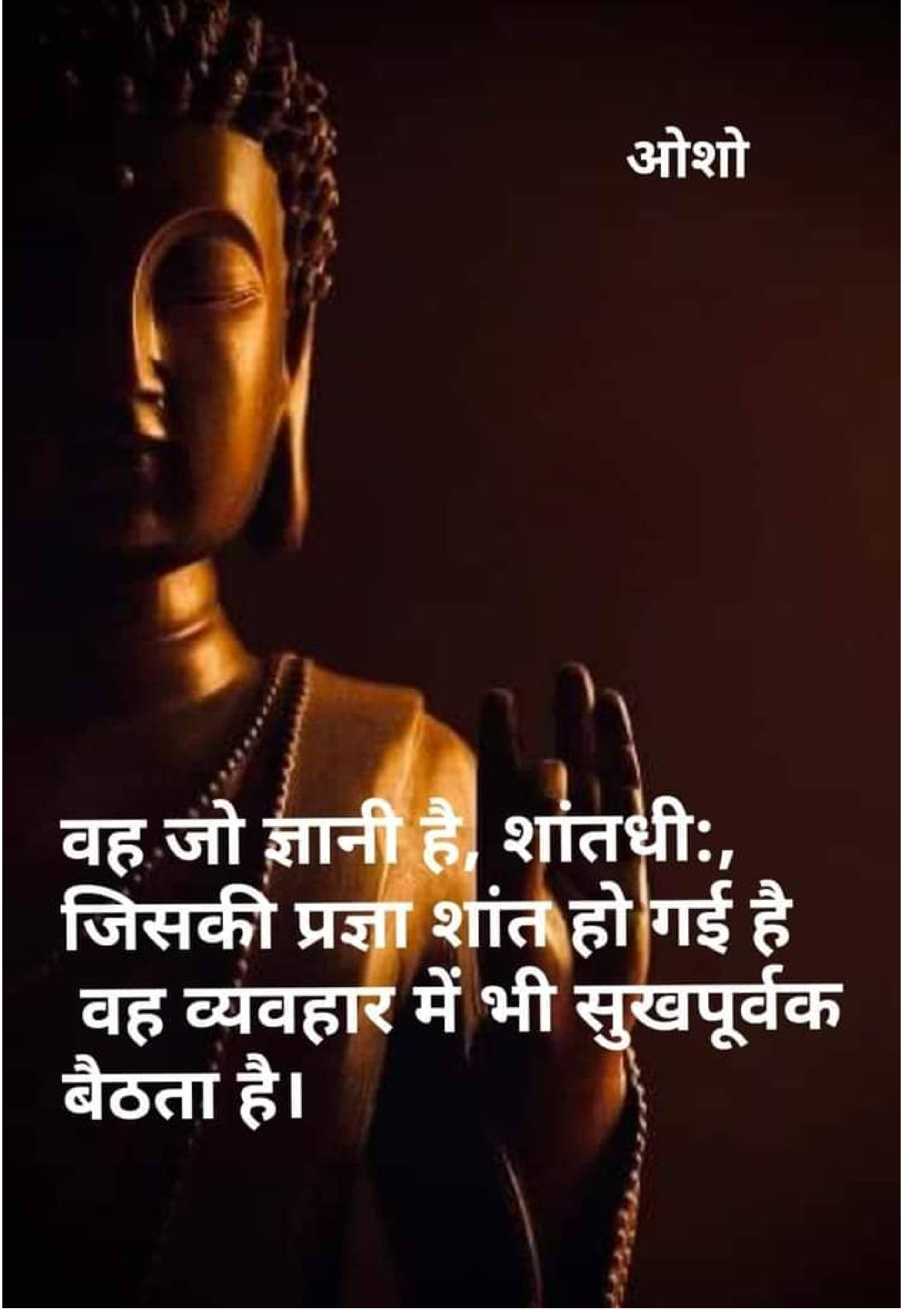

CamScanner

जीवन के रहस्यात्मक नियमों में से
एक नियम यह है कि
जो मांगा जाएगा, वह नहीं मिलेगा;
जो नहीं मांगा जाएगा, वही मिलता है।
जिसके पीछे हम दौड़ते हैं, उसे ही खो देते हैं;
और जिसको हम दौड़ना छोड़ देते हैं जिसके पीछे,
वह हमारे पीछे छाया की तरह चला आता है।
इस नियम को न समझ पाने से जीवन में
बड़ा दुख और बड़ी पीड़ा है।
और साधारण जीवन में शायद कभी हमें
ऐसा भ्रम भी हो जाए कि मांगने से भी
कुछ मिल जाता है, लेकिन
दिव्य शक्तियों से तो कभी भी
मांगने से कुछ नहीं मिलता है।
दिव्य शक्तियों के लिए जो
अपने हृदय में द्वार खोल देता है,
उसे सब मिल जाता है,

CamScanner

CS CamScanner

जब ओशो के शरीर को जलाने के लिए ले जाया जा रहा था... तो उनकी मां ने कहा था... भगवान मेरे गर्भ में रहा... तब मैं अनजान थी.... मेरी छाती से चिपक कर रोया... मुझे ख़बर ही नहीं... मेरे आंगन खेला.... मैं पहचान न सकी... आज जब वो जाता है... तब जानती हूं... कि वो भगवान जा रहा है..... लेकिन, अब क्या! .. अब क्या!.. अब क्या!... ??

CamScanner

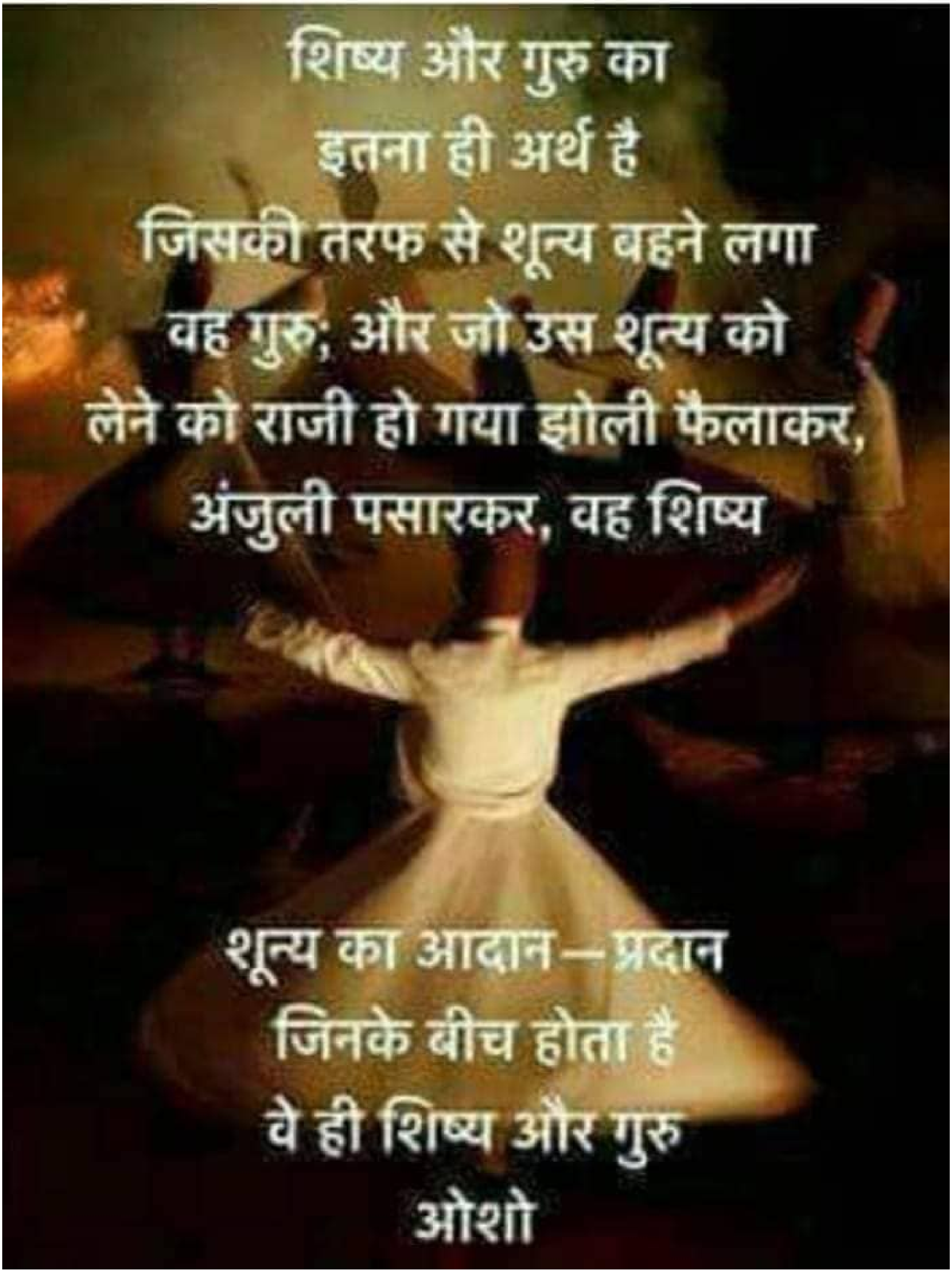
शिष्य और गुरु का
इतना ही अर्थ है
जिसकी तरफ से शून्य बहने लगा
वह गुरु; और जो उस शून्य को
लेने को राजी हो गया झोली फैलाकर,
अंजुली पसारकर, वह शिष्य
शून्य का आदान–प्रदान
जिनके बीच होता है
वे ही शिष्य और गुरु
ओशो

CamScanner

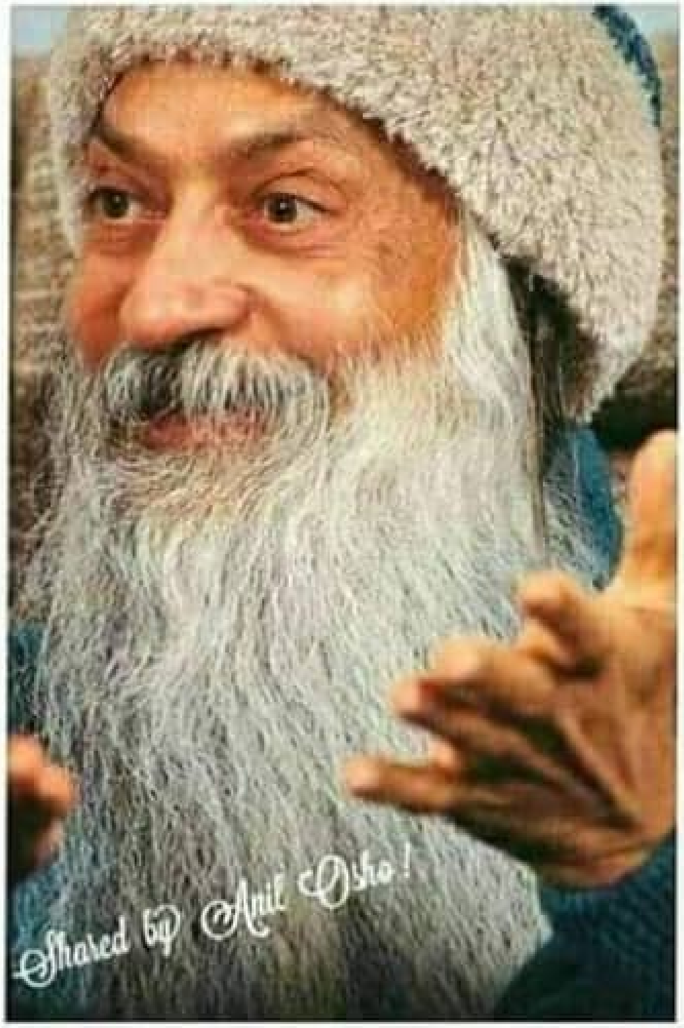

धार्मिक आदमी वह
नहीं जो मंदिर
जाता हो !
धार्मिक आदमी वही
है जहां पहुच जाये
वही मंदिर हो जाये !

CamScanner

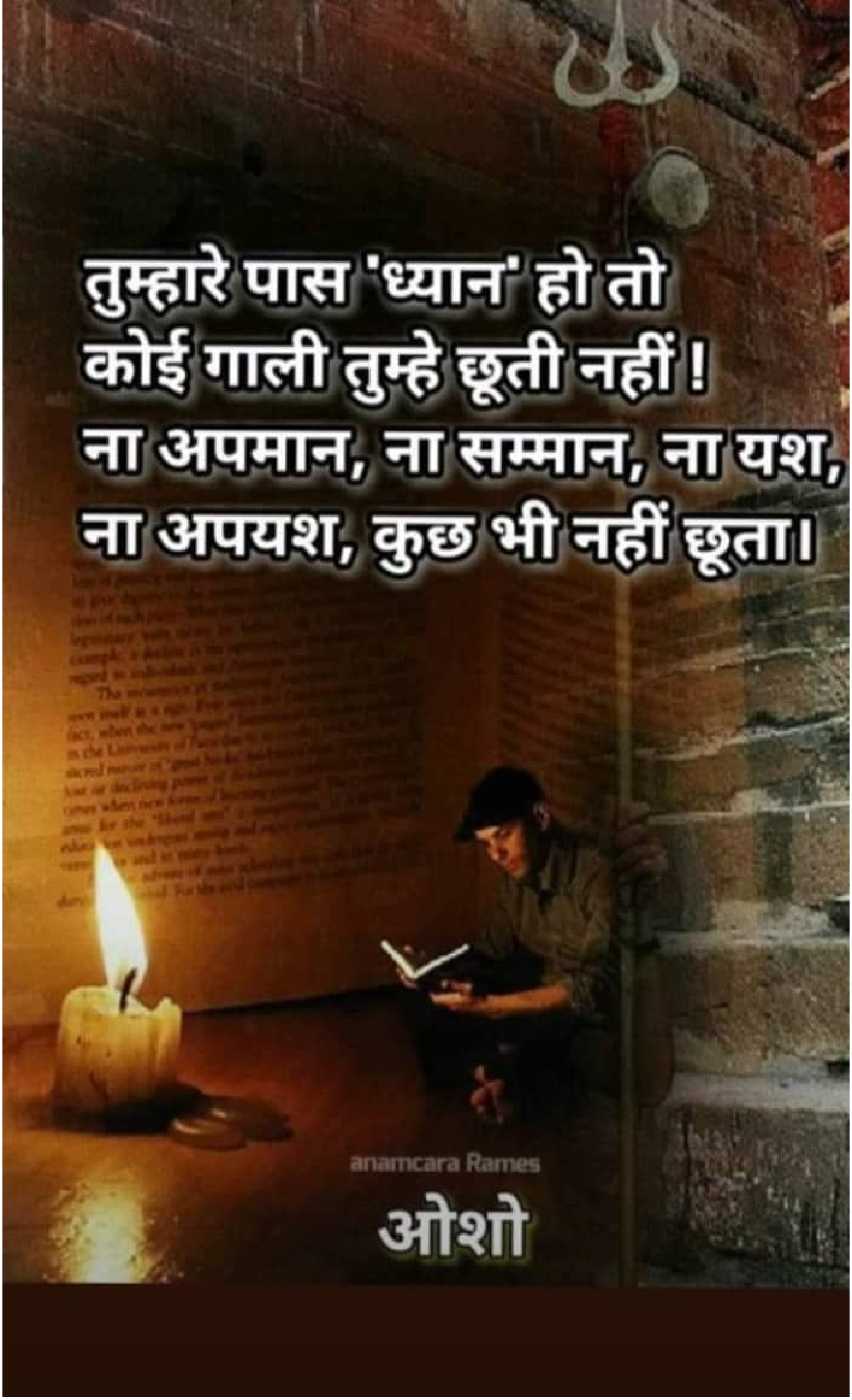
तुम्हारे पास 'ध्यान' हो तो
कोई गाली तुम्हे छूती नहीं !
ना अपमान, ना सम्मान, ना यश,
ना अपयश, कुछ भी नहीं छूता।
anamcara Rames
ओशो

CamScanner

7:14 pm 879 KB/s 46%

google.com/search?q=ta

Google

tatvamasi meaning in hindi

Images Videos News Shopping Books

हिंदी में खोजें तत्वमसी मीनिंग इन हिंदी

इसे सुनें

तत्त्वमसि (तत् त्वम् असि) भारत के शास्त्रों व उपनिषदों में वर्णित महावाक्यों में से एक है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, वह तुम ही हो। वह दूर नहीं है, बहुत पास है, पास से भी ज्यादा पास है। तेरा होना ही वही है।

https://www.bhaktibharat.com › tat...

तत्त्वमसि महावाक्य - Tatwamasi - BhaktiBharat.com

About featured snippets Feedback

People also ask

तत्वमासी का क्या अर्थ है?

चार महावाक्य कौन से हैं?

अहं ब्रह्मास्मि कौन से सिध्दांत का महावाक्य है?

CamScanner

परलोक का क्या अर्थ है ?
आमतौर से हमे यही ख्याल है कि
परलोक का अर्थ मरने के बाद है |
लेकिन जब आत्मा मरती ही नहीं तो
मरने के बाद परलोक का अर्थ ठीक नहीं है |
परलोक कहीं मरने के बाद और नहीं है ,
परलोक अभी और यहीं मौजूद है ,
जस्ट बाइदी कार्नर |
पर हमें उसका कोई पता नहीं |
जिसे अपना पता नहीं , उसे परलोक का
पता नहीं हो सकता |
क्योंकी परलोक में जाने का अर्थ स्वयं का
अस्तित्व है , स्वयं का होना है |
जिसे अपना पता है , वह एक ही साथ परलोक
और लोक की देहरी पर खड़ा हो जाता है |
इस तरफ झांकता है तो लोक,
उस तरफ झांकता है तो परलोक |
बाहर सिर करता है तो लोक ,
भीतर सिर करता है तो परलोक |
परलोक अभी और यहीं है |
ओशो

CamScanner

10:03 pm 20 KB/s 48%

more

169 2 comments • 25 shares • 2K views

Like Comment Share

OSHO SHIVDHARA
Meera Sharma · 1d ·

CamScanner

जब तक तुम्हारे जीवन का फूल न खिले और जीवन के फूल में प्रेम की सुगंध न उठे तब तक तुम बेचैन रहोगे। ओशो अहोभाव

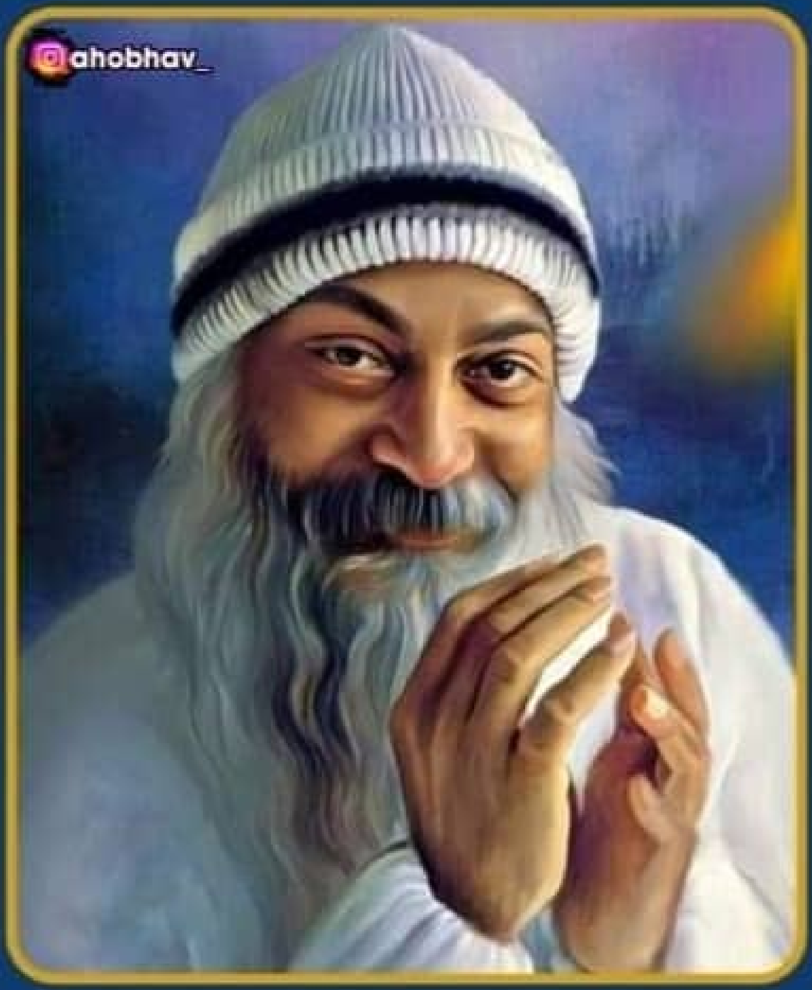

CamScanner

9:55 pm 7 KB/s VoLTE 4G 50%

जो लोग मीरा पर किताबें लिखते हैं--वे सब लिखते हैं: दुर्भाग्य से। मैं ऐसा नहीं कह सकता। यह सौभाग्य से ही हुआ।

वे लिखते हैं दुर्भाग्य से, क्योंकि मृत्यु को सभी लोग दुर्भाग्य मानते हैं। लेकिन यही तो मीरा के जन्म का कारण बना। जितना भी प्रेम कहीं था, वह सब सिकुड़ता गया। सारा प्रेम गोपाल पर उमड़ता गया। मां से लगाव था, मां चल बसी।

उतना प्रेम जो मां से उलझा था, वह भी गोपाल के चरणों में रख दिया। फिर बाबा ने पाला, फिर बाबा चल बसे; उनसे प्रेम था, वह भी गोपाल के चरणों में रख दिया। ऐसे संसार छोटा होता गया, सिकुड़ता गया और परमात्मा बड़ा होता गया।

तो मैं नहीं कह सकता दुर्भाग्य से; मैं तो कहूंगा सौभाग्य से; क्योंकि मृत्यु का मेरे लिए कोई ऐसा भाव नहीं है, मृत्यु के प्रति कि वह कोई आवश्यक रूप से अभिशाप है। सब तुम पर निर्भर है। मीरा ने उसका ठीक उपयोग कर लिया।

जहां-जहां से प्रेम उखड़ता गया, एक-एक प्रेम-पात्र जाने लगा, वह अपने उस प्रेम को परमात्मा में चढ़ाने लगी।

अंतिम सूत्र था--पिता का रहना। पिता भी चल बसे। पति भी चल बसे, पिता भी चल बसे। पांच मृत्युएं हो गईं सतत।

जगत से सारा संबंध टूट गया। उसने ठीक उपयोग कर लिया। जगत से टूटते हुए संबंधों को उसने जगत के प्रति वैराग्य बना लिया। और जगत से जो प्रेम मुक्त हो गया, उसको परमात्मा के चरणों में चढ़ा दिया। वह कृष्ण के राग में डूब गई।

और इन मृत्युओं ने एक और सौभाग्य का काम किया, कि इन्होंने एक बात दिखा दी कि इस जगत में सब क्षणभंगुर है; अगर प्यारा खोजना हो तो शाश्वत में खोजो। यहां कुछ अपना नहीं है।

यहां भरमो मत, अपने को भरमाओ मत! यहां सब छट जाने वाला है।

CamScanner

9:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G 51%

एक जैन मुनि से, देशभूषण महाराज से मेरा मिलना हुआ। मिलना चाहते थे, तो मैंने कहा कि जरूर। नग्न हैं, दिगंबर हैं, सब छोड़ दिया। मुझसे बोले कि आप गीता पर बोले, आप उपनिषद पर बोले, आप धम्मपद पर बोले, लेकिन कुंदकुंद के "समयसार' पर क्यों नहीं बोले? उमास्वाति के "तत्वार्थ-सूत्र' पर क्यों नहीं बोले? अरे, अपने शास्त्रों पर क्यों नहीं बोलते हो?

मैंने उनसे पूछा: अपने और पराए! आप तो सब छोड़ आए, वस्त्र भी छोड़ दिए, और अभी भी अपना-पराया मौजूद है! अभी गीता पराई! अभी धम्मपद पराया! अभी कुंदकुंद का "समयसार' अपना! अभी उमास्वाति का "तत्वार्थ-सूत्र' अपना!

वही मेरा, वही तेरा। दुकानों में बंटा था, अब मंदिरों में बंटा। बही-खातों में बंटा था, अब शास्त्रों में बंटा। मगर शास्त्र सिवाय बही-खाते के और क्या हैं? ऐसे आदमियों के हाथ में शास्त्र भी बही-खाते ही हैं।

आदमी आश्चर्यचकित कर देता है अगर उसके संबंध में सोचो! पत्ते छांटता रहता है, जड़ें नहीं काटता। और पत्ते छांटने से कहीं कोई क्रांति होने वाली है! जड़ें काटनी होंगी। जड़ है मन।

मन एव मनुष्यानां कारणं बंधमोक्षयो:।

कुछ मत छोड़ो, कहीं भागो मत। इसलिए मैं अपने संन्यासी को कहता हूं: जहां हो वहीं जागो। भागने वाले जाग नहीं पाते। भागने वाले तो भयभीत हैं, कायर हैं। मगर हम कायरों को भी बड़े प्यारे नाम दे देते हैं, उनको कहते हैं--रणछोड़दास जी! रण छोड़ भागे!

मेरे गांव में एक मंदिर था--रणछोड़दास जी का मंदिर। मैंने उस गांव के पुजारी को जाकर कहा कि देख, इस मंदिर का नाम बदल! उसने कहा, क्यों? नाम कैसा प्यारा है: रणछोड़दास जी! मैंने कहा, तूने कभी सोचा भी कि रणछोड़दास जी का मतलब क्या हुआ? भगोड़े! जिन्होंने पीठ दिखा दी जीवन को। वह थोड़ा चौंका, उसने कहा कि तुझे भी उलटी-सीधी बातें सूझती हैं! मुझे जिंदगी हो गई पूजा करते इस मंदिर में, मैंने कभी यह सोचा ही नहीं कि रणछोड़दास जी का यह मतलब होता है! बात तो तेरी ठीक, मगर अब तो दूर-दूर तक इस मंदिर की ख्याति है: रणछोड़दास जी का मंदिर। नाम बदला नहीं जा सकता है। मगर तूने एक अड़चन मेरे लिए पैदा कर दी। यह शब्द तो गलत है। कोई अगर युद्ध के क्षेत्र से पीठ दिखा दे, तो हम कायर कहते हैं उसे, और जीवन के संघर्ष से पीठ दिखा दे तो उसको महात्मा कहते हैं! कैसा

CamScanner

9:42 pm 0 KB/s 51%

Osho Thoughts
Munabai Makvana · 2h

एक जैन मुनि से, देशभूषण महाराज से मेरा मिलना हुआ। मिलना चाहते थे, तो मैंने कहा कि जरूर। नग्न हैं, दिगंबर हैं, सब छोड़ दिया। मुझसे बोले कि आप गीता पर बोले, आप उपनिषद पर ... See more

5 1 comment

Like Comment Share

osho ji
1d

CamScanner

हर हृदय में अपूर्व सुगंध भरी है : जरा संबंध जोड़ने की बात है। तुम कस्तूरी मृग हो -- कस्तूरा हो ! भागते फिरते , खोजते फिरते दूर - दूर। और जिस गंध की तलाश कर रहे हो , वह गंध तुम्हारे भीतर से ही उठ रही है। उस कस्तूरी के तुम मालिक हो। कस्तूरी कुंडल बसै ! तुम्हारे भीतर बसी है। कोई जगाए , कोई हिलाए , कोई तुम्हें सचेत करे। और जो भी तुम्हें सचेत करेगा वह तुम्हें नाराज करेगा।इतना स्मरण रहे तो सदगुरु मिल जाएगा। इतना बोध रहे कि जो तुम्हें जगाएगा वह तुम्हें जरूर नाराज करेगा, तो सदगुरु खोजना कठिन नहीं होगा। जो तुम्हें सांत्वना देते हों और तुम्हारे धावों को मलहम - पट्टी करते हों और तुम्हारे अंधेरे को छिपाते हों और तुम्हारे ऊपर रंग पोत देते हों , उनसे सावधान रहना। सांत्वना जहां से मिलती हो , समझ लेना कि वहां सदगुरु नहीं है। सदगुरु तो झकझोरेगा ; उखाड़ देगा वहां से जहां तुम हो , क्योंकि नई तुम्हे भूमि देनी है और नया तुम्हें आकाश देना है।ओशो (Dr Sohan Lal Narang)

CamScanner

9:36 pm 0 KB/s VoLTE 4G 52%

नींद क्या है? तुम जब आंखें खोले हुए होते हो, राह पर चलते, दुकान पर बैठे, तब भी तुम जागे हो? नहीं, कोई ज्ञानी इस बात से राजी नहीं कि तुम जागे हो। तुम सोए हो। तब भी तुम सोए हो। बिस्तर पर तो तुम सोते ही हो, दुकान में भी तुम सोते हो। मंदिर में भी तुम सोते हो। आंख खोलने से कुछ नींद के टूटने का संबंध नहीं है। जब तक भीतर का अंतरतम न खुल जाए, तब तक नींद नहीं टूटती। आंख खुलने से क्या नींद टूटेगी! नींद बड़ी सघन है; आंख खुली रहती हैं और तुम सोए रहते हो। राह पर चलते वक्त तुम जागे हुए थोड़े ही चल रहे हो। हजार विचार चल रहे हैं, हजार सपने और वासनाएं भीतर चल रही हैं और तुम उन्हीं में तल्लीन हो। बाहर भी चलते जा रहे हो और भीतर भी न मालूम कितने विचारों की पर्तें तुम्हें छाए हुए हैं, कितने बादलों में तुम ढंके हो! तुम्हारा सूरज बादलों के बाहर नहीं है। तुम्हारे अंतसचेतन में कोई रोशनी नहीं हो रही है। सब तरफ अंधेरा है। किसी तरह चल लेते हो अभ्यास–वश। इस चलने को तुम जागना मत समझ लेना।

जागने का अर्थ होता है: जब तुम चल रहे हो तो सिर्फ चल रहे हो–और तुम्हारे भीतर एक भी विचार नहीं है। कोई बादल नहीं तुम्हारे चित्त के आकाश पर। तुम्हारे भीतर की ज्योति बिना धूम्र के, कोई धुआं नहीं आस–पास, धूम्ररहित ज्योति है। तो तुम जागे हुए हो।

पतंजलि ने चार अवस्थाएं कही हैं: सुषुप्ति, स्वप्न, जाग्रत और तुरीय। तुरीय ही असली जाग्रत अवस्था है। जिसको हम जाग्रत कहते हैं, उसे तथाकथित जाग्रत कहा है पतंजलि ने–नाममात्र को जाग्रत, कहने मात्र को जाग्रत। वस्तुतः जाग्रत नहीं। सिर्फ बुद्ध जागे हुए हैं। जब बुद्ध चलते हैं तो सिर्फ चलते हैं। जब बुद्ध भोजन करते हैं तो सिर्फ भोजन करते हैं। जब बुद्ध सुनते हैं तो सिर्फ सुनते हैं; जब बोलते हैं तो सिर्फ बोलते हैं। बुद्ध की मौजूदगी सदा वर्तमान क्षण में होती है। इसको बुद्ध ने जागरण कहा है।

बुद्ध ने तो जागरण के ऊपर पूरा शास्त्र निर्मित किया। विपस्सना का ध्यान और सारी अनापानसतीयोग की प्रक्रियाएं जागने के लिए हैं।

मीरा भी जब कहती है: सखी, मेरी नींद नसानी हो। तो वह उसी नींद की बात नहीं कर रही, जो रात तुम बिस्तर पर सोते हो

CamScanner

9:32 pm 1 KB/s VoLTE 4G 52%

नहीं, यहां मेरे पास कुछ भी नियम नहीं है और न कोई अभ्यास है तुम्हें देने को।
सब अभ्यास अहंकार के हैं। अध्यात्म का कोई अभ्यास नहीं।
मैं तो कहता हूं.
जागो! इति ज्ञानं!
यही ज्ञान है!
इति ध्यान! यही ध्यान है!
इति मोक्ष:! यही मोक्ष है!

तुम जाग कर जीने लगो, ध्यान तुम्हारे चौबीस घंटे पर फैल जाएगा।
ध्यान कोई ऐसी चीज थोड़े ही है कि कर लिया सुबह उठ कर और भूल गए फिर।
ध्यान तो ऐसी धारा है जो तुम्हारे भीतर बहनी चाहिए। ध्यान तो ऐसा सूत्र है जो तुम्हारे भीतर बना रहना चाहिए; जो तुम्हारे सारे कृत्यों को पिरो दे एक माला में।
जैसे हम माला बनाते हैं तो फूलों को धागे में पिरो देते हैं, फूल दिखाई पड़ते, धागा तो दिखाई भी नहीं पड़ता—ऐसा ही ध्यान होना चाहिए, दिखाई ही न पड़े।
जीवन के सब काम उठना बैठना, खाना पीना, चलना, बोलना, सुनना, सब फूल की तरह ध्यान में अनस्थूत हो जाएं, ध्यान का धागा सब में फैल जाए।

तो ध्यान तो मेरे लिए जागरण और साक्षी भाव का नाम है।

और जब मैं न रहूंगा, तब निश्चित यह उपद्रव होने वाला है।
क्योंकि कोई न कोई "योग चिन्मय" इस कुर्सी पर बैठ जायेंगे।

ऐसी मुश्किल है यह कुर्सी खाली थोड़े ही रहेगी।
कोई न कोई चलाने लगेगा अनुशासन।
जिस दिन अनुशासन चलने लगे, उस दिन समझना मेरा संबंध टूट गया इस जगह से।

जिस दिन यहां नियम हो जाए,
अनिवार्यता हो जाए

CS CamScanner

9:31 pm 0 KB/s VoLTE 4G 53%

पांच बजे उठो कि चार बजे उठो कि तीन बजे उठो, तुम मूढ़ के मूढ़ ही रहोगे। मूढ़ पांच बजे उठे कि तीन बजे, कोई फर्क नहीं पड़ता। घड़ी से तुम्हारे आत्मज्ञान का कोई संबंध नहीं है।

मगर मूढ़ों को रस मिलता है। उनको कम से कम कुछ सहारा मिल जाता है। मैं उनको कोई सहारा नहीं देता

मेरे रहते इस आश्रम में कोई नियम, अनुशासन होने वाला नहीं है। मेरे रहते यह आश्रम अराजक रहेगा, क्योंकि अराजकता जीवन का लक्षण है। मैं तुम्हें परिपूर्ण स्वतंत्रता देता हूं कि तुम जो भी होना चाहो और जैसे भी होना चाहो, जागरूकता—पूर्वक वही होने में रस लो।

पूछा है "स्वामी योग चिन्मय" ने।
बार बार, चिन्मय घूम फिर कर यही पूछते हैं।
जिन मुर्दा आश्रमों में उनको जाने का दुर्भाग्य से अवसर मिला, उनसे पीछा नहीं छूटता।

क्योंकि कहीं कोई एक दफे भोजन करते हैं,
कहीं कोई तीन बजे रात उठते हैं,
कहीं कोई सिर के बल खड़े होते हैं,
नौली धोती करते हैं,
कहीं कोई योगासन साधते हैं, कहीं क्रियायोग,
कहीं कुछ,
कहीं कुछ।
और सब एक जबर्दस्त अनुशासन की तरह, कि न किया तो पाप, अपराध; किया तो पुण्य!
ये मूढ़ता के लक्षण हैं।

अब रह गई बात.. पूछा है, अनिवार्य साधना ???
कुछ अनिवार्य नहीं है यहां। क्योंकि जो भी अनिवार्य हो, वह बंधन बन जाता है। जो करना ही पड़े, वह बंधन बन जाता है।

जीवन बड़ा नाजुक है, फूल जैसा नाजुक है! इस पर अनिवार्यता के पत्थर मत रख देना. नहीं तो फल मर जाएगा।

CamScanner

9:31 pm 0 KB/s VoLTE 4G 53%

Osho Thoughts
Munabai Makvana · 2h ·

🔴मैंने देश के अनेक आश्रमों में देखा है कि वहां के आश्रम वासियों के लिए कुछ न कुछ अनिवार्य साधना निश्चित है, जिसका अभ्यास उन्हें नियमित करना पड़ता है। परंतु आश्चर्य है कि यहां ऐसा कोई साधन, अनुशासन नहीं दिखता। कृपया इस विशिष्टता पर कछ प्रकाश डालने की अनकंपा करें!

🔥मैं यहां मौजूद हूं मैं तुम्हारा अनुशासन हूं। जब मैं न रहूं तब तुम्हें नियम, व्यवस्था, अनुशासन की जरूरत पड़ेगी। शास्ता हो, तो शासन की कोई जरूरत नहीं।

जब शास्ता न हो तो शासन परिपूरक है। मुर्दा आश्रमों में तुमने जरूर यह देखा होगा।

यह एक जिंदा आश्रम है। अभी यह जिंदा है।
मरेगा कभी और तब तुम निश्चित मानो. नियम भी होंगे, अनुशासन भी होगा।

मेरे जाते ही नियम होंगे, अनुशासन होंगे; क्योंकि तुम बिना नियम अनुशासन के रह नहीं सकते ,
तुम ऐसे गुलाम हो!

मैं भी लाख उपाय करता हूं तब भी तुम बार बार पूछने लगते हो : कुछ नियम, कुछ अनुशासन! मेरी सारी चेष्टा तुम्हें समझाने की यह है कि तुम्हारे हाथ में कुछ भी नहीं है।
क्या अनुशासन ???
क्या नियम ???

तुम पांच बजे सुबह उठ आओगे तो ज्ञान को उपलब्ध हो जाओगे ???
किस मूढ़ता में पड़े हो ???

पांच बजे उठो कि चार बजे उठो कि तीन बजे उठो, तुम मूढ़ के मूढ़ ही रहोगे। मूढ़ पांच बजे उठे कि तीन बजे, कोई फर्क नहीं पड़ता। घड़ी से तुम्हारे आत्मज्ञान का कोई संबंध नहीं है।

CamScanner

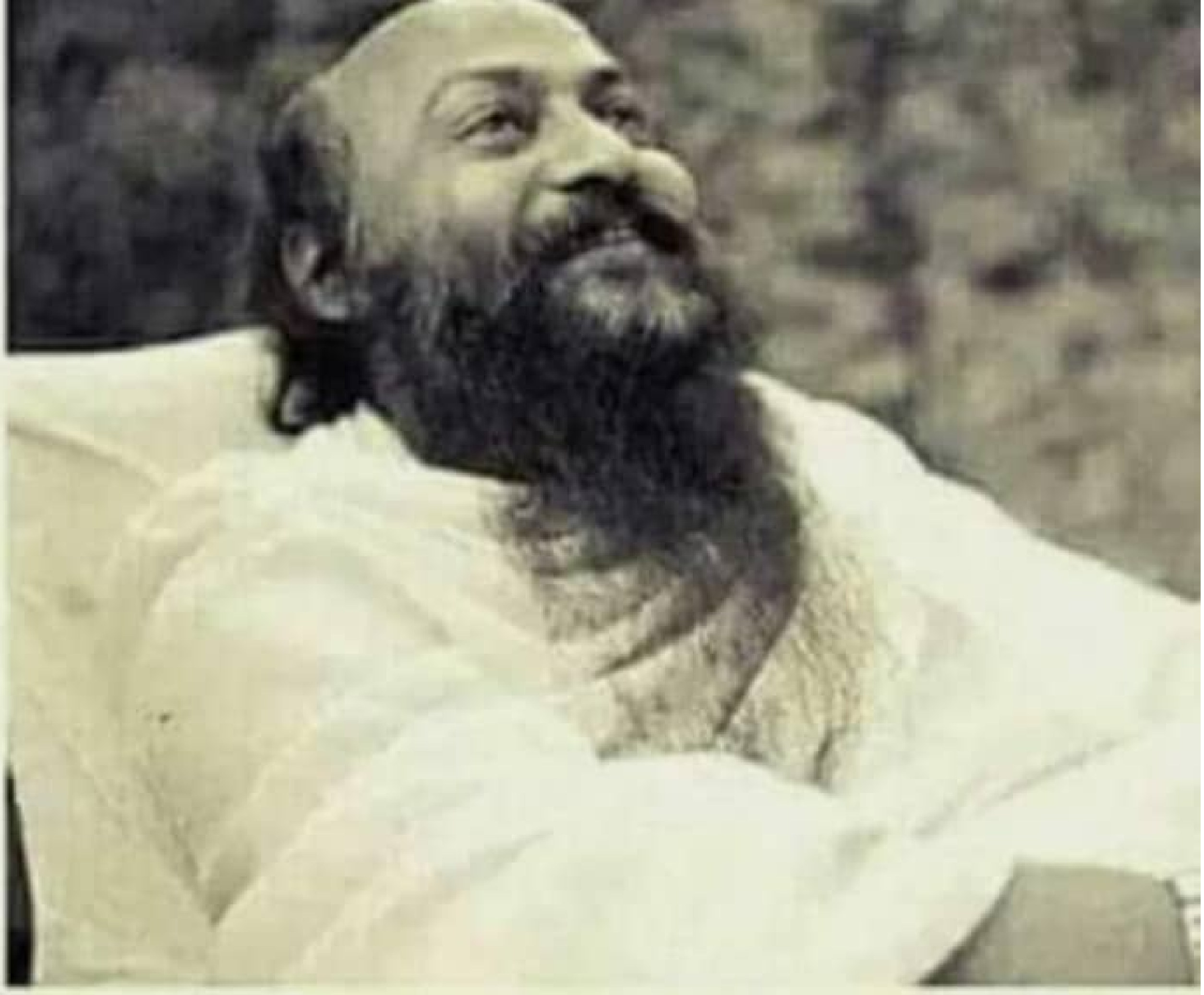

बुद्ध के पास बैठोगे —उठोगे, तो उनका स्वाद लगेगा,
उनकी बूंदें तुम पर बरसेंगी, उनका स्पर्श तुम्हें होगा।
जो हवा उन्हें छुएगी, वही हवा तुम्हें भी छुएगी।
बुद्ध के पास उठोगे——बैठोगे, उनका रंग लगेगा,
उनका ढंग लगेगा।
बुद्ध के पास उठोगे —बैठोगे, तो बुद्धत्व संक्रामक है।
याद रखना, बीमारी ही थोडे ही लगती है, स्वास्थ्य
भी लग जाता है। पागलपन ही थोड़े ही लगता है;
पागलों के साथ रहोगे, पागल हो जाओगे,
मुक्तों के साथ रहोगे तो मुक्त हो जाओगे—होने लगोगे

CamScanner

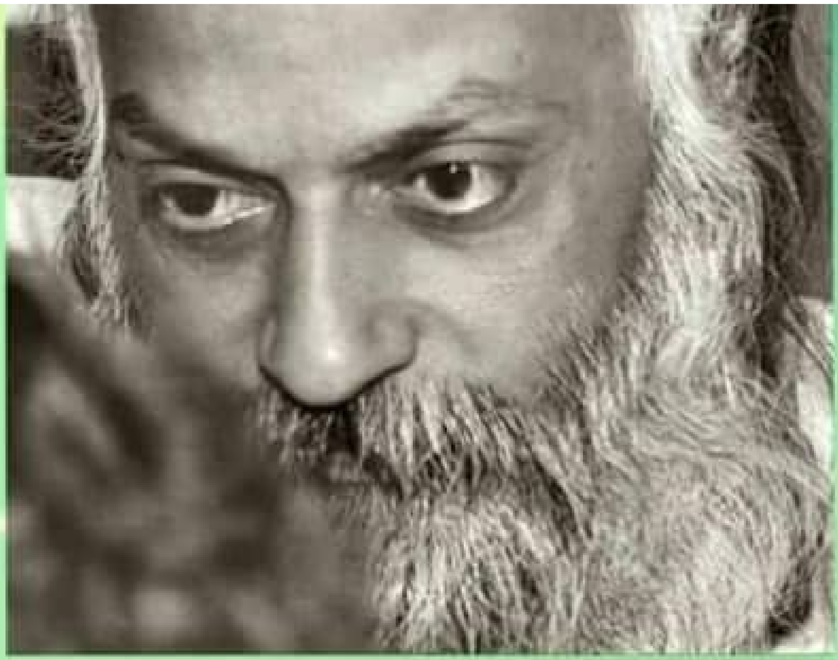

तुम जाओ मंदिर में , तुम्हें परमात्मा न मिलेगा , क्योंकि तुम
बेहोश ही जाओगे वहाँ । तुम्हें जो दिखाई पड़ेगा , वह तुम्हारी ही
वासनाओं का प्रतिबिंब होगा । काश , होश होता तो मंदिर तक
जाने की जरूरत क्या थी ! होश तो तुम जहाँ हो , वहीं पाते कि
उसी का मंदिर है -- उसके अतिरिक्त कुछ और है भी नहीं
काशी और काबा , अज्ञानी ही यात्रा करेंगे । ज्ञानी तो जहाँ है ,
वहीं उसकी काशी है , वहीं उसका काबा है : क्योंकि चारों तरफ
उसी एक का विस्तार है । वह ब्रह्म कहीं कम और कहीं ज्यादा
तो नहीं , कहीं सघन और कहीं विरल तो नहीं , वह ब्रह्म कहीं
उपलब्ध और कहीं अनुपलब्ध तो नहीं -- सभी जगह है , एक सा
बँटा है:ओशो

CamScanner

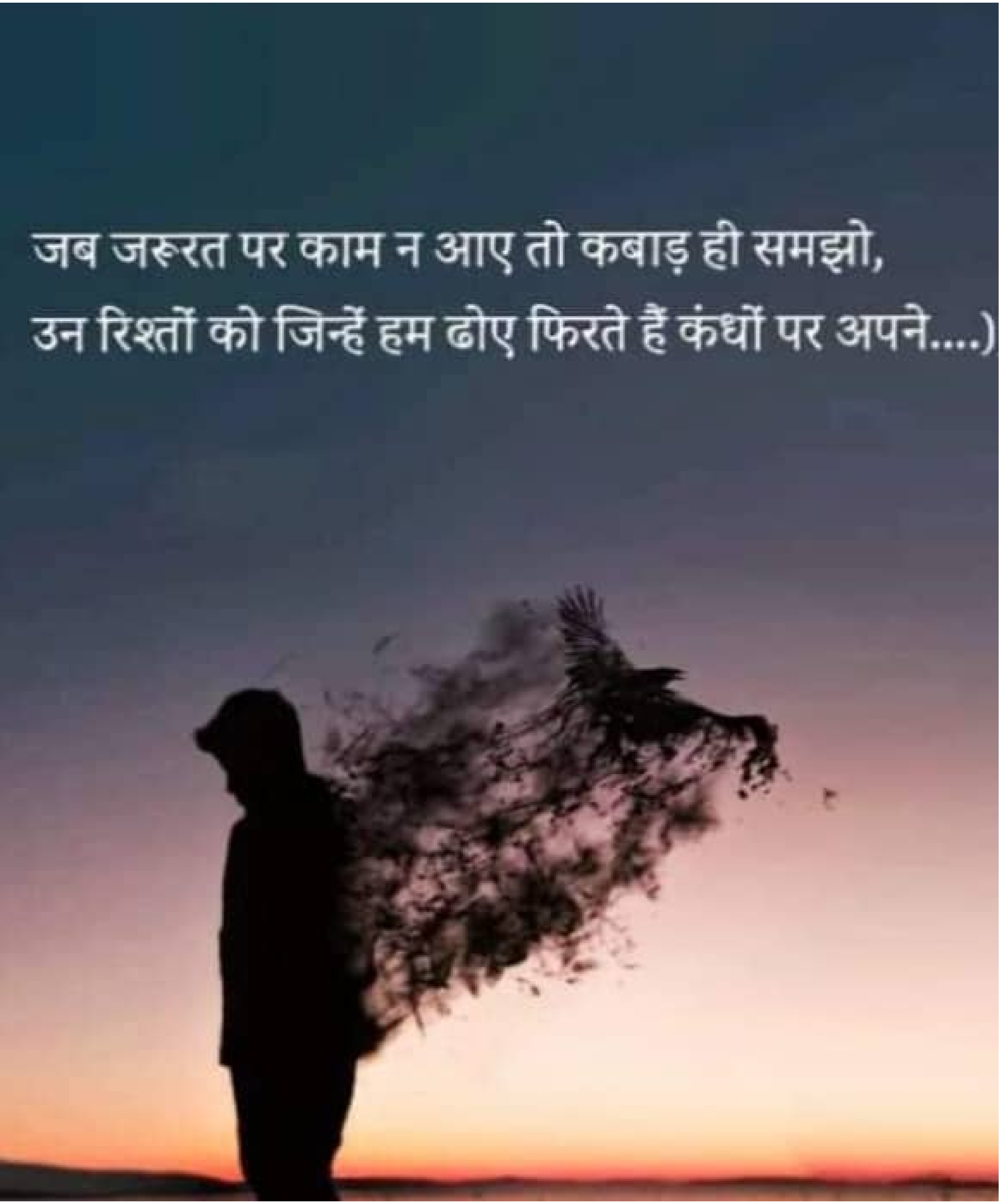

CamScanner

UPC Office himanshu Singh 2
Today, 8:07 am
राम को अहंकार का ज्ञान था,
जबकि रावण को
ज्ञान का अहंकार था..!
Reply

CamScanner

प्रत्येक मनुष्य 'उसका' मंदिर है। कहीं और मंदिर खोजने मत जाना, नहीं तो असली मंदिर से वंचित रह जाओगे। सुनना हो वेद को, कुरान को, तो सुनो भीतर। वहीं से उठते है उपनिषद, वही से उठती है वास्तविक भगवत-वाणी ! और जिसने नहीं सुनी वह लाख शब्दों को याद कर ले, कंठस्थ कर ले, बस वह तोते के जैसी बात है, उसका कोई भी मूल्य नहीं है।

ओशो : होनी होय सो होय

CS CamScanner

1:31 pm 0 KB/s 4G 75%

मैंने सुना है, एक बिल्ली इंग्लैंड की यात्रा को गयी। जब लौट कर आयी तो बिल्लियों ने उसे घेर लिया और कहा—क्या देखा, इंग्लैंड में क्या—क्या देखा? रानी के दर्शन किये कि नहीं? उसका सिंहासन देखा कि नहीं? कोहनूर—जड़ा उसका मुकुट देखा कि नहीं?

और उसने कहा—गयी थी देखने, देख नहीं पायी, क्योंकि रानी सिंहासन पर बैठी थी, सिंहासन सुंदर था, मुकुट भी बड़ा प्यारा था, मुकुट में हीरा भी चमक रहा था, मगर मैं मुश्किल में पड़ गयी, क्योंकि एक चूहा सिंहासन के नीचे बैठा था। उस चूहे को देखने के कारण मैं कुछ और देख नहीं पाई। मैं तो चूहे को ही देखती रही—बड़ा प्यारा चूहा था। बड़ा गजब का चूहा था। एकदम लार टपकने लगी थी।

अब बिल्ली अगर इंग्लैंड जाए, तो और देखे भी क्या? कोहनूर भी पड़ा रहे और उसीके पास एक चूहा बैठा हो, तो बिल्ली क्या देखे? भाड़ में जाए कोहनूर! कोहनूर का करोगे क्या? खाओगे, पीओगे कि पहनोगे? जब चूहा मौजूद हो तो कौन कोहनूर की फिकिर करता है!

ऋषि अपनी भाषा बोलते हैं, हम अपनी भाषा समझते हैं। वहीं चूक हो जाती है। जब ऋषि ने कहा—सब सुखी हों, तो ऋषि यह कह रहा है कि जैसा मैं सुखी हुआ, ऐसे सब हों। तुमने सुना, तुमने कहा कि ठीक है, तो ऋषि यह कह रहे हैं कि कार मिले, बड़ा मकान मिले, कि सुंदर स्त्री मिले—तुम अपना सुख सुनने लगे,तुम अपना सुख समझने लगे। ऋषि तो अपने सुख की बात कर रहा है।

ऋषियों का सुख क्या है? कि सबको परमात्मा मिले। वहीं तो पहुँच कर सारे लोग दुख के पार होते हैं। इस संसार में तो दुख—ही—दुख है। मगर तुम्हें दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं है, अनिवार्यता नहीं है, तुम सुखी हो सकते हो। मैं सुखी हूँ और तुमसे कहता हूँ कि तुम भी ऐसे हो सकते हो—मैं गवाह हूँ। सारे ऋषि गवाह हैं। लेकिन तुम तो ऋषियों के पास भी जाते हो तो आशीर्वाद वही माँगते हो कि चूहा मिल जाए......
.....ओशो ......

CS CamScanner

तुम सोचते हो पाप करना पाप है और पुण्य करना पुण्य है। तुम गलती में हो। कर्ता होना पाप है, अकर्ता होना पुण्य है। अगर पुण्य करते वक्त भी तुम कहते हो, मैंने किया--मंदिर बनाए, पूजा की, इतने व्रत-उपवास किए, इतनी बार तीर्थ गया, काशी गया, हज गया, हाजी हुआ--यह तुम जितना कहोगे, मैंने किया, सब पाप हो गया। इसलिए पाप का संबंध कर्म से नहीं, भाव से है। तुम अगर अकर्ता-भाव से कर सको तो इस जगत में कोई भी पाप नहीं है। अगर तुम कर्ता-भाव से करो तो इस जगत में सभी कुछ पाप है।

CS CamScanner

7:37 am 7 KB/s 98%

चला गया है।

तिब्बती मंदिर में तो घण्टा नहीं रखते, सर्व धातुओं का बना हुआ एक बर्तन रखते हैं घड़े की भांति और उसमें लकड़ी का डण्डा रखते हैं घुमाने के लिए। उसको सात बार अन्दर घुमाकर जोर से चोट करते है। सात बार घुमाने पर, और चोट करने पर 'मणि पद्मे हुं', इसकी पूरी आवाज निकलती है—पूरा मंत्र! पूरा घड़ा चिल्लाकर कहता है, 'मीणू पद्मे हुं'! और एक दफा नहीं, सात बार। आप सात राउच्छ लेकर चोट मारकर उस पर और हाथ बाहर कर लें, फिर सात बार सुनें—ओम् मणि पद्मे हुं ओम् मणि पद्मे हुं—आवाज धीमी होती जाएगी और सात वर्तुल उसके बन जाएंगे।

ठीक आप भी मंदिर के भीतर एक घड़े की तरह जोर से अपने भीतर चोट करेंगे—ओम् मणि पद्मे हुं। मंदिर भी दोहराएगा। आपका रोया—रोया उसे यद्वा करके वापस फेंकेगा। थोड़ी ही देर में न आप रह जाएंगे, न मंदिर रह जाएगा, सिर्फ विद्युत के वर्तुल रह जाएंगे।

ध्यान रहे, ध्वनि जो है विद्युत का सूक्ष्मतम रूप है, यह भी थोड़ा खयाल में ले लेना जरूरी है। क्योंकि अब विज्ञान भी कहता है कि ध्वनि विद्युत का एक रूप है—सभी कुछ विद्युत का रूप है। लेकिन भारतीय मनीषि की पकड़ थोड़ी सी भिन्न है। वह कहता है, विद्युत भी ध्वनि का रूप है। साउण्ड इज दि बेस, इलेक्ट्रिसिटी बेस नहीं है—इसलिए कहा शब्द—ब्रह्म। विद्युत सिर्फ ध्वनि का ही एक रूप है। इसमें बहुत दूर तक समानता खड़ी हो गई। अभी विज्ञान कहने लगा है कि ध्वनि जो है, वह विद्युत का एक रूप है। अब ये थोड़ा—सा फर्क रह गया है कि प्राथमिक कौन है? विज्ञान कहता है कि विद्युत प्राथमिक है। लेकिन भारत की मनीषा तो कहती है कि ध्वनि प्राथमिक है। और ध्वनि की ही सघनता विद्युत है।

विज्ञान कहता है कि विद्युत का एक प्रकार, ध्वनि है। इस बात की बहुत सम्भावना है कि 'शब्द—ब्रह्म' की खोज बहुत निकट में विज्ञान को करनी पड़ेगी। ये मंदिर के गुम्बज के नीचे पैदा की गयी ध्वनियों का ही अनुभव है। क्योंकि जब ओम् की सघन ध्वनि की गयी तो साधक ने मंदिर के भीतर थोड़ी देर में जाना कि मंदिर भी मिट गया और मैं भी मिट गया, सिर्फ विद्युत रह गयी। यह किसी प्रयोगशाला में लिया गया निष्कर्ष नहीं है। जिन्होंने ये कहा है, उनके पास कोई प्रयोगशाला नहीं। उनके पास तो एक ही प्रयोगशाला थी, जो उनका मंदिर था। उस मंदिर में उन्होंने जाना है, और यह जाना है कि हम तो ध्वनि से शुरू करते हैं लेकिन अंततः

CamScanner

6:43 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

Osho Thoughts

Munabai Makvana · 11h ·

त्यागी मत बनना। भोग में कहीं छिपा है भगवान, उसे वहीं तलाश करना। जब तुम भोजन करो तो कहीं स्वाद में उसे तलाश करना। इसलिए तो अदभुत वचन कह सके उपनिषद: अन्नं ब्रह्म। यह कोई छोटे-मोटे लोगों ने नहीं कहा, छोटे-मोटे लोग तो अस्वाद सिखाते हैं। उपनिषद कह सके: अन्नं ब्रह्म, अन्न ब्रह्म है। सब सौंदर्य उसकी ही झलक है; जैसे चांद आकाश में निकला और झील में उसकी झलक पड़ी। जब कोई स्त्री या कोई पुरुष तुम्हें सुंदर मालूम पड़ता है तब झील में तुमने चांद देखा। सूफी फकीर जुन्नेद जब भी किसी सुंदर स्त्री को देखता था, भाव-विभोर होकर उसकी आंख से आंसू बहने लग जाते। रास्तों पर खड़ा हो जाता था। अनेक बार उसके शिष्यों ने कहा: अच्छा नहीं मालूम होता, आप जैसा प्रसिद्ध पुरुष, आपके सैकड़ों शिष्य आप किसी सुंदरी स्त्री को देखकर एकदम ठिठक कर खड़े हो जाते हैं!

जुन्नेद ने कहा: सुंदर स्त्री उसकी झलक है। उसकी आंख से आंसू बहने लगते थे, कृतकृत्य हो जाता था।

जुन्नेद मुझे जमता है। सुंदर स्त्री में भी उसकी झलक है, सुंदर पुरुष में भी उसकी झलक है। झलक मात्र ही है, इसलिए जल्दी ही खो जायेगी। चांद बना झील में, एक कंकड़ गिर जायेगा कि उपद्रव हो जायेगा, एक कंकड़ गिर जायेगा कि सब चांद खो जायेगा, सब झील में हलचल मच जायेगी।

देर नहीं है यहां, सब क्षणभंगुर है; मगर छाया तो उसी की है। माना कि झील में बना चांद जरा-से कंकड़ के गिरने से खो जाता है, मगर इससे भी क्या यह सिद्ध तो नहीं होता कि जो चांद झील में बन रहा है वह असली चांद की छवि नहीं है। झील में देखो चांद को और फिर तलाश में निकल जाओ असली चांद की। झील में देखो चांद को, फिर आकाश में खोजने लगो। संसार में देखो परमात्मा को, फिर आकाश में खोजने लगो। मगर संसार को छोड़कर भागने की कोई भी जरूरत नहीं है, झील को त्यागने की कोई भी जरूरत नहीं है। झील को जिसने त्याग दिया वह शायद आकाश की तरफ आंख भी न उठा पाये, कौन उसे याद दिलायेगा? कौन उसे बतायेगा कि आकाश में चांद निकला है? उसकी आंखें जमीन में गड़ी रहेंगी, और जमीन में प्रतिबिंब नहीं बनते, झील में प्रतिबिंब बनते हैं।

CamScanner

परमात्मा महाजीवन है। इसलिए तो वह अनंत रूपों में प्रगट हुआ। यह प्रगटीकरण किसी कारण से नहीं है। पक्षी सुबह गीत गाते हैं—अकारण। वृक्षों में फूल खिल जाते—अकारण। कभी तुम्हें भी लगता है कि तुम कुछ अकारण करते हो। जब तुम कुछ अकारण करते हो, तब तुम परमात्मा के निकटतम होते हो।

अष्टावक्र महागीता-भाग-3 प्र-7

ओशो

Osho wisdom

CS CamScanner

CamScanner

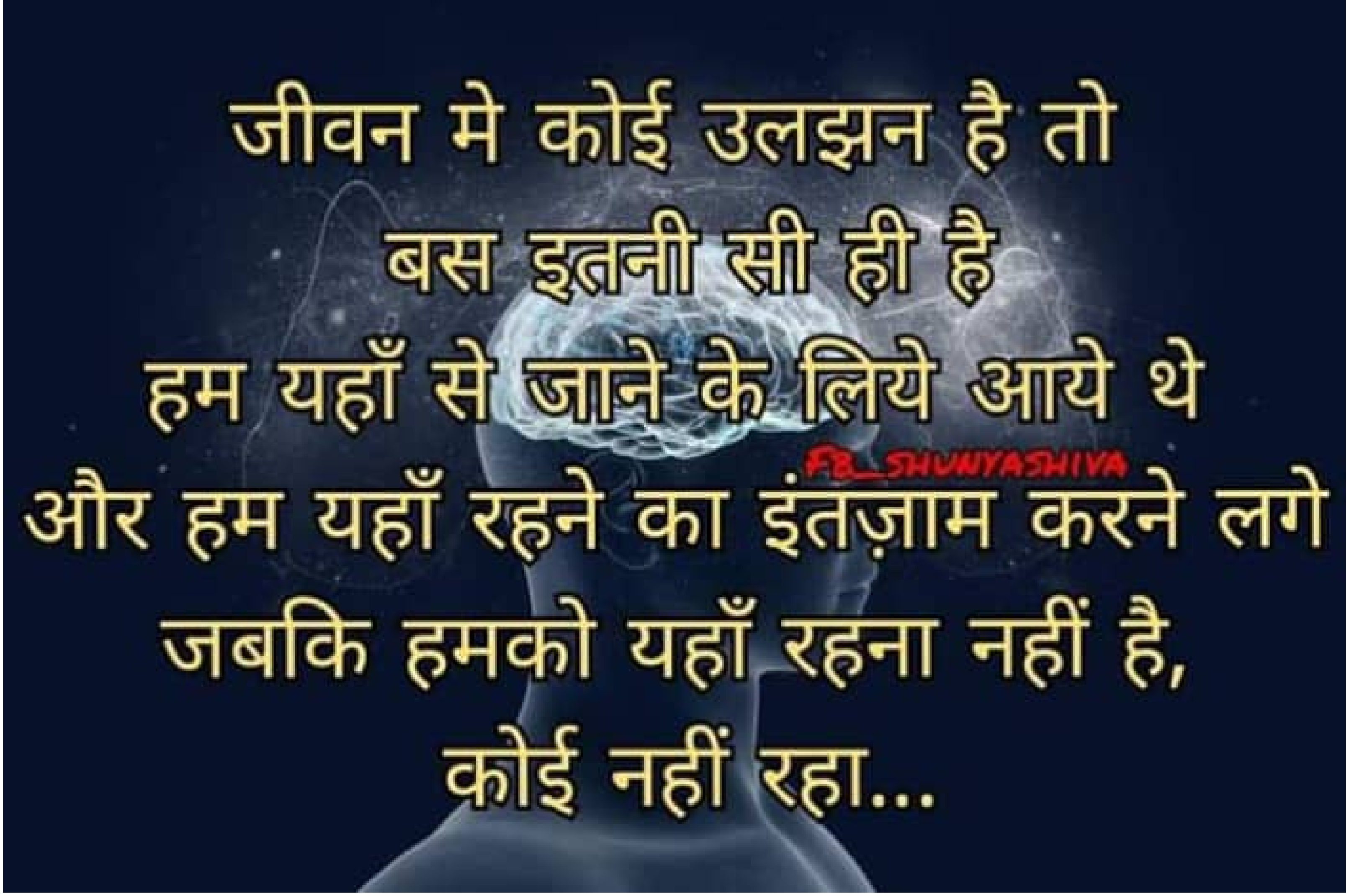
जीवन मे कोई उलझन है तो
बस इतनी सी ही है
हम यहाँ से जाने के लिये आये थे
FB_SHUNYASHIVA
और हम यहाँ रहने का इंतज़ाम करने लगे
जबकि हमको यहाँ रहना नहीं है,
कोई नहीं रहा...

CamScanner

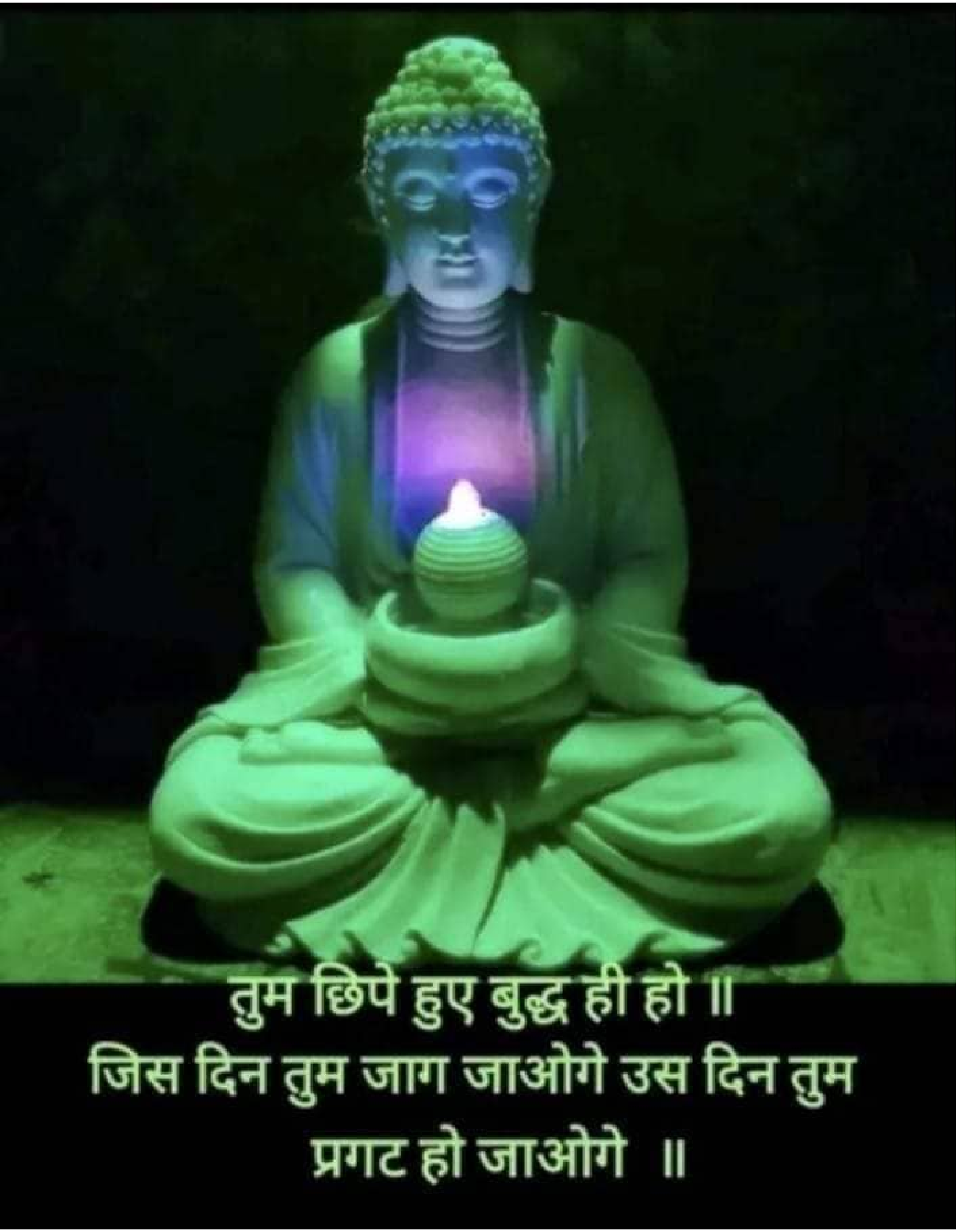

CamScanner

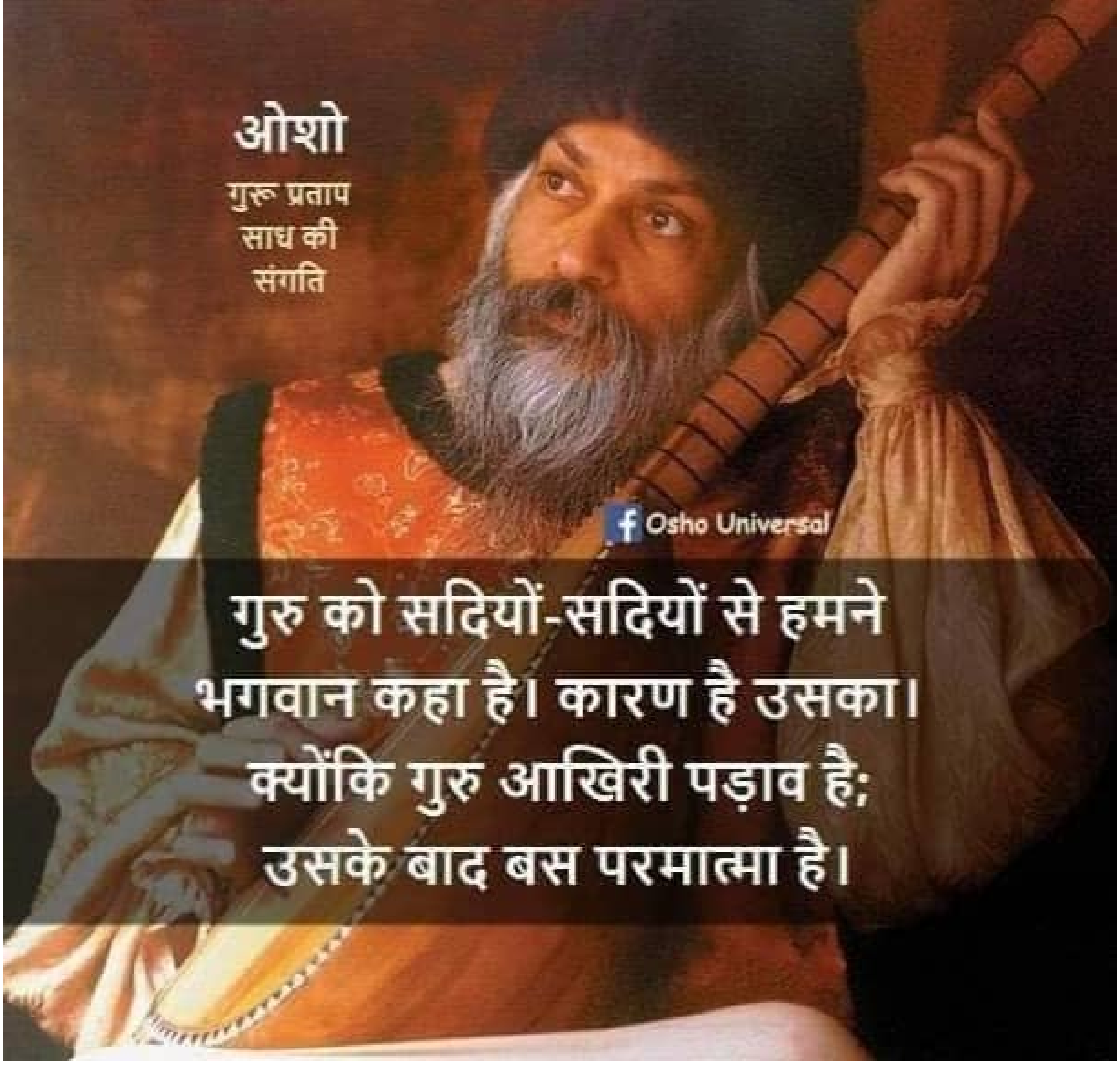
ओशो
गुरू प्रताप
साध की
संगति
Osho Universal
गुरु को सदियों-सदियों से हमने
भगवान कहा है। कारण है उसका।
क्योंकि गुरु आखिरी पड़ाव है;
उसके बाद बस परमात्मा है।

CamScanner

पानी में स्वयं के प्रतिबिम्ब को
देखने की तीन शर्ते है:-
(१) पानी उबलता हुआ गर्म नहीं होना
चाहिए।
(२)पानी मलिन (मटमैला) नहीं होना
चाहिए।
(३)पानी में तरंगे नहीं होनी चाहिए !!
बस इसी प्रकार आत्मा में परमात्मा के
दर्शन करने हों तो :
मन में क्रोध नहीं होना चाहिए।
मन मलिन नहीं होना चाहिए, एवं
मन में तृष्णाओं की तरेंगे नहीं होनी
चाहिए !!

CamScanner

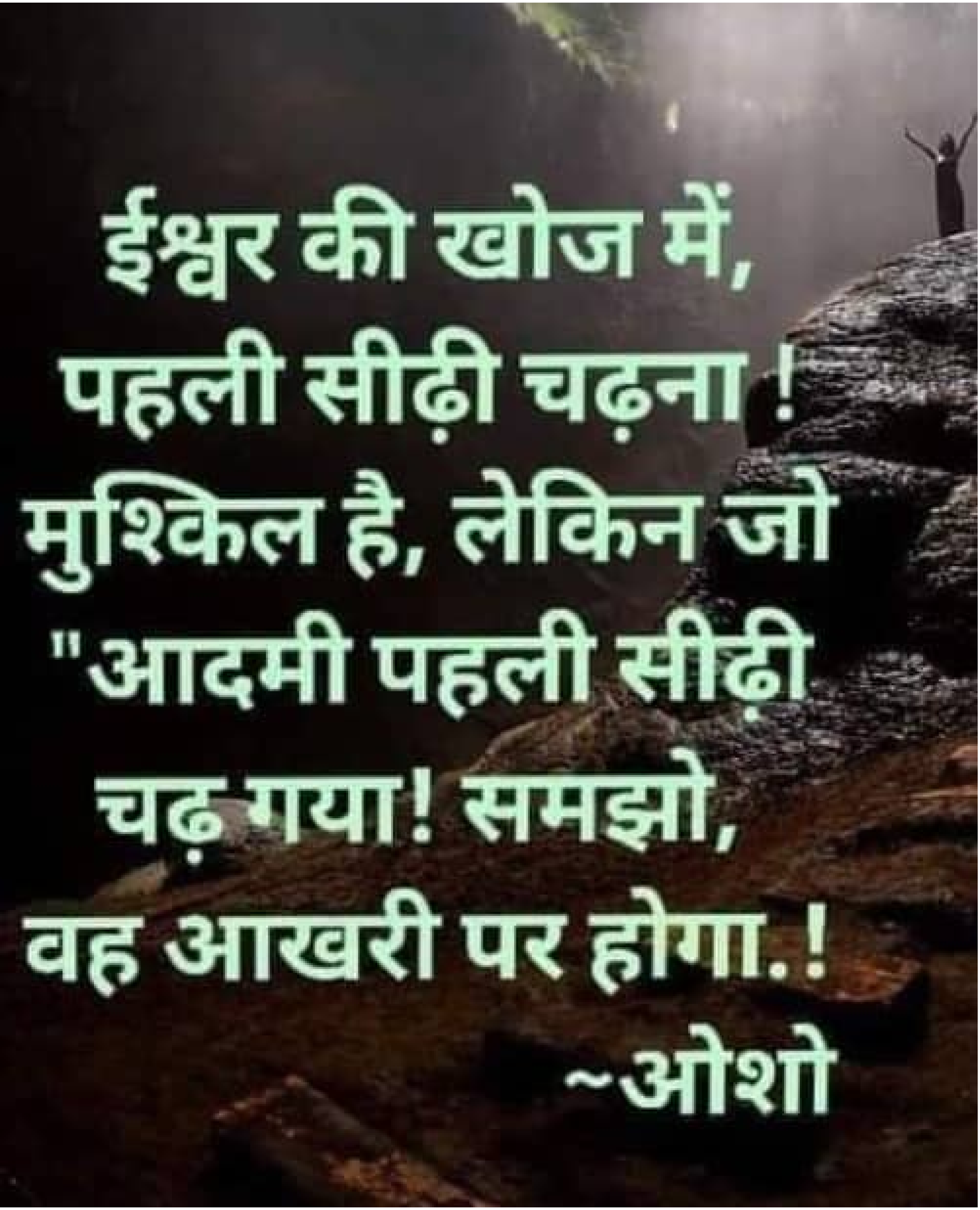

CS CamScanner

अंतर्यात्रा ही एकमात्र तीर्थयात्रा है, बाकी सब तीर्थ के धोखे हैं। भीतर जो गया, वही तीर्थ पहुंचा; बाहर जो भटके, उन्होंने ऐसे ही अपने मन को समझाया, खेल-खिलौनों में उलझे रहे।

- OSHO-(Life with Osho)

CamScanner

osho universal dhaval parmar

तुम सिर्फ साक्षी हो, वह तुम्हारा स्वरूप है। न तुम कर्ता हो—शरीर से कर्म होता है; न तुम विचारक हो—मन से विचार होते हैं; न तुम भावुक हो—हृदय से भावनाएं होती हैं; तुम साक्षी हो—भावों के, विचारों के, कृत्यों के। ये तुम्हारी तीन अभिव्यक्तियां हैं। और इन तीनों के बीच में तुम्हारा साक्षी है। उस साक्षी के सूत्र को पकड़ लो। साक्षी के सूत्र को पकड़ते ही संन्यास का फूल खिल जाता है। वह फूल ही मोक्ष है।

ओशो : क्रान्ति-सूत्र : साक्षी भाव

CamScanner

CamScanner

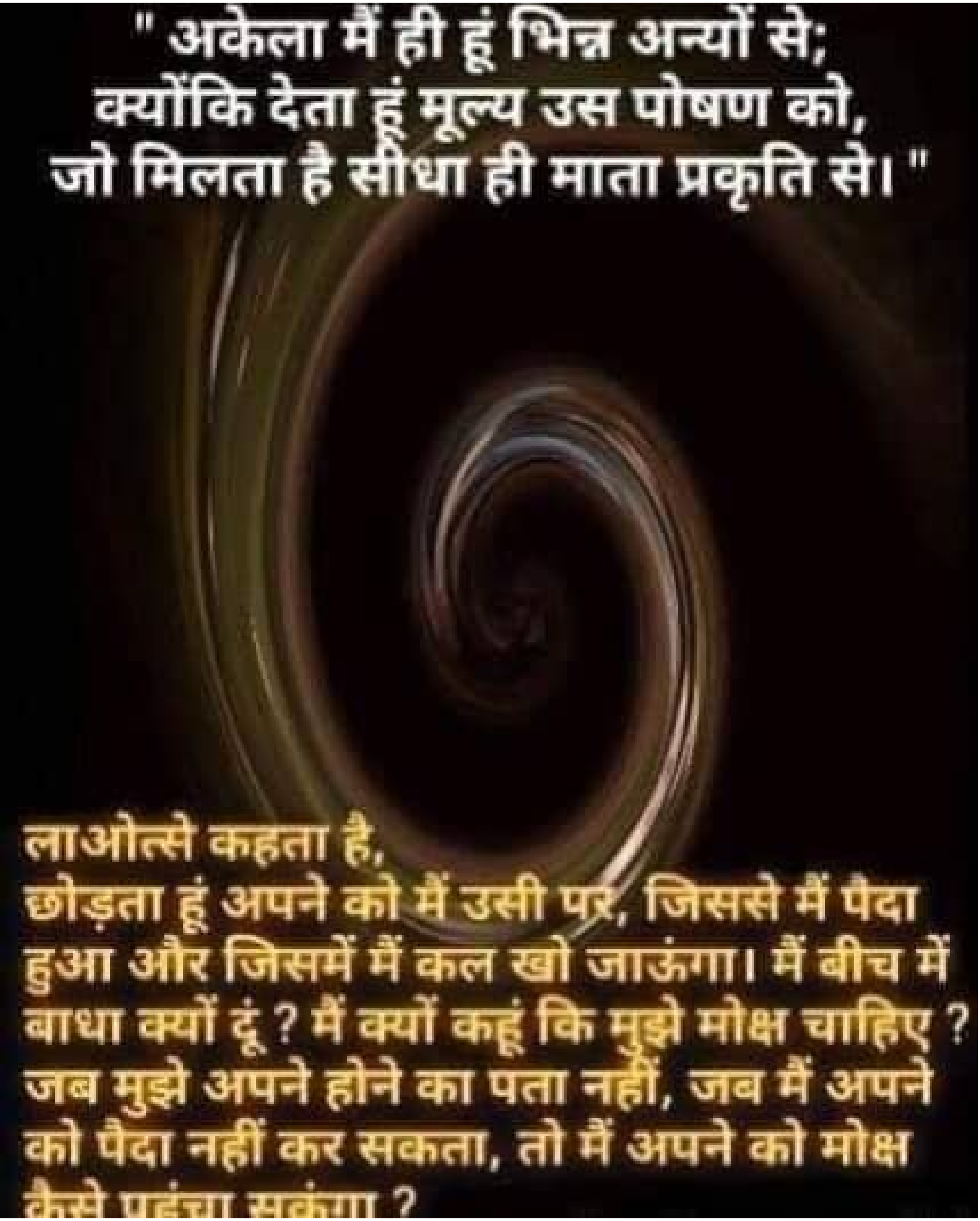
" अकेला मैं ही हूं भिन्न अन्यों से;
क्योंकि देता हूं मूल्य उस पोषण को,
जो मिलता है सीधा ही माता प्रकृति से। "
लाओत्से कहता है,
छोड़ता हूं अपने को मैं उसी पर, जिससे मैं पैदा
हुआ और जिसमें मैं कल खो जाऊंगा। मैं बीच में
बाधा क्यों दूं ? मैं क्यों कहूं कि मुझे मोक्ष चाहिए ?
जब मुझे अपने होने का पता नहीं, जब मैं अपने
को पैदा नहीं कर सकता, तो मैं अपने को मोक्ष
कैसे पहुंचा सकूंगा ?

CamScanner

जो बुद्ध के पास था, ठीक उतना ही लेकर तुम भी पैदा हुए हो। तुम्हारी वाणी में और बुद्ध की वाणी में रत्ती भर का फासला नहीं है। भला तुम्हारे तार ढीले हों, थोड़े कसने पड़े। या तुम्हारे तार थोड़े कसे हों, थोड़े ढीले करने पड़ें। या तुम्हारे तार वीणा से अलग पड़े हो और उन्हें वीणा पर बिठाना पड़े लेकिन तुम्हारे पास ठीक उतना ही सामान है, उतना ही साज है जितना बुद्ध के पास। अगर बुद्ध के जीवन में संगीत पैदा हो सका, तुम्हारे जीवन में भी हो सकेगा। इसी बात का नाम आस्था है।

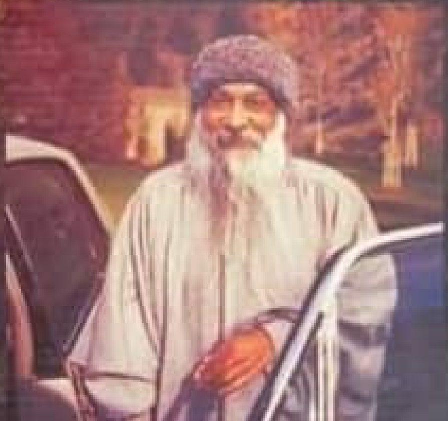

ओशो 🌸,
एस धम्मो सनंतनो,
भाग -5

CamScanner

प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा को अपने भीतर लिए बैठा है, थोड़े से पत्थर छाँटने हैं, थोड़ी छैनी उठानी है. उस छैनी उठाने का नाम ही साधना है. ओशो

CamScanner

मन दो चीजें जानता है, या तो क्रिया और या निद्रा। आप या तो उसे काम करने दो और या फिर वह नींद में चला जाएगा। ध्यान तीसरी दशा है। क्रिया न हो और निद्रा भी न हो, तब ध्यान फलित होगा।

~ ओशो

CamScanner

6:35 pm 93 KB/s 42%

Hor ki mangana main rab kolun, nit khair manga tere dam di
Baaj sajan lajpaal mere, main koji kede kam di
Pal pal maan javaani ve dhhola, ghadi vekhe na koi alam di,
Badr hamesha maula rakhin dhola tere nazar karam di
(Badr Muneer)

Suno saheliyon mariyon ni, meri kismat vich fatoore
Lokande dar yaar vase ek main kamali da doore
Din taan langda dhhaalam dhhaale, mainnu raat gamaande poore
Yaar Farid mera yaar milaade, naitaan sooli chadhhna manzoore
(Khwaja Ghulam Farid)

Nit khair manga soneya main teri
Dua na koi hor mangadi
Tere pairaan vich aakhir hove meri
Dua na koi hor mangadi

Kise da yaar na pardes jaave
Vichhoda na kise de pesh aave

Tere pyaar dita jadon da sahaara ve
Maiya bhul gaya mainnu jag saara ve
Khushi aiho mainnu sajna bathera

Tun milya te mil gayi khudaayi ve
Hath jod akhaan pain nahin judaai ve

CamScanner

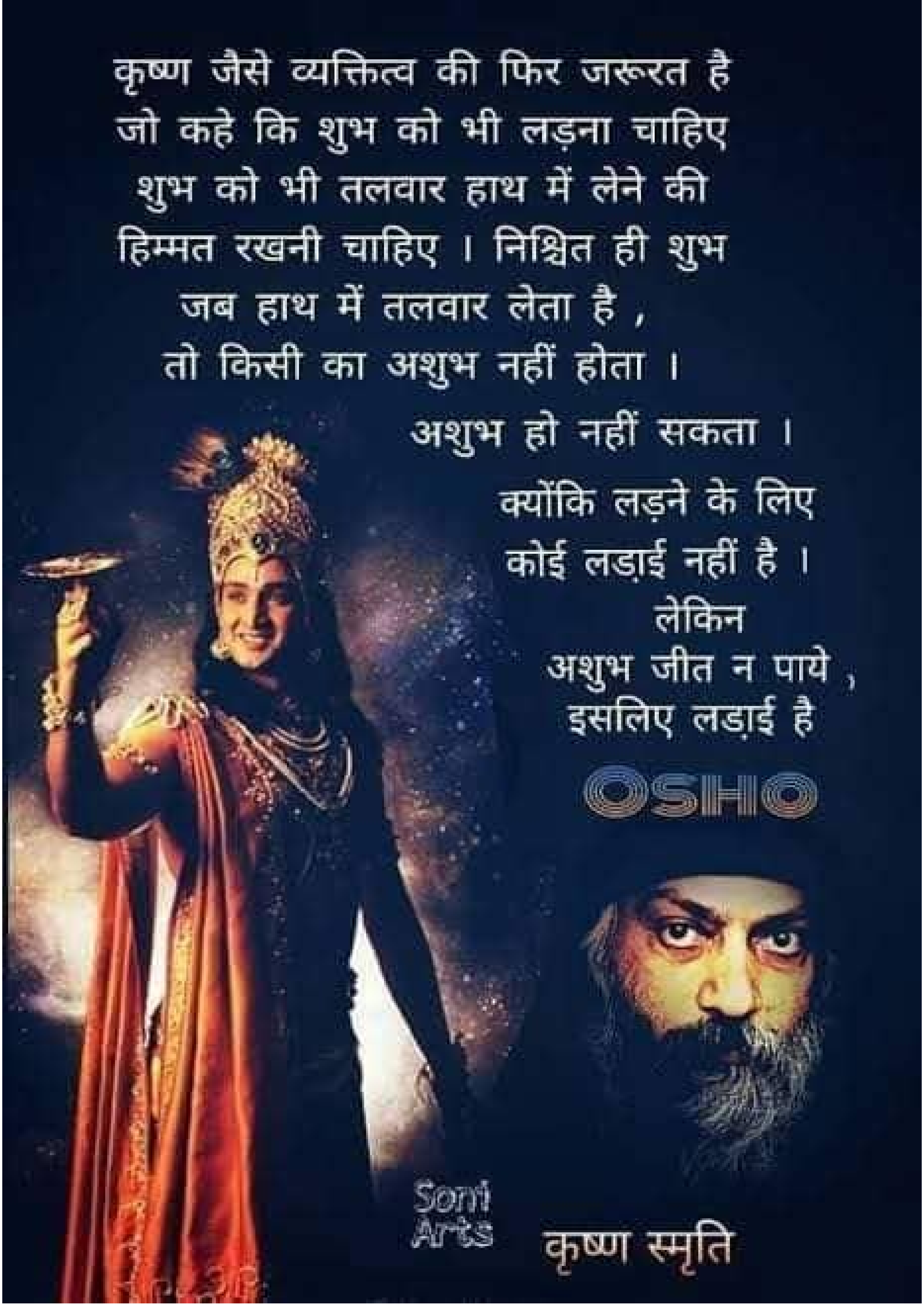
कृष्ण जैसे व्यक्तित्व की फिर जरूरत है
जो कहे कि शुभ को भी लड़ना चाहिए
शुभ को भी तलवार हाथ में लेने की
हिम्मत रखनी चाहिए । निश्चित ही शुभ
जब हाथ में तलवार लेता है ,
तो किसी का अशुभ नहीं होता ।
अशुभ हो नहीं सकता ।
क्योंकि लड़ने के लिए
कोई लड़ाई नहीं है ।
लेकिन
अशुभ जीत न पाये ,
इसलिए लड़ाई है
OSHO
Soni Arts
कृष्ण स्मृति

CamScanner

Description

'Nit Khair Manga' sings Mukhtiyar Ali

5.1K	1,62,160	2022
Likes	Views	14 Apr

किसे दा यार ना परदेस जावे
विछोड़ा ना किसे दे पेश आवे

May no one's love leave for distant lands.
May no one suffer the pangs of parting.

Mukhtiyar Ali's spirited rendition of this Badar Muneer song embodies the Sufi spirit of imagining God as the beloved and romance as worship. In the realm of Sufi love, the earthly beloved intertwines with God, the sensual flows into the spiritual, and sentiments of selfless surrender jostle with a restless desire for union.

***

Find lyrics/translation of this song at:
http://ajabshahar.com/songs/details/2...
Discover a universe of Bhakti, Sufi, Baul poetry and music at

CamScanner

5:25 pm 85 KB/s VoLTE 4G 54%

Instagram

View all 19 comments

18 hours ago

atha.osho.quotes and osho_mania

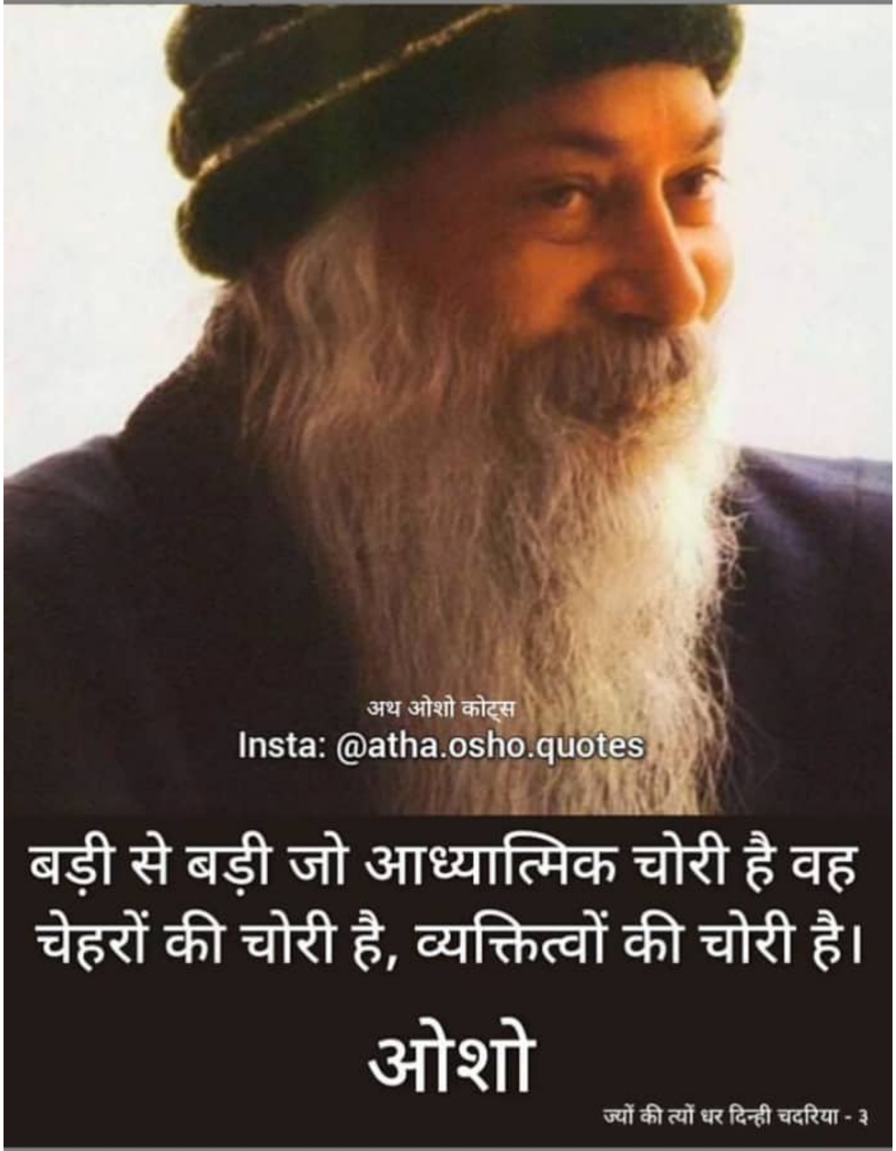

Liked by **osho_mania** and **43 others**

atha.osho.quotes 👉 **Follow**: @atha.osho.quotes **for more astonishing OshO Hindi Quotes**.... more

View all 2 comments

CamScanner

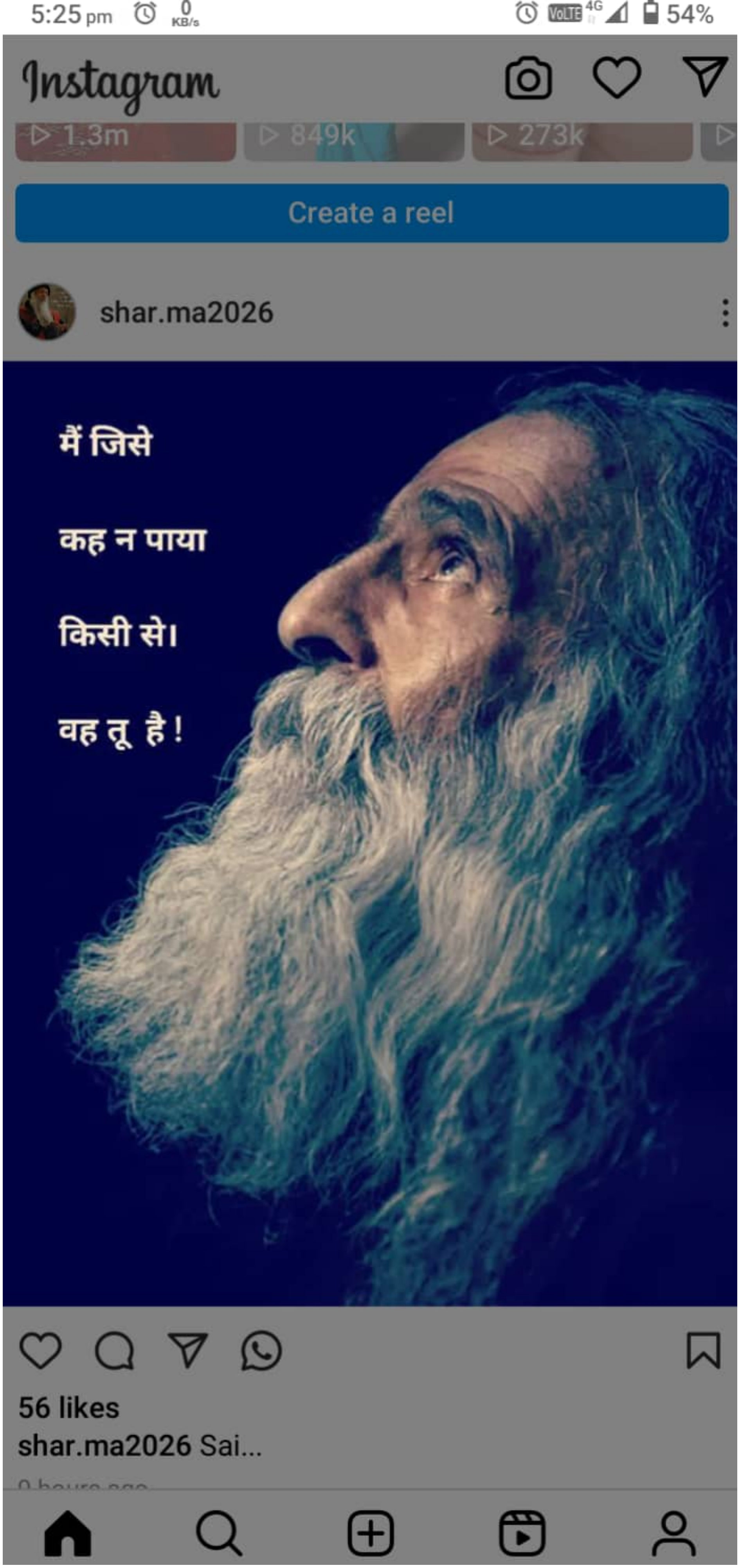
5:25 pm
0 KB/s
4G
54%
Instagram
1.3m
849k
273k
Create a reel
shar.ma2026
मैं जिसे
कह न पाया
किसी से।
वह तू है!
56 likes
shar.ma2026 Sai...

CamScanner

5:20 pm 55%

Instagram

18 hours ago

osho__quotes

Buddha's Flute • Osho Dream

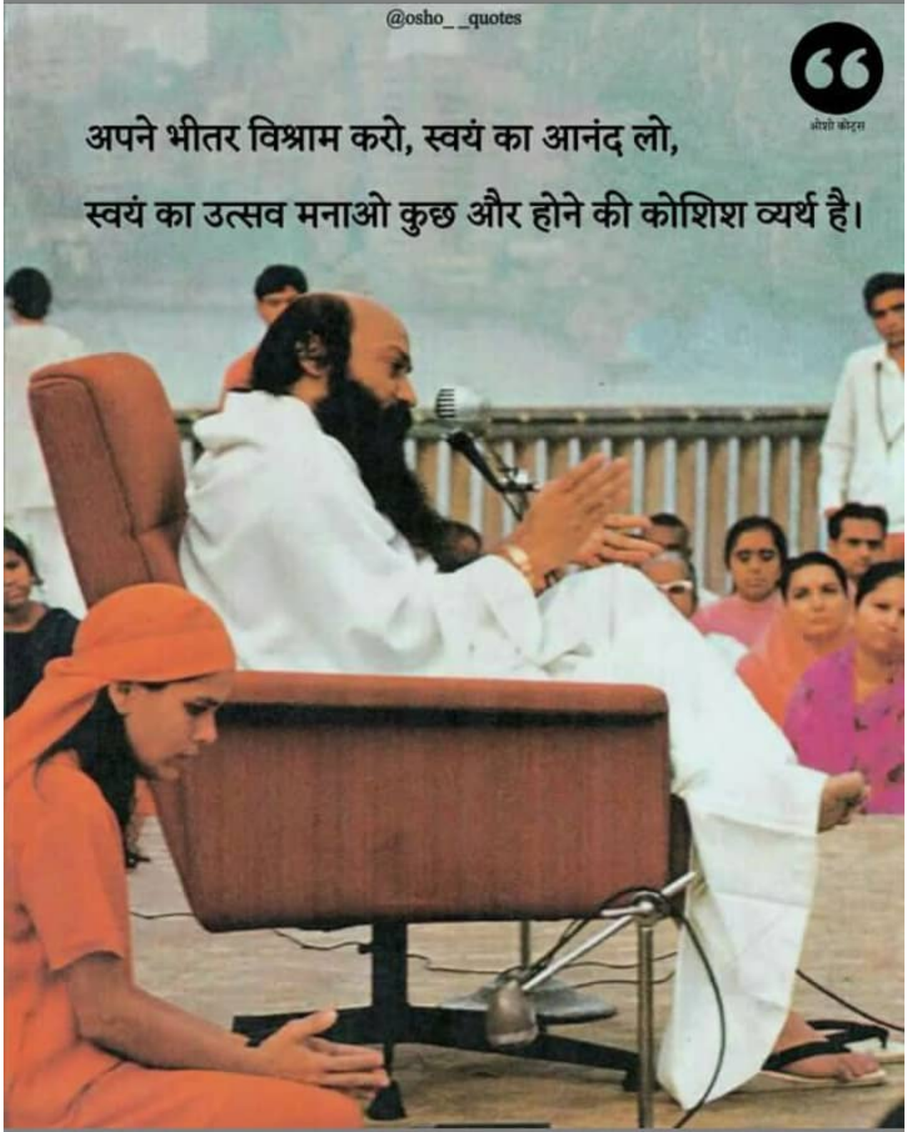

Liked by **osho_hindi_osho** and **6,523 others**

osho__quotes ❣️

View all 17 comments

1 day ago

CamScanner

5:14 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%

कहता है ले ही लो, मुझे, आ जाने दो मुझे भीतर। तुम्हारे संतोष में अपना घर बनाना चाहता है।

संतोष में ही तुम मंदिर होते हो और मंदिर का देवता द्वार पर दस्तक देता है, कि आ जाने दो। अब तुम राजी हो गए। अब तुम मंदिर हो, अब मैं आ जाऊं और विराजमान हो जाऊं। सिंहासन बन चुका, अब खाली रखने की कोई जरूरत नहीं है।

लेकिन तुम हो असंतोष की लपटों से भरे हुए। मंदिर तो है ही नहीं; तुम एक चिता हो, जो धू-धूकर जल रही है। परमात्मा आए तो कहां आए? तुम कहते हो: मैं परमात्मा को पाना चाहता हूं!

क्यों पाना चाहते हो? जरा कारणों में खोजो अजीब-अजीब कारण हैं। किसी की पत्नी मर गयी, वे परमात्मा की तलाश में लग गए। किसी का दिवाला निकल गया, मुंड़ मुड़ाए भये संन्यासी! अब दिवाला ही निकल गया है तो अब करना भी क्या है दुकान पर रहकर ! अब संन्यासी होने का ही मजा ले लो!

लोग जरा कारण तो देखें कि किसलिए परमात्मा को खोजने निकलते हैं! तुमने देखा जब तुम देख मग होते हो तब परमात्मा की याद करते हो। जब तुम सुख में होते हो, तब? बिलकुल भूल जाते हो।

मैं अपने संन्यासियों को कहना चाहता : जब तुम आनंदित होओ तब प्रार्थना करो। दुख को क्या उसके द्वार पर ले जाना। द्वार-दरवाजे बंद करके दुख को रो लेना; क्या परमात्मा के चरणों में चढ़ाना ! हां, जब आनंद उठे, मग्न भाव उठे, तो नाचना, तो पहन लेना पैरों में घूंघर, तो देना थाप मृदंग पर! उत्सव में उससे मिलन होगा, क्योंकि उत्सव में ही तुम अपनी पराकाष्ठा पर होते हो। उत्सव के क्षण में ही तुम्हारे भीतर के सारे द्वंद्व चले जाते हैं, तुम निद्वंद्व होते हो । उत्सव के क्षण में ही तुम्हारे भीतर दीया जलता है रोशनी होती है।

ओशो
अमी झरत बिसगत कंवल

CamScanner

5:11 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%

प्रचारक बामसेफ़

30m ·

प्राचीन काल में भारत विश्वगुरु था। विश्वगुरु कौन था ? किसने विश्व को शिक्षाएँ दी ? किस गुरु की प्रतिमाएँ विश्व भर में स्थापित हुईं ?

विश्वगुरु कौन था ? किसकी शिक्षाएँ विश्व भर में अनूदित हुईं ? किसे विश्व भर में शिक्षा देने के लिए बुलाया गया ? जाहिर है कि वे बौद्ध थे ।

गुणवर्मन, गुणभद्र, प्रज्ञारुचि, उपशून्य, ज्ञानभद्र, बुद्धभद्र, कमलशील, ज्ञानप्रभ, चित्रगुप्त जैसे हजारों बौद्ध विद्वान यूनान, तुर्की और मध्य एशिया से लेकर समूचे पूर्वी एशिया के देशों में शिक्षा देने के लिए बुलाए गए जिसमें एक भी बौद्धेतर विचारक शामिल नहीं हैं।

विश्वगुरु कौन था ?

बुद्ध और उनके बुद्धिज्म से दुनिया ने बहुत कुछ सीखा है।

अरब के मुल्कों ने बुद्धिज्म से ही अंक - प्रणाली सीखी है।

चीन ने मार्शल आर्ट सीखा है।

श्रीलंका ने शील सीखा है।

यूरोप ने कार्य - कारण सिद्धांत सीखा है।

जापान ने काताकाना और हिराकाना अक्षरमालाएँ बनाई हैं।

अमेरिका ने संघ - प्रणाली सीखी है।

बर्मा, स्याम, जावा, कंबोडिया आदि देशों ने संशोधित धम्म लिपि को अपनाया है।

नेपाल, तिब्बत, म्यांमार आदि पड़ोसी देशों ने अनेक पांडुलिपियाँ संरक्षित कर गुरु वाणी को बचाए रखा है।

CS CamScanner

5:09 pm 0 KB/s VoLTE 4G 58%

तालाब के किनारे, वे एकदम से उड़े। कोई दस पंद्रह बगुलों की सफेद कतार और पीछे एक काला बादल।
उस काले बादल मे से तीर की तरह उड़ गए वे सफेद बगुले एक क्षण में, जैसे बिजली कौंध गई। रामकृष्ण वही ठिठक गए, कुछ हुआ बेहोश होकर गिर गए। आसपास के किसान उन्हे घर उठाकर लाए किसी को समझ में ना आए की हुआ क्या। रामकृष्ण को भी समझ में ना आया। होश में आ गए, बात भूल गई। सबने यही कहा कि कुछ हो गया होगा। भूखा था, किसी ने कहा दिनभर का भूखा था, काम करता रहा खेत में, छोटा बच्चा है अभी, थक गया होगा, मूर्छा आ गई। जो कुछ ज्यादा होशियार थे, उन्होंने रामकृष्ण से पूछा होगा। रामकृष्ण ने कहा कि बगुलों की एक सफेद पंक्ति उड़ती हुई और पृष्ठभूमि में काला बादल, जैसे बिजली कौंध गई, कुछ हुआ मेरे भीतर! मुझे पता नहीं क्या हुआ। मगर अपूर्व आंनद हुआ! उस आंनद में मै गिर पड़ा। लोगों ने कहा होगा कि बच्चा है, अभी इसे क्या पता आंनद का।
कहा यहां आनंद और बगुलों की पंक्ति में क्या आनंद हो सकता है? उन्होंने भी बहुत बार बगुले उड़ते देखे। माना कि काले बादल की पृष्ठभूमि थी और सुंदर लगे होंगे सफेद बगुले उड़ते हुए, बड़े प्रखर लगे होंगे : जैसे काले बादल में बिजली कोंधी हो, ऐसा हुआ होगा, मगर फिर भी ऐसा क्या की आदमी मूर्च्छित हो जाए! छोटे बच्चा है।
और रामकृष्ण को तो कोई परमात्मा का अनुभव नहीं था, इसलिए यह तो कैसे कहें कि परमात्मा का अनुभव हुआ। इसका तो उपाय नहीं था। बात आई-गई, भूल गई। ऐसा रामकृष्ण को होता रहा कभी-कभी...। अर्थ तो पीछे खुला, जब पूरा परमात्मा मिला। अर्थ ही तब खुला। तब रामकृष्ण ने लौटकर देखा कि अरे! यह जो आज बरस रहा है आकाश से, इसी की बूंदें पड़ी थी। वे बूंदे इसी की थी। अब अनुभव हुआ। अब स्वाद आया, तो पुरानी स्मृतियां भी ताजा हो गई, तब सब सूत्रबध्द हो गया। तब रामकृष्ण ने कहा कि उस दिन जो सफेद बगुलों को उड़ते देखा था काले बादल के बीच, वह 'तू' ही उड़ा था। वे बगुले नहीं थे, वह काला बादल नही था, 'तु' ही उड़ा था। और मै ठिठक गया था, वह समाधि थी। मगर मैं अपरिचित, मै नासमझ, मै मूढ़, तुझे पहचान न पाया। तूने एक झलक दी थी, लेकिन मैं चूक गया।
तुम भी जिस दिन जागोगे और जानोगे, उस दिन हैरान होओगे कि बहुत बार ऐसा हुआ था।
ओशो ☘️❤️☘️ पद घुंघरू बांध--प्रवचन-06

CamScanner

4:32 pm 0 KB/s VoLTE 4G 63%

कर्मयोग कहता है: तुम गलत करते हो, ठीक करो तो पहुंच जाओगे।

ज्ञानयोग कहता है: तुम गलत जानते हो, ठीक जान लो, पहुंच जाओगे।

योगशास्त्र कहता है: तुम्हें विधियां पता नहीं हैं, मार्ग पता नहीं है। विधियां सीख लो, मार्ग सीख लो, तकनीक की बात है, पहुंच जाओगे।

भक्ति कहती है: तुम ही गलत हो। न ज्ञान से पहुंचोगे, न कर्म से पहुंचोगे, न योग से पहुंचोगे। तुम तुमसे छूट जाओ, तो पहुंचना हो जाएगा। तुम न बचो तो पहुंचना हो जाएगा।

प्रयास से मिलता ही नहीं। प्रयास से मिल जाए, वह भी कोई परमात्मा है? क्योंकि तुम्हारे प्रयास से जो मिलेगा, वह तुम्हारे प्रयास से छोटा होगा। प्रसाद से मिलता है!

इसलिए नारद अनूठी बात कहते हैं, बड़ी गहरी बात कहते हैं: "कर्म, ज्ञान और योग से भी श्रेष्ठतर है वह प्रेमरूपा भक्ति।'

कोई भक्ति का मुकाबला नहीं है। भक्ति कोई करने की बात नहीं है। शब्द से भ्रांति होती है, "भक्ति' से भी लगता है कि कुछ करना पड़ेगा, भक्ति में क्रिया है, कुछ करना; जैसे योग में कुछ करना, कर्म में कुछ करना, ज्ञान में कुछ करना, भक्ति में भी कुछ करना पड़ेगा। वहीं भूल हो जाती है।

भक्ति तो इस बात का अनुभव है कि मेरे किए कुछ होता ही नहीं। भक्ति तो अपने कृत्य की व्यर्थता का बोध है, पश्चात्ताप है। उस पश्चात्ताप में ही तुम गिर जाते हो, झुक जाते हो। ध्यान रखना, मैं नहीं कहता हूं कि तुम झुकते हो–झुक जाते हो!

क्या करोगे? कैसे खड़े रहोगे? जब सब किया अनकिया सिद्ध होता है, जब अपने पैर जहां भी ले जाते हैं, वहीं संसार मिलता है, और जब अपनी आंख जो भी दिखाती है वही पदार्थ सिद्ध होता है, और जिसकी भी तुम प्रार्थना करते हो वही प्रार्थना आखिर में कामना सिद्ध होती है, वासना सिद्ध होती है, तो फिर क्या करोगे? ठहर जाते हो! खड़े होने की

CamScanner

वास्तविकता की झलक

यदि आप गर्म चाय का कप हाथ में लिए खड़े हैं और कोई आपको धक्का दे देता है तो क्या होता है ? आपके कप से चाय छलक जाती है। अब आपसे कोई पूछे कि आपके कप से चाय क्यों छलकी ? आप का उत्तर होगा–कि अमुक ने मुझे धक्का दिया–इसलिये। जबकि वास्तविकता यह है कि आपके कप में चाय थी इसलिए छलकी। आपके कप से वही छलकेगा जो उसमें होगा Jai Shree Krishna ❤️

इसी तरह जब जीवन में हमें लोगों के व्यवहार से जब धक्के लगते हैं तो उस समय हमारी वास्तविकता ही छलकती है। आपका सच उस समय तक सामने नहीं आता जब तक आपको धक्का न लगे।

देखना ये है कि जब आपको धक्का लगा तो क्या छलकेगा–धैर्य, मौन, कृतज्ञता, स्वाभिमान, निश्चिंतता, मानवता, गरिमा या क्रोध, कड़वाहट, पागलपन, ईर्ष्या, द्वेष, या घृणा–यह निर्णय आपको करना है।

Jai Shree Krishna ❤️

CS CamScanner

मनुष्य का जो चेतन मन है, जो कांशस माइंड है, उसमें ही हममें से अधिक लोग जी कर समाप्त हो जाते हैं, इसलिए जीवन को नहीं जान पाते हैं। जीवन की जड़ें अनकांशस माइंड में, अचेतन मन में छिपी हैं। वह अदृश्य है, वह भूमि के नीचे है। वहीं से हमारा संबंध परमात्मा से, सत्य से, जीवन से है। वहीं से जड़ें पृथ्वी से जुड़ी हैं। जड़ों का संबंध ही जीवन से है। हमारे अचेतन मन में हमारी जड़ें हैं।

सत्य की जो खोज है या स्वयं की या प्रभु की, वह खोज खुद की जड़ों की खोज है। वह जो रूट्स हैं हमारे भीतर, उनकी खोज है। वे अंधेरे में छिपी हैं। और हम? हम वह जो छोटा सा कमरा है ऊपर जमीन के, वहां जहां रोशनी पड़ती है, वहीं जी लेते हैं और वहीं समाप्त हो जाते हैं।

यह जिस कमरे में थोड़ी रोशनी पड़ती है, यह जो चेतन मन है, यह जो कांशस माइंड है, यह समाज के द्वारा निर्मित होता है। शिक्षा के द्वारा, संस्कार के द्वारा। बचपन से हम इसे तैयार करते और बनाते हैं। और आज तक मनुष्य का यह जो कांशस माइंड है, यह जो चेतन मन है, यह बिना इस बात के खयाल के निर्मित किया गया है कि इसके नीचे दो मन और हैं। इसलिए अक्सर इस मन को जो बातें सिखाई जाती हैं, वे नीचे के मन के विरोध में पड़ जाती हैं, भिन्न हो जाती हैं। और तब इस ऊपर की मंजिल में और नीचे की मंजिलों में एक विरोध, एक खिंचाव, एक तनाव शुरू हो जाता है। आदमी खुद के भीतर डिवाइडेड हो जाता है, खुद के भीतर विभाजित हो जाता है।

चेतन मन में जो बातें सिखाई जाती हैं, वे अचेतन मन और अर्द्ध-चेतन मन के अगर समानांतर न हों, पैरेलल न हों, हारमनी में न हों, उनके साथ लयबद्ध न हों तो व्यक्तित्व खंडित हो जाता है। हम सबका व्यक्तित्व खंडित व्यक्तित्व है, डिसइंटीग्रेटेड। और है इसलिए कि हमारे चेतन मन को जो बातें सिखाई गई हैं, सिखाई जाती रही हैं, उनमें हमारे पूरे व्यक्तित्व का कोई ध्यान नहीं रखा गया है।

चेतन मन को कहा जाता है, क्रोध मत करो। बच्चा पैदा हुआ--हम उसे सिखाना शुरू करते हैं, क्रोध मत करो। उसके अचेतन मन में क्रोध मौजूद है। हम उसे सिखाते हैं, क्रोध मत करो। उसका ऊपर का मन

CamScanner

10:57 pm 0 KB/s 4G 23%

Prema Agrawal · 2h ·

मेरे पास कोई आये ...
तो मेरा स्वभाव है उसे प्रेम देना !
मै भूल जाता हूँ कि ......
मैं शरीर भी हूँ !
मेरे पास कम आये ....
मुझे पता नहीँ ....
शरीर पुरुष का भी है
स्त्री का भी है ...!
मैं अपने स्वभाव कों बदलू ...
ये मुश्किल है !
मेरे जैसे लोग हमेशा आचरण ...
बिगाड़ने वाले रहे .....
पुरुष आते है...तो कोई बात नहीँ
स्त्री आये तो झंझट हो जाती है ...!
तो स्त्री अगर कम उम्र की हो ...
तो बाप कों साथ लाना चाहिये !
थोड़ी ज्यादा उम्र हो तो ....
पति कों साथ लाना चहिये !
ज्यादा ही उम्र हो तो ....
बेटे कों साथ लाना चहिये !
अकेले बिल्कुल नहीँ आना चहिये मेरे पास !
क्यूकि मैं प्रेमपूर्ण ही हो सकता हूँ !
ये जो चीले आकाश मे उड़ती है ...
इनकी नज़र नीचे माँस के ...
लोथडो पर लगी रहती है ¡
मुझसे प्रेम सुगमता से हो जाता है !
प्रेम ही असली बात है !

भगवान श्री ....सदा हृदय मे धड़कते हो प्रेम से !

🙏

CamScanner

8:31 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

जिसको तुमने लोभ कहा है, वह तुम्हारी मूर्च्छा है। मूर्च्छा को तोड़ो। लोभ को छोड़ने की बात ही मत सोचना। क्योंकि तुम छोड़ोगे तभी, जब तुम्हें कुछ मिलने की आकांक्षा होगी। इसलिए छोड़ने की बात ही छोड़ दो। त्यागने की भाषा का उपयोग ही मत करना, क्योंकि वह भोगी की ही भाषा है। वह भोगी ही शीर्षासन कर रहा है अब। पहले पैर के बल खड़ा था, अब सिर के बल खड़ा हो गया—वह है भोगी ही। पहले गिनता था तिजोड़ी में कितने रुपए हैं, अब गिनती रखता है कि कितने त्यागे है। पहले गिनता था, अब भी गिनता है। गिनती में कोई फर्क नहीं पड़ा है। पहले सिक्के स्थूल थे, अब बड़े सूक्ष्म हो गए हैं।

तुम जाकर देखो तुम्हारे मंदिरों में बैठे हुए साधु—संन्यासियों को, हिसाब रखे बैठे हैं; डायरी भरते हैं, कितने उपवास किए; इस वर्ष कितने' उपवास किए। सिक्के कमा रहे हैं, बैंक बैलेंस इकट्ठा कर रहे हैं। ये परमात्मा के सामने जाकर अपनी पूरी फेहरिश्त रख देंगे कि देखो, इतने उपवास किए, इतनी प्रार्थना की, इतने व्रत—नियम लिए। यह लोभ ही है —नए ढंग पर खड़ा हो गया।

मैं तुमसे कहता हूं र लोभ को छोड़ने की बात ही मत करना। क्योंकि छोड़ते तो तुम तभी हो कुछ, जब पाने के लिए पहले इंतजाम कर लो। तुम पूछोगे, छोड़े किसलिए? चूंकि तुम पूछते हो, छोड़े किसलिए, कुछ जालसाज तुम्हें बताने मिल जाते हैं कि इसलिए छोड़ो कि स्वर्ग मिलेगा; इसलिए छोड़ो कि पुण्य मिलेगा; इसलिए छोड़ो कि आनंद मिलेगा, ब्रह्म मिलेगा, मोक्ष मिलेगा। छोड़ने के लिए तुम पूछते हो, किसलिए छोड़े? वे बताते हैं, इसलिए छोड़ो।

और जब तक इसलिए मन में है, तब तक लोभ है।

मूर्च्छा तोड़ो; लोभ को छोड़ो मत। लोभ को पड़ा रहने दो जहां है। तुम जागकर देखने की कोशिश करो। जैसे—जैसे तुम जागोगे, लोभ छोड़ना न पड़ेगा। लोभ ऐसे ही विदा हो जाता है, जैसे दीया जल जाए तो अंधेरा विदा हो जाता है।

कोई अंधेरे को छोड़ता है? दीया जलाकर फिर तुम क्या करते हो? अंधेरे को बाहर फेंकने जाते हो? दीया जलाकर फिर तम क्या करते हो? अंधेरे

CamScanner

तुमने अपने नाम को समझ लिया कि यह मैं हूं । नाम लेकर आये थे ? कोई तो नाम लेकर आता नहीं है । तुमने अपनी भाषा को समझ लिया कि यह मैं हूं । भाषा लेकर आये थे ? कोई भाषा तो लेकर आता नही । न कोई धर्म लेकर आता है , न कोई देश लेकर आता है। ये सब बातें सिखा दी गई हैं। ये तुम्हें तोतों की तरह रटा दी गई हैं । तुम तोते बन गये हो । और बड़े अकड़ रहे हो , क्योंकि तुम्हें वेद याद हैं , क्योंकि तुम्हें कुरान कंठस्थ है । तुम्हारी अकड़ तो देखो ! और तुम्हे जरा भी होश नहीं है कि तुम जब आये थे , न कुरान थी तुम्हारे पास , न वेद थे तुम्हारे पास । **तुम थे -- एक कोरे कागज थे तुम !** और जब तुम कोरे कागज थे तब परमात्मा से जुड़े थे। जब तुम्हारा कागज गूद दिया गया है तब से तुम समाज से जुड़ गये हो । तब से तुम अपने से टूट गये हो और भीड़ से जुड़ गये हो । तब से तुम भीड़ के हिस्से हो गये हो , तुम्हारी आत्मा खो गई है। **सहज का अर्थ होता है , जो तुम्हारा स्वभाव है ;** जो तुम्हें दूसरे से नहीं सीखना है , जो तुम्हें अपने भीतर तलाशना है ; जिसका अन्वेषण भीतर ही करना है । **उतरते जाओ पर्त - पर्त , छीलते जाओ अपनी पर्तों को , उस जगह तुम्हें पहुंचना है जहां ' साक्षी ' मिल जाये ।** **ओशो** (Dr Sohan Lal Narang)

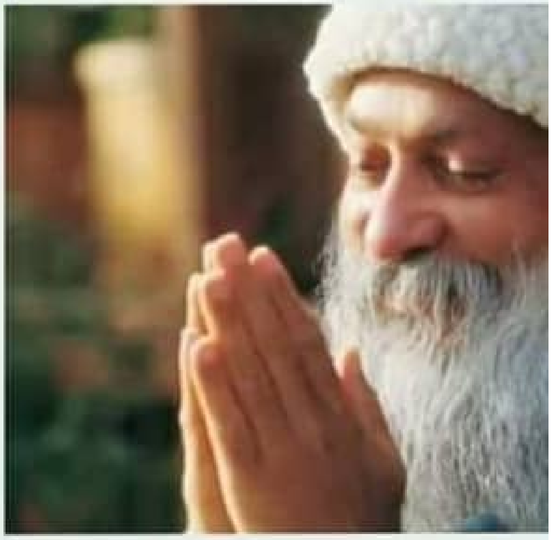

CamScanner

CamScanner

8:40 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

पाओगे। उनका कुल रस निंदा—रस है।

शास्त्रज्ञों ने नौ रस गिनाए हैं, निंदा को क्यों छोड़ दिया, पता नहीं! साधु — संन्यासियों का तो रस ही वही है—निंदा। सारा संसार गलत है, पापी है। सारा संसार नर्क की तरफ जा रहा है। यह वे बदला ले रहे हैं तुमसे। तुमने उन्हें हराया, तुमने उन्हें मिटाया, तुमने उनकी पहुंच को पहुंचने न दिया, तुमने उनके हाथ अंगूरों तक न पहुंचने दिए। अब उन्होंने अपने अहंकार के लिए नई सुरक्षा कर ली—अंगुर खट्टे हैं और तुम नासमझ हो, इसलिए अगुरों के पीछे पड़े हो। हम इस क्षणभंगुर संपदा की खोज नहीं करते। हम शाश्वत की खोज कर रहे हैं। हम तो नित्य संपदा की खोज कर रहे हैं। हम कंकड़—पत्थरों की खोज नहीं करते।

मगर तुम कंकड़—पत्थर पाने में भी हार गए। जिन हीरे—जवाहरातों की तुम बातें कर रहे हो, वे कहीं मन का समझाना तो नहीं; सांत्वना तो नहीं? और दिखाई कहीं भी नहीं पड़ता कि तुम्हारे जीवन में कोई किरण उतर रही हो।

तो मैं तुमसे कहता हूं? लोभ की हार को तुम लोभ की समझ मत समझ लेना। लोभ की पराजय को तुम त्याग का आवरण मत दे देना। बहुत धोखा संभव है। और जितने सूक्ष्म जगत में प्रवेश करते हो, उतने ही धोखे बारीक होते चले जाते हैं। तुम्हारे भोग की पराजय कहीं त्याग का आवरण लेकर फिर न बच जाए। तुम भोग को ठीक से देख लेना; पराजय की फिक्र छोड़ो। मैं तुमसे कहता हूं? अगर तुम जीत भी जाते तो भी जीत कुछ न लाती।

तुम जीते हुए आदमियों से पूछो, बुद्ध—महावीर से पूछो। सब था उनके पास। लोभ उनका हारा हुआ न था—याद रखना—जीता हुआ था। साम्राज्य था, धन—दौलत थी, घर—द्वार था, सुंदर पत्नियां थीं, सुंदर बच्चे थे। सब कुछ था। भरा—पूरा था। हाथ में और थे और इन अगुरों को छोड़कर वे चल पड़े। और मह खट्टे थे, ऐसा भी नहीं, मीठे थे।

अब बुद्ध अगर खोजें भी तो यशोधरा से सुंदर पत्नी खोज पाएंगे? अगर मीठे थे, मैं कहता हूं। महावीर अगर खोजें भी तो और क्या सुंदर संसार बना सकेंगे, जो उन्हें बना—बनाया मिला था? अंगुर हाथ में थे और मीठे थे।

CamScanner

8:41 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

ठीक से समझना; जो सिकंदर भी न हो पाया, वह बुद्ध न हो पाएगा। बुद्धत्व तो और भी ऊंचे आकाश के अगुरों का तोड़ लेना है। वह तो आखिरी छलांग है। इसलिए अक्सर ऐसा हो जाता है कि जिंदगी से हारे — थके हुए लोग धार्मिक बन जाते हैं। उनके कारण धर्म मुर्दा होता है। धर्म के कारण वे जीवित नहीं हो पाते, उनके कारण धर्म मुर्दा हो जाता है। उनकी हारी— थकी आत्माएं, उदास और विषाद से दबी आत्माएं, मंदिरों को भी उदास कर देती हैं, उत्सव खो जाते हैं। गौर से देखो, मंदिर, चर्च, गुरुद्वारे—वहां तुम हारे, पराजित लोगों को पाओगे।

वे ऐसे ही हैं, जैसे कि तुम कभी कबाड़खाने में गए, जहां टूटी—फूटी कारें, साइकिलें—अंबार लगे हैं। अस्पताल में जाकर देखा? किसी की टल बंधी है, किसी का हाथ बंधा है, किसी के कान बंधे हैं, किसी की आख बंधी है। लंगड़े—से, अंधे—काने सब इकट्ठे हैं।

इससे भी बुरी दुर्दशा तुम्हारे मंदिरों, मस्जिदों, गिरजों की है। वहां टूटे— फूटे आदमी—जैसे कबाड़खाने में कारें अटकी रहती हैं, पड़ी रहती हैं, कोई खरीददार भी नहीं—वहां टूटे—फूटे आदमी तुम पाओगे। वे आदमियों के कबाड़खाने हैं।

वहां जिंदगी नाचती हुई न मिलेगी। वहां तुम जिंदगी को गीत गाता हुआ न पाओगे। पराजय से कैसा गीत! अहंकार की उदासी से कैसा नाच! हां, तुम एक बात वहां जरूर पाओगे कि वे उन सब की निंदा करते हुए मिलेंगे, जो जीत रहे हैं। वे उन सब को गालिया देते मिलेंगे, जिनके हाथ में मह पहुंच रहे हैं या पहुंचने के करीब हैं। उनको तुम निंदा करते हुए पाओगे। उनका कुल रस निंदा—रस है।

शास्त्रज्ञों ने नौ रस गिनाए हैं, निंदा को क्यों छोड़ दिया, पता नहीं! साधु — संन्यासियों का तो रस ही वही है—निंदा। सारा संसार गलत है, पापी है। सारा संसार नर्क की तरफ जा रहा है। यह वे बदला ले रहे हैं तुमसे। तुमने उन्हें हराया, तुमने उन्हें मिटाया, तुमने उनकी पहुंच को पहुंचने न दिया, तुमने उनके हाथ अंगूरों तक न पहुंचने दिए। अब उन्होंने अपने अहंकार के लिए नई सुरक्षा कर ली—अंगुर खट्टे हैं और तुम नासमझ हो, इसलिए अगुरों के पीछे पड़े हो। हम इस क्षणभंगुर संपदा की खोज नहीं

CamScanner

8:43 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

एक आदमी रास्ते पर भीख माग रहा है, बुद्ध ने भी भीख मांगी। बुद्ध भी रास्ते पर भीख मांग रहे हैं। दोनों भिखारी हैं, लेकिन फर्क करोगे या नहीं? दोनों के हाथ में भिक्षापात्र है माना, लेकिन दोनों का अंतरबोध बड़ा भिन्न है। एक भिखारी है, सिर्फ भिखारी है। और एक ऐसा भिखारी है, जो सम्राट था। एक ऐसा भिखारी है, जिसने व्यर्थता जानी है सबकी। और एक ऐसा भिखारी है, जो अभी भी कौड़ी—कौड़ी इकट्ठा करके सम्राट होने की चेष्टा में लगा है। दोनों एक से मालूम पड़ते हैं।

यह हालत ऐसी ही है, जैसे कि तुम सीढ़ियों से जा रहे हो, बीस सीढ़ियां हैं, तुम दसवीं सीढ़ी पर पहुंच गए हो। और कोई सीढ़ियों से उतर रहा है, बीस सीढ़िया हैं, और वह भी दसवीं सीढ़ी पर आ गया है। तुम दोनों एक ही सीढ़ी पर खड़े हो, लेकिन एक उतर रहा है, एक चढ़ रहा है। एक ही सीढ़ी पर खड़े होने से भ्रम में मत पड़ जाना कि तुम एक ही जगह हो। एक उतर रहा है, एक चढ़ रहा है।

बुद्ध उतर आए हैं सिंहासन से, भिखारी चढ़ने की कोशिश कर रहा है। जन्म—जन्म लगेंगे उसे, शायद कभी चढ़ पाए। दोनों भिक्षा के पात्र लिए खड़े हैं एक ही जगह। बड़ी भिन्न है उनकी दशा। बुद्ध जाग गए हैं, सिंहासन की व्यर्थता दिखाई पड़ गई है। यह भिखारी अभी सोया हुआ है। अभी यह सिंहासन बनाने के सपने देख रहा है।

हारकर मत भागना। क्योंकि हारकर अगर यह भिखारी बुद्ध के साथ हो ले, जिसकी बहुत संभावना है; क्योंकि इसको लगे कि क्या सार? जब बुद्ध सब कुछ छोड्कर आ गए तो क्या सार? तो मैं भी साथ हो लूं। यह भी साथ हो ले, मगर इसका साथ होना बहुत सार्थक न हो पाएगा। इसकी चित्त—दशा अलग है। यह जो कहेगा, अपने मन में यही कहेगा कि लोभ में चिंता है, लोभ में हानि है, लोभ में कोई सार नहीं है, लोभ में ऐसा है, लोभ में वैसा है। यह समझाएगा अपने को। यह रहेगा मूर्च्छित। लोभ इसे अभी भी सार्थक है। सार्थकता को दबाने के लिए कहेगा, लोभ जहरीला है, लोभ पाप है। अपने को घबड़ाने के लिए कहेगा कि अगर लोभ में पड़ा तो नर्क में जाना पड़ेगा। अगर लोभ से बचा तो मैं भी स्वर्ग जाऊंगा। यह नए लोभ बनाएगा, पुराने लोभों के प्रति भय खड़े करेगा।

CamScanner

8:45 am 0 KB/s 4G 100%

हारकर मत भागना। क्योंकि हारकर अगर यह भिखारी बुद्ध के साथ हो ले, जिसकी बहुत संभावना है; क्योंकि इसको लगे कि क्या सार? जब बुद्ध सब कुछ छोड़कर आ गए तो क्या सार? तो मैं भी साथ हो लूं। यह भी साथ हो ले, मगर इसका साथ होना बहुत सार्थक न हो पाएगा। इसकी चित्त–दशा अलग है। यह जो कहेगा, अपने मन में यही कहेगा कि लोभ में चिंता है, लोभ में हानि है, लोभ में कोई सार नहीं है, लोभ में ऐसा है, लोभ में वैसा है। यह समझाएगा अपने को। यह रहेगा मूर्च्छित। लोभ इसे अभी भी सार्थक है। सार्थकता को दबाने के लिए कहेगा, लोभ जहरीला है, लोभ पाप है। अपने को घबड़ाने के लिए कहेगा कि अगर लोभ में पड़ा तो नर्क में जाना पड़ेगा। अगर लोभ से बचा तो मैं भी स्वर्ग जाऊंगा। यह नए लोभ बनाएगा, पुराने लोभों के प्रति भय खड़े करेगा।

लेकिन बुद्ध के भीतर की दशा और है। लोभ के प्रति कोई विरोध नहीं है अब। लोभ विरोध के योग्य भी नहीं है। इसीलिए तो मैं कहता हूं संसार छोड़ने के योग्य भी नहीं है। इतना भी मूल्य मत दो। यह भी बड़ा मूल्य हो जाएगा कि छोड़े; इस लायक भी नहीं है। कोरा सपना है। आख खोलो, जाना कहीं भी नहीं है। अन्यथा एक के बाद एक नए उलझाव खड़े होते चले जाते हैं।

सारा जोर हमारा इस बात पर है कि जल्दी न करना त्याग की; त्याग को आने देना अपने से। जब अपने से आता है तो परम सुंदर है। जब तुम थोप लेते हो तो कुरूप हो जाता है। जब सहज–स्फूर्त होता है तो उसके लावण्य की बात ही नहीं। वह इस पृथ्वी का नहीं होता, किसी और ही लोक की किरण उतर आती है तुम्हारे अंधकार में। तुम आलोकित हो जाते हो। जब तुम छोड़ते हो तो तुम–तुम ही हो, तुम्हारा छोड़ा हुआ बहुत दूर नहीं ले जाता।

पकने दो। जल्दी न करो। फल पककर अपने से गिर जाते हैं। स्वीकार करो, जहां हो, जैसे हो। लोभ है तो लोभ, भय है तो भय। स्वीकार करो। बस, इतना ही खयाल रखो कि धीरे–धीरे जागकर देखो। दौड़ते रहो लोभ की दुनिया में, मगर धीरे–धीरे जागकर दौड़ने लगो। एक दिन अचानक तुम पाओगे, ठिठककर खड़े हो गए हो। ऐसा नहीं कि तुम्हें अपने को रोकना पड़ा है; बल्कि ऐसा कि जैसे पेट्रोल ही चुक गया है,

CamScanner

कर्ता हुए--कि चिंता पकड़ी। कर्ता मत बनो। कर्ता तो एक राम है। कर्ता तो एक भगवान है। कर्ता का का उसी पर छोड़ दो। तुम तो अपने को इतना ही जानो कि एक अभिनय मिला है, इसे पूरा कर देना है। जो उसने दे दिया है अभिनय, वही पूरा कर देना है। पूरी कुशलता से पूरा कर देना। अपना पूरा कौशल्य, अपनी पूरी प्रवीणता, अपनी पूरी बुद्धि--सब से पूरा कर देना। मगर ध्यान रखना है कि मैं कर्ता नहीं हूं। तब तुम चकित हो जाओगे। चह जगत फिर पकड़ेगा नहीं। यह जगत पास-पास रह कर भी दूर-दूर रहेगा। यह जगत सब तरफ से तुम्हें घेरे हुए भी तुम्हें छूएगा नहीं। तुम अस्पर्शित रह जाओगे। तुम इस पर कमलवत तैरने लगोगे।

नही सांझ नही भोर-09

ओशो

CamScanner

8:53 am 138 KB/s 99%
facebook

शब्द-शब्द लिखा दिया, जबकि वह उस समय तक बुद्धत्व को उपलब्ध न हुआ था। यह चीजे विरोधाभासी लगती है।

जो लोग बोध को उपलब्ध हो गए थे, याद तो उन्हें रखना चाहिए था, न कि इसे जो कि दूसरे किनारे तक पहुंचा ही न था। लेकिन जब दूसरा किनारा पा लिया जाता है तो पहला तट भुला दिया जाता है और जब कोई स्वयं बुद्ध बन गया तो कौन उसे याद करने की परवाह करता है कि बुद्ध ने क्या कहा था?

बुद्ध के शब्द तो जाल थे। महाकाश्यप ने मछली पकड़ ली। अब कौन फिक्र करता है जाल की? जब उसने नदी पार कर ली तो नाव कहां चली गई, उसकी कौन फिक्र करता है?

महाकाश्यप ने कहा,' मैं नहीं जानता कि बुद्ध ने कहा क्या? और तुम मुझ पर विश्वास नहीं कर सकते क्योंकि मेरे लिए वह अलग-अलग करना कठिन है जो बुद्ध ने कहा और जो मैं कह रहा हूं।'

निस्संदेह ऐसा होगा भी। जब महाकाश्यप स्वयं बुद्ध हो गया तो वे दोनों कैसे अलग किए जा सकते हैं? वे दो, दो नहीं हैं। लेकिन आनंद ने कहा, मैं उनके शब्दों का वर्णन करूंगा और बहुत प्रमाणिक रूप से उसने उनका वर्णन किया। इस व्यक्ति आनंद का मनुष्यता पर बहुत बड़ा उपकार है जो अभी भी जानता नहीं था। उसने अभी मछली पकड़ी नहीं थी इसलिए उसे जाल का याद रहा। वह अभी भी मछली पकड़ने के बारे में सोच ही रहा था।

शब्दों का उदेश्य है
विचारों को संप्रेषित करना।
जब विचारों को समझ लिया जाता है
तो शब्दों को भुला दिया जाता है।

ओशो; संसार और मार्ग--
(ताओ पथ : क्षण-क्षण भरपूर जीवन)

CamScanner

तुम जो भी कर रहे हो उसका कोई भी अत्यंतिक मूल्य नहीं है। कितना ही धन कमाओ, कितनी ही पद-प्रतिष्ठा मिले, मौत सभी कुछ साफ कर देती है। मौत सब मिटा देती है। तुम्हारे बनाए सब घर, ताश के पत्तों के घर सिद्ध होते हैं। और तुम्हारे द्वारा तैराई गई सभी नावें कागज की नावें सिद्ध होती हैं। सब डूब जाता है। जिसे यह होश आना शुरू हो गया कि मौत है, उसी के जीवन में धर्म की किरण उतरती है। मौत का स्मरण धर्म की प्राथमिक भूमिका है। अगर मृत्यु न होती तो संसार में धर्म भी न होता। मृत्यु है, इसलिए धर्म की संभावना है। और जब तक तुम मृत्यु को झुठलाओगे तब तक तुम्हारे जीवन में धर्म की किरण न उतरेगी।

ओशो

CamScanner

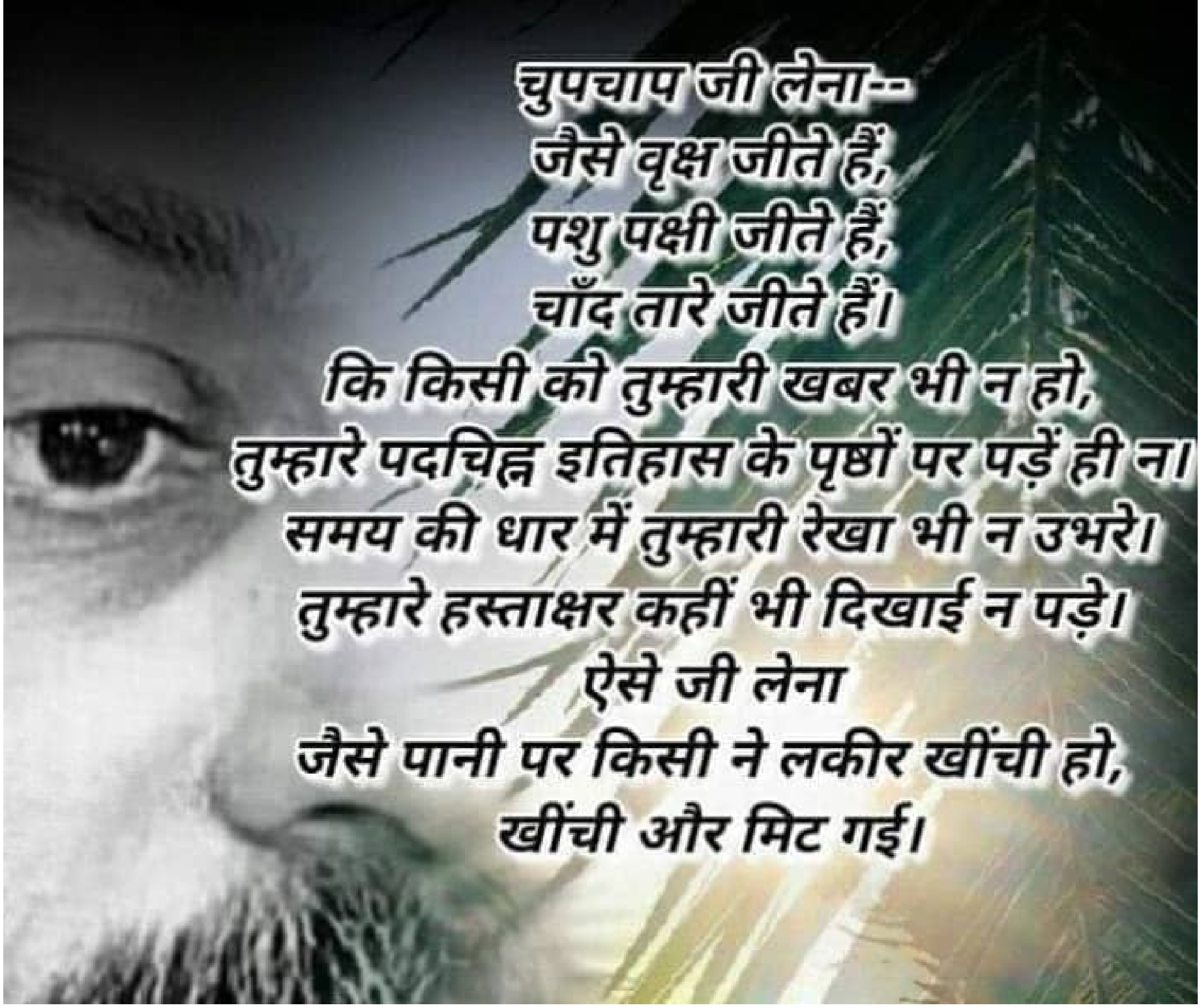
चुपचाप जी लेना--
जैसे वृक्ष जीते हैं,
पशु पक्षी जीते हैं,
चाँद तारे जीते हैं।
कि किसी को तुम्हारी खबर भी न हो,
तुम्हारे पदचिह्न इतिहास के पृष्ठों पर पड़ें ही न।
समय की धार में तुम्हारी रेखा भी न उभरे।
तुम्हारे हस्ताक्षर कहीं भी दिखाई न पड़े।
ऐसे जी लेना
जैसे पानी पर किसी ने लकीर खींची हो,
खींची और मिट गई।

CamScanner

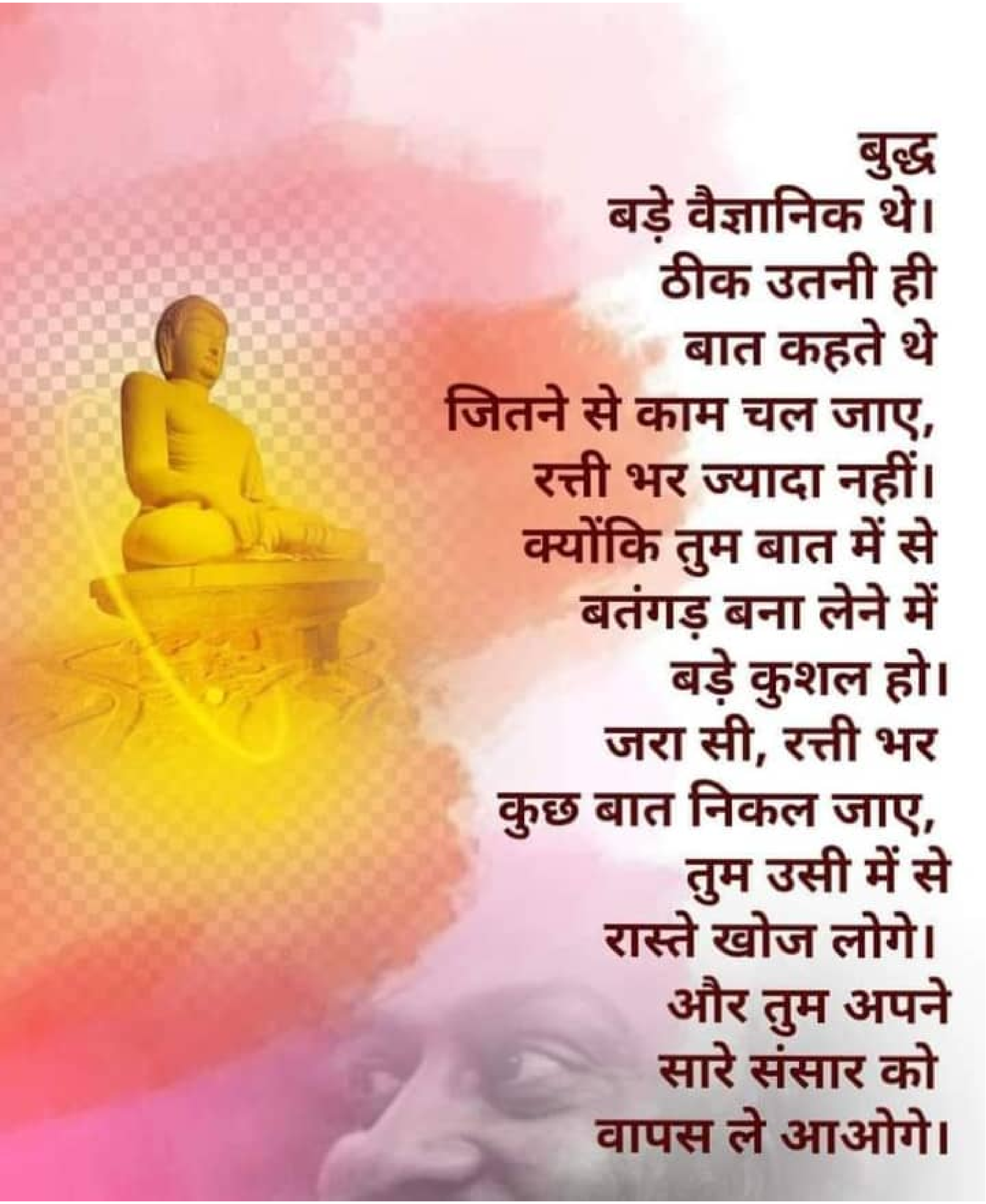
बुद्ध
बड़े वैज्ञानिक थे।
ठीक उतनी ही
बात कहते थे
जितने से काम चल जाए,
रत्ती भर ज्यादा नहीं।
क्योंकि तुम बात में से
बतंगड़ बना लेने में
बड़े कुशल हो।
जरा सी, रत्ती भर
कुछ बात निकल जाए,
तुम उसी में से
रास्ते खोज लोगे।
और तुम अपने
सारे संसार को
वापस ले आओगे।

CamScanner

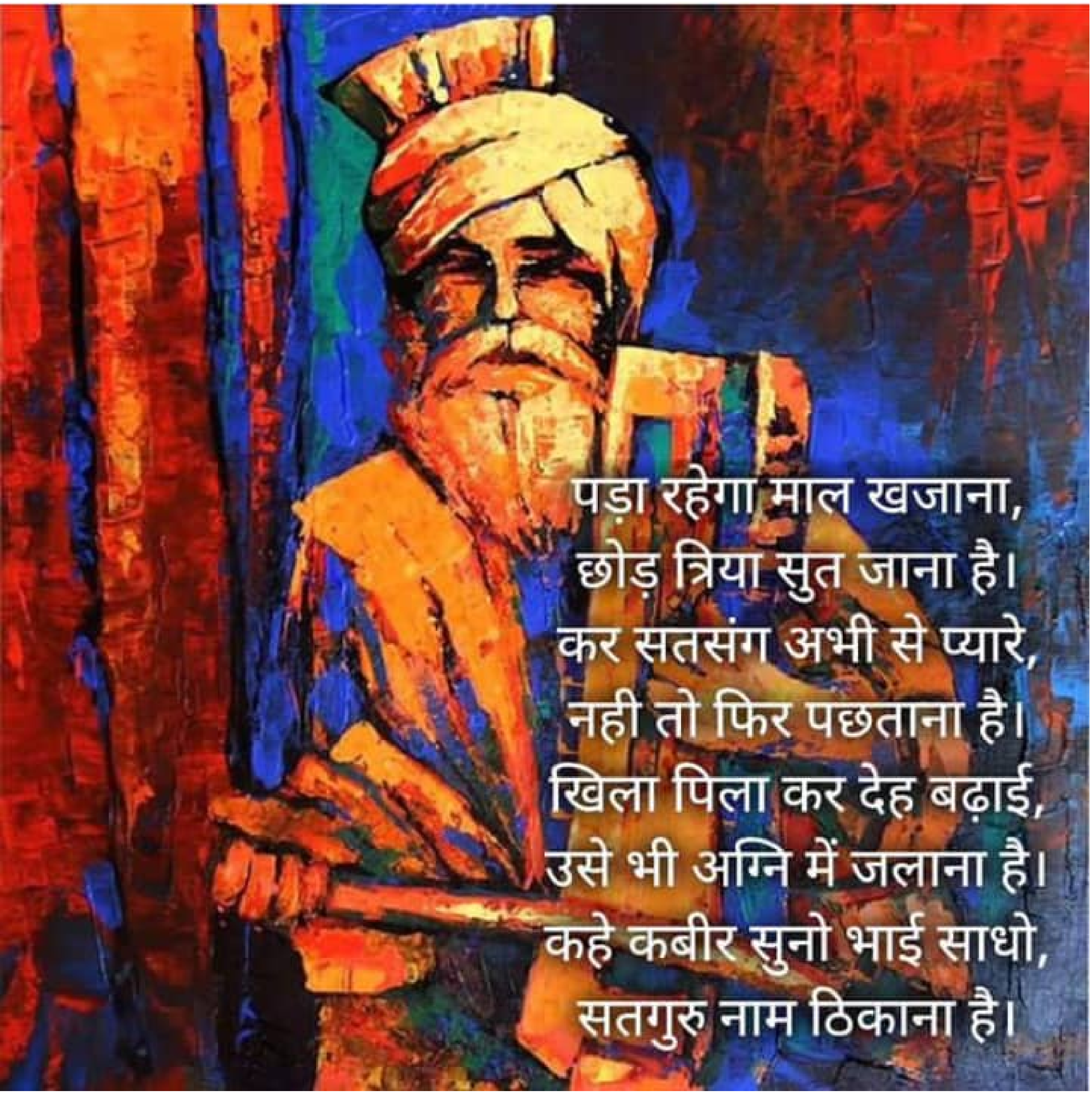
पड़ा रहेगा माल खजाना,
छोड़ त्रिया सुत जाना है।
कर सतसंग अभी से प्यारे,
नही तो फिर पछताना है।
खिला पिला कर देह बढ़ाई,
उसे भी अग्नि में जलाना है।
कहे कबीर सुनो भाई साधो,
सतगुरु नाम ठिकाना है।

CamScanner

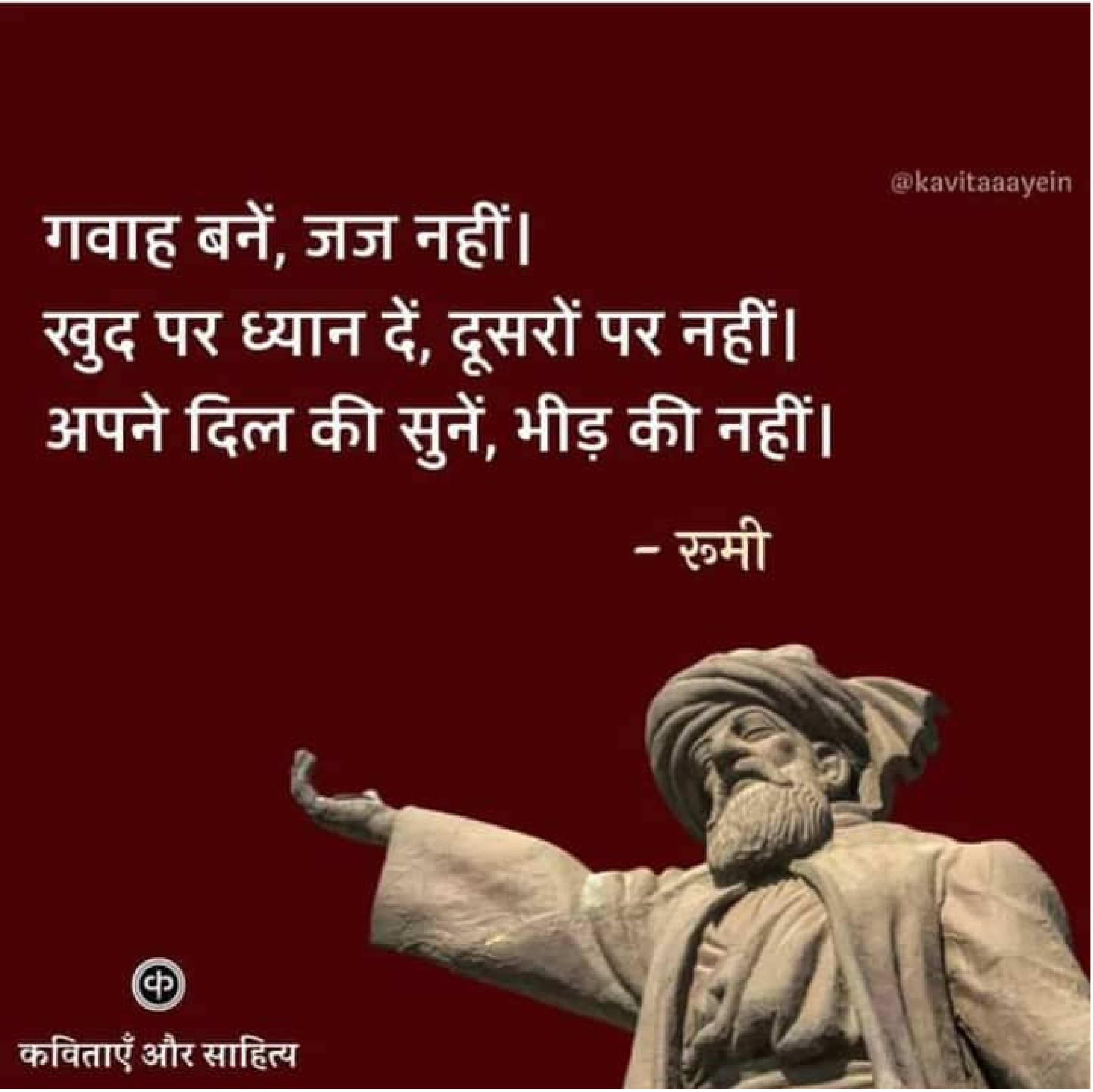
@kavitaaayein
गवाह बनें, जज नहीं।
खुद पर ध्यान दें, दूसरों पर नहीं।
अपने दिल की सुनें, भीड़ की नहीं।
- रूमी
क
कविताएँ और साहित्य

CamScanner

OSHO

तुम अपनी पत्नी में नहीं देखते, तुम अपने पति में नहीं देखते, न अपने बेटे में देखते हो। तुम देखते हो राम में, कृष्ण में, बुद्ध में, महावीर में— बड़े दूर। वेद में, कुरान में, गीता में, बाइबिल में। तुम अपने हस्ताक्षरों में नहीं देखते। तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें जो प्रेम—पत्र लिखा है उसमें नहीं देखते, वेद में। तुम्हारे बेटे ने तुतलाकर तुमसे जो कहा है, उसमें नहीं, कृष्ण के वचनों में। तुम दूर देखते हो, इसलिए चूकते हो। और परमात्मा पास है। परमात्मा तुम्हारे बेटे में तुतला रहा है। तुम्हारे बेटे में चलने की कोशिश कर रहा है। वृक्षों में हरा है, पक्षियों में गुनगुना रहा है। हवा के झोंकों में अदृश्य है। जो तुम्हारे चारों तरफ घिरा हुआ है, वह परमात्मा के अतिरिक्त और कोई भी नहीं है। तुम कहीं भी झुको, उसी के चरणों पर तुम्हारे हाथ पड़ते हैं। तुम कहीं भी आंख उठाओ, उसी का दर्शन। अष्टावक्र: महागीता—(भाग—6) प्रवचन—13

CamScanner

हमारे भीतर भी तीन पर्तें हैं। एक व्यक्त, जो हमारा शरीर है। एक अव्यक्त, जो हमारा मन है। और एक अव्यक्त के भी पार अव्यक्त, जो हमारी आत्मा है।

मन में कुछ भी हो, तो आज नहीं कल व्यक्त हो जाता है। शरीर तो व्यक्त है ही। उसमें कुछ अव्यक्त नहीं है, वह व्यक्त है ही। लेकिन मन में जो कुछ हो, वह आज नहीं कल व्यक्त हो जाता है, बीज की तरह। और मन के ही अव्यक्त से शरीर का व्यक्त पैदा होता है। इसलिए जब हम मरते हैं, तो शरीर तो छूट जाता है, लेकिन मन नहीं छूटता। मन को हम साथ ले जाते हैं, वह बीज है, कैप्सूल है, बंद है, हमारे साथ चला जाता है। फिर नए शरीर को बना लेता है।

CamScanner

अहोभाव

परमात्मा की खोज में दो उपाय हैं।
एक उपाय है उसमे ऐसे तल्लीन हो जाना कि
तुम न बचो; उसमे ऐसे लीन हो जाना कि
लीन होनेवाला बचे ही नही
जैसे सागर में नमक की डगली डाल दे, खो जाती है,
स्वाद फैल जाता है, लेकिन कोई बचता नही।
दुसरा मार्ग है: खोना जरा भी नही; जागना!
इतने जागना कि जागरण ही शेष रह जाये,
जागने वाला न बचे..!!
ओशो

CamScanner

तुम मुझे हरा न सकोगे,
क्योंकि मैं जीतना ही नहीं चाहता!

CamScanner

जो व्यक्ति अपने साथ रहना सीख गया, उसकी ज्योति जग गई। अब वह किसी की तलाश में नहीं है। कोई न आये तो मजे में है, कोई आये तो मजे में है। अकेला हो तो उतने ही मजे में है, जितना पूरे संसार में हो तो मजे में है।

-बिन धन परत फुहार-५

CamScanner

UNIVERSITYOFOSHO.COM

इस जगत में जो भी चीज बनती है वह मिटती है। और इस जगत में हर चीज का उपयोग कर लेना है और किसी चीज से बंधे नहीं रह जाना है परमात्मा से भी बंधे नहीं रह जाना है। सार इतना ही है कि विधि उपयोग कर ली। फिर विधि से बंधे नहीं रह जाना है। अनुष्ठान पूरा हो गया, विसर्जन कर दिया।

CamScanner

5:43 pm 0 KB/s 26%

Instagram

osho__quotes ❣️

View all 2 comments

14 minutes ago

osho_spritiual

♫ PARTHOMATIC • Jeevan (osho)

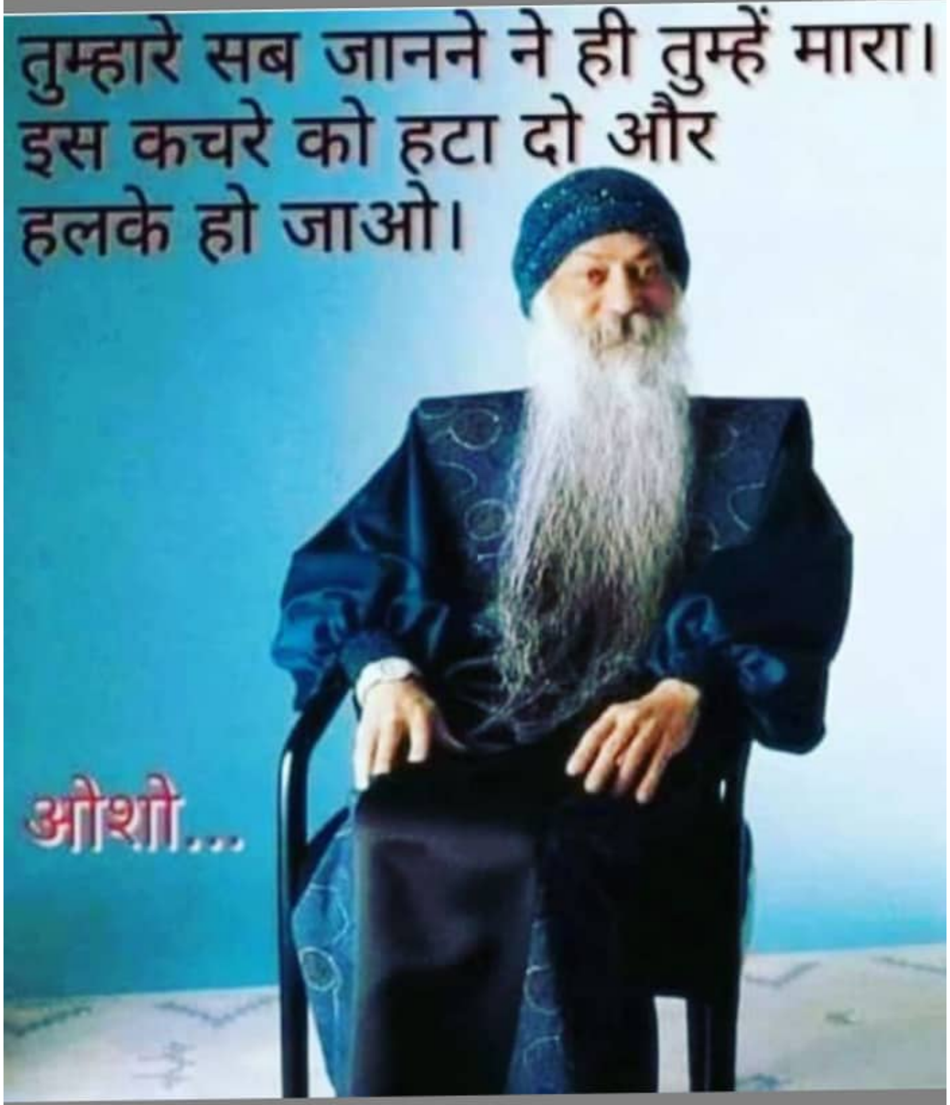

1 like

osho_spritiual 🙏🙏💐Rajneesh Osho💐🙏🙏

.... more

1 hour ago

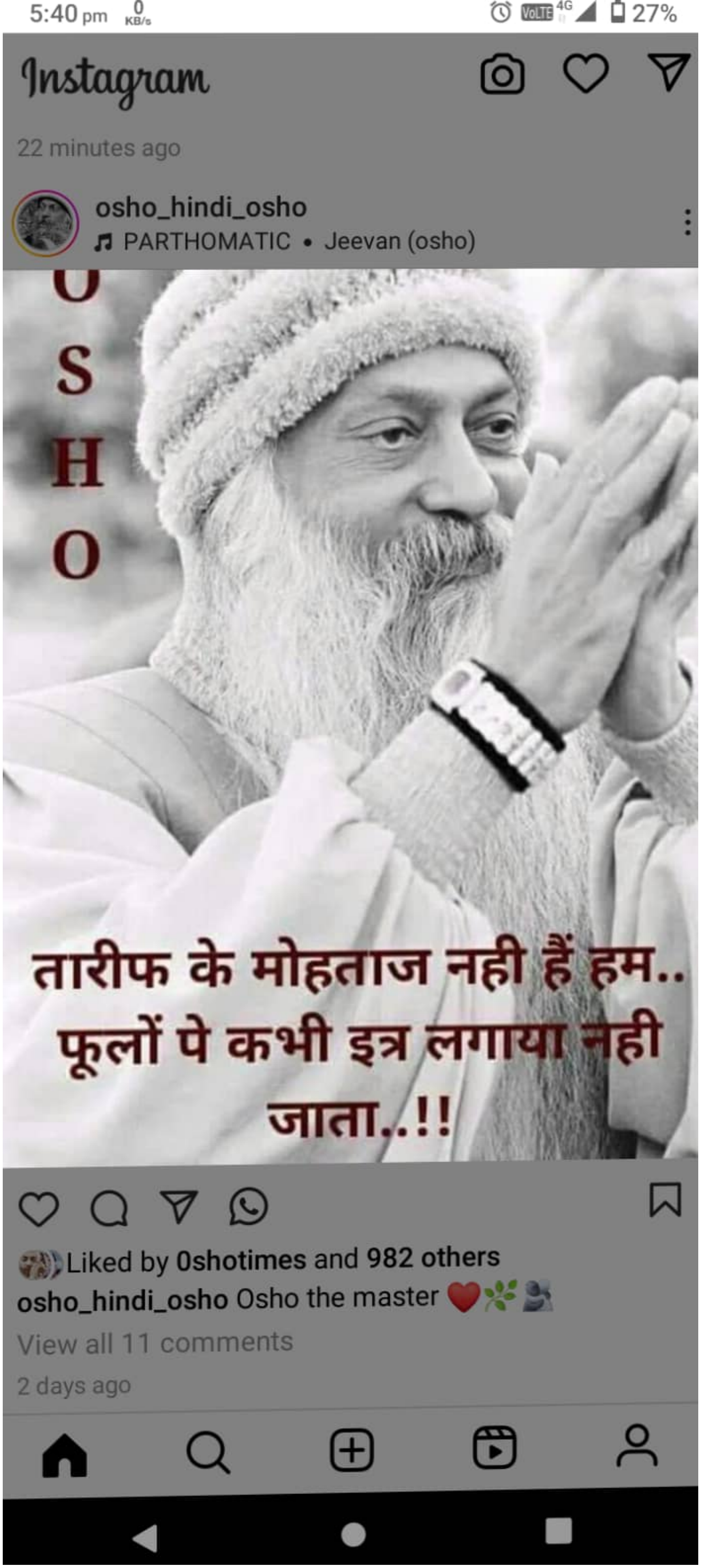
5:40 pm
27%
Instagram
22 minutes ago
osho_hindi_osho
PARTHOMATIC • Jeevan (osho)
O
S
H
O
तारीफ के मोहताज नही हैं हम..
फूलों पे कभी इत्र लगाया नही
जाता..!!
Liked by Oshotimes and 982 others
osho_hindi_osho Osho the master ❤️🌿
View all 11 comments
2 days ago

CamScanner

5:38 pm 0 KB/s

27%

Instagram

Create a reel

osho_forever
Pune, Maharashtra

ध्यान का अर्थ है, मन को झाड़ना, मन को स्नान देना; जैसे तुम रोज स्नान कर लेते हो, शरीर गंदा नहीं हो पाता, मन गंदा हो जाता है क्योंकि मन का स्नान तुम भूल ही गए हो।

ध्यान मन का स्नान है, जितनी बार धो सको।

हिंदू व्यवस्था थी कि सुबह उठकर ध्यान कर लो, ताकि दिनभर के लिए मन ताजा हो जाए। रात सोते वक्त ध्यान कर लो, ताकि दिनभर की धूल फिर झड़ जाए। मुसलमान तो पांच बार प्रार्थना करते रहे हैं, ताकि दिन में बार-बार धूल जमने ही न पाए। जब भी जरा सी धूल जमे, फिर प्रार्थना कर लो, फिर नमाज में उतर जाओ। फिर जरा धो डालो, साफ कर लो, दर्पण साफ रहे। उस दर्पण में ही तो तुम किसी दिन परमात्मा को पकड़ोगे।

बस, इतनी ही कला है।
ध्यान कला है रहस्य का द्वार खोलने की। ध्यान में ही घूंघट उठ जाता है। घूंघट परमात्मा के चेहरे पर नहीं है, तुम्हारे मन पर है। तुम्हारी धूल हट गई, तुम जानोगे परमात्मा सदा से सामने मौजूद था।

ओशो
पिव-पिव लागी प्यास (दादू दयाल वाणी पर प्रवचन)

CamScanner

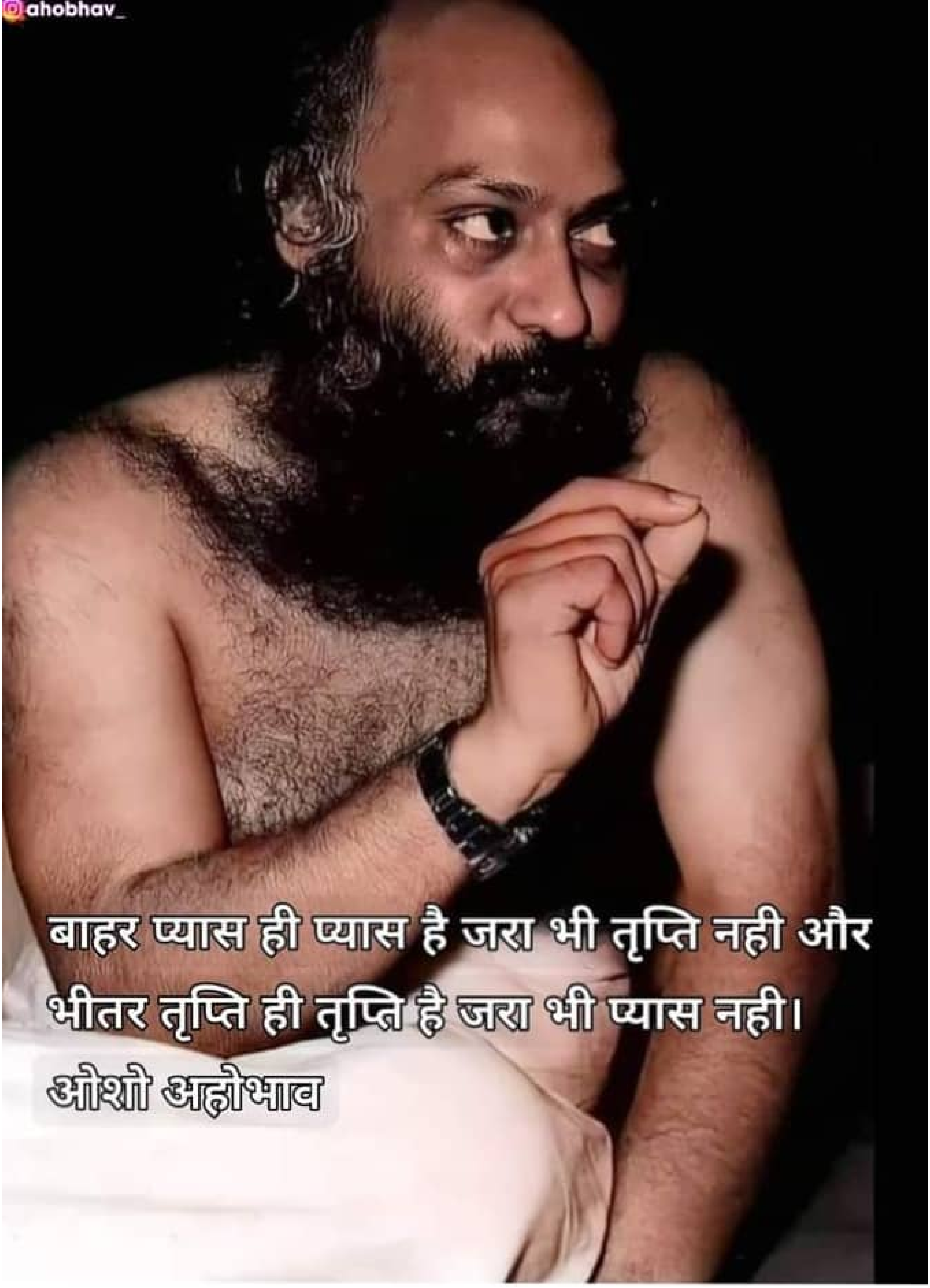
ahobhav_
बाहर प्यास ही प्यास है जरा भी तृप्ति नही और
भीतर तृप्ति ही तृप्ति है जरा भी प्यास नही।
ओशो अहोभाव

CamScanner

ओशो

भोजन से ऊर्जा मिलती है...
नींद में ऊर्जा संग्रहित होती है...
जागरण में खर्च होती है...
प्राणायाम और व्यायाम से जागती...
धारणा से केंद्रित होती...
ध्यान से ऊपर चढ़ती...
भय से सिकुड़ती...
वासना से नीचे गिरती है
प्रेम में फैलती और विस्तृत होती,
और समाधी में विराट के साथ
एक होती है,
उसमे विलीन होती है।
यह ऊर्जा का पुरा विज्ञान है।

CamScanner

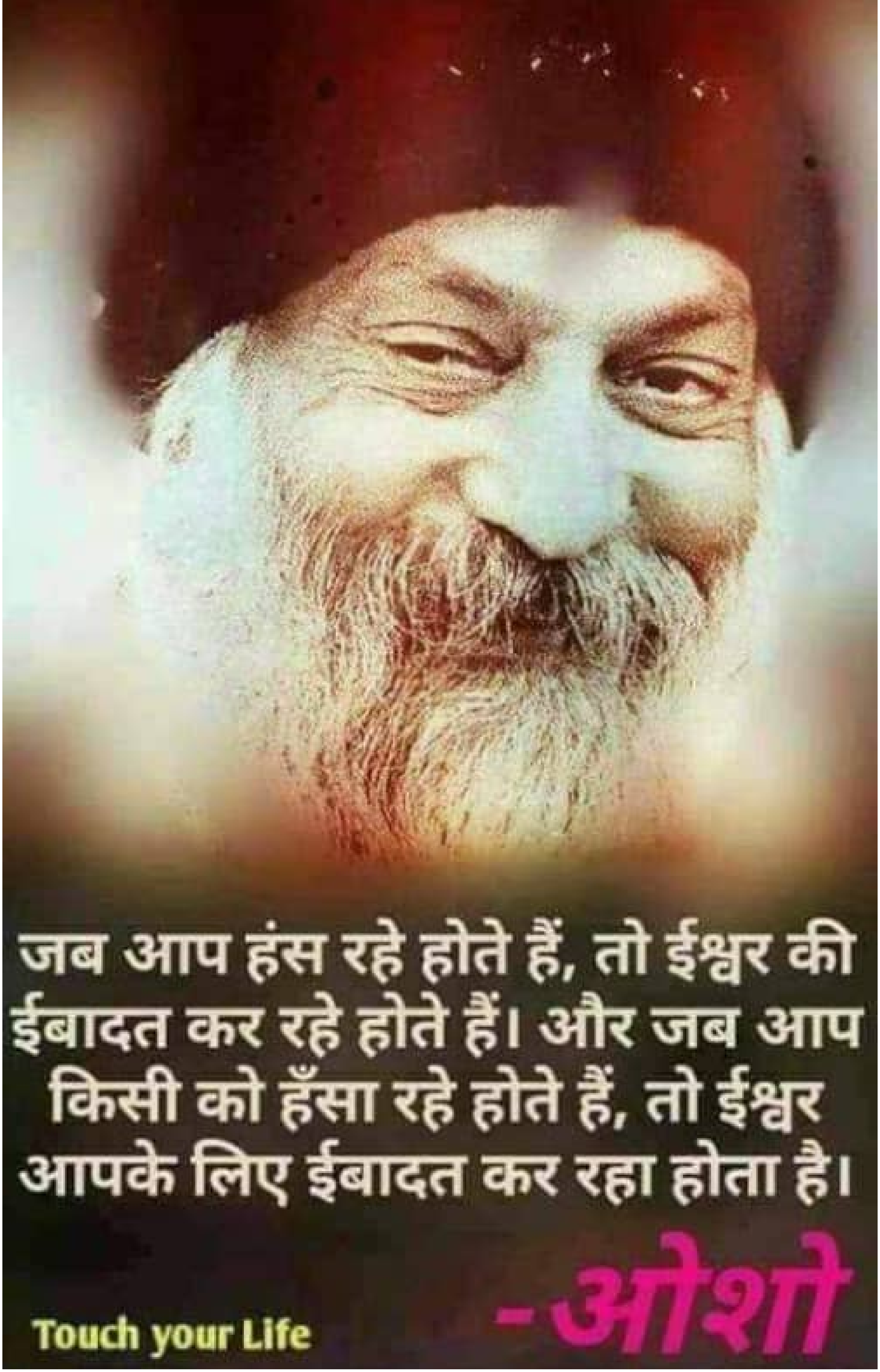

CS CamScanner

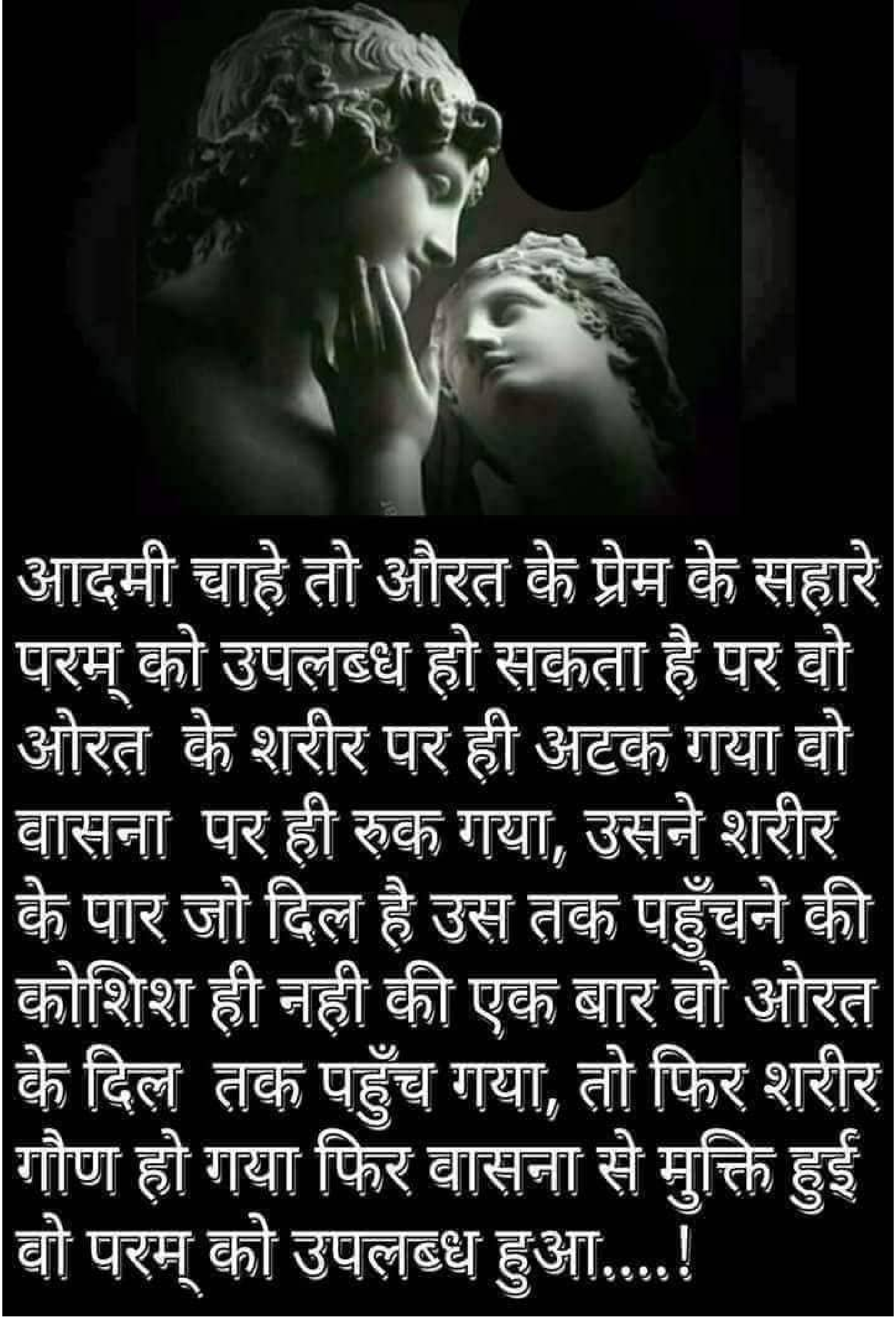
आदमी चाहे तो औरत के प्रेम के सहारे
परम् को उपलब्ध हो सकता है पर वो
ओरत के शरीर पर ही अटक गया वो
वासना पर ही रुक गया, उसने शरीर
के पार जो दिल है उस तक पहुँचने की
कोशिश ही नही की एक बार वो ओरत
के दिल तक पहुँच गया, तो फिर शरीर
गौण हो गया फिर वासना से मुक्ति हुई
वो परम् को उपलब्ध हुआ....!

CamScanner

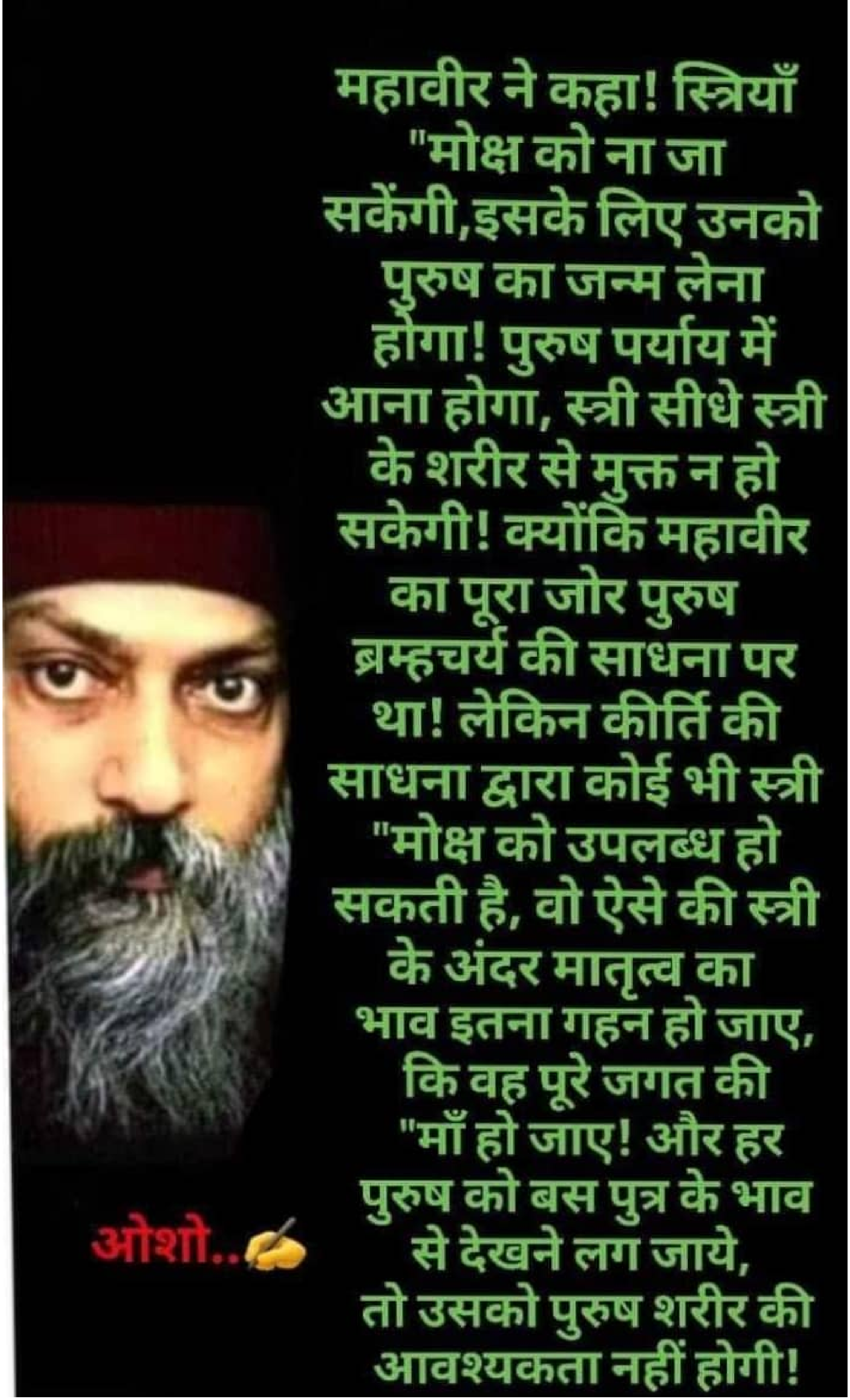

CS CamScanner

CamScanner

पृथ्वी में,
मिट्टी में गिरकर मरना जीवन का अंत नहीं प्रारंभ है।
लेकिन सोने के डिब्बे में ही बंद पड़े रहना
जीवन का वास्तविक अंत है।
उसमें कहीं भी जीवन की आशा नहीं है।

CamScanner

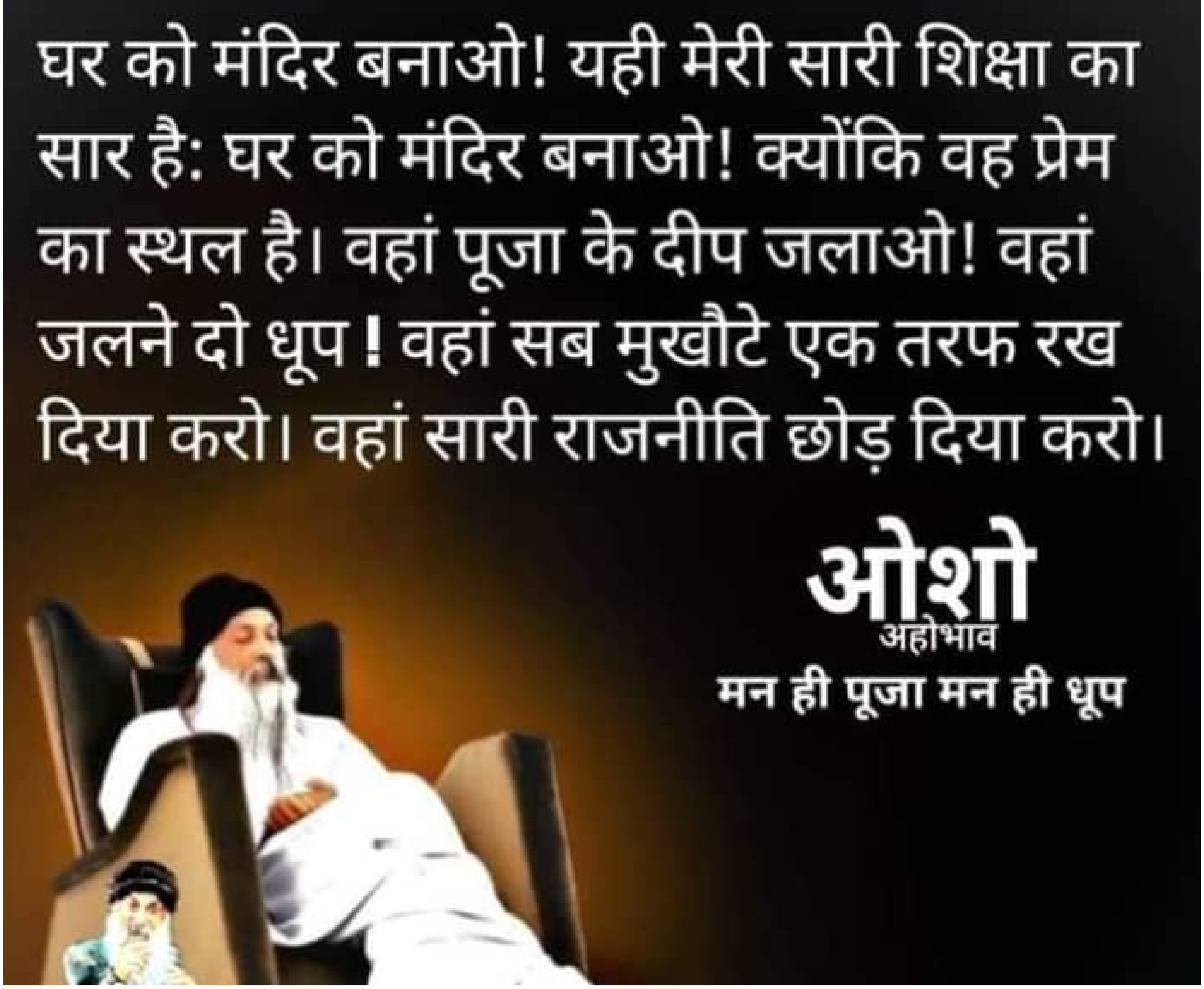
घर को मंदिर बनाओ! यही मेरी सारी शिक्षा का सार है: घर को मंदिर बनाओ! क्योंकि वह प्रेम का स्थल है। वहां पूजा के दीप जलाओ! वहां जलने दो धूप! वहां सब मुखौटे एक तरफ रख दिया करो। वहां सारी राजनीति छोड़ दिया करो।
ओशो
अहोभाव
मन ही पूजा मन ही धूप

CamScanner

CamScanner

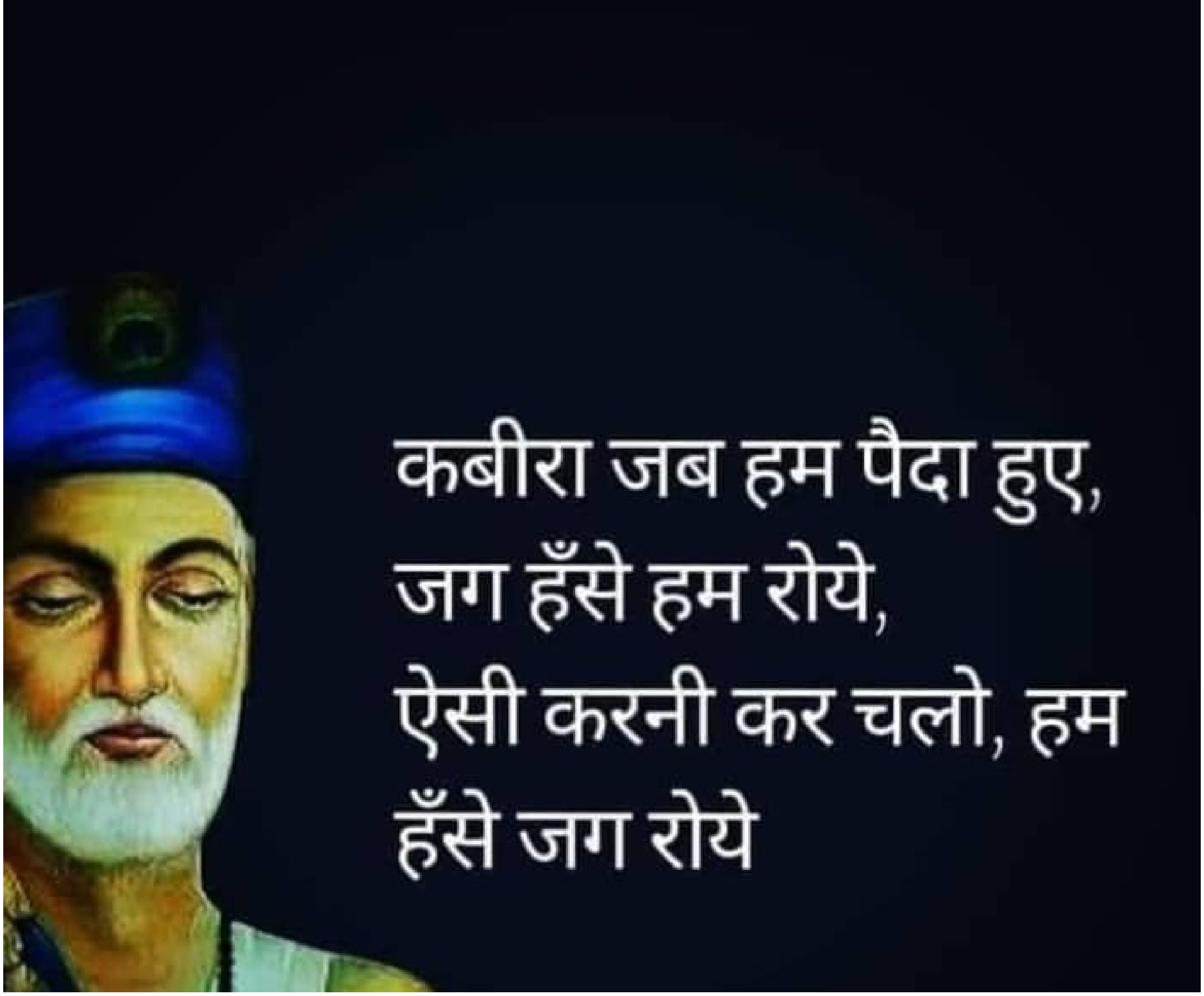

CamScanner

कोई पुरुष
किसी स्त्री को दासी नहीं बनाता।
दुनिया के किसी भी कोने में
जब भी कोई स्त्री
किसी पुरुष के प्रेम में पड़ती है,
तत्क्षण अपने को दासी
बना लेती है,
क्योंकि दासी होना ही
गहरी मालकियत है
वह जीवन का राज
समजती है।
- लाओत्से

CamScanner

CamScanner

CamScanner

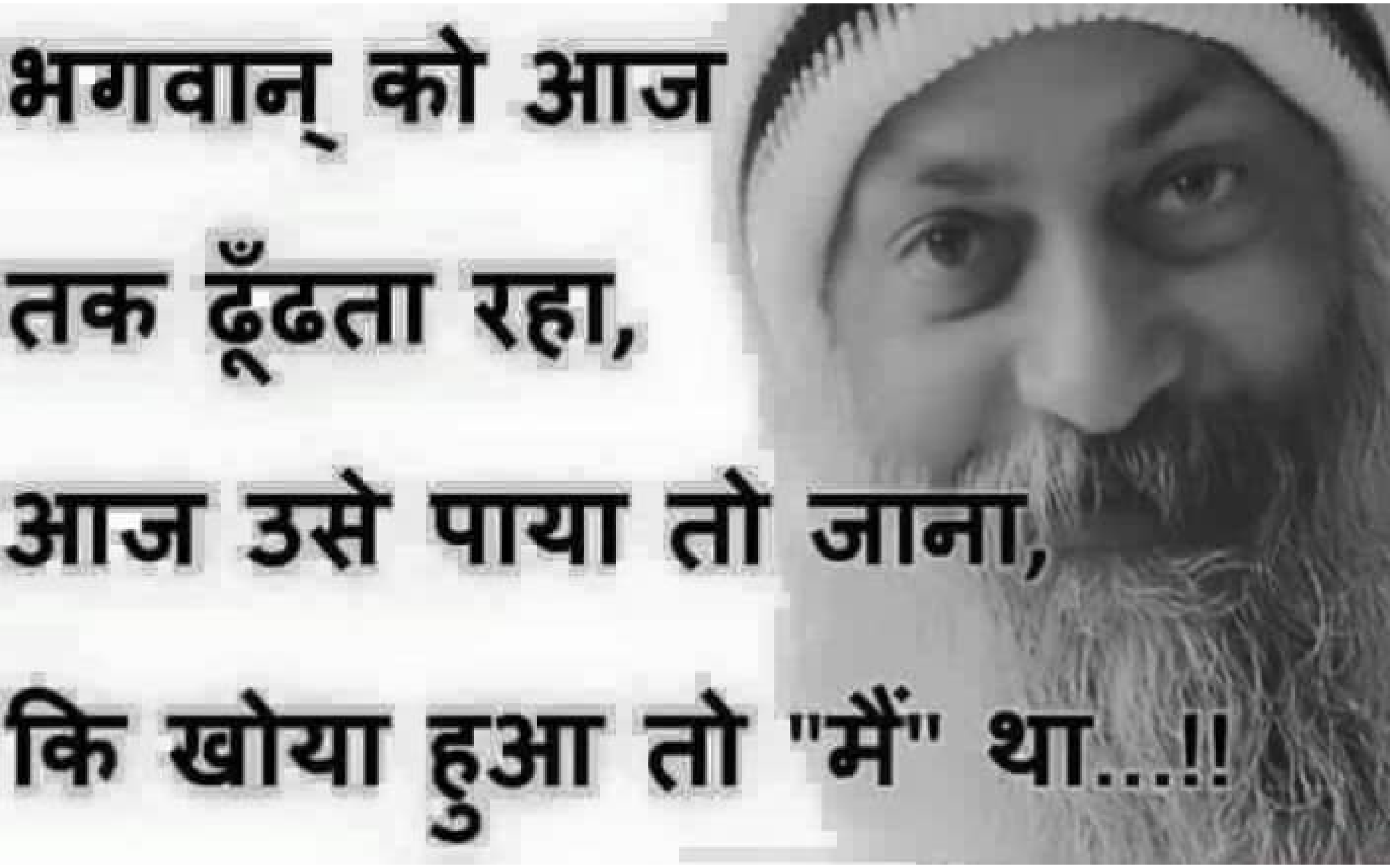

CamScanner

जिससे प्राण
तृप्त हो,
वही ध्यान
है | अपने
स्वभाव के
जो अनुकूल
हो वही
मार्ग है |

CamScanner

हम इतने वीचार
से भरे हैं !
की हम करीब करीब
अंधे हैं !
हमें कुछ दीखाई ही
नहीं पड़ता !
सीवाय वीचारो की
बीड़ के !

CS CamScanner

अगर दूसरा तुम्हे

सुख नहीं दे सकता,

तो दूसरा तुम्हे दुख

कैसे दे सकता है!

तुम ही ज़िम्मेवार हो!

CamScanner

जितनी बडी चुनौती

स्वीकार करोगे ,

उतना ही बडा

तुम्हारा नव जनम

हो जायेगा !

Shared by Anil Osho

CamScanner

संसार

माया नहीं !

मन

माया है !

Shared by Anil Osho

CamScanner

सत्य का अर्थ है !
जिसके चलने से मंज़िल
मिले !

असत्य का अर्थ है !
जिस में चलना तो
बहुत हो ,
मंज़िल बिलकुल
न मिले !

Shared by Anil Osho

CS CamScanner

CamScanner

मरते क्षण में न तो आप शास्त्र ले जा सकेंगे, न गुरु को साथ ले जा सकेंगे; न गुरु के वचन काम आएंगे; न आपने जो प्रभाव इकट्ठे किए हैं, वे काम आएंगे। मरते क्षण में, आपने क्या किया जीवनभर, वही बस आपके साथ होगा। मरते क्षण में आपके कृत्यों का सार—निचोड़ आपके साथ यात्रा पर निकलेगा। मरते क्षण में सिर्फ आप ही बचेंगे; और आपके अपने सारे कृत्यों का संग्रह, जो—जो आपने किया, उसकी सब लकीरें आपके ऊपर हैं।

तो निरंतर यह सोचें कि आपके जीवन की धारा कैसी चल रही है। वही पहचान है।

गीता दर्शन
भाग - 7,
अध्याय—15
OSHO

CamScanner

तुम्हें बर्बाद करने के बाद तुम्हारा मन तुमसे कहेगा
कि जो खुशी तुम जीवन भर चाहते रहे हो
वो मेरे पास है ही नहीं

CamScanner

फूंक मारकर हम दिए को
बुझा सकते हैं अगरबत्ती को नहीं !
जो महकता हैं उसे कौन बुझा सकता हैं ,
जो जलता हैं वह तो
स्वयं ही बुझ जाता हैं ।

CamScanner

तुम्हारे मंदिर मस्जिद ने न केवल परमात्मा को सिकोड़ कर छोटा कर दिया, तुम्हें सिकोड़ कर छोटा कर दिया। मंदिर जानेवाला हिंदू हो गया। मस्जिद जानेवाला मुसलमान हो गया। काश, हमने परमात्मा को ऐसा देखा होता अगर तुम प्रत्येक वस्तु में परमात्मा को देखते, तो कैसे हिंदू होते, कैसे मुसलमान होता। कैसे एक दूसरे की हत्याएं करते धर्म के नाम अधर्म फैला। मंदिरों मस्जिदों के नाम पर कितना खून बहा:ओशो

CamScanner

मोहब्बत में ज़बरदस्ती अच्छी नही होती,
जब आप का दिल चाहे तब मेरे हो जाना.

CamScanner

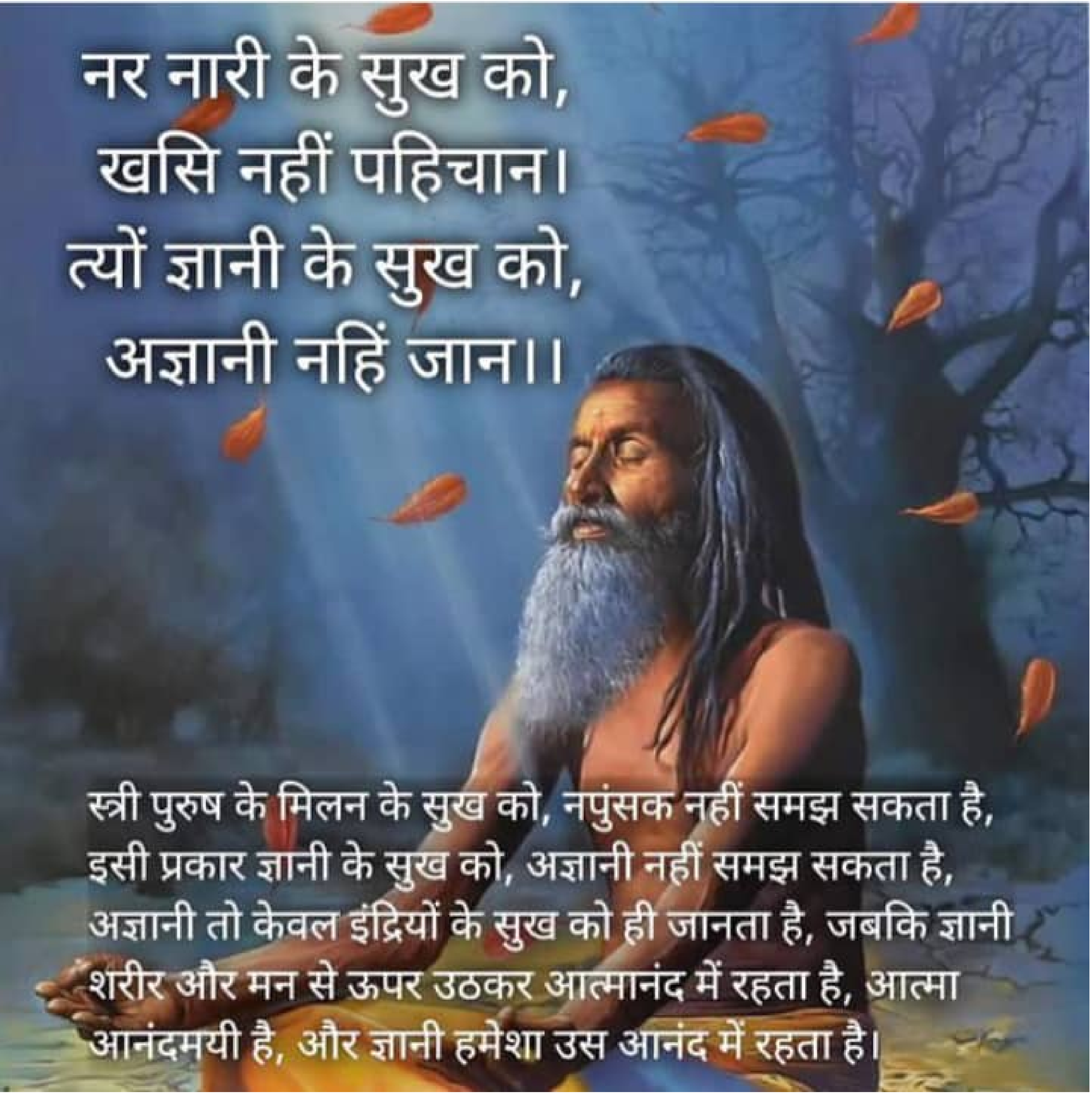
नर नारी के सुख को,
खसि नहीं पहिचान।
त्यों ज्ञानी के सुख को,
अज्ञानी नहिं जान।।
स्त्री पुरुष के मिलन के सुख को, नपुंसक नहीं समझ सकता है,
इसी प्रकार ज्ञानी के सुख को, अज्ञानी नहीं समझ सकता है,
अज्ञानी तो केवल इंद्रियों के सुख को ही जानता है, जबकि ज्ञानी
शरीर और मन से ऊपर उठकर आत्मानंद में रहता है, आत्मा
आनंदमयी है, और ज्ञानी हमेशा उस आनंद में रहता है।

CamScanner

महावीर कहते हैं, जो
आदमी! सूर्यास्त के पश्चात
"रात्रि का भोजन..
असत्य, हिंसा, चोरी और
मैथुन से विरत रहता है! वह
निर्दोष हो जाता है.!!

ओशो

CamScanner

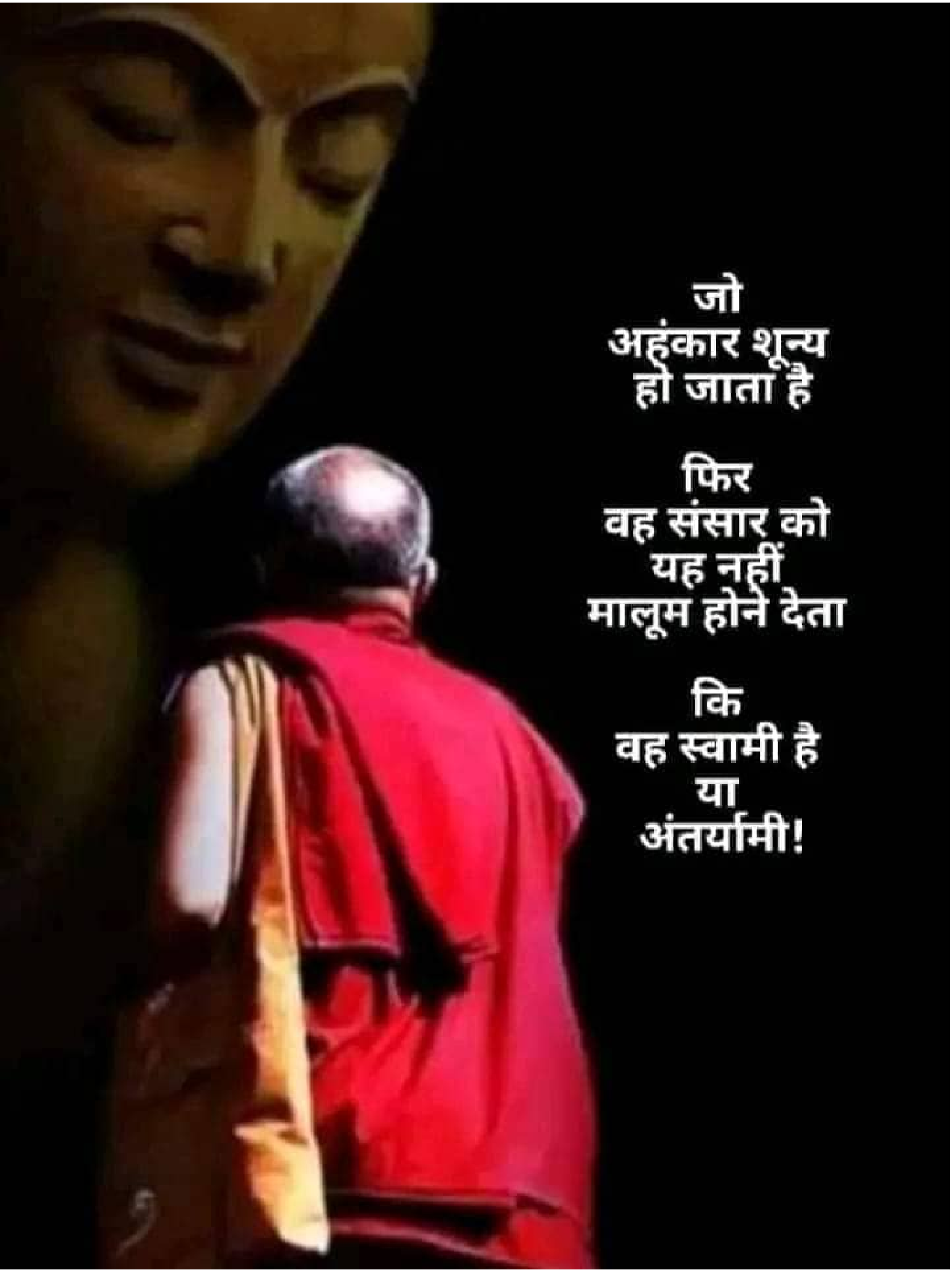

CS CamScanner

4:39 pm 0 KB/s VoLTE 4G 43%

अहोभाव

1d ·

अहोभाव

धर्म का सार है - दान
दान से अर्थ. धन का ही दान नहीं है, दान से अर्थ है :
जो है जिसके पास - दे, बांटे, रोके नहीं। ज्ञान है - तो ज्ञान दे। शक्ति है - तो शक्ति दे। गीत है - तो गीत बांटे। क्योंकि बांटने से ही आत्मा उपलब्ध होती है।

जो जितना रोकता है, उतना ही रुक जाता है। रोकने में रुक जाना है, देने में फैलाव है। जो जितना बांटता है, उतना फैलता चला जाता है। जो जितना बांटता है, उतना बड़ा हो जाता है। जो सब बांट देता है, जो भीतर शून्य हो जाता है, वही परमात्मा के निवास के योग्य हो जाता है। - एस धम्मो सनंतनो #109
ओशो

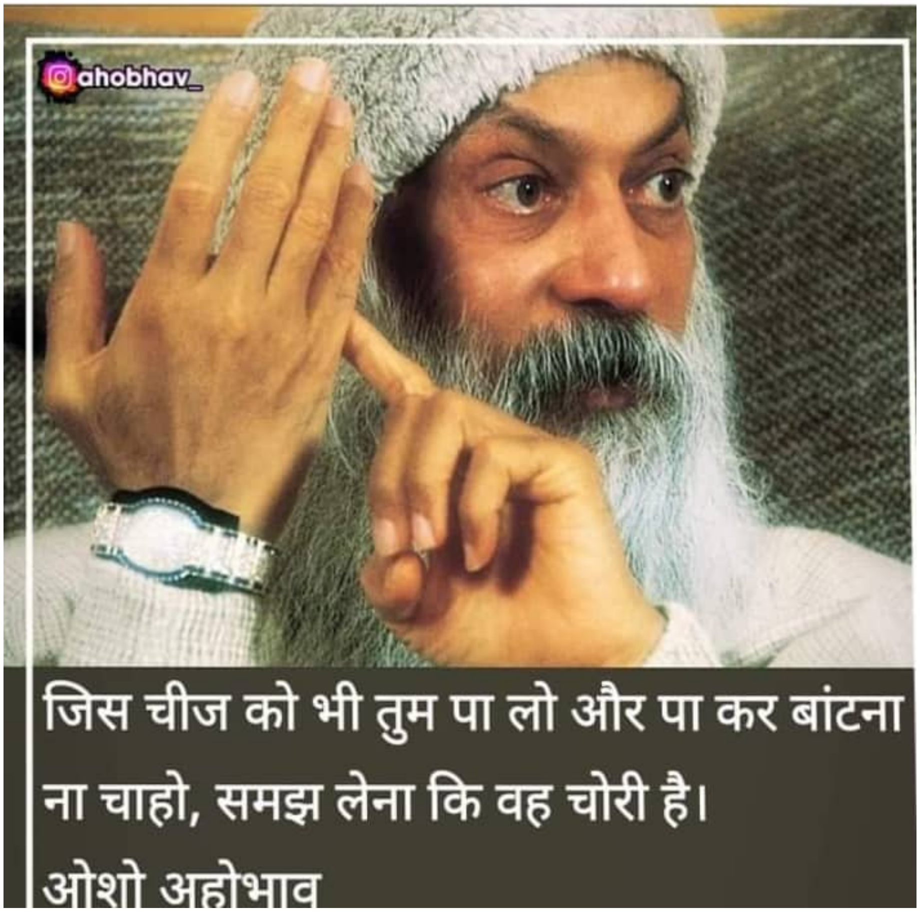

CamScanner

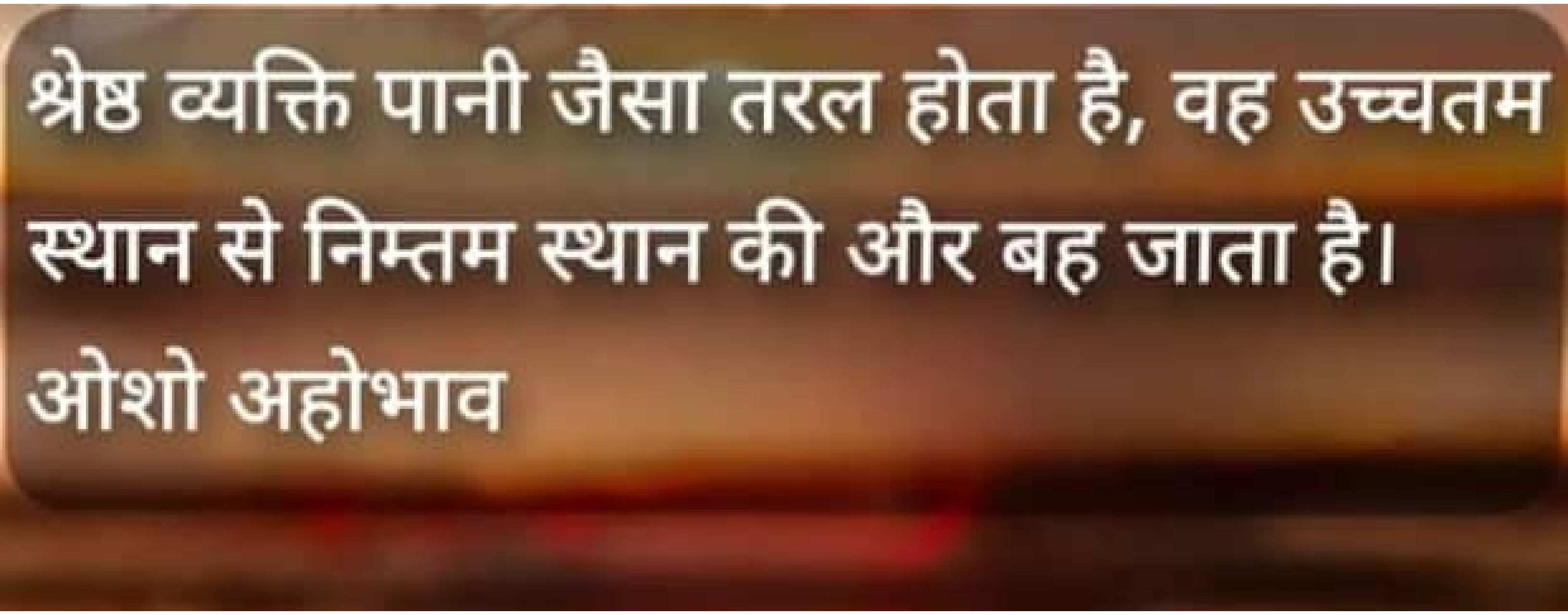
श्रेष्ठ व्यक्ति पानी जैसा तरल होता है, वह उच्चतम
स्थान से निम्तम स्थान की और बह जाता है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

शराब ही पीनी हो तो ऐसी पीनी चाहिए जो फिर उतरें नहीं, जो उतर उतर जाए वह भी क्या पीने योग्य है। ओशो अहोभाव

CamScanner

नथनी

एक बार कबीर दास जी हरि भजन करते एक गली से निकल रहे थे। उनके आगे कुछ स्त्रियों जा रही थीं। उनमें से एक स्त्री की शादी कहीं तय हुई होगी तो उसके ससुरालवालों ने शगुन में एक नथनी भेजी थी। वह लड़की अपनी सहेलियों को बार-बार नथनी के बारे में बता रही थी कि नथनी ऐसी है वैसी है। ये ख़ास उन्होंने मेरे लिए भेजी है। बार बार बस नथनी की ही बात।

Fb- Shrimad Bhagwatam Teachings

उनके पीछे चल रहे कबीर जी के कान में सारी बातें पड़ रही थीं। तेजी से कदम बढ़ते कबीर उनके पास से निकले और कहा

नथनी दीनी यार ने, तो चिंतन बारम्बार,
नाक दिनी करतार ने, उनको दिया बिसार।

सोचो यदि नाक ही ना होती तो नथनी कहां पहनती !

यही जीवन में हम भी करते हैं। भौतिक वस्तुओं का तो हमें ज्ञान रहता है परंतु जिस परमात्मा ने यह दुर्लभ मनुष्य देह दी और इस देह से संबंधित सारी वस्तुएं, सभी रिश्ते-नाते दिए, उसी को याद करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता।

CS CamScanner

ΒΔΚΓΔ
Retired Staff
Patvaari/Patvaaran

Retired Staff

Like
-Given: 220
-Receive: 239

Posts: 5909
Tohar: 58
Gender:

SARA SARA DIN...TERE BIN
« on: September 29, 2010, 11:05:50 AM »

lyrics in gurmukhi punjabi:

ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ, ਤੇਰੇ ਬਿਨ ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਗੁਜ਼ਰਦਾ
ਯਾਰਾ,
ਸਾਰੀ ਸਾਰੀ ਰਾਤ, ਪਾਵਾਂ ਬਾਤ, ਕੰਧਾਂ ਭਰਨ ਹੁੰਗਾਰਾ...
ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ, ਤੇਰੇ ਬਿਨ ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਗੁਜ਼ਰਦਾ
ਯਾਰਾ,
ਸਾਰੀ ਸਾਰੀ ਰਾਤ, ਪਾਵਾਂ ਬਾਤ, ਕੰਧਾਂ ਭਰਨ ਹੁੰਗਾਰਾ...
ਤੂੰ ਤੇ ਤੁਰ ਗਿਓ ਲਾ ਕੇ......
ਤੂੰ ਤੇ ਤੁਰ ਗਿਓ ਲਾ ਕੇ, ਉਮਰਾਂ ਦਾ ਲਾਰਾ,
ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਗੁਜ਼ਰਦਾ ਯਾਰਾ,
ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ, ਤੇਰੇ ਬਿਨ ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਗੁਜ਼ਰਦਾ
ਯਾਰਾ......

ਯਾਦਾਂ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ, ਨੇਰ ਪਾਉਂਦੀਆਂ ਨੇ,
ਤੇਰੇ ਤੋਂ ਬਗੈਰ, ਦਸ ਕਿੰਝ ਜੀਵਾਂ ਮੈਂ..
ਯਾਦਾਂ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ, ਨੇਰ ਪਾਉਂਦੀਆਂ ਨੇ,
ਤੇਰੇ ਤੋਂ ਬਗੈਰ, ਦਸ ਕਿੰਝ ਜੀਵਾਂ ਮੈਂ
ਤੇਰੀ ਯਾਦ ਚ ਰਵਾਂ ਮੈਂ ਗਿਣਦੀ....
ਤੇਰੀ ਯਾਦ ਚ ਰਵਾਂ ਮੈਂ ਗਿਣਦੀ, ਇਕ ਇਕ ਤਾਰਾ.
ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ, ਤੇਰੇ ਬਿਨ ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਗੁਜ਼ਰਦਾ
ਯਾਰਾ......

ਜੋ ਤੁਰ ਜਾਂਦੇ ਨੇ, ਮੁੜ ਨਾ ਆਉਂਦੇ ਨੇ,
ਪੈੜਾਂ ਦੇ ਨਿਸ਼ਾਨ ਪਿੱਛੇ ਛੱਡ ਜਾਂਦੇ ਨੇ...
ਜੋ ਤੁਰ ਜਾਂਦੇ ਨੇ, ਮੁੜ ਨਾ ਆਉਂਦੇ ਨੇ,
ਪੈੜਾਂ ਦੇ ਨਿਸ਼ਾਨ ਪਿੱਛੇ ਛੱਡ ਜਾਂਦੇ ਨੇ.....
ਛੇਤੀ-ਛੇਤੀ ਆਜਾ ਰੋਵੇ....
ਛੇਤੀ-ਛੇਤੀ ਆਜਾ ਰੋਵੇ, ਦਿਲ ਇਹ ਵਿਚਾਰਾ...
ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ, ਤੇਰੇ ਬਿਨ ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਗੁਜ਼ਰਦਾ
ਯਾਰਾ......

ਕੱਲੇ ਰਹਿ ਗਏ ਆਂ, ਅੱਕ ਕੇ ਬਹਿ ਗਏ ਆਂ..
ਕਾਗਜਾਂ ਤੇ ਲਿੱਖੇ, ਸਿਰਨਾਵੇਂ ਰਹਿ ਗਏ ਆ...
ਕੱਲੇ ਰਹਿ ਗਏ ਆਂ, ਅੱਕ ਕੇ ਬਹਿ ਗਏ ਆਂ..
ਕਾਗਜਾਂ ਤੇ ਲਿੱਖੇ, ਸਿਰਨਾਵੇਂ ਰਹਿ ਗਏ ਆ...
ਹਰਜੀਤ ਜੋ ਗਏ ਡੋਬ ਕੇ..
ਆਪਣੇ ਸੀ ਜੋ ਗਏ ਡੋਬ ਕੇ, ਲੱਭੇ ਨਾ ਕਿਨਾਰਾ...
ਸਾਰਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ, ਤੇਰੇ ਬਿਨ ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਗੁਜ਼ਰਦਾ
ਯਾਰਾ......

Logged

CamScanner

7:24 pm 0 KB/s VoLTE 4G 34%

Tere Bin

Sara sara din.tere bin.
Hun nai guzarda yaara
Sare sare raat.pava baat.
Khanda bharan hungara
Sara sara din.
Tere bin.
Hun nai guzarda yaara
Sare sare raat.pava baat.
Khanda bharan hungara tu teh sanu turgeyo lah keh...
Umara da laara hun nai guzaraa.
Sara sara din tere bin.hun nai guzarda yaaran
Yaadan aundeya ne...
Nehr paundeya ne.
Tere toh begair dass... kinj jeeva mein
Yaadan aundeya ne...
Nehr paundeya ne.
Tere toh begair dass... kinj jeeva mein
Tere yaad ch rahva mein gindi 2
Ek ek taraa.hun nai guzara.
Sara sara din.tere bin.hun nai guzarda yaaran
Joh turjande ne... murna aunde ne...
Paira de nishan... piche chaad jande ne joh turjande ne... murna aunde ne... paira de nishan... piche chaad jande ne cheti cheti ah ja roveeee.cheti cheti ah jaa rovee dil eh vichara.hun nai guzaraaaaaaaaa sara sara din.tere bin.hun nai guzarda yaaran. ...kaale reh gaye aaah... aakh keh beh gaye aaahhh. kagza teh likhe... sirnawe reh gaye... kaale reh gaye ah .akh keh beh gaye ahhh kagza teh likhe sirnawe reh gaye ah apne c joh gaye

CamScanner

जब तक मन आकार बना पाता है तब तक उससे
कोई मिलन नही होता जो निराकार है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

🟤रामपाल, संत लाख कहें संसार माया है, सौ में से निन्यानबे संत तो खुद ही माया में उलझे रहते हैं। लोग भी कुछ अंधे नहीं हैं। लोग भी देखते हैं कि महाराज हमें तो समझा रहे हैं कि संसार माया है और खुद? खुद माया में ही जी रहे हैं।

संसार माया है भी नहीं, संसार तो सत्य है। झूठी बात कहोगे, उसके परिणाम कैसे होंगे? झूठी बात में कहीं सत्य की सुगंध उठ सकती है? सदियों से संत दोहरा रहे हैं कि संसार माया है। दोहराते रहो। लोग भी दोहराना सीख गए हैं, वे भी दोहराते हैं कि संसार माया है। मगर यह दोहराने की बात एक, जीने की बात और; कहने की बात एक, होने की बात और। दिखाने के दांत और, खाने के दांत और।

कैसे मानते हो कि संसार माया है? संसार माया नहीं है, संसार वास्तविक है। वास्तविक परमात्मा से वास्तविक संसार ही पैदा हो सकता है। वास्तविक से अवास्तविक कैसे पैदा होगा, थोड़ा सोचो तो! अगर ब्रह्म सत्य है तो जगत मिथ्या कैसे हो सकता है? क्योंकि ब्रह्म का ही तो अवतरण है जगत, उसी की तो तरंगें हैं। उसी ने तो रूप धरा, उसी ने तो रंग लिया। वही निर्गुण तो सगुण बना। वही तो निराकार आकार में उतरा। उसने देह धरी। अगर परमात्मा ही असत्य हो तो संसार असत्य हो सकता है।

लेकिन न परमात्मा असत्य है न संसार असत्य है; दोनों सत्य के दो पहलू हैं—एक दृश्य, एक अदृश्य। माया फिर क्या है? मन माया है। मुझसे पूछो तो मैं संसार को माया नहीं कहता, मन को माया कहता हूं। मन है एक झूठ, क्योंकि मन है जाल— वासनाओं का, कामनाओं का, कल्पनाओं का, स्मृतियों का। मन माया है।

काश, हमने लोगो को समझाया होता कि संसार माया नहीं, मन माया है, तो यह दुनिया आज कुछ और होती! इस दुनिया का सौंदर्य कुछ और होता! इस दुनिया का उल्लास कुछ और होता! इस दुनिया में धार्मिकता होती!

संसार माया है, तो लोग संसार को छोड़ कर भागने लगे। संसार को छोड़ कर कहां जाओगे? जहां जाओगे वहीं संसार है।

ओशो🙏

CamScanner

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है।
पुनः-पुनः स्मरण रखना!
परमात्मा केवल आनंद की अनुभूति का नाम है।
अमृत का साक्षात्कार है।
चैतन्य की प्रतीति है।
परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है।
परमात्मा केवल शक्ति है, ऊर्जा है।
और ऊर्जा का ही तो सारा खेल है।

कहीं वही शक्ति हरी होकर वृक्ष हो गयी है, लाल होकर फूल हो गयी है, कहीं वही शक्ति सूरज बनी है, कहीं वही शक्ति तारे;
वही शक्ति तुम्हारे भीतर सुन रही है अभी,
वही शक्ति मेरे भीतर बोल रही है अभी।
नहीं उससे कुछ भिन्न है! हम सब उसमें एक हैं, अभिन्न हैं।

CS CamScanner

शिव के साथ एक शब्द जुड़ता है। शिव शंभू। शंभू का ओरिजिनल शब्द है स्वयंभू। अर्थात जो स्वयं प्रकट हुआ है। उसको उत्पन्न करने वाला कोई मात-पिता नहीं है। वे गर्भ से जन्म नही लेते। जन्म मृत्यु, पाप पुण्य से परे हैं। वह अवतरित होते हैं और हम आत्माओं के द्वारा सृष्टि परिवर्तन का कार्य कराते हैं।

MJ

CamScanner

CamScanner

… Once you are empty, spacious, silent, clean, the revolution has happened, the sun has risen; then you live in its light. And to live in the light of your inner sun is to live rightly. In fact, that is the only way to live.

OSHO

OSHONISARGA.COM

CamScanner

Ganesh Visarjan

The lord neither arrives nor leaves

He has existed before time
and will exist beyond

Ganeshotsav is symbolic of our life

We arrive, we celebrate,
we merge into the elements

CS CamScanner

9:47 am 0 KB/s
VoLTE 4G 91%
facebook

हमने शंकर की प्रतिमा को,
शिव की प्रतिमा को अर्धनारीश्वर बनाया है।
शंकर की आधी प्रतिमा पुरुष की और
आधी स्त्री की--यह अनूठी घटना है।
और जो लोग भी
जीवन के परम रहस्य में जाना चाहते हैं,
उन्हें शिव के व्यक्तित्व को ठीक से
समझना ही पड़ेगा।
और सब देवताओं को हमने देवता कहा है,
शिव को महादेव कहा है।
उनसे ऊंचाई पर हमने किसी को रखा नहीं।
उसके कुछ कारण हैं।
क्योंकि उनकी कल्पना में
हमने सारा जीवन का सार और कुंजियां छिपा दी हैं।
अर्धनारीश्वर का अर्थ
यह हुआ कि जिस दिन परमसंभोग घटना शुरू होता है,
आपका ही
आधा व्यक्तित्व
आपकी पत्नी और
आपका ही आधा व्यक्तित्व
आपका पति हो जाता है।
आपकी ही आधी ऊर्जा
स्त्रैण और
आधी पुरुष हो जाती है।
है ही वैसा।
और इन दोनों के भीतर जो रस और
जो लीनता पैदा होती है,
फिर शक्ति का कहीं कोई विसर्जन नहीं होता।

आचार्य श्री रजनीश
नही राम बिन ठांव -(प्रश्नोत्तर)-प्रवचन-12
दिनांक 5 जून सन 1974

CamScanner

TO MY SANNYASINS THIS IS MY MESSAGE:

IF YOU WANT A SILENT ISOLATED PLACE, A TEMPLE OR A CHURCH OR A MOSQUE, THEN WHICHEVER IS CLOSE BY, ENTER THERE. ALL TEMPLES AND ALL CHURCHES AND ALL MOSQUES ARE YOURS. CLAIM THAT "WHICHEVER PLACE IS DEDICATED TO GOD IS OURS."

I GIVE YOU ALL THE TEMPLES OF THE WORLD AS YOURS AND ALL THE SCRIPTURES OF THE WORLD AS YOURS.

OSHO

Osho Moulshree Commune

A Place for Individual Revolution

CamScanner

Raj Malhotra
पुरूष को स्वयं की कठोरता में,उसका पुरुषत्व
दिखा,
स्त्री को प्रेम हुआ पुरुष के,जरा सा कोमल होने से!

CamScanner

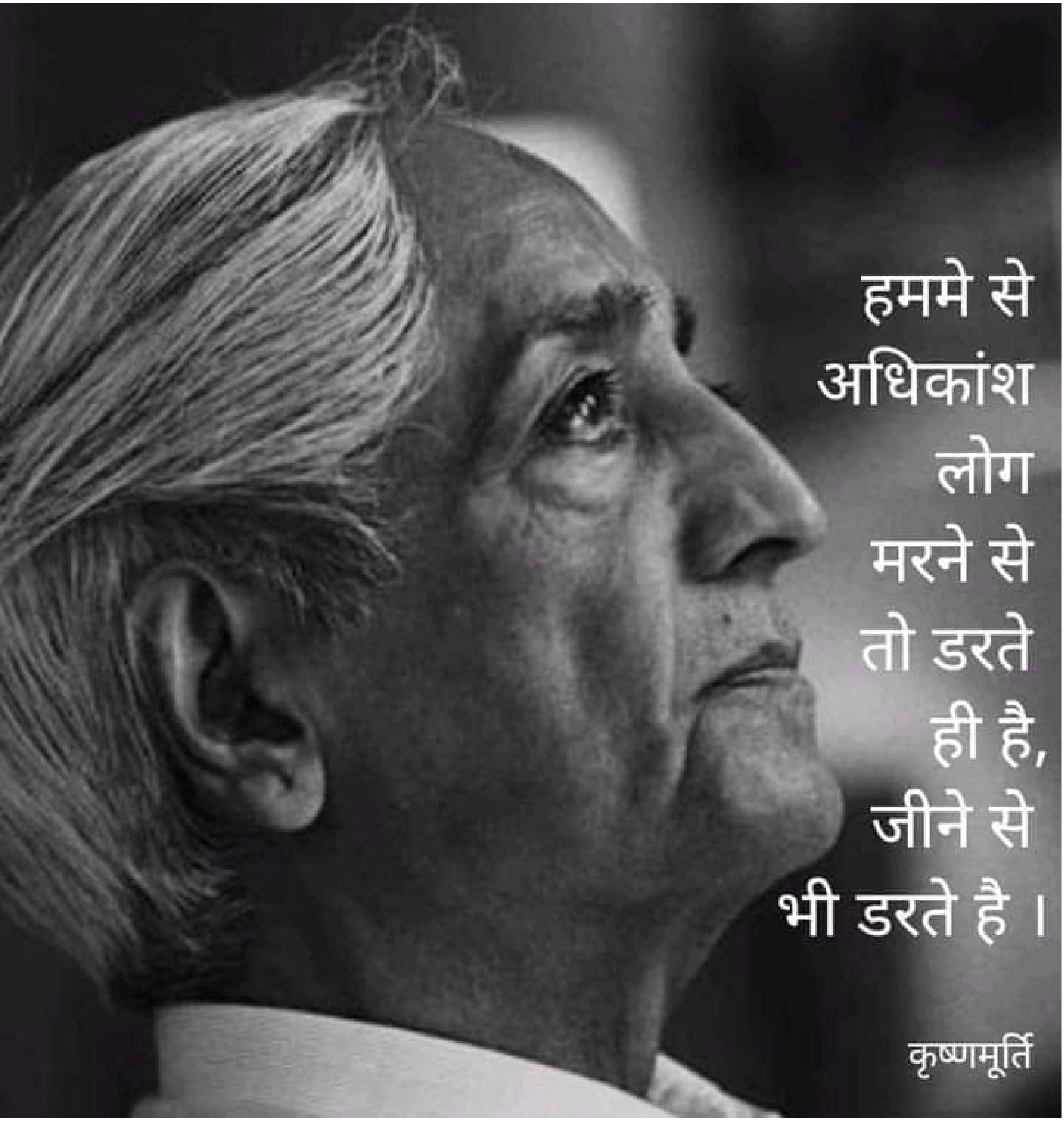

CamScanner

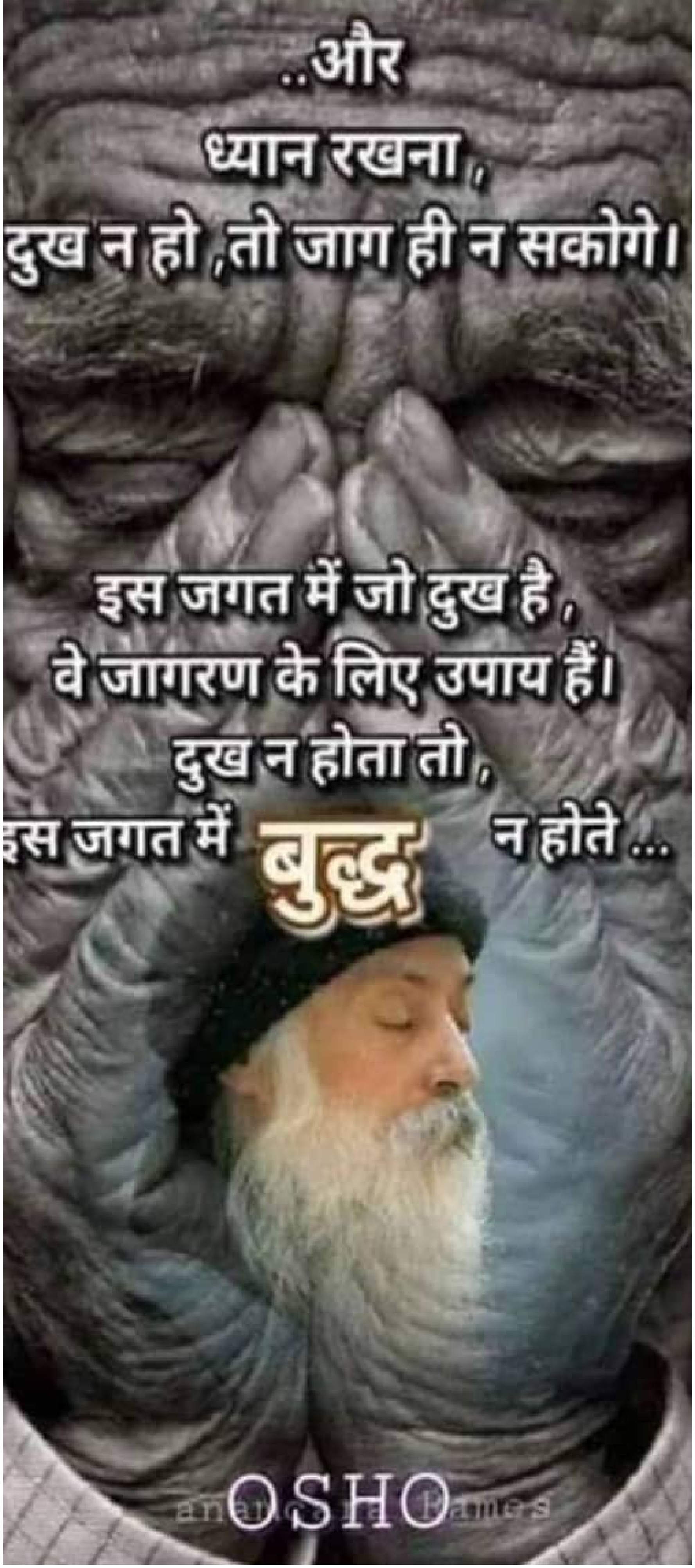
..और
ध्यान रखना ,
दुख न हो ,तो जाग ही न सकोगे।
इस जगत में जो दुख है ,
वे जागरण के लिए उपाय हैं।
दुख न होता तो ,
इस जगत में बुद्ध न होते ...
OSHO

CamScanner

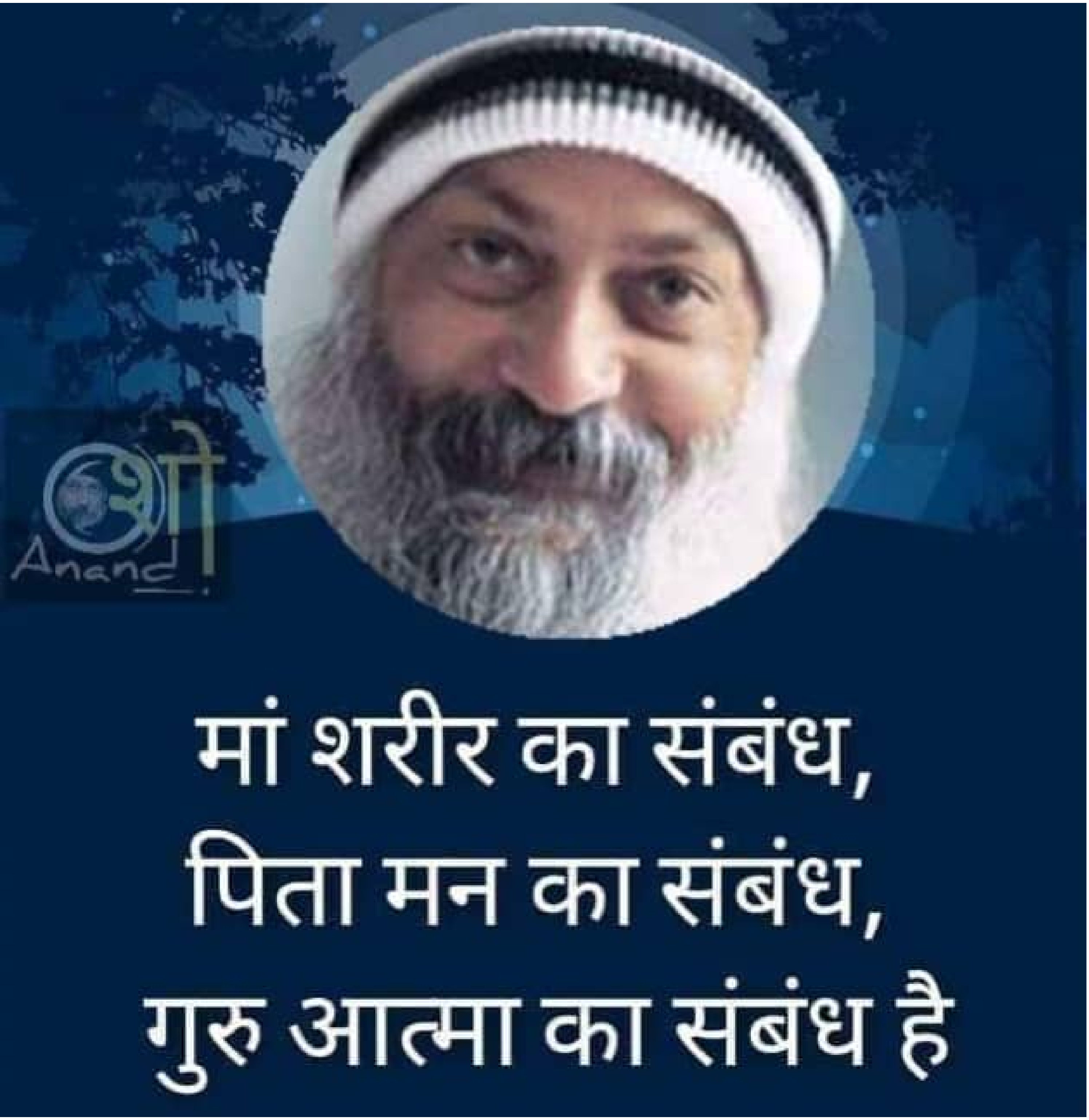

CamScanner

महात्मा गांधी ने लिखा है:
और किसी से मत डरो, मगर ईश्वर से जरूर डरना।
और मैं तुमसे कहता हूं: और किसी से डरो तो डरो,
ईश्वर से कभी मत डरना।
क्योंकि ईश्वर से अगर डरे तो संबंध ही न हो सकेगा।
उससे तो प्रेम करना।
और प्रेम में कोई डरता है?
प्रेम कहीं डरता है? प्रेम अभय है।
प्रेम से जोड़ो नाता। भय से नाते जुड़ते नहीं।
और जिससे तुम भयभीत होते हो,
तुम्हारे मन में उसके प्रति विरोध होता है,
प्रेम नहीं होता।

ओशो-दर्शन समूह

☆ अमी झरत बिगसत कंवल, ओशो ☆

CamScanner

ओशो-Life with Osho:

आनंद में कही गई प्रार्थना ही सुनी जाती है, क्योंकि आनंद परमात्मा का स्वर है, वह परमात्मा की भाषा है। दुख तुम्हारी भाषा है। परमात्मा उस भाषा को समझता ही नहीं। दुख तुमने अपना पैदा किया है। परमात्मा ने तो तुम्हें भी फूल की तरह नाचने और गाने को ही पैदा किया है। दुख तुम्हारी कृति है, वह तुम्हारा कर्म है। वह तुम्हारी संभावना नहीं है, संभावना तो तुम्हारे आनंद की है। दुख की भाषा परमात्मा को समझ ही नहीं आती। इसलिए जीसस ने कहा है, जो छोटे बच्चों की भांति होंगे, वे मेरे प्रभु के राज्य में प्रवेश पा सकेंगे। छोटे बच्चों की भांति नाचते, कूदते, प्रफुल्लित!

सुन भाई साधो -19

CamScanner

9:39 am 0 KB/s 92%

अहोभाव

7h ·

अहोभाव

प्रेम अकेला तत्व है, जो अहंकार को तोड़ता है और मिटाता है। प्रेम अकेला रसायन है, जिसमें अहंकार गलता है और पिघलता है और बह जाता है। जो लोग प्रेम से वंचित अपने को कर लेंगे, वे सिर्फ ईगोइस्ट हो सकते हैं, सिर्फ अहंकारी हो सकते हैं और कुछ भी नहीं। उनके पास अहंकार को गलाने और तोड़ने का कोई उपाय न रहा, कोई मार्ग न रहा।

प्रेम स्वयं के बाहर ले जाता है। प्रेम अकेला द्वार है, जिससे हम अपने बाहर निकलते हैं और अनंत की यात्रा पर चरण रखते हैं। प्रेम जो अनन्य है, जो जगत है, जो जीवन है, उससे जोड़ता है।

लेकिन जो प्रेम की यात्रा बंद कर देते हैं, वे टूटकर सिर्फ अपने "मैं में, अपने अहंकार में, अपने ईगो में कैद हो जाते हैं, बंद हो जाते हैं। एक तरफ विफल प्रेमी हैं, दूसरी तरफ अहंकार से भरे हुए साधु और संन्यासी हैं! अहंकार इस बात की स्वीकृति है जैसा मैंने कहा। प्रेम इस बात की खोज है कि मैं सबके साथ एकता खोज लूं, समष्टि के साथ एक हो जाऊं।

ओशो

CamScanner

शिव जैसा ध्यानी नहीं है (-ओशो-)

ध्यानी हो तो शिव जैसा हो। क्या अर्थ है ? ध्यान का अर्थ होता है : न विचार... वासना... न स्मृति... न कल्पना ? ध्यान का अर्थ होता है : भीतर सिर्फ होना मात्र। इसीलिए शिव को मृत्यु का, विध्वंस का, विनाश का देवता कहा है। क्योंकि ध्यान विध्वंस है-विध्वंस है मन का। मन ही संसार है। मन ही सृजन है। मन ही सृष्टि है। मन गया कि प्रलय हो गयी। ऐसा मत सोचो कि किसी दिन प्रलय होती है। ऐसा मत सोचो कि एक दिन आयेगा जब प्रलय हो जायेगी और सब विध्वंस हो जायेगा। नहीं, जो भी ध्यान में उतरता है, उसकी प्रलय हो जाती है। जो भी ध्यान में उतरता है, उसके भीतर शिव का पदार्पण हो जाता है। ध्यान है मृत्यु- मन की मृत्यु, 'मैं' की मृत्यु, विचार का अंत। शुद्ध चैतन्य रह जाये- दर्पण जैसा खाली ! कोई प्रतिबिम्ब न बने....!!*

CamScanner

9:34 am 93%
facebook

जिस दिन तुम खिलोगे तो मेरे जैसी तुम्हारी सुवास नहीं होगी, तुम्हारी सुवास तुम्हारे जैसी होगी। होना भी यही चाहिए। पता नहीं तुम चंपा के फूल हो; पता नहीं तुम चमेली के फूल हो; पता नहीं तुम कमल हो। पता नहीं तुम कौन हो। क्योंकि जब तक तुम्हारा बीज नहीं टूटा है, पता भी कैसे हो सकता है। बीज से तो पहचानना मुश्किल है। अनंत बीज हैं, और हर बीज का अपना ही फूल है। और वह एक ही बार खिलता है। फिर दोबारा इस पृथ्वी पर वह नहीं खिलेगा। इसलिए इस पृथ्वी को तुम उसकी सुगंध से वंचित मत करना। नकलची मत बन जाना।

दो शब्द हैं हमारे पास: अनुकरण और अनुसरण। अनुसरण तो करना गुरु का, अनुकरण मत करना। अनुसरण का मतलब है: गुरु की प्रज्ञा, गुरु का बोध, गुरु की समझ को आत्मसात करना। अनुकरण का अर्थ है: जैसा गुरु है, वैसा होने की कोशिश करना। शिष्य सीखता है; सीखता है अपनी ही नियति को पाने के लिए। सदगुरु तुम्हें अपने ढंग में नहीं ढालना चाहता, और सदशिष्य कभी किसी के ढंग में ढलना नहीं चाहता। ढंग तो तुम्हारा हो।
ओशो

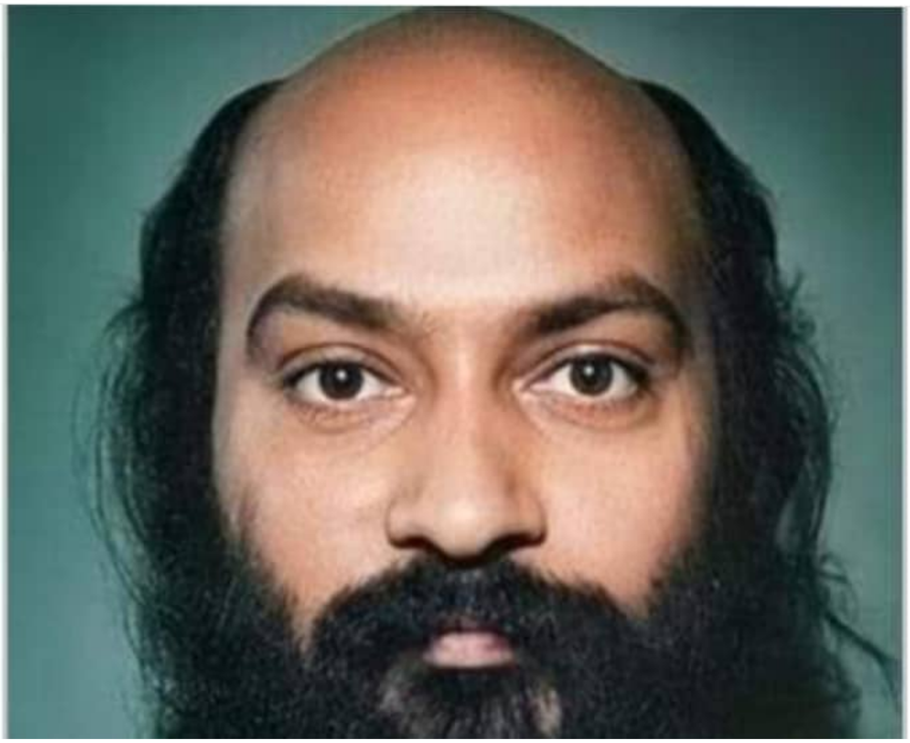

CamScanner

9:34 am 0 KB/s VoLTE 4G 93%

खलील जिब्रान ने कहा है कि तुम प्रेम तो करना, लेकिन प्रेमपात्र से एक मत हो जाना। तुम प्रेम तो करना, लेकिन मंदिर के स्तंभों की भांति, जो दूर खड़े रहते हैं और एक ही छप्पर को सम्हालते हैं। स्तंभ करीब आ जाएं, छप्पर गिर जाएगा। फासला रखना।

गुरु के इतने पास होना, इतने पास होना जितने हो सको, फिर भी एक फासला रखना। अगर तुम अपनी आत्मा में थिर रहे तब तो फासला रहेगा। एक मंदिर तो बनेगा; तुम गुरु के साथ उस मंदिर को उठाने में एक स्तंभ हो जाओगे। लेकिन स्तंभ दूर-दूर होते हैं। एक ही छप्पर को सम्हालते हैं, लेकिन उनका स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है।

जो गुरु शिष्य के व्यक्तित्व को मार दे, वह गुरु नहीं है। जो गुरु शिष्य के व्यक्तित्व को निखार दे, इतना निखार दे कि अब शिष्य अपने होने से तृप्त हो जाए, संतुष्ट हो जाए, वही गुरु है।

मुझे देख कर तुम्हारे मन में अभीप्सा उठे ऊंचाइयां छूने की, ठीक है। लेकिन मेरी जैसी ऊंचाइयां नहीं; तुम्हारी जैसी ही ऊंचाइयां। मुझे देख कर तुम्हें अभीप्सा उठे परमात्मा को पाने की, लेकिन वह प्यास तुम्हारी हो। वह प्यास को तुम मेरे शब्दों में मत बांधना। तुम्हारा संगीत तुमसे उठेगा। मेरे संगीत को देख कर तुम्हें अपने संगीत की याद आ जाए, बस काफी है। तुम भी खिलोगे, लेकिन तुमसे जो सुवास निकलेगी वह तुम्हारे ही फूल की होगी, वह मेरी नहीं होगी। मेरी सुवास से तुम्हें अपनी सुवास का भूला हुआ स्मरण आ जाए, विस्मृति हो गई है जिसकी उसकी स्मृति आ जाए, बस इतना काफी है।

जिस दिन तुम खिलोगे तो मेरे जैसी तुम्हारी सुवास नहीं होगी, तुम्हारी सुवास तुम्हारे जैसी होगी। होना भी यही चाहिए। पता नहीं तुम चंपा के फूल हो; पता नहीं तुम चमेली के फूल हो; पता नहीं तुम कमल हो। पता नहीं तुम कौन हो। क्योंकि जब तक तुम्हारा बीज नहीं टूटा है, पता भी कैसे हो सकता है। बीज से तो पहचानना मुश्किल है। अनंत बीज हैं, और हर बीज का अपना ही फूल है। और वह एक ही बार खिलता है। फिर दोबारा इस पृथ्वी पर वह नहीं खिलेगा। इसलिए इस पृथ्वी को तुम उसकी सुगंध से वंचित मत करना। नकलची मत बन जाना।

CamScanner

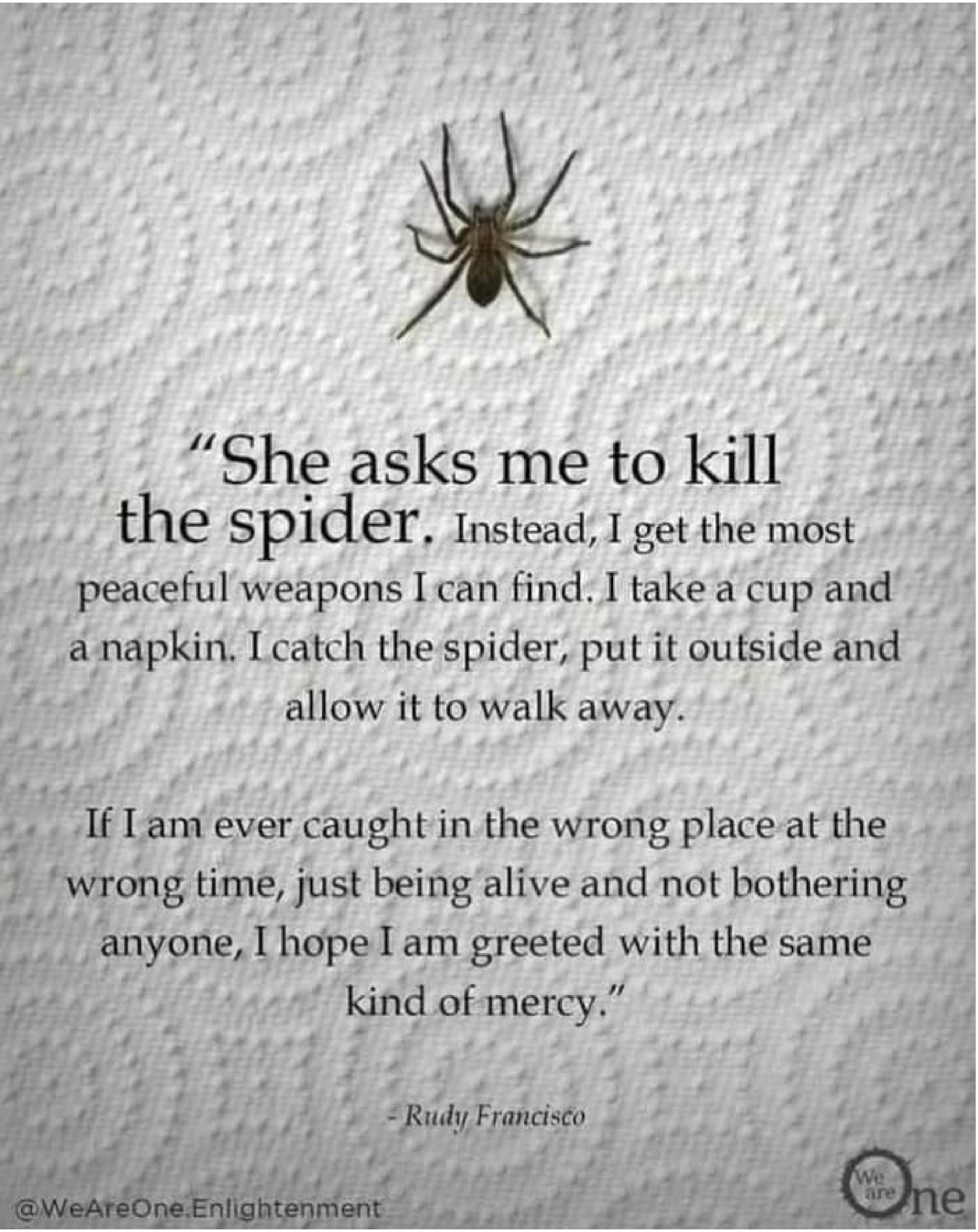
"She asks me to kill the spider. Instead, I get the most peaceful weapons I can find. I take a cup and a napkin. I catch the spider, put it outside and allow it to walk away.
If I am ever caught in the wrong place at the wrong time, just being alive and not bothering anyone, I hope I am greeted with the same kind of mercy."
- Rudy Francisco
@WeAreOne.Enlightenment
We are One

CamScanner

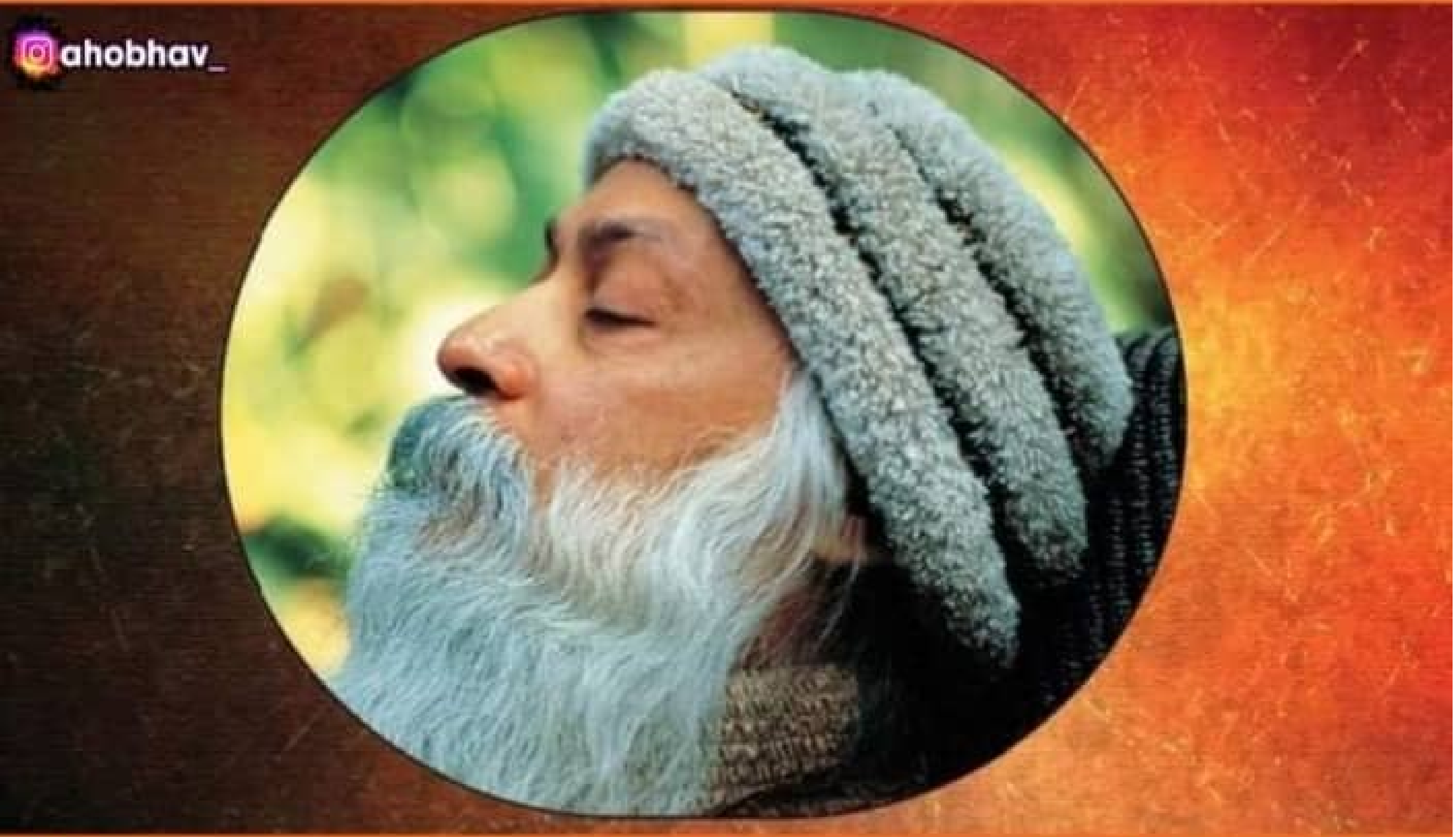

संकल्प कलह का सूत्र है, जितना ज्यादा संकल्प होगा उतनी ही ज्यादा कलह होगी।

ओशो अहोभाव

CamScanner

9:31 am 0 KB/s 4G 93%

उपनिषद कहते हैं कि परमात्मा स्रोतहीन प्रकाश है। वह सूरज या ज्योतिशिखा की भाति नहीं है; उसका कहीं भी कोई स्रोत नहीं है, केवल प्रकाश है, रोशनी है—मानो वह ऊषाकाल है जब कि रात तो चली गई और सूर्य उदित नहीं हुआ है। दोनों के बीच जो ऊषाकाल है, यह वह है। या यह संध्या की गोधूलि है, जब सूर्य डूब गया है और रात अभी आई नहीं है। इसलिए उसे संध्या भी कहते हैं—दिन और रात की संधि—वेला।

और यही कारण है कि हिंदुओं ने ध्यान के लिए संध्या को उचित समय माना है। वे ध्यान को संध्या ही कहने लगे फिर। वह ठीक मध्य—वेला है; जब दिन जा चुका है और रात आने को होती है। क्यों? यह महज प्रतीक है। प्रकाश तो है, लेकिन स्रोतहीन। वही बात अंतस से घटित होगी—स्रोतहीन प्रकाश घटित होगा। उसकी कल्पना मत करो, उसकी प्रतीक्षा करो।

और आखिरी बात याद रखने की यही है उसकी कल्पना मत करो। तुम कुछ भी कल्पना कर सकते हो। इस लिए तुम्हें बहुत सी बातें बताना खतरनाक है, तुम उनकी कल्पना करने लगोगे। तुम आंखें बंद कर लोगे और कल्पना में देख लोगे कि तीसरी आंख खुल रही है। कल्पना से तुम प्रकाश भी देख लोगे। लेकिन यह कल्पना मत करो। कल्पना से बचो। आंखें बंद करो और प्रतीक्षा करो। जो भी आए, उसे अनुभव करो, उसके साथ सहयोग करो। लेकिन प्रतीक्षा करो। आगे की छलांग मत लो; अन्यथा कुछ भी नहीं होगा। तुम्हारे हाथ एक सपना आ सकता है-सुंदर आध्यात्मिक सपना-और कुछ नहीं।

लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि हमने यह देखा और हमने वह देखा। लेकिन यह सब उनकी कल्पना है। यदि यह देखना सच होता तो वे रूपांतरित हो गए होते। मगर वे रूपांतरित नहीं हुए हैं। वे वही के वही लोग हैं; लेकिन एक नया आध्यात्मिक दंभ उनसे जुड़ गया है। उन्होंने कुछ सपने देख लिए हैं-सुंदर आध्यात्मिक सपने। किसी ने बांसुरी बजाते कृष्ण को देखा है; कोई प्रकाश देख रहा है; किसी की कुंडलिनी जाग रही है। ये चीजें वे देखते रहते हैं और वही के वही बने रहते हैं-मंदमति और मूढ़। कुछ भी उन्हें नहीं हुआ है। और वे वही के वही बने रहते हैं-क्रोधी, दुखी, बचकाने और मूढ़। कुछ भी उनका नहीं बदला है।

CamScanner

CamScanner

9:29 am 0 KB/s VoLTE 4G 93%

See all >

अहोभाव
7h ·

अहोभाव

प्रार्थना

वृक्ष खड़े हैं चुपचाप; यह इनकी प्रार्थना है। पक्षी गाते हैं, वह उनकी प्रार्थना है। आकाश में बादल भटकते हैं;
वह उनकी प्रार्थना है। सागर की तरफ दौड़ती हुई नदियां प्रार्थनारत हैं। यह सारा अस्तित्व प्रार्थना में लीन है। आयोजन तो कहीं भी प्रार्थना का नहीं हो रहा; प्रार्थना तो चल ही रही है--इन वृक्षों के सन्नाटे में, इन बूंदों की टपटप में। सारा अस्तित्व प्रार्थना में लीन हैं। सारा अस्तित्व प्रार्थना में डूबा ही हुआ है- अहर्निश, दिन और रात, प्रतिपल प्रार्थना चल रही है। परमात्मा में हैं हम तो प्रार्थना के बाहर कैसे हो सकते हैं? जो तुम्हें कुछ कहने का भाव आ जाये,कह देना; लेकिन कहने से प्रार्थना का कोई संबंध नहीं है, अनकही भी पूरी हो जाती है। हां, कहने का भाव आ जाये तो दबाना मत, रोकना मत; पीछे चाहे क्षमा मांग लेना परमात्मा से...

प्रार्थना...

एक मस्ती है.....

एक जुनून है...

ओशो

CamScanner

जिस दिन व्यक्ति अपने भीतर की गहन शांति में थिर हो जाता है उस दिन जगत एक अभिनय है। इसलिए हमने इसे लीला कहा है। उस दिन वह सब करता है- वह बाजार जाता, वह दुकान चलाता, वह पत्नी को सम्हालता, बच्चों को सम्हालता- वह सब करता है, और फिर भी अकर्ता बना रहता है। यही सिद्ध की दशा है। लेकिन उससे पहले तुम्हें साधक होने से गुजरना पड़ेगा•••••• *ओशो *

●ताओ उपनिषद, से। {संकलनः स्वामी देवगीत}

CamScanner

ओशो

हंसा तो मोती चुगे

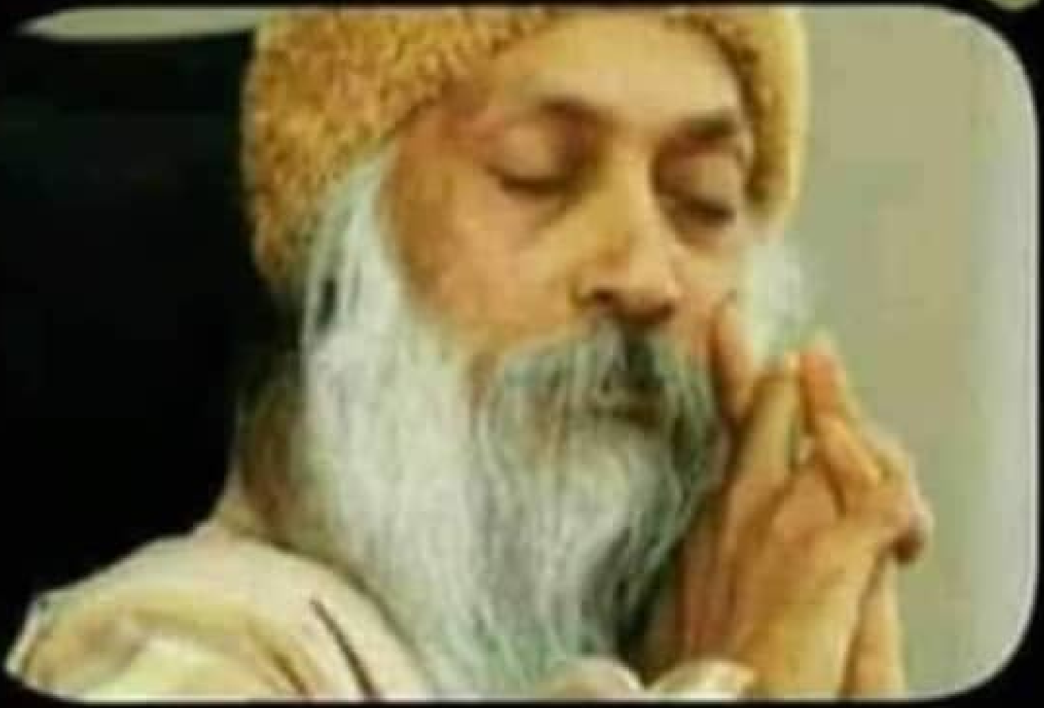

यह देह मिट्टी की है , इसलिए हमें स्मरण भी नही जाता | सोने को होती , तो तुम शायद भीतर टटोलते कि जब देह सोने की है तो भीतर पता नही और खजाने पड़े हों | देह तो मिट्टी की है , तो तुम भीतर जाते नहीं और बाहर ही बाहर तलाश करते रहते हो | और बाहर मिलेगा नही , क्यों कि जो है वह भीतर है | खुब गहरे में दबाया है | उतनी गहरी खुदाई अपने भीतर करनी होगी | उस खुदाई का नाम ही ध्यान है |

CamScanner

ज्ञान प्रकाशी गुरु मिला, सो जनि बीसरि जाय।

जब गोविंद कृपा करी, तब गुरु मिलिया आय ||

अर्थ :

- ज्ञान का प्रकाश करने वाले गुरु मुझे मिल गये हैं,

जिनके द्वारा मेरे अन्तःकरण में सत्य के ज्ञान का प्रकाश हो गया है,

उन्हें में किसी प्रकार भुला दूँ।

जब स्वयं साहब की कृपा होती है, तभी गुरु मिलते हैं।

@MA_[illegible]311

CamScanner

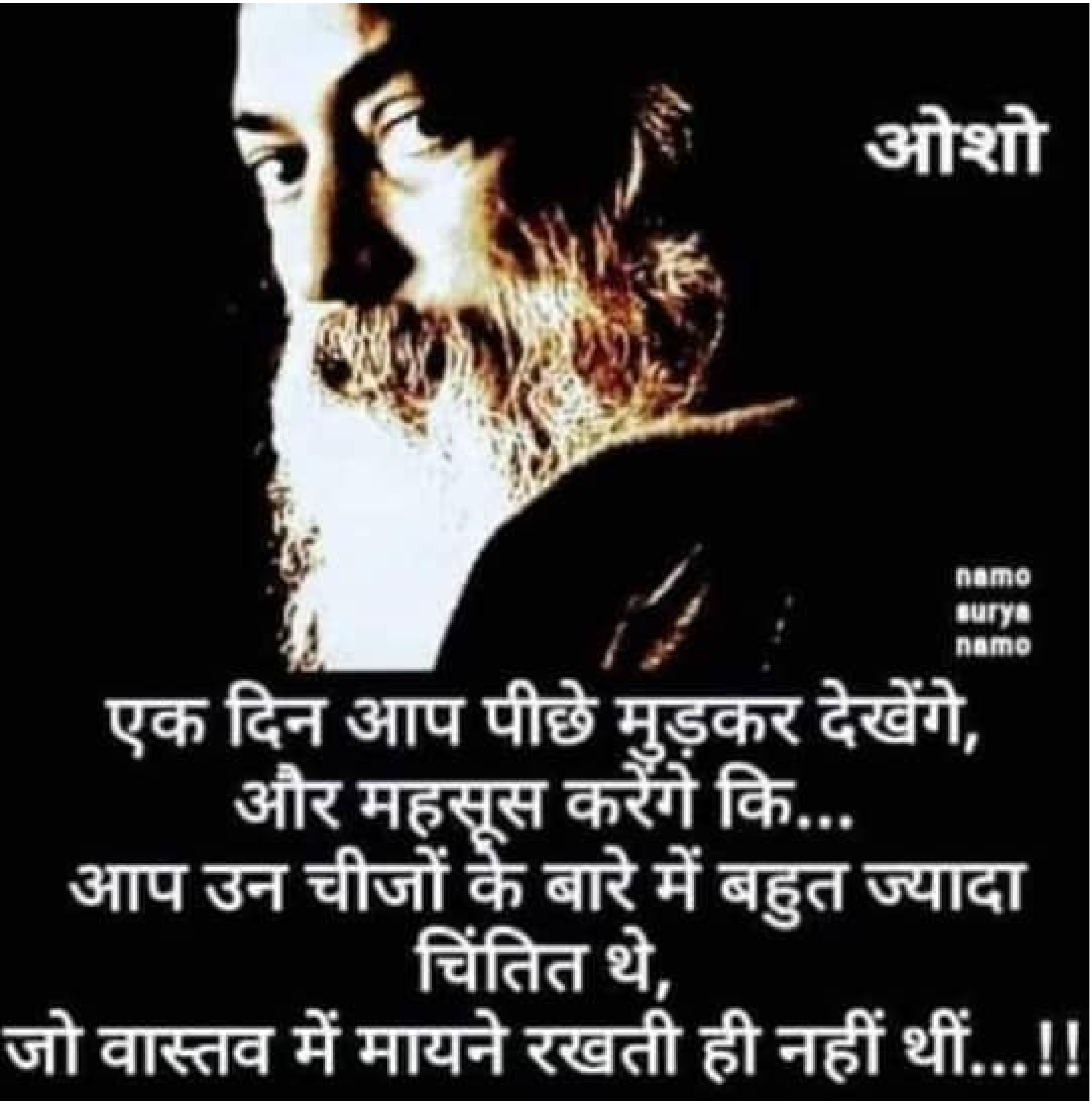
ओशो
namo
surya
namo
एक दिन आप पीछे मुड़कर देखेंगे,
और महसूस करेंगे कि...
आप उन चीजों के बारे में बहुत ज्यादा
चिंतित थे,
जो वास्तव में मायने रखती ही नहीं थीं...!!

CamScanner

7:35 pm 6 KB/s 41%

google.com/search?q=tc

YouTube

Tower of Silence" - YouTube

Creepypasta

Tower of Silence - Creepypasta

Reddit

A Dakhma known as Tower of Sile...

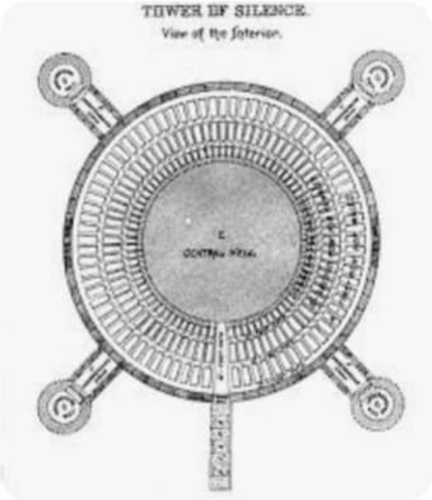

Wikipedia

Tower of Silence - Wikipedia

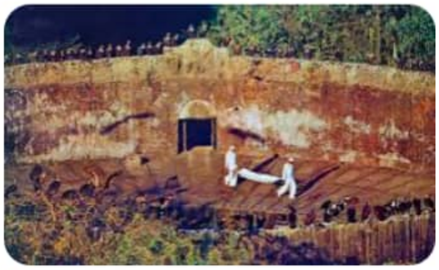

Luxury Golden Triangle Tours & ...

Tower of Silence - Malabar Hill, Mu...

Reflections.live

haunted 'Tower of Silence ...

CamScanner

संस्कार देखकर, रूह कांपेगी
2.1K
Dislike
53
Share
@FACTYYs
Subscribe
लाश के टुकड़े टुकड़े बाला अंतिम संस्कार 😨| #shorts #tibet To Tibetan Buddhists, sky burials by TFK
Remix
THE FACTYY SHOW

CamScanner

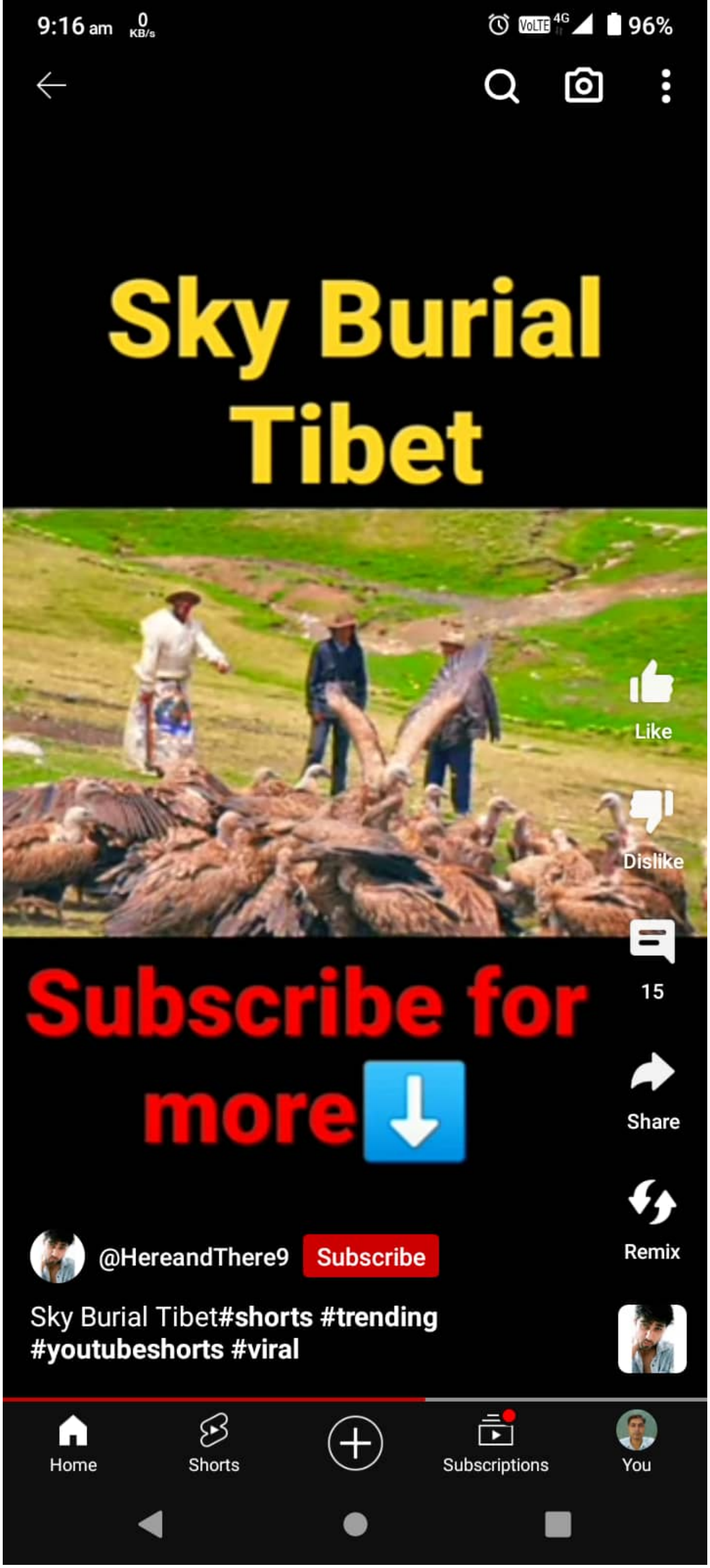
9:16 am
96%
Sky Burial
Tibet
Like
Dislike
15
Subscribe for
more
Share
Remix
@HereandThere9
Subscribe
Sky Burial Tibet#shorts #trending
#youtubeshorts #viral
Home
Shorts
Subscriptions
You

CamScanner

朗木寺の鳥葬

5.4 lakh views 15 yr ago ...more

葉一 横石葉一 478 Subscribe

624 Share Remix Download

Comments 73

健 標高の高いところでは、土葬してもバクテリアの繁殖がなく腐敗しないから、鳥に食べさせる方法が考案され...

CS CamScanner

9:22 am
95%
27K
Dislike
1.4K
Share
Remix
@charancrm
Subscribe
This is what happens to human body inside electric cremation machine
Home
Shorts
Subscriptions
You

CamScanner

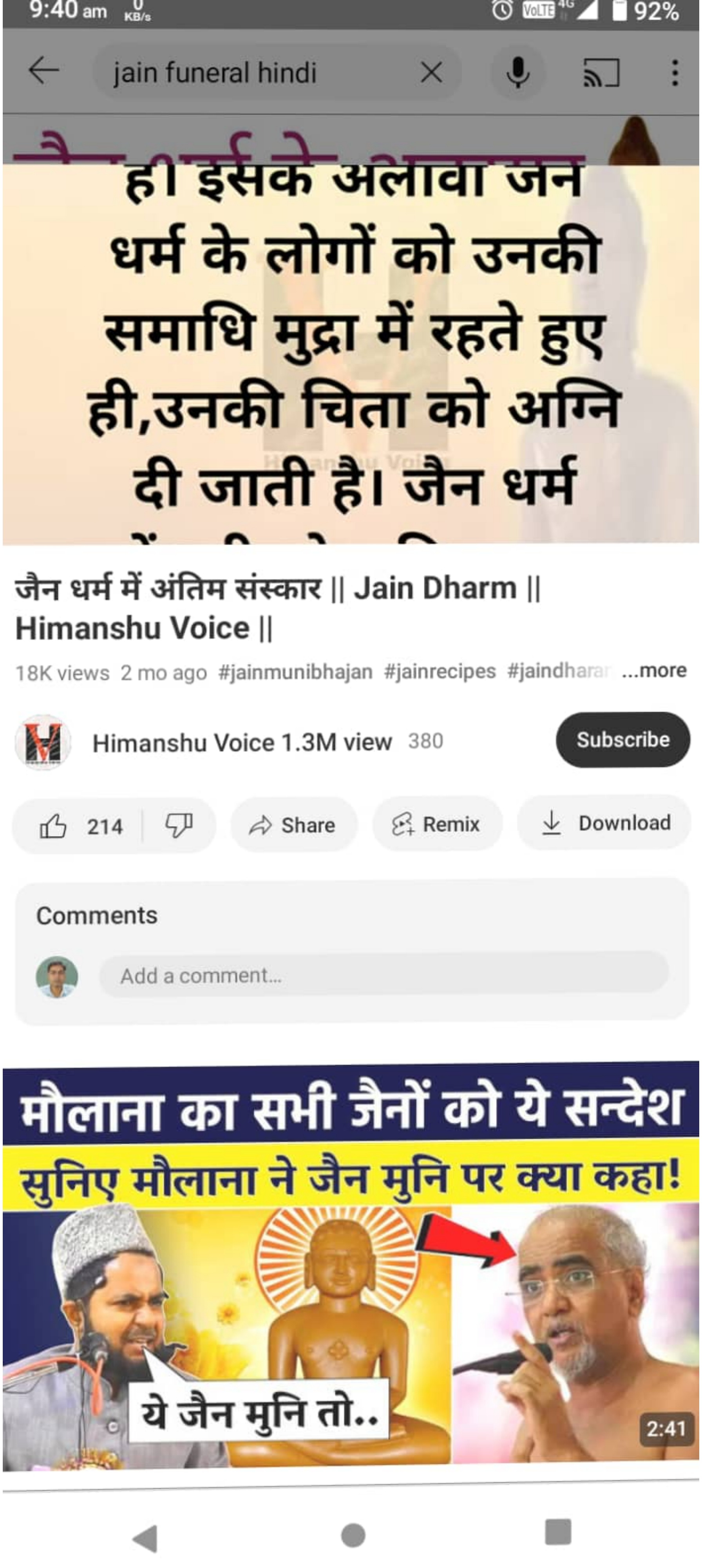
9:40 am
jain funeral hindi
है। इसके अलावा जैन
धर्म के लोगों को उनकी
समाधि मुद्रा में रहते हुए
ही,उनकी चिता को अग्नि
दी जाती है। जैन धर्म
जैन धर्म में अंतिम संस्कार || Jain Dharm || Himanshu Voice ||
18K views 2 mo ago #jainmunibhajan #jainrecipes #jaindharam ...more
Himanshu Voice 1.3M view 380
Subscribe
214
Share
Remix
Download
Comments
Add a comment...
मौलाना का सभी जैनों को ये सन्देश
सुनिए मौलाना ने जैन मुनि पर क्या कहा!
ये जैन मुनि तो..
2:41

CamScanner

सल्लेखना (समाधि या सथारां) मृत्यु को निकट जानकर अपनाये जाने वाली एक जैन प्रथा है। इसमें जब व्यक्ति को लगता है कि वह मौत के करीब है तो वह खुद खाना-पीना त्याग देता है। दिगम्बर जैन शास्त्र अनुसार समाधि या सल्लेखना कहा जाता है, इसे ही श्वेतांबर साधना पध्दती में संथारा कहा जाता है। सल्लेखना दो शब्दों से मिलकर बना है सत्+लेखना। इस का अर्थ है - सम्यक् प्रकार से काया और कषायों को कमज़ोर करना। यह श्रावक और मुनि दोनो के लिए बतायी गयी है।[1] इसे जीवन की अंतिम साधना भी माना जाता है, जिसके आधार पर व्यक्ति मृत्यु को पास देखकर सबकुछ त्याग देता है। जैन ग्रंथ, तत्त्वार्थ सूत्र के सातवें अध्याय के २२वें श्लोक में लिखा है: "व्रतधारी श्रावक मरण के समय होने वाली सल्लेखना को प्रतिपूर्वक सेवन करे"।[2]

जैन ग्रंथो में सल्लेखना के पाँच अतिचार बताये गए हैं:[3][4]-

- जीवितांशसा- सल्लेखना लेने के बाद जीने की इच्छा करना
- मरणांशसा- वेदना से व्याकुल होकर शीघ्र मरने की इच्छा करना
- मित्रानुराग- अनुराग के द्वारा मित्रों का स्मरण करना
- सुखानुबंध- पहले भोगे हुये सुखों का स्मरण करना
- निदांन- आगामी विषय-भोगों की वांछा करना

प्रक्रिया

ऐसा नहीं है कि संथारा लेने वाले व्यक्ति का भोजन जबरन बंद करा दिया जाता हो। संथारा में व्यक्ति स्वयं धीरे-धीरे अपना भोजन कम कर देता है। जैन-ग्रंथों के अनुसार, इसमें व्यक्ति को नियम के अनुसार भोजन दिया जाता है। जो अन्न बंद करने की बात कही जाती है, वह मात्र उसी स्थिति के लिए होती है, जब अन्न का पाचन असंभव हो जाए।

CamScanner